॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

२२

आदर्श-
हिन्दी-संस्कृत-कोशः

डॉ० रामसरूप 'रसिकेश'

शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० (संस्कृत), एम० ए०
पी-एच० डी० (हिन्दी), विद्यावाचस्पति (धर्म०)
पूर्व-प्राध्यापक, डी० ए० वी० कालेज (लाहौर), हंसराज कालेज
(दिल्ली) तथा दिल्ली विश्वविद्यालय

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी २२१००१

चौखम्बा विद्याभवन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)
चौक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे),
पोस्ट बाक्स नं० ६९
वाराणसी २२१००१

द्वितीय संस्करण
१९७९
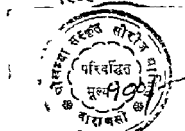
अन्य प्राप्तिस्थान—
चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)
के० ३७/११७, गोपाल मन्दिर लेन
पोस्ट बाक्स नं० १२९
वाराणसी २२१००१

मुद्रक—
श्रीजी मुद्रणालय
वाराणसी

THE

VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA

32

ĀDARSA-

HINDĪ-SANSKṚT-KOŚA

By

Dr Ramsarupa 'Rasikesha'

Shastri M A, M O L (San), M A Ph D, (Hindi), Vidyavachaspati (Dharmashastra)

Ex Professor

D A V College (Lahore), Hansraja College (Delhi) and Delhi University

THE

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI

समर्पणम्

दिवङ्गतां जननीं

सीतां

प्रति

नमस्कृत्य वदामि त्वां यदि पुण्य मया कृतम् ।
अन्यस्यामपि जात्यां मे त्वमेव जननी भव ॥

प्राक्कथन

प्रोफेसर विश्वबन्धु शास्त्री

M A, M O L., d'A Kt, C. T.

आदरणीय संचालक, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

संस्कृत भाषा का विशाल, सर्वतोमुख साहित्य ही, निःसंदेह, वह सर्वोत्तम बपौती है, जो प्राचीन भारत से नवभारत को मिली है। संस्कृत-भाषा अतीव चिरंजीविनी है, वस्तुतः, अमिट और अमर है। सहस्रों वर्ष पूर्व के हमारे पुरखा इसी देववाणी के द्वारा अपना सब वाग्व्यवहार चलाते थे। धीरे-धीरे फिर वह समय आया, जब शिक्षित जन ही इसका शुद्ध प्रयोग कर पाते थे और शेष-सर्व-साधारण लोग इसके अनेक विकृत रूपों का प्रयोग करने लगे थे। वही विकृत रूप, पीछे—पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश कहलाए और बोल-चाल एवं साहित्य-सृष्टि के समुन्नत माध्यम भी बने। परन्तु, उस समय भी, साधारण जनता भले ही शुद्ध संस्कृत न बोल सकती हो, वह, अवश्य, उसे समझ लेती थी। संस्कृत की वही अमिट छाप हमारी आधुनिक भारतीय भाषाओं पर भी पड़ी हुई है, जिसके कारण, हमारे आज के विभिन्न प्रादेशिक वाग्व्यवहार के अन्दर ४०-५० से लेकर ८०-९० प्रतिशत तक, मानो, स्वयं संस्कृत-भाषा ही बोली और लिखी जा रही है। शुद्ध संस्कृत के माध्यम से होने वाली साहित्य-सृष्टि तो कभी रुकी ही नहीं। प्राचीन तथा मध्यकालीन युगों की बात तो अलग रही, आज के युग में भी संस्कृत-भाषा के सभी प्रकार के साहित्य की सृष्टि बराबर चालू है। आशा प्रतीत होती है कि देश की स्वतन्त्रता के साक्षात् फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना इस ओर प्रतिदिन अधिकाधिक जागरूक होती जायेगी।

यह प्रसन्नता की बात है कि देश-भर में जहाँ-तहाँ अभियुक्त जन इस समय संस्कृताध्ययन के रङ्ग-ढङ्ग को सरलतर बनाने के प्रयत्न में लग रहे हैं। एतदर्थ कई प्रकार के अभिनव शिक्षण-क्रमों का आविष्कार तथा साधन-भूत सहायक साहित्य का निर्माण किया जा रहा है। प्रस्तुत 'आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोश' उक्त सहायक साहित्य के ही अन्तर्गत एक उत्तम रचना है। इसके सुयोग्य लेखक ने इसे सब प्रकार से उपयोगी बनाने के लिए सफल प्रयास किया है।

एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना सुकर नहीं होता। जब तक दोनों भाषाओं के प्रयोग-स्वारस्य का अच्छा बोध प्राप्त न किया हो, तब तक मक्खी पर मक्खी मारने के अतिरिक्त और कुछ सिद्ध नहीं किया जा सकता। एतदर्थ छात्रों को चाहिए कि दोनों भाषाओं के सत्साहित्य के सागर में स्वतन्त्र रूप से खुला अवगाहन करें। कोई भी व्याकरण या कोश का ग्रन्थ इस प्रधान साधन का स्थान नहीं ले सकता। परन्तु उक्त विस्तृत पठन के साथ-साथ, प्रतिदिन के कार्याभ्यास में प्रस्तुत कोश ऐसे सहायक ग्रन्थों का निश्चय ही अपना स्थान एवम् उपयोग है।

इस कोश में जिन सुविपुल विशेषताओं का आधान करते हुए इसे गुणवत्तर बनाया गया है, इसको 'प्रस्तावना' में उनका विवरण भली प्रकार से कर दिया गया है। छात्रों को चाहिए कि इसकी 'प्रस्तावना' के पाठ द्वारा उन विशेषताओं का परिज्ञान प्राप्त करते हुए इसका सदुपयोग करते रहें, जिससे उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके।

साधु आश्रम, होशियारपुर
१६-६-५७

—विश्वबन्धु

डॉ० राम सरूप 'रसिकेश'

प्रस्तावना

(द्वितीय संस्करण)

'आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश' की उपयोगिता व लोकप्रियता इसी से प्रमाणित है कि इसका प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया और इसकी माँग, शुक्ल पक्ष के चाँद के समान, निरन्तर बढ़ती ही गई। संस्कृत प्रेमियों, पुस्तक विक्रेताओं, प्रकाशक व लेखक सभी की उत्कट इच्छा थी कि द्वितीय संस्करण यथाशीघ्र प्रकाशित हो, जिससे देववाणी की अधिकाधिक उन्नति हो। परन्तु, इस संसार में परिस्थितियाँ कभी-कभार ऐसा प्रतिकूल रूप धारण कर लेती हैं कि उन पर विजय पाना दुष्कर हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृत प्रेमियों को सुदीर्घकाल तक अप्रत्याशित प्रतीक्षा करनी पड़ी, जिसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। अस्तु।

सभी भाषा शास्त्री जानते हैं कि कोई भी जीवन्त भाषा वर्षों तक एक ही रूप में नहीं रहती। उसके शब्द भंडार आदि में परिवर्तन होता ही रहता है। इसी नियमानुसार दो दशाब्दियों में हिन्दी शब्द भंडार का पर्याप्त विस्तार हुआ और परिणामत: हमने भी कोश का परिवर्द्धित संस्करण ही प्रकाशित करना समीचीन समझा। प्रथम संस्करण में कुछ अशुद्धियाँ भी रह गई थीं। उनका संशोधन भी अपना पवित्र कर्तव्य था। इस कार्य में हमें अपने मित्र प्रो० गोपालदत्त पाण्डेय, पूर्व-उपनिदेशक, शिक्षाविभाग, उत्तर प्रदेश, ने स्तुत्य सहयोग दिया है, जिसके लिए हम उनके ऋणी हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने 'संस्कृत-कोशों का उद्भव और विकास' शीर्षक अनुसन्धानात्मक निबन्ध भी लिखा है, जिससे संस्कृत प्रेमियों को इस विषय की रोचक व मूल्यवती जानकारी भी उपलब्ध होगी। कोश के सम्बन्ध में जिन विश्रुत विद्वानों ने स्वामूल्य सम्मतियाँ प्रदान की हैं उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। साथ ही कृतज्ञ हैं चौखम्बा विद्याभवन के संचालक श्री वल्लभदास गुप्त के जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी कोश को प्रस्तुत सुन्दर रूप में प्रकाशित किया है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत संस्करण पूर्व की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

पाठकों से निवेदन है कि प्रथम संस्करण की प्रस्तावना को भी सावधानता से पढ़ने की कृपा करें, क्योंकि इसके बिना वे कोश से यथेष्ट लाभ न उठा सकेंगे।

अन्त में, विद्वज्जनों व अध्यापक-वर्ग से सादर निवेदन है कि प्रस्तुत संस्करण की त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान अवश्य आकर्षित करें ताकि कोश के आगामी संस्करण शुद्धतर रूप में प्रकाशित हो सकें। धन्यवाद।

डी-२४२
नया राजेन्द्रनगर
नई दिल्ली—११००७०
वैशाखी—२०३६ वि०

विनीत,
रामसरूप

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण)

संस्कृत का अध्ययनाध्यापन करते समय और कभी हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्यायों की जिज्ञासा के समय अनेक बार हिन्दी-संस्कृत-कोश की आवश्यकता प्रतीत होती थी। बाजार में कोई भी ऐसा कोश प्राप्य न था जो स्कूलों, कालेजों, गुरुकुलों, ऋषिकुलों आदि की उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों तथा संस्कृताध्ययन के इच्छुक प्रौढ़ सज्जनों और अध्यापकों की आवश्यकताएँ पूर्ण कर सके। यह देखकर दुःख भी होता था और आश्चर्य भी कि सात समुद्र पार से आई हुई अंग्रेजी भाषा के कुछ लाख ज्ञाताओं के लिए तो अंग्रेजी-संस्कृत-कोश प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु करोड़ों हिन्दी प्रेमियों के पास ऐसा कोई कोश नहीं जिससे वे संस्कृताध्ययन में सहायता प्राप्त कर सकें। संस्कृतानुराग और उक्त अभाव की प्रबल प्रेरणा से मैं १९४३ ई. में कोश संकलन में लग गया और लगभग चार वर्ष के परिश्रम से इस बृहत्कार्य को सम्पन्न कर पाया। देश का विभाजन न होता तो सम्भवतः यह कोश दस वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो जाता, परन्तु परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण यह अब प्रकाशित हो रहा है— 'दैवी विचित्रा गतिः'।

जिन दिनों मैंने कोश का संकलन आरम्भ करने को था उन दिनों हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी का प्रश्न जोर शोर से छिड़ा हुआ था। प्रत्येक भाषा के प्रेमी स्व-स्व पक्ष की पुष्टि के लिए अनेक युक्तायुक्त युक्तियाँ प्रस्तुत करते थे। तब मेरे सम्मुख प्रश्न यह उठा कि मूल (अनूद्य) शब्दों में विशुद्ध हिन्दी के ही शब्द रखे जाएँ या विदेशी शब्द भी। सोच विचार के पश्चात् मैंने यही उचित समझा कि इसके मूल शब्दों में फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के भी प्रचलित शब्द अवश्य रखने चाहिए। उसी निश्चय का परिणाम यह है कि कोश के प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर पाँच-सात विदेशी शब्द, जो शताब्दियों के प्रयोग से स्वदेशी बन गये हैं, आपको मिल ही जाएँगे। इसका सुफल यह होगा कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बन जाने और परिणामतः प्रत्येक भारतीय के हिन्दी से परिचित हो जाने के कारण उन अन्यमतावलम्बियों को भी संस्कृत सीखने में अधिक सुविधा हो जाएगी, जिनकी भाषाओं के प्रचलित शब्द इस कोश में संगृहीत कर लिये गये हैं। मूल शब्दों के चुनाव के समय दूसरी समस्या पारिभाषिक शब्दों की थी। प्रत्येक कला और विज्ञान से सम्बन्धित सहस्रों पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग प्रायः उन्हीं विषयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों तक ही सीमित रहता है। प्रस्तुत कोश में उन सबका संकलन न सम्भव था, न वाञ्छनीय। इसीलिए मैंने भौतिकी, रसायन, भूगोल, गणित, ज्योतिष, वैद्यक आदि के उन्हीं अत्यन्त प्रसिद्ध शब्दों को संगृहीत किया है जो जन सामान्य या सामान्य शिक्षित जनता द्वारा प्रतिदिन प्रयुक्त होते हैं। कोश के मूल शब्दों की संख्या लगभग ३०००० है जिनमें ४००० के लगभग तथाकथित विदेशी शब्द, पारिभाषिक शब्द तथा मुहावरे भी सम्मिलित हैं।

कई कोशों में सम-रूप विभिन्न शब्द एक ही शब्द के नीचे मुद्रित रहते हैं। प्रस्तुत कोश में ऐसा नहीं किया गया। कारण, जब स्रोत (आकर भाषा) और व्युत्पत्ति पृथक्-पृथक् हों तो शब्दों के पार्थक्य में सन्देह नहीं रहता। ऐसी दशा में उन्हें, केवल रूपसाम्य के कारण, एक ही शब्द के अन्तर्गत रखना मुझे उचित नहीं जँचा। ऐसे समरूप शब्दों के ऊपर १, २, ३, ४ आदि के चिह्न लगा दिये गये हैं जिससे उनमें से किसी की ओर निर्देश करते समय कठिनता न हो, उदाहरणार्थ 'आम' और 'आया' शब्द देखिये। इस कोश में प्रत्येक मूल शब्द को तो स्वतन्त्र स्थान दिया गया है परन्तु उससे बने हुए समस्त शब्दों या मुहावरों को अधिकतर मूल शब्दों के नीचे ही

१९४७ की मई में जब साम्प्रदायिक दंगों के कारण डी ए वी कालेज, लाहौर, पूर्व वर्षों की अपेक्षा कुछ शीघ्र ही बन्द हो गया तब कालेज के छात्रावास को अपने घर से अधिक सुरक्षित समझ मैं कोश की पांडुलिपि को एक बक्स में बन्द कर वहीं छोड़ बैजनाथ (पूर्वी पंजाब) चला आया। बाद में वहाँ जो लूट-मार हुई, उसके वृत्त सुन-सुनकर यही विचार आता था कि मेरा 'कोश' भी लुट ही गया होगा। मैं इसकी खोज में, जान जोखिम में डालकर, सितम्बर १९४७ में लाहौर गया परन्तु कुछ पता न चला। दूसरी बार जब दिसम्बर १९४७ में फिर गया तो सौभाग्यवश यह सुरक्षित मिल गया। उन दिनों लाहौर का डी ए वी कालेज और उसका छात्रावास शरणार्थी-कैम्प बना हुआ था। किसी शरणार्थी भाई ने बक्स को तो छोड़ा न था, परन्तु कोश को छेड़ा न था। कैम्प के स्वयंसेवकों ने इसे कोई काम की वस्तु समझ, सँभाल रखा था। इस अवसर पर मैं उस अज्ञात शरणार्थी भाई को जिसने इसे ज्यों-का-त्यों रहने दिया और उन अपरिचित स्वयंसेवकों को जिन्होंने इसे कई मास तक सँभाले रखा, हार्दिक धन्यवाद देना अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूँ।

कोश के प्रूफ, मेरे मित्र श्री हरिवल्लभ शास्त्री यदि परिश्रमपूर्वक न देखते तो इस सूक्ष्म बृहत्काय में बहुत त्रुटियाँ रह जातीं। दो परिशिष्टों के सम्पादन में मेरे मित्र प्रो० लाजपतराय एम ए ने मेरा हाथ बँटाया है। इन दोनों सज्जनों के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। अन्त में कोश के प्रकाशकों के प्रति भी अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ जिन्होंने इसे सुन्दर रूप में थोड़े ही समय में प्रकाशित कर दिया है।

मनुष्य को अपनी तथा अपनी कृतियों की त्रुटियाँ स्वभावतः ही कम दिखाई देती हैं। इसी नियम के अनुसार मैं भी प्रस्तुत पुस्तक की न्यूनताओं और भ्रान्तियों से अज्ञात ही परिचित हूँ। अतः सब ज्ञाताज्ञात भूलों के लिए क्षमा-याचना करता हुआ मैं विद्वद्वृन्द से निवेदन करता हूँ कि वे कृष्णकवि की निम्नांकित सूक्ति—

दोषाक्षिरस्य गृह्णन्तु गुणमस्या मनीषिणः ।
पांसूनपास्य मत्वया मकरन्दमिवालयः ॥

के अनुसार मिलिन्दवत् अरविन्द के मकरन्द का पान और पराग का परित्याग कर मुझे मेरी त्रुटियों से परिचित करायें तथा ऐसे अमूल्य सुझाव भेजें जिनसे कोश का आगामी संस्करण अधिक निर्दोष और उपयोगी हो सके। प्रभु से प्रार्थना है कि उस देववाणी संस्कृत का भूतल पर अधिकाधिक प्रसार हो जिसकी साहित्य-सुधा का आनन्द आज भारतभूमि के भी इने गिने इने-गिने लोग ले रहे हैं।

डी-१४१
शारदानिकेतन
राजेन्द्र नगर, दिल्ली
दीपावली सं० २०१४

विनीत,
रामसरूप

विद्वत्सम्मतिसार

M ANANTHASAYANAM AYYANGAR

SPEAKER LOK SABHA)

I went through a portion of the Hindi-Sanskrit Dictionary prepared by Prof Ram Saroop, Prof of Hindi and Sanskrit, Hans Raj College, Delhi The pages have been taken at random from the middle of the book Almost every word in Hindi in ordinary use and even those that are rarely used has been noticed in this book

There are many Sanskrit-Hindi Dictionaries, but correspondingly there is practically no Hindi-Sanskrit Dictionary. Sanskrit is the mother of Hindi and all the northern Indian Languages Any new expressions have to be coined from Sanskrit source It is therefore necessary that any body who desires to have a proficiency in Hindi should have equally good knowledge of Sanskrit All Hindi writers and those in regional languages have been great Sanskrit scholars In fact they did not read regional language by itself at any time After acquiring proficiency in Sanskrit they automatically and without any special attempt, and with little or no effort, became proficient in their own respective language.

I welcome such a book and I hope and trust that it will be found useful not only by scholars but also by laymen who ought to have a working knowledge of Sanskrit if they want to acquire a good knowledge of Hindi A Dictionary of this type is worth having in every library

Prof VISHVA BANDHU, M A, M O L.

(Director, V. V. R. Institute, Hoshiarpur.)

It has given me real satisfaction to find that he has taken pains in this behalf and succeeded in producing a handy work which should be of great help to those who may be learning the somewhat difficult art of translating modern Hindi originals into the ancient language of gods

Dr SURYA KANT SHASTRI, D Litt, D Phil

(Hindu University, Varanasi)

In my opinion this dictionary will prove of great help to the students of Hindi and Sanskrit, since a dictionary of this type and size is not available in the market

Dr N N CHOWDHURI, M A, D Litt.

(Reader in Sanskrit, University of Delhi)

I have read with great interest a part of the manuscript copy of your Hindi-Sanskrit dictionary A book of this type is urgently needed in these days I congratulate you on this excellent work you have under-taken

श्री एन वी गाडगिल, एम पी

श्री रामसरूप शास्त्री द्वारा सम्पादित 'हिन्दी संस्कृत कोश' के कुछ मुद्रित पृष्ठ पढने का अवसर प्राप्त हुआ। सूक्ष्म दृष्टि से उन पत्रों को देखकर इस बात से प्रसन्नता हुई कि प्रियवर शास्त्रीजी ने इतना सुन्दर, सुव्यवस्थित और उपयुक्त कार्य किया है कि इस कार्य से वे समाज के ऋण से उऋण ही नहीं हुए, वरन उन्होंने समाज को उपकृत भी किया है।

लेखक महोदय को इस महत्त्वपूर्ण स्तुत्य कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

केदारनाथ शर्मा, सारस्वत

सम्पादक—'संस्कृतरत्नाकर'

मन्त्री, अखिलभारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

श्रीयुत रामसरूप शास्त्री एम ए, एम ओ एल, विद्यावाचस्पति, प्रोफेसर, हंसराज कालेज, देहली द्वारा सम्पादित हिन्दी संस्कृत कोश का कुछ भाग देखने का अवसर मिला है। मैं जो कुछ देख सका उसके आधार पर यह कह सकता हूं कि यह इस युग के अनुकूल और आवश्यक प्रयत्न है।

इस समय ऐसे प्रामाणिक कोश का अभाव जबकि देश का ध्यान संस्कृत की ओर आकृष्ट हो रहा हो, बहुत खटक रहा था। *मुझे विश्वास है—इस अभाव की बहुत कुछ पूर्ति इस कोश से* हो सकेगी। सम्पादक महोदय का यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य और श्लाघ्य है। इसके अधिकाधिक प्रयोग और प्रचार की कामना करता हूं।

महामहोपाध्याय श्री प० परमेश्वरानन्द शास्त्री, विद्याभास्कर

(ओरिएण्टल कालेज, जालधर, पूर्व प्रिंसिपल, सनातनधर्म संस्कृत कालेज, लाहौर)

प्रोफेसर श्रीरामसरूप शास्त्री, एम ए, एम ओ एल, विद्यावाचस्पति विरचित 'हिन्दी संस्कृत कोश' को देखकर मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मूल हिन्दी शब्दों के संस्कृत में पर्याय देने वाला कोश मेरी दृष्टि में यह पहला ही है। ऐसे कोश की बहुत समय से बड़ी भारी आवश्यकता समझी जा रही थी। संस्कृत के विद्वान अपने छात्रों को अनुवाद की शिक्षा देते हुए बड़ा कठिनाई अनुभव करते थे और करते हैं। संस्कृत भाषा का व्यवहार में प्रचलन न होने के कारण हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्याय ढूँढने में उन्हें बड़ी मुश्किल पड़ती है। इस मुश्किल को विद्यावाचस्पति श्रीरामसरूप शास्त्रीजी ने हिन्दी-संस्कृत कोश की रचना करके बहुत अंशों में हल कर दिया है। इस उपकार के लिए संस्कृत के अध्यापक और उनके शिष्य प्रोफेसर महोदय के अत्यन्त आभारी होंगे, ऐसी आशा है।

हिन्दी माध्यम के द्वारा संस्कृत शिक्षार्थियों के लिये तथा हिन्दी मार्ग में अग्रसर होने के लिए संस्कृत के विद्वानों के लिए भी—यह कोश अत्यन्त उपयोगी है। स्कूल कालेजों में, संस्कृत

पाठशालाओं में सस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने में यह कोश अच्छा सहायक सिद्ध होगा—ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।

इस कोश ने केवल हिन्दी की ही नहीं, अपितु सस्कृत की भी श्रीवृद्धि की है, अतः दोनों भाषाओं के प्रेमियों की ओर से विद्वान् ग्रन्थकार धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति एम पी

(चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली)

हंसराज कालेज, दिल्ली के प्रो. रामसरूप एम ए, एम ओ एल. ने अपने आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश का कुछ भाग मुझे दिखाया है। कोश में हिन्दी के तीन हजार शब्दों के व्युत्पत्ति-सहित संस्कृत पर्याय दिये गये हैं। अभी तक ऐसे कोश का अभाव था। प्रो रामसरूपजी का यह प्रयत्न उस अभाव की पूर्ति कर देगा। "इसमें सन्देह नहीं कि इतनी ज्ञातव्य बातों से यह कोश अत्यन्त उपयोगी होगा।

श्री० दा० सातवलेकर

(अध्यक्ष, स्वाध्याय मंडल, पारडी जि० सूरत)

आपका यह कोश संस्कृत सीखने वालों के लिए तथा संस्कृत शिक्षकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा, इसमें सन्देह नहीं है।

पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

(मोतीझील, वाराणसी)

'यह ग्रन्थ संस्कृत के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। हिन्दी से संस्कृत बनाने वालों को बहुत लाभ होगा। इस विषय पर आगे काम करने वालों को भी इससे बहुत सहायता मिलेगी। इससे इस विषय में उत्तरोत्तर उन्नति का मार्ग खुलेगा। इस दृष्टि से इस ग्रन्थ की उपादेयता और बढ़ जाती है।'

प्रो० चारुदेव शास्त्री

एम. ए., एम. ओ. एल.

(पूर्व प्राध्यापक, डी ए वी कालेज, लाहौर)

प्राध्यापकेन श्रीरामसरूपशास्त्रिणा प्रणीतो हिन्दी-संस्कृतकोशो मया केषुचित्स्थलेष्वालोचित । इदम्प्रथमः प्रयास इति प्रशस्य.। महानत्र शब्दराशि सगृहीत.। प्रतिहिन्दीशब्दमनेकं संस्कृतमभिधानमुपन्यस्तम्। तत्रोपन्यासेऽपि प्रसिद्धमपेक्ष्य विशिष्टानुपूर्वी समाश्रिता येनैतदुपयोक्तारः परपरतराञ्छब्दान् विहाय पूर्वपूर्वतरान् प्रयोक्ष्यन्ते प्रसिद्धि च नातिक्रमिष्यन्ति। सर्वस्मिन् भारते व्यवहारमवतीर्णायां हिन्द्यामीदृक्ष कोशोऽत्यन्तमपेक्षितोऽभूदिति स्थाने प्रयत्त शास्त्रिवर्येण विदांवरेण।

वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय, वाराणसी)

प्रो० रामसरूप शास्त्री द्वारा सङ्कलित एवं सम्पादित "आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश" के द्वितीय संस्करण को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। हिन्दी-संस्कृत कोश के क्षेत्र में यही एक ऐसा कोश था जो आकार, शब्दसंख्या एवं उपयोगिता की दृष्टि से सर्वोत्तम था और इसीलिये इसका अभाव बहुत दिनों तक खटक रहा था। सैकड़ों जिज्ञासुओं को तो मैंने ही इस कोश की सूचना दी होगी पर जब उन्हें यह मालूम हो जाता था कि यह कोश सम्प्रति उपलब्ध नहीं है तो वे हार्दिक दुःख प्रकट करते थे और चाहते थे कि यह कोश किसी प्रकार उन्हें उपलब्ध हो जाय। आज माननीय शास्त्रीजी ने इसका पुनः सम्पादन तथा चौखम्बा विद्याभवन ने इसका प्रकाशन कर जो असंख्य लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति की है इसके लिये ये दोनों हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी संस्कृत कोश का सम्पादन संस्कृत हिन्दी कोश के सम्पादन की अपेक्षा एक कठिन कार्य है। कारण कि आज की हिन्दी में अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी के भी बहुत से शब्द प्रचलित हो गये हैं। इसके अतिरिक्त देशी तथा लोकभाषाओं के शब्दों की भी संख्या कुछ कम नहीं है। फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का एक विशाल भण्डार अलग ही है। इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द पुरानी संस्कृत में नहीं मिलते अतः उनके लिये नये संस्कृत शब्दों का निर्माण करना पड़ता है जो साधारण विद्वान् से संभव नहीं है।

यही स्थिति उन सभी शब्दकोशों में पाई जाती है जो अंग्रेजी, बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल एवं तेलगू आदि भाषाओं से संस्कृत में लिखे गये हैं। मेरे कार्यालय में ऐसे अनेक कोश हैं। इन शब्दकोशों में भी पर्याप्त संख्या में नये संस्कृत शब्द बनाये गये हैं।

अब कठिनाई यह है कि विभिन्न कोशों में जो नये शब्द बनाये गये हैं उनमें एकरूपता नहीं है। लेखकों ने अपने अपने ज्ञान एवं रुचि के अनुरूप शब्दों का निर्माण किया है। किन्हीं-किन्हीं कोशों में उत्तर एवं दक्षिण भारत के प्रादेशिकता का भी प्रभाव परिलक्षित होता है। ऐसी स्थिति में नवीन संस्कृत शब्दों से अन्य भाषाओं के तत्तद् शब्दों के तत्तद् अर्थों का सहज बोध होना या कराना वक्ता एवं श्रोता दोनों के लिये असम्भव या कठिन होता है। संस्कृत के आधुनिक लेखकों एवं वक्ताओं के लिये यह एक समस्या है जिसका समाधान होना परम आवश्यक है।

प्रस्तुत कोश में शास्त्रीजी ने उक्त कठिनाइयों के निवारण के लिये भी पर्याप्त प्रयत्न किया है जो उनकी भूमिका पढ़ने से अच्छी तरह विदित होता है। यदि कोई संस्था या शब्द-निर्माण समिति विभिन्न कोशकारों द्वारा नवनिर्मित संस्कृत शब्दों को अखिल भारतीय विद्वत्समाज की दृष्टि में सर्वमान्य और सर्वत्र समानरूप से प्रचलित करने की योजना बनाये तो उसकी सफलता में इस कोश से बड़ी सहायता मिल सकती है। परन्तु जब तक इस प्रकार की कोई योजना नहीं बनती, और जिसके बनने की संभावना भी कम ही दीखती है, तब तक इसी कोश को आदर्श कोश माना जा सकता है। इस दृष्टि से इसका 'आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश" नाम मैं सर्वथा यथार्थ मानता हूँ।

संस्कृत का प्रत्येक विद्वान् एवं विद्यार्थी इस कोश की एक प्रति अपने पास रखकर और इससे सहायता लेकर संस्कृत बोलने एवं लिखने में अबाधगति से आगे बढ़ सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

संकेत-सूची

(क) पदपरिचयसंबंधी संकेत

अ०, अव्य —अव्यय।
उप —उपसर्ग।
क्रि अ —क्रिया, अकर्मक।
क्रि प्रे —क्रिया, प्रेरणार्थक।
क्रि वि —क्रिया विशेषण।
क्रि स —क्रिया संयुक्त।
क्रि स —क्रिया सकर्मक।
प्रत्य —प्रत्यय।
मु —मुहावरा।
वि —विशेषण।
सं पु —संज्ञा पुंलिंग।
संबो —संबोधन।
सं स्त्री —संज्ञा स्त्रीलिंग।
सर्व —सर्वनाम।

(ख) स्रोतसंबंधी संकेत

(अं = अँग्रेजी)
(अ = अरबी)
(अनु = अनुकरणात्मक)
(अप = अपभ्रंश)
(अल्प = अल्पार्थक)
(गु = गुजराती)
(ग्रा = ग्रामीण)
(ता = तातारी)
(तु = तुर्की)
(देश = देशीय)
(पं = पंजाबी)
(पा = पालि)
(पुर्त = पुर्तगाली)
(पु हिं = पुरानी हिंदी
(पूर्व = निर्वचन पूर्ववत्)
(प्रा = प्राकृत)
(फ़ा = फ़ारसी)
(फ्रां = फ्रांसीसी)
(बं = बंगाली)
(यू = यूनानी)
(ले = लेटिन)
(सं = संस्कृत)
(स्पे = स्पेनिश)
(हिं = हिंदी)
(म रिन् = महाचारिन् इ)

(ग) धातुसंबंधी संकेत

(अ प से = अदादि परस्मैपदी सेट)
(क्र आ अ = क्र्यादि आत्मनेपदी अनिट)
(चु उ वे = चुरादि उभयपदी वेट)
(जु – – = जुहोत्यादि – –)
(त – – = तनादि – –)
(तु – – = तुदादि – –)
(दि – – = दिवादि – –)
(भ्वा – – = भ्वादि – –)
(रु – – = रुधादि – –)
(स्वा – – = स्वादि – –)
(कर्तृ = कर्तृवाच्य)
(कर्म = कर्मवाच्य)
(ना धा = नामधातु)
(प्रे = प्रेरणार्थक रूप)
(भाव = भाववाच्य)
(सन्न = सन्नन्त रूप)

(घ) शास्त्रीय संकेत

(ज्यो = ज्योतिषशास्त्र)
(धर्म = धर्मशास्त्र)
(न्या = न्यायशास्त्र)
(मी = मीमांसाशास्त्र)
(यो = योगशास्त्र)
(रा नी = राजनीतिशास्त्र)
(वे = वेदान्तशास्त्र)
(वै = वैशेषिकशास्त्र)
(व्या = व्याकरणशास्त्र)
(संगी = संगीतशास्त्र)
(सां = सांख्यशास्त्र)
(सा = साहित्यशास्त्र)

(ङ) सामान्य संकेत

अ(ना)वर्षणम् = अवर्षणम्, अनावर्षणम् ।
अप्रचरि(लि)त = अप्रचरित, अप्रचलित ।
अनु, गमन-करण सरणम् = अनुगमन, अनुकरण, अनुसरणम् ।
क्रोड -ड्डा = क्रोड, क्राड, क्रोडा ।
स्पष्टी विशदी कृ = स्पष्टीकृ, विशदीकृ ।
वि, लेपन } विलेपनम्, लेपनम् ।
वि, लेपन
राज— = समास का अन्तिम पद अपेक्षित है ।
—परायण = समास का पूर्वपद अपेक्षित है ।
इ = इत्यादि ।
उ = उदाहरण ।
एक = एकवचन ।
दे = देखिए ।
द्वि = द्विवचन ।
ब = बनाइए ।
बहु = बहुवचन ।
मि = मिलाइए ।
+ = योगचिह्न ।
= = समानतासूचक ।
* = स्वरचित शब्द ।

(च) सप्तम परिशिष्ट की संकेत सूची

(विंशति) अवदान ।
(जैनेन्द्र) अवस्था ।
अश्वघोष (बुद्धचरित)
उत्तर (काण्ड, रामायण)
उदयगिरि (चन्द्र तथा स्कन्दगुप्त के शिलालेख)
कालिका (पुराण)
किराता(र्जुनीय)
कूर्म (पुराण)
गरुड (पुराण)
जातक (माला)
त्रिकाण्ड (शेष)
दशकुमार (चरित)
देवी (पुराण)
देवीभा(गवत)
पद्म (पुराण)
पाणिनि (अष्टाध्यायी)
प्रबोध (चन्द्रोदय)
बदरी वशाल (यात्रा)
बृहत्क(था)
बृहत्सं(हिता)
मत्स्य (पुराण)
ब्रह्मवै (वर्तपुराण)
ब्रह्माण्ड (पुराण)
भवभूति (उत्तररामचरित)
भविष्य (पुराण)
भागवत (पुराण)
मत्स्य (पुराण)
मनुसं(हिता)
मनु(स्मृति)
महा(भारत)
(चन्द्रका) महरौली (अभिलेख)
मेघ(दूत)
रघु(वंश)
राजत(रंगिणी)
रामा(यण)
ललितविस्तर
लिंग (पुराण)
वराह (पुराण)
वामन (पुराण)
विक्रमाङ्क (देवचरित)
विष्णु (पुराण)
शतपथ (ब्राह्मण)
शिव (पुराण)
स्कन्द (पुराण)
स्वयम्भू (पुराण)
हरिवंश (पुराण)
(समुद्रगुप्त की) हरिषेण (प्रशस्ति)

संस्कृत-कोषग्रन्थों का उद्भव एवं विकास

संस्कृत-वाङ्मय की अन्य शाखाओं के समान 'कोषविद्या' का भी अपना विशेष महत्त्व है। वैदिक युग से लेकर अद्यावधि कोषग्रन्थों की रचना होते रहना ही इसका ज्वलन्त प्रमाण है। आरम्भ में कोषग्रन्थों का निर्माण विशेष उद्देश्य को अभिलक्षित कर प्रारम्भ हुआ था। यह उद्देश्य भी व्यावहारिक था। इस कारण शब्दों के समाकलन की इस विधा में कोषकारों को सफलता मिलती चली आ रही है। जनसाधारण की शब्दज्ञानसम्बन्धी पिपासा को शान्त करने में कोषग्रन्थों ने सुमधुर स्रोतस्विनी के समान अपनी सार्थकता सिद्ध की है। कोषकारों ने 'शब्द' की इयत्ता निर्धारित करने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु वे इसका अन्त न पासके। 'शब्द' 'वस्तुत नित्य है। नित्य शब्द का अन्त कहाँ? 'शब्द' की व्यापकता का एक मात्र कारण उसके विस्तृत प्रयोग का होना है। इस सम्बन्ध में महाभाष्यकार पतञ्जलि ने इस ओर संकेत भी किया है कि शब्दों के प्रयोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। सात द्वीपों से युक्त विशाल भूखण्ड में भारतीय वाङ्मय का विस्तार कुछ कम नहीं है। वेदों की ही कई शाखायें हैं। इनमें से यजुर्वेद की १०१ शाखायें हैं। सामवेद की एक हजार शाखाएँ हैं। ऋग्वेद के इक्कीस प्रकार हैं। अथर्ववेद नौ शाखाओं का है। इसके अतिरिक्त इतिहास, पुराण, वैद्यक इत्यादि सभी विषयों में शब्दों के प्रयोग का ही क्षेत्र है— "महान् हि शब्दस्य प्रयोगविषयः। सप्तद्वीपा वसुमती। त्रयो लोका। चत्वारो वेदाः साङ्गाः सरहस्याः बहुधा विभिन्नाः। एकशतमध्वर्युशाखाः, सहस्रवर्मा सामवेद, एकविंशतिधा बाह्वृच्यं, नवधाऽथर्वणो वेदः, वाको वाक्यम्, इतिहासः, पुराणम्, वैद्यकम्—इत्येतावान् शब्दस्य प्रयोगविषयः" (महाभाष्य पस्पशाह्निक)।

यह जानते हुए भी प्राचीन समय में शब्द की इयत्ता निर्धारित करने का प्रयत्न अवश्य किया गया होगा। इसी को पतञ्जलि ने इस अर्थवाद गर्भित वाक्य के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि शब्द का प्रतिपद पाठ सम्भव नहीं है। तदनुसार उन्होंने इस आख्यान की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि 'बृहस्पति ने इन्द्र को देवों के एक हजार वर्ष तक प्रत्येक शब्द का उच्चारण कर शब्दशास्त्र पढाया, फिर भी शब्द समाप्त नहीं हुए'। इस प्रसङ्ग में भाष्यकार ने दूसरा आख्यानक प्रस्तुत करते हुए यह बताया है कि जब बृहस्पति सदृश ख्यातनामा व्याख्याता, इन्द्र जैसा विज्ञ शिष्य, देवों के एक सहस्र वर्ष की अवधि अध्ययन-काल नियत किया गया तो भी शब्दों का अन्त ज्ञात नहीं हुआ। फिर आजकल की बात ही क्या? जो सब तरह निरोगी रहकर चिरायु होता है,

अधिक से अधिक वह सौ वर्ष तक जीता है। इसके अतिरिक्त आगे निरूपण करते हुए उन्होने कहा कि विद्या की सार्थकता चार प्रकार से होती है— (१) गुरुमुख से समझ लेते समय, (२) मनन के समय, (३) दूसरो को सिखाते समय और (४) व्यवहार करने मे—"एवं हि श्रूयते। बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपारायणं प्रोवाच, नान्तं जगाम। बृहस्पतिश्च प्रवक्ता, इन्द्रश्च अध्येता, दिव्यं वर्षसहस्रमध्ययनकालः, न च अन्तं जगाम। किं पुनरद्यत्वे? य. सर्वथा चिरं जीवति स वर्षशतं जीवति। चतुर्भिश्च प्रकारैर्विद्योपयुक्ता भवति आगमकालेन, स्वाध्यायकालेन, प्रवचनकालेन, व्यवहारकालेनेति।" अतः प्रायोगिक शब्दो के समाकलन को व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी समझ कोषकारो ने उन्हे ग्रन्थो के रूप मे प्रस्तुत कर संस्कृत वाङ्मय के इतिहास मे एक नया अध्याय जोड़ा है। इस प्रकार शब्दो के संग्रह करने मे 'कोष' शब्द रूढ़ हो गया है।

वैदिक काल मे कोष 'निघण्टु' के नाम से विख्यात रहे। 'निघण्टु' से अभिप्राय उन वैदिक शब्दो के संग्रह से है, जिनमें संज्ञाशब्दों के साथ क्रियापदों को भी एकत्र कर लिया गया था। निघण्टु का उद्देश्य वैदिक शब्दो के अर्थ समझने मे सहायता पहुँचाना भी रहा है। इसके विपरीत लौकिक 'कोषों' म अधिकतर संज्ञाशब्दो का समाकलन हुआ है। नामसंग्रह के अनन्तर परिशिष्टरूप मे अव्ययो के अर्थ का संग्रह भी इन कोषग्रन्थो मे उपलब्ध होता है। लौकिक कोष पद्यमय होने के कारण कविजनो के परिश्रम को कम करने मे उपयोगी सिद्ध हुए हैं। फलतः कण्ठस्थ करने मे सरलता होने के कारण इनका प्रचार होने मे बड़ी सुविधा हुई है। अतः विद्यार्थियो को काव्यशिक्षा देने के साथ ही 'कोष' कण्ठस्थ कराने की परिपाटी रही है। अर्थ की दृष्टि से प्राचीन काल मे कोषो का विभाजन दो प्रकार से किया गया था—(१) समानार्थक कोष तथा (२) नानार्थक कोष। लिङ्ग-निर्धारण करने की समस्या को कोषकारो ने बड़ी बुद्धिमत्ता से सुलझाया है। इसके लिये उन्होने कई विधियाँ अपनाई हैं। कहीं-कहीं तो शब्दो के प्रथमान्त प्रयोग से उनका लिङ्ग-निर्देश किया है और कहीं 'पु' 'स्त्री' 'क्लीब' आदि लिङ्गद्योतक शब्दो का प्रयोग कर इस विशिष्टता का परिचय दिया है। शब्दचयन के भी अनेक सिद्धान्त हैं। समानार्थक कोषों मे विषयों के अनुसार शब्दो का संकलन कर पूरे कोषग्रन्थ को अनेक वर्गों मे विभक्त कर दिया है। नानार्थ-कोषो मे अन्तिम वर्णों के अनुसार शब्दों का संकलन कर कान्त, खान्त, गान्त आदि शब्दों का चयन किया गया है। कहीं आदिम वर्णों को भी महत्त्व दिया गया है। कहीं आदिम तथा अन्तिम दोनो वर्णों को दृष्टि मे रखकर शब्द-चयन की प्रक्रिया सम्पन्न की गई है।

निघण्टु—यह 'निघण्टु' ग्रन्थ यास्क से प्राचीन है, क्योंकि इसी के आधार पर यास्क ने 'निरुक्त' लिखा है। महाभारत के अनुसार प्रजापति कश्यप इस निघण्टु के रचयिता हैं। इसमें पाँच अध्याय हैं। आदि के तीन अध्यायों में 'पृथ्वी' आदि के बोधक समानार्थ शब्दों का सकलन है। इस प्रकरण को 'नैघण्टुक-काण्ड' कहा जाता है। चतुर्थ अध्याय में अव्युत्पन्न तथा गूढार्थक शब्दों का चयन किया गया है। इसे 'नैगम-काण्ड' की सज्ञा दी गई है। पाँचवें अध्याय (दैवतकाण्ड) में भिन्न-भिन्न देवताओं के रूप तथा स्थान का विस्तृत निरूपण है। 'निघण्टु' के प्रमुख व्याख्याता देवराज यज्वा हैं। ये सायण से प्राचीन अवश्य हैं, क्योंकि सायण के ऋग्वेद-भाष्य में एक स्थान पर निघण्टुभाष्य के वचनों का उद्धरण मिलता है। देवराज ने अपने भाष्य में क्षीरस्वामी को अपने पूर्ववर्ती भाष्यकार के रूप में स्मरण किया है। क्षीरस्वामी 'अमरकोष' के सुप्रसिद्ध टीकाकार हैं। अत. देवराज यज्वा का समय १२ वी तथा १३ वी शताब्दी के मध्य प्रमाणित होता है।

वैदिक कोष—प्राचीन परिपाटी के अनुसार भास्कर राय ने वैदिक-कोष की रचना तात्रिक कोषों के ढग पर की है। इस कोष के सकलित शब्द तो वे ही हैं जो निघण्टु में हैं, किन्तु उन शब्दों का अर्थ 'अनुष्टुप् छन्द' द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इस कोष का रचना-काल १७७५ ई० है। भास्कर राय ने अपनी गुप्तवती टीका में अनेक स्थलों पर नागेश की सप्तशती-टीका का खण्डन किया है। अत ये नागेश के समकालीन अथवा उनसे कुछ ही समय के अनन्तर हुए होंगे।

पुरुषोत्तम देव ने अपने लौकिक-सस्कृत के पुराने कोषकारों का उल्लेख 'हारावली' कोष के अन्त में वाचस्पति, व्याडि तथा विक्रमादित्य का नाम लेकर किया है। तदनन्तर केशव ने कात्य, व्याडि, वाचस्पति, भागुरि, अमर, मङ्गल, साहसाङ्क, महेश तथा हेमचन्द्र का नामोल्लेख किया है। इनके अतिरिक्त किसी हस्तलेख के आधार पर १८ प्रसिद्ध कोषों के विषय में परिज्ञान होता है। इस प्रकार अमर-कोष को केन्द्रबिन्दु मानकर सस्कृत वाङ्मय के कोषग्रन्थों को आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय जी ने तीन कालों में विभक्त किया है—(१) अमरपूर्व काल, (२) अमरकाल तथा (३) अमरोत्तर-काल।

अमर-पूर्व-कोषकार—अमर-पूर्व कोषकारों में व्याडि सर्वप्राचीन कोषकार हैं। व्याडि के कोषग्रन्थ का नाम 'उत्पलिनी' था। पुरुषोत्तम ने अपने हारावली कोष के अन्त में इसका उल्लेख किया है। इस कोष में समानार्थ शब्दों की प्रधानता थी। इन्होंने व्युत्पत्ति के द्वारा अर्थानुसन्धान की प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराया है। जैसे 'निघण्टु' की व्याख्या इन्होंने इस तरह की है—"अर्थान् निघण्टयन्त्यस्मात् निघण्टुः परिकीर्तितः"। ये व्याडि कदाचित् पाणिनि के समकालीन सुप्रसिद्ध 'संग्रह' नामक ग्रन्थ के कर्ता ही हों।

कात्य—इनके कोषग्रन्थ का नाम 'नाममाला' था। क्षीरस्वामी, हेमचन्द्र आदि ने इनका उल्लेख किया है। इनके कोष की विशेषता यह थी कि इन्होंने कही-कही अर्थ का वर्णनात्मक परिचय भी दिया है—"क्षुद्रच्छिद्रसमुपेतं चालनं तितउ पुमान्"। इनका निश्चित समय ज्ञात नही हो सका।

भागुरि—यह त्रिकाण्ड-कोष के रचयिता हैं। अमरसिंह ने 'त्रिकाण्ड' की प्रेरणा इन्ही से प्राप्त की होगी। इन्होने केवल समानार्थ शब्दो का ही उल्लेख किया है। व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थो मे भागुरि के मत का अनेक स्थलो पर उल्लेख मिलता है। विशेषत हलन्त वाच्, निश्, दिश् आदि शब्दो को आकारान्त बनाने मे इनके नाम का उल्लेख मिलता है "वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयो। आप चैव हलन्ताना यथा वाचा निशा दिशा"। सायण आदि वेदभाष्य-कर्ताओ ने इनके कोष ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता ली है।

रत्नमाला के अज्ञात-नामा लेखक का उल्लेख सर्वानन्द ने अपनी "अमरकोष" की टीका मे किया है। तदनुसार इस कोष के परिच्छेदो का वर्गीकरण लिङ्ग के आधार पर था। इसमे समानार्थ-शब्दो का चयन था।

अमरदत्त—इन्होने 'अमरमाला' नामक कोषग्रन्थ की रचना की। हलायुध ने अपने कोषग्रन्थ का उपजीव्य 'अमरमाला' को माना है। सर्वानन्द ने इस कोष से अनेक उद्धरण अपनी अमर-टीका मे दिये है। इनका समय भी अनिश्चित ही है।

वाचस्पति—यह सुप्रसिद्ध 'शब्दार्णव' कोष के रचयिता थे। यह 'अनुष्टुप्-छन्द' मे विरचित विशाल कोष था। इसकी विशेषता यह थी कि एक शब्द के विभिन्न रूपो का तथा वर्तनी का भी इसमे उल्लेख है। हेमचन्द्र ने इनके कोष से पर्याप्त सहायता ली है। इनका वास्तविक समय भी अज्ञात है।

धन्वन्तरि—यह वैद्यक-निघण्टु के रचयिता हैं। वैद्यक निघण्टुओ मे यह कोष सब से प्राचीन है। क्षीरस्वामी ने अपनी अमर-टीका मे यह उल्लेख किया है कि अमरसिंह के 'अमरकोष' के वनौषधि-वर्ग का उपजीव्य यही कोष रहा है। विक्रम के नवरत्नो मे इनका भी उल्लेख है। उस दृष्टि से तो यह भी अधिक प्राचीन है।

महाक्षपणक—इनके नाम से दो कोष-ग्रन्थ हस्तग्रन्थो मे उल्लिखित मिलते है। ये दोनो अनेकार्थ-ध्वनिमञ्जरी तथा अनेकार्थमञ्जरी नाम से प्रसिद्ध है। ये दोनो ग्रन्थ एक ही होगे, क्योकि अधिकतर टीकाकर्ताओ ने 'अनेकार्थमञ्जरी' नाम का ही उल्लेख किया है। 'रघुवंश' की टीका मे वल्लभदेव ने 'अनेकार्थमञ्जरी' का अवतरण उद्धृत किया है। महाक्षपणक काश्मीरी थे। इनके समय का भी कोई निर्णय नही हो सका है। यदि यह भी विक्रम के नवरत्नो मे से एक हो तो विक्रमादित्य अथवा चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्यकाल के आसपास इनकी स्थिति के विषय मे अनुमान किया जा सकता है।

अमरसिंह—सुप्रसिद्ध "नामलिङ्गानुशासन" कोष के रचयिता अमरसिंह की ख्याति कोषकर्ता के रूप मे सबसे अधिक है। इनके नाम से ही यह ग्रन्थ अमरकोष प्रसिद्ध हो गया। इनसे पूर्व प्राचीन कोषकारो ने दो प्रकार की शैलियाँ अपनायी थी। कतिपय कोष केवल नामो का ही निर्देश करते थे और कुछ कोष लिङ्गो के ही विवेचन को अपना मुख्य विषय मानते थे। अमरसिंह ने दोनो का समन्वय कर अपने कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया। तीन काण्डो मे विभक्त कर इस ग्रन्थ को 'त्रिकाण्ड' सज्ञा भी दी गई। इसका उपविभाग 'वर्गों' के नाम से किया गया है। 'अमरकोष' पद्यबद्ध रचना है। 'अनुष्टुप्' छन्द के १५३३ श्लोको मे यह रचना सम्पूर्ण हुई है। ग्रन्थ का छठा भाग नानार्थ के वर्णन मे है। शेष भाग मे समानार्थ शब्दो का निरूपण किया गया है। समानार्थ-भाग मे एक विषय के वाचक नामो का एकत्र सकलन है। नानार्थ-खण्ड मे अन्तिम वर्ण के अनुसार पदो का सग्रह है। अव्ययो का वर्णन एक स्वतन्त्र वर्ग मे किया गया है तथा ग्रन्थ के अन्त मे लिङ्गो के साधक नियमो का उल्लेख किया गया है।

अमरसिंह के समय का निर्णय भी एक समस्या बना हुआ है। इतना तो अवश्य निश्चय है कि यह ग्रन्थ छठी शताब्दी से पहले ही रचा गया था। गुणरात द्वारा चीनी भाषा मे इसका अनुवाद किया जाना उस समय की पश्चिम (अन्तिम) अवधि है। इसकी लोकप्रसिद्धि का सबसे अधिक प्रमाण यह है कि इस पर लगभग ४० टीकायें लिखी गई हैं। इनमे क्षीरस्वामी और रामाश्रम (भानुदीक्षित) द्वारा लिखित टीकायें बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन दोनो मे से रामाश्रमी का पदव्युत्पत्ति-प्रदर्शन अधिक सूक्ष्म तथा परिनिष्ठित है। अमरसिंह बौद्ध थे। इनके समय की पूर्वसीमा २२५ ई० के आसपास निर्धारित की जाती है।

कोष ग्रन्थो मे अमरकोष का प्रचलन अद्यावधि सर्वाधिक है। सस्कृत के विद्यार्थियो को बाल्यावस्था मे ही इसे कण्ठस्थ कराया जाता रहा। यह परम्परा अब भी थोडी-बहुत दिखाई पडती है। सरल भाषा एवम् अनुष्टुप्-छन्द मे विरचित होने के कारण इसे हृदयङ्गम करने मे कठिनाई नही होती। अमरकोष के अतिरिक्त शब्द-ज्ञान का लघुभूत उपाय दूसरा कोई नही है। इस प्रकार अमरसिंह अपने पश्चाद्वर्ती कोषकारो के प्रेरणा स्रोत बन गए। इसी कारण उनकी सरणि को अधिक प्रशस्त बनाने मे आगे के कोषकार तत्पर होते हुए दिखाई पडते हैं।

अमरसिंह के पश्चाद्वर्ती कोषकार—बाद के कोषकार शब्दो के वैशिष्ट्य का निदर्शन कराने मे बडे सिद्धहस्त प्रतीत होते हैं। उनके प्रकरण भले ही सीमित हो किन्तु उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत है। कतिपय कोषकारो ने केवल नानार्थ-कोषग्रन्थो की ही रचना स्वतन्त्र रूप मे की है, किन्तु उन्होंने शब्दों की सूक्ष्म

समीक्षा कर अपने पाण्डित्य तथा अर्थ-निर्णय करने की क्षमता का परिचय दिया है। इस दृष्टि से निम्नलिखित विद्वान् प्रसिद्ध कोषकारों के रूप मे सर्वमान्य हैं।

शाश्वत—इनका समय भी छठी शताब्दी के आस-पास माना जाता है। इन्होने स्वयम् अपने विषय मे यह लिखा है कि मैंने तीन व्याकरणो को देखा तथा पांच लिङ्गानुशासनो का अध्ययन किया। केवल इतना ही नही किन्तु शिष्ट-प्रयोगो के देखने मे भी कोई कमी नही होने दी।[1] इनका विरचित कोष अनेकार्थ-समुच्चय है। इस कोष मे केवल अनेकार्थ शब्दो का विस्तृत चयन है। शब्दो के चयन मे अमरकोष की अपेक्षा अधिक विस्तार तथा प्रौढता दृष्टिगोचर होती है। प्रकृत कोष के अन्तिम पद्य से यह सकेत मिलता है कि ग्रन्थकार ने कवि महाबल तथा वराह से भी इस सम्बन्ध मे परामर्श किया था[2]। अनेक विद्वानो के सहयोग से इस कोष की रचना होने के कारण इसमे व्यापकता होना स्वाभाविक है।

धनञ्जय—शाश्वत के लगभग दो शताब्दी पश्चात् धनञ्जय ने 'नाममाला' कोष की रचना की। यह कोष व्यवहार मे आने वाले लोकप्रचलित संस्कृत शब्दो का उपयोगी कोष है। इसे लघुकोष कहना ही उचित है। इसमे केवल २०० श्लोक हैं। विशेषता इस बात मे है कि ग्रन्थकार ने शब्दो की रचना के सुन्दर उपाय बताये है। उदाहरणार्थ पृथ्वीवाचक शब्दो मे 'धर' लगा देने से पर्वतवाची शब्दो का बोध होता है (मही + धर, पृथ्वी + धर आदि)। इसी प्रकार मनुष्यवाची शब्दो मे 'पति' शब्द जोड देने से राजा के नाम (नर + पति, नृ + पति) तथा वृक्षवाची शब्दो मे 'चर' शब्द जोडने से बन्दर के समानार्थक शब्द बन जाते है (द्रुम + चर, वृक्ष + चर आदि)। इस कोष की यही विशेषता है कि शब्दो के चयन मे लोकव्यवहार को विशेष महत्त्व दिया गया है। 'अनेकार्थनाममाला' इसका पूरक अङ्ग है। कोषकार के अतिरिक्त धनञ्जय कवि भी हैं। इनका 'द्विसन्धान' काव्य द्वयाश्रय काव्यो मे बड़ा प्रसिद्ध है। इस काव्य मे श्लिष्ट पदो के द्वारा रामायण और महाभारत के कथानकों का विशद वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इनका समय आठवी शताब्दी का उत्तरार्ध निश्चित-प्राय है। इस विषय मे वीरसेन स्वामी द्वारा 'षट्खण्डागम' की धवला नामक टीका मे 'अनेकार्थनाममाला' का उद्धृत एक श्लोक ही पर्याप्त प्रमाण माना जा

---

१ दृष्टशिष्टप्रयोगोऽहं दृष्टव्याकरणत्रयः।
अधीती मदुपाध्यायात् लिङ्गशास्त्रेषु पञ्चसु ॥

—शाश्वतकोष—आरम्भ का ६ श्लोक

२. महाबलेन कविना वराहेण च धीमता।
सह सम्यक् परामृश्य निर्मितोऽयं प्रयत्नतः ॥

सकता है। धवला टीका ८७३ विक्रमी संवत् (=८१६ ई०) में लिखी गई थी। अतः धनञ्जय ७४०–७९० ई० के मध्य अवश्य रहे होंगे।

पुरुषोत्तमदेव—धनञ्जय के लगभग ४०० वर्षों के उपरान्त पुरुषोत्तमदेव ने तीन कोष-ग्रन्थों की रचना की। ये ग्रन्थ हैं—(१) त्रिकाण्ड कोष, (२) हारावली तथा (३) वर्णदेशना। इनमें से प्रथम तो 'अमरकोष' का पूरक ग्रन्थ है। इसका क्रम 'अमरकोष' के समान है। तदनुसार इसमें भी तीन काण्ड तथा पच्चीस वर्ग हैं। इसमें भी लोकव्यवहार में प्रयुक्त शब्दों के साथ ही 'अमरकोष' में अनुपलब्ध शब्दों का भी संग्रह किया गया है। हारावली में अप्रचलित तथा असामान्य शब्दों का समाकलन किया गया है। २७० पद्यात्मक 'लघुकोष' होने पर भी यह दो भागों में विभक्त है—(क) समानार्थक तथा (ख) नानार्थक। समानार्थक भाग के तीन अंश हैं—पहले में पूरे श्लोक में समानार्थक शब्द हैं, दूसरे में अर्थ श्लोक में तथा तीसरे में एक चरण में ही। नानार्थक खण्ड की भी यही सरणि है। वर्तनी अर्थात् शब्दों की शुद्धता बतलाना वर्णदेशना का मुख्य ध्येय है। इस ग्रन्थ की उपादेयता इस कारण सुविदित है। स्वयं ग्रन्थकार ने यह उल्लेख किया है कि गौड-लिपि में भिन्नता होने के फलस्वरूप शब्दों के रूपों में भ्रान्ति होना सम्भव है। इसके निराकरण-हेतु 'वर्णदेशना' की उपयोगिता है। अमरसिंह की भाँति पुरुषोत्तमदेव भी बौद्ध थे। इन्होंने सर्वप्रथम बुद्ध को 'मुनीन्द्र' रूप में नमन किया है। इस कार्य में यह अमरसिंह से और आगे बढ़े। देवताओं के सम्बन्ध में इन्होंने बुद्ध के बाद बुद्ध के पुत्र राहुल का, अनुज देवदत्त का मायादेवी का तथा प्रत्येक बुद्ध का क्रमशः उल्लेख किया है। यह बंगाल के शासक राजा लक्ष्मणसेन ११७०–१२०० के समकालिक थे। इन्हीं के आदेश से पुरुषोत्तम देव ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'भाषावृत्ति' नामक वृत्ति लिखी। अतः इनका समय बारहवीं शती का उत्तरार्ध मानना युक्तिसंगत है।

हलायुध—इनकी रचना अभिधान-रत्नमाला के नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष में पाँच काण्ड हैं—स्वर्, भूमि, पाताल, सामान्य तथा अनेकार्थ। इनमें से प्रथम चार काण्डों में समानार्थक शब्दों का वर्णन है तथा अन्तिम काण्ड में नानार्थ एवं अव्ययों का। इन्होंने अमरसिंह को ही अपना आदर्श माना है। यह मान्यखेट के राजा कृष्णराज तृतीय ९५० ई० के समकालिक थे। अतः इनका समय दशम शती का उत्तरार्ध माना गया है।

यादवप्रकाश द्वारा विरचित वैजयन्ती कोष बड़ी महत्त्वपूर्ण रचना है। यह दो खण्डों में विभक्त है—समानार्थ तथा नानार्थ। समानार्थ-खण्ड में पाँच भाग हैं—स्वर्ग, अन्तरिक्ष, भूमि, पाताल तथा सामान्य। नानार्थ-खण्ड में तीन भाग हैं, जिनमें ग्रन्थकार द्वारा शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है।

वर्णक्रम से शब्दसग्रह किया जाना इसकी नवीनता है। दूसरी विशेषता यह है कि इसम वैदिक शब्दो का सकलन भी किया गया है। रामानुजाचार्य (१०५५–११३७ ई०) के यह गुरु थे। अत इनका स्थितिकाल ११ वी शती का उत्तरार्ध निश्चितप्राय है।

महेश्वर—इनका विश्वप्रकाश-कोष नानार्थ-शब्दो का सकलनात्मक ग्रन्थ है। इस कोष मे शब्दो का चयन अन्तिम वर्ण के आधार पर किया गया है। रूपभेद का निर्देश भी इसमे किया गया है। ग्रन्थान्त मे अव्ययो का सकलन विद्यमान है। ग्रन्थकार ने स्वयम् अपना परिचय इस कोष के अन्त मे दिया है। तदनुसार *इस कोष की रचना सन् ११११ ई० में हुई थी। मल्लिनाथ ने इस कोष का* उपयोग अपनी टीकाओ मे विशेषतया किया है।

अजयपाल—यह बौद्धमतावलम्बी थे। इनकी रचना नानार्थसग्रह नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष मे १७३० शब्द हैं। इस कोष मे भी वर्णक्रमानुसार शब्दो का चयन किया गया है। इनके मत का उल्लेख अमरकोष के टीकाकार सर्वानन्द ने टीकासर्वस्व (११५९ ई०) मे बहुधा किया है। इसके अतिरिक्त वर्धमान ने अपने व्याकरण ग्रन्थ 'गणरत्नमहोदधि (रचना ११४० ई०) मे इनका बहुश उल्लेख किया है। फलत यह बारहवी शती से कुछ पहले हुए होगे। इन्होने 'ब' तथा 'व' मे अन्तर नही माना है। इस कारण इनके बगदेशीय होने का अनुमान किया जाता है।

मेदिनिकर—इनका ग्रन्थ 'मेदिनीकोष' के नाम से प्रसिद्ध है। यह भी नानार्थ कोष है। मेदिनिकर ने शब्दो के चयन मे दो प्रकार अपनाये हैं—ककारादि वर्णक्रम तथा अन्तिम वर्णक्रम। मेदिनी ने विश्वप्रकाश को 'बहुदोष' बतला कर अपना महत्त्व सूचित किया है। मेदिनीकोष शब्दो की सख्या मे तथा चयन की व्यवस्था म विश्वप्रकाश की अपेक्षा अधिक विशद एव सुव्यवस्थित है। कविशेखराचार्य (लगभग १३०० ई०) के मैथिली भाषा मे लिखित वर्णरत्नाकर ग्रन्थ मे मेदिनीकर का उल्लेख होने से डा० गोडे ने इन्ह १२००—१२७५ ई० के मध्य माना है।

मङ्ख—इन्होने भी अन्तिम व्यन्जनो के आधार पर अनेकार्थ-कोष की रचना की है। इसमे १००७ पद्य हैं। इसका विभाजन परिच्छेदो मे नही किया गया है। इनका स्थितिकाल ११२८–११४९ के मध्य माना गया है। यह काश्मीर के राजा जयसिंह के राज्यकाल मे विद्यमान थे। इस कोष मे प्राय. काश्मीर के कवियो द्वारा प्रयुक्त शब्दो का चयन किया गया है।

हेमचन्द्र—कोषग्रन्थो के इतिहास मे यह सर्वाग्रणी हैं। इन्होने चार कोषग्रन्थ *लिखे हैं—अभिधानचिन्तामणि (समानार्थकोष)*, अनेकार्थसग्रह (नानार्थ-

कोष), निघण्टुकोष (वैद्यक) तथा देशीनाममाला (प्राकृतकोष)। इनमें से अभिधानचिन्तामणि को छह काण्डों में विभक्त किया गया है—देवाधिदेव, देव, मर्त्य, भूमि, नरक तथा सामान्य। यह कोश नानावृत्तों में निबद्ध १५४२ पद्यों में समाप्त हुआ है। इस पर स्वयं ग्रन्थकार ने ही टीका लिखी है। अनेकार्थसंग्रह भी छह काण्डों में विभक्त है। इसमें १८२९ श्लोक हैं। शब्दों का संग्रह दो प्रकार से है—अन्तिम अक्षरों द्वारा तथा आदिम अक्षरों द्वारा। इन्होंने व्यवहार में आने वाले संस्कृत शब्दों का यथावत् संगृहीत कर उनके प्रति निष्ठा व्यक्त की है। यह ग्रन्थ महाराष्ट्र के राजा सोमदेव के ग्रन्थ मानसोल्लास (रचना ११३० ई०) का समकालिक प्रतीत होता है। हेमचन्द्र का प्रभाव अवान्तरकालीन कोषकारों पर विशेष रूप से पड़ा है।

केशव स्वामी—इनके द्वारा विरचित नानार्णव-संक्षेप नानार्थ शब्दों का सबसे बड़ा कोष है। इसमें लगभग ५८०० श्लोक हैं। अक्षरों की गणना के आधार पर यह कोष भी छह काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड लिङ्ग के अनुसार पाँच भागों में विभक्त है। इसमें वैदिक शब्दों का संकलन भी विद्यमान है। यह ग्रन्थ चोलवंशी नरेश राजराज चोल के आश्रय में रहकर लिखा गया है। इनका समय १२०० ई० के आस पास माना जाता है। इस ग्रन्थ के छह काण्डों में प्रति-काण्ड पाँच अध्याय हैं। काण्डों का विभाजन एकाक्षर से लेकर षडक्षर तक है। अध्यायों का विभाजन लिङ्ग के अनुसार किया गया है—स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, वाच्यलिङ्ग तथा संकीर्णलिङ्ग। प्रत्येक अध्याय में शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है। आधुनिक कोश-ग्रन्थों में यही क्रम स्वीकृत है।

केशव—अद्यावधि ज्ञात समानार्थ कोषों में केशव का कल्पद्रुकोष सबसे विशाल है। इसमें लगभग ४०० श्लोक हैं। इसके तीन स्कन्ध हैं—भूमि, भुव तथा स्वर्ग। प्रत्येक स्कन्ध प्रकाण्डों में विभक्त है। ग्रन्थकार के अनुसार इसकी रचना १६६० में हुई। इस कोष के शब्दचयन में बड़ी विविधता है। अनेक ज्ञातव्य तथ्यों के संग्रह ने इसे विश्वकोष का रूप दिया है। इसमें समानार्थ शब्दों के साथ प्रयुक्त विषयों का विस्तृत वर्णन भी विद्यमान है।

शाहजी—यह विश्वविख्यात छत्रपति शिवाजी के भतीजे थे। तंजौर के इतिहास के अनुसार शाहजी का राज्य-समय (१६८४–१७१२ ई०) विद्योन्नति के लिये प्रसिद्ध रहा है। इनकी सभा में ४७ विद्वान् रहते थे। इनका विरचित शब्दरत्नसमन्वय-कोष शब्दचयन की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इस कोष में प्रत्येक वर्ग के भीतर अक्षर-क्रम से शब्दों का विन्यास किया गया है। शब्दों का अवान्तर क्रम भी अकारादि क्रम के अनुसार विद्यमान है। यह विशेषता संस्कृत के बहुत कम कोषों में पाई जाती है। इन्होंने 'क्ष' को अलग वर्ण के रूप में

स्वीकार किया है। उसमे आरम्भ होने वाले शब्दो को अन्त मे रखा है। इस कोश मे लगभग ३५०० श्लोक हैं। इस कोश का दूसरा नाम राजकोश भी है।

हर्षकीर्ति—इन्होने समानार्थक शब्दो के शारदीयाभिधानमाला नामक कोश की रचना की। यह तीन काण्डो मे विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड को भी वर्गो मे विभक्त किया गया है। प्रथम काण्ड के तीन वर्ग है—देववर्ग, व्योमवर्ग तथा धरावर्ग। द्वितीय काण्ड चार वर्गों मे विभक्त किया गया है—अङ्गवर्ग, मयोगादिवर्ग, सगीतवर्ग तथा पण्डितवर्ग। तृतीय काण्ड के पांच वर्ग हैं—ब्रह्म, राज, वैश्य, शूद्र तथा सकीर्ण। पूरे ग्रन्थ मे केवल ४३५ श्लोक है। कोश के अतिरिक्त हर्षकीर्ति ने अनेक (शास्त्रीय विषयो पर) ग्रन्थो की रचना की। यह जैनधर्मावलम्बी थे। इनके गुरु चन्द्रकीर्ति रहे, जिन्होने जहांगीर (१७ वी शती) से विशेष सम्मान प्राप्त किया। इन्होने एक दूसरे कोश को भी रचना की। उस कोश का नाम है—शब्दानेकार्थ। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी मे इस पुस्तक का रचनाकाल वि० स० १६६५ लिखा है। अत इनका समय सत्रहवी शती का आरम्भिक चरण मानना युक्तिसगत प्रतीत होता है।

नवीन ढंग के कोष

विदेशी भाषाओ के सम्पर्क मे आने पर कुछ विद्वानो ने विशिष्ट कोशो का सस्कृत मे सकलन किया। इस पद्धति का सर्वप्रथम प्रयोग शब्दकल्पद्रुम नामक प्रख्यात कोष मे किया गया। इस कोष को सुप्रसिद्ध मनीषी राजा राधाकान्तदेव ने मान्य पण्डितो की सहायता से अनेक खण्डो मे १८२२ तथा १८५८ ई० के बीच प्रकाशित किया। इसमे शब्दो का चयन वर्णक्रम से है तथा पुराण, धर्मशास्त्र आदि प्रमाण ग्रन्थो के उद्धरणो का समावेश होने से इसकी प्रामाणिकता बहुत बढ गई है। वस्तुत यह सस्कृत का विश्वकोष है। इसमे वैदिक शब्दो का प्राय अभाव है। शब्दों की व्युत्पत्ति देने से इस कोष की उपादेयता बढ गई है। प्रस्तुत कोष मे रचना क्रम से आये हुए शास्त्रोपयोगी शब्दो के प्रसङ्ग मे प्रमाणो के अतिरिक्त उनकी प्रायोगिक उपयोगिता को भी बतलाया गया है। उन पदार्थों के लक्षण, स्वरूप तथा चित्रादि देकर कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया है। इन सब विषयो का समावेश सात काण्डो मे किया गया है। राजा राधाकान्तदेव ने कोष के आरम्भ मे 'मुखबन्धन' (भूमिका) लिखते हुए प्रसङ्गवश यह सूचित किया है कि लौकिक कोषो का आदिम स्वरूप 'अग्नि-पुराण' मे वर्णित कोष-प्रकरण है। इस प्रकरण का क्रम इस प्रकार है—स्वर्ग-पातालादिवर्ग, अव्ययवर्ग, नानार्थवर्ग, भूवर्ग, पुर-वर्ग, अद्रि-वर्ग, वनौषधिवर्ग, सिंहादिवर्ग, मनुष्यवर्ग, ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग तथा शूद्रवर्ग। इसके अतिरिक्त शेष भाग मे सामान्य नामलिङ्गो का वर्णन है। राधाकान्त देव के

अनुसार अमरकोषकार ने अधिकतर अग्निपुराणोक्तक्रम ही अपनाया है। थोडा-बहुत परिवर्तन कर 'अमरकोष' की पूर्ति की है। जटाधर ने भी अमरकोष का अनुसरण किया है। शब्दकल्पद्रुम मे २९ कोषो का उपयोग किया गया है।

शब्दकल्पद्रुम के ढग पर आगे चलकर दो कोष और बनाये गये। इनमे प्रथम शब्दार्थचिन्तामणि तो उतना विशाल नही है। उसमे केवल चार भाग हैं। उसके रचयिता सुजानन्दनाथ रहे। कोष की रचना १८६४-१८८५ तक हुई। दूसरा कोष वाचस्पत्यम् बडा विशाल है। सर्वप्रथम यह कलकत्ता से २० भागो मे प्रकाशित हुआ (१८७३-१८८४ ई०)। इसके सकलनकर्ता तारानाथ तर्कवाचस्पति थे। इसने वैदिक शब्दो का भी समावेश है, किन्तु उनकी व्युत्पत्ति अधिकतर कल्पनाप्रसूत है।

इसी समय राथ तथा बोथलिंक नामक जर्मन विद्वानो द्वारा महान् सस्कृत कोष का प्रणयन हुआ, जिसमे वैदिक शब्दो का भी पूर्ण समावेश है। इसकी रचना भाषावैज्ञानिक रीति पर की गई है। जर्मन विद्वानो ने अनेक पण्डितो की सहायता से शब्दो के प्रयोगस्थलो का भी निर्देश किया है। इसके साथ ही शब्दो के अर्थविकास को अङ्कित करने का भी श्लाघ्य प्रयास किया है। उस समय तक प्रकाशित तथा अप्रकाशित समस्त सस्कृत ग्रन्थो का विधिवत् अनुशीलन कर इस विशाल कोष की रचना की गई है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार डा० राथ ने वैदिक शब्दो का तथा डा० बोथलिंक ने वैदिकेतर शब्दो का विवरण भाषाशास्त्रीय पद्धति पर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। डा० बोथलिंक ने इसका एक सक्षिप्त सस्करण भी जर्मन भाषा मे प्रकाशित किया था।

इसी क्रम मे डा० मोनियर विलियम्स ने एक सस्कृत-अग्रेजी कोष की रचना की। इनका परिश्रम श्लाघनीय है। शब्दो के चयन तथा अर्थनिर्देश मे बडा परिश्रम किया गया है। केवल कमी इस बात की है कि प्रयोगस्थलो का निर्देश नहीं किया गया है। इस कोष की रचना उपर्युक्त जर्मन कोषो के आधार पर हुई है। यह कोष समानार्थक शब्दो के सम्बन्ध मे बडा प्रामाणिक माना जाता है। इसका दूसरा स्वरूप अग्रेजो से सस्कृत मे भी है।

इस प्रकार के कोषो की रचना मे आगे चलकर भारतीय विद्वान् भी अग्रसर हुए, जिनमे वामन सदाशिव आप्टे का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। इन्होने भी संस्कृत-अग्रेजी तथा अग्रेजी-सस्कृत कोषो की रचना की। यह कोष विद्वानो तथा छात्रो के लिये समान रूप से उपकारक है। इस कोष मे वर्णक्रमानुसार शब्दो का चयन किया गया है। प्रयोगस्थलो के निर्देश मे पुराण तथा काव्यादि के उद्धरणो का उपयोग किया गया है। शास्त्रीय परिभाषाओ, छन्दो, प्राचीन

भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का विवेचन भी यथास्थान किया गया है। हाल में इसका नवीन संस्करण तीन खण्डों में पुणे से प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त छात्रोपयोगी संस्कृत हिन्दी लघु संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। नवीन संस्करण में शब्दों के चयन में सम्पादकों ने वृद्धि की है।

शब्दपरायण की प्रक्रिया को अभिनव रूप देने वालों में महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा प्रमुख रहे हैं। उन्होंने एक विशाल कोष की रचना की। इस कोष का नाम है—वाङमयार्णव। शर्माजी (१८७७–१९२९ ई०) ने इस कोश का प्रारम्भ १९११ ई० में किया। जीवन भर वे इसमें परिवर्तन परिवर्धन करते रहे। आचार्य बल्देव उपाध्यायजी के अनुसार यह कोष नामलिङ्गानुशासन की परम्परा का सार्वभौम ग्रन्थ है। यह नानार्थक कोष है। इसमें शब्दों का चयन वैज्ञानिक वर्णक्रमानुसार किया गया है[१]। वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के शब्दों का इसमें समावेश है। इस कोष में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति के साथ उसके प्रयोगस्थलों का भी समुचित निर्देश किया गया है। इसमें २०,००० शब्द उपन्यस्त हैं। साथ ही इस कोष की रचना पद्यमयी है तथा ६७९९ अनुष्टुपों में समाप्त हुआ है। ग्रन्थ के आरम्भ में १६ पद्यों का उपक्रम है एवम् अन्त में ६ श्लोकों में समापन किया गया है। ग्रन्थकार के निधन के ३८ वर्षों के सुदीर्घ काल के पश्चात् सन् १९६७ ई० में ज्ञानमण्डल प्रकाशन द्वारा यह प्रकाशित किया गया है।

वर्तमान काल की कोष निर्माण प्रवृत्ति

जर्मन संस्कृत कोष के प्रकाशन के लगभग एक शतक के बाद नवीन वैदिक कोष की आवश्यकता प्रतीत होने पर होशियारपुरस्थ विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान से अनेक विद्वानों के सहयोग से एक बृहद् वैदिक कोष का प्रकाशन हुआ है। इस कोष ने वैदिक संहिताओं के सम्बन्ध में ऋचाओं के सन्दर्भ की समस्या हल कर दी है। यद्यपि इसे शब्दपारायण की दृष्टि से कोष के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है तथापि इसमें वैदिक शब्दों की सूची विद्यमान होने से वैदिक मूल-शब्दों का परिचय सुलभ हो जाता है। इसके १६ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके

---

१ वर्णानुक्रमतः पदैर्लोकवेदोभयोद्भवैः ।
पद्यबद्धो महार्थोऽयं नानार्थो महान् ॥
विशेषतस्त्वायुर्वेदप्रभृतीनां पदैर्युतः ।
लोकयुक्तोदाहृतिभिर्विष्णवे समलङ्कृतः ॥
सचित्रः प्रचुरप्राच्यवैज्ञानिकपदोच्चयः ।
परिशिष्टैश्च बहुभिः कोष एष परिष्कृतः ॥
(उपक्रम श्लोक ७,८,९)

अतिरिक्त "संस्कृत का बृहत्तम कोष" प्रकाशन करने की योजना डेक्कन कालेज, पुणे के शोध-विभाग के निदेशक सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० एस० एम० कात्रे ने भी प्रस्तुत की है। उनके साथ अनेक विज्ञ सहयोगी भी इस कार्य मे सलग्न हैं। अब तक इस कोश के ३ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके समग्र भाग प्रकाशित होने पर कोश-साहित्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जायगा। इसकी विशेषता यह है कि शब्दो का अर्थ देने मे भाषा-वैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लिया जा रहा है तथा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अधिकाधिक प्रचलित शब्दो का विधिवत् समाकलन हो जाय।

शब्दराशि को समाकलित करने मे विद्वानो की प्रवृत्ति आज भी देखी जाती है। इस प्रवृत्ति मे शब्दो का प्रयोग एव प्रचलन ही मुख्य कारण है। शब्दो के प्रचलन एवं प्रयोग होने मे देश-काल की परिस्थिति मुख्य रूप से साधक होती है। अतः कोष-रचना की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। इसके फलस्वरूप वाराणसी से श्रीगोपालचन्द्र वेदान्तशास्त्री ने भी बृहत् सस्कृतकोष के प्रकाशन की योजना बनाई है। उसका एक खण्ड प्रकाशित हुआ है। इसके सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर हिन्दी जगत् को संस्कृत-वाङ्मय मे अवगाहन करने के लिए अच्छा अवसर मिलेगा। वर्तमान समय के कोषकारो मे सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० सूर्यकान्त का योगदान भी प्रशसनीय है। उन्होंने सस्कृत हिन्दी-अंग्रेजी कोश की रचना की है। इसके पूर्व चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा का संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभ (सस्कृत-हिन्दी) का अच्छा प्रचार हुआ है। इन्होने कोष लिखकर अनेक विद्वानो को कोष-रचना करने के लिए प्रेरित किया है।

विविध कोश

(क) इस प्रसङ्ग मे सस्कृत के समानान्तर पालि-प्रकृत कोशो पर भी विचार करना आवश्यक है। रचना-क्रम मे पालि-कोश अधिकतर वैदिक निघण्टुओ के समान परिलक्षित होते है। ये कोश श्लोकबद्ध नही हैं। पालिकोशो मे सर्वप्रसिद्ध कोष महाव्युत्पत्तिकोश है, जो २८४ प्रकरणो मे विभक्त है। इसमे लगभग ९०० शब्द संकलित है, जिनमे समानार्थक शब्दो के अतिरिक्त धातुरूप भी सगृहीत हैं। इसके अतिरिक्त पालिकोशो मे मोगलान की अभिधानप्पदीपिका नामक कोश अत्यधिक लोकप्रिय है। यह बारहवी शती की रचना है तथा अमरकोष की शैली मे लिखा गया है।

प्राकृत कोषो मे सबसे प्राचीन कोष पाियअ-लच्छिनाममाला है। इसके रचयिता धनपाल हैं। इसे ग्रन्थकार ने ९७२ ई० मे लिखा था। इसमे २७९ गाथायें हैं। हेमचन्द्र ने इस कोष का उपयोग अपने देशी नाममाला मे किया है।

हेमचन्द्र का देशीनाममाला प्राकृत कोश बडा सुन्दर तथा रोचक है। इसमें आठ अध्याय (वर्ग) है। इन अध्यायो मे शब्दो का सग्रह आदिम अक्षर को अभिलक्षित कर किया गया है। पर्यायवाची शब्द के अनन्तर उसी अक्षर से आरम्भ होने वाले नानार्थ शब्द भी रखे गए है। इस ग्रन्थ मे तद्भव शब्दो की प्रधानता होने से प्राकृत शब्दो के ज्ञान मे बडी सहायता मिलती है। इस कोष के अनुशीलन से उस युग (१२वी शती) के रीति रिवाजो का भी पता चलता है।

इस बीच दो प्राकृत कोशो का प्रकाशन बडा उपयोगी सिद्ध हुआ है। ये दो कोश हैं—(१) अभिधान राजेन्द्र-कोश तथा (२) प्राकृत-शब्दमहार्णव। इनमें से प्रथम ग्रन्थ तो जैनधर्म का विश्वकोष ही है, जिसमे जैनधर्म, जैन दर्शन तथा साहित्य के विषया को अभिलक्षित कर प्राचीन ग्रन्थो के उद्धरणो के साथ बडा साङ्गोपाङ्ग विवेचन है। यह ग्रन्थ विशालकाय है, सात खण्डो मे विभक्त है। इसकी पृष्ठ सख्या १०,००० है। प्राकृतशब्दमहार्णव इसकी अपेक्षा लघुकाय है। इसका आयाम लगभग १५०० पृष्ठो मे सीमित है। यह नवीन शैली का कोश है। इसम प्रयोगस्थलो का निर्देश बडी सुन्दरता के साथ किया गया है।

(ख) मुगलकाल मे फारसी का प्राधान्य होने के कारण फारसी-सस्कृत कोषो की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसके फलस्वरूप अकबर बादशाह के आदेश से विहारी कृष्णदास मिश्र ने पारसीकप्रकाश ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के दो भाग हैं—कोश तथा व्याकरण। २६९ अनुष्टुप् श्लोको मे ग्यारह प्रकरणो का समावेश किया गया है। प्रकरणो का शीर्षक अधिकतर अमरकोष के समान है। इसम फारसी शब्दो के सस्कृत पर्याय दिये गए हैं। इसी प्रकार का दूसरा ग्रन्थ वेदाङ्गराय द्वारा विरचित पारसी प्रकाश (१६४७ ई०) है। इसमे फारसी तथा अरबी के शब्दो का सस्कृत मे अर्थ दिया गया है। तीसरा ग्रन्थ पारसी-विनोद भी इसी समय लिखा गया। इसके रचयिता व्रजभूषण थे। महाकवि क्षेमेन्द्र का लोकप्रकाश भी इस दृष्टि से उपयोगी है। इसमे भी फारसी के बहुत शब्दो का प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ मे शाहजहाँ का भी उल्लेख होने से यह विदित होता है कि इसमे कुछ अश सत्रहवी शती मे जोड दिया गया हो।

विशिष्ट-कोष

सस्कृत वाङ्मय के विशिष्ट विषयो को अभिलक्षित कर भी विद्वानो ने अनेक कोष ग्रन्थ बनाये। सगीत में सगीतराज नामक विशालकाय ग्रन्थ का एक भाग कोष के रूप मे प्रख्यात है। उस अश को नृत्यरत्नकोष कहा गया है। इसके लेखक महाराणा कुम्भकर्ण हैं। किसी अज्ञात लेखक ने वस्तुरत्नकोश की रचना भी

विभक्त है। प्रथम भाग सूत्रात्मक है तथा दूसरा सूत्रों तथा तत्सम्बन्धी विवरणों से युक्त है। यह ग्रन्थ सम्भवत. १०००–१४०० ई० के मध्य लिखा गया था।

इस प्रसङ्ग में वैद्यक-कोशों का उल्लेख करना अत्यावश्यक है। इन कोशों की भी निघण्टु संज्ञा है। इनमे प्रमुख है—"(क) धन्वन्तरिनिघण्टु। यह नव खण्डों में विभक्त है। क्षीरस्वामी के अनुसार यह अमरकोष से प्राचीन है। अवान्तर निघण्टुओं में (ख) माधवकर की रत्नमाला (नवीं शती) तथा हरिचरण सेन का (ग) पर्यायमुक्तावली ग्रन्थ सुविदित हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त (घ) हेमचन्द्र का निघण्टुशेष, (ङ) मदनपाल का मदनपालनिघण्टु (१३७४ ई०) (च) केशव का सिद्धमन्त्र (१२५० ई० के लगभग), (छ) केशवदेव का पथ्यापथ्यविबोधक निघण्टु एव (ज) नरहरि का राजनिघण्टु भी वैद्यक निघण्टुओं मे मान्य है। इन सबमे राजनिघण्टु सबसे बडा है। इसके लेखक नरहरि नामक वैद्य हैं (१३८० ई० के आसपास)। इन सबके अतिरिक्त नानार्थ-औषधकोशों मे (झ) शिवकोश (१६७७ ई०) बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसके रचयिता शिवदत्त मिश्र थे। ग्रन्थकार ने इसकी व्याख्या भी स्वय लिखी है। यह नानार्थक ओषधि-कोष है। इसमें ऐसे ओषधि-वाचक शब्द सकलित किये गए हैं, जिनके अनेक अर्थ उपलब्ध होते हैं।

इन पृष्ठों में वर्णित कोशग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक कोशग्रन्थ हस्तलिखित रूप में हैं तथा अनेक कोश केवल उद्धरणों के रूप में ही ज्ञात हैं। ऐसे कोश-कारों में अजयपाल (धरणीकोश के कर्ता), रन्तिदेव, रभस, आदि अनेक विद्वान् प्रसिद्ध हैं।

अधिकतर कोशों में सज्ञाशब्दों का ही बाहुल्य है। कतिपय कोश क्रिया के अर्थ का निरूपण करने के लिए भी लिखे गए हैं। ऐसे क्रियाकोशों मे दो कोश विख्यात है—भट्टमल्ल (१२ वीं शति) की आख्यातचन्द्रिका तथा हलायुध का कविरहस्य। इस प्रकार के अन्य ग्रन्थों मे ये भी प्रसिद्ध हैं—विद्यानन्द का क्रिया-कलाप, वीरपाण्ड्य की क्रियापदार्थदीपिका, रामचन्द्र का क्रियाकोश, गुणरत्नसूरि का क्रिया-रत्नसमुच्चय तथा दशबल का धातुरूप भेद। इन ग्रन्थों का उल्लेख 'आख्यातचन्द्रिका' की भूमिका में किया गया है। इसी प्रकार उणादि कोष भी रचा गया है। अब तो कोष-ग्रन्थों की व्यापकता इतनी बढ गई है कि ग्रन्थविशेष में प्रयुक्त शब्दों के सम्बन्ध मे भी कोषग्रन्थों की रचना होने लगी है। कादम्बरी आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों के कोष तैयार होने लगे हैं। इसके साथ ही प्रत्येक शास्त्र के पारिभाषिक-कोष एवं शास्त्रीय-कोषों की भी अब बाढ-सी आ गई है। सार्वजनिक लोकोपयोगी विधि एवं व्यवहार-कोषों की भी रचना हो गई है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसको अभिलक्षित कर कोष-रचना न हुई हो। रामायण-

कोष, महाभारतकोष, पुराणकोष, व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र, मीमांसा, न्याय, योग, तन्त्र, सांख्य, वेदान्त, अर्थशास्त्र आदि सभी विषयों के कोष अब उपलब्ध हो चुके हैं। जो विषय अछूते रह गए हैं उन विषयों पर भी कोषग्रन्थों की रचना शीघ्र हो जायगी। उपनिषदों के आधार पर जैकब का उपनिषद्-वाक्यकोष बहुत पहले ही बन चुका था (१८९१ ई०)।

कोषविद्या के इस संक्षिप्त विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्कृत तथा प्राकृत के विद्वानों ने अपनी शब्दनिधि को सुरक्षित रखने तथा प्रचलित करने के लिये कोषग्रन्थों की रचना कर जो प्रयास किये हैं वे सर्वथा श्लाघनीय हैं। विश्व में कोषग्रन्थों का इतना विस्तृत एवं प्राचीन परिचय चीनीभाषा को छोड़ कर फिर संस्कृत में ही विद्यमान है। इस धरोहर को सुरक्षित रखना प्रत्येक संस्कृतज्ञ का पवित्र कर्तव्य है।

—गोपालदत्त पाण्डेय
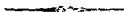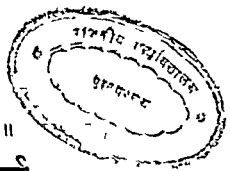
॥ श्रीः ॥

आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोशः

अ

अ, देवनागरीवर्णमालायाः प्रथम स्वरवर्ण, अकार ।

अ-, (=नञ्), अव्य० (स) तत्सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता । अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः । उदाहरणानि—(सादृश्ये) अब्राह्मण = ब्राह्मणसदृश, (अभावे) अभोजनम् = भोजनाभाव, (अन्यत्वे) पटोऽघटः = घटभिन्न, (अल्पत्वे) अनुदरी कन्या = अल्पोदरी, (अप्राशस्त्ये) अधन चर्मधनम् = अप्रशस्तधनम्, (विरोधे) अधर्म परापकार = धर्मविरोधी ।

अंक, स पु (स) चिह्न अभिज्ञानं, लक्षणम् २ संख्याचिह्नम् (१, २, ३ आदि) ३ लेख ४ भाग्यम् ५. रूपकभाग ६ क्रोडम् ७ शरीरम् ।

—गणित, स पु (स न) गणितभेद, अङ्कविद्या ।

—गत, वि, गृहीत, निरुद्ध ।

—पाली, स स्त्री, परिचारिका ।

—दायिनी, स स्त्री, पत्नी, जाया ।

—देना, भरना वा लगाना, मु, आलिंग् (भ्वा, प से), आश्लिष् (दि, प अ) ।

अंकन, स पु (स न) चिह्न-लक्षण,-दानम् २ लेखनम्, ३ गणनम् ।

अंकित, वि (स) चिह्नित, लाञ्छित, २ लिखित ।

अंकुर, स पु (स) अङ्कुर, प्ररोह, उद्भिद (पु) ।

अंकुरित, वि (स) स्फुटित, सांकुर, उद्भिन्न ।

अंकुश, स पु (स)सृ(स्र)णि (स्त्री), अङ्कुश ।

अँकोर, (अँकवार), स पु (स अङ्क) क्रोड -ट-डा, उत्सङ्ग २. उत्कोच, उपायनम् ।

अँखुआ, स. पु, दे 'अंकुर' ।

अंग, स. पुं (स न) शरीर, देह, काय, २. अवयव, प्रतीक, अंगक, अपघनः ३. अंश, भाग ४. वेदाङ्गशास्त्राणि [= शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्दस् (न.) ।

—ज, स. पु (स) पुत्र ।

—जा, स स्त्री (स) पुत्री, तनया ।

—खिंचना, स पु, आक्षेपक (रोगभेद) ।

—फड़कना, स पु, ताण्डव-नर्तन,-रोग २ अंगस्फुरण (शकुनभेद) ।

—रखा, स पु (स अगरक्षक >) अगरक्षणी ।
—राग, स पु (स) गात्ररञ्जन, विलेपनम् ।
अँगरेज, स पु (पुर्त इगलेज) आग्लदेशीय ।
अँगरेजी, स स्त्री (हिं अँगरेज) आग्लभाषा ।
अगार (-रा,) स पु (स) अगार र, दग्धकाष्ठखण्ड अज्ञान, उल्मूकम् , निर्धूमाग्नि ।
अँगिया, स स्त्री (स अगिका) कञ्चुलिका, कञ्चुली, कचूलम् , आंगिक क, चेलिका, कु (कू) र्पास सक ।
अगी, वि (स गिन्) शरीरिन् , देहिन २ अवयविन् ३ प्रधान, मुख्य ४ दे 'अँगिया' ।
अगीकार, स पु (स) अगाकरण, स्वीकार, प्रतिग्रह , प्रतिपत्ति (स्त्री) आदानम् ।
—करना, क्रि, स अगी स्वी, कृ (त उ अ), आ दा (जु आ अ), प्रतिपद् (दि आ अ) प्रति-इष् (तु प से) ।
अंगीकृत, वि (स) स्वी कृत उररी, कृत, आ स-उप, श्रुत, उपगत ।
अगीठी, स स्त्री (हिं अगीठा) अगार, धानिका शकटी, हसनी, हसन्ती ।
अगीय, वि (स) अगदेशीय २ शारीरक, कायिक ।
अगुल, स पु (स) अष्टयवपरिमाणम् ।
अगुली, स स्त्री (स) अगुलि (स्त्री), अगुरी रि (स्त्री), करशाखा ।
—काटना, मु, वि स्मि (भ्वा आ अ) चकित (वि)+भू ।
—चटखाना, मु अगुली, मोटन० स्फोटनम् ।
अगुश्ताना, स पु (फा) अगुलित्राणम् , अङ्गुष्ठत्राणम् ।
अगुष्ठ, स पु (स,) वृद्धाङ्गुलि (स्त्री) ।
अगूठा, स पु (स अगुष्ठ) वृद्धाङ्गुलि (स्त्री) ।
—चूमना, मु, चाटुभि तुष् (प्रे), अधीन (वि)+भू ।
—दिखाना, मु, सावमान प्रत्यादिश् (तु प अ) ।
अँगूठी, स स्त्री (हिं अँगूठा) अङ्गुरी (ली) य, अङ्गुरी (ली) यक, मुद्रा, ऊर्मिका ।
अगूर, स पु (फा), (बेल) द्राक्षा, स्वाद्वी, मधुरसा, गोस्तनानी २ (फल) द्राक्षाफलम् आदि ।
अगूरी, वि (फा) द्राक्षामय २ द्राक्षावर्ण ।
अगोछा, (पु स हिं अग+पोंछना) अंगप्रोञ्छनम् ।
अघ्रि स पु (स) चरण, पाद २ वृक्षमूलम् ३ छन्दश्चरणम् ।
अचल स पु दे आँचल ।
अजन, स पु (स न) कज्जल, नेत्ररजनम् ।
अजर पजर, स पु (स पजर रम्) (पसली) पर्शुका, पार्श्वक, पार्श्वास्थि (न) २ कराल-लम्, पजर रम् ।
अजली, स स्त्री (स) अजलि, कर-हस्त, सम्पुट ।
अजस, वि (स) सरल अवक्र २ निष्कपट निर्व्याज । (अजसी स्त्री०) ।
अजाम, स पु (फा) परिणाम , फलम्, अन्त, पाक ।
अजित, वि (स) साजन, कज्जलकलित ।
अजीर, स पु (फा) (वृक्ष) अजीर ,उदुम्बर जातीया वृक्ष २ (फल) अजीरम् ।
अजुमन, स स्त्री (फा) सभा, परिषद् (स्त्री) ।
अझा, स पु (स अनध्याय) अनध्यायदिवस २ अवकाश , क्षण , कार्यनिवृत्ति (स्त्री) ।
अटिया, स स्त्री (हिं अंटी) गुच्छ , सघात, लघुभार ।
अँटियाना, क्रि स (हिं अटी) छलेन आत्मसात् कृ । स पु , छलेन अपहार , ग्रसनम् ।
अटी, स स्त्री (स अष्ठि >) ग्रन्थि , शाटिकाया कटिलग्न कुञ्चन मोटन वा २ अगुलीनां मध्यस्थमन्तरम् ।
अड, स पु (स पु न) मुष्क , वृषण , शुक्रग्रन्थि २ दे 'अडा' ३ विश्वम्, लोक मण्डलम् ४ वीर्यं, शुक्रम् ।
—कोश, स, पु (स) दे. 'अड' ।
—कोश बढ़ना, स पु, मुष्क वृषण कोश, वृद्धि (स्त्री) शोफ ।
—ज, स पु , खगसर्पमीनादयो जीवा ।
अड बड, स पु (अनु०) प्रलाप , अनर्थक वचनम् २ वि , व्यर्थ, अव्यवस्थित ।
अडा, स पु (स अण्डम्) कोष श , डिम्ब, पेशी शि (स्त्री) ।
—देना, क्रि स, अण्डानि प्रसू (अ आ अ) ।
—सेना, क्रि स, अण्डेभ्य प्रजोत्पत्ति कृ ।
अडाकार, वि (स) अण्डाकृति ।
अडी, स स्त्री (सं एरण्ड) रुचक , चित्रक , गद २ एरण्डफलस्य बीजम् ३ वस्त्रभेद ।

—विश्वास, स पु (स) निर्विवेक तर्कशून्य, विश्वास प्रत्यय विश्रम्भ ।
अंधा, स पु (स अन्ध) अनयन, अनेत्र, नेत्रहीनजीव । वि०, विवेक विचार, शून्य रहित।
—धुंध, स स्त्री, घोरान्धकार, अन्धन्तमस (न) (२) कुप्रबन्ध, अन्याय । वि० विचार -याय, शून्य रहित। क्रि वि, निरङ्कुश, अन्धवत्, रभसा, साहसेन, असमीक्ष्य।
अंधेर, स पुं (स अन्धकार >) अन्याय, उपद्रव, अत्याचार, कुव्यवस्था।
—खाता, स पु अव्यवस्था, अन्यथाचार, कुव्यवस्था ।
—करना, मु, अन्याय्य आचर् (भ्वा प से)।
अँधेरा, स पु (स अन्धकार) ध्वान्त, तमिस्र, तिमिर, तमस् (न), वि निरालोक, निष्प्रभ तमो, वृत मय ।
घना–, अन्धतमसम्।
थोड़ा–, अवतमसम्।
व्यापक–, सन्तमसम्।
अँधेरे घर का उजाला, मु, एकल सुत, एकाकिपुत्र ।
अँधेरी, स स्त्री (हिं अँधेरा) प्रकम्पन, वात्या, झञ्झावात २ कृष्णा रात्री, निश्चन्द्रा रजनी।
—कोठरी, स स्त्री, निरालोक कोष्ठ, २ गर्भ ३ रहस्यम्।
अंध्र, स पु (स बहु०) अन्ध्रराज्यम् २ अभजना ३ वंश-विशेष ।
अंब, स पु (स आम्रम्) आम्र रसाल, फलम् २ रसाल, आम्र (वृक्ष)।
अंबक, स पु (स न) नेत्रम्, नयनम् (सं पु) पितृ, जनक ।
अंबर, स पु (स न) आकाश श, गगनम्। २ वस्त्र, वसनम्। ३ मेघ, जलद ४ सुगन्धिद्रव्यभेद ।
अंबरीष स पुं (स) अयोध्याया वैष्णवनृप विशेष २ विष्णु ३ शिव ।
अंबा, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री), जननी २ पार्वती, दुर्गा।
अंबार, स पु (फा) निकर, राशि, समार ।
अंबारी, स स्त्री (अ अमारी) परितो (छो) म, प्रवेणी, सज्जना, कल्पना ।
अंबालिका, सं स्त्री (सं) मातृ (स्त्री), जननी २ सम्राजी ३ विचित्रवीर्यपत्नी।
अंबिका, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री) २ पार्वती ३ विचित्रवीर्यजाया ।
अंबु, स पु (स न) जल, पानीयम्।
—ज, स पु (स न) कमलम्।
—द, स पु (स) मेघ, जलद ।
—धि,-निधि,-पति,-राशि, स पु (स) सागर।
अंभ, स पु [स अम्भस (न)] जल, वारि (न)।
अंभोज, स पु (स न) कमलम्।
अंभोद, स पु (स) मेघ, अम्बुद ।
अंभोधि, स पु (स) अंभो, निधि, राशि, समुद्र ।
अंश, स पु (स) वि, भाग, खण्ड ड, शकल लं, प्र, देश अवयव, अङ्गम् २ वृत्तस्य षष्ट्यधिकत्रिशततमो भाग ३ लाभांश ४ भाज्यांक ५ रिक्थांश ।
अक्ष- स पु (स) (–Degree of latitude)
देशान्तर, स पु (स) स्वांश (= Degree of longitude)
अंशु, स पु (स) किरण, रश्मि ।
—माली, स पु (स लिन्) अंशुमत, सूर्य ।
अकंटक, वि (स) निष्कण्टक, कण्टक-शल्य, शून्य २ निर्विघ्न, निरन्तराय ३ शत्रुशून्य।
अकड़, स स्त्री (स आ × कृ=गर्व करना) गर्व, दर्प २ धृष्टता ३ आग्रह ।
—बाज़, वि (हिं × फा) दृप्त, गर्वित २ धृष्ट ३ आग्रहिन्।
—बाज़ी, स स्त्री, अभिमानित्व, दृप्तत्वम्।
अकड़, स स्त्री (स आ+कडु=कड़ा होना) प्रस (सा) र, आतान, आतति (स्त्री) २ दृढ़ता, अनम्रता ३ वक्रता ।
—वाई, स स्त्री, गात्रोपघात, आक्षेप, उद्वेष्टनम्।
अकड़ना¹, क्रि अ (स आकडनम्) गर्व्, आ कट (दोनों भ्वा प से)।
अकड़ना², क्रि अ (स आकड्डनम्) आकड्ड् (भ्वा प से), दृढी-वक्री, भू।
अकथ, वि (स अकथ्य) अकथनीय, वर्णनातीत, अनाख्येय।
अकबक, स स्त्री (अनु०) प्रलाप २, चिन्ता ३ चैतन्यम्। वि चकित, अवाक्।
अकरणीय, वि (स) अविधेय, अकार्य।

अकर्म, स पु (स अकर्मन् न) कुकार्यम् २ पापम्।

अकर्मक, वि (स) कर्मरहित (क्रिया, धातु आदि)।

अकसर, क्रि वि (अ) प्राय, प्रायश, बहुश, सामान्यत (सब अव्य०)।

अकसीर, स स्त्री (अ) रसायन, इदृशो रसभेदो यो धातून् सुवर्णीकरोति २ सञ्जीव नौषधम्। वि, अमोघ, सिद्धिकर।

अकस्मात्, क्रि वि (स सहसा, एकपदे, अकाण्डे, अनकित, दैवात् हठात् (सब अव्य०)।

अकाज, स पु (स अकार्यम्) कार्यहानि (स्त्री), विघ्न, अन्तराय २ कुकार्यम्। क्रि वि., व्यर्थ, निष्प्रयोजनम्।

अकाट्य, वि (स अ + हिं काटना) अखण्डनीय, अप्रत्याख्येय, अबाध्य।

अकाय वि (स) विदेह, अशरीरिन्।

अकारण, वि (स) निष्कारण, अहेतुक, निर्निमित्त २ स्वयम्भू। क्रि वि, निष्प्रयोजन निष्कारणम्।

अकारथ, वि (स अकार्यार्थ) निष्फल, मोघ। क्रि वि, वृथा, व्यर्थम्।

अकारान्त, वि (स) अदन्त, अवर्णान्त।

अकारादि, अवर्णा वि (स) अवर्ण,-आरम्भ उपक्रम।

अकार्य, वि (स) अकर्तव्य, अकरणीय २ अनुचित। स पु (स न) कु-निन्दित,-कार्य कर्मन् (न)।

अकाल, स पु (स) दुर्भिक्ष, दुष्काल, नीवाक, आहाराभाव २ कुसमय।

—मृत्यु, स स्त्री (स पु) असामयिको मृत्यु।

अकालिक, वि (स) अनवसर, अप्राप्तकाल, असमयोचित।

अकाली, स पु (स लिन्) गुरुनानकमतानुयायिभेद।

अकासी, दे० 'चील'।

अकिंचन, वि (स) निर्धन, निःस्व, दरिद्र, दीन।

अकिंचनता, स स्त्री (स) दारिद्र्य, निर्धनता, दीनता।

अकिंचित्कर, वि (स) अशक्त, असमर्थ, अक्षम।

अकिल, स स्त्री दे 'अक्ल।'

अकिल्बिष, वि (सं) निष्पाप, अनघ, निर्दोष।

अकीदत, स स्त्री (अ) श्रद्धा, निष्ठा।

—मन्द, वि, श्रद्धालु, सनिष्ठ, निष्ठावत्।

अकीदा, स पु (अ) विश्वास, मतम्।

अकीर्ति, स स्त्री (स) अ-अप, यशस् (न), वाच्यता।

अकुलाना, क्रि अ (स आकुल>) त्वर् (भ्वा आ से), आकुली २ आकुली भू, उद्विज् (तु आ अ)।

अकूत, वि (स अ+हिं कूतना) अमित, अगणित।

अकृतज्ञ, वि (स) कृतघ्न (कृतघ्नी स्त्री), अकृतवेदिन्।

अकृत्रिम, वि (स) नैसर्गिक, स्वाभाविक २ यथार्थ, वास्तविक ३ हार्दिक।

अकेला, वि (स एकल) एकाकिन् (नी स्त्री), असहाय २ अनुपम, अप्रतिम।

अकेले, क्रि वि (हिं अकेला) असहायमेव, -मात्र।

अकोतर सौ, वि (स एकोत्तरशतम्) एकाधिकशतम्।

अक्खड, वि (स अक्षर>) उग्र, उद्धत, उच्छृङ्खल २ कलह कलि, प्रिय, युयुत्सु ३ निर्भय ४ अशिष्ट ५ जड ६ स्पष्टवादिन्।

—पन, स पु, उग्रता, कलहप्रियता, निर्भयता, असभ्यता जाड्यम्, स्पष्टवादिता।

अक्टोबर, स पु (अ) आंग्लवर्षस्य दशमो मास।

अक्ल, स स्त्री (अ) बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा।

—मंद, वि, बुद्धिमत्, प्राज्ञ।

—मंदी, स स्त्री, बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता।

अक्ष, स पु (स) देवन, पाशक (हिं पाँसा) २ अक्षरेखा ३ द्यूत पाशक क्रीडा ४ रुद्राक्ष ५ व्यवहार (हिं मुकदमा) ६ आत्मन् ७ इन्द्रियम् ८ नयनम्।

—क्रीडा, स स्त्री (स) द्यूत पाशक,-क्रीडा।

—माला, स स्त्री (स) जपमाला, अक्षसूत्रम्।

अक्षत, वि (स) अव्रण, अखण्डित, समग्र। स पु (सं नित्य बहु) देवपूजार्थं व्रीहय (बहु०) २. यवा।

—योनि, वि स्त्री (स) पुरुषसंसर्गरहिता (कन्या नारी वा), ब्रह्मचारिणी ।

—वीर्य, वि पु (स) स्त्रीसम्भोगरहित (पुरुष), ब्रह्मचारिन् ।

अक्षम, वि (स) असहिष्णु, क्षमाशून्य, अतितिक्षु २ अशक्त, असमर्थ ।

अक्षमता, स स्त्री (स) असहिष्णुता २ अशक्तत्वम् ।

अक्षय, वि (स) नित्य, अक्षय्य अव्यय, अक्षर, अनश्वर २ कल्पान्तस्थायिन् ।

अक्षय्य, वि (स) दे 'अक्षय' ।

अक्षर, वि (स) अच्युत स्थिर, नित्य । स पु , अकारादयो वर्णा , ध्वनिचिह्नानि ।

—न्यास, स पु (स) लेख , लेख्यम् ।

—शः , क्रि वि (स) प्रत्यक्षर, सामस्त्येन ।

अक्षि, स स्त्री (सं न) नेत्र, नयनं, चक्षुस (न), लोचनम् ।

—गोलक, स पुं (स) अक्षिमण्डलम् ।

—तारा, सं स्त्री (स) कनीनिका, तारका ।

—पटल, स पु (स न) नेत्र नयन, च्छद (हिं पलक) ।

अक्षुण, वि (स अक्षुण्ण) अभग्न, समग्र, अच्छिन्न ।

अक्षौनि, स स्त्री (स अक्षौहिणी) सख्या विशेषयुक्ता सेना, सम्पूर्णा चतुरंगिणी सेना (=१०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़, २१८७० रथ, २१८७० गज) ।

अक्स, स पु (अ) प्रति, छाया प्रति, चित्र रूपम् ।

अक्सर, दे 'अकसर' ।

अखंड, वि (स) सम्पूर्ण, समग्र २ सतत, निरन्तर ३ निर्विघ्न, निर्बाध ।

अखंडनीय, वि (स) अभेद्य, अविभाज्य २ पुष्ट, दृढ ।

अखंडित, वि (स) दे 'अखंड' ।

अखड़ैत, सं पु (हिं अखाड़ा) मल्ल , बाहुयोध ।

अखबार, स पु (अ) समाचार वृत्त सवाद, पत्रम् ।

—नवीस, स पु सम्पादक , समाचार वृत्त-लेखक ।

अखरना, क्रि अ (सं अ + हिं खरा) अप्रीति जन् (प्रे), अपरज् (प्रे), न रुच् (भ्वा आ से) ।

अखरावट (-टी), स स्त्री (स अक्षर>) वर्णमाला २ वर्णमालाक्रमानुसारी पद्यसमूह ।

अखरोट, स पु (स अक्षोट), (वृक्ष) अक्षोट २ (फल) अक्षोटम् ।

अखलाक, स पु (अ) चरित्रम् , सदाचार । सभ्यता, शिष्टता ।

अखाड़ा, स पु (स अक्षवाट) मल्लभूमि नियुद्धभू (स्त्री) २ साधुमण्डलम् ३ साधु निवास ४ गायकसमुदाय ५ रंगभूमि , नृत्य शाला ६ अंगनम् , आजरम् ।

अखाद्य, वि (स) अभक्ष्य, अनशनार्ह ।

अखिल, वि (स) समग्र, समस्त, निखिल ।

अखिलात्मा, स पु (स—त्मन्) परमात्मन् , विश्वात्मन् ।

अखाह, अव्य (अनु) अहह ।

अगड़धत्ता, वि (स अग्रोद्धत >) दीर्घ, आयत २ लब, उच्च ।

अगड़बगड़, वि (अनु) अक्रम असङ्गत । स पु , प्रलाप २ व्यर्थ कार्यम् ।

अगणनीय, वि (स) सामान्य, साधारण २ असख्य, गणनातीत ।

अगण्य, वि (स) तुच्छ, प्राकृत २ असख्येय, सख्यातीत ।

अगतिक, वि (स) अशरण, निराश्रय, अनाथ ।

अगद, वि (स) नीरोग निरामय, स्वस्थ । स पु (स) औषध, भेषज, भैषज्यम् ।

अगदकार, स पु (स) वैद्य , जीवद ।

अगम वि (स अगम्य) दुर्गम, गहन २ विकट, कठिन ३ दुर्लभ, दुष्प्राप ४ अज्ञेय, दुर्बोध ५ अगाध, गम्भीर ।

अगम्य, वि (स) दे 'अगम ।

अगर¹, स पु (स अगुरु न) वंशिक, राजार्ह, कृष्णम् ।—बत्ती, स स्त्री , (स अगुरुवर्ती) ।

अगर², अव्य (फा) यदि, चेत् ।

—चे, अव्य (फा) यद्यपि, अपि ।

अगल बगल, क्रि वि (फा) इतस्ततः , उभयतः , उभयत्र ।

अगला, वि (स अग्र>) पूर्व, पौरस्त्य २ पूर्ववर्तिन् , प्रथम ३ प्राचीन, पुराण ४ आगामिन् ५ अपर, द्वितीय । सं पु , प्रधान , २ प्राज्ञ ३ पूर्वज ।

अगवाई, स स्त्री (स अग्रे+गमन>) प्रत्युद्गमन, प्रत्युद्गमनम्। स पु, नेतृ, अग्रणी (पु)।

अगवाडा, म पु (स अग्रवाट >) गृहद्वारस्य पुरोवर्तिनी भूमि (स्त्री) २ गृहस्याग्रिमो भाग।

अगवानी, स स्त्री दे 'अगवाई'।

अगस्त, स पु (अ आगस्ट) आङ्ग्लवर्षस्याष्टमो मास।

अगस्त्य, स पु (स) ऋषिविशेष २ नक्षत्रविशेष ३ वृक्षभेद।

अगहन, स पु (स अग्रहायन-ण) मार्गशीर्ष।

अगाऊ, स पु (स अग्र>) अग्रिम, पूर्वदत्त मूल्यादा। वि आग्रम अग्रय।

अगाडी, क्रि वि (स अग्रे) पुरत, पुरस्तात् २ अनागतवेला, भविष्यत्काल। स स्त्री, अश्वस्याग्रिमा रज्जु (स्त्री)।

अगिनबोट, स पु (स अग्नि+अ) अग्निपोत, वाष्पीयनौ (स्त्री)।

अगुआ, स पु (स अग्र>) अग्रसर, अग्रणी (पु) २ मुख्य, नायक, ३ पथप्रदर्शक ४ विवाहसम्पादक।

अगुण, वि (स) निर्गुण मूर्ख। स पु दोष, दूषणम्।

—ज्ञ, वि (स) अनभिज्ञ, अपरीक्षक।

अगुरु, वि (स) सुवाह्य २ अशिष्ट। स पु (स) लघु ह्रस्व, वर्ण ३ दे 'अगर' स पु।

अगोचर, वि (स) इन्द्रियातीत, अतीन्द्रिय, अप्रकट, अव्यक्त, अप्रत्यक्ष।

अग्नि, स स्त्री (स पु) अनल, पावक ज्वलन, वह्नि, दहन, हुताशन, वैश्वानर, कृशानु, हुतवह, हव्यवाहन, चित्रभानु, विभावसु, शुक्र, शुचि।

—कर्म, स पु (स न) देवयज्ञ, अग्निहोत्रम्। २ शवदाह, अन्त्येष्टिसंस्कार, अग्निक्रिया।

—क्रीडा, स स्त्री (स) दे 'आतशबाजी'।

—ज्वाला, स स्त्री (स) अग्नि, जिह्वा शिखा, अर्चिम् (स्त्री, न), कील-ल।

—दाह, स पु (स) प्लोष, ताप, ज्वलन २ शवदाह।

—परीक्षा, स स्त्री (स) तप्तदिव्यम् २ अग्नौ सुवर्णादिपरीक्षणम्।

—बाण, स पु (स) अनल-दहन, शर सायक।

—विद्या, स स्त्री (स) अग्निहोत्रविधि।

—शुद्धि, स स्त्री (स) अग्निना शोधनम् २ दे 'अग्निपरीक्षा'।

—संस्कार, स पु (स) दाहकर्मन् (न), शवदाह २ अग्निना शोधनम्।

—सखा, स पु (स खि) वायु, पवन।

—सेवन, स पु (स न) वह्निनिषेवणम्।

—होत्र, स पु (स न) यज्ञभेद, होम, हवनम्।

—होत्री, स पु (स,त्रिन्) आहिताग्नि, याजक, याज्ञिक।

अग्न्यस्त्र, स पु (स न) आग्नेयास्त्रम्।

अग्न्याधान, स पु (स न) विधिपूर्वमग्निस्थापन २ अग्निहोत्रम्।

अग्र, स पु (स न) अग्रभाग, शिखर, प्रान्त, मुख, अणि, (पु, स्त्री)। वि अग्रसर, उत्तम, प्रधान।

—गण्य, वि (स) ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, मान्य।

—गामी, स पु (स मिन्) पुरोग, नायक।

—ज, स पु (स) अग्रजन्मन्, ज्यायान् भ्रातृ (पु)।

—णी, स पु (स णी, पु) नायक, नेतृ, पुरोग।

—भाग, स पु (स) पूर्व पुरो-भाग खण्ड।

—यायी, स पु (स यिन्) अग्रसर, पुरोगामिन्।

—वर्ती, वि (स र्तिन्) अग्रस्थ, पुरःस्थित।

—सर, स पु (स) नायक, अग्रणी (पु), नेतृ।

—अग्रह, स पु (स) अग्रहणम्, त्याग।

—अग्रानीक, स पु (स न) सेना,मुख, अग्रम।

—अग्राह्य, वि (स)

अग्रामीण, नागरिक २ वन्य, अगृह्य।

अग्राशन, स पु (स न) देवादिदेयो भक्ष्याग्राश।

अग्रासन, स पु (स न) समान—श्रेष्ठ—आसन स्थानम्।

अग्राह्य, वि (स) त्याज्य, परिहार्य, हेय।

अग्रिम, वि (स) भाविन्, आगामिन् २ प्रधान, अग्रय।

अघ, स पु (स न) पाप, पातक, दुरितम्, एनस् (न) २ दुःखम् ३ व्यसनम्।

अघट, वि (स अ+घट्) अशक्य, असम्भव २ दुर्घट, दुष्कर।

अघट, वि (हिं घटना) अक्षय, अक्षय्य, अव्यय।

अघटित, वि (स) अभूत २ असम्भव ३ कठिन ४ अयोग्य।

अघमर्षण, वि (स) अघ पाप, हारिन् नाशक। स पु, ऋग्वेदस्य पापनाशक सूक्तविशेष।

अघारि, वि (स) पापनाशक २ अघदैत्यस्य नाशक कृष्णो विष्णुर्वा।

अघोर, वि (स) सौम्य शोभन, प्रियदर्शन।

—नाथ, स पु (स) शिव, भूतनाथ।

—पथ, स पु (स -पथ) शैवानां सम्प्रदायविशेष।

अघोरी, स पु (स अघोर >) अघोरमतानुयायिन् २ सर्वभक्षक ३ दुर्दर्शन।

अघोष, वि (स) नीरव, निःशब्द २ अल्पध्वनियुत ३ गोपहीन। स पु, वर्णमालाया 'क, ख, च, छ, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ, श्, ष, स्' वर्णा।

अचभा, स पु (स असम्भव>) आश्चर्य, विस्मय २ चमत्कार, कौतुकम् ३ अद्भुत वस्तु (न)।

अचभित, वि (हिं अचम्भा) चकित, विस्मित।

अचकन, स पु (स कञ्चुक)।

अचक्षु, वि (स क्षुम्) अध २ निरिन्द्रिय ३ अतीन्द्रिय।

अचर, वि (स) स्थावर, अचल।

अचरज, स पु (स आश्चर्यम्) विस्मय, चमत्कार।

अचल, वि (स) निश्चल, स्थिर २ चिरस्थायिन्, नित्य। स पु (स) पर्वत, गिरि २ कील, शकु ३ सप्तसख्या ४ ब्रह्मन् (न) ५ शिव ६ आत्मन्।

अचला, वि (स) स्थिरा, गतिरहिता। स स्त्री (स) पृथिवी।

अचानक, क्रि वि (स अज्ञानक>) अकस्मात्, सहसा, एकपदे, अकाण्डे। (सब अव्य)

अचार, स पु (फा) सन्धित, सन्धान, तेमन, निष्ठानम्।

अचिंतनीय, वि (स) अतर्क्य, अचिन्त्य, अज्ञेय।

अचिंतित, वि (स) अतर्कित, अविचारित, आकस्मिक २ निश्चिन्त।

अचिंत्य, वि (स) अज्ञेय, अतर्क्य, कल्पनातीत २ अतुल ३ आशातीत ४ आकस्मिक।

—आत्मा, स पु (स —त्मन्) परमात्मन् अतर्क्यस्वरूप।

अचिकित्स्य, वि (स) अनुपचार, असाध्य (रोगादि)

अचिति, स स्त्री (स) अज्ञानम्, अबोध।

अचिर, अव्य, (स) शीघ्र सपदि (अव्य) २ वर्तमाने ३ किंचित् पूर्वम्। वि क्षणिक, नश्वर २ वर्तमान, —विषयक सम्बन्धिन्।

अचीती, वि (स अचिन्तित) आकस्मिक २ अचिन्त्य।

अचूक, वि (स अ + हिं चूकना) अमोघ, सफल। क्रि वि, अवश्य ध्रुवम्।

अचेत, वि (स -तस) अचेतन, निष्प्राण, निर्जीव २ व्याकुल ३ अनवहित ४ मूढ।

अचेतन, वि (स) विचेतन, जड, निष्प्राण, स्थावर २ नि सज्ञ, मूर्च्छित। स पु जडद्रव्यम्।

अचैतन्य, वि (स) अचेतन, स्थावर। स पु (स न) निर्जीवता, निष्प्राणता।

अच्छा, वि (स अच्छ=स्वच्छ>) उत्तम, भद्र, श्रेष्ठ २ निर्मल।

अच्छाई, स स्त्री (हिं अच्छा) भद्रता, सौजन्यम्।

अच्छिद्र, वि (स) निश्छिद्र २ पूर्ण, अखण्डित।

अच्छेद्य, वि (स) अभेद्य अलाव्य, अविनाशिन्।

अच्युत, वि (स) अपतित २ दृढ, नित्य ३ अमोघ।

अछूता, वि (स अछुप्त) अस्पृष्ट २ नव, पवित्र।

अजट, स पु (अं एजेंट) प्रतिनिधि -हस्त।

अजसी, स स्त्री (अं एजेंसी) प्रतिनिधि, —कार्यालय निवास।

अज, वि (स) स्वयम्भू, जन्महीन। स पु ब्रह्मन् (पु) २ विष्णु ३ शिव ४ कामदेव ५ छाग ६ मेष।
अजगर, स पु शयु, वाहस।
अजगरी, स स्त्री (स अजगर >) आलस्यम्।
अज़दहा, स पु (फा) दे 'अजगर'।
अजनबी, वि (फा) आगन्तुक, विदेशीय अपरिचित।
अजन्मा, वि (स जन्मन्) अज स्वयम्भू, अनादि।
अजब, वि (अ) अद्भुत, विचित्र विलक्षण।
अज़मत, स स्त्री (अ) प्रताप, प्रभुत्व, महत्त्वम्।
अजय्य, वि (स) अधृष्य, अदम्य, अजेय।
अजर, वि (स) जराहीन, वार्द्धक्यरहित।
अजवायन, स स्त्री (स यवानिका) दीप्यकः, ब्रह्मदर्भा।
अजस्र, क्रि वि (स न) सदा, अनवरत, नित्यम्।
अज़हद, क्रि वि (फा) असीम, अत्यधिक।
अजा, वि स्त्री (स) जन्महीना। स स्त्री छागी २ प्रकृति (स्त्री)।
अजात, वि (स) असृष्ट, अनुत्पन्न, जन्महीन।
—शत्रु, वि (स) शत्रुहीन, सर्वमित्रम्। स पु युधिष्ठिर २ शिव ३ मगधराजविशेष।
अजान, वि (स अज्ञान) मूर्ख, मन्द २ अज्ञात, अपरिचित। स पु, अज्ञानिता, अज्ञता।
अज़ाब, स पु (अ) यातना, पीडा।
अजामिल, स पु (स) कश्चित् पापी ब्राह्मणो यो मृत्युकाले नारायणनामकस्य निजसुतस्य नामोच्चार्य मुक्तिं लेभे।
अजायब, स पु (अ 'अजब' का बहु०) अद्भुतवस्तूनि, विलक्षणा व्यापारा।
—घर, स पु अद्भुतालय, संग्रहालय।
अजित, वि (स) अपराजित, स्वतन्त्र। स पु, विष्णु २ शिव ३ बुद्ध।
—इन्द्रिय, वि (स) इन्द्रियलोलुप, विषयासक्त।
अजिन, स पु (स न) मृग-,चर्मन् (न), दृति (पु स्त्री), कृत्ति (स्त्री)।
अजिर, स पु (स न) अङ्गन, प्राङ्गण, चत्वर रम्।
अजी, अव्य (सं अयि !) भो, आर्य, अङ्ग (सखे)।
अज़ीज़, वि (अ) प्रिय, तात, वत्स।
अजीत, वि (स अजित) अजेय, अजय्य, अधृष्य।
अजीब, वि (अ) अद्भुत, विलक्षण, विचित्र।
अजीर्ण, स पु (स न) अजीर्णि (स्त्री), मन्दाग्नि, अन्नविकार, अपाक २ आधिक्यम्। वि नव, नूतन।
अजीवन, वि (स) आजीविका-उपजीविका,-रहित-हीन स पु (स न) मृत्यु।
अजूबा, स पु (अ) अद्भुत वस्तु (न), विचित्रवार्ता।
अजेय, वि (स) दे 'अजय्य'।
अजैकपाद, स पु (स) रुद्रविशेष २ विष्णु।
अजैव, वि (स) जीवन,-हीन-विरहित (इन-आर्गेनिक)
अज्ञ, वि (स) मूर्ख, मूढ, अज्ञानिन्।
अज्ञता, स स्त्री (स) जाड्य, मौर्ख्य, मूढता।
अज्ञात, वि (स) अविदित, अबुद्ध, अपरिचित।
—वास, स पु (स) गुप्तवास।
अज्ञान, स पु (सं न) अविद्या, जाड्य, मूर्खता।
अज्ञानता, स स्त्री (स) जडता, अबोधता।
अज्ञानी, वि (स -निन्) मूढ, मूर्ख, अबोध।
अज्ञेय, वि (स) अतर्क्य, बोधागम्य, ज्ञानातीत।
अटंबर, स पु (स अट्ट + फा अंबार) राशि (पु), समार, निचय।
अटक, स स्त्री (हि अटकना) विघ्न, बाधा २ सङ्कोच ३ सिन्धुनदी ४ नगरविशेष ५ हानि (स्त्री)।
अटकना क्रि अ (हिं अ + टिकना) १ प्र उप,-राम् (दि प से), विरम् (भ्वा प अ) निवृत् (भ्वा आ से), स्था (भ्वा प अ), निश्चल (वि) + भू। २ पाशे पत् (भ्वा प से), जालबद्ध (वि) + भू, निरत आसक्त (वि) + भू ३ खिद् (दि प से), अनुरञ्ज् (कर्म०), भाव-अभिलाष + बन्ध् (क्र् प अ) ४ विवद् (भ्वा आ से), विप्रलप् (भ्वा प से), वैरायते (ना धा)।
अटकल, स स्त्री (स अट + कल >) अनुमान, वि,तर्क, ऊहा, अनुमिति (स्त्री)।
—पच्चू, स पु कपोलकल्पना, अनुमानम्। वि काल्पनिक।

—बाज़, वि, अनुमातृ।

अटकाना, क्रि स (हिं अटकना) अव स्था (प्र), रुध् (रु उ अ) २ पाशेन बन्ध (क्र प अ) जाले धृ (चु) ३ स्नेह पाशै ब ध।

अटकाव, स पु (हिं अटकना) विघ्न, बाध। २ विलम्ब।

अटन, स पु (स न) भ्रमण, चलन, विचरणम्।

अटपट, वि (अनु०) कठिन, कुटिल, विकट २ जटिल, गूढ ३ असम्बद्ध, असगत ४ प्रस्खलत्-विपर्यस्त (शत्)।

अटपटाना, क्रि अ (हिं अटपट) आकुली भू, मुह (दि प से) २ विकस्प विलम्ब् व्याशक् (भ्वा आ से)।

अटपटी, स स्त्री (हिं अटपट) सभ्रम, व्यामोह विकल्प, वितर्क।

अटब्बर, स पु (स आडम्बर >) अहकार, गर्व।

अटल, वि (स अ + हिं टलना) अचल, स्थिर, नित्य, ध्रुव, अवश्यभाविन्।

अटलस, स पु (अ) मानचित्र-देशालख्य, ग्रन्थ।

अटारी, स स्त्री (स अट्टाली) अट्ट द्र, अट्टाल लिका, शिरोगेह, चन्द्रशाला तल्पिनी।

अटाला, स पु (स अट्टाल >) राशि, निचय २ परिच्छद, यात्रासामग्री ३ मासिक सौनिक, वमति (स्त्री)।

अटूट, वि (स अ + हिं टूटना) अच्छेद्य, अखण्डनीय २ अजेय, अजय्य ३ निरन्तर ४ अत्यधिक।

अटेरन, स पु (स अति+ इरण >) सूत्रवल यनिर्माणार्थं लघुकाष्ठयन्त्रम्, आवापनम्।

अटेरना, क्रि स (हिं अटेरन) आवापनेन पक्षी रच (चु)।

अट्टहास, स पु (स) अति प्र उच्चै, हास।

अट्टी, स स्त्री (हिं अटना) पक्षी।

अट्टालिका, स स्त्री, (स) दे 'अटारी'।

अट्ठा, स पु (स अष्टन् >) अष्टचिह्नयुक्त क्रीडापत्रम्।

अट्ठाईस, वि (स अष्टाविंशति स्त्री)।

—वाँ (-वीं), अष्टाविंश (शी), अष्टाविंशतितम (मी)।

अट्ठानवे, वि (स अष्ट (1) नवति स्त्री)।

—वाँ, (वीं) वि, अष्ट (1) नवतितम (मी), अष्ट (1) नवत (-ती)।

अट्ठावन, वि (स अष्ट (1) पञ्चाशत् स्त्री)।

—वाँ, (-वीं), वि अष्ट (1) पञ्चाशत्तम (-मी), अष्ट (1) पञ्चाश (-शी)।

अट्ठासी, वि (स अष्टाशीति स्त्री)।

अट्ठासिवाँ (-वीं), अष्टाशीतितम (-मी), अष्टाशीत (-ती)।

अठकौसल, स पु (स अष्टन्+अ कौसिल) सभा, ससद् परिषद् (स्त्री), गोष्ठी ३ (स्त्री) २ म त्रणा-णम्।

अठखेली, स स्त्री (स अष्टकेलि >) चपलता, चाञ्चल्य, कल्लोल। २ मत्तगति (स्त्री), मदोद्धतगमनम्।

अठन्नी, स स्त्री (स अष्टन् + आण >) अष्टाणी, अष्टाणकी।

अठपहला, वि (स अष्टन् + फा पहलू) अष्ट, कोण पार्श्व।

अठपाव, स पु दे 'कथम'।

अठवाँसा, वि (स अष्टमास) आष्टमासिक (शिशु) २ सीमन्तोन्नयनसस्कार।

अठवारा, स पु (हिं आठ + फा वार) • अष्टवार, अष्टाह, दिनाष्टकम्। २ सप्ताह, दिनसप्तकम्।

अठहत्तर, वि (स अष्ट (1) सप्तति स्त्री)।

—वाँ (-वा), वि, अष्ट (1) सप्ततितम (-मी), अष्ट (1) सप्तत (-ती)।

अठारह, वि (स अष्टादश)। -वाँ (-वीं) अष्टादश (-शी)।

अडगा, स पु (हिं अड़ाना + टाँग) विघ्न, हस्तक्षेप, बाध -धा।

अड़चन, स स्त्री (हिं अड़ना+चलना) विघ्न, कठिनता, आपत्ति (स्त्री)।

अड़तालीस, वि (स अष्ट (1) चत्वारिंशत् स्त्री)

—वाँ (-वीं) वि, अष्ट (1) चत्वारिंशत्तम (-मी), अष्ट (1) चत्वारिंश (-शी)।

अड़तीस, वि (स अष्टात्रिंशत् स्त्री)।

—वाँ (वीं), वि, अष्टात्रिंशत्तम (-मी), अष्टात्रिंश (-शी)।

अड़ना, क्रि अ (स अड् = रोकना >) दे 'अटकना २ आग्रह न मुच् (तु उ अ) निर्बन्धेन स्था (भ्वा)।

अडवंग, वि (हिं अड़ना + स वक्र) वक्र, विषम, नतोन्नत २ विकट, दुर्गम ३ विलक्षण ।
अडवोकेट, स पु (अ एड्वोकेट) पक्षसमर्थक , दे 'वकील'।
अडसठ, वि (स अष्ट (1) षष्टि स्त्री)।
—वाँ (-वा), वि अष्ट (1) षष्टितम (-मी), अष्ट (1) षष्ठ (-ष्ठी)।
अडाना, क्रि स , दे 'अटकाना'।
अडिग, वि (स अ + हिं डिगना) निश्चल, स्थिर दृढ ।
अडियल, वि (हिं अड़ना) उद्धत दुर्दम, दुर्विनीत २ अलस, तन्द्रालु ३ अविनेय स्वैरन् दुराग्रह ।
अडी, स स्त्री (हिं अड़ना) दुराग्रह, हठ , निर्बन्ध , प्रतिनिवेश ।
अडीठ, वि (स अदृष्ट) अदृश्य, लोचनागोचर २ गुप्त, अन्तर्हित ।
अडोल, वि (स अ + हिं डोलना) अचल, निष्कम्प, स्थिर ।
अडोस पडोस, स पु (हिं पडोस) सन्निधि, उपकण्ठ , सामीप्य प्रतिवेश ।
अडोसी पडोसी, स पु (हिं, अडोस पडोस) प्रति वेश वेश्य -वासिन् वासिन् , निकट-समीप, स्थ वासिन् ।
अड्डा, स पु (स अट्टा >) निवेशस्थान, लगन २ आस्थान (-नी) ३ सङ्केत-गूढ स्थल, समागम सङ्केत स्थानम् ४ चतुष्पाद्यम् ।
अड्रेस, स, पु (अ एड्रेस) अभिनन्दनपत्रम् २ पत्रसज्ञा, निवाससङ्केत ।
अणि, स स्त्री (स) अणी, धारा,अग्र, कोटि (स्त्री), सीमा, प्रान्त ।
अणिमा, स स्त्री (स अणिमन् पु) अणुता, सूक्ष्मता २ योगस्याष्टसिद्धिषु प्रथमा, यया योगिनोऽदृश्या भवन्ति ।
अणिमादिक, स स्त्री (स) योगस्याष्टसिद्धय , (= अणिमा महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति , प्राकाम्य, ईशित्वम्, वशित्वम्)।
अणु, स पु (स) लव , लेश , षष्टिपरमाणु मात्र कण , धूलिकण । वि., अतिसूक्ष्म क्षुद्र ।
—वीक्षण,स पु (स न) सूक्ष्मदर्शकयन्त्रम् । २ छिद्रान्वेषणम् ।
अत , क्रि वि (स) अस्मात् कारणात् ,अनेन कारणेन हेतुना, इति हेतो ।
अत एव, क्रि वि (स) अस्मादेव कारणात् , अनेनैव हेतुना ।
अतर, स पु (अ इत्र) निर्यास , पुष्पसार ।
—दान, स पु (अ + फा) पुष्पसारपात्रम् ।
अतरसौं, क्रि वि (स इतर + श्व >) आगामी गतो वा तृतीयो दिवस ।
अतर्कित, वि (स) अविचारित, आकस्मिक (-की स्त्री), अचिन्तित ।
अतर्क्य, वि (स) अचिन्त्य, अचिन्तनीय, अविवेच्य, अनिर्वचनीय ।
अतल, वि (स) तलहीन, अतिगम्भीर । स पु (स न) सप्तसु पातालेषु प्रथमम् ।
—स्पर्शी, वि अतिगम्भीर, अतलस्पृश् ।
अतलस, स स्त्री (अ) अतिचिक्कण कौशेय पटभेद ।
अतलान्तक, स पु (अ एटलांटिक) अन्धमहासागर समुद्रविशेष ।
अता, स पु (फा) दान, त्याग विसर्जनम् ।
—करना, —फरमाना, मु , दे० 'दना।'।
अति, वि (स अव्य) अत्यन्त अत्यर्थ अधिक । स स्त्री., आधिक्य, अतिशय , सीमालङ्घनम् ।
अतिकथा, स स्त्री (स) अतिरञ्जित,—कथा— —आख्यायिका—भाषण । २ निरर्थक-व्यर्थ,—भाषणम् ।
अतिकाल, स पु (स) विलम्ब , कालातिपात ।
अतिक्रमण, स पु (स न) नियम मर्यादा सीमा -उल्लंघन अतिक्रम ।
अतिथि, स पु (स) अभ्यागत , प्राघुण , प्राघुण (णि) क , गृहागत २ सन्यासिन् ।
—पूजा, स स्त्री , आतिथ्य, अतिथि-सत्कार सेवा क्रिया ।
—यज्ञ, स पु (स) अतिथिपूजा ।
अतिरिक्त, क्रि वि (स) विना, ऋते अतिरिच्य, विहाय (सब अव्य)। वि (स) अवशिष्ट २ भिन्न, पृथक् ।
अतिवेला, स स्त्री (स) दे 'अतिकाल' ।
अतिशय, वि (स) बहु अधिक ।
अतिसार, स पु (स) प्रवाहिका ।
अतीन्द्रिय, वि (स) अगोचर, इन्द्रियातीत, अव्यक्त, पराक्ष ।
अतीत, वि (स) गत, व्यतीत २ विरक्त, निर्लेप ३ मृत, दिवगत ।

अतीव, वि (स अव्य) अधिक, बहु, प्रभूत।
अतुल, वि (स) अतुल्य, अतुलित, अनुपम २ अमेय, अत्यधिक।
अत्तार, स पु (अ) गन्धोपजीविन्, गान्धिक, गन्ध, विक्रयिन् वणिज् २ औषधविक्रेतृ ३ मेष नरार।
अत्यन्त, वि (स) अत्यर्थ, अमित अत्यधिक।
अत्याचार, स पु (स) निष्ठुर क्रूर निर्दय, कर्मन् (न) कार्यम् २ पाप, दुरितम् ३ पाप दम्भ, आडम्बर।
अत्याचारी, वि (स-रिन्) पाप, दुराचारिन् २ निष्ठुर, क्रूरकर्मन् ३ पापण्डिन्, धर्मध्वज।
अत्युक्ति, स स्त्री (स) वागुपचय, सत्याति क्रम २ अलंकारभेद (सा)।
अथ, अव्य (स) मंगलसूचकशब्द २ आरम्भ ३ अनन्तरम्। —च, अव्य (स) अन्यच्च, अपर च, अपि च, किंच।
अथर्व, स पु (स अथर्वन्) चतुर्थवेद।
अथर्वणि, स पु (स) अथर्ववेदज्ञ २ पुरोहित।
अथवा अव्य (स) वा, किं वा यद् वा।
अथाह वि (स अ+हिं थाह) अगाध अतल स्पृश, अतिग (ग) भीर २ अत्यधिक अतीव ३ गूढ, दुर्बोध।
अदत, वि (स) दशन दन्त, विहीन रहित २ अजात दन्त-दशन।
अदद, स पु (अ) संख्या २ संख्यायाचिह्न संकेतो वा
अदना, वि (अ) तुच्छ, क्षुद्र २ साधारण प्राकृत।
अदब, स पु (अ) शिष्टाचार, शिष्टता विनय।
अदम्य, वि (स) प्रचण्ड अजेय, दुर्दम।
अदरक, स पु (स आर्द्रक) शृङ्गवेरम्।
अदल, स पु (अ) न्याय, धर्म नय।
अदलबदल, स पु (अ) परि-वर्त वर्तन वृत्ति (स्त्री), विपर्यय।
अदा, वि (अ) दत्त, शोधित। स स्त्री, लीला विभ्रम २ प्रकार, विधि।
अदालत, स स्त्री (अ) न्यायालय, अधिकरण, व्यवहारमण्डप, न्याय धर्म, सभा।
अदालती, वि (अ अदालत) आधिकरणिक, न्यायालयसम्बन्धिन्।
अदावत, स स्त्री (अ) शत्रुता, वैरम्।
अदूरदर्शी, वि (स-र्शिन्) स्थूलबुद्धि अज्ञ।
अदृश्य, वि (स) परोक्ष, अगोचर, अलक्ष्य।
अदृष्ट, वि (स) अन्तर्हित, लुप्त, अलक्षित।
—पूर्व, वि अद्भुत, अभूतपूर्व, विलक्षण।
अदेह, वि (स) अकाय, अशरीर। स पु, कामदेव, मदन।
अदोष, वि (स) निर्दोष, निष्पाप, निरपराध।
अद्भुत, वि (स) विस्मय आश्चर्य-जनक, अपूर्व, अलौकिक।
अद्भुतालय, स पु (स) संग्रहालय।
अद्वितीय, वि (स) एकल, एकाकिन्, एक २ अनुपम, अतुल्य ३ प्रधान।
अद्वैत, वि (स) दे 'अद्वितीय' (१, २)।
—वाद, स (स) 'ब्रह्मैव सत्यं अन्यद सर्व मिथ्या' इति सिद्धान्त।
अध, अव्य (स) नीचै, अधस्तात् (दोनों अव्य)।
—पतन, स पु (स न) नीचै पतन २ अवनति (स्त्री) ३ दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री) ४ विनाश, क्षय।
अध, वि (स अर्द्ध) सामि (समास में ही)।
—कचरा, वि, अपरिपक्व, अपूर्ण २ अदक्ष, अकुशल।
—कपारी, स स्त्री, अर्द्धशिरावेदना, अर्द्धाव भेदक।
—खिला, वि, अर्द्धविकसित, सामिविकच।
—खुला, वि, अर्द्धविवृत, अर्द्धापावृत २ अर्द्धो न्मीलित।
—पई, स स्त्री, अर्द्धपाद, पादार्द्धम्।
—मरा / —मुआ } मृत, प्राय-कल्प, अर्द्ध सामि, मृत।
—सेरा स पु, अर्द्धसेर, सेरार्द्धम्।
अधन, वि (स) निर्धन, दरिद्र।
अधन्नी, स स्त्री (स अर्द्धाणी) अर्द्धाणकी, अर्द्धांग-णक।
अधन्य, वि (स) मन्दभाग्य, गर्ह्य।
अधम, वि (स) नीच, निकृष्ट २ पापिन्, दुष्ट।
—अधम, वि (स) पापिष्ठ, महानीच।
अधमर्ण, वि (स) ऋणिन्, धारक, ऋणग्रस्त।
अधमाग, (स पु (स न) पाद, पद, पदम्।
अधमा सं स्त्री (स) नायिका भेद २ ३ वर्क शा-अन्त्यजा, नारी।

अधमाई, स स्त्री (स अधम>) नीचता, अधमता।
अधर, स पु (स) अधस्तन ओष्ठ (२) (ऊपर का) ओष्ठ, रद-रदन-दन्त-दशन च्छद।
—अधर, स पु (स) अधस्तन ओष्ठ।
—बिंब, स पु (स न) रक्तौष्ठ।
अधर, स पु (स अ+हिं धरना) आकाश वा अन्तरिक्षम्। वि हेय २ नीच।
अधर्म स पु (स) पाप, पातक अन्याय दुष्कर्मन् (न)।
अधर्मी, वि (स-मिन्) पाप पापिन् पातकिन्।
अधार्मिक, वि (स) दे 'अधर्मी'।
अधिक, वि (स) बहु प्रभूत २ अतिरिक्त शेष।—तर, क्रि वि., प्राय, प्रायश बहुश।
—ता, स स्त्री (स) बहुत्व आधिक्य बाहुल्यम्।
—मास, स पु (स) पुरुषोत्तम-मल-असंक्रान्त मास।
अधिकरण, स पु (स न) आधार, आश्रय २ कारकविशेष (व्या) ३ प्रकरण शीर्षकम्।
अधिकाश, स पु (स) अधिकभाग। वि बहु। क्रि वि प्राय, बहुश।
अधिकाधिक, वि (स) अधिकतम, भूयिष्ठ।
अधिकार, स पु (स) प्रभुत्व, स्वत्व, २ स्वामित्व, आधिपत्यम् ३ क्षमता, योग्यता ४ प्रकरण, शीर्षकम्।
अधिकारी, स पु (स रिन्) प्रभु, स्वामिन् २ स्वत्ववत् ३ योग्य, क्षम। (स्त्री अधिकारिणी, स)।
अधिकृत, वि (स) हस्तगत, उपलब्ध। स पु, अध्यक्ष, अधिकारिन्।
अधिकृति, स स्त्री (स) स्वत्वम्, अधिकार।
अधिक्रमण, स पु (स न) आरोहणम् २ आक्रमणम्।
अधिक्षिप्त, वि (स) तिरस्कृत, अपमानित २ क्षिप्त ३ प्रेषित।
अधित्यका, स स्त्री (स) पर्वतस्योर्ध्वा भूमि (स्त्री)।
अधिदेव, स पु (स) इष्ट-कुल-देव।
अधिनायक, स पु (स) अधिकृत, अधिकारिन्, आधिकारिक, कार्यविशेष २ प्रभु, स्वामिन्।
अधिप, स पु (स) स्वामिन् २ अधिकारिन् ३ नृप।
अधिपति, स पु (स) दे 'अधिप'।
अधिवास, स पु (स) निवास-स्थल-स्थान २ परगृहेऽधिको वास।
अधिवेशन, स पु (स न) सभा, समाज, गोष्ठी, समागम।
अधिष्ठाता, स पु (स -तृ) अध्यक्ष निर्वाहक, प्रभु, व्यवस्थापक, अवेक्षक, प्रवर्तक चालक अधिष्ठातृ।
अधीन, वि (स) आश्रित वशीभूत, आज्ञानुवर्तिन् विवश, परवश।
अधीनता, स स्त्री (स) परवशता, परतन्त्रता।
अधीर, वि (स) धैर्यरहित उद्विग्न, व्याकुल, विह्वल चपल २ सन्तोषशून्य।
अधीश } स पु (स) स्वामिन् २ नायक: ३ नृप।
अधीश्वर }
अधूरा, वि (हिं अध+पूरा) अपूर्ण, अर्द्ध, खण्डित, असमाप्त।
अधेड़, वि (हि अध) गतयौवन, मध्यमवयस्क।
अधेला, स पु (हिं अध) अर्द्धपण।
अधोगति, स स्त्री (स) पतन, अवपात, विनिपात। - अवनति (स्त्री), क्षय, दुर्दशा।
अध्यक्ष, स पु (स) स्वामिन्, प्रभु २ नायक, अधिकारिन् ३ अधिष्ठातृ।
अध्ययन, स पु (स न) पठन पाठ, अधीति (स्त्री), वाचन, अध्याय।
अध्ययनीय, वि (स) अध्येतव्य, पठितव्य।
अध्यर्द्ध, वि (स) सार्द्धैक।
अध्यवसान, स पु (स न) निश्चय २ प्रयत्न ३ अध्यवसाय।
अध्यवसाय, स पु (स) सततोद्योग, निरन्तरपरिश्रम २ उत्साह ३ निश्चय।
अध्यवसायी, वि (स-यिन्) उद्योगिन्, उद्यमिन्, उत्साहिन्, उद्युक्त।
अध्यापक, स पु (स) शिक्षक, गुरु, उपदेष्टृ, शास्तृ। (स्त्री, अध्यापिका)।
अध्यापकी, स स्त्री (स अध्यापक >) शिक्षण, अध्यापन, पाठनम्, अध्यापक-व्यवसाय।
अध्यापन, स पु (स न) दे 'अध्यापकी'।

अध्याय, स पु (स) पाठ , सर्ग , परिच्छेद , ग्रन्थविभाग ।
अध्येतव्य, वि (स) पठनीय, पठितव्य, अध्ययनार्ह, पाठ्य, अध्येय ।
अध्येता, स पु (स अध्येतृ) पाठक, विद्यार्थिन् ।
अध्व, स पु (स ध्वन्) मार्ग , पथिन् ।
—ग, स पु (स) पान्थ , पथिक , यात्रिक ।
अध्वर, स पु (स) यज्ञ, याग, मख, सत्र क्रतु ।
अध्वर्यु, स पु (स) ऋत्विग्भेद , यज्ञे यजुर्वेद मन्त्रपाठी ब्राह्मण ।
अनग, वि (स) अकाय देहहीन । स पु काम , मदन ।
अनत, वि (स) अपार, अशेष, निरवधि २ सतत, अविरत, निरन्तर ३ नित्य, अनश्वर । स पु विष्णु २ शेषनाग ३ आकाश ४ बाहुभूषणभेद ।
अनतर, क्रि वि (स १ अव्य) पश्चात्, ऊर्ध्व पर (पचमी के साथ, उ नत पर ६) २ सतत । वि, अव्यवहित, सन्निहित, आसन्न ।
अनगिनत, वि (स अगणित) असख्य, सख्यातीत, बहु ।
अनग्नि, वि (स) अनग्निहोत्रिन् २ अधार्मिक ३ अग्निमान्द्यग्रस्त ४ अविवाहित ।
अनघ, वि (स) निष्पाप, निर्दोष २ शुद्ध, पवित्र । स पु (स न) पुण्य, सुकृतम् ।
अनचीता, वि (स • हिं अन+स चिन्तित) अचिन्तित, अकल्पित २ अनिष्ट, अवांछित ।
अनजान, वि (स अन्+हिं जानना) अज्ञ, अज्ञानिन्, मूर्ख २ अज्ञात, अबुद्ध ।
अनड्वान्, स पु (स अनडुह्) वृष वृषभ , बलद । (स्त्री० अनडुही, अनड्वाही = गौ)
अनदेखा, वि (स अन्+हिं देखना) अदृष्ट, अनीक्षित ।
अनधिकार, स पु (स) अशक्ति (स्त्री), असामर्थ्यम् ।
अनधिकारी, वि (स रिन्) अधिकार प्रभुत्व-रहित, अशक्त । स पु, अपात्रम् ।
अनध्याय, स पु (स) अवकाशदिनम् ।
अनन्नास, सं पु (ब्राजीलियन, नानस) क्षुपभेद तत्फल च ।
अनन्य, वि (स) एकनिष्ठ २ अनुपम, अद्वितीय ।
—गति, वि (स) एक, आश्रितगतिक निष्ठ ।
—चित्त, वि (स) एकाग्र, एकाग्रचित्त,अनन्य,-वृत्ति मनस् ।
अनपढ़, वि (स अन्+हिं पढ़ना) निरक्षर, अनक्षर, विद्या ज्ञान, शून्य, अशिक्षित ।
अनबन, स स्त्री (स अन्+हिं बनना) विरोध , वैपरीत्य, विसवाद , मतभेद ।
अनभिज्ञ, वि (स) अज्ञ, अबोध (अनभिज्ञा स्त्री) ।
अनभिज्ञता, स स्त्री (स) अज्ञता, मौर्ख्य, अपरिचय ।
अनमना, वि (स अन्यमनस्-स्क >) खिन्न, म्लान, विषण्ण, उद्विग्न, अवसन्न २ रुग्ण, रोगिन् ।
—पन, स पु, खिन्नता, म्लानता २ अ य मनस्कता ।
अनमिल, वि (स अन् + हिं मिलना) असगत, असबद्ध २ भिन्न, अलग्न ।
अनमेल, वि (स अन् + मेल >) असम्बद्ध २ विशुद्ध ।
अनमोल, वि (स अन्+हिं मोल) अमूल्य, महार्घ, बहुमूल्य २ श्रेष्ठ, उत्तम ।
अनर्गल, वि (स) निरङ्कुश, उच्छृङ्खल, उद्दाम २ विचार विवेक, शून्य ३ निरन्तर ।
अनर्घ, वि (स) दुष्क्रेय, बहुमूल्य २ सुख क्रेय, अल्पमूल्य ।
अनर्घ्य, वि (स) अपूज्य, अवन्द्य २ बहुमूल्य ।
अनर्जित, वि (स) अनुपार्जित, अश्रमेण प्राप्त २ अप्राप्त, अलब्ध ।
अनर्थ, स पु (स) विपरीत अयुक्त, अर्थ २ कार्यहानि (स्त्री), विकार , उपद्रव, अनिष्ट, आपद् (स्त्री) ३ अन्यायार्जित धनम् ।
अनर्थक, वि (स) निरर्थक, अर्थहीन २ मोघ, व्यर्थ ।
अनर्ह, वि (स) अपात्र, अनधिकारिन्, अयोग्य ।
अनल, स पुं (स) दे 'अग्नि' ।
—चूर्ण, स पु (स न) आग्नेयचूर्णम् (= बारूद) ।
अनलस, वि (स) उद्यमिन्, उद्योगिन्, उद्युक्त ।

अनलहक, स पु (अ) अहं ब्रह्मास्मि ।
अनल्प, वि (स) बहु, अधिक ।
अनवगाह, वि (स) अगाध, अनलस्पर्श ।
अनवद्य, वि (स) अनिन्द्य, अवाच्य ।
अनवधान, स पु (स न) प्रमाद, चित्तविक्षेप ।
अनवरत, क्रि वि (स न) निरन्तर, सतत सदा ।
अनवस्था, स स्त्री (स) अव्यवस्था २ व्याकुलता ३ दोषभेद (न्याय०) ।
अनशन, स पु (स न) उपवास, अन्नत्याग निराहारमनन् ।
अनश्वर, वि (स) नित्य अविनाशिन्
अनसुनी वि स्त्री (स अन्+हिं सुनना) अश्रुत अनाकर्णित ।
अनस्तित्व, स पु (स न) अभाव, अविद्यमानता ।
अनहद नाद, स पु (स अनाहतनाद) पिहितकर्णै योगिभि श्रूयमाण शब्दभेद (योग०)
अनहोनी, स स्त्री (स अन्+हिं होना) अलौकिकघटना, असम्भववार्ता ।
अनागत, वि (स) आगामिन्, भाविन् २ अनुपस्थित ३ अज्ञात ४ अन ५ अद्भुत ।
अनाचार, स पु (स) कदाचार, दुराचार २ कुप्रथा, कुरीति (स्त्री) ।
अनाचारी, वि (स रिन्) दुराचारिन्, भ्रष्ट ।
अनाज, स पु (स अन्नाद्यम्) अन्न, धान्य, शस्य, आहार ।
अनाडी, वि (स अनार्य>?) मूर्ख, अज्ञ २ नैपुण्यहीन ।
—पन, स पु, मूर्खता २ नैपुण्याभाव ।
अनाढ्य, वि (स) दरिद्र, निर्धन, अधन ।
अनातप, वि (स) आतपरहित, छायायुत २ शीतल ।
अनाथ, वि (स) नाथ प्रभु, हीन २ मातृपितृहीन ३ असहाय, निराश्रय ४ दीन, परवश ।
अनाथालय, स पु (स) अनाथाश्रम ।
अनादर, स पु (स) अवज्ञा, तिरस्कार, अवधीरणा, अव-अप,-मान, मानभङ्ग ।
अनादि, वि (स) आदि-जन्म-आरम्भ, शून्य, (उ, ईश्वर, जीव, प्रकृतिश्च) ।
अनादित्व, स पु (स न) अनादिता, आरम्भशून्यता, नित्यत्वम् ।
अनादेय, वि (स) अग्राह्य, अग्रहणीय, अपरिग्राह्य ।
अनाप-शनाप, स पु (स अनाप्त> + अनु) प्रलाप, निस्सार निरर्थक वचनम् ।
अनामिका, स स्त्री (स) उपकनिष्ठिका, अनामन् (पु) ।
अनायास, क्रि वि (स न) परिश्रम विना, सहसा अकस्मात् ।
अनार, स पु (फा) (वृक्ष) कुचफल करक, शुकवल्लभ, दाडि(लि)म -मा दाडव २ (फल) कुचफल रक्तबीज, दाडि (लि)मम् ४ (आतशबाजीका) अग्निक्रीडादाडिमम् ।
—दाना, स पु (फा) दाडिमबीजम् ।
अनार्य, स पु (स) दुष्ट, खल, क्षुद्राशय, अधम, जघन्य २ म्लेच्छ ।
अनावश्यक, वि (स) निष्प्रयोजन, अनपेक्षित २ असार, क्षुद्र, उपेक्षणीय ।
अनावृष्टि, स स्त्री (स) अ(ना)वर्षण । अवग्र (ग्रा) ह, जलशोष, वृष्टिविघात ।
अनाहदवाणी, स स्त्री (स अनाहत >) आकाशदेव गगन, गिरा-वाणी ।
अनाहार, स पु (स)भोजनत्याग (२) भोजनाभाव । २ अनशनव्रतिन् ।
अनाहूत, वि (स) अनिमन्त्रित, अनाकारित ।
अनित्य, वि (स) नश्वर, विनाशिन् ३ भङ्गुर, अस्थायिन्, २ मिथ्या, असत्य ।
अनित्यता, स स्त्री (स) नश्वरता, भङ्गुरता, अस्थिरता ।
अनिमि(मे)ष, वि (स) निर्निमेष, स्थिरदृष्टि, निमेषरहित । क्रि वि, निर्निमेष, स्थिरदृष्ट्या । स पु (स) देव २ मत्स्य ।
अनियत, वि (स) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, अनिर्धारित २ अस्थिर, अदृढ ३ अपरिमित ४ विशिष्ट ।
अनियतात्मा, वि (स-त्मन्) अजितेन्द्रिय, लोलचित्त ।
अनियम, स पु (सं) नियमाभाव, व्यतिक्रम ।

अनियमित, वि (स) व्यवस्थारहित, अव्य वस्थित, विधिविरुद्ध २ अनिश्चित, अनियत।
अनियारा, वि, दे 'पैना'।
अनिरुद्ध, वि (स) अरुद्ध २ निर्बाध ३ स्वतन्त्र।
अनिर्दिष्ट, वि (स) अकृतनिर्देश, असंकेतित २ अकथित, अनुक्त ३ अनादिष्ट, अनाज्ञापित।
अनिर्वचनीय, वि (स) अकथनीय, अवर्णनीय, अनिर्वाच्य।
अनिल, स पु (स) वायु, पवन, वात।
अनिवार्य, वि (स) अवश्यभाविन्, अपरिहार्य, ध्रुव, परमावश्यक।
अनिश्चित, वि (स) अनियत, अनिर्द्धारित, अनिर्दिष्ट।
अनिष्ट वि (स) अनपेक्षित अवाञ्छित, अनभिलषित। स पु (स न) अमंगल, अहित, हानि (स्त्री)।
अनी, स स्त्री (स अनी कि) पूर्व-अग्र, प्रान्त भाग।
अनीक, स पु (स पु न) सेना सैन्य २ समूह ३ युद्धम्।
अनीकिनी, स स्त्री (स) सेना, सैन्य २ पूर्णसेनाया दशमो भाग ३ नलिनी, कमलिनी।
अनीति, स स्त्री (स) अन्याय, पक्षपात २ उपद्रव, उत्पात, ३ अत्याचार।
अनु, उपसर्ग (स) सामीप्यभाद्दश्यादिद्योतक उपसर्ग।
अनुकंपा, स स्त्री (स) दया, कृपा अनुग्रह २ सहानुभूति (स्त्री), समवेदना।
अनुकरण, स पु (स न) अनुकार, अनुकृति-अनुवृत्ति (स्त्री), अनुसरण २ विडम्बनम्।
अनुकरणीय, वि (स) अनुकरणार्ह, अनुसरणीय।
अनुकूल, वि (सं) हितकर, उपकारक २ सहाय ३ प्रसन्न।
अनुकूलता, स स्त्री (स) अनुग्रह, कृपा २ सहायता ३ प्रसाद।
अनुकृत, वि (सं) अनुसृत २ विडम्बित।
अनुकृति, स स्त्री (स) दे 'अनुकरण'।
अनुक्त, वि (स) अकथित, अनुदित, अभाषित।
अनुक्रम, स पु (स) अन्वय, आनुपूर्व्य, परंपरा।
अनुक्रमण, स पु (स न) अनु, गमन सरण चलनम्।
अनुक्रमणिका, स स्त्री (स) अनु क्रम, परंपरा, सूची वि (स्त्री) २ ग्रन्थभेद।
अनुक्रोश, स पु (स) अनुकम्पा दया।
अनुक्षण, क्रि वि (स न) प्रतिक्षण २ सततम्।
अनुगमन, स पु (स न) अनु-सरण गति (स्त्री) २ अनुकरण ३ सम्भोग सहवास।
अनुगामी, वि (स मिन्) अनु-यायिन् वर्तिन् २ अनु कर्तृ कारिन् ३ आज्ञापालक ४ सम्भोगिन्।
अनुगृहीत, वि (स) उपकृत २ कृतज्ञ।
अनुग्रह, स पु (स) कृपा, दया, अनुकम्पा।
अनुग्राहक, वि (सं) कृपालु, दयालु, सहायक, उपकारक।
अनुचर, स पु (स) सेवक, किङ्कर, दास २ वयस्य, सहर।
अनुचित, वि (स) अयुक्त अनर्ह, अयोग्य।
अनुज, वि (स) पश्चादुत्पन्न। स पु (स) कनीयान् भ्रातृ २ स्वल्पवयम्। (अनुजा स्त्री)।
अनुजीवी, वि (स विन्) अधीन आयत्त, आश्रित। स पु सेवक, दास।
अनुज्ञा, स स्त्री (स) अनुमति (स्त्री) अनुमतम्। २ आज्ञा, आदेश।
अनुताप, स पु (स) पश्चात्ताप, अनुशय, अनुशोक २ तपन दाह ३ खेद, दु खम्।
अनुत्तर, वि (स) निरुत्तर, प्रतिवचनरहित।
अनुदात्त, वि (स) लघु, तुच्छ २ स्वर भेद (व्या)।
अनुदिन, क्रि वि (स न) प्रतिदिनम्।
अनुनय, स पु (स) विनय, प्रार्थना, आवेदन, याचना, याच्ञा २ प्रसादनं, आराधन, अनुरञ्जनम्।
अनुनाद, सं पुं (स) 'गूँज'।

अनुनासिक, वि (स) मुखनासिकाभ्यामुच्चारणीया वर्णा (ङ, ञ्, ण्, न्, म् तथा अनुस्वार)।

अनुनीत, वि (स) सान्त्वित, प्रसादित २ प्रार्थित, याचित।

अनुपद, क्रि वि (स न) अन्वक, सद्य, पश्चात्, अव्यवहितोत्तरकालम्।

अनुपदिष्ट, वि (स) अदिशिक्षित उपदेश शिक्षा —वर्जित।

अनुपपत्ति, स स्त्री (स) समाधानाभाव असंगति -असिद्धि -अप्राप्ति (स्त्री)।

अनुपपन्न, वि (स) असिद्ध, असपन्न।

अनुपम, वि (स) अप्रतिम निरुपम, अतुल अतुल्य, असदृश, अप्रतिरूप, अद्वितीय अनुपमेय।

अनुपयोगी, वि (स गिन्) निष्प्रयोजन, निरर्थक, निर्गुण, व्यर्थ।

अनुपयोगिता, स स्त्री (स) निरर्थकता व्यर्थता।

अनुपस्थित, वि (स) अविद्यमान, अवर्तमान, दूरस्थ, स्थानान्तरगत।

अनुपस्थिति, स स्त्री (स) असंनिधि, परोक्षता।

अनुपात, स पु (स) सम्बन्धसाम्य, आनुगुण्य २ गणिते त्रैराशिकक्रिया।

अनुपान, स पु (स न) औषधेन सह सेव्य वस्तु (न)।

अनुप्रास, स पु (स) वर्णसाम्यम्, शब्दालंकारभेद (सा, उ कोकिलकुलकलकूजितम् इ)।

अनुबंध, स पु (स) सम्बन्ध, सम्पर्क २ आरम्भपरिणामौ ३ मित्र, सुहृद् ४ ह्रस्वाक्षरं वर्णा (व्या) ५ अनुसरण ६ भाविशुभाशुभे।

अनुभव, स पु (स) साक्षात् उपलब्धं ज्ञानम् २ परीक्षया प्राप्त बोध, परीक्षणम्।

अनुभवी, वि (स विन्) परिणतप्रज्ञ, बहुदर्शिन् सानुभव।

अनुभाव, स पु (स) महत्त्व, प्रभाव, महिमन् २ रोमाञ्चकटाक्षादिचेष्टा (सा)।

अनुभावी, वि (स विन्) अनुभाववत्, प्रभावशालिन्। स पु प्रत्यक्षसाक्षिन् २ मृतस्य निकटसम्बन्धिन्।

अनुभूत, वि (स) साक्षाज्ज्ञात, परीक्षित।

अनुभूति, स स्त्री (स) अनुभव, परिज्ञान, बोध।

अनुमति, स स्त्री (स) अनुज्ञा, अनुमत २ आज्ञा ३ चतुर्दशीयुक्ता पूर्णिमा।

अनुमत्त, वि (स) हर्षोन्मत्त, अत्यानन्दित।

अनुमरण, स पु (स न) दे 'सती होना'।

अनुमाता, वि (स — तृ) तर्कयितृ, ऊहितृ।

अनुमान, स पु (स न) वि-,तर्क, ऊह, अभ्यूह, अभ्यूहन, अनुमिति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, ऊह (भ्वा आ से), अनुमा (जु आ अ अ प अ), तर्क (चु), उन्नी (भ्वा प अ) अनुमान कृ।

—सिद्ध, वि तर्क-अपाद, साधित-दृढीकृत।

अनुमिति, स स्त्री (स) दे 'अनुमान'।

अनुमेय, वि (स) तर्कणीय, अभ्यूहनीय, उन्नेय।

अनुमोदन, स पु (स न) समर्थन, दृढीकरण, उपोद्बलन २ हर्षप्रकाशन, मोदानुभव।

अनुयायी, वि (स यिन्) अनु,-गामिन् कारिन्।

अनुरक्त, वि (स) अनुरागिन्, बद्धानुराग, कृतप्रणय, आसक्तचित्त २ लीन, मग्न।

अनुराग, स पु (स) राग, प्रेमन् (पु न), स्नेह, प्रणय, भाव, प्रीति -आसक्ति (स्त्री)।

अनुरागी, वि (स गिन्) दे 'अनुरक्त'।

अनुरूप, वि (स) सदृश, समान, तुल्य २ योग्य, उपयुक्त, अनुकूल।

अनुरूपता, स स्त्री (स) सादृश्य, सामान्य २ अनुकूलता, उपयुक्तता।

अनुरोध, स पु (स) आग्रह, निर्बन्ध, अभिनिवेश २ प्रेरणा ३ विघ्न।

अनुलेपन, स पु (स न) वि, लेपन, अभ्यञ्जन समालम्भ, उद्वर्तनम्।

अनुलोम, स पु (स) निम्नग अवतरण, क्रम, अवरोह।

—विवाह, स पु (स) उच्चवर्णपुरुषस्य हीनवर्णया स्त्रिया विवाह।

अनुवर्तन, स पु (स न) अनु,-गमन-करण सरणम्।

अनुवर्ती, वि (स तिन्) अनु,-गामिन् कारिन् सारिन्। (अनुवर्तिनी स्त्री)।

अनुवाद, स पु (स) भाषान्तरम् २ पुनरुक्ति- (स्त्री), पुनर्वचनम्।

अनुवादक, स पु (स) भाषान्तरकार।

अनुवादित, वि (स) भाषान्तरित, अनूदित, कृतानुवाद।

अनुवृत्ति, स स्त्री (स) उपजीविका, सेवा मार्ग २ पूर्ववर्तिवाक्याशस्य अर्थस्पष्टार्थे अग्रे योजनम्।

अनुशासक, वि (स) अनुशासितृ नियन्तृ, अनुशास्तृ, अनुशासितृ २ शिक्षक, उपदेशक ३ दडद।

अनुशासन, स पु (स न) आदेश, आज्ञा २ उपदेश, शिक्षा ३ व्याख्यान, विवरणम्।

अनुशासित, वि (स) अनुशिष्ट, नियमित २ उपदिष्ट ३ दण्डित।

अनुशीलन, स पु (स न) चिन्तन मनन, आलोचन २ आवृत्ति (स्त्री), पुनरभ्यास।

अनुशोक, स पु (स) अनु, ताप-शय, पश्चात्ताप।

अनुषग, स पु (स) सम्बन्ध, ससर्ग २ करुणा, दया।

अनुष्ठान, स पु (स न) कार्यारम्भ २ सविधिसम्पादन ३ फलविशेषाय देवताराधन, पुरश्चरणम्।

अनुसन्धान, स पु (स न) अन्वेषणा, निरूपण, मार्गणम् २ प्रयास, प्रयत्न।

अनुसरण, स पु (स न) अनुगमन सहगमन २ अनुकरण ३ अनुकूलाचरणम्।

अनुसार, क्रि वि (स न) अनुकूल, सदृश समान (सब अव्य०)।

अनूचान, स पु (स) साङ्गवेदाध्येता, स्नातक २ विद्यारसिक ३ चरित्रवत्।

अनुस्वार, स पु (स) स्वरान्तरमुच्चार्यमा णाऽनुनासिको वर्णविशेष २ अनुनासिक चिह्न ( )।

अनूठा, वि (स अनुत्थ>) अपूर्व, विलक्षण विचित्र २ सुन्दर, श्रेष्ठ।

—पन, स पु वैचित्र्यम्, वैलक्षण्य।

अनूदित, वि (स) पुनः कथित-वाचन २ अनुवादित, भाषान्तरित।

अनूप, वि (सं) जल, प्राय बहुल। स पु जलप्रायदेश, जलबहुल।

अनूप, वि (स अनुपम) अतुल्य, अद्वितीय २ सुन्दर, स्वच्छ।

अनेक, वि (सं) एकाधिक, बहु, असख्येय।

अनोखा, वि (स अन्+ईक्ष>?) अद्भुत, विलक्षण २ नूतन, नव ३ सुन्दर, मञ्जु।

—पन, स पु, विलक्षणता, नूतनता, सुन्दरता।

अन्न, स पु (स न) भक्ष्यपदार्थ २ दे 'अनाज' ३ पक्वान्न, भक्तम्।

—जल, स पु (स न) भोजनपान २ जीविका, वृत्ति (स्त्री) ३ दैव, दैव-योग घटनागति (स्त्री)।

—दाता, स पु (स तृ) अन्नद, भक्ष्य दायक २ पोषक। (-दात्री स्त्री)।

—पूर्णा, स स्त्री (स) अन्नाधिष्ठात्री देवी।

—प्राशन, स पु (स न) शिशूना संस्कारभेद।

—मयकोश, स पु (स) स्थूलशरीरम्।

अन्ना, स स्त्री (स अम्बा>?) धात्री, उपमातृ (स्त्री), मातृका, अङ्कपाली।

अन्नाद, स पु (स) अन्नभक्षक २ ईश्वर ३ विष्णु।

अन्य सर्व (स) अपर, द्वितीय, अनात्मीय, पर, भिन्न।

—देशीय, वि (स) पर वि, देशीय।

—पुरुष, स पु (स) भिन्न पर अपर, पुरुष २ प्रथमपुरुष (व्या)।

—पुष्ट, स पु (स) पिक, कोकिल।

—मनस्क, वि (स) चिन्तित, विषण्ण, खिन्न।

अन्यत, अव्य (स) अन्यस्मात् अन्यत् स्थानात् वा।

अन्यत्र, अव्य (स) अपरत्र अन्यस्मिन् स्थाने।

अन्यथा, अव्य (स) इतरथा, २ विपरीत, विरुद्ध ३ असत्यम्।

अन्यापदेश, स पु (स) दे 'अन्योक्ति'।

अन्याय, स पु (स) अधर्म, अनय, अनीति (स्त्री)।

अन्यायी, वि (स यिन्) अन्यायवर्तिन्, अन्यथाचारिन्, क्रूर, पाप धर्मविमुख।

अन्याय्य, वि (स) न्याय-धर्म-रहित-विपरीत विरुद्ध।

अन्योक्ति, स स्त्री (स) अन्यापदेश, अलकारभेद (सा)।

अन्योन्य, क्रि वि (स न) परस्पर, मिथः, इतरेतर २ वि परस्पर।

—आश्रय, सं पुं (स) अन्योऽन्यापेक्षा, परस्पराश्रय २ सापेक्षज्ञानम्।

अन्वय, स पु (स) परस्परसम्बन्ध २ संयोग, संसर्ग ३ पद्यपदानां गद्यवाक्यवत् स्थापनम् ४ अवकाश, शून्यस्थान ५. कार्यकारणसम्बन्ध ६ वंश, कुलम्।

अन्वर्थ, वि (स) अर्थानुसारिन्, सार्थक।

अन्वित, वि (स) युक्त, सहित, संगत।

अन्वीक्षण, स पु (स न) ध्यान, भावन, विमर्श २ दे 'अनुसन्धान'।

अन्वेषण, स पु (स न) दे 'अनुसन्धान'।

अन्वेषी, वि (स-षिन्) अन्वेषक, अन्वेष्टृ (पु), गवेषक, अनुसन्धातृ।

अन्वेष्टव्य, वि (स) अन्वेषणीय, अनुसन्धेय, विवेय।

अपंग, वि (स अपाङ्ग) हीनांग, व्यङ्ग, न्यूनाग २ पङ्गु, अशक्त (हीनाङ्गी, पङ्गू स्त्री)।

अपठित, वि (स) अज्ञ, मूर्ख, निरक्षर।

अप, उप (स) वैपरीत्यविरोधविकारवियोगवर्जनादिद्योतक उपसर्ग।

अपकर्ता, वि (स-र्तृ) अनिष्ट-हानि-अहित,-कर्तृ-कर-कारक।

अपकर्ष, स पु (स) नीचैः कर्षणं, पातन २ अवनति (स्त्री), क्षय ३ अपमान, अनादर।

अपकार, स पु (स) अभद्र, अहित, अनिष्टसाधन, हानि अपकृति (स्त्री)।

अपकारक, वि (स) अपकारिन्, हानिकारक।

अपकीर्ति, स स्त्री (स) दुष्कीर्ति, अयशस् (न) वाच्यता, कलंक, निन्दा।

अपकृष्ट, वि (स) पतित, भ्रष्ट २ अधम, निन्द्य ३ घृणित।

अपच, स पु (स >) अपाक, अजीर्ण, अजीर्णि (स्त्री), मन्दाग्नि, अन्नविकार।

अपचय, स पु (स) क्षति हानि (स्त्री) २ व्यय, नाश।

अपढ़, वि (स अपठ) निरक्षर, अशिक्षित, पठनलेखनासमर्थ २ मूर्ख।

अपत्य, स पु (स न) सन्तान, सन्तति प्रसूति (स्त्री), प्रजा, प्रसव, तोकम्।

अपथ, स पु (स पु न) कुविकट, मार्ग, कुपथ।

अपथ्य, वि (स) कुपथ्य, रोगजनक, स्वास्थ्यनाशक २ अहितकर।

अपना, वि (स आत्मन.) स्वीय, स्वकीय, स्वक, आत्मीय, निज, स्व, आत्मद्।

—पन, स पु., आत्मीयता, ममता २ आत्माभिमान।

अपनाना, क्रि स (हिं अपना) आत्मसात् कृ, स्वाधीन स्वायत्त (वि)+कृ २ स्वीकृ, अंगीकृ, प्रतिपद् (दि आ अ), अभ्युपगम् ३ ग्रह (क्र प से)।

अपभ्रंश, स पु (स) पतन अवनति (स्त्री) २ विकार ३ विकृतशब्द ४. प्राकृतभाषाभेद। वि विकृत।

अपमान, स पु (स) अनादर, अवमान, अवज्ञा, अवधीरणा, उपेक्षा, तिरस्कार, परिभव।

—करना, क्रि, स, अवमन् (दि आ अ), उपेक्ष् (भ्वा आ से), अवज्ञा (क्र उ अ), अवगण (चु), तुच्छी लघू,-कृ।

अपमानित, वि (स) अनादृत, अवमानित, अवज्ञात, अवधीरित, अवगणित।

अपमानी, वि (स निन् >) तिरस्कर्तृ, अवज्ञातृ अवगणयितृ।

अपमृत्यु, स पु (स) कुमृत्यु २ अकाल असमय, मृत्यु।

अपयश, स पु (स शस् न) दे 'अपकीर्ति'।

अपर च, अव्य (सं) अन्यच्च २ पुन, पुनरपि।

अपरपार, वि (स अपरपार >) अनन्त, असीम, अमित, निरवधि।

अपर, वि सर्व (स) प्रथम, अग्रिम २ अन्तिम, अन्त्य ३ अन्य, भिन्न ४ आत्मीय, स्वकीय।

—पक्ष, स पु (स) असित-कृष्ण, पक्ष २ प्रतिवादिन्।

अपरा, स स्त्री (स) लौकिक पदार्थ विद्या २ पश्चिमदिशा। वि अन्या।

अपराग, स पु (स) द्वेष, वैरम् २ अरुचि (स्त्री) ३ असन्तोष।

अपराजित, वि (स) अजित, दे 'अजीत'।

अपराजेय, वि (स) अजेय, दे 'अजय्य'।

अपराध, स पु (स) दोष, प्रमाद, स्खलित, छिद्र, पाप, वाच्यम्।

—करना, क्रि अ , विभ्रम् (भ्वा दि, प से), अपराध् (दि स्वा प अ), उत्पथ या (अ प अ), स्खल् विचल् व्यतिचर (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से प्रमाद्यति)।

—हीन, वि (स) अनिर, दोष, अनघ, अनवद्य।

अपराधी, वि (स धिन्) सापराध, दोषिन्, दोषवत्, वाच्य निन्द्य, सावद्य।(अपराधिनी स्त्री)

अपराह्न स पु (स अपराह्न,) पराह्न, विकाल, दिनस्य तृतीयो याम ।

अपरिग्रह, स पु (स) अस्वी अनगी, कार', दानत्याग २ विराग, सगत्याग'।

अपरिचित, वि (स) अज्ञात, पर, पारक्य, अन्यजन २ परिचयरहित अज्ञ।

अपरिमित, वि (स,) असीम, अमित, अनन्त। २ अमरत्य, अगणित ।

अपरिमेय, वि (स) अमेय, अपरिमाण, दुर्मेय, महत्, बहु।

अपरिवर्तनीय, वि (स) स्थिर, ध्रुव २ अपरिहार्य, अवश्यभाविन् ३ अविनिमेय।

अपरिवर्तित, वि (स) अविकृत, परिवर्तन रहित।

अपरीक्षित, वि (स) अकृतपरीक्ष, अननुयुक्त, अप्रश्नित।

अपरेशन, स पु (अ आपरेशन्) शल्य, क्रिया कर्मन् (न),उपाय उपचार चिकित्सा।

अपर्याप्त, वि (स) न्यून, अल्प, हीन, क्षीण।

अपवर्ग, स पु (स) मोक्ष, वि, मुक्ति (स्त्री) निस्तार, निर्वाण २ त्याग, दानम्।

अपवाद, स पु (स) विरोध, प्रतिवाद २ निन्दा, अपकीर्ति (स्त्री) ३ दोष, पाप ४ बाधकशास्त्र, विशेष ।

अपवादी, वि (स दिन्) अपवादक, निन्दक २ बाधक, विरोधिन्।

अपवित्र, वि (स) पाप, अधार्मिक २ अशुद्ध, मलिन, दूषित, अशुचि।

अपवित्रता, स स्त्री (स) धर्महीनता, पाप शीलता २ मलिनता, अशुचिता।

अपव्यय, सं पु (सं) मुक्तहस्तत्व, अति बहु अमित व्यय, अर्थोत्सग ।

अपव्ययी, स पु (स-यिन्) मुक्तहस्त, उत्सर्गिन्, व्ययपर'।

अपशकुन, स पु (स पु न) कुअशुभ दुर्, लक्षण, अजन्य, दुर्निमित्तम्।

अपशब्द, स पु (स) गाली, अपवाद २ अशुद्धपद ३ निरर्थकशब्द ४ अपान अन्त्र, वात वायु ।

अपसव्य, वि (स) दक्षिण सव्येतर २ विप रीत ३ दक्षिणस्कन्धेन यज्ञोपवीतधारणम्।

अपस्मार, स पु (स) भ्रामर, अपविकृति (स्त्री), भूतविक्रिया। दे 'मिरगी'।

अपहरण, स पु (स न) अपहार, मोषण, विलुण्ठनम् २ सगोपन, लोप्त्रम्।

अपहृत, वि (स) चोरित, बलाद नीतम्।

अपह्नुति, स स्त्री (स) अपह्नव, गोपन, प्रच्छादन तिरोधानम्। २ व्याज, कप', छल, अपदेश ।

अपांग, स पु (सं पु न) नेत्रकोण, नयनो पात २ कटाक्ष । वि व्यङ्ग, अगहीन।

अपात्र, वि (स न) गुणहीन, अनर्ह, अयोग्य २ कुभाण्ड, कुपात्रम्।

अपादान, स पु (स न) पृथक् अपा,करणम् २ पञ्चम कारकम् (व्या)।

अपान, स पु (स) नासिकया बहि क्षिप्य माणो वायु २ अन्त्र गुदस्थ, वायु ३ गुद, मलद्वारम्। वि दुःखलशाक (ईश्वर)।

—वायु, स स्त्री (स पु) पचप्राणेषु अन्य तम २ अन्त्र गुदस्थ, वायु ।

अपाप, स पु (स न) पुण्यम्। वि निष्पाप, धार्मिक।

अपाय, स पु (सं) प्रस्थानम् २ पार्थक्यम् ३ लोप ४ नाश ५ विपत्ति. (स्त्री) ६ हानि (स्त्री)

अपार, वि (स) असीम, अनन्त २ असंख्य, बहु।

अपार्थिव, वि (स) अमार्तिक, अमृन्मय २ अभौम ३ दिव्य, अलौकिक।

अपावन, वि (स) अशुद्ध, अपवित्र, मलिन।

अपावरण, स पु (स न) अपावृति (स्त्री), उद्घाटनम् २ आ प्रा ममाच्छा दनम् ३ परिवेष्टनम्, परिवारणम्।

अपाहिज, वि (स अपभज्>) विकलांग (—गो स्त्री) विकल, व्यग, हीनाङ्ग।

अपि, अव्य (स) १ (= भी) = अपि च, पुनश्च, अपर च। २ (= ही) केवल, एव, मात्र।
—च, अन्यच्च, पुनश्च।
—तु, किंतु, परन्तु २ प्रत्युत।
अपील, स स्त्री (अ एप्पील) पुनर्विचार-प्रार्थना २ निवेदन ३ प्रार्थनापत्रम्।
अपीलांट, स पु (अ) निवेदक, विचारार्थ प्रार्थिन्।
अपुत्र, वि (स) निरपत्य, निरसन्तान २ पुत्रहीन।
अपूत¹, वि (स) अपवित्र, अशुद्ध।
अपूत², वि (स अपुत्र दे)। स पु, कुपुत्र।
अपूप, स पु (स) पूप, पिष्टक।
अपूर्ण, वि (स) असमाप्त, सावशेष २ न्यून।
अपूर्व, वि (स) अभूत-अदृष्ट, पूर्व २ अद्भुत, अलौकिक ३ अनुपम, श्रेष्ठ।
अपूर्वता, स स्त्री (स) विलक्षणता, लोकोत्तरता।
अपेक्षा, स स्त्री (स) आकाङ्क्षा, इच्छा, अभिलाष २ आवश्यकता ३ तुलनया, अपेक्षया (दोनों तृतीयान्त)।
अपेक्षित, वि (स) अभीष्ट, आवश्यक।
अप्रचरि(लि)त, वि (स) अप्रयुक्त अव्यवहृत।
अप्रतिपत्ति, स स्त्री (स) बोधासामर्थ्य २ निश्चयाभाव।
अप्रतिभ, वि (स) अप्रगल्भ, प्रतिभा-स्फूर्ति-शून्य २ निर्बुद्धि ३ अलस ४ लज्जावत, सलज्ज।
अप्रतिम, वि (स) अतुल्य, अप्रतिरूप, दे 'अतुल'।
अप्रतिरथ, वि (स) अनुपम-अतुल्य वीर २ अनुपम, अप्रतिम।
अप्रतिष्ठ, वि (स) कुख्यात, अपमानित २ अस्थिर, चचल।
अप्रतिष्ठा, स स्त्री (स) अपमान, असमान, निरस्कार २ अस्थैर्य, चाचल्यम्।
अप्रत्यक्ष, वि (स) परोक्ष, गुप्त, इन्द्रियातीत।
अप्रयुक्त, वि (स) अव्यवहृत, अप्रचरि(लि)त।
अप्रसन्न, वि (स) कुपित, क्रुद्ध २ अप्रीत, अतुष्ट ३ खिन्न, शोकाकुल।
अप्रसन्नता, स स्त्री (स) प्रीति प्रसाद, अभाव २ रोष ३ खेद, विमनस्कता।
अप्रसिद्ध, वि (स) अविश्रुत, अविख्यात २ गुप्त।
अप्रस्तुत, वि (स) अनुपस्थित, अविद्यमान २ अप्रासंगिक ३ अनुचित ४ गौण।
—प्रशंसा, स स्त्री (स) अलंकारभेद (सा)।
अप्राप्त, वि (स) अलब्ध, २ अनधिगत २ दुर्लभ ३ अप्रस्तुत ४ अनागत।
अप्राप्य, वि (स) अलभ्य, अनधिगम्य, अप्राप्तव्य।
अप्रामाणिक, वि. (स) अवैध, प्रमाणशून्य २ अविश्वसनीय।
अप्रासंगिक, वि (स) असम्बद्ध, अप्रस्तुत, प्रकरणासगत।
अप्रिय, वि (स) अनिष्ट, अरुचिकर, अनभिमत। स पु, शत्रु।
अप्रेंटिस, स पु (एप्रेंटिस) अन्तेवासिन्, शिष्य, शिल्पविद्यार्थिन्।
अप्रैल, स पु (अ एप्रिल) आंग्लवर्षस्य चतुर्थमास।
—फूल, स पु चैत्रोपहास्य, मधुमासमूर्ख।
अप्सरा, स स्त्री (स) अप्सरस (स्त्री बहु), स्वर् स्वर्ग, वेश्या, नाकनर्तकी।
अफयून, स स्त्री (फा) दे 'अफीम'।
अफरना, क्रि अ (स स्फार = प्रचुर >) स-परि, तृप-तुष (दि प अ) २ स्फाय (भ्वा आ से), प्र-वृध्, चि (भा वा प्रचीयते) ३ दे 'ऊबना'।
अफरा, स पु (सं स्फार) उदर, स्फीति (स्त्री)-उपचय २ अजीर्णवातादिभि उदर वृद्धि (स्त्री)।
अफरातफरी, स स्त्री (अ अफरात तफरीत) सक्षोभ, अव्यवस्था २ सम्भ्रम, आकुलत्वम्।
अफरीका, स पु (अ एफ्रिका) कालद्वीपम्।
अफल, वि (स) निष्फल, मोघ, व्यर्थ।
अफवाह, स स्त्री (फा) जन, प्रवाद, जन श्रुति (स्त्री), किंवदन्ती, लोक वाद वार्त्ता।
अफसर, स पु (अ ऑफिसर) दे 'अधिकारी'।
अफसरी, स स्त्री (हिं अफसर) अधिकारिता २ शासन।
अफसाना, स पु (फा) कथा, आख्यायिका।
अफसोस, स पु (फा) दुःख, क्लेश २. पश्चात्ताप, अनुशय, अनुशोक, खेद।

अफारा, स पु (हिं अफरना) आध्मानम् (उदररोग)।
अ(ए)फीडेविट, स पु (अ) शपथ पत्रम्।
अफीम, स स्त्री (यू ओपियन, अ ओपियम) अहिफेन अफेनम्।
अफीमी | **अफीमची** | स पु (हिं अफीम) अफेन अहिफेन, भक्षक-व्यसनिन्।
अब, क्रि वि (स अथ, अद्य?) अधुना, इदानीं, सम्प्रति, साम्प्रत, वर्तमाने।
—का, वि, आधुनिक, साम्प्रतिक।
अबज़रवेटरी, स स्त्री (अ आबजर्वेटरी) मानमन्दिर, वेधशाला।
अबतर, वि (फा) निन्दित, गर्ह्य २ विकृत।
अबतरी, स स्त्री (फा) विकार, विकृति (स्त्री)।
अबरक, (-ख) सं पु (स अभ्रक) गिरिजा मल, शुभ्र, बहुपत्रम्।
अबरी, स स्त्री (फा) चिक्कणपत्रभेद २ पीतपाषाणभेद।
अबरू, स स्त्री (फा) भ्रू (स्त्री), भ्रूलता।
अबला, स स्त्री (स) नारी, रमणी।
अबाध, वि (स) निर्विघ्न, निर्बाध २ असीम।
अबाध्य, वि (स) उच्छृङ्खल, उद्दाम २ अनिवार्य, अप्रतिकार्य, दुर्निवार।
अबाबील, स स्त्री (फा) कृष्णा, कृष्ण चटकभेद।
अबीर, स पु (अ) दे 'गुलाल'।
अबूझ, वि (स अबुद्ध) मूर्ख, अज्ञ, अबुध।
अबे, अव्य, (सं अयि?) अरे, हे।
अबोध, स पु (स) अज्ञानं, मौर्ख्यम्। वि, मूर्ख, अज्ञ।
अब्ज, स पु (स न) कमल, पद्मम् २ जलजात पदार्थ ३ शङ्ख ४ चन्द्र ५ धन्वन्तरि ६ कर्पूर ८ ७ शत कोटय।
अब्जा, स स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री), रमा।
अब्द, स पु (सं) वर्ष पै, हायन, वत्सर २ मेघ ३ कर्पूर ४ आकाश शम्।
अब्धि, स पु (स) समुद्र २ तडाग ३ समेति सख्या।
अब्बा, स पु (फा) पितृ, जनक।
अब्र, स पु (फा, स अभ्रम्) मेघ, घन।
अब्रह्मण्य स पु (स न) अब्राह्मणोचित कर्मन् (न) २ हिंसादिकर्मन्।
अब्राह्मण, स पु (सं) अविप्र, अभूसुर, ब्राह्मण विप्र-इतर। वि ब्राह्मणरहित।
अभग, वि (स) पूर्ण, सकल २ नित्य, अनश्वर ३ अनवरत, निरन्तर।
अभगुर | **अभंजन** | वि (स) दृढ, अखण्ड २ अनश्वर।
अभक्त, वि (स) भक्ति-श्रद्धा, हीन-रहित २ अखण्ड, सम्पूर्ण।
अभक्ष्य, वि (स) अखाद्य, अभोज्य।
अभद्र, वि (स) अशुभ, अमांगलिक २ तुच्छ।
अभय, वि (स) निर्भय, अभीत। स पु (स न), भय-त्रास, अभाव।
—दान, स पु (स न) रक्षा त्राण, वचन प्रतिज्ञा २ रक्षणं, शरणदानम्।
—पद, स पु, (स न) मुक्ति (स्त्री)।
अभर्तृका, स स्त्री (स) विधवा, रंडा २ कुमारी, कन्या।
अभव्य, वि (स) अशुभ, अमांगलिक २ कुदर्शन, कुरूप ३ अभवितव्य ४ अद्भुत ५ अशिष्ट।
अभागा, वि (स अभाग) अ मन्द, भाग्य, प्रारब्ध भाग्य, हीन।
अभागी, वि (स गिन्) भाग्यहीन २ भाग हीन, अदायाद।
अभाग्य, स पु (स न) दुर्दैव, मन्द-दौर, भाग्यम्।
अभाजन, स पु (स न) अपात्र, कुपात्र, दुष्ट।
अभाव, स पु (स) सत्ताऽभाव, अविद्यमानता।
अभावनीय, वि (सं) अचिन्तनीय।
अभि, उप (स) सामीप्यदूरताऽभिमुख्य वीप्सादिद्योतक उपसर्ग।
अभिक्रमण, स पु (स न) दे 'आक्रमण'।
अभिख्या, सं स्त्री (सं) शोभा, श्री (स्त्री) २ यशस (न) कीर्ति (स्त्री)।
अभिगमन, स पु (स न) उपसर्पण २ मैथुनम्।
अभिगामी, वि (स मिन्) उपसर्पक २ समोगकर्तृ।
अभिचार, स पु (स) मन्त्रैर्मारणोच्चाटनादिक्रिया।
अभिचारक, वि (सं) अभिचारिन्।

अभिजन, स पु (स) कुल, वंश, २ जन्म भूमि (स्त्री) ३ कुले वृद्धतम पुरुष ४ ख्याति (स्त्री)।
अभिजात, वि (स) कुलीन, सुकुलोत्पन्न २ बुध, पंडित, ३ योग्य ४ मान्य ५ सुन्दर।
अभिज्ञ, वि (स) ज्ञात, विज्ञ २ निपुण, कुशल।
अभिज्ञान, स पु (स न) स्मृति (स्त्री), अनुबोध २ लक्षण, स्मारकचिह्नम्।
अभिताप, स पु (स) अतिशय अत्यधिक ताप-दाह २ पीड़ा, वेदना।
अभिधा, स स्त्री (स) शब्दस्य वाच्यार्थ प्रकाशिका शक्ति (स्त्री, सा)।
अभिधान, स पु (स न) संज्ञा, नामन् (न) २ कथन, ३ शब्दकोश (-श)ष (षन्)।
अभिधायक, वि (स) नामकारक २ वक्तृ ३ परिचायक।
अभिधावन स पु (स न) आक्रमणम्, अभिद्रव।
अभिधेय, वि (स) वाच्य, प्रतिपाद्य। स पु (स न) नामन् (न), संज्ञा।
अभिध्यान, स पु (स न इच्छा, वाञ्छा २ लोभ ३ चिन्तनम्।
अभिनंदन, स, पु (स न) प्रशंसा २ आनन्द ३ संतोष ४ प्रोत्साहन ५ प्रार्थना।
—पत्र, स पु (स न) प्रशंसा प्रतिष्ठा, पत्रम्।
अभिनंदनीय, वि (स) स्तुत्य, वंदनीय।
अभिनय स पु (स) नाट्य, अंगविक्षेप २ अवस्थानुकृति (स्त्री) ३ नाटकक्रीडा।
—करना, क्रि स, नट् निरूप (चु), अभिनी (भ्वा प अ), प्रयुज (चु)।
अभिनव, वि (स) नव, प्रत्यग्र।
अभिनिविष्ट, वि (स) प्रविष्ट २ उपविष्ट ३ मग्न, लीन।
अभिनिवेश, स पु (स) प्रवेश २ मनो योग, एकाग्रचिन्तनम् २ दृढसंकल्प ४ मृत्यु भयक्लेश।
अभिनीत, वि (स) उपनीत २ अलंकृत ३ रूपित, नाटित ४ उचित।
अभिनेता, सं पु (स-नेतृ) नट, नर्तक, कुशीलव, शैलूष (अभिनेत्री, नटी, नर्तकी स्त्री)
अभिनेय, वि (स) नाटयितव्य, रूपणीय, अभिनयार्ह।
अभिन्न, वि (स) अविभक्त, संलग्न, संसृष्ट।
अभिप्राय, स पु (स) आशय, भाव अर्थ, तात्पर्य, प्रयोजनम्।
अभिप्रेत, वि (स) इष्ट, अभिलषित।
अभिभव, स पु (स) पराजय २, अवज्ञा, तिरस्कार।
अभिभावक, वि (स) अभिभाविन्, परानेतृ तिरस्कर्तृ (२) वशिन् (३) संरक्षक।
अभिभाषण, स पु, (स न) सभापति (लिखित)भाषणम् २ व्याख्यानम् ३ कथनम्।
अभिभूत, वि (स) पराजित, विजित २ पीडित ३ वशीभूत ४ व्याकुल।
अभिमन्त्रण, स पु (स न) मंत्रैः पवित्री करण-संस्करणम् २ आवाहनम्।
अभिमत, वि (स) इष्ट, मनोनीत, वाञ्छित २ सम्मत। स पु, मत, मति (स्त्री) २ विचार ३ अभीष्टपदार्थ।
अभिमन्यु, स पु (स) अर्जुनसुत।
अभिमान, स पु (स) अहंकार, गर्व, मद, दर्प, उत्सेक, अवलेप, मान, अहमान।
अभिमानी, वि (स-निन्) गर्वित, दृप्त, मत्त, दरिसक्त अहंकारिन्, मानिन्, अवलिप्त।
अभिमुख, क्रि वि (स) अभि स, मुख मुखे, पुर, पुरत, पुरस्तात्, समक्ष, अग्रे।
अभियुक्त, वि (स) प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन्।
अभियोक्ता, वि पु (स-क्तृ) अर्थिन्, वादिन्, अभियोगिन्।
अभियोग, स पु, (सं) व्यवहार, कार्य, अक्ष २ आक्रमण ३ उद्योग ४ मनो योग।
अभिराम, वि (स) आह्लादक, मनोहर, सुन्दर, रम्य।
अभिरुचि, स स्त्री (स) रुचि प्रवृत्ति (स्त्री), काम, अभिलाष, छन्द, इच्छा।
अभिरूप, वि (स) मनोहर, रमणीय।
अभिलषित वि (स) वाञ्छित, ईप्सित, इष्ट।
अभिलाषा, स स्त्री (स-ष) वाञ्छा, कांक्षा, स्पृहा, ईहा।

अभिलाषी, वि (सं-षिन्) इच्छु ईप्सु, अभिलाष(षु)क, वाञ्छक।
अभिवादन, स पु (स न) प्रणाम, नम स्कार २ स्तुति (स्त्री)।
अभिव्यञ्जक, वि (स) प्रकाशक, सूचक, बोधक।
अभिव्यक्त, वि (स) प्रकटित, दर्शित स्पष्टीकृत।
अभिव्यक्ति, स स्त्री (सं) प्रकाशन, आवि ष्कार, साक्षात्कार।
अभिव्याप्ति स स्त्री (स) सर्व-व्यापकता व्यापिता २ समावेश।
अभिशप्त, वि (स) आक्रुष्ट, शापग्रस्त, अभिशस्त २ मिथ्यादूषित।
अभिशस्ति, स स्त्री (स) अभि, शाप, आक्रोश २ विपत्ति-आपत्ति (स्त्री)।
अभिशाप, स पु (सं) शाप, आक्रोश २ दोषारोप मिथ्याभियोग।
अभिशापित, वि (स) दे 'अभिशप्त'।
अभिषग, स पु (स) पराजय २ निन्दा ३ मिथ्यापवाद ४ आलिंगन ५ शपथ ६ दुःखम् ७ भूतावेश।
अभिषव, स पु (स), सोमस्य निष्पीडनम् २ सोमपानम् ३ यज्ञ ४ यज्ञस्नानम्।
अभिषिक्त, वि (स) स्न(स्ना)पित, प्रक्षा लित २ सिंहासने उपवेशित ३ यथाविधि नियुक्त।
अभिषेक, स पु (स) अभिषेचन, प्रोक्षण, आ अव-सेक २ मार्जन ३ सिंहासने स्थापन ४ यज्ञान्त शान्तये स्नानम्।
अभिष्यद स पु (स) स्रव, क्षरण, प्रवाह २ नेत्ररोगभेद।
अभिसधि, स स्त्री (स पु) अभिसधान, प्रतारण णा, वञ्चन ना २ कुचक्र, षड्यन्त्रम्।
अभिसार, स पु (सं) अभिसरण, नायक नायिकयो निश्चितस्थाने गमन २ आश्रय, साहाय्य ३ युद्धम्।
अभिसारिका, सं स्त्री (स) अभिसारिणी।
अभिसारी, स पु (स-रिन्) अभिसारक।
अभिहित, वि (स) उक्त, कथित, उदित।
अभी, क्रि वि (हिं अब+ही) साम्प्रतमेव, अधुनैव, अचिरात्।
अभीर, सं पु (स आभीर) गोप गोपाल।
अभीष्ट, वि (स) वाञ्छित, अभिलषित २ अभिप्रेत ३ मनोनीत। स पु, मनोरथ।
अभूत, वि (स) अघटित २ वर्तमान ३ विलक्षण।
—पूर्व, वि (स) अघटितपूर्व २ अपूर्व, अद्भुत।
अभेद, स पु (स) भेदाभाव, एकत्व, अभि न्नता २ समानता। वि, भेदरहित समान।
अभेद्य, वि (स) अच्छेद्य अखण्डनीय, अभेदनीय।
अभोज्य, वि (स) दे अभक्ष्य।
अभौतिक, वि (स) अप्राकृतिक २ अगोचर।
अभौम, वि (स) अपार्थिव, अभूमिज।
अभ्यग, स पु (स) लेप, लेपन २ तैल मर्दन, स्नेहनम्।
अभ्यञ्जन, स पु (स न) दे 'अभ्यग' २ नेत्रयो कज्जलनिक्षेप ३ अगराग।
अभ्यतर, स पु (स न) मध्य, मध्य, भाग देश, गर्भ २ हृदयम्।
अभ्यर्थना, स स्त्री (स) प्रार्थना याचना २ प्रत्युद्गमनम्।
अभ्यर्थनीय, वि (स) याचितव्य २ प्रत्युद्ग मनीय।
अभ्यर्दन, स पु (स न) उत्पीडनम् दे।
अभ्यसित, अभ्यस्त, वि (स अभ्यस्त) नित्य, अनुष्ठित आचरित, असकृत् पौन पुन्येन व्याव र्तित सेवित कृत।
अभ्यागत, वि (स) उपस्थित। स पु, अतिथि।
अभ्यास, स पु (स) अभ्यसन, आवृत्ति (स्त्री), अनुशीलनम् २ (=आदत) शील, नित्यव्यवहार, वृत्ति (स्त्री)।
—करना, क्रि स, अभ्यस (दि प से) पुन पुन विधा (जु उ अ)-कृ सतत अनुष्ठा (भ्वा प अ), असकृत् सेव् (भ्वा आ से)।
अभ्यासी, वि (सं सिन्) साधक, अभ्यास आवृत्ति-कर्-कारक।
अभ्युत्थान, स पु (स न) उत्थानम् २ प्रत्युद्गम ३ समृद्धि-उन्नति (स्त्री) ४ आरम्भ, उदय।
अभ्युदय, स पु (स) सूर्यादीनामुदय २ प्रादुर्भाव ३ मनोरथसिद्धि (स्त्री) ४ शुभावसर ५ उन्नति (स्त्री)।

अभ्युपगम, स पु (स) समीपगमन, प्राप्ति (स्त्री) २ स्वीकार, कार ।
अभ्र, स पु (स न) मेघ, जलद २ आकाश ३ अभ्रक ४ सुवर्णम् ।
अमगल, वि (स) अशुभ अभद्र, अशिव । स पु (स न) अशुभ अभद्र, दौर्भाग्य अनिष्टम् ।
अमचूर, स पु (स आम्रचूर्ण) आम्रक्षोद ।
अमन, स पु (अ) शान्ति (स्त्री), उपद्रवाभाव ।
—अमान, —चैन, स पु, सुखशान्ति, मगल, भद्रम् ।
अमर, वि (स) अमर्त्य, नित्य । स पु, देव, देवता (स्त्री) २ पारद, रस ३ अमरसिंह (कोशकार) ।
—बेल, स स्त्री, अमरवल्ली आकाशवल्ली ।
अमरत्व, स पु (स न) मुक्ति (स्त्री) २ देवत्व ३ चिरजीवनम् ।
अमरस, स पु (स आम्ररस) रसालद्रव २ आम्र, पर्पट पट्टी (हिं अमपापड) ।
अमरागना, स स्त्री (स) देवागना, देवी, अमरी ।
अमरा, स स्त्री (स) अमरावती, दे ।
अमराई, स स्त्री (स आम्रराजी) आम्र-वन वाटिका ।
अमरावती, स स्त्री (स) इन्द्रपुरी, स्वर्ग ।
अमरीका, स पु (अमेरिका) महाद्वीपविशेष ।
अमरूत (द), स पु (स अमृत >) पेरुक, दृढबीज, मामलम् ।
अमरेश्वर, स पु (स) दे 'इन्द्र' ।
अमर्ष, स पु (स) क्रोध, रोष २ क्षमाऽभाव, असहिष्णुता ।
अमल[1], वि (स) स्वच्छ, निर्मल २ निर्दोष । स पु, (स न) अभ्रक, गिरिजामलम् ।
अमल[2], स पु (अ) व्यवहार, आचरण, चरितम् २ अधिकार, शासन ३ मद, माद, शौण्डता ४ शील, वृत्ति (स्त्री), स्वभाव ५ प्रभाव ६ समय ।
—करना क्रि स, व्यवहृ (भ्वा प अ), आचर (भ्वा प से), विधा (जु उ अ), कृ ।
—में आना, क्रि अ, वृत् (भ्वा आ से), भू ।
—दारी, स स्त्री (अ + फा) शासन, राज्यम् ।
अमलतास, स पु (स अम्ल) वृक्षप्रकार ।
अमलबेत, स पु [स अ (आ) अम्लवेतस] वेतसाम्ल, वीर राज रस,-आम्ल ।
अमला, स स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री) २ सातलावृक्ष ।
अमला, स पु (अ) कार्याध्यक्ष ।
—फैला, स पु, न्यायालयकर्मचारिगण ।
अमली, वि (अ) व्यवहारविषयक २ कर्मण्य ३ मद्यप, पानासक्त, मादकद्रव्यसेविन् ।
अमहर, स स्त्री (स आम्र >) शुष्काम्रशल्कम् ।
अमा, स स्त्री (स) अमावस्या २ गृह ३ इहलोक ।
अमात्य, स पु (स) सचिव, मन्त्रिन् ।
अमान, स पु (अ) रक्षा, त्राण २ शरण, आश्रय ।
अमानत, स स्त्री (अ) स्थाप्य, निक्षेप, न्यास, उपनिधि ।
—रखना, क्रि स, निधा (जु उ अ), निक्षिप (तु प अ), न्यस (दि प स), आधी कृ ।
—दार, वि, न्यासधारिन्, निक्षेपग्राहक ।
—दारी, स स्त्री, प्रत्यय, विश्वास ।
—में ख़यानत, स स्त्री, स्थाप्यापहरण दुर्विनियोग ।
अमानिता, स स्त्री (स) अमानित्वम्, नम्रत्व, नम्रता ।
अमानी, वि (स निन्) नम्र, विनीत, निरभिमान ।
अमानुष, वि (स) अपौरुषेय, अमानवीय, अतिमर्त्य २ पाशव, पैशाचिक । स पु, मनुष्येतर जीव २ राक्षस ३ देव । (अमानुषी = अपौरुषेयी स्त्री) ।
अमारी, स स्त्री (अ) वरडक ।
अमावट, स स्त्री (हिं आम >) दे 'अमरस' ।
अमावस, स स्त्री [स अमाव (ा) स्या] अमावासी, कृष्णपक्षस्यान्तिमतिथि (पु स्त्री), दर्श, सूर्येन्दुसमागम ।
अमिट, वि (स अ + हिं मिटना) अनाश्य, अमार्ष्टव्य, शाश्वत (-ती स्त्री) ।
अमित, वि (स) असीम, अपरिमित २ अत्यधिक ।
अमित्र, स पु (स) शत्रु । वि मित्रहीन ।

अमीन, स पु (अ) अधिकरणस्य कर्मचारिभेद ।

अमीर, स, पु (अ) अधिकारिन् २ धनिक ३ उदार ।

अमीरी, स स्त्री (अ) धनाढ्यता, समृद्धि (स्त्री)।

अमुक, वि (स) सङ्केतित, निर्दिष्ट ।

अमूर्त, वि (स) मूर्ति प्रतिमा, रहित,निर कार, निरवयव ।

अमूल्य, वि (स) अनघ, अनर्घ्य, २ बहुमूल्य, महार्घ ।

अमृत, स पु (स न) सुधा, पी (पे) यूष, निजर, समुद्रनवनीतक २ जल ३ घृत ४ अन्न ५ मोक्ष ६ दुग्ध ७ विष ८ सुवर्ण ९ हृद्यपदार्थ १० मधुरद्रव्यम् ।

—कर, स पु (स) चन्द्र ।

—फल, स पु (स पु न) पारावत पटोल, वृक्ष फल ।

—बान, स पु श्लक्ष्णीकृत मृद्भाण्ड, चिक्कण कुट ।

—सार, स पु ,नवनीत, घृतम् ।

अमृतत्व, स पु (स न) मोक्ष , मुक्ति (स्त्री)।

अमृतांशु, स पु (स) शीतांशु , चन्द्र, सोम ।

अमृता, स स्त्री (स) मद्य, सुरा २ आमलकी ३ हरीतकी ४ तुलसी ।

अमृत्यु, वि (स) अमर, अमरण। स्त्री अमरत्वम् । पु विष्णु ।

अमेध्य, वि स अपवित्र, अयज्ञार्ह, निन्द्य ।

अमेय, वि (स) असीम २ अज्ञेय ।

अमोघ, वि (स) सफल, सार्थक, फलवत् ।

अमोनिया, स पु (अ) तिक्तादि (स्त्री)।

अमोल, अमोलक, वि (स अमूल्य दे०)।

अमौलिक, वि (स) निर्मूल, वितथ, मिथ्या ।

अम्माँ, स स्त्री (स अम्बा) माता, जननी ।

अम्मामा, स पु (अ) महोष्णीष -षम् ।

अम्ल, स पु (स) रसभेद । वि अम्ल शुक्त ।

अम्लता, स स्त्री (स) अम्लत्व, शुक्तत्वम् ।

अम्हौरी, स स्त्री (स अम्भस्>) घर्मकण्टक क्म् ।

अयन, स पु (स न) गति (स्त्री)२ सूर्य चन्द्रयोर्गतिभेद ३ ज्योति शास्त्रम् ४ सेना गति ५ मार्ग ६ आश्रम ७ स्थान ८ गृह ९ काल १० अंश ११ यज्ञभेद १२ अंधस(न)।

अयश, स पु (स शस् न) अपकीर्ति (स्त्री)।

अयस, स पु (स अयस न) दे 'लोहा'।

अयस्कान्त, सं पु (स) कान्तायस, कान्त, कान्तलोहं ।

अयाँ, वि (अ) प्रकट २ स्पष्ट ।

अयान, वि (हिं अज्ञान) अज्ञ, मूर्ख ।

अयाल[1], स पु स्त्री (तु० याल) केश (स) २, सटा ।

अयाल[2], स पु (अ) सन्तति (स्त्री)।

—दार, वि गृहिन् , गृहस्थ ।

अयि, अव्य (स) हे, अरे, भो ।

अयुक्त, वि (स) अनुचित २ असमिश्रित, भिन्न ३ युक्तिशून्य ।

अयुग, वि (स) विषम, अयुग्म ।

अयुग्म, वि (स) अयुग, विषम २ एकल, एकाकिन् ।

अयुत, वि (स न) सहस्रदशकम् ।

अयोग, वि (स अयोग्य) अनुचित, अयुक्त ।

अयोग्य, वि (स) अनर्ह, अनुपयुक्त । २ पारवश्य ३ अशक्त ४ अपात्रम् ५ दे 'अयोग'।

अयोध्या, स स्त्री (स) साकेत, नगरीविशेष ।

अयोनि वि (स) अज, नित्य ।

अयोनिज, वि (स) अगर्भज २ स्वयम्भू ३ अदेह, अकाय ।

अयौक्तिक, वि (स) युक्तिविरुद्ध, अनुपपन्न, असगत ।

अयौगिक, वि (स) अव्युत्पन्न, रूढ (व्या)।

अरड, स पु, दे 'एरड'।

अर, स पुं (स पु न) चक्राङ्ग २ कोण ३ शैवाल ।

अरक सं पु (अ) आसव २ रस ३ प्रस्वेद ।

—निकालना, क्रि स स्यन्द् (प्रे), आ अभि,-सु (स्वा उ अ)।

—अरक होना, मु, (प्र) स्विद् (दि० प अ)।

अरक्षित, वि (स) अत्राण, अत्रात अपात ।

अरगजा, स पु (स अगरु+जा>) पीत वर्ण सुगन्धिद्रव्यभेद ।

अरगनी, स स्त्री (स आलम्ब>) वसना लम्बनी, वस्त्रालम्बनाय रज्जु (स्त्री) वंशो वा ।

अरगल, स पु (स न) अरगला, कपाटा वष्टम्भकमुसलम् ।

अरगवानी, स पु (फा) रक्तवर्ण, लोहित रग । वि रक्त-लोहित,-वर्ण २ नीललोहित, धूम्रवर्ण ।

अरघा, म पु (स) ताम्रमयोऽर्घ्यपात्रभेद २ शिवलिङ्गाधारपात्रम् ।

अरणि, णी स स्त्री (स पु स्त्री) निर्मन्थ्य दारु (न), अग्निमन्थनकाष्ठम् ।

अरण्य, स पु (स न) वन, जङ्गलम् ।

—गान, स पु (म न) सामवेदस्य गानविशेष ।

—रोदन, स पु (स न) अरण्यरुदित, व्यर्थविलाप काननक्रन्दनम् २ व्यर्थवचनम् ।

अरत्नि, स स्त्री (स पु स्त्री) कूर्पूर, कफ (फो) णि (पु स्त्री), २ मुष्टि (पु स्त्री), मुष्टी ३ बाहु ४ कूर्परात् मध्यमाङ्गुली पर्यन्त मानम् ।

अरथी, स स्त्री (म रथ >) शवयान, खाट, खाटी ।

अरदल, स पु (देश०) वृक्षभेद ।

अरदल, स स्त्री (अ ऑर्डर) आज्ञा, नियोग ।

अरदली, स पु (अ ऑर्डरली) परिचारक, किंकर, प्रेष्य ।

अरदास, स स्त्री (फा अर्जदाश्त) उपहार, प्रीतिदान २ उपासना, आराधना, प्रार्थना ।

अरधग, दे० 'अर्द्धांग' ।

अरध (र्धां) र्गा, स स्त्री (स अर्द्धांगिनी) पत्नी, भार्या, अर्द्धांगम् ।

अरना, स पु (स अरण्य >) वन्यमहिष, वन्यसैरिभ ।

अरनी, स स्त्री, दे 'अरणि' ।

अरब[1], स पु (स अर्बुद -द) शतकोटिसंख्या ।

अरब[2], स पु (स अर्वन्) घोटक २ इन्द्र ।

अरब[3], स पु (अ) मरुदेशविशेष, अरबदेश २ अरबदेशीयोऽश्वो जनो वा ।

अरबी, वि (फा) अरबदेशीय । स पु १—३ अरबदेशीयाऽश्व उष्ट्र वाद्यभेदो वा । स स्त्री, अरबदेशस्य भाषा ।

अरमान, स पु (तु) लालसा, आकाक्षा ।

अरर, अव्य (स अरे) आश्चर्यघृणादिसूचक शब्द ।

अरराना, क्रि अ (अनु) पुरुष ध्वन् स्वन् (भ्वा प से) २, सहसा पत् (भ्वा प से)

अरविंद, स पु (स न) कमल, पद्मम् ।

अरविंदिनी, स स्त्री (स) नलिनी, कमलिनी २ कमलसमूह ३ पद्माकर ।

अरवी, स स्त्री, दे 'कचालू' ।

अरस, वि (स) नीरस, विरस २ असभ्य ३ अलस ४ निर्बल ५ अयोग्य ।

अरसा, म पु (अ) समय २ विलब ।

अरहट, स पु (स अरघट्ट) अरघट्टक ।

अरहर, स स्त्री (स आढकी) तुवरी, तव, रिका, वृत्तबीजा ।

अराजक, वि, (स) राजहीन शासकरहित ।

अराजकता, स स्त्री (स) राजहीनता । २ शासनाभाव ३ उपद्रव, अशान्ति (स्त्री) ।

अराति, सं पु (स) शत्रु २ कामक्रोधलोभ मोहमदमात्सर्याणि (न बहु) ३ ज्योति शास्त्रे कुण्डल्या षष्ठ स्थानम् ।

अरारूट, स पु (म (अ एरोरूट) अरारूट, कन्दभेद २ अरारूटचूर्णम् ।

अरिंदम, वि (स) शत्रुघ्न, अमित्रघातिन् २ विजयिन् ।

अरि, स पु (स) शत्रु, वैरिन् ।

—मर्दन, वि (स) रिपु, सूदन-दमन, शत्रुघ्न ।

अरित्र, स पु (स न) क्षि (क्षे) पणी णि (स्त्री), नौ नौका,-दण्ड ,केनिपातक ।

अरिष्ट, स पु (म न) क्लेश २, विपद् (स्त्री) ३ दुर्भाग्य ४ अपशकुन ५ लशुन ७ निम्ब ८ काक ९ गृध्र १० फेनिल ११ मद्यभेद १२ क्वाथ १३ भूकम्पादय उत्पाता १४ मथित १५ प्रसूतिगृह । वि अनश्वर २ शुभ ३ अशुभ ।

अरिष्टक, स पु (स) फेनिलवृक्ष । (स न) फेनिलबीजम् (रीठा) ।

अरिहा, वि (स -हन्) रिपुदमन, रिपुजय । स पु शत्रुघ्न ।

अरी, अव्य (सं अरे) अयि ।

अरुंतुद, वि (स) मर्म, भेदिन् स्पृश २ दु ख दायक ३ कटुभाषिन् । (स पु) शत्रु ।

अरुंधती, स स्त्री (स) वसिष्ठपत्नी २ दक्ष पुत्री ३ नक्षत्रविशेष ।
अरु, अव्य , दे 'और' ।
अरुई, स स्त्री दे 'कचालू' ।
अरुचि, स स्त्री (स) इच्छाऽभाव २ अग्नि मान्द्य ३ घृणा ।
—कर, वि बीभत्स, गर्ह्य, उद्वेगकर ।
अरुचिर, वि (स) अप्रिय, अरुचिकर, अरुच्य, बीभत्स ।
अरुज, वि (स ज) नीरोग, स्वस्थ ।
अरुण, वि (स) रक्त लोहित । स पु सूर्य २ सूर्यसारथि ३ सन्ध्याप्रकाश ४ प्रभात ५ कुंकुम ६, गुड ।
—उदधि, स पु (स) समुद्रविशेष ।
—उदय , स पु (स) प्रभात, दिनमुखम् ।
—उपल, स पु (स) पद्मराग , शोणरत्नम् ।
—चूड, स पु (स) कुक्कुट ।
अरुणा, स स्त्री (स) मञ्जिष्ठा २ कदन ३ रक्तवर्णा गौ ४ उषस (स्त्री) ।
अरुणाई, स स्त्री (स अरुण >) रक्तता, अरु णिमन् ।
अरुणात्मज, स पु (स) शनि , शनैश्चर , सौरि २ यम ३ सुग्रीव ४ कर्ण ५ जटायु ।
अरुणिमा, स स्त्री (स णिमन् पु) रक्तिमन् , लोहित्यम् ।
अरूप, वि (स) अमूर्त्त निराकार ।
अरे, अव्य (स) हे, अयि, अये, भो २ अहो (सब अव्य०) ।
अरोड़ा, स पु (स आरूढ >) पचनदप्रान्तीय जातिविशेष ।
अर्क, स पु (स) सूर्य २ इन्द्र ३ स्फटिक ४ विष्णु ५ मदार ६ अग्रज ७ रविवार ८ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रम् ९ द्वादश इति संख्या १० पण्डित । वि (स) पूज्य, अर्चनीय ।
—मडल, स पु (स न) सूर्यबिंब -बम् ।
अर्क, स पु (अ) दे 'अरक' ।
अर्कज, स पु (स) सूर्यपुत्रा [१ यम २ शनैश्चर ३ अश्विनौ (द्वि) ४ सुग्रीव ५, कर्ण]
अर्कजा, स स्त्री (स) सूर्यपुत्री (यमुना तापी च नदी) ।
अर्गल, स पु (स न) अर्गला, कपाटाव ष्टम्भकमुसल २ कपाट ३ अवरोध ४ कल्लोल ५ सन्ध्या घना ।
अर्गला, स स्त्री (स) दे 'अर्गल' २ (चिटकनी) कील -ल ३ गजबन्धनशृङ्खला ४ अवरोध ।
अर्घ, स पु (स) पूजाविधिभेद २ पूजा सामग्री ३ हस्तधावनार्थ जल, तद्दान वा ४ मूल्य ५ उपहार ६, सम्मानार्थं जलेन सेक ।
—देना, उदकादिदानेन तृप् (प्रे०), निषिच् (तु प अ)
—पात्र, स पु (स न) शखाकार ताम्र पात्रम् ।
अर्घट, स पु दे 'राख' ।
अर्घा, स पु (स अर्घ >) दे 'अर्घपात्र' ।
अर्घ्य, वि (स) पूज्य २ बहुमूल्य । स पु (स न) पूजाद्रव्यम् २ मधुभेद ।
अर्चक, वि (स) पूजक, उपासक ।
अर्चा, स स्त्री (स) पूजा २ प्रतिमा, मूर्त्ति (स्त्री) ।
अर्चि, स स्त्री (स) अर्चिस् (न , स्त्री) शिखा २ तेजस (न) ३ किरण ।
अर्चित, वि (स) पूजित २ सत्कृत ।
अर्चन, स पु (स न) पूजा, अर्चा, अर्चना २ सत्कार ।
अर्चनीय, वि (स) पूजनीय २ सत्कार्य ।
अर्चिष्मान् , वि (स ष्मत) भासुर, कान्तिमत शिखा-ज्वाला -युत अग्नि । स पु (स) अग्नि २ सूर्य ३ विष्णु ।
अर्ज़, स स्त्री (अ) प्रार्थना, याचना २ विस्तार , परिणाह ।
—करना, क्रि स, याच (भ्वा उ से) सविनय निविद् (प्रे) ।
अर्जन, स पु (स न) उपार्जन, सचय, संग्रह, उपादानम् ।
—करना, क्रि स, उप,अर्ज् (चु) संग्रह् (क्र प से)
अर्जित, वि (स) उपार्जित, संगृहीत, सचित ।
अर्ज़ी, स स्त्री, (अ) प्रार्थना-निवेदन,-पत्रम् ।

अर्जी—दावा, स पु (अ) अभियोग-भाषा, पत्रम्।

अर्जुन, स पु (स) धनञ्जय, पार्थ, कपिध्वज, गुडाकेश, गाण्डीविन् २ सहस्रार्जुन ३ वृक्षभेद ४ मयूर। वि श्वेत २ स्वच्छ।

अर्जुनी, स स्त्री (स) शुक्ला गौ (स्त्री) २ कथा ३ कुट्टनी

अर्णव, स पु (स) समुद्र २ सूर्य ३ अन्तरिक्ष ४ चतुर इति संख्या।

अर्तिका, स स्त्री (स) अग्रजा, (अत्तिका) ज्येष्ठभगिनी।

अर्ति स स्त्री (स) पीडा, व्यथा २ चापाग्रम्।

अर्थ, स पु (स) शब्दाशय २ प्रयोजन ३ कर्मन् (न) ४ इन्द्रियविषय ५ धनम्।

—देना, क्रि स अभि धा (जु उ अ) सूच् (चु), युत (प्रे)।

—बताना, क्रि स, व्याख्या (अ प अ), विवृ (स्वा उ से), व्याचक्ष (अ आ से) अर्थ प्रकाश (प्रे)।

—कर, वि (स) लाभप्रद, फलावह। (-करी स्त्री)।

—दंड, स पु (स) धनदण्ड ।

—पति, स पु (स) कुबेर २ नृप ।

—पिशाच, वि (स) कृपण, लोभिन्।

—वाद, स पु (स) विविधवाक्येषु अन्यतमम् (न्या)।

—वेद, स पु (स) शिल्पशास्त्रम्।

—शास्त्र, स पु (स न) धनप्राप्तिरक्षावृद्ध्याद्युपायदर्शक शास्त्रम्।

—सचिव, स पु (स) अर्थमन्त्रिन्।

अर्थात्, अ० (स) अय आशय, दे 'यानी-के'।

अर्थान्तर, स पु (स न) अन्य भिन्न द्वितीय, अर्थ ।

—न्यास, स पु (स) अर्थालंकारभेद (सा)।

अर्थापत्ति, स स्त्री (स) प्रमाणभेद (न्या) २ अलंकारभेद (सा)।

अर्थालंकार, स पु (स) अर्थचमत्कारयुतोऽलंकार (सा)।

अर्थी, वि (स र्थिन्) इच्छु, इच्छुक, इच्छक, अभिलाषिन् २ कार्यार्थिन्। (अर्थिनी स्त्री) स पु, वादिन्, अभियोक्तृ २ सेवक ३ धनिक ।

अर्दन, स पु (स न) पीडन, हिंसा २ याचनम्।

अर्दित, वि (स) पीडित २ हत ३ याचित ४ गत।

अर्द्ध, वि (स) सामि—। स पु, अर्द्ध -र्द्ध, अर्द्ध, भाग -अश ।

—चन्द्र, स पु (स) अष्टम्याश्चन्द्र २ चन्द्रक, मयूरपक्षस्थचन्द्रचिह्न ३ नखक्षत ४ चन्द्राबाण (ँ) ५ बहिष्काराय ग्रीवानो ग्रहणम् ६ त्रिपुंड्रभेद ।

—भाग, स पु (स) अर्द्ध - र्द्ध, अर्द्धांश ।

—मागधी, स स्त्री (स) प्राकृतभाषाभेद (यह कभी मथुरा से पटना तक बोली जाती थी)।

—वृत्त, स पु (स न) वृत्तार्द्ध, अर्द्धमंडलम् २ वृत्तपरिधेरर्द्धभाग ।

—समवृत्त, स पु (स न) छन्दोभेद ।

अर्द्धांग, स पु (स न) अर्द्ध,-भाग -अश २ पक्ष,-आघात -वायु ३ शिव ।

अर्द्धांगिनी, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या।

अर्द्धांगी, स पु (स -गिन्) शिव । वि, अर्द्धांगरोगग्रस्त,पक्षवायुपीडित।

अर्पण, स पु (स न) उपहरण, उपनयन, दान २ उपायन, उपहार ३ स्थापनम्।

—करना, क्रि स, उपहृ-उपनी (भ्वा प अ) उपस्था (प्रे) ऋ (प्रे अर्पयति)।

अर्पित, वि. (स) दत्त, उद्-वि,-सृष्ट।

अर्बुद, स पु (स पु न) दशकोटिसंख्या २ अरावलीपर्वत ३ मेघ ४ मांसकीलरोग ५ द्वैमासिको गर्भ ।

अर्वा, वि (अ०) चतुर्।

अर्भक, वि (स) अल्प, लघु, २ मूर्ख ३ कृश। स पु, बालक, वटु ।

अर्य्य, स पु (स) स्वामिन् २ ईश्वर ३ वैश्य। वि श्रेष्ठ। (अर्या, अर्याणी,अर्यो स्त्री)।

अर्य्यमा, स पु (स -मन्) सूर्य २ आदित्यविशेष ३ विशिष्टा पितर (बहु०) ४ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रम्।

अर्वाक्, अव्य (स) पश्चात्, इदानींतने काले, नातिचिरात् प्राक्, अचिर २ समीपे, निकट दे।
अर्वाचीन, वि (स) नूतन नातिपुराण, आधुनिक (—नी स्त्री), अभिनव।
अर्श, स पु (स—र्शस् न) गुदकीलक, गुदांकुर ।
अर्श, स पु (अ) आकाश -श २ स्वर्ग ।
अर्हत, स पु (स) जिन २ बुद्ध ३ शिव वि मान्य।
अर्ह, वि (स) पूज्य २ योग्य।
अर्हणीय, वि (स) पूज्य, समान्य, पूजनीय।
अर्हत्, वि (स) मान्य, अर्चनीय।
अर्हित, वि (स) पूजित, समानित।
अल, अव्य, दे 'अलम्'।
अलकार, स पु (स) आभरण, मण्डन, वि,भूषण २ शब्दार्थयोश्चमत्कारविशेष (सा०)।
अलकृत, वि (स) वि,भूषित, मण्डित, धृताभरण २ संस्कृत, परिष्कृत।
—करना, क्रि स, वि, भूष (चु०), अलकृ, परिष्कृ, सस्कृ, मण्ड् (चु०), प्रसाध (प्रे०)।
अलघनीय, वि (स) अलघ्य, दुरतिक्रम, दुस्तर।
अल, स पु (स न) (=बिच्छू का डक) लूम, अ(आ)लिदश, द्रु(द्रो)ण, कण्टक -शकु। २ हरितालक २ विष, विषम्।
अलक, स पु (स) कुरल, चूर्णकुन्तल २ केश, पाश -कलाप।
अलकतरा, स पु दे 'कोलटार'।
अलकनदा, स स्त्री (स) नदीविशेष।
अलकली, स स्त्री (अ) क्षार।
अलका, स स्त्री (स) कुबेरनगरी, 'यक्षपुरम्'।
—पति, स पु (स) कुबेर।
अलकावलि, स स्त्री (स) केशकलाप।
अलकोहल, स पु (अं) सुरा।
अलक्त, अलक्तक, स पु (स.) ला (रा) क्षा, जतु (न), याव, रक्ता, द्रुमामय २ लाक्षानिर्मितरगभेद।
अलक्षित, वि (स) अदृष्ट, अवीक्षित २ अदृश्य ३ अज्ञात ४ गुप्त।
अलक्ष्य, वि (स) अदृश्य २ अतीन्द्रिय।
अलख, वि (स अलक्ष्य) दे 'अलक्ष्य'।
—धारी, स पु (स अलक्ष्यधारिन्) गोरक्षनाथानुयायिन साधव (बहु०)
—जगाना, मु, भिक्षायाचनम्।
अलग, वि (स अलग्न) पृथक् (अव्य) वि, भिन्न, वियुक्त, विच्छिन्न, असलग्न।
—करना, क्रि स, पृथक् कृ, विघट् विश्लिष् (प्रे), वियुज् (चु०)।
—होना, क्रि अ, पृथक् भू, वियुज् (भा० वा) विश्लिष् (दि प अ)।
अलगनी, स स्त्री (स आलग्न>) वसनालबनी।
अलगोजा, स पु (अ) मुरली वश वणु, भेद।
अलज्ज, वि (स) निर्लज्ज, धृष्ट, वियात।
अलपाका, स पु (स्पे० एलपाका) जतुभेद २ तस्य ऊर्णा ३ तदूर्णानिर्मित सूक्ष्म वस्त्रभेद।
अलफ, स पु (अ अलिफ) अरबीवर्णमाला या प्रथमवर्ण।
अलबत्ता, अव्य (अ) निस्सन्देह, निस्सशयम् २ आम्, सत्यम् ३ किन्तु, परन्तु।
अलबम, स पु (अ) चित्रपजिका।
अलबेला, वि (स अलभ्य> ?) वेषाभिमानिन्, छेक, रूपगर्वित, दर्शनीयमानिन् २ अद्भुत ३ कामचारिन्, अनवहित।
अलब्ध, वि (स) अप्राप्त, अनधिगत, अहस्तगत।
अलभ्य, वि (स) अप्राप्य २ दुर्लभ ३ अमूल्य।
अलम्, अव्य (स) यथेष्ट, पर्याप्त, प्रचुरम्।
अलम, स पु (अ) शोक, दुख २ ध्वज।
अलमनक, स पु (अ) पचांग, पजिका।
अलमस्त, वि (फा) मत्त, क्षीव २ निश्चिन्त।
अलमारी, स स्त्री (पुर्त० अलमारियो) उत्थितपिटक।
अलमास, स पु (फा) हीरक, वज्र-ज्रम्।
अलल्टप्पू, वि (देश०) दैवाधीन, आकस्मिक।

अलवान, स पु (अ) और्णप्रावार ।
अलस, वि (स) मन्द, मन्थर आलस्य शील ।
अलसान नि, स स्त्री (स आलस्यम्) मान्द्यम्, तन्द्रिका ।
अलसाना, क्रि अ, (हि अलसान) शिथि लायन (ना धा), शिथिली-स्थी मन्दी, भू ।
अलसी, स स्त्री (स अतसी) उमा, क्षुमा । (बीज दमा अतसी-बीजम् ।
अलहदगी, स स्त्री (अ०) पृथक्ता पार्थक्यम्
अलहदा, वि (अ) अन्य, भिन्न, पृथक ।
अलात, स पु (स न) अङ्गार २ ज्वलत काष्ठ, उल्का ।
—चक्र, स पु (स न) उल्काघूर्णनज चक्रम् ।
अलान, स पु (स आलान) गजबन्धनस्तम्भ २ हस्तिबन्धनशृङ्खला ३ बन्धन, निगड ।
अलानिया, अ० (अ०) प्रकट, निर्भय, नि शङ्कम् ।
अलाप, स पु दे 'आलाप' ।
अलापना, क्रि स (स आलापनम्) आलप (भ्वा प मे), स्वरलयम् उत्पद् (प्रे०) २ गै (भ्वा प अ गायति) ।
अलामत, स स्त्री (अ) लक्षण, चिह्न, अभि ज्ञानम् ।
अलार्म घडी, स स्त्री (अ एलार्म+स घटी) प्रबोधन घटी घटिका ।
अलाव, स पु (स अलात >) अग्निराशि, अङ्गारनिकर ।
अलावा, क्रि वि (अ) विना, ऋत २ दे 'अतिरिक्त' ।
अलिंग, वि (स) लिंग-लक्षण चिह्न, रहित हीन । स पु, ईश्वर २ विहायस ।
अलिंजर, स पु (स) (बडा घडा) अलञ्जर, मणिक २ (झज्झर) कर्करी, गलन्तिका, आलु (स्त्री) ।
अलिंद[1], स पु (स अलिन्द) भ्रमर द्विरेफ ।
अलिंद[2], स पु (स) आलीन्द प्रघ (घा) ण, प्रघ (घा) न, २ बहिर्द्वारप्रकोष्ठ ।
अलि, स पु (स) भ्रमर, शिलीमुख २ पिक ३ काक ४ वृश्चिक ५ कुक्कुर ६ दे 'अली' ।
अली[1], स स्त्री (स आलि) सखी, सहचरी २ श्रेणी, पंक्ति (स्त्री) ।
अली[2], स पु (स अलि) षट्पद, भ्रमर ।
अलीक, वि (स असत्य, अनृत, वितथ ।
अलील, वि, (अ) रोगिन्, रुग्ण ।
अलुमीनम, स पु (अ एलुमीनियम) स्फट धातु (न) ।
अलूचा, स पु (फा आलूच) अलुचम् ।
अलेख[1], वि (स) अज्ञेय २ अगणित ।
अलेख[2], वि (स अलक्ष्य) अदृश्य ।
अलेख्य, वि (स) लेखानर्ह ।
अलोन ना, वि (स अलवण) लवणहीन २ नीरस (अलोनी स्त्री) ।
अलोल-कलोल, स स्त्री (स लोल कल्लोल) क्रीडा, लीला, रत्न ।
अलौकिक, वि (स) लोकोत्तर, लोकबाह्य २ अपूर्व, अद्भुत, ३ अति-मर्त्य मानुष, अमानुषिक ।
अल्टिमेटम स पु (अ) अन्तिमेत्थम्, अन्तिम-उपन्यास अभिसन्धि (पु) ।
अल्ट्रावायोलेट रे, स स्त्री (अ) अतिनील रुगरश्मि ।
अल्प, वि (स) स्वल्प, स्तोक, दभ्र, न्यून, क्षुद्र अल्प-लघु, परिमाण २ ह्रस्व, खर्व, वामन ।
—आहार, स पु (स) मितभोजनम् ।
—आहारी, वि (स रिन्) मितभुज्, अल्पाशन ।
—आयु, वि (स -युस) अचिर,-जीवन जीविन् । स पु, अज, छाग ।
—जीवी, वि (स विन्) अचिरायुष्य ।
—ज्ञ, वि (स) स्तोकज्ञ, अल्पविद् २ मद बुद्धि ।
—ज्ञता, स स्त्री (स) स्तोकज्ञता २ अज्ञता ।
—प्राण, स पु (स) अल्पप्राणोच्चार्यवर्ण (क्, ग, ङ, च्, ज्, ञ्, आदि ।)
—बुद्धि, वि (स) मूर्ख, मूढ, दुर्मति, जड ।
—वयस्क, वि (स) अप्राप्त-व्यवहार वय स्क, बाल ।
अल्पता, स स्त्री (स) न्यूनता त्व, अल्पत्व २ लघुता त्व ।
अल्पशः, अव्य (स) स्तोकशः, अल्पाल्प २ शनैः शनैः, क्रमशः (सब अव्य)

अल्ल, स पु (अ आल) वंशनामन् (न), उपगोत्रनामन् (दुब्बे, चौबे आदि)।

अल्लम-गल्लम, स पु (अनु) प्रलाप, दे 'अडबड'।

अल्लाह, स पु (अ) ईश्वर ।

—ओ अकबर, वाक्य (अ) ईश्वरो हि महान्।

अल्हड़ वि (स अल = बहुत + लल = लल्ना >) विलासिन्, विनोदिन् २ अनवधान ३ अल्पवयस्क ४ उद्धत ५ अज्ञ। स पु नवजातवत्स ।

—पन, स पु, विनोदिता २ अनवधानता ३ अल्पवयस्कता ४ उद्धतता ५ अज्ञता।

अवंति-न्ती, अवन्तिका, स स्त्री (स) उज्जयिनी नगरी।

अव, उप (स) निश्चयानादरन्यूनतानिम्नताव्याप्तिसूचक उपसर्ग ।

अवकलन, स पु (स न) दर्शन, ईक्षण, वीक्षणम् २ अवगमन, ज्ञानम् ३ ग्रहणम्।

अवकाश, स पु (स) स्थानं, स्थल, प्रदेश २ गगन ३ दूरता ४ अवसर ५ विश्राम ।

अवकिरण, स पु (स न) विकिरण,विक्षेपण, प्रासनम्।

अवकीर्ण, वि (स) प्रविआ, कीर्ण, प्रविअस्त, विक्षिप्त २ ध्वस्त, नाशित ३ स, चूर्णित।

अवकीर्णी, वि (स र्णिन्) क्षतव्रत, नष्टवीर्य।

अवकुंचन, स पु (स न) मोटन, वक्रीकरण, व्यावर्तन, आकुञ्चनम्।

अवकुंठित, वि (स) कातर, क्लीब, भीरु।

अवकृष्ट, वि (स) बहिष्कृत २ निगलित ३ नीच। स पु दास ।

अवकेशी, वि (स-शिन्) निष्फल २ निरपत्यान।

अवक्रय, स पु (स) मूल्य, अर्घ २ (किराया) ताय, नारिक, भाटक ४ कर ।

अवक्रोश, स पु (स) आक्रोश, शाप, गर्हा।

अवगत, वि (स) विदित, ज्ञात, बुद्ध परिचित २ निगत, पतित।

अवगति, सं स्त्री (स) ज्ञान, बोध, अवगमन २ कुगति निगति (स्त्री)।

अवगाढ, वि (स) निबिड, गुप्त २ निमग्न, प्रविष्ट।

अवगाहन, स पु (स न) जले प्रविश्य स्नान, निमज्जन २ प्रवेश ३ मथन विलोडन ४ अनुसन्धान ५ मनन, विचारणा।

अवगीत, वि (स) निन्दित, लाञ्छित। स पु (स न) निन्दा, अपवचनम्।

अवगुंठन, स पु (स न) आवरण, व्यवधान, आच्छादन, संवरण २ (घूँघट) आवरक वस्त्रम्।

अवगुंफन, स पु (स न) सन्ग्रथन, वि, रचन, तन्त्रीभिर्गुणैर्वा बन्धनम्।

अवगुण, स पु (स) दोष, व्यसन २ अपराध, स्खलितम्।

अवग्रह, स पु (स) विघ्न, प्रतिबन्ध २ अनावृष्टि (स्त्री) ३ सेतु वप्र,-बन्ध, वप्र ४ सन्धिविच्छेद (व्या०) ५ शाप ।

अवघट, वि (स अव + घट्ट >) विकट, दुर्गम।

अवघर्षण, स पु (स न) दे 'रगड़ना' तथा 'पीसना'।

अवचन, स पु (स न) निःशब्दता, तूष्णींभाव। २ निन्दा।

अवचनीय, *वि (स) अकथनीय, अश्लील* २ अनिन्द्य, अगर्ह्य।

अवचय, स पु (स) उत्पाटन उद्धरण, उल्लुञ्चनम्।

अवच्छिन्न, *वि* (स) पृथक्कृत, विश्लेषित २ ससीम, ३ *सविशेषण, विशिष्ट*।

अवच्छेद, सं पु (स) भेद, पृथग्भाव २ इयत्ता ३ अवधारण, निश्चय ४ परिच्छेद, विभाग।

अवच्छेदक, वि (स) विभाजक, भेदक २ इयत्ताकारक ३ अवधारक ४ *निश्चायक*। स पु, विशेषणम्।

अवज्ञा, स स्त्री (स) अव अप, मान, अनादर, अवधीरण णा २ आज्ञोल्लंघन ३ पराजय ४ अलंकारभेद (सा)।

अवज्ञात, वि (स) अवधीरित, अपमानित, तिरस्कृत।

अवतंस, स पु (स पुं न) भूषण, अलंकार २ शिरोभूषण ३ कर्णभूषण ४ मुकुट ५ श्रेष्ठजन ६ माला, हार ७ भातृव्य ८- पाणिग्राहक ।

अवतरण, स पु (स न) अवरोहण, अधोगमन २ पारगमन ३ शरीरधारण, जन्मग्रहण ४ प्रतिलेख, प्रतिलिपि-प्रतिकृति (स्त्री), ५ प्रादुर्भाव ६ घट्ट, सोपान ७ घट्ट।

अवतरणी णिका, स स्त्री (स) ग्रन्थ पुस्तक, प्रस्तावना भूमिका-उपोद्घात २ रीति (स्त्री)।

अवतार, स पु (स) पुराणमतानुसार देव विशेषस्य जीवविशेषस्य वा शरीरधारणम्। (विष्णु जी के २४ अवतार—ब्रह्मा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु मत्स्य, कूर्म, धन्वन्तरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध कल्कि, हंस, हयग्रीव)।

—लेना, कि, अ, अवतॄ (भ्वा प से), अवरुह् (भ्वा प अ), शरीरं धृ (प्रे)।

अवतारण, स पु (स न) नीचैर्नयन २ अनुकरण ३ उद्धरणम्।

अवतारी, वि (स-रिन्) अवरोहिन्, अधोगामिन् २ देवांशधारिन्, अलौकिक।

अवदात, वि (स) श्वेत, शुभ्र २ शुद्ध ३ गौर ४ पीत।

अवदान, स पु (स न) सुकर्मन् (न) २ भोजन ३, पराक्रम ४ शोधन ६ खंडीकरणम्।

अवदारण, स पु (स) ककचेन छेदन-पाटनम् २ विभाजन ३ खदानम् ४ दे 'कुदाल'।

अवदीर्ण, वि (स) ककचेन पाटित २ विभाजित ३ ज्ञात।

अवद्य, वि (स) अधम, पाप, २ निन्द्य, कुत्सित।

अवध, स, पु (स अयोध्या>) कोश (स) ला (बहु) २ अयोध्या।

अवध्य, त्रि (स अवध्य) रक्ष्य, मान्याई।

अवधान, स पु (स न) मनोयोग, अवधा, सतर्कता।

अवधार, स पु (स) निश्चय, निश्चितता २ सीमा, अवधि (पु)।

अवधारण, स पु (स न) निर्धारण, निश्चय।

अवधारित, वि (स) निर्धारित, निश्चित।

अवधार्य, वि (स) निर्धारणीय, निश्चेतव्य।

अवधि, स स्त्री (स पु) सीमा, परा काष्ठा, पर्यन्त २ नियत,-काल-समय ३ मृत्युकाल। अव्य (स) यावत् (अ कदा वधि = अद्य यावत् = आज तक)।

अवधी, वि (हि अवध) कोश (स) लसम्बन्धिन् २ कोस (श) लप्रान्तस्य भाषा।

अवधीरणा, स स्त्री (स) दे, 'अवज्ञा'।

अवधीरित, वि (स) अवज्ञात, तिरस्कृत।

अवधूत, स पु (स) सन्न्यासिन्, योगिन् साधु। वि (स) कम्पित २ विनष्ट।

अवधेय, वि (स) विचारणीय, ध्येय २ श्रद्धेय ३ ज्ञातव्य।

अवनत, वि (स) नीच, निम्न, नत, नीचस्थ २ पतित ३ न्यून।

अवनति, स स्त्री (स) ह्रास-, क्षय, हानि (स्त्री) २ अधोगति (स्त्री) ३ नम्रता।

अवनि नी, स स्त्री (स) पृथिवी, भूमि (स्त्री)

—इन्द्र, ईश, स पु (स) नृप।

—तल, स पु (स न) भू, पृष्ठ तलम्।

—पति, पाल, स पु (स) भूप।

अवबोध, स पु (स) जागरण २ ज्ञानम्।

अवभृथ, स पु (स) यज्ञशेषकर्मन् (न) २ यज्ञान्तस्नानम्।

अवम, वि (स) अधम, अन्तिम २ रक्षक, परिवेत्तृ २ नीच, निन्दित। स पु (स.) पितृगणविशेष २ मलमास।

अवमत, वि (स) अवधीरित, तिरस्कृत।

अवमति, स स्त्री (स) अपमान तिरस्कार।

अवमर्दन, स पु (स न) पीडन, मर्दन, उपमर्द।

अवमर्श, स पु (स) स्पर्श २, सम्पर्क ३ सन्धिविशेष (सा०)

अवमर्ष, स पु (स) सम-, आलोचन-ना २ सन्धिविशेष (सा०) ३ आक्रमणम्।

अवमर्षण, स पु (स न) असहिष्णुता, दे, 'असहनशीलता' २ अपमार्जन, विलोपनम्।

अवमान, स पु (स) दे 'अवमति'।

अवमानना, स स्त्री (स) अवधीरणा, तिरस्कार।

अवयव, स पु (स) अंश, भाग २ अंग, गात्र, शरीरैकदेश ३ न्याये पञ्च दश वा

वाक्यांश (=प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनयन, निगमन, जिज्ञासा, संशय, शक्य प्राप्ति प्रयोजन, संशय-व्युदास)।
अवयवी, वि (स विन्) अङ्गिन्, सावयव ५ पूर्ण, समग्र। स पु, सावयव पदार्थ ३ देह।
अवर, वि (स) अन्य, अपर २, अधम, नीच।
अवराधक, वि (सं आराधक) पूजक।
अवराधन, स पु (स आराधन) पूजा, अर्चा।
अवरुद्ध, वि (स) उपप्रति, रुद्ध, प्रतिहत, प्रतिबाधित २ आच्छादित, गूढ़।
अवरूढ, वि (स) अवतीर्ण, अधोगत।
अवरेव, स पु (स अव+रेव्>) वक्र तिर्यग् गति (स्त्री) २ वस्त्रस्य तिर्यक् कर्तनम्।
—दार, वि, तिर्यक्कृत।
अवरोध, स पु (स) विघ्न, व्याघात २ अवरोध ३ निरोध ४ अनुरोध ५ अन्तःपुरम्।
अवरोधन, स पु (स न) निवारण २ अन्तःपुरम्।
अवरोपण, स पु (स न) उन्मूलन, उत्पाटनम्।
अवरोह, स पु (स) अवतार, पतनम् २ अवनति (स्त्री) अलंकारभेद (सा) स्वरावतार (संगीत)।
अवरोहण, स पु (स न) अवतरण, नीचे गमनम्।
अवर्ण, वि (स) रंगरहित, वर्णविहीन २ कुवर्ण, कुरंग ३ वर्णधर्मशून्य। स पु, अष्टादशविधोऽकार (व्या)।
अवर्ण्य, वि (स) अवर्णनीय, अनिर्वाच्य, अकथनीय, वर्णनाविषय। स पु, उपमानम्।
अवलब, स पु (स) आश्रय, शरण, आधार, अवष्टम्भ।
अवलंबन, स पु (स न) दे 'अवलंब'। २ धारण, ग्रहणम्।
अवलंबित, वि (स) आश्रित, अधीन, आयत्त -विघ्न,-तन्त्र (समासान्त में)।
अवलंबी, वि (स-विन्) दे 'अवलंबित' २ आश्रयद (अवलंबिनी आश्रिता स्त्री)।
अवलक्ष, वि (स) श्वेत-सित,-रंग-वर्ण। स पु (स) श्वेत,-रंग-वर्ण।
अवलिप्त, वि (स) गर्वित, दृप्त २ अक्त, दिग्ध ३ लीन।
अवली, स स्त्री (स आवली लि स्त्री) पंक्ति, तति, राजी-जि (सब स्त्री) २ समूह, राशि।
अवलीढ, वि (स) आ,-परि-स-लीढ। २. भक्षित, भुक्त, जग्ध।
अवलेप, स पु (स) दर्प, गर्व २ वि-प्र-अनु,-लेप।
अवलेपन, स पु (स न) अभ्यंजन, विलेपन २ उद्वर्तन, गात्रानुलेपनी ३ अहंकार ४ दूषणम्।
अवलेह, सं पु (स) लेह्य पदार्थ २ लेह्य औषधम्।
अवलेहन, स पु (स न) जिह्वाग्रेण स्पृष्ट्वा खादनम्।
अवलोकन, स पु (स न) वि-ईक्षण, दर्शन, निरूपण २ निरीक्षण, अवेक्षणम्।
—करना, क्रि स, अव-वि-आ,-लोक् (भ्वा आ से, चु) प्र-वि-अव,-ईक्ष् (भ्वा आ से)।
अवलोकनीय, वि (स) दर्शनीय, ईक्षणीय।
अवलोकित, वि (सं) ईक्षित, दृष्ट, निरूपित।
अवश वि (स) वि-पर,-वश, अशक्त।
अवशिष्ट, वि (स) अवशेष, उद्वृत्त।
अवशेष, वि (स) अवशिष्ट, उद्वृत्त २ समाप्त। स पु (स) अवशिष्ट, शेषभाग २ अन्त, समाप्ति (स्त्री)।
अवश्यभावी, वि (स-विन्) अपरिहार्य, अनिवार्य।
अवश्य, क्रि वि (स अवश्यम्) नियत, ध्रुव, असंशय, नून, नाम, खलु (सब अव्य)।
अवश्य, वि (स) उच्छृङ्खल, दुर्दमनीय, दुर्निग्रह, अविधेय, दुर्निवार। (अवश्या = दुर्दमनीया स्त्री)।
अवश्यमेव, क्रि वि, दे 'अवश्य'।
अवश्याय, स पु (स) तुषार, प्रालेय, हिमजलम् २ अभिमान, गर्व।
अवष्टम्भ, स पु (स) आश्रय २ स्तम्भ ३ धृष्टता।
अवसन्न, वि (स) विषण्ण, म्लान, खिन्न, शोकार्त २. विनाशोन्मुख ३ अलस।

अवसर, स पु (स) समय, काल २ अव काश, क्षण ३ देव, दैवगति (स्त्री)।

अवसर्जन, स पु (स न) वि उत्-सर्जनम्, उज्झन, त्यजनम्।

अवसर्पण, स पु (स न) अवरोहण, अधोगमनम्।

अवसाद, स पु (स) नाश, क्षय २ विषाद ३ दैन्य ४ श्रान्ति (स्त्री) ५ निर्बलता।

अवसान, स पु (स न) विराम, यानवि वृत्ति (स्त्री), विष्टम्भ २ समाप्ति (स्त्री), अन्त ३ मृत्यु ४ सीमा ५ सायंकाल।

अवसाय, स पु (स) अन्त समाप्ति (स्त्री) २ अवशिष्ट ३ पूर्ति (स्त्री) ४ सङ्कल्प ५ निर्णय।

अवसित, वि (स) समाप्त २ ऋद्ध ३ परिपक्व ४ निश्चित ५ सम्बद्ध।

अवसृष्ट, वि (स) त्यक्त २ दत्त ३ निष्कासित।

अवसेचन, स पु (स न) प्रोक्षण, जलेनाप्लावन २ प्र, स्वेदन ३ जलूकादिभि रक्त निष्कासनम्।

अवस्कन्द, स पु (स) सैन्यावास, शिविरम् २ जनवास, वरयात्रावास।

अवस्कर, स पु (स) विष्ठा, गूथ -थम्। २ [गुह्यांगम्, लिंगम्, योनि (क्रमश न स्त्री) गुदम्] ३ उच्छिष्टम्, निस्सारवस्तुसमूह।

अवस्था, स स्त्री (सं) दशा, गति (स्त्री) २ समय ३ वयस्-आयुस् (न) ४ स्थिति (स्त्री)।

अवस्थान्तर, स पु (स न) अन्यावस्था, दशापरिवर्तनम्।

अवहित, वि (स) सावधान, एकाग्र, अनन्य वृत्ति।

अवहित्था, स स्त्री (स) आकारगुप्ति (स्त्री) लज्जादिवशात् चातुर्येण हर्षादि गोपन, भाव भेद (सा)

अवहेलन, स पु (स न) दे 'अवहेलना'।

अवहेलना, स स्त्री (स) अवज्ञा, अपमान २ आहीलपन ३ उपेक्षा।

—करना, क्रि स, निक्, अव-अप,-मन् (प्रे), अवज्ञा (क उ अ) २ आद्याम् अतिक्रम् (भ्वा प से) ३ उपेक्ष् (भ्वा आ से)।

अवहेलित, वि (स) तिरस्कृत, उपेक्षित।

अवान्तर वि (सं) अन्तर्गत, मध्यवर्तिन्। स पु (स न) अन्तर, अभ्यन्तर, उदर, गर्भः।

—दिशा, स स्त्री, (सं) विदिशा, मध्यमदिशा।

—भेद, स पु (स) भागस्य भाग, अन्तर्भेद।

अवाक्, वि (स अवाच्) मौनिन्, तूष्णीक, नि शब्द २ स्तब्ध, चकित।

—रहना,—होना, क्रि अ, तूष्णीं-जोष,-आस् (अ आ से), वाच यम् (भ्वा प अ)।

अवाङ्मनसगोचर, वि (स अवाङ्मनोगोचर) अवर्णनीय, अचिन्त्य (ईश्वर)।

अवाङ्मुख, वि (स) अधो-नत,-मुख। (-खी स्त्री) २ लज्जित।

अवाची, स स्त्री (स) दक्षिणा, दक्षिणदिशा।

अवाच्य, वि (स) विशुद्ध, निर्दोष २ निन्द्य, गर्ह्य। स पु (स न) गाली, दुर्वचनम्।

अवात, वि (सं) निर्वात, वायु-पवन,-रहित।

अवाप्त, वि (सं) प्राप्त, अधिगत, लब्ध।

अवार, स पु (सं पु न) अर्वाक्,-तीर-तटम्।

—पार, सं पु (सं) सागर, अब्धि।

अवारणीय, वि (स) अनिवार्य अपरिहार्य, अवश्यभाविन्।

अवि, सं पु (सं) मेष, एडक २ छाग ३ सूर्य ४ मन्दार ५ पर्वत ६ मूषिक। सं. स्त्री, मेषी, एडका, उरणी।

—पाल, स पु (स) मेषपालक।

अविकल, वि (सं) अक्षीण, अनपचित २. समग्र, पूर्ण ३ निश्चल।

अविकल्प, वि (सं) निश्चित २ असंदिग्ध।

अविकारी, वि (स -रिन्) निर्विकार २ अपरिणत।

अविकृत, वि (सं) शुद्ध २ अपरिणत।

अविगत, वि (स) अज्ञात २ अज्ञेय ३. विद्यमान।

अविचल, वि (सं) ध्रुव, स्थिर।

अविच्छिन्न, वि (स) निरन्तर, अविरत, सतत।

अवितथ, वि (सं) सत्य, यथार्थ, तथ्य। सं. पु (स न) सत्य, ऋतम्।

अविद्यमान, वि (स) अनुपस्थित २ असत् ३ असत्य।

अविद्य, वि (स) निरक्षर, अज्ञ।

अविद्या, स स्त्री (स) अज्ञान, अबोध २ माया (वे) ३ कर्मकाण्ड ४ प्रथम क्लेश (योग)। -जन्य, वि (स) मोहज, अज्ञानजनित।

अविनाशी, वि (स) अनश्वर, अक्षय, अक्षर, अव्यय, चिरस्थायिन् २ नित्य शाश्वत।

अविनीत, वि (स) उद्धत २ दुर्विनीत ३ धृष्ट।

अविभाज्य, वि (स) अनंशनीय, अबंटनीय।

अवियुक्त, वि (स) मयुक्त, संश्लिष्ट।

अविरत, वि (स) सतत, विरामरहित २ आसक्त, अनिवृत्त। क्रि वि (स न) सतत, अनवरतम्।

अविरल, वि (स) संलग्न २ निविड, घन।

अविराम, वि (स) सतत, अनवरत २ अविश्रान्त।

अविवक्षित, वि (स) अनभिप्रेत, अनुद्दिष्ट २ वक्तुमनिष्ट, अनिष्टवचन।

अविवाहित, वि (स) अनूढ, कुमार, अकृत-पाणिग्रह-उपयाम-उद्वाह, अपरिणीत।

अविवेक, स पु (स) सदसद्विवेचनराहित्य, विचाराभाव २ अज्ञान ३ अन्याय ४ मिथ्याज्ञानम् (सां)।

अविवेकी, वि (स-विन्) विवेकशून्य, अज्ञानिन्, अतत्त्वज्ञ २ विचारशून्य ३ मूर्ख ४ अन्यायकारिन्।

अविश्रान्त, वि (स) विश्रान्तिशून्य २ सतत, अविराम।

अविश्वसनीय, **अविश्वस्त** वि (सं) विश्वासानर्ह, प्रत्ययायोग्य।

अविश्वास, स पु (स) अप्रत्यय, विश्वासाभाव।

अविश्वासी, वि (स-सिन्) शंकाशय,-शील बुद्धि आ-, शंकिन् २ दे 'अविश्वस्त'।

अवेक्षण, स पु (स न) दर्शन, अवलोकन २ निरीक्षण, परीक्षणम्।

अवेक्षणीय, वि (स) दर्शनीय २ निरीक्षितव्य, परीक्षितव्य।

अवेद्य, वि (स) अज्ञेय २ अलभ्य।

अवेद्या, वि स्त्री (स) अवोढव्या, विवाहानर्हा।

अवैतनिक, वि (सं) निर्वेतन, भृतित्यागिन्, आदरवृत्ति।

अवैदिक, वि (स) वेदविरुद्ध, वेदाविहित।

अव्यक्त, वि (स) परोक्ष अतीन्द्रिय गोचर, अज्ञात, अनिर्वचनीय। स पु (स) विष्णु २ शिव ३ मदन ४ प्रकृति (स्त्री), ५ आत्मन् ६ परमेश्वर ७ मायोपाधिक ब्रह्मन् (न)।

अव्यपदेश्य, वि (स) अकथनीय २ अनिर्देश्य ३ निर्विकल्प (न्या०)।

अव्यय, वि (स) निर्विकार, अक्षय, नित्य, व्ययशून्य। स पु (स) परब्रह्मन् (न) २ विष्णु ३ शिव। (स न) सर्वविभक्तिलिंगवचनेषु एकरूप शब्द (उ० सदा, अद्य आदि, व्या०)।

अव्ययीभाव, स पु (स) समासभेद (उ० प्रतिदिन व्या)।

अव्यलीक, वि (स) सत्य, यथार्थ २ प्रिय कृत्य।

अव्यवस्था स स्त्री (स) अक्रम क्रमभंग, व्यतिक्रम व्यस्तता, संक्षोभ २ अवधि ३ दुर्निर्वाह, दुर्णय।

अव्यवस्थित, वि (स) अक्रम, क्रमशून्य, २ निर्मर्याद ३ अनियतरूप ४ चचल।

—**चित्त**, वि (स) चंचल, चित्तमानस।

अव्यवहार्य, वि (स) व्यवहारायोग्य, उपयोगानर्ह २ पतित, पंक्तिच्युत।

अव्यवहित, वि (स) संलग्न, संसक्त, व्यवधानशून्य।

अव्यवहृत, वि (स) अप्रयुक्त, अप्रचरि (लि) त।

अव्याकृत, वि (स) अस्पष्ट, अविकसित स पु (स न) आदिम-तत्त्वम्।

अव्याप्ति, स स्त्री (स) अनभिव्यापन, व्याप्त्यभाव २ लक्षणस्य दोषभेद (न्या०)।

अव्याहत, वि (स) व्याघातशून्य, अप्रतिरुद्ध २ सत्य।

अव्युत्पन्न, वि (स) जड, मन्दमति २ व्याकरणानभिज्ञ ३, व्युत्पत्तिरहित (शब्द)।

अव्वल, वि (अ) प्रथम, आदिम २ उत्तम, श्रेष्ठ। स पु प्रारम्भ, उप-प्र-प्र-, क्रम।

अशंक, वि (सं.) निर्भय, निश्शङ्क। क्रि वि. (सं. न.) निश्शङ्कम्।

अशकुन, सं. पु (सं. पु. न.) अपशकुनः न, अजन्य, अव अशुभ-दुर्-लक्षणम्।

अशक्त, वि (सं) निर्बल, अबल, २ अक्षम।

अशक्य, वि (सं.) असाध्य, अविभाव्य, असम्भव।

अशन, सं. पु (सं. न) भोजन, अन्न, २. भक्षण, खादनम्।

अशरण, वि (सं.) अनाथ, निराश्रय।

अशरफ़ी, सं. स्त्री (फ़ा.) स्वर्णमुद्रा २. पुष्प-भेद।

अशराफ़, सं. पु (फ़ा. शरीफ़ का बहु०) सज्जना भार्या महानुभावा (सब पु बहु०)

अशरीरी, वि. (सं.-रिन्) अकाय, अशरीर, अदेह २. अपार्थिव। सं. पु देव।

अशांत, वि (सं.) व्याकुल, व्यग्र, विह्वल, उद्विग्न, चपल, चंचल।

अशांति, सं. स्त्री. (सं) अशम, उद्वेगः, व्याकुलता, क्षोभ, व्यग्रता, सन्तोषाभावः।

अशास्त्रीय, वि. (सं.) शास्त्रविरुद्ध २. शास्त्रबाह्य।

अशिक्षित, वि. (सं.) अनक्षर, निरक्षर, अविद्य अज्ञ, अव्युत्पन्न।

अशिर, सं. पु. (सं.) अग्निः २. सूर्यः ३. वायुः। (सं. न.) हीरा, वज्र -ज्रम्।

अशिर, वि. (सं -रस्) शीर्ष-मस्तक,-रहित सं. पु कबन्ध., रुण्डः-ण्डम्।

अशिष्ट, वि. (सं.) असभ्य, अविनीत, अभद्र, अनार्य।

अशिष्टता, सं. स्त्री (सं.) असभ्यता, धृष्टता दुःशीलता, विनयाभावः।

अशुद्ध, वि (सं.) अशुचि, अपवित्र २. अशोधित, असंस्कृत ३ भ्रान्त, वितथ।

अशुद्धता, सं. स्त्री. (सं.) अपवित्रता, अशुचिता, २. मलिनता ३. त्रुटि-भ्रान्तिः (स्त्री)।

अशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अशुद्धता'।

अशुभ, सं. पु (सं. न) अमंगल, अहितं, अशिवं २. पाप, अपराधः। वि. अमंगल, अभद्र, अशिव।

—सूचक, वि. (सं.) उत्पात-अनिष्ट, शंसिन्।

अशेष, वि. (सं.) निःशेष, सर्व, समग्र, सकल, संपूर्ण, २. अनन्त, असीम, अगणित, बहु, ३. समाप्त, अवसित।

अशोक, वि. (सं.) दुःख-शोक,-रहित। सं. पु. (सं.) विशोकः, रक्तपल्लवः (वृक्ष) २. पारदः ३ शोकाभावः ४ नृपविशेषः।

—वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) विशोकवाटः २. रावणस्य विशोकोद्यानम्।

अशौच, सं. पु (सं. न) अमेध्यता, अपवित्रता, अशुद्धता।

अश्क, सं. पु. (फ़ा.) अश्रु (न.), नेत्रजलम्।

अश्रद्धा, सं. स्त्री. (सं.) अविश्वासः, अप्रत्ययः, भक्तिनिष्ठा-अभावः।

अश्रान्त, वि. (सं.) स्वस्थ, अक्लान्त। क्रि. वि. (सं. न.) सततम्।

अश्रु, सं पु (सं. न) अस्रु (न.) बाष्पं, नयनाम्बु (न)।

—पात, सं. पु. (सं.) रुदित, रोदनम्।

—मुख, वि (स) सास्र अश्रुलोचन, सबाष्प।

अश्रुत, वि. (सं.) अनिशान्त, अनाकर्णित २. अनुभवशून्य।

—पूर्व, वि. (सं.) अनाकर्णितपूर्व २. अद्भुत।

अश्रौत, वि. (स) अवेदोक्त, अवैदिक।

अश्लिष्ट, वि. (सं.) श्लेषरहित, एकार्थक २. असंयुक्त ३. असंगत।

अश्लील, वि. (स.) व्रीडावह, ग्राम्य, कुत्सित, बीभत्स, अश्राव्य, अवाच्य।

अश्लीलता, स. स्त्री. (सं.) ग्राम्यता, अवाच्यता।

अश्व, सं पुं. (स.) तुरगः, घोटकः।

—आरोहण, स पुं. (स. न.) अश्वेन विहरणं, घोटकारोहणम्।

—आरोही, वि (स.-हिन्) सादिन्, तुरगिन्,।

—गंधा, स. स्त्री. (स.) हय-वाजि,-गन्धा।

—तर, स. पु. (सं.) वेगसरः (खच्चर)। (-तरी = वेगसरी स्त्री.)

—पति, सं. पु. (सं.) तुरगराजः २. सादिन् २. भरतमातुलः ३. नृपविशेषः।

—पाल, सं. पु (सं.) घोटकरक्षकः।

—मेध, सं. पु. (सं.) वाजिमेधः, क्रतुभेदः।

—शाला, सं. स्त्री (सं.) मन्दुरा, वाजिशाला।

अश्वत्थ, सं. पु. (सं.) चलदलः पिप्पलः।

अश्वत्थामा, सं पु (स मन्) द्रौणि, द्रोणायन, कृपीसुत, द्रोणाचार्यपुत्र ।

अश्वस्तन, वि (स) अश्वस्तनिक अधनन अधननीय २ दरिद्र ।

अश्विनी, स स्त्री (स) घोटिकी, वडवा २ प्रथमनक्षत्र, दाक्षायणी ।

—कुमार, स पु (स रो द्वि०) अश्विनीसुतौ देवचिकित्सकौ, दस्रौ, स्वर्वैद्यौ ।

अषाढ़, सं पु, दे 'अषाढ़' ।

अषाढ़ी, स स्त्री (स आषाढ़ी) आषाढमासस्य पूर्णिमा ।

अष्ट, वि तथा स पु (स अष्टन्) दे 'आठ'

—अंग, स पु (स न) योगस्याष्टांगानि (=यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) २ आयुर्वेदस्य अष्टविभागा (शल्य इ०) ३ शरीरस्याष्टांगानि ये प्रणामो विहित (=जानुपाद हस्तवक्षशिरोवचनदृष्टिहृदय) ४ अष्टद्रव्य घटितपूजोपकरणभेद । वि (स) अष्टावयव २ अष्ट-भुज पार्श्व ।

—अध्यायी, स स्त्री (स) पाणिनीय व्याकरणम् ।

—कोण, स पु (स) अष्टास्र, अष्टकोणाकृति (स्त्री) २ कुण्डलभेद । वि अष्टास्र, अष्टास्रिय ।

—धातु, स स्त्री (स पु) धात्वष्टकम् (=सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जसता, सीसा, लोहा, पारा) ।

—पदी, स स्त्री (स) अष्टपदसमूह २ छन्दोभेद ।

—पहर, स पु (स-प्रहरा) दिनस्याष्टयामा । क्रि वि, अहर्निश दिवानिशम् ।

—भुजा, स स्त्री (स) दुर्गा विन्ध्याचलवासिनी देवी ।

—मूर्ति, स पु (स) शिव २ शिवस्य अष्ट मूर्तय (=पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, यजमान, सूर्य, चन्द्र अथवा शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, महादेव) ।

—वर्ग, सं पु (स) औषधविशेषाष्टकम् (=ऋषभ, जीवक, मेद, महामेद, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली) ।

अष्टक, स पु (स न) अष्टवस्तुसमुदाय (उ० दिग्वष्टक) २ अष्टपद्यात्मककाव्यम् ३ ऋग्वेदस्याष्टमो भाग ४ अष्टाध्यायी ।

अष्टमी, स स्त्री (सं) तिथिभेद । वि स्त्री (स) ।

अष्टादश, वि तथा स पु (स शन्) उक्तसंख्या तद्बोधकावङ्कौ (१८) च ।

असंख्य, वि (स) असंख्येय, असंख्यात, अगणित, संख्या-गणना,-अतीत, अगण्य ।

असंग, वि (स) एकल, एकाकिन् २ निर्लिप्त ३ भिन्न ।

असंगत, वि (स) पूर्वापरविरुद्ध, असम्बद्ध, अप्रासंगिक २ अन्याय्य, अनुचित, अयुक्त ।

असंगति, स स्त्री (स) अनन्वय सम्बन्धाभाव २ अनौचित्यम् ३ अलंकारभेद, (सा०) ।

असंतुष्ट, वि (स) संतोषरहित २ अतृप्त ३ खिन्न ।

असंतोष, स पु (स) असंतुष्टि (स्त्री), संतोषाभाव २ अतृप्ति (स्त्री) ३ खेद, ग्लानि (स्त्री) ।

असंबद्ध, वि (स) सम्बन्धरहित, अनन्वित २ स्वतन्त्र ३ असंगत, पूर्वापरसम्बन्धरहित ।

असंबाध, वि (स) विस्तीर्ण, अस्वीर्ण २ शून्य, निर्जन ३ सावकाश ४ निर्बाध ।

असंभव, वि (स) असाध्य, अशक्य, अकरणीय । स पु, अलंकारभेद (सा०) ।

असंभावित, वि (स) आकस्मिक, अतर्कित ।

असंभाव्य, वि (स) अतर्क्य अविचार्य, २ दुष्ट ।

असंभाष्य, वि (स) अकथ्य अवाच्य २, वार्तालापायोग्य (स न) कुवचनम् ।

असंयत, वि (स) अनर्गल, निरंकुश, उच्छृङ्खल २ नियमरहित, अनियत ३ अक्रम ।

असंशय, वि (स) निर्विकार, सन्देहसंशय रहित २ सत्य । क्रि वि (स न) निस्सन्देहम् ।

असंस्कृत, वि (स) अशुद्ध, असभ्य, अविनीत, अपरिष्कृत ।

असगंध, स स्त्री (स अश्वगन्धा) क्षुपभेद, तुरग-गन्धा, वन्दा, प्रियकारी, रसायनी, कुष्ठघातिनी ।

असती, स स्त्री (स) कुलटा, पुंश्चली।
असत्, वि (स) मिथ्या (अव्य,), असत्य २ अविद्यमान, सत्ता अनित्यत्व, हीन ३ असद्, दुष्ट।
असत्य, वि (स) अनृत, वितथ, अतथ्य, अयथार्थ, अलीक मृषा-, मिथ्या—।
—वादी, वि (स -दिन्) मिथ्या-मृषा अनृत, वादिन् भाषिन्।
असत्यता, स स्त्री (स) अनृतत्व, असत्यत्व, वितथता।
असन, स पु (स अशन दे०)।
असबाब, स पु (अ) परिच्छद उपस्कर, वस्तुजात यात्रासामग्री, वस्त्र पात्र, सम्भार।
असभ्य, वि (स) अशिष्ट, असंस्कृत, ग्रामीण २ असभासद्, असदस्य।
असभ्यता स स्त्री (स) अशिष्टता, असंस्कृति (स्त्री) ग्रामीणता।
असमंजस, स पु (स न) सन्देह, संशय, द्वैधीभाव, निश्चयाभाव २ विघ्न ३ (स पु) सगरपुत्र। वि., असंगत, अनुपयुक्त।
—में पड़ना, क्रि अ, आकुल विह्वल विकल्प (भ्वा आ से), मशी (अ आ से), मनसा दोलायत (ना धा)।
असम, वि (स) अतुल्य, असदृश असदृक्ष २ अयुग्म, विषम ३ उन्नतानत, असमरेख। (स पु) अलंकार-भेद (सा०)।
असमत, स स्त्री (अ) सतीत्वम्, पातिव्रत्यम
—फरोश, वि कुलटा, व्यभिचारिणी।
फरोशी, स स्त्री व्यभिचार, सतीत्व-विक्रय।
असमय, स पु (स) अकाल, कुसमय, विपत्काल। क्रि वि अकाले, अस्थाने, अय थाकालम्। वि अनवसर, अ (आ) कालिक, असमयोचित।
असमर्थ, वि (स) बल-शक्ति हीन, अशक्त, दुर्बल, २ अक्षम अयोग्य।
असमर्थता, स स्त्री (स) अशक्तता, अक्षमता।
असम्मत, वि (स) विमत, विरुद्ध २ अस्वीकृत।
असम्मति, स स्त्री (स) वैमत्य विमति (स्त्री) मतभेद विरोध।
असमान, वि (स) विजातीय, अतुल्य।
असमाप्त, वि (स) असंपन्न, अनवसित, अ र्ण।
असमाहित, वि (स) चलचित्त, लोलबुद्धि, अधीर।
असर, स पु (अ) प्रभाव, प्रताप, प्रतिष्ठा २ फल, गुण, परिणाम।
—करना क्रि स, प्रभाव जन् (प्रे०), फल उत्पद् (प्रे०)।
—होना, क्रि अ, परिणाम जन् (दि आ से) फल निष्पद् (द आ, अ)
असल, वि (अ) अकृतक, अकृत्रिम, निष्कपट २ उत्कृष्ट ३ शुद्ध, अमिश्रित। स पु, मूल, तत्त्वम् ४ मूल धन द्रव्यम्।
असलह, स पु (अ० 'सिलाह' का बहु०) शस्त्रास्त्रम २ कवच -चम्।
असलियत, स स्त्री (अ) सत्यता, वास्त विकता २ मूल, तत्त्वं, सार।
असली, वि (अ) दे 'असल' वि०।
असह, वि (स असह्य दे०)।
असहन, वि (स) दे 'असहनशील'।
—शील, वि (स) अमर्षण, अक्षमिन्, अस हिष्णु, असहन, अक्षम।
—शीलता, स स्त्री (स) असहिष्णुता, क्षमा मर्षण तितिक्षा,-अभाव।
असहनीय, वि (स) दे 'असह्य'।
असहयोग, स पु (स) असहकारिता, असाहाय्य, असहोद्योग।
—आंदोलन, स पु (स न) असहकारिता व्यापार।
असह्य, वि (स) असहनीय, असोढव्य, सह नायोग्य, दुःसह, दुर्विषह।
असहाय, वि (स) निराश्रय, निरावलम्ब, अगतिक, अशरण।
असहिष्णु, वि (स) दे 'असहनशील'।
असहिष्णुता, स स्त्री (स) दे असहन शीलता।
असाम्प्रत, वि स (स) अशोभन, अनुचित २ असामयिक ३ वर्तमानासम्बद्ध।
असाम्प्रदायिक, वि (स) अमतवादिन्, उदार २ परम्पराविरुद्ध।
असा, स पु (अ) दण्ड, लगुड, यष्टि (पु स्त्री)।
असाढ़, स पु (स आषाढ़)वर्षस्य चतुर्थमास।

असाढ़ी, वि (हिं असाढ़) आषाढसम्बन्धिन्। स स्त्री आषाढोत्पन्नशस्य २ आषाढपूर्णिमा।
असाधन, वि (स) साधन उपाय,-हीन-रहित, निरुपाय, निरसाधन।
असाधारण, वि (स) विशेष, विलक्षण, अद्भुत (—णी स्त्री)।
असाध्य, वि (स) अशक्य, अनिष्पाद्य २ दुस्साध्य, दुष्कर ३ अचिकित्स्य, दुरुपचार, निरुपाय, अप्रतिकार्य।
असामयिक, वि (स) अनवसर, असमयोचित, अ(का)कालिक (—की स्त्री) अप्राप्तकाल, अस्थान।
असामर्थ्य, स स्त्री (स न) दे 'असमर्थता'।
असामी, स पु (अ आसामी) जन, पुरुष २ कृषक ३ प्रत्यर्थिन्, प्रतिवादिन् ४ अपराधिन्, दण्ड्य ५ मित्र सखि (पु)। स स्त्री, परकीया २ वेश्या ३ दासवृत्ति (स्त्री) ४ रिक्तस्थानम्।
खरा—, स पु, ऋणशोधक।
डूबा— स, पु, ऋणशोधाक्षम।
मोटा—, स पु, धनाढ्य।
सीचड—, स पु बद्धमुष्टि, अदित्सु।
असार, वि (स) निस्सार, फल्गु, निष्फल २ रिक्त ३ तुच्छ। स पु, एरण्ड २ अगरु।
असारता, स स्त्री (स) निस्सारता, तत्त्वराहित्यम् २ मिथ्यात्व ३ तुच्छता।
असालत, स स्त्री (अ) कुलीनता २ सत्यता।
असालतन्, क्रि वि (अ) स्वय, स्वत (दोनों अव्यय)।
असावधान, वि (स) प्रमत्त, प्रमादिन्, मन्दादर, अनवधान, अनवहित।
असावधानता, स स्त्री (स) प्रमाद, मनोयोगाभाव अनवधान उपेक्षा।
असावधानी, स स्त्री दे 'असावधानता'।
असावरी, स स्त्री (स अ (का) शावरी) रागिणीभेद।
असासा, स पु (अ) सम्पत्ति (स्त्री), विभव।
असि, स स्त्री (स पु) खड्ग २ नदीविशेष।
असिक, स पु (स न) चिबुकाधरयोर्मध्यभाग।
असिक्नी, स स्त्री (स) नदीविशेष (चना) २ अन्त पुरचारिणी अवृद्धा दासी।
असित, वि (स) कृष्ण, नील, श्याम, मेचक २ दुष्ट ३ वक्र।
असितांग, स पु (स) शिव। वि, कृष्ण,=अंग रूप देह।
असिता, स स्त्री (स) दे 'यमुना'।
असिद्ध, वि (स) अनिष्पन्न २ अपक्व ३ अपूर्ण ४ निष्फल ५ अप्रमाणित।
असिद्धि, स, स्त्री (स) निष्फलता, विफलता २ अपुष्टता, अपक्वता।
असिस्टैंट, वि (अ) सहायक, सहाय, उप-।
—एडिटर, स पु, उपसम्पादक।
असी, स स्त्री (स असि पु अमी) काशी दक्षिणवर्तिनी नदी।
असीम, वि (स) निस्सीम, निरवधि २ अमित ३ अपार ४ अगाध।
असील वि (अ अमल) दे 'असल'।
असीर, स पु (अ) ग्रहक, कारागुप्त।
असीरी, स स्त्री (फा) कारावास, आसेध, निरोध।
असीस, स स्त्री (स आशिष् स्त्री) आशीर-, वाद वचन, मगलशब्द।
असु, स पु (स) प्राणा असव (दोनों बहुवचन)।
असुविधा, स स्त्री (स >) कठिनता, सौकर्याभाव २ विघ्न।
असुर, स पु (स) दैत्य, राक्षस २ रात्रि, ३ दुर्जन ४ पृथिवी ५ सूर्य ६ मेघ ७ राहु ८ उन्मादभेद।
—अरि, स पु (स) विष्णु २ देवता।
—गुरु, स पु (स) शुक्राचार्य।
असूया, स स्त्री (स) परगुणेषु दोषारोप २ सचारिभावभेद (सा)।
असूर्यपश्या, वि स्त्री (स) अवरोध-अन्त पुर-, वर्तिनी, अवगुण्ठनवती, अतिलज्जावती।
असूल, स पु, दे 'उसूल' २ द 'वसूल'।
असेसर, स पु (अ एसेस्सर) सभ्य, सभासद्।
असोज, स पु (स अश्वयु > ज) आश्विनमास।
असोसियेशन, स स्त्री (अ) सभा, समाज।

असौम्य, वि (स) कुरूप, कुदर्शन २ अप्रिय, अरुचिर।
असौष्ठव, स पु (स न) कुरूपता, सौन्दर्याभाव। वि, कुरूप, असुन्दर।
अस्त, वि (स) गुप्त, तिरोहित २ अदृष्ट, लुप्त ३ नष्ट, ध्वस्त। स पु, तिरोधान, लोप, अदर्शनम्।
—गत, वि, (स अस्तगत) लुप्त, अस्तमित, अदर्शनगत।
अस्तबल, स पु (अ) मन्दुरा, अश्व-वाजि-घोटक-शाला।
अस्तमन, स पु (स न) अदर्शन, तिरोधान २ सूर्यादीनामस्तोऽस्तमयो वा।
—वेला, साय, सायकाल, दिनावसान, प्रदोष।
अस्तमित, वि (स) अस्तगत, अदृष्ट, तिरोहित २ नष्ट, मृत।
अस्तर, स पु (फा) अन्तराच्छादनवस्त्र पट।
—कारी, स स्त्री (फा) सुधालेप २ (पलस्तर) उपनाह उपदेह।
अस्त व्यस्त, वि (स) स प्र-वि-आ,-कीर्ण, सकुल, अव्यवस्थित।
अस्ताचल, स पु (स) अस्त-पश्चिम,-गिरि-पर्वत।
अस्तित्व, स पु (स न) भाव, सत्ता, विद्यमानता।
अस्तु, अव्य (स) यद् भवि तद् भवतु २ बाढं भवतु भद्रम् (सब अव्य)।
अस्तेय, स पु (स न) स्तेय मोष-चौर्य स्तैन्य-त्यागः।
अस्त्र, स पु (स न) प्रहरण, आयुध, क्षिपणी णि (स्त्री) २ शस्त्रम्।
—चिकित्सक, स पु (स) शल्यशास्त्रज्ञ, शस्त्रवैद्य, शल्यतन्त्रविद्।
—चिकित्सा, स स्त्री (स) शल्य, शस्त्रवैद्यक, शल्यशास्त्रम्।
—विद्या, स स्त्री (स) युद्धशास्त्र साङ्ग्रामिक, आयुध रण विद्या।
—वेद, स पु (स) धनुर्वेद।
—शाला, स स्त्री (स) अस्त्र आयुध, आगार, शस्त्रगृहम्।
अस्थि, स स्त्री (स न) कीकस, कुल्य, मेदोजम्।
—पंजर, स पु (स) कंकाल, करक, देहास्थिसमूह।
अस्थिर, वि (स) चपल, चंचल, तरल २ चलचित्त, लोलमति।
अस्थिरता, स स्त्री (स) चाञ्चल्य, तारल्य, अस्थैर्यम् २ चलचित्तता, मनोलौल्यम्।
अस्पताल, स पु (अ हॉस्पिटल) आतुरालय, चिकित्सालय, रुग्णागार आरोग्यशाला २ औषधालय।
अस्पष्ट, वि (स) अप्रकट, अस्फुट, अविशद २ दुर्बोध, सदिग्ध।
अस्पृश्य, वि (स) स्पर्शायोग्य २ अस्पर्शनीय, अन्त्यज, हीनवर्ण, दुष्कुलीन।
अस्पृह, वि (स) निस्स्पृह, लोभरहित, अलोलुप।
अस्फुट, वि (स) अस्पष्ट, अव्यक्त, गुप्त, परोक्ष।
अस्बाब, स पु दे 'असबाब'।
अस्मार्त, वि (स) स्मरणातीत २ अवैध, आर्यशास्त्रविरुद्ध।
अस्मिता, स स्त्री (स) क्लेशभेद (यो) २ अहंकार।
अस्र, स पु (स) कोण २ केश।
अस्रं, स पु (स न) रक्त, रुधिर २ अश्रु (न), नयनजलम्।
अस्ल, दे 'असल'
अस्वस्थ, वि (स) रुग्ण, व्याधित, रोगिन् २ व्यथित।
अस्वाभाविक, वि (स) अनैसर्गिक, निसर्गप्रकृति सहक्रम, विरुद्ध २ कृत्रिम, कृतक।
अस्वास्थ्य, स पु (स न) रोग, व्याधि, गद, आमय।
अस्सी, वि (स अशीति स्त्री)। स पु उक्ता सख्या, तद्बोधकाकौ (८०) च।
अह, सर्व (स०)। स पु अह,-कार-कृति (स्त्री) भाव पूर्विका, आत्मभिमान।
अहंकार स पु (स) गर्व, दर्प मद, माद, आटोप, मान, उत्सेक अह,-मान भाव-कृति (स्त्री) २ अन्तःकरणस्य भेदविशेष (वे) ३ महत्तत्वजातो द्रव्यविशेष (सा) ४ अस्मिता ५ ममत्वम्।
अहंकारी, वि (स रिन्) दृप्त गर्वित, अवलिप्त, उद्धत, मत्त, उत्सेकिन्, अभिमानिन्।

अहवाद, स पु (स) आत्मश्लाघा, अहंकारोक्ति (स्त्री), विकत्थनम्।
अह, स पु (स-, अहन् न) दिन, दिवस २ सूर्य ३ विष्णु।
अहं, अव्य (स अहह अव्य) आश्चर्यखेदक्लेशादिबोधकमव्ययम्।
अहद, स पु (अ) प्रतिज्ञा, स-प्रति,-अव-४ संकल्प ३ शासनकाल।
—नामा, स पु, प्रतिज्ञा समय, पत्र लेख्यम २ सन्धिपत्रम्।
—शिकन, स पु, प्रतिज्ञालंघिन्, असत्यसन्ध।
—शिकनी, स स्त्री, प्रतिज्ञाभंग, असत्यसन्धत्वम्।
अहन्, स पु (स न) दिन दिवस।
अहनिसि, अव्य दे 'अहर्निश'।
अहबाब, स पु (अ, 'हबीब' का बहु०)
अहम, वि (अ) महत्त्वपूर्ण, अत्यावश्यक।
अहमक, वि (अ) जड, मूढ, मूर्ख।
अहमहमिका, स स्त्री (स) अहमग्रिका प्रति, स्पर्द्धा।
अहम्मति, स स्त्री (स) अहंकार २ अविद्या।
अहर, स पु (स आहर >) जलाशय।
अहरन, स स्त्री (स आ+धरण <) धर्मं, धर्मी, धर्मिका, स्थूणा धर्मि (पु स्त्री)।
अहरह, अव्य (स) प्रति अनु दिन, प्रत्यह, दिने दिने।
अहरा, स पु (स आहर >) गोमयपिंडराशि २ गोमयाग्नि ३ पथिकाश्रम ४ प्रपा।
अहरी, स स्त्री (हिं अहरा) प्रपा २, जलाधार।
अहर्निश, क्रि वि (स द्व) दिवानिश, रात्रिंदिवम् २ नित्यम् (सब अव्य)।
अहलकार, स पु (फा) राज,-पुरुष -भृत्य २ प्रतिनिधि, प्रतिहस्त।
अहलमद स पु (फा) अधिकरणलेखक।
अहल्या, वि (स) कर्षणायोग्या (भूमि)। स स्त्री गौतमपत्नी।
अहसान, स पु (अ) उपकार, हित २ कृपा ३ कृतज्ञता।
—फरामोश, वि (फा) कृतघ्न (-घ्नी स्त्री), अकृत, ज्ञ-वेदिन्।
—फरामोशी, स स्त्री (फा) कृतघ्नता, उपकारविस्मरण, अकृतवेदिता।
—मंद, वि (फा) कृतज्ञ, कृतवेदिन्।
—मंदी, स स्त्री (फा) कृतज्ञता उपकारज्ञता।
अहह, अव्य (स) आश्चर्यखेदक्लेशशोकादिसूचकमव्ययम्।
अहाँ, अव्य (अनु) मा, नो, न।
अहा, अव्य (स अहह) हर्षप्रशंसादिसूचकमव्ययम्।
अहाता, स पु (अ) परिसरभूमि (स्त्री), प्रांगण (-न) २ प्राकार, प्राचीरम्।
अहार, स पु, दे 'आहार'।
अहार्य, वि (स) अचोरणीय, अमोषणीय। २ धनच्छलादिभि अवश्य-अदम्य।
अहाहा, अव्य (स अहह) हर्षसूचकाव्ययम्।
अहिंसक, वि (स) अहिंस, अघातुक (-की स्त्री) २ अद्रुह्।
अहिंसा, सं स्त्री (स) हिंसा-अपकार-द्रोह वैर,-त्याग।
अहिंस्र, वि (स) दे 'अहिंसक'।
अहि, स पु (स) सर्प २ वृत्रासुर ३ भूमि (स्त्री) ४ सूर्य ५ राहु ६ खल।
अहित, वि (स) वैरिन्, द्रोहिन् २ हानिकर (-री स्त्री)। स पु (स न) अमंगल, असद्भम्।
अहिफेन, स पु (स पु न) सर्पविष, सर्पमुखलाला २ (अफीम) अफेन, अहिफेनम्।
अहिम, वि (स) तप्त, उष्ण।
—कर, स पु (स) सूर्य।
अहिवात, स पु (स अभिवाद>?) सौभाग्य, सधवात्व, सभर्तृकात्व, पतिमत्ता।
अहिवातिन,-ती, (हिं अहिवात) सौभाग्यवती सधवा, सभर्तृका।
अहीर, स पु (स आभीर) गोप गोपाल, गोपालक गोमख्य, वल्लव।
अहीरिन,-री, स स्त्री (स आभीरी) गोपी, गोपिका, दोहिनी, गोदोहिनी।
अहीश, स पु (स) शेषनाग, सर्पराज २ शेषावतारा (लक्ष्मणबलरामादय)।
अहुत, स पु (स) जप, ब्रह्मयज्ञ, वेदपाठ।
अहे, अव्य (स) हे, अयि, भो।

अहेतुक, वि (स) अकारण, निष्कारण, निर्निमित्त, २ व्यर्थ, निष्फल।
अहेर, स पु (स आखट) मृगया, मृगयम् २ वन्यजन्तव, (बहु०)।
अहेरिया, अहेरी, म पु (हि अहेर) व्याध, लुब्धक मृगयु आखटक।
अहो, अव्य (स) वै, अर २ करुणखदहर्ष प्रशसासूचकमव्ययम्।
अहोभाग्य, म पु (स न) सौभाग्य, पुण्योदय, भाग्योपचय।
अहोर बहोर, क्रि वि (हि बहुरना) भूयो भूय, वार वार (दोनो अव्य०)।
अहोरात्र, स पु (स पु न) दिवानिश अहर्निश दिवारात्र नक्तदिवम् (सब अव्य)।

आ

आ, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीय स्वरवर्ण, आकार।
आ, अव्य (स) स्वीकृत्यनुकम्पाकोपशोकस्मृत्यादिसूचकमव्ययम्।
आँक, स पु (सं अक) चिह्न, अभिज्ञानम् २ सख्याचिह्न, अक ३ वर्ण, अक्षरम् ४ सिद्धान्त ५ अश, भाग ६ वश ७ उत्सग, क्रोडम् ८ रेखा ९ मूल्यसकेत।
आँकडा, स पु (हि आँक) सख्याचिह्नम् अक २ व्यावर्तनकील (पेंच)।
आँकडे, पु (हि आँक) अका।
आँकना, कि स (स अकनम्) अक (चु, (भ्वा आ से), चिह्नयति मुद्रयति (ना धा) कल (भ्वा प से), २ उद (भ्वा आ से), तर्क (चु)।
आँकुस, स पु, दे 'अकुश'।
आँख, स स्त्री (स अक्षि न) चक्षुस (न), वि-लोचन नेत्र, नयन, ईक्षण, दृश दृष्टि (दोनों स्त्री) २ नयनाकार चिह्नम् ३ सूचीछिद्रम् ४ कृपा ५ विवेक ६ निरीक्षणम्।
—अजनी, म स्त्री (स अक्षि+अजनम् >) पक्ष्मपिटिका।
—का गोला म पु, अक्षिगोलकम्।
—का पर्दा, म पु अक्षिपटलम्।
—मिचौली, स स्त्री, अक्षिमेषणी, बाल क्रीडाभेद।
—लगी, म स्त्री, उपपत्नी, भुजिष्या।
—आना, मु, नेत्रपाक।
—उठाकर न देखना, मु, आदरणं-अवधीर (चु)।
—उठाना, मु, दृश् (भ्वा प अ) २ अपकर्तुं यत् (भ्वा आ से)।
—का काजल चुराना, मु चौर्यपाटवम्।
—का तारा, मु, तारका, कनीनिका २, स्नेहभाजनम् २ एकल पुत्र।
—की मैल, म स्त्री, दूषिका, अक्षिमलम्।
आँखें चार करना, मु, परस्परावलोकनम्।
—चुराना वा छिपाना, मु, निली (दि आ अ) २ परदर्शन परिहृ (भ्वा प अ)।
—झपकना, मु, निद्रावश (वि) भू २ निमिष (तु प से), निमील (भ्वा प से)।
—ठढी करना, मु, दर्शनेन प्रसद् (भ्वा प अ)।
—डवडवाना, मु, साश्रुनयन (वि) भू।
—दिखाना, मु, सरोष वीक्ष् (भ्वा आ से) २ भी नम (प्रे)।
—नीची होना, मु, लज्ज् त्रप्(भ्वा आ स)।
—नीली पीली करना, मु, अत्यन्त कुप् (दि प से)।
—पर पर्दा पडना, मु, विमुह् (दि प से)।
—पर बैठाना, मु अत्यन्त सम्मन् (प्रे)।
—फडकना, मु, नेत्र स्फुर् (तु प से)।
—फेर लेना, मु, अवमन् (दि आ से) २ प्रतिकूल (वि) जन् (दि आ स)।
—बद करलेना, मु मृ (तु आ अ)।
—बिछाना, मु, प्रेम्णा प्रविश (प्रे) २ सस्नेह प्रतीक्ष् (भ्वा आ से)।
—भर आना, मु, साश्रुनेत्र (वि) जन्।
—मटकाना, मु, सहाव वीक्ष्(भ्वा आ से)।
—मारना, मु, निमेषण सूच् (चु)।
—मिच जाना, मु, मृ (तु आ अ) २ दे 'झपकना।
—मिलाना, मु, सहाव दृश (भ्वा प अ)।
—मीचना, नत्र निमील् (भ्वा प स)।
—म घर करना, मु, हृदये वस (भ्वा प अ)।
—में चर्बी छाना, मु, दर्पान्ध (वि) जन् (दि आ से)।
—म धूल झोंकना, मु, प्रतृ (प्रे)।
—लगना, मु, स्वप् (अ प अ) २ बद्धभाव (वि) भू।

—सेंकना, मु, सौन्दर्यदर्शनेन प्रसद् (भ्वा प अ)।

—से गिरना, मु, अवगण् अवमन् (कर्म)।

आंग, वि (स) शारीरिक, दैहिक २ अगिन्, अदयविन् ३ आदेशन।

आँगन, स पु (स अगनणम्) अजिर, प्रांगणम्।

आंगिक, वि (स) शारीरिक दैहिक, कायिक (-की स्त्री) स पु, अभिनयभेद।

आँच, स स्त्री (स अर्चिस स्त्री, न०) ताप, दाह, उष्णता, ऊष्म २ अग्नि,-ज्वाला शिखा जिह्वा ३ अग्नि अनल ४ हानि (स्त्री) ५ विपत्ति (स्त्री)।

—आना या खाना या पहुँचना या लगना, कि अ, तप (दि आ अ), उष्णी भू।

—देना, क्रि स तप् (प्रे)।

—न आने देना, मु, कष्टात् त्रै (भ्वा आ अ)।

आँचल, स पु (स अचल लम्) पटान्त, वस्त्रप्रान्त २ प्रान्तभाग।

—देना, मु स्तन्य दा (जु उ अ)।

—में बाँधना, मु, स्मरणार्थं पटप्रान्ते ग्रथिदानम् २ नित्य पार्श्वे स्थापनम्।

—आँजन, स पु, दे 'अजन'।

आजनेय, स पु (स) हनुमत्, मारुति पवनपुत्र।

आँट स स्त्री (हिं अटी) करतले अगुष्ठतर्जन्योर्मध्यस्थानम् २ पण, ग्लह (दाँव) ३ विरोध ४ नीवी, बधनम् ५ पोटलिका।

—सांट, स स्त्री, सहकारिता २ सश्लेष ३ कुमन्त्रणा।

आँटी, स स्त्री (आँटना) लवनुपपोटलिका २ सूत्र पञ्जी पजिका ३ बालकीडोपयोगी काष्ठखडभेद ४ शरीग्रन्थि (पु)।

आँठी, स स्त्री (स अष्ठि स्त्री) फल, बीज एम ३ ग्रन्थि ३ [illegible]।

आड, वि (स) अण्ड,-ज-उद्भव। स पुं (स) हिरण्यगर्भ,

आँत, स स्त्री (स अन्त्रम्) पुरीतत् (पु न) परितत् (पु न)।

—उतरना, मु, अवस्रतेन अन्त्रवृद्ध्या वा पीड् (कर्म)।

, क्षुद्रान्त्रम्।

—बड़ी, बृहदन्त्रम्।

आंतर, वि (स) आभ्यन्तर, अन्तर्गत, अन्तरग।

आंतरिक, वि (स) अन्तर्गत, अन्तस्थ, आन्तर, आभ्यन्तर (-री स्त्री), अन्त (उ अन्त वेदना) २ मानसिक, हार्दिक, आत्मिक।

आंदोलन, स पु (स न) चेष्टा, प्रवृत्ति (स्त्री) २ असकृत्कपनम् ३ क्षोभ, विप्लव, प्रकोप।

आँधी, स स्त्री (स अधम्>) वात्या, चड महा-अति वात, प्रभजन, प्रकपन।

आँध्र, स पु (स आन्ध्र) दक्षिणापथे प्रान्त विशेष २ आन्ध्रवासिन्।

आँय बाँय, स स्त्री (अनु०) प्रलाप, जल्पितम्।

आँव, स स्त्री (स आम>) श्लेष्मन् (पु)।

—*गिरना, कि अ आमातिसारेण पीड्(कर्म)।*

आँवल, स पु (स उल्वम्) कलल (पु न), जरायु (न)।

नाल, स स्त्री, नाभि, नाल नाडी।

आँवलगट्टा, स पु (हिं आँवला+गाँठ) शुष्कामलकम्।

आँवला, स पु (स आमलक-कम् की) अमृता, शिवा, शान्ता, धात्री, श्रीफला।

आँवाँ स पु (स आपाक) कुम्भकारपात्र पाकस्थानम्।

आंशिक, वि (स) आंशिक, भागिक, खाण्डिक।

आँसू, स पु (स अश्रु न) बाष्प, अस्र, नेत्र-नयन,-जल-वारि-उदकम्

—गिराना, कि स, रुद् (अ प से)।

—पी जाना, मु, अश्रूणि अव स मि, रुध् (रु उ अ)।

—पोंछना, मु, आ सम-श्वस् (प्रे)

आँहाँ, अ (अनु) न, नो, मा (सब अव्य)।

आइसक्रीम, स स्त्री (अ) हिम, सन्तानी शर।

आई, स स्त्री (हिं आना) मृत्यु। कि अ आगता।

आईन, स पु (अ) विधि, विधानम्, नियम २ सविधानम्।

आईना, स पु (फा) मुकुर, दर्पण।

आक, स पु (स अर्क) मन्दार, क्षीरदल, तूलफल सूर्याह्व, सदापुष्प।

—की बुढ़िया, मु, मन्दारपुष्पम् २ अतिवृद्धा नारी।

आकर, सं पु (सं) ख(खा)नि नि (स्त्री) वस्त्पत्तिस्थानम् २ निधि, माण्डागारम् ३ प्रकार, भेद ।

—भाषा, म स्त्री मूलप्राचीनभाषा (उ०) हिन्दी की आकरभाषा संस्कृत, उर्दू की फारसी।

आकर्षक, वि (स) आकर्षणकर २ मनोहर।

आकर्षण, स पु (स न) आकर्ष, आवर्जनम्, अनुकर्ष अनुकर्ष अनुकर्षणम्।

—करना, क्रि स, आ समा, कृष (भ्वा प आ), आवृज (चु) २ विमुह (प्रे०)।

आकर्षित, वि (स) कृताकर्षण २ प्रलोभित।

आकलन, स पु (स न) ग्रहणम् २ सचय ३ गणनम् ४ अनुष्ठानम् ५ निरीक्षणम्।

आकस्मिक, वि (स) अकाण्ड, अचिन्तितपूर्व, हठाज्जात।

आकांक्षा, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलाष, स्पृहा, वाञ्छा २ अपेक्षा ३ अनुसधानम् ४ वाक्ये शब्दस्य शब्दान्तराश्रितत्वम्।

आकांक्षी, वि (स क्षिन्) इच्छुक, अभिलाषिन्, ईप्सु, सस्पृह।

आकार, स पु (स) आकृति मूर्ति (स्त्री), रूपम् २ कायपरिमाणम् ३ अवयवसस्थानम् ४ चिह्नम् ५ चेष्टा ६ 'आ' इति वर्ण ७ आह्वानम्।

—गुप्ति, स स्त्री (स) अवहित्था।

आकारण, स पु (स न) आह्वानम्, आमन्त्रणम् २ दे 'चुनौती'।

आकारवान् वि (स -वत्) साकार, मूर्तिमत् विग्रहिन्।

आकालिक, वि (स) असामयिक।

आकालिकी, स स्त्री (स) दे 'बिजली'

आकाश, स पु (स पु न) गगन, नभस, वियत्, व्योमन् (सब न), अबर, अन्तरिक्ष, ख, नाक, दिव्, द्यो (दोनों स्त्री), विहायस (पु न), विहायस, अभ्र, पुष्कर, अनन्त, विष्णुपद, तारापथ।

—कुसुम, स पु (स न) खपुष्प, शश, विषाण-शृङ्गम्, असम्भव वस्तु (न)।

—गगा, स स्त्री (स) मन्दाकिनी, स्वर्णदी।

—चारी, वि (स रिन्) खचर, नमश्चर (-चरी स्त्री)। स पु सूर्यादिग्रहा २ वायु ३ खग ४ देव ५ राक्षस।

—बेल, म स्त्री (सरी-वल्ली) अमरवल्ली, खवल्ली, व्योमलतिका।

—भाषित, सं पु (स न) गगनलपितम्, नाट्ये माषणभेद।

—वाणी, स स्त्री (स) देववाणी, अशरीरिणी वाक (स्त्री)।

—वृत्ति, स स्त्री (स) अनियतो धनागम।

—चूमना, मु, अभ्रंलिह् (अ० प अ), गगनचुम्ब (भ्वा प से)।

—पाताल एक करना, मु, अत्यर्थं प्रयत् (भ्वा आ से)।

—पाताल का अन्तर, मु, महदन्तर, महान् भेद।

आकुञ्चन, स पु (स न), सकोचन, समाकर्ष, सकोचन, प्रसृतस्य संक्षपण, वक्रत्वसम्पादनम्।

आकुंचित, वि (स) सकोचित २ वक्र।

आकुल, वि (स) व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, क्षुब्ध, अशान्त, व्यस्त, विह्वल, कातर २ समाकीर्ण, सकुल।

आकुलता, स स्त्री (स) उद्वेग, क्षोभ, अशान्ति (स्त्री)।

आकूति, स स्त्री (स) अभिप्राय, आशय २ उत्साह ३ सदाचार।

आकृति, स स्त्री (स) आकार, रूप, मूर्ति (स्त्री) २ मुख, आननम् ३ अवयवसस्थान, शरीररचना ४ मुद्रा, चेष्टा ५ जाति। (स्त्री न्या)।

आकृष्ट, वि (स) आकर्षित, कृताकर्षण।

आक्रंद, स पु (स) रोदन, रुदितम्, चीत्कार २ युद्धघोष ३ तुमुलयुद्धम्।

आक्रमण, स पु (स न) आक्रम, अवस्कन्द, अभिद्रव, अभिप्रयाण, आपात २ रोधन, अव-उप,-रोध ३ आक्षेपण, निन्दनम्।

आक्रांत, वि (स) अभिद्रुत, अभिप्रयात, २ अभि-परा-वशी,-भूत ३ परिवेष्टित ४ व्याप्त, आकीर्ण।

आक्रामक, स पु (स) अभियातृ, अभियायिन्, आक्रमणकारिन्।

आक्रोश, स पु (स) शाप, आक्षेप, गालीदानम्।

आक्षेप, स पु (स) अपवाद, दोषारोप २ पातन, प्रासनम् ३ कटूक्ति (स्त्री) ४ अनकपगुनी वालरोगभेद ।
आक्साइड, स पु (अ) जारेयम् ।
आक्सिजन, स पु (अ) जारक, ओषजनम् ।
आखंडल, स पु (स) इन्द्र ।
—सूनु, स पु (स) अर्जुन ।
आखत, स पु (स अक्षता) अखण्डितव्रीह्य । वि, अखण्डित ।
आखर, स पु दे अक्षर ।
आखिर, वि (अ) अन्तिम अन्त्य २ समाप्त । स पु अन्त, अवसानम् २ परिणाम, फलम् । क्रि वि, अन्तत २ विवश (वि) भूत्वा ३ अवश्यम् ४ कथंचित् ।
—कार, क्रि वि, अन्ते, अन्तत ।
आखिरी, वि (फा) अन्तिम, अन्त्य, चरम ।
आखेट, स पु (स) मृगया, दे शिकार' ।
आखेटक, स पु (स) व्याध, आखेटिन् ।
आख्या, स स्त्री (स) नामन् (न), सज्ञा २ यशस् (न), कीर्ति (स्त्री) ३ विवरण, व्याख्या ।
आख्यात, वि (स) विख्यात, प्रसिद्ध २ कथित ३ तिङन्तक्रिया ।
आख्यान, स पु (स न) कथा, आख्यायिका २ वर्णन वृत्तान्त ।
आख्यायिका, स स्त्री (स) कथा, वृत्तान्त, आख्यानम् २ आख्यानभेद ।
आगन्तुक, वि (स) आयात, आगत २ २ अतिथि, अभ्यागत ।
आग, स स्त्री (स अग्नि) अनल, पावक, दहन, ज्वलन, वह्नि कृशानु, हुताशन, हुतवह, उषर्बुध, हव्यवाहन, चित्रभानु, शुक्र, शुचि २ ताप ३ कामाग्नि ४ वात्सल्यम् ५ ईर्ष्या । वि, अत्युष्ण १ क्रुद्ध ।
—का पुतला मु क्रोधित २ चपल ३ निपुण ।
—खाना अँगार हगना, मु, दुष्कृतस्य फल विपद् (स्त्री), यो यद् वपति बीजं हि सोपि तत्लभते फलम् ।
—पानी (फूस) का बैर, मु, सहज वैरम्, शाश्वतिको विरोध ।
—बबूला (बगूला) होना मु, नितरां कुप् (दि प से) ।
—भड़काना, मु, वैरोद्दीपनं, क्रोधोद्दीपनम् ।
—लगना, मु, ज्वलनम् २ कुप ३ ईर्ष्य् (भ्वा प से) ४ वस्तूनां बहुमूल्यता ।
—लगाना, मु, आवेशवर्धनम्, क्रोधोत्पादनम् २ नाशनम् ।
—लगा कर पानी को दौड़ना, मु, कलिमुत्पाद्य शान्त्यै प्रयत्न ।
—लगने पर कूआँ खोदना, मु, सदीप्ते भवने कूपखननम् ।
—लगा कर तमाशा देखना, मु, कलिमुत्पाद्य मनोविनोदनम् ।
—होना, मु, अत्यर्थं कुप ।
पानी में आग लगाना मु, अशक्यकरण, खपुष्पत्रोटनम् । पेट की आग, मु क्षुधा, बुभुक्षा ।
आगत, वि (स) प्राप्त, उपस्थित २ अतिथि ।
—स्वागत, स पु (न) आतिथ्य, सत्कार ।
आगम, स पु (स) आगमन, प्राप्ति (स्त्री) २ भावि-आगामि,-काल ३ भाग्य, दैवम् ४ संगम, समागम ५ आय ६ प्रकृतिप्रत्ययानुपघाती आगन्तुको वर्ण (व्या) ७ उत्पत्ति (स्त्री) ८ शब्दप्रमाणम् (यो) ९ वेद, शास्त्रम् १० तन्त्रशास्त्रम् ११ नीतिशास्त्रम् ।
—ज्ञानी, वि (स-ज्ञानिन्) पूर्ववादिन्, अग्रनिरूपक, सिद्ध, आदे (प्+ट्+) =ष्ट् ।
आगमन, स पु (स न) आगति (स्त्री), आगम २ आय, लाभ ।
आगमापायी, वि (स-यिन्) अनित्य, अध्रुव, जन्ममरणशील ।
आगर[1], स पु (स आकर) खन (खा) नी-नि (स्त्री) २ समूह ३ निधि ४ लवणगर्त ।
आगर[2], स पु (स अर्गल ला) द्वारविष्कम्भ ।
आगर[3] स पु (स आगारम्) गृहं सदनम् ।
आगर[4], वि (स अग्रय) श्रेष्ठ, उत्तम २ दक्ष ।
आगस्ती, स स्त्री (स) दक्षिणदिशा दक्षिणा, याम्या ।
आगा, स पु (स अग्रम्) अग्र पुरो,-भाग २ उरस, वक्षस् (दोनों न) ३ मुखम् ४ मस्तकम् ५ जननेन्द्रियम् ६ कञ्चुकादौ नाभप्रभाग ७ सेनाग्रम् ८ नौकाग्रभाग ९ गृहाग्रवर्ति अङ्गनम् १० अवलग्नम् ११ आगामिकाल १२ परिणाम ।

—पीछा, म पु (पु अग्र+पश्च >) संशय, विमर्श २ परिणाम ३ अग्रपश्चभागौ।

—पीछा करना, मु, दोलायते (ना ध्या)।

—पीछा सोचना, मु, परिणामचिन्तनम्।

आगाज़, स पु (फा) आरम्भ, उपक्रम, आदि।

आगामी, वि (स -मिन्) भाविन्, भविष्यत्।

आगार, स पु (स न) अगार, गृह, गेहम् स्थानम् २ कोष।

आगाह, वि (फा) ज्ञात, नोदधु, अभिज्ञ।

आगे, क्रि वि (स अग्रे) अग्रत, पुरत, पुरस्तात् (सब अव्य) २ समक्ष, अभिमुखम्, मुखम्, सम्मुखम् (सब अव्य) ३ जीवनकाले, उपस्थितौ ४ आगामिसमये ५ अनन्तर, तदनु ६ पूर्व ७ क्रोडे।

—आना, मु, प्रत्युद्गम् (भ्वा प अ)।

—निकलना, मु, अतिशी (अ आ से)।

—पीछे, मु, आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वश २ प्रत्यक्ष परोक्ष च (वा) ३ पूर्व पश्चाद् वा ४ यथा वकाशम् ५ अक्रमम्।

आग्नेय, वि (स) अग्नि,-मय-सबधिन् २ अग्निदेवताक ३ दाहक। स पु, (स न) सुवर्ण २ रुधिर ३ घृत ४ दीपनौषधम्। स पु (स पु) कार्तिकेय २ अगस्त्य ३ देशविशेष ४ अग्निपूजक ५ ब्राह्मण ६ अग्निकोण ७ ज्वालामुख।

—अस्त्र, स पु (स न) अग्निवर्षकोऽस्त्र भेद।

आग्नेयी, स स्त्री (स) अग्ने पत्नी २ अग्नि दीपनमौषधम् ३ दक्षिणपूर्वा दिशा।

आग्रह, स पु (स) अति, निर्बन्ध, अति,-याचना-प्रार्थना २ तत्परता, परायणता ३ बल, आवेश।

आग्रहायण, स पु (स) मार्गशीर्षमास।

आग्रहणयी, स स्त्री (स) आग्रहायन मार्गशीर्ष,-पूर्णिमा।

आग्रही, वि (स -हिन्) अविनेय, निर्बन्धवत्, दुराग्रह, स्वैरिन्।

आघर्षण, स पु (स न) आघर्ष, मर्दन, सघर्षण, चूर्णनम्।

आघात, स पु (स) प्रहार, आक्रमणम् २ प्रसारण, प्रक्षेप ३ वधस्थानम्।

आघ्राण, स पु (स न) गन्धग्रहणम् २ अतितृप्ति (स्त्री), पूर्णकामता।

आचमन, स पु (स न) उपस्पर्श, आंच (चा) म, अल्पपानम्।

—करना, क्रि स, आचम् (भ्वा प से,) आचामति।

आचमनी, स स्त्री (स आचमनीय >) आचमनोपयोगी चमसभेद।

आचरण, स पु (स न) अनुष्ठान २ आचार, व्यवहार ३ स्वच्छता ४ रथ।

आचरणीय, वि (स) अनुष्ठातव्य २ कर्तव्य।

आचरित, वि (स) कृत, विहित, अनुष्ठित।

आचार, स पु (स) व्यवहार २ चरित, चरित्र, चरित्र, वृत्त, शीलम् ३ शौच, शुद्धि (स्त्री) ४ स्नानम् ५ आचमनम्।

—भ्रष्ट, वि (स) दुर्वृत्त, चरित्रहीन, अनाचार।

—विचार, स पु (स-रौ) चरित्र मनोभावश्च २ चारित्रम्, दे 'आचार'।

आचार्य, स पु (स) उपनेतृ गुरु २ वेदाध्यापक ३ यज्ञे कर्मोपदेशक ४ पुरोहित ५ उपाध्याय, अध्यापक ६ ब्रह्मसूत्राणां चत्वार प्रधानभाष्यकारा सर्वश्रीशकररामानुजमध्ववल्लभाचार्या ६ वेदभाष्यकृत् ७ प्रकाण्डपण्डित।

—कुल, स पु (स न) गुरुकुलम्।

आचार्या, स स्त्री (स) मन्त्रोपदेष्ट्री, वेदभाष्य कर्त्री, वेदाध्यापिका।

आचार्यानी, वि स्त्री (स नी) आचार्यपत्नी।

आचार्यी, वि स्त्री (स) आचार्यसबधिनी।

आच्छन्न, वि (स) आच्छादित, आवृत २ गुप्त, तिरोहित।

आच्छादक, वि, (स) आवरक, पिधायक, वेष्टक।

आच्छादन, स पु (स न) आवरण, पुट, वेष्टन, अवगुठन, पिधान २ प्रच्छदपट ३ ३ आवरणक्रिया।

आच्छादित, वि (स) आवृत, पिहित, तिरोहित।

आच्छोटन, स पु (स न) अगुली, मोटन स्फोटनम्।

आज, क्रि वि (स अद्य अव्य) वर्तमाने दिने २ अद्यत्व, अस्मिन् काले। स पु, वर्तमानो दिवस २ सप्रति, साम्प्रतम्।

—कल, क्रि, वि (स अद्यश्वस्यम्) एतेषु दिनेषु २ अद्यश्वे, अद्य श्वो (कश्वे), वा ।

—तक, क्रि वि अद्य यावत् पर्यन्तम्, अधुना इदानीं यावत् पर्यन्तम् ।

—कल करना, मु, व्याक्षिप (तु उ अ) ।

—कल का मेहमान, मु मरणासन्न, आसन्न निधन, मुमूर्षु ।

आजन्म, क्रि वि (स) यावज्जीवम् २ जन्मन प्रभृति ।

आज़माइश, स स्त्री (फा)परीक्षा अनुयोग २ परीक्षार्थं प्रयोग ।

आजा, स पु (स आर्य >) पितामह ।

आज़ाद, वि (फा) दे 'स्वतन्त्र' ।

आज़ादी, स स्त्री (फा) दे 'स्वतन्त्रता' ।

आजानु, वि (स) जानु अवधीकृत्य पर्यन्त ।

—बाहु, वि (स) आजानुलम्बबाहु २ दीर्घबाहु ३ वीर, शूर ।

आजीवन, क्रि वि (स न) दे 'आजन्म' ।

आजीविका, स स्त्री (स) आजीव, वृत्ति (स्त्री), उप,जीविका ।

आज्ञा, स स्त्री (स) आ नि, देश, शासन, नियोग २ स्वीकृति अनुमति (स्त्री) ।

—देना, क्रि स, आ नि समा, दिश (तु उ अ), आज्ञा (प्रे आज्ञापयति) ।

—मानना, क्रि स, आज्ञां अनुवृत (भ्वा आ से)-पा, (प्रे पालयति) ।

—कारी, वि (स रिन्) आज्ञा वचन, अनु वर्तिन् ग्राहिन् सेविन् पालक ।

—पत्र, स पु (स न) निदेश आदेश, पत्रम् ।

पालक, वि (स) दे 'आज्ञाकारी' ।

—पालन, स पु (स न) आज्ञा, अनुवर्तन कारिता ।

—भंग, स पु (स) आज्ञातिक्रम, आज्ञोल्लङ्घनम् ।

आज्य, स पु (स न) घृतम् ।

आटविक, स पु (स) अरण्य-वन्-वासिन्, आरण्यक २ मार्ग दर्शक ।

आटा, स पु (स अट्टम् वा अट >) गोधूम चूर्ण, अन्न, चूर्ण, क्षोद, पिष्टान्न, गुंडिक ।

—गीला होना, (गरीबी में), मु, दारिद्र्ये कष्टान्तरागम ।

आटे दाल की फ़िक्र, मु, आजीविकाचिन्ता ।

आटे दाल का भाव मालूम होना, मु व्यवहारज्ञानम् ।

आटोक्रैट, स पु (अ) निरंकुश-नृप शासक २ स्वेच्छाचारि-स्वैरि,-मानव ३ असीमाधिकारसम्पन्नो जन ।

आटोक्रैसी, स स्त्री (स) निरंकुश नृप शासनम् २ निरंकुशता, स्वेच्छाचारिता ।

आटोप, स पु (स) आच्छादनम् २ आडम्बर ३ दर्प ४ उदरगुडगुडाशब्द ।

आठ, वि (स अष्टन्) । स पु, उक्ता संख्या, तद्बोधकोऽङ्क (८) च ।

—आठ आँसू रोना, मु, अश्रुधारापातनम् ।

आठों प्रहर, मु, अहर्निश, दिवानिशम् (अव्य)

आठवाँ, वि (हि आठ) अष्टम (मी स्त्री) ।

आडंबर, स पु (स) गम्भीरशब्द २ तूर्यरव ३ गजगर्जनम् ४ कपटवेष, दम्भ, मिथ्याटोप, जनम् ५ आच्छादनम् ६ पटमण्डप ७ पटह ।

आड़, स स्त्री (स अल = रोकना >) व्यवधान, तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, ज(य)वनिका २ आश्रय, शरणम् ३ प्रतिबन्ध, विघ्न ४ इष्टकाखण्ड ५ स्थूणा, स्तम्भ ।

आड़ा, स पु (स आली >) रेखायुतो वस्त्र भेद २ (पोतस्य) स्थूल वृहत्,-काष्ठम् । वि, अनुप्रस्थ, तिर्यक्, समस्थ २.तिर्यंच्, जिह्म।

आड़े आना, मु, बाध् (भ्वा आ से) २ विपत्तौ साहाय्य दा (जु उ अ) ३ दिष् (अ उ अ) ।

आड़े हाथों लेना, मु, निभर्त्स् (चु) ।

आढ़, स पु (स आढक-कम्) चतु प्रस्थ परिमाणम्, द्रोणचतुर्थांश ।

आढ़त, स स्त्री (हि आढ़ना = जमानत देना) परार्थविक्रय २ परार्थविक्रयभृति (स्त्री) ।

आढ़ती, स पु (हि आढ़त) परार्थविक्रेतृ ।

आढ्य, वि (स) सम्पन्न, धनिन् २ युक्त ।

आतंक, स पु (स) भयं, त्रास २ प्रताप, गौरवम् ३ रोग, ज्वर ४ मुरजध्वनि ।

आततायी, स पु (स यिन्) अग्निद २ गरद, विषद ३ शस्त्रपाणि ४ धनापह ५ क्षेत्रहारिन् ६ दारापहारिन् । (-यिनी स्त्री)।

आतप, स पु (स) दिनज्योत्स्न (न), सूर्यालोक ...ता ३ ज्वर ।
आतपत्र, स पु (स न) छत्र, आतप घर्म, वारणम् ।
आतपोदक, स पु (स न) मरीचिका मृग, जल तृष्णा ।
आतिश, स स्त्री (फा) अग्नि ।
—बाजी, स स्त्री (फा) अग्निक्रीडनवानि (न बहु), अग्निक्रीडा ।
आतश्क, स पु (फा) उपदंश मेहरोगभेद ।
आतशी, वि (फा) आग्निक आग्नेय, २ अग्निज ३ अग्निजनक ।
—शीशा, स पु अग्नि, काच स्फटिक ।
आतिथ्य, वि (स) अतिथि-सेवक-पूजक ।
आतिथ्य, स पु (स न) अतिथिसेवा २ अतिथ्यर्थवस्तु (न) ।
आतिशय्य, स पु (स न) अतिशयत्व, आधिक्य, बहुत्वम् ।
आतुर, वि (स) आकुल, व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न, अधीर २ उत्सुक, उत्कण्ठित ३ दुखित ४ रोगिन् ।
आतुरता, स स्त्री (स) व्याकुलता, व्यग्रता २ त्वरा, सभ्रम ।
आतुरालय, स पु (स) चिकित्सालय, दे० 'अस्पताल' ।
आत्म, वि (स आत्मन्>) स्व, निज, स्वीय स्वकीय ।
—अभिमान, स पु (स न) स्वप्रतिष्ठा स्वगौरवम् ।
—अवलम्बी, वि (स विन्) आत्मविश्वासिन्, स्वाश्रित ।
—उद्धार, स पु (स) मुक्ति (स्त्री) मोक्ष ।
—उन्नति, स स्त्री (स) आत्मकल्याणम् २ स्वाभ्युदय ।
—घात, स पु (स) आत्म स्व निज, हत्या घात वध, प्राण जीवित, त्याग उत्सर्ग ।
—घात करना, क्रि स, आत्मान हन् (अ प अ) ।
—घाती, वि (स) आत्म, घातक घातिन् नाशिन् हन् ।
—ज, स पु (स) पुत्र २ कामदेव ३ रुधिरम् ।

—ज्ञान, स पु (स न) ब्रह्म-जीव, ज्ञानम् २ ब्रह्मसाक्षात्कार ।
—त्याग, स पु (स) परहिताय स्वार्थत्याग ।
—दर्शन, स पु (स न) समाधिना जीवेश्वरदर्शनम् ।
—निवेदन, स पु (स न) आत्मसमर्पण, सर्वस्वार्पणम् २ स्वविषये कथनम् ३ भक्तिभेद ।
—प्रशसा, स स्त्री (स) आत्मश्लाघा, स्वस्तुति निजस्तुति (दोनों स्त्री) ।
—भू, वि (स) निजशरीरज २ स्वयभू । स पु पुत्र २ कामदेव ३ ब्रह्मन् (पु) ४ विष्णु ५ शिव ।
—विश्वास, स पु (स) स्व निज, प्रत्यय विश्रम्भ
—विद्या, स स्त्री (स) ब्रह्मविद्या अध्यात्म विद्या, आत्मज्ञानम् २ मोहनविद्या (= मैस मरिज्म) ।
—हत्या, स स्त्री दे 'आत्मघात' ।
—आत्मक, वि (स) अन्वित, रूप, युक्त, मय (उ गद्यात्मक = गद्य,-रूप-मय) ।
आत्मा, स स्त्री (स आत्मन् पु) जीव, चेतन, जीवात्मन् २ चित्तम् ३ बुद्धि (स्त्री) ४ अहङ्कार ५ मनस (न) ६ ब्रह्मन् (न) परमात्मन् (पु) ७ देह ८ धृति (स्त्री) ९ स्वभाव, धर्म १० सूर्य ११ अग्नि १२ वायु ।
आत्मिक, वि (स) अध्यात्म-(समास में) आत्म, विषयक सम्बन्धिन् २ स्वीय ३ मानसिक ।
आत्मीय, वि (स) स्वीय, स्वकीय । स पु, स्वजन, बन्धु, मित्रम् ।
आत्मीयता, स स्त्री (स) बन्धुत्व सौहार्दम् ।
आत्यन्तिक, वि (स) अनन्त, असीम, अत्यधिक ।
आत्रेय, वि (स) अत्रिगोत्र, अत्रिसम्बन्धिन् । स पु अत्रिपुत्र ।
आत्रेयी, स स्त्री (स) अत्रिपत्नी २ अत्रिपुत्री ३ आत्रगोत्रजनारी ४ रजस्वला नारी ।
आथर्वण, स पु (स) अथर्ववेदज्ञो ब्राह्मण, पुरोहित २ अथर्वपुत्र ३ अथर्ववेदे विहित कर्मन् (न) ।
आदत, स स्त्री (अ) शील स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) २ अभ्यास, नित्यप्रवृत्ति (स्त्री) ।

आदम, स पु (अ) आदिम, प्रजापति (इस्लाम) २ मनुष्य ।
आदमियत, सं स्त्री (अ) मानवता, मनुष्यत्व २ सभ्यता, शिष्टता।
आदमी, स पु (अ) मनुष्य, मनुष्यजाति (स्त्री) २ दास ।
—बनना, मु सभ्यता शिक्ष (क्त्वा आ से)।
फी क्रि वि, प्रतिमनुष्यम्, प्रतिजनम्।
आदर, स पु (स) सम्मान, सत्कार, सत्क्रिया, प्रतिष्ठा, अर्हणा अर्चा।
—करना, क्रि स, आदृ (द्+ऋ)(तु आ' अ), सत्कृ, पूज अर्च् (चु) समन्,मभू (प्रे)।
—पाना, क्रि अ, सत्पुरस, कृ (कर्म), आदृ-(द्+ऋ) पूज् मेव (कर्म)।
—से, क्रि वि, सादर, सप्रश्रयम्, आदरेण।
आदरणीय, वि (स) मान्य, माननीय पूज्य, सत्कार्य, पूजनीय।
आदर्श, स पु (स) मुकुर दर्पण, आत्मदर्श २ प्रतिरूप, प्रतिमा, प्रतिमानम् ३ टीका, भाष्य व्याख्या ४ अतुल्य, अनुपम।
आदात, स स्त्री (अ० 'आदत' का बहु०) दे 'आदत'।
आदाता, वि (स-तृ) ग्रहीतृ ग्राहक, प्रापक।
आदान, स पु (स न) ग्रहण, स्वीकार, स्वीकरणम्।
—प्रदान, स पु (स न) ग्रहणवितरण, दानादान २ परस्परतितिक्षा, न्याय्याचरणम्।
आदाब, स पु (फा 'अदब का बहु०) दे 'अदब'।
आदि, वि (स) प्रथम अग्रिम, आदिम, आद्य। स पु, उपक्रम, आरंभ २ मूल, उत्पत्तिहेतु। अ य-प्रभृति,-आद्य (समासान्त में)।
—कवि, स पु (स) वाल्मीकि ।
—कारण, स पु (स न) मूलकारणम् (प्रकृति ईश्वरो वा)
—से अन्त तक, क्रि वि, आद्यन्तम्, आदितो ऽन्त यावत्।
आदिक, अव्य (स वि)-आदि,-आद्य, -प्रभृति (सब समासान्त में)।
आदित्य, स पु (सं) अदितिपुत्र २ देव ३ सूर्य ४ इन्द्र ५ वामन ६ वसु ७ विश्वे देवा ८ मन्दारवृक्ष ।
—वार, स पु (स) रवि भानु,-वार वासर'
आदिम, वि (स) प्रथम, आद्य, आदि।
—निवासी, स पु, (स सिन्) आदिवासिन्।
आदिष्ट, वि (स) आज्ञप्त, आज्ञापित, लब्धाज्ञ, प्राप्तादेश।
आदी, वि (अ) अभ्यस्त, अभ्यासिन्।
आदृत, वि (स) सत्कृत, सम्मानित, पूजित।
आदेय, वि (स) ग्रहणीय, परि-प्रति, -ग्राह्य ।
आदेश, स पु (स) आज्ञा, निदेश, शासन, नियोग, देशना २ उपदेश ३ प्रणाम ४ ग्रहफलम् ५ वर्णस्य वर्णान्तरोत्पत्ति (स्त्री, -त्या)।
आदेशक, वि (स) आज्ञापक, निदेशक, नियोजक, शासक।
आदेशी, वि (स-शिन्) दे० 'आदेशक' २ दैवज्ञ, ज्योतिर्विद्।
आद्यत, क्रि वि (स न) दे 'आदि से अन्त तक'।
आद्य, वि (स) प्रथम, आदिम, आदि २ अग्रय, प्रधान।
आद्या, स स्त्री (स) दुर्गा २ प्रतिपदा।
आद्योपांत, क्रि वि, दे 'आदि से अन्त तक'।
आध, वि (स अर्द्ध) सामि-(अव्य व सामिभुक्त)।
—आना, सं पु, अर्द्धाण ।
आधा, वि (स अर्द्ध) सामि। स पु, अर्द्ध, अर्द्धम्, अर्द्ध,-भाग -अंश ।
—आना, स पु, अर्द्धाण णक ।
—सीसी, स स्त्री, अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त्त, अर्द्धशिरोवेदना।
—तीतर आधा बटेर, मु विचित्रविचित्र असंगत।
आधान, स पु (स न) स्थापन २ न्यसनम्।
आधार, स पु (स) आश्रय, अवलम्बनम् २ आलवालम् ३ पात्रम् ४ गृह भित्ति मूल, वेश्मभू (स्त्री) ५ आश्रयदायक पालक ।
—आधेय संबंध, स पु (स) आश्रयाश्रयि संबंध (व घृतपात्रयो)।
—होना, मु., स्तोका वृत्ति (स्त्री) भू।
आधि, स स्त्री (स पुं) मानसी व्यथा, चिन्ता २ बंधक, न्यास, निक्षेप'।

आधिकारिक, स पु (स न) मूलकथावस्तु (न) २ कर्मचारिन्। त्रि अधिकारयुक्त।
आधिक्य, स पु (स न) बाहुल्य, प्राचुर्य, अतिशय।
आधिदैविक, वि (स) दैवप्रेरित दैवकृत (उ अतिवृष्टि)।
आधिपत्य, स पु (स न) स्वामित्व, प्रभुत्व, अधिकार, शासनम्।
आधिभौतिक, त्रि (स) मनुष्यपश्वादिप्रेरित (उ सर्पदंशदुःखम्)।
आधीन, वि दे 'अधीन'।
आधी रात, स स्त्री (स अर्द्धरात्र) मध्यरात्र, निशीथ, रात्रिमध्यम्।
आधुनिक, वि (स) नूतन, नवीन अधुना तन इदानींतन, अर्वाचीन, सांप्रतिक।
आधृत, वि (स) आश्रित, अवलम्बित।
आधेय, स पु (स न) आधारस्थ वस्तु (न), आश्रित पदार्थ। वि स्थापनीय न्यसनीय।
आधोरण, स पु (स) हस्तिपक, हास्तिक।
आध्मान वि (स) उच्छून, वातपूरित २ दृप्त, गर्वित ३ दग्ध ४ ध्वनित।
आध्यात्मिक, वि (स) ब्रह्मजीवविषयक, देह चित्तजीवसंबंधिन् (उ ज्वरमोहशोकादय)।
आनंद, स पु (स) आह्लाद, मुदा, आ-प्र, -मोद समद, हर्ष प्रमद, शान्ति (स्त्री), सुखम्, प्रसन्नता। वि, आनंदित, प्रसन्न।
—करना, क्रि अ, नन्द् (भ्वा प से) मुद् (भ्वा प से)।
—देना, क्रि स, आह्लाद्-नन्द्-प्रमुद् (प्र)।
—बधाई, स स्त्री अभिनन्दनम् २ मंगलो त्सव।
—मंगल, स पु (स न) आनन्द, मोद, कुशलम्।
आनन्दित, वि (स) प्रमुदित, सानन्द, सुखिन्।
आन स स्त्री (स आणि पु स्त्री) शोभा, मर्यादा २ शपथ, समय ३ विजयघोषणा ४ प्रतिज्ञा, स-प्रति,-श्रव।
—रखना, मु, प्रतिज्ञां पा (प्रे पालयति)।
आन, स स्त्री (फा) छवि (स्त्री), सौन्दर्यम् २ अभि-, मान ३ लज्जा, संकोच।
—बान, स स्त्री, वैभव, शोभा, हावभावा।
—बान वाला, वि, सुवसन, सुषम।
आन, स स्त्री (अ) क्षण, पल, निमेष।
—की आन में, मु सद्य, झटिति, आशु (सब अव्यय)।
आनक, स पु (स) पटह, भेरी, मृदंग २ स्तनयित्नुमेघ।
आनन, स पु (स न) आस्य, मुख, वदनम्।
आनन-फानन, क्रि वि (अ) क्षणेन, क्षणात्।
आनरेबल, वि (अ) मान्य।
आनरेरी, वि (अ) अवैतनिक, आदरवृत्ति।
—मैजिस्ट्रेट, स पु (अ) अवैतनिको दण्डाध्यक्ष।
आना, स पु (स आणक) रूप्यकस्य षोड-शोंऽश २ कस्यचिद् वस्तुन षोडशो भाग।
आना, क्रि अ (स आगमनम्) आगम् (भ्वा प अ) आया (अ प अ) आव्रज् (भ्वा प से) स पु, आयानं, उपस्थान, आगमनम्।
आई-गई, (बात) वि, अतीता, विस्मृता (वार्ता)।
आए दिन, क्रि वि, अन्वह, प्रतिदिनम्।
आ धमकना क्रि अ, अकस्मात् आगम।
आनाकानी, स स्त्री, अप-व्यप, देश छलेन परिहरणम् २ अनवधानम् ३ कर्णे जपनम्।
आनाकानी करना, क्रि अ, अप-व्यप, दिश (तु उ अ), छलेन परिहृ (भ्वा उ अ)।
—जाना, स पु, गतागतम् २ पुनर्जन्मम् (न)।
आनीत, वि (स) आ नीत हृत, उपस्थापित, उपनीत।
आनुकूल्य, स पु, (स न) 'अनुकूलता' दे।
आनुपूर्वी, स स्त्री (स) अनुक्रम, आनुपूर्व्य, परंपरा।
आनुमानिक, वि (स) अनुमान-तर्क, सिद्ध, सामान्य, काल्पनिक।
आनुषंगिक, वि (स) प्रासंगिक, गौण।
आन्वीक्षिकी, स स्त्री (स) तर्कविद्या, न्याय २ आत्मविद्या।
आप, सर्व (स आत्मन् >) स्वय स्वत (अव्य), २ भवत् (भवती स्त्री)।
—बीती, स स्त्री स्वानुभूत, प्रत्यक्षीकृत।
आप, स पु (स आप स्त्री बहु) पानीय, जलम्।

आपगा, स स्त्री (स) नदी, तटिनी।
आपत्काल, स पु (स) दुष्काल दुरसमय २ विपत्ति (स्त्री)।
आपत्ति, स स्त्री (स) दुःख, क्लेश २ विपत्ति, विपद्, आपद् (सब स्त्री) ३ कुसमय ४ दोषारोपणम् ५ आक्षेप, अपवाद।
आपद्, स स्त्री (स) दे 'आपत्ति'।
—ग्रस्त, वि, आ-वि,-पन्न आर्त्त दुर्गत।
—धर्म, स पु (स) विपत्कर्तव्य, कुसमय धर्म।
आपदा, स स्त्री, दे 'आपत्ति'।
आपन्न, वि (स) आपद्ग्रस्त २ प्राप्त।
आपस, स पु (हि आप+से) सम्बन्ध। भ्रातृत्व बन्धुत्वम्।
—का, वि, आत्मीयानां, बन्धूनाम् २ परस्परस्य, अन्योऽन्यस्य, मिथ (अव्य), इतरेतरस्य।
—में, क्रि वि, परस्पर अन्यो य मिथ।
आपसी, वि (हि आपस) पारस्परिक।
आपा, स पु (हि आप) आत्मत्व, स्वमत्ता २ गर्व ३ चैतन्य चेतना।
—धापी, स स्त्री, स्वार्थपरता, स्वस्वहितचिंता २ स्पर्धा, अहमहमिका, अहं, पूर्विका प्रथमिका।
—पंथी, वि कुमार्गिन्, कुपथगामिन्।
आपे में आना, मु, चैतन्यलाभ।
आपे में न रहना, मु, क्रोधादिभि बुद्धि-मति-नाश।
आपात स पु (स) पतन, अवनति (स्त्री) २ अकस्मात् उपागम ३ आरम्भ ४ अन्त।
आपातत, क्रि वि (स) अकस्मात्, सहसा अकाण्डे २ अन्ते, अनन्तरं।
आपाती, वि (स-निद्) पतन अवतरण उन्मुख २ आक्रामक ३ भाविन्।
आपाद, स पु (स) प्राप्ति-अवाप्ति (स्त्री) २ पुरस्कार ३ पारिश्रमिकम्। अव्य आचरणम्, पादपर्यन्तम्।
आपेक्षिक, वि (स) मापेक्ष २ पराश्रित, परावलम्बिन्।
आप्त, वि (स) अधिगत प्राप्त, लब्ध २ कुशल, दक्ष ३ साक्षात्कृतधर्मन्, भ्रान्तिशून्य। स पु, ऋषि २ शब्दप्रमाणम्।
—काम, वि (स) पूर्णकाम, तृप्त, संतुष्ट।
आप्ति, स स्त्री (स) लाभ, प्राप्ति (स्त्री)
आप्लुत, वि (स) स्नात, कृतस्नान २ सिक्त, उक्षित, आर्द्र २ स पु, स्नातक, गृहिन्।
आफत, स स्त्री (अ) दे 'आपत्ति' (१-३)।
—का परकाला, स पु, लोककंटक, कुचेष्टक २ क्षिप्रकारिन्।
आफिस, स पु (अ) कार्यालय।
आब, स स्त्री (फा) कांति द्युति (स्त्री), २ उत्कर्ष ३ शोभा श्री (स्त्री)। स पु, आप (स्त्री बहु) जलम्।
—कारी, स स्त्री (फा) मद्यनिष्कर्षशाला, शुंडा, सभानी २ मादकद्रव्यनिरीक्षकशासन विभागविशेष।
—ताब, स स्त्री (फा) शोभा, विभूति (स्त्री)।
—दाना, स पु (फा) अन्न-जल, जीविका २ अन्न न अन्नजलम्।
—पाशी, स स्त्री (फा) जलसेक, प्लावनम्।
—शार, स पु (फा) निर्झर, जलप्रपात।
आबेहयात स पु (फा) अमृत, सुधा।
आबोहवा, स स्त्री (फा) जलवायु (न)।
आबद्ध, वि (स) निगृहीत, नियंत्रित।
आबनूस, स पु (फा) कोविदार, कुमपत्रक।
—का कुन्दा, मु अतिकृष्णो मनुष्य।
आबाद, वि (फा) लोकाध्युषित जनाकीर्ण २ उर्वर, बहुशस्यद ३ सपन्न।
आबादी, स स्त्री (फा) जनाकीर्णस्थानम् २ जनसंख्या ३ शस्यदा भूमि (स्त्री)।
आबाध, स पु (स) कष्ट, वेदना २ क्षति-हानि (स्त्री)।
आबी, वि (फा) जलीय, जलमय २ जल वर्ण, हरनील।
आब्दिक, वि (स) वार्षिक सांवत्सरिक (की स्त्री)।
आभरण, स पु (स न) अलंकार, मंडन भूषणम् २ पोषण, संवर्द्धनम्।
आभा स स्त्री (स) कांति दीप्ति (स्त्री) २ प्रति बिंबच्छाया।
आभाणक, स पु (स) लोकोक्ति (स्त्री)।
आभार, स पु (स) उपकार २ गार्हस्थ्य भार ३ भार, भर।
आभारी, वि (स रिन्) कृतज्ञ, कृतवेदिन्।

आभास, स पु (स) प्रति बिंब छाया २ संकेत ३ मिथ्याज्ञानम्।
आभिचारिक, वि (स) ऐन्द्रजालिक मायात्मक, मायामय मायिक
आभीर, स पु (स) गोप।
आभूषण, स पु (स न) दे 'आभरण'।
आभ्यंतर, वि (स) अंतस्थ आंतर, गर्भस्थ, अंतगत आभ्यन्तरिक।
आभ्युदयिक, वि (स) मांगलिक शुकर शुभ।
आमंत्रण, स पु (स न) आह्वानम् २ निमंत्रणम्।
आमंत्रित, वि (स) आकारित आहूत २ निमंत्रित।
आम[1], स पु (स आम्र-स्त्र) १ (वृक्ष) आम्र रसाल सहकार, कामांग वसंतदूत कोकिलोत्सव २ (फल) आम्र अम्र रसाल सहकार फलम्।
—के आम, गुठली के दाम, मु उभयतो लाभ।
—खाने से काम या पेड गिनने से, मु, आम्रे प्रयोजन न तु वृक्षगणनया।
आम[2], वि (स) अपक्व, दे 'कच्चा'।
आम, स पु (स न) अन्नश्लेष्मन् (पु) २ अजीर्णरोगभेद।
—अतिसार, स पु (स) अतिसारभेद, ग्रहणी।
आम[3], वि (अ) सामान्य, प्राकृत अवर, २ विख्यात, प्रसिद्ध।
—फहम, वि (अ) सुबोध, सुविज्ञेय।
आमद, स स्त्री (फा) आगमन २ आय।
आमदनी, स स्त्री (फा) आय, धनागम।
आम (मा) नस्य, स पु (स न) शोक दुःख २ दुःख वेदना।
आमना सामना, स पु (हिं सामना) समागम।
आमने सामने, क्रि वि (हिं सामना)। परस्परम् पुरत अन्योऽन्यस्य सम्मुखम्।
आमय, स पु (स) रोग, व्याधि।
आमयावी, वि (स विन्) रुग्ण, रोगिन् २ अजीर्ण अपच ग्रस्त।
आमरण, क्रि वि (स न) मृत्यु यावत्, निधनावधि, आमृत्यो।

आमलकी, स स्त्री (स) लघु-क्षुद्र, आमलक।
आमला, स पु दे 'आँवला'।
आमाशय, स पु (स) अन्नाशय, जठरम्।
आमिष, स पु (स पु न) मांस २ भोग्य पदार्थ ३ लोभ ४ उत्कोच।
आमी, स स्त्री (हिं-आम) आम्रकम्।
आमुख, स पु (स न) रूपकप्रस्तावना।
आमोद स पु (स) आनन्द, मनोविनोद २ सुगन्ध।
—प्रमोद, स पु, आह्लाद, हर्ष २ हास्य विनोद नर्मालाप।
आम्र, स पु (स) दे 'आम'।
आयँती पायँती, स स्त्री (अनु + फा पाय ताना) खट्वाया शीर्षपादभागौ।
आय, स स्त्री (स पु) धन अर्थ, आगम लाभ।
—व्यय, स पु (स व्ययौ) आगमोत्सर्गौ।
—व्ययिक, स पु (स न) व्याकल्प (बजट)।
आयत[1], वि (स) विस्तृत, विशाल।
आयत[2], स स्त्री (अ) इंजील कुरान, वाक्यम्।
आयसु, स स्त्री (स आदेश) आज्ञा।
आया, क्रि अ (हिं आना) आगत।
—गया, स पु, अतिथि।
आया[2], स स्त्री (पुर्त) धात्री, मातृका।
आया[3], अव्य (फा) किम्, यद्।
आयात, स पु (स न) विदेशादानयनम् २ विदेशादानीत पण्यसमूह।
आयास, स पु (स) प्रयत्न २ श्रम।
आयासक, वि (स) श्रम, जनक उत्पादक। कष्टक्लेश प्रद।
आयु, स स्त्री (स आयुस न) वयस (न), जीवितकाल नित्यग, जिजीविनम्।
आयुक्त, वि (स) नियुक्त २ संयुक्त।
आयुध, स पु (स न) अस्त्र शस्त्र, प्रहरण, इति (स्त्री)।
आयुधागार, स पु (स न) शस्त्र अस्त्र,-आगार गृहम्।
आयुर्वेद, स पु (स) वैद्यक, वैद्यशास्त्र, चिकित्साशास्त्रम्।
आयुष्मान्, वि (स) (स मत्) चीर दीर्घ, जीविन्। (आयुष्मती स्त्री)।

आयुष्य, वि (स) पथ्य। स पु वयस (न)।

आयोजन, स पु (स न)द्रव्यामादन सामग्रीसंपादनम् २ नियुक्ति (स्त्री) ३ उद्योग ४ सामग्री।

आयोडीन, स स्त्री (अ) जम्बुकी, नीलीनम्।

आरंभ, स पु (स) उपक्रम, प्रारंभ, आदि २ उत्पत्ति (स्त्री)।

—करना, कि स, आ प्र रभ, प्र उप, क्रम् (सद भ्वा आ अ)

आर[1], स पु (स न) मुड, लोह आयसम् २ पित्तकम् ३ तट टटी टा ४ कोण ५ अर् अरम्।

आर[2], स स्त्री (स अलम् = डक) वृश्चिका दीनां दश, दशचञ्चु २ अंकुश ३ कील।

आर, स स्त्री (स आरा) चर्मप्रभेदिका।

आर[3], स पु (हिं अड) आग्रह निर्बंध।

आर[4] स स्त्री (अ) संकोच, लज्जा।

आरक्त, वि (स) ईषद्रक्त २ लोहित।

आरण्य, वि (स) वन्य, वनजात वनसंबंधिन्।

आरण्यक, वि (स) दे आरण्य। स पु (स न)ग्रन्थभेद।

आरती, स स्त्री (स आरात्रिकम्) नीराजनानम्, देवमूर्तिपरितो दीपचालनम् २ नीराजनापात्रम् ३ नीराजनास्तोत्रम्।

आरपार, स पु (स आरपारम् >) तटद्वयी, पारावार रौ रे। कि वि आवारपारम्, अवारात् पारं यावत् आद्यन्त, समग्रम्।

आरब्ध, वि (स) उपक्रान्त, कृतारम्भ।

आरभटी, स स्त्री (स) क्रोधाद्युग्रभावानां चेष्टा २ रूपके यमकवहुलो वृत्तिभेद

आरसी, स स्त्री (स आदर्श) दर्पण, मुकुर २ दक्षिणहस्तांगुष्ठभूषणभेद।

आरा, स पु (स आरा >) क्रकच न्नम्। करपत्र, पत्रदारण २ चर्मप्रभेदिका ३ अर, अरम्।

—कश, स पु (फा) क्राकचिक, दरदारण।

—कशी, स स्त्री क्रकचेन काष्ठविपाटनम्

आराइश, स स्त्री (फा) परिष्कृति (स्त्री), अलंक्रिया, परिक्रिया सज्जा।

आराधक, वि (स) उपासक, पूजक।

आराधन, स पु (स न) भक्ति (स्त्री) सेवा, परिचर्या २ तर्पण, तोषण, प्रसादनम्।

आराधना, स स्त्री (स) दे आराधन।

—करना, कि स, पूज (चु), उपास (अ आ से) अभि, अर्च (भ्वा प स), आराध (प्रे)।

आराधनीय, वि (स) आराध्य सेवनीय, पूजनीय, अर्चनीय।

आराम[1], स पु (स) उपवन उद्यान पुष्पवाटिका।

आरामाधिपति, स प्र (स) उपवन उद्यान अधिकारिन् आधिकारिक।

आराम[2], स पु (फा) सुखम् २ विश्राम ३ स्वास्थ्यम्।

—करना, कि अ, १ कार्यात् निवृत् (भ्वा आ से) २ विश्राम (दि प से) ३ शी (अ आ से)।

—कुरसी, स स्त्री, विश्रामासन्दी।

—तलब, वि, अलस सुखेच्छुक।

आरास्ता, वि (फा) अलंकृत परिष्कृत सज्ज।

आरी, स स्त्री (हिं आरा) लघुक्रकच क्रकचक करपत्रकम् २ दडाग्रलग्नो लोहकील ३ आरा चर्मप्रभेदिका।

आरूढ, वि (स) अधिरूढ अध्यासीन कृतारोहण २ दृढ, स्थिर।

—होना, कि अ, आ अधि रुह् (भ्वा प अ), अध्यास (अ आ से)।

—करना, कि स आ अधि रुह् (प्रे आरोपयति)।

आरोग्य, वि (स आरोग्यम् >) नीरोग, स्वस्थ। स पु (स न) दे अरोगता।

आरोग्यता, स स्त्री (स आरोग्यम्) स्वास्थ्य नीरोगता, अनामयम्।

आरोप, स पु (स) अरोपण स्थापनं स्थिरीकरणम् २ स्थानान्तरे आरोपण स्थापन वा ३ भ्रम ४ वस्तुनि वस्त्वन्तरधर्मकल्पनम्।

आरोपना, कि स (स आरोपणम्) (स्थानान्तरे) आरुह् (प्रे आरोपयति) निविश (प्र) मप्रति ष्ठा (प्र)

आरोपित, वि (स) स्थापित निहित, निवेशित।

आरोह, स पु (स) उद्गम, उदय, अधिरोहणम् २ आक्रमणम् ३ गजादिपृष्ठेऽधिरोहणम् ४ उत्तमयोनिप्राप्ति (स्त्री) ५ कारणात् कार्यप्रादुर्भाव ६ विकास ७ स्वरोत्कर्ष ८ नितम्ब ।

आरोहण, स पु (स न) उद्गमन अधिरोहणम् २ अंकुरप्ररोहणम् ३ सोपान, निःश्रेणी ।

आरोही, वि (स हिन्) आरोहक उद्गामी २ उन्नतिशील । स पु उत्कर्षोन्मुख स्वर २ आरूढ, अश्वादिपृष्ठस्थ ।

आर्जव, सं पु (स न) ऋजुता सरलता निष्कपटता २ सुकरता ३ व्यवहारशुद्धि (स्त्री)।

आर्जुनि, स पु (स) अर्जुनपुत्र अभिमन्यु ।

आर्ट, स पु (अ) कला, शिल्प २ कौशल, नैपुण्यम् ।

आर्टिकल, स पु (अ) निबन्ध, लेख २ धारा नियम ।

आर्टिस्ट, स पु (अ) कलाकार, कलाविद् २ चित्रकार ।

आर्डर, स पु (अ) आदेश, आज्ञा २ वस्तुनिर्माण पदार्थप्रेषण, आदेश ।

आर्डिनेंस, स पु (अ) अध्यादेश २ सुशास्त्र जि (न बहु)।

आर्त्त, वि (स) व्यथित, पीडित २ दुर्गत ३ रुग्ण ।

—नाद, स पु, आर्त्तध्वनि, आर्त्तस्वर ।

आर्ति स स्त्री (स) पीडा, व्यथा २ आपद् विपद् (स्त्री)।

आर्थिक, वि (स) धन-द्रव्य वित्त, विषयक मौद्रिक ।

आर्द्र, वि (स) क्लिन्न, उन्न, उत्त, सिक्त ।

आर्द्रता, स स्त्री (स) क्लिन्नता, सरसता ।

आर्द्रा, स स्त्री (स) षष्ठनक्षत्रम् २ आषाढारम्भ ३ आर्द्रकम् ।

आर्य, वि (स) श्रेष्ठ भद्र २ मान्य, पूज्य ३ कुलीन सत्कुलज (आर्या स्त्री)। स पु (स) सज्जन, कुलीनमानव २ पूज्यमनुष्य ३ स्वामिन् ४ श्वशुर ५ जातिविशेष ६ आर्यजातीय ७ गुरु ८ मित्रम् ।

—आवर्त स पु (सं) विन्ध्यहिमाचलयोर्मध्यदेश २ भारतवर्षम् ।

—पुत्र, स पु (स) श्रेष्ठस्य पुत्र २ पति ।

—समाज, स पु (स) महर्षिदयानन्द संस्थापित समाजविशेष ।

आर्या, स स्त्री (स) पार्वती २ श्वश्रू (स्त्री) ३ पितामही ४ छन्दोभेद ।

आर्ष, वि (स) १ २ ऋषि, सम्बन्धिन् प्रणीत सेवित ४ वैदिक ।

—प्रयोग स पु (स) प्राचीनग्रन्थानामर्वाचीनव्याकरणविरुद्धा प्रयोगा ।

आलंकारिक, वि (स) अलंकारविषयक २ अलंकारयुत ३ अलंकारविद् ।

आलंब, स पु (स) अवलंब, आश्रय २ गति (स्त्री), शरणम् ।

आलंबन, स पु (स न) अवलंब, आश्रय २ रसोत्पत्तौ विभावभेद (सा) ३ कारण, साधनम् ।

आलन, स पु (?) लेपनाय कर्दममिश्रितृणादिकम् २ शाकादिमिश्रित चणकादिचूर्णम् ।

आलमारी स स्त्री, दे 'अलमारी'।

आलय, स पु (स) गृहम् २ स्थानम् ।

आलवाल, स पु (स न) आवाल, आवाप ।

आलस, स पु, दे 'आलस्य'।

आलसी, वि (हिं आलस) अलस, तन्द्रिल, तन्द्रालु, शीतक, तुन्दपरिमृज, उद्योगविमुख ।

आलस्य, सं पु (स न) मान्द्य, तन्द्रिका, जाड्य, कार्यद्वेष ।

आला, स पु (स आलय >) भित्तिस्तम्भादिषु दीपकार्थं स्थानम् २ काष्ठफलक ।

आला, वि (अ) उत्तम, श्रेष्ठ ।

आलान, सं पु (स न) गजबन्धन, स्तम्भरज्जु (स्त्री) २ बन्धन, रज्जु ।

आलाप, स पु (स) संलाप, सम्भाषण, कथोपकथन, वार्त्तालाप २ तान, सप्तस्वरसाधनम् (संगीत)।

आलापना, क्रि स (स आलपन >) गै (भ्वा प अ)।

आलिंगन, स पु (स न) परि (री) रम्भ, परिष्वंग, संश्लेष, उपगूहन श्लिषा ।

—करना, क्रि स, आलिंग (भ्वा प से), आश्लिष् (दि प अ), उपगुह (भ्वा उ से., उपगूहति)।

आलि, स स्त्री (स) वयस्या, सखी सहचरी २ पंक्ति (स्त्री) ३ सेतु ४ रेखा।
आलि, स पु (स) वृश्चिक २ भ्रम।
आलिखित, वि (स) लिखित २ अंकित ३ चित्रित।
आलिप्त, वि (स) प्र वि लिप्त, दिग्ध, भक्त।
आलिम, वि (अ) पठित, विद्वस, बहुश्रुत, बहुधीत।
आली, स स्त्री (स) सखी वयस्या २ पंक्ति, तति (स्त्री)।
आलू, स पु (स आलु) सुकन्द शुभालु, शुड्‌कन्दम्।
—बुखारा, स पु, आलूक, आलुक, रक्तफल मल्लकम्।
आलूचा, स पु (फा) *आलूच वृक्षभेद २ *आलूचम्, फलभेद।
आलेख, स पु (स) लेख, लेख्य, लिखितम् २ लिपी लिपि (स्त्री)।
आलेख्य, स पु (स न) चित्र प्रतिरूप। वि लेखाई।
आलोक, स पु (स) भा, आभा प्रभा प्रकाश २ दिवस दीप्ति कान्ति (सब स्त्री)।
आलोचक, वि (स) समालोचक समीक्षक २ दर्शक।
आलोचन, स पु (स न) गुणदोष परीक्षण निरूपण परीक्षा, सम्, आलोचना २ दर्शनम्।
आलोचना, स स्त्री (स) दे 'आलोचन।
आलोडन, स पु (स न) मथन मथ २ प्रगाढविचार।
आलोडित, वि (स) मथित २ सक्षोभित ३ विचारित।
आल्हा, स पु (देश) वीरच्छन्दस (न) २ महोबानामा प्राचीनो वीरविशेष ३ विस्तृत वर्णनम्।
आवभगत, स स्त्री (हिं आना + स भक्ति) सत्कार, उपचार सेवा, पूजा।
आवरण, स पु (स न) आच्छादनं पुर्र २ आच्छादनवस्त्र प्रच्छदपट ३ तिरस्करिणी, व्यवधान ४ कोश, कोष, वेष्टनम् ५ चर्मन् (न) पत्त्रम् (हिं दल)।
—पत्र, स पु (स न) मुख पृष्ठ पत्रम्।
आवर्त, स पु (स) जलभ्रम, भ्रमरक भ्रमि (स्त्री) २ अवृष्टजलो मेघ ३ राजा वर्त रत्नभेद।
आवर्तक, वि (स) आ परि वर्तमान, घूर्णायमान।
आवर्तन, स पु (स न) परि भ्रमण, व्या परि वर्तनम् २ विलोडनम् ३ पुन पुन र्भाव आवृत्ति (सब स्त्री)।
आवर्तनी, स स्त्री (स) मूषा २ दर्वी मुषा ३ चमस सम।
आवलित, वि (स) ईषद्वक्र वक्रीभूत।
आवली, स स्त्री (स) आवलि पंक्ति तति (सब स्त्री)।
आवश्य, स पु (स स) आवश्यकता २ ३ अनिवार्य कार्यफलम्।
आवश्यक, वि (स) अवश्यकर्तव्य, शीघ्रकार्य, गुर्वर्थ २ अनिवार्य।
आवश्यकता स स्त्री (स) आवश्यकत्व, अपेक्षा ३ प्रयोजनम्।
आवश्यकीय, वि, दे 'आवश्यक।
आवा, स पु दे आँवा'।
आवागमन, स पु (हिं आना + स गमनम्) पुनरुत्पत्ति (स्त्री), पुनर्जन्मन् (न०), मृत्युभाव, देहान्तरप्राप्ति (स्त्री)।
आवाज, स स्त्री (फा) शब्द, नाद स्वन, ध्वनि घोष २ गानस्वर ३ उच्चस्वर।
—उठाना, मु, विपरीत वद् (भ्वा प से)।
—बैठना, मु, स्वरभग जन् (दि आ से)।
आवारा, वि स्त्री (फा) परिभ्रमक, अकर्मण्य २ अज्ञातनिवास ३ दुर्वृत्त जाल्म।
आवास, स पु (स) गृह गेह सदनम्।
आवाहन स पु (स न) मन्त्रैर्वाऽऽह्वानम्, आमन्त्रणम् २ निमन्त्रणम्।
आविर्भाव, स पु (स) प्रकाशनं प्र कटनं, विवृति (स्त्री) २ उत्पत्ति (स्त्री)।
आविर्भूत, वि (स) प्रकटित प्रकाशित २ उत्पन्न।
आविष्कर्ता, वि (स कर्तृ) आविष्कारक, प्रकटयितृ प्रकाशक वक्तृ।
आविष्कार, स पु (स) अज्ञातवस्तुप्रकाशनम् २ अपूर्ववस्तुनिर्माणम् ३ प्रक श, प्राकट्यम्।
आविष्कारक, वि (स) दे 'आविष्कर्ता।
आविष्कृत, वि (स) प्रकटित, प्रकाशित २ प्रथम निर्मित रचित।

आविष्ट, वि (स) भूतप्रेतादिपीडित २ अभिभूत।
आवृत, वि (स) प्रसमा आ, च्छादित, मवृत पिहित २ परिवृत, वलयित।
आवृत्ति, स स्त्री (स) अभ्यास क्रिया सातत्य प्रबन्ध २ अध्ययनम्।
आवेग, स पु (स) आवेश चित्तोद्वेग, उत्तेजन, उद्दीपनम् २ त्वरा ३ सचारिभाव भेद (सा)।
आवेज़ा, स पु (फा) प्रालम्ब, लोलक।
आवेदक, वि (स) निवेदक, प्रार्थिन्। (स पु) अभियोगिन् वादिन्।
आवेदन, स पु (स न) दे निवेदन।
आवेश, स पु (स) आवेग, आतुरता २ व्याप्ति (स्त्री), सचार ३ प्रवेश ४ भूतबाधा ५ अपस्माररोग।
आवेष्टन, स पु (स न) गोपन, निगूहनम् २ अवगुठन, पिधान पुट, कोश।
आवेष्टित, वि (स) अवगुठित, आवृत।
आशका, स स्त्री (स) सदेह, सशय २ अनिष्टभावना ३ भय त्रास।
आशकित, वि (स) भीत, त्रस्त ३ सदेहात्मक।
आशसा, स स्त्री (स) अपेक्षा आशा २ इच्छा, वाञ्छा ३ कथनम्, चर्चा।
आशसित, वि (स) अपेक्षित, आकाङ्क्षित, इष्ट २ कथित, वर्णित।
आशसी, वि (स सिन्) आशायु अपेक्षी, आकांक्षक, प्रत्याशिन्।
आशना, वि (फा) परिचित, अभिज्ञ। स पु जार, प्रणयिन्। स स्त्री प्रेयसी, कान्ता।
आशनाई, स स्त्री (फा) मैत्री सख्यम्। २ प्रणय, अनुराग।
आशय, स पु (स) तात्पर्य, अभिप्राय, अर्थ २ वासना ३ स्थान आधार ४ गर्त।
आशा, स स्त्री (स) आशसा आकांक्षा, अपेक्षा २ स्पृहा, वाञ्छा, मनोरथ ३ दिशा ४ दक्षप्रजापते पुत्री ५ रागभेद।
—करना, क्रि अ, आशास (भ्वा आ से) उद् प्रति अव, ईक्ष (भ्वा आ से), आशास (अ आ से)।
—अतीत, वि (स) आशातिरिक्त।
—वाद, स पु (स) सदाशावत्तासिद्धान्त।
—वान्, वि (स) साश, आशान्वित।
आशिक़, वि (अ) प्रणयिन्, अनुरागिन्, आसक्त, अनुरक्त।
आशिष, स स्त्री (स आशिस) दे 'आशीर्वाद'।
आशीर्वाद, स पु (स) आशिस (स्त्री) आशी र्वचन, हिताशसन, मगलप्रार्थना, शुभाशंसा, शुभकामना।
—देना, क्रि स आशिष दा (जु उ अ), टि प्राय लोट व आशीर्लिङ के रूपों से (उ पुत्र आप्नुहि आप्या वा)।
आशु, क्रि वि (स) शीघ्र द्रुत, सत्वर (सब अव्य)।
—कवि, स पु (स) सद्य काव्यकार।
—तोष, स पु (स) शिव।
आशुग, वि (स) शीघ्र द्रुत तीव्र गामिन्। स पु (स) वायु २ बाण।
आश्चर्य, स पु (स न) विस्मय, कौतुक, चमत्कार, चित्र, अद्भुतम्।
—करना, क्रि अ, विस्मि (भ्वा आ अ)।
—जनक, वि (स) विस्मापक, अद्भुत, विचित्र।
आश्रम, स पु (स) तपोवन मुनिवसति (स्त्री) २ मठ, विहार ३ विश्रामशाला ४ मनुष्यायुष चत्वारो विभागा (ब्रह्मचर्य गृहस्थवानप्रस्थसन्यासाश्रमा)।
आश्रय, स पु (स) अव आ, -लम्ब आधार २ अवष्टम्भ, उपघ्न ३ शरण, गति (स्त्री) गृह, सदनम्।
—दाता, वि (स तृ) रक्षक, रक्षितृ, त्रातृ।
आश्रित, वि (स) आश्रयप्राप्त, अवलम्बित २ अधीन, शरणागत। स पु, सेवक, दास।
आश्वासन, स पु (स न) सान्त्वन, आशा-प्रदान, समाश्वासन, प्रोत्साहन, उत्तेजनम्।
आश्विन, स पु (स) आश्वयुज शारद, इष।
आषाढ, स पु (स) अषाढ, शुचि।
आस, स स्त्री (स आशा) आशसा २ लालसा ३ आश्रय ४ दिशा।
आसक्त, वि (स) तत्पर, लीन, मग्न, प्रमित २ अनुरक्त बद्धराग प्रणयिन्।
आसक्ति, स स्त्री (स) तत्परता, लीनता, ममता २ अनुराग, प्रेमन्, काम।
आसन, स पु (स न) उपवेशनप्रकार

२ स्थिति (स्त्री) ३ अष्टांगयोगस्य तृतीयमंगम् ४ उपवेशनाधार, पीठ ५ साधुवसति ६ नितम्ब ७ शत्रुदुर्गादीनवरुध्य स्थिति ।
—डोलना, मु, चलो विक्रु (कर्म)।
आसन्न, वि (स) समीप, निकट, निकटस्थ।
—प्रसवा, वि स्त्री (स) निकटप्रसूति (स्त्री)
—भूत, स पु, वर्तमानसदृशो भूतकाल ।
आस पास, क्रि वि (अनु आस+स पार्श्व) परित अभित (दोनों द्वितीया के साथ), समतत, समताद्, विष्वक, सर्वत (सब अव्य)।
आसमान, स पु (फा, स अश्मान >) गगन, दे आकाश' २ स्वर्ग ।
—के तारे तोड़ना, मु, असम्भवानिकार्याणि कृ।
—को चूमना, मु गगनंचुम्ब(भ्वा प से),
—से बातें करना अभ्र वष (भ्वा प से)।
आसमानी, वि (फा) आकाशीय २ ईश्वरीय।
आसरा, स पु (स आश्रय) अवलंब, आधार २ भरणपोषणाशा ३ आश्रयद ४ शरण, गति (स्त्री) ५ प्रतीक्षा ६ आशा ।
—देना, क्रि स, रक्ष (भ्वा प से)।
—लेना, क्रि अ, आश्रि (भ्वा उ से), शरण गम्।
आसव, स पु (स) मद्यभेद २ सुरा, मदिरा ३ ओषधप्रकार ४ दे 'अरक'।
आसा, म स्त्री दे० 'आशा ।
आसा, स पु (अ असा) सुवर्णदंड रजतयष्टि (पु स्त्री)।
आसाइश, स स्त्री (फा) सुख, सौख्यम्।
आसाढ़, स पुं दे 'आषाढ़'।
आसादन, स पु (स न) प्राप्ति उपलब्धि (स्त्री) २ निधानम् ३ आक्रमणम् ४ पश्चादागम्य प्रापणम्।
आसादित, वि (स) प्राप्त, लब्ध २ निहित, स्थापित ३ आक्रान्त ४ पश्चादागम्य गृहीत।
आसान, वि (फा) सुकर सुगम, सुखसाध्य।
आसानी, स स्त्री (फा) सुकरता सुगमता।
आसाम, स पु (स असम>) कामरूपा, असमप्रान्त भारतस्य प्रान्तविशेष ।
आसामी वि (हिं आसाम) असमप्रदेश, विषयक सम्बन्धिन्। स पु असम कामरूप, वासिन् वास्तव्य। स स्त्री असमीया भाषा असमी।
आसावरी, स स्त्री (सं आशावरी) श्रीरागस्य रागिणीभेद ।
आसीन, वि (स) निषण्ण उपविष्ट।
आसीस, स स्त्री, दे आशीर्वाद'।
आसुर, वि (स) राक्षस, पैशाच, असुरस्व भिन्। स पु (स) असुर ।
आसुरी, वि स्त्री (स) असुरसबंधिनी, राक्षसी, पैशाची।
—चिकित्सा, स स्त्री, शस्त्यचिकित्सा।
—माया, स स्त्री पैशाच छलम्।
—संपद्, स स्त्री (स द्) पैशाची वृत्ति (स्त्री)।
आसोज, स पु (स आश्वयुज) दे 'आश्विन'।
आस्तरण, स पु (स न) कुथ, गजपृष्ठस्थ चित्रकवलम् २ शय्या, कुशासनम्।
आस्तिक, वि (स) ईशवेदपरलोकविश्वासिन्। २ ईश्वरसत्तावादिन् ३ श्रद्धालु।
आस्तिकता, स स्त्री (स) ईशवेदपरलोकेषु विश्वास २ ईश्वरप्रत्यय ।
आस्तनी, स स्त्री (फा) पिप्पल, कोशना लिका, चोलादानां बाहुभाग ।
—का साँप, मु गूढशत्रु, गुप्तवैरिन्।
आस्था, स स्त्री (स) श्रद्धा, भक्ति (स्त्री), अर्हणा, आदर २ सभा आस्थानम् ३ आल बन, अपेक्षा ।
आस्थान, स पु (स न) उपवेशनस्थल, समामंडप २ सभा।
आस्थित, वि (स) उषित, कृतवास २ आश्रित ३ लब्ध ४ वेष्टित।
आस्पद, स पु (स न) स्थानम् २ कार्यम् ३ प्रतिष्ठा ४ वश कुलम्।
आस्य, स पु (स न) वदनं, तुण्डम् २ मुखमंडल, मुखम्।
आस्वादन, स पु (स न) स्वादनं, रसनम्।
आह अव्य (सं अहह) कष्ट हा, हन्त, आ, हा, अहो (सब अव्य)।
आह, स स्त्री (फा) नि श्वास, उच्छ्वास, दीर्घश्वास ।
—भरना क्रि अ, दीर्घं उद् नि श्वस् (अ प से)।
आहट, स स्त्री (हिं आना+हट प्रत्य) पादशब्द, चरणनिक्षेपध्वनि २ विद्यमानता सूचकध्वनि ।

आहत, वि (स) क्षत व्रणित, विद्ध, भिन्नदेह २ गुणयसंख्या ३ परस्परविरुद्ध (वाक्य) ४ सद्यक्षालित ५ जीर्ण ६ वपित। स पु, पटह ।

आहरण, स पु (स न) आच्छेदन, सहसा आकर्षणम् २ अपनयनम् ३ आनयनम् ४ ग्रहणम्।

आहरन, स पु (स आहननम्>) सूर्मि (स्त्री), सूर्मा स्थूणा ।

आहाँ, अव्य (अनु) मा न नो, नहि

आहा, अव्य (स अहह) अहो, ही आ ।

आहार, स पु (स) भक्षण, भोजन, जेमन, जग्धि (स्त्री) २ खाद्य भक्ष्य, सामग्री।

—विहार, स पु (-रौ) चर्या, वर्तन वृत्त आचारव्यवहारौ।

आहार्य, वि (स) भक्ष्य, खाद्य २ ग्रहीतव्य ३ आहरणीय ४ कृत्रिम। स पु, चतुर्थोऽनुभाव (सा)।

अभिनय, स पु (स) वचनचेष्टारहिताऽभिनय (सा)।

आहिस्ता, क्रि वि (फा त) शनै, मन्दम्।

—आहिस्ता, क्रि वि, शनै शनै, मन्द मन्दम्।

आहुति, स स्त्री (स) हवन, देवयज्ञ होम, होत्रम् २ हवनसामग्री ३ सामग्र्या सकृद्धोतव्या मात्रा।

—देना, क्रि स, हु (जु उ अ), यज् (भ्वा उ अ)।

आहू, स पु (फा) मृग, हरिण ।

आहूत, वि (स) आकारित, आनि, मन्त्रित।

आहूति, स स्त्री (स) आकारण, आमन्त्रणम्।

आह्निक, वि (स) दैनिक, दैनदिन, प्रात्यहिक। क्रि वि अहरहः, अनुप्रति दिनम्। स पु, दिनस्य कार्यम् २ महाभाष्यखण्ड ३ अध्यापक ४ दैनिकी भृति (स्त्री)।

आह्लाद, स पु (स) आनन्द, हर्ष, मोद ।

आह्लादक, वि (स) आह्लादप्रद हर्षजनक, आनन्ददायक।

आह्लादित, वि (स) प्रसन्न, मुदित।

आह्वान, स पु (स न) आहूति (स्त्री), आकारण, आमन्त्रणम् २ आह्वानपत्रम् (= सम्मन) ३ यज्ञे देवताकारणम्।

—करना, क्रि स, आह्वे (भ्वा उ अ) आकृ (प्रे) २ देवतां आवह् (प्रे)।

इ

इ, देवनागरीवर्णमालाया तृतीय स्वर, इकार ।

इक, स स्त्री (अ) मसी, मषी, मसी।

इगला, स स्त्री (स इडा) मानवशरीरे वाम पार्श्वस्था वक्रा नाडी।

इगलिश, वि (अ) आङ्गलदेशीय। स स्त्री आंग्लभाषा।

इगलिस्तान, स पु (अ इङ्गलिश+फा स्तान) आंग्लदेश ।

इगित, स पु (स न) इङ्ग, सकेत आकार, दैहिकचेष्टा। वि सकेतित।

इगुदी, स स्त्री (स) तापसतरु, शूलारि ।

इच, स पु (अ) अङ्गुल २ अत्यल्प परिमाणम्।

इजन, स पु (अ एजिन) यन्त्रम् २ वाष्पशकटीकर्षकयन्त्रम्।

इजीनियर, स पु (इञ्जीनियर) यन्त्रकार, यन्त्रकर्माभिज्ञ, वास्तुविद्याविशारद ।

इजेक्शन, स पु (अ) सूचीभरणम्।

इट्रेस, स पु (अ) (एन्ट्रेस) द्वार २ प्रवेश ३ आंग्लविद्यालयस्य नवमदशमकक्षे (द्वि)

—परीक्षा, स स्त्री, प्रवेशिका परीक्षा।

इडुवा, स पु (स गेण्डुक >) घटाद्याधार भूत शीर्षस्थ वर्तुलवस्त्रम्।

इतजाम, स पु (अ) सुविधा, प्रबन्ध ।

इदिरा, स स्त्री (स) पद्मा, कमला दे 'लक्ष्मी' ।

इदीवर, स पु (स न) नील-कमल उत्पलम् २ कमलम्।

इदु, स पु (स) चन्द्र २ कर्पूर रम्।

इद्र, वि (स) सखन २ श्रेष्ठ। स पु, देवराज, पाकशासन, पुरदर, शक्र, वज्रिन्, सुरपति, शचीपति, आखडल, सहस्राक्ष, नाकनाथ वज्रपाणि २ सूर्य ३ विद्युत् (स्त्री ४ नृप ५ ज्येष्ठानक्षत्रम् ६ चतुर्दशसंख्या ७ व्याकरणस्य आदिम आचार्य ८ जीव, प्राण ।

—का अखाडा, स पु इन्द्रसभा २ संगीतसभा।

—जाल, स पु (स न) मायाकर्मन् (न), कुहकम्।

—जाली, वि (स लिन्) मायाविन्, कुहक व रिन्।
—जीत स पु (सं जित) मेघनाद।
—जौ, स पु (स यव) कुटज शक्र-बीजम्।
—धनुष, स पु (स धनुस न) इ द्रचाप सुरधनुस।
—नील, स पु (स) नील उपल मणि (नीलम)।
—नीलक, स पु (स) मरकत अश्मगर्भ हरि मणि (= जमुर्रद)।
—प्रस्थ, स पु (स न) युधिष्ठिरनिर्मापित दिल्लीसमीपवर्ति नगरम्।
—लोक, स पुं (स) नाक स्वर्ग।
इन्द्रा, स स्त्री (स) दे इ द्राणी।
इन्द्राणी, स स्त्री (स) शची ऐ द्री पौलोमी म हे द्री पुलोमजा २ स्थूलैला ३ सूक्ष्मैला ४ निर्गुण्डी।
इन्द्रानुज, स पु (स) विष्णु।
इन्द्रायन, स पु (स इन्द्राणी) सुरसा निर्गुण्डी सिंदुवार।
—का फल, मु, बड़ी रम्योऽ नदुष्ट।
इन्द्रायुध, स पु (स पु न) इ द्रचाप २ वज्र पवि।
इन्द्रिय, स स्त्री (स न) करण अक्ष हृषीक, ग्रहण, विषयिन् (न) २ जननेन्द्रियम् ३ वीर्यम् ४ पंच' इति सख्या।
—अर्थ, स पु (स) इन्द्रियविषय (रूप रसादि)
—जित्, वि (स) जितेन्द्रिय हृषीकेश।
—निग्रह, स पु (स) इन्द्रिय दमन जय, दम
—वश, वि (स) विषयिन्, विषयवश।
इधन, स पु (स न) इध्म एधं एधस (न)।
इ(ए)म्पायर, स पु (अ) साम्राज्यम्, आधिराज्यम्।
इंपीरियलिज्म स पु (अ) साम्राज्यवाद २ सम्राटशासनम्।
इंपोर्ट, स पु (अ) दे आयात।
इन्साफ, स पुं (अ) याय धम २ निर्णय विवेक
इंस्टिट्यूट, स स्त्री (अं) संस्थानम्।
इन्स्टिट्यूशन, स स्त्री (अ) शिक्षालय विद्यालय २ धर्मशाला ३ रीति (स्त्री)
इन्स्ट्रूमेंट, स प्र (अ) उपकरण यन्त्रम् २ साधनम्।
इन्स्पेक्टर, स पु (अ) निरीक्षक, द्रष्टृ।
इक, वि, दे एक।
इकट्ठा, वि (स एकस्थ) एकीकृत, समवेत, गणीभूत।
—करना, क्रि स, एकत्र कृ म नि, चि (स्व उ अ)।
इकट्ठे, क्रि वि (हिं इकट्ठा) एकीभूय, सम्भूय मिलित्वा।
इकतार, क्रि वि (स एकतार >) सतत, निर तरम्।
इकतारा, स पु (स एकतार >) एक तार तन्त्रीक वाद्यभेद।
इकतीस, वि (स एकत्रिंशत् स्त्री एक) स पु उक्ता सख्या, तद्बोधकाङ्कौ (३१) च।
इकरार, स पु (अ) प्रतिज्ञा, सगर प्रति स्रव २ अङ्गी रवी, कार।
—नामा, स पु (फा) प्रतिज्ञा समय, पत्रं लेख्यम्।
इकलौता, स पु (स एकल >) भगिनीभ्रातृ हीन, पित्रो एकल पुत्र।
इकसठ, वि (स एकषष्टि स्त्री एक) स पु उक्ता सख्या तद्बोधकाङ्कौ (६१) च।
इकसार, वि (स एकसार >) समान, सदृश।
इकहत्तर, वि (हिं इक + सत्तर) एकसप्तति (स्त्री एक) स पु उक्ता सख्या तद्बोध काङ्कौ (७१) च।
इकहरा, वि (स एकस्तर) दे एकहरा।
इकाई, स स्त्री (हिं इक) एका व्यक्ति (स्त्री) २ एकांक ३ ऐराशिकम् (= इकाई का कायदा)।
इक्कानवे, वि (हिं इक + नवे) एकन वति (स्त्री एक) स पु उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (९१) च।
इक्कावन, वि (स एकपचाशत् स्त्री एक) स पु उक्ता सख्या तद्बोधकाङ्कौ (५१) च।
इक्कासी, वि (हिं इक + अस्सी) एकाशीति (स्त्री एक) स पुं उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्कौ (८१) च।
इक्कोत्तर, वि (स एकोत्तर) एकाधिक।
इक्का, वि (स एक) एकाकिन्, एकल।

२ अतुल्य, असम । स पु, वाहन यान प्रव हण भेद २ पर्वाङ्गुन क्रीडापरम् ३, एकाकी योध ।
—दुक्षा वि विरल २ मार्गभ्रष्ट ३ यूथभ्रष्ट ।
इक्षु, स पु (स) मधु गुड, तृण, महारस, रसाल, पयोधर ।
—रस, स पु (स) मधुतृण सार द्रव निर्यास ।
—सार, स पु (स) गुड ।
इक्ष्वाकु, स पु (स) वैवस्वतमनो पुत्र सूर्यवंशीय प्रथमनृप ।
—नदन, स पु (स) श्रीरामचद्र ।
इख्तियार, स पु (अ) प्रभाव अधि कार २ अधिकारक्षेत्रम् ३ सामर्थ्यम् ४ स्वामित्वम्
इच्छा, स स्त्री (स) स्पृहा, आकांक्षा, ईहा वाञ्छा, अभिलाष, मनोरथ इष्ट, अभीष्ट, इप्सित, कामना ।
—करना, क्रि स इष (तु प से), अभि लष, वांछ (दोनों भ्वा प से) कम् (भ्वा आ से, कामयते), स्पृह (चु, चतुर्थी के साथ), (सन्नत रूपों से भी, उ पढ़ने की इच्छा करता है=पिपठिषति)।
—अनुकूल, क्रि वि (स न) यथारुचि, यथच्छ, यथेष्ट, यथाकामम्।
—भेदी, स पु (स—दिन्) यथष्टविरेचक मौषधम् ।
इच्छित, वि (स) अभीष्ट वांछित, अभि लषित ।
इच्छुक, वि (स) इच्छु अभिलाषिन्, आकां क्षिन्। (टि सन्नत रूपों से भी उ० पढ़ने का इच्छुक-पिपठिषु । तुमुन्नत रूप के बाद 'काम' वा 'मनस' लगाकर भी उ० जाने का इच्छुक-गन्तु-काम मना) ।
इजराय, स पु (अ) प्रचालन २ अनुष्ठानम्।
—डिग्री, स पु (अ+अ डिग्री) राजा ज्ञासम्पादनम्।
इजलास, स पु (अ) अधिवेशनम् २ न्याया लय ।
इज़हार, स पु (अ) प्रकाशनम् २ साक्ष्यम्।
इजाज़त, स स्त्री (अ) अनुमति (स्त्री), अनुज्ञा २ आज्ञा, आदेश ।
इज़ाफ़ा, स पु (अ) वृद्धि (स्त्री), दे ।
इज़ार, स स्त्री (अ) दे 'पाजामा'।
—बंद, स पु (अ+फा) दे 'नाडा
इजारा, स पु (अ) पण, समय २ पट्ट, पट्टोलिका ३ स्वत्वम् ।
इजारे (र) दार, स पु (अ+फा) पणकर्ता, नियमद्रव्य ।
इज्जत, स स्त्री (अ) म, मान, आदर ।
—उतारना, मु, लघू कि-कृ ।
—रखना, मु, अपमानात् रक्ष (भ्वा प से)।
इज्या, स स्त्री (स) यज्ञ, याग, होम २ पूजा, अर्चा ।
इटा(टै)लिक्स, स पु (अ) वक्रमुद्राक्ष राणि (न बहु)
इटालियन, स पु (अ) इटलीवासिन् २. इटलीत, आगत वस्त्रभेद ३ इटलीभाषा । वि इटलीसम्बन्धिन् ।
इठलाना, क्रि अ (हिं ऐंठ) सगर्व चेष्ट् (भ्वा आ से) २ हाव दृश (प्रे) ३ पर क्लेशाय अज्ञवत् आचर् (भ्वा प से)।
इठलाहट, स स्त्री (हिं इठलाना) आटोप, गर्व २ हावभाव ।
इडा, स स्त्री (स) भूमि (स्त्री) २ गौ (स्त्री) ३ वाणी ४ स्तुति (स्त्री) ५ ७ यज्ञ पात्रदेवता आहुति, विशेष ८ अन्न, हविस (न) ९ नमोदेवता १० दुर्गा ११ पार्वती १२ कश्यप पत्नी १३ वसुदेवपत्नी १४ बुधपत्नी १५ स्वर्ग १६ नाडीभेद ।
इतना, वि [स एतावत् वा हिं ई (यह) + तना (प्रत्य)] एतावत्, एतन्मात्र, इयत् (स्त्री, एतावती, इयती)।
इतने में, क्रि वि एताव मध्ये, अत्रान्तरे २ अ स्मिन्नेव समये ।
इतमीनान, स पु (अ) तोष स शान्ति (स्त्री)।
इतमीनानी, वि (अ) विश्वसनीय, विश्वास्य ।
इतर्, स पु (अ इत्र) दे 'अतर'।
इतर, वि (स) अन्य, अपर, पर २ नीच ३ सामान्य, साधारण।
—इतर, क्रि वि, परस्पर अन्योन्य, मिथ (सब अव्य)।
इतराश्रय, स पु (सं) अन्योन्याश्रय ।

इतराना, क्रि अ (स उत्तरण>) गर्व (ब्वा प से) प्रगल्भ (ब्वा आ से)।
इतवार, स पु (स आदित्यवार) रवि आदित्य भानु वार वासर ।
इति, अ्य (स) इति शम् इत्योम्, समाप्तिसूचकमव्ययम् । स स्त्री, अवसान, अन्त समाप्ति (स्त्री)।
—कर्तव्यता, स स्त्री (स) कर्मानुष्ठानविधि (पु)।
—वृत्त, स पु (स न) पुरावृत्त, (पुरानली) कथा ।
—श्री, स स्त्री (स) अन्त, समाप्ति (स्त्री)
इतिहास, स पु (स) पुरावृत्त, पूर्ववृत्तान्त, पुराभूतम् ।
इत्तफाक, स पु (अ) सघटन ना, मघट्टन ना २ सौहार्दम्, साम्मत्यम् ३ अवसर, अवकाश ।
इत्तला, स स्त्री (अ) विज्ञापन, दयापन, सूचना बोधनम्।
इत्थ, क्रि वि (स) एव अनेन प्रकारेण।
इत्थभूत, वि (स) ईदृश, एतादृश ।
इत्यादि, अव्य (स) आदि, प्रभृति, आद्य (सब समासा त में, व विकल्पकादय) ।
इत्यादिक, वि (स) दे 'इत्यादि'।
इत्र, स पु (अ) दे 'अतर'।
इधर, क्रि वि (स अत्र) इत, एतत्स्थान प्रति २ अत्र, इह, अस्मिन् स्थाने ।
—उधर, क्रि वि, इतस्तत, अत्र-तत्र अनियतस्थले २ उभयत, उभयत्र ३ अभित, परित (दोनों के साथ द्वितीया), सर्वत, विश्वत, समन्तत, समन्तात् ।
—उधर की बात, मु, जन, प्रवाद श्रुति (स्त्री)।
—की उधर लगाना, मु, कलह उद्दी (प्रे)।
—की दुनिया उधर होना, मु, असम्भव भवेत् चेत् ।
इन सबै, (हि इस) एतद्, इदम्।
—दिनों, क्रि वि, वर्तमाने, अद्यत्वे ।
इन, स पु (स) सूर्य २ स्वामिन्।
इनकमटैक्स, स पु (अ) आयकर ।
इनकलाब, स पु (अ) वृहत्परिवर्तन, [illegible] २ राज्यविप्लव, प्रजाक्षोभ ।
इनकार, स पु (अ) प्रत्याख्यान, प्रतिनिषेध ।
—करना, क्रि स, प्रतिनि षिध् (ब्वा प से)
इनकिशाफ, स पु (अ०) आविर्भाव, प्राकाश्य, प्राकट्यम्।
इनकिसार, स पु (अ०) विनय, नम्रता-ता।
इनफलुएजा, स पु (अ) शीतज्वर ।
इनसान, स पु (अ) मनुष्य ।
इनसानियत, स स्त्री (अ) मनुष्यत्वम् २ सज्जनता, शिष्टता।
इनहिसार, स पु (अ) अवलम्ब, आश्रय ।
इनाम, स पु (अ इनआम) पुरस्कार, पारितोषिकम्।
इनायत, स स्त्री (अ) कृपा २ उपकार ।
इने गिने, वि (अनु० इन+हि गिनना) कतिचन, स्तोका २ अल्पसख्याका ।
इबारत, स स्त्री (अ) लेख २ लेखशैली।
इमरती, स स्त्री (स० अमृतम्>) कुण्डली, मिष्टान्नभेद ।
इमली, स स्त्री (स अम्लिका) आम्लि (ली)-का, चिचा, तिंतिडि (डी) का २ अम्लिका चिचा, फलम्।
इमाम, स पु (अ) पुरोहित २ नेतृ ।
—बाड़ा, स पु (अ + हि) मुहर्रमपर्वानुष्ठानवाट ।
इमारत, स स्त्री (अ) भवन, गृहम्।
इम्तहान, स पु (अ) परीक्षा।
इमला, स स्त्री (अ) श्रुतलेख २ अक्षर वर्ण, विन्यास ।
इयत्ता, स स्त्री (स) सीमा, परिमाणम्)
इरादा, स पु (अ) सकल्प, निश्चय ।
इरावती, स स्त्री (स) वरुणपत्नी २ नदी विशेष (=रावी) ३ ओषधिभेद (-प वटवृक्ष)।
इर्द गिर्द, क्रि, वि (अनु० इर्द+फा गिर्द) परित अभित, सर्वत २ उभयत, इतस्तत ।
इल्जाम, स पु (अ) अभियोग, दोष, आरोप ।
इल्हाम, स पु (अ) देववाणी।
इला, स स्त्री (स) पृथिवी २ पार्वती ३ वाणी ४ बुद्धिमती नारी ५ गौ (स्त्री)।
इलाका, स पु (अ) प्रदेश, भूभाग । २ सबध ।

इलाज, स पु (अ) चिकित्सा, उपचार २ औषध, औषधि (स्त्री) ३ युक्ति (स्त्री) प्रती (ति) कार।
इलायची, स स्त्री (स एला) (बडी) एला पदवाला बहुला, त्रिदिवा २ (छोटी) त्रुटि त्रुटि (स्त्री) नदिनी।
—दाना, स पु, (हिं+फा) एलाबीजम् २ कनिष्ठीजम् २ तद्बीजयुक्तो मिष्टान्नभेद।
इलाही, वि (अ) दैव, ईश्वरीय। स पु, ईश्वर।
इल्म, स पु (अ) विद्या, ज्ञानम्।
इल्लत, स स्त्री (अ) रोग २ बाधा ३ अपराध ४ व्यसनम्।
इव, अव्य (स) यथा, तुल्य, सदृश, समान-वत्।
इशारा, स पु (अ) संकेत इंगितम् २ संक्षिप्तकथनम् ३ गुप्तप्रेरणा।
इश्क, स पु (अ) अनुराग, प्रणय।
इश्तहार, स पु (अ) विज्ञापन, विज्ञप्ति (स्त्री) २ घोषणा, स्थापनम्।
इषु स पु (स) बाण, सायक।
इषुधी, स पु (स धि) तूणीर, तूणी
इष्ट, वि (स) वाञ्छित, अभिलषित, आकांक्षित २ अभिप्रेत ३ पूजित। स पु, (स न) धर्मकृत्य, अग्निहोत्रादिकर्माणि २ कुलदेव ३ मित्रम् ४ अरिंड, ५ इष्टका।
—देव, स पु (स) कुलदेवता।
—देवता, स स्त्री (सं) आराध्यदेव।
इष्टापूर्त, स पु (स न) यज्ञखातादिकर्मन्(न)।

इष्टि, स स्त्री (स) अभिलाष २ यज्ञ ३ पतञ्जलिकृता व्याकरणनियम।
इस, सर्व (स एष) एतद्, इदम्।
इसपज, स पु (अ स्पञ्ज) सुषिरदेहविद २ पराग्रपुष्प।
इसबगोल, स पु (फा यशबगोल) श्लक्ष्ण स्निग्ध, जीरक।
इसरार, स पु (अ) आग्रह, द०।
इसलाम, स पु (अ) मोहम्मदीयधर्म। २ ईश्वरेच्छा स्वीकार।
इसलामी, मोहम्मदीयधर्मसम्बधिन्।
इसे, सर्व (हिं इस) १ (इसको) एन (पु), एता (स्त्री), एतद् (न) इम (पु), इमा (स्त्री), इदम् (न) २ (इसके लिए) एतस्मै (पु न), एतस्यै (स्त्री) अस्मै (पु न), अस्यै (स्त्री)।
इस्तरी, स स्त्री (स स्तरी >) स्तरणी, रजकलोह दण्ड।
इस्तिक्बाल, स पु (अ) प्रत्युद्गमन, प्रत्युद्गमनम्। स्वागतम्, सत्कार।
इस्तिगासा, अभियोग, माथापाद।
इस्तीफा, स पु (अ इस्तैफा) त्यागपत्रम्।
इस्तेमाल, स पु (अ) उपयोग, व्यवहार, प्रयोग।
इह, क्रि वि (स) अत्र २ भूलोके। स पु, भूलोक।
—लीला, स स्त्री (स) जीवनम्।
इहाता, स पु (अ) वाटिका, प्रांगण न, परिसरभूमि (स्त्री)।

ई

ई, देवनागरीवर्णमालाया चतुर्थं स्वरवर्ण, ईकार।
ईंगुर, स पु (स हिंगुल-लम्) हिङ्गुलि, हिंगुल (पु न), सिन्दूरम्।
ईंट, स स्त्री (स इष्टका) इष्टिका। (पक्की) इष्टका, पक्वेष्टका, अमृष्टिका २ इष्टकाकारो धातुखण्ड।
—से ईंट बजाना, मु, ध्वस् उन्मूल विनश निपत् (सब प्रे)।
—पत्थर, मु, न किमपि, न किंचित्।
डेढ़ या ढाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना, मु, असामान्य आचर (स्वा प से)।

ईंधन, स पु, दे 'इंधन'।
ईक्षक, स पु (स) दर्शक वीक्षक २ चिन्तक।
ईक्षण, स पु (स न) अवलोकन, दर्शनम् २ नेत्रम् ३ विवेचनम्।
ईक्षा, स स्त्री (स) दर्शन वीक्षणम्। विवेचन, पर्यालोचनम्।
ईख, स स्त्री दे 'इक्षु'।
ईजा, स स्त्री (अ) कष्ट, क्लेश।
ईजाद, स स्त्री, दे 'आविष्कार'।
ईठि, स स्त्री (सं इष्टि) सख्य, सौहार्दम् २ प्रयत्न।

ईति, स स्त्री (स) कृषे षट् उपद्रवा (यथा अतिवृष्टि, अनावृष्टि, शलभा, मूषिका, खगा, शत्रोराक्रमणम्) २ विघ्न ३ दु खम्।
ईथर, स पु (अ) द्युः (न), आद्युम्।
ईद, स स्त्री (अ) यवनोत्सवभेद ।
—का चाँद, मु, दिवाप्रदीप, दुर्लभदर्शन ।
ईदृश, क्रि वि (स न) इत्थं अनेन प्रकारेण। वि, दे 'ऐसा'।
ईप्सा, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलाष ।
ईप्सित, वि (स) अभिलषित, इष्ट।
ईमान, स पु (अ) धर्म २ सत्यम्। ३ आस्तिक्यबुद्धि (स्त्री) ४ श्रद्धा।
—दार, वि (अ + फा) धार्मिक, न्यायवर्तिन् २ निष्कपट ३ आस्तिक ४ विश्वसनीय ।
ईरान, स पु (फा) पारसीक ।
ईरानी, वि पारस (—सी स्त्री)। स स्त्री, पारसी, पारसीकभाषा। स पु, पारसीका, पारसीकवासिन (बहु)।
ईर्ष्या, स स्त्री (स) मत्सर, मात्सर्य, परोत्कर्षासहिष्णुता, असूया।
ईर्ष्यालु, वि (सं) मत्सरिन्, असूयक, ईर्ष्यिन्, परोत्कर्षासहन।
ईश, स पु (स) प्रभु, पति, स्वामिन् २ परमेश्वर ३ नृप ४ शिव ५ 'एकादश' इति संख्या।
ईशान, स पु (स) स्वामिन्, प्रभु २ महादेव, ३ पूर्वोत्तरदिक्कोण ।
ईश्वर, सं पु (स) परमेश्वर, परमात्मन्, जगदीश्वर, परमेश २ स्वामिन् ३ शिव । वि, आढ्य।
—प्रणिधान, सं पु (स न) ईश्वरे श्रद्धातिशय, स्वकर्मणामीश्वरार्पणम्।
ईश्वरीय, वि (स) दिव्य, दैव, ईश्वरसंबंधिन्।
ईषत्, अव्य (स) अल्प स्तोक, न्यूनम्।
ईसवगोल, स पु, दे 'इसबगोल'।
ईसवी, वि (फा) खिस्तसबंधिन्।
—सन्, स पु (फा + अ) खिस्ताब्द ।
ईसा, स पु (अ) खिस्त, जीशु ।
ईसाई, वि (फा) खिस्तानुयायिन्।
ईहा, स स्त्री (स) चेष्टा २ उद्योग ३ अभिलाष ४ लोभ (हि)।

उ

उ देवनागरीवर्णमालाया पचम स्वरवर्ण, उकार ।
उँकुण, स पु (स) मत्कुण, तल्पकीट ओकण ।
उँगली, स स्त्री (स अगुली) अगुल, अगुरी, करशाखा (उँगलियों के क्रमश नाम—अगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा अनामिका, कनिष्ठा)।
—का पटाखा, स पु, अगुलीमोटन, चुटुकी।
उँगलियों पर नचाना, मु, यथेच्छ कृ (प्रे)।
—उठाना, मु, निन्द् (भ्वा प से), अधिक्षिप् (तु प अ) २ मनागपि अपकृ।
छोटी—, स स्त्री, कनिष्ठा।
कानों में उगली देना, मु, औदासीन्येन पर वचनानि न श्रु (भ्वा प अ)।
दाँतों तले उँगली दबाना, मु, अत्यर्थं विस्मि (भ्वा आ अ), चकितचकित (वि) भू।
पाँचों उँगलियाँ घी में होना, मु, सर्वथा समृध (दि प से)।
उँचन, स स्त्री (सं उदचनम् >) खट्वाया पादभागस्था रज्जु (स्त्री)।
उँचास, वि, दे 'उनचास'।
उछ, सं स्त्री (स पु) उपात्तशस्याद क्षेत्रात् शेषादचयनम्, उञ्छनम्।
—वृत्ति, सं स्त्री (सं) उञ्छेन जीवननिर्वाह। वि., उञ्छशील।
उँजियारी, उँज्यारी, स स्त्री (हि उजारा) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना। वि स्त्री, चन्द्रिका प्रकाश-युक्त।
उँजेरा, उँजेला, स पु., दे 'उजाला'।
उँडेलना, क्रि स (स अव + हि डालना ?) म, सृ (प्रे) निर्गल् (प्रे), प्रस्यन्द् (प्रे), च्युत् (प्रे)।
उदन, स पु (स न) क्लेदन, आर्द्रीकरणम्।
उदुर, स पु (स इदुर) मूष (पि) क ।
उँह, अव्य (अनु) घृणादैन्यानिषेधपीडादिसूचकमव्ययम्, धिक, न, नहि, हा, हा हन्त।
उऋण, वि (स उत् + ऋण) अनृण, ऋणमुक्त।
उकडूँ, स पु (स उत्कुटक) उपवेशनप्रकारविशेष ।
—बैठना, क्रि अ, अवनतसक्थि आस् (अ आ से)।

उकताना, क्रि अ (सं उत्क>) खिद्— निर्विद् (दि आ अ)उद्विज् (तु आ अ)।
उकताया हुआ, वि खिन्न, निर्विण्ण।
उकसना, क्रि अ (सं उत्कषण>) स-वि,-क्षुभ (दि प स) उत् स, तप (दि आ अ) २ उद्गम्, उन्नम् (भ्वा प अ) ३ प्ररुह् (भ्वा प अ) ४ विश्लिष (दि प अ)। स पु, सक्षोभ, संताप, उद्गम, प्ररोह, विश्लेष।
उकसाना, क्रि स (हिं उकसना) उत्तिज, उद्दीप, प्रोत्सह स-वि-क्षुभ्, प्रचुद् (सब प्रे) २ उत्था-उद्गम् (प्रे) ३ अपसृ (प्रे)। स पु, उत्तेजन, उद्दीपन उत्थापन, अपसारणम्।
उक्त, वि (स) कथित, उदित, भाषित, लपित, व्याहृत, उदीरित।
उक्ति, स स्त्री (स) कथन, वचनम् २ अद्भुत वाक्यम् ३ संमति (स्त्री)।
उक्थ स पु (स न) सामवेद २ स्तोत्र ३ प्राण
उक्षा, स पु (स उक्षन्) वृषभ २ सूर्य।
उखड़ना, क्रि अ (स उत्खननम्) उन्मूल्, उत्खन्, समूल उद्वह् (सब कर्म) २ (दृढ स्थित) पृथक् भू ३ संधेः चल (भ्वा प से) वा त्रुट (दि प से) ४ स्वर ताल,-च्युत (वि) भू (संगीत) ५ अपसृ (भ्वा प अ), विद्रु (भ्वा प अ) ६ सीवन त्रुट स पु, उन्मूलन, उत्खनन, संधिस्खलन, स्वर-ताल,-भंग अपसरण, सीवनत्रोटनम्।
दम—, मु, स्वरभंग २ प्राणनिष्क्रमणम्।
पैर—, मु, विद्रवण, पलायनम्।
उखड़वाना, क्रि प्रे (हिं उखड़ना) अन्येन उन्मूल्—उत्पट—उत्खन्—व्यपरुह्—उच्छिद् (सब प्रे)।
उखली, स स्त्री (स उलूखलम्) उदूखलम्।
उखा, स स्त्री, (स) स्थाली दे 'देग'।
उखाड़, स स्त्री (हिं उखाड़ना) उन्मूलन, उत्पाटन, उत्खननम्।
उखाड़ना, क्रि स (हिं उखड़ना) उन्मूल्-उत्पट्-उत्खन्—व्यपरुह्-उच्छिद् (सब प्रे) २ संधि चल् (प्रे) ३ वि-परा,-नि (भ्वा आ अ) ४ अपसृ (प्रे) ५ विनश् (प्रे)
गड़े मुर्दे—मु विस्मृतकलहान् पुन उद्दीप् (प्रे)।
उगना, क्रि अ (स उद्गमनम्) उद्गम् (भ्वा प अ), उदि (=उत्+इ अ प अ), उदय (=उत्+अय्, भ्वा आ से) २ स्फुट् (तु प से), उद्भिद् (कर्म) प्ररुह् (भ्वा प अ) ३ उत्पद् (दि आ अ), जन् (दि आ से)। स पु उद्गम, उदय, उद्भेद, प्ररोह, प्र, स्फुटनम्, उत्पत्ति (स्त्री)।
उगा हुआ, वि, उद्गत, उदित, उद्भिन्न, प्ररूढ, प्र, स्फुटित, उत्पन्न।
उगलना, क्रि स (स उद्गिरणम्) उद्गॄ (तु प से), वम् (भ्वा प से), छर्द् (चु)। २ अन्यायप्राप्तधन प्रतिदा (जु उ अ) ३ गोपनीय प्रकाश (प्रे) ४ बहिष्कृ (त उ अ)।
जहर—, मु, अरुंतुद वचन वद् (भ्वा प से)
उगलवाना, क्रि प्रे (हिं उगलना) वम् उद्गॄ (प्रे) २ अपराध स्वीकृ (प्रे) ३ अन्यालब्ध धन प्रतिदा (प्र प्रतिदापयति)।
उगाना, क्रि स, (हिं उगना) प्ररुह् (प्रे), (अन्नादिक) उत्पद् (प्र) ३ प्रहाराय शस्त्रादिक उन्नम् (प्रे)।
उगार, स पु (सं उद्गार>) निपीडित-निर्गलित-निर्गालित,-जलम्।
उगाल, स पु (स उद्गार) मुखस्राव, लाला २ कफ, श्लेष्मन् (पु) ३ जीर्ण वस्त्रम्।
—दान, स पु, प्रतिग्राह, पतद्ग्रह।
उगालना, क्रि स (हिं उगलना) उद्गॄ (तु प से) २ रोमन्थायते (ना धा)।
उगाहना, क्रि स (स उद्ग्रहणम्>) (कर ऋण वा) समाहृ (भ्वा उ अ), संभृ (जु उ अ), अव वि सं नि, चि (स्वा उ अ)।
उगाही, स स्त्री (हिं उगाहना) (धनस्य) समाहार, संभरण, संग्रहण, समुच्चयनम् २ संभृत धनम् ३ भूमिकर ४ ऋणादिकस्य अंशश संग्रहणम् ५ कुसीद, वार्द्धुष्यवृत्ति (स्त्री)।
उग्र, वि (स) प्रचंड, तीव्र, प्रबल, घोर, रौद्र। स पु (स) शिव २ विष्णु ३ सूर्य।

उग्रता, स स्त्री (सं) प्रचण्डता, भयकरता, निर्दयता, उद्दण्डता।

उग्रसेन, सं पु (स) कंसजनक ।

उग्रा, सं स्त्री (स) दुर्गा, महाकाली २ कर्कशा नारी ३ वचा ४ छिक्किकौषधम्।

उघटना, क्रि अ (सं उद्घटनम्) उद्घट् (कर्म) अपा वि,-वृ (कर्म) २ नग्नी विवस्त्री भू ३ प्रकाश् (भ्वा आ से) ४ रहस्य भिद् (कर्म)।

उघाड़ना, क्रि स (हिं उघड़ना) उद्घट् (प्रे) अपा वि, वृ (स्वा उ से) २ नग्नी विवस्त्री-कृ ३ प्रकट् (प्रे) ४ रहस्य भिद् (प्र)।

उघाड़ा, वि (हिं उघाड़ना) विवस्त्र, नग्न २ प्रत्यक्ष ३ प्रकाशित ।

उचकन, स पु (हिं उचकना) आधार, अवलंब, पात्रादिकस्याधारभूत प्रस्तरखण्ड ।

उचकना, क्रि अ (स उच्चकरण >) प्रपदेन उत्स्था (भ्वा प अ), पादाग्रेण काय उन्नम् (प्र) २ उत्प्लु (भ्वा आ अ)।

उचकाना, क्रि स (हिं उचकना) उचकना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप।

उचक्का, स पु (हिं उचकना) वचक, प्रतारक, धूर्त २ ग्रथि-छेदक चौर ।

उचटना, क्रि अ (सं उच्चाटनम् >) विश्लिष् (दि प अ), विघट् (भ्वा आ से), वियुज् (कर्म) २ विरज् (कर्म), उपेक्ष् (भ्वा आ से)।

उचरना, क्रि स, दे 'बोलना'।

उचटाना, क्रि स (स उच्चाटनम् >) विश्लिष् विघट् विच्छिद् (प्रे)।

उचाट, स पु (सं उच्चाट >) विरक्ति (स्त्री), वैराग्य, औदासीन्य, अयमनस्कता । वि, उदासीन, विरक्त।

—होना, क्रि अ निर्विद् खिद् (दि आ अ)।

उचण्ड, वि (स) प्रचण्ड, अत्युग्र २ क्रुद्ध, कुपित ३ अधीर।

उचित, वि (स), युक्त, सगत, उपपन्न।

उच्च, वि (स) उन्नत उच्छ्रित, उत्तुंग, उद्गत २ उत्तम, श्रेष्ठ।

उच्चय, स पु (स) निचय, निकर २ चयनम् ३ अभ्युदय ।

उच्चता, सं स्त्री (सं) उच्छ्र (च्छा) य, आरोह, उत्सेध, तुङ्गता २ श्रेष्ठत्व, महत्त्वम्।

उच्चाटन, स पु (स न) विश्लेषण पृथक करणम् २ उत्पाटन, उन्मूलनम् ३ तान्त्रिका भिचारभेद ४ विरक्ति (स्त्री)।

उच्चार, स पु (स) भाषण २ पुरीषम्।

उच्चारण, सं पु (सं न) उदीरण, भाषणम् २ भाषणविधि ।

—करना, क्रि स, उच्चर्-उदीर् (प्रे), व्याहृ (भ्वा प अ), गद्-वद् (भ्वा प से)।

उच्चारित, वि (स) उदीरित, उदित, भाषित, व्याहृत।

उच्चावच, वि (सं) उत्तमाधम, उत्कृष्टापकृष्ट, उत्तराधर, उन्नतावनत।

उच्चित, वि (स) सगृहीत, संचित।

उच्चैःश्रवा, सं पु (स-श्रवस्) समुद्रमथनज श्वेतघोटक २ एट, ईषद्-, बधिर ।

उच्छलन, स पु (स न) उद्-पतन-प्लवन, वल्गनम्।

उच्छिन्न, वि (स) खण्डित, लून २ उन्मूलित ३ नष्ट।

उच्छिष्ट, वि (स) भुक्तावशिष्ट, जुष्ट २ व्यवहृतचर। सं पु भुक्तावशिष्टवस्तु (न), जुष्ट २ मधु (न)।

उच्छू, स पुं (अनु) जलादिरोधन कासभेद ।

उच्छृंखल, वि (सं) निरंकुश, स्वैरिन्, उद्दाम, उद्दण्ड, अशिष्ट, अविनीत २ उन्मूत्र, विधि-क्रम नियम, विरुद्ध।

उच्छेद, स पु (स) उन्मूलन, उत्पाटन, विश्लेषण, खण्डनम् २ नाश, ध्वस ।

—करना, क्रि स, उन्मूल्-उत्पट् विश्लिष् नश् (प्रे)।

उच्छेदन, स पु (स न) दे 'उच्छेद'।

उच्छ्वास, स पुं (सं) आहर, आन २ श्वास ३ ग्रन्थपरिच्छेद ।

उछंग, स पु (स उत्सङ्ग) क्रोडम् २ हृदयम्।

उछल-कूद, सं स्त्री (हिं उछलना-कूदना) क्रीडा, खेला, विहार, कूर्दनं, क्रीडाकूर्दनम् २ चाञ्चल्य, अधीरता।

उछलना, क्रि अ (स उच्छलनम्) उच्छल् वल्ग् (भ्वा उ से) उत्प्लु (भ्वा आ अ), उत्पत् (भ्वा प से) २ अत्यन्तं प्रसद्

(भ्वा प अ) ३ नृ (भ्वा प से)। सं पु, उच्छलन, उत्पतन, उद्, प्लवन, वल्गित, प्लव, झप पा।

उछाल, स स्त्री (सं पु) दे 'उछलना' स पु। २ प्लवनावधि, प्लुतिसीमा ३ वमनम्।

उछालना, क्रि स (सं उच्छालनम्) उच्छल् (प्रे), उत्क्षिप् (तु प अ) २ प्रकट् (प्रे)।

उछाह, स पु (स उत्साह) उत्सुकता, व्यग्रता २ हर्ष आनन्द ३ उत्सव ४ रथयात्रा।

उजड़ना, क्रि अ (स अवनटनम्>) विजन-निर्जन (वि) भू २ नि-अव, पत् (भ्वा प से), स्रस-भ्रंश (भ्वा आ से) ३ क्षय या (अ प अ)।

उजड्ड, वि (स उद्+जड>) जड, मूढ, अज्ञ २ असभ्य, अशिष्ट ३ उद्दंड, निरकुश।

उजबक, स पु (तु) जातिविशेष २ मूर्ख।

उजरत, स स्त्री (अ) भृति (स्त्री), वेतनम् २ कर्मण्या, निष्क्रय।

उजलत, स स्त्री (अ) शीघ्रता, त्वरा।

उजला, वि (स उज्ज्वल) श्वेत, शुक्ल, शुभ्र, धवल, सित, धौत, गौर २ स्वच्छ, निर्मल ३ दीप्त, दिव्य, प्रकाशमान।

उजागर, वि (स उद्+जागरित>) प्रकाश मान २ प्रसिद्ध।

उजाड़, स पु (हिं उजड़ना) जीर्ण-शीर्ण, स्थानम् २ निर्जन विजन,-स्थानम् ३ वनम्, अरण्यम्। वि, जजर, जीर्ण २ शून्य, विजन ३ एकान्त, निभृत।

उजाड़ना, क्रि स (हिं उजड़ना) निर्जनी शून्यी-कृ, अवसद् (प्र) २ नि-अव, पत् (प्रे) वि प्र,-नश (प्रे), प्र वि, ध्वस् (प्रे), उन्मूल्-उत्पट् (चु)।

उजाड़ू, वि (हिं उजाड़ना) अतिव्ययिन् २ मुक्तहस्त।

उजाला, स पु (स उज्ज्वाल) प्रकाश, आलोक, द्युति-दीप्ति (स्त्री)। वि, उज्ज्वल, प्रकाशमान।

उजाली, सं स्त्री (हिं उजाला) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना। वि उज्ज्वला, दीप्ता।

उजास, सं पु (हिं उजाला) आलोक, प्रकाश।

उजियारी, सं स्त्री (हिं उजारा) चन्द्रिका २ प्रकाश ३ सती नारी।

उज्जयिनी, सं स्त्री (सं) अवन्ती, विशाला, मालवराजधानी।

उज्ज्वल, वि (सं) देदीप्यमान, प्रदीप्त, रुचिर, भासुर २ विशद, निर्मल ३ श्वेत, सित ४ निष्कलक, अकलुष।

उज्ज्वलता, स स्त्री (सं) दीप्ति-कान्ति (स्त्री) २ स्वच्छता ३ धवलता ४ निष्कलकता।

उटंग, वि (स उत्तुग>) क्षुद्रपरिमाण (वस्त्र)।

उटज, सं पु (स पु न) पर्ण, शाला-कुटी, कुटीर।

उठना, क्रि अ (स उत्थानम्) उत्था-समुत्था (भ्वा प अ) २ उदय् (भ्वा आ से), उद्-इ (अ प अ), ३ उच्छल (भ्वा उ. से) ४ जागृ (अ प से) ५ उत्पद् (दि आ अ) ६ सहसा आरभ (भ्वा आ अ) ७ सज्जीभू, उद्यत् (भ्वा आ से) ८ परिस्फुट (वि) भू ९ फेनायते (ना धा) १० निष्पद्-समाप् (कर्म) ११ (रीति आदि) विलुप् (दि प से) १२ व्यय्-विनियुज् (कर्म) १३ विक्री (कर्म) १४ भित्त्यादय क्रमश निर्मा (कर्म) १५ गोमहिष्यादीना गर्भधारणेच्छा। सं पु उत्थान, उदय, उत्पात, उद्गम, ऊर्ध्वगमन, अधिरोहण, उच्छलन, जागरण, सहसा आरभ, सिद्धता, सज्जता, स्फुटन, उत्सेक, समाप्ति (स्त्री), पिधान, विलोप, व्यय, विक्रय, भाटकेन नियोग।

उठती जवानी, स स्त्री, यौवनारम्भ।

उठते-बैठते, क्रि वि, प्रतिक्षण, सर्वदा।

उठना-बैठना, सु, आचार, व्यवहार, शालम्।

उठवाना, क्रि प्रे (हिं उठना) अन्येन उत्था-उद्गम्-उन्नम् (प्र)।

उठाईगीरा, सं पु (हिं उठाना+फा गीर>) चौर, मोषक २ धूर्त, कितव।

उठान, स स्त्री (स उत्थानम्) समुत्थान, उद्गमनम् २ वृद्धि (स्त्री) ३ आरम्भ ४ व्यय।

उठाना, क्रि स (हिं उठना) उठना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप बनाएँ ।

उठाव, स पु (हिं उठाना) व्यय २ उन्ताश ।

उठौनी, स स्त्री (हिं उठाना) उन्नयन, उत्क्षपणम् २ उत्थापनमूल्यम् ३ प्राग्दत्त मूल्यम् ४ वणिग्भि उद्धार ५ देवपूजार्थं पृथग्धृत धनम् ६ मृतस्यास्थिचयनरीति (स्त्री) ६ मृत्योर्द्वितीये तृतीये वा दिने सवधिपुरुषस्य उष्णीषपरिधापनरीति (स्त्री) ।

उड़कू, वि (हिं उड़ना) गगनगामिन् २ चल ।

उड़द, स पु (स ऋद्ध >) दे 'उरद' ।

उड़नखटोला, स पु (हिं उड़ना+खटोला) विमानम्, वायुयानम् ।

उड़नछू, वि (हिं उड़ना) लुप्त, अदृष्ट ।

उड़ना, क्रि अ (स उड्डयनम्) उद्, डी (भ्वा तथा दि आ स), उत्पत् (भ्वा प से), खे विसृप (भ्वा प अ) २ सत्वर गम् ३ तिरोभू, अन्तर्धा (कर्म) ४ (सुरङ्गादि) महाशब्देन विभिद् (कर्म) ५ वि प्र सृप् (भ्वा प अ) ६ प्रचल्, प्रचर् (भ्वा प से) ७ अभिमन् (दि आ अ) ८ उद् वि सृज् (कर्म) ९ मलिनी भू १० वायौ इतस्ततः स्फुर (तु प से) ११ सहसा विच्छिद् (कर्म) १२ वञ्च् (चु) १३ वल्ग् (भ्वा प से) । स पु, दे 'उड़ान' ।

उड़ती खबर, स स्त्री (हिं+अ) किंवदन्ती ।

उड़ाऊ, वि (हिं उड़ाना) दे, 'उड़कू' २ अतिव्ययिन्, अतिमुक्तहस्त ।

उड़ाका, वि (हिं उड़ना) दे, 'उड़कू' २ वायुयानचालक ।

उड़ान, स स्त्री (स उड्डयनम्) डयन, उत्पतन, स विसर्पणम् २ प्लुति (स्त्री) ३ पलायनम् ४ प्रकोष्ठ ।

उड़ाना, क्रि स (हिं उड़ना) 'उड़ना' के धातुओं के प्रे रूप । २ चुर् (चु) ३ अपस (प्रे) ४ अपव्यय् (चु) ५ तड् (चु) ६ वाक्छल कृ ७ ध्मा (भ्वा प अ) ८ विलुभ् (प्रे) ।

उड़िया, वि (हिं उड़ीसा) उत्कल २ उत्कलप्रान्तवासिन् ३ उत्कलभाषा ।

उड़ीसा, स पु (स ओड्रदेश) उत्कल, उत्कलप्रान्त ।

उडुंबर, स पु (सं) दे 'गूलर' २ देहली, गृहावग्रहणी ३ क्लीब नपुंसक ४ कुष्ठरोगभेद ।

उडु, स पु (स स्त्री न) नक्षत्र, तारका २ तारासमूह, राशि ३ पक्षिन् ४ नाविक ५ जलम् ।

—गण, स पु (स) तारासमूह ।

—पति,—राज, स पु (सं) चन्द्र, इन्दु ।

उडुप, स पु (सं उडुप पम्) प्लव, तरण, तारण, तारक २ नौका ३ चन्द्र ।

उड़ेलना, क्रि, स दे 'उँडेलना' ।

उड्डयन, स पु (स न) नभोगति (स्त्री), दे 'उड़ान' ।

उड्डीयमान, वि (स) उड्डयनविशिष्ट, खे विसर्पत् (शतृ) ।

उतंग, वि (स उत्तुंग) उच्छ्रित २ श्रेष्ठ ।

उतना, वि (हिं उस>) तावत् (-ती स्त्री) । क्रि वि, तावत् (न), तावन्मात्रम् ।

—भी, तावदपि, तावन्मात्रमपि ।

उतरन, स स्त्री (स अवतरण>) जीर्ण अवतारित-वस्त्रम् ।

उतरना, क्रि अ (स अवतरणम्) अवतॄ-अवपत् (भ्वा प से) अधोगम्, अवरुह् (भ्वा प अ) २ परिक्षि (कर्म०) ह्रस (भ्वा प से) ३ (नस आदि का) मथ चल (भ्वा प से), विसंधा (कर्म०) ४ (रंग) विवर्णी भू, म्लै (भ्वा प अ) ५ (क्रोधादि) शम् (दि प से) व्यपगम् ६ (डेरा करना) वस्-स्था (भ्वा प अ) ७ (तस्वीर) आलेख्ये अङ्क् (कर्म०) ८ सहसा विश्लिष् (दि प अ) ९ (वस्त्रादि) उन्मुच्-अवनी अपनी (कर्म) १० जन् (दि आ से), अवतार धृ (प्रे) ११ (पकना) पच् (कर्म) । क्रि स, (सं उत्तरणम्) स-उत्, तॄ, तॄ, लङ्घ् (भ्वा आ से) । स पुं, अवतार, अवतरण, अधोगमन, ह्रास, विसंधान, विवर्णीभाव, ग्लानि (स्त्री), उपशम, आलेख्याङ्कन, सहसा विश्लेष अपनयन देहधारण, पचन, सम्-उद्-तरणं उत्तरणम् ।

उतरकर, ग्र हीन क्रम ।

चित्त से—, मु विरम् (कर्म) २ अप्रिय (वि) भू ।
चेहरा—, मु म्लानमुख (वि) भू ।
उतरा, वि (हिं उतरना) अवतीर्ण २ म्लान ३ छिन्न ४ धूतत्यक्त (वस्त्र) ।
उतराई, सं स्त्री (हिं उतरना) अवतरण, अधोगमन २ उत्तरणम् ३ आतार, तरपण्यम् ४ अवसर्पिणी भूमि (स्त्री) ५ गिरि नितम्ब ।
उतराना, क्रि अ (स उत्तरणम्) प्लु (भ्वा आ अ), तॄ (भ्वा प से) २ क्वथ्-नप्-पच (कर्म) ३ निरन्तर अनुगम् ४ भास (भ्वा आ से) ५ अन्वेन+अवन आदि के प्रे रूप ।
उतरायल, वि (हिं उतारना) अवतारित त्यक्त, जीर्ण (वस्त्रादि) ।
उतान, वि (स उत्तान) ऊर्ध्वमुख (-खी स्त्री), अवपृष्ठशायिन् , उत्तानशय ।
उतार, सं पु (स अवतार) अवतरण नीचैर्गमनम् २ प्रावण्य, अवसर्पिणी भू (स्त्री) ३ अवतरणोचित स्थानम् ४ क्रमश क्षय ५ तीर्थम् ६ क्षीयमाणा वेला ७ निकृष्ट ८ शान्तिकर उपहार ९ प्रतिविषम् ।
—चढ़ाव, स पु, आरोहावरोहौ २ लाभालाभौ ३ पातोत्पातौ ४ अस्थैर्यम् ।
उतारन, स पु (हिं उतारना) दे 'उतरायल' २ निकृष्ट-तुच्छ-त्याज्य,-वस्तु-पदार्थ ।
उतारना, क्रि स (हिं उतरना) उतरना' के धातुओं के प्रे रूप ।
उतारा, सं पु (स अवतार) निवेश , समावास २ अवस्थिति (स्त्री) ३ उद्, स्थन ४ अवतरण-निवेश,-स्थानम् ५ प्रेत बाधानाशक उपचारभेद , तदर्थं वस्तुजात वा ।
उतारू, वि (हिं उतरना) सन्नद्ध, सज्ज, सिद्ध ।
उतावला, वि (सं. उत्त्वर) आशुकारिन् , सत्वर, अविलम्बिन् , २ अविमृश्यकारिन् ३ उत्सुक ।
उतावली, स स्त्री (सं उत्त्वरा) त्वरा, तूर्ण (स्त्री), शीघ्रता, क्षिप्रता, वेग २ व्यग्रता, व्याकुलम् । वि, स्त्री, सत्वरा, आशुकारिणी २ असमीक्ष्यकारिणी ३ उत्सुका ।
उतृण, वि , दे 'उऋण' ।

उत्कंठा, सं स्त्री (सं) उत्कलिका, लालसा, तीव्राभिलाष २ सञ्चारिभावभेद (सा) ।
उत्कंठित, वि (सं) उत्क, उन्मनस , उत्सुक ।
उत्कंठिता, स स्त्री (स) प्रियमिलनोत्सुक नायिका ।
उत्कंधर, वि (सं) उत्कण्ठ, उद्ग्रीव ।
उत्कट, वि (सं) तीव्र, प्रचण्ड, उग्र, दुःसह ।
उत्कर्ष, स पु (सं) महिमन् (पु), महत्त्वं, २ श्रेष्ठता ३ समृद्धि (स्त्री) ४ व्याक्षेप-विलम्ब , ५ अतिशय ।
उत्कल, सं पु (स) दे 'उड़ीसा' २ व्याध ।
उत्कीर्ण, वि (स) उद्, लिखित २ छिन्न, विद्ध ३ पाषाणकाष्ठादिषु लिखित ।
उत्कृष्ट, वि (स) प्रकृष्ट प्रशस्त, उत्तम, श्रेष्ठ ।
उत्कृष्टता, सं स्त्री (स) महत्त्व, श्रेष्ठता, प्रकर्ष ।
उत्कोच, स पु (सं) दे 'घूँस' ।
उत्तप्त, वि (सं) परि प्र-स,-तप्त, अत्युष्णीकृत २ क्षुब्ध, दुःखित ३ क्रुद्ध ।
उत्तम, वि (सं) श्रेष्ठ, विशिष्ट, वरेण्य, प्रवर (टि इसी अर्थ में समासान्त में पुंगव, ऋषभ, व्याघ्र, सिंह, शार्दूल, इन्द्र आदि, जैसे—नरों में उत्तम = नर, पुंगव शार्दूल इ) ।
उत्तमता, सं स्त्री (सं) श्रेष्ठता उत्कृष्टता, गुणातिशय , विशिष्टता ।
उत्तमर्ण, स पु (स) ऋणद , ऋणदातृ ।
उत्तमा, वि स्त्री (स) भद्रा, साध्वी, श्रेष्ठा । सं स्त्री (स) १-२ नायिका-दूती,-भेद ।
उत्तमांग, स पु (सं न) शिरस (न) दे 'सिर' ।
उत्तमार्द्ध, र्ध, स पु (स पु न) उत्कृष्ट,-अर्द्ध -अर्द्धम् २ उत्तर,-अर्द्ध -अर्द्धम् ।
उत्तमोत्तम, वि (स) सर्वोत्तम, महत्तम ।
उत्तर[1], स पु (सं उत्तरा) उदीची, उत्तर,-दिशा-आशा, कौबेरी ।
—अयन, (-उत्तरायणम्) स पु (स न) माघादिषण्मासात्मक 'सूर्यस्योत्तरदिग्गमनकाल' २ कर्कसंक्रान्ति (स्त्री) ।
—की ओर, क्रि वि , उत्तराभिमुख, उत्तरेण, उत्तरदिशि, उत्तरत (षष्ठी के साथ), उत्तर (पचमी के साथ) ।

—की ओर मुखवाला, वि, उदङ्मुख (-खी स्त्री)।
—पश्चिम, सं पु, उत्तरपश्चिमा, वायवी (दिशा)।
—पश्चिमी, वि, वायव, वायुदिक्स्थ।
—पूर्व, स पु, उत्तरपूर्वा, पूर्वोत्तरा, प्रागुत्तरा, प्रागुदीची, ऐशानी।
—पूर्वी, वि पूर्वोत्तर, प्रागुत्तर, प्रागुदाचीन, पूर्वोत्तरस्थ।
—सबंधी, वि उदीच्य, उदीचीन, उत्तरस्थ।
उत्तर¹, स पु (सं न) प्रतिवचन, प्रतिवाक्य, प्रत्युक्ति प्रतिवाच् (स्त्री) २ प्रत्युत्तरम् ३ प्रति (ती) कार ४ अलकारभेद (सा)।
—दायित्व, सं पु (सं न) प्रतिवाच्यता, प्रष्टव्यता, भार, अनुयोज्यता।
—दायी, वि (सं यिन्) प्रष्टव्य, अभियोक्तव्य अनुयोज्य, प्रतिवाच्य, उत्तरदातृ।
उत्तर², वि (सं सर्व) पर, अपर, अवर, अन्य २ अन्तिम, चरम ३ उत्तरोक्त ४ गरा यस, ज्यायस्।
—अधिकार, सं पु (सं) अशित्व, दायादत्व, रिक्थहरत्वम्।
—अधिकारी, सं पु (सं रिन्) दायाद, रिक्थ,हर भागिन्, रिक्थिन्, अशहर, अशिन्। (स्त्री दायादा, अशहरी)।
—अर्द्ध, सं पु (सं पु न) अपर-पर अवर, अर्द्ध-अर्द्धम्।
—उत्तर, क्रि वि (सं न) आधकाधिक, २ अग्रेऽग्रे ३ अनुपूर्वेण, आनुपूर्व्येण ४ क्रमश ५ निरन्तरम् ६ प्रतिदिनम्।
—पक्ष, स पु (सं) सिद्धान्त, समाधि।
—मीमासा, सं स्त्री (स) वेदान्तदर्शनम्।
उत्तरण, सं पु (सं न) सतरणम्, उल्लघनम्, समुत्तरणम्, पारायणम्।
उत्तरा, सं स्त्री (सं) उत्तरा दिक् (स्त्री), कौबेरी, उदीची, २ अभिमन्युपत्नी।
—खड, सं पु (सं पु न) हिमालयसमीप वर्ती भारतवर्षस्योत्तरभाग।
उत्तराभास, स पुं (स) असत्योत्तर, मिथ्या प्रतिवचनम्। २ व्याज, मिष, छलम्।
उत्तरीय, स पु (स न) बृहतिका, सव्यान, प्रावा(व)र। वि, उपरिस्थ, ऊर्ध्व, उपरितन २ दे 'उत्तरसबधी'।
उत्तान, वि (सं) दे 'उतान' २ गाभीर्यरहित ३ ऊर्ध्वतल।
—पाद, सं पु (सं) ध्रुवपितृ।
उत्तीर्ण, वि (सं) पारगत २ मुक्त ३ परीक्षाया सफल।
उत्तुग, वि (स) अत्युच्च, अतीवोन्नत, प्राशु, अत्युच्छ्रित।
उत्तेजक, वि (सं) उद्दीपक, प्रोत्साहक, प्रवर्तक, प्रेरक २ विकारोत्पादक ३ सक्षोभक।
उत्तेजन, स पु (सं न) दे 'उत्तेजना'।
उत्तेजना, सं स्त्री (स) प्रेरणा, प्रोत्साह, उद्दीपन २ सक्षोभणम् ३ मनोवेगोत्पादनम्।
उत्तोलन, सं पु (सं न) उत्थापन, उत्कर्षणम् २ तोलन, तुलया भारबोधनम्।
उत्थान, सं पु (सं न) उद्गमन, उत्पतनम् २ आरम्भ ३ उन्नति (स्त्री) ४ सैन्यम् ५ युद्धम् ६ पौरषम् ७ हर्ष।
उत्थापन, सं पु (सं न) उत्तोलन, उन्नयनम् २ विधूननम्, वेष्टनम् ३. वि प्र,-बोधनम्।
उत्थित, वि (सं) कृतोत्थान, उद्गत २ उत्पन्न ३ प्रोद्यत ४ वृद्धिमत् ५ जागरित।
उत्पत्ति, सं स्त्री (स) उद्गम, उद्भव, जन्मन् (न) २ ससार ३ आरम्भ।
उत्पन्न, वि (स) जात, उद्भूत।
उत्पल, सं पु (सं न) कमलम् २ नील कमल, कुवलय, कुवल, कुवेल, रात्रिपुष्प ३ जलजपुष्पमात्रम् ४ पुष्पम्।
उत्पलिनी, स स्त्री (सं) कमल-उत्पल,-निकर'-समूह' २ कमलिनी।
उत्पाटन, सं पु (सं न) उन्मूलनम्।
उत्पाटित, वि (सं) उन्मूलित २ अपनीत ३ सिंहासनाद् अवपातित।
उत्पात, सं पु (सं) अजन्य, उपद्रव, आपद् (स्त्री) २ कोलाहल, डमर ३ विप्लव।
उत्पाती, सं पु (सं तिन्) उत्पात-उपद्रव सक्षोभ,-कर-कारिन्, कुचेष्टक, लोककण्टक।
उत्पादक, वि (सं) जनक, उत्पादयितृ।
उत्पादन, सं पुं (स न) जननं, प्रसव, प्रसूति (स्त्री)।

उत्पीडन, सं पु (सं न) पीडन, अर्दन, बाधन, निकार ।
उत्प्रेक्षा, स स्त्री (सं) आरोप उद्भावना २ अर्थालंकारभेद (सा) ३ अनवधानम् ।
उत्फुल्ल, वि (स) विकसित २ प्रसन्न ।
उत्स, स पु (स) प्रस्रवण, दे 'झरना' ।
उत्सग, स पु (सं) अंक, क्रोडम् २ मध्य भाग ३ सानु ४ सौधादीनामुपरिभाग ५ विरक्त ।
उत्सर्ग, स पु (स) परि, त्याग, विसर्जनम् २ दान, वितरणम् ३ समाप्ति (स्त्री) ४ व्यापकनियम ।
उत्सर्जन, स पु (स न) दे 'उत्सग ।
उत्सव, स पु (स) मह, क्षण उद्धव यात्रा, पर्वन् (न) ।
उत्साह सं पु (स) वियदेतिका, औत्सुक्य, व्यग्रता २ उद्यम, अध्यवसाय ३ साहस, वीर्यम् ।
उत्साही, वि (सं, हिन्) सोत्साह, उत्साहवत्, अत्युत्सुक २ उद्यमिन्, अध्यवसायिन् ३ शूर, वीर ।
उत्सुक, वि (सं) उत्कठ, मोत्कठ, लालस, सोत्साह, विलम्बासहिष्णु ।
उत्सुकता, स स्त्री (स) औत्सुक्य, कुतूहल, व्यग्रता, लालसा, कौतुकम् ।
उत्सृष्ट, वि (स) त्यक्त, समुज्झित ।
उथल-पुथल, स स्त्री (हि उथलना) क्रम भग, व्यतिक्रम, व्यस्तता, विपर्यय, अव्यवस्था । वि, क्रम-व्यवस्था-हीन, अव्यवस्थित, विपर्यस्त ।
उथला, वि (स उत्स्थल) गाध, उत्तान, अल्प गाध, जल-नीय ।
उदत, स पु (स) समाचार, वृत्तान्त, वार्ता २ सज्जन ।
उदक, स पु (स न) जल, पानीयम् ।
—क्रिया, स स्त्री (स) तिलाञ्जलि २ तर्पणम् ।
उदकान्त, सं पु (स) तीर, तटम् ।
उदधि, स पु (स) समुद्र, सागर २ घट ३ मेघ ।
—सुत, सं पु (स) चन्द्र २ अमृतम् ३ शख ४ कमलम् ५ सागरज (पदार्थ) ।
—सुता, सं स्त्री (सं) लक्ष्मी २ शुक्तिका ।
उदय, स पु (स) ऊर्ध्वगमन, उद्गम, उदयनम्, उत्थानम् ।
—होना, क्रि अ, उद्-या-उद् इ (प प अ), उद् अय (भ्वा आ से), उद्गम् ।
—अचल, स पु (स) उदय, गिरि-अद्रि, पूर्व-पर्वत-अचल ।
उदयास्त, स पु (सं स्तौ) अस्तोदयौ, उदयास्तमने । क्रि वि प्रातरारभ्य साय यावत्, सर्व दिनम् ।
उदर, स पु (सं न) तुन्द, कुक्ष कुक्षि, पिचिड २ आमाशय, पक्वाशय, ३ मध्य,-भाग देश, अन्तर, गर्भ ।
—ज्वाला, स स्त्री (स) जठर,-अनल-अग्नि २ क्षुधा, बुभुक्षा ।
उदात्त, वि (स) उच्चैरुच्चारित (स्वर) २ सदय, कृपालु ३ दातृ, उदार ४ श्रेष्ठ ५ विशद, स्पष्ट ६ समर्थ । स पु (सं) वेदमन्त्रोच्चारणे उच्चस्वर २ अलंकारभेद (सा) ।
उदार, वि (स) दान,-शील-शौंड, बहुप्रद, वदान्य, त्यागशील २ श्रेष्ठ ३ महाशय ४ सरल ।
उदारता, स स्त्री (सं) वदान्यता, त्यागिता, औदार्य, त्याग २ माहात्म्यम् ३ सुशील, ऋजुता ।
उदास, वि (सं) खिन्न, अवसन्न, म्लान, विषण्ण २ उदासीन, विरक्त ३ तटस्थ, निष्पक्ष ।
—होना, क्रि अ, विषद् (भ्वा प अ), दुर्मनायते (ना धा) ।
उदासी, सं स्त्री (सं उदास >) अवसाद, म्लानि-ग्लानि (स्त्री) खेद, दौर्मनस्यम् २ विराग, वैराग्यम् ३ निष्पक्षता, तटस्थता । सं पु, सन्न्यासिन, विरक्त, साधुसप्रदाय भेद ।
उदासीन, वि (सं) विरक्त, निस्स्पृह, प्रपच रहित २ मध्यस्थ, तटस्थ, समभाव ३ रूक्ष, निस्स्नेह ।
उदासीनता, सं स्त्री (स) विरक्ति (स्त्री) २ तटस्थता ३ खेद, अवसाद ।
उदाहरण, म पु (सं न) निदर्शन, दृष्टान्त ।

उदाहृत, वि (सं) वर्णित, कथित २ दत्त दृष्टांत।

उदित, वि (स) उद्गत, उत्थित "उदयित २ प्रकट स्पष्ट ३ उज्ज्वल, विशद ४ कथित उक्त।

उदीक्षण, स पु (स न) ऊर्ध्वावलोकनम्, २ वीक्षणम्।

उदीची, स स्त्री (स) उत्तरदिशा।

उदीच्य, वि (स) उत्तरदिग्वासिन् २ दे उत्तरसंबंधिन्।

उदीप, स पु (स) सप्लुव, जलविप्लव।

उदीयमान, वि (स) उद्गच्छत्, उन्नमत्।

उदुंबर, स पु (स) क्षीरवृक्ष, सदाफल, जन्तुफल दे 'गूलर' २ क्षीरवृक्षफलम् ३ देहली ४ नपुंसक ५ कुष्ठभेद।

उद्गत, वि (स) उदित, उत्थित २ प्रकट ३ व्याप्त ४ वान्त ५ लब्ध।

उद्गम, स पु (स) उदय, उत्थान, उद्गमन आविर्भाव ऊर्ध्वगमन २ उद्गमस्थान प्रभव योनि (स्त्री)।

उद्गाता, स पु (स तृ) सामवेदग, साम गायक २ सामवेदज्ञ।

उद्गार, स पु (स) तरलपदार्थस्य सहसा निस्सरणं उद्गमन स्रावो वा। २ वमन, प्रच्छर्दिका ३ सवेग निःसृत तरलपदार्थ, वान्तवस्तु (न) ५ लाला मुखस्राव ६ उद्वम उत्क्षेर, ७ आधिक्यम् ८ घोरतुमुल शब्द ९ रुद्धभावाना उच्चैः प्रकाशनम् १० हृत्य प्रकाशिता भावा।

उद्गीथ, स पु (स) सामगानविशेष २ ओंकार ३ सामवेद।

उद्घाटन स पु (स न) अपावि-वरणम्, उन्मुद्रण निर्मलीकरणम् २ प्रकाशन प्रकटीकरणम्।

उद्दंड, वि (स) उद्धत दुःशील, अविनीत, साहसिक, तीक्ष्णकर्मन् २ कलहप्रिय।

उद्दाम, वि (स) बंधबंधन पाश रहित २ निरंकुश, अनर्गल, उच्छृंखल ३ स्वतंत्र।

उद्दालक, स पु (स) ऋषिविशेष २ व्रत प्रकार।

उद्दिष्ट, वि (स) निर्दिष्ट संकेतित २ लक्ष्य अभिमत।

उद्दीपक, वि (स) उत्तेजक, प्रेरक संक्षोभक २ दाहक, तापक, दीपन।

उद्दीपन, स पु (स न) उत्तेजन, प्रोत्साहन, प्रकोपन प्रेरणम् २ उत्तेजकपदार्थ ३ विभावभेद (सा) ४ तापन, दहनम्।

उद्दीप्त, वि (सं) भासुर भास्वर २ प्रज्वलित। स पु गुग्गुल, देवधूप।

उद्देश, स पु (स) इच्छा, अभिलाष २ आशय, अभिप्राय ३ कारण हेतु ४ प्रतिज्ञा (न्या)।

उद्देश्य, वि (स) लक्ष्य, काम्य, स्पृहणीय। स पु (स न) प्रयोजन अभिप्रेतोऽर्थ २ यदुद्दिश्य विधेयप्रवृत्ति भवति तत् (न्या)।

उद्धत, वि (स) उग्र चंड, दे उद्दंड'। २ प्रगल्भ, विशिष्ट।

उद्धरण, स पु (स न) उत्थान, उद्गमनम् २ मुक्ति (स्त्री) ३ उन्नति (स्त्री) ४ पाठस्यावृत्ति (स्त्री) ५ उद्धृतवाक्यम् ६ उन्मूलनम् ७ उत्थापनम् ८ वमनम्।

उद्धव, स पु (स) दे 'उत्सव' २ श्रीकृष्ण मित्रम्।

उद्धार, स पु (स) निर्वाण, मुक्ति (स्त्री) २ दुःखनिवृत्ति (स्त्री) ३ उन्नति (स्त्री) ४ ऋणमुक्ति ५ दायभ्यागविशेष (मनु) ६ ऋणम् ७ युद्धे लुंठितद्रव्यस्य राजग्राह्य षष्ठोंऽश ८ चुल्ली।

—करना, क्रि स, उद् हृ (भ्वा प अ), मोक्ष् (चु), निस्तॄ (प्रे) उन्नी (भ्वा उ अ)।

—होना, क्रि अ मुच् (कर्म)।

उद्धृत, वि (स) अवतारित, उपन्यस्त, उपनीत, उदाहृत २ उन्नीत, उत्थापित ३ उद्गीर्ण।

—करना, क्रि स उपन्यस् (दि प से) उद् हृ (भ्वा प अ)।

उद्बुद्ध, वि (स) विकसित प्रफुल्ल २ ज्ञानिन् ३ जागरित।

उद्बोधन, स पु (स न) ज्ञापनम् २ प्रकाशनम् ३ उत्तेजनम् ४ जागरणम्।

उद्भट, वि (स) प्रबल, उग्र २ श्रेष्ठ ३ महात्मन्।

उद्भव, सं पु (सं) उत्पत्ति-सृष्टि (स्त्री) जन्मन् (न) २ वृद्धि-स्फीति (स्त्री)।
—स्थान, सं पु (स. न) योनि (स्त्री), प्रभव।
उद्भाव, सं पु (सं) उद्भव २ कल्पना ३ औदार्यम्।
उद्भावना, स स्त्री (सं) उद्भावन, कल्पन, कल्पित, उद्भावित, कल्पना २ उत्पत्ति (स्त्री)।
उद्भास, सं पु (सं) कान्ति-दीप्ति (स्त्री) २ प्रकाश, आलोक।
उद्भिज, सं पु (सं) तरुगुल्मादि, उद्भिद् (पाँच प्रकार के उद्भिज-तरु, गुल्म, लता, वल्ली, तृणा)।
उद्भिद्, (सं पु) अंकुर, प्ररोह २ ओषधि धा (स्त्री), वृक्षक ३ जलप्रवाह, निर्झर ४ नल्वन्वम्।
उद्भूत, वि (सं) जात, उत्पन्न।
उद्भेदन, स पु (स न) त्रोटन, भञ्जनम् २ उद्भिद निर्भिमनम्।
उद्यत, वि (सं) सज्ज, उद्युक्त, सिद्ध, उत्कास, सन्नद्ध २ उत्थापित।
उद्यम, स पु (सं) उद्योग, उत्साह, अध्यवसाय, प्रयत्न, आयास २ आ उद, जीविका।
—करना, क्रि स, चेष्ट प्रयत् (भ्वा आ से) उद्यम् (भ्वा प अ), व्यवस् (दि प अ)।
उद्यमी, वि (सं मिन्) उद्योगिन्, उद्युक्त, व्यवसायिन्।
उद्यान, स पु (स न) उपवन, आराम।
उद्योग, स पु, (म) दे 'उद्यम'।
उद्योगी, वि (स गिन्) दे 'उद्यमी'।
उद्योत, स पु (स उद्द्योत) आलोक २ द्युति (स्त्री)।
उद्रेक, स पु (स) वृद्धि-उन्नति (स्त्री) २ आधिक्य, बहुत्वम् ३ अलङ्कारभेद (सा)।
उद्वाह, स पु (स) विवाह।
उद्विग्न, वि (सं) आकुल, व्याकुल, उद्भ्रान्त, अधीर, व्यस्त-विक्षिप्त, चित्त, व्यग्र, कातर।
उद्वेग, स पु (सं) उद्विग्नता, व्याकुलता २ मनोवेग, आवेग ३ विरहज दुःखम्।
उधड़ना, क्रि अ (सं उद्धरणम् >) स्फुट् (तु प से), भिद्-विद् (कर्म) २ सीवन भिद् (कर्म)।
उधर, क्रि वि (स अमुत्र?) तत्र, तस्थाने २ तत्स्थान प्रति।
उधार, स पु (सं उद्धार) ऋण, धनप्रयोग २ आविहितकालात् द्रव्यप्रयोग ३ मुक्ति (स्त्री)।
—चुकाना, क्रि स ऋण शुध (प्रे), आनृण्य गम्।
—लेना, क्रि स, ऋण कृ अथवा ग्रह् (क्र्या उ मे)।
उधेड़ना, क्रि स, (हिं उधड़ना) स्फुट भिद् (रु उ अ) २ सीवन भिद् (रु उ प) ३ विकृ (तु प से)।
उधेड़-बुन, स स्त्री (हिं उधेड़ना+बुनना) चिन्ता, विमर्श, ऊहापोह २ उपायकल्पना।
उन, सर्व (हिं उस) तद्-अदस् (सर्व)।
उनचास, वि (सं ऊनपञ्चाशत् स्त्री एक) एकोनपञ्चाशत्-एकानपञ्चाशत्-नवचत्वारिंशत् (स्त्री एक)। सं पु, उक्ता सङ्ख्या तद्बोधकाङ्कौ (४९) च।
उनतालीस, वि (सं ऊनचत्वारिंशत् स्त्री एक) एकोनचत्वारिंशत्-नवत्रिंशत् (स्त्री)। स पु, उक्ता सङ्ख्या तद्बोधकाङ्कौ (३९) च।
उनतीस, वि (सं ऊनत्रिंशत् स्त्री एक) एकोनत्रिंशत्-नवविंशति (स्त्री)। स पु, उक्ता सङ्ख्या तदङ्कौ (२९) च।
उनसठ, वि (स ऊनषष्टि स्त्री एक) एकोनषष्टि नवपञ्चाशत् (स्त्री एक)। स पु, उक्ता सङ्ख्या तदङ्कौ (५९) च।
उनहत्तर, वि (सं ऊनसप्तति स्त्री एक) एकोन (एकान)-सप्तति-नवषष्टि (स्त्री एक)। सं पु, उक्ता सङ्ख्या तदङ्कौ (६९) च।
उनासी, वि दे 'उनासा'।
उनींदा, वि (स उन्निद्र) निद्रा, घाकु-वश-अभिभूत।
उन्न, वि (सं) आर्द्र, क्लिन्न, स्निग्ध २ दयार्द्र, दयालु।
उन्नत, वि (स) उद्गत, उच्छ्रित, उच्च, तुङ्ग २ समृद्ध ३ श्रेष्ठ।
उन्नति, सं स्त्री (सं) उच्छ्राय, तुङ्गता २ समृद्धि (स्त्री), अभ्युदय।

उन्नाव, सं पु (अ) कोल, कुवल, सौवीरम्।

उन्नायक, वि (सं) उन्नेतृ, उत्कर्षक २ वर्द्धक, अभ्युदयकारक।

उन्नासी, वि (सं उनाशीति स्त्री एक) एकोनाशीति नवसप्तति (स्त्री एक)। सं पु, उक्ता सख्या, तदकौ (७९) च।

उन्निद्र वि (सं) निद्रारहित २ विकसित, प्रफुल्ल।

उन्नीस, वि (सं ऊनविंशति स्त्री एक) एकोनविंशति, नवदशन् (बहु)। सं पु, उक्ता सख्या तदकौ (१९) च।

—बिस्वे, मु, प्राय, प्रायश, प्रायेण (सव अव्य)।

उन्मज्जक, वि (सं) जलाद् बहिरागन्तृ।

उन्मज्जन, सं पु, (सं न) जलाद् बहि आगमनम्।

उन्मत्त, वि (सं) उन्मादिन्, वातुल, विक्षिप्त चित्त २ क्षीव, मदोन्मत्त, मदोद्धत ३ संज्ञा रहित, नष्टसंज्ञ, विचेतन।

—प्रलाप, सं पु, निरर्थकवचनानि (न बहु)।

उन्मन, वि (सं अन्यमनस्) अन्यमनस्क, अन्यत्रचित्त, अनवधान।

उन्मयूख, वि (सं) प्रकाशमान, भासुर, भास्वर।

उन्माद, स पु (सं) मतिभ्रम, चित्तविभ्रम, मानसरोगभेद २ सचारिभावभेद (सा)।

उन्मादी, वि (सं दिन्) उन्मत्त, वातुल।

उन्मार्ग, सं पु (सं) उत्-का-कु वि, पथ-मार्ग।

उन्मीलन, स पु (सं न) उन्मेष, उन्मेषण २ विकसन, विकास।

उन्मीलित, वि (सं) विवृत, उन्मिषित, उद्घाटित २ विकसित, प्रफुल्ल।

उन्मुख, वि (स) उदक्-ऊर्ध्वं, मुख २ उत्कण्ठित, उत्सुक ३ उद्यत।

उन्मूलन, स पु (सं न) निर्मूलन, उत्पाटन, उत्खननम् २ विध्वसन, विनाशनम्।

उन्मूलित, वि (स) उत्खात, उत्पाटित २ विनाशित।

उन्मेष, सं पु (स) उन्मीलनम् २ विकास ३ अल्पप्रकाश।

उप, उप (सं) अनुगत्याधिक्यन्यूनतासामीप्यव्याप्त्यादिबोधक उपसर्ग।

उपकंठ, सं पु (सं पु न) सामीप्यम्। वि, निकट। क्रि वि, निकटे।

उपकरण, स पु (स न) साधन, सामग्री, परिच्छद, यत्र, साधकद्रव्यम् २ छत्रचामरादीनि राजचिह्नानि।

उपकार, सं पु (सं) हित, दया, कृपा, परोपकार, उपकृति (स्त्री) २ लाभ।

—करना, क्रि स, उपकृ, अनुग्रह (क्र उ से), हित कृ।

—मानना, क्रि स, उपकृत स्मृ (भ्वा प अ) कृत विद् (अ प से)।

उपकारी, वि (सं रिन्) उपकारक, उपकर्तृ, परोपकारपर, परहितेच्छुक, जगन्मित्रम्, दानशील।

उपकार्या, सं स्त्री (सं) (राजकीय) पट, मण्डप-गृहम् २ राज, भवन प्रासाद।

उपकुल्या, सं स्त्री (सं) उप,-सरणी प्रणाली, २ परिखा, खातम्।

उपकूप, सं पु (सं) कूपक, लघुकूप, उपखात।

उपकृत, वि, (सं) अनुगृहीत, कृतवेदिन्।

उपक्रम, सं पु (स) उपायज्ञानपूर्वकारम्भ २ प्रथमारम्भ ३ भूमिका ४ चिकित्सा।

उपक्रमणिका, सं स्त्री (सं) भूमिका, प्रस्तावना, वाङ्मुखम् २ विषयसूची।

उपगत, वि (सं) उपस्थित, पुर स्थित २ विदित ३ स्वीकृत।

उपग्रह, स पु (सं) ग्रहण, धरण, निरोध २ कारा,-वास निरोध प्रवेश ३ कारागृह, रुद्ध ४ लघुग्रह।

उपघात, स पु (सं) विध्वस, विनाश २ रोग ३ इन्द्रियवैकल्यम् ४ पातकसमूह ५ अपकार।

उपचय, स पु (सं) वृद्धि-उन्नति (स्त्री) २ सचय, सग्रह।

उपचर्या, स स्त्री (सं) सेवा २ चिकित्सा।

उपचार, सं पु (सं) रोगप्रतिकार, चिकित्सा, उपचर्या २ रोगिपरिचर्या ३ प्रयोग, विधानम् ४ धर्मानुष्ठानम्।

५. धूपदीपादीनि पूजागानि (न ब) ६ चाटू क्ति (स्त्री) ७ उत्कोच ।
उपचारक, वि (स) चिकित्सक २ सेवक ३ विधायक।
उपज, सं पु (हिं उपजना) उत्पन्न फल शस्य वा २ उद्भावना, नवकल्पना ३ कल्पित वार्ता।
उपजना, क्रि अ (सं उपजननम् >) उपजन् (दि आ से) उत्पद् (दि आ अ), प्रभू (भ्वा प अ) २ मनसि स्फुर (तु प से)।
उपजाऊ, वि (हिं उपज) उर्वर, शस्यप्रद, बहुफलप्रद।
उपजाना, क्रि स (हिं उपजना) उपजन् उत्पद प्रभू (प्रे)।
उपजीवी, वि (सं विन्) पराश्रित, अनुजीविन्, पराधीनवृत्ति।
उपताप, सं पु (स) रोग, व्याधि २ त्वरा, सम्भ्रम ३ उत्ताप, ऊष्मन् (पु) ४ पीडा ५ दुर्भाग्यम्।
उपत्यका, स स्त्री (सं) पर्वतनिकटभूमि (स्त्री) अचलासन्ना भू (स्त्री)।
उपदंश, सं पु (स) मेढ्ररोगभेद ।
उपदर्शक, स पु (स) पथ-मार्ग-दर्शक २ द्वारपाल ३ साक्षिन्।
उपदर्शन, स पु (स न) टीका, टिप्पणी-नी।
उपदा, स स्त्री (स) उपायन, दे 'भेंट'।
उपदिशा, स स्त्री (स) उप-आशा-काष्ठा-ककुभ् (सब स्त्री) [टि चार उपदिशाएँ ये हैं—ऐशानी, आग्नेयी, नैर्ऋती, वायवी]।
उपदिष्ट, वि (स) शिक्षित, अध्यापित, २ निर्देशित ३ दीक्षित।
उपदेश, स पु (स) अनुशासन, बोधन, शिक्षा २ दीक्षा, गुरुमंत्र ३ धर्मव्याख्यानम्।
—देना, क्रि स उपदिश (तु प अ) अनुशास् (अ प से), शिक्ष्-बुध्-ज्ञा (प्रे), २ दीक्ष् (भ्वा आ से)।
उपदेशक, स पु (स) उपदेष्टृ, धर्मप्रचारक, प्रवक्तृ।
उपद्रव, सं पु (सं) द 'उत्पात' (१ ३) ४ रोगजान्तरविकार ।
—करना, क्रि स, उत्पातम् उत्था (प्रे)।
उपद्रवी, वि (सं विन्) दे 'उत्पाती'।
उपधा, सं स्त्री (स) कपटम् २ उपान्त्याक्षरम् ३ उपाधि ।
उपधान, सं पु (सं न) शिरोधानम्, उपबर्ह २ अवलम्बनम्।
उपनयन, स पु (सं न) यज्ञोपवीतसंस्कार २ समीपे नयनम् ३ शिष्यस्य गुरुनिकटे नयनम्।
उपनाम, स पु (सं मन् न) प्रचलित-अन्य उपाधि-नामन् (न) २ उपाधि, मानपदम्, पदवी।
उपनिधि, स स्त्री (स) न्यास, उपन्यस्त वस्तु (न)।
उपनिवेश, सं पु (स) अधिनिवेश, वासित प्रदेश ।
उपनिषद्, सं स्त्री (स) ब्रह्मविद्यानिरूपका ग्रंथा २ (गुरो) समीपे उपवेशनम्।
उपनीत, वि (सं) कृतोपनयन २ आनत, उपागत।
उपनेता, स पु (सं तृ) उपनयनसंस्कारकर्तृ, आचार्य, गुरु २ निकटे प्रापक ।
उपन्यास, स पु (सं) कल्पित, कथा, कथाप्रबंध, प्रबंधकल्पना २ वाक्योपक्रम ३ निक्षेप, न्यास ।
उपपति, स पु (स) जार, दे 'यार'।
उपपत्ति, सं स्त्री (स) हेतुना वस्तुस्थितिनिश्चय २ सिद्धि (स्त्री), प्रतिपादनम् ३ संगति (स्त्री) ४ युक्ति (स्त्री), हेतु ।
उपपत्नी, स स्त्री (सं) उप-भार्या-जाया कलत्रम्।
उपपद, स पु (सं न) पूर्वोक्त पूर्वलिखित, पद-शब्द २ समासस्य पूर्वशब्द ३ उपाधि (पु), पदवी।
उपपन्न, वि (सं) प्राप्त, उपागत २, शरणागत ४ लब्ध, अधिगत ५ युक्त ६ उपयुक्त।
उपपादन, स पु (स न) साधन, प्रतिपादन युक्तिभि समर्थनम् २ संपादन, निष्पादनम्।
उपपुराण, स पु (स न) लघुपुराण (ये अठारह हैं)।
उपप्लव, स पु (सं) जल, विप्लव प्रलय २ उत्पात ३ भूकंपादिघटना ४ भयम् ५ विघ्न ६ राहु ७ झंझावात ।

उपभुक्त, वि (सं) प्रयुक्त २ उच्छिष्ट ।

उपभोग, सं पु (सं) सुख,-आस्वाद, आस्वादनम् २ प्रयोग, व्यवहार ३ सुखसामग्री ।

उपमन्त्री, स पु (स त्रिन्) उपलेखनसचिव २ उपामात्य, अमात्यसहाय ।

उपमा, स स्त्री (सं) सादृश्य, साम्यम् २ अर्थालंकारभेद (सा)।

—देना, कि स उपमा (जु आ अ), समी कृ।

उपमाता, म स्त्री (सं मातृ) धात्री, दे 'धाय'।

उपमान, स पुं (स न) सादृश्यज्ञानसाधन, साम्यप्रतियोगिन्, अप्रस्तुत, उपवर्ण्यम् २ प्रमाणभेद'।

उपमित, वि (स) समी-सदृशी,-कृत।

उपमिति, स स्त्री (स) उपमा २ सादृश्य जनित ज्ञानम्।

उपमेय, वि (स) वर्ण्य, वर्णनीय, उपमातव्य, प्रस्तुत।

—उपमा, स स्त्री (सं) अर्थालंकारभेद (सा)।

उपयुक्त, वि (स) उचित, उपपन्न, सगत, युक्त, योग्य, यथायोग्य, यथार्ह।

उपयुक्तता, स स्त्री (स) औचित्य ओचिती, युक्त त, योग्यता।

उपयोग, स पुं (स) प्रयोग, व्यवहार २ लाभ, फलम् ३ प्रयोजन, आवश्यकता ४ योग्यता।

उपयोगिता, सं स्त्री (सं) व्यवहार्यता, लाभकारिता, उपकारकता।

उपयोगी, वि (स गिन्) प्रयोजनीय, हित साधन २ उपकारक, लाभदायक ३ अनुकूल।

उपरक्त, वि (स) विपद्ग्रस्त, दु:खित २ ग्रहणयुक्त, उपप्लुत (सूर्यादि) ३ विषयासक्त।

उपरत, वि (स) विरक्त, उदासीन २ मृत।

उपरति, स स्त्री (स) विरति (स्त्री) वैराग्य, औदासीन्यम् २ मृत्यु।

उपरना, स पु (हिं ऊपर) चेल, चेलक २ उत्तरीय, आच्छादनम्।

उपरम, स पु (स) विरक्ति- (स्त्री), वैराग्यम् २ निवृत्ति विश्रान्त (स्त्री) ३ मृत्यु।

उपरात, कि वि (सं उपरि+अन्त >) पर, तत पर, तदनन्तर, तदनु।

उपराग, स पु (सं) सूर्यचन्द्र, ग्रहण, ग्रह पीडन, २ आपत्ति (स्त्री) ३ वर्ण, रंग ४ प्रतिच्छाया ५ विषयानुराग।

उपराज, स पु (स) राजप्रतिनिधि, उप, भूप'-नृप'।

उपराम, सं पु (सं) निवृत्ति विरति (स्त्री), वैराग्यम् २ विश्राम, कार्यानवृत्ति (स्त्री) ३ मोक्ष।

उपरि, कि वि (सं) दे 'ऊपर'।

उपरूपक, सं पु (सं न) त्रोटकसट्टकादयो रूपकभेदा।

उपरोक्त, वि (हिं ऊपर+सं उक्त) दे 'उपर्युक्त'।

उपर्युक्त, वि (सं) प्रागुक्त पूर्वोक्त, प्राक्पूर्व, वर्णित निर्दिष्ट।

उपल, सं पु (सं) पाषाण, प्रस्तर २ रत्नम् ३ मेघ ४ करका ५ बालुका ६ सिता, शर्करा।

उपलक्षण, सं पुं (स न) स्वस्यान्यस्य च बोधक शब्द २ सकेत ३ शब्दशक्तिभेद (सा)।

उपलक्ष्य, सं पु (सं न) सकेत चिह्न, अभिज्ञानम् २ दृष्टि (स्त्री) उद्देश्यम्।

—मे, विचारेण, उद्दिश्य, निमित्तीकृत्य।

उपलब्ध, वि (सं) अधिगत, प्राप्त, गृहीत २ ज्ञात।

उपलब्धि, सं स्त्री (स) प्राप्ति (स्त्री) अधिगम २ ज्ञानम्।

उपलभ्य, वि (सं) प्राप्य, प्राप्तव्य २ समादरणीय, पूज्य।

उपला, स पुं (सं उपल >) गोमय, गोमय पिण्डम्।

उपलालिका, सं स्त्री (सं) तृषा पिपासा।

उपल्ला, स पुं (हिं ऊपर) उपरितन स्तर, ऊर्ध्वभाग।

उपवन, स पुं (स न) आराम २ लघु वनम्।

उपवास, सं पुं (सं) लघन, अनाहार' उपोषण, आक्षपण, अनशन, उपोषितम्।

—करना, कि अ., उपवस् (भ्वा प अ)।

उपविप, सं पु (स न) चार, गर, फल विपन्।

उपविष्ट, वि (स) आसीन, कृतोपवेशन।

उपवीत, स पु (सं न) यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत २ उपनयनसंस्कार।

उपवेद, स पु (सं) प्रधानवेदातिरिक्ता चत्वारः गौणवेदाः (= धनुर्वेद, आयुर्वेद, गन्धर्ववेद, स्थापत्यवेद)।

उपवेशन, स पु (स न) निषदन, आसन, स्थिति (स्त्री)।

उपशम, सं पु (स) शम, शान्ति (स्त्री) २ तृष्णाक्षय ३ इन्द्रियनिग्रह ४ प्रतिकार, उपचार।

उपशमन, सं पु (सं न) सान्त्वन २ प्रतिविधानम्।

उपशिष्य, सं पु (सं) शिष्यस्य शिष्य।

उपसम्पादक, सं पु (सं) सम्पादकसहाय, सहायकसम्पादक।

उपसंहार, स पु (सं) परि-अवसान, समाप्ति (स्त्री) २ ग्रन्थादिकस्य अन्तिम प्रकरणम् ३ मारण ४ शस्त्रादीनां वारणम्।

उपसर्ग, सं पु (स) क्रियायोगे प्रादय निपाता (प्र, परा, अप, सम्, इ०)। २ अपशकुनम् ३ आधिदैविक उत्पात।

उपसागर, सं पु (स) लघुसमुद्र २ वङ्क, खातम्।

उपस्थ, स पु (सं) लिङ्ग, मेढ़ २ भग, योनि (स्त्री) (३४) अधो-मध्य-भाग ५ क्रोडम् ६ वक्षस् (न)। वि समीपोपविष्ट।

उपस्थान, स पु (स न) समीपागमनम् २ पूजार्थं उपागमनम् ३ उत्थाय पूजनम् ४ पूजास्थानम् ५ समाज।

उपस्थापक, वि (स) उपनायक, उपनिधायक २ स्मारक।

उपस्थापन, स पु (स न) समीपे-पुरत-उपनिधानम्, उपानयनम् २ उपस्थिति (स्त्री) ३ परिचर्या ४ स्मारणम्।

उपस्थित, वि (सं) निकटस्थ, उपसृत, उपागत, सन्निहित।

—करना, क्रि स, पुरस्कृ, समक्षं नी (भ्वा उ अ)।

—होना, क्रि अ, उपस्था (भ्वा प अ), प्रविश् (तु प अ)।

उपस्थिति, स स्त्री (सं) सन्निधान सान्निध्य, वर्तमानता विद्यमानता।

उपस्वेद, स पु (स) प्रस्वेद, घर्म-उदक-जलम् २ वाष्प-पम् ३ आर्द्रता, क्लिन्नता।

उपहत, वि (स) नाशित ध्वस्त २ दूषित ३ पीडित ४ अपवित्र।

उपहार, स पु (स) उपायन, उपदा।

उपहास, सं पु (स) परि (री) हास, प्रहसन, नर्मन् (न), क्रीडाकौतुकम् २ निन्दा, आक्षेप।

—आस्पद, वि (सं न) उपहास्य, उपहासार्ह २ निंदनीय।

उपांग, स पु (सं न) अवयव, अङ्गभाग। २ आपूरक वस्तु (न)। (वेद के चार उपाङ्ग पुराण, न्याय, मीमांसा, धर्मशास्त्र)।

उपांत, स पु (सं) अन्तसमीपभाग २ प्रान्तभाग ३ लघुतटम्।

उपान्त्य, वि (सं) अन्त्यात् पूर्ववर्तिन्।

उपाकर्म, स पु (स-र्मन् न) संस्कारपूर्वकं वेदाध्ययनारम्भ।

उपाख्यान, स पु (सं न) प्राचीनकथा, आख्यानम् २ कथान्तर्गतकथा ३ वृत्तान्त, उदन्त।

उपादान, सं पु (सं न) प्राप्ति-उपलब्धि (स्त्री) २ बोध ३ प्रत्याहार ४ समवायिकारणम्।

उपादेय, वि (सं) ग्राह्य, ग्रहीतव्य, स्वीकार्य २ श्रेष्ठ, उत्तम।

उपाधि, सं स्त्री (सं पु) छल, कपटम् २ स्वधर्मस्यान्यत्र तद्भावभासक वस्तु (न) ३ उपद्रव ४ कर्तव्यचिन्ता ५ प्रतिष्ठासूचक पदम्।

उपाध्याय, स पु (स) वेदवेदाङ्गाध्यापक २ शिक्षक, अध्यापक ३ ब्राह्मणोपजाति (स्त्री)।

उपाध्याया, सं स्त्री (सं) अध्यापिका, विद्योपदेशिका।

उपाध्यायानी, स स्त्री (सं) उपाध्याय-शिक्षक-गुरु, पत्नी।

उपाध्यायी, सं स्त्री (सं) अध्यापिका २ उपाध्यायपत्नी।

उपानत्,-नह्, सं पु (सं उपानह् स्त्री) पादत्राणम् २ पादुका।

उपाय, सं पु (सं) साधन, उपकरण, करण, सामग्री, युक्ति (स्त्री) २ शत्रुविजययुक्ति (= साम, दाम, भेद, दंड)।

उपायन, सं पु (सं न) उपदा, उपहार।

उपार्जन, स पु (सं न) धनादिकस्याहरणम्, अर्जनम्, लाभ।

—करना, क्रि स, उप ,अर्ज् (चु), उपादा (जु आ अ)।

उपार्जित, वि (सं) सगृहीत, अर्जित।

उपावर्तन, सं पु (सं न) प्रत्या,-वर्तन-व्रजन-गमनम् २ उपा-गमन-यानम् ३ भ्रामणम्।

उपालम्भ, सं पु (सं) आ-अधि, क्षेप, भर्त्सन ना, गर्हा, परिवाद २ दु:खनिवेदनम्।

उपासक, वि पु (सं) पूजक, सेवक, आरा धक, अर्चक।

उपासना, सं स्त्री (सं) समीपे उपवेशनम् २ आराधना, अर्चा।

—करना, क्रि स, उपास् (अ आ से), पूज् (चु) उपस्था (भ्वा आ अ)।

उपास्य, वि (सं) उपासनीय, आराध्य, पूज्य, भजनीय।

उपेंद्र, स पु (सं) विष्णु, वामन, कृष्ण।

उपेक्षणीय, वि (सं) उपेक्ष्य, त्याज्य २ गर्ह्य घृणार्ह।

उपेक्षा, सं स्त्री (सं) औदासीन्य, नि स्पृहता, नि मगनता, विरक्ति (स्त्री) २ घृणा, गर्हा।

उपेक्षित, वि (सं) अवगणित, अवधीरित, त्यक्त तिरस्कृत।

उपोद्घात, सं पु (सं) भूमिका, प्रस्तावना।

उफ, अव्य (अ) हा, अहह, हन्त, कष्टम्।

—ओह, अव्य, अहो, ही।

उफनना, क्रि अ (स उत्+फेन>) उद्गम् (भ्वा प से), क्वथ् तप्-पच् (कर्म) २ फेना यते मदायन (ना धा) ३ उरिमच् (कर्म), अत क्षुभ् (दि प से)।

उफान, स पु (सं उद्+फेन>) उत्सेक, फनोद्गम, उद्रेक।

उबकना, क्रि अ (अनु) दे 'कै करना'।

उबकाई, सं स्त्री दे 'कै'।

उबटन, सं पु (स उद्वर्तनम्) अभ्यंग, अभ्यंजन, उत्सादन, अनु वि,-लेप, समालभ।

उबरना, क्रि अ (स उद्वारणम्>) मुच् मोक्ष्-उद्धृ (कर्म) २ अव-परि-उत्, शिष् (कर्म)।

उबलना, क्रि अ (सं उद्वलनम्>) फना यते (ना धा) क्वथ्-तप् (कर्म) २ वेगात् निरस् (भ्वा प अ)।

उबार, सं पु (हिं उबरना) निस्तार, मोक्ष, त्राण, रक्षा।

उबारना, क्रि स, (हिं उबरना) वि निर्, मुच (प्रे) निस्तॄ (प्रे), रक्ष् (भ्वा प से)।

उबाल, सं पु (हिं उबलना) दे 'उफान' २ उद्वेग, आवेश।

—आना, क्रि अ, दे 'उफनना'।

—बिंदु, सं पु, बुद्बुदांक।

उबालना, क्रि स (हिं उबलना) उत्क्वथ् (भ्वा प से), श्रा (अ प अ)।

उबासी, सं स्त्री (स उत्+श्वास>) जृम्भ, जृम्भा।

उभरना, क्रि अ (सं उद्भरणम्>) श्वि (भ्वा प से), स्फाय्-वृध् (भ्वा आ से) आध्मा विस्तॄ (कर्म) २ दे 'उठना' ३ परि वह् (भ्वा उ अ) ४ गर्व् (भ्वा प से) ५ उत्पद् (दि आ अ) ६ अपा वि, वृ (कर्म) ७ समृध् (दि प से) ८ अपगम् ९ यौवन आप् (स्वा उ अ) १० बहिर्लङ् (भ्वा आ से) ११ भार मुक्त (वि) भू।

उभरा, वि (हिं उभरना) स्फीत, शून २ निर्गतभार।

उभारना, क्रि स (हिं उभरना) उत्तेजन, उत्तोलनम् २ उत्थापनम् ३ प्रोत्साहन, प्रेरणम्।

उभार, सं पु (हिं उभरना) उच्चता, उच्छ्राय २ वृद्धि उन्नति (स्त्री) ३ शोफ, शोथ ४ स्फीति (स्त्री) पीनता ५ प्रलम्बना।

उमंग, सं स्त्री (हिं उमगना) उल्लास, आनन्द २ चित्ततरंग, लहरी ३ आधिक्यम् ४ उत्साह, औत्सुक्यम्।

उमगना, क्रि अ (सं उन्मगनम् >) दे 'उभरना', 'उमड़ना' २ उल्लस् (भ्वा प से), प्री (कर्म)।

उमड़ना, क्रि अ (सं उन्मड्नम् >) परिवृद्ध् (भ्वा उ अ), प्रवृध् (भ्वा आ से) २ वेगात् प्रवृत् (भ्वा आ से) ३ घनसबाध (वि) भू ५ क्षुभ् (दि प से)।

—**घुमड़ना**, परिभ्रम्य तन् (कर्म)।

उमदा, वि (अ) उत्तम श्रेष्ठ ।

उमर, स स्त्री (अ उम्र) वयस (न) बाल्याद्यवस्था २ जीवितकाल, आयुस (न)।

उमरा, स पु (अ०, 'अमीर' का बहु०) धनिका २ पुरोगा, नायका ३ सामन्ता (सब बहु०)।

उमस, स स्त्री (स ऊष्मन् पु) ऊष्म, निर्वातता, घर्म ।

उमा, स स्त्री (स) पार्वती २ दुर्गा ३ कीर्ति (स्त्री) ४ कान्ति (स्त्री) ५ महाविद्या ।

उमाड़ना, क्रि अ, दे 'उमड़ना'।

उमेठना, क्रि स (सं उद्वेष्टनम् >) मुट्-मुड् (चु), आकुच् (प्रे), पर्यावृत (प्रे.), मपुटी पिंडी,-कृ ।

उमेठवाँ, वि (हिं उमेठना) कुञ्चित, अराल।

उम्मेद, सं स्त्री (फा) आशा, आशंसा २ प्रतीक्षा, उदीक्षा, ३ आश्रय, अवलंब ४ विश्वास, विश्रंभ ।

—**वार**, स पु (फा) आशान्वित, आशावत् २ याचक, पदान्वेषिन्, प्रत्याशिन्।

—**होना**, मु, प्रसव प्रतीक्ष् (कर्म)।

उम्र, स स्त्री (अ) दे 'उमर'।

उर, स पु (स उरस न) हृदय, चित्तम्, मनस (न) २ क्रोड, वक्षस (न), वक्षस्थलम्।

—**लाना**, मु, आलिंग् (भ्वा प से) २ विचर (प्रे)।

उरग, स पु (सं) सर्प ।

उरगारि, स पु (स) गरुड ।

उरज, **उरजात**, सं पु, दे 'उरोज'।

उरद, स पु (स ऋद्ध >) माष, कुरुविंद, मासल, धान्यवीर, वृषाकुर, बलाढ्य, पितृभोजन ।

उरला, वि (सं अपर >) अपर, अवर २ पृष्ठस्थ, पश्चिम ३ उत्तर, अपरोक्त ।

उरश्छद, सं पुं (सं) उरस्त्राणम्, वक्षस्त्राणम् ।

उरसिज, सं पु (स) स्तन, उरोज ।

उरसिल, वि (स) विशाल-कपाट,-वक्षस्, उरस ।

उरु[1], वि (सं) आयत, विस्तीर्ण, विशाल, विपुल ।

उरु[2], सं पु (स ऊरु) सक्थि (न)।

—**क्रम**, वि (स) बलवत् २ द्रुतगति ।

सं पु, वामनावतार २ सूर्य ।

उरोज, स पु (स) कुच, स्तन ।

उर्दू, सं स्त्री (तु ओर्दू) अरबीपारसीतुरुष्कभाषाशब्दैः मिश्रिता पारसीलिप्यां लिखिता हिंदीभाषा, उर्दू (स्त्री) २ शिविरहट्ट ।

उर्फ, सं पु (अ) उपनामन् (न), उपाख्या ।

उर्वरा, सं स्त्री (सं) बहुफलदा भूमि (स्त्री) २ पृथिवी । वि स्त्री, फलदा, शस्यप्रदा।

उर्वी, सं स्त्री (सं) पृथिवी, धरणी ।

उलझन, स स्त्री (हिं उलझना) विघ्न, प्रतिबंध, बाधा २ समस्या, चिंता विवाद, विषय ।

उलझना, क्रि अ (सं अवरुध् >) संश्लिष्, सग्रन्थ् (कर्म), जटिली भू २ सम्बध् समिश्र् (कर्म) ३ दे 'लिपटना' ४ व्यापृत (वि) भू ५ स्निह् (दि प वे) ६ विवद् (भ्वा आ से), वैरायते-कलहायते (ना धा) ७ सकटे पत् (भ्वा प से) ८ वक्री-कुण्ठिली, भू ।

उलझाना, क्रि स (हिं उलझना) संश्लिष् (प्रे), सग्रन्थ् (चु) २ व्याप्रु प्रयुज् विनियुज् (प्रे) ३ वक्रीकृ ।

उलटना, क्रि अ (स उलुठनम् >) परिपरा,-वृत् (भ्वा आ से), विपर्यस् व्यत्यस् (कर्म) अधोमुखी भू २ परि भ्रम् (भ्वा दि प से), घूर्ण (तु प से) ३ दे 'उमड़ना' ४ सकरी-संकुली भू ५ विपरीत विरुद्ध (वि) भू ६ कुप् (दि प अ) ७ मृ (तु आ अ), मूर्छ् (भ्वा प से) ८ पत् (भ्वा प से)। क्रि स, परि परा,-वृत्

(प्रे), अधोमुखी कृ २ निपत् (प्रे) ३ क्षिप् (तु प अ) ४ सकरी-सकुली-कृ ५ विपरीत कृ ६ उत्तरप्रत्युत्तर दा (जु उ अ) ७ नि मश मूच्छित (वि) कृ ८ दे 'औंडेलना' ९ ध्वस-नश (प्रे)।

उलट प (पु) लट, स स्त्री (हिं उलटना पुलटना) विपर्यास, व्यत्यास, परिवर्तनम् २ व्यतिहार, विनिमय ३ क्रमभग, व्यतिक्रम। वि, विपर्यस्त, अव्यवस्थित, अक्रम, अस्तव्यस्त।

उलटफेर, स पु, दे 'उलट पुलट' सं स्त्री।

उलटा, वि (हिं उलटना) व्यत्यस्त, विपर्यस्त, अधरोत्तर, अधोमुख २ क्रमरहित, अव्यवस्थित ३ विरुद्ध, विपरीत ४ अनुचित, असगत। क्रि वि, व्यतिक्रमेण, विपर्ययेण, असगतम् २ अनुचित, अयुक्तम्।

—जमाना, मु, विपरीतकाल, न्यायरहित समय।

—तवा, मु, अति कृष्ण श्याम नील।

उलटी खोपड़ी का, मु, मूढ जड।

—गगा बहाना, मु, असाध्य साध् (स्वा प अ)।

—पट्टी पढ़ाना, मु, कुपथे प्रवृत् (प्रे)।

—माला फेरना, मु, अमगल कम् (भ्वा आ से)।

—साम चलना, मु, मरणासन्न (वि) जन् (दि आ से)।

—सीधी सुनाना, मु, निर्भर्त्स् (चु आ से)।

—पाँव फिरना, मु, झटिति प्रतिनिवृत् (भ्वा आ से)।

—छुरे से मूँड़ना, मु, अतिसधाय स्वप्रयोजन साध् (स्वा प अ)।

उलटाना, क्रि स (हिं उलटना) दे 'उलटना' क्रि स। २ प्रति ऋ (प्रे प्रत्यर्पयति) ३ अवन्ध्या कृ।

उलटापुलटा-टी, वि, दे 'उलटपलट'।

उलटी, स स्त्री (हिं उलटना) वम, वमन, वमि (स्त्री), छर्दिका।

उलटे, क्रि वि (हिं उलटना) विपरीततया, विपर्ययेण।

उलथा, सं पुं (स उल्लस्थम्>) नृत्यभेद २ विपर्यस्तप्लुतम्।

उलफत, सं स्त्री (अ) अनुराग, प्रमन् (न)।

उलार, वि (हिं ओलरना = लेटना) पृष्ठभागे भारवत् (शकटादि)।

उलाहना, स पु (सं उपालम्भनम्) उपालम्भ, दुःखनिवेदनम्, आ-अधि-क्षेप, (सविलाप) विज्ञापना।

—देना, क्रि स, उपालभ् (भ्वा आ अ), निन्द् (भ्वा प से)।

उलीचना, क्रि स (स उल्लुंचनम्) उल्लुंच् (भ्वा प से), हस्तादिभि जल बहि क्षिप् (तु उ अ)।

उलूक, स पुं (सं) घूक, दे 'उल्लू' २ इन्द्र ३ कणाद।

उलूखल, सं पु (सं न) उदूखलम् २ गुग्गुलु।

उल्का, स स्त्री (सं) खोल्का, उत्पात, पतन्नक्षत्र २ प्रकाश ३ अग्निशिखा ४ अग्नि ५ दीपिका ६ प्र,दीप, दीपक ७ अग्निकाष्ठं, अलातम्।

—पात, स पुं (स) तारा-तारका नक्षत्र उडु, पात पतनम्।

उलथा, स पु (हिं उलथना) अनुवाद, दे।

उल्मुक, स पुं (स) ज्वलत्काष्ठम्, उल्का।

उल्लघन, सं पुं (सं न) व्यतिक्रम, अतिक्रम-क्रमणम्, भग, अतिपात २ आक्रान्लघन, प्रतीपाचरणम् ३ उत्प्लव।

उल्लवित, वि (स) दे० 'खड़ा'।

उल्लास, स पुं (स) हर्ष, आनद २ प्रकाश ३ अल्कारभेद (सा) ४ ग्रन्थपरिच्छेद।

उल्लिखित, वि (सं) उत्कीर्ण पाषाणादिषु अभिलिखित २ यन्त्रेण तष्ट ३ लिखित ४ उपरिलिखित, उपर्युक्त ५ चित्रित, आलिखित।

उल्लू, सं पुं (सं उलूक) पेचक, काकारि, कौशिक, दिवान्ध, दिवाभीत, घूक, निशाटन २ मूर्ख।

—का पट्ठा, स पुं, जड, बालिश।

—बनाना, मु, व्यामुह् (प्रे)।

—बोलना, मु, निर्जनी भू।

उल्लेख, स पु (स) वर्णन, लिखितम्, लेखम् २ वर्णनं, निरूपणम् ३ अलंकारभेद (सा)।

उल्लेखनीय, वि (सं) लेखार्ह, उद्, लेख्य २ वर्णनीय, निरूपणीय ३ अद्भुत।
उल्ब, सं. पु (सं न) जरायु २ गर्भाशय।
उल्व (ल्ब) ण, वि (सं) स्पष्ट, विशद २ प्रबल, दृढ ३ अधिक, अतिशय।
उशना, स पु (स नस) शुक्राचार्य।
उशवा, स पु (अ) वृक्षभेद।
उशीनर, स पु (स-रा) गांधारदेश २ गांधारवासिन् ३ शिविनृप।
उशीर, स पु (स पु न) वीरणमूल, अभय, नल्द, सेव्यम्।
उषा, स स्त्री (स) उषस (स्त्री न), प्रभात, अरुणोदय, दिनमुख, रात्रिशेष, ब्राह्मवेला। २ अरुणोदयलालिमन् (पु) ३ बाणासुर कन्या, अनिरुद्धपत्नी।
उष्ट्र, स पु (स) क्रमेलक, दे 'ऊँट'।
उष्ण, वि (स) स-उद्, तप्त २ उद्योगिन्, सोद्योग, परिश्रमिन्, क्षिप्रकारिन्, दक्ष ३ उष्णप्रकृति।
रा पु, ग्रीष्म २ नरकविशेष ३ पलाण्डु।
—कटिबंध, सं पु (सं) भूमे उष्णतम मध्यप्रदेश।
उष्णता, सं. स्त्री (सं.) सं-उद् परि-ताप, ताप, उ (ऊ) ष्मन् (पु), उष्णत्वम्।
उष्णीष, सं. पु (सं. पु न) शिरोवेष्टन २ मुकुट, किरीटम्।
उष्म, सं पु (स.) दे 'उष्णता' २ आतप, सूर्यालोक ३ ग्रीष्म।
उष्मा, सं स्त्री (स ष्मन् पु) दे 'उष्णता' २ आतप ३ क्रोध।
उस, सर्व (हिं वह) तद्, अदस।
उसाँस, स स्त्री (सं उच्छ्वास) दीर्घश्वास, उच्छ्वसितम २ श्वास, निश्वास ३ (दु:ख दिग्सूचक) दीर्घनिश्वास।
उसार, स पु (सं अवसार) विस्तार।
उसूल, स पु (अ) नियम, सिद्धान्त।
उस्तरा, स पु (फा उस्तुरा) क्षुर, नापितास्त्रम्।
उस्ताद, सं पु (फा) अध्यापक, गुरु। वि, कपटिन् २ चतुर।
उस्तादी, स स्त्री (फा) अध्यापकत्वम् २ नैपुण्यम् ३ वञ्चन, विप्रलम्भ।
उस्तानी, सं स्त्री (फा) अध्यापिका २ गुरुपत्नी ३ मायाविनी।

ऊ

ऊ, वर्णमालाया षष्ठ स्वरवर्ण, ऊकार।
ऊ, अव्य (अनु) आ, हा, कष्टम्।
ऊँघ, सं. स्त्री (सं अवाङ्) तन्द्रा, ईषत् स्वल्प, निद्रा।
ऊँघना, कि अ (हिं ऊँघ) ईषद् स्वप् निद्रा (अ प अ), स्वप् के सन्नन्त रूप (सुषुप्सति आदि)।
ऊँच, वि (सं उच्च) उच्छ्रित २ श्रेष्ठ ३ कुलीन।
—नीच, वि, कुलीनाकुलीन, उच्चावच। सं पु हानिलाभौ, भद्राभद्रे (द्वि)।
ऊँचा, वि (सं उच्च) समुद्, उच्छ्रित, उद्गत, प्रांशु, ऊर्ध्व, तुंग, उदग्र, सोच्छ्राय २ श्रेष्ठ, मुख्य, अग्रय, परम, महा, प्रधान, ३ प्रबल, तीव्र।
—नीचा, वि, विषम, असम, नतोन्नत। सं. पु., हानिलाभौ २ भद्राभद्रे।
—बोल बोलना, मु, विकत्थ् (भ्वा आ से)।
—सुनना, मु, किंचिद् बधिरत्वम्।
ऊँचाई ऊँचान, सं स्त्री (हिं ऊँचा) उच्छ्र (च्छ्रा) य, आरोह, उत्सेध, उद्, तुंगता, उच्चता, उत्कर्ष, उन्नति (स्त्री) २ महत्त्व, गौरवम्।
ऊँचे, कि वि (हिं ऊँचा) उच्चै, उपरि, ऊर्ध्वं, उच्चम्।
ऊँट, सं. पु (सं उष्ट्र) क्रमेलक, महाग, मय, दीर्घगति, दासेरक, धूसर, लबोष्ठ, दीर्घग्रीव, दीर्घ, महापृष्ठ, महाग्रीव।
—कटा (टी) रा, स पु (सं. उष्ट्रकटक कम्) उष्ट्रप्रिय कटकिनो गुल्मभेद, कटालु, उत्कटक।
ऊँटनी, सं स्त्री (हिं ऊँट) उष्ट्री, लबोष्ठी, महागा।
ऊँहूँ, अव्य (अनु) न, नो, नो नो, न कदापि।
ऊ, सं. पु (स) शिव २ चन्द्र ३ रक्षक।

अ०, अपि । सर्व० स, सा, तद् तत् (न)।

ऊख, पु (स इक्षु) दे 'गन्ना'।

ऊखल, स पु (स उलूखलम्) उदूखलम्।

ऊजड, वि , दे 'उजाड'।

ऊटक नाटक, स पु (स उत्कट+नाटक >) अनर्थक निरर्थक-कार्यम्।

ऊटपटांग, वि (अनु अटपट+स अग) असबद्ध, असगत २ मोघ, निरर्थक।

—बात, स स्त्री , निरर्थक वचनम्।

ऊढ, वि (स) सपत्नीक, परिणीत, दे० 'विवाहित'।

—कंकट, वि (सं) सन्नद्ध, कवचधारिन्।

ऊढा, वि स्त्री (सं) परिणीता, उपयता, सभर्तृका, सधवा, सुवासिनी, पतिवली २ पर कीयानायिकाभेद।

ऊढि, स स्त्री (सं) वहनम्, नयनम २ विवाह , परिणय ।

ऊत, वि (स अपुत्र) निस्सतान, निरपत्य, निरन्वय २ मूढ, निर्बुद्धि।
स पु, मूर्ख २ पत्नीरहित ३ अपुत्र ४ प्रेतभेद।

ऊद, सं पु (स उद्र) दे 'ऊदबिलाव'।

ऊदबिलाव, स पु (स उदबिडाल) उद्र, जल,मार्जार बिडाल ।

ऊदा, वि (अ ऊद अथवा फा कबूद) नील लोहित, धूम्र, धूमल, धूमवर्ण।

ऊधम, सं पु (सं उद्धम >) उपद्रव , उत्पात कोलाहल , तुमुल, कलह ।

—मचाना, क्रि स , उपद्रव उत्था (प्रे)

ऊधमी, वि (हिं ऊधम) उत्पातिन् , उपद्रविन् , दुष्ट ।

ऊधो, स पु (सं उद्धव) श्रीकृष्णस्य मित्र विशेष ।

—का लेना न माधव का देना, मु , विरक्तता, उदासीनता गतमगता ।

ऊन[1], स स्त्री (स ऊर्णा) ऊर्णा, मेषादिरोमन् (न)।

ऊन[2], वि (सं) न्यून, अल्प, क्षुद्र-अल्प-स्तोक सूक्ष्म ,तर २ क्षुद्र, तुच्छ।

ऊना, वि , दे 'ऊन[2]'।

ऊनी, वि (हिं ऊन) लोमज, मेषलोमज, ऊर्णामय (-यी स्त्री), और्ण (र्णी स्त्री)।

ऊपर, क्रि वि (स उपरि अव्य) ऊर्ध्वं उपरिष्टात् , सप्तमी विभक्ति से भी। २ अधिकम् अतिरिक्तम् ३ बहि, बहिर्भागे ४ तटे, तीरे ५ प्रतिकूल, विरुद्धम्। स पु, अग्र, अग्रम्।

—तले, क्रि वि , उपर्यध ।

—से, क्रि वि उपरिष्टात् , बाह्यत ।

ऊपरी, वि (हिं ऊपर) ऊर्ध्व, उत्तर, उपरितन (-नी स्त्री) २ बाह्य,बहिर्वर्तिन् ३ अनियत ४ आपातरमणीय, साडबर।

—आमदनी, स स्त्री , वेतनातिरिक्त आय।

ऊबड़-खाबड़, वि (अनु) विषम, नतोन्नत।

ऊबना, क्रि अ (स उद्वेजनम्) उद्विज् (तु आ से), निर्विद् खिद् (दि आ अ)।

ऊभासोसी, स स्त्री (हिं ऊमना+साँस) श्वास प्राण-कृच्छ्रम् , उद्धम , दुःश्वास।

ऊमर, स पु , दे 'गूलर'।

ऊमस, स स्त्री , दे 'उमस'।

ऊरु, सं पु (सं) सक्थि (न), जानूपरि भाग ।

ऊर्ज, सं पु (सं ऊर्ज् स्त्री) बल, शक्ति (स्त्री)। २ रस ३ भोजन ४ जलम्।

ऊर्जस्वी, वि (स-स्विन्) ऊर्जस्वल, ऊर्जित, बलिन् , शक्तिमत्।

ऊर्ण, स पु (सं न) ऊर्णा, दे, 'ऊन'।

—नाभ, सं पु (स) ऊर्णनाभि , मर्कटक, दे 'मकडी'।

ऊर्णा, स स्त्री (सं) ऊर्ण, दे 'ऊन'।

ऊर्द्ध्व, क्रि वि (स ऊर्ध्वम्) उपरि, उपरिष्टात् ।

—आरोहण, सं पुं (सं न) देहान्त।

—गामी, वि (सं -मिन्) उन्नत् २ मुक्त।

—मूल, स पु (सं) ससार ।

—रेता, वि (सं -तस्) ब्रह्मचारिन् , वीर्य रक्षक।
सं पुं , महादेव २ भीष्म ३ हनुमत्।

—श्वास, स पु (स) उच्छ्वास २ क्रुद्धो च्छ्वास ।
ऊर्मि, स स्त्री (स पु स्त्री) तरग, कल्लोल २ वेदना ३ वस्त्रसकोचरेखा ।
—माली, स पु (स लिन्) समुद्र ।
ऊलजलूल, वि (देश) अक्रम २ असभ्य ३ असभ्य ।
ऊषर, स पु (स पु न) अनुर्वर-क्षार-अश स्यप्रद भूमि (स्त्री), मरुस्थल-स्थली । वि मोघ निष्फल ।
ऊषा, स स्त्री (स) दे उषा ।
ऊष्म, स पु (स) उत्ताप, घर्म २ वाष्प ३ ग्रीष्म । वि उत्तप्त, उष्ण ।
—वर्ण, स पु (स) श, ष, स, ह वर्ण ।
ऊष्मा, स स्त्री (स ऊष्मन् पु) दे 'ऊष्म' ।
ऊसर, स पु दे ऊषर' ।
ऊह, अव्य, (अनु) (पीडा) आ, हा, २ (आश्चर्य) अहह, अहो ।
ऊह, स पु (स) अनुमान, वि, तर्क २ युक्तिः (स्त्री) हेतु ।
—अपोह, स पु (स-हौ) तर्कवितर्कौ, विमर्श, विचारणा पक्षप्रतिपक्षचिन्तनम् ।

ऋ

ऋ, देवनागरीवर्णमालाया सप्तम स्वरवर्ण, ऋकार ।
ऋक्, स स्त्री (स ऋच्) वेदमन्त्रभेद २ ऋग्वेद ।
ऋक्ण, वि (स) आहत, वि, क्षत ।
ऋक्थ, स पु (स न) धनम् २ स्वर्णम् ३ दायधनम् ४ दायभाग ।
ऋक्ष, स पु (स) भल्लूक २ नक्षत्र ३ मेषा दिराशय ।
—पति, स पु (स) चन्द्र २ जाम्बवत् (पु) ।
ऋग्वेद, स पु (स) वेदविशेष ।
ऋग्वेदी, वि (स दिन्) ऋग्वेद-ज्ञ-पाठक ।
ऋचा, स स्त्री (स ऋच् स्त्री) छन्दोमयो मत्र २ वेदमत्र ३ स्तोत्रम् ।
ऋजु, वि (स) सरल, समरेख प्रगुण, अजस्र २ सुकर, सुख-साध्य-सपाद्य ३ निर्व्याज, निष्कपट ४ प्रसन्न अनुकूल ।
ऋजुता, स स्त्री (स) सरलता, समरेखता २ सुकरत्व सुखसाध्यता ३ निष्कपटता ।
ऋण, स पु (स न) पर्युदचन, उद्धार ।
—चुकाना, क्रि स, ऋण शुध् (प्र) ।
—लेना, क्रि स, ऋण कृ अथवा ग्रह् (क्र उ से) ।
—ग्रस्त, वि (स) ऋणिन्, अधमर्ण, खातक, धारक ।
—मुक्त, वि (स) ऋण-उद्धार पर्युदचन, विमुक्त ।
ऋणी, वि (स णिन्) दे 'ऋणग्रस्त' २ अनु गृहीत, उपकृत ।
ऋत, स पु (स न) उञ्छवृत्ति (स्त्री) २ मोक्ष ३ जलम् ४ कर्मफलम् ५ यज्ञ ६ सत्यम् ।
वि, दीप्त २ पूजित ३ सत्य ।
ऋतु, स स्त्री (स पु) मासद्वयात्मक प्रकृति परिवर्तनयुक्त काल (षट् ऋतव-वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर) समय २ आर्तव पुष्प-रज,-काल ।
—काल, स पु (स) रजोदर्शनानन्तर गर्भ योग्यानि षोडशदिनानि ।
—गमन, स पु (स न) ऋतुकाले मैथुनम् ।
—चर्या, स स्त्री (स) ऋत्वनुकूल आहार विहारौ ।
—दान, स पु (स न) गर्भाधानम्, निषेक ।
—मती, वि स्त्री (स) रजस्वला, पुष्पवती ।
—राज, स पु (स) वसन्त ।
ऋत्विज, स पु (स-ज) पुरोहित याजक ।
ऋद्ध वि (स) सपन्न समृद्ध ।
ऋद्धि, स स्त्री (स) समृद्धि वृद्धि (स्त्री) । २ प्राणप्रिया, ओषधिभेद ।
—सिद्धि, स स्त्री (स) समृद्धिसाफल्ये ।
ऋभु, स पु (स) देव अमर २ गणदेव विशेष ३ देवानुचरगणविशेष ४ शिल्पिन ।

ऋषभ, सं पु (स) वृष, दे 'बैल' २ सगीते द्वितीयस्वर ३ समासान्ते श्रेष्ठता वाचक (उ नरर्षभ)।
—देव, स पु (सं) विष्णोरवतारो नाभि राजपुत्र २ प्रथम तीर्थंकर (जैन)।
—ध्वज, स पु (स) शिव ।
ऋषि, स पु (सं) सत्यवचस्, शापाश्र, मन्त्रद्रष्टृ, मुनि, तत्त्वविद्, सिद्ध, ब्रह्मज्ञ ।
—ऋण, स पु (स न) मुश्रुद्धार (टि यह वेदों के पठनपाठन से उतरता है)।

ए

ए, हिन्दीवर्णमालाया अष्टम स्वरवर्ण, एकार ।
ऐंच पेंच, स पु (अनु + फा पेच) वक्रता, कुटिलता ।
एण्डी, स स्त्री, कौशेयकोश, भेद २ तस्य कीट ३ कौशिकवस्त्रभेद ।
एपरर, स पु (अ) सम्राज्, महाराज, राजाधिराज, अधिराज ।
एपायर, स पु (अ) अ(आ)धिराज्यम्, साम्राज्यम् ।
एम्प्रेस, स स्त्री (अ) सम्राज्ञी, राजाधिराज महाराज पत्नी, अधीश्वरी ।
एम्बुलेंस, स स्त्री (अ) चलच्चिकित्सालय २ क्षत रुग्ण,-वाहन शकटी ।
एकंगा, वि (स एकाग) एक, पक्षीय देशीय २ असमभार ।
एक, वि (स स) एक, एका, एकम् २ अतुल्य, अनुपम ३ कश्चन, कश्चित्, काचन, किंचन ४ तुल्य, समान ।
स पु, उक्ता सख्या, तदक (१) च ।
—करना, क्रि स, सगम् (प्रे) ।
—होना, क्रि अ, सघट् (भ्वा आ से)।
—तरफा, वि, एक, पक्षीय देशीय ।
—बार, क्रि वि, सकृत् २ एकदा ३ पूर्वं, पुरा, प्राक् ।
—बारगी, क्रि वि, युगपत्, समम् ३ साकल्येन ।
—मत, वि, एक-सम, चित्त २ सधर्म ।
—मत होकर, क्रि वि, साम्मत्येन ऐकमत्येन ।
—और देखना, मु, समदृश् (भ्वा प अ)।
—एक, मु, सर्व, सकल २ पृथक्-पृथक् ३ क्रमश ।
—एक करके, मु, आनुपूर्व्या, आनुपूर्व्येण ।
—और एक ग्यारह होना, मु, सघेन वर्द्धते बलम् ।
—टक, मु, निर्निमेषम्, अनिमिषम् ।
—तो, मु प्रथम तावत् ।
—दम, मु, निरन्तरम् २ झटिति, सपदि ३ सदैव ४ सर्वथा ।
—दूसरे को, मु, अन्योन्य, परस्पर, इतरेतरम् । वि मिथ (अव्य), परस्पर, इतरेतर ।
—पेट के, मु, सोदर, सहोदर, सोदर्य ।
—बात, मु, सत्य प्रतिज्ञा २ यथार्थवचनम् ।
—सा, मु, तुल्य, सदृश, सम ।
—स्वर से कहना, मु, ऐकमत्येन वद् (भ्वा प से)।
केवल–, वि, असहाय, अद्वितीय ।
कोइ–, कश्चित्, काचित्, किंचित् ।
दो में से–, वि, अन्यतर, एकतर, अन्यतरा, अन्यतरद् (न)।
बहुतों में से–, अन्यतम, एकतम, एकतमा, एकतमत् (न)।
एकचित्त, वि (स) अवहित, स्थिरचित्त २ अभिन्नहृदय ।
एकचित्तता, स स्त्री (स) अवधान, मनोयोग २ ऐकमत्य, समति (स्त्री)।
एकछत्र, वि (स) एकशासकाधीन । क्रि वि ऐकाधिपत्येन ।
एकड़, स पु (अ) क्षेत्रपरिमानभेद, एकड्म् (१६ बीघा-४८४० वर्गगज) ।
एकतरफा, वि (फा यकतरफ) एकपक्षीय २ सपक्षपात ३ एकपार्श्वमवधिन् ।
—डिगरी स स्त्री (फा+अ) एकपक्षध्वनि देश ।
एकता, स स्त्री (सं) सघटन, ऐक्यम्, संहति (स्त्री), सगम, समवाय २ साम्यं, तुल्यता ।

एकतान, वि (सं) एकाग्रचित्त, मग्न, लीन ।
एकतारा, स पु (हिं एक+तार) एकतार, वाद्यभेद ।
एकत्र, कि वि (स) एक,-स्थले-स्थाने ।
—करना, कि स, सग्रह (क उ से)।
—होना, कि अ, समिल (भ्वा प सै)।
एकत्रित, वि (स एकत्र >) सघीभूत सचित, सगृहीत ।
एकत्व, स पु (स न) दे 'एकता' ।
एकदत, स पु (स) गणेश, लबोदर ।
एकदा, अव्य (स) सकृत् (अव्य) २ पूर्व, पुरा प्राक् (सव अव्य)।
एकदेशीय, वि (स) एकदेश्य एकस्थानीय ।
एकनिष्ठ, वि (स) एकोपासक ।
एकरग, वि (स) समान सवर्ण २ शुद्धात्मन् ।
एकरस, वि (स) तुल्य, सदृश २ अव्यय, अपरिणामिन्, परिवर्तनरहित ।
एकरूप, वि (स) स-सम-समान -रूप, तुल्य, समान ।
एकवचन, स पु (स न) एकवाचकं वचनम् (व्या)।
एकवाक्यता, स स्त्री (स) सांमत्य, ऐक मत्यम् ।
एकसर, अ, आद्यन्तम्, आपादमस्तकम् । २ सकृत् (अव्य) वि एकाकिन्, असहाय ।
एकहरा, वि (स एकस्तर) एकास्तर, एक फलक २ एक, सूत्र-गुण ३ तनु, सूक्ष्म ।
—बदन, स पु कृशदेह ।
एकाकी, स पु (स किन्) रूपकभेद २ एकाक्युक्त रूपकम् ।
एकांग, वि (स) एकावयव, एकभाग २ विकलाग । स पु अगरक्षक २ विष्णु ३ बुधग्रह ४ चन्दन-नम् ५ शिरस् (न)।
एकांगी, वि (स गिन्) एकपक्षीय २ दुर्दम ।
एकांत, वि (स) अत्यन्त २ एकाकिन्, पृथक्स्थित । स पु (स) विजन, विविक्तम् ।
—वास, स पु (स) ससर्गाभाव ।
—वासी, वि (स सिन्) निर्जन विजन, वासिन् ।
एका, स पु (हिं एक) सहति (स्त्री), ऐक्यम्, सघटनम् ।
एकाएक, कि वि (सं एक+एक >) अक स्मात् एकपदे, सहसा, अकांडे ।
एकाकार, सं पु (स) सारूप्य, साम्यम् वि, सरूप, सम, समान ।
एकाकी, वि (स किन्) एकल, दे 'अकेला'।
एकाक्ष, वि (स) काण, चन्द्रलोचन । सं पु., काक. २ शुक्राचार्य ।
एकाक्षर, वि (स) एक-अक्षरिन् वर्ण । सं पु (स न) ओंकार ।
एकाग्र, वि (स) स्थिरबुद्धि, धीर २ अनन्य चित्त एकतान, एकाग्रवृत्ति ।
—चित्त, वि, दे 'एकाग्र' २ ।
एकाग्रता, स स्त्री (स) अनन्य चित्तता मनस्कता, एकतानता ।
एकात्मता, स स्त्री (स) एकत्व, एकता, एकरूपता, ऐक्य, भेदाभाव ।
एकादशी, स स्त्री (स) हरि, दिन दिवस वासर ।
एकाधिक, वि (स) बहु, बहुल, अनेक, बहुसख्यक, भूरि ।
एकाधिकार, सं पु (सं) एक,-व्यापार व्यवसाय २ अनन्यसाधारणोऽधिकार ।
एकाधिपति, स पु (सं) अधीश्वर, अधि राज, सम्राज् महाराज ।
एकाधिपत्य, स पु (सं न) एक, प्रभुत्व स्वामित्वम्, पूर्णप्रभुत्वम् ।
एकार्थक, वि (स) सम समान-तुल्य, अर्थक । स पु, पर्यायशब्द ।
एकावली, स स्त्री (स) अलकारभेद (सा) २ एकयष्टिका, एकतारो हार ।
एकीकरण, स पु (स न) एकतासाधन, एकत्वसपादनम् ।
एकीभाव, स पु (स) सघटन, सयोग, सकल्प ।
एकीभूत, वि (स) सयुक्त, मिश्रित, सहत ।
एक्का, वि (स एक >) एक विषयक-सबधिन् २ एकाकिन्, एकल । स पु यूथभ्रष्ट प्राणिन् २ एकपशुवाह्यो द्विचक्रो वाहनभेद ३ सैनिक भेद ४ एकचिह्नयुक्त क्रीडापत्रम् ।
एक्कावान, स पु (हि एक्का) सारथि, सूत, हयकष ।

एक्की, स स्त्री (हिं एक्का) एकवृषभवाह्य शकटम्, वृषवहनम्।
एक्जामिनर स पु (अ) दे 'परीक्षक'।
एक्जामिनेशन, स पु (अ) दे 'परीक्षा'।
एक्सरे, स स्त्री (अ) एक्सरश्मि ।
एजेंट, स पु (अ) प्रतिनिधि, प्रतिहस्त २ दे अढ़तिया' ३ कारक ।
एजेंसी, स स्त्री (अ) परद्रव्यक्रयविक्रयस्थानम् २ प्रातिनिध्यम् ३ कारकत्वम्।
एटम, स पु (अ) अणु ।
—बम, स पु अणुबम्।
एटर्नी, स पु (अ) परकार्य, साधक सपादक, प्रति, पुरुष हस्त ।
एड, स स्त्री [स एडु (इ) कम्] पार्ष्णि (पु स्त्री) पाद, मूल तलम्, गोहिरम्।
—लगाना, मु, घोटकादीन् पाष्ण्या प्रचुद् (प्रे) २ उत्तिज् (प्रे) ३ बाध (भ्वा आ से)।
एडवोकेट, स पु (अ) दे 'अदवोकेट' तथा 'वकील'।
एडिटर, स पु (अ) सपादक ।
एडिटरी, स स्त्री (अ एडिटर >) सपादकता।
एड़ी, स स्त्री [सं एडु (इ) क] दे 'एड'।
—रगड़ना, मु, सुदीर्घकाल कष्ट सह् (भ्वा आ से) २ चिररोगेण पीड् (कर्म)।
—से चोटी तक, मु, आपादशीर्षम्, आद्यन्तम्।
एतबार, स पु (अ) विश्वास, प्रत्यय ।
एतराज, सं पु (अ) आपत्ति (स्त्री), बाध, विरोध, आक्षेप, प्रत्यवाय ।
एरंड, सं पु (स) चित्रक, पचांगुल दीर्घ पत्रक, गन्धर्वहस्तक ।
एलची, स पु (तु) राजदूत, सदेशहर ।
एला, स स्त्री (स) बाला हिमा, चंद्रिका, बहुलगंधा, ऐन्द्री, द्राविडी।
एलान, स पु (अ) घोषणा, विज्ञप्ति (स्त्री)।
एलेक्टोरेट, स पु (अ) निर्वाचकसमूह २ निर्वाचनक्षेत्रम्।
एवं, क्रि वि (सं) इत्थ, अनया रीत्या २ अपि, च।
एव, अव्य (सं) केवलम्, मात्र २ अपि, च, अपि च।
एवज, स पु (फा) प्रति (ती) कार, प्रति, क्रिया-अपकार २ क्षति निष्कृति (स्त्री)- पूरणम् ३ प्रतिनिधि ।
एशिया, स पु (यू इव असु = पूर्वदिशा >) पचमहाद्वीपेषु अन्यतम ।
एशियाई, वि (अ एशिया >) एशियासबंधिन्।
एषणा, स स्त्री (स) आकाक्षा, स्पृहा, वाछा, इच्छा।
एहतियात, स स्त्री (अ) अवधान, अवेक्षा २ अल्पाहार ।
एहसान, स पु (अ) कृपा, उपकार २ कृतज्ञता।
—मंद, वि, कृतज्ञ कृतवेदिन्।

ऐ

ऐ, हिन्दीवर्णमालाया नवम स्वरवर्ण ऐकार ।
ऐं, अव्य (अनु) किं कथ, ननु २ अहो, अद्भुत, आश्चर्यम्।
ऐंग्लो, वि (अ समास के आरंभ में) आंग्ल ।
—इंडियन, स (अ) आंग्लभारतीय ।
—वर्नाक्यूलर, वि (अ) आंग्ल-(विद्यालय) स्वदेशीय।
ऐंच, स स्त्री (हिं ऐंचना) आसमा-कर्ष कर्षणम्, प्रसार, आयाम, वितति (स्त्री)।
ऐंचना, क्रि स (हिं खचना) कृष (भ्वा प अ) २ विस्तृ (प्रे), वितन् (त उ से) ३ आप-अव कृष।
ऐंचाताना, वि (हिं ऐंचना + तानना) वक्रदृष्टि, केकर, केदर, वलिर।
ऐंचातानी, सं स्त्री (पूर्व) उभयत कर्षण २ सघर्ष, स्पर्धा, अहमहमिका।
ऐंठ, स स्त्री (हिं ऐंठना) गर्व दर्प आटोप २ वक्रगति ३ द्वेष, मात्सर्यम् ४ दे 'ऐंठन'।
ऐंठन, स स्त्री (पूर्व) व्यावर्तन, आ, कुञ्चन, वक्रता २ घूर्ण, वक्रभंग ३ आकर्षणम् ४ गात्रोपघात, उद्वेष्टनम्।
ऐंठना, क्रि स (स आवेष्टनम्) व्या परि-वृत (प्रे), मुड् मुड् (चु), आकुञ्च् (भ्वा प से) २ पीडयित्वा आदा (जु आ अ), बलेन निष्कृष् (भ्वा प अ) ३ छलेन आप्। क्रि अ, आकुञ्च् (कर्म) व्यावृत् (भ्वा आ से) २ प्रति-तन् (कर्म) ३ गर्व् (भ्वा

प से) ४ प्रलप् (भ्वा प से) ५ दे 'मरना'।
पेंठू, वि (हिं पेंठना) गर्वित, दृप्त।
ऐंड, स पु (हिं पेंठ) दे 'पेंठ' (१)। २ आवर्त भ्रम । वि, निर्गुण, अकिंचित्कर।
—दार, वि (हिं +फा) सगर्व, अहमानिन् २ उज्ज्वल।
—ऐंडना, क्रि अ (हिं ऐंठना) व्यावृत् (भ्वा आ से) अगानि आनन् (त उ से) ३ गव (भ्वा प से)। क्रि स, दे 'ऐंठना क्रि स (१)।
ऐंडाना, क्रि अ (ऐंडना) अगानि आतन् (त उ से) २ सगव चल् (भ्वा प से)।
ऐंदव, वि (स) चान्द्र चान्द्रिक, चान्द्रमस, सौमिक। स पु चान्द्रमास।
ऐंद्र, वि (स) इन्द्र शक्र विषयक, पौरन्दर। स पु, ऐन्द्रि, इन्द्रपुत्र।
ऐंद्रजालिक, स पु (स) मायिन्, मायिक, कुहुकजीविन्।
ऐंद्रि, स पु (स) इन्द्रपुत्रो जयन्त २ अर्जुन ३ बालि ४ काक।
ऐंद्रिय, वि (स) ऐन्द्रियक, इन्द्रिय विषयक, ग्राह्य-सम्बन्धिन्।
ऐं, अव्य (स अयि) भो, हे, अरे।
ऐक, वि (स) एक विषयक-सम्बन्धिन्।
—पत्य, स पु (स न) एकतन्त्रशासनम् २ पूर्ण, प्रभुत्व-स्वामित्वम्।
—भाव्य, स पु (स न) १ २ स्वभाव-उद्देश्य, ऐक्यम्।
—मत्य, स पु (स न) मतैक्यम्, साम्म त्यम्।
—राज्य, स पु (स न) एकतन्त्रशासनम्।
ऐकांतिक, वि (स) सिद्ध, सम्पन्न २ सपूर्ण ३ निर्दोष ४ अनन्यसम्बद्ध।
ऐक्ट, स पु (अ) अधिनियम २ रूपक नाटक, अङ्क ३ कृति (स्त्री)।
—करना, क्रि स, अभि नी (भ्वा प अ), नट् (चु)।
ऐक्टर, स पु (अ) नर्तक, नट, शैलूष, कुशीलव, अभिनेतृ।
ऐक्ट्रेस, स स्त्री (अ) नटी, नर्तकी, अभिनेत्री।
ऐक्य, स पु (स न) एकता, एकत्वम् २ दे 'एका'।
ऐच्छिक, वि (स) वैकल्पिक (-की स्त्री), स्वेच्छातन्त्र, स्वाधीन, सविकल्प।
ऐड्वोकेट, स पु (अ) पक्षसमर्थक, परार्थ वक्तृ।
ऐतिहासिक, वि (स) इतिहास, विषयक सम्बन्धिन् २ इतिहासज्ञ पुरावृत्तवेत्तृ।
ऐतिह्य, स पु (स न) पारपर्योपदेश, प्रमाण भेद (-या)।
ऐन[1], स पु दे 'अयन'।
ऐन[2], वि (अ) न्याय्य उचित २ सपूर्ण। स स्त्री नेत्र, नयनम्।
ऐनक, स स्त्री (अ ऐन>) उपनेत्र नेत्र, नेत्रकाचौ।
ऐब, स पु (अ) दोष, विकार २ व्यसन, अवगुण।
ऐबी, वि (अ) दोषिन्, व्यसनिन् २ कुचेष्टक।
ऐयार, स पु (अ) मायाविन्, धूर्त, छलिन्।
ऐयारी, स स्त्री (अ) कपटित्व, धूर्तता, मायाविता।
ऐयाश, वि (अ) भोगिन्, विलासि २ कामुक, लम्पट।
ऐयाशी, स स्त्री (अ) विलासिता २ कामुकता।
ऐरागैरा, स पु (अ गैर+अनु ऐर) पर, अपरिचित २ तुच्छजन।
ऐरावत, स पु (स) इन्द्रगज चतुर्दन्त, सदादान, अभ्रमातङ्ग २ विद्युद्युक्तो मेघ ३ इन्द्रचाप।
ऐरावती, स स्त्री (स) ऐरावतभार्या २ विद्युत् (स्त्री) ३ पञ्चनदप्रान्त नदीविशेष (=रावी)।
ऐश, स पु (अ) विलास, सुख, भोग २ सुखसाधनम्।
—व आराम, स पु, सुखभोगौ, आमोद प्रमोदौ।
ऐश्वर्य, स पु (स न) धन, अर्थ द्रव्य, वित्त विभव, सपत्ति (स्त्री) २ अणिमादयो योगासद्धय (स्त्री बहु) ३ प्रभुत्व, आधिपत्यम्।

ऐश्वर्यशाली, वि (सं लिन्) ऐश्वर्यवत्, धनिक, धनाढ्य, सम्पन्न।
ऐसा, वि (स ईदृश) एवविध, एतत्तुल्य एतादृश। (स्त्री, ईदृशी, एतादृशी)।
—वैसा, मु, तुच्छ, साधारण।
ऐसे, क्रि वि (हिं ऐसा) इत्थ, एव, अनेन प्रकारेण।
ऐहिक, वि (स) सासारिक व्यावहारिक, लौकिक।

ओ

ओ, हिंदीवर्णमालाया दशम स्वरवर्ण, ओकार।
ओं, अव्य (स) आ, एव, एवमेव, बाढम्, अथ किं, तथा, तथास्तु, अस्तु।
ओं, स पु (सं अव्य) प्रणव, ओंकार।
ओंकार, स पु (स) ओम् इति शब्द, प्रणव।
ओंठ, सं पु (ओष्ठ) दत-रदन-दशन रद, छद पट। (ऊपर का) ऊर्ध्वौष्ठ। (नीचे का) अधर।
—चबाना मु, कुप् (दि प से)।
ओंडा, वि, ग(ग)मीर, अगाध। सं पु गर्त, गर्तम्, अवट।
ओ, अव्य (अनु) भो, अयि, हे, अरे २ च, अपि च ३ अहो, ही ४ स्मरणानुकूलादि सूचकमव्ययम्।
ओक, स पु (स ओकस् न) गृह, आलय २ शरण, आश्रय।
ओक, स स्त्री (अनु) वमनेच्छा, विवमिषा।
ओक्ण, स पु (स) मत्कुण दे 'खटमल'।
ओकना, क्रि अ (हिं ओक) उद्,वम् (भ्वा प से) २ महिषीव रेभ (भ्वा आ से)।
ओकाई, स स्त्री (हिं ओकना) वमन २ वमनेच्छा।
ओखल, स पु, दे 'ओखली'।
ओखली, स स्त्री (स उलूखलम्) काष्ठमय पाषाणमय वा उदू (लू) खलम्।
ओघ, सं पु (स) समूह, राशि २ घनत्व, सान्द्रता ३ प्रवाह, धारा।
ओछा, वि (स तुच्छ) क्षुद्र, अधम, लघुचेतस्, वा पुरुष २ गाध, अल्पजल ३ लघु, ग्रसद्य ४ अपर्याप्तत्व।
—पन, स पु, तुच्छता, क्षुद्रता, नीचता।
ओज, सं पुं (स ओजस् न) तेजस्, प्रताप, मुखकान्ति (स्त्री) २ प्रकाश ३ [illegible] (सा) ४ देहस्थरसानां सारांश।
ओजस्विता, सं स्त्री (सं) कान्ति (स्त्री)। तेजस् (न)।
ओजस्वी, वि (सं विन्) तेजस्विन्, कान्तिमत्, प्रभावशालिन्, शक्तिमत्।
ओजोन, सं पु (अ) प्रजारक, दाहनम्, वातिभेद।
ओझरी, स स्त्री (स जठरम्) कुक्षि, तुंद, पक्व २ आमाशय, अन्नाशय, जठरम्।
ओझल, सं पु (स अवरुन्धनम् >) आवरण, आच्छादनम्। वि, अदृश्य, अन्तरित।
ओझा, स पु (सं उपाध्याय >) ब्राह्मण जातिभेद २ भूतबाधाहर, कुहक।
ओट, सं स्त्री (स उटम् घास फूस >) व्यवधान, तिरस्करिणी, प्रतिसीरा, जवनिका २ सश्रय, आश्रय।
ओटना, क्रि स (स आवर्तनम् >) यत्रेण कार्पासबीजानि पृथक् कृ २ पुन पुन वद् (भ्वा प से)।
ओटनी, स स्त्री (हिं ओटना) कार्पास बीजपृथक्करणयत्रम्, •बेलनी।
ओठ, स पु, दे 'ओंठ'।
ओड, स पु, गर्दभवाहक, जातिभेद।
ओढ़ा, स पु (?) करट, वढोल २ दुर्भिक्ष, आहाराभाव।
ओड्र, स पु (स) दे 'उड़ीसा' २ ओड्र उत्कल,-वासिन्।
ओढ़ना, क्रि॰ स (सं आ+ऊढ >) परिधा (जु उ अ) प्रा-आ,-वृ (स्वा उ से)। स पु, आवरणं, प्रावार, वस्त्र, पुरम्, २ उत्तरच्छद, प्रच्छद।
ओढ़नी, सं स्त्री (हिं ओढना) नारीणां उत्तर, वेष्टन प्रावारक।
—बदलना, मु, सखीत्व भगिनीत्व वा रचा (मे)।

ओढ़ाना, क्रि स (हिं ओढ़ना) 'ओन्ना' के धातुओं के प्रे रूप।
ओत, वि (स) गुम्फित, ग्रथित।
—प्रोत, वि (स) सुमिश्रित, सुमपृक्त ससृष्ट, परस्पर सुग्रथित। स पु, तन्त्रवाणी (द्वि), तन्त्रप्रतिनत्र (द्वि)।
ओथ, स स्त्री (अ) शपथ, दिव्य समय, प्रत्यय।
—कमिशनर, स पु (अ) शपथ दिव्य आयुक्त।
ओदन, स पु (स पु न) भक्त अन्न, पक्व व्रीहि।
ओदा, वि (स उदन् >) उन्न, उत्त, आर्द्र।
ओप, स स्त्री (हिं ओपना) कान्ति द्युति दीप्ति (स्त्री), सुषमा, सौन्दर्यम्।
ओफ, अव्य (अनु) पीडाशोकाश्चर्यखेदसूचक मव्ययम्, आ, हा, अहह, अहो।
ओम्, स पु (स अव्य) प्रणव, ओंकार, ब्रह्मसंज्ञा २ ईश्वर।
ओर, स स्त्री (स अवार >) दिशा दिश (स्त्री) काष्ठा, आशा २ पक्ष, पार्श्व। स पु, अत, प्रात, तम् २ आरभ, आदि।
इस—, क्रि वि, इत, अस्या दिशि, अत्र।
उस—, क्रि वि, तत, तत्र, तस्या दिशायाम्।
चारों—, क्रि वि सर्वत समतात्, समतत, अभित, परित।
ओल, स पु (स) शूरण, दे 'जिमींकन्द'।
ओला, स पु (स उपल) इन्द्रोपल पयोघन, करका, घनकफ, वर्षशिला २ शर्करोपल। वि, उपलशीतल।
सिर मुँडाते ही ओले पड़े, मु, प्रथमे ग्रासे मक्षिकापात।
ओवरकोट, स पु (अ) स्वरचुक।
ओवरसियर, स पु (अ) अधिदर्शक।
ओषधि-धी, सं स्त्री (स) हरितक, शाक, शिग्रु २ अगद, औषध, भेषजम्, भैषज्यम्।
—ईश, स पु (स) चद्र, सोम।
ओष्ठ, स पु (स) दे 'ओंठ'।
ओष्ठ्य, वि (स) ओष्ठसम्बधिन् २ ओष्ठोच्चार्य (प, फ आदि वर्ण)।
ओस, स स्त्री (स अवश्याय) तुषार, प्रालेय हिम रात्रि—ख, जलम्, नीहार, तुहिनम्।
—पड़ जाना, मु, म्लै-म्लै सद् (भ्वा प अ) २ लज्ज् (तु आ से)।
ओसार, स पु, विस्तार, प्रसार २ दे 'ओसारा'। वि विस्तृत विस्तीर्ण।
ओसारा, सं पु, प्रघ (घा) ण, अलिंद।
ओह, अव्य (अनु) (आश्चर्य) अहो, हो। (दु ख) अहह, हा आ।
ओहदा, स पु (अ) पद, पदवी, अधिकार।
ओहदेदार, स पु (अ + फा) पदाधिकारिन्, अधिकृत।
ओहो, अव्य, (अनु) अहो, हो, हहो।

औ

औ, हिंदीवर्णमालाया एकादश स्वरवर्ण औकार।
औंधा, वि (स अधोमुख) अवाङ्मुख, अधोमुख, विपर्यस्त, विलोम।
औंधी खोपड़ी का मु, मूर्ख, जड।
औंस, स पु (अ) (सपादतोलपुन्मात्मक) तोलविशष औंसम्।
औ, अव्य (हिं और) च। दे 'और'।
औकात स स्त्री एक (अ वक्त का बहु) शक्ति (स्त्री), सामर्थ्यम्। स पु, काला, समया।
औगुन, स पु, दे 'अवगुण'।
औघड़, स पु (स अघोर) अघोरमतानुयायी पुरुष २ असमीक्ष्यकारी मनुष्य ३ अपशकुन। वि, (स अव + हिं घड़ना) विवेकहीन २ असबद्ध।
औचक, क्रि वि, दे अचानक'।
औचित्य, स पु (स न) औचित्ती, उपयुक्तता, नैय मवरवम्, सामजस्यम्।
औजार स पु (अ वज़ का बहु) यन्त्राणि, उपकरणानि, साधनानि (सव न बहु)।
औटना, क्रि अ, दे 'उबलना'।
औटाना, क्रि स, 'उबलना' के धातुओं के प्रे रूप।

औत्सुक्य, स पु (सं न) उत्सुकता, दे०।
औदरिक, वि (सं) उदर-जठर, विषयक २ अत्याहारिन्, बहुभुज्, घस्मर।
औदार्य, स पु (स न) उदारता दे।
औद्धत्य, स पु (स न) उद्धतता, अविशिष्टता, ग्राम्यता २ अनार्यता, धृष्टता।
औद्योगिक, वि (स) उद्योग-व्यवसाय, सवधिन्।
औद्वाहिक, वि (स) वैवाहिक, उद्वाह उपयम परिणय, विषयक।
औना-पौना वि (स ऊन पादोन) न्यूना विक, इषद्वहु। क्रि वि, न्यूनाधिक्तया।
औने-पौने करना, मु, हान्या लाभेन वा यथा कथाचित विक्रयणम्।
औपचारिक, वि (स) लाक्षणिक, गौण, उपचारविषयक।
औपनिवेशिक, वि (सं) आधिनिवेशिक उपनिवेश-अधिनिवेश,-सवधिन्।
—स्वराज्य, स पु (स न) आधिनिवेशिक स्वातन्त्र्यम्।
औपन्यासिक, वि (सं) उपन्यास कल्पित कथा,-सबधिन् २ उपन्यासे वर्णनीय ३ अद्भुत, विलक्षण। स पु उपन्यास,-कार लेखक।
औपपत्तिक, वि (स) तर्क-युक्ति,-साध्य।
और, अव्य (स अपर>) च अपि च, अन्यच्च, किंच, अपर च। वि, अन्य, अपर, भिन्न २ अधिक, भूयस।
—का और, मु, विपरीत, विरुद्ध, असगत।
औरत, सं स्त्री (अ) नारी, रामा २ पत्नी, भार्या।
—की जात, स स्त्री, स्त्री-नारी, जाति (स्त्री)।
औरस, स पु (स) धर्मपत्नीज पुत्र।
औरेव, स पु (स अव+रेव>) वक्र तिर्यग्, गति (स्त्री) २ वस्त्रस्य तिर्यक्कर्तनम् ३ जटिलत्व, सश्लिष्टता ३ छल, कपटम्।
—दार, वि, कितव, वचक।
औलाद, स स्त्री (अ) प्रजा, सतति प्रसूति (स्त्री), सतान, तोक, अपत्यम्।
औलिया, स पुं (अ 'वली' का बहु) सिद्धा, पुण्यजना।
औवल, वि (अ) प्रथम, आदिम २ प्रमुख, प्रधान ३ सर्वोत्तम। स पु आरभ, उपक्रम।
औषध, स पु (स न) भेषज, भैषज्य, अगद २ हरितक, शाक, ओषधि (स्त्री)।
औषधालय, स पु (स) भेषजालय, औषधशाला।
औसत, सं पु (अ) मध्यमा, मध्यप्रमाणम्। वि मध्यम, सामान्य।
औसान, स पु (फा) चेतना, चैतन्य, सज्ञा, बोध।
—खता होना, मु, मतिभ्रम, धैर्यनाश, सभ्रम।

क

क, देवनागरीवर्णमालाया प्रथमव्यजनवर्ण, ककार।
कंक, स पु (स) आमिषप्रिय, क्रूर, दीर्घ पाद, खगभेद।
कंकड़, सं पुं, दे 'ककर'।
कंकण, स पु (स पु न) कटक -क, वलय -य, आवापक -क, पारिहार्य -र्यम्।
कंकणी,-नीका, स स्त्री (स किंकणी) किंकिणी किंकि(क)णीका २ क्षुद्रघटिका।
कंकत, स पु (स पु न) ककतिका, कंघनी।
कंकती, स स्त्री (स) दे 'ककत' तथा 'कघी'।
कंकर, स पु (स ककरम) उपल-खण्ड, शर्करा अश्मगुटिका, अष्ठीला (बहु)।
कंकरीट, स स्त्री (अ कान्क्रीट) लोष्ठलेप।
कंकरीला, वि (हिं ककर) शर्करावृत, शर्करमय।
कंकाल, सं पु (सं पुं न) अस्थिपजर, करक।
कंगन, स पु, दे 'ककण'।
कंगनी, स स्त्री (स कगुनी) प्रियगु, पीत तडुल, कगु -गू (स्त्री)।
कँगला, वि (स ककाल>) दरिद्र, अकिंचन, निर्धन, दीन।
कंगाल, वि, दे 'कँगला'।
कंगाली, स स्त्री (हिं कगाल) दरिद्रता, निर्धनता, दारिद्र्यम्।

कँगूरा, स पु (फा कुँगरा) शिखर, शृङ्गम्।
कघा, स पु (स कङ्कत) कङ्कतम्।
कघी, स स्त्री म (स कङ्कती) कङ्कतिका, केशमार्जनी, प्रसाधनी।
कचन, स पु (स काचनम्) सुवर्णम् २ सपत्ति (स्त्री)।
कचनी, स स्त्री (हिं कचन) वेश्या, नर्तकी।
कचुक, स पु (स) त्वच, निचोल-प्रावारक २ अगिका, कञ्चुलिका ३ कवच-चर्म ४ वस्त्रम् ५ दे कचली।
कचुकी, स पु (स, इन्) अन्त पुरचारी वृद्धब्राह्मण सौविदल्ल सौविद २ द्वारपाल ३ सर्प ४ द कॅचला स स्त्री अगिका, कञ्चुलिका।
कँचेरा, स पु (हिं काँच) काच, कार धमक।
कज, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ केश। (स न) कमलम् २ अमृतम्।
कजई, वि (हिं कजा) धूम्र, धूमल।
कजड (र), स पु (दश या कालिंजर) जातिविशेष।
कजन, स पु कामदेव, मदन २ खगभेद।
कजा, स पु (स करज) कटकिनीवृक्ष २ तस्य बीजम्। वि, करजवर्ण धूमल २ धूम्र नयन।
कजूस, वि (स कण + हिं चूसना) कृपण कदर्य अमुक्तहस्त किंपचान।
कजूसी, स स्त्री (हिं कजूस) कार्पण्य, कदर्यता, अमुक्तहस्तत्वम्।
कटक, स पु (स पु न) शल्यम् २ विघ्न ३ विघ्नकर ४ सूच्यग्रम् ५ शत्रु ६ रोमाञ्च ७ कवच-चर्म।
—अशन, स पु (स) उष्ट्र, क्रमेलक।
कटकित, वि (स) सकटक कण्टकपूर्ण २ सविघ्न ३ रोमाञ्चित।
कँटिया, स स्त्री (हिं काँटी) कील, शङ्कु २ प्रग्रही, धरणी ३ भूषणभेद।
कँटीला, वि (हिं काँटा) कटकित २ सविघ्न।
कठ, स पु (स) गल गर, निगरण २ स्वर ३ शुकादीनां कठरेखा ४ दे 'कठा'।
—अग्र, वि (स) दे 'कठस्थ'।
—गत, वि (स) निर्गमनोन्मुख (प्राण)।
—माला, स स्त्री (सं) गण्डमाला, कठरोग भेद।
कठस्थ, वि (सं) कठाग्र, कठगत, मुखाग्र, मुखस्थ।
कंठा, स पु (स कठ >) कठी, सुवर्णगुटिका निर्मित कठालकार २ शुकादीनां गलरेखा।
कठी, स स्त्री (स) कठ, गल २ अश्वकठ रश्मि (पु) ३ लघुगुटिका-कठी। ४ तुलसी बीजमाला।
कठ्य, वि (स) कठोच्चार्य २ कठजात ३ कठोपकारक।
कडा, स पु (स स्कदन >) द 'उपला'।
कडी, स स्त्री (हिं कडा) लघुगोमयम् २ मलगुटिका।
कडील, स स्त्री (अ कदील) कर्गलादि निर्मितो दीपकोष।
कडु, कडू, स स्त्री (स) कडूति (स्त्री), दे 'खुजली'।
कत, स पु (सं कान्त) प्रिय, वल्लभ, रमण २ पति, धव ३ ईश्वर।
कथा, स स्त्री (स) भिक्षुकर्पट, दे 'गुदडी'।
कथी, स पु (स कथा >) भिक्षुक, कथा धारिन्।
कंद[1], स पु (स पु न) गोलमूल, खाद्य मूलम् २ लशुनम् ३ मेघ ४ शूरण।
कंद[2], स पु (फा) मिताखड खडमोदक।
कदर, स पु (स पु न) गह्वर, गुहा, दरी।
कदरा, स स्त्री (स) दे 'कदर'।
कदर्प, स पु (स) मदन, कामदेव।
कदा, वि (फा) उत्कीर्ण तष्ट।
कदुक, स पु (स) गेंदु, गेण्डु २ उपधान, गण्डु ३ पूगफलम्।
कधा, स पु (स स्कन्ध) अंस, भुजमूल, दोःशिखर, कन्धरम्।
कधार, स पु (स गाधार) नगर प्रदेश, विशेष।
कप, स पु (स) दे 'कँपकँपी'।
कँपकँपी, स स्त्री (हिं काँपना) प्र, कप, वेपन, वेपथु, स्पन्न, कायकप।
कपनी, स स्त्री (अ) समवाय, समव्यवसायि सघ २ सैन्यगुल्म ३ गण ४ साहचर्य्यम्।

कपाउंडर, स पु (अ)*समिश्रक, योगविद्, वैद्यसहाय ।
कपाउडरी, स स्त्री, समिश्रक, व्यवसाय-कर्मन् (न)।
कँपाना क्रि स (हिं कापना) कप्, वेप, वेल स्पद्, एज के प्र रूप।
कपायमान, वि (स कपमान) एजमान, कपन क्म स्पदमान।
कपास, स पु (अ) दिग्दर्शकयत्रम्।
कंपित, वि (स) कपमान, चचल २ भीत, त्रस्त।
कपू, स पु (अ कैंप) शिविर, स्कन्धावार २ सेना ३ दे 'सेमा ।
कमबख्त, वि (फा कमबख्त) भाग्यहीन, दुर्दैव।
कबल, स पु (स) रङ्कक, आविक ऊर्णायु, औरभ्र, नीशार ।
कबु, स पु (स) दे शख'।
कस, स पु (स) कृष्णमातुल । (स न) कांस्य, ताम्रार्द्धम् २ पानभाजन, कंशम्।
—ताल, स पु दे 'झाँझ'।
क, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ सूर्य ३ अग्नि ४ विष्णु ५ यम ६ वायु ७ मदन ।
कई, वि (स कति) कतिपय एकाधिक, अनेक बहु, प्रभूत।
—बार, क्रि वि बहुधा, पुन पुन, मुहुर्मुहु, भूयोभूय, बहुवारम्।
ककड़ी-री, स स्त्री (स कर्कटी) लोमशा स्थूला तोयफला गजदतफला चिर्भटी मूत्रला।
ककहरा, स पु [क+क—ह+रा (प्रत्य)] प्राथमिकज्ञानम् २ वर्णमाला ३ पूर्वकार्य समूह ।
ककुद, स पु (स ककुद् स्त्री) ककुद, असकूट गडु स्थगु २ राजचिह्नम् (छत्रादि)।
ककुभ, स पु (स) अर्जुनवृक्ष २ दे 'दिशा'।
कक्ष, स पु (स) बाहुमूलम्, दे बगल २ दे 'लाँग' ३ कच्छ दे कछार' ४ तृणम् ५ शुष्क-, वनम् ६ भूमि (स्त्री) ७ भित्ति (स्त्री) ८ कोष्ठ ९ दोष १० दे कछराली' ११ श्रेणी कक्षा १२ दे 'आँचल ।
कक्षा, स स्त्री (स) परिधि, परिवेश प २ ग्रहमार्ग ३ साम्यम् ४ वर्ग, श्रेणी ५ दे 'ड्योढ़ी' ६ बाहुमूलम् ७ दे 'कछराली' ८ गृह, भित्ति (स्त्री)-पक्ष ९ दे 'लाँग' १० हस्तिरज्जु (स्त्री)।
कगर, स पु [स क (=जल)+अग्र>] उच्छ्रित,-तीर तटम् २ सीमा ३ प्राकार शृगम्।
कगार, स पु (हिं कगर) उन्नताग्रम् २ उच्छिन्न,-कूल-तीरम्।
कच, स पु (स) केश, कुतल, कचा, शिरसिज, शिरोरुहा (सव बहु) २ समूह ।
कचकच, स स्त्री (अनु) प्रलाप २ वाग्युद्धम्।
कचनार, स पु (स काचनाल) कोविदार, पाकारि, स्वल्पकेसर ।
कचपच, स पु (अनु) संबाध, सम्मर्द २ दे 'कचकच'।
कचपचिया, कचपची, स स्त्री (हिं कचपच) कृत्तिकानक्षत्रम् २ मस्तकतारा भूषणभेद ।
कचर कचर, स स्त्री (अनु) आमफलचर्वण ध्वनि २ दे० 'कचकच'।
कचरा, स पु (हिं कच्चा) अपक्व खर्बूज-दशागुलम् २ अपक्वचित्रवल्ली ३ चर्भट । दे 'कूड़ाकरकट'।
कचहरी, स स्त्री (हिं कचकच) धर्म-न्याय-सभा व्यवहारामडप, न्यायालय, धर्म-, अधिकरणम् २ राजसभा।
कचाई, स स्त्री (हिं कचा) आमता, अपक्वता, २ पाटव-दाक्ष्य अनुभव हीनता।
कचायँध, स स्त्री (हिं कच्चा+गध) आम-अपक,-गध ।
कचालू, स पु (हिं कच्चा+आलू) आलुकी, कचु (स्त्री) कची, तीक्ष्णकद, गजकर्ण ।
कचोची, स स्त्री (अनु कच) हनु (पु स्त्री), हनू (स्त्री)।
कचूमर, स पु (हिं कुचलना) निष्पिष्ट पदार्थ, चूर्णितवस्तु २ मृदुसार, मज्जा।
कचूर, स पु (स कर्चूर) दुर्लभ, गधमूलक, गधसार, जटाल ।
कचौरी, स स्त्री (हिं कचरी) माषगर्भा, सुपिष्टिका, कर्चोरिका।
कच्चा, वि (स कषण) अपक्व, हरितनीरस (फलादि) २ अश्रृत, अश्राण, असिद्ध (भोज नादि) ३ अपरिणत, अपूर्णकाल, अप्राप्तकाल,

अपरिपुष्ट (आयु आदि) ४ विकारिन्, अस्थिर ५ निस्सार, अप्रामाणिक (बात इ०) ५ प्रच लितमानात् न्यून ६ संस्कार-मशोधन,-अपे क्षिन् (बही इ) ७ नियम विधि,-विरुद्ध (दस्तावेज इ) ८, पक्वनिर्मित (घर आदि) ९ अभ्युत्पन्न (व्यक्ति) १० कुलिखित, अमस्कृत (अक्षर इ)।

—चिट्ठा, सं पु सशोधनापेक्षिगण्ना २ सत्य-यथार्थ, वृत्तान्त ३ गुप्त गोप्य,-वार्ता ४ न्यूं पत्र ५ पापसकल्पा।

—पक्का, वि, अर्द्ध सामि,-पक्व-शून-श्राण।

—बच्चा, स पु, शिशव (बहु) २ गर्भ।

—माल, स पुं, सामग्री।

कच्ची, वि स्त्री (हिं कच्चा) 'कच्चा' के शब्दों के स्त्रीलिंग के रूप, जैसे-अपक्वा, अश्वना इ।

—ईंट, सं स्त्री, अपक्व-, इष्टका।

—उमर, स स्त्री, अवयस्कता, अप्राप्तव्यवहारता २ बाल्यम् ३ शैशवम्।

—रसोई, सं स्त्री, जल्पक्वमन्नम्।

—सड़क, सं स्त्री, मृण्मयो मार्ग।

—सिलाई, सं स्त्री, स्थूलस्यूति (स्त्री)।

कच्छ, सं पु (स पु न) अनूप-प, जल प्रायदेश २ नद्या सरसो वा प्रांतभाग ३ प्रदेशविशेष।

कच्छप, सं पु (सं) कूर्म, दे 'कछुआ' २ अवतारविशेष।

कच्छा, स पु (सं कच्छ >) नौकाभेद २ दे 'कछनी'।

कच्छी¹, वि (स कच्छ>) कच्छीय, कच्छ,-विषयक-सम्बन्धिन। सं पु., कच्छ वासिन् २ कच्छाश्व।

कच्छी², सं स्त्री, दे 'कछनी'।

कच्छू, सं पु, दे 'कछुआ'।

कछनी, सं स्त्री (हिं काछना) जानूपरि भटिवसनम्।

कछरा(वा)री, सं स्त्री (स कक्ष >) कक्षा।

कछार, सं पुं (सं कच्छ) दे 'कच्छ' (१,२)।

कछुआ, स पु (सं कच्छप) कमठ, कूर्म, 'चतुर्गति' (पु), पचगूढ, स्तूपपृष्ठ। (स्त्री कमठी, दुली, कूर्मी दुली)।

कछौटा, सं पु (हिं काछ) रघुशाटिका २ दे 'कछनी'।

कजरारा, वि (हिं कजरा) सांजन, अजन युत, सकज्जल २ काल, श्याम।

कजली, स स्त्री (सं कज्जल>) कालिमन्, कालुष्य, कल्क २ पर्वविशेष ३ कृष्णाक्षी गौ (स्त्री) ४ वर्षासु गेयो गीतभेद।

कजा, स स्त्री (अ) मृत्यु, निधनम्।

कजाक, स पु (तु कज्जाक) दस्यु, लुण्टाक।

कजाकी, स स्त्री (तु कज्जाकी) लुण्ठन, अपहरणम्।

कजावा, पु (फा) उष्ट्रपर्याणम्।

कजिया, स पु (अ) कलह, विग्रह।

कजी, स स्त्री (फा) वक्रता २ दोष।

कज्जल, स पु (स न) अजन, नेत्ररजन, लोचक २ यामुन, सौवीर, दे 'सुरमा' ३ कालिमन्।

कज्जाक, स पु (तु) तुरुष्कजातिभेद। २ दस्यु, लुण्ठक।

कट, स पु (स) गजगड २ कपोल ३ देव स्थूल,-नाल, घासभेद ४ देवनालनिर्मित-, कट, कलिंज, आस्तरणम् ५ उशीरकाशादि घासा ६ शव ७ शवयान, खाट टी ८ श्मशान ९ अक्षगतिभेद १० बाहुफलक कम् ११ समय, अवसर १२ दे 'टट्टी'। वि बहु, भूयस् २ उत्कट, उग्र।

कटक, सं पु (सं पु न) शिवि (बि) र, निवेश, सैन्यनिवास २ सेना ३ ककण णम् ४ पर्वतमध्यभाग ५ पादकटक ६ चक्रम् ७ नगरविशेष ८ समूह।

कटकट, सं स्त्री (अनु) दंतघर्षणशब्द, कट कटायितम् २ कलह।

कटकटाना, क्रि स (हिं कटकट) दंतान् घृष् (भ्वा प से)।

कटना, क्रि अ (सं कर्तन) अवछिद्-कृत् लू प्रश्च (कर्म) २ व्यय या (अ प अ) ३ क्षम्-मृष (कर्म) ४ लज्ज् (तु आ से) ह्री (जु प अ) ५ उपरुध् (कर्म) ६ युद्धे हन् (कर्म) ७ ईर्ष्य् (भ्वा प से) ८ मुह् (दि प वे) ९ घृष (कर्म)।

कटनौस, सं पु (देश) दे 'नीलकंठ' (पक्षी)।

कटनी, स स्त्री (हिं कटना) विक्रय २ शस्यकर्तनम्।

कटपीस, सं पु (अ) कृत्तपट ।

कटरा, सं पु (हिं कटहरा) चतुष्कोण रथुहट्ट २ महिष्या वत्स ।

कटवाना, क्रि प्रे, 'काटना' के धातुओं के प्रे रूप ।

कटसरैया, स स्त्री (स कटसारिका) सैरेय, सैरेयक, श्वेतपुष्प । (पीली) कुरटक, पीतपुष्पक । (नीली) नीलपुष्पी, आर्त्तगल । (लाल) कुरबक ।

कटहरा, स पु (हिं काठ+घर) काष्ठगृहम् । २ बृहत्पञ्जरम् ।

कटहल, स पु [स कटक (कि) फल] (वृक्ष) पनस फणस, चपालु । २ (फल) पनस, पणस ।

कटाई, स स्त्री (हिं काटना) कर्तन, छेदन, लवनम् २ शस्य, लवन समह ३ लवन छेदन, भृति (स्त्री) ।

कटाकट, स स्त्री (हिं अनु) कलह २ कट कटायितम् ।

कटाकटी, स स्त्री (हिं काटना) हत्या, वध युद्धम् २ वैरम् ३ कटकटशब्द ।

कटाक्ष, स पु (सं) नयनविलास, हावपूर्णा दृष्टि (स्त्री) २ आक्षेप, दोषप्रकाशनम् ।

कटार-री, सं स्त्री (स कट्टार) असिपुत्रिका, कृपाणिका ।

कटारा, स पु (स कट्टार) असि, कृपाण २ दे ऊँटकटारा ।

कटाव, सं पु (हिं काटना) कर्तन छेदनम् २ नदीतट ३ कर्तित्वा निर्मित पुष्पपत्रम् ।

कटि, स स्त्री (स) कटी ।

—बंध, स पु (स) भूवलय, भूमे पंचभागेषु अन्यतम २ दे कमरबंद' ।

—बद्ध वि (स) सज्ज, सन्नद्ध उद्यत, बद्धपरिकर, सिद्ध ।

कटियाना, क्रि अ (हिं काँटा) कण्टकित पुलकित रोमाचित (वि)+भू ।

कटीला, वि (हिं काटना) निशित, तीक्ष्णाग्र २ मोहक, प्रभावशालिन् ।

कटु, वि (स) कटुक २ तिक्त, तीक्ष्ण ३ अप्रिय, अनिष्ट ।

कटुता, स स्त्री (स) कटुत्व, कटुकता, काटवम् २ तिक्तता ३ अप्रियत्वम् ।

कटोरा, स पु (सं स्त्री) कटोरम् ।

कटोरी, स स्त्री (हिं कटोरा) कटोरिका, कचोल ।

कटौती, सं स्त्री (हिं कटना) उद्धार, उद्धृतभाग ।

कट्टर, वि (हिं काटना) धर्मान्ध, मतान्ध, अन्धविश्वासिन् ।

कट्टा, वि (हिं काठ) वज्रदेह, दृढाग, मांसल, वीर्यवत् । स पु, हनु ।

कठघरा, सं पु (स काष्ठगृहम्) काष्ठावेष्टन, काष्ठशलाकावृति (स्त्री) शकुनालय २ बृहत्काष्ठपंजरम् ।

कठपुतली, स स्त्री (स काष्ठपुत्तलिका) पुत्रिका, पुत्तली, पाञ्चालिका २ मूढ़गो बाला ।

कठफोड़वा, सं पु (हिं काठ+फोड़ना) काष्ठकूट, दार्वाघाट, शतच्छद, शतपत्रक ।

कठबाप, स पु (हिं काठ+बाप) मातुर्द्वितीय पति ।

कठला, स पु (स कठ >) कठभूषा ।

कठिका, स स्त्री (स) दे 'खड़िया' ।

कठिन, वि (स) दुष्कर, दुस्साध्य, कष्टसाध्य, गहन २ घन, कीकस, कक्खट ३ दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, दुरवगम ।

कठिनता, स स्त्री (स) दुष्करता, दुस्साध्यता २ घनता, कीकसता ३ दुर्बोधता, दुर्ज्ञेयत्वम् ।

कठिनाई, स स्त्री (स कठिन>) दे 'कठिनता' ।

कठोर, वि (सं) निर्दय, क्रूर, नृशस, निर्घृण, परुष २ घन, कीकस ३ कर्कर, कक्खट ।

कठोरता, स स्त्री, (स) निर्दयता, क्रूरता, पारुष्य, निर्घृणता, नृशसत्वम् २ घनता, कीकसता ।

कठौता, स पु (स काष्ठरव >) बृहत्काष्ठभाजन, बृहद्दारुपात्रम् ।

कठौती, स स्त्री (हिं कठौता) लघुदारुभाजन, दारुभाजनकम् ।

कड़क, स स्त्री (अनु) महा,-शब्द -रव -निनाद २ मेघगर्जनम्, घनध्वनि, गर्जितम् ३ वज्र,-निर्घोष निर्घातस्वन ४ विराव, ध्वनि ५ उद्वेगजनको निनाद' ।

कड़कड़, स पुं (अनु) कड़कड़शब्द, कड़कडायित २ भग स्फुटन,-शब्द ।

कड़कड़ाना, क्रि अ (हिं कड़कड़) सशब्द भञ् भिद्-द् (कर्म), स्फुट् (तु प से) २ उच्चैः ध्वन् (भ्वा प से) ३ क्रुध् (प्र), चूर्ण् (चु)।
कड़कड़ाहट, स स्त्री (हिं कड़कड़) कड़कड़ात्कार, गर्जन, दे 'कड़क'।
कड़कना, क्रि अ (हिं कड़क) कड़कड़शब्द कृ गज् (भ्वा प से) २ महारवेण भञ् (कर्म) ३ स्फुट (तु प से) ४ उच्चैः वद् (भ्वा प से)।
कड़का, स पु (हिं कड़क) विजय-युद्ध, गीतम् २ सौदामिनी ३ गर्जनम्।
कड़खा, स पु (हि कड़क) युद्धगीतम्।
कड़खैत, स पु (हि कड़खा) युद्धगीत गायक, चारण, वैतालिक ।
कड़बड़ा, वि, (स कर्बुर) दे 'चितकबरा'। स पु, कर्बुरकूर्च ।
कड़वा, वि, दे 'कटु'।
कड़ा, वि (स कड्ड >) घन, सान्द्र, कक्खट, कीकस, दृढ़, कर्कर, अनम्य २ निष्ठुर, निर्दय ३ दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, कठिन।
कड़ा², स पु (सं कटक) कटक, कङ्कण -ण, २ केयूर-र, अंगद-दम्।
कड़ाई, स स्त्री (हिं कड़ा) दृढ़ता, कीकसता २ निर्दयता ३ ढिष्ठता।
कड़ाका, स पु (अनु कड़ाक) भग-भञ्जन-भेदन-त्रोटन,-शब्द-नाद २ अनशन, अनाहार।
कड़ाके का, मु, भीषण, घोर, तीव्र, चट।
कड़ाहा, स पु (स कटाह) तैलादिपाकपात्रम्।
कड़ाही, स स्त्री. (हिं कड़ाह) कटाही।
कड़ी, स स्त्री (हिं कड़ा) शृङ्खला,-सन्धि-ग्रन्थि २ गीतचरणम् ३ दीर्घ-स्थूणा -काष्ठ-दारु (न)। वि स्त्री, कठिना, कीकसा।
कड़ुआ, वि, दे 'कटु'।
—तैल, स पु, सर्षपतैलम्।
कढ़ाई, स स्त्री (हिं, काढ़ना) सूचीशिल्पम् २ सूचीशिल्पस्य भृति (स्त्री) ३ दे 'कड़ाही।
कढ़ी, सं स्त्री (हिं काढ़ना) क्वथिता, चणकचूर्णनिर्मितव्यञ्जनभेद।

कण, स पु (सं) लव, लेश, अणु।
कणाद, स पु (स) वैशेषिकदर्शनकार ऋषि।
कतरन, स स्त्री (हिं कतरना) खण्डानि, कृत्तखण्डानि (दोनों बहु)।
कतरना, क्रि स (स कर्तनम्) कर्तरिकया कृत् (तु प से)।
कतरनी, स स्त्री (हिं कतरना) कर्तनी, कर्त्रिका, कर्तरिका, कर्तरी।
कतर ब्योंत, स स्त्री (हिं कतरना + ब्योंत) अवच्छेद, अल्पीकरणम् २ परिवर्तन, विनिमय ३ चिंता, विमर्श ४ अपहरण, मोष ५ युक्ति (स्त्री), उपाय।
कतरा¹, स पु (हिं कतरना) खण्ड, अंश, शकल।
कतरा², स पु (अ) कण, बिंदु, लव, द्रप्स।
कतराई, स स्त्री (हिं कतरना) कर्तन,-भृत्या-भृति (स्त्री) २ कर्तन,-कार्य-कर्मन् (न)।
कतराना, क्रि प्रे, 'कतरना' के धातुओं के प्रे रूप २ निभृत-सलज्ज-सभय अपया (अ प अ), नैपुण्येन परिहृ (भ्वा उ अ)।
कतल, स पु (अ क़त्ल) हत्या, वध।
कतला, स पु (अ क़त्ल >) कृत्तम्, दे 'फाँक'।
कतलाम, सं पु (अ क़त्ले आम) व्यापक,-नरसंहार -लोकहत्या।
कतवार, सं पु, दे 'कूड़ा'।
कताई, स स्त्री (हिं कातना) कर्तनम् २ कर्तनभृति (स्त्री)।
कताना, क्रि प्रे, 'कातना' के धातुओं के प्रे रूप।
कतार, स स्त्री (अ) पङ्क्ति-श्रेणि (स्त्री) २ निकर, समूह।
कतिपय, वि (स) दे 'कुछ'।
कतीरा, स पु (देश) गुग्गुलवृक्षनिर्यास।
कतौनी, स स्त्री (हिं कातना) तान्तव, सूत्रतननम् २ तान्तव-सूत्रतनन,-भृति (स्त्री)-भृत्या। ३ कालक्षेप, विलम्बनम्, दीर्घीकरणम्।
कत्तल, स पु (हिं कतरना) इष्टकाखण्ड, पाषाणशकल।

कत्थक, स पु (स कथक) सगीतव्यवसायिनी जाति (स्त्री)।
कत्था, स पु (स क्वाथ >) खदिर, खदिर सार रग, रगद ।
कथक, स पु (स) कथावाचक कथोप जीविन् ।
कथन, स पुं (स न) वचन, उक्ति (स्त्री), निवेदन, निर्देश, उपन्यास ।
कथनीय, वि (स) वचनीय वर्णनीय, वक्तव्य उच्चार्य, रूपनीय ।
कथा, स स्त्री (स) उप आख्यान, आख्या यिका आख्यानकम् २ वृत्तान्त, उदन्त ३ धर्मोपदेश ।
—वार्ता, स स्त्री (स) धर्मोपदेश, व्याख्यान।
—वस्तु, स स्त्री (स न) कथासार, आख्या नस्य रूपरेखा।
कथानक, स पुं (स न) कथा २ उपाख्या नम्, लघुकथा।
कथित, वि (स) उक्त भाषित भणित उदीरित।
कथोपकथन, स पु (स न) संभाषण, संवाद, संलाप, वार्तालाप ।
कंदब, स पु (स) भृङ्गवल्लभ, विपद्म, व्रण हारक, नीप, मदिरागध २ समूह ।
कद, स पु (अ) आकार, प्रांशुता, देहोच्चता।
कदन, स पु (स न) वध, हत्या २ छुरिका।
कदन्न, स पु (स न) कुत्सितान्नम्।
कदम, स पुं (अ) पाद पद, चरण ण, क्रमण, अंघ्रि (पु) २ अल्पान्तर पदम्।
कदर, स स्त्री (अ) आदर, सम्मान २ मात्रा, परिमाणम्।
—दान, वि (अ + फा) गुणग्राहक।
कदर्य, वि (स) कृपण मितपच ।
कदली, स स्त्री (स) दे 'केला'।
कदा, अव्य (स) कस्मिन् काले।
कदाचित्, अव्य (स) स्यात्, सम्भवेत् २ कदापि।
कदापि, अव्य (स) कदाचित् २ एकदा, पुरा, प्राक्।
कद्दू, स पुं (फा कद्दू) लावु, अलावु (पु स्त्री), लाबुका तुम्ब, तुम्बी, तुम्बिका, पिंड फला, फला।
—कश, स पु, लावुकष ।
—दाना, स पु, उदरकृमिभेद ।
कन, स पु (स कण) अणु, क्षुद्रांश, कणिका, कणी, लेश २ अन्नकणिका ३ जुष्ट, उच्छिष्टम् ५ भिक्षान्नम् ५ अन्नकणखण्ड ।
कनक[1], स पु (स न) स्वर्ण, सुवर्ण काचन, हाटकम् २ दे 'धतूरा' ३ दे टेसू ।
कनक[2], स स्त्री (स कणिक >) गोधूम, प्रसृत सुमन, म्लेच्छभोज्य २ गोधूमचूर्णम्।
कनकटा, वि (स कर्ण+ हिं कटना) छिन्न कर्ण २ कर्णच्छेदक।
कनकना, वि (स कणकण>) भिदुर, भगुर २ क्रोधन कोपन।
कनकौवा, स पु, दे 'पतग'।
कनखजूरा, स पु (स कर्णखर्जू >) कर्णकीटी, शतपदी, कर्णजलूका चित्रागी ।
कनखी, स्त्री (हिं कोना+आँख) कटाक्ष अपागदर्शन, साचिवीक्षणम् २ नेत्रसकेत ।
कनछेदन, स पु (स कर्णच्छेदनम्) कर्णवेध संस्कार ।
कनटोप, स पु (स कर्ण + हि टोपी) कर्ण शिरस्त्राणम्।
कनपटी, स स्त्री (स कर्णपट्ट >) गड, गंड, स्थल-ली।
कनपेड़ा, स पु (स कर्ण + हिं पेड़ा) पाषाणगर्दभ ।
कनफटा, स पु (स कर्ण + हिं फटना) गोरक्षनाथानुयायी साधु २ विद्धकर्ण ।
कनफुँका, वि (स कर्ण + हिं फूकना) दीक्षादायक २ दीक्षित। स पु, आचार्य २ शिष्य ।
कनमनाना, क्रि अ (अनु) निद्रायामगानि क्षिप (तु प अ)-प्रास्त (दि प से) २ शनै विरोध प्रकटयति (ना धा)।
कनरसिया, स पु (स कर्णरसिक) सगीत-अनुरागिन्-शुश्रुषु ।
कनवाँसा, स पु, दौहित्रपुत्र, पुत्रीपौत्र ।
कनवोकेशन, स स्त्री (अ) दीक्षान्तमहोत्सव, उपाधिवितरणोत्सव २ सभा।
कनस्तर, स पु (अ कैनिस्टर) धातुमय समुद्गक ।

कनाई, सं स्त्री (हिं कना) तनु-सूक्ष्म, शाखा विटप ।
कनागत, सं पु (सं कन्यागत >) पितृपक्ष, आश्विनमासस्य कृष्णपक्ष २ श्राद्धम् ।
कनात, स स्त्री (तु) पटमण्डपभित्ति (स्त्री)।
कनियारी, स स्त्री (स कर्णिकार) परिव्याध, द्रुमोत्पल २ कर्णिकारपुष्पम् ।
कनिष्ट, वि (स) अल्पिष्ठ, लघिष्ठ, यविष्ठ २ निकृष्ट, तुच्छ, क्षुद्र ।
कनिष्ठा, स स्त्री (स) कनिष्ठिका, कनीनी, दुर्बलांगुलि (स्त्री) २ यविष्ठा पत्नी।
कनी, स स्त्री (सं कणी) हीरकतण्डुलादीना सूक्ष्मखण्ड -डम् २ विंदु, द्रप्स ।
कनीनिका, सं स्त्री (सं) तारा, तारका २ कनिष्ठा ।
कनेठी, स स्त्री (हिं कान + ऐंठना) कर्ण,-कर्षण मोटनम् ।
कनेर, स पु (सं कणेर) करवीर, अश्व मारक,, वीर, कुंद, प्रचण्ड ।
कनौज, स पु (स कान्यकुब्जम्) कन्याकुब्ज, गाधिपुर, कौशम् ।
कनौड़ा, वि (हिं काना) काण, एकाक्ष २ हीनांग ३ अपमानित ४ क्षुद्र ५ उपकृत।
कन्ना, सं पु (स कर्ण >) उड्डीनक्रीडनकस्य वेधकसूत्रम् २ अग्र, कोटि (स्त्री)।
कन्नी, स स्त्री (हिं कन्ना) उड्डीनक्रीडनक पार्श्वाग्रे (द्वि व) २ अग्र, कोटि (स्त्री) ३ शाटिकादीनामचल ।
—काटना, मु, दर्शन परिहृ (भ्वा प अ)।
कन्या, स स्त्री (सं) कन्यका, कुमारी, बाला, बालिका, दारिका २ दुहितृ, पुत्री, सुता, तनया, तनुजा, आत्मजा ३ राशिविशेष ।
—रासी, वि (सं-राशि >) कन्याराशिज २ निर्बल ३ दुष्ट।
कन्याट, वि (स) कन्या,-बाधक-पीडक-सन्तापक ।
कन्सरवेटिव, वि (अ) प्राचीनतासमर्थक, नवीनता विरोधिन् ।
कन्हाई, कन्हैया, सं पु (स कृष्ण) श्रीकृष्ण २ सुंदरबालक ३ प्रियपुरुष ।
कप, सं पु (स) वरुण २ दैत्यजातिप्रकार ।
कप, सं पु (अ) चषक -क, शराव २ पुरस्कारचषक -कम् ।
कपट, सं पु (स न) छल, कैतव, वंचना, प्रतारणा, छद्मन् (न), दम्भ, पाखंड, व्याज, शाठ्यम् ।
कपटी, वि (स -टिन्) छलिन्, पाखंडिन्, शठ, कितव, दम्भिन्, प्रतारक, वंचक ।
कपड़छन, सं पु (हिं कपड़ा + छानना) पटपवनम् २ वसनपूतम् ।
कपड़ा, सं पु (स कर्पट) वसन, वस्त्र, अंबर, अंशुक, पट, वासस् (न) २ परिधान, वेश,-ष, नेपथ्यम् ।
—पहिनना, क्रि स, वस्त्राणि परिधा (जु उ अ) -धृ (चु)-वस (अ आ से)।
—ऊनी, रोमज-ऊर्णामय,-वस्त्रम् ।
—पुराना, कर्पट, चीर, जीर्णवस्त्रम् ।
—महीन बढ़िया, दुकूलम् ।
—रेशमी, कौशेय, कौषावर, क्षौम, कौशम् ।
—सूती, तूलांबर, फाल, कार्पास, बादरम् ।
कपर्द, सं पु (सं) शिवजटाजूट २ वराटक ।
कपर्दिका, स स्त्री (स) दे 'कौड़ी'।
कपाट, सं पु (स पु न) दे 'किवाड़'।
कपाल, सं पु (सं पु न) दे 'खोपड़ी'।
—क्रिया, स स्त्री (स) ज्वलच्छवस्य वेणुना कपालभेदनम् ।
कपाली, स पु (सं. कपालिन्) भैरव, उमापति ।
कपास, स स्त्री (सं कार्पास) तूल ल, भर, पिचु, पिचुल । (पौदा) कार्पासवृक्ष, कार्पासी, सूत्रपुष्पा, बदरी-रा पटद, छादन ।
कपि, सं पु (स) वानर, मर्कट २ गज ३ सूर्य ।
—ध्वज, सं पु (सं) अर्जुन ।
कपिल, स पु (स) मुनिविशेष २ अग्नि । वि, कपिश, पिंगल ३ श्वेत ।
कपिला, सं स्त्री (सं,) शुक्ला विनेया,-गौ(स्त्री)
कपिश, वि (स) पाण्डुवर्ण, पिशंग, पिंगल, कपिल ।
कपीश, सं पु (स) सुग्रीव (२) हनुमत् ।
कपूत, स पु (स कुपुत्र) कुतनय, कुसुनु ।
कपूर, स पु (स कर्पूर-रम्) घनसार, सिताभ, हिमवालुका, चंद्र, सोम, सिताभ्र ।

कपूरी, वि (सं कर्पूर) घनसार-कर्पूर,-वर्ण-रग।
कपोत, सं पु (सं) दे 'कबूतर'।
कपोल, स पु (सं) दे 'गाल'।
—कल्पना, स स्त्री (सं) मिथ्या कथा, कल्पित वृत्तान्त ।
कप्तान, सं पु (अ कैप्टेन) दलनायक, अग्रग २ सैन्याधिपति, सेनानी ३ नौकाधिपति, पोताध्यक्ष ।
कफ[1], सं पु (स) श्लेष्मन् (पु), खटक, बलास २ शि (सिं) घाण, सिंहाण-न। ३ हृदयकंठादिस्थो धातुभेद (वैद्यक)।
कफ[2], सं पु (फा) फेन, डिंडीर २ लाला, मुखस्राव, द्राविका।
कफ[3], स स्त्री (अ) कर-हस्त,-तल तल्म्।
कफ[4], स पु (अ) पिप्पलाग्र, अग्र भाग ।
कफन, स पु (अ) शववसन, मृतकवस्त्र, प्रेतपरिधानम् २ शव,-भाजन-पेटक ।
कफनी, स स्त्री (अ कफन >) शवग्रीवा वस्त्रम् २ साधूना ग्रीवावसनम्।
कबंध, स पु (सं) अमुण्ड शरीर, रुण्ड -ड, छिन्नमस्तको देह २ राहु ३ मेघ ४ राक्षसविशेष ।
कब, क्रि, वि (सं कदा) कस्मिन् काल।
—तक, क्रि वि, कियत्,-काल-चिर, कदा पर्यन्तम्।
—से, क्रि वि कदारभ्य, कदाप्रभृति।
कबड्डी, स स्त्री (देश) बालक्रीडाभेद ।
कबर, स स्त्री (अ कब्र) प्रेतावट, शवगर्त, समाधि ।
कबर (रि) स्तान, स पु (फा कब्रिस्तान) प्रेतभूमि (स्त्री), समाधिक्षत्रम्।
कबरा, वि (स कर्बुर) चित्र, कल्माष, शार।
कबाड़, स पु (स कर्पट >) अवस्कर, तुच्छ वस्तुसमूह २ व्यर्थकार्यम्।
कबाड़िया, कबाड़ी, स पु (हिं कबाड़) अवस्करविक्रयिन्, व्यर्थवस्तुवणिज् (पु)।
कबाब, स पु (अ) भृष्टमास, शूल्कि, शूल्य मांसम्।
कबाबी, वि (अ कबाब >) मांसभक्षक २ मांसविक्रेतृ।
कबाहत, स स्त्री (अ) अशुभ, कष्ट, विघ्न, अनिष्टम्।
कबित-त्त, सं पु (सं कविता >) हिन्दी काव्यस्य छन्दोभेद २ काव्य, कविता।
कबीला, सं पु (अ) पत्नी २ परिवार ३ वंश, गोत्रम्।
कबूतर, स पु (फा) कपोत, कलरव, पारावत, छेद्य, रक्तलोचन ।
—खाना, स पु, कपोतबिलम् २ (छत्री) कपोतपालिका, विटक ।
कब्ज, स स्त्री (अ) मलावरोध, विड्भङ्ग, बद्धकोष्ठ ।
—कुशा, वि, वि-,रेचक, सारक। सं पु, रेचक, सारकम्।
कब्जा, स पु (अ) स्वामित्व, अधिकार २ मुष्टि (स्त्री), वारण ३ द्वारसंधि ।
कभी, क्रि वि (हिं कब+ही) कदाचित्, कदापि, कस्मिंश्चित् काले, कर्हिचित् २ पुरा, प्राक, एकदा।
—का, क्रि वि, चिरात्, चिरम्।
—न कभी, क्रि वि, कदाचित्तु, अद्य श्वो वा।
कमंडल, स पु (स कमण्डलु) करक, करक -क, कुंडी।
कमंद, स स्त्री (फा) गुण-रज्जु,-पाश-बंधनम् २ गुण-रज्जु,-अधिरोहणी-निश्रयणी।
कम, वि (फा) अल्प, दहर, दभ्र, स्तोक, लघु, ह्रस्व २ ऊन, न्यून, अल्पतर, अल्पीयस्, लघीयस, क्षोदीयस्। क्रि वि अल्प, स्तोक, ईषत्, किंचित्, मनाक्।
—उम्र, वि, अल्पवयस्क, बाल।
—कीमत, वि अल्पमूल्य, सुखक्रेय।
—खर्च, वि, अल्प-मित, व्ययिन् २ कृपण।
—जोर, वि, अल्प,-बल-शक्ति, दुर्बल।
—बख्त, वि, हत-मन्द,-भाग्य, दुर्दैव।
—खर्च बाला नशीन, मु, अल्पव्ययेन गौरव लाभ ।
—सुनना, मु, उच्चैः श्रु (भ्वा प अ)।
कमची, स स्त्री (तु) कंचिका, वेणुशाखा, कुंचिका २ नम्यतनुयष्टि (स्त्री)।
कमठ, सं पु (स) कूर्म, कच्छप ।
कमनीय, वि (सं) सुन्दर, मनोहर, रम्य।
कमनैत, सं पु (फा कमान >) धनुर्धारिन्।

कमनैती, स स्त्री (हिं कमनैत) धनुर्विद्या ।
कमर, स स्त्री (फा) कटी-टि (स्त्री), काचीपद, मध्य मध्य, मध्यांग, वलग्न -न ।
—कस, स पु पलाशनिर्यास ।
—बंद, स पु मेखला रशना ।
—कसना वा बाँधना, मु परिकर बध् (क्र प अ)।
—टूटना, मु , हतोत्साह (वि) भू ।
—सीधी करना, मु विश्राम् (दि प से) सविश (तु प अ)।
कमरख, स पु (स कर्मरंग)(वृक्ष) कर्म्मार कर्म्मर, मुद्गर । (फल) कर्मरंग इ ।
कमरा, स पु (लै कैमेरा) म , कोष्ठ शाला, कक्षा २ छायाचित्रारोपकयन्त्र आलोकलस्य यन्त्रम् ।
अंदर का—, गर्भागार, अन्तःकोष्ठ ।
ऊपर का—, शिरोगृह, चन्द्रशाला ।
कमरी-ली, स स्त्री (स कवल >) लघु, कवल रल्लक -आविक , कम्बल्कम् ।
कमर्शल, वि (अ) वाणिज, वाणिज्य सम्बन्धिन् विषयक, वाणिनिक ।
कमल, स पु (स न) अब्ज अम्बुज अम्भोज, अरविन्द, कज, नल नलिन, पकज, पङ्केरुह, पद्म शत सहस्र पत्रम् , सरसिज सरोज सरोरुह, मारसम् ।
—का पौदा, स पु मृणालिनी, पद्मिनी, कमलिनी नलिनी ।
—गट्टा, स पु कमलाक्ष पद्मबीजम् ।
—डंड, स पु., कमलनाल ।
—नयन, वि पद्माक्ष कजाक्ष (-क्षी स्त्री)। स पु विष्णु २ राम ३ कृष्ण ।
—नाभ, स पु विष्णु ।
—नाल, स पु., दे कमलदंड' ।
—नैनी, वि स्त्री कमलाक्षी कजनयनी ।
—योनि, स पु ब्रह्मन् (पु) ।
कमला, स स्त्री (स) पद्मा, लक्ष्मी श्री (स्त्री) इन्दिरा मा रमा, हरिप्रिया २ धनम् ३ नारग ४ वरनारी ।
—पति, स पु., विष्णु ।
कमलासन, स पु (स न) पद्मासनम् २ (स पु) ब्रह्मन् (पु) ।
कमलाकर, स पु (स) तड़ाग , दे 'सरोवर' ।
कमलाकार, वि (स) पद्म जलज,-आकार सदृश रूप ।
कमलाक्ष, वि (स) पद्म,-नयन नेत्र ।
कमलिनी, स स्त्री (स) पद्माकर , पद्मिनी, सकमलो जलाशय २ लघुकमलम् ।
कमाई, स स्त्री (हिं कमाना) उपजीविका, वृत्ति (स्त्री) २ उपार्जित अर्जितधनम् ।
कमाऊ, वि (हिं कमाना) उप-,अर्जक, धनसंग्राहक २ उद्योगिन् , उद्यमिन् ।
कमान, स स्त्री (फा) धनुस (न) शरासनम् , चाप ।
कमानिया, स पु (फा कमान >) धन्विन् (पु) धानुष्क धनुर्धर ।
कमाना, क्रि स (हिं काम) उप-,अर्ज् (चु , भ्वा प से) परिश्रमेण प्राप (स्वा उ अ) २ (चमड़ा इ) उपयोगार्हं विधा (जु उ अ) ।
कमानी, स स्त्री (फा कमान) स्थिति-स्थापकत्वविशिष्टो यन्त्रावयव ।
कमाल, स पु (अ) नैपुण्य, दक्षत्व २ विलक्षणकृत्यम् । वि श्रेष्ठ ।
कमिश्नर, स पु (अ) आयुक्त ।
कमिश्नरी, स स्त्री (अ कमिश्नर >) महल्लगम ।
कमी, स स्त्री (फा कम >) ऊनता, न्यूनता, अल्पता, अपूर्णता अपर्याप्तता ।
कमीज, स स्त्री (अ कमीज) चेल , चोलक , उरोवस्त्रम् ।
कमीना, वि (फा -न) अधम अवम क्षुद्र तुच्छ २ दुष्कुलीन हीन,-वर्ण-जाति ।
कमीशन, स पु (अ) पराधं विक्रय २ आयोग ३ उद्धृतभाग ।
कम्युनिज़्म, स पु (अ) साम्यवाद समष्टिवाद ।
कम्युनिस्ट, स पु (अ) साम्यवादिन्, समष्टिवादिन् ।
कयाम, स पु (अ) निवेश अवस्थिति (स्त्री), विश्राम २ निवेशस्थानम् ।
कयामत, स स्त्री (अ) प्रलय २ विपत्ति (स्त्री)।
करज, स पु (स) षड्ग्रन्थ , रोचन ।
करड, स पु (स) मधुकोष २ खड्ग ३ कारण्डव (पक्षी) ।

कर, स पु (सं) हस्त, हाथ, पंचशाख, पाणि २ शुंड-दा, शुंडाग ३ किरण, अंशु ४ राजस्व, शुल्क -क।

करक, स स्त्री (हिं कसक) पीड़ा वेदना २ मूत्रकृच्छ्रम् ३ क्षताक, क्षतचिह्नम्।

करकट, स पु (हिं खर+सं कट >) अव स्कर, अवकर, अपस्कर, मल, उच्छिष्टम्।

करकरा, स पु (स कर्करेटु) सारसभेद। २ दे 'खुरदरा'।

करका, स पु (सं स्त्री) दे 'ओला'।

करघा, सं पु, दे 'कघा'।

करछा, स पु (सं करच्छद >) 'करछी' के वाचक शब्दों के पूर्व 'बृहत्' लगाएँ।

करछी, स स्त्री (हिं करछा) दर्वी-वि (स्त्री), खजि (जा) का, खजाकिका, दर्वी, दर्विका, शर्दू दूँ (स्त्री), पाणिका, दारुहस्तक।

करज, स पु (स) १ नख २ अंगुली ३ करंज।

करट, स पु (स) काक, वायस २ गजगण्ड ३ नास्तिक ४ निन्द्यजीवनम्।

करटक, स पु (स) वायस, काक २ चौर्य विज्ञानप्रवर्तक आचार्यविशेष।

करटी, स पुं (स-टिन्) द्विप, गज, हस्तिन् (पु)।

करण, स पु (स न) यंत्र, उपस्कर, साध नम् २ कारकभेद (व्या) ३ अस्त्र, शस्त्र ४ इन्द्रियम् ५ देह ६ क्रिया, कार्यम् ७ स्थानम्।

करणीय, वि (स) कर्तव्य, अनुष्ठेय, निष्पाद्य, विधेय, संपादनीय।

करतब, स पु (स कर्तव्यम्) कर्मन् (न), कार्य कृत्यम् २ कला, कौशल, शिल्पम्।

करतबी, वि, (हिं करतब) कुशल, दक्ष, युक्तिमत् २ कर्मठ ३ ऐन्द्रजालिक।

करतल, स पुं (स पु न) दे 'हथेली'।

करताल, स पुं (स न) वाद्यभेद, करताली २ करतलध्वनि (पुं) ३ दे 'झाँझ'।

करतूत, स स्त्री (स कर्तृत्वम्) कृत्य, कर्मन् (न) २ गुण, कला ३ कुकर्मन्।

करद, वि (स) कर-बलि-राजस्व-शुल्क,-द-प्रद-दायक-दातृ २ अधीन, परवश ३ शरणदायक।

करधनी, स स्त्री (स कटिधानी >) मेखला, रशना, काञ्ची, सारसनम्।

करनफूल, स पु (स कर्णफूलम् >) कर्णिका, ताटङ्क, उत्तम, कर्णावतंस।

करना¹, स पु (स कर्ण) सुदर्शन, श्वेतपुष्पो वृक्षभेद।

करना², स पु (स करुण) बृहज्जंबीरभेद, पर्वत नीर। (पर्व) पर्वत नीरम्।

करना³, क्रि स (स करणम्) कृ (त उ अ), निष्पद्-निर्वह्-निर्वृत्-साध् (प्र), विधा (जु उ अ), अनुष्ठा-प्रणी (भ्वा प अ), आचर् (भ्वा प से)।

स पु तथा भाव, करण, निष्पादन, संपादन निर्वर्तन, साधन, विधान, अनुष्ठान, आचरणम्।

—योग्य, वि निष्पाद्य, विधेय, साध्य, कार्य कर्तव्य, आचरणीय।

—वाला, स पु कर्तृ कारक, विधातृ, संपादक, निष्पादक अनुष्ठातृ।

किया हुआ, वि, कृत, अनुष्ठित, निष्पादित विहित।

करनाटकी, स पु (हिं करनाटक) कर्णा टप्रान्तवास्तव्य २ ऐन्द्रजालिक।

करनी, स स्त्री (हिं करना) कृति (स्त्री) कर्मन् (न), कार्य, कृत्यम् २ अन्त्येष्टिक्रिया।

करनैल, स पु (अं कालोनल) व्यूहपाल, पति अध्यक्ष।

करभ, स पु (स) मणिबन्धात् कनिष्ठापर्यन्त करस्य बहिर्भाग २ गजशावक ३ उष्ट्रशावक ४ करी-रि (स्त्री)।

करभोरु, स पु (स) गजशुण्डोरु। वि, वामोरु (पु) वामोरू (स्त्री)।

करम, स पु (स कर्मन् न) कार्य, चेष्टा २ भाग्य, दैवम्।

करमकल्ला, स पु (अ करम+हिं कल्ला) दे 'बंद गोभी'।

करमाली, स पु (स-लिन्) सूर्य भानु।

करवट, स स्त्री (स करवर्त) पार्श्व, पार्श्व भाग, पक्ष २ वामपार्श्वेनो दक्षिणपार्श्वेनो वा शयनम्।

करवट², स पु (स करपत्रम्) क्रकच, पत्र दारक।
—लेना, मु, मोक्षप्राप्त्यर्थ क्रकचेन स्वशिरश्छेदनम्।
करवाल, स स्त्री (स पु) खड्ग, असि।
करश्मा, स पु (फा) चमत्कार, कौतुक, आश्चर्य।
करहाटक स पु (स) कमलमूलम् २ कमलानाम् छत्रम् ३ मदनवृक्ष।
कराना, क्रि प्र (हि करना) 'करना' के धातुओं के प्र रूप।
करामात, स स्त्री (अ करामत' का बहु) दे करश्मा।
करामाती, वि (अ करामात>) लोकोत्तर चमत्कारिन् अद्भुत।
करार¹, स पु (अ) शान्ति (स्त्री), शम २ धैर्य स्थैर्यम्।
करार², स पु, (अ इकरार) दे 'प्रतिज्ञा'।
करारा¹, स पु (स करार>) नद्याः उच्चं प्राक् वा तटम् २ सच्छिद्रतीरम् ३ क्षुद्र पर्वत।
करारा², वि (स कराल) दृढ, घन, सदृढ २ क्रूर, दारुण ३ शुष्क, शुष्क ४ तीक्ष्ण उग्र ५ दृढ, वज्रदृढ ६, भंगुर, भिदुर।
कराल, वि (स) भीषण भयकर, घोर, दारुण।
कराला, स स्त्री (स) भीषणाकारा दुर्गा।
कराह, स स्त्री (दे कराहना) आर्ति पीडा, ध्वनि (पु) दुःखशब्द-स्वर।
कराहत, स स्त्री (अ) घृणा जुगुप्सा।
कराहना, क्रि अ (हि करना+आह) आर्त स्वर कृ दुःखेन स्वन् (भ्वा प से)।
करिणी, स स्त्री (स) हस्तिनी।
करी, स पु (स करिन्) गज हस्तिन्।
करीना, स पु (अ) सुव्यवस्था, पद्धति (स्त्री), सौष्ठवम्।
करीब, क्रि वि (अ) समीप, निकट २ प्रायः, प्रायेण।
करीर, स पु (स-न) तीक्ष्णकण्टक, मकर, गूढपत्र, क्रकच।
करुण, वि (स) दयार्द्र, कारुणिक २ दुःखजनक।
स पु रसविशेष (ना) २ परमेश्वर ३ करुणा, अनुकम्पा।
करुणा, स स्त्री (स) अनुकम्पा दया कृपा, २ प्रियवियोगज दुःखम्।
—निधान वि (स) करुणाकर दयानिधि, कृपा-करुणा-दया, निधि-सागर।
करेणु, स पु स्त्री (स पुं स्त्री) हस्तिन् २ हस्तिनी।
करेला, स पु (स कारवेल) कटुक, कटु कटुकम्, कठिल्लक।
करैत, स पु (हि काला) मातुलाहि, मातुलाहि, कृष्णसर्पभेद।
करोड, वि (स कोटि स्त्री) शतलक्ष। स पु, उक्ता संख्या तदङ्काश्च (१०००००००)।
करौली, स स्त्री (स करपाली) छुरा क्षुरिका, आमुक्तिका।
कर्क, स पु (स) कर्कट, कुलीर २ राशिविशेष ३ अग्नि ४ कुक्कुट।
कर्कश, वि (स) कठोर, रूक्ष। २, तीव्र, प्रचण्ड ३ सकण्टक।
कर्कशा, वि स (स) कलह-विवाद-प्रिया (नारी)।
कर्घा, स पु (फ्रा कारगाह=कार्यस्थान>) तन्तुवायानां यन्त्र २ पटकारस्य वेम-वाय दण्ड-प्रवेणी ३ पटनिर्माणगृहम्।
कर्ज, स पुं (अ) दे 'ऋण'।
कर्ण, स पुं (स) श्रवण-ण, श्रव, श्रोत्र, श्रवस् (न) श्रुति (स्त्री), शब्दग्रह। २ अङ्गराज, वासुषेण, कानीन ३ दे 'पतवार'।
—कटु, वि (स) विस्वर, कर्कश, दुःश्रव्य।
—धार, स पु (स) नाविक, पोतवाह २ कर्णिन् मुख्यनाविक।
—परपरा, स स्त्री (स) श्रुतिपरपरा।
—पुट, स पु (स न) श्रुतिमण्डलम्।
—पुर, स पु (स न) चम्पानगरी (भागलपुर)।
—पूर, स पु (स) अवतंस २ नीलोत्पलम्।
—फूल, स पु (स-पुष्पम्>) कर्णिका, वतंस, तालपत्र, कर्णभूषणम्।
—वेध, स पु (स) संस्कारभेद।
कर्णाट, स पु (स) दक्षिणभारते प्रान्तविशेष।

कर्णाटी, स स्त्री (सं) रागिणीभेद २ कर्णाट देशस्य भाषा नारी वा।

कर्णिका, स स्त्री (सं) ताटक, दलपत्र, कर्णा भूषणभेद २ करमध्यांगुली ३ लेखनी।

कर्त्तन, स पु (सं न) (कर्त या) छेदन, लवन, कृन्तनम् २ तन्तुसर्जनम्।

कर्त्तनी, स स्त्री (सं) दे 'कतरनी'।

कर्त्तरी, स स्त्री (सं) दे 'कतरनी' २ दे 'छुरा'।

कर्त्तव्य, स पु (सं न) धर्म, विधेय, अनुष्ठेयम् २ दे 'करणीय'।

—विमूढ़, वि (सं) कर्तव्यमभ्रात।

कर्त्ता, स पु (स कर्तृ) विधातृ, स्रष्टृ, अनुष्ठातृ २ प्रभु, ईश्वर।

कर्त्तार, स पु (स कर्त्तार >) परमेश्वर, विधातृ, विश्वसृज्।

कर्तृत्व, सं पु (स न) कारकत्वम् २ कर्तृधर्म।

कर्दम, स पु (सं) चिक्लि, पक २ पाप ३ छाया।

कर्पट, स पु (सं पु न) चीर, पटखण्ड, पटच्चर जीर्णवस्त्रम्।

कर्पूर, स पु (सं) दे 'कपूर'।

कर्बुर, स पु (सं न) स्वर्णम् २ धुस्तूरवृक्ष ३ जलम्। (सं पुं) राक्षस २ पाप ३ कर्चूर। वि नानावर्ण, चित्र, कल्माष, शबल।

कर्म, स पु (सं कर्मन् न) कार्य, कर्तव्य, क्रिया, कृति (स्त्री), प्रवृत्ति (स्त्री) २ दैव भाग्यम् ३ द्वितीय कारकम् (व्या)।

—काड, सं पु (सं न) धर्मकृत्य, यज्ञादि कार्यम् २ कर्मविधायक शास्त्रम्।

—कार, स पु (सं) लोहकार २ स्वर्णकार ३ सेवक।

—चारी, स पु (सं-रिन्) राज,-भृत्य-पुरुष, अधिकारिन् २ कार्यकर्तृ।

—भोग, स पु (सं) कर्मफलम् २ पूर्वकर्मणां परिणाम।

—योग, स पु (स) चित्तशुद्धिकर वैदिक कर्मन् (न) २ निष्कामकर्मणाऽनुष्ठानम्।

—रेख, स स्त्री (स-रेखा) भाग्यांका २ भाग्य, दैवम्।

—विपाक, सं पु (सं) पूर्वकर्मणां फल, कर्म परिणाम।

—शील, वि (सं) कर्मवत् २ उद्योगिन्, उद्यमिन्।

—सन्यास, सं पु (स) कर्मत्याग २ कर्म फलत्याग।

—हीन, वि (स) मद-हत,-भाग्य, दुर्दैव २ शास्त्रोक्तकर्मणाम् अकर्तृ।

—जागना, मु, भाग्य-पुण्य,-उदय।

—फूटना, मु कर्मदुर्विपाक, भाग्यविपर्यय।

कर्मठ, वि (सं) कर्मण्य, कर्मशील, उद्यमिन्।

कर्मण्य, वि (सं) दे 'कर्मठ'।

कर्मधारय, स पु (स) समानाधिकरण तत्पुरुषसमास।

कर्मिष्ठ, वि (स) कार्यकुशल २ क्रियावत्।

कर्मी, वि (स कर्मिन्) कार्यकर्तृ २ फलेच्छया कर्मसंपादक।

कर्मेन्द्रिय, सं स्त्री (स न) क्रियासाधक करणम्। (हाथ, पाँव आदि)।

कर्षक, स पु (स) कर्षणकर २ क्षेत्रिन्, क्षेत्राजीव।

कर्षण, स पु (स न) आकर्ष, आकर्षणम् २ भूमिदारणम् ३ कृषि (स्त्री)।

कर्षणी, दे 'खिरनी'

कर्षी, वि (स) आ,-कर्षक-कार्षिन्। सं पुं, हालिक, हल,-वाह, हक, लांगलिन् (पु)।

कलक, स पु (स) दोष, दूषण, छिद्रम् २ लांछन, अपवाद ३ लक्षण, चिह्नम्।

कलकित, वि (स) दूषित, निंदित, आक्षिप्त, लांछित।

कलकी[1], वि (सं-किन्) दे 'कलकित'।

कलकी[2], स पु (स कल्कि) विष्णोरंश मावतार।

कलडर, सं पु (अ केलेंडर) पचाग, तिथिपत्रम्।

कलदर, स पुं (अ) यवनभिक्षुभेद २ वान रादिनर्तयितृ।

कल[1], सं पु (स) मधुरास्फुटध्वनि। वि, मनोज्ञ, अभिराम २ मधुर, कोमल।

कल[2], स स्त्री (स कल्य >) स्वास्थ्यम् २ सुखम् ३ सतोष।

कल[3], स स्त्री (स कला) उपाय, युक्ति (स्त्री) २ यन्त्र, उपकरणम् ३ यन्त्रावयव।

कल, क्रि वि (सं कल्यम्) श्व (अव्य), आगामिदिनम् । २ आगामिकाले ३ ह्य (अव्य), गतदिनम् ।
—का, वि श्वस्तन (–नी स्त्री), श्वस्त्य (–त्या स्त्री) २ ह्यस्तन, ह्यस्त्य ।
कलई, स स्त्री (अ) रग, वग, त्रपु, नस्तीरम् २ रग–वग,–लेप ३ स्वर्णादिधातुभिर्लेप ४ कान्तिकरो लेप ५ सुधालेप ६ आडवर ।
—गर, स पु (फा) धातु सुधा–लेपक ।
—खुलना, मु , गोप्य रहस्य वा आविर्भू ।
कलकठ, वि (स) प्रियवद, सुस्वर, मधुरभाषिन् स पु कोकिल २ कपोत ३ हस ।
कलक, स पु (अ) दुःख, शोक ।
कलकल, स पु (स) निर्झरादीना शब्द २ कोलाहल ३ विवाद ।
कलगी, स स्त्री (तु) पक्ष, पिच्छम् २ चूडाल कारभेद ३ मुकुटस्था सुपक्षा ४ भवन शृगम् ।
कलत्र, स पु (स न) पत्नी, भार्या ।
कलदार, स पु (हिं कल) यत्ररचित रूप्यकम् २ यत्रयुक्त ।
कलधौत, स पु (स न) सुवर्णम् २ रजतम् ।
कलन, स पु (स न) उत्पादन, रचन, जननम् २ ग्रहणम् ३ धारण परिधानम् ४ आचरणम् ५ सबध ६ ग्रास, कवल ७ गणिताक्रिया ८ वेतस वेत्र ।
कलप, स पु (स कल्प >) मड, मडम् २ केश, राग–रग ३ दे 'कल्प' ।
कलपना, क्रि अ (सं कल्पन्>) शुच् (भ्वा प से) पीड् खिद–तप्–दु खित (कर्म) व्यथ–उत्कठ् (भ्वा आ से), दुर्मनायते (ना धा) उत्सुक (वि)+भू ।
कलपाना, क्रि प्र, 'कलपना' के धातुओं के प्रे रूप ।
कलफ, स पु (स कल्प >) मड , मडम् ।
—लगाना, क्रि स, मडेन लिप (तु प अ) ।
कलबल, स पु (स कल बलम्) उपाय, युक्ति (स्त्री) ।
कलबल, स पु (अनु) कोलाहल , कलकल ।
कलबूत, स पु (फा कालबुद) आकार साधनम् २ आधार , उपष्टम्भ ।
कलभ, स पु (स) गजशावक , उष्ट्रशावक ।
कलम, सं पु स्त्री (सं पु) लेखनी, अक्षर तूलिका, वर्णिका, वर्णमातृ (स्त्री) २ अन्यत्रा रोपणाय कृत्ता शाखा ३ अन्यवृक्षे निवेशिता शाखा ४ गडरोमाणि (न बहु) ५ तूलिका, वर्तिका ६ तक्षणसाधनम् ।
—दान, स पु , कलम–लेखनी, धानम् ।
—लगाना, मु , वृक्षान्तरे देहान्तरे वा निविश (प्रे) ।
कलमलाना, क्रि अ , दे० 'कुलबुलाना' ।
कलमा, स पु (अ) यवनधर्ममूलमत्र २ वाक्यम् ३ शब्द ।
—पढ़ना, मु यवनी भू ।
कलमी, वि (फा) हस्त–,लिखित २ वृक्षान्तरे आरोपित ३ स्फटिकरूपेण घनीभूत ।
—आम, स पु (पेड) राजाम्र , नृपवल्लभ । (फल) राजाम्रम् ।
—शोरा, स पु , घनीकृतो यवक्षार ।
कलमुहाँ, वि (स कालमुख >) कृष्ण,–वदन–आस्य २ लाछित, कलुषित ।
कलरव, स पु (स) मधुरमदध्वनि, कल,–स्वन–रुतम् । २ कपोत ३ कोकिल ।
कलल, स पु (स पु न) भ्रूण , गर्भ , भ्रुवन , गर्भस्थशिशो प्रथमावयव । २ गर्भाशय ।
कलवरिया, स स्त्री (हिं कलवार) सुरालय, मदिरालय, गजा ।
कलवार, स पु (स कल्यपाल) शौंडिक, सुराजीविन् , सुराकार २ सुराविक्रयी उप जाति (स्त्री) ।
कलविंक, स पु (स) गृहनीड , चित्रपृष्ठ, चटक- २ चिह्नम् ।
कलश, स पु (स) कलश शी, कलस–सी–सम् , घट, कुट , निप २ शिखा, शृगम् ।
कलसा, स पु, दे 'कलश' ।
कलहस, स पु (स) राजहस , कादव, कलनाद, मराल २ नृपोत्तम ३ परमेश्वर ।
कलह, स पु (स) कलि, विवाद, द्वन्द्व, वाग्युद्धम् , विसवाद ।
—प्रिय, वि (स) विवादप्रिय, कलहकारिन्, कलहिन् ।
कला, स स्त्री (स) अश , भाग २ चन्द्रस्य षोडशाश ३ सूर्यस्य द्वादशाश ४ अग्नि मडलस्य दशमाश ५ त्रिंशत्काष्ठात्मक समय

विभाग ६ शिल्प, शिल्पविद्या ७ कौशल, निपुणता ८ शरीरस्य षोडशाध्यात्मविभाग (=५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ६ कर्मेंद्रिय, ५ प्राण, मन) ९ नृत्यभेद १० मात्रा (छन्द) ११ विभूति (स्त्री) १२ शोभा, प्रभा १३ कौतुक, लीला १४ छल, कपटम् १५ मिष, व्याज १६ युक्ति (स्त्री), उपाय १७ नटलीला भेद १८ यन्त्रम् १९ प्रकृति (स्त्री, जैन), २० वर्णवृत्तभेद।

—कद, सं पु (फा) मिष्टान्नभेद।

—कौशल, स पु (स न) कला, शिल्पम् २ कलापाटवम्।

—निधि, स पु (सं) कलाधर, चन्द्र।

—बाजी, स स्त्री (सं + फा) विपर्यस्त प्लुति (स्त्री)।

—वत, सं पुं (सं कलावद्) सगीतकुशल, गायक २ रज्जुनर्तक। वि, कलाकुशल।

कलाई, स स्त्री (सं कलाची) कलाचिका, प्रकोष्ठ, मणिबध।

कलाप, सं पु (स) समूह, गण, निकर २ जनसंघ, लोकनिवह ३ इषुधि ४ चन्द्र ५ कटिबध, मेखला ६ गुच्छ ७ मयूर पिच्छम् ८ आभूषणम्।

कलापिनी, स स्त्री (सं) मयूरी २ रात्रि (स्त्री)।

कलापी, स पुं (सं-पिन्) मयूर, बर्हिन् २ कोकिल। वि, तूणपृष्ठ।

कलाबत्तू, सं पु (तु कलाबतून) कौशेयसतौ व्यावर्तित सुवर्ण-रजत,-तार।

कलाम, स पु (अ) वचन, उक्ति (स्त्री) २ वार्तालाप ३ प्रतिज्ञा ४ आक्षेप।

कलार-ल, सं पु, दे 'कलवार'।

कलारिन, स स्त्री (हि कलार) शौण्डिकी, मद्यविक्रेत्री।

कलावती, वि (स) कला-शिल्प,-ज्ञा वेत्री, शिल्पिनी २ सुन्दरी।

कलिंग, स पु (सं-गा) प्रान्तविशेष (=उड़ीसा) २ इन्द्रयव-कुटज,-वृक्ष ३ दे 'तरबूज'। वि चतुर, धूर्त।

कलिंगड़ा, स पु रागभेद।

~ सं पुं (सं) पर्वतविशेष २ सूर्य।

~ ।, स स्त्री (सं) यमुना कालिंदी।

कलि, सं पु (सं) चतुर्थ-तुरीय-अन्त्य,-युगम् (यह ४३२००० वर्षों का होता है) २ कलह, विवाद ३ युद्धम् ४ शूर ५ क्लेश ६ पापम् ७ शिव ८ इषुधि।

—कर्म, सं पु (सं-कर्मन् न) सग्राम।

—काल, सं पुं (सं) कलियुगम्।

कलिका, सं स्त्री (सं) दे 'कली'।

कलित, वि (सं) ज्ञात, विदित २ प्रसिद्ध ३ प्राप्त ४ शोभित ५ सुन्दर।

कलियाना, क्रि अ (सं कली>)स्फुट् (तु प से) विकस्-फुल् (भ्वा प से)।

कली¹, सं स्त्री (सं) कलिका, कोरक-क, मुकुल-लं, कुड्मल, कोश-ष २ त्रिकोणो वस्त्रखण्ड ३ धूमपानयन्त्राधोभाग।

दिल की कली खिलना, मु, मुद् (भ्वा आ से)।

कली², सं स्त्री (अ कलई) चूर्णजलम् २ तप्तचूर्णम्।

कलील, वि (अ) न्यून, स्तोक २ लघु, ह्रस्व।

कलुष, सं पु (सं न) मल, मालिन्यम् २ पाप, दोष ३ क्रोध ४ महिष।

वि, मलिन, पंकिल २ निंदित ३ पापिन्।

कलुषित, वि (सं) पंकिल, मलीमस २ अपवित्र, अमेध्य ३ आतुर ४ कृष्ण, काल।

कलूटा, वि (हिं काला) काल, कृष्ण, श्याम।

काला—, वि अति,-कृष्ण-काल।

कलेजा, सं पुं (सं कालेयम्) यकृत् (न), कालखण्ड, कालकम् २ हृदय, हृद् (न), ३ उरस्, वक्षस्, क्रोड (सब न) ४ साहस, उत्साह, धैर्यम्।

—काँपना, मु, भी (जु प अ), उद्विज् (तु आ से) स वि,-त्रस् (दि प से)।

—चलनी होना, मु, हृदय व्यथ् (कर्म)।

—टूक टूक होना, मु, हृदय स्फुट् (तु प से)।

—थाम कर रह जाना, मु, सताप स-नि,-यम् (भ्वा प अ)।

—धड़कना, मु, (भयादिभि) हृदय वप् (भ्वा आ से)।

—फटना, मु, (शोकमात्सर्यादिभि) हृदय विद् (कर्म)।

—से लगाना, मु, आलिंग् (भ्वा प से)।

कलेवर, स. पुं (सं. न) शरीरं, देह।

—बदलना, क्रि अ, पुन जन् (दि आ से) २ नववस्त्राणि परिधा (जु उ अ)।

कलेवा, सं पु (सं कल्यवर्त) प्रातराश, प्रातर्भोजन, कल्यजग्धि (स्त्री), जलपानम्।

कलोल, सं स्त्री (सं कल्लोल >) क्रीडा, खेला, केलि (पु स्त्री), लीला, विलास ।

कलौंजी, स स्त्री (स कालाजाजी) पृथुका, दिराशा, कारा।

कल्क, सं पु (सं पु न) घृततैलादिशेष २ दम्भ ३ विष्ठा ४ किट्टम् ५ पापम् ६ वस्तुन चूर्णम् ७ अवलेह ।

कल्कि, स पु (सं) विष्णोर्दशमावतार ।

कल्प, स पु (स) धर्मकृत्यविधायको वेदाग-भेद २ ब्रह्मदिनम्, दैवसहस्रयुगम् (= ४३२०००००० वर्ष) ३ महाप्रलय, सृष्टि सहार ४ विधान, कृत्यम् ५ प्रात काल ६ रोगनिवृत्तियुक्ति (स्त्री) ७ प्रकरण, विभाग ८ विकल्प, पक्ष ९ सदेश १० निश्चय ११ उद्देश । वि, तुल्य, सदृश ।

—तरु, स पु (स) कल्प, वृक्ष-पादप द्रुम ।

कल्पना, सं स्त्री (सं) उद्भावना-न, कल्पन, मन कल्पना २ रचना, विधानम् ३ प्रसाधन, मडनम् ४ तर्क, ऊहा ५ अध्यारोप ६ गज सज्जीकरण।

—करना, क्रि अ, उत्प्रेक्ष ऊह् (भ्वा आ से), तर्क् (चु), मनसा कल्प् (प्रे), सभू (प्रे)।

कल्पित, वि, (सं) रचित, विहित २ सुव्यव स्थित ३ वि-म भावित ४ उद्भावित, वासना भावना-सृष्ट, मानस, काल्पनिक ५ असत्य, निर्मूल ६ कृत्रिम, कृतक ।

कल्मष, स पु (सं न) अघ, पापम् २ मल मालिन्यम् ।

कल्य, स पु (स न) प्रत्यूष, प्रभातम् २ मधु (न) ३ सुरा ४ श्व (अव्य), आगामिदिनम्। वि, स्वस्थ, निरामय २ मूक बधिर ।

कल्या, स स्त्री (स) मद्यम्, सुरा २ कल्याण स्वस्ति,-वचन वच (न), अभिनन्दनम्।

कल्याण, सं पु (सं न) सुख, मगल, हित, शिव, कुशल, क्षेम, भद्र, सुस्थिति (स्त्री) २ सुवर्णम् ३ रागभेद । वि शिव, मगल, शकर ।

—कारी, वि (सं रिन्) सुख मगल हित, कारक ।

कल्याणी, वि स्त्री (सं) मगलकारिणी, सुन्दरी । स स्त्री (सं) गौ (स्त्री) २ माषपर्णी ।

कल्याश, सं पु (सं) प्रातराश, कल्यवर्त, जलपानम् ।

कल्ल, वि (सं) बधिर, अकर्ण ।

कल्लर, सं पु (देश) ऊषर-र, १व्या भूमि (स्त्री) ।

कल्लाँच, वि दुर्वृत्त, दुराचारिन् २ दरिद्र, निर्धन ।

कल्ला, सं पु (स करीर-र >) प्ररोह, किसलय, उद्भिद् ।

कल्लोल, सं पु (स) महातरग, उल्लोल, महोर्मि २ दे 'कलोल'।

कल्लोलिनी, सं स्त्री (सं) नदी, तटिनी।

कवच, सं पु (सं पु न) सन्नाह, कचुक, वर्मन् (न), तनु,-वार-त्राण-त्रम् २ भेरी, दुदुभि ३ रक्षाकरड ।

—पत्र, सं पु (सं न) भूर्जपत्रम्।

कवर, सं पु (स पु स्त्री न) केश,-बध पाश २ ग्रास, कवल, पिण्ड ।

कवरी, सं स्त्री (सं) केशविन्यास, वेणी णि (स्त्री), धम्मिल्ल २ वनतुलसी।

कवर्ग, स पु (सं) ककारादिवर्णपचकम्।

कवल, स पु (सं) ग्रास, पिंड डम्।

कवलगट्टा, स पु (स कमलग्रथि >) कमलाक्ष, पद्मबीजम्।

कवलित, वि (स) भक्षित, निगीर्ण, मुक्त २ गृहीत, आदत्त।

कवायद, सं पु (अ 'कायदा' का बहु) नियमा विधय (बहु) २ व्यायाम ३ सेना व्यायाम ४ व्याकरणनियमा ।

कवि, सं पु (सं) काव्यकर, सूरि, सत्सार २ ऋषि ३ सूर्य ४ ब्रह्मन् (पु)।

—राज, स पु (स) कवीन्द्र, महाकवि २ वैतालिक ३ वैद्योपाधि ।

कविता, सं स्त्री (सं) काव्य, काव्यप्रबन्ध,

काव्यबध २ काव्यरचना, कवित्व, कविता कला।

कवित्त, स पु (सं कवित्वम् >) काव्य कविता २ हिन्दीछन्दोभेद ।

कवित्व, स पु (स न) काव्यरचनाशक्ति (स्त्री) २ काव्यगुण ।

कवींदु, स पु (स) वाल्मीकि, प्राचेतस, कविज्येष्ठ ।

कवींद्र, वि (स) कविश्रेष्ठ, श्रेष्ठकवि, कविराज ।

कश, स पु, दे 'कशा ।

कशमकश, स स्त्री (फा) सघर्ष, प्रतिस्पर्द्धा २ जनौघ ३ सशय ।

कशा, स स्त्री (स) कषा प्रतोद, प्रति ष्कश –ष ।

कशिश, स स्त्री (फा) दे 'आकर्षण'।

कशीदा, स पु (फा) सूची, शिल्प-कर्मन् (न)।

—काढ़ना, कि स सूच्या पुष्पादिक चित्र् (चु)।

कश्ती, स स्त्री (फा) दे 'नौका'।

कश्मल, स पु (स न) मोह, मूर्च्छा २ पाप अघम् । वि मलिन, आविल ।

कश्मीर, स पु (स) काश्मीरदेश शास्त्र शिल्पिन् ।

कष, स पु (स) कषपट्टिका, निकष निकष, उपल पाषाण २ शाण णी ३ परीक्षण, परीक्षा ।

कषण, स पु (स न) निकषेण स्वर्णादिकस्य परीक्षणम् ।

कषाय, वि (स)तुवर, कुवर २ सुवास सुगंधि ३ रंजित, रंगवद् ४ गैरिकवर्ण रक्तश्याम । स पु मोह २ काथ ३ कुवर, रसभेद ।

कष्ट, स पु (स न) दुःख, क्लेश, पीडा व्यथा २ आपद्, विपद्, आपत्ति, विपत्ति (सब स्त्री)।

—साध्य, वि (स)दुस्साध्य, दुष्कर, कष्ट।

कसं, स पु (स कष)निकष कषपट्टिका २ परीक्षणम् २ खडगगुणनीयता ।

सं, स पुं (हिं कसना)बल, शक्ति (स्त्री) निग्रह, निरोध ३ विघ्न ।

कसं, सं पुं (फा) नर, जन व्यक्ति (स्त्री)।

फी—, कि वि, प्रतिपुरुष, प्रतिजनम्।

बे—, वि, असहाय, अनाथ ।

कसक, स स्त्री (स कष = हिंसा >) वेदना, पीडा, व्यथा २ चिर, वैर विरोध ३ अभि लाष ४ सहानुभूति (स्त्री)।

—निकालना, कि स, चिरवैर शुध् (प्रे)।

कसकना, क्रि अ (हिं कसक) व्यथ (भ्वा आ से) पीड् (कर्म)।

कसकुट, स पु दे 'काँसा'।

कसना, कि स (स कर्षणम्) दृढीकृ नियम् (भ्वा प अ) द्रढयति (न धा) २ बध् (क्र् प अ) ३ पीड् (चु) ४ परीक्ष (भ्वा आ से) ५ सज्जीकृ ६ मूल्य वृध (प्रे)।

कि अ दृढीभू, नियम् (कर्म) २ बध, नियन् (कर्म) ३ पिंडीभू ।

स पुं, दृढीकरण, नियमनम् २ बधनम् ३ पीडनम् ४ परीक्षणम् ५ सज्जीकरणम्।

कसनी, स स्त्री (हिं कसना)दृढीकरण नियमन-रज्जु (स्त्री)२ अगिका ३ निकष ४ परीक्षा ५ दे 'दुधौंडी'।

कसब, स पु (अ)व्यवसाय वृत्ति (स्त्री) २ गणिकावृत्ति (स्त्री)।

कसबी, स स्त्री (अ कसब >) वेश्या, गणिका २ कुलटा, पुंश्चली ।

कसम, स स्त्री (अ)शपथ, प्रतिज्ञा, समय ।

—खाना, कि अ, शप् (भ्वा दि उ अ)।

कसमसाना, कि अ, (अनु०) दे 'कुल बुलाना'।

कसमसाहट, स स्त्री, शनै सर्पणम् २ व्याकु लता।

कसमि (मी) या, अ (अ०) सशपथ, सस मय शपथपूर्वम्।

कसर, स स्त्री (अ) न्यूनता, अल्पता २ अभाव, हीनता ३ दोष ४ वैरम् ५ हानि (स्त्री)।

—निकालना, मु, क्षति पूर् (चु), प्रतिफल दा (जु उ अ)।

कसरत, स स्त्री (अ) बाहुल्य, प्रचुरता, आधिक्यम् २ बहुतरभाग, अधिकसख्या।

—राय, सं स्त्री, दहुमत, मतविभ्रम।
कसरत, सं स्त्री (अ) व्यायाम, परिश्रम २ अभ्यास, आवृत्ति (स्त्री)।
कसरती, वि (अ कसरत>) व्यायामिन्, दृढाग।
कसा, वि (हिं कसना) गाढ, दृढ, सुसहत २ दृढबद्ध।
कसाई, सं पु (अ कस्साब) सौ (शौ) निक २ मासिक, घात्क, विशसितृ। वि, क्रूर, निर्दय।
कसाना, क्रि अ (हिं काँसा) कषाय-विकृत स्वाद (वि) भू।
कसाला, सं पु (स कष–पीडा>) दुःख, कष्टम् २ आयास, परि–श्रम।
कसाव, सं पु (स कषाय>) कषायता, रूक्षता।
कसी, सं स्त्री (स कर्षणम्>) खनित्र, टग–गम्।
कसीदा, सं पु, दे 'कसीदा'।
कसीस, सं पु (स कासीसम्) शोधन, शुभ्र, धातुशेखरम्, खचरम्।
कसूर, स पु (अ) अपराध, दोष, स्खलितम्।
—वार, वि, अपराधिन्, दोषिन्।
कसेरा, स पु (हिं काँसा) कांस्यकार, पात्रलेहकार।
कसैला, वि (हिं कसाव) कषाय, तुवर, तुवर।
कसैली, सं स्त्री (हिं कसैला) दे 'सुपारी'। वि स्त्री कषाया, रूक्षा।
कसोरा, स पु (हिं काँसा) (कास्य-) चषक शराव भाजन पात्रम्। २ मृण्मय मात्रिक, चषक।
कसौटी, सं स्त्री (सं कषपट्टी) नि, कष, कषपट्टिका, निकषोपल २ परीक्षा, प्रमाणम्।
—पर कसना, मु, परीक्ष् (भ्वा आ से)।
कस्टम, सं पु (अ) रीति (स्त्री), व्यवहार, अभ्यास, नियम।
कस्टमर, स पु (अ) ग्राहक, क्रेतृ (पु)।
कस्टम्स, सं पु (अ) शुल्क, कर, राजस्वम्।
कस्तूरी, सं स्त्री (सं) कस्तूरिका, मृग, नाभि मद, अण्डजा, वातामोदा, गधधूलि (स्त्री)।
—मृग, सं पु (सं) गंधमृग।
कस्बा, सं पु (अ-ब) बृहद्-ग्राम, ग्राम, लघु, नगर पुरम्।
कहकहा सं पु (अ अनु) अट्टहास, उच्चैर्हास, अति प्र, हास।
कहत, सं पु (अ) दुर्भिक्ष, नीवाक, आहाराभाव, अकाल।
कहना, क्रि स (सं कथनम्) वद्-वद् मन् (भ्वा प से), ब्रू (अ उ), वच् (अ प अ) उदा-उदीर (प्रे), उदा-व्या, हृ (भ्वा प अ) २ कथ (चु), शस (भ्वा प से), आचक्ष् (अ आ), नि-आ, विद् (प्रे), आ, ख्या (अ प अ), वर्ण-निरूप (चु), अभिधा (जु उ अ) ३ आज्ञा (प्रे आज्ञापयति) ४ शप् (भ्वा आ से) ५ प्रकाश् (प्रे) ६ उपदिश (तु प अ)। सं पु, वचन, भाषण, कथन, व्याहरण, उदीरणम् २ आज्ञा, आदेश ३ उपदेश, अनुशासनम् ४ दे 'कहावत'।
—योग्य, वि गदनीय, वदनीय, कथनीय, भणितव्य, वक्तव्य।
—वाला, स पु, वाचक, वक्तृ, वादिन्, व्याहर्तृ अभिधातृ।
—हुआ, वि, गदित, उदित, भणित, उक्त, कथित, उच्चारित, उदीरित।
कहने को, मु, नाममात्रम्।
कहर, सं पु (अ) विपत्ति (स्त्री)।
कहरवा, स पु (हिं कहार) (१-३) ताल गीत-नृत्य, भेद।
कहरी, वि (अ० कह्र>) क्रूर, निर्दय, अत्याचारिन्।
कहलाना, क्रि प्रे, 'कहना' के धातुओं के प्रे रूप।
कहवा, सं पु (अ) वृक्षभेद २ तस्य बीजानि (बहु) ३ तेषा पेयम्।
कहाँ, क्रि वि (सं कुह) क, कुत्र, कस्मिन् स्थाने।
—का, वि, कत्य, कुत्रत्य, किंदेशीय।
—तक, क्रि वि, कियद्दूर-रे, कियतान्तरेन, किंपर्यन्तम्।
कहा, सं पु (हिं कहना) कथन, वचन, उक्ति (स्त्री), आज्ञा, उपदेश।

कहानी, स स्त्री (स कथानिका) कथा, श्रा उपा, ख्यानम्, आख्यायिका, वृत्तान्त ।

कहार, स पु [सं क (=जल)+हार] कहार, जल-उद वाह, दृतिहार । २ शिविका नरयान, वाह ३ पात्र, क्षालक मार्जक ।

कहावत, स स्त्री (हिं कहना) आभाणक, लोकवाद जनप्रवाद जनोक्ति लोकोक्ति (स्त्री)।

कहासुनी, स स्त्री (हि कहना+सुनना) कलह, विवाद, वाग्युद्धम्।

कहीं, क्रि वि (हिं कहाँ) क्वापि क्वचित्, कुत्रापि, कुत्रचित्, यत्रकुत्रचित्। २ न न कदापि ३ यदि, चेत् ४ अत्यन्तम्।

—कहीं, क्रि वि, क्वचित् क्वचित्, यत्र कुत्र चिदेव ।

—न कहीं, क्रि वि, अत्र अन्यत्र वा ।

काँइयाँ, वि (अनु काँव) धूर्त्त कितव ।

काँ काँ, सं स्त्री (अनु) काका, शब्द ध्वनि २ काकरुतम्।

काँक्षा, स स्त्री (स) अभिलाष, कामना।

काँख, स स्त्री (स कक्ष) कक्षा, बाहुमूल, भुजकोटर -र, दोर्मूलम्।

काँखना, क्रि अ, (अनु) भारवहनमलत्या गणादिकाले आर्तनादकृ ।

काँगड़ी, स स्त्री, * गल हसनी-हसन्ती, अगार धानिका प्रकार ।

काँग्रेस, स स्त्री (अ) महासभा, प्रतिनिधि सभा, समाज ।

काँच¹, स स्त्री (स कक्ष) कच्छ कंछ, कच्छा, टी टिका। २ गुदावर्त्त, गुदचक्रम्।

काँच², स पु (स काच) स्फटिक ।

काँचन, स पु (स न) स्वर्णम्, सुवर्णं कनकम् २ धन, सम्पत्ति (स्त्री)। (स पु) धुस्तूर २ चंपक ३ कोविदार ४ काच नाल ।

—मय, वि सुवर्णमय, हैम (-मी स्त्री)।

काँची, स स्त्री (स) रसना, मेखला २ कांजिवरम्।

काँजिव (वा) रम्, स पुं, (सं कांची) काँची, पुरी नगरी ।

काँजी, स स्त्री (स) गृहाम्ल, रक्षोघ्न, सुवीराम्ल काञ्जि(ञ्जी)कम्।

काँजी हौद, सं पु (अ काइन हाउस) पशु,-शाला गुप्ति (स्त्री), गोगृह, अवरोध ।

काँटा, स पु (स कण्टक -कम्) तरु-द्रुम-, नख, शिताग्र, शल्यम् २ पृष्ठवंश, कशेरुका ३ नख रा, नखर -रम् ४ लघु तुला-धट ५ शूल ल्म् ६ मयूरकुक्कुटादीना नख। ७ तुला,-जिह्वा सूची ८ बडिश, मत्स्यवेधनम् ९ मत्स्यास्थि (न) १० निष्ठीवभेद ११ शल, शल्लम् १२ घटीसूची १३ कूपकटक १४ रोमाञ्च ।

—खटकना, मु, (हृदय) कण्टकमिव व्यथ् (दि प अ)

—होना, मु, अतिकृश (वि) भू।

काँट बोना मु पीड् (चु)।

काँटों में घसीटना, मु, मिथ्यास्तु (अ प अ)।

रास्ते में काँटे बिखेरना, मु, विघ्नयति (ना धा)।

काँटी, सं स्त्री (हिं काँटा) क्षुद्रकण्टक २ लघु-क्षुद्र,-धरणी आकर्षणी ३ क्षुद्रतुला ४ क्षुद्रकील ५ वर्पासमल्लम्।

काण्ड, स पु (स पु न) अध्याय, उच्छ्वास, प्रकरण, परिच्छेद, स्कंध २ वि-, भाग, खंड -ण्डम् ३ दण्ड, यष्टि (स्त्री) ४ बाण ५ शरवृक्ष ६ अवसर ७ तृणादिगुच्छ ८ तरुस्कंध ९ समूह १० वंशादि पर्वन् (न) ११ शाखा १२ व्यापार घटना १३ नालम्।

काँड़ी, स स्त्री (स काण्ड >) दीर्घ स्थूण-काष्ठम्, गृहस्थूणा, तुला ।

कांत, स पु (स) पति, भर्तृ २ अयस्-लोह, कान्त लुवक ३ चन्द्र ४ वसन्त ५ श्रीकृष्ण । वि, मनोरम, शोभन।

कांता, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ दयिता, प्रिया ३ सर्वांगसुंदरी नारी।

कांतार, स पुं (स पुं न) महावन, बृहद् गहन, अरण्यानी २ वेणु, वंश ३ विल, छिद्रम् ।

कांति, स स्त्री (स) द्युति -दीप्ति -छवि (स्त्री), भा, अभिख्या २ सौन्दर्यं, लावण्यम्।

कादव, सं पु (सं न) कटाहीभृष्ट-कन्दुमर्जित, वस्तु (न)-पदार्थ ।
कादिशीक, वि (स) भय त्रास, पलायित अपद्रुत धावित ।
काँप, स स्त्री (स कपा) (१-२) गज वराह,-दन्त २ वंशकाशादीना शलाका ३ कर्णभूषणभेद ।
काँपना, क्रि अ (स कम्पनम्) कप् स्पद् वेप् (भ्वा आ से) स्फुर (तु प से) २ विचल् वेल्ल् (भ्वा प से) ३ दे, 'डरना'।
काम्बोज, वि (स) कम्बोजदेश, विषयक सम्बधिन्। सं पु कम्बोजवासिन। २ कम्बोजाश्व ।
काँव-काँव, स स्त्री (अनु) द 'काँ काँ' २ प्रजल्प, विप्रलाप ।
काँवर, स स्त्री दे 'बहँगी'
काँस, सं पु (सं काश) अमरपुष्पक, वन हासक, काशा-शी २ कल्ह ।
काँसा, स पु (स कास्यम्) कस, कसास्थि (न) ताम्रार्द्धम्, दीप्ति पीत,-लोहम्, घोषम्।
कास्यकार, सं पु (सं) कसकार दे 'कसेरा'।
का, प्रत्य (सं प्रत्य 'क') षष्ठी वा समास द्वारा। (उ० राम की पुस्तक = रामस्य पुस्तक, रामपुस्तकम्)।
काई, स स्त्री (स कावारम्) शैव (वा) ल, शेव (वा) ल ल, जलनीली २ अयोमलम् ३ मलम्।
काक[1], स. पु (सं) वायस, ध्वाक्ष ।
—तालीय, वि (स) आकस्मिक-यादृच्छिक (-की स्त्री), अनाकत ।
—पक्ष, सं पु (स) शिखण्ड-डक, अलक, चूर्णकुन्तल केशकलाप ।
—पद, स पु (स न) हस्तलेखेषु उज्झित वर्णद्योतकचिह्नम् (= ∧)।
—वन्ध्या, स स्त्री (स) एकापत्यजननी।
काक[2], सं पु (अ कार्क) पिधान, कूपी छिद्रपिधानम् २ रोधनी, स्तम्भनी।
काकली, सं स्त्री (स) सूक्ष्ममधुरास्फुटध्वनि ।
काका, स पु (फा काका = बड़ा भाई >) पितृव्य, पितृ भ्रातृ २ (प) बाल, शिशु ।
काकी, स स्त्री (फा काका >) पितृव्या, पितृव्यपत्नी २ (प) कन्यका, बालिका।
काकु, सं पु (स) भिन्नकण्ठध्वनि २ आक्षेप, व्यग्यवचन आ-अधि,-क्षेप ३ अलङ्कारभेद (सा) ४ जिह्वा।
काकुत्स्थ, स पु (सं) श्रीरामचन्द्र ।
काकुल, सं पु (फा) काकपक्ष शिखडक ।
काग, सं पु दे 'काक' १, २
कागज़, स पु (अ) कागद -द, पत्र, कर्गलम्।
—पत्र, स पु (अ + सं) लेख्यपत्राणि, पत्रकाणि, लेख्यानि (सब बहु)।
—की नाव, मु क्षणभगुर, विनश्वर ।
कागजी, वि (अ कागज >) कागद-पत्र,-मय २ सूक्ष्मत्वच् ३ प्रतनु। सं पु, पत्रविक्रयिन् २ श्वेतकपोत ।
—घोड़े दौड़ाना, मु, पत्रै व्यवहृ (भ्वा प अ)।
काच, स पु (सं) स्फटिक २ नेत्ररोगभेद (स न) काचलवणम् २ सिक्थकम्।
काछ, स स्त्री (स कक्षा >) कटी-जघन,-वस्त्रम्।
काछना[1], क्रि सं (स कक्षा >) धौताप्रान्त पृष्ठे निविश (प्रे)।
काछना[2], क्रि स (सं कषणम्) फेन अपनी (भ्वा उ अ)।
काछनी, सं स्त्री (हिं काछना) ऊरुवसन, सक्थिवस्त्रम्।
काछा, स पु, दे 'काछनी'।
काछी, सं पु (स कच्छ >) शाक,-उत्पादक विक्रेतृ २ जातिभेद ।
काज[1], सं पु (स कार्यम्) कृत्य, कार्य, कर्मन् (न), कृति (स्त्री) २ वृत्ति (स्त्री), आजीविका ३ उद्देश्य, प्रयोजनम् ४ विवाह ।
काज[2], स पु (अ कायना >) गण्डाधार, कुडुपाधार (= बटन का छेद)।
काजल, स पु (स कज्जलम्) लोचक, दीपकिट्ट, अञ्जनम्।
—की कोठरी, मु, निन्द्यस्थानम्।
काज़ी, स पु (अ) न्यायाधीश, धर्माध्यक्ष (इस्लाम)।
काट, स स्त्री (हिं काटना) छेदन, कर्तन, लवन, कृन्तन, मश्चनम् २ कर्तनरीति (स्त्री) ३ व्रण, क्षतम् ४ खण्ड -ड, लव ५ छल, कपटम्।
—छाँट, स स्त्री, सक्षेपण २ शोधनम्।

काटन, स पु (अ) कार्पास, तूल -लम् २ कार्पास, तूलाम्बरम्, बादरम्।

काटना, क्रि स (स कर्तनम्) कृत् (तु प से) लू (क्र उ से), छिद् (र प अ), ग्रथ (तु प वे) २ तुद् (तु प अ), व्रण् (चु) ३ छन् (चु), सङ्क्षिप (तु प अ) ४ हन् (अ प अ) व्यापद् (प्रे) ५ दे 'कतरना' ६ सधिं त्रुट् (प्रे) ७ विफलीकृ ८ दश (भ्वा प अ) ९ अल्पाश उदधृ (भ्वा प अ) १० अतिक्रम् (भ्वा प से)।

स पु तथा भाव, दे 'काट'।

—योग्य, वि, कर्तनीय, छेदनीय, छेत्तव्य, लवनीय।

—वाला, सं पु छेदक, लावक, कर्तनकर।

काटा हुआ, वि, कृत्त, लून, कृतण, छिन्न।

काटने दौड़ना, मु निर्जन (वि) दृश् (कर्म)।

काटो तो खून नहीं, मु, स-, स्तब्ध।

काठ, सं पु (स काष्ठम्) दारु (न) २ इध्म, इधन ३ काष्ठनिगड -डम् ४ दे 'शहतीर'। वि कर २ मूर्ख।

—का उल्लू, सं पु जडधी, मूढ, अज्ञ।

—की हाँडी, स, आपातरमणीय वस्तु।

—मारना, मु, काष्ठनिगडेन बध् (क्र प अ)।

काठड़ा, स पु, दे 'कठौता'।

काठिन्य, स पु (स न) दे 'कठिनता'।

काठी, स स्त्री (हिं काठ) पर्याण, पर्यबण, पल्ययनम् २ शरीर,-रचना-सस्थानम् ३ असिकोष।

काढ़ना, क्रि स (सं कर्षणम्) निष्-आ, कृष (भ्वा प अ), निष-स,-पीड् (चु), निर उद,-हृ (भ्वा प अ) २ सूच्या पुष्पादिक सिव (दि प से) ३ काष्ठपाषाणादिषु पुष्पादिक अलिख-उत्कृ (तु प से) ४ पृथक् कृ, वियुज-विश्लिष (प्रे) ५ क्वथ् (भ्वा आ से)।

काढ़ा, स पु (हिं काढ़ना) क्वाथ, कषाय, निर्यास।

कानेली, सं स्त्री (स) कुल्टा, व्यभिचारिणी, पुंश्चली २ अनूढा, अविवाहिता।

कातना, क्रि स (सं कर्तनम्) तन्तून् सृज् (तु प अ), कृत् (रु प से)।

स पु तथा भाव, कर्तन, तन्तुनिर्माणम्।

—योग्य, वि, कर्तनीय, कर्तनार्ह।

—वाला, सं पु, कर्तक, तन्तुकार।

काता हुआ, वि, कृत्त।

कातर, वि (स) व्याकुल, विह्वल २ भीत, त्रस्त ३ भीरु ४ आर्त्त।

कातरता, सं स्त्री (स) व्याकुलता, धैर्याभाव २ भय, त्रास ३ भीरुता, कातर्यम् ४ अवसाद विषाद।

कातिब, स पु (अ) लेखक २ अक्षरचचु।

कातिल, सं पु (अ) घातक, हन्तृ।

कादम्ब, स पु (सं) (१-३) कदब,-वृक्ष -पुष्प फलम् ४ कलहस ५ इक्षु ६ बाण ७ कदंबसुरा।

कादंबरी, स स्त्री (सं) कोकिला २ मदिरा ३ सरस्वती ४ बाणरचितो गद्यकाव्यविशेष।

कादंबिनी, सं स्त्री (सं) मेघमाला, जलदावली।

कान, स पु (सं कर्ण) श्रोत्र, श्रवण, श्रुति (स्त्री) श्राव, शब्दग्रह।

—में कहना, क्रि, स, कर्णे जप् (भ्वा प से)।

—का परदा, सं पु, कर्ण,-पटह -दुन्दुभि।

—का बहना, स पु, कर्णस्राव।

—का मैल, स पु, कर्ण,-मल-गूथ, पिंजूष।

—की क्षाय-क्षाय, स स्त्री, कर्णप्रणाद।

—उमेठना, मु, दंडरूपेण कर्णौ मुद् (चु)।

—का कच्चा, मु, विश्वासिन्।

—काटना, मु, अतिशी (अ आ से), अतिरिच् (कर्म)।

—खड़े होना, मु, विरिम (भ्वा आ अ)।

—खा जाना, मु, कोलाहल कृ।

—पकड़ना, मु, पश्चात्तापेन कर्णौ स्पृश् (तु प अ)।

—पर जूँ न रेंगना, मु, *निश्चल, अनवहित* (वि) स्था (भ्वा प अ)।

—फूकना, मु, कलह उद्दीप् (प्रे)।

—भरना, मु, पृष्ठतो द्वेष जन् (प्रे)।

—में उँगली दिये रहना, मु, दे 'कान पर जूँ न रेंगना'।

कानन, स पुं (स न) वनम् २ गृहम्।

कानफरेंस, सं स्त्री (अ) सम्मेलनम्।
कानस्टेबिल, सं पु (अ) रक्षिन्, शान्ति रक्षक, रक्षापुरुष।
काना, वि पु (स काण) एकाक्ष, चन्द्रचक्षु।
कानाफूसी, सं स्त्री, (सं कर्ण >) कर्णेजपन, उपांशुवाद २ वार्ता, जनप्रवाद।
कानाफूसी, स स्त्री, (सं + अनु) दे 'कानाकानी'।
कानि, सं स्त्री (देश) लोकलज्जा, मर्यादा।
कानी, वि स्त्री (सं) काणा, एकाक्षा, एकनेत्रा, काणेयी, काणेरी।
—**उँगली**, स स्त्री कनिष्ठा कनिष्ठिका, कनी निका, दुर्बलाङ्गुली लि (स्त्री)।
—**कौड़ी**, मु, दे 'कौड़ी' के नीचे।
कानी हाउस, दे 'कॉंजी हौद'।
कानीन, सं पु (सं) कन्यापुत्र, कुमारी तनय।
कानून, स पु (अ) अधिनियम २ राज, नियम, विधि ३ आचार, व्यवहार।
—**गो**, स पु ग्रामगणकाध्यक्ष।
—**दाँ**, स पु, व्यवहारनिपुण, विधिज्ञ।
कानूनी, वि (अ कानून >) वैध, राजनियम विषयक २ विधिज्ञ ३ मर्म्ज्ञ, शास्त्रविहित ४ कुतर्किन्।
कान्ह, स पु (सं कृष्ण) श्रीकृष्णचन्द्र २ पति।
कापालिक, सं पु (सं) शैवतान्त्रिकसाधु २ वर्णसंकरजातिभेद।
कापुरुष, स पु (सं) कु त्सित-कातर,-जन।
काफ़िया, स पु (अ) अन्त्यानुप्रास।
—**तंग करना**, मु, अतीव संतप्-उद्विज्-अर्द् (प्रे)।
काफ़िर, स पु (अ) अयवन (इस्लाम) २ नास्तिक, अनीश्वरवादिन् ३ क्रूर ४ दुष्ट।
काफ़िला, स पु (अ-ल) सार्थ, यात्रिक-समूह।
काफ़ी, वि (अ) पर्याप्त, अन्यूनाधिक, समर्थ, उचित, अलम् (अव्य चतुर्थी के साथ)।
काफ़ी, स स्त्री (अ) दे 'कहवा'।
काफ़ूर, स पु (फा) कर्पूर र, घनसार।
—**होना**, मु, तिरो भू।

काबिज़, वि (अ) अधिकारिन्, प्रभु २ मलावरोधक, गरिष्ठ।
काबिल, वि (अ) योग्य, समर्थ।
काबू, सं पु (तु) अधिकार, प्रभुत्व, वश।
—**करना**, क्रि स, वश नी (भ्वा उ अ)।
काम¹, सं पु (सं) इच्छा, अभिलाष, मनोरथ, आकांक्षा २ शिव ३ मदन, कामदेव ४ मैथुनेच्छा ५ इन्द्रियाणां विषयप्रवृत्ति (स्त्री) ६ चतुर्वर्गेऽन्यतम।
—**आतुर**, वि (सं) कामार्त्त, अनगतप्त, विधुर।
—**केलि**, स स्त्री (स पु स्त्री) कामक्रीडा, विहार, विलास।
—**तरु**, सं पु (सं) कल्पवृक्ष।
—**देव**, स पु (स) काम, मदन, स्मर, कन्दर्प, अनग, मन्मथ, मनसिज, मनोज, कुसुमबाण, पंचशर, मार, मीनकेतन, मकरध्वज, पुष्पधन्वन्, आत्मभू।
—**धेनु**, स स्त्री (सं) कामदुघा, कामदा।
—**रिपु**, सं पु (सं) कामारि, शिव।
—**रूप**, स पु (स) प्रान्तविशेष, असम प्रान्त। वि, स्वेच्छारूप २ सुरूप।
—**शास्त्र**, स पु (स न) वात्स्यायनप्रणीतो ग्रथविशेष २ कामविज्ञानम्।
काम², सं पु (सं कर्म्मन् न) कार्य, कृत्य, क्रिया २ व्यापार, व्यवसाय ३ उद्यम, उद्योग ४ प्रयोजनम्, उद्देश्यम् ५ उपयोग, व्यवहार।
—**आना**, क्रि अ, प्र उप,-युज् (कर्म), व्यवहृ-व्याप्ट (कर्म)। मु, वीरगतिं प्राप् (स्वा उ अ)।
—**काज**, स पु, कार्य, अर्थ, व्यवसाय।
—**काजी**, वि, उद्यमिन्, उद्योगिन्।
—**चलाऊ**, वि, उपयुक्त, उपयोगिन्।
—**चोर**, वि, अलस, कर्त्तव्यविमुख।
—**तमाम करना**, मु, मृ णिपूद्-नश-व्यापद् (प्र), हन् (अ प अ)।
कामना, सं स्त्री (सं) इच्छा, आकांक्षा।
कामयाब, वि (फा) सफल, कृतकार्य।
कामयाबी, स स्त्री (फा) सफलता, कृत कार्यता।
कामरी, सं स्त्री, दे 'कंबल'।

कामला, स पु (सं कामल) पाण्डु, पाण्डु रोग ।
कामिनी, स स्त्री (सं) सुन्दरी, नारी २ सुरा ३ कामबहुला नारी ।
कामिल, वि (फा) सं-पूर्ण २ दक्ष, योग्य ।
कामी, वि (स कामिन्) लपट, कामासक्त, कामाध, कामन, अभीक, कामातुर, कामुक २ अनुरक्त, आसक्त, सस्नेह,-सेविन् (समासात में) ४ इच्छुक, इप्सु, सस्पृह ।
स पु, अग्नि (मी) म, क (का) मन, कम्र, कामुन २ चन्द्र ३ कपोत ४ चक्रवाक ५ चम्क ।
कामुक, वि (स) दे 'कामी' वि, 'कामी' स पु (१)।
कामेडियन, सं पु (अ) हास्यरसाभिनेतृ (पु), वैहासिक ।
कामेडी, सं स्त्री (अं) सुखान्त-सयोगान्त,-रूपक नाटकम्, प्रहसनम्, भाणिका, दुर्मल्लिका ।
कामोद, स पु (स) रागभेद ।
कामोद्दीपक, वि (सं) वाजीकर, कामाग्नि दीपन ।
काम्य, वि (स) स्पृहणीय, वाञ्छनीय २ सुन्दर, मनोज्ञ ।
काम्या, स स्त्री (सं) इच्छा, कामना, वान्छा ।
काय, सं स्त्री (सं पु) शरीर, देह २ समुदाय ।
कायदा, सं पु (अ) नियम, व्यवस्था, रीति (स्त्री), शिष्टाचार ।
कायम, वि (अ) निश्चल, स्थिर, नेश्चेष्ट २ स्थापित ३ निर्धारित ।
—मुकाम, स पु (अ) प्रतिनिधि, प्रतिपुरुष २ उत्तराधिकारिन् । वि, स्थानापन्न ।
कायर, वि, दे 'कातर'।
कायल, वि (अ) छिन्नसशय, जातप्रत्यय ।
कायस्थ, स पु (स) परमेश्वर २ जीव ३ जातिभेद । वि, शरीरस्थ ।
काया, स स्त्री (स काय पु) शरीर, देह, विग्रह, कलेवरम् ।
—कल्प, स पुं (स) पुनर्यौवनोत्पादनम् २ पुनर्यौवनोत्पादनचिकित्सा ।
—पलट, सं पु, बृहत्परिवर्तन, महापरिवर्त २ शरीररूपरेखापरिवर्तनम् ।
कायिक, वि (स) शारीर (-री स्त्री), शारीरिक-दैहिक (-की स्त्री) ।
कार¹, स पु (स) कार्य, क्रिया २ कर्तृ, अनुष्ठातृ ३ अक्षरवाचकप्रत्यय (उ च=चकार) ४ ध्वनिवाचकप्रत्यय (उ फूत्कार)।
कार², स पु (फा) कार्य, व्यवसाय ।
—करना, क्रि स, नियोग अनुरुधा (म्वा प अ)।
—खाना, सं पु, शिल्प,-शाला-गृहम्, पण्य निर्माणस्थानम् ।
—बार, स पु, व्यवसाय, व्यापार ।
—रवाई, स स्त्री, क्रिया, कार्यम् २ गुप्त चेष्टा-क्रिया ।
—साज, वि, कुशल, दक्ष ।
कारक, वि (सं) कर्तृ, अनुष्ठातृ विधातृ २ क्रियया सबधसूचक शब्दरूपभेद (उ कर्तृ कारक इ व्या)।
कारचोब, स पु (फा) सूचीकर्मोपजीविन् २ सूचीकर्माधार ।
कारचोबी, वि (फा) सूचीकर्म युक्त । (सं पु) सूचीकर्मन् (न), शिल्पम् ।
कारटून, स पु (अ) हासकरमालेख्यम्, हास्यजनक चित्र, उपहासचित्रम् ।
कारण, सं पु (स न) हेतु, निमित्त, मूल, बीज, योनि (स्त्री) निदानम् २ साधनम् ३ कर्मन् (न) ४ प्रमाणम् ५ विष्णु ६ शिव ७ पूजान्ते मद्यपानम् (तान्त्रिक)।
कारतूस, स पु (पुर्त कारटूम) गुलि (स्त्री) गुलिका, आग्नेयचूर्णनाडी-लि (स्त्री)।
कारनिस, स स्त्री (अ) भित्तिदन्तक, कुड्य शृगम् ।
कारा, स स्त्री. (स) निरोध निरोधनम्, बन्धन, आसेध, प्रग्रह २ क्लेश, पीडा ।
कारागार, स पु (स पु न) कारा, बन्धना लय, बदि,-शाला गृहम्, कारागृह, चार, चारक, गुप्तिस्थानम् ।
कारावास, सं पु (स) दे 'कारागार'।
कारिंदा, स पु (फा) कारकर, परकार्य साधक, प्रति,-हस्त-निधि २ कर्मचारिन्, राजपुरुष, अधिकारिन् ।

कारी¹, सं. पु. (स-रिन्) कारक:, कर्तृ।
कारी², वि (फ़ा) घातक, प्राड्गुर।
कारीगर, सं. पु. (फ़ा.) शिल्पिन्, कारु:, शिल्पकार:। वि., शिल्पकुशल।
कारीगरी, सं. स्त्री (फ़ा) कारुता, शिल्पकौशल, दक्षता २ मनोहररचना।
कारुणिक, वि (स) दे 'करुणामय'।
कारूँ, सं पु (अ) मूसानामकस्य सिद्धस्य धनाढ्यकृपण पितृव्यपुत्र। वि, कृपण, कदर्य।
—का ख़ज़ाना, सं पु., असीमधन, अमितसम्पद् (स्त्री)।
कारूरा, सं पु (अ) मूत्रम् २ मूत्रपात्रम्।
कारोबार, सं पु., दे 'कारबार'।
कार्क, सं पु (अ) कूपी-, पिधानम्।
कार्कश्य, सं पु (सं न) कर्कशता, कठोरता २. दृढता, दृढत्वम् ३ निर्दयता, क्रूरता।
कार्ड, सं पु (अं) पत्रम् २. स्थूलकर्गलम्।
कार्तवीर्य, सं पु (सं.) कृतवीर्यपुत्र सहस्रबाहुः, अर्जुन।
कार्तस्वर, सं. पु (सं. न) कनक, सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यम्।
कार्तिक, सं पु. (सं.) बाहुल:, ऊर्ज:, कौमुद:।
कार्तिकेय, सं पु (सं.) स्कन्दः, कुमारः, शिखिवाहनः, द्वादशलोचनः।
—प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गिरिजा।
कार्बन, सं. पु. (अं.) अङ्गारः, कार्बनम्।
कार्बोनिक, वि (अं.) अङ्गारिक, कार्बनिक।
—एसिड गैस, सं. स्त्री, कार्बनिकाम्लवातिः (स्त्री)।
कार्मुक, सं. पु (सं न) चापः, दे 'धनुष'।
कार्य, सं. पु (सं न) कर्मन् (न) कृत्य, क्रिया २. व्यवसायः ३. परिणामः ४. प्रयोजनम्।
—अध्यक्ष, सं पु. (सं.) अधिकारिन् २. कर्मनिरीक्षक:।
—कर्ता, सं. पु (सं.—र्तृ) कर्मकारिन् २. राजभृत्य:।
कार्रवाई, सं. स्त्री., दे 'काररवाई'।
काल, सं. पु. (सं.) समयः, वेला, दिष्टः, अनेहस् (पु.) २. मृत्युः ३. यमः, यमदूतः ४. अवसरः, प्रसङ्गः ५. दुर्भिक्ष, दुष्कालः ६ कृष्णसर्पः ७ शनैश्चरः ८. शिवः ९. लोहः १० ऋतुः।
—कूट, सं. पु (सं. पु न.) घोरविष, प्राड्हरगरलम्।
—कोठरी, सं. स्त्री, कालकोष्ठः।
—क्षेप, सं पु (सं) समयातिपातः, व्याक्षेपः २. निर्वाहः।
—चक्र, सं. पु (सं. न.) समयपरिवर्तः २. भाग्यचक्रम् ३. अस्त्रभेदः।
—ज्ञ, सं. पु., (सं.) कालविद्, २ दैवज्ञः ३ कुक्कुटः।
—यापन, सं पु (सं. न) दे 'कालक्षेप'।
—रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) भीमा कृष्णा च निशा २ प्रलयरात्रिः ३ मृत्युनिशा ४. दीपावलीनिशा ५ मनुष्यजीवने सप्तसप्ततिवर्ष सप्तमाससप्तदिनानन्तरभवा रात्रिः।
—सर्प, सं. पु (सं.) महाविष, कृष्णसर्प, कृष्णसर्पविशेषः।
काला, वि (सं. काल) कृष्ण, श्याम, असित, नील २ अन्धकारमय, तिमिरावृत, ३. दूषित ४. घोर ५. भयकर।
—आज़ार, सं. पु., कालज्वरः।
—कलूटा, वि. अतिकृष्ण।
—चोर, सं. पु., महातस्करः २. अतिदुष्टपुरुषः।
—जीरा, सं. पु., कृष्णजीरकः, काला, कृष्णा।
—नमक, सं. पु., कृष्णलवणम्, सौवर्चलम्।
—नाग, सं. पु., कृष्ण-नाग-सर्पः २. प्राड्गुरः दस्युः।
—पानी, सं. पु., द्वीपान्तरे निर्वासनम् २. अन्दमानादयो द्वीपविशेषाः।
कालेकोसों, क्रि. वि, अतिदूर-रे।
—मुँह होना, मु, निन्द्-अभिशिप् (कर्म०)।
कालातीत, वि. (सं.) अनवसर, असमयोचित।
कालापन, सं. पु. (हिं. काला) कृष्णता, श्यामता, मेचकता।
कालिंदी, सं. स्त्री. (सं) यमुना, कलिन्दतनया।
कालिक, वि. (सं.) सामयिक, कालविषयक २. समयोचित, प्राप्तकाल ३. ऋतुकाल, नियतकाल।
कालिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, चण्डी २. मसी-षी ३. कनीनिका ४. श्यामवर्णता।
कालिख, सं. स्त्री. (सं. कालिका) कज्जल,

मषि -सि (स्त्री) २ कल्क, लाछन, दोष ।
कालिदास, सं पु (सं) सरस्वतकविशिरोमणि, रघुकार, विक्रमसभाया रत्नम्।
कालिमा, सं स्त्री (सं कालिमन् पु) कृष्णिमन् (पु), कालता, श्यामता २ मसी ३ लाछन, दोष ४ अधकार ।
कालिय, सं पु (सं) यमुनावर्तिकृष्णसर्पविशेष ।
—मर्दन, सं पु (सं) श्रीकृष्ण ।
काली, सं स्त्री (सं) चण्डी, दुर्गा २ पार्वती, *गिरिजा* ३ मसी । सं पु दे 'कालिय'। वि स्त्री, कृष्णा, श्यामा ।
—खाँसी, सं स्त्री, कालकास ।
—घटा, सं. स्त्री, (स) कादबिनी, श्यामघनश्रेणि (स्त्री)।
—दह, सं पु (सं.+हि) यमुनाया जलावर्तविशेष ।
—मिर्च, सं. स्त्री (सं कालमरि (री) चम्) कृष्ण, ऊषण, कालक, वेलजम् ।
—कालीन, वि (सं) समय वेला-काल,-भवधिन् २ सामयिक, प्रास्ताविक । (टि यह शब्द समासान्त में ही प्रयुक्त होता है)।
कालौछ, सं स्त्री (हि काला) कृष्णता, श्यामता २. मसी ३ कज्जलम् ।
काल्पनिक, वि (सं.) सकल्पज, मन कल्पित, उद्भावित, कृत्रिम, कृतक ।
काल्य, वि (सं) काल-समय-अवसर,-उचित-योग्य-अनुकूल, सामयिक । सं पु, प्रभात, विभात, प्रत्यूष ।
काल्या, सं स्त्री (स) १-२ गर्भाधानार्हा नारी धेनु (स्त्री)।
कावा, सं पु (फा) वृत्ते अश्वभ्रामणम् २ मण्डल, वृत्तम्।
कावेरी, सं स्त्री (सं) दक्षिणभारतस्य प्रसिद्ध नदी २ वेश्या ३ हरिद्रा, पीतिका।
काव्य, सं. पु (स. न) कविता, कविकृति (स्त्री), सरसप्रबन्ध २ रसात्मकं वाक्यम् ३ कवितामन्थ ।
काश[1], अव्य (अ) अपि नाम, प्रार्थये, कामये ।
काश[2], सं. पु (सं. पु न) काश, अमरपुष्पक, वनहासक २. कास, क्षवथु ।
—श्वास, सं. पु, दे 'दमा'।
काशिका, वि (सं.) प्रकाशिका । स स्त्री (सं) काशी २ अष्टाध्यायीवृत्ति (स्त्री.)।
काशी, सं स्त्री (सं.) शिवपुरी, वाराणसी, तप स्थली।
—फल, सं. पु (सं न) कूष्माड -रुक, पीत, पुष्पा-फला ।
काश्त, सं. स्त्री (फा) कृषि (स्त्री), कर्षण, कृषिकर्मन् (न)।
—कार, सं. पु (फा) कर्षक, कृषाण ।
काषाय, वि (सं.) गैरिक रक्तधातु, वर्ण। सं. पु, गैरिकरजितवस्त्रम् ।
काष्ठ, सं. पु (सं. न) दे 'काठ'।
—कीट, सं पु (सं) घुण ।
काष्ठा, सं. स्त्री (सं) दिशा, दिश् (स्त्री) २ सीमा ३ शिखर-८ ४ चन्द्रकला ५ अष्टादशनिमेषात्मक काल ।
कास, स. पु (सं.) क्षवथु २ काश, वनहासक ।
कासनी, स स्त्री (फा) गुल्मभेद २. तस्य बीजम् ३ नील श्याम,-वर्ण ।
कासार, सं पु (सं.) सरोवर, महाजलाशय ।
कासीस, सं. पु (सं न) धातुशेखर, शोधनम्।
कास्टिक, वि (अ) दाहक ।
—सोडा, सं पु (अ) दाहकविक्षार ।
कास्मिक रे, सं. स्त्री (अ) सृष्टिरश्मि ।
काहिल, वि (अ) अलस, मद ।
किंकर, सं. पु (सं.) भृत्य, सेवक, प्रेष्य, चेट २. क्रीतदास ।
किंकर्तव्यविमूढ़, वि (सं.) सम्भ्रान्तमनस्, व्याकुलचित्त ।
किंकिणी, सं स्त्री (सं) क्षुद्र-घटी-घंटिका २ काची वि (स्त्री), रशना।
किंचित्, वि (सं) स्तोक, अल्प।
किंजल्क, स पुं (सं) पद्मकमल,-केसर: २ *अवयरल*, *कज्जलम्* (न) ३ नागकेसर:।
किंतु, अव्य (सं.) परन्तु, तु, पुन २ अपि तु, प्रत्युत, पुन, परन्तु ।
किंनर, सं. पु (सं.) किंपुरुष, तुरगवदन, अश्वमुख ।
किंपुरुष, सं पु (सं.) किन्नर: २ कुपुरुष ३ वर्णसकर ।

किंवदती, स स्त्री (सं) जन प्रवाद श्रुति (स्त्री) कर्णोपकर्णिका ।

किंवा, अव्य (स) वा, अथवा यद्वा, किमुत ।

किंशुक, स पु (स) पलाश दे 'ढाक' ।

किं, क्रि वि (स किम्) कथ केन प्रकारेण ।

कि, अव्य (फा) यत् यथा, इति ।

किचकिच, स स्त्री (अनु) प्रलाप प्रजल्पनम् २ कलह ।

किचकिचाना, क्रि अ (अनु) दन्तैर्दन्तान् निष्पीड्(चु) घृष (भ्वा प से)।

किट्ट, स पु (स न) धातुमलम् २ तैलादीना मलम् ३ कर्क मल शपम् ।

कितना वि (स कियत्) किंपरिमाण किंमात्र २ अधिक बहु ।

कितने, वि पु (स कति) किंसंख्याका ।

कितव, स पु (स) द्यूतकार , अक्षदेविन् २ वचक ३ दुष्ट ।

किताब, स स्त्री (अ) पुस्तक ग्रन्थ २ पत्रिका, पञ्जिका ।

—का (किताबी) कीड़ा, स पु , ग्रथ पुस्तक, कीट । २ सदापाठिन् ।

किताबत, स स्त्री (अ) लेख लेखनम् । खत क—, स स्त्री पत्रव्यवहार ।

किधर, क्रि वि, (स कुत्र) क कस्मिन् स्थले २ का दिशा प्रति, कस्यां दिशि ।

किन, सर्व ('किम' का बहु) के (पु), का (स्त्री) कानि (न)।

किनका, स पु (स कणिका) कणी, कणा क्षत तडुल धान्यम् ।

किनारा, स पु (फा) तीर, तटम् २ उपांत, प्रान्त ३ वस्त्रप्रान्त , अचल ४ पार्श्व , पक्ष ५ सीमा ६ अन्त ।

—करना, मु दूरे स्था (भ्वा प अ) परित्यज (भ्वा प अ)।

किनारी, स स्त्री (फा किनारा >) स्वर्ण-रजत, जालाभरणम् ।

किनारे, क्रि वि (फा किनारा) तीरे, तटे २ सीमायाम् ३ पृथक्, दूरे ।

—किनारे, अनु,-कूल तट तीरम् २ सीमाम् अनु ।

—लगाना, मु , समाप्-संपद् (प्र)।

किन्नर, स पु (स) किंपुरुष , देवयोनिभेद ।

किन्नरी, स स्त्री (स) किन्नरजातिनारी ।

किफायत, स स्त्री (अ) मितव्यय , अमुक्तहस्तत्वम् ।

किबला, स पु (अ) प्रतीची २ मक्कानगरी ३ पूज्यजन ४ पितृ ।

—नुमा, स पु (अ+फा) दिग्दर्शकयत्रम् , दिग्घटी दिग्घटिका ।

किरकिरा, वि (स कर्करम् >) शार्करिल, सिकतिल ।

किरकिरी, स स्त्री (स कर्करम् >) नेत्रपतितो धूल्यादिकण २ त्रसरेणु अणुरणु ।

किरच, स स्त्री (स कृति >) अनिखड्ग , अग्रयत्नमसक्ता छुरिका २ काष्ठकाचादीना तीक्ष्णाग्र शकलम् ।

किरण, स स्त्री (स पु) रश्मि मरीचि, दीधिति , मयूख , कर , अंशु अभीशु ।

—माली, स पु (स -लिन्) सूर्य

किरमिच, स पु (अ कैन्वस) शाण, शणपट , स्थूलवस्त्रभेद ।

किरांची, स स्त्री (अ कैरेज >) वहनशकट -टम् ।

किरात, स पु (स) अशिष्ट असभ्य,-जन २ वन्यजातिभेद ।

—पति, स पु (स) शिव ।

किरातार्जुनीय, स पु (स न) भारविप्रणीत महाकाव्यम्

किराना, स पु (स क्रयणम् अथवा कीर्ण >) वाणिज्य, वणिक्कर्मन् (न) २ गधद्रव्याणि ।

किराया, स पु (अ) वहनमूल्य, तार्य, आतर (ता)र २ भाटक, भाटकम् ३ भृति (स्त्री), भृत्या ।

—नामा, स पु , भाटकपत्रम् ।

किराये का टट्टू, स पु , वैतनिक , सवेतनो दामेर ।

किरायेदार, स पु (फा -यादार) भाटकवासिन् ।

किरीट, स पु (स) दे 'मुकुट' ।

किलक, स स्त्री (हिं किलकना) हर्ष-ध्वनि नाद -स्वन , किलकिला २ कलम, नड नल ।

किलकना, क्रि अ (स किलकिला >) किलकिला-राव कृ, हर्षध्वनि कृ ।

किलकारना, क्रि अ, दे 'किलकना'।

किलकिलाना, क्रि अ (स किलकिला >) १ दे 'किलकना' २ कोलाहल कृ ३ वाक्कलह कृ।

किलनी, स स्त्री (हिं कीड़ा)। कुक्कुर, यूक यूका।

किला, स पु (अ) दुर्ग, कोट।

—दार, स पु दुर्गाध्यक्ष, कोटपाल।

—बंदी, स स्त्री, दुर्गनिर्माणम् २ व्यूहरचना।

किलकारी, स स्त्री (हिं किलकना) किलकिला, हर्षनाद २ कोलाहल ३ चीत्कार।

किल्लत, स स्त्री (अ) न्यूनता।

किल्ला, स पु (स कील >) बृहत्-स्थूल, कील शङ्कु २ बृहत्, शूल-स्थूणा शलाका।

किल्ली, स स्त्री (हिं किल्ला) अर्गल, अर्गलाबन्ध २ कील, कीलम् ३ शूल स्थूणा।

किल्विष, स पु (स न) पापम् २ अपराध ३ रोग।

किवाड़, स पु (स कपाट) कपाटी, अररम् २ द्वार, द्वार् (स्त्री)।

—खटखटाना, क्रि स, कपाटम् अभिहन् (अ प अ)।

किशमिश, स स्त्री (फा) शुष्क, द्राक्षा गोस्तनी।

किशलय, स पु (स पु न) किसलय-य, पल्लव, अङ्कुर, प्ररोह २ मंजरी।

किशोर, स पु (स) एकादशावधिपञ्चदशवर्षपर्यन्तवयस्को बाल २ बालक ३ पुत्र।

किशोरी, स स्त्री (स) तरुणी, बाला, बालिका, कन्या, युवती ति (स्त्री)।

किश्ती, स स्त्री (फा) नौका २ दीर्घचतुरस्रपात्रम् ३ मञ्जूषा, क्षुद्रकोष।

किस, सर्व (सं कस्य >) किम्' के रूपों से।

—तरह, क्रि वि, कथ, केन प्रकारेण, कया रीत्या।

किसलय, स पु, दे 'किशलय'।

किसान, स पु (सं कृषाण) कर्षक, कृषिक, कृषीवल, क्षत्रिक, क्षत्राजीव, क्षत्रिन्।

किसानी, स स्त्री (हिं किसान) कृषि (स्त्री), कृषिकर्मन् (न)।

किसी, सर्व (हिं किस) 'किम्' के रूपों के साथ चित्, चन वा अपि लगाकर। [उ० किसी ने — कश्चित्, कोऽपि, कश्चन (पु), काचित् (स्त्री), किंचित् (न) इ।]

—तरह, क्रि वि येन केन प्रकारेण, कथंचित्।

किसे, सर्व (हि किस) क वा किम् (द्वितीया), कस्मै, कस्यै, कस्मै (चतुर्थी)।

किस्त, स स्त्री (अ) देयभाग, ऋणांश, खण्डिका।

—करना, क्रि स, अंशांशत ऋण परिशुध् (प्र)।

—वार, क्रि वि, अंशश, अंशांशत।

किस्म, स स्त्री (अ) प्रकार, भेद, जाति (स्त्री) २ प्रकृति (स्त्री), स्वभाव।

किस्मत, स स्त्री (अ) भाग्य, भागधेय, दिष्ट, दैवम् २ प्रान्त, -भाग खण्ड।

खुश—, वि, धन्य, पुण्यवत्।

बद—, वि, अधन्य, दैवहतक।

—आजमाना, मु, भाग्य परीक्ष् (भ्वा आ से)।

किस्सा, स पु (अ) कथा २ वृत्तान्त ३ कलह।

की, प्रत्य ('का' का स्त्री) दे 'का'।

कीक, स स्त्री (अनु) चीत्कार, उत्क्रोश।

कीकट, स पु (स कीकटा) मगधप्रदेश २ तत्रत्यानार्यजाति (स्त्री) वि०, निर्धन २ कृपण।

कीकर, स पु (सं किंकिरात) दीर्घकण्टक।

कीकस, स पु (स न) अस्थि (न), हड्डम् २ कीटभेद। वि, दृढ, कठिन।

—मुख, स पु (स) खग, पक्षिन्।

कीचक, स पु (सं) सरन्ध्रो वंश, सच्छिद्रो वेणु। २ विराटराजस्य श्याल।

कीचड़, स पु (स चिक्किल) पङ्क-क, जम्बाल, अवकील, कर्दम, शाद, निषद्वर।

कीट[१], स पु (स) कीटक, कृमि, क्रिमि, कीलुग।

कीट[२], सं स्त्री (स किट्टम्) घृततैलादीनां मलम्।

कीड़ा, स पु (स कीट) दे 'कीट'। २ सर्पशावक, सरीसृप ३ सर्प, अहि (पु) ४ रक्तपा, जलौका।

—लगना, क्रि अ, कीटै भक्ष् (कर्म)।

कीड़ी, स स्त्री (हिं कीड़ा) क्षुद्रकीट २ पिपीलिका ३ मलूका।
कीना, स पु (फा) द्वेष वैर, द्रोह।
कीप, स स्त्री (अ कीफ) निवाप।
कीमत, स स्त्री (अ) मूल्य अर्घ।
कीमती, वि (अ) महार्घ बहुमूल्य।
कीमा, स पु (अ) कृत्तमांसम्।
कीमिया, स स्त्री (फा) रसायनम्, रस, विद्या शास्त्र तन्त्रम्।
कीर, स पु (स) शुक दे 'तोता'।
कीर्तन, स पु (स न) गुणकथनम् २ इष्ट गुणगानम्।
कीर्ति, स स्त्री (स) यशस् (न), विख्याति विश्रुति (स्त्री) अभिख्या समाख्या।
—मान्, वि (स-मत्) यशस्विन्, विश्रुत, विख्यात।
कील, स स्त्री (स पु) कीलक, शङ्कु, लोह, कील शकु २ लवंगनामक नासिकाभूषणम् ३ मुखस्फोटक।
कीलक, स पु (स) कील, कीला २ नाग दान, भारयष्टि (स्त्री) ३ महाकील, शूल ४ स्थाणु, स्थूणा ५ अन्यमन्त्रप्रभावनाशको मत्र।
कीलना, क्रि स (स कीलनम्) कील् (चु) कीलैः बध् (क्रू प अ) २ अभिचारप्रभाव नाश (प्र) ३ (सर्पादिव) वशीकृ।
कीला, स पु (स) दे 'कील'।
कीलाल, स पुं (स न) अमृतम् २ जलम् ३ रक्तम् ४ मधु (न)।
कीलित, वि (स) (कालै) बद्ध, दृढीकृत, पिनद्ध।
किली, स स्त्री (स कील >) कर्णी, व्यावर्तनकील, दल्पकीलक २ कुञ्चिका, उद्घाटकम् ३ विवर्तनकील ४ कील ५ अक्षरेखा, अक्ष।
कीश, स पु (स) कपि २ खग ३ सूर्य।
कुअर, स पु (स कुमार) पुत्र, सूनु (पु) २ बालक ३ राजकुमार ४ युवराज।
कुआरा, वि पु (स कुमार) अकृतविवाह।
[-री (स्त्री) -अपरिणीता, अनूढा कुमारी।]
कुइ, स स्त्री, दे 'कुमुदिनी'।

कुकुम, स पु (स न) काश्मीरज, दे 'केसर' २ दे 'रोली'।
कुचन, स पु (स न) संकोच, संकोचनम्, संक्षेपणम्।
कुचिका, स स्त्री (स) ताला, तालिका, साधारणी।
कुचित, वि (स) दे आकुचित।
कुज, स पु (स पु न) निकुञ्ज-ज, लता, गृह मडप।
—कुटीर, स स्त्री (स पु) लतागृह पर्णशाला, कुञ्जगृहम्।
—विहारी, स पु (स रिन्) श्रीकृष्ण।
कुजड़ा, स पु (स कुञ्ज >) हरितकविक्रय जातिविशेष २ शाकविक्रयिन्।
कुजर, स पु (स) गज, द्विप २ कश।
(टि समासान्त में 'कुजर' श्रेष्ठतावाचक है—नरकुजर – श्रेष्ठपुरुष)।
कुजी, स स्त्री (स कुचिका) ताली, उद्घाटकम्, अनुद्घ, साधारणी। २ टीका, व्याख्या।
कुठ, वि (स) कुठित, धाराहीन, तीक्ष्णता रहित २ मूर्ख।
कुठित, वि (सं) कुठीकृत, हततैक्ष्ण्य २ निष्प्रभीकृत ३ अनुपयोगन्।
कुड, स पु (स कुण्ड –ड–डी) पल्वल–ल, अल्पसरस (न), वेशन्त, क्षुद्रजलाशय २ अग्नि-यज्ञ-हवन,-कुण्डम् ३ स्थाली ४ विशालमुखनतिगम्भीरपात्रम् (हिं मटका) ५ सधवाया जारजपुत्र ६ लौहशिरस्त्रम् ७ मानभेद।
कुडल, स पु (स पु न) कर्णभूषण वेष्टन, कर्णभूषणभेद २ वलय ३ परिवेष, ४ तेजोमंडलम् ४ आवेष्टनम्, व्यावर्तनम्।
—करना वा मारना, क्रि स, वतुलो पुरा, कृ, व्यावृत् परिवेष्ट (प्रे)।
कुँडलिया, स स्त्री (स कुण्डलिका) मात्रिक छन्दोभेद।
कुडली, स स्त्री (स) मिष्टान्नभेद (हिं जलेबी) २ कुंतल, चूर्णकुन्तल ३ जन्मपत्र, पत्रिका ४ सर्पस्य वर्तुलाकारास्थिति (स्त्री)।
कुडा, सं पु (सं कुण्ड) जीवति भर्तरि जारज।

कुंडा[२], स पु (सं कुण्डलम्>) लोह-ग्रहणी धरणी २ अर्गल-ल-लाली।

कुंडा[२], स पु (स कुण्ड-कम्) विशालमुख मतिगम्भीरपात्रम् (हिं मटका)।

कुंडिन, स पु (स न) विदर्भराजधानी।

कुंडी[१], स स्त्री (स) कुण्डी, खप्पर।

—डंडा, स पु, कुण्डीदण्ड-ण्डौ।

कुंडी[२], स स्त्री (हिं कुण्डा) द्वार-शृंखला २ अगल ल-लाली ३ शृङ्खला मधि-ग्रथि।

कुंत, स पु (स) प्रास, तोमर।

कुंतल, स पु (स) केश शिरोरुह।

कुंतिभोज, स पु (स) भोजप्रदेशशासक, कन्या पालकपितृ (पु)।

कुंती, स स्त्री (स) पृथा, पाण्डुपत्नी, युधिष्ठिर जननी।

कुंद[१], स पु (स पु न) महापुष्प, वन हास २ कमलम्।

कुंद[२], वि (फा) कुण्ठ, तीक्ष्णतारहित २ मन्द, जड।

—जहन, वि (फा) मन्दमति, मूढ।

कुंदन, स पु (स कुन्द >) विशुद्ध सुवर्णम् वि भास्वर २ पवित्र ३ नीरोग।

कुंदा, स पु (फा) बृहत्-स्थूल-काष्ठम् २ अग्न्यस्त्रस्य काष्ठमयोऽवरभाग ३ काष्ठनिगड ४ मुष्टि (स्त्री), वारण।

कुंदी, स स्त्री (फा कुन्दा>) मुद्गरैर्वस्त्रताडनम् २ ताडनम्।

कुंभ, स पु (स) घट, घर्म, कलश शा शम् २ गजकुम्भ, हस्तिशिरस पिण्डद्वयम् ३ कुम्भकप्राणायाम ४ द्वादशवार्षिक पर्व विशेष ५ राशिविशेष (ज्यो)।

—कर्ण, स पु (स) रावणानुज।

—योनि, स पु (स) अगस्त्यो मुनि।

कुंभक, स पु (स) कुम्भ, प्राणायामे वायुस्तम्भनम्।

कुंभी, स स्त्री (स) क्षुद्र-लघु-कुम्भ-घट।

—पाक, स पु (स) नरकविशेष।

कुंभी, स पु (स कुम्भिन्) गज २ नक्र ३ विषकीटभेद।

कुंवर, स पु, दे 'कुँअर'।

कु, अव्य (स) पापकुत्सात्पत्वादिद्योतक मव्ययम् (उ कुकर्म=पापकर्म इ)।

कुआँ, स पु (सं कूप) अन्धु, प्रहि, अवट, खात अवत, कच्छ।

—खोदना, मु, परान् पीड (चु)।

कुआर, स पु (स कुमार >) आश्विन, इष, आश्वयुज।

कुइयाँ, स स्त्री (हिं कुआँ) कूपी, कूपक, खानक, अन्धुक।

कुईं, स स्त्री, दे 'कुमुदिनी'।

कुक, स पु (अ) पाचक, सूद, वल्लव, रंधक।

कुकड़ी स स्त्री (स कुक्कुटी) ताम्रचूडी २ शम्यम् ३ सूत्रपत्नी, तन्तुगुच्छ।

कुकर, स पु (अ) पचन पात्र यन्त्रभेद, कुकरम्।

कुकर्म, स पु (स न) कु-कार्य-कृत्य-कृति (स्त्री) दुराचार, पाप दुष्टता।

कुकर्मी, वि (स -र्मिन्) दुर्वृत्त, पापिन्, पाप, दुरात्मन्।

कुकुरमुत्ता, स पु (स कुक्कुरमूत्रम्>) छत्रक।

कुक्कुट, स पु (स) ताम्रचूड चरणायुध, कालज्ञ, उषाकर, शिखण्डिक।

कुक्कुर, स पु (स) श्वन्, दे 'कुत्ता'।

कुक्षि, स स्त्री (स पु) उदर, जठर, तुन्दम् २ गर्भाशय, गर्भस्थानम् ३ पदार्थान्तर्भाग ४ गुहा।

कुगति, स स्त्री (स) दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री)।

कुच, स पु (स) स्तन, उरोज २ चूचुक-क स्तनाग्रम्।

कुचकुचाना, क्रि स (अनु कुचकुच) व्यध (दि प अ) छिद्र कृ।

कुचक्र, स पु (स न) कूट-कपट, व्याज, उपचार, कपट-कैतव प्रयोग।

कुचक्री, वि (सं -क्रिन्) व्याजापर्क, कपट प्रयोजक।

कुचलना, क्रि स (अनु) क्षुद् (त प से) २ मृद् (क्र प से) पिष् (रु प अ) ३ भूरि तड् (चु) ४ पादतलेन आहन् (अ प अ)।

कुचला, स पु (स कचीर) विषाक्त, विषतिन्दु, रम्यफल, कपीलु, कारस्कर।

कुचाल, स पु (स कु+हिं चाल) दुराचार, कुचर्या कदाचरणम्।

कुचाली, वि (हिं कुचाल) दुराचारिन्, दुर्वृत्त।

कुचेष्टा, स स्त्री (स) दुश्चेष्टा, हानिकरोपक्रम।

कुचैला, वि (स कुचेल) मलिनवेष, कुवसन।

कुछ, वि (स किंचित्) (मात्रा) अल्प, स्वल्प, स्तोक, ईषत्, २ (संख्या) कतिचित्, कति पय, ३ किमपि, यत्किंचन, ४ 'किम्' के तीनों लिंगों के रूपों के साथ चित्, चन, अपि लगाते हैं, उ केचित्, काश्चित्, कानि चित् इ।

—कर देना, मु, मन्त्रै वशीकृ।

कुत, स पु (म) मगरमच्छ २ वृष।

कुजाति, स स्त्री (म) हीन-नीच-निकृष्ट जाति वर्ण। स पु, दुष्कुलीन, अन्त्यज, नीच।

कुट¹, स पु (स कुष्ठम्) पद्मक, कौबेरम्।

कुट², स पु (स) दुर्ग, कोट २ गृहम् ३ पर्वत ४ कलश।

कुटकी, स स्त्री (स कटुकीट) दश, मशक, माक्षिका, वनमक्षिका।

कुटनपन, स पु (स कुट्टनी >) दूतीवृत्ति (स्त्री) २ उपजाप, भेदवर्द्धनम्।

कुटना, स पु (हिं कूटना) भगभक्षकः, सचारक, कुट्टाशिन् २ पिशुन।

कुटनी, स स्त्री (स कुट्टनी) कुट्टिनी, दूती, दूतिका, सचारिका शम्भली, रतताली।

कुटिया, स स्त्री (स कुटी) उटज —, पर्ण शाला, पर्णकुटी टि (स्त्री) कुटीर।

कुटिल, वि (स) वक्र, जिह्म, अराल, भुग्न, न्युब्ज २ वञ्चक, प्रतारक, कपटिन्, छलिन्।

कुटिलता, स स्त्री (स) कौटिल्य, वक्रता, जिह्मता २ छल, कपट, प्रतारणा।

कुटी, स स्त्री (स) } क्षुद्रगृहम्,
कुटीर, स पु (स) } दे 'कुटिया'।

कुटुम्ब, स पु (स पु न) गृहजन, पुत्र कलत्रादय, ज्ञाति (स्त्री), बान्धवा, सतति (स्त्री) २ कुल, वश, जाति (स्त्री)।

कुटुंबी, स पु (स-बिन्) गृहस्थ, गृहपति, गेहिन् २ ज्ञाति (स्त्री), बन्धु, बान्धव।

कुटुम्बिनी, स स्त्री (स) गृहिणी, गेहिनी, भार्या, सुतिनी, पुरन्ध्री।

कुटेव, स स्त्री (स कु+हिं टेव) कुप्रवृत्ति (स्त्री), व्यसन, दुर्गुण।

कुट्टनी, स स्त्री (स) दे 'कुटनी'।

कुट्टी, स स्त्री (हिं काटना) यवसखण्ड २ बालकेषु मैत्रीविच्छेद।

कुठला, स पु (स कोष्ठ >) क्षुद्रधान्यकोष्ठ, मृन्मय लघुधान्यागारम्।

कुठार, स पु (स) परशु, द्रुघण, वृक्षादनी, वृक्षभेदिन्, परश्वध।

कुठाराघात, स पु (स) परशुप्रहार २ तीव्र प्रहार।

कुठाली, स स्त्री (स कु+स्थाली >) तैजसा वतनी मु (मूषा पी)।

कुठौर, स पु (स कु+हिं ठौर) कुस्थानम् २ अनवसर, असमय।

कुड़कुड़ी, स स्त्री (अनु) दे 'गुड़गुड़ाना'।

कुड़बुड़ाना, क्रि अ दे 'कुढ़ना'।

कुडल, स पु, (रेखाल्मतया) आ, व्यावर्तन आकुञ्चनम्।

कुडुक, स स्त्री (फा कुरक) कुक्कुटीरतम् २ अनण्डदा कुक्कुटी। वि, व्यर्थ, निरर्थक।

कुडौल, वि (स कु+हिं डौल) दुर्दर्शन, कदाकार, कुरूप।

कुढंगा, वि पु (स कु+हिं ढंग) अशिष्ट, असभ्य, दुःशील।

कुढ़न, स स्त्री (हिं कुढ़ना) मनस्ताप, चित्तव्यथा।

कुढ़ना, क्रि अ (स क्रुध >) दुर्मनायते (ना धा), क्षुभ् (दि प से), अन्त परितप् (दि आ अ)।

कुढब, वि (स कु+हिं ढब) कुरूप, दुर्द र्शन २ अदक्ष ३ कठिन।

कुढ़ाना, क्रि स (हिं कुढ़ना) सतप्-उद्विज् (प्रे) २ प्रकुप्-क्रुध (प्रे)।

कुतरना, क्रि स (स कर्तनम्) चर्वीन छिद् (रु प से), दन्तै खण्ड् (चु)।

कुतर्क, स पु (स) हेत्वाभास, मिथ्याहेतु, वितण्डा, प्रजल्प, विवाद।

कुतर्की, वि (स र्किन्) वितण्डावादिन्, मिथ्याहेतुवादिन् २ वाचाल, वावदूकः।

कुतिया, स स्त्री (हिं कुत्ती) सरमा, कुक्कुरी, शुनी, सारमेयी, भषी।

कुतुब, स पु (अ) ध्रुव, ध्रुवतारा।

—नुमा, स पु, दे 'किबलानुमा'।

कुतूहल, स पु (स न) उत्कण्ठा कौतूहल, कुतुक, कौतुक, जिज्ञासा २ अपूर्व दुर्लभ-अदृष्ट,-वस्तु (न) ३ विनोद ४ आश्चर्यम्।
कुत्ता, स पु (दश) कुक्कुर, श्वन्, शुनक, कौलयक, भषक, सारमय, मृगदशक, भषण, वक्रलांगूल वृकारि, शयालु ।
कुत्ते की हुड(ल)क, स स्त्री आल्कं, जल सत्रास, अलर्काभिभव ।
कुत्ती, स स्त्री (हिं कुत्ता) दे 'कुतिया ।
कुत्सित, वि (स) अधम, अवम, गर्ह्य निन्दित।
कुदरत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री) माया, ईश्वरशक्ति (स्त्री) २ अधिकार, प्रभुत्वम् ३ संसार जगत् (न) ४ रचना।
कुदरती, वि (अ) नैसर्गिक प्राकृतिक मायामय २ स्वाभाविक सहज ३ दिव्य ऐश्वर (री स्त्री)।
कुदाँव, स पु (स कु + हिं दाँव) छल, विश्वासघात २ कुस्थिति (स्त्री) ३ कुस्थानम्।
कुदान¹, स पु (स न) गर्ह्यदानम् २ कुपात्राय दानम्।
कुदान², स स्त्री (हिं कूदना) कूर्दन, झप पा २ कूर्दनभूमि (स्त्री) झंपान्तरालम्।
कुदाना, क्रि स, कूदना' के धातुओं के प्रे रूप।
कुदाल, स पु (स कुद्दाल) कुठार, खन दारण, स्तम्बघ्न, खनित्रम् २ टक, पाषाणदारण ।
कुदिन, स पु (स न) आपत्काल, विपत्ति समय २ दुर्दिनम्, ऋतुविपरीत दिनम्।
कुदृष्टि, स स्त्री (स) पापदृष्टि (स्त्री) २ अमंगलदृष्टि ।
कुधर, स पु (स) पर्वत २ शेषनाग ।
कुनकुना, वि (स कदुष्ण) ईषदुष्ण, कोष्ण कवोष्ण मन्दोष्ण।
कुनबा, स पु, दे 'कुटुम्ब ।
कुनाम, स पु (स -मन् न) अप, ख्याति कीर्ति (स्त्री)।
कुपथ, स पु (स कुपथ) कापथ, कुमार्ग २ निषिद्धाचरणम् ३ कुमितमप्रदाय ।
कुपन्थी, वि (हिं कुपथ) कुपथिन्, कुमार्गिन्, कदाचारिन्।
कुपथ, स पु (स) दे 'कुपथ'।
—गामी, वि (स मिन्) दे 'कुपन्थी'।
कुपथ्य, स पु (स न) रोगजनको आहार विहारौ।
कुपात्र, वि (स न) अयोग्य अनर्ह, निर्गुण अनधिकारिन्।
कुपित, वि (स) क्रुद्ध, रुष्ट ।
कुपुत्र, स पु (स) दे 'कपूत'।
कुप्पा, स. पु (स कुतुप) कूपक कुतू (स्त्री) चर्ममय स्नेहपात्रम्।
—होना, मु आप्याम् स्फाय् (भ्वा आ मे) पीनीभू०।
कुप्पी, स स्त्री (हिं कुप्पा) चर्मकूपी लघु कुतुप -कुतू (स्त्री))
कुफ्र, स पु (अ कुफ्र) यवनेतरसम्प्रदाय २ यवनमतविरोधिवाक्यम्।
कुफल, स पु (अ) ताल, द्वारयन्त्रम्।
कुब, स पु (स कुब्ज >) ककुद द, कुद (स्त्री)।
कुबड़ा, वि (स कुब्ज) कुब्जक, न्युब्ज, वक्रपृष्ठ गडुल र, गडु। स पु कुब्ज इ ।
कुबड़ी, स स्त्री (हिं कुबड़ा) नतशीर्षा यष्टि (स्त्री) २ दे 'कुब्जा'।
कुबानि, स स्त्री, दे 'कुटव'।
कुबुद्धि, वि (स) मूर्ख, मन्दमति। स स्त्री, मौर्ख्य मूढता।
कुबेर, स पु (स कुबेर) धनद, यक्षराज, वैश्रवण, राजराज इच्छावसु नरवाहन निधीश्वर ।
कुबेला, स स्त्री (स कुवेला) कु,-समय काल २ अनवसर, अयोग्यकाल ।
कुब्ज, वि (स) दे 'कुबड़ा ।
कुब्जा, स स्त्री (स) कंसदासी २ मथरा नाम्नी कैकेयीदासी। वि वक्रपृष्ठा, कुब्जा।
कुभा, स स्त्री (स) काबुलनदी २ भूमिच्छाया।
कुमक, स स्त्री (तु) मैत्र, सहायता।
कुमकुम, स पु (स कुंकमम्) केसर रम, काश्मीरजम्।
कुमकुमा, स पु (तु० स) लाक्षा,-गोल-वर्तुल २ अलंकरणोपयुक्त काचगोल ३ संकीर्णमुख-कमंडलु -करक ।

कुमाच, सं पु (अ कुमाश) कौशेयवस्त्रभेद ।
कुमार, सं पु (सं) बाल, बालक २ पुत्र ३ राजपुत्र ४ युवराज ५ कार्तिकेय ६ अप्राप्तयौवन ८ सनत्कादय ऋषय ७, भारतवर्ष -र्षम्। वि, दे 'कुआरा'।
कुमारबाज, सं पु (अ+फा) धनकार, कितव ।
कुमारी, सं स्त्री (स) बाला, बालिका, कन्या २ पुत्री, ३ राजपुत्री ४ द्वादशवर्षा कन्या ५ मही, घृतकुमारी ६ सीता ७ पार्वती। वि दे 'कुँआरी'।
कुमार्ग, सं पु (स) दे 'कुपथ'।
कुमुद, सं पु (सं न) कैरव, चन्द्रकान्त, कल्हार, शीतल्क, इन्दुकमल, चन्द्रिकाम्बुज, गन्धसोम, कुवलयम् २ कर्पूर -र ३ रूप्यम्।
—बन्धु, स पु (सं) चन्द्र २ कर्पूर -रम्।
कुमुदिनी, सं स्त्री (स) दे 'कुमुद' २ कुमुदवत् सरस् (न)।
—पति, सं पु (स) चन्द्र ।
कुमेरु, सं पु (सं) दक्षिणध्रुव ।
कुमोदिनी, सं स्त्री, दे 'कुमुदिनी'।
कुम्मैत, स पु (तु) पिंग,-वर्ण -रग २ पिंगाश्व ।
कुम्हड़ा, सं पु (स कूष्माण्ड) दे 'काशीफल'।
कुम्हलाना, क्रि अ (स कुम्लान) म्लै-ग्लै (भ्वा प अ), विशॄ (कर्म), विशीर्णी भू।
कुम्हार, स पु (स कुम्भकार) कुलाल, चक्रिन्।
कुम्हारिन, सं स्त्री (हिं कुम्हार) कुलाली, कुम्भकारी, चक्रिणी।
कुरंग, स पु (स) हरिण, मृग २ कृष्णसार ।
कुरंग, वि कुवर्ण, निन्द्यरग।
कुरंगी, स स्त्री (स) मृगी, हरिणी।
कुरंड, स पु (स कुरुविंदम्) कावलवणम् २ माणिक्यम्।
कुरकुरा, वि (अनु कुरकुर) भंगुर, भिदुर।
कुरबान, वि (अ) इष्ट, हुत, बलित्वेन दत्त।
कुरबानी, सं स्त्री (अ) यज्ञ, याग २ बलि, उत्सर्ग, आलभ ३ समर्पण, परित्याग ।
कुरसी, स स्त्री (अ) आसदी, पीठ, आसनम् २ ४ स्तम्भ प्राकार भवन, मूलम् ५ वंशपरंपरा।
—नामा, सं पु (अ+फा) वंश, वृक्ष-परंपरा।
आराम—, सं स्त्री (फा+अ) विश्रामासदी।
कुरा, सं पु (अ) दे 'पाँसा'।
कुरान, स पु (अ) यवनधर्मपुस्तकम्।
कुराह, सं स्त्री (स कु+फा राह) दे 'कुपथ'।
कुरीति, सं स्त्री (स) कुप्रथा, कदाचार, कुव्यवहार ।
कुरु, सं पु (सं) नृपविशेष २ प्रान्तविशेष ३ कुरुवंशज ।
—क्षेत्र, स पु (स न) महाभारतसंग्राम भूमि (स्त्री)।
कुरूप, वि (सं) विरूप, कदाकार, दुर्दर्शन। स पु (सं न) वैरूप्य, कदाकार ।
कुरूपता, सं स्त्री (सं) दे 'कुरूप' सं पु।
कुरेद (ल) ना, क्रि स (सं कर्तनम्?) उद् वि, लिख् (तु प से), तक्ष् (भ्वा प से), तुद् (तु प से), घृष् (भ्वा प से) त्वक्ष् (भ्वा प वे) उत्खन् (भ्वा प से)।
कुर्क, वि (तु) ऋणहेतो अपहृत।
—करना, क्रि स ऋणहेतो अपहृ (भ्वा उ अ)।
—अमीन, स पु (तु+फा) ऋणादिहेतो द्रव्यापहर्ता, राजकर्मचारिन्।
कुर्की, स स्त्री (तु कर्क>) (राजाज्ञया) सम्पत्तिहरणम्।
कुर्ता, स पु (तु) चोल, उरोवस्त्रम्।
कुर्ती, स स्त्री (तु, कुर्ता>) आंगिक -क, कूर्पासक -कम्।
कुर्पर, स पु [स कु (कृ) पर] जानु (न) चक्रिका २ कफोणि (पु स्त्री) कफणी।
कुर्बानी, दे 'कुरबानी'।
कुर्री, स स्त्री (देश) कोमलास्थि (न)।
कुर्स, स पु (अ), गुटिका, गुलिका, वटिका।
कुर्सी, दे 'कुरसी'।
कुलंग, स पु (अ) रक्तशीर्षो धूसर खगभेद । २ कुक्कुट ३ दीर्घग्रीवो मनुष्य ।
कुलंजन, सं पु (सं) कुलन, कुलीन, गंध मूल २ नागला नागलता, मूलम्।
कुल, सं पु (सं न) वंश, अन्वय, वंशावली लि (स्त्री) २, जाति (स्त्री) ३ समूह ४ गृहम् ५ वाममार्ग ।

—**कलंक**, स पु (सं) कुलागार, कुलपांसन ।
—**कानि**, स स्त्री (स + हिं) कुल, गौरव मर्यादा।
—**तारण**, स पु (स) वंशोद्धारक ।
—**पति**, सं पु (स) गृहस्वामिन् २ दश सहस्रच्छात्राणां पोषकोऽध्यापकश्च ३ विश्वविद्यालयस्य उपप्रधानाधिकारिन् (अ॰ वाइस चांसलर)।
—**वती**, म स्त्री (स कुलवती) कुलीना, सद्वंशीना, आर्या।
कुल, वि (अ) सकल समस्त निखिल ।
कुलकुलाना, क्रि अ (अनु) कुलकुलध्वनिं कृ।
आँतें—, मु अतीव क्षुध (दि प अ)।
कुलक्षण, स पु (स न) अपलक्षण, दुश्चिह्न २ कदाचार, गर्ह्याचरणम्। वि दुराचारिन्।
कुलचा, स पु (फा कुलीचा) सकिण्वोऽपूप २ दे 'पूजी'।
कुलटा, स स्त्री (स) व्यभिचारिणी, पुंश्चली, बंधकी स्वैरिणी निशाचरी, नपारण्डा।
कुलत्थ, स पु (स कुलत्था) चक्षुष्या, लोचनहिता, दृक्प्रमादा।
कुलथी, स स्त्री (स कुलत्थ) धान्यभेद (शस्यभेद)।
कुलफ, स पु (अ कुफ्ल) दे 'ताला'।
कुल्फा, स पु (फा खुर्फ) बृहल्लोणी, घोलिका, शाकभेद। २ दे 'कुल्फी'।
कुल्फी, स स्त्री (हिं कुल्फ) धूमपान यन्त्रस्य भुग्ननाली २ हिमसन्तानीनिर्माणपात्रम् ३ हिमसन्तानी, घनमधुरदुग्धम्।
कुलबुलाना, क्रि अ (अनु कुलबुल) दुःखाद् अयानि आटृप (भ्वा प अ) २ अङ्गाणि गभीर स्वन् (भ्वा प से) ३ विसृप, सृप् (भ्वा प अ) ४ व्याकुल (वि) भू ५ दे 'खुजलाना'।
कुलबुलाहट, स स्त्री (पूर्व) शनैः सर्पण, कृमिसदृशी चेष्टा २ चञ्चलता कच्छुरता।
कुलहा, स पु (फा कुलाह) शङ्काकार शिरस्त्रम्।
कुलही, स स्त्री (हिं कुलहा) शिशुशिरस्त्रम्, दे 'कनटोप'।
कुलाँच, स स्त्री (तु कुलाच) दे 'छलांग'।

कुलाबा, स पु (अ) लोहपुट २ वडिश, मत्स्यवेधनम् ३ द्वारसंधि (पु) ४ शृङ्खला, अङ्कुश (स्त्री) ५ अर्गलम् ६ जलमार्ग, नाली।
कुलाल, सं पु (स) कुम्भकार २ वनकुक्कुट ३ उलूक ।
कुलिक, स पु (स) कलाविद् (पु) २ शिल्पिन् ३ कुलीन ४ कुलपति ।
कुलिश, स पु (स) वज्र, पवि २ विद्युत् (स्त्री) ३ कुठार ।
कुली, स पु (तु) भार, वाह हर, भारिक २ कर्मक (का) र श्रमजीविन्।
कुलीन, वि (स) महाकुल, अभिजात आर्य, सभ्य, सत्कुलीन।
कुलीनता, स स्त्री (स) आभिजात्य आर्यता।
कुलेल, स स्त्री (सं कल्लोल ~) क्रीडा, खेला, विहार केलि (पु स्त्री), विलास, लीला।
कुल्या, स स्त्री (स) क्षुद्रकृत्रिमनदी २ क्षुद्रनदी ३ पयःप्रणाली ४ कुलस्त्री।
कुल्ला, स पु (स कवल >) चलु, चलुक, चुलुक ।
कुल्हड़, स पु (स कुल्हरिका) करक, क्षुद्र मृत्पात्रम्।
कुल्हाड़ा, स पु (स कुठार, दे)।
कुल्हिया, स स्त्री (हिं कुल्हड़) क्षुद्रकरक, अतिक्षुद्रमृत्पात्रम्।
कुवलय, स पु (स न) नील, कुमुद कैरवराशिराजितम् २ नील, कमल-उत्पलम् ३ भूमण्डलम्।
कुवाच्य, वि (स) अश्लील, अशिष्ट, अवाच्य। स पु (स न) गाली, कुवचन अपशब्द ।
कुवेणी, स स्त्री (स) मत्स्यकरण्डी २ कुग्रथितवेणी।
कुवेर, स पु (स) कुबेर, दे ।
कुश, स पु (स) कुथ, दर्भ पवित्रम् २ जलम् ३ रामपुत्र ४ फाल ।
कुशन, स पु (अ) उपधान, उपबर्ह, उपबर्हणम्।
कुशल, वि (स) दक्ष, चतुर, प्रवीण, निपुण, विशारद, विचक्षण २ श्रेष्ठ, भद्र।
स पुं (स न) सुखं क्षेम, मङ्गलम्, भद्रं, शिवम् २ कुशमाहिन् ३ शिव ।

—क्षेम, स पु (सं न) सुख, क्षेम। मङ्गलम्।

कुशलता, सं स्त्री (स) पाटव, चातुर्य, निपुणता।

कुशा, स स्त्री (सं न्दर दम्) दर्भ, कुथ, पवित्र, याज्ञिक हस्वगर्भ, बर्हिस (पु न)।

कुशाग्र, वि (स) तीक्ष्ण, सूक्ष्म, तीव्र प्रखर।

—बुद्धि, वि (सं) तीक्ष्णमति। सं स्त्री, तीव्र-मति (स्त्री)।

कुशादगी, स स्त्री (फा) विशालता २ विस्तार, विस्तृति (स्त्री)।

कुशादा, स पु (फा) विस्तृत आवरण रहित।

कुशासन¹, स पु (स कुश+आसनम्) कुश विष्टर, दर्भासनम्।

कुशासन², स पु (स कु+शासनम्) दुःशासनम्, दुःसिन्राज्यव्यवस्था।

कुशील, वि (सं) दुराचार, दुर्वृत्त, दुःस्वभाव।

कुश्ता, स पु (फा न) धातुभस्मन् (न)।

कुश्ती, सं स्त्री (फा) नियुद्ध, मल्ल-बाहु-, युद्धम्।

कुष्ठ, स पु (सं न) श्वित्र श्वेत न, मण्डलक, दुश्चर्मन् (न) २ दे 'कूट'।

—नाशन, स पु (सं) वाराहीकन्द २ गौर सर्षप ३ क्षारीरवृक्ष।

कुष्ठी, वि (स कुष्ठिन्) श्वित्रिन्।

कुष्माण्ड, स पु (स) दे 'कुम्हड़ा'।

कुसंग, स पु (स) कुसंग, -सगति (स्त्री)।

कुसमय, सं पु (स) कुकाल, अशुभसमय २ अनवसर, असमय ३ विपत्काल।

कुसाइत, स स्त्री (स कु+अ साअत) अशुभमुहूर्त, अनवसर, कुसमय।

कुसीद, स पु (सं न) वार्द्धुष्य, वृद्धि (स्त्री)।

—जीवी, दे 'सूदखोर'।

—पथ, दे 'सूदखोरा'।

कुसुम्भ, स पु (स न) वह्निशिख, महारजनम् २ दे 'केसर'।

कुसुम्भा, स पु (स कुसुम्भम् >) कुसुम्भराग २ अहिफेनभागनिर्मित मादकद्रव्यम्।

कुसुम, सं पु (स न) पुष्प, प्रसून, सुम, सून, मणीवक, सुमनस (स्त्री, केवल बहु) २ लघुवाक्यमयग्रन्थम् ३ स्त्रीरजस् (न)।

—पुर, सं पु (सं न) पाटलिपुत्रम्।

—बाण, सं पु (सं) कामदेव।

कुसुमाञ्जलि, स स्त्री (स पु) पुष्पाञ्जलि।

कुसुमित, वि (स) पुष्पित, उत्फुल्ल, पुष्टित।

कुसूर, सं पु (अ) अपराध, स्खलितम्।

—वार, वि अपराधिन, दोषिन्।

कुहक, स पु (सं न) माया, अभिचार, इन्द्रजालम् २ ऐन्द्रजालिक ३ वंचक।

कुहकना, क्रि अ (अनु कुहू) कुहूरव कृ, कूज (भ्वा प से)।

कुहनी, स स्त्री (स कफोणि पु) कफणि (पु स्त्री), कफणा, कु (कू) र्पर।

कुहर, स पु (स न) छिद्र, विवर, बिल, रन्ध्रम्।

कुहरा, स पु (स कुहरी) तुषार, खवाष्प, धूमिका, कुहडिका, कुज्झटिका।

कुहराम, स पु (अ कहर+आम) विलाप, आक्रन्दन, परिदेवना २ महान् सङ्कुलम्।

कुही, स स्त्री (स कुधि) श्येन, शशान्तक, शशादन, कपोतारि।

कुहुक, पु, दे कुहू (२)।

कुहुकना, क्रि अ, दे 'कुहकना'।

कुहू, स स्त्री (स) अमावस्या २ कोकिल-मयूर,-आलाप।

कूँचा, सं पु (सं कूर्चम) शोधनी, समार्जनी, कूर्चकम्।

कूँची, स स्त्री (हि कूँचा) लघु-क्षुद्र,-शोधनी-कूर्चम् २ लोममयी मार्जनी ३ तूलिका, वर्ण-,तूली-तूलिका।

कूँच, स पु (स क्रुञ्च-ञ्चा) क्रौंच -चा, कलिक, कालिक।

कूँड, सं पु (सं कुण्डम्) सेचन नी २ सीता, हलरेखा ३ 'खोद'।

कूँडा, स पु (सं कुण्डम्), (जलार्थ) बृहन्मृत्पात्रम् २ द्रोणी-णि (स्त्री) ३ कुसुमपात्रम्।

कूँडी, सं स्त्री (हि कूँडा) लघुपाषाणद्रोणी-णि (स्त्री) २ पाषाणचषक-कम्।

कूक, स स्त्री (अनु) कोकिलकूजितम् २ केका, मयूरध्वनि ३ दीर्घमधुरध्वनि।

कूकना, क्रि अ (हि कूक) कूज् (भ्वा प से), कुहूरव कृ, केका कृ।

कूकर, स पु (सं कुक्कुर दे)।

कूच, सं पु (तु) प्रस्थान, प्रयाण, अपक्रम २ कटकत्याग ३ यात्रा।

—करना, क्रि अ, प्रस्था (भ्वा आ अ) प्रया (अ प अ)।

कूचा, स पु (फा च) वीथी, दे 'गली'।

कूजन, स पु (स न) कूजित, कलरव, खगध्वनि, विरुत, गुंजनम्।

कूजना, क्रि अ (सं कूजनम्) कूज् (भ्वा प से) कु (अ प अ), वि-रु (अ प से) २ गुंज (भ्वा प से), हु कृ।

कूजा, स पु (फा) सनालीक करक।

—मिसरी, स स्त्री, अर्द्धगोलाकारा घनीकृता सिता।

कूजित, वि (स) ध्वनित, स्वनित, गुंजित रुत, कलरवपूर्ण।

कूट[1], सं पु (स न) छल, कपट-ट, माया, वञ्चना, प्रतारणा २ असत्य ३ शृंग विषाणम् ४ उच्चशिखरम् ५ राशि ६ गूढार्थवार्ता, सनिंद उपालम्भ ७ प्रहेलिका, गूढप्रश्न ८ लौहमुद्गर ९ हरिणजालम् १० प्रच्छन्नवैरम् ११ नगरद्वारम् १२ भग्नशृंगो वृषभ।

वि, असत्यवादिन् २ प्रवञ्चक ३ कृत्रिम ४ श्रेष्ठ ५ निश्चल।

—नीति, स स्त्री (सं) कौटयकर्मन् (न)

—युद्ध, सं पु (सं न) कपटसंग्राम।

—योजना, स स्त्री (स) कुचक्रम्।

—साक्षी, स पु (स -क्षिन्) मिथ्यासाक्षिन्।

कूट[2], स स्त्री (हिं काटना वा कूटना) कर्तन, कृन्तनम् २ ताडन, कुट्टनम्।

कूटक, स पु (स न) छल, कपटम् २ उत्सेध, उत्तुंगता ३ फाल -ल, कुशिकम्।

कूटना, क्रि स (स कुट्टनम्) कुट्ट-चूर्ण्-यत् (चु), पिष् (रु प अ) २ प्रहन्-तड (चु)।

स पु तथा भाव, कुट्टन, चूर्णन, खण्डनम्, पेषणम् २ ताडन, प्रहरणम्।

—योग्य, वि, कुट्टनीय, चूर्णयितव्य।

—वाला, सं पुं कुट्टक, पेषक, ताडयितृ।

कूटा हुआ, वि., कुट्टित, पिष्ट, ताडित।

कूटस्थ, वि (सं) शिखरस्थ २ निश्चल ३ नित्य ४ गूढ।

कूटाक्ष, स पु (सं) कूट कपट-, अक्ष-देवन -सार।

कूटाख्यान, स पु (स न) गुप्तार्थ-गूढार्थ-कथा-उपाख्यानम्।

कूड़ा, स पु (स कूट = राशि >) अवस्कर, उच्छिष्ट, मल, निस्सारवस्तुसमूह।

—करकट, स पुं, दे 'कूड़ा'।

कूद, स स्त्री (हिं 'कूदना') प्लव, उत्, प्लुति (स्त्री) प्लवन झप -पा, वल्गनं, उत्प्लव।

—फाँद, स स्त्री कूर्दनप्लवनं, झपवल्गनम्।

कूदना, क्रि अ (सं कूर्दनम्) कूर्द् (भ्वा आ से), उत्प्लु (भ्वा आ अ), वल्ग (भ्वा प स) २ प्र मुद् (भ्वा आ से)।

स पु, दे 'कूद'।

—फाँदना, क्रि अ, इतस्ततः वल्ग। २ व्यायाम कृ।

कूप, सं पु (स) दे 'कुआँ' २ छिद्र, रंध्रम्।

—मण्डूक, स पु (सं) व्यवहारानभिज्ञ, अपक्वबुद्धि, अल्पदर्शिन्। २ अनुभव।

कूपन, स पु (अ) पत्रिका, *कूपनम्।

कूपी, स स्त्री (सं) कूपक, खातक २ दे 'कुप्पी' ३ नाभि (पु स्त्री), नाभी, तुन्दिका।

कूबड़, स पु (स कूबर >) ककुद -दम्।

कूर, वि (स क्रूर) निर्दय, निर्घृण, नृशंस २ भयंकर ३ दुष्ट ४ अलस ५ मूर्ख ६ कुलक्षण।

कूर्म, स पु (स) कच्छप, दे 'कछुआ' २ विष्णो कच्छपावतार ३ पृथिवी ४ ७ ऋषि प्राण-नाडी-आसन,-विशेष।

कूल, स पुं (स न) तट टी टं, तीरम् २ समीप, निकट ३ कुल्या ४ सरस् (न)।

कूल्हा, स पु (सं क्रोडम् >) नितम्बास्थि (न)।

कूष्माण्ड, स पु (स) दे 'कुम्हड़ा')।

कृच्छ्र, सं पुं (स न) दुःख, कष्टम् २ पापम् ३ मूत्रकृच्छ्ररोग ४ व्रतभेद। वि, दुष्कर, दुस्साध्य।

कृत, वि (स) विहित अनुष्ठित रचित सपादित, निर्मित। स पु सत्ययुगम् २ चतुर इति सख्या।

—कार्य, वि (स) सफल सिद्धार्थ।

—कृत्य, आप्तकाम मफलमनोरथ।

—युग, स पु (स न) सत्ययुगम्।

—विद्य, वि (स) विद्वम, पडित, बहुश्रुत।

कृतक, वि (स) कृत्रिम, अनैसर्गिक अस्वाभाविक २ अनित्य (न्याय०)।

—पुत्र, स पु (स) दत्तक, दत्रिम सुत।

कृतघ्न, वि (स) कृतज्ञतारहित अकृतवेदम्।

कृतघ्नता, स स्त्री (स) अकृतवेदिता उपकार विस्मरणम्, कृतज्ञतारहित्यम्।

कृतज्ञ, वि (स) उपकारज्ञ कृतविद्, कृतवेदन्।

कृतज्ञता, स स्त्री (स) उपकारज्ञता, उपकारस्मरण, कृतवादत्वम्।

कृताङ्क, वि (स) सचिह्न चिह्नित, अकित, साक।

कृताञ्जलि, वि (स) बद्धाञ्जलि, बद्धकर।

कृतात, स पु (स) मृत्यु २ यम ३ पापम् ४ देवता ५ पूर्वजन्मकमफलम् ६ सिद्धान्त ७, शनैश्चरवार।

कृतार्थ, वि (स) पूर्णकाम, द 'कृतकार्य' २ सतुष्ट ३ निपुण ४ मुक्त।

कृतास्त्र, वि (स) सशस्त्र सास्त्र सन्नद्ध २ अस्त्रविद्, शस्त्रनिपुण।

कृति, स स्त्री (स) चेष्टा, क्रिया २ कर्मन् (न) कार्यम् ३ इन्द्रजालम्, माया ४ रचना, ग्रथ ७ प्रहार ८ क्षति (स्त्री)।

कृती, वि (स कृतिन्) कुशल, दक्ष पटु २ पुण्यात्मन्, सुचरित्र।

कृतोदक, वि (स) स्नात, कृतस्नान, कृताभिषक

कृत्ति, स स्त्री (स) मृगचर्मन (न) २ त्वच (स्त्री) ३ भूर्ज ४ द 'कृत्तिका'।

—वासा, स पु (स-वासस) शिव।

कृत्तिका, स स्त्री (स) बहुला, आग्नेयदेवा, नक्षत्रविशेष।

कृत्य, स पु (स न) अनुष्ठेय, कर्तव्य, विधेय धर्म, आवश्यक कार्यम् २ कर्मन् (न)।

कृत्रिम, वि (स) कृतक, अनैसर्गिक।

कृदन्त, स पु (स) कृत्प्रत्ययान्तशब्द (उ पाचक, भोक्तृ इ) २ कृत्प्रत्ययविषयक व्याकरणप्रकरणम्।

कृपण, वि (स) कदर्य, द 'कंजूस' २ क्षुद्र।

कृपणता, स स्त्री (स) कदर्यता, दे 'कंजूसी'।

कृपया, क्रि वि (स) सदय, सकृप, सानुकप, सानुग्रहम्।

कृपा, स स्त्री (स) करुणा दया, अनुग्रह, प्रसाद उपकार, अनुकपा २ क्षमा, मर्षणम्।

—निधान, स पु (स न) दयानिधि। वि अत्यतकृपालु।

—पात्र, स पु (स न) प्रसादभाजन, अनुग्राह्य दयार्ह।

—सिंधु, स पु (स) दयासागर अति दयालु।

कृपाण, स पु (स) खड्ग असि २ दे 'कटार' ३ दडकवृत्तभेद (छन्द)।

कृपालु, वि (स) दयालु कारुणिक, कृपामय।

कृपालुता, स स्त्री (स) दयालुता, कारुणिकता।

कृमि, स पु (स) कीट, नीलाग, क्रिमि (पु) २ लाक्षा।

—कोश, स पु (स) पट्टकीट, कोष-गृह।

—नाशक, वि (स) कृमिघ्न, कृमिहर।

कृमिक, स पु (स) कीटक, लघु-कृमि-क्रिमि।

कृमिज, स पु (स न) अगुरु (न) राजार्ह २ कौशेय ३ दे 'हिरमिजी'।

कृमिजा, स स्त्री (स) कीटजा, लाक्षा।

कृमिल, वि (स) कृमिकुल चित-पूर्ण, कृमिमय।

कृमिला, स स्त्री (स) बहुप्रसू (स्त्री), बहुप्रजा।

कृश, वि (स) क्षीण, क्षाम, तन्वग-कृशाग (-गी स्त्री) प्र,तनु, दुर्बल २ अल्प, स्तोक, क्षुद्र, सूक्ष्म, अणु लघु।

कृशता, स स्त्री (स) क्षीणता, क्षामता, दुर्बलता २ अल्पता, सूक्ष्मता।

कृशांगी, स स्त्री (स) तन्वगी, क्षीणागी, तन्वी।

कृशानु, स पु (स) अनल, अग्नि (पु) २ चित्रक।

कृशोदरी, वि स्त्री (स) तनुक्षीण, मध्या मध्यमा।
कृषक, स पु (स) कृषीवल, कृषिक, कृषाण।
कृषि, स स्त्री (स) कर्षण, हलभृति (स्त्री)।
कृष्ण, स पु (स) वासुदेव, केशव, चक्रपाणि (पु) चक्रिन् (पु), जनार्दन, पीताम्बर, माधव, मधुसूदन, हृषीकेश, गोपाल, गोवर्धनधारिन् (पु) गोविंद, दामोदर, मुरारि (पु), राधारमण। २ कोकिल ३ काक ४ कृष्णपक्ष। वि, काल, असित, २ नील मेचक, श्याम ३ तिमिर, निष्प्रभ।
—जटा, स स्त्री (स) जटामांसी, सुगन्धिमूलभेद।
—जीरक, स पु (स) कृष्णा, काला, बहुगन्धा।
—द्वैपायन, स पु (सं) वेदव्यास, महाभारतकार।
—पक्ष, स पु (स) असितपक्ष, प्रतिपदा अमावस्यान्तानि पञ्चदश दिनानि।
—लवण, स पु (स न) रुचक, अक्ष, सौवर्चल।
—लोह, स पु (स न) अयस्कान्त, चुंबक।
—शार, —सारग, —सार, स पु (स) मृगभेद।
कृष्णता, स स्त्री (सं) कृष्णिमन् (पु), कालिमन् (पु), नीलत्व, श्यामत्व।
कृष्णा, स स्त्री (स) द्रौपदी, पांचाली २ कालीदेवी ३ दक्षिणदेशे नदीविशेष ४ कृष्णजीरक ५ कृष्णद्राक्षा ६ नयनतारा।
कृष्णाष्टमी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णजन्मदिवस, जन्माष्टमी, भाद्रमासस्य कृष्णपक्षस्याष्टमी तिथि।
कृष्णी, स स्त्री (स) कृष्ण, रजनी रात्रि (स्त्री)।
कृष्य, वि (स) वर्षणीय, कृषियोग्य।
केंचुआ, स पु (स किंचुलुक) महीलता, गण्डूपद, किञ्चिलिक।
केंचुल, सं स्त्री (स कञ्चुक) निर्मोक, अहि भुजग-सर्प-त्वच् (स्त्री)।
केंचुली, वि (हिं केंचुल) कञ्चुक, सदृश-तुल्य। स स्त्री दे 'केंचुल'।
केंद्र, स पुं (स न) मध्य स्थ, मध्यभाग २ उदर, गर्भ ३ मुख्य प्रमुख, स्थानम्।
केंद्री, वि (स केन्द्र>) मध्यम, मध्यस्थ, मध्य, गत वर्तिन्, मध्य, केन्द्रीय।
—करण, स पु (स न) मध्यवर्तिन कृ, एकतत्री कृ।
कैंसर, स पुं (अ) कर्कट कर्कटिका, रोग, कर्कस्फोट।
के, प्रत्य, (हिं का) दे 'का'।
केकड़ा, स पु (स कर्कट) कर्कटक, कुलीर।
केकय, स पु (स) १ वर्तमानकाश्मीरान्तर्गतप्रदेशविशेष २ दशरथश्वशुर।
केकयी, स स्त्री (स कैकेयी)।
केका, स स्त्री (स) मयूरवाणी।
केकी, स पु (स किन्) मयूर, शिखिन्।
केत, स पु (स) भवन, गृह २ स्थान ३ ध्वज, केतन ४ बुद्धि (स्त्री) ५ सकल्प ६ मंत्रणा ७ अन्नम्।
केतक, स पु (स) केतकीवृक्ष २ तत्पुष्प।
केतक, वि (स कति+एक) दे 'कितने', 'कितना', बहुत'।
केतकी, स स्त्री (स) सूचीपुष्प, केतक, क्रकचच्छद, त्रिफला, क्रकचा, गन्धपुष्पा।
केतन, स पु (स न) भवन, गृहम् २ स्थान ३ चिह्न ४ ध्वज ५ निमंत्रण, आह्वानम्।
केतली, स स्त्री (अ केटल) उखा, स्थाली, लौह्या लौहभू (स्त्री)।
केतित, वि (स) आमन्त्रित, आहूत, आवारित २ जनाकीर्ण लोकाध्युषित।
केतु, स पु (स) ग्रहविशेष २ उल्का, उत्पात ३ ज्ञान ४ दीप्ति (स्त्री) ५ ध्वज ६ चिह्नम् ७ राक्षसविशेषस्य कबंध।
—तारा, स पु (स स्त्री) धूमकेतु (पुं), उल्का।
—मान्, वि (स मत्) तेजस्विन् २ ध्वजिन् ३ बुध।
—माल, सं पु (सं न) जबुद्वीपस्य नववर्षान्तर्गतखंडविशेष।
—रत्न, स पु (सं न) वैदूर्यमणि (पुं)।
केथीटर, स पु (अ) मूत्रशलाका।
केल्सियम, सं पुं (अ) चूर्णातु (न), खटिकम्।
केदार, सं पुं (सं) व्रीहिक्षेत्रं २ हिमालये

तीर्थविशेष ३ आलवाल ४ मेनराग्पुत्र ५ मनुष्य क्षत्रभाग ।

केन, स पु (स-'किं' का तृतीया एकवचन) उपनिषद्विशेष ।

केमरा, स पु (अ) छायाचित्रपेटिका ।

केमिस्ट्री, स स्त्री (अ) रसायनम् ।

केयूर, स पु (स पु न) अंगद-द, वलय य ।

केराना, स पु दे 'किराना' ।

केराना, स पुं (अ क्रिश्चियन >) मारो पाय २ लेखक, कायस्थ, लिपिकार ।

केराया, स पु दे 'किराया' ।

किराये की गाड़ी, स स्त्री पण्य साधारण वाहन-रथ ।

केला, सं पु (स कदल), (वृक्ष) कदली, रंभा, मोचा, काष्ठीला, सकृत्फला, गुच्छफला, निस्सारा, ऊरुस्तम्भा, मो(रो लो)चक, वारणवल्लभा । (फल) कदलीफल, मोच द ।

केलि, स स्त्री (स) क्रीडा, सल्ला २ रति (स्त्री), मैथुन ३ नर्मन् (न), परि (री) हास ४ पृथ्वी ।

—कला, स स्त्री शारदावीणा २ रतिविज्ञान ।

केलोरी, स स्त्री (अ) उष्मन् ।

केवट, स पु (स कैवर्त) नाविक, पोत वाह औडुपिक २ धीवर, कैवर्त जालिक, मत्स्याजीव ।

केवटी, स स्त्री (हि केवट) मिश्रद्विदल, वेल्लनकर ।

केवड़ा, स पु (स केतकिका) केवी, कदिका, सूचा (पु), महागन्धा नृपवल्लभा २ केवी पुष्प द ३ महागन्धासव ।

केवल, वि (स) एक, अद्वितीय २ विशुद्ध ३ श्रेष्ठ । क्रि वि, एव, केवलं,-मात्र (समास में) २ सामस्त्येन, सपूर्णतया ।

केवलात्मा, स पु (स-त्मन्) परमेश्वर, जग दीश्वर २ शुद्धसत्त्वमनुष्य, पुण्यात्मन् ।

केवली, स पु (स लिन्) मोक्षाधिकारी साधु २ तीर्थकर (जैन) ।

केवाँच, स स्त्री (स कच्छु >), (लता) कपिकच्छू (स्त्री) स्वयं-आत्मगुप्ता, कंडूरा, मर्कटी २ (फली)कपिकच्छू-बीजकोश शिंबी ।

केवाड़, स पु, दे 'किवाड़' ।

केश, स पु (स) बाल, कच, कुन्तल, चिकुर शिरोरुह, शिरसिज मूर्द्धज वृजिन २ किरण ३ वरुण ४ विष्णु ५ सूर्य ६ विश्व (७ ८) अश्व-सिंह,-स्कधकेश ।

—कर्म स पु, केशकर्मन् (न), कच, विन्यास प्रसाधनम् ।

—कलाप -पाश, स पु (स) प्रसाधितकेशा, अलक, कुरल ।

—प्रसाधनी, स स्त्री
—मार्जक, स पु } कंकतिका दे कघी' ।

—विन्यास, स पु (स) दे केशकर्म' ।

केशक, वि (स) केशकर्म-केशविन्यास कुशल, केशप्रसाधक ।

केशरी, स पु (स -रिन्) सिंह मृगेन्द्र २ घोटक (३-४) पुन्नाग नागकेशर वृक्ष ।

केशाकेशी, स स्त्री [स -शि(न)] अन्योन्य केशग्रहणपूर्वकप्रवृत्त युद्ध ।

केशिनी, स स्त्री (स) सुकेशी गा सुकची-वा ।

केशी, स पु (स केशिन्) सिंह २ घोटक ३ सुकेश (पुरुष) ३ राक्षसविशेष ।

केस, स पु, दे 'केश' ।

केस, स पु (अ) व्यवहारपद, कार्य २ दुर्घटना ३ कोष, पुट ।

केसर, स पु (स पु न) काश्मीर, काश्मीर रज, कुंकुम अग्निशिख, वर, वाह्नि (ह्री) क, पीतन, गौर, रक्त, लोहितचन्दन, वर्ण्य, सकोच, धीर, घस्र, घुसृण, घोरम् २ नागकेशरवृक्ष ३ अश्व-सिंह,-स्कधबाला ४ स्वर्ण ।

केसराचल, स पु (स) मेरु, सुमेरु, हेमाद्रि ।

केसरिया, वि (स केसर >) घनपीत, कुंकु मवर्ण ।

—बाना, स पु, कुंकुमवर्ण घनपीत, वेश - वेष ।

केसरी, स पु (स -रिन्) दे 'केशरी' ।

केसू, सं पु (स किंशुक) पलाश, रक्त पुष्पक ।

केहा स पु (स केका >) मयूर, दे 'मोर' ।

केहरी, स पु (स केसरिन्) सिंह २ अश्व ।

कैंची, स स्त्री (तु) दे 'कतरनी' ।

—करना, मु, अंगानि निरुद्ध (तु प से)- रुद्ध (कृ व से)-अवच्छिद् (रु प अ) ।

—सी जवान चलना, मु , शीघ्र-सत्वर-वेगेन नद् (भ्वा प से)-भाष् (भ्वा आ से)।
कैंचुली, स स्त्री, दे 'केंचुली'।
कै, वि (स कति) दे 'कितने', 'कितनी'। अव्य, वा, अथवा, यद्वा २ अन्यतर।
—दफा,—बार,—बेर, कतिकृत्व (अव्य), मतिवार।
कैंप, स पु (अ) दे 'कपू'।
कै, स स्त्री (अ) वात, वमनोद्गार २ वमन, वम, वमि (स्त्री), प्रच्छर्दिका, वमथु (पु)।
—आना, क्रि अ, वमनेच्छया पीड् (कर्म), विवमिषति (सन्नन्त)।
—करना, क्रि स उद्,-वम् (भ्वा प से) छर्द् (चु), उत्क्षिप् (तु प अ), उद्गृ (तु प से)।
कैतव, स पु (सं न) छल, कपट, वचन २ द्यूत ३ वैदूर्यमणि (पु) ४ धुस्तूर। वि, छलिन्, कापटिक २ शठ, धूर्त ३ अक्ष देविन्, कितव, (-वी स्त्री)।
कैथ-था, स पु (स कपित्थ) दधित्थ, मन्मथ, दधि-पुष्प-कुच-गन्ध-दन्त,-फल।
कैद, स स्त्री (अ) बन्धन, निग्रह, निरोध २ कारा,-निरोध -बन्धन-प्रवेश -वास, बंदी करण, प्रग्रह, आसेध ३ नियम, समय, प्रतिज्ञा, सकेत।
—करना, क्रि स, कारागृहे निक्षिप् (तु प अ)-बन्ध्(क्र् प अ)-निरुध(रु उ अ), बन्दीग्राह ग्रह (क्र प से), बदीकृ।
—होना, क्रि अ, कराया निक्षिप्-बन्ध्-निरुध् बन्दीकृ (सब कर्म)।
—खाना, स पु (फा) कारा, कारागार २, कारावास, बन्दि,-शाला-गृह, बन्धनालय, चार, चारक, गुप्तिस्थान।
—तनहाई, स स्त्री (अ+फा) एकान्त-विजन-निर्जन,-आसेध।
—महज, स स्त्री (अ) सरल सुगम,प्रग्रह आसेध।
—सख्त, स स्त्री (अ + फा) विषम-दुस्तर, आसेध, द।
कैदी, स पु (अ) बदी दि (स्त्री), बन्दिन् (पु), कारागुप्त, ग्रहक, प्रग्रह, बद्ध।
कैप, स पु (अ) दे 'टोपी'।

कैपिटल, पु (अ) मूल-धन द्रव्यम्, २ धन, पुञ्ज-राशि, पुंजि (स्त्री) ३ राजधानी।
कैपिटलिस्ट, स पु (अ) धनिक, कोटीश्वर, पुंजिपति।
कैबिनेट, स पु (अ) मन्त्रिमण्डलम् २ कोष्ठक ३ मन्त्रणागृहम्।
कैफियत, स स्त्री (अ) अवस्था, स्थिति (स्त्री), दशा २, विवरण, वर्णन ३ आश्चर्योत्पादकघटना।
कैरव, स पु (स न) कुमुद २ सितोत्पल, श्वेतकमल। (स पु) कितव २ शत्रु।
कैरी, स स्त्री (देश) दे 'अंबिया'।
—आख, स स्त्री, कपिल पिंगल,-नयन-नेत्र।
कैलास, स पु (स) पर्वतविशेष, शिवकुबेर, निवास।
—नाथ, पति, स पु (स) शिव।
—वास, स पु (स) मृत्यु।
कैवर्त, स पु (सं) दे 'केवट'।
कैवल्य, स पु (स न) एकत्व, असमत्ना २ अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री) ३ उपनिषद्विशेष।
कैसर, स पु (लै० सीजर) सम्राज्, राजाधिराज, अधिराज, अधीश्वर।
कैसा, वि (स कीदृश) कीदृश, किंरूप, किंविध, किमाकार।
कैसी, वि स्त्री (सं कीदृशी) कीदृशी, किंरूपा, किमाकारा, किंविधा।
कैसे, क्रि वि (हिं कैसा) कथं, केन प्रकारेण, कया रीत्या।
कोंकण, स पु (स) दक्षिणदिशि प्रान्तविशेष।
कोंपल, सं स्त्री (स कोमल) पल्लव, अङ्कुर, प्ररोह, किस (ला) लय, य, उद्भिद (पुं), उद्भिज्ज।
—निकलना या फूटना, क्रि अ, प्ररुह् (भ्वा प अ), स्फुट् (तु प से) उद्भिद् (कर्म) फुल्ल् विकस् (भ्वा प से)।
को, प्रत्य (यह कर्म और सम्प्रदान कारक का प्रत्यय है, इसका अनुवाद प्राय द्वितीया और चतुर्थी के रूपों से होता है। (राम को भज = ज, राम भज, ब्राह्मण को दे = विप्राय देहि)।
कोआ, स पुं (स कोश-ष), (पट्टकीट-) कोश-ष २ दे 'कोया'। ३ पनसकंटक ४ दे 'महुआ' (फल)।

कोई, सर्व (स कोऽपि) कश्चन, कश्चित् (पु), का,-अपि-चन चित् (स्त्री) किं,-अपि-चन चित् (न)।
—कोई, वि स्तोका, कतिपया, परिमिता ।
—चीज, सं स्त्री किमपि (वस्तु)।
—दम में, क्रि वि, सपदेव, तत्काले, झटिति, द्राक् (सब अव्य)।
—दम का मेहमान, स पु, मुमूर्षु, आसन्न, मरण-मृत्यु, मरणाभिमुख, मरणोन्मुख।
—न कोई, एप वा परो वा, य कश्चिदपि, कश्चित्तु।
—नहीं, न कोपि-कापि किंचिदपि इ ।
कोक¹, सं पु (स) चक्रवाक, द्वन्द्वचर, रथाग, चक्र २ भेडक ३ विष्णु (पु) ४ वृक ५ खजूरीवृक्ष । [कोकी (स्त्री), चक्रवाकी, रथांगी इ]।
कोक², स पु (अ) न्यक्कार ।
—शास्त्र, स पु (सं न) कोकपंडितरचितो रतिविज्ञानग्रन्थ ।
साफ्ट, स पु, मृदुन्यक्कार ।
हार्ड, सं पु दृढन्यक्कार ।
कोकनद, स पु (स न) रक्तोत्पल २ रक्त कुमुदम्।
कोकनी, वि (दश) क्षुद्र, लघु।
कोका, स पु (अ) वृक्षभेद ।
कोका, स पु स्त्री (तु) धात्री-उपमातृ, पुत्र-पुत्री, धात्रेय यी।
—बेली, बेरी, स स्त्री (सं कोकनद + हिं बेला) नीलकुमुद।
कोकाह, सं पु (स) कर्क, श्वेतघोटक ।
कोकिल, स स्त्री (सं पु) पिक, पर, भृत-पुष्ट, काल, गन्धर्व, मधुगायन, कलकंठ, कुहूरव, काकलीरव, वसन्तदूत, वनप्रिय, ताम्राक्ष । दे 'कोकिला'।
—बैनी, वि स्त्री (स + हिं) सुकंठी, मधुर भाषिणी।
कोकिला, स स्त्री (स) मदनशलाका, पर, भृता पुष्टा, वनप्रिया, कलकंठी, ताम्राक्षी, वसन्त दूती।
कोकिलावास, सं पु (स) कोकिलोत्सव, आम्र, रसाल ।

कोकी, सं स्त्री (सं) चक्रवाकी, चक्री, रथां गनाम्नी।
कोकीन, सं स्त्री (अ कोकेन) कोकापत्र निर्मितमादकपदार्थ *कोकीनम्।
कोको, स स्त्री (अनु) काक, वायस २ काल्पनिकभयहेतु (पु)।
कोख, स स्त्री (सं कुक्षि) गर्भाशय, गर्भ कोश प ।
—जली, बन्द, वि, वध्या, सन्तानहीना।
—की आँच, स स्त्री, अपत्यप्रेमन् (पु), वात्सल्य, सततिस्नेह ।
—मारी जाना, मु, च्युतगर्भा भू, गर्भ पत् (भ्वा प से) च्यु (भ्वा आ अ)।
—खुलना, मु सन्तान उत्पद् (दि आ अ)।
कोचना, क्रि स, दे 'चुभाना', 'धँसाना'।
कोचबक्स, स पु (अ कोचबाक्स) सूतासन।
कोचवान, सं पु (अ कोच >) सारथि (पु), सूत, वाहक ।
कोजागर, सं पु (सं) आश्विनी पूर्णिमा, कौमुदी, शारदी, शरत्पर्वन् (न)।
कोट¹, स पु (सं) दुर्ग २ प्राचीर ३ राज प्रासाद ।
—पाल, स पु, कोटपाल, दुर्गाध्यक्ष ।
कोट², सं पु (अ) प्रावार रक, कंचुक ।
कोटर, स पु (स पु न) निष्कुह, तरु विवर, प्राकार २ कोटरावण, रक्षार्थं कृत्रिम वन ।
कोटि, सं स्त्री (सं) शतलक्षसंख्या, दे 'करोड' २ धनुरग्र ३ अस्त्रादे कोण ४ वर्ग, श्रेणी ।
कोटिक, वि (स कोटि स्त्री) कोटी टि (स्त्री) लक्षशतक २ असंख्य, अगणित। स स्त्री, उक्ता संख्या तदंकाश्च।
कोटिश, क्रि वि (स) बहुधा,-बहुधा २ अनेक-कोटिवार । वि, बहुसंख्याक, अनेक ।
कोटीश्वर, सं पु (सं) कोट्यधीश, अति धनाढ्य।
कोठरी-ड़ी, सं स्त्री (हिं कोठा) लघु क्षुद्र, कोष्ठ शाला, अन्त कोष्ठ, गर्भागार।
कोठा, स पु (सं कोष्ठ) गृह, सदन, आनि, वास, वेश्मन् सद्मन् (न) २ प्र,कोष्ठ, शाला ३ पण्यागार, पण्यावान ४ धान्यागार, कुशूल

५ चन्द्रशाला, अट्टालिका ६ पटल, छदिस् (स्त्री) ७ उदर ८ आमाशय ९ अन्त्राणि (न बहु) १० निभृतागार ११ पत्रभाग १२ गर्भाशय ।
—बिगड़ना, मु अजीर्णरोगेण पीड (कर्म)।
कोठार, स पु (हिं कोठा) दे 'भडार'।
कोठारी, स पु (हिं कोठा) दे 'भडारी'।
कोठी, स स्त्री (हिं कोठा) भवन, गृह, हर्म्य २ एकभूमिक हर्म्य ३ पण्य,-आगार-आधान ४ धान्यागार ५ भाडार, कोष ६ वणिग्जनसमवाय ७ बृहदापण, महती विक्रयशाला ८ गर्भाशय ९ गुलिकाक्षपण्या माग्नेयचूर्णाधान १० मृण्मय बृहद्धान्यपात्र ११ लोहमय ताम्रमय वा बृहज्जलपात्र।
—वाल, स पु, श्रेष्ठिन् (पु) वणिजश्रेष्ठ ।
कोड़ना, क्रि स, दे 'खोदना'।
कोड़ा, स पु (स कवर >) प्रतोद, कशा-शा, प्रतिकष -श, ताडनरज्जु (स्त्री)।
—मारना, क्रि स, कशया प्रतोदेन वा प्रहृ (भ्वा प अ)-तड् चुद्-दड (सब चु)-आहन् (अ प अ)।
कोड़ी, स स्त्री (अ स्कोर) विंशति (स्त्री), विंशतिवस्तुसमुदाय ।
कोढ़, स पु, दे 'कुष्ठ'।
—में खाज निकलना, मु, रन्ध्रोपनिपातिनोऽनर्था, छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति, गण्डे स्फोटकसजननम्।
कोढ़ी, वि, दे 'कुष्ठी ।
कोण, स पु (स) दे 'कोना'।
कोणि, वि (स) वक्र आकुञ्-कर हस्त ।
कोतल, स पु (फा) दर्शनीयघोटक २ राजाश्व ।
कोतवाल, स पु (स कोट्टपाल) पुररक्षक ।
कोतवाली, स स्त्री (हिं कोतवाल) कोटपाल पुररक्षक,-कार्यालय ।
कोताह, वि (फा) न्यून, अल्प, २. लघु, ह्रस्व ३ सकीर्ण, सकुचित।
—हिम्मत, वि, अल्प साहस विक्रम।
कोताही, स स्त्री (फा) त्रुटि (स्त्री), न्यूनता २ प्रमाद ।
कोथला, स पु (हिं गुथल) बृहद्, पुट कोष प्रसेव २ आमाशय ।
—भरना, मु उदर पूर् (चु)।
कोदंड, स पु (सं न) धनुस् (न)। (स पु) भ्रू (स्त्री) २ देशविशेष ।
कोदों दों, स पु (स कोद्रव) कोरदूष, कुद्रव, कुद्दाल ।
कोन, सं पु, दे 'कोना'।
कोना, सं पु (सं कोण) अस्र २ कोटि-अश्रि पालि (स्त्री) ३ निभृतस्थान ४ चतुर्थभाग ।
—दार, वि, अस्रोपेत, कोणविशिष्ट, अस्रिन्।
—कचोना, सं पु, प्रत्यस्र सर्वे कोणा ।
कोप, स पु (स) क्रोध, रोष ।
कोपन, वि (स) समन्यु, सरोष, क्रोधिन्।
कोपिनी, वि स्त्री (स) दे 'क्रोधिनी ।
कोपी, वि पु (स पिन्) दे 'क्रोधी'।
कोपीन, स पु, दे 'कौपीन'।
कोमल, वि (स) मृदु, मृदुक, स्निग्ध, श्लक्ष्ण, मसृण, सुखस्पर्श २ मृदुल, पेलव, सुकुमार, सौम्य ३ अपरिपक्व, अप्रौढ ४ मनोहर, अभिराम। (स पु) स्वरभेद (सगीत०)।
कोमलता, स स्त्री (स) मृदुता, स्निग्धता, सुकुमारता, पेलवता, अपरिपक्वत्व, मनोहारिता इ।
कोयल, स स्त्री दे 'कोकिल' २ लताभेद ।
कोयला, स पु (स कोकिल) कोकिल, दग्धकाष्ठ, अङ्गार ।
—लकड़ी का, स पु काष्ठ,-कोकिल अङ्गार ।
—पत्थर का, स पु, प्रस्तर-अश्म, कोकिल ।
कोया, स पु (सं कोण >) अपाग -गक, चक्षु कोण, नयनोपान्त ।
कोर, स स्त्री (स कोण) उपान्त प्रांत, परिसर, उपकठ २ कोण अस्र ३ द्वेष ४ दोष, अवगुण ५ अस्त्रादीना धारा। ६ पक्ति (स्त्री), श्रेणी णि (स्त्री)।
—कसर, स स्त्री (हिं + फा कसर) वैकल्य, दोष, छिद्र, न्यूनता २ न्यूनाधिकता।
कोरक, स पु (स) कलिका, दे 'कली २ मृणाल ३ चरनामकगन्धद्रव्यम्।
कोरा, वि (स केवल) अभि, नव, नवीन, नूतन, अव्यवहृत, अप्रयुक्त २ अधौत, अक्षालित ३ अरंजित ४ अचित्रित ५ अलि

रिक्त ६ वंचित, रहित, विहीन ७ निष्कलंक ८ मूर्ख ९ निर्धन १० केवल।
—जवाब, सं पु, एकांत अयत्त, निराकरण प्रत्याख्यान निषेध ।
—बचना, मु० अत्यन्त निर्गत मुच् विमुच (कर्म)।
—रहना, मु भग्नाश-अकृतार्थ मनोहृत (वि) स्था (भ्वा प अ)।
—कोरा सुनाना, मु, स्पष्ट वद् (भ्व प से), २ भर्त्स (चु आ से), आ-अधि, क्षिप (तु प अ)।
कोरि, वि, दे 'कोटि'।
कोरी, सं पु (सं कोल >) आर्य, पटकार कुविंद ।
कोर्ट, स पु (अ) न्यायालय, धर्माधिकरणम् २ राज-नृप सभा ३ न्यायासनम्।
—आव वार्ड्स, स पु, बालकविषयादि सपत्तिप्रबन्धक विभाग ।
—फीस, स स्त्री, न्यायशुल्क स्कम्।
—मार्शल, सैनिकन्यायालय २ सैनिक न्यायेन दण्डनम्।
—शिप, स स्त्री, विवाह, अनुनय याचना।
कोल[1] स पु (स) शू (सू) कर, किरि (पु) २ उपगूह, आलिंगन ३ क्रोड, अक ४ वन्यजातिविशेष ५ कृष्णमरिच ६ दे 'तोला' ७ बदरीफलभेद ८ दक्षिणदिशि देशविशेष ।
कोल[2], स पु (अ) अंगार, कोकिल ।
—गैस, स स्त्री (सं) अङ्गारवाति (स्त्री)।
—टार, स पु (स) कोलतार, तारकोल्म्।
चार—, स पु, काष्ठाङ्गार ।
स्टीम—, स पु, वाष्पाङ्गार ।
कोलाहल, स पु (स) कलकल, कालकोल, तुमुल, उत्क्रोश, निनाद, विराव ।
—मचाना, कि स, कोलाहल-कलकल-कृ, आ वि,-क्रुश (भ्वा प अ)।
कोली, स पु (स कोल >) तन्तुवाय, पटकार ।
कोल्हू, स पु (हिं कुल्हा ?) १ चक्र, तैलपेषणी, तिलपेषणयंत्र २ इक्षु-रसाल, पेषणी।
—काट कर मुंगरी बनाना, मु, अल्पलाभाय बहुहानिं कृ।
—का बैल, मु परम-उद्यमिन्-उद्योगिन्।
—में पिरवा देना, मु अत्यंत पीड् (चु)।
कोविद, सं पु (स) विद्स् (पु), पंडित ।
कोश, स पु (स कोशप), अभिधान, शब्दसंग्रह २ खड्गादि वेष्टन पुट कोष कोश ३ आवरण, पुट, पिधान, आच्छादन ४ अंड, पेशी दि (स्त्री) ५ मंजूष, सपुट टक ६ कलिका, मुकुल ७ मद्यपान, पात्र चषक ८ पुट ८, स्यूत ९ सचितधन १० समूह ११ अण्डकोष १२ योनि (स्त्री) १३ पट्टकीटगृहम् १४ आत्मन पञ्चावेष्टनानि (वेदान्त) १५ आकरोत्थ अभिनव सुवर्ण रजत वा १६ निधि (पु), निधान।
—कार, स पु (स) अभिधान शब्दसंग्रह, कार सपादक २ पट्टकीट ।
—पाल, स पु (स) कोश(पा)ध्यक्ष, कोशाधीश ।
कोशक, स पु (सं) अण्ड, पेशी २ अण्डकोष ।
कोशल, स पु (स) देशविशेष २ अयोध्या।
कोशलिक, सं पु (स न) दे 'कौशलिक'।
कोशागार, सं पु (स पु न) कोशगृह, भाण्डागार र ।
कोशिका, स स्त्री (स) चषक, शराव । २ कुसु, गल्वर्क ।
कोशिश, स स्त्री (फा) यत्न, उद्योग, परिश्रम ।
कोष, स पु (स) दे 'कोश'।
—अध्यक्ष, सं पु (स) दे कोष पाल -अधीश ।
कोष्ठ, स पु (स) उदरमध्य २ गर्भाशयादय आवरणविशिष्ट अवयवा ३ गृहमध्य ४ प्राकार ५ धान्यागार रम् ६ परिवेष्टित स्थानम्।
—बद्धता, स स्त्री. दे 'कब्ज'।
कोष्ठक, स पु (स) परिवेष्टकपदार्थ (दीवार, रेखादि) २ सारणी, अनेकगृहयुत चक्र अक अपर,-जाल ३ अर्द्धचंद्रद्वय [उ (), [ ], { },] ४ सारणीवर्गे।
कोस, स पु (स क्रोश) सहस्रधनुस् (न), चतु सहस्र (अष्टसहस्र) हस्तपरिमाण, द्विसहस्रदड, गव्यूत, मील-द्वय-युग्म।

कोसों दूर, क्रि वि, अति, दूर दूरे-दूरत, सुदूर।
कोसों दूर रहना, मु, सुदूर-पृथक् स्था (भ्वा प अ)।
कोसना, क्रि स, (सं कोशन >) आक्रुश (भ्वा प अ), गर्ह् (भ्वा आ से), अभिशप (भ्वा प से), शप् (भ्वा उ अ)।
पानी पी पी कर कोसना, मु, अत्यन्त आक्रुश् इ।
कोह, सं पु (फा) पर्वत, गिरि।
—नूर, स पु (फा + अ) हीरकविशेष।
कोहनी, स स्त्री, दे 'कुहनी'।
कोहरा, सं पु, दे 'कुहरा'।
कोहान, स पु (फा) उष्ट्रक्रमेलक, ककुद् ककुदम्।
कोहिस्तान, सं पु (फा) पर्वतीयप्रदेश, शैली स्थली।
कोहिस्तानी, वि (फा) पर्वतीय, शैल (ली स्त्री), पर्वतमय (यी स्त्री), नगप्राय, सपर्वत। सं पु, पर्वत गिरि-अद्रि, वासिन्, शैलाट।
कौंच, सं स्त्री [स कच्छु (स्त्री) >] रोमवल्ली, शूकशिंबी, वृष्या, २ तस्या बीनकोष।
कौंची, सं स्त्री (सं कचिका) वेणुशाखा, कुञ्चिका।
कौंध, सं स्त्री (हिं कौंधना >) विद्युद्विलास, तडिद्द्युति, (स्त्री) चचलास्फुरण।
कौंधना, क्रि अ (स कनन = चमकना + अप >) विद्युत् (भ्वा आ से) विद्युत् विस्फुर् (भ्वा प से), सहसा प्रकाश (भ्वा आ से) स्फुर् (तु प से)।
कौंधा, सं पु, दे 'कौंध'।
कौंसिल, स स्त्री (अ) सभा, मसद्, सदस् (सद स्त्री)।
कौआ, सं पु दे 'कौवा'।
कौच, सं पु (अ) खट्टिका, सन्दी, निषद्या, पेचक।
कौटिल्य, सं पु (सं) चाणक्य, चन्द्रगुप्तमौर्यस्य महामन्त्रिन्। (स न) वक्रता, कुटिलता २ दुष्टता, छल, कपटम्।
कौटुंबिक, वि (सं) कुटुम्ब-गृहजन परिवार, सम्बन्धिन् विषयक, कौल, पारिवारिक, गृह्य।

कौड़ा, स पु (सं कपर्दक) वराट, बाल क्रीडक।
कौड़ी, सं स्त्री (सं कपर्दिका) वराटिका, काकिनी पी। २ द्रव्य, धन ३ अक्षि नयन, गोल-गोल ४ मासग्रंथि (पु) ५ कृपाणाग्र ६ अधीननृपतिभ्यो ग्राह्य कर ७ उरोऽस्थि (न)।
(दो)—का,—काम का नहीं, मु अल्पमूल्य, तृणप्राय, निरर्थक, असार।
—भर, मु, अत्यल्प, किंचिद्, स्वल्प।
——को मुहताज या तंग होना, मु, अकिंचनत्व, अत्यन्तदारिद्र्य, नितान्तनिर्धनता।
——चुकाना, मु, ऋण नि शेष परिशुध् (प्रे)-अपाकृ।
——जोड़ना, मु, धन सचि (स्वा प अ)-सग्रह् (क्र् प से)।
कानी या फूटी कौड़ी, मु अत्यल्प-वित्तं द्रव्यम्।
कौड़ियों के मोल, मु, अत्यल्पमूल्येन।
कौतुक, स पु (स न) कु(कौ)तूहल, कुतुक, जिज्ञासा २ आश्चर्य ३ विनोद, नर्मन् (न) ४ हर्ष ५ खेल, क्रीडा।
कौतुकी, वि (सं-किन्) सलील, सोल्लास, क्रीडाप्रिय, विनोदप्रिय, नर्मगर्भ।
कौतूहल, सं पु, दे 'कुतूहल'।
कौन, सर्व (स को नु) 'किं' के तीनों लिंगों के रूप (क, का, किं इ)।
—कौन, क क इ। दो में से—, कतर, कतरा, कतरत् (पु सं न) बहुतों में से—, कतम, कतमा, कतमत् (पु स्त्री न)।
कौप, वि (सं) कूप-अवट, विषयक सम्बन्धिन्।
कौपीन, सं पु (सं न) मलमल्लक, धटी, घटिका, कच्छा, कच्छटिका, २ गुदलिंगे, गुह्यागानि ३ पाप ४ अकार्यम्।
कौबेरी, स स्त्री (सं) उत्तरदिशा, उदीची।
कौम, सं स्त्री (अ) वर्ण, जाति (स्त्री) २ कुल, वंश ३ देश, राष्ट्र, विषय।
कौमार, सं पु (सं न) कुमारावस्था (५ अथवा १६ वर्ष पर्यंत), बाल्यत्वम्।
कौमारिक, वि (सं) कुमार, विषयक सम्बन्धिन्। सं पुं, कन्यानामेव जनक।

कौमारिकेय, स पु (स) अनूढा-कुमारी कन्या पुत्र-तनय ।
कौमियत, स स्त्री (अ) राष्टियता, जातीयता।
कौमी, वि (अ) राष्ट्रि (री)य, देशीय जातीय।
—हुकुमत, स स्त्री, राष्ट्रियशासन, स्वराज्य।
कौमुदी, स स्त्री (स) ज्योत्स्ना, दे 'चाँदनी'।
कौर, स पु (स कवल) ग्रास, गुडक, पिंड ।
कौरव, स पु (स) कुरुराजसतान ।
—पति, स पु, दुर्योधन ।
कौल, वि (स) दे 'कुलीन'।
कौल, स पु, दे 'कौर'।
कौल, स पु (अ) प्रतिज्ञा, समय २ उक्ति (स्त्री)।
कौवा, स पु (स काक) वायस, ध्वांक्ष, मौकुलि (पु), एकाक्ष उलूकारि (पु), करट कुण, द्रोण २ अलिजिह्वा, शुण्डिका, लंबिका ३ धूर्त ४ वचक ।
—परी, स स्त्री, अतिकुरूपिणी नारी।
—उठाना, मु बालशुंडिका उत्स्था (प्रे)।
कौशल, स पु (सं न) चातुर्य, दाक्ष्य, नैपुण्य २ कुशल, मगलम्।
कौशलिक, सं पु (स न) उत्कोच, ढौकन लम्बा।
कौशिक, स पु (स) इन्द्र २ गाधिनृप ३ विश्वामित्र ४ कोषाध्यक्ष ५ कोशकार ६ उलूक ७ नकुल ८ कौशेयवस्त्र ९ मज्जा १० उपपुराणविशेष ।
कौशे(षे)य, वि (स) कौश(ष), कौशि(षि)क। स पु (स न) क्षौम, चीनांशुक पट्ट दुकूल, पट्टांशुक, दुकूल, चीनवासस् (न)।
कौस्तुभ, स पु (स) विष्णुवक्षःस्थो मणि (पु)।
क्या, सर्व (स किम्)।
वि, कियत्, २ अत्यधिक ३ कीदृश विचित्र ४ अत्युत्तम।
अव्य किम्।
—कहना है या—बात है, मु, साधु साधु साधु सुष्ठु, उत्तम (सब अव्य)।
—खूब, मु, साधु, सुष्ठु इ ।
क्यारी, स स्त्री (स केदार) राजिका।
क्यों, क्रि वि (सं किम्) किं, केन हेतुना-कारणन, किन्निमित्त, किमर्थं, कुत, कस्मात् २ कया रीत्या, कथम्।
—कर, कथ, केन प्रकारेण २ किमर्थं, किम्।
—कि,—यत, यत्, यस्मात्।
—नहीं, नि सदेह, नि सशय, अवश्य, ध्रुवम्।
क्रंदन, स पु (सं न) रोदन, रुदित, अश्रुपात २ परिदेवना न, आ वि, क्रोश ।
क्रतु, स पु (स) यज्ञ, याग २ सकल्प ३ अभिलाष ४ विवेक ५ इंद्रिय ६ जीव ७ विष्णु ८ आषाढ ९ श्रीकृष्णपुत्र ।
क्रम, स पु (स) अनुक्रम, आनुपूर्वी-र्व्य, पारपर्य, परपरा, विन्यास, व्यवस्था, सविधान, विरचन २ प्रकार, विधि (पु) रीति (स्त्री) ३ पादविन्यास ४ काव्यालकारभेद।
——करके या से, क्रि वि, अनुक्रम, यथाक्रम, अनुपूर्वश आनुपूर्व्येण २ शनै शनै, अल्पाल्पश, उत्तरोत्तरम्।
क्रमण, स पु (स) पाद, चरण २ अश्व, घोट । (स न) गमन चलनम् २ उल्लघनम्, अतिक्रमणम्।
क्रमश क्रि वि (स) दे 'क्रम क्रम करके'।
क्रमांक, स पु (स) क्रम, सख्या-गणना।
क्रमागत, वि (स) क्रम आनुपूर्व्येण, आगत प्राप्त २ आनुवशिक, परपरा प्राप्त ।
क्रमानुसार, क्रि वि (स-रम्) क्रमश, यथाक्रम आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वश (सब अव्य)।
क्रमिक, वि (स) क्रम परम्परा, आगत आयात, अनुपूर्व, क्रमबद्ध, आनुक्रमिक (-की स्त्री) २ परम्परीयण पैतृक (-की स्त्री), पित्र्य ।
क्रमुक, स पु (स) दे 'सुपारी'।
क्रय, स पु (स) दे 'खरीद'।
—विक्रय, स पु, दे 'खरीद फरोख्त'।
क्रव्य, स पु (स न) दे 'मास'।
क्रव्याद, स पु (स) राक्षस, पिशाच २ सिंह ३ श्येन ४ मासाशिन् (पु)।
क्रान्ति स स्त्री (स) महत्परिवर्तन, परिवर्त, २ चरणन्यसन ३ सूर्यभ्रमणमार्ग ४ रान, द्रोह विरोध, राज्यविप्लव प्रजाक्षोभ ।
क्रिकेट, सं पु (अ) पट्टगेन्दुकम्।

क्रिया, स स्त्री (सं) कर्मन् (न), कार्य, व्यापार २ चेष्टा ३ आरम्भ ४ व्यापार निर्देशक शब्द (व्या) ५ नित्यकर्मन् (न) ६ श्राद्धादिकर्मन् ७ चिकित्सा।

—कर्म, स पु (सं न) अन्त्येष्टि मृतक-, क्रिया कर्मन्।

—विशेषण, स पु (सं न) क्रियाया भाव कालरीत्यादिद्योतक शब्द (व्या)।

—इन्द्रिय, सं स्त्री (स न) दे 'कर्मेन्द्रिय'

क्रिस्टल, सं पु (अ) स्फटम्।

क्रिस्ता(स्टा)न, स पु (अ क्रिश्चियन्), खिस्तानुयायिन्।

क्रीड़ा, सं स्त्री (स) खेला, लीला, कूर्दन, खेलन, विहार २ कौतुक, विनोद विलास।

क्रीत, वि (सं) क्रनकय, मूल्येन लब्ध।

क्रीतक, सं पु (स) क्रीतपुत्र।

क्रुद्ध, वि (स) कुपित, रुष्ट, कोपित्, सामर्ष, सकोप, सरोष, समन्यु, क्रोध–कोप,–युक्त।

क्रूर, वि (सं) निर्दय, कठोर, नृशस, पाषाण कठिन, हृदय, निघृण, क्रूरकर्मन्, निष्करुण २ परपीडक ३ कठिन ४ तीक्ष्ण ५ उष्ण ६ नीच ७ घोर।

—कर्मा, वि (स मंन्) घोर, निर्दय, दारुण।

क्रूरता, स स्त्री (स) निर्दयता, कठोरता, नृशसता इ। २ रौद्रता, तीक्ष्णता ३ दुष्टता।

क्रोड, स पु (स न) बाह्वोर्मध्य, भुजान्तर, उपस्थ, उत्सग, भोग, अक २ उरस्-वक्षस् (न), उत्तसम्।

—पत्र, स पु (स न) परिशिष्ट, अवपत्र, पूरकपत्रम्।

क्रोध, स पु (स) कोप, रोष, अमर्ष, मन्यु (पु), प्रतिघ, भीम, क्रुधा, रुषा, रुष्–क्रुध् (स्त्री) दे 'गुस्सा'।

—करना, क्रि अ, क्रुध् (दि प अ), कुप् (दि प से)।

क्रोधित, वि (स) दे 'क्रुद्ध'।

क्रोधी, वि (स-धिन्) कोपिन्, रोषिन्, अमर्षिन्, दे 'क्रुद्ध'।

क्रोश, स पु (स) दे कोस'।

क्रौंच, सं पुं (स) कुंच चा, क्रौंचा, कुच् (पुं), कलिक, कालि(ली)क।

क्लब, स पुं (अ) गोष्ठीगृहम्।

क्लर्क, स पु (अ) लिपि पजी, कार, लेखक, कायस्थ, चौर(ल)क।

क्लान्त, वि (स) म्लान, खिन्न, परि, श्रांत, जातखेद, आयस्त।

—मना, वि (सं-नस) दुर्मनस्क, विमनस्क, खिन्न।

क्लांति, स स्त्री (स) श्रम क्लम, आयास, श्रान्ति (स्त्री), खेद अवसाद।

क्लाक, सं पु (अ) कुड्य-भित्ति,-घटी।

—टावर, स पु, घटा,-आलय -गृहम्।

क्लिष्ट, वि (स) दुःखित, क्लेशित, आर्त, पीडित २ दुष्कर, कठिन, दुस्साध्य।

क्लीव, स पु (स) ष (श) ढ, सढ, शढ, नपुंसक, पुरुषविहीन २ दे 'कायर'।

क्लीवता, स स्त्री (सं) श(ष)ढता, नपुंसकता २ कातरता।

क्लेद, स पु (सं) आर्द्रता, स्तेम, तेम। २ प्रस्वेद।

क्लेश, सं पु (सं) दुःख, कष्ट, पीडा, व्यथा, वेदना, चिंता, आस्रव, आदीनव।

क्लेशित, वि (स) दे 'क्लिष्ट' (१)।

क्लैव्य, सं पु (सं न) दे 'क्लीवता'।

क्लोम, स पु (स न) क्लोम, क्लोमन् (न), तिल्व, पुप्फुस, दे 'फेफड़ा'।

क्लोरीन, स स्त्री (अ) नीरजी, हरिनम्।

क्लोरोफार्म, स पु (अ) मूर्च्छकम्, सज्ञालोपकम् (औषधभेद)।

क्वणित, वि (सं) ध्वनित, सरव, सशब्द। स पु (सं न) शब्द, स्वन।

क्वथित, वि (स) श्राण, शृत, श्रपित।

क्वाथ, सं पु (स) दे 'काढ़ा'।

क्वारंटाइन, स पु (अ) निषिद्धससर्गगृह, २ ससर्गप्रतिबन्ध,, गमनागमननिषेध।

क्वारा, वि (स कुमार) दे 'कुँवारा'।

क्वार्टर, सं पु (अ) (राज्यसस्थादिनिर्मित) गृह, गेह, सदन, भवनम्। २ पाद, चतुर्थांश ३ त्रिमासम्, वर्षपाद।

क्वीन, स स्त्री (अ) राज्ञी, राजपत्नी।

क्षतव्य, वि (सं) क्षमार्ह, मर्षणीय, सोढव्य।

क्षण, स पु (स) अत्यल्पसमय, मुहूर्त, निमेष, पल, त्रिंशत्कलापरिमितकाल २ समय ३ अवसर ४ उत्सव।

—प्रभा, स स्त्री, विद्युत (स्त्री), चचला।
—भगुर, वि, विनश्वर, क्षणिक, अस्थिर।
—भर, क्रि वि, क्षणमात्र, मुहूर्त पल, मानम्।
क्षणिक, वि (सं) क्षणस्थायिन्, अनित्य, अस्थिर, विनश्वर, निस्सार, अस्थायिन्।
क्षत, वि (सं) व्रणित, भिन्नदेह, ताडित, क्षतियुक्त, आहत।
सं पु (स न) व्रण, क्षति (स्त्री), अरुस (न), आघात, ईर्म २ स्फोट, पिटक।
—योनि, वि स्त्री (सं) समुक्ता, कृतसहवासा।
—विक्षत, वि (सं) अतीव व्रणित विद्ध आहत।
क्षति, स स्त्री (सं) क्षय, नाश २ अपचय, हानि (स्त्री) ३ व्रण, ईर्मम्।
क्षत्र, सं पु (सं न) बल, शक्ति (स्त्री) २ राष्ट्र ३ धन ४ शरीर ५ जल ६ तगर वृक्ष। (सं पु) क्षत्रिय।
—पति, सं पु, नृप।
क्षत्राणी, सं स्त्री (सं क्षत्रियाणी) (क्षत्रिय जाति की स्त्री) क्षत्रिया, क्षत्रिय(यि)का, क्षत्रियाणी २ (क्षत्रिय की पत्नी) क्षत्रियाणी, क्षत्रियी।
क्षत्रिय, स पु (सं) वर्णविशेष २ राजन्य, बाहुज, मूर्द्धाभिषिक्त, क्षत्र ३ योध, भट, वीर।
क्षत्री, स पु दे 'क्षत्रिय'।
क्षपणक, स पु (सं) दिगम्बरयति २ बौद्ध भिक्षु ३ कविविशेष। वि, निर्लज्ज।
क्षपा, सं स्त्री (सं) रात्रि (स्त्री), निशा, यामिनी।
—कर,-नाथ, सं पु (सं) चन्द्र, सोम।
क्षम, वि (सं) शक्त, समर्थ, उपयुक्त, योग्य।
क्षमता, सं स्त्री (सं) योग्यता, सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री)।
क्षमा, सं स्त्री (सं) क्षांति (स्त्री) तितिक्षा, सहिष्णुता, मर्षण, सहनशीलता २ पृथिवी ३ खदिरवृक्ष, ४ दक्षकन्या ५ दुर्गा ६ वेत्रवती नदी ७ राधिकासखी ८ वर्णवृत्तभेद।
—करना, क्रि स, क्षम् (भ्वा आ वे, दि प वे), सह् (भ्वा आ से), मृष् (दि उ से)।
—शील, वि (सं) क्षमिन्, क्षमावत, क्षमितृ, सहिष्णु, सहन, क्षन्तृ, तितिक्षु, क्षमायुक्त।
क्षमावान, वि (सं वत्) दे 'क्षमाशील'।
क्षम्य, वि (सं) क्षन्तव्य, क्षमार्ह, क्षमोचित, मर्षणीय, सोढव्य।
क्षय, सं पु (सं) अपचय, ह्रास २ कल्पात प्रलय ३ नाश, प्रध्वस ४ गृह ५ यक्ष्म, यक्ष्मन् (पु), राजयक्ष्मन् (पु) ६ रोग ७ अत, अवसान, क्षयरोग, शोष, रोगराज, गदाग्रणी (पु), अतिरोग, रोगाधीश नृपामय।
—कास, स पु (सं) क्षयथु, यक्ष्मकास (पु)।
—मास, सं पु (सं) मलिम्लुच, मल अधिक, मास।
—रोग, सं पु, दे 'क्षय' (५)।
—रोगी, सं पु (सं गिन्) क्षयिन्, यक्ष्मिन्, रोगराज शोष-ग्रस्त।
क्षयी, वि (सं यिन्) अपचयिन्, ह्रासिन् २ शोषिन्, यक्ष्मिन्, रोगराजपीडित।
—रोग, सं पु, दे, 'क्षय' (५)।
क्षर, वि (सं) नश्वर, अनित्य।
क्षरण, सं पु (सं न) शनैः शनैः विंदुश विप्रुट्क्रमेण गलन स्यदन स्रवणम्।
क्षांत, वि (सं) क्षमाशील, क्षमावत्, क्षमिन् २ सहिष्णु, सहनशील।
क्षांति, सं स्त्री (सं) दे 'क्षमा' (१)।
क्षार, सं पु (सं) सर्जिका, विडलवण २ लवण ३ दे 'शोरा' ४ दे 'सुहागा' ५ भस्मन् (न)।
क्षिति, सं स्त्री (सं) भूमि (स्त्री), पृथिवी २ क्षय, ह्रास, नाश।
—पाल, सं पु (सं) नृप।
क्षितिज, सं पु (स न) दिक्-चक्र तट, दिगत, दिङ्मडल, अवरात, आकाशकक्षा। २ मगलग्रह, कुज ३ वृक्ष ४ दे 'केंचुआ'।
क्षिप्त, वि (सं) त्यक्त, विसृष्ट, प्रास्त २ विकीर्ण ३ अवज्ञात ४ पतित ५ वातरोगग्रस्त।
क्षिप्र, क्रि वि (सं न) द्रुत, सपदि, द्राक्, दे 'शीघ्र'।
वि, त्वरित, सत्वर, जवन, वेगवत्, शीघ्र।
—हस्त, वि (सं) शीघ्रकारिन्, आशुकर्तृ।
क्षीण, वि (सं) सूक्ष्म, प्र, तनु, श्लक्ष्ण २ कृशांग, कृश, क्षाम, क्षीण शुष्क, मास ३ नष्ट, ध्वस्त, क्षयगत।

क्षीणता, स स्त्री (स) दुर्बलता, निःशक्तता २ सूक्ष्मता, तनुता ३ कृशता क्षामता ४ ह्रास, अपचय नाश।
क्षीर, स पु (स न) दुग्ध पयस् (न) २ जल ३ पायस स।
—निधि, स पु (स) सागर।
—नीर, स पु आलिंगन २ मिश्रणम्।
—सागर, स पु (स) क्षीराब्धि (पु) दुग्ध-सागर समुद्र, क्षीरोद।
—सार, स पु, दे 'मक्खन'।
क्षीरज, स पु (स) चंद्र २ शख ३ कमल ४ दधि (न)।
क्षीरजा, स स्त्री (स) दे 'लक्ष्मी'।
क्षीरधि, स पु (स) सागर, समुद्र।
क्षीरोद, स पु (स) दे 'क्षीरसागर'।
क्षीव, वि (स) उन्मद, समद, मदोन्मत्त।
क्षुण्ण, वि (स) प्रहृत, चूर्णीकृत, खडशो भिन्न।
क्षुद्र, वि (स) अधम, निकृष्ट, नीच २ अल्प, स्तोक ३ कृपण ४ कुटिल ५ दरिद्र।
क्षुद्रता, स स्त्री (स) तुच्छता, निकृष्टता २ कुटिलता ३ दरिद्रता।
क्षुधा, स स्त्री (स) दे 'भूख'।
क्षुधातुर, **क्षुधार्त**, **क्षुधित** } वि (स) दे 'भूखा'।
क्षुप, स पु (स) क्षुपक, क्षुद्रवृक्ष गुल्म -म।
क्षुब्ध, वि (स) व्याकुल, विह्वल आतुर, उद्विग्न २ चचल ३ भीत, त्रस्त ४ क्रुद्ध।
क्षुर, स पु (स) नापितस्य लोमच्छेदकशस्त्र क्षौरी, क्षुरी क्षुरः २ शफ, गवादीनां पादाग्रम्।
क्षुरी, स पु (स रिन्) नापित, क्षौरिक मुड, मुडिन्।
क्षुल्लक, वि (स) स्वल्प, स्तोक २ दुष्ट, दुर्वृत्त ३ निर्धन, दरिद्र। स पु, बाल, बालक।
क्षेत्र, स पु (स न) खेद (दा) र, भूमि (स्त्री) वप्र प्र। २ समभूमि ३ उत्पत्ति स्थान, उद्भव, उद्गम ४ प्रदेश ५ तीर्थस्थान ६ राशि (पु, मेषादि) ७ पत्नी ८ शरीर ९ अतःकरण १० रेखावेष्टित स्थानम्।
—गणित, स पु (स) गणितशास्त्रभेद।
—फल, स पु (स न) वर्गपरिमाणम्।
क्षेत्रज, स पु (स) नियोगजपुत्र (धर्मशास्त्र)।
क्षेत्रज्ञ, स पु (स) जीव २ ईश्वर ३ कृषक। वि ज्ञाता दक्ष, निपुण।
क्षेप, स पु (स) क्षपण, प्रक्षेप, प्रसन विस र्जन २ निन्दा ३ यापन ४ दूरता।
क्षेपक, वि (स) क्षेप्तृ, प्रासक, प्रेरक २ मिश्रित ३ निन्दनीय। स पु, नाविक २ प्रक्षिप्त निवेशित, लेख।
क्षेपण, स पु (स न) दे 'क्षेप' (१ ३)।
क्षेपणी, स स्त्री (स) अस्त्रविशेष २ नौका दड, क्षेपणि (स्त्री)।
क्षेम, स पु (स पु न) लब्धरक्षण प्राप्तरक्षा २ मगल, कुशल ३ अभ्युदय ४ आनद ५ मुक्ति (स्त्री)।
क्षोणि, स स्त्री (स) क्षोणी पृथिवी।
—पति, **—पाल**, स पु (स) नृप, भूप।
क्षोद, स पु (स) चूर्ण, पिष्ट २ पेषण ३ जल।
क्षोभ, स पु (स) अशांति अनिवृति (स्त्री), चित्तचाचल्य व्यग्रता, उद्वेग, व्याकुलता २ भय ३ शोक ४ क्रोध।
क्षोभित, वि (स) दे 'क्षुब्ध'।
क्षोणी, स स्त्री (स) क्षोणि (स्त्री) पृथिवी।
क्षौद्र, स पु (स न) मधु (न) २ जल ३ क्षुद्रता। (स पु) चपकवृक्ष ४ वर्ण सकरविशेष।
क्षौम, स पु (स पु न) अट्ट, अट्टालिका (२ ४) पट्ट अतसी शणज-वस्त्र।
क्षौर, स पु (स न) } दे 'हजामत'।
—कर्म, स पु (स र्मन् न) } दे 'हजामत'।
क्षौरिक, स पु (स) दे 'नाई'।
क्ष्मा, स पु (स) पृथिवी, अवनी।
क्ष्वेड, स पु (स) ध्वनि, शब्द २ विष ३ कर्णरोगभेद।

ख

ख, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीयव्यजनवर्णः, खकार।
खं, स पु (स न) शून्यस्थानं २ छिद्र ३ आकाश ४ इद्रिय ५ बिंदु (पु), शून्य ६ स्वर्ग ७ सुख ८ ब्रह्मन् (न)।
खंख, वि (स) रिक्त शून्य २ निर्धन, दरिद्र।
खँखरा, वि, दे 'खोखर'।
खँखार, स पु, दे 'खखार'।
खगर, स पु (देश) घनीभूतोत्तप्तपक्वेष्ट कावक। वि, अतिशुष्क।

खँगालना, क्रि स , (सं क्षालन) ईषत् धाव (म्वा , चु उ से)-प्रक्षल् (चु) ।

खन, सं पु (सं) खोर , खोर , खोट , खोट , विकल्पगति २ पादरोगभेद ।

खजन, सं पु (सं) खञ्जरीट , खञ्जन , मुनिपुत्रक , रत्ननिधि (पु), तूनीद ।

खंजर, स पु (फा) दे 'कगर'।

खजरी, स स्त्री (सं खञ्जरीट = एक ताल >) लघु , डमरु डिंडिम ।

खजरीट, सं पु (सं) दे 'खजन'।

खँड, स पु (सं खण्डम्) दे 'खाँड'।

खड, स पु (सं पु न) लव , शकल ल , अश , विभाग वि ,दल , भिन्न २ देश ३ नवमख्या ४ रत्नदोषभेद ५ अध्याय ६ पात्य , कृष्णलवण ७ दिशा । वि , अल्प , लघु , अपूर्ण ।

—**करना**, क्रि सं खण्ड-खण्ड छिद् (रु प अ)-लू (क्र उ से)-कृत् (तु प से)।

—**काव्य**, सं पु (सं न) लघुप्रबन्धकाव्यम् ।

—**प्रलय**, स पु (सं) ब्रह्माडस्य एकदेशीय आंशिक-नाश विध्वस क्षय ।

खडन, स पु (सं न) भजन , भेदन , छेदन , कर्तन , त्रोटनम् २ प्रत्याख्यान , निराकरण , निरसनम् ।

खडनीय, वि (स) भेत्तव्य , छेत्तव्य २ प्रत्या ख्येय , निरसनीय ।

खडर, सं पु (स खड + हिं घर) ध्वसाव शेष , अजर्र-जीर्ण-शीर्ण -गृह नगरम् ।

खडरिच, सं पु , दे 'खजन'।

खडश , अ (स) विभागश , अशश , अव यवश (सब अव्य) ।

खडहर, सं पु , दे 'खडर'।

खडित, वि (सं) भग्न , त्रुटित , लून , छिन्न २ असमग्र , अपूर्ण ।

खडक, सं स्त्री (अ) परिखा , खेय , राजधा न्यादिवेष्टनखात , २ बृहद्-श्वभ्र-गर्त -अवट ।

खंदा, वि (फा) सहास , हासक । स पु , हास , हास्यम् ।

—**पेशानी**, वि स्मेराननं , हास्यमुख

खभा, खभ , खंभा , सं पु (सं स्तम) डभ , स्तम , अवष्टम , स्थाणु (पु), स्थूणा ।

ख, सं पु (स न) गर्त -र्ता , अवट २ रिक्त स्थान ३ निर्गम ४ बिल , विवर ५ इन्द्रिय ६ दुख ७ शून्य ८ शकटचक्रनाभिछिद्र ९ आकाश १० स्वर्ग ११ बिंदु (पु), शून्य १२ ब्रह्मन् (न) १३ शब्द १४ कण्ठस्थ प्राणनाडी १५ सुख १६ क्षेत्र १७ पुर । (सं पु) सूर्य ।

खकखा, स पुं (अनु) अट्टहास , उच्चैर्हास , प्र-अनि-हास ।

खक्खा, सं पु (हिं खत्री का 'ख') पाचनद क्षत्रिय २ अनुभवी पुरुष ३ महागज ।

खखार, स पु (अनु) कफ , श्लेष्मन् (पु), सघान , सौम्यधातु (पु), घन ।

खखारना, क्रि अ (अनु) कफ निर्-(प्रे)- उद्गॄ (तु प से), निष्ठिव् (म्वा दि प से)।

खखोडर, स पु (स ख+कोटर >) तरुकोटर स्थ स्थ खगनीड -ड २ उलूक , निलय -कुलाय ।

खग, सं पु (स) पक्षिन् (पु), अण्डज , नीडज २ गधर्व ३ देव ४ बाण ५ ग्रह ६ मेघ ७ सूर्य ८ चंद्र ९ वायु (पु)।

—**पति**, सं पु (सं) खगेश , वैनतेय , गरुड , खगकेतु (पु), खगराज ।

खगोल, स पु (सं) आकाश-गगन , मण्डल , गगनाभोग ।

—**विद्या**, स स्त्री (सं) ज्योतिःशास्त्र , ज्योतिष ।

खचखच, स स्त्री (अनु) पके चलनध्वनि (पु)।

खचना, क्रि अ (स खचन) खच्-निविश् प्रतिवप् (कर्म) ३ अकित-चित्रित (वि)+भू ।

खचर, स पु (स) सूर्य २ मेघ ३ ग्रह ४ नक्षत्र ५ वायु ६ पक्षिन (पु) ७ बाण ८ राक्षस । वि नभश्चर , गगनचारिन् ।

खचरा, वि (हिं खचर) वर्णसकर , मिश्रज २ दुष्ट , खल ।

खचाखच, क्रि वि (अनु) निबिड , गाढ , अविरल , निरतर । वि जनाकीर्ण , जनसकुल ।

—**भरना**, क्रि अ , स आवृ (कर्म), परिपॄ (कर्म), सकुल समाकुल (वि)+भू ।

खचित, वि (सं) निवेशित , प्रत्युप्त २ लिखित , चित्रित ।

ख़च्चर, स पु (देश) वेगसर, वेस(श)र, अश्वतर (स्त्री अश्वतरी)।
खज, स पु (स) मन्थक, मथन, तक्राट २ मथन, रथ ३ युद्ध, संग्राम ४ कर्चीनि (स्त्री)।
ख़ज़ानची, स पु (फा) कोष धन,-अध्यक्ष अधीश अर्थाधिकारिन्।
ख़ज़ाना, स पु (अ) कोश प, निधान, निधि (पु), द्रव्य, राशि (पु)-संग्रह २ निक्त, द्रविण ३ कोशागार, भांडागार, कोश (प) गृहम्।
ख़जिल, वि (फा) लज्जित, व्रीडित, त्रपित।
खजूली, स स्त्री (स खर्जू स्त्री) दे 'खुजली'।
खजूर, स पु स्त्री (स खर्जूर) (वृक्ष) खर्जूरी, दुष्प्रधर्षा, दुरारोहा, यवनेष्टा, हरिप्रिया २ (फल) खर्जूर, खर्जूरफलम्। ३ मिष्टान्न भेद, खर्जूरिका।
खजूरी, वि (हिं खजूर) खार्जूर,-विषयक-सब धिन्, खार्जूर २ वेणीरूपेणग्रथित,-व्यावर्तित।
खटक, स स्त्री (अनु) भय, त्रास २ चिंता।
खट¹ वि (स षट्) दे 'छ'।
खट², स पु (अनु) सघट्टजो ध्वनि (पु), खटितिशब्द, खटखटशब्द।
—से, कि वि, सपदि, झटिति, क्षणेन।
खटकना, कि अ (अनु) खटखटायन (ना धा), खटखट शब्द कृ २ मुहु मुहु पीड् (कर्म)-टीप् (दि आ से) ३ अयुक्त-असमीचीन अनुचित (वि)+प्रति इ (कर्म) ४ भी (जु प अ), भ्रम् (दि प से) ५ वैरायते-कलहायते (ना धा), विवद् (भ्वा आ से) ६ अनिष्ट-अपकार आशंक् (भ्वा आ स)।
खटका, स पुं (हिं खटकना) खटखटा, शब्द-नाद ध्वनि २ भय, त्रास, आशंका ३ चिंता ४ कील-ल ५ अर्गल, तालक ६ पादशब्द।
—लगाना, कि अ, भ्रम् (दि प से), चिन्तित-व्यग्र (वि)+भू।
खटकाना, क्रि स, दे 'खटखटाना'।
खटकीड़ा, स पु(सं खट्वाकीट) दे 'खटमल'।
खटखट, सं स्त्री (अनु) खटखटा, शब्द ध्वनि (पु) नाद २ कलह, विवाद ३ दे 'झझट'।
खटखटाना, क्रि स (अनु) तीव्र अभिहन् (अ प अ)-तड् (चु) प्रह (भ्वा प अ) खटखटाशब्द कृ २ स्मृ (प्रे)।
खटगीर, सं पु, दे 'खटमल'।
खटखप्पर, सं पु, दे 'मसहरी'।
खटना, क्रि स, दे 'कमाना'।
खटपट, सं स्त्री (अनु) कलह, विवाद २ खटखटाशब्द, शब्द, घोष शिंजितम्।
खटबुना, सं पु (हिं खाट+बुनना) खट्वा, वाय-वाप, मच-पर्यंक,-वाय-वाप।
खटमल, सं पु (सं खट्वामल >) उद्दश, मत्कुण, ओकण, ओकोदनी।
खटमीठा, वि (हिं खट्टा+मीठा) अम्ल मधुर, शुक्तमिष्ट।
खटराग, स पु (सं षड्रागा) मेघदीपकादय षड्रागा २ कलह ३ विस्वरता, विसंवाद ३ व्यर्थवस्तुजातम्।
खटाई, सं स्त्री (हिं खट्टा) अम्लता, शुक्तता २ अम्ल, द्रावक ३ अम्ल-शुक्त,-पदार्थ।
—पड़ना, सं पु, अम्लरोग (अजीर्णभेद)।
—में पड़ना, मु, चिरायते मंदायते (ना धा), व्याक्षिप् (कर्म), अनिर्णीत (वि) स्था (भ्वा प अ)।
खटाका, सं पु (अनु) खटकार, खटिति शब्द, महा,-शब्द-रव।
खटखटा, स पु (अनु) दे 'खटपट' २ शिंजित, क्वणित। क्रि वि, खटखटाशब्द २ अनवरत, सपदि।
खटापटी, सं स्त्री दे 'खटपट' १।
खटाव¹, स पु (देश) नौकाबंधनकील-स्तम्।
खटाव², स पु, दे 'निर्वाह'।
खटास¹, स पुं (सं खट्टास-श) गन्धमार्जार, वनेचमन।
खटास, सं स्त्री (हिं खट्टा) अम्लता, शुक्तता।
खटिक, स पुं, फलादिविक्रेतृजातिभेद, *खटिक।
खटिया, सं स्त्री (हिं खाट) लघु खट्वा पर्यंक-मच, खट्विका, खट्वाका।

खटीक, सं पु (सं खट्टिक) सौनिक, शौनिक २ व्याध, लुब्धक, नास्तिक ३ दे 'खटिक'।
खटोलना, सं पु, दे 'खटिया'।
खटोला, सं पु (हिं खाट) दे 'खटिया'।
खट्टा, वि (स कट्टु>) अम्ल, शुक्त।
सं पु, बीज-फल,-पूर, दतशठ, जम्भक, जम्भल छोलग।
—चूक, वि, अति आयन्त, अम्ल शुक्त।
—मीठा, वि, दे, 'खटमीठा'।
—सा, वि, ईषदम्ल, आशुक्त।
जी—होना, मु, गतस्पृह-निर्विण्ण वितृष्ण (वि)+भू।
खट्टास, सं स्त्री (हिं खट्टा) दे 'खगास' (२)।
खट्टू, सं पु (प खटना) धनार्जक, वित्तोपार्जक २ कर्म, कर-कार।
खट्वा, सं स्त्री (सं) दे 'खाट'।
खड, सं (सं खात) गर्त-र्ता, अवट बिल, विवर २ दरी, उपत्यका।
खड़कना, क्रि, अ (अनु) खड़खड़ा शब्द कृ। दे 'खटकना'।
खड़का, सं पु, दे 'खटका'।
खड़काना, क्रि स } दे 'खटपटाना'।
खड़खड़ना, क्रि स }
खड़खड़ाहट, स स्त्री (हिं खड़खड़) खड़खड़-शब्द रव ध्वान २ तुमुलरव ३ कटु-कर्कश परुष, ध्वनि (पु)।
खड़खड़िया, सं स्त्री (हिं खड़खड़) दे 'पालकी'।
खड्ग, सं पु (स खड्ग) असि, दे 'तलवार'।
खड्गी, वि (सं खड्गिन्) आसिक, खड्ग धर २ खड्गमृग, दे 'गैंडा'।
खड़बड़ाहट, स स्त्री दे 'गड़बड़ाहट'।
खड़बड़ी, सं स्त्री दे 'गड़बड़ी'।
खड़मंडल, स पु दे 'गड़बड़ी'।
खड़सान, स पु दे 'खरसान'।
खड़ा, वि (सं खडक=खम्भा>) (दण्डवत्) स्थित, उत्थित २ उच्छ्रित, उन्नत, उत्तान, ऊर्ध्व, लम्बरूप, खमध्य, वर्तिन् वर्धिन् ३ स्थिर, अचल, स्तब्ध, निश्चल, निश्चेष्ट ४ उपस्थित, प्रस्तुत ५ सज्ज, सनद्ध, उद्यत ६ निर्मित, रचित ७ अपक्व, असिद्ध ८ अनुत्खात, अलून ९ समस्त, समग्र [खड़ी (स्त्री) =स्थिता इ]।
—करना, क्रि सं, 'खड़ा होना' के प्रे रूप।
—रहना, क्रि अ, अचल-रुद्धगति (वि)+स्था इ)।
—होना, क्रि अ (पद्भ्या) स्था (भ्वा प अ), उत् स्था, २ विरम् (भ्वा प अ), निवृत् (भ्वा आ से), स्तम्भ (कर्म), स्थिरी निश्चली, भू ३ उपकृ, सहाय्य कृ ४ उच्छित-उन्नत उत्तान (वि)+भू ५ निर्मा विरच (कर्म) ६ निधा निवेश् (कर्म)।
खड़े-खड़े, क्रि वि, स्थित एव २ झटिति, सपदि, सद्य (सब अव्य)।
खड़ाऊँ खड़ाँव, सं स्त्री (अनु खड+हिं+पाँव) कोशी-षी, (काष्ठ-) पादुका।
खड़ाका, स पु (अनु) खड़खड़ा, शब्द ध्वान।
खड़िया, स स्त्री (सं खडिका) खड़ी, कठिनी दे 'चाक'।
खड़ी, स स्त्री (स खडी) दे 'खड़िया'।
खडग, स पु (सं) दे 'खड्ग'।
खडगी, स पु तथा वि, (स खड्गिन्) दे 'खड्गी'।
खड्ड, खड्ढा, स पु (स खात) दे 'खड'।
खड्डी, स स्त्री (स खात>) तन्त्रवाप प, वाय(प) दण्ड, वेम, वेमन् (पु न), वान दण्डक, वाणि (स्त्री)।
ख़त, स पु (अ) सदेश, पत्र-लेख्य लेख २ हस्तलेख, स्वहस्ताक्षर ३ अक्षरसंस्थान, लिखित, लिपि दि (स्त्री) ४ रेखा, लेखा, रेषा ५ मुखरोमन् (न), श्मश्रु (न), कूर्च ६ क्षौर मुण्डनम्।
—आना, क्रि अ, प्रथमत मुखरोमाणि उद्भू।
—खींचना, क्रि स, रेखा आ-अभि लिख् (तु प से)।
—बनाना, क्रि स, मुड् (भ्वा प से, चु) क्षुरेण वृत् (तु प से)-छिद् (रु प अ) लू (क्र उ से)।
—किताबत, स स्त्री, (अ) पत्र-व्यवहार-विनिमय।
—शिकस्ता, सं पु (अ+फा) वक्रलेख।

खतना, सं पु (अ) शिश्नत्वक्छेदः (इस्लाम)।
खतम, वि (अ खत्म) समाप्त, पूर्ण।
—करना मु, मृ (प्र), हन् (अ प अ)।
—होना, मु, मृ (तु आ अ)।
खतर, म पु (अ) दे भय, त्रास।
—नाक, वि भयानक, भयङ्कर।
खतरा, स पु (अ) भय, भीति (स्त्री), दे 'भय' २ संशय, सन्देह।
खतरानी, स स्त्री, दे 'क्षत्राणी'।
खता, स स्त्री (अ) अपराध, दोष २ छलं वञ्चना ३ प्रमाद, स्खलितम्।
—वार, वि (अ + फा) अपराधिन्, दोषिन्।
खतियाना, कि. स (हिं खाता) आयव्यय पत्रिकायां यथास्थान लिख् (तु प से)।
खतियौनी, स स्त्री (हिं खतियाना) (वृहद) आयव्ययपत्रिका २ तत्र यथास्थान लेख ३ क्षेत्रपतिसूचीपत्रम्।
खत्ता, स पु (सं खात) अवटः, गर्तः २ धान्यागारः ३ निधि (पु) ४ राशि (पु)।
खत्म, वि, दे 'खतम'।
खत्री, स पु (स क्षत्रिय) पश्चनदप्रान्ते आर्यावासुप्रजातिविशेष २ दे 'क्षत्रिय'।
खदबदाना, कि अ (अनु) बुद्बुदायते (ना धा) मन्द क्वथ् (कर्म) दे 'उबलना'।
खदशा, स पु (अ) भय, आशङ्का।
खदान, स स्त्री, दे 'खान'।
खदिर, म पु (स) सारद्रुम, कुष्ठारि (पु), गायत्री, दन्तधावन, बाल-तनय पत्र, यज्ञाङ्ग, सुशल्य, वक्रकण्ट। २ दे 'कत्था' ३ चन्द्र ४ इन्द्र।
खदेड़, स स्त्री (हिं खदना) अनुधावनं, अग्न आच्छोदनम्।
खदेड़(र)ना, कि स (हिं खदना) नि अस्-स (प्रे), बहिष्कृ, निष्कम्-निर्गम (प्रे) २ अनुगम्, अनुधाव् (भ्वा प से), मृग (चु आ से)।
खद्दर, दे० 'खद्दी'।
खद्योत, स पु (सं) प्रभाकीट, दे 'जुगनूं' २ सूर्य
खनक, स पु (स) उन्दुर (पु), मूषिक २ सन्धिस्फोटक ३ अवदारक, खातक ४ आकर, ख(खा)नि नी (स्त्री) ५ भूगर्भवेत्तृ (पु)। सं स्त्री (अनु) ध्वनि, शिञ्जितम्।
खनकना, कि अ (अनु) शिञ्ज् (अ आ से, चु), कण् (भ्वा प से), झणझणायते खणखणायते (ना धा)।
खनकाना, कि स, 'खनकना' के प्रे रूप।
खनखनाना, कि अ तथा कि स, दे 'खनकना' तथा 'खनकाना'।
खनना, दे 'खोदना'।
खनिज, वि (सं) धातु (पु), आकरज पदार्थ।
खनित्र, सं पु (सं न) अवदारणम्।
खपची, सं स्त्री, दे 'खपाच'।
खपड़ा(रा), सं पु (स खर्पर) १ कर्परः २ मृत्पट्टिका ३ भिक्षापात्रम्।
खपड़ी(री), सं स्त्री (सं खर्पर) धान्यभर्जनार्थं मृत्पात्रम्।
खपत, खपती, सं स्त्री (हिं खपना) समावेश, व्याप्ति (स्त्री) २ विक्रय, पणन ३ व्यय, विनियोग।
खपना, कि अ (सं क्षपण >) प्र-उप-युज् (कर्म), व्यवहृ-व्याप् (कर्म) २ वि परिहा (कर्म), नश् (दि प से) ३ क्लिश्-तप् पीड् (कर्म)
खपरै(है)ल, सं स्त्री (हिं खपड़ा) मृत्पट्टिकाभि खर्परै वा आच्छादित पटल ३ तादृशपटलयुक्त गृहम्।
खपाच, सं स्त्री (तु कमची) (काष्ठ-) खण्ड-ड, वंशस्य शकल-ल, २ अनिकृश पुरुष।
खपाना, कि स (हिं खपना) प्र-उप-युज् (रु आ अ, चु), उपयुज्य-उपभुज्य निर वशेषीकृ, व्यवहृ-व्याप् (प्रे) २ व्यय्-विनियुज् (चु) ३ वि-नश् (प्रे) ४ ताप्-पीड् (प्रे)।
खपुर, स पु (स न) गगनस्थो दैत्यनगरविशेष २ गगनस्था हरिश्चन्द्रनगरी।
खपुष्प, सं पु (स न) गगनकुसुम, असम्भव असाध्य वस्तु (न), दृष्टा, विषाण-म्गम्।
खप्पर(ड़), सं पु (सं खर्पर) मृत्पात्रभेद

२ काल्या' रुधिरपानपात्र ३ भिक्षाभाजन ४ कपाल -लम् ।

ख़फ़क़ान, सं पु (अ) हृत्कम्पन २ (हिस्टीरिया) गर्भाशयोन्माद , वातोन्माद , हर्षमोह ।

ख़फ़्गी, सं स्त्री (अ) प्रमाद प्रीति,-अभाव २ कोप , क्रोध ।

ख़फ़ा, वि (अ) रुष्ट, कुपित, क्रुद्ध २ विषण्ण।

ख़फ़ीफ़, वि (अ) अल्प, न्यून २ लघु ३ क्षुद्र ४ लज्जित।

ख़फ़ीफ़ा, स स्त्री (फा) लघु,-न्यायालय धर्माधिकरणम् २ कुलटा, व्यभिचारिणी ।

ख़बर, सं स्त्री (अ) समाचार , उदन्त , वृत्तान्त वृत्त, वार्ता, प्रवृत्ति (स्त्री) २ ज्ञान, बोध ३ सदेश ४ सज्ञा, चैतन्य ५ जनप्रवाद ।

—करना, देना या पहुँचाना, क्रि सं , विज्ञा (प्रे), नि-आ विद् (प्रे), सदिश (तु प अ), बुध्-अवगम् (प्रे)।

—लगाना, क्रि स, दे 'ढूढना'।

—देनेवाला, स पु, विज्ञापक , आवेदक , सूचक ।

—ले जाने वाला, सं पु दूत , वार्तासदेश,-हर ।

ख़बरगीरी, सं स्त्री (अ +फा) अवेक्षा, रक्षण, चिन्ता २ सहानुभूति (स्त्री), सहायता ।

ख़बरदार, वि (अ +फा) दे सावधान'।

ख़बरदारी, स स्त्री (अ+फा) दे 'सावधानता' ।

ख़बीस, स पु (अ) भयकर, रक्त ।

ख़ब्त, सं पु (अ) उन्माद', चित्त, विप्लव भ्रम २ उत्सुकता, सामान्यविरोध ।

ख़ब्ती, वि (अ) उन्मादिन् २ उत्सुक, लोकबाह्य ।

खब्बा, वि (प, स सर्व>) वाम, सव्य, दक्षिणतर २ वामहस्त, सव्यसाचिन् ।

ख़म, स पु (फा) वक्रता, जिह्मता, आभुग्नता कुटिलता ।

—दम, सं पु-, शौर्य, विक्रम ।

—दार, त्रि , आनमित, आभुग्न, कुञ्चित ।

ख़मसा, वि (अ) पच, विषयक सम्बन्धिन् । सं पु-, पचकम् २ पद्यभेद ३ अगुली पचकम् ।

ख़मियाज़ा, सं पु (फा) प्रतिफल २ दण्ड ३ कष्टम् ४ हानि (स्त्री) ।

ख़मीदा, वि (फा) वक्र, जिह्म, अराल ।

ख़मीर, सं पु (अ) किण्व , जगल , मासर , मेदक , कारोत्तर , नग्नहू (पु)।

—उठाना, क्रि स किण्वेन समिश्र (चु)। स पु किण्वन, किण्वीकरण ।

ख़मीरा, वि (अ) किण्व-जगल, मिश्रित २ घनमधुक्वाथ ३ तमाखुभेद ।

ख़यानत, स स्त्री (अ) सकपटाहरण, दुर्विनियोग २ चौर्य, वचना ।

—करना, क्रि स कपटेन आत्मसात् कृ अथवा विनियुज (रु आ अ)।

ख़याल, स पु दे 'ख़्याल'।

ख़याली, वि , दे 'ख़्याली'।

खर, स पु (सं) गर्दभ , रासभ २ अश्वतर , वेसर' ३ बक ४ काक ५ रावणभ्रातृ (पु) ६ तृण, घास ।
वि , कठोर, खरस्पर्श, कठिन २ तीक्ष्ण ३ स्थूल ४ अमगल, अमागलिक ५ निशित ६ प्रवण, तिर्यंच।

ख़र, स पु (फा) गर्दभ , रासभ ।

—दिमाग, वि , जड, अज्ञ, खरमति ।

ख़रख़र, स स्त्री (अनु) घर्घर , घर्घर,-रव -शब्द ।

—करना, क्रि स, घर्घरायते (ना धा), घर्घरध्वनिं कृ।

खरखरा, वि दे 'खुरखुरा'।

ख़रगोश, स पु (फा) शश , शशक , शूलिक क्षुद्ररोमन् (पु), रोमकर्ण ।

खरच, स पु, दे 'खर्च'।

ख़रचना, क्रि स (फा खर्च) व्यय् (चु), उत् वि, सृज (तु प अ), विनियुज (रु आ अ , चु), क्षय-व्यय,-कृ।

खरचा, स पु दे 'खर्चा'।

खरज, सं पु दे 'षड्ज'।

खरब, वि (सं खर्वम्) स पु, अर्बुदशतकम् (१००००००००००००) २ अर्बुददशकम् (१०००००००००००)।

खरबूज़ा, सं पु (सं खर्बूज) दशांगुल, षड्भुजा सुन रेखा भुरा, वृत्तकर्कटी।
खरमस्ती, स स्त्री (फा) दुष्टता, कुचेष्टा।
खरमास, स पु, दे 'खरवाँस'।
खरल, स पु (स खल्ल) उदू (ल) खल, औषधमर्दनभाजनम्।
—करना, क्रि स चूर्ण् (चु), चूर्णीकृ, पिष् (रु प अ), क्षुद् (रु उ अ)।
खरवाँस, स पु (स खरमास >) पौषचैत्रौ। (इनमें मांगलिक कार्य वर्जित हैं)।
खरसान, स स्त्री (स खरशाण) शाण-शाणी, भेद।
खरहरा, सं पु (हिं खर = तिनका + हरना) अश्वमार्जनी।
—करना, क्रि स, अश्व मृज् (अ प वे)।
खरहा, स पु, दे 'खरगोश'।
खरही, स स्त्री (हिं खर = घास)(घासादे) राशि (पु) २ घासभेद।
खरा, वि (स खर = तीक्ष्ण) तिग्म, तीक्ष्ण २ अमिश्रित, अविकृत, स्वच्छ, विशुद्ध, पवित्र, उत्तम ३ भगुर, भिदुर ४ निष्कपट, निश्छल ५ स्पष्ट यथार्थ, वादिन् वक्तृ ६ भूरि, बहु ६ कठिन, कीकस। खरी (स्त्री), विशुद्धा इ।
—खेल, सं पु निष्कपटव्यवहार, सरलाचरण।
—पन, स पु विशुद्धता, पवित्रता, उत्तमता, ऋजुता, *निष्कपटता इ।*
खराई, स स्त्री दे 'खरापन'।
खराद, स पु (अ खर्रात से फा खर्राद) भ्रमयत्र, कुद -द, भ्रम, भ्रमि (स्त्री), चक्र यत्रकम्।
खरादना, क्रि स कुन्देन सस्कृ।
खरादी, स पु (फा खर्राद) कुंदिन्, चक्रिन्।
खराब, वि (अ) निकृष्ट, गर्ह्य, निंद्य, हीन २ दीन, दुर्गत ३ पतित, च्युत ४ दुष्ट, पापिन्।
—करना, क्रि स मलिनी-कलुषी आविली, कृ २ स पथात् भ्रश् (प्रे) कुमार्गे प्रवृत् (प्रे)।
खराबात, स पु (अ) मदिरालय २ द्यूतगृहम् ३ वेश्यावीथी।
खराबाती, सं पु (अ) मद्यप २ द्यूतकार, कितव ४ वेश्यागामिन्।
खराबी, स स्त्री (अ) दोष, अवगुण २ दुष्टता, नीचता ३ दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री)।
खरारि(री), सं पु (स रि पु) रामचद्र २ श्रीकृष्ण ३ विष्णु।
खराश, स स्त्री (फा) दे 'खरोंच'।
खरिया, सं स्त्री, दे 'खड़िया'।
खरिहान, सं पु दे 'खलियान'।
खरी, सं स्त्री (सं) गर्दभी, रासभी।
खरीद, सं स्त्री (फा) क्रय, मूल्येन ग्रहण २ क्रीतपदार्थ।
—व फरोख्त, सं स्त्री (फा) *क्रयविक्रयौ* (द्वि)।
खरीदना, क्रि स (फा खरीदन) क्री (क्र्‍ उ अ) मूल्येन अधिगम् अथवा लभ् (भ्वा आ अ)।
खरीदार, स पु (फा) क्रयिक, क्रेतृ (पु), ग्राहक २ इच्छुक, अभिलाषिन् (पु)।
खरीदारी, स स्त्री (फा) क्रय, मूल्येनादान।
खरीफ, स स्त्री (अ) शारद शारदीय शरत्कालीन शस्य।
खरोंच, स स्त्री (सं क्षुर् = खुरचना >) ईषत्क्षत, त्वग्व्रण।
खरोंचना, क्रि स (पूर्व) खुर क्षुर् (तु प से) विलिख् (प्रे), (नखैः) क्षण् (त उ से) वक्(चु)-लिख् (तु प से)।
खरोट, स स्त्री, दे 'खरोंच'।
खरोटना, क्रि, स दे 'खरोंचना'।
खर्च, स पु (अ खर्ज) व्यय, धन, त्याग व्यय उत्सर्ग, विनियोग २ मूल्य, अर्घ, अर्हा।
—करना, क्रि, स दे 'खरचना'।
—होना, क्रि, अ, व्यय विसृज् विनियुज् (सब कर्म) क्षय-व्ययं या (अ प अ)।
खर्चना, क्रि स दे 'खरचना'।
खर्चा, स पु (अ खर्ज) दे 'खर्च' २ अभियोग कार्य व्यवहारपद, व्यय।
खर्चीला, वि (हिं खर्च) व्ययशील, अतिव्ययिन्, अमितव्यय।
खर्जूर, स पु (स) दे 'खजूर' २ वृश्चिक, द्रोण। (स न) रजत २ दे 'हरताल'।

खर्पर, सं पु (सं) दे 'खप्पर'।

खर्ब, सं पु, दे 'खरब २ दे 'गर्व'।

खर्बूजा, स पु, दे 'खरबूजा'।

खर्राटा, सं पु (अनु) घर्घर ।

—भरना, भरना या लेना, क्रि अ, घर्घरायते, घर्घरशब्द कृ, प्रगाढ स्वप् (अ प अ)।

खल, वि, (स) क्रूर, नृशंस २ अधम, नीच ३ दुष्ट, दुर्वृत्त ४ पिशुन ५ निर्लज्ज ६ छलिन्।

सं पु, दुर्जन २ सूर्य ३ तमालवृक्ष ४ पृथिवी ५. स्थान ६ खल् (दू) खल ७ ८ दे 'खलियान' तथा 'तलछट'।

खल्क, सं पु (अ) जीवा प्राणिन (बहु) २ जगत् (न), ससार ।

खल्कत, सं स्त्री (अ) सृष्टि (स्त्री), ससार २ जनौघ, जनसमर्द ।

खलड़ी, स स्त्री (हि खाल) त्वच् (स्त्री), त्वचा, त्वच, त्वचस् (न), छदिम (स्त्री), सछादनी, असृग्धरा २ (पशुओं की) चर्मन् (न) ३ (मरे पशुओं की) अजिन, दृति, कृत्ति (स्त्री) ४ शिश्नाग्रचर्मन् (न)।

खलता, स स्त्री (सं) कुचेष्टा, दुष्टता, दुर्वृत्तता, खलत्वम् ।

खलना, क्रि अ (स खर = तीक्ष्ण >) अनुचित-अयुक्त-अयोग्य-अनुपपन्न (वि) प्रतिभा (अ प अ)-दृश (कर्म)।

खलबल, सं स्त्री (अनु) क्षोभ, विप्लव, अशान्ति अनिर्वृति (स्त्री), प्रकोप, कलह, २ कोलाहल, उत्क्रोश ३ दे 'कुलबुलाहट'।

खलबलाना, क्रि अ (हि खलबल) बुद्बुदायते (ना धा), दे 'उबलना' २ क्षुभ (दि प से, क्र प से), क्षुब्ध विह्वल (वि)+भू ३ दे 'कुलबुलाना'।

खलबली, स स्त्री, दे 'खलबल'।

खलल, सं पु (अ) विघ्न, अन्तराय, बाधा।

खलास, सं पु (अ) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) उद्धार । वि, मुक्त, उद्धृत, निस्तीर्ण २ अवसित, समाप्त ।

खलासी, स स्त्री (अ) उद्धार, निस्तार, मोक्ष । सं पु, पटमडपरोपक २ भारवाह ३ पोतभृत्य ।

खलियान, सं पु (सं खल+स्थान) धान्यधान खल ल २ धान्यागार, कुसूल ३ राशि (पु) चय ।

खलियाना¹, क्रि स (हि, खाल) निस्त्वचयति (ना धा) निस्त्वचीकृ, चर्मन् (न) अपनी निह (दोनों भ्वा उ अ)।

खलियाना², क्रि स (हि खाली) शून्यीरिक्ती,-कृ, रिच (रु उ अ)।

खलिश, स स्त्री (फा) वेदना पीडा २ वैर, द्वेष ।

खलिहान, स पु, दे 'खलियान'।

खली-ल्ली, स स्त्री (सं खली) तैलकिट्ट, तिलकल्क पिण्याक, खलि (पु)।

खलीज, स स्त्री (अ) दे 'खाडी'।

खलीफा, स पु (अ) अध्यक्ष, अधिकारिन् २ यवननृपवंशविशेष ३ वृद्धजन ४ सूद, पाचक ५ सौचिक सूचिक ६ नापित ।

खलु, अव्य (स) निश्चयनिषेधजिज्ञासानुनयादिबोधकमव्ययम् ।

खलेल, स पु (सं खलितैल) सुगन्धतैलकिट्टम्।

खलक, स स्त्री, दे 'खलक'।

खलत-मलत, दे 'गडबड़' ।

खल्ल, स पु (स) दे 'खरल' २ चर्मन् (न) ३ गर्त ४ चातक ५ दृति (स्त्री)।

खल्वाट, स पु (स) चर्मन् (न) २ अजिन जलमक्षा ३ वृद्ध, जरठ, स्थविर ।

खल्ला, स पु (स खल्ल =चमडा >) जीर्णोपानह (स्त्री), पुराणपादत्रम् ।

खल्लि (ल्ली)ट,-खल्वाट, वि (सं) दे 'गंजा'। स पु, दे 'गंजापन'।

खवा, स पु, दे 'कधा'।

खवैया, स पु (हि खाना) भक्षक, खादक भोक्तृ (पु)।

खश, स पु दे, खस'।

खशखा(खा)श, सं पु दे 'खसखस'।

खस, स स्त्री (फा खस) उशीर २, नलद, जलवास, वीरणमूल, सेव्य, शीत सुगन्धि, मूलक वीर, वीरभद्र, हरिप्रियम् ।

खसकना, क्रि अ (अनु) दे 'खिसकना'।

खसकाना, क्रि स, दे 'खिसकाना'।

खसखस, स स्त्री (सं खस्खस) खसतिल, सूक्ष्म, तडुल-बीज, सुबीज ।
—रस, स पु (स) दे 'अफीम'।
खसखसा, वि (अनु) शुष्कचूर्णरूप, सिक निल, शर्करिल ।
खसखास, स स्त्री, दे 'खसखस'।
ख़सम, स पु (अ) पति (पु) भर्तृ (पु) २ स्वामिन (पु) सेव्य, नाथ ।
ख़सरा', स पु (अ) क्षेत्रसूची, केदार लेख्यम् ।
ख़सरा', स पु (फा खारिश) रोमान्तिका, त्वग्रोगभेद २ खर्जू-कण्डूति भेद ।
खसलत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री), स्वभाव, २ दे आदत'।
ख़सारा, स पु (अ) हानि क्षति (स्त्री), दे 'घाटा ।
खसिया, वि (अ खस्सी) लुप्तवृषण छिन्न मुष्क । स पु, क्लीव, षढ २ अज ।
खसोट, स स्त्री (हि खसोटना) बलात् अकस्मात् सहसा ग्रहण-अपहरण-आच्छेदन २ बलात् उत्पाटन उन्मूलनम् ।
खसोटना, क्रि, स (स कृष्ट>) असम्यक उन्मूल् उत्पट् (चु)-त्रुप् (भ्वा प अ) २ बलात् सहसा अपहृ (भ्वा उ अ)-आच्छिद् (रु प अ) ग्रह् (क्र उ से)।
खसोटी, स स्त्री, दे 'खसोट'।
ख़स्ता, वि (फा खस्त) भिदुर, भगुर, भिदे लिम २ क्षत, त्रुटित ।
—कचौड़ी, स स्त्री, भिदुर स्निग्ध, सुपिष्टिका शष्कुली ।
—दिल, वि भग्न, चित्त हृदय ।
—हाल, वि, दुर्गत, दरिद्र, दु स्थित ।
ख़स्सी, स पु (अ) छिन्नमुष्क अज-छाग २ षढ, क्लीव । वि, लुप्तवृषण, छिन्नमुष्क ।
—करना, क्रि स, वृषणौ छिद् (रु प अ) उत्पट् (चु)।
ख़ाँ, स पु (तातारी, क्राउ सरदार) स्वामिन् (पु), अधीश २ पठानजाते उपाधि (पुं)।
—साहब,-बहादुर, स पु, उपाधिभेदौ ।
खाखर, वि (सं ख-छिद्र>) सच्छिद्र, सरध्र २ रिक्त शून्य,-गर्भ, अन्त शून्य ।

खागड-ड़ा, वि (स खड्ग >) शृगिन्, विषाणिन् २ सशक्त ३ सबल ४ उद्दण्ड ।
खाँचा, स पु (स कर्षणम् >) महा पेटक करड बडोल २ बृहद, नर पञ्जरम् ।
खाँड, स स्त्री (स खण्डम्) अशोधित असस्कृत, सिता-शर्करा ।
खाँडव, स पु (स न) कुरुक्षेत्रप्रदेशे वन विशेष ।
—प्रस्थ, स पु (स) प्राचीननगरविशेष ।
खाँड़ा', स पु (स खड्ग >) द्विधार, खड्ग असि निस्त्रिंश कृपाण ।
खाँड़ा', स पु (स खड-ड) भाग, अश ।
खाँसना, क्रि अ (स कासन) कास् (भ्वा प से), क्षु (अ प से)।
खाँसी, सं स्त्री (स कास) काश, उत्काम, क्षवथु (पु)।
खाई, स स्त्री (स खानि >) परिखा, खात, खातकम् ।
खाऊ, वि (हि खाना) अत्याहारिन्, बहु भोजिन्, अघार, घस्मर ।
—उड़ाऊ, वि मुक्तहस्त अर्थनाशिन् ।
ख़ाक, स स्त्री (फा) धूलि (पु स्त्री), धूली, पांशु सु, रजस् (न), रेणु २ भस्मन् (न) भसित भूति (स्त्री)।
—रोब, स पु, खल्पू (पु), समार्जक ।
—सार, वि, नम्र, विनीत ।
—सारी, सं स्त्री, नम्रता, विनय ।
ख़ाका, स पु (फा) बाह्यरे(ले)खा, बाह्या कार २ अपरिष्कृतालेख्य, पाण्डुलेख्य ३ प्रति रूप, प्रतिमान ४ सकलन, सख्यानम् ।
—उड़ाना, मु उप-अव-हस् (भ्वा प से)।
ख़ाकी, वि (फा) मार्तिक, मृण्मय २ धूलि रजो,-वर्ण रग ३ स स्त्री, जगद्दीन-अनासिक्त, भूमि (स्त्री)।
खाज, सं स्त्री [स खर्जु (पु)] खर्जू (स्त्री), कडू-कडूति (स्त्री), खस, पामा, विचर्चिका ।
—होना, क्रि अ, कडूर्ति खस अनुभू ।
कोढ की खाज, मु, क्षते क्षार, गंडे स्फोटक ।
खाजा, स पुं (स खाद्य) भक्ष्य भोज्य खाद्य वस्तु (न)-पदार्थ २ भोजन ३ मिष्टान्नभेद ।
खाट, स स्त्री (खट्वा >) खट्वा, शयनम् ।

—खटोला, सं पु गृह,उपस्कर:-परिच्छद:, पारिच्छदम्।

खाड़ी, सं. स्त्री (सं खात>) समुद्र-, वक्र-, कन्धानम्।

खात, सं पु (सं. न) खनन, अवदारण २ परिखा, खान, खातम् ३ गर्त ४ कूप ५ कासार ६ पुरीषादिगर्त।

ख़ातमा, सं पु (फा) समाप्ति (स्त्री) २ मृत्यु।

खाता¹, सं पु (अ खत>) गणना-संस्थान, पञ्जिका २ विषय:, विभाग।

खाता², सं पु (सं खात>) कुसू(सू) ल, धान्यकोष्ठ कुशूल।

ख़ातिर, सं स्त्री (अ) सम्मान, आदर। क्रि वि, कृते, अर्थे, हेतो।

—ख्वाह, क्रि वि (अ +फा) यथोचित, यथेष्ट यथेष्टम्।

—जमा, सं स्त्री (अ) सन्तोष, सान्त्वनम्।

—दारी, सं स्त्री (अ +फा) आदर,

खान¹, सं. स्त्री. [सं खनि: (स्त्री)] आकर, खनि(खा)नी खनि: (स्त्री) २ उत्पत्तिस्थान ३ कोष:।

ख़ान, सं. पु., दे 'खाँ'।

खानक, सं. पु (सं) खानक:, खनक:, खनितृ (पु), आखनिक २ कुम्भकार ३ गृह, कारक-संवेशक, पलगण्ड:, लेपकार।

ख़ानकाह, सं स्त्री (अ) यवनभिक्षुविहार:।

ख़ानगी, वि (फा) गृह्य, कौटुम्बिक।

ख़ानदान, सं पु (फा) वंश, अन्वय, कुलम्।

ख़ानदानी, वि (फा) सत्कुल-जन्मन्,कुलीन २ पित्र्य, पैतृक।

खानपान, सं पु (सं न) अशनम्, भक्ष्य पेय २ खादनपान भुक्तिपीति (न) ३ भुक्ति पीतिविधि (पु) ४ परस्परभोजन, सम्बन्ध (स्त्री)।

ख़ानसामा, सं पु (फा) (यवनादीना)

खाया पिया निकालना, मु, तीव्र परुष तद् (चु) ग्रह (भ्वा प अ) अभिद्रुह् (अ प अ)।
मुँह की खाना, मु, पूर्णतया पराजि परिभू (कर्म)।
ख़ाना, स पु (फा) गृह, सद्मन् (न), आलय २ (मेज आदि का) सपुट, निष्क र्षणी, चल्लसमुद्गक ३ कोष पुट ट ४ कोष्ठक, सारणी चक्र, विभाग।
—ख़राब, वि (फा) विनाशक, अनिष्टोत्पादक, क्षयकर (री स्त्री)।
—जगी, स स्त्री (फा) पारस्परिकविग्रह, गृहयुद्धम्।
—तलाशी, स स्त्री (फा) गृहान्वेषणम्।
—दारी, स स्त्री (फा) गार्हस्थ्यम्।
—पुरी, स स्त्री (फा + हिं पूरना) कोष्ठक पूरणम्।
—बदोश, वि (फा) अस्थिर अनियतवास, य(या)यावर। स पु अस्थानिन्, नित्यविहारिन्।
—शुमारी, स स्त्री (फा) जनसख्यानम्।
खानि, स स्त्री (स) दे 'खान'[२] २ प्राचुर्य ३ राशि (पु) ४ कोष ५ प्रकार ६ दिशा।
खानिक, स स्त्री, दे 'खान'[२]।
खाबड-खूबड, वि (अनु०) विषम, नतोन्नत।
ख़ाम वि (फा) अपक्व, आम २ अपुष्ट अदृढ ३ अननुभवशालिन्।
ख़ामख़ाह, क्रि वि (फा ख़्वाह म ख़्वाह) बलात्, हठात् २ अवश्य, ध्रुवम्।
ख़ामी, स स्त्री (फा) आमता, अपक्वता २ अनुभवहीनता ३ न्यूनता।
ख़ामोश, वि (फा) नि शब्द, मौन।
ख़ामोशी, स स्त्री (फा) नीरवता मौनम्।
खार, स पु (स क्षार) १ दे 'क्षार' २ दे 'सज्जी' ३ दे 'लवण' ४ धूलि (स्त्री) ५ गुल्मभेद।
ख़ार, स पु (फा) दे 'काँटा' २ ईर्ष्या, असूया, द्वेष।
—दार, वि, कटकिन्, सकण्टक।
—खाना, मु, ईर्ष्य्-ईर्क्ष्य् (भ्वा प से) असूय् (ना धा), स्पर्ध् (भ्वा आ से)।

खारा[१], वि पु (स क्षार) क्षार, विशिष्टयुक्त २ ईषल्लवण, ३ लवण, लवणगुणविशिष्ट ४ कटु अरुचिकर (-री स्त्री)।
खारा[२], स पु (स क्षारक) करड, कटोल, पटक २ घासादिबन्धनजाल ३ विवाह सस्कारोपयुक्तासनभेद।
खारि, स स्त्री (स) दे 'खारी'।
ख़ारिज, वि (अ) बहिष्कृत, अपास्त २ निरा कृत प्रत्याख्यात।
—करना, क्रि स, बहिष्कृ, अपास् (दि प से) २ निराकृ, प्रत्याख्या (अ प अ)।
—होना, क्रि अ, बहिष्कृ-अपास (कर्म) प्रतिक्षिप् प्रत्याख्या (कर्म)।
ख़ारिजा वि (अ) बाह्य, बाहीक बहिस्थ, विदेशीय।
ख़ारिश, ख़ारिश्त, स स्त्री (फा) दे खुजली'।
खारी[१], स स्त्री (स) षोडश-चतर, द्रोण परिमाणम्।
खारी[२], स स्त्री (हिं खारा) ऊषरज, ऊषरलवण, क्षारलवण। वि स्त्री, दे 'खारा'[१] के स्त्री रूप।
—पानी, स पु, क्षार, पानीय जलम्।
खाल[१], स स्त्री (स क्षाल >) दे 'खाल्ही' (१३) २ आवरण ३ शव ४ भस्त्रा स्त्री।
—उड़ाना, मु०, निर्दय परुष-चड निष्ठुर तड् (चु)-ग्रह (भ्वा प अ)।
—उधेड़ना या खींचना, मु त्वच अपनी (भ्वा प अ)-निर्हृ निष्कुष (भ्वा प अ), निस्त्वचयति (ना धा)।
खाल[२], स स्त्री (स खात) निम्नभू (स्त्री) २ रिक्तस्थान अवकाश ३ दे 'खाडी' ४ गाम्भीर्यम्।
ख़ाल, स पु (अ) तिल, तिलक तिल, कालक अङ्क।
ख़ालसा, वि (अ ख़ालिस) एकाधिकृत, एकाधिष्ठित २ राजकीय। स पु, शिष्य (सिक्ख) जातिविशेष।
खाला, वि (हिं खाली) निम्न, अवनत, अवच।
—ऊँचा, वि उच्चावच, नतोन्नत, विषम।

ख़ाला, सं स्त्री (अ) मातृस्व(ष्व)स (स्त्री), मातृभगिनी।
—ज़ाद, वि पु, मातृष्वसीय, मातृष्वसेय (स्त्री,-सीया,-सेयी)।
—जी का घर, मु, सुकर कर्मन् (न)।
ख़ालिक़, सं पु (अ) स्रष्टृ विधातृ-सृष्टिकर्तृ (पु)।
खालिस, वि, (अ) दे 'खरा' (२)।
ख़ाली, वि (अ) रिक्त, शून्य २ अनधिष्ठित ३ रहित, हीन ४ अव्यापृत, निष्क्रिय ५ अधिक, उद्वृत्त ६ निष्फल, व्यर्थ। क्रि वि, केवलम्।
—करना, क्रि स, रिच् (रु प अ), परित्यज (भ्वा प अ), उत्सृज (तु प अ)।
—होना, क्रि अ रिच परित्यज्-उत्सृज (कर्म)।
—हाथ, मु, अकिंचन, दरिद्र २ नि शस्त्र।
ख़ालू, स पु (अ) मातृष्वसृधव।
ख़ाविंद, स पु (फा) पति, भर्तृ २ स्वामिन् प्रभु (पु)।
—करना, मु, अपर पति विद् (तु प वे) वृ (स्वा उ से), द्वितीय विवाह कृ।
ख़ास, वि (अ) स, विशेष, विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण २ रहस्य, सवरणीय, गोप्य ३ स्वकीय आत्मीय ४ पवित्र ५ प्रधान, मुख्य।
—कर, क्रि वि, विशेषत, विशेषेण।
—व आम, सं पु, जनता, लोक।
ख़ासा, वि (अ खास) उत्तम, उत्कृष्ट २ स्वस्थ ३ मध्यवर्गीय ४ सुदर ५ परिपूर्ण।
ख़ासा², स पु (अ) नृपभोजन, भूपाहार २ राज्ञो गजोऽश्वो वा। ३ श्वेतवस्त्रभेद ४ पूरिकाभेद।
ख़ासि(सी)यत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री), स्वभाव २ गुण, धर्म।
ख़ास्सा, स पु (अ) दे 'खासियत'।
खिंचना, क्रि अ (स कर्षण>) आ-म, कृष् (कर्म), २ दृढीकृ-नियम् (कर्म) ३ वद्नी (कर्म) ४ (चित्रादि) वर्ण्-आलिख् (कर्म) ५ उद्-गुप् (दि प अ) नि-आपा (कर्म) ६ सु (भ्वा प अ), क्षर (भ्वा प से)।
खिंचवाना, क्रि प्रे } व 'खींचना' के प्रे
खिंचाना, क्रि. प्रे } रूप।
खिंचाई, सं स्त्री, } १ आकर्षण,
खिंचाव, स पु, } २. आकर्ष
खिंचावट, खिंचाहट, सं स्त्री } ३ दृढीकरण, ४ नियमन ५ घनता, सुमसक्ति (स्त्री) आ, तति (स्त्री) इ।
खिंडना, क्रि अ, दे 'बिखरना'।
खिचड़ी, सं स्त्री (सं कृसर) कृशर, मिश्रौदन न, कृसरा, वैदलौदन न, खेचरान्न। २ मिश्रितद्रव्य, प्रकीर्णक विविधवस्तुमिश्रणम्।
—करना, मु, एकीकृ, सं, मिश्र (चु)।
—होना, मु, मसृज्-सपृच् (कर्म), एकीभू।
खिजना, क्रि अ (स खिद्) दे 'चिढना'।
ख़िज़्र, खिज्र, स पु (अ) देवदूत विशेष (इस्लाम), २ पथप्रदर्शक, मार्गदर्शक।
खिजलाना, क्रि स तथा क्रि अ, दे 'चिढाना' तथा 'चिढना'।
ख़िज़ाँ, स स्त्री (फा) शिशिर, दे 'पतझड़' २ अवनतिकाल।
ख़िज़ाब, स पु (अ) केश-बाल-मूर्धज, लेप रग-राग वर्ण।
—करना या लगाना, क्रि स, केशान् रञ्ज् वर्ण (चु)।
ख़िजालत, स स्त्री (अ) लज्जा त्रपा, व्रीडा।
खिझना, क्रि अ (स खिद्) दे 'चिढना'।
खिझाना, क्रि स, दे 'चिढाना'।
खिड़की, स स्त्री (स खट(ड)क्किका) वातायन, लघुद्वार, गवाक्ष। २ अररी, कपाटम्।
ख़िताब, स पु (अ) उपाधि (पु), मानपदम्।
ख़ित्ता, स पु (अ) प्रदेश, भूभाग।
ख़िदमत, स स्त्री (अ) सेवा, परिचर्या।
—गार, सं पु (अ+फा) सेवक, परिचारक।
—गारी,-गुज़ारी, स स्त्री (अ+फा) सेवा, परिचर्या।
खिन, स पु, दे 'क्षण'।
खिन्न, वि (स) दुःखित, पीडित २ सचिंत, चिंतित ३ विषण्ण, शोकमग्न, ३. दीन निराश्रय। ४ श्रांत, क्लांत।
खियानत, स स्त्री, दे 'ख़यानत'।
खिरनी, स स्त्री (स क्षीरिणी) हैमी, हिमजा, हिमदुग्धा (वृक्षभेद) २ तत्फलम्।
ख़िराज, स पु. (अ) दे 'कर' (टैक्स)।

खिल, सं. पु (सं पु न) ऊसर-र २ रिक्त-स्थान-स्थलम् ३ परिशिष्ट ४ शेषांश ५ विष्णु ६ ब्रह्मन् (पु)।
खिलअत, सं स्री (अ) सम्मानवेश व ।
खिल्कत, सं स्री , दे 'खल्कत'।
खिलखिल, स स्री (अनु०) हास, हसित हसनम्।
खिलखिलाना, क्रि अ (अनु) उच्चै सशब्द हस् (भ्वा प से), अट्टहास कृ ।
खिलना, क्रि अ (सं स्खलन अथवा किरण ?) विकस प्रफुल्ल (भ्वा प से), स्फुट् (तु प से), भिद् (कर्म) २ प्रसद् (भ्वा प अ) ३ शुभ् (भ्वा आ से) ४ पृथक् भू । सं पु , विकसन, फुल्लन, प्रस्फुटन इ० ।
खिला हुआ, वि , विकसित, उद्भिन्न, प्रस्फुटित ।
खिलवत, स स्री (अ) निर्जन विजन-स्थानम् ।
खिलवाड़, सं पु (हिं खेलना) खेला, लीला, क्रीडा, मनोविनोद , विहार ।
खिलवाड़ी, वि ,दे 'खिलाड़ी'।
खिलवाना, क्रि प्रे , अन्येन + 'खाना' धातुओं के प्रे रूप ।
खिला, सं स्री (अ) शून्यकम् ।
खिलाई¹, स स्री (हिं खिलाना) अन्नदान, पोषण २ भक्षण, खादनम् ।
—पिलाई, स स्री , भुक्तपीत, खादनपान, खानपान २ अन्नपानदान, पोषण २ पोषणार्ध ।
खिलाई², स स्री (हिं खेलाना) अंकपाली, शिशुपालिका ।
खिलाड़, खिलाड़ी, वि (हिं खेलना) क्रीडा खेल लीला, परशील । स पु , क्रीडक, खेलक २ ऐन्द्रजालिक मायाविन् (पु) ३ धूर्त्त ।
खिलाना¹, क्रि प्र खाना' के प्रे रूप ।
खिलाना², क्रि प्रे , खाना के प्रे रूप ।
खिलाना³, क्रि प्रे , 'खिलना' के प्रे रूप ।
खिलाफ, वि (अ) विरुद्ध विपरीत ।
खिलाफत, स स्री (अ) देवदूत-नृप प्रति निधित्व-उत्तराधिकारित्वम् ।
खिलौना, स पु (हिं खेलना) क्रीडाद्रव्य, क्रीडनक, क्रीडनीयक २ क्षुद्राकार ।
खिल्य, वि (सं) परिशिष्ट वर्णित लिखित ।
खिल्ली, सं स्री (हिं खिल्ना) क्ष्वेला, नर्मन् (न), विनोद ।
—बाज, वि , विनोदशील, नर्मप्रिय ।
—बाजी, सं स्री , विनोदशीलता, नर्मप्रियता ।
खिश्त, स स्री ,(फा) दे 'ईंट'।
खिसकना, क्रि अ (अनु) शनैः सृप (भ्वा प अ) चल (भ्वा प से) २ प्र,स्खल् (भ्वा प से) ३ सत्वर-अलक्षित निभृत अपया (अ प अ) अपसृ (भ्वा प अ) गम् । सं पु , शनैः-मृदु-सर्पण, स्खलन, अलक्षित गमन अपसरण इ० ।
खिसकाना, क्रि स , 'खिसकना' के प्रे० रूप ।
खिसलना, क्रि अ , दे फिसलना'।
खिसलाव, सं पु, खिसलाहट, स स्री | दे 'फिसलाव' तथा 'फिसलाहट'।
खिसारा, सं पु (अ) हानि क्षति (स्री)।
खिसिआ(या)ना, क्रि अ (हिं खीस= दाँत) लज्ज् (तु आ से), त्रप (भ्वा आ वे) व्रीड (दि प से) २ क्रुध (दि प अ), कुप् (दि प से) । वि , लज्जित, हीण, हीत ।
खींच, स स्री (हिं खींचना) कर्ष , कर्षणम् ।
—तान, स स्री, प्रतिस्पर्द्धा, विजिगीषा २ अर्थान्तरकल्पना ।
खिसियाहट, स स्री , दे 'खीस'।
खींचना, क्रि स (स कर्षण) आ-स , कृष् (भ्वा, प अ), बलात् दिशाविशेषे प्रेर् (प्रे)- नी (भ्वा उ अ) प्रवृत् (प्रे) ३ हृ (भ्वा उ अ) दे 'घसीटना' ३ निष्कस (प्रे), बहिर् अप, नी । ४ उद् अच (भ्वा उ से), पर्युदच । ५ शुष (प्रे) ६ सु स्यद् (प्रे) ७ वर्ण (चु), आ-अभि लिख (तु प से) ८ रुध् (रु उ अ) । स पु , आकर्ष , आकर्षण, नयन, हरण, निष्कासन, उदञ्चन, शोषण स्रावण, आलेखन, रोध ।
खींचने योग्य, वि आ ,कर्षणीय, नेय, हर्तव्य, इ ।
खींचाखींची, खींचातान, खींचातानी, | स स्री , दे 'खींचतान'।
खीज, खीझ, स स्री (हिं खीजना) दे 'चिढ़'।
खीज(झ)ना, क्रि अ (स खिद्) दे 'चिढ़ना'।

खीमा, सं पु (अ) दे 'खेमा'।
खीर, स स्त्री (स क्षीर रा>) पायसं, परमान्न, क्षैरिका २ दुग्ध, पयस (न), क्षीर, स्तन्यम्।
—चटाई, सं स्त्री अन्नप्राशनसंस्कार (कर्म)।
खीरा, स पु (स क्षीरक) (लता) पीतपुष्पा, त्रपुककर्कटी, बहु-कोष-तुंदिल,-फला, कंटकिलता। (फल) त्रपुष, कण्टकिफल, सुशीतल, सुधावासम्।
—ककड़ी, मु, तुच्छवस्तु (न)।
खीरी, स स्त्री (स क्षीर र >) ऊधस्-क्लम ओघस (न) आपीनम्।
खील, सं स्त्री (हिं खिलना) धाना (स्त्री, बहु) लाजा (पु, स्त्री, बहु)।
खीली, स स्त्री (हिं खील) बीड़ी टि (स्त्री), बीटिका, तांबूलम्।
खीस, सं स्त्री (हि खीज) प्रीति प्रसाद,-प्रभाव २ क्रोध, रोष ३ लज्जा, त्रपा। ४ कुस्मित, कुहस।
खीसा, सं पु (फा कीसा) पुट ट, प्रसेव, लघुस्यूप २ गुप्ति, कोष श।
खुक्ख, खुख, वि (सं शुष्क >) रिक्तहस्त, अकिंचन।
खुखड़ी, सं स्त्री (देश) सूत्र-ऊर्णा, पिंड पिंड (२) असि-खड्ग, धेनुका पुत्रिका।
खुगीर, स पु (फा) दे 'जीन'।
खुच (चु) र, स स्त्री (स कुत्सर >) दोष, न्यूनता २ छिद्रान्वेषिता, पुरोभागि(ग)ता।
खुजलाना, क्रि स (सं खर्जन >) नखै त्वचं घृष (भ्वा प से)। क्रि अ, कण्डू खस खर्जु अनुभू। कण्डूयति ते (ना धा)।
खुजलाहट, सं स्त्री (हिं खुजलाना) दे 'खुजली'।
खुजली, स स्त्री (हिं खुजलाना) (सुरसुरी) कडु (पु, स्त्री) कडू-कडूति (स्त्री), कडू यन, कण्डूया, खर्जु -जू (स्त्री) २ (रोग) कच्छु च्छू (स्त्री), पामा, पामन् (पु), विचर्चिका।
—उठना या चलना, क्रि अ, दे 'खुजलाना' (क्रि अ)।
खुजाना, क्रि. स, क्रि अ., दे 'खुजलाना'।
खुटका, स पु, दे 'खटका'।
खुटपन-ना, स पु (हिं खोटा) दोष, अवगुण, क्षुद्रता, दुष्टता।
खुटाई, सं स्त्री, दे 'खुटपन'।
खुड्डी, स स्त्री (अनु) दे 'रेवड़ी' २ (प = वटन का सूराख) गड-कुड्डप,-आधार।
खुड्डी, सं स्त्री, दे 'खुरण्ड'।
खुड्डला, स पु (देश) कुक्कुटालय २ चट कालय।
खुड्डी, खुड्ढी, स स्त्री (स खुड >) शौच कूपगर्त २ शौचकूपे पादाधानम्।
खुतबा, स पु (अ) प्रशंसा, स्तुति (स्त्री), प्रशस्ति (स्त्री)।
खुद, अव्य (फा) स्वय, स्वत, स्वेच्छया (समास के आदि में 'स्व' तथा 'आत्मन्' भी प्रयुक्त होते हैं। उ स्वार्थ, आत्महत्या)।
—कुशी, स स्त्री (फा) आत्म-स्व-निज, घात हत्या वध।
—गर्ज, वि (फा) स्वार्थ,-पर परायण।
—गर्जी, स स्त्री (फा) स्वार्थ, परता पराय णता।
—मुख्तार, वि (फ) स्वतंत्र, स्वच्छन्द।
—मुख्तारी, स स्त्री फा) स्वातन्त्र्य, स्वाधी नता।
खुदना, क्रि अ (हिं खोदना) खन्-उत्कृ-तक्ष् (कर्म), भवद् भिद् (कर्म)।
खुदरा, स पु (स क्षुद्र >) क्षुद्र-साधारण,-वस्तु (न)। वि, दे 'खुरदरा'।
खुदवाई, सं स्त्री (हिं खुदवाना) अन्य कृत,-खनन-खाति (स्त्री) २ खनन, भृत्या-भृति (स्त्री)।
खुदवाना, खुदाना, क्रि प्रे, 'खोदना' के प्रे रूप।
खुदा, स पु (फा) स्वयभू (पु), दे 'ईश्वर'।
—न ख्वास्ता, मु, ईशो न कुर्यात्।
—परस्त, वि, ईश्वरपूजक, आस्तिक।
—खुदा कर के, मु, येन केन प्रकारेण, अति, कष्टेन कृच्छ्रेण, यथाकथञ्चित्।
—की मार, मु, ईश्वर दैव, प्रकोप।
खुदाई, स स्त्री (फा) ईश्वरत्व २ सृष्टि (स्त्री)।
खुदाई, स स्त्री (हिं खोदना) खाति (स्त्री) २ खननक्रिया ३ खननभृति (स्त्री)।
खुदाताला, सं पु (अ) परमेश्वर, परमेश।

खुदावंद, सं पु (फा) ईश्वर २. स्वामिन्(पुं) ३ भगवत् श्रीमत् (पु), आर्य , मिश्र (सब सम्मानसूचक शब्द) ।
खुदी, सं स्त्री (फा) अहम्भाव, अहङ्कार २ अभिमान , दर्प ।
खुद्दी, सं स्त्री (सं क्षुद्र>) वैदलतण्डुला दीनां कण ।
खुनक, वि (फा) शीत, शीतल, हिम ।
खुनकी, सं स्त्री (फा) शैत्यम् ।
खुनखुना, सं पु (अनु) झणझण, खणखण , क्रीडनकभेद ।
खुनस, सं स्त्री (सं खिन्नमनस् >) कोप, क्रोध ।
खुनसाना, क्रि अ , दे 'क्रोध करना' ।
खुनसी, वि, (हि खुनस) कोपन, क्रोधन, रोषण ।
खुनाक, सं पु दे 'डिफथीरिया' ।
खुफिया, वि (फा) गूढ, गुप्त, निभृत ।
—पुलिस, सं स्त्री (फा+अ) प्रच्छन्न गुप्त गूढ, रक्षिण (बहु), अपसर्पा , चरा , स्पशा ।
खुब(भ)ना, क्रि अ (अनु) आ प्र विश (तु प अ), व्यध् (दि प अ) छिद् (रु प अ), छिद्र प्रवेश कृ ।
खुमार, सं पु (अ) म(मा)द , क्षीवता, शौंडता २ तन्द्रा, निद्रालुत्व ३ निशाजागरज शैथिल्यम् ।
खुमारी, सं स्त्री, दे 'खुमार' ।
खुरंड, सं पु (सं खुर् = खुरचना >) शुष्क व्रणत्वच् (स्त्री), इर्मझिल्ली २ किलास, सिध्मम् ।
खुर, सं पुं (सं) शफ -फ, विख , निघृष्व , क्षुर २ खट्वादीनां पादुकम् ।
—दार, वि , खुरिन् , शफिन् ।
खुरखुर, सं स्त्री (अनु) खुरखुर घरघर, शब्द नाद ।
खुरखुरा, वि (सं खुर्=खुरचना >) दुःस्पर्श, असम, विषम, श्लक्ष्णताशून्य ।
खुरचन, सं स्त्री (हिं खुरचना) खुरित, पय पात्रखुरित २ खुरित, मिष्टान्न-वादिव,-भेद ।
खुरचना, क्रि स (सं खुरण) खुर् क्षुर् (तु प से), त्वच् वि, लिख् (तु प से) २ अप श्या,-मृज् (अ प वे), विलुप् (प्रे) ।
खुरचनी, सं स्त्री (हिं खुरचना) उल्लेखनी, निर्घर्षणी २ काष्ठकुद्दाल , खनित्र ३ दुग्धपात्र खुरितम् ।
खुरजी, सं स्त्री (फा) दे. 'थैला' ।
खुरदरा, वि नतोन्नत २ असम, विषम, पिण्ड कादृत, श्लक्ष्णता स्निग्धता परिष्कार,-शून्य ।
खुरपा, सं पु (सं क्षुरप्र) घासछेदनशस्त्र, लघु ,टंग टंग-खनित्र २ चर्मकारोपकरणभेद ।
खुरमा, सं पु (फा) खर्जूर, खर्जूरी फलम् २ दे 'छुहारा' ३ मिष्टान्नभेद ।
खुरली, स स्त्री (सं) शस्त्राभ्यास २ शस्त्राभ्यास स्थलम् ।
खुरींट, वि , दे 'खुर्रा' ।
खुराक, सं स्त्री (फा) भोज्य, भक्ष्य, खाद्य, आहार , भोजन २ (औषध) मात्रा, भाग ।
खुराकी, वि (फा) औदरिक, अद्मर, घस्मर । स स्त्री , (दैनिक) भोजनव्य ।
खुराफात, स स्त्री (अ) अश्लील ग्राम्य-अशिष्ट, वचनानि (बहु) २ गाल्य दुर्वचनानि (बहु) ३ कलह ।
खुरी, सं स्त्री (सं खुर >) शफ चिह्न, चिह्न २ दे 'पत्ती' ।
—करना, मु , अतिक्षिप्र चल (भ्वा प से) ।
खुर्द, वि (फा) लघु, अल्प, सूक्ष्म ।
—बीन, स स्त्री (फा) सूक्ष्मदर्शकयन्त्र, अण्वीक्षणयन्त्रम् ।
—बुर्द, वि , (फा) नष्टभ्रष्ट २ समाप्त ।
खुर्राट, वि (देश) धूर्त, कुटिल, शठ २ वृद्ध ३ अनुमर्दिन् ।
खुलना, क्रि अ (सं खुड् तोडना >) (द्वारादि) वि अपा वृ (कर्म), निरर्गली भू, अनावृत-उद्घाटित (वि)+भू २ (कली आदि) विकस्-दल फुल्ल् (भ्वा प से), भिद् (कर्म) ३ (आँख) उन्मिष् (तु प से), उन्मील् (भ्वा प से) ४ (दाग) प्रसृ (भ्वा प अ), वितन् (कर्म) ५ (मुख) व्यादा (कर्म), विजृम्भ् (भ्वा आ से) ६ (रहस्यादि) प्रकटी-व्यक्ती-आविर्+भू, प्रकाश् (भ्वा आ से) ७ प्रारभ् प्रस्तु (कर्म) ८ उद्यम् (कर्म), शिथिलीभू, उन्मुच् (कर्म) ९ (भूमि आदि विद्-भिद् (कर्म) ।

खुल खलना, मु, व्यक्त प्रकाश-अनिभृत निर्भय (किञ्चित् कार्य) कृ अथवा विपयासक्त (वि)+भू।

खुलवाना, क्रि प्रे, 'खोलना' के प्रे रूप।

खुला, वि (हिं खुलना) उद्दाम, उद्ग्रथित, उन्मुक्त मुक्त, बन्धनहीन २ शिथिल, प्रश्लथ, विगलित ३ शिथिलसन्धि, विरल ४ स्पष्ट प्रकट, व्यक्त ५ अप्रावृत व्यावृत, असवृत ६ विस्तृत, विस्तीर्ण, विशाल। खुलना के धातुओं के क्त रूप।

खुले आम, खुले खज़ाने, खुले मैदान, खुल्लम खुल्ला — क्रि वि, प्रत्यक्ष, प्रकट प्रकाश व्यक्त निर्भय, नि शङ्कम्।

खुल्ना, क्रि प्रे, 'खोलना' के प्रे रूप।

खुलासा, स पु (फा) साराश, सक्षेप।

ख़ुश, वि (फा) प्रसन्न, प्रमुदित, प्रहृष्ट।

—होना, क्रि अ, आनन्द् (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से), हृष् (दि प से) परि-स-तुष् (दि प अ), दे 'प्रसन्न होना'।

—किस्मत, वि (फा) सौभाग्यशालिन्।

—किस्मती, स स्त्री (फा) सौभाग्यम्।

—ख़त, वि (फा) लिपिन, सुलेखक।

—ख़ती, स स्त्री (फा) सुलेखन कौशल नैपुण्य विद्या।

—ख़बरी, स स्त्री (फा) शुभ-सु समाचार वार्ता वृत्त-उदन्त।

—गवार, वि (फा) रुचिर, सुखद, आनन्दक।

—दिल, वि (फा) प्रसन्नमनस, सन्तोषिन्।

—नसीब, वि (फा) सौभाग्यवत्, धन्य।

—नसीबी, स स्त्री (फा) सौभाग्यवत्ता।

—नुमा, वि (फा) सुदर्शन, मनोहर, सुन्दर।

—बू, स स्त्री (फा) दे 'सुगध', सुवास।

—बूदार, वि (फा) सुगन्धित, सुगन्धि।

—रग, वि (फा) सुरग, सुवर्ण।

—हाल, वि (फा) समृद्ध, सपन्न।

—हाली, स स्त्री (फा) अभ्युदय, समृद्धि (स्त्री)।

ख़ुशामद, स स्त्री (फा) चाटु (पु न), चाटूक्ति (स्त्री) अति मिथ्या-स्तुति (स्त्री), प्रशसा, चाटुवाद।

—करना, क्रि स, मिथ्या-अतिमात्र अतीव प्रशस (भ्वा प से)-स्तु (अ प अ)-नु (अ प से), अभि परि-स स्तु, चाटूक्तिभि सात्व-उपलल्-उपछद (चु), चाटूनि वद् (भ्वा प से)।

ख़ुशामदी, वि (फा खुशामद) मिथ्या प्रशसक, चाटुकार, प्रियवद, चाटुवादिन् (पु)।

—टट्टू, स पु, अत्यनुरोधिन् चाटुपटु।

ख़ुशी, स स्त्री (फा) हर्ष, प्रसन्नता, मोद, आनन्द प्रमोद, आह्लाद, सन्तोष उल्लास, चित्तप्रसाद, प्रीति तुष्टि (स्त्री)।

—मनाना, क्रि अ दे 'खुश होना'।

ख़ुश्क, वि (फा, स शुष्क,) शुष्क, अनल, निर्जल, वान, नीरस २ रूक्ष, स्नेहशून्य, अस्निग्ध ३ म्लान, म्लान विशीर्ण।

—साली, स स्त्री (फा) अनावृष्टि (स्त्री), २ दुर्भिक्षम्।

ख़ुश्का, स पु (फा) जलपक्वौदन नम।

ख़ुश्की, स स्त्री (फा) शुष्कता, निर्जलता, २ रूक्षता ३ स्थल ४ दे 'पलेथन'।

खुसरफुसर, स स्त्री (अनु) दे 'कानाफूसी'।

ख़ुसिया, स पु (अ) मुष्क, वृषण, शुक्र ग्रंथि।

—बरदार, वि चाटु कार-वादिन्।

ख़ुसूसियत, स स्त्री (अ) विशेषता, विशिष्टता, विलक्षणता।

खूँख़ार, वि (फा) रक्त रुधिर, प्रिय, जिघासु, हिंस्र। २ भीषण ३ निर्दय।

खूँट, स पु (स खण्ड -ड) अश, भाग। २ अस्र, कोण ३ अन्त ४ पार्श्व खं ५ कर्णमलम्।

खूँटा, स पु (स क्षोड) शकु, कील कीलक पुष्पल २ नागदन्त भारयष्टि (स्त्री) ३ काष्ठस्थूणा।

खूँटी, स स्त्री (हिं खूँटा) लघु-कील -कीलक, २ नागदन्त -तक ३ तनुरुह-लोम, मूल ४ शस्यलवनानतर क्षेत्रस्थ काडमूलम्।

खूँद, स स्त्री (हिं खूँदना) अश्वादीना खुरेण भूमिलेखनम्।

खूँदना, क्रि स (खुण्ड् तोड़ना>) (अश्वादय) खुरेण पृथिवी आहन् (अ प अ)-घृष् (भ्वा प से)-लिख् (तु प से)।

खुद, खुदख, खूदर, स स्त्री (स क्षुद्र>) दे 'कूड़ा'।
खून, स पु (फा) रुधिर, रक्त, लोहित शोणित, असृज् (न), अस्र २ वध, हत्या।
—करना, क्रि स, वध घात हत्या कृ, हन् (अ प अ), मृ-व्यापद् (प्रे) २ प्रमादेन नश् अवसद् (प्रे)।
—होना, क्रि अ, द्वेषाद् हन् मार्-व्यापद (कर्म)।
—खराबा, स पु, (फा) नृ-नर,-वध हत्या, रक्त, पात स्राव।
—ख्वार, वि दे 'खूंखार'।
—थूकना, स पु, रक्तष्ठीवनम्।
—आँखों में उतर आना, मु, कोपारुणनयन (वि)+भू।
—उबलना या खौलना, मु, अतीव कुप् (दि प से)।
—का प्यासा, मु, जिघांसु, वधोद्यत।
सवार होना या चढ़ना, मु, वधाय हत्यायै सज्ज-उद्यत (वि)+भू।
खूनी, स पु (फा) घातक, हतृ (पु)। वि, हतुकाम, वधैषिन्, जिघांसु।
खूब, वि (फा) अच्छ, भद्र, उत्तम, श्रेष्ठ। क्रि वि, सम्यक, साधु, शोभनम्।
—रू, वि (फा) सुमुख (सुमुखी स्त्री)।
—सूरत, वि (फा) सुन्दर, सुरूप।
—सूरती, स स्त्री (फा) सुंदरता, सुरूपता।
खूबी, स स्त्री (फा) अच्छता, उत्तमता २ गुण, विशेष, विलक्षणता।
खूसट, स पुं (स कौशिक) दे 'उल्लू' २ जरठ, स्थविर। वि, रसिकताशून्य, शुष्क हृदय २ जड ३ कुदर्शन।
खेचर, स पु (स) गगनविहारिन्, व्योमग २ ग्रह, नक्षत्र ३ वायु (पुं) ४ देव ५ विमान नं ६ खग ७ मेघ ८ भूतप्रेता ९ राक्षस १० विद्याधर ११ शिव १२ १३ दे 'पारा' तथा 'कसीस'।
खेचरान्न, स पु (स न) दे 'खिचड़ी'।
खेटक, स पु (स) मृगया, आखेट २ कर्पट ग्राम ३ नक्षत्र ४ बलदेवगदा ५ यष्टि (स्त्री) ६ दाल, फलकम्।
खेटकी, स पुं, दे 'शिकारी'।

खेड़ा[1], स पु (स खेट) लघुग्राम, ग्रामटिका।
—पति, स पु ग्रामणी (पु)।
खेड़ा[2], स पु (देश) विविधाप्रयोग।
खेत, स पु (स क्षेत्र) केदार, भूमि (स्त्री), वप्र प्रें, वलज, निष्कुट, राजिका, पटीर २ शस्य, कृषिफल ३ रण-युद्ध-समर, भूमि ४ खड्ग, फलपत्र। ५ उत्पत्तिस्थान ६ (पशुना) जाति (स्त्री)।
—आना या रहना, मु, वीरगति, आप् (स्वा उ अ), युद्धे हन् (कर्म)।
—छोड़ना, मु, युद्धात् पलाय् (भ्वा आ से)
खेतिहर, स पु, दे 'किसान'।
खेती, सं स्त्री (हिं खेत) दे 'कृषि' २ शस्य, कृषिफलम्।
—बारी, सं स्त्री, दे 'कृषि'।
खेद, सं पुं (सं) अनुशोक, अनुताप, २ दुःख, शोक, आधि (पु), आ(अ)र्ति (स्त्री), क्लेश ३ ग्लानि क्लान्ति श्रान्ति (स्त्री)।
—जनक, वि (स) अनुशोकप्रद, दुःखदायक, क्लेशकर, श्रान्तिजनक।
खेदना, क्रि सं स (खट >) दे 'खदेरना'।
खेदा, स पु (हिं खदना) गजादिबंधनपञ्जरम्। २ दे 'शिकार'।
खेदित, वि (सं) खिन्न, अनुतप्त २ श्रान्त, क्लान्त।
खेना, क्रि स, (सं क्षेपण>) नौदण्डेन सचल् प्रेर् प्रचुद् प्रणुद् (प्रे)। २ नौका चद् प्रेर् (प्रे) ३ दे 'बिताना'।
खेप, सं स्त्री (सं क्षेप >) सकृद्वाह्यो भार २ पोतस्थ द्रव्य ३ नौकादीनां सकृत् यात्रा।
खेपना, क्रि स (स क्षपण) दे 'बिताना'।
खेम, स पु, दे 'क्षेम'।
खेमा, स पु (अ) पट-वस्त्र, मडप-गृह वेश्मन् (न), दूष्य स्यम्।
—गाड़ना, क्रि स, दूष्य रच् (चु) उप क्लृप् (प्रे)।
खेल, स पु (स खेला) क्रीडा, केलि (स्त्री), खेलन, लीला २ कूर्द, उदात ३ सुकर क्षुद्र, कार्य ४ कामक्रीडा, संभोग ५ अभिनय, नाटक ६ कौतुक, विचित्रकार्य ७ (पशुओं के लिए) जलद्रोणि (स्त्री)-णी।
—समझना, मु, सुकरं मन् (दि आ अ)।

खेलना, क्रि अ (स खेलन) खेल विलस क्रीड (भ्वा प से), विह (भ्वा प अ) २ सम्भोग-रतिक्रिया कृ ३ विवर चल् (भ्वा प से) ४ भूतावेश आननि चल (प्र) क्रि स नर्तन (चु) अभिनी (भ्वा प अ)। (जुआ आदि) दिव (दि प से) ग्लह (चु उ से)।

खेलनी, स स्त्री (म) चातुरगक्रीडापट २ शार शारि (पु)।

खेलवाड, स पु, दे 'खिलवाड'।

खेलवाडी, वि, दे 'खिलाडी'।

खेलवाना, क्रि प्र, 'खेलना' के प्रे रूप।

खेला, स स्त्री (स) क्रीडा लीला।

खेलाडी, वि, दे 'खिलाडी'।

खेलाना, क्रि प्रे, 'खेलना' के प्रे रूप।

खेलि, स स्त्री (स) क्रीडा लीला। स पु पशु २ खग ३ सूर्य ४ शर ५ गीतम्।

खेवक, स पु } (हिं खेना) दे 'केवट'।
खेवट, स पु }

खेवट, स पु (हिं खेत+वट प्रत्य) क्षेत्र पत्रिलेख।

खेवना, क्रि स, दे 'खेना'।

खेवा, स पु (हिं खेना) तार्य, तरपण्य, आतर तारिक २ नौकया नदीलंघन ३ वार, अवसर, पर्याय ४ माराक्रान्ता नौ (स्त्री)।

खेवैया, स पु (हिं खेना) दे 'केवट'।

खेस, स पु (देश) अवस्तर, आस्तरपट।

खेसारी, स स्त्री (स कृसार>) कलायभेद।

खेह (र) स स्त्री (स क्षार) रजस् (न), धूलि (स्त्री) २ भस्मन् (न) मसिचूर्णम्।

खैंचना, क्रि स, दे 'खींचना'।

खचवाना, क्रि प्रे, 'खींचना' के प्रे रूप।

खैंचाखैंच-ची } स स्त्री, दे 'खींचतान'।
खैंचातान-नी }

खैर, स पु (स खदिर) सारद्रुम, यज्ञाग कुष्ठारि (पु), दंतधावन २ (हिं कत्था) खादिर, खादरसार ३ खगभेद।

ख़ैर, क्रि वि (अ) अस्तु, एव, साधु भद्र, सुष्ठु (सब अव्य) २ का चिंता।
स स्त्री, कुशल, मगलम्।

—आफियत, स स्त्री (अ) कुशलक्षेमम्।

—ख्वाह, वि (अ+फा) शुभचिंतक, हितैषिन्।

—ख्वाही, स स्त्री (अ+फा) शुभचिंतकता, हितैषिता।

खैरा, वि (हिं खैर) खदिरवर्ण। स पु, तान्त्रिक वर्णो अश्वो वर्णो वा २ मत्स्य-मीन।

ख़ैरात, स स्त्री (अ) दान, त्याग।

ख़ैराती, वि (अ) धर्मार्थ, पुण्यार्थ २ वदान्य, उदार।

ख़ैरियत, स स्त्री (अ) मगलम्, कुशलम्।

खों (स) गाह, स पु (स खगाह तथा खोंकाह) श्वेतपिंगलाश्व।

खों खों, स स्त्री (अनु) कासशब्द, शब्द।

खोंच, स स्त्री (स कुच-लकीर डालना>) कीलादिभि वस्त्र विदर विदलनभग्न २ दे 'खरोंच'

—आना या लगाना, क्रि अ, कीलादिभि दृ (कर्म, दीर्यते)।

खोंचना, क्रि स, दे 'खरोंचना'।

खोंचा, स पु (स कुच-जोडना>) खग बधनवर २ दे खोंच ३ दे 'खरोंच' ४ आघात, प्रहार ५ पूरणम्।

—खोंची, स स्त्री, परस्परकलह, मिथ प्रहार।

खोंची, स स्त्री (स कुच>) पूर २ पदार्थान्तरनिवेशितवस्तु (न) ३ क्षुद्रवस्तुक्रय।

खोंटना, क्रि स (स खुट् तोडना>) अंगुलाभि पत्रपुष्प छुट (प्रे), उद्धृ-उत्कृष् (भ्वा प अ)।

खोंटा, वि, दे 'खोटा'।

खोंडर, स पु (स कोटर) निष्कुट।

खोंडा, वि (स खाड) विकला, विकल, खज, पगु २ दतहीन।

खोंता, खोंथा, स पु दे 'घोंसला'।

खोंपा, स पु दे 'खोपा'।

खोंसना, क्रि स (स कोश >) पूर, नि आ, वेशन, निधानम्।

खोआ, स पु, दे 'खोया'।

खोखला, वि (हिं खुक्ख) शून्य रिक्त, गर्भ-उदर-मध्य।

खोखा, स पु (हिं कुक्ख) धनार्पणादेशपत्र। (ब) बाल [खोखी (स्त्री) = बालिका]।

खोज, स स्त्री (हिं खोजना) अन्वेषणणा, गवेषणणा, मार्गणणा, अनुसधान, शोध २ चिह्न, लक्षण ३ चक्रपाद, चिह्नम्।

—करना, क्रि स दे 'खोजना'।

—खाज, स स्त्री, पृच्छा, अनुयोग २ अनुसधान, विचारणरणा ३ अन्वेषणम्।

खोजना, क्रि स (स सुज्=चुराना >) अन्विष (दि प से), निरूप मार्ग (चु०), मृग (चु आ से) अनुमधा (जु उ अ) विचि (स्वा उ अ), अव निर ईक्ष (भ्वा आ से)।

खोजवाना, खोजाना, क्रि प्रे 'खोजना' के प्र रूप।

खोजा, स पुं (फा ख्वाज) सौविद, सौविदल्ल, कचुकिन्, २ सेवक ३ आर्य, महाशय, मिश्र, नायक।

खो जाना, क्रि अ, दे 'खोना' (क्रि अ)।

खोजी, खोजिया, स पु (हिं खोजना) अन्वेषक, निरूपक, निराक्षक, अनुसधायक, २ चर, चार, अपसर्प।

खोट, सं स्त्री (स क्षोट् >) दोष, वैकल्य, वैगुण्य, दूषण २ मिश्रण, ३ मिश्रधातु (पु), कुप्य, अपद्रव्यम्।

—मिलाना, क्रि स, अपद्रव्येण मिश्र (चु)।

खोटा, वि (स क्षोट >) दूषित, सदोष, दोषिन्, विकल २ (अपद्रव्येण) मिश्रित, कूट, कृत्रिम् ३ दुष्ट, खल ४ छलिन्, अधार्मिक।

खोटी खरी सुनाना, मु, निर्भर्त्स् तर्ज् (चु), अधिक्षिप् (तु प अ), निंद् (भ्वा प से)।

खोटाई, स स्त्री, दे 'खोटापन'।

खोटापन, सं पु (हिं खोटा) दुष्टता, क्षुद्रत्व २ छल, कपट ३ दोष, वैगुण्य ४ अपद्रव्यमिश्रणम्।

खोड़, वि (स) विकलाग, अगहीन, विकलेन्द्रिय, पोगड।

खोड़, स स्त्री (हिं खोट) देवभूत प्रेत, घोर २ रोग ३ कुग्रहदुर्नर्ति ४ दोष, विरन्ता ५ चन्दनकाष्ठखड हम्।

खोड़रा, स पुं, दे 'कोटर'।

खोढ़ा, सं पु दे 'ठुड्डी'।

खोद, सं पु (फा खोद) खोल्क, लौह धातुमय, शिरस्त्राण शीर्षण्य शिरस्कम्।

खोद, सं पु (हिं खोदना) पृच्छा २ निरीक्षणम्।

—विनोद, सं पु, अनीव अनुयोग अवेषण विचारणम्।

—कर पूछना, मु, निभृत रहस्य-गूढ प्रच्छ (तु प अ)-अनुयुज् (रु आ अ)।

खोदना, क्रि स (सं खुड्-तोड़ना >) खन् (भ्वा उ से), (भूमि) अवदॄ (प्रे), भिद् (रु प अ)। २ उत्पट-उन्मूल् (चु) ३ उत्कॄ (तु प से), तन्, त्वक्ष् (भ्वा प से), मुद्र (चु) ४ उत्सन्, निभिद् (रु प अ) ५ यष्ट्यादिभि स आ पीड् (चु) ६ उद्दीप-उत्तिज (प्रे)। स पु, खनन, खाति (स्त्री), अवदारण, भेदन, उत्पाटन, उन्मूलन, उत्किरण, तक्षण इ।

—योग्य, वि, खननीय, खेय, अवदारयितव्य, उत्पाटनीय, उन्मूलयितव्य।

—वाला, सं पु खनक (-की स्त्री), अवदारक, उन्मूलक उत्पाटक।

खोदा हुआ, वि, खात, अवदीर्ण, उन्मूलित, उत्पाटित इ।

खोदनी, स स्त्री, (हिं खोदना) लघु खनित्रका।

कान—, स स्त्री, श्रवणशोधनी, कर्णकडूयनी।

दाँत—, स स्त्री, रदनशोधनी दतोल्लेखनी।

खोदवाना, क्रि प्रे, 'खोदना' के प्र रूप।

खोदाई, स स्त्री, दे 'खुदाई'।

खोनचा, सं पु (फा ख्वान्च) भाण्डवाह भाजन, क्षुद्रवस्तुविक्रेतृ पात्रम्।

खोना, क्रि स (स क्षेपण >) हा (जु प अ) त्यज् (भ्वा प अ) २ अपव्यय् (चु) वृथा क्षे हम् (प्रे)। ३ विप्रकृ, नश (प्रे)। क्रि अ, मार्गात् भ्रश् भ्रम (भ्वा आ से) सभ्रम् (दि प से) २ नश (दि प से), च्यु (भ्वा आ अ)।

खोपड़ा, खोपरा, स पु (सं खर्पर) कपाल ल, कर्पर २ शीर्ष, शिरस् (न) ३ अक्वनारिकेल-फल, कौशिफल ४ अपक्व नारिकेर,-बीज गर्भ ५ भिक्षापात्रम्।

खोपड़ी, सं स्त्री (हिं खोपडा) दे 'खोपड़ा' (१, २)।
अधी या औंधी-का, मु जड, अज्ञ, मदमति।
—खाना या चाट जाना, मु, वाचालतया उद्विग्न-सन्तप्-अर्द् (प्रे)।
—गंजी करना, मु अत्यधिक तड (प्रे)।
खोपा, सं पु (स खर्पर) नारिकेल,-बीज गर्भ २ कुणाग्रकोण ३ मार्गाभिमुखो गृह कोण ४ ब्रह्मरन्ध्र त्रिकोण केशविन्यास। ५ वेणी-कबरी-केश बन्ध जूटः-टकम्।
खोया¹, स पु (स क्षोद ~) घनीकृतानी सान्द्रा-कृत दुग्ध किलाट २ इक्षु दोष देय हृतरस इक्षु ३ इष्टकालेप।
खोया², वि (हिं खोना) नष्ट, भ्रष्ट, मज्ञान।
खोर, वि (सं) पंगु खञ्ज, श्रोण, खोड खोर।
खोरा, सं पु (म खोरक या फा आवखोर) चषक -क, पात्रम्। दे 'कटोरा'।
खोरी, स स्त्री, दे 'कूचा'।
खोल, म पु (स खोल >) कोष -ष, वेष्टन, आवरण २ कीटत्वच (स्त्री) ३ पुट-क ४ उत्तरीय, चेलम्।
खोलक, स पु, (स) शिरस्त्राणम् २ कपाल ल ३ कम्बुक-पूगत्वच (स्त्री) ४ वल्मीकः क ५ सर्पबिलम्।
खोलना, क्रि स, (स खुड = भेदन >) (द्वारादि) उद्धट् (प्रे), वि-अपा वृ (स्वा उ से), निर्गलीकृ। (आँखें) उन्मील, उन्मिष्-उत्फल् (प्रे)। (मुख) व्यादा (जु प अ), उद् वि। दृम (प्रे), (रहस्यादि) आविष्-व्यक्ती प्रकटी-कृ। २ शिथिलयति (ना धा), मोक्ष (चु), उन्मुच् (प्र) ३ विस्तृ विस्तृ (प्रे) ४ अपा वि वृ, उच्छिद् (प्रे) ५ विवरं कृ ६ व्याकृ, व्याख्या (अ प अ)। स पु, उद्घाटन, विवरण, उन्मीलन, विकास, स्फुटन, विजृम्भण, आविष्करण, उन्मोचन इ।
खोलने योग्य, वि, उद्घाटनीय, उन्मीलितव्य, उज्जृम्भणीय इ।
खोवा, स पु, दे 'खोया'।
खोशा, स पु (फा) गुच्छ, गुत्स, स्तबक।
खोसना, क्रि स, दे 'छीनना'।
खोह, सं स्त्री (सं गोह) कन्दर रा, गुहा, गह्वर, दरी २ विवर -र, बिल, कुहरम्।
खौं, सं स्त्री (सं खन् >) गर्त, अवट, बिलम् २ कुसूल, धान्यकोष्ठ।
खौंचा, स पु (स षट् + च) मार्दङ्गिक षण्मुखनालिका।
खौंसड़ा, स पु (प्र० खुमना ~) जीर्ण, उपानह् (स्त्री)-पादत्रम्।
खौफ, स पु (अ) भय भीति (स्त्री), त्रास।
—नाक, वि (अ + फा) भयकर, भीतिजनक।
खौर, स स्त्री (स क्षुर = क्षौर डालना >) अर्द्धचन्द्राकार चन्दनादितिलक २ स्त्रीमस्तक भूषणभेद।
खौरहा, वि (हिं खौरा) (पशु) पामा सिध्म, पीडित, पामन।
खौरा, (पशुओं का खुजली-रोग) स पु (स क्षौर या फा खारखोर >) पामन् सिध्मन् (पु), पामा। वि दे खौरहा।
खौंरु, स पु (देश) वृषभ,-गर्जना निनाद २ कलह।
खौलना, क्रि अ, दे 'उबलना' २ बुद्बुदायते फेनायत (ना धा) ३ प्रकुप (दि प मे), मन्यु क्षुभ् (भ्वा आ से)।
खौलाना, क्रि प्रे, 'खौलना' के प्रे रूप।
खौंहा, वि (हिं खाना) औदरिक, उदम्भर, घस्मर, बहुभक्षिन्।
ख्यात, वि (स) प्रसिद्ध, विश्रुत।
ख्याति, स स्त्री (सं) प्रसिद्धि-कीर्ति (स्त्री)।
ख्यापन, स पु (स न) प्रकाशन, घोषणा, प्रचारणम्।
ख्याल, सं पु (अ) विचार-रणा मन, म, मति (स्त्री) २ स-स्मृति (स्त्री), स्मरण, धारणा ३ अनुमान, वि, तर्क, अभ्यूह इत ४ आदर, समान ५ गीतिभेद।
—से उतरना, मु, विस्मृ (कर्म), स्मृतिपथात् भ्रंश् (भ्वा आ से)।
ख्याली, वि (अ ख्याल) काल्पनिक, कल्पित, कल्पनात्मक, अवास्तविक, वितथ।
—पुलाव पकाना, मु, गगनकुसुमानि रपु ष्पाणि वाचि (स्वा उ अ)।
ख्रिष्टान, स पु (हिं ख्रीष्ट) दे 'ईसाई'।

ख़ीष्ट, स पु (अ क्राइस्ट) दे 'इसामसीह'।
ख़्वाजा, स पु (फा) स्वामिन्, प्रभु २ अध्यक्ष, नायक ३ सौविद-दल ४ श्रेष्ठ यवनभिक्षु (पु) ५ आर्य, मिश्र।
ख़्वाब, स पु (फा) निद्रा २ स्वप्न।
ख़्वार, वि (फा) नष्ट, ध्वस्त, क्षीण २ अनादृत, अपमानित।
ख़्वारी, स स्त्री (फा) विध्वम, विनाश २ अनादर, तिरस्कार।
ख़्वाह, अव्य, (फा) वा, अथवा, आहास्वित् (सब अव्य)।
—मख़्वाह, क्रि वि, मताग्रहेण, मताभिमानेन २ अवश्य, निर्विकल्पम्।
ख़्वाहिश, सं स्त्री (फा) अभिलाष, आकांक्षा, इच्छा।
—मद, वि (फा) आकांक्षिन्, इच्छुक।
—करना या रखना, क्रि स, इष् (तु प से), वाञ्छ् आकाङ्क्ष् अभिलष् (भ्वा प से)।

ग

ग, देवनागरीवर्णमालाया तृतीयव्यञ्जनवर्ण, गकार।
गगाम्बु स पु (सं न) जाह्नवी, गगा, जल वारि (न), २ वृष्टे स्वच्छजलम्।
गग, गगा, स स्त्री (स गगा) जाह्नवी, त्रिपथगा, भागीरथी, मदाकिनी, सुरसरित् (स्त्री), विष्णुपदी, खापगा, हरशेखरा।
—जमनी, वि (स गगा + हिं जमुना >) मिश्रित, सकर, द्विवर्ण २ स्वर्णरजतमय ३ शुक्लकृष्ण, सितासित।
—जल, स पु (स न) भागीरथीतोय २ श्वेत सूक्ष्मवस्त्रभेद।
—जली, स स्त्री (स गगाजल >) गगाजल पात्रम्।
—जली उठाना, मु गगोदकेन शप् (भ्वा उ अ)।
—पुत्र, स पु (स) भीष्म, गागेय २ प्रेत वाही जातिविशेष ३ तीर्थवासी विप्रभेद।
—सागर, स पु (सं) गगासुत २ कलश, उदकपात्रभेद ३ बगेषु तीर्थविशेष।
गगाल, सं पु (स गगालय >) बृहज्जलपात्र।
गगोदक, स पु (सं न) गगा भागीरथी, जल तोयम्।
ज, स पुं (फा, स) कोश ष २ राशि (पु) ३ निपद्या वाणिज्यस्थान ४ समूह।
गज, स पुं (स कज -केश >) खाल्त्य, खल्वाटता, विकेशता।
गंजन, स पुं (स न) अवज्ञा, तिरस्कार २ नाश, ध्वस ३ पीडा, व्यथा।
गजा, वि (सं कज = केश >) खल्वाट, विकेश (शी, स्त्री), खल्ति, खलोट।
गजी, स स्त्री (स गज), राशि (पु), निकर, समूह २ दे 'शकरकद' ३ दे 'बनियायन'।
गजीफा, स पु (फा) पत्रखेलाभेद २ क्रीडापत्रचय।
गजेड़ी, गजल, वि (हिं गाँजा) गजापायिन्, गजाप।
गँठकटा, स पु (हिं गाँठ + काटना) ग्रंथि भेदक, चौर।
गँठजोड़ा, स पु (हि गाँठ + जोडना) दे 'गठबधन'।
गँठबधन, सं पु (स ग्रंथिबधन) ग्रंथि-ग्रंथिका, बधन योजन-सश्लेषण। (वैवाहिकरीतिभेद)।
गड, स पु (स) गल्ल, कपोल २ हस्तिकपोल, कट, करट ३ दे 'कनपटी' ४ स्फोटक, पिटक ५ रेखा, चिह्न ६ ग्रंथि (पु) ७ खड्गिन्, गडक ८ रक्षाकरड ९ गडु (पुं)।
—माला, स स्त्री (स) गल गड, कठमाला, गलरोगभेद।
—स्थल, सं पुं (सं न) दे 'कनपटी'।
गडक, स पुं (स) कठधार्यो रक्षाकरड २ ग्रंथि (पुं) ३ स्फोटकरोगभेद ४ खड्गिन् (पुं) ५ चिह्न ६ देशविशेष।
गंडकी, सं स्त्री (स) नदीविशेष २ खड्गिनी, खड्गमृगी, तुंगमुखी।

गंडा, सं पु (सं गडक=ग्रंथि) १ कंठधार्यो रक्षाकरंड २ चतुष्क, चतुष्टय ३ कपर्दिका पण,-चतुष्टय ४ वलय, चक्र ५ हयकंठभूषण ६ इक्षु (पु)।

—तावीज सं पु, मंत्रयंत्रम्।

—तावीज करना, कि स, रक्षाकरंडैः भूतप्रेतान् निष्कम (प्रे) दूरी कृ।

गँडा(डा)सा, सं पु (हिं गेंडी+स असि >) यवस-घास-छेदनी २ लघु-परशुः (पु) परश्वध ।

गडूष, सं पु (सं) गड्डषा, चुलुक चुलुक । २ शुडाग्र, शुंडाग्रम् ।

गँडेरी स स्त्री (हिं गडा) इक्षु, खण्डक-कम्।

गदगी, सं स्त्री (फा) मल ल, अव (प) स्कर, कल्क-ल्क, किट्ट, कर्दम २ मालिन्य कालुष्य ३ अपवित्रता, अशुचिता।

गँदला, वि, दे 'गदा'।

गदा, वि (फा) मलिन, मलीमस, समल, कलुष, आविल २ अशुद्ध, अपवित्र ३ कुत्सित, गर्ह्य, अश्लील।

—करना, कि स, कलुषयति मलिनयति (ना धा), दुष (प्रे दूषयति), कलुषी आविली, कृ। [गदी (स्त्री)=मलिना इ]

गदी बातें, अश्लील, ग्राम्य-अवाच्य-वचनानि।

गदा बिरोजा, स पु (सं गंध+दे बिरोजा) कुंदु-न्दु, कुंदुर-रु, पालकी, बहुतीक्ष्ण, गंध, श्रीवेष्टक, सरल, द्रव निर्यास ।

गदुम, म पु (फा, सं गोधूम), सुमन, म्लेच्छभोज्य, प्रवट ।

गदुमी, वि (फा गदुम) गोधूम (समास में), गोधूम-सुमन,-वर्ण, प्रवटमय।

गध, स स्त्री (स पु) आमोद, वास २ घ्राणग्राह्य पृथिवीगुण (वै)३ सुगंध, सुवास ।

—बिलाव, स पु (स गंधबिडाल) गंध मार्जार, खट्टास ।

—राज,—सार, स पु (सं) चंदनम्।

गधक, स स्त्री (स पु) गंधि(ध)क, गंधाश्मन्, सौगंधिक।

—का तेजाब, स पु, गंधकाम्ल ।

गंधकी, वि (सं गंधक >) गंधक,-गर्भ-युक्त २ ईषत्पीत।

गधन, स पु (सं न) गन्धप्रसारणम् २ व्रीहिभेद ३ अध्यवसाय ४ आघात प्रहार ५-दोषप्रदर्शनम् ६ ससूचनम्।

गधर्व, सं पु (स) स्वर्गगायक, दिव्यगायन, गातु (पु), देवभेद २ गायक । [-र्वी स्त्री]

—नगर, स पु (सं न) स स्थले वा ग्राम नगरादीना मिथ्याभास, गातु-गधर्व, पुर २ माया, प्रपंच, इन्द्रजालम्।

—विद्या, सं स्त्री (स) संगीत, संगीत वाद्य, विद्या शास्त्रम्।

—विवाह, स पु (स) विवाहभेद (धर्म) पित्रोरनुमति विना स्वेच्छातो विवाह ।

गधवती, स स्त्री (स) पृथिवी धरणी । २ व्यास जननी, सत्यवती ३ सुरा ४ जातिभेद ।

गधार, म पु (स गाधार) भारतवर्षस्यो त्तरस्या दिशि देशविशेष २ तृतीयस्वर (संगीत)।

गधी, स पु (स गंधिन् >) गाधिक, गंध, विक्रयिन् उपजीविन् वणिज् २ ३ घास-कीट, भेद ।

गधारी, स स्त्री, दे 'गाधारी'।

गभीर, वि (स) गं (न) भीर, रक्, अगाध, निम्न २ गहन, निबिड ३ दुर्बोध, निगूढार्थ ४ मंद्र, घन (शब्द) ५ शांत, सौम्य ।

गभीरता, स स्त्री (स) गाभीर्य, गौरव, धीरता, निम्नता, गहनता, दुर्बोधता, सौम्यता इ ।

गँवाऊ, वि (हिं गँवाना) अपव्ययिन्, विक्षपिन्, दे 'उजाडू'।

गँवाना, कि स (स गमन >) अपव्यय (चु) वृथा क्षै इम (प्रे) २ हा (जु प अ), त्यज् (भ्वा प अ) ३ (समय) या अतिवह् (प्रे)।

गँवार, वि (हिं गाँव) ग्रामीण, ग्रामिक, ग्रामिन् (पु), ग्राम्य २ मूर्ख, जड ३ अनार्य, असभ्य।

—पन, स पु, ग्रामीणता, मूर्खता, अस भ्यता इ ।

गँवारू, वि (हिं गँवार) ग्रामीय, असंस्कृत, प्राकृत २ अशिष्ट, असभ्य।

गँसीला, वि (हिं गाँसी) ग्रथिल, ग्रथि पर्व, मय २ वेधक, छेदक।
गऊ, स स्त्री, दे 'गौ'।
गगन, स पु (स न) आकाश-शम्।
—भेदी, वि (सं दिन्) आकाश व्योम, वेधक वेधिन् भेदिन् (शब्दादि) २ (भवनादि) गगन व्योम, स्पृश चुम्बिन्, अभ्रलिह्, नभोलिह्।
गगरा, स पु (स गर्गर-दधिमथनपात्र>) धातु कुंभ कलश घट, गर्गर।
गगरी, स स्त्री (स गर्गरी-दधिमथनपात्र>) धातुमयलघु कलश घट कुभ, गर्गरी।
गच, स पु (अनु) पके चरनज,-शब्द २ खड्गादिवेधनोत्थ शब्द ३ लेप, सुधा, ४ गृहभूमि भू (स्त्री) ५ सुधालिप्ततल, कुट्टिम मम्।
—कारी, स स्त्री (हिं गच+फा कारी>) सुधा लप,-कार्य कर्मन् (न)।
गचपच, त्रि दे 'गिचपिच'।
गच्द, स पु (फा) आघात, प्रहार २ हानि क्षति (स्त्री) ३ कष्टम्, क्लेश।
गज, स पुं (स) हस्तिन्, कुम्भिन्, करिन्, कुथिन्, दतिन्, रदिन्, शुण्डिन् (सब पुं), दे हाथी'।
—आनन, स पु (स) गजमुख, गणेश, गजवदन।
—कुंभ, स पुं (स) करिकुंभ, गजशिर पिंड।
—गति, स स्त्री (स) गज कुजर,-गमन गति।
—गामिनी, त्रि स्त्री (स) इभ वारण, गामिनी-चारिणी (सुंदरी)।
—दंत, स पु (सं) हस्ति करि, दंत रद रदन २ गणेश।
—दान, स पुं (स न) गजमद २ करि वितरणम्।
—पति, स पु (सं) करीन्द्र (यूथनाथ, यूथप)।
—पाल, स पुं (सं) हस्तिप पक, आधोरण, निषादिन् (पुं) महामात्र।
—मोती, स पुं (सं गजमौक्तिक) गजमुक्ता, गजमणि (पुं)।
—मुख, सं पुं (सं) दे 'गजानन'।
—राज, स पुं (सं) दे 'गजपति'।
—वदन, स पुं (सं) दे '-आनन'।
—वान, सं पुं (सं गज>) दे 'गजपाल'।
—शाला, स स्त्री (सं) द्विप हस्ति,-शाला गृहम्।
गज़, स पुं (फा) गज (माप) २, आग्नेय चूर्ण प्रणोदनी यष्टि (स्त्री) ३ सारंगवादन यष्टि, वादन वाद्य वादित्र,-दण्ड ४ इषुभेद।
गज़क, स स्त्री (फा कजक) व्यजन, उपस्कर, उप अव, दश २ तिलशर्करा (मिठाई) ३ उपाहार ४ प्रातराश।
गज़ट, स पु (अं) राजपत्रम्।
गजनी, स स्त्री (सं गज>) मृत्तिका-मृद्, भेद।
गज़ब, स पुं (अ) रोष, क्रोध २ विपद् विपत्ति (स्त्री) ३ अन्याय, अत्याचार ४ विलक्षणवृत्तांत।
—करना, क्रि स, अन्यायेन अधिष्ठा (भ्वा प अ) शास् (अ प से) २ विस्मयजन् (प्रे)।
—का, वि अद्भुत, आश्चर्य।
—नाक, वि, रुष्ट, क्रुद्ध, कुपित।
गजर, स पु (स गर्ज, हिं गरज) चतुरष्ट द्वादशवादनसमयेघटानाद २ प्रात घटानाद। स स्त्री, श्वेतरक्तगोधूममिश्रणम्।
—दम, क्रि वि, प्रात, प्रभाते, महति प्रत्यूषे।
—पजर, स पु (अनु) अनुचितमिश्रणम्। २ खाद्याखाद्य, भक्ष्याभक्ष्यम्।
गजरा, स पु (सं गज-देर>) माला, माल्य, स्रज् (स्त्री) २ वलय, कटक-क, करभूषणं ३ कौशेयवस्त्रभेद।
गजरी[1], स स्त्री (हिं गजरा) कलाची मणि बन्ध, भूषण आभरणम्।
गजरी, स स्त्री (हिं गाजर) लघु क्षुद्र,-गाजर गर्जरम्।
गजल, स स्त्री (फा) शृंगारकविता।
गज़ी, स स्त्री (फा) स्थूलसौत्रवस्त्रभेद।
गजी, स स्त्री (स) हस्तिनी, करिणी।
गजेन्द्र, स पुं (सं) दे 'गजपति'।
गटकना, क्रि स (अनु गट) खाद् (भ्वा प से) २ निगृ (तु प से), ग्रस् (चु) ३ अन्यायेन आपह् (भ्वा प अ)।
गटगट, सं पु (अनु) गटगटा,-शब्द-ध्वनि (पु) गटगटायितम्। त्रि वि, सगटगटा शब्दम्।
गटपट, स स्त्री (अनु) रति (स्त्री) मैथुनं, सहवास २ घनमैत्री। (वि) मैथुनासक्त।

गटरगू, स स्त्री (अनु) कपोत, शब्द-रुत कूजित, घूत्कार।
गट्ट, स पु (अनु) निगरणध्वनि (पु)।
गट्ठा, स पु (सं ग्रथ>) मणिबंध धन, पाणि मूल २ गुल्फ घुट ३ जानु (पु न), नल कील ४ रोधना, अवष्टम ५ ग्रथि (पु) ग्रन्थिका ६ सधि (पु) पर्वन् (न), अस्थि सधि (पु) ७ बीज ८ मिष्टान्नभेद ।
गट्टी, सं स्त्री (हिं गट्टा) आवापन, ततुकील ।
गट्ठर, स पु (हिं गाँठ) पोटलिका, भार, कूर्च, सधान, गुच्छ ।
गट्ठा, स पु (हिं गाँठ) काष्ठादीनां भार २ दे 'गट्ठर'(२-४) पलाडु ल्शुन,-ग्रथि (पु)।
गट्ठी, स स्त्री (हिं गट्ठा) दे 'गठरी'।
गठ, सं स्त्री (हिं गाँठ, दे)।
—कटा, वि पु, दे 'गँठकटा'।
—जोड़ा, स पु, दे 'गँठबधन'।
गठन, स स्त्री (स ग्रथन) घटना, रचना, विधान, निर्माणम्।
गठना, क्रि अ (स ग्रथन) सग्रथ-गुफ (कर्म), गुणे-ततुभि बध (कर्म) २ सम्यक रच-निर्मा (कर्म) ३ स्नेहातशयो विद् (दि आ अ) ४ षडयत्र ससृज (कर्म)।
गठरा, स पु, दे 'गट्ठर'।
गठरी, स स्त्री (हिं गठरा) लघु पोटलिका भार कूर्च २ सचितधनम्।
—चोर, स पु, कृपण, कदर्य ।
गठवाना, } क्रि प्रे, 'गाँठना' के प्रे रूप।
गठाना,
गठाव, स पु (हिं गठना) सबध, सश्लेष २ दे 'गठन'।
गठित, वि [स ग्र(ग्र)थित] गुफित, बद्ध २ रचित, निर्मित।
गठिया, स स्त्री (हिं गाँठ) दे 'गठरी' २ वात, रक्त शोणित,ग्रथिवात, दे 'वातरोग'।
—बात, **—बाव**, स स्त्री (हिं +स वात तथा वायु)सधि,-वात वायु २ वात, वायु, वातरोग ।
गठीला, वि (हिं गाँठ) ग्रन्थि पर्व-सधि-मय (-मया स्त्री) ग्रथिल, पर्ववत ग्रथिमत (ती स्त्री)।
गठीला, वि (हिं गठना)-वज्र दृढ,-देह-ग, स्फूर्तिमत् (-ती स्त्री) २ दृढ ३ सदल ली (स्त्री)=इढागी, सबला इ]।

गठौत-ती, सं स्त्री (हिं गठना) मैत्री, सौहार्द २ कुमन्त्रणा, उपजाप, कूट टम्।
गड़त, सं स्त्री (हिं गाड़ना) अभिचाराय निखात निहित, वस्तु (न), •निखानम्।
गड़कना, क्रि अ (अनु) गडगडायते (ना धा), गडगडा, शब्द नाद राव कृ।
गड़गज, स पु, दे 'गरगज'।
गड़गड़, सं स्त्री (अनु) गर्जित, स्तनित, गटगटायित २ कर्दन, आन्त्रशब्द शूलशब्द ३ धूम्रपानयत्रशब्द ।
गड़गड़ा, स पु (अनु) धूम्रपानयत्रभेद, •गडगड ।
गड़गड़ाना, क्रि अ (अनु) गर्ज-गर्ज-स्तन् (भ्वा प से) गडगडायते (ना धा) २ नद्-रस (भ्वा प से)।
गड़गड़ाहट, स स्त्री, (हिं गडगडाना) दे गटगड'।
गड़गूदड़, स पु (अनु गड + हिं गूथन>) जीर्ण शीर्ण जर्जरित,-वस्त्र पट, चीर, कर्पट । २ असार मलम्।
गड़ना, क्रि अ (स गर्त >) आ प्र विश (तु प अ), विध् (तु प से), निर्-, भिद् (रु प अ) २ (भूमौ) निधा-निक्षिप् (कर्म) ३ पीड (कर्म), व्यथ (भ्वा आ से) ४ नि, मस्ज (तु प अ), अव नि सद (भ्वा प अ)।
गड जाना, मु, लज्ज (तु आ से), त्रप (भ्वा आ वे)।
गड़प, सं स्त्री (अनु) निगरण, ग्रसनम्।
गड़पना, क्रि स, (अनु गडप>) सत्वर निगृ (तु प से)-पा(भ्वा प अ) २ अन्यायेन आत्मसात् कृ।
गड़प्पा, स पु (अनु) बृहद्, गर्त -गर्त-अवट ।
गड़बड़, वि (हिं गड = गड्ढा + बड–ऊँचा) असम, विषम, नतोन्नत २ अस्तव्यस्त, अक्रम। स पु अव्यवस्था, क्रमभग २ विप्लव, सक्षोभ, कोलाहल ३ रोग, आमय ।
—अध्याय, स पु } दे 'गडबड' स पु।
—झाला, स पु
गड़बड़ाना, क्रि अ (हिं गडबड) आकुली भू, मुह् (दि प वे), भ्रात्या मन् (दि

आ अ)। कि स, वि-सं, भ्रम्-क्षुभ (प्रे), मुह् (प्रे), आकुली कृ।

गड़बड़ाहट, गड़बड़ी, स स्त्री, दे 'गड़बड़' स पु।

गड़बड़िया, वि (हिं गड़बड़) मोहक, मोहन २ क्रम-व्यवस्था भजक-नाशक, उपद्रविन।

गड़मड़, वि (अनु) संकुल, सकीर्ण, व्यत्यस्त, अव्यवस्थित।

—करना, क्रि स, मकरी मकुली कृ, क्रम भञ्ज (रु प अ)।

गड़रिया, स पु (स गड्डरिका >) अवि गड्डर मेष पाल।

गड़वा, स पु (स गडुक) गडु (पु), गडुक, गडडुक २ पुष्पपात्रभेद।

गड़वाना, कि प्रे, 'गड़ना' के प्रे रूप।

गड़हा, स पु (स गर्त तं) गर्ता, अवट, बिल, विवर, खात, पत्तर।

गड़ाना, कि स 'गड़ना' के प्रे रूप।

गड़ारी, स स्त्री (अनु) उच्छ्रायणचक्र,२ मडल, वृत्त, चक्रम् ३ मडलाकार गोल, रेखा।

गढ़ि (रि) यार, वि (हिं गड़ना) धृष्ट, दुर्दान्त २ मंथर।

गड्ड, वि (स) कुब्ज, वक्रपृष्ठ। स पु (स) ककुद, ककुदम् २ गडुक जलपानभेद ३ किंशुलुक, गड्डपद।

गड्डुआ, स पु (स गडुक) सनालीक लघु पानपात्रम्।

गड़ेरिया, स पु, दे 'गड़रिया'।

गड्ड, स पु (स गण) नि स,-चय, निकर, स्तोम ओघ।

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड, स पु (अनु) सकर, अक्रम, क्रमभंग। वि, विपर्यस्त, व्यत्यस्त, भग्नक्रम।

गड्डा, स पु (स शकट) शकट टिका, वाहन, प्रवहणम्।

गड्डाम, वि (अ गाड+श्याम) नीच, अधम, जघन्य।

गड्डी, स स्त्री (हिं गड्ड) (एक ही वस्तु का) स नि, चय, सधान २ राशि, समूह।

गड्ढा, स पु दे 'गड़हा'।

गढ़त, वि (हिं गढ़ना) कृत्रिम, कल्पित २ दे 'गढ़न'।

मन—, वि कपोल मन,-कल्पित, मानसोद् भावित, काल्पनिक, कल्पनात्मक।

गढ़, सं पु (सं गड) परिखा, खात, गर्त ता २ दुर्ग, कोट।

—पति, स पु (स) दुर्गपाल।

गढ़न, स स्त्री (हिं गढ़ना) दे 'गठन'।

गढ़ना, कि स (स घटन) घट् (चु) घट्ट रच् (चु) निर्मा (अ प अ, जु आ अ), क्लृप् साध सपद् (प्रे), २ तक्ष् (चु) ३ मिथ्या कल्प् (प्रे), मनसा सृज् (तु प अ)।

गढ़ा, स पु, दे 'गड़हा'।

गढ़ाई, स स्त्री (हिं गढ़ना) घटन, निर्माण, रचनम् २ घटन-रचन, मूल्य भृति (स्त्री)- निर्वेश।

गढ़ाना, कि प्रे 'गढ़ना' के प्रे रूप।

गढ़ी, स स्त्री (हिं गढ़) लघु दुर्ग कोट २ कोटाकार दृढभवनम्।

गण, स पु (स) समूह, वर्ग, समुदाय, वृदम् २ श्रेणी, कोटि (स्त्री) ३ त्रिगुल्मात्मक सेना विभाग (= २७ हाथी, २७ रथ ८१ घोड़े, १३५ पैदल) ४ परिचारक परिजन ५ पक्ष पाति अनुयायि वर्ग ६ सभा, समाज ७ गणशाधिष्ठिता शिवसेवका ८ मगण सगणादय वर्णमात्रासमूहा (छद) ९ १० धातु शब्द समूह (व्या) ११ नक्षत्रसमूहविशेषा (ज्यो)।

—अधिप—नाथ,—नायक,—पति, स पु दे 'गणेश'।

—द्रव्य, स पु (स न) सर्वजनीन पदार्थ २ द्रव्यसमूह।

गणक, स पु (स) दैवज्ञ, ज्योतिर्विद् २ गणितज्ञ

गणकी, स स्त्री (स) १ २ गणितज्ञ दैवज्ञ, पत्नी।

गणन, स पु (स न) सख्यान, गणना।

गणना, स स्त्री (स) गणन, सख्यान २ सख्या ३ अलंकारभेद (सा)।

—करना, क्रि स, दे 'गिनना'।

गणनीय, वि (स) सख्येय गण्य २ दे 'प्रसिद्ध'।

गणिका, स स्त्री (सं) वेश्या, भोग्या पण्यस्त्री।

गणित, स पु (स न) गणित,-शास्त्र विद्या गणना मात्रा-संख्या परिमाण, विद्या शास्त्रम् २

अक, विद्या गणित शास्त्रम्। वि, सख्यात, सक लित २ चिंतित, निरूपित।
—कार, स पु (स) गणितज्ञ २ ज्योतिर्विद् (पु)।
—विद्या, स स्त्री (स) दे 'गणित' (१ २)।
अक—, स पु (स न) अक, विद्या-शास्त्रम्।
बीज—, स पु (स न) गणितविद्याभेद।
रेखा—, स पु (स न) रेखागणना, भूज्या, मिति (स्त्री)।
गणेश, स पु (स) गज, आस्य मुख-वदन आनन, लम्बोदर, गणाधिप, विनायक, आखुग शूर्पकर्ण, विघ्नेश, परशुपाणि (पु)।
गोबर—, स पु, जड मूढ।
गण्य, वि (स) सख्येय गणनार्ह, गणनीय २ प्रतिष्ठित, पूज्य, मान्य।
—मान्य, वि (स) दे 'गण्य'।
गत, वि (स) अतीत, अतिक्रान्त, व्यतीत, २ मृत ३ हीन, रहित ४ लब्ध, प्राप्त। स स्त्री (स गति स्त्री) दशा, अवस्था २ रूप, आकृति (स्त्री) ३ उपयोग व्यवहार ४ दुर्दशा, नाश ५ नृत्यभेद ६ प्रेतक्रिया।
गतका, स पु (स गदा) चर्मावृतयष्टि (स्त्री) २ क्रीडा-खेल, भेद।
गताक, स पु (स) पत्रपत्रिकाणाम् इताक अतीताक अव्यवहितपूर्वाक।
गताक्ष, वि (स) अन्ध, अनयन, अनेत्र।
गतागत, स पु (स न) गमनागमनम् २ पुनर्जन्मन् (न), जन्ममरणम्।
गतानुगतिक, वि (स) अन्धानुयायिन्, अन्धविश्वासिन्।
गति, स स्त्री (स) गमन, चलन, व्रजन, अयन, यान, सरण २ स्फुरण, कपन, स्पदन ३ चेष्टा, व्यापार ४ दशा, अवस्था ५ प्रवेश ६ प्रयत्नसीमा ७ अवलम्ब ८ माया, लीला ९ रीति (स्त्री), विधि (पु) १० देहांतर प्राप्ति (स्त्री) ११ मुक्ति (स्त्री) १२ ताल स्वरानुसाराङ्गचालन (सगीत) १३ प्रेत कर्मन्।
—बनाना, मु, निर्दय तड् (चु) प्रह (भ्वा प अ)।
—होना, मु, प्र-उप-युज (कर्म) २ निर्दय ताड (कर्म) ३ मुक्ति लभ (भ्वा आ अ)।
गत्ता, स पु (देश) मसृष्टपत्रं, गुरुपत्रम्।

गद, स पु (स) रोग, आमय २ श्रीकृष्णा नुज ३ ४ वानर असुर, विशेष। (स न) विष, गरलम्।
गदका, स पु, दे 'गतका'।
गदगद, वि, दे 'गद्गद'।
गदर, स पु (अ) प्रजा प्रकृति, कोप-क्षोभ, २ सैन्य सेना, द्रोह क्षोभ प्रकोप ३ विप्लव, सप्लव, समर्द।
—करना या मचाना क्रि अ (राजे) द्रुह् (दि प वे), राजशासन लघ (भ्वा आ से) इ।
गदला, वि (फा गदा) सपक, सकर्दम, समल, पकिल, मलिन।
—करना, क्रि स, कलुषयति पकिलयति-आविल यति (ना धा), मलिनी कृ।
—पन, स पु, मालिन्य, पकिलत्व आविलता।
गदहपचीसी, स स्त्री (हिं गदहा + पचीस) आषोडशात् आपचविंशते आयुषो भाग। २ अनुभवहीनता, माध, मौर्ख्यम्।
गदहा, स पु (स गर्दभ) रासभ, खर, वालेय, भारग, धूसर, ग्राम्याश्व २ मूर्ख, अज्ञ [गदही (स्त्री) = रासभी, खरी, गर्दभी]।
—पन, स पु, मौर्ख्य, जडता।
गदा, स स्त्री (स) लोहमयशस्त्रभेद।
—धर, स पु (स) कृष्ण २ विष्णु। वि, गदाधारिन्।
गदेला, स पु, दे 'गद्दा'।
गद्गद, वि (स) प्रहृष्ट, आनदपुलकित, परम मुदित, सुप्रसन्न २ अस्पष्ट, असबद्ध, अस्फुट (अक्षरस्वरादि)।
गद्दा, स पु (हिं गद से अनु) तूलस्तर, तूला।
गद्दी, स स्त्री (हिं गद्दा) (तूल) आसन, तूलिका २ पिचुलविष्टर ३ उपधान, उपबर्ह ४ पर्याण, पल्यान ५ सिंहासन, नृपासन ५ अधिकारपद ६ ७ कर-चरण, तलम्।
—पर बैठना, क्रि अ, सिंहासन आरुह् (भ्वा प अ), राज्येऽभिषिच् (कर्म)।
—पर बैठाना, क्रि स, अभिषिच् (तु प अ), सिंहासने उपविश् (प्रे)
—से उतारना, क्रि स, सिंहासनात् च्यु अव रुह् भ्रश् अवपत् (प्रे)।

—नशीन, वि (हिं+फा) सिंहासन-आसीन आरूढ २ उत्तराधिकारिन् ।
—नशीनी, सं स्त्री, अभिषेक, राज्याभिषेक ।
गद्य, सं पु (सं न) छन्दोहीनरचना, अपाद पदसन्तान ।
गधा, स पु, दे 'गदहा' ।
गधी, गधैया, } स स्त्री, दे 'गदही, ('गदहा' के नीचे) ।
ग़नीम सं पु (अ) शत्रु, रिपु २ दस्यु (पु), लुठक ।
ग़नीमत, सं स्त्री (अ) लोत्र, लोप्त्र, अप हृतधन २ अयत्नलब्ध धन ३ सतोषविषय, धन्यत्वम् ।
गन्ना, स पु (सं काड-ड>) रसाल, इक्षु, काड दड, दे 'ईख' ।
गप[1], सं स्त्री (सं कल्प अथवा अनु) किंव दती, लोक जन, श्रुति (स्त्री) प्रवाद वार्त्ता २ जल्प, प्रलाप ३ मिथ्या-असत्य, वृत्तान्त वृत्त समाचार ४ विकत्थन, गर्वोक्ति (स्त्री) ।
—मारना,—हाँकना, कि अ, प्रलप् जल्प् (भ्वा प से) ।
—शप, स स्त्री, वृथा-कथा सलाप ।
गप[2], स पु (अनु) निगरण-ग्रसन, ध्वनि (पु) ।
गपागप, कि वि, सत्वर, झटिति, शीघ्रम् ।
गपकना, कि सं, दे 'निगलना' ।
गपड़चौथ, सं स्त्री (हिं गपोडा+चौथा) वृथा निरर्थक सलाप-आलाप-सवाद २ दे 'गड़बड़ी' ।
गपड़शपड़, सं स्त्री, दे 'गपड़चौथ' ।
गपागप, अव्य (अनु) सत्वर, शीघ्र, आशु झटिति (सब अव्य) ।
गपोड़ा, सं पु दे 'गप' ।
गप्प, स स्त्री, दे 'गप' ।
गप्पी, स पु (हिं गप) वावदूक, जल्प (पा) क २ मिथ्याभाषिन्, अनृतवादिन् (पु) ३ आत्मश्लाघिन् (पुं) ।
गप्फा, सं पु (अनु गप>) बृहद्-कवल ग्रास पिंड २ लाभ ।
गफ़, वि (सं ग्रप्स=गुच्छा अथवा गुप्= बुनना>), अविरल, घन, सांद्र, सून ।
गफ़लत, सं स्त्री (अ) अनवधानता, प्रमाद २ स्खलित, अपराध ।
गबन, सं पु (अ) कपटेन आत्मसात्करण अपहरण-उपयोग ।
—करना, कि स, कपटेन आत्मसात्कृ ।
गबरू, सं पु (फा खूबरू) (नव) युवक, युवन् (पु), तरुण २ पति (पु), वर । वि, सरल, अमाय ।
गभस्ति, सं पु । (सं) किरण, रश्मि (पु) २ सूर्य ३ बाहु (पु) ४ हस्त ।
—पाणि—मान्—हस्त, सं पु (सं) सूर्य ।
गभीर, वि (सं) दे 'गम्भीर' ।
ग़म, सं पु (अ) शोक, विषाद, दुःख २ चिन्ता, रणरणक कम् ।
—गीन, वि (अ+फा) विषण्ण, सचिन्त ।
—खाना, मु, क्षम्. (भ्वा आ वे), क्षम् (दि प वे, क्षाम्यति) ।
गमक[1], वि (सं) गन्तृ, यातृ, २ सूचक, बोधक ।
गमक[2], सं स्त्री (अनु) पटह भेरी, नाद २ सुगन्ध ।
गमन, स पु (स न) यान, व्रजन, चलन, प्रस्थान २ मैथुनम् ।
—आगमन, स पु (सं न) यातायात, यानायान, गतागतम् ।
गमला, स पु (पुर्त गैमेलो) प्रसून पुष्प, पात्र भाजन २ पुरीष, उच्चार, पात्रम् ।
ग़मी, सं स्त्री (अ ग़म) शोक, विलाप २ मृत्यु ।
गम्य, वि (स) प्राप्य, लभ्य २ यातव्य, अयनीय ३ साध्य, शक्य ४ सम्भोगार्ह ।
गयद, सं पु (स गजेन्द्र) गज, पति (पु) -राज ।
गय, सं पु (स गज) द्विरद, द्विप, करिन्, कुम्भिन् ।
गया[1], स स्त्री (स) मगधपु गयराजर्षिपुरी, तीर्थविशेष ।
गया[2], वि (सं गत) यात, प्रस्थित ।
—गुज़रा,-बीता, वि, नष्ट, मृत, २. निकृष्ट, तृणप्राय ।
गर, स पुं (सं) विष, उपविष २ रोग ।
गरक़, वि, दे 'ग़र्क़' ।
गरक़ाब, वि, दे 'ग़र्क़' ।

गरकी, सं स्त्री, दे 'गर्की'।

गरगज, सं पु (हिं गढ+सं गर्ज) दुर्ग प्राचीरशृंग। २ उद्बन्धनयन्त्र, घातशिला।

गरगरा, स पु, दे 'गराडी'।

गरज, स स्त्री (सं गर्ज) गर्जन-ना, गर्जित स्तनित, महा-दीर्घ-गम्भीर, शब्द नाद।

गरज़, स स्त्री (अ) आशय, प्रयोजन, अर्थ, स्वार्थ २ आवश्यकता ३ अभिलाष।
क्रि वि, अते, अन्तत, अन्ततो गत्वा २ अस्तु, एव (अव्य)।

—मन्द, वि (अ+फा) स्वार्थलिप्स, स्वला मापेक्ष। २ इच्छुक, ईप्सु।

—मन्दी, स स्त्री, स्वार्थलिप्सा, स्पृहा, अपेक्षा।

ब— वि (फा+अ) निष्काम, नि स्पृह, नि सग।

गरजना, क्रि अ (स गर्जन), गर्ज्, गर्न्-विस्फूर्ज् नद् नर्द् स्तन्-रस् (भ्वा प से), महा-दीर्घ-गम्भीर,-नाद कृ।
स पु दे 'गरज'।

गरज़ी, वि (अ गरज) दे 'गरज़मन्द'।

पर्स्त—स स्त्री (फा+अ) स्वार्थपरता, स्व हितनिष्ठा।

गरण, स पु (स न) निगरण, निगलनम्, ग्रसन २ अवसेचन, प्रोक्षण ३ विषम्।

गरदन, दे 'गर्दन'।

गरदनिया, स पु (हिं गरदन) ग्रीवा-कण्ठ, ग्रहण,-ग्रह, *अर्धचन्द्र।

गरदा, स पु, दे 'गर्द'।

गरदान, स पु (फा) शब्द धातु,-रूपसाधन (व्या)।

—करना क्रि स शब्दरूपाणि वद् (भ्वा प से)।

गरनाल, स स्त्री (हिं गर+सं नाल) उरु वदनी नीनाली।

गरम, वि, (फा गर्म, स घर्म) उष्ण, तप्त, स-उद, आतपाक्रान्त, सोष्ण। २ उग्र, प्रचड, क्रोधिन् ३ तीक्ष्ण, तीव्र ४ उत्साहिन्, सोत्साह।

—करना, क्रि सं-, परि प्र स,-तप् (प्रे), उद्, दीप् (प्रे), उष्णीकृ। मु, उत्तिन् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, उष्णीभू, तप् (भ्वा प अ, दि आ अ) २ क्रुध (दि प अ)।

—कपड़ा, सं पु, और्ण-ऊर्णामय,-वसन्।

—ख़बर, स स्त्री अभिनव-इदानींतन समाचार।

—मिज़ाज, वि, सरम्भिन्, क्रोधिन्।

—सर्द, वि, कोष्ण, कवोष्ण, कदुष्ण।

गरमागरम, वि (हिं गरम+गरम) अत्युष्ण, सुतप्त, २ अभिनव, प्रत्यग्र।

गरमाना, क्रि अ क्रि स (हिं गरम) दे 'गरम होना' तथा 'गरम करना'।

गरमी, स स्त्री (फा, सं घर्म) स-उद परि, ताप, उष्णता, दाह, उ(ऊ)ष्मन् (पु), उष्म। २ उग्रता, चण्डता ३ कोप ४ उत्साह ५ ग्रीष्म, ग्रीष्म समय-काल, निदाघ ६ उपदश।

—दाना, स पु, दे 'पित्त' (प)।

गरल, स पु (स न) गर, विष २ सर्पविष ३ तृणपूलकम्।

गराँ, वि (फा) भारिक, भारवत्, गुरु २ बहुमूल्य, महार्घ।

गराड़ी (री), स स्त्री (अनु गरर) दे 'गडारी'।

गरारा, स पु (अनु अथवा अ गरग़रा) चलु, च (चु) लुक। २ चुलुकौषधम्।

—करना, क्रि स जलेन कठ (गल) धाव् (भ्वा प से)-मृज् (अ प वे)।

गरिमा, म स्त्री (सं मन् पु) गुरुत्व, भार वत्त्व २ महिमन् (पु), गौरव, महत्व ३ अहकार ४ आत्मश्लाघा ५ सिद्धिविशेष (योग)।

गरिष्ठ, वि (स) गुरुतम, भारवत्तम, अतिभारवत् २. मलावरोधक, मलावष्टम्भक।

गरी, सं स्त्री (स=गुलिका>) नारिकेल (र),-सार गोल।

गरीब, वि (अ) अकिंचन, दरिद्र, निर्धन २ नम्र, विनत।

—खाना, स पु (अ+फा.) कुटी, कुटीर २ दरिद्र-अनाथ,-आलय -गृहम्।

—नि(नि) वाज़, —परवर, वि (अ+फा) दीन,-बधु दयालु-वत्सल नाथ पालक पोषक।

गरीबी, सं स्त्री (अ ग़रीब) दारिद्र्य, निर्धनत्व, अकिंचनता २ नम्रता।
गरुड़, स पु (स) वैनतेय, खगेश्वर, सुपर्ण, विष्णुरथ, नागान्तक।
—आसन,-केतु,-ध्वज, स पु (स) विष्णु।
—पुराण, स पु (स न) पुराणविशेष।
गरूर, स पु (अ) अभिमान, दर्प, गर्व।
गरेबान, स पु (फ़ा) निचोलगल।
गरोह, स पु (फा) समुदाय, समूह।
गर्क, वि (अ) जलमग्न स परि, प्लुत, जले तिरोहित २ नष्ट, ध्वस्त ३ कार्ये व्यापृत लीन मग्न।
गर्काब, वि (अ+फा आब) जलमग्न, आ स परि, प्लुत २ अति, लीन निरत व्यापृत आसक्त।
गर्की, सं स्त्री (अ) सप्लव, आप्लाव। २ निमज्जन, जले तिरोधान ३ दे 'लँगोटी'।
गर्ग, स पु (स) ऋषिविशेष २ वृषभ।
गर्गर, स पु (स) दे 'गगरा' २ ३ वाद्य मत्स्य, भेद।
गर्गरी, स स्त्री (स) मथनी, मथनपात्रम् २ दे 'गगरी'।
गर्ज, स स्त्री, दे 'गरज'।
गर्जं, स स्त्री, दे 'गरज'।
गर्जन, स पु (स न) दे 'गरज'।
गर्त्त, स पु (स) दे 'गड्ढा' २ दे 'दरार' ३ जलाशय ४ नरकविशेष।
गर्द, स स्त्री (फा) धूली लि (स्त्री), रेणु, पांसु, पांशु, क्षोद, रजस् (न)।
गर्दन, स स्त्री (फा) ग्रीवा, कंधरा, शिरोधरा शिरोधि, कृकि (पु) २ पात्रकंठ।
—की अकड़न, स स्त्री, ग्रीवावात।
—तोड़ बुखार, स पु शीर्षावरणप्रदाह, मस्तिष्कवशेरुक ज्वर।
—हिलाना, क्रि स, शिर मस्तक चल्-कम्प् (प्रे)।
—उठाना, मु, अभिद्रुह् (दि प अ, द्वितीया के साथ) व्युत्था (भ्वा आ अ) द्रुह् (चतुर्थी के साथ)।
—उड़ाना या काटना, मु, शिर कृत् (तु प से) छिद् (रु प अ)।
—झुकाना, मु, वश या इ (दोनों अ प अ)।
—पर सवार होना, मु, दे 'विवश करना'।
—मरोड़ना, मु गलद्दृहतयति (ना धा), गलनिष्पीडनेन व्यापद् (प्रे) गल निष्पीड (चु)।
—मारना, मु, दे 'उड़ाना या काटना'।
—में हाथ देना या डालना, मु, अर्धचन्द्र दत्त्वा निष्क्रम् (प्र)।
गर्दभ, स पु (स) दे 'गदहा' (स न) श्वेतकुमुदम्।
गर्दभी, स स्त्री (स) दे 'गदही'।
गर्दा, स पु, दे 'गर्द'।
गर्दिश, स स्त्री (फा) परिवर्तन, घूर्णन, परिभ्रमण, चक्र २ आपद् विपद् (स्त्री)।
—करना, क्रि अ परिवृत् (भ्वा आ से), दे 'घूमना'।
गर्भ, स पु (स) भ्रूण, पिंड कलल, उदरस्थशिशु (पु) २ दे 'गर्भाशय' ३ अभ्यन्तर, अंतर्भाग।
—गिरना, क्रि अ, गर्भ स्रु (भ्वा प अ) पत् (भ्वा प से)।
—रहना या होना, क्रि स, गर्भ धृ (चु) आधा (जु उ अ) गर्भवती अंतर्वत्नी भू।
—पात,-स्राव, स पु (स) गर्भ भ्रूण,-स्रुति (स्त्री) -पतनम्।
—दास, सं पु (स) दासी चेटी भुजिष्या पुत्र।
गर्भवती, स स्त्री (सं), गर्भिणी, सगर्भा, ससत्त्वा।
गर्भस्थ, वि (स) गर्भाशयस्थ, उदरस्थ।
गर्भांक, स पु (स) अकस्थात् (सा), दृश्यम्।
गर्भागार, स पु (स न) गर्भ,-आशय कोष २ प्रसूतिगृहम् ३ गर्भगृहम्, ४ शयनागारम्।
गर्भाधान, स पु (स न) सस्कारभेद, निषेकसंस्कार २ सेर, निषेक ३ गर्भधारणम्।
गर्भाशय, स पु (स) गर्भकोश प, योनि (पु स्त्री)।
गर्भिणी, स स्त्री (स) गर्भवती, अंतर्वत्नी, सगर्भा, ससत्त्वा, धृत-रूढ गृहीत,-गर्भा।
गर्भित, वि (स) सगर्भ, गर्भयुक्त २ पूर्ण, पूरित, व्याप्त।

गर्मे, दे 'गरम'।
गर्माहट, स स्त्री, दे 'गरमी'।
गर्व, म पु (स) (उचित) अभिमान २ (अनुचित) अहंकार, दर्प, मद, माद, आगेप, अह, मान औद्धत्य, अवलेप, उत्सेक, स्मय।
—करना, क्रि अ गर्व (भ्वा प से), प्रगल्भ (भ्वा आ से), दृप (दि प वे)। २ अभिमन (दि आ अ)।
गर्वित, वि (स) (उचित) अभिमानिन् २ (अनुचित) दृप्त सदर्प, मार्व, अवलिप्त, उत्सिक्त, उद्धत, उत्सेकिन्, साटोप, साहकार।
गर्वी, वि (स गर्विन्) } दे
गर्वीला, वि (स गर्व >) } 'गर्वित'।
गर्हणीय, वि (स) गर्ह्य निंद्य अधम।
गर्हा, स स्त्री (स) निंदा, गर्हण, आक्षेप, निर्भर्त्सना।
गर्हित, वि (स) निंदित, आक्षिप्त, उपालब्ध।
गर्ह्य, वि (स) दे 'गर्हणीय'।
गल, स स (स) कठ, कृकः, निगरण २ दे 'ग्रीवा' ३ ४ मत्स्य वाद्य,-भेद।
—गड, स पु (स) कंठपिंड,-श्वयथु-शोथ। २ गडु (पु)।
—बाही, स स्त्री (स गल + हिं बाह) आलिंगन, परिरभ, परिष्वग।
—माल, स स्त्री (स) माला, माल्य, रेखर, हार, स्रज् (स्त्री)।
—शुडी, स स्त्री (स) गलशुडिका, घटिका, गलरोगभेद।
गलतकिया, स पु (स गल + फ़ा) गण्डोपधान, कपोलोपबर्ह।
गलफड़ा, स पु (स गल + हिं फटना) जलजन्तूना श्वासेंद्रियम्।
गलफूला, वि (स गल + हिं फूलना) स्थूलास्य, पीनवदन।
गलमुच्छें, स स्त्री [स गल्लश्मश्रूणि (न बहु)] गल्ललोमानि (न बहु)।
गलगल, स स्त्री (देश) बृहद्-जबी(री)र अम्लफलम्। २, ३ पक्षि-चूर्णलेप,-भेद।
गलत, वि (अ) अशुद्ध, भ्रांत, सदोष, वितथ। २ असत्य, अनृत, मिथ्या।
—फहमी, स स्त्री (अ + फ़ा) भ्रम, भ्रांति (स्त्री), मिथ्याबोध।
गलतस, स पु (स गलितवश) सन्तान अपत्य-कुल-रहित, निस्सन्तान, निरपत्य।
गलतां, वि (फ़ा) वि,आकुल, व्यग्र, उद्विग्न।
गलती, स स्त्री (अ) स्खलित, दोष, प्रमाद, अपराध २ भ्रम, भ्रांति (स्त्री), व्या,मोह।
—करना, क्रि अ, अपराध् (दि स्वा प अ), विभ्रम् (भ्वा दि प से) स्खल् (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से)।
गलतुलआम, स पु (अ) अशुद्धोऽपि प्रचलित प्रयोग (व्या)।
गलना, क्रि अ (स गलन) वि, द्रु (भ्वा प अ), विली (क प अ, दि आ अ) गल क्षर (भ्वा प से) द्रवी आर्द्री भू। २ पच (कर्म), सिध (दि प अ) ३ पूतीभू, विगल, ४ परिक्षि परिहा अपचि (कर्म)। स पु, गलन विद्रव -वण, विलयन, क्षरण पचन परिक्षय इ।
गलने योग्य, गलितव्य, विद्रवणीय पचनीय इ।
गलने वाला, वि,द्राव्य, विलेय, विलाप्य द्रवाई।
गला हुआ, वि, वि द्रुत, गलित, द्रवीभूत इ।
गलबा, स पु (अ) वि,जय २ प्राबल्यम्, प्रभुत्वम्।
गला, स पु (स गल) कठ, कृक, निगरण २ ग्रीवा, कधरा, शिरोधि, कधि।
—की सोजिश, स स्त्री कण्ठ, प्रदाह-शोथ।
—काटना, मु, कधरा छिद् (तु प से) २ अतीव पीड् (चु)।
—घोंटना, मु, गल निष्पीड् (चु), गलहस्तयति (ना धा)।
दबाना, मु, कठ निपीड्य अथवा श्वास निरुध्य मृ (प्रे)।
—बैठना, मु, कठ रूक्ष अथवा कर्कश भू।
गले पड़ना, मु अपरिहार्य (वि) भू।
गले लगाना, मु, आलिंग (भ्वा प से), आश्लिष् (दि प अ), परिष्वज् (भ्वा आ अ), उपगुह् (भ्वा उ वे)।
गलाऊ, वि (हिं गलना) वि,द्राव्य, विलाप्य।

गलाना, क्रि स, 'गलना' के प्रे रूप।
गलाव, स पु (हिं गलना) दे 'गलना'।
गलावट, स पु स पु २ द्रावक द्रावण।
गलित, वि (स) द्रवीभूत, वि द्रुत, २ जीर्ण, शीर्ण ३ नष्ट, भ्रष्ट, ४ परि, पक्व पुष्ट ५ पतित, च्युत।
—कुष्ठ स पु (स न) गल कुष्ठम्।
—यौवना, स स्त्री (स) क्षीण विगत यौवना।
गली, स स्त्री (स गल >) वीथी थि (स्त्री), सकट सबाध, पथ मार्ग।
—कूचा, स पु, (हिं + फा) सकीर्णमार्ग।
—गली मारे मारे फिरना, मु व्यर्थमितस्तत परिभ्रम् (भ्वा दि प से) २ आजीविका न्वेषणाय सर्वत्र पर्यट् (भ्वा प से) ३ सर्वत्र उपलभ् (कर्म)।
गलीचा, स पु (फा ग़ालीचा, तु कालीन से) तौरुष्क, कुथ -आस्तरणम्।
ग़लीज, वि (अ) मलिन, आविल २ अपवित्र।
गल्प, स स्त्री (स कल्प >) आख्यायिका, उपाख्यानं, उपकथा।
गल्ल, स पु (स) कपोल, गड।
गल्ला¹, स पु (फा) व्रज, निवह, यूथ, वृन्द, पालवम्। (यह शब्द पशुओं के लिए ही प्रयुक्त होता है)।
—बान, स पु (फा) अवि, मेष, पाल गोपाल।
गल्ला², स पु (अ) अन्न, धान्य २ शस्यम्।
—फरोश, स पु (अ + फा) अन्न धान्य, विक्रेतृ (पु)।
गवय, स पु (स) गवाल्क, वलभद्र, महागव, वनगौ (पुं)।
गवयी, स स्त्री (स) वनधेनु (स्त्री) भिल्लगवी।
गवर्नमेंट, स स्त्री (अ) शासन, पद्धति (स्त्री) प्रणाली २ शासक, मण्डल-वर्ग।
गवर्नर, स पुं (अ) भोगपति (पुं) प्रान्ता ध्यक्ष, राज्यपाल २ शासक, शासितृ।
—जनरल, स पुं (अं) राष्ट्राध्यक्ष।
गवर्नरी, स स्त्री (अ गवर्नर >) प्रान्ताध्यक्षता, राज्यपालत्वम्। वि राज्यपाल प्रान्ताध्यक्ष, सम्बन्धिन्।
गवाक्ष, स पुं (स) वातायन, जालकम्।
गवाना, क्रि स, 'गाना' के प्रे रूप।
गवारा, वि (फा) अनुकूल, अभीष्ट।
—करना, क्रि स, सह् (भ्वा आ से)।
गवाह, स पुं (फा) साक्षिन् (पु)।
चश्मदीद—, स पु (फा) प्रत्यक्ष साक्षिन् दर्शन दर्शिन्, देश्य। प्रत्यक्षिन्।
गवाही, स स्त्री (फा गवाह) साक्ष्य, प्रमाण, प्रामाण्य, निदर्शनम्।
—देना, क्रि स, साक्षी भू, साक्ष्य दा २ क्रियापाद (धर्म.)।
गवीश, स पु (स) गो, पति स्वामिन्। २ गोप, पाल पालक, आभीर ३ वृषभ वृषन्।
गवेषणा, स स्त्री (स) दे 'खोज'।
गवैया, स पु (पू हिं गावना) गायक, गायन, गातृ (पु), गायक, गेष्णु गय।
गव्य, वि (स) गोसबन्धिन् (दुग्धगोमयादि)।
गव्यूति, स स्त्री (स) क्रोशयुगल, द्विसहस्र धनुस (न)।
गश, स पु (अ ग़शी) मूर्छा, मोह।
—आना, क्रि अ, मूर्छ् (भ्वा प से) मुह् (दि प वे) प्र विन्ल्या।
ग़शी, स स्त्री (अ) दे 'गश'।
गश्त, स पु (फा) भ्रमण, पर्यटनम्।
—लगाना, क्रि अ, रक्षायै परिभ्रम् (भ्वा दि प से)।
गश्ती, वि (फा) पर्यटन-परिभ्रमण-शील। स स्त्री, कुलटा व्यभिचारिणी, स्वैरिणी।
गहगहाना, क्रि अ (अनु गहगह) प्रसद् (भ्वा प अ), प्रहृष् (दि प से) २ दे 'लहलहाना'।
गहन¹, वि (स) ग (ग) भीर, अगाध, दे 'गहरा २ दुर्गम, दुर्भेद्य ३ दुर्बोध, कठिन ४ घन, निवि(वि)ड। स पुं (स न) गांभीर्य २ दुर्गमस्थान ३ वन ४ गह्वर ५ दुःख ६ जल्म्।
गहन², स पुं (स ग्रहण) आदान २ उपराग, ग्रहपीडन ३ बन्धक ४ विपत्ति (स्त्री) ५ न्यास, बंधक।
गहना, स पुं (स ग्रहणं >) अलकार, वि आ, भूषण, आभरणं, मंडनम् २ न्यास, निक्षेप। क्रि स, दे 'पकड़ना'।

गहरा, वि (स गभीर) गभीर, निम्न, अगाध, अतलस्पर्श २ अत्यधिक, घोर (नीदादि) ३ दृढ कठिन ४ गाढ, धन।

—असामी, स पु (हिं+अ) सधन, धनिन् (पु)।

गहरे लोग स पु (बहु) विचक्षणा विदग्धा

गहराई स स्त्री। (हिं गहरा) गाभीर्य,
गहराव स पु निम्नत्व, अगाधता।

गहवारा, स पु (फा) (शिशु) प्रेखा-दोला।

गह्वर, स पु (स न) गुहा, (अकृत्रिम) बिल देवस्थान (कृत्रिम) दरी कदर रा तमपूर्ण गूढस्थान २ छिद्र विवर ४ दुर्भेद्य विषम-स्थान ५ गुल्म स क्षुप ६ वन ७ दम ८ रोदन ९ अनेकार्थ वाक्य १० जटिलविषय ११ जल। (स पु) लतागृह निकुञ्ज वि दुर्गम २ गुप्त।

गाग, वि (स) गगा, सम्बन्धिन्-विषयक। स पु भीष्म २ कार्तिकेय ३ सुवर्ण, हिरण्यम् ४ धत्तर, शिवप्रिय।

गागेय, स पु (स) भीष्म।

गाँजा, गाँझा, स पु (सं गजा) मादिनी, मोहिनी हर्षिणी।

गाठ, स स्त्री (स ग्रथि पु) ग्रथिका बध धन गड २ सधि (पु) पवन् (न), आस्थ ग्रथि-सधि ३ पोटलिका, भार ४ आर्द्रक खड-ड ५ विघ्न ६ भ्रांति (स्त्री) ७ कूपरभूषणभेद।

—खोलना, क्रि स ग्रथि-बध उन्मुच (प्र) मोभ (चु), उद्ग्रथ (क्र प से)। (मु) धन कोष मक्षिका शिथिलयति (ना धा) द्वेष दूरी कृ।

—देना, बाँधना या लगाना, क्रि स, ग्रथि दा अथवा बध (क्र प अ)। (मु) स्मृ (भ्वा प अ)।

—पड़ना, क्रि अ, संश्लिष (दि प अ) ग्रथ (कम ग्रथ्यते)। (मु) विद्वेष उत्पद् (कर्म)।

—कट, स पु, ग्रथिछेदक, चौर।

—गोभी, स स्त्री, दे 'गोभी' के नीचे।

—दार, वि ग्रथिल, ग्रथि पर्व मय (-मयी स्त्री)।

—काटना, मु, ग्रथि छित्वा अपहृ (भ्वा प अ), ग्रथि छिद् (रु प अ)।

—का पूरा, मु, सधन, धनाढ्य।

—जोड़ना, मु, वैवाहिक-औद्वाहिक ग्रथि बध् (क्र प अ)।

—से, मु, स्वीय स्वकीय, धनात्।

गाँठना, क्रि स (स ग्रथन) ग्रथ (क्र प से), ग्रथि बध (क्र प अ) दा २ सयुज (रु उ अ चु), सधा समाधा (जु उ अ) सश्लिष (प्र) ३ ससिव (दि प से) ४ अनुकूल यात (ना धा) स्वपक्षपातिन विधा (जु उ अ) ५ आत्मसात् कृ, वशनी (भ्वा उ अ)।

गाडीव, स पु (स पु न) गाडि (डी) व व, अर्जुनधनुस् (न)।

गाडीवी, स पु (स विन् पु) अर्जुन, गाडीवधर २ अर्जुनवृक्ष।

गाधर्व, वि (स) गधर्व, विषयक-सबधिन् जातीय। स पु (स न) गान। (स पु) दे गधर्व।

—वेद, स पु (स) सामवेदस्योपवेद २ सगीतम्।

गाधार, स पु (स) भारतवर्षस्योत्तरदिशि देशविशेष २ तृतीयस्वर (सगीत)। (स न) गधरस।

गाधारि, सं पु (स) दुर्योधनमातुल शकुनि, सौबलक।

गाधारी, स स्त्री (स) दुर्योधनजननी।

गाधारेय, स पु (स) दुर्योधन, धृतराष्ट्र ज्येष्ठपुत्र।

गाधी, स पु (स गाधिन्) गधवणिज गध विक्रयिन्-उपजाविन्-वणिज-आजीव २ गुजरप्रान्ते वैश्योपजातिविशेष ३ महात्मा गाधिन्।

गाभीर्य, स पु (स न) दे 'गभीरता'।

गाँव, स पु (स ग्राम) नि स, वसथ, हट्टादि शून्यवसति (स्त्री)।

गास, स स्त्री (हि गाँसना) नियत्रण, बधन, प्रतिरोध २ द्वेष, मनोमालिन्य ३ रहस्य, गुप्तवार्ता ४ ग्रन्थि (पु) ५ शस्त्राग्र ६ अवेक्षा, पर्यवेक्षणम्।

गाँसना, क्रि स (स ग्रन्थन ?) व्यध (दि प अ), निर्भिद् (रु प अ) २ स नियम् (भ्वा प अ), दम्, (प्रे दमयति) ३ वशीकृ ४ अतिशयेन-अत्यधिक पूर् (प्रे)।

गाइड, स पु (अ) पथ मार्ग-अज्ञ, प्रदर्शक

प्रदर्शिन् (पु)-उपदेशक २ नायक, नेतृ (पु) ३ निर्देशकग्रन्थ ।

गाउन, स पु (अ) कञ्चुक ।

गागर, स स्त्री (सं गर्गर>) दे 'गगरा'।

गागरी, स स्त्री (स गर्गरी>) दे गगरी ।

गाज, स स्त्री (स गर्ज) दे 'गरज' २ वज्रपातध्वनि (पु), वज्रनिर्घोष ३ वज्र-ज्र, अशनि (पु स्त्री), ह्रादिनी ।

—मारा, वि, वज्राहत, अशनिताडित ।

गाजर, स स्त्री (स न) गञ्जर, पीतकन्द, पीतमूलक सुपीत, सुमूलकम् ।

—मूली, स स्त्री, गाजरमूलक, तुच्छवस्तु (न)।

गाजी, स पु (अ) धर्मवीर (इस्लाम), वीर, योध ।

गाड़ना, क्रि स (हिं गाड=गड्ढा) निखन् (भ्वा प से), (श्मशाने=पृथिव्या) निधा (जु उ अ), निगुह् (भ्वा उ वे) २ रुह् (प्रे रोपयति)-स्था (प्र स्थापयति) निविश् (प्रे) ३ गुप् (भ्वा प वे गोपायति), तिरोधा-अन्तर्धा (जु उ अ)।

स पु, निखनन, श्मशाने स्थापन, रोपण, निवेशन गोपनम् ।

गॉड, स पु (अ) ईश्वर, परमात्मन् २ देव, सुर ।

गाडर, स स्त्री (स गड्डरी) मेषी, एडका ।

गाड़ी, स स्त्री (म गान्त्री=रथ) शकट-ट, शकटिका, यान, वाहन, प्रवहण, रथ २ वाष्प शकटी, लौहाध्वगत्री ।

—जोतना, क्रि स, शकटे अश्वं वृषभं युज् (प्रे)।

—वान, स पु (हिं गाड़ी) सारथि (पु), सूत, यन्तृ (पु), शाकटिक ।

गाढ़, वि (स) अधिक, प्रचुर, बहु २ दृढ, प्रबल ३ गम्भीर, अगाध ४ दुर्गम, विकट।

स पुं, (स न) आपत्ति (स्त्री)।

गाढ़ा, वि (स गाढ) कठिन, स्थूल, सघात वत्, मु, महत २ घन ३ (मित्रादि) अभिन्न हृदय, दृढ ४ सबल ५ कठिन ।

स पु, स्थूलवस्त्रभेद ।

गाढ़ी कमाई, मु, घोरपरिश्रमोपार्जित धनम् ।

गाढ़े दिन मु, दुर्दिनानि, कुसमय ।

गाणपत्य, स पु (स) गणपति-गणेश,-पूजक भक्त २ गणेश पूजा भक्ति (स्त्री) ३ गणना यकत्वम् ।

गाणेश, स पु (सं) गणेश, भक्त पूजक ।

गात, स पु, दे 'गात्र'।

गातव्य, वि (सं) गेय, गानार्ह ।

गाता, स पु (स-तृ) गायक, गायन, गष्णु ।

गाती, स स्त्री (स गात्र>) गात्रीय, गल वस्त्रभेद ।

गात्र, स पु (स न), तनु नू (स्त्री), देह, काय, दे 'शरीर' २ अग, अवयव।

गाथक, स पु (स) गातृ (पुं), गायक २ पुराणकथक । (गाथिका स्त्री)।

गाथा, स स्त्री (स) स्तुति-नुति (स्त्री) २ श्लोक, पद्य ३ पालिमिश्रितसस्कृतभाषा ४ गीत ५ कथा, वृत्तान्त ६ पारसीकधर्म ग्रन्थभेद ।

गाद, स स्त्री (सं गाध>) दे 'तलछट'।

गाध, वि (स) सुखोत्तरणीय, गाम्भीर्यरहित, उत्तान २ न्यून, अल्प ।

स पु (स न) स्थान, २ गाम्भीर्यशून्यो जलप्रदेश ३ लिप्सा, लोभ ४ कूल ५ तल, अधोभाग ।

गान, स पु (स न) गीत, गीतिका, गेय २ सस्वर, पठन-उच्चारण, कीर्तनम् ।

—विद्या, स स्त्री (स) सगीत, सगीत-वाद्य, शास्त्र विद्या ।

गाना, क्रि अ (स गान) गै (भ्वा प अ), सस्वर उच्चर् (प्रे), सुमधुर आलप् (भ्वा प से) २ (पक्षियों का) कूज् (भ्वा प से) ३ वर्ण् (चु) ४ स्तु (अ प अ), नु (अ प से)।

स पुं, गीत, गीति-तिका (स्त्री) गान २ सस्वर-आलपन-उच्चारणम् ।

गानेवाला स पु, गष्णु-णु, गायक, गायन, गातृ (पुं)। (-वाली=गायिका गात्री, गायनी)।

—बजाना, स पु, गानवादन, सगीत, सगीत विद्या, शास्त्रम् ।

गाफिल, वि (अ) अनवधान, अनवहित, प्रमादिन्, उपेक्षक ।

गाभ, स स्त्री (सं गर्भ) पशुगर्भ २ अङ्कुर, प्ररोह ।
गाभा, स पु (स गर्भ >) किस(श)लय य, पल्लव -व, प्ररोह २ हास्यम् ।
गाभिन, स स्त्री (स गर्भिणी) गर्भवती, (केवल पशुओं के लिए) ।
गामिनी, वि स्त्री (स) चरित्री, गन्त्री ।
गामी, वि (स गामिन्) गन्तृ यातृ ।
गाय, स स्त्री (स गौ स्त्री) धेनु (स्त्री), मातृ (स्त्री), शृङ्गिणी, अघ्न्या-दोग्ध्री, भद्रा, अनडुहा, अनडवाही, कल्याणी, पावनी, गौरी, सुरभि (स्त्री) २, सरल ऋजु मनुष्य ।
गायक, स पु (स) दे 'गाने वाला' ।
गायत्री, स स्त्री (स) वैदिकछंदोभेद २ वैदिक मंत्रविशेष (तत्सवितुर्वरेण्यभर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न प्रचोदयात् । ऋग ३।६२।१०) सावित्री ३ गंगा ४ दुर्गा ।
गायन, स पु (स) दे 'गानेवाला' २ गान, सम्भ्राल्पन २ गीत गीतिका ।
गायब, वि (अ) लुप्त, अन्तर् तिरो, हित, २ अदृष्ट, भाविन्, भविष्यत् ।
—करना, क्रि स, चुर (चु), तिरो धा (जु उ अ) ।
—होना, क्रि अ, तिरोभू, अदृश्य (वि) + भू, अन्तर तिरो, धा (कर्म) ।
गायिका, स स्त्री (स) गायनी, गात्री ।
गार, स पु (अ) गुहा, कन्दरा २ विवरम् ।
गारत, वि (अ) नष्ट, ध्वस्त ।
गारद, स स्त्री (अ गार्ड) रक्षक रक्षि-,वर्ग गण २ अंगरक्षक ३ रक्षा, गुप्ति (स्त्री) ।
गारना, क्रि स, (स गालन >) दे 'निचोड़ना' ।
गारा, स पु (हिं गारना) कर्दम, पङ्क, उत्त-उन्न, मृद् (स्त्री)-मृत्तिका, लेप ।
गारुड़, स पु (स न) विषमंत्र २ सुवर्ण ३ गरुडपुराणम् ।
गारुड़ी, स पु (स ङिन्) विषवैद्य, गारुडिक जाङ्गुलिक २ मोहिन् (पु), कुहककार ३ प्रतिविषविक्रेतृ (पु) ।
गार्गी, स स्त्री (स) काचित् ब्रह्मवादिनी विदुषी नारी (उपनिषद्) ।
गार्ड, स पु (अ) रक्षक, रक्षिन् (पु) २ वाष्पशकटया रक्षक ।
गार्डी—, स पु (अ) शरीर अंग,-रक्षक ।
गार्डेन, स पु (अ) उद्यान, आराम ।
—पार्टी, स स्त्री (अ) उद्यान-आराम, भोज ।
गार्हपत्य, स पु (स न) गृहपति,पद प्रतिष्ठा ।
—अग्नि, स पु (सं) यज्ञाग्निभेद ।
गार्हमेध, स पु (स) पंचमहायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, भूतयज्ञ) ।
गार्हस्थ्य, स पु (स न) गृहस्थाश्रम २ गृह स्थकृत्यानि ३ पञ्चमहायज्ञा ।
गाल, स पु (स गल्ल) कपोल गंड २ मुखम् ।
—पर गाल चढ़ना, मु, पनीभू, आप्यै (भ्वा आ से) ।
—पिचकना, मु कृशीभू, विशुष्कि (कर्म) ।
—फुलाना, मु, कुप (दि प से), क्रुध् (दि प अ) ।
—बजाना या मारना, मु, आत्मानं श्लाघ् विकत्थ (भ्वा आ से) ।
गालव, स पु (स) गन्धर्वमुनिपुत्र (विश्वामित्रशिष्यविशेष) २ लोध, लोध्र ३ पाणिनिपूर्ववर्ती वैयाकरणविशेष ।
गाला, स पु (हिं गाल) धूतकर्पासपिंड ह, २ हिमतूलम्, हिम-तुषार,-पिण्डम् ३ चक्रीक्षिप्त मुष्टिमात्रमन्नम् ४ ग्रास, कवल ।
गालिबन, क्रि वि (अ) सम्भवत, प्राय, प्रायेण, प्रायशः, स्यात्, किल, नाम (सब अव्य) ।
गाली, स स्त्री (स गालि स्त्री) आक्रोश, अपवाद, अपभाषण, अधिक्षेप, परुषोक्ति (स्त्री) ।
—खाना, क्रि, अ, आ-अधि क्षिप (कर्म), अप भाष अभिशप्-अपवद् (कर्म) ।
—देना, क्रि स, अधि आ क्षिप (तु प अ), अभिशप् (भ्वा उ अ), अभिशप-अपवद् (भ्वा प से) ।
—गलौज, स स्त्री, परस्पर, अधिक्षेप -अपभाषण गालिदानम् ।
गालीचा, स पु, दे 'गलीचा' ।
गाव, सं पु (गौ, पु स्त्री, फा गाव) दे 'गाय' २ दे 'बैल' ।

—कुशी, स स्त्री (फा) गो, धात वध हत्या।
—घप, स स्त्री, छलेन अपहार उपयोग, ग्रसनम्।
—घप करना, क्रि स, कपटेन आ ममात् कृ।
—ज़बान, स स्त्री (फा) गोजिह्वा, अध पुष्पी, खरपत्री।
—तकिया, स पु (फा) महोपबर्ह, बृहद् पधानम्।
—दी, स पु (फा +सं धी >) जड, मूर्ख।
—दुम, वि (फा) गोपुच्छाकार, शुण्डाकृति। सूच्याकार, शराकृति।

गाहक, स पु (स ग्राहक) क्रेतृ, क्रयिन् २ गुणग्रहीतृ (पु), गुणज्ञ।

गाहकी, स स्त्री (हिं गाहक) ग्राहकत्व, क्रेतृत्व २ गुणज्ञता।

गाहन, स पु (स न) वि-अव,-गाहनम्, निमज्जन, स्नान २ विलोडनम्।

गाहना, क्रि स (स गाहन) अव वि गाह् (भ्वा आ से), निमस्ज् (तु प अ) २ मथ्, मथ् (भ्वा प से), विलोड् (प्रे) ३ निस्तुषीकृ, पू (क्र उ से) ४ पादाभ्यां पीड् (चु)-मृद् (क्र प से) ४ दे 'खोजना'। स पु (स न) अव वि-गाहन विलोडन, मदन, निस्तुषीकरण अन्वेषणम्।

गिंडुरी, स स्त्री, दे 'इडुरी'।

गिचपिच, गिचिरपिचिर, वि (अनु) अवाच्य, अव्यक्ताक्षर २ अस्पष्ट, अविशद ३ अक्रम, अस्तव्यस्त।

गिज़ा, स स्त्री (अ) खाद्य, भक्ष्य, अन्न, भोजनम्।

गिटपिट, स स्त्री (अनु) अपार्थक निरर्थक व्यर्थ, वचन-शब्द।
—करना, क्रि स, आंग्लभाषायां वद् (भ्वा प से)।

गिड़गिड़ाना, क्रि अ (अनु) अतिनम्रतया अभि प्र अर्थ् (चु आ से), कृपणतया क्षुद्र तया याच् (भ्वा उ से)।

गिड़गिड़ाहट, स स्त्री (हिं गिड़गिड़ाना) अतिनम्रप्रार्थना, दीनवत् याचनम्।

गिद्ध, स पु (स गृध्र) दूरदर्शन, वज्रतुड, दाक्षाय्य।

गिनती, स स्त्री (हिं गिनना) गणन, सख्यान २ सख्या, गणना ३ अक्षमाला।
—के, मु, कतिचित्, स्तोका।

गिनना, क्रि स (स गणन) गण्-सकल् (चु), परि, सख्या (अ प अ) २ मन् (दि आ अ), गण। स पु, गणन सख्यान, सकलनम्।

गिननेयोग्य, वि, गणनीय, सख्येय।

गिनने वाला, वि, गणक, सख्यातृ।

गिना हुआ, वि, गणित, सख्यात।

दिन—, मु, यथाकथंचित् काल या (प्रे याप यति)।

गिनवाना, गिनाना, | क्रि प्रे, व 'गिनना' के धातुओं के प्रे रूप।

गिनी, स स्त्री (अ) आंग्लदेशीया स्वर्णमुद्रा, गिनी।

गिरगिट, स पु (देश अथवा स गल गति >?) सरट, कृकल (कु) लास, स, प्रतिसूर्य यक।
—की तरह रग बदलना, मु, सत्वर स्व-सिद्धांताद् परिवृत् (प्र)।

गिरजा, स पु (पुर्त इग्रिजिया) खिस्टधर्म मदिरम्।

गिरना, क्रि अ (स गलन) नि अव पत् (भ्वा प से) स्खल्-गल् (भ्वा प से), स्रस् (भ्वा आ से), च्यु (भ्वा आ अ) २ ह्रि सृ (कर्म), ह्रस (भ्वा प से) क्षय लय, इ या (अ प अ) ३ अधिकाराद् अपकृष् (कर्म), अवरुह् (भ्वा प अ), ल्यूभू। ४ युद्धे हन् (कर्म) ५ अकस्मात् यदृच्छया घट् (भ्वा आ से) अथवा आ-स पद्। स पु, पतन, ध्वसन, गलन, अवरोहण, पद, भ्रश च्युति (स्त्री)।
—वाला, वि, पतयालु, पतन शील,-उन्मुख, पातिन्, पातुक, पिपतिषु।

गिरा हुआ, वि, पतित, च्युत, स्रस्त, गलित।

गिरते पड़ते, मु, यथाकथंचित्, येन केन प्रकारेण।

गिरफ़्त, स स्त्री (फा) दे 'पकड़'।

गिरफ़्तार, वि (फा) गृहीत, धृत, बद्ध, निरुद्ध।

—करना, क्रि सं, निरुध् (रु उ अ), आसिध (भ्वा प वे), ग्रह् (क्र् प से)।
—होना, क्रि अ निग्रह्-धृ वप निरुध् (कर्म)।
गिरफ्तारी, सं स्त्री (फा) आसेध, बधन, निग्रहण, धरण, निरोध ।
गिरमिट, सं पु (अ एग्रीमेंट), दे 'इकरार नामा'।
गिरमिटिया, स पु (अ एग्रिमेंट >) प्रतिज्ञा बद्ध अनुबद्ध, कर्मकर श्र मक ।
गिरवाना, क्रि प्रे, व 'गिरना' के प्रे रूप ।
गिरवी, वि (फा) आधी-न्यासी, कृत, निक्षिप्त, आहित ।
—रखना, क्रि स, न्यस (दि प से), निक्षिप (तु प अ), न्यासी आधी,-कृ ।
—दार, स पु (फा) आधि यास-ग्रधक, ग्राहिन् (पु)-ग्राहक ।
—रखने वाला, स पु, निक्षेप्तृ, आधातृ ।
गिरह, स स्त्री (फा) दे 'गाँठ' (१-३) २ दे 'जेब' ३ दे 'उल्टबाजी' ४ गजास्य मानस्य षोडशांश ।
—बाँधना, क्रि स, दे 'गाँठ देना'।
—कट, स पु, दे 'गाँठकट'।
—दार, वि, दे 'गाठदार'।
गिरा, स स्त्री (स) वाकशक्ति गिर वाच (स्त्री), वाणी २ सरस्वती, भारती, वाग्देवी ३ जिह्वा, रसना ४ वचन, उक्ति- (स्त्री)।
गिराना, क्रि स, व 'गिरना' के प्रे रूप ।
गिरानी, स स्त्री (फा) महार्घता, बहुमूल्यता २ दुर्भिक्ष, दुष्काल ३ गुरुत्व, भारवत्त्व ४ अजीर्णम् ।
गिरावट, स स्त्री (हिं गिरना) पतन, च्यवन अवरोहण, अवनति (स्त्री)।
गिरि, सं पु (स) पर्वत, शैल, अचल, नग २ परिव्राजकोपाधि (पु)।
—धर, सं पु (स) } श्रीकृष्णचन्द्र ।
—धारी, स पु (स धारिन्) } श्रीकृष्णचन्द्र ।
—नन्दिनी, स स्त्री (स) पार्वती, उमा।
—नाथ, सं पु (सं) शिव, शङ्कर ।
—राज, स पु (स) हिमालय २ गोवर्धन पर्वत ।
—सुता, स स्त्री (स) पार्वती।
गिरिजा, स स्त्री (स) पार्वती, गौरी।
गिरींद्र, स पु (सं) महापर्वत २ हिमालय ३ शिव ।
गिरी, स स्त्री (हिं गरी) अष्ठि (स्त्री), अष्ठीला, बीज, गर्भ-, फल-बीज, गर्भ-। (२-३) दे 'गिरि' तथा 'गिरी'।
गिरीश, स पु (स) शिव, महेश २ हिमालय ३ कैलाश ४ महापर्वत ।
गिरो, वि (फा) दे 'गिरवी'।
गिर्द, अव्य (फा) अभित, परित, सर्वत, समन्तत, समन्तात् (सब अव्य)।
इर्द—गिर्दागिर्द, } अव्य (फा) दे 'गिर्द'।
गिर्दावर, स पु (फा) पर्यटक, परिभ्रामक ।
गिल, स स्त्री (फा) मृत्ति (स्त्री), मृत्तिका, मृदा, मृद् (स्त्री) २ उत्त-उग्र,-मृत्ति ।
—कार, स पु, मृल्लेपक, लेपकर, सुधा जीविन् ।
—कारी, स स्त्री मृल्लेप ।
गिलगिला, वि (फा गिल = गारा) पङ्किल, स्थान ।
गिलट, सं पु (अ गिल्ड) सुवर्णरजन, हेम च्छद २ गिल्टाख्यो धातुविशेष ।
—करना, क्रि स, सुवर्णयति (ना धा), हेम, रसेन द्रवेण लिप (तु प अ)।
गिलटी, स स्त्री (स ग्रन्थि पु) मांस, पिंट, अधिमांस २ वि, स्फोट टक-, शोथ, श्वयथु, व्रण ण, मांसार्बुदम् ।
गिलना, क्रि स (स गिरण) दे 'निगलना'।
गिलबिलाना, क्रि स (अनु) अस्पष्ट गद्गद वाचा वद् (भ्वा प से)।
गिलहरी, स स्त्री (स गिरि (स्त्री) = चुहिया) काष्ठ-विडाल मार्जार, चरमपुच्छ, वृक्षशायिका ।
गिला ह्ला, स पु (फा) दे 'उपालम्भ'।
गिलाई, गिलाय, स स्त्री, दे 'गिलहरी'।
गिलाफ, स पु (अ) उपधान-उपबर्हं,-कोष श २ तूला-तूलिका, कोष ३ कोष, पुट, आवेष्टन ४ असिकोष ।
गिलास, स पु (अ ग्लास) कंस, कुन्तल, गल्वर्क, पानपात्रम् । २ बदराकार आङ्ग्ल फलम् ।
गिली-छी, स स्त्री, दे 'गुल्ली'।

गिलो, गिलोय, स स्त्री (फा) गुडू(ड)ची, अमृता, अमृत सोम ,वल्ली लता वहारी, रसायनी।

गिलोला, स पु (फा गुल्ला) मृद् ,-वटिका गुटि(लि)का।

गिलौरी, स स्त्री (देश) दे 'पान का बीडा'।

गिल्टी, स स्त्री दे 'गिल्टी'।

गिल्लड, स पु (स गल >) गलगण्ड , गण्डु ।

गीत, स पु (स न) गीति (स्त्री), गीतिका, गान, गेय २ यशस् (न), महिमन् (पु)।

—गाना, मु , प्रशस (भ्वा प से) स्तु (अ प अ)।

गीता, स स्त्री (स) श्रीमद्भगवद्गीता २ ज्ञान मयोपदेश ३ वृत्तान्त ४ छन्दोभेद ।

गीती, स स्त्री (स) } दे 'गीत' २ छन्दो
गीतिका, स स्त्री (स) } भेद ।

गीदड, स पु (स गृध्र—लालची अथवा फा गादी भीरु) क्रोष्टा, फेरु , शिवालु , गोमायु (पु) शृ(स)गाल , जम्बु(बू)क फेरव, मृगधूर्तक, भूरिमाय , पच(चु)क । वि, कातर, भीरु ।

—भभकी, स स्त्री , बिभीषिका ।

—बोलना, मु अपशकुन नभू २ निर्जनीभू ।

गीदडी, स स्त्री (हिं गीदड) शिवा, शृगाली, क्रोष्ट्री ।

गीध, स पु , दे 'गिद्ध'।

गीला, वि (फा गिल् = गारा) आर्द्र उत्त, उन्न क्लिन्न स्तिमित, जलसिक्त। (गीली (स्त्री) = आर्द्रा इ)।

—करना, कि स , उद् (रु प से), क्लिद् (प्र), आर्द्रीकृ ।

—पन, स पुं (हिं गीला) आर्द्रता, उन्नता।

गुचा, स पुं (अ) मुकुल -ल, कोरक -क, कलिका २ विहार , ३ सगीतम् ।

गुज, स स्त्री (स गुज) गुञ्जन, गुञ्जित, गुन्गुन्ध्वनि (पुं) झकार , कलरव । 'आनदध्वनि (पु) ३ दे 'गुजा' ४ दे 'गूज'।

गुंजन, स पुं (स न), दे 'गुज'(१)।

गुजना, कि अ (स गुञ्जनं), गुज , मधुर स्वन् , अस्पष्ट निस्वन् (सब भ्वा प से)।

गुजरना, कि अ., दे 'गुंजना' २ दे 'गरजना'।

गुजा, स स्त्री (स) रक्तिका, रक्ता, वन्या, २ गुजाबीज इ ।

गुजाइश, स स्त्री (फा) अवकाश , स्थान, धारण ग्रहण, शक्ति (स्त्री) सामर्थ्य २ लाभ ३ योग्यता।

गुजान, वि (फा) घन निविड, गाढ ।

गुजायमान, वि (स गुञ्ज् >) गुजत् , मधुर ध्वनत् (शत्रत)।

गुजार, स पु दे 'गुज'(१)।

गुजारना, कि अ , दे 'गुजना'।

गुडा, वि (स गुण्डक = मैला >) दुर्वृत्त, दुराचारिन् (पु), व्यसनिन् , लपट २ रूप गर्वित, छेक , वेषाभिमानिन् । (गुडी स्त्री)।

—पन, स पु, दुराचार , स्वैरिता, लपटता।

गुँथना, कि अ (हिं गूथना) ग्रन्थ् ,सदृभ्, सूत्र् ग्र (ग्रु) फ (कर्म) ।

गुँथवाना, कि प्रे, व गूथना' के प्रे रूप।

गुँधना, कि अ (स गुध् = क्रीडा करना >) (हस्ताभ्या) मृद् सपीड् (कर्म) २ दे 'गुँथना'।

गुँधवाना, कि प्रे , व 'गूधना' के प्रे रूप।

गुँधाई, गुँधावट, स स्त्री (हिं गूधना) १ कराभ्या मदन २ मर्दनवेतन ३ ग्रथन ४ ग्रथन, भृति (स्त्री)-भृत्या।

गुंफ, स पु (स) सकुलता, व्यतिकर', मकर २ गुच्छ च्छक ३ श्मश्रु (न), ओष्ठलोमन् (न) ४ कूर्चम् ।

गुफन, स पु (स न) सग्रथनम्, सदर्भणम्, ससूत्रणम् ।

गुफित, वि (स) सपरि आ श्लिष्ट, स-आ सक्त २ ग्रथित, सूत्रित ३ उत, उन्न।

गुवज, स पु दे 'गुम्द'।

गुबद, स पुं (फा) गोल, पटल छदि (स्त्री)।

गुइयाँ, स पुं तथा स्त्री (हिं गोहन साथ >)। १ सहचर , सगिन् (पु), सखि (पुं) २ सहचरी, सखी।

गुग्गुल, स (स) गुग्गुलु , कालनिर्यास, देवधूप , रक्षाधक ।

गुच्ची, स स्त्री (अनु) गुलीन्डकीडार्थ भूविवर, ग्लानि (स्त्री)।

गुच्छ गुच्छक, स पुं (स) स्तव , स्तवकः गुत्स सक २ मयूरपुच्छ ३ द्वात्रिंशद् यष्टिकहार ।

गुच्छा, स पु (स गुच्छ दे) २ आभूषण भेद ।

गुच्छेदार, वि (ह+फा) गुच्छिन् , सगुच्छ ।

गुच्छी, स स्त्री (सं गुच्छ >) अरिष्ट, माल्य , गुच्छफल २ व्यजनोपयुक्तपुष्पभेद, •गुच्छी ।

गुज़र, सं पु (फा) उप अभि-गम , उपसर्पण प्रवेश २ निर्गम , गति (स्त्री) ३ निर्वाह , जीवनम् ।

—जाना, मु , दे 'मरना' ।

गुज़रना, क्रि अ (फा गुजर) इ या (अ प अ), गम् २ अति-व्रजति, इ अति क्रम् (भ्वा प से) ३ भू, घट (भ्वा आ से) ४ मृ (तु आ अ), प्राणान् मुच् (तु उ अ) ।

गुजरात, स पु (स गुजरराष्ट्र) भारत वर्षस्य प्रान्तविशेष , गुर्जरप्रान्त ।

गुजराती, वि (हिं गुजरात) गुर्जरराष्ट्रीय, गुर्जरराष्ट्र, वासिन्-संबन्धिन् २ गुर्जरराष्ट्रीय भाषा ।

गुज़रान, स पु (फा गुजर) निर्वाह , कालक्षेप ।

गुजश्ता, वि (फा) व्यतीत, गत, अतिक्रान्त ।

गुज़ारना, क्रि स (हिं गुजरना) गम् या (प्र) ।

गुज़ारा, स पु (फा) निर्वाह , कालक्षेप २ जीवन, प्राणधारण ३ वृत्ति भृति (स्त्री) ४ तार्य, तरपण्यम् ।

गुज़ारिश, स स्त्री (फा) निवेदन, प्रार्थना ।

गुटकना, क्रि अ (अनु) कपोतवत् कूज (भ्वा प से) २ दे 'निगलना' ।

गुटका, स पु (सं गुटिका>) लघु-ग्रन्थ पुस्तकम् २ दे 'गुटिका' ।

गुटरगूँ, स स्त्री (अनु) कपोतकूजित, पारावतरुतम् ।

गुटिका, स स्त्री (स) गुलिका, वटिका, वटि (स्त्री) ।

गुट्ट, स पु (स गोष्ठ >) समूह , दलम् ।

गुट्ठा, स पु (देश) खर्व , वामन २ दे 'गोटी' ।

गुट्ठल, वि (हिं गुठली) स्थूलास्थि-युत वत् २ मदमति, जड ३ अष्ठीलाकार । स पु ग्रंथि (पु) २ मांसपिंड कम् ।

गुठली, सं स्त्री (स गुटिका>) अष्ठि (स्त्री), अष्ठीला, फलबीजम् ।

गुडंबा, स पु (स गुडाम्र) ।

गुड़, स पु (स) इक्षुसार , रसज , खडज , मधुर , मोदक , शिशुप्रिय , गुल , स्वादु ।

गुड़गुड़, स स्त्री (अनु) गुडगुड, शब्द ध्वनि (पु) धूमपानयन्त्रशब्द ।

गुड़गुड़ाना, क्रि अ (अनु) गुडगुडायते (ना धा) गुड़गुड, ध्वनि शब्द कृ ।

गुड़गुड़ी, स स्त्री (हिं गुडगुडाना) लघु धूमपानयन्त्रम् ।

गुड़च, स स्त्री (स गुडूची) दे 'गिलो' ।

गुड़धनिया, गुड़धानी, (स गुडधाना स्त्री बहु) ।

गुड़ाकू-खू, स पु (स गुड+तमाखू>) गुडतमाखु ।

गुड़ाकेश, स पु (स) शिव २ अर्जुन ।

गुड़िया, स स्त्री (स गुडिका) पुत्तलिका, पुत्रिका, कुरुटी, पाञ्चालिका ।

गुड़ियों का खेल, मु , सुकर कार्यम् ।

गुड़च, स स्त्री , दे 'गिलो' ।

गुडूची, स स्त्री (स) दे 'गिलो' ।

गुड्डा, स पु (स गुड) गुडक पुत्रक , पुत्तल ।

गुड्डी, स स्त्री (गुडिका>) विहासदृश पत्रक्रीडनक, चिल्लाभास २ दे 'गुड़िया' ।

गुण, स पु (स) धर्म , स्वभाव , विशेष २ सत्त्व, रजस (न), तमस् (न), गुण त्रयी ३ रूपरसगन्धस्पर्शादय द्रव्यधर्मा (वै) ४ चातुर्य, दक्षता ५ प्रभाव , फल ६ शील, सत्स्वभाव ७ लक्षण, विशेषता ८ 'त्रि' इति संख्या ९ सन्धिविग्रहयानासनसंश्रयद्वैधीभावा (राजनीति) १० प्रकृति (स्त्री) (छान्दोग्य) ११ 'अ, ए, ओ'-वर्णा (व्या) १२ सूत्र, रज्जु (स्त्री) १३ ज्या, मौर्वी १४ माधुर्यौज प्रसादा (काव्य) १५ आवृत्तिसूचक प्रत्यय (उ द्विगुण इ) ।

—कर, वि (स) हितकर, उपयोगिन् (गुण करी स्त्री) ।

—कारक, वि (स) हित, उपकर्तृ । (कारिका स्त्री) ।

—कारी, वि (स , रिन्) उपयुक्त, उपकारिन् (-कारिणी स्त्री)।

—ख्यात, वि, (स ख्यानी) बहुगुण,-उपेत अन्वित सपन्न ।

—गान, स पु (स न) स्तुति नुति (स्त्री) प्रशसा ।

—गौरी, स स्त्री (सं) पतिव्रता, सती, एकपत्नी २ सधवा, सभर्तृका ।

—ग्राहक, वि (स) गुण-वेदिन् , गुणग्राहिन् २ दे 'गुणज्ञ'।

—दायक, वि (स) दे 'गुणकर'।

—दोष, स पु (स) गुणावगुणौ हानि लाभौ (द्वि)।

—निधान, वि (स) गुण, राशि निधि

—सागर, वि (स) (पु)।

—हीन, वि (स) अगुण, निर्गुण, सामान्य, साधारण ।

गुणक, स पु (स) गुणकाक ।

गुणज्ञ, वि (स) गुण ग्राहिन् ग्राहक, मर्मज्ञ ।

गुणज्ञता, स स्त्री (स) गुणग्राहकत्व, मर्मज्ञता।

गुणन, स पु (स न) आघात , हनन, अभ्यास २ गणन, सख्यानम् ।

गुणमय, वि (स) } दे० 'गुणी'
गुणवत, वि (स वत्) } गुण, मयी वती स्त्री।
गुणवान, वि (स वत्)

गुणाक, स पु (स) गुण्य गुण्याक ।

गुणा, स पु (स गुण) (समासान्त में, उ दो गुणा द्विगुण इ)। दे 'गुणन'।

—करना, गुणयति (ना धा), आ नि , हन् (अ प अ अथवा प्रे घातयति), पूर् (चु)।

गुणातीत, वि (स) सत्त्वादिगुणप्रभावशून्य, निर्लिप्त, शुद्ध । स पु , ईश्वर ।

गुणानुवाद, स पु (स) प्रशसा, स्तुति (स्त्री)।

गुणित, वि (स) गुणीकृत, आहत, पूरित ।

गुणी, वि (स गुणिन्) गुणवत् , गुण, सपन्न उपेत-आढ्य-युक्त निधि सागर । २ दक्ष, कुशल ३ पुण्य, शील आत्मन् ।

गुणीभूत, वि (स) मुख्यार्थरहित २ गौणी भूत ।

—व्यग्य, स पुं (स न) अप्रधानव्यंग्यार्थ काव्यभेद ।

गुणेश्वर, सं पु (सं) परमेश्वर २ चित्रकूट पर्वत ।

गुण्य, स पु (स) गुण्याक , गुणांक ।

गुत्थमगुत्था, स पु (हिं गुथना) सश्लिष्टता, सकुलता २ बाहु बाहुबाहवि,-युद्ध, द्वद्वम् ।

गुत्थी, स स्त्री (हिं गुथना) दे 'उलझन'।

गुथना, क्रि अ, (स गुथ्-परिवेष्टन अथवा ग्रथ्) (वेणीरूपेण-) ग्रथ् (कर्म), वेणीकृ (कर्म) । २ गु(गुं)फ् सद्भ् (कर्म)-स ग्रथ (कर्म) ३ बाहुबाहवि युध (दि आ अ)।

गुथवाना, क्रि प्रे , व 'गुथना' के प्रे रूप ।

गुथ(थु)वाँ, वि (हिं गुथना >) (वेणी रूपेण) ग्रथित गुम्फित ।

गुद, स स्त्री (स न) अपान, पायु (पु) गुह्यम् ।

—अकुर,—कील, स पु (स) दे 'बवासीर'।

—ग्रह, स पु (स) दे 'कब्ज' ।

गुदगुदा, वि (हिं गूदा) मासल, मेदस्विन् २ मृदु, सुखस्पर्श, कोमल ।

गुदगुदाना, क्रि स (हिं गुदगुदा) कुत कुलयति कड्यति (ना धा), कडू यन् (प्रे), मनोविनोदाय क्षुभ् (प्रे)।

गुदगुदाहट, गुदगुदी, स स्त्री (हिं गुद गुदाना) कुतकुल कडूति (स्त्री)।

गुदडी, स स्त्री (हिं गूथना) कथा, स्यूतकर्पट , २ जीर्णशीर्ण वस्त्रम् ।

—में लाल, मु , चीरे रत्न (मु)।

—का लाल, मु , चीररत्न (मु)।

गुदा, स स्त्री दे 'गुद'।

गुदाज़ वि (फा) मृदु, कोमल, सुखस्पर्श।

—दिल, वि हृदयद्रावक, मार्मिक मर्म स्पर्शिन् ।

गुनगुना, वि (अनु) कोष्ण, कदुष्ण कवोष्ण २ नासिकावादिन् ।

गुनगुनाना, क्रि, अ (अनु) गुणगुणायते (ना धा) २ नासिकया वद् (भ्वा प से) ३ अस्फुट गै (भ्वा प अ) ४ अक्षनोवाद परिदेव् (चु आ से) ५ दे 'गुजना'।

गुन(ना)हगार, वि (फा) पापिन् , पातकिन २ अपराधिन् , दोषिन् ।

गुना, स पुं., दे 'गुणा'।

गुनाह, स पुं (फा) पाप २ अपराध ।

गुनिया, सं पु (सं कोण >) कौणिक, साधन, तक्षकोपकरणभेद (१)।
गुपचुप, क्रि वि (स गुप्त+चुप्>) निभृत, सुगूढ़, रहसि, मौन (सव अव्य)। स स्त्री, (१-३) मिष्टान्न-बालक्रीडा-क्रौन्नक, भेद।
गुप्त, वि (स) गूढ, निभृत, निलीन, प्रच्छन्न, अव्यक्त, अप्रकट २ दुर्बोध ३ रक्षित ४ अदृश्य। स पु, वैश्योपाधि २ प्राचीन राजवंशविशेष।
—होना, क्रि अ, अतर्धा निली (कर्म)।
—चर, स पु (स) अपसर्प, च(चा)र, प्रणिधि।
—दान, सं पु (स न) दातृनामनिर्देश विना दान।
गुप्ता, स स्त्री (स) परकीयाभेद २ उप-पत्नी-भार्या ३ वर्णसूचकोपाधि (पु), गुप्त।
गुप्ति, स स्त्री (स) गूहन, गोपन, सवरण, प्रच्छादन २ रक्षण ३ कारागार ४ गुहा ५ यमा (योग)।
गुप्ती, स स्त्री (स गुप्त>) गुप्तासि (पु), खड्गयष्टि (स्त्री), •गुप्ति (स्त्री)।
गुफा, स स्त्री (स गुहा) कदर-रा, गहर, •री, विवर• रम्।
गुफ्तगू, स स्त्री (फा) वार्तालाप, आलाप, सलाप।
गुबरैला, स पु (हिं गोबर) गोमयरु, गोमयकीट।
गुबार, स पु (अ) धूलि (स्त्री), २ प्रच्छन्न वैराद्विष्य।
गुब्बारा, स पु (हिं कुप्पा) विमान, ख व्योम,-यान २ विमानाकार, अग्निक्रीडनकम्।
गुम, वि (फा) लुप्त, भ्रष्ट, नष्ट, च्युत २ गुप्त, छन्न ३ अविख्यात।
—करना, क्रि स, वियुज् विहा परिहा (कर्म, तृतीया के साथ) २ दे 'छिपाना'।
—होना, क्रि अ, नश (दि प वे), प्रभ्रश (भ्वा आ से दि प से)।
—नाम, वि (फा) अप्रसिद्ध, अविदित।
—राह, वि (फा) प्रभ्रष्ट नष्ट,पथ, विपथ उन्मार्ग,गामिन्, पथभ्रष्ट, भ्रान्त।
—राही, स स्त्री (फा) भ्रान्ति (स्त्री), भ्रम २ कुमार्ग।

गुमटी, सं स्त्री (फा गुबद) (सोपानादीनां) उच्छदि• (स्त्री)।
गुमड़ा, सं पु (फा गुबद) गड शोथ, शोफ।
गुमरी, सं स्त्री, दे 'घुमरी'।
गुमान, सं पु (फा) अनुमान २ दर्प।
गुमानी, वि (फा) दृप्त, गर्वित, सदर्प।
गुमाश्ता, सं पु (फा) प्रतिनिधि (पु) प्रतिहस्त रतक, नियोगिन् (पु), नियुक्त, प्रतिपुरुष।
—गीरी, स स्त्री (फा) नियोगि प्रतिनिधि, पद कार्य २ प्रतिनिध्य, नियुक्तत्वम्।
गुम्मट, स पु (फा गुबद दे)।
गुर, स पु (सं गुरुमत्र >) सूत्र, मूलमन्त्र, सार, सक्षिप्तविधि (पु)।
गुरगा, स पु (स उरग) शिष्य २ सेवक ३ गुप्त,चर।
गुरगाबी, दे 'गुर्गावी'।
गुरिया, स स्त्री (स गुलिका) गुल्टी, गुटिका।
गुरु, स पु (स) बृहस्पति, देवगुरु २ बृह स्पतिग्रह ३ पुष्यनक्षत्र ४ मन्त्रोपदेशक ५ आचार्य ६ अध्यापक•, शिक्षक ७ पुरोहित ८ द्विमात्रिकवर्ण (छन्द) ९ बल विद्यादिषु स्वतोऽधिक।
वि, बृहत्, महत्, विशाल, विपुल विस्तीर्ण, २ भारवत् ३ दुर्जर, दुष्पच, गरिष्ठ ४ पूज्य, मान्य।
—आई, स स्त्री, गुरुता, गुरुधर्म २ गुरुकृत्य, मन्त्रोपदेश २ धूर्तता।
—कुल, स पु (स न) आचार्यकुल, विद्यालय, शिक्षालय।
—घटाल, स पु, धूर्त वचक शठ कितव, राज।
—जन, स पु (स) पूज्य वृद्ध,-जन।
—दक्षिणा, स स्त्री (स) आचार्योपायनम्।
—द्वारा, स पु (स गुरुद्वार >) शिष्यमत मंदिर, गुरुद्वारम्।
—भाई, स पु (—+हिं भाई) सतीर्थ्य, सगुरव, सह, पाठिन्-अध्यायिन्।
—मुख, वि (स >) दीक्षित।
—मुखी, स स्त्री लिपिविशेष, गुरुमुखी।
—वार, सं पु (सं) गुरु-बृहस्पति, वार• वासर•।

गुरुच, स स्त्री, दे 'गिलो'।
गुरुतर, वि (स) महत्तर, आवश्यकतर २ भारवत्तर, गरीयस ३ पूज्यतर।
गुरुता, म स्त्री (स) | भार
गुरुत्व, स पु (स न) | तोल, मान २ महत्ता, गौरव, गरिमन (पु)।
—आकर्षण स पु (स न) भारवत्त्व,-आकृष्टि पातुकत्वम्।
गुरुवाइन, स स्त्री (स गुरु>) गुरु, आचार्य पत्नी आचार्यानी, गुर्वी २ उपाध्यायानी, उपाध्यायी ३ उपदेशिका, अध्यापिका, शिक्षिका।
गुरू, स पु, दे 'गुरु'।
गुर्गा, स पु (स गुरुग) शिष्य, अनुगामिन् २ सेवक, अनुग ३ गुप्तचर।
गुर्गाबी, स स्त्री (फा) पादू (स्त्री), पादुका।
गुर्ज, स पु (फा) गदा, शस्त्रभेद।
गुर्जर, सं पु (स) गुर्जरराष्ट्र, गुर्जरप्रान्त २ गुर्जरवासिन् ३ जातिविशेष।
गुर्दा, स पु (फा) वृक्क क्का क, बुक्क क्का क गुड, गुद, वृक्य। २ शौर्यं, साहसम्।
—**का दर्द**, स पु वृक्कशूलम्
—**की पथरी**, स स्त्री वृक्काश्मरी।
गुर्राना, कि अ (अनु) घुर्घुरायते (ना धा), घुर्घुरध्वनिं कृ २ गर्ज (भ्वा प से)।
गुर्विणी, स स्त्री (स) दे 'गर्भिणी'।
गुर्वी, म स्त्री (स) दे 'गर्भिणी' २ गुरुपत्नी, आचार्यानी ३ गौरवयुक्ता ४ गायत्री।
गुल, स पु (फा) ओड्र-जपा जवा, पुष्प २ पुष्प ३ दग्धवर्ती ति (स्त्री) ४ शुक्ल, नेत्ररोगभेद ५ तप्तलोहाङ्क।
—**अब्बास**, स पु, कृष्ण कलि (स्त्री)-केलि (स्त्री)।
—**कंद**, स पु (फा) पुष्प-जपा, खड।
—**कारी**, स स्त्री (फा) पुष्पकार्यं, कर्मन्।
—**गुर्रा**, म पु सिद्ध,-आढ्य नाथ ईश्वर।
—**दास्ता**, स पु (फा) पुष्पगुच्छ, कुसुम पुष्प, गुच्छ स्तबक।
—**दान**, स पु (फा) पुष्प, धान धानी।
—**दुपहरिया**, स पु, सूर्यभक्तक, अर्कवल्लभ, माध्याह्निक, बन्धुजीवक।
—**परी**, म स्त्री सुपुष्पा, शखोदरी, बर्हपुष्पा।
—**बदन**, स पु (फा) कौशेयवस्त्रभेद।
—**बूटा**, स पु, दे 'गुलकारी'।
—**मखमल**, म पु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक।
—**करना**, मु, दे 'बुझाना'।
—**होना**, मु, दे 'बुझना'।
—**खिलना**, मु, अतर्कित अद्भुत घट् (भ्वा आ से) अथवा था-स पत् (भ्वा प से) २ उपद्रव उत्पद् (दि आ अ)।
—**खिलाना**, मु, व 'गुलखिलना' के प्रे रूप।
गुल, स पु (फा) कोलाहल, कलकल ध्वनि (पु)।
—**गपाड़ा**, स पु, दे 'गुल'।
गुलगुला[1], वि (हिं गुदगुदा) कोमल, मृदुल।
गुलगुला[2], स पु (हिं गोल+गोल) गोल गोल मिष्टान्न पक्वान्न भेद २ गड, कण्पट्टी।
गुलचला, स पु (हिं गोला+चलाना) दे 'तोपची'।
गुलछर्रा, स पु (फा गुल+अनु) आनन्द, मोद, २ विलास, भोग।
—(**र्रे**) **उड़ाना**, मु, स्वच्छन्द रम् (भ्वा आ अ)।
गुलज़ार, स पु (फा) उद्यान, वाटिका। वि, शोभन, अभिराम।
गुलझटी ट्टी, म स्त्री (म गोल+झट= उलझना) सूत्रसश्लेष, गोलझटम्। २ वली लि (स्त्री)।
गुलशन, म पु (फा) उद्यान, वाटिका।
गुलाब, स (फा) चारुकेसरा, लाक्षापुष्पा, तरुणी, शतपत्री, भृङ्गेष्टा, गन्धाढ्या, जपा, जवा २ जपाजलम्।
—**जल**, म पु, जपा-जवा, जलम्।
—**जामुन**, स पु, विलाट,-जंबु (न)-जाम्ब। २ वृक्षभेद। ३ तत्फलम्।
—**दान** नी, स स्त्री, जपाधानी।
गुलाबी, वि (फा) पाटल, जपावर्ण २ स्वल्प, अत्यल्प ३ कौसुम्भ, आर्द्र। स स्त्री, (१-२) पानपात्र राग मिष्टान्न, भेद। ४ जपारग।
गुलाम, स पु (अ) क्रीत, दास २ सेवक ३ दासाकारयुत क्रीडापत्र, दास।

गुलामी, सं स्त्री (अ गुलाम) दासत्व २ सेवा ३ परतन्त्रता।
गुलाल, स पु } (फा गुलाल) दे 'अबीर'।
गुलाली, वि }
गुलिस्ताँ, स पु (फा) उद्यान, उपवनम्।
गुलूबंद, स पु (फा) गलबन्ध २ ग्रैवेय-यकम्।
गुले(लै)ल, स स्त्री (फा गिलूल) वटिका क्षेपणी, गुल्किास।
गुलैला, स पु (फा गुलूला) गुलिका, वटिका २ दे 'गुलल'।
गुल्फ, म पु (स) घुटिक, घुट घुण्ट, चरणग्रंथि (पु)।
गुल्म, म पु (स) उदररोगभेद २ सेना विभागभेद (- ९ हाथी ९ रथ, २७ घोड ४५ पैदल) ३ प्लीहा ४ नाडी धमनी शोथ, ५ स्तम्ब, क्षुप गुल्म मम्।
गुल्मी वि (स मिन्) गुल्मरोगपीडित।
गुल्ला, स पु (म गोल >, दे 'गुलेला'।
गुल्लाला, स पु (फा गुलेलाल) रक्तपुष्प भेद, लालापुलम्।
गुल्ली, स स्त्री (स गुली >) फल-गर्भबीज, २ गुलाहडक्रीडाया लघुकाष्ठखण्ड, *गुली, चीगा ३ शाग णी ४ सारिकापक्षिभेद, ५ इक्षुखण्ड ६ अम, पाशक।
गुसल, स पु, दे 'गुस्ल'।
गुसाईं, स पु दे 'गोस्वामी'।
गुस्ताख, वि (फा) धृष्ट, विनय अशिष्ट।
गुस्ताखी, स स्त्री (फा) धार्ष्ट्य, वैयात्य, अशिष्टता।
—करना, क्रि अ, धाष्ट्यं दृश (प्रे) अशिष्ट वत् व्यवह (भ्वा उ अ)।
गुस्ल, स पु (अ) स्नान, अवगाहनम्।
—करना, क्रि अ, स्ना (अ प अ)।
—खाना, स पु (अ+फा) स्नानागार, अवगाहनस्थानम्।
गुस्सा, स पु (अ) कोप रोष, दे 'क्रोध'।
—आना, करना चढ़ना या होना, क्रि अ, रुष्-कुप (दि प से), क्रुध् (दि प अ)।
—उतरना, मु, कोप रम् (दि प से, शाम्यति)।
गुस्सील, गुस्सैल, वि (अ गुस्सा) कोपन, क्रोधन, रोषण, अमर्षण।

गुह[1], स पु (सं) कार्तिकेय २ अश्व ३ गुहा ४ रामसुहृद् (पु) ५ हृदयम्।
गुह[2], स पु (स गूथ) दे 'गूह'।
गुहाँजनी, स स्त्री (स गुह्य+अञ्जन >) पक्ष्म, पिटिका-चर्चिका।
गुहा, स स्त्री (स) दे 'गुफा'।
गुहार, स स्त्री, दे 'गोहार'।
गुहिन, सं पु (स न) वन, काननम्, अरण्यम्।
गुह्य, वि (स) गुप्त, अंतर्हित २ गोपनीय, सवरणीय ३ दुर्बोध गूढ़।
स पु, छल २ कूर्म ३ गुह्याग ४ विष्णु ५ शिव।
गुह्यक, स पु (स) यक्षभेद।
—पति, स पु (स) कुबेर।
गूँगा, वि (फा गुग) मूक, वाग् रहित हीन, अवाच।
गूंग का गुड मु, अवर्ण्यवार्ता।
गूँज, स स्त्री (स गुज) दे गुज'(२) २ प्रति, नाद ध्वनि (पु) -शब्द -रव गर्जन श्रुति (स्त्री) ३ अनु रसित-नाद।
गूँजना, क्रि अ (स गुजन) दे 'गुञ्जना' २ प्रति, नद् ध्वन् स्वन् रस (सब भ्वा प से) ३ अनु-,नद-रस, प्रतिशब्द कृ इ।
गूँथना, क्रि स (स ग्रथन) वेणारूपेण ग्रथ (क प से) वेणी कृ २ सग्रथ, सदृभ् (चु उ से), गु(गु)म्-दृभ् (तु प से), सूत्र (चु) ३ सिव (दि प से,), (सूच्या) सक्षिप (प्रे)।
गूँधना, क्रि स (स गोधन क्रीडा करना >) (जल मिश्रयित्वा हस्ताभ्या) मृद् (क्र प से अथवा प्रे)-सम्पीड (चु) २ ३ दे 'गूथना' (१, २)।
गूग(गु)ल, स पु, दे 'गुग्गुल'।
गूजर, स पु (स गुजर) गोप, गोपाल, आभीर २ जातिविशेष।
गूजरी, स स्त्री (स गुजरी) गोपी, गोपपत्नी २ चरणाभरणभेद ३ रागिणीविशेष।
गूढ़, वि (स) दुर्बोध, कठिन २ गुप्त, प्रच्छन्न ३ गम्भीर, सारगर्भित।
—पुरुष, स पु (स) दे 'गुप्तचर'

गूढ़ता, सं स्त्री (सं) दुर्बोधता, गम्भीरता, प्रच्छन्नता ।
गूढ़ाग, स पु (सं) कच्छप, कमठ, कूर्म ।
गूढाघ्रि, स पु (स) अहि, सर्प, उरग, पन्नग ।
गूथ स पु (स पु न) दे 'गूह'।
गूथना, क्रि स, दे 'गूधना'।
गूदड़ स पु (हि गूथना) कर्पट, जीर्ण वसन २ अवस्कर मल ३ तूला, तूलिका।
गूदड़ी, न स्त्री (हिं गूदड) (भिक्षुकस्य) तूला २ पोट्टली लिका।
गूदा, स पु (स गोर्द) मस्तिष्क, गोर्द, मस्तकस्नेह २ फल,-सार मज्जा वसा ३ बीज, सार गर्भ ४ सारभाग ।
गूधना, क्रि स दे गूधना'।
गून, स स्त्री (स गुण) नौकर्षणरज्जु (स्त्री)।
गूमड़ा, स पु (स गुल्म म >) वि,स्फोट, पिटक २ शोथ शोफ ।
गूमड़ी स स्त्री (हिं गूमना) पिडिका क्षुद्र व्रण रक्तवटी।
गूलर, स पु, उदुम्बर, यज्ञाग, जन्तुफल, हेमदुग्धक पुष्पशून्य ।
—का कीड़ा, मु कूपमण्डूक अनुभवहीन ।
—का फूल, मु, दुर्लभवस्तु (न)।
गूह, स पु (स गूथ थ) पुरीष, मल उच्चार, विष्ठा, अव(व)स्कर, विष् (स्त्री)।
गृध्र स पु (स) दे 'गिद्ध'।
गृह, स पु (स न) गृहा (पु बहु) गह, ह, वेश्मन् सद्मन् (न) निकेत तन, सदन भवन अ(आ)गार, मंदिर, निलय, आलय, शाला, स-आ ति अधि ,वास, आवसथ, उदवसित, निकाय्य २ •परिवार, कुटुम्ब•, गृहा ।
—पति, स पु (स) गृहिन्, गेहिन्, कुटुम्बिन् २ कुक्कुर ३ अग्नि ।
—पत्नी, स स्त्री (स) शालिना, गृहिणी, गहिनी, कुटुम्बिनी।
—युद्ध, स पु (स न) जनप्रकोप, प्रकृति क्षोभ, २ कौटुम्बिककलह ।
—लक्ष्मी, स स्त्री (स) सुगृहिणी, सुशील गृहपत्नी।
गृहस्थ, स पु (स) गृहमेधिन्, ज्येष्ठाश्रमिन्, दे 'गृहपति'।
—आश्रम, स पु (सं) वैवाहिकजीवनं २ द्वितीयाश्रम ।
गृहस्थी, स स्त्री (स गृहस्थ >) गृहस्थ, आश्रम कर्तव्यानि (न बहु) २ गृहव्यवस्था ३ कुटुम्ब, परिवार ४ गृह,-उपस्कार सामग्री ५ गृहकार्यकुशलता।
गृहिणी, स स्त्री (स) शालिनी, दे 'गृहपत्नी ।
गृही, स पु (स गृहिन्) गृहस्थ, दे 'गृहपति'।
गेंडली, स स्त्री (स कुडली >) मंडल आवेष्टन व्यावर्तनम्।
—मारना, क्रि स, मण्डली पुटी वर्तनी, कृ व्यावृत् (प्रे)।
गेंडुरी, स स्त्री, दे 'इडुरी'।
गेंद स पु (स गेंदुक) कदुक, गेण्डु (डु) क, गान्दुक, गोल ला ल २ मडल, वर्तुल, गोलम्।
—बल्ला, स पु, गेंदुकपट्ट, पट्टगेन्दुकम्, आग्लीयक्रीडाभेद ।
गेंदुआ, स पु (स गेंदुक >) (गोल) उपबर्ह उपधानम्।
गेंदा, स पु (स गेंदुक) बृहत्,-कदुक गोलक २ पुष्पभेद ।
गेरना, क्रि स, दे 'गिराना' तथा 'उँडलना'।
गेरू, स स्त्री (स गवेरुक) गैरिक रक्त गिरि, धातु (पु) रक्तोपल, गिरिज, गिरि-मृत्तिका, गृत्तिका, वनालक्तम्।
गेरुआ, वि (हिं गेरू) गवेरुकरंजित २ गिरिजवर्ण।
गेह, स पु (स पु न) दे गृह'।
गेहुअन, स पु (हिं गेहूं) गोधूमक, फणिभेद ।
गेहूँ, स पु (स गोधूम) सुमनस (पु), बहुदुग्ध, यवन, म्लेच्छभोजन, सितशिंबिक, निस्तुष, क्षीरिन्, अपूप, रसाल २ नागरंग ।
गेहुँआ, वि (हिं गेहूं) गोधूम, वर्णरंग, २ गोधूममय, गोधूम (समास में) ३ धान्यभेद ।

गैंडा, स पु (स गड) गडक, खड्गिन्, वज्रचर्मन् (पु), तुरगक्रोडी,-मुख, वार्ध्री (स्त्री)गस, खड्गमृग ।
गैन-त्ती, स स्त्री (देश) दे 'कुदाल'।
गैज़, स पु (अ) अति कोप क्रोध -रोष ।
गैब, स पु (अ) परोक्ष तिरोहित, पदार्थ । वि गुप्त, तिरोहित।
—दाँ, वि, परोक्षविद्, सर्वज्ञ
गैवर, स पु (स गजवर) गजोत्तम, गजेन्द्र करीन्द्र ।
गैबी, वि (अ गैब) गुप्त, प्रच्छन्न, अज्ञात ।
गैया स स्त्री दे 'गाय'।
गैर, वि (अ) अन्य इतर, पर, अपर २ भिन्न, व्यतिरिक्त । स पु आगन्तुक अभ्यागत ।
—आबाद, वि, निर्जन, वसतिशून्य ।
—मनकूला, वि, स्थिर स्थावर, अचर न
—मामूली, वि विशिष्ट, असाधारण विशेष ।
—मुनासिब,-वाजिब, वि, अनुचित, अयोग्य ।
—मुमकिन, वि, असभव अशक्य ।
—शख्स, स पु पर, अनात्मीय ।
—हाज़िर, वि, अनुपस्थित, अविद्यमान ।
—हाज़िरी, वि, अनुपस्थिति (स्त्री) अविद्यमानता ।
गैरत, स स्त्री (अ) लज्जा त्रपा ।
गैरिक, स पु (स न) दे गेरू'।
गैरीयत, स स्त्री (अ) अन्यता, परता इतरता, अपरता ।
गैल, स स्त्री, दे 'गली'।
गैलन, स पु (अं) गेलनम्, द्रवद्रव्यपरिमाण भेद, अर्द्ध प्रस्थ ।
गैस स स्त्री (अ) वाति (स्त्री), वाष्प ।
गोंडा, स पु (स गोष्ठ) व्रज, अवरोध शाला २ ग्राम ३ विस्तीर्णमार्ग ४ अजिरम्
गोंद, स पु (स ... , अथवा हिं गूदा) निर्यास ।
—दानी, स स्त्री निर्यासधानी ।
गोंदीला, वि (हिं गोंद) निर्यास, मय युक्त, सान्द्र, श्यान ।
गो¹, स स्त्री (स) दे 'गाय' २ किरण ३ इंद्रिय ४ वाच् (स्त्री) ५ सरस्वती ६ नेत्र ७ विद्युत् (स्त्री) ८ पृथ्वी ९ दिशा १० जननी ११ जिह्वा । स पु (स) वृषभ २ नदीगण ३ घोटक ४ सूर्य ५ चद्र ६ बाण ७ गायक ८ आकाश ग ९ स्वर्ग १० जल ११ लोमन् (न) १२ शब्द १३ वनाव ।
—कर्ण, स पु (स) धेनुश्रवण २ शैवतीर्थ विशेष । ३ अश्वतर ४ सर्पभेद ५ किष्कु वितस्ति (पु स्त्री) (हिं बित्ता) ५ मृग भेद । वि, लवकर्ण।
—कुल, स पु (स न) गोसमुदाय २ गोष्ठ ३ ग्रामविशेष ।
—ग्रास, स पु (सं) गो-कवल (-ल) पिंड ।
—घात, स पु (स) गो हत्या-वध -मारणम् ।
—घातक, स पु (स) गोघातिन्, गोघ्न ।
—चर, वि (स इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगम्य । स पु रूपादिविषया २ शाद्वल, तृणावृत भूमि (स्त्री) ३ प्रान्त देश ।
—चरी, स स्त्री (स गोचर) भिक्षावृत्ति (स्त्री)।
—तीत वि, अगोचर अतीन्द्रिय इन्द्रियातीत, इन्द्रियागोचर।
—दान, स पु (स न) धनुगो,-विसर्जन त्याग ।
—धू(ली)लि, स स्त्री (स) सध्या-साय काल समय -वेला।
—धेनु स स्त्री (स) दुग्धवती गौ (स्त्री)।
—पाल, स पु (स) गोप, गोपालक । २ श्रीकृष्ण ।
—मय, स पु (स न) गो, मल पुरीष विष्ठा।
—मुख, स पु (स न) धेनुवदन २ शखभेद । ३ दे नरसिंहा' ४ गोमुखी, जपमालाकोष । ५ चतुष्कोण कुण्डगृहम् ।
—मूत्र स पु (स न) गो मूत्र प्रस्राव द्रव निष्यद ।
—मेद -मेदक, स पु (स) राहुरत्न, पुष्पराग, पीताश्मन् (पु)।
—मेध, स पु (स) यज्ञभेद ।
—रस, स पु (स) दुग्ध २ दधि (न) ३ तक्र ४ इन्द्रियसुखम्।
—रोचन, स पु (स -चना) शुभा, शोभा, शोभना, रोचनी, शिवा, मगला, पीता, राचना।

—लोक, सं पु (स) श्रीकृष्णस्य नित्यधामन् (न)।

—वर्द्धन, स पु (सं) व्रजभूमौ पर्वतविशेष ।

—वर्द्धनधर, सं पु (सं) गोवर्धनधारिन् श्रीकृष्ण ।

—विंद, सं पु (सं) श्रीकृष्ण ।

—शाला, सं स्त्री (सं) गोष्ठ, गोगृह, व्रज ।

—साईं, सं पु , दे 'गोस्वामी'।

—स्वामी, सं पु (सं मिन) गोपति २ प्रभु ।

—हत्या, सं स्त्री (स) दे 'गोघात'।

गो[२], गो कि, अव्य (फा) अपि, यद्यपि।

गोका, स स्त्री (सं) लघु, गौ धेनु (दोनों स्त्री) २ वनधेनु (स्त्री), भिल्लगवी।

गोखरू, स पु (सं गोक्षुर) त्रिकट टक, गोक्षुर टक (क्षुपविशेष) २ नम्य कण्टक ३ कटक वलय, प्रव र ।

गोचना, **गोचनी**, स पु म स्त्री (हिं गेहूं+चना) गोधूमचण णम्, *गोचण णणी।

गोज, स पु (फा) अपानवायु , पर्द ।

गोजर, सं पु दे 'कनखजूरा'।

गोजरा, स पु (हिं गेहूं+जव) गोधूमयवा ।

गोझा, सं पु (स गुह्यक) १ पक्वान्नभेद । २ वशकाष्ठ, कील ३ दे 'नेत्र'४ घासभेद ।

गोट[१], सं स्त्री (गोष्ठ > ?) वस्त्र-दशा (स्त्री बहु), वसनप्रान्त ।

गोट[२], सं स्त्री (सं गुटिका) शार , शारि (पु), खल्नी।

गोटा, सं पु (हिं गोट) सुवर्ण रजत, आल्प भरणं-वस्त्राभरणम्।

गोटी, सं स्त्री (गुटिका) पाषाणखट ड, शर्करा २ दे 'गोट' ३ मसूरी रिका, शीतलारोग ।

गोठ, स स्त्री (स गोष्ठ) गोशाला २ पर्यटन, भ्रमण ३ श्राद्धभेद ।

गोड़ना, क्रि स दे 'खोदना'।

गोड़ा, सं पु दे 'पुन्ना' ।

गोणी, स स्त्री (स) स्यूत, कोष पुट , स्यू (स्यो)त , प्रसेव २ द्रोणीपरिमाणम्।

गोत, सं पु (सं गोत्र) दे 'गोत्र' २ गण, समूह ।

गोता, स पु (अ) निमज्जन, अवगाह ।

—देना, क्रि. स., व 'गोता मारना' के प्रे रूप ।

—मारना, क्रि अ नि-अव-गाह् (भ्वा आ वे) निमज्ज् (तु प अ)।

—खोर, सं पु (अ+फा) अवगाहक , निमक्तृ (पु)।

गोत्र, सं पु (सं न) कुल, वंश , अन्वय २ समूह ३ सपत्ति (स्त्री) ४ बन्धु ५ जातिविभाग ।

—भिद्, सं पु (सं) इन्द्र , देवराज ।

गोदंत, सं पु (स न) हरितालम्।

गोद, सं स्त्री (स क्रोड) अंक, उत्संग ।

—लेना, मु , पुत्रीकृ, (पुत्रत्वेन) परिग्रह (क्र् प से)।

गोदना, क्रि स (हिं खोदना) सूच्या त्वच रज् (प्रे), त्वचमनुविध्य पत्ररेखा निविश (प्रे) २ गोबीज निविश् (प्रे) ३ सूच्यग्रेण व्यध् (दि प अ) ४ असकृत् प्रणुद् प्रचुद (प्रे)। सं पु , त्वचि सूचीखातम् कृष्णचिह्नम्।

गोदनी, सं स्त्री (हिं गोदन) वेधनी, सूचि -ची (स्त्री)।

गोदाम, सं पु (अ गोडाउन) पण्य-अगार आधान, भाण्डागारम् ।

गोदावरी, सं स्त्री (स) गोदा, गौतमी ।

गोदी, स स्त्री , दे 'गोद'।

गोधा, मं स्त्री (स) तला, तल, ज्याघातवारणा २ गोधिका, निहाका ।

गोधुम, **गोधूम**, सं पु (स) दे 'गेहूं' २ नागरंग ।

गोन, सं स्त्री , दे 'गोणी'।

गोनिया, सं पु, दे 'गुनिया'।

गोप, स पु (सं) आभीर , गोपाल , २ नृप ३ उपकारक ।

गोपन, सं पु (स न) गूहन, गोहनं, प्रच्छा दन, सवरणम्।

गोपनीय, वि (स) गुह्य, संवरणीय, रहस्य, गोप्य ।

गोपिका, सं स्त्री (स) दे गोपी ।

गोपी, स स्त्री (स) गोपिका, गोपपत्नी, आभीरी, गोपालिका ।

गोफन-ना, स पुं (सं गोफणा) गुण, भिंदि(द्)पाल ।

गोबर, स पुं (स गोमय) दे 'गोमय'।
—गणे(ने)श, वि, कुदर्शन, कुरूप। स पु, मूर्ख, जड।
गोबरी, स स्त्री (हिं गोबर) गोमयलेप।
—करना, क्रि स, गोमयेन लिप् (तु प अ)।
गोबरैला, गोबरौंदा, स पु (हिं गोबर) दे 'गुबरैला'।
गोभी, स स्त्री (स गोभी = घासविशेष >) गोभी।
गांठ—, ग्रथिगोभी।
पात—, बद—, मुकुलपत्र-गोभी।
फूल—, मध्यपुष्पा बृहद्दला पुष्पगोभी।
गोया, क्रि वि (फा) इव, यथा, मन्ये (दि आ अ)।
गोरखधंधा, स पु (हिं गोरख+धंधा) गहन जटिल-कार्यं २ कूट, प्रहेलिका ३ असम्यनिर्गम प्रदेशः।
गोरखा, स पु (स गोरक्षक) नयपालदेशे प्रातविशेष २ तत्प्रान्तवासिन्।
गोरखाली, स स्त्री (सं हिं गोरखा) नयपालदेशस्य जातिविशेष, •गोरखाली २ गोरक्षाणांजातिर्भाषा, •गोरखाली।
गोरा, वि (स गौर) शुद्ध, श्वेत, सित, विशुद्ध। स पुं, गौर, शुभ्र, श्वेत, सित, २ युरोपादिवासिन्, गौर।
गोराई, स स्त्री (हिं गोरा) गौरता, शुक्लता, श्वेतता, सितता।
गोरिल्ला, स पु (अफ्री) वानरभेद, वनमानुषप्रकार।
गोरी, स स्त्री (स गौरी) गौरा, शुक्ला, श्वेता, सुरूपिणी, सुन्दरी।
गोलंदाज, स पुं (फा) शतघ्नीचालक, गोलक्षेपक।
गोल¹, वि (स) वर्तुल, निस्तल, वृत्त, वृत्त मंडल चक्र-वलय आकार-आकृति रूप २ अस्पष्ट, सादग्ध, अनिश्चित। स पुं, घट २ मूर्ख।
—गप्पा, स पु (+अनु गप) •गोलगप्प।
—मटोल, वि, पीनवामन, सर्वस्थूल।
—मिर्च, स स्त्री [स गोलमरि(री)च] मरिच कोल, कोलकम्।
—माल, मु, अस्तव्यस्तता, क्रमभंग।
—माल करना, मु, छलेन आत्मसात् कृ २ व्यवस्था नश (प्रे)।
गोल², स पुं (अ) गण, समुदाय।
गोलक, सं पु (स) पिण्ड-सपुट-मंजूषा, प्रकार-भेद २ निष्कर्षणी (हिं दराज) ३ पत्यौ मृते जारजपुत्र ४ कदुक ५ महत् स्पात्र ६ कनीनिका ७ नेत्रगोल ८ निधि, राशि ९ टक्कशिका।
गोला, स पु (स गोल) गोला-लः, वर्तुल-ल २ चक्र, मण्डल, वृत्त ३ अग्न्यस्त्र, गोल, बबन्ध ४ नारिकेल गर्भ ५ वायुगोल उदर रोगभेद ६ धान्य, हट्ट विपणी ७ पशुगृह ८ हेतुवध ९ धान्यकुम्भ।
—मारना, क्रि स गोलै बबै ध्वंस (प्र)-चूर्ण (चु)।
गोलाई, स स्त्री (स गोल >) वृत्तता, वर्तुलता, गोलत्व, मण्डलत्वम्।
गोलाकार, वि (स) दे 'गोल¹'।
गोलार्द्ध, स पुं (स न) अर्द्धगोल।
गोली, स स्त्री (हि गोला) लघुगोल, गोलक २ सीसकगुलिका ३ गुटिका, वटिका, गुलिका ४ काच-मर्मरोपल, गुलिका।
—मारना, क्रि स, गुलिकाक्षेपेण हन् (अ प अ)-क्षण (त उ से)।
गोल्ड, स पु (अ) सुवर्ण, स्वर्ण, कनकम्।
गोल्डन, वि (अ) दे 'सुनहला'।
गोविंद, स पु (स) श्रीकृष्ण।
गोशा, स पु (फा) कोण २ दिशा ३ रह स्थान, विविक्तम्।
गोश्त, स पुं (फा) मांस, आमिषम्।
—खोर, स पुं, मांस-आमिष-भक्षिन् आदि भक्षक।
गोष्ठ, स पु (स पुं न) गो, स्थान शाला गृह, व्रज २ वृंद, समूह ३ विमर्श, मन्त्रणा।
गोष्ठी, स स्त्री (स) गोष्ठि समिति (स्त्री), सभा, समाज, २ वार्तालाप ३ विमर्श।
गोस्तना-नी, (स) द्राक्षा, मृद्वीका।
गोह, स स्त्री (स गोधा) गोधिका, निहाका २ (गोह का बच्चा) गौधार, गौधेर, गौधेय।
गोहरा, सं पुं (स गोहल्ल >) दे 'उपला'।
गोहूँ, स पुं, दे 'गेहूँ'।
गोखुर, सं पुं दे 'गोखरू'।

गौं, स स्त्री (स गम >) प्रयोजन, अर्थ, कार्य २ अवसर, कार्यकाल, अवकाश ।
गौ, स स्त्री, दे गाय' तथा 'गो' ।
गौग़ा, स पु (अ) कोलाहल २ जनश्रुति (स्त्री)।
गौड, स पु (स) वगप्रान्तस्य भागविशेष २ ३ ब्राह्मण-कायस्थ, भेद ४ गौडवासिन् ।
गौण, वि (स) अप्रधान, द्वितीय, अवर २ सहायक । (गौणी स्त्री)।
गौतम, स पु (स) ऋषिविशेष २ बुद्ध ।
गौतमी, स स्त्री (स) अहल्या २ कृपाचार्य पत्नी ३ गोदावरी ४ दुर्गा ।
गौनहार, स स्त्री (हिं गौन) नवोढासहगा मित्री ।
गौनहारी, स स्त्री (हिं गाना) गात्री, गायनी, गायिका, गायकी ।
गौना, स पु (स गमन >) द्विरागमन वध्वा पतिगृहे गमनम् ।
गौर, वि (स) दे 'गोरा' (वि)। स पु १ २ रक्तपीत रग ३ चद्र ४ सुवर्ण ५ कुकुमम् ।
गौर, स पु (अ) विचार, चिंतन, ध्यानम् ।
—करना, क्रि स विचार् (प्रे), चिंत् (चु)
गौरव, स पु (स न) महत्व महिमन् (पु) २ गुरुता, भारवत्व ३ आदर, सम्मान ४ अभ्युत्थानम् ।
गौरवान्वित, वि (स) गौरवित, सगौरव सम्मानित आदृत ।
गौराग, स पु (स) विष्णु २ कृष्ण ३ चैतन्यदेव । वि सित, श्वेत शुद्ध २ यूरोपीय ।
—महाप्रभु, स पु (स) चैतन्यदेव ।
गौरी, स स्त्री (स) पार्वती, गौरा, गिरिजा २ ३ शुभा (नारी अथवा गौ)।
—शकर, स पु (स) शिव २ हिमालयस्य उच्चतम शिखरम् ।
गौहर, स पुं (फा) दे 'मोती' ।
ग्यान, स पु, दे ज्ञान' ।
ग्यारह, वि (स एकादशन्)। स पु, उक्ता सख्या तदकौ (११) च ।
ग्यारहवा, वि, एकादश (पुं), एकादश (न) (वीं (स्त्री) = एकादशी)।
ग्रथ, स पु (स) पुस्तक, शास्त्र २ ग्रथन ३ धनम् ।
—चुंबन, स पु (स न) क्षिप्र त्वरित, पठन अध्ययन, शीघ्रपाठ ।
—सधि, स स्त्री (स पु) अध्याय परिच्छेद ।
—साहब, स पु, शिष्यमतधर्मग्रथ ।
—कार, स पु (स) पुस्तक ग्रथ लेखक सपादक कर्तृ प्रणेतृ ।
ग्रथन, स पु (स न) ग्रथन गुफन २ प्रणयन, निबधनम् ।
ग्रथि, स स्त्री (स पु) दे 'गाँठ' ।
—बधन, स पु (स न) दे 'गाँठ जोड़ना'
ग्रथित, वि (स) ग्रथित गु(गु)फित २ ग्रथिमत्, ग्रथिल ।
ग्रसन, स पु (स न) भक्षण, निगलन, २ ग्रहण, धरण ३ सूर्यादि ग्रहण, उपराग ।
ग्रसना, क्रि स (स ग्रसन) (हस्तेन) धृ (भ्वा उ अ, चु) ग्रस्-अवलब् (भ्वा आ से) ग्रह् (क्र्‌ प से)।
ग्रसित, ग्रस्त, वि (स ग्रस्त) धृत गृहीत उपात्त २ पीडित ३ भक्षित, निगीर्ण ।
ग्रह, स पुं (स) नक्षत्रभेद ।
ग्रहण, स पुं (स न) उपराग, ग्रह, ग्राम, ग्रहपीडन २ आदान, अगीकरणम् ।
ग्राफ, स पु (अ) बिंदुरेखाचित्रम् ।
ग्राम, स पु (स) दे 'गाव' ।
ग्रामीण, स पु (स) ग्रामिक ग्रामिन्, ग्रामवासिन् ।
ग्रामोफोन, स पु (अ) ध्वनिक्षेपणवाद्यम् ।
ग्राम्य, वि (स) ग्रामीण, ग्रामिक ग्रामीय २ असभ्य अशिष्ट ।
ग्रास, स पुं (स) कवल पिंड ।
ग्राह, स पु (स) अवहार, जलहस्तिन् ।
ग्राहक, स पु (स) क्रेतृ (पुं) अर्थिन्, क्रयिक ।
ग्राह्य, वि (स) उपादेय, स्वीकार्य, २ ज्ञेय ।
ग्रीवा, स स्त्री (स) दे गर्दन' ।
ग्रीष्म, स पुं (स) ग्रीष्म समय काल, निदाघ, उष्ण काल तप, तापन, उष्णा, उष्ण गम आगम काल ।
ग्रीस स पुं (अं) यवनदेश ।

ग्रेटब्रिटेन, सं पु (अ) आग्ल्दीपसमूह ।
ग्रेविटी, सं स्त्री (अ) म्वाकृष्टि (स्त्री)।
स्पेसिफिक—, आपेक्षिकभार ।
ग्रेविटेशन, सं पु (अ) गुरुत्वाकर्षणम् ।
ग्रैजुएट, स पु (अ) स्नातक ।
ग्लाईसेरिन, सं पु (अ) शर्कराजनम् ।
ग्लानि, स स्त्री (सं) विषाद, अवसाद, ग्लानि (स्त्री) खेद ।
ग्लूकोज़ सं पु (अ) द्राक्षौजम् ।
ग्लोब, सं पु (अ) गोलम् ।
ग्वार ग्वाला, सं पु (सं गोपाल) गोप, आभीर ।
ग्वालिन, सं स्त्री (हिं ग्वाला) गोपी, गोपिका, आभीरी ।

घ

घ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्थो व्यञ्जनवर्णे, घकार ।
घघोलना, घघोरना, घघोरना, क्रि स, (हिं घना+घोलना) विली (प्रे विलाप यति ने), विद्रु (प्रे) २ आविली कलुषी-कृ ।
घट, सं पु (स घट) कुम्भ ।
घंट, घटा, स पु (सं घण्टा) कास्यनिर्मित वाद्यभेद २ घटा, शब्द-रव ३ होरा, नाडिका, अहोरात्रस्य चतुर्विंशतितमो भाग ४ महाघगी ।
—घर, सं पु, घटालय, घटागृहम् ।
घटिका स स्त्री (स) क्षुद्रघण्टा २ किंकि(क)णी ।
घटी, स स्त्री (हिं घटा) घर्घरा, घर्घरिका, क्षुद्रघण्टा, घटिका, २ घटिकाशब्द ३ किंकिणी ग्रीवा ४ नूपुर ५ कृकाय, स्वरयन्त्रम् ६ अलिजिह्वा, लम्बिका ।
घंट्ठ, सं पु (स) ताप, दाह, २ प्रकाश, आलोक, ३ गमधम ।
घघरा, स पु (अनु) बृहच्चचटालव कम् ।
घघर , स स्त्री (हिं घघरा) चलनी, क्षुद्र, चम्लतक क, घर्घरी ।
घचाघच, स स्त्री (अनु) घचघच, शब्द ध्वनि (पु)। वि, स्थूल, पीन ।
घट¹, स पु (सं) कुम्भ, कलश ३(स स्त्री), पुम्ग्रीव, घगी, कलशी, कुट, नप २ शरीर ३ हृदयम् ।
घट², स स्त्री (हिं घटना) न्यूनता, अल्पता ।
—बढ़, सं स्त्री, न्यूनताधिकता ।
घटक, स पु (सं) मध्यस्थ, माध्यमिक, मध्यवर्तिन् २ कुलाचार्य ३ योजक ४ घट ५ परविवाहसाधक ।
घटका, सं पु (अनु) मरणोन्मुखस्य कृच्छ्र, श्वास -घसित श्वासप्रश्वासम् ।
घटती, सं स्त्री (हिं घटना) न्यूनता, अवनति (स्त्री), क्षीणता २ अनादर, मानहानि (स्त्री)।
घटन, सं पु (स न) उपस्थिति (स्त्री), उपागम २ रचन, निर्माणम् ।
घटना¹, क्रि अ (सं घटन) घट् वृत् (म्वा आ से), उपस्था (म्वा उ अ), समापद् (दि आ अ), उपनम् (म्वा प अ) २ युज् (कर्म), उपपद् (दि आ अ)। स स्त्री (स) प्रसग, वृत्त, वृत्तात, व्यतिकर । ३ दुर्घटना ।
घटना², क्रि अ (हिं कटना) परिक्षि अपचि (कर्म) ह्रस (म्वा प से), न्यूनी अल्पी, भू ।
घटनावली, सं स्त्री (सं) वृत्तावली, घटना समूह ।
घटबढ़, सं स्त्री (हिं घटना+बढ़ना) न्यूनत धिकते, अपचयोपचयौ, हानिलाभौ (सब द्वि)। वि न्यूनाधिक, हीनातिरिक्त ।
घटवार ल, सं पु (हिं घाटवाला) तरपण्य तार्य, ग्राहिन् २ नाविक, औडुपिक, घट्ट जीविन् ।
घटा, स स्त्री (सं >) कादविनी, मेघमाला, घनपटली २ समूह, वृदम् ।
घटाटोप, सं पु (सं. >) दे 'घटा' (१) २ शिविकाच्छादन ३ शकटावरणम् ।
घटाना, क्रि स, (हिं घटना) न्यूनी अल्पी, कृ, ऊन् (चु), ह्रस् (प्रे), लघूकृ, अपचि (स्वा उ अ) २ वियुज् विवृज् व्यवकल् (चु) ३ गर्व हृ (म्वा प अ), अपकृष् (म्वा प अ) ।
घटाव, सं पु (हिं घटना) न्यूनता, अल्पता, हीनता २ अवनति (स्त्री), अपचय ।

घटवाना, क्रि प्र (हिं घटना) व घटना' के प्रे रूप।

घटिका, स स्त्री (स) क्षुद्रकलश-कुम्भ घट। २ कालमानयंत्र, यामनाली घटी ३ चतुर्विंशतिकलात्मक काल, मुहूर्तार्धम्।

घटित, वि (स) निर्मित, रचित, सम्पादित।

घटिया, वि (हिं घटना) अवर अधर नि अप कृष्ट न्यून २ सुलभ अल्पमूल्य।

घटी, स स्त्री (स) दे घटिका' १ ३।

घड़त, स स्त्री दे 'गढ़न'।

घड़ना, क्रि स, दे गढ़ना'

घड़ा, स पु (स घट) दे 'घट (१)।

घड़ाई स स्त्री. दे गढ़ाई।

घड़ाना, क्रि प्रे दे 'गढ़ाना'।

घड़िया, (स घटिका >) तैजसावर्तनी, मू (मु)षा मूषी २ मधुकोश करङ्क ३ गर्भाशय ४ मूर्च्छावक।

घड़ियाल, स पु, दे 'घड़ा' (१)।

घड़ियाल, स पु, दे 'ग्राह'।

घड़ी, स स्त्री (स घटी) घटिकायामनाली कालमानयन्त्र २ दे 'घटिका' (३) ३ दे 'घटिका' (२) ४ समय।

—घड़ी, क्रि वि मुहुर्मुहु, पुन पुन असकृत् (सब अव्य)।

—दिआ स पु (हिं घड़ी + दिआ) घटी दीप, मृतक रात्रिदीप।

—भर, क्रि वि, मुहूर्तं क्षण, क्षण मुहूर्तं, मात्रम्।

—साज़, स पु (हिं + फा) घटी घटिका, कार।

घतिया, स पु (स घात >) दे 'घाती'।

घन, स पु (स) मेघ, जलद, पयोद २ लोहमुद्गर, अयोघन, ३ दे 'घटा' (१) ४ समानीयांकत्रयस्य पूरण (गणित, उ २×२×२ = ८ घन) ५ समूह ६ शरीरम्। वि सान्द्र, निविड २ कठिन, सहत, स्थूल, ३ अधिक, प्रचुर।

—गरज, स स्त्री (+हिं) गर्जित, स्तनित २ अशनिनिर्घोष, भेद।

—घोर, वि (सं) अति-सान्द्र निविड २ भीषण, भयानक। स पु भीषण, रव ध्वनि २ स्तनित, गर्जितम्।

—घोर घटा, स स्त्री (स) अविरलजलदावली, नीरप्रवाहस्विनी।

—चक्कर, स पु (स घनचक्र >) चचल अस्थिर, मति-बुद्धि २ मूर्ख ३ परिभ्रमिन्, यथेच्छविहारिन् ४ कृच्छ सङ्कटम्।

—नाद, स पु (स) दे घनगरज'।

—फल, स पु (स न) दे 'घन' (४)।

—मूल, स पु (स न) पूरितसमानीयांक त्रयस्याद्यांक, घनपद (उ आठ का घन मूल दो)।

—श्याम, वि (स) जलदनील, मेघमेचक। स पु, श्रीकृष्ण।

—सार, स पु (स) कर्पूर २ पारद।

घनता, स स्त्री (स) सान्द्रता निबिडता।

घनत्व, स पुं (स न) स्थूलता सहति (स्त्री) २ पदार्थस्य आयामविस्तारस्थूलत्वानि (बहु)।

घना, वि (स घन) सान्द्र, निबिड, सहत, नीरन्ध्र २ गाढ, निकटवर्तिन् ३ अत्यधिक, अतिशय।

घनाक्षरी, स स्त्री (स) दण्डकवृत्त कवित्ताख्य छद (छद)।

घनिष्ट, वि (स) अत्यत अति, सान्द्र निबिड घन २ प्रगाढ, अतिनिकटस्थ ३ अत्यधिक, अतिशय।

घनेरा, वि (हिं घना) अत्यधिक अतिशय (बहु, घनेरे = असख्य, अनेक)।

घनोदय, स पु (स) मेघागम, वर्षा कालारम्भ।

घनोपल, दे 'ओला'।

घपला, स पु (अनु) छल, कपट २ (मत्थान) रसलित, भ्रान्ति (स्त्री) ३ क्रमभग ४ सकुल, भ्रम, शीर्णकम्।

घबरा (ड़ा) ना, क्रि अ तथा क्रि स दे 'चकराना'।

घबराहट, स स्त्री (हिं घबराना) व्याकुलता, आकुलता, अशाति (स्त्री), उद्वेग २ व्यामोह, किंकर्तव्यमूढता, चित्तविक्षेप ३ त्वरा, तूर्णि (स्त्री) त्वरम (स) सभ्रम।

घमड, स पु (स गर्व ?) अहकार, गर्व, दर्प, आटोप, मद, अवलेप।

—करना, क्रि अ, गर्व (भ्वा प से), प्रगल्भ (भ्वा आ से) दृप् (दि प वे)।

घमंडी, वि (हिं घमंड) अवलिप्त, दृप्त, गर्वित, अहमानिन्, अहंकारिन्, उत्सिक्त।

घमघमाना, क्रि अ (अनु) घमघमायते (ना धा), ग्मार स्वन् (भ्वा प से)। क्रि स (मुष्टिभि) तड् (चु०)।

घमस, स स्त्री | घमसा, स पु | (स घर्म >) दे 'उमस'।

घमसान, स पु (अनु) घोर-दारुण-क्रूर, युद्ध सग्राम-रण -समर।

घमाका, स पु (अनु धम) घमिति-शब्द-ध्वनि (पु) प्रहारज शब्द।

घमाघम, स पु (अनु) घमघमध्वनि (पु), घमघमायित, घमघमाशब्द २ लोहमुद्गर घन, शब्द ३ आडंबर, श्री (स्त्री), शोभा।

घमासान, स पु दे 'घमसान'।

घर, स पु (स गृह) दे 'गृह' २ जन्म, भूमि (स्त्री)-स्थान ३ कुल, वंश ४ कार्यालय ५ कोष्ठ, आगार ६ वास, आवेष्टन ७ मूल, कारण ८ गृहरेखा-उदर ९ छिद्र, विलम्।

—आबाद करना, मु, विउद्-वह् (भ्वा उ अ), परिणी (भ्वा प अ)।

—करना, मु, वस् (भ्वा प अ) २ स्थिरीभू।

—का आदमी, मु, विश्वसनीयमनुष्य २ सबंधिन्।

—का न घाट का, मु, निर्गुण, निरर्थक, कुत्सित, अधम २ अस्थिरवास।

—फूंक तमाशा देखना, मु आमोदप्रमादपु स्वधन अपव्ययं (चु)।

—फोड़ना, मु, गृहकलहं जन् (प्र)।

—बसाना, मु, दे 'आबाद करना'।

—बारी, मु, गृहस्थ, गृहिन्।

—में डालना, मु, उपपत्नीत्वेन परिग्रह् (क्र उ से)।

—में पड़ना, मु, उपपत्नी भू।

—वाला, मु, पति २ गृहिन्।

—वाली, मु, पत्नी २ गृहिणी।

—सिर पर उठाना, मु, कोलाहल कृ।

ऊँचा—, मु, उच्च मु-कुल, सद्वंश।

बड़ा—, मु, समृद्धसंपन्न आग्म,कुल २ कारा गारम्।

घरट्ट, स पु (स) घरट्टक २ पेषणी चक्री।

घरणी, नी, स स्त्री (स गृहिणी) गृहपत्नी, भार्या, कलत्रम्।

घरफोरी, स स्त्री (हिं, घर+फोड़ना) गृहभेदिनी वशविनाशिनी।

घराट, स पु, दे 'घरट्ट'।

घराती, स पु (हिं घर) 'बराती' का अनुकरण) (विवाह) वधू-कन्या पक्षीय सम्बंधिन्।

घराना, स पु (हिं घर) वंश कुल, कुलम्।

घरेलू, वि (हिं घर) गृह्य गृह, निर्मित सबंधिन् २ नैज, आत्मीय ३ दे 'पालतू'।

घर्घर, (स पु) गद्गद घर्घर, शब्द स्वन।

घर्घराना, क्रि अ (स घर्घर >) घर्घररव कृ, गद्गद नद् (भ्वा प से), घर्घरायते (ना धा)।

घर्घराहट, स स्त्री (हिं घर्घराना) दे 'घघर'।

घर्म स पु (स) सूर्य, आतप आलोक २ उष्णता, दाह, ताप ३ ग्रीष्म ४ प्रस्वेद। वि, तप्त, उष्ण।

घर्राटा, स पु (अनु) घर्घर, घर्घररव।

घर्षण, स पु (स न), अभ्यंजन, मर्दन २ सघट्ट, समाघात।

घसना, क्रि अ तथा क्रि स, दे 'घिसना'।

घसियारा, स पु (स घास >) घास हारिन्, घासविक्रेतृ (पु) २ घास हृत्, छेदक लावक। (रिन (स्त्री)-घासहारी रिणी इ)।

घसीट, स स्त्री (हिं घसीटना) शीघ्र द्रुत लिखित, लिपि (स्त्री) २ द्रुत शीघ्रलिखित लेख लेखन २ (भूमौ) कर्षणम्।

घसीटना, क्रि स (स घृष्) आ वि-कृष् (भ्वा प अ) बलात् ह (भ्वा उ अ) २ शीघ्र-सत्वर, लिख् (तु प से) ३ बलाद् समाविश् (प्रे)।

घस्सा, स पु, दे 'घिस्सा'।

घहर(रा)ना, क्रि अ (अनु) दे 'गरजना'।

घाई, स स्त्री (स गभस्ति >) अंगुली मध्य, गभस्तिकोणः २ कोदण्डारामघि।

घाई, स स्त्री (हिं घाव) आघात, प्रहार २ छल, कपटम्।

घाऊघप, वि (हिं खाऊ+घप) औदरिक, घस्मर, गृध्नु २ गूढ़चित्त, गुप्तभाव।

घाघ, **घाघ**, वि (एक प्रसिद्ध अनुभवी पुरुष था) बहुदर्शिन् अत्यनुभविन् (नी स्त्री), बहुदृश्वन (वरी स्त्री) २ मायाविन्, कापटिक (की स्त्री) सं पु, जरठ, वृद्ध।

घाघरा, म पु, (म घर्घर) १ सरयूनदी २ दे 'घघरा'।

घाट, म पु (सं घाट) घट्ट, घट्टी, तर, तर स्थान, स्थान २ तीर्थ, अवतार ४ पर्वत ५ दिशा ६ विधि (पु) प्रकार ७ असिधारा।

—घाट का पानी पीना, मु अनेकविकारैर् दृष्टम् भ्रम् (भ्वा प से) ६ अनुभवाति शय प्राप् (स्वा प अ)।

—मारना, मु, प्रतिषिद्धमाहानि आ, नी हृ (भ्वा उ अ.)।

घाटा, म पु (हिं घटना) हानि क्षति (स्त्री), क्षय, अपचय, अत्यय।

—उठाना या पड़ना, मु, वियुज् निहा परिहा (कर्म)।

—भरना, हानिं सम प्रतिसमा, धा (जु उ अ), हानिं म वि परि पुष् (प्रे)।

घाटिया, स पु (हिं घाट) गगापुत्र, तीर्थ पुरोहित।

घाटी, सं स्त्री (हिं घाट) सकट मार्ग, पथमार्ग २ दरी, द्रोणी, उपत्यका।

घात, स पु (स) आ अभि नि, पात, प्रहार २ वध, हत्या ३ अहित, अमगल ४ गुणनफल (गणित)। स स्त्री, सुयोग, सदवसर, सुवेला २ निभृतावस्थिति (स्त्री) ३ छल, उपाय।

—में बैठना, मु, (वधाय लुण्ठनाय वा) मार्गे निभृत मनीष (भ्वा आ से), पथि अव स्कन्द (भ्वा प अ)।

घातक, सं पुं (सं) वधकारिन्, मारक, मारयितृ हन्तृ (पु) २ शत्रु, अरि, ३ वधक, दण्डपाशिक। वि, प्राणहर, अनकर।

घातिनी, स स्त्री (सं) हन्त्री, घातिका, मारयित्री।

घाती¹, सं पु (म घातिन्) दे 'घातक'।

घाती², वि (हिं घात) विश्वासघातिन्, असत्दम्भ २ मायाविन्।

घातुक, वि (सं) नाशक, हिंसक, मारक। (घातुकी स्त्री)।

घात्य, वि (सं) हननीय, हन्तव्य, मारणीय, वधार्ह।

घान, } सं पु { (सं घन)।
घानी, } सं स्त्री { स्थालीचक्रयादिषु सकृत्क्षेपणीया मात्रा।

घाम, सं पु (सं घर्म) सूर्य, आतप आलोक २ सूर्य-ताप दाह।

घामड़, वि (हिं घाम) मूर्ख, अज्ञ, मूढ़, २ अलस, कर्मविमुख ३ घर्म आतप, पीडित (पशु)।

घायल, वि (सं घात >) क्षत, व्रणित, विद्ध, भिन्नदेह, आहत, प्रहृत।

—करना, क्रि सं, व्रण् (चु०), आ-अभि हन् (अ प अ), क्षण् (त उ से), तुद् (तु उ अ)।

—होना, क्रि अ, व उपर्युक्त धातुओं के कर्म रूप।

घार, सं पु (सं) आसेक प्रोक्षणम्, वण निक्षरणम्।

घाल, स पु (म घार >) ऊपर, ग्राहकाय मूल्य विना दत्त वस्तु (न)।

घालक, स पु (हिं घालना) घातक, मारक, २ नाशक, ध्वसक।

घाव, स पु (सं घात) क्षत ति (स्त्री), व्रण, आघात, प्रहार, ईर्म, अरुस् (न)।

—करना, क्रि म, दे 'घायल करना'।

—खाना, क्रि अ, दे 'घायल होना'।

—भरना, क्रि अ, व्रण, रुह् (भ्वा प अ)।

घास, सं स्त्री (सं पु) य(व)वस, यव (वा)-स, शाद, तृणम्।

—पात, स पु (सं घासपत्र) तृणपत्र २ दे 'कूड़ा-करकट'।

—फूस, स पुं, पलाल-ऊ २ दे 'कूड़ाकरकट'।

—काटना या खोदना, मु, व्यर्थ क्षुद्र तुच्छ, कार्य कृ।

घिग्घी, सं स्त्री (अनु) हिक्का, हिध्मा २ गद्गदवाच् (स्त्री), स्खलद्वाक्य, स्वरभग।

—बध जाना, क्रि अ, (भयशोकादिभि) हिक्क् (भ्वा उ से), सगद्गद वद् (भ्वा प से)।

घिघियाना, क्रि अ (हिं घिग्घी) करुण

प्राथ् (चु आ से,), सत्रा प निविद् (प्रे), दे 'गिड़गिड़ाना'।

घिचपिच, स स्त्री (स घृष्टपिष्ट अथवा अनु०) स्थानसकीर्णता, अवकाशाल्पत्वम्। वि०, सकुल, वैदग्ध्यपूर, अस्पष्ट।

घिन, स स्त्री, (स घृणा दे)।

घिनाना, क्रि अ, दे 'घृणा करना'।

घिनावना, घिनौना, वि (हिं घिन) घृणार्ह, गर्हित, गर्हणीय, बीभत्स, अरुचिकर, कुत्सित, उद्वेगकर (-री स्त्री)।

घिया, स पु दे 'कद्दू'।

—कश, स पु दे 'कद्दूकश'।

—तोरी, स स्त्री, महाकोशातकी, हस्तिघोषा महाफला, घोषक, हस्तिपर्णा।

घिरना, क्रि अ (स ग्रहण>) परि, वृ क्षिप् गम् वेष्ट् सु (कर्म) २ एकत्र मिल् (तु प से), सनिपत् (भ्वा प से)।

घिरनी, सं स्त्री (स घूर्णि) १ घूर्णि (स्त्री), घूर्णन, भ्र(-भ्रा)मर २ परिभ्रमण, परिवर्त ३ रज्ज्वावर्तनचक्र ४ दे 'गड़ारी'।

घिसघिस, स स्त्री (हिं घिसना) मान्द्य, दीर्घसूत्रता, कार्यजडता, कालक्षेप।

घिसना, क्रि अ (स घर्षण) जर्जरीभू, जॄ (दि प से), (सघर्षणेन) अपचि क्षि (कर्म), सघृष् (भ्वा प से), सघट (भ्वा आ से)। क्रि स, घृ (प्रे), मृद् (क्र प से या प्र) अभि, अञ् (र प वे), लिप् (तु प अ)। स पु, घर्षण, मर्दन, अभ्यञ्जनम्।

घिसवाना, घिसाना, क्रि प्र व 'घिसना' (क्रि स) के प्रे रूप।

घिसाई, स स्त्री (हिं घिसना) घर्षण, मर्दन २ घर्षणमर्दन, भृत्या भृति (स्त्री)।

घिसाव, स पु / **घिसावट**, स स्त्री (हिं घिसना) सघर्ष, परस्पर, घर्षणमर्दन, समर्द, सघट्ट।

घिस्सा, सं पु (हिं घिसना) घर्ष, सघट्ट, समर्द २ प्रसारण, प्रचोदना ३ बालक्रीडा भेद।

घी, सं पु (स घृत त) आज्य, आ, आयुस्, सर्पिस् (न), पवित्र, अमृत, अभिघार, होम्य, तैजस, नवनीतकम्।

—के चिराग या दिये जलना, मु, सफलमनोरथ, पूर्णकाम-कृतकृत्य, (वि)+भू।

—खिचड़ी होना, मु, प्रगाढ घनिष्ठ, मैत्री अनुराग भू।

पाँचों उँगलियाँ घी में होना, मु, उत्सव वृत् (भ्वा आ से), स था समृद्ध (वि) अस (अ प)।

घीकुँवार, स पु (स घृतकुमारी) कुमारी, तरुणी, गृह-कन्या कन्यका, अजरा, अमरा।

घुँइयाँ, स स्त्री (देश) दे 'कचालू'।

घुँघ(ग)ची, स स्त्री, (स गुञ्जा) गुञ्जिका, रक्तिका, रक्ता, कृष्णला, काक, चिञ्चिका च तिक्ता। २ गुञ्जा-रक्ता-बीज।

घुँघनी, स स्त्री (अनु) भर्जितार्द्रचणकादि।

घुँघराले, वि, दे 'घूँघरवाले'।

घुँघरू, स पु (अनु घुन) घर्घरा रिका, क्षुद्र, घटा घटिका, क्षुद्रिका, कङ्कणी, शीका, किंकिणी २ मञ्जीर र, नूपुर र ३ मरणासन्नस्य कठे घर्घरशब्द।

घुडी, सं स्त्री (स ग्रंथि पु) १ दे 'गाँठ'। २ वस्त्रमय, गड-कुडुप।

घुग्घी, स स्त्री (देश) दे 'पडुक' २ त्रिकोणरूपेण व्यावर्तित कबल।

घुघू, घुघुआ, स पु (सं घूक) दे 'उल्लू'।

घुघुआना, क्रि अ (अनु) घूघू शब्द कृ। उल्लूकवत् घूकवद् रु (अ प से)-क्रुश् (भ्वा प अ)।

घुटकना, क्रि स (अनु) कवल (भ्वा प अ) २ दे निगलना'।

घुटना¹, स पु (स घुट-रघुना>) जानु (न) ऊरु, पर्वन् (न) सधि (पु), अष्ठीवत् (पु न), चक्रिका।

घुटना², क्रि अ (हिं घूँटना) कठ-श्वास रुध् (कर्म)।

घुटना³, क्रि अ (हिं घोटना) चूर्ण, पिष् (कर्म) २ सम्यक पच (कर्म) ३ श्लक्ष्णी भू ४ सख्य जन् (दि आ से) ५ स्निग्धालापे व्याप् (तु आ अ) ६ केश मूलन मुण्डुर् (कर्म) ७ अभ्यस् (कर्म)।

घुटा हुआ, मु धूर्त, दक्ष, विचक्षण।

घुटना, सं पु (स घुट >) घुटनाई, पादायाम।

घुटाई, स स्त्री (हिं घोटना) चूर्णन, पेषण, मर्दन २ श्लक्ष्णीकरण ३ चूर्णन श्लक्ष्णीकरण, भृत्या ४ क्षौर, मुण्डन ५ आवर्तन, अभ्यास ।

घुट्टी, सं स्त्री, दे 'घूँटी' ।

घुड़, स पु (स घोट) घोटक ।

—चढ़ा, स पु, दे 'घुड़सवार' ।

—चढ़ी, स स्त्री, अश्वारूढा (नारी) २ अश्वारोहण वैवाहिकरीतिभेद ३ शतघ्नीभेद ।

—दौड़ स स्त्री, अश्वघोटक चर्या धावन २ जवाश्व जवन, धावन, द्यूतभेद ३ चर्याभूमि (स्त्री) ।

—बहल, स पु, घोटक रथ स्यदन ।

—सवार, स पु सादिन्, तुरगिन्, हय तुरग-अश्व आरूढ रथ ।

—सवारी, स स्त्री, अश्व रोहण कौशल विद्या ।

—साल, स स्त्री (स घोटशाला) मन्दुरा, वाजि अश्व शाला ।

घुड़कना, क्रि स (स घुर्) भर्त्स् (चु आ से) वाचा दंड (चु), अव अधि क्षिप् (तु उ अ) ।

घुड़की, स स्त्री (हिं घुड़कना) अधिक्षेप, क्षेप, वाग्दण्ड, भर्त्सन ना ।

घुणाक्षर, स पु (सं) घुणलिपि (स्त्री), घुणवल्मीकादिभि पत्रकाष्ठादिषु कृता रेखा ।

घुन, स पु (स घुण) काष्ठ-वेधक कीट लेमक

—लगना, क्रि अ, घुणै अद् (कर्म) ।

घुनघुना, स पु (अनु) दे 'झुनझुना' ।

घुन्ना, वि (अनु घुनघुनाना) तूष्णीक, गूढ सद्म, मार (घुन्नी स्त्री) ।

घुप, वि (स कूप >) निबिड सूचीभेद्य (अधकार) ।

घुमड़ना, क्रि अ (हिं घूम+स अटन >) मेघा आकाश आछद (चु) ।

घुमरी, स स्त्री (हिं घूमना) भ्र(भ्रा)मर, भ्रमि घूर्णि, (स्त्री) ।

घुमाना, क्रि स (हिं घूमना) व 'घूमना' के प्रे रूप ।

घुमाव, स पु (हिं (घूमना) परि ,भ्रम, घूर्णि (स्त्री), व्या-परि आ-वर्त ।

घुरघुराना, क्रि अ (अनु) घुरघुरायते (ना धा), घुर् (तु प से) ।

घुलना, क्रि अ (सं घूर्णन >) वि प्र, ली (दि आ अ), द्रवीभू, क्षर्, गल् (भ्वा प से), विद्रु (भ्वा प अ) २ पूतीभू, दुर्गंध (वि) भू, विगल् ३ कृश क्षीणमांस (वि) भू अगौ परिहा (कर्म) । स पु, विलयन, द्रवीभाव, पूतीभवन, क्षय इ ।

घुलने योग्य, वि, विलेय, क्षरण विलयन-शील, विद्राव्य ।

घुलवाना, क्रि प्र } व 'घुलना' के प्रे रूप ।
घुलाना, क्रि स }

घुलाव, स पु } दे 'घुलना' स पु ।
घुलावट, स स्त्री }

घुषित, **घुष्ट**, वि (स) प्रकाशित, प्रकटीकृत, आ-उद् धि, घोषित, प्रख्यापित ।

घुसड़ना, क्रि अ, दे 'घुसना' ।

घुसना, क्रि अ (स कोसन या घर्षण > ?) (बलात्) आ प्र, विश् (तु प अ), (अत) पद कृ अथवा निधा (जु उ अ), आगम् २ निर्, भिद् (रु प अ), व्यध् (दि प अ) । स पु, प्रवेश, आगमन, निर्भेदन इ ।

घुसाना, } क्रि स, व 'घुसना' के प्रे रूप ।
घुसेड़ना, }

घूँघट, स पु (स गुठन >) अवगुठन ठिका, मुखावरक -कम् ।

—काढ़ना, या मारना, क्रि स, अवगुठ् (चु) मुखमाच्छद् (चु) ।

—वाली, स स्त्री, अवगुठनवती ।

घूँघर, स पु (हिं घुमरना) अलक, कुरल, चूर्णकुतल ।

—वाले, वि आकुचित जिह्मी वक्री, भूत, कुतलाकीर्ण, कुरलिन् (प्राय केशों के लिए) ।

घूँट, स पु (अनु घुट घुट) गडूषमात्रं पेय, चलु, च(चु)लुक ।

—लेना या पीना, क्रि स, आचम् (भ्वा प से) उपस्पृश् (तु, प अ), अल्पश इषत् पा (भ्वा प अ) ।

घूँटना, क्रि स, दे 'घूँट लेना' ।

घूँटी, स स्त्री (हिं घूँट) शिशुभेषज, बालौषधम् ।

घूँस, स स्त्री, दे 'घूस' ।

घूँसमघूँसा, सं पुं (हिं घूँसा) मुष्टीमुष्टि (अव्य), मुष्टियुद्ध, बाहूबाहवि (अव्य) ।

घूसा, स पु (हिं घिस्सा) मुष्टि (पु स्त्री), मुष्टी, बद्धमुष्टि २ मुष्टि, घात प्रहार ।
—लगाना या मारना, क्रि स, मुष्टिना प्रह (भ्वा उ अ) तड (चु)।
घूआ, स पु (देश) कासशरकाण्डादीना पुष्पम् २ कर्दमस्थकीटभेद ३ खर्वाद्यिद्रम्।
घूक, सं पु (स) दे 'उल्लू'। (घूकी स्त्री)
घूघ, स पु, दे 'रोद'।
घूघू, स पु (स घूक) दे 'उल्लू' २ जन, मन्दमति ।
घूम, स स्त्री, दे 'घुमाव'।
घूमना, क्रि अ (स घूर्णन) परि भ्रम्-अ (भ्वा प से), स विन्चर (भ्वा प से) २ वि-धा आ परि वृत् (भ्वा आ से), चक्रवत् भ्रम्, वि परि घूर्ण (तु प से) ३ नि प्रतिनि प्रत्या वृत्, पुनर्, या इ (अ प अ)। स पु, परि भ्रमण-अटन, परिवर्तन, घूर्णन, प्रतिनिवर्तन, चक्र, आवर्त गति (स्त्री)।
घूमने वाला, वि, पर्यटन भ्रमण शील, चक्रावर्तिन्, चक्रगति, परिवर्तिन्, परिभ्रमिन्।
घूमघूमेला, वि (हिं घूम घूम) दे 'घूमनेवाला'।
घूरना, क्रि स (स घूर्णन>) वक्राक्षेण तिरक्साचि ईक्ष् (भ्वा आ से)-दृश (भ्वा प अ) २ सक्रोप निर्निमेष अवलोक (भ्वा आ से चु)।
घूराघारी, स स्त्री (हिं घूरना) कटाक्ष, कटाक्ष-अवेक्षण, दर्शनम्, अपाग-वीक्षणम् सवलोकनम्।
घूस, स स्त्री (हिं घुसना या घूँसा) उत्कोच, उपायनम्।
—खोर, स पु (हिं +फा) उत्कोचग्राहिन्।
घृणा, स स्त्री (स) अरुचि, कुत्सा, गर्हा, जुगुप्सा, वि,द्वेष निर्वेद ।
घृणित, वि (स) अरुचिकर-उद्गारक (—करी स्त्री) २ कुत्सित, गर्ह्य, बीभत्स।
घृत, स पु (स न) दे 'घी'।
घेरना, क्रि स (ग्रहण>) परिवेष्ट (भ्वा आ से, प्रे), परिवृ (स्वा उ से म), पार इ (अ प अ) २ अव-उप, रुध् (रु उ अ)। स पु, परिवेष्टन, परिवारण, उपरोध इ ।
घेरने वाला, स पु, परिवेष्टक, उपरोधक ।
घेरा, स पु (हिं घेरना) परिधि (पु), परि, वेष वेश-ण्ड, मण्डल २ प्राचीर, प्राकार, वेष्टन, वरण ३ परिवृतस्थान ४ मण्डल ५ अव उप, रोध ।
—डालना, मु, परिवेष्ट् (प्रे , दे । 'घेरना' (२)।
घेवर, स पु (स घृतवर) घृतपूर, धार्मिक ।
घैया, स स्त्री (हिं घी) स्तननिर्गत-दुग्धधारा २ प्रत्यग्र-दुग्धनवनीतम्।
घोंघा, स पु (देश) शम्बु(बू क), कोष कवच-स्थ, कीटभेद २ शुक्ति (स्त्री)। वि, जड, स्थूलबुद्धि।
घोंटना, क्रि स, दे 'घोटना'।
घोंपना, क्रि स (अनु धुप) प्र नि विश् (प्र) निर्भिद्-व्यध (प्रे)।
घोंसला, स पु (स कुशालय अथवा हिं घुसना) कुलाय, नीड-ड, खगालय, पक्षिगृहम्।
घोख(क)ना, क्रि स (स घोषण>) कण्ठस्थ (वि) कृ, स्मृतिपथ नी (भ्वा उ अ), अभ्यस (दि उ से)।
घोट, घोटक, स पु (स) दे 'घोड़ा'।
घोटना, क्रि स (स घोटन>) क्षुद् पिष् (रु प अ), चूर्ण-खण्ड (चु), मृद् (क्र प से) २ मृज् (चु), क्षुर् (तु प से) ३ घर्षणेन श्लक्ष्णीकृ ४ गलहस्तयति (ना धा), गल निष्पीड्य व्यापद् (प्रे), कण्ठ निष्पीड (चु)५ दे 'घोखना'।
स पु पेषण, मर्दन, मुण्डन, श्लक्ष्णीकरण इ । २ मुस(श)ल ल, (पेषण) दण्ड ।
घोटनी, स स्त्री (हिं घोटना) मर्दनी, मुसलकम् ।
घोटवाना, क्रि प्र, व, 'घोटना' के प्र रूप।
घोटा, स पु (हिं घोटना) मार्जक, घर्षक २ मार्जितवस्त्र ३ घर्षण ४ मुसल, दण्ड ५ पेषण ६ क्षौर, वेशवपनम्।
घोटाला, स पु (देश) दे 'गड़बड़' स पु ।
घोड़साल, स पु (स घोटशाला) दे 'घुड के नीचे 'घुड़साल'।
घोड़ा, स पु (स घोट) घोटक, तुरग, तुरग, गम, अश्व, वाह, हय, वजिन्, अर्वन् (पु),

सैंधव, सप्ति (पु), गंधर्व, जवन । २ चतुरंग शार शारि (पु) ३ अश्वचक्रयोग ।
—गाड़ी, सं स्त्री, अश्व हय, रथ शकट ।
घोड़े बेच कर सोना, मु गाढ निद्रा स्वप् (अ प अ)-शी (अ आ, से,)-प्रविश (तु प अ)।
घोड़िया, स स्त्री (हिं घोड़ा) घोटक, अश्वक, लघु अश्व घोटक २ नागदन्त, न्तक ।
घोड़ी, स स्त्री (स घोटी) अश्वा, वडवा, तुरगी वाजिनी वामिनी, घोटिका २ वडवा रोहण वैवाहिकरीतिभेद ३ विवाहगीतिका ।
—चढ़ना, मु, वरो वटवामारुह्य वधूगृह गम् ।
—टप्पा, स पु बालक्रीडाभेद, घोटीवल्गनम् ।
घोणा, स स्त्री (स) नासा, नासिका, गन्ध वहा । २ शूकर अश्व प्रलम्बमुखलम्बास्यम् । ३ छिका घुन-आवर्द वाल्तकभेद ।
घोणी, स पु (स गिन्) शूकर, वराह, रोमश ।
घोर, वि (स) भयंकर, भीषण, भीम २ दुर्गम, गहन निविड ३ परुष, कर्कश, ४ गाढ, दृढ ५ निकृष्ट, अधम ६ अत्यन्त, अत्यधिक ।
—निद्रा, सं स्त्री (सं) गाढनिद्रा, सुनिद्रा ।
घोलघुमाव, सं पु, दे 'टालमटोल' ।
घोलना, क्रि सं (हि घुलना) विद्रु विली गल (प्रे)।
घोलमेल, सं पु (हिं घुलना + स मेल >) मिश्रण, संसर्ग, सम्पर्क ।
घोष, सं पु (सं) शब्द, नाद, रव, स्वन, ध्वनि (पु) २ गर्जित, स्तनित ३, आभीर वसति (स्त्री) ४ आभीर, गोप ५ गोष्ठ, गोशाला ६ तट टी ७ बाह्यप्रयत्नभेद (व्या)।
घोषणा, स स्त्री (स) प्रख्यापन, ज्ञापन, प्रकाशन २ घोष,-षण, उत्क्रीर्तन ३ नाद, ध्वनि, शब्द ।
—पत्र, स पु (स न) विज्ञप्ति (स्त्री), सूचनापत्रम् ।
घोसी, स पु (स घोष >) यवन, गोप आभीर ।
घ्राण, स पु (सं न) नासिका, नासा, नसा २ आघ्राण, गन्धग्रहण ३ आघ्राणशक्ति (स्त्री)।
—इन्द्रिय, सं स्त्री (स न) दे, 'घ्राण' (१ ३)

ङ

ङ, देवनागरीवर्णमालायाः पञ्चमो व्यञ्जनवर्ण | ङकार ।

च

च देवनागरीवर्णमालायाः षष्ठो व्यञ्जनवर्ण, चकार ।
चङ्क्रमण, स पु (स न) चङ्कम -मा, परि, भ्रमण अटनम्, विहरणम्, विचरणम् । शनै शनै मन्दगत्या वा गमनम् ।
चंग[1], स स्त्री (फ) डिण्डिमप्रकार, चङ्ग २ नस स लखर ३ गनीफा क्रीडाया रगभेद ।
चंग[2], स स्त्री (स च चंद + गम् >) दे 'गुड्डी' (१)।
—पर चढ़ाना, मु, अनुकूलयति (ना धा) २ अभिमानिनं विधा (जु उ अ)।
चंगा वि (स चङ्ग) सुस्थ, स्वस्थ, नीरोग, निरामय २ शोभन, सुन्दर ३ निर्मल, शुद्ध ।
—करना, क्रि स, व्याधे मुच् (प्रे), शम् (प्रे शमयति)।
—भला वि, कुशलिन्, नीरुज २ भद्र, अच्छ ।
चंगुल, स पु (हिं चौ = चार + अंगुल) नख स नखर -र, २ धरण, ग्रहण, हस्तग्राह ।
चंगेर री, सं स्त्री (स चङ्गेरिका) स्थाल्याकार करण्ड २ पुष्पकरण्डोल, पुष्पकरण्ड ३ भाजन, आधार ४ चमपुट, दृति (पु) ५ हिंदोल, दोल ।
चंगोली, स स्त्री, दे 'चंगेरी' ।
चंचरीक, सं पु (स) भ्रमर, षट्पद ।
चंचल, वि (स) चल, चलाचल, चपल, तरल, लोल, प(पा)रिप्लव, चटुल, २ व्या पर्या समा, कुल, अशान्त, अनिर्वृत ३ अधीर, अस्थिर, चलचित्त, लोलबुद्धि ४ विनोदिन्, क्रीडापर । स पु, वायु २ कामुक ।
चंचलता, स स्त्री (स) चापल्य, चाञ्चल्य,

लौल्य, चटुलता, तरलता २ कुचेष्टा हिन, मलौल्य, लीलापरता।
चचला, स स्त्री (सं) लक्ष्मी (स्त्री), इंदिरा २ विद्युत (स्त्री), सौदामिनी। वि, स्त्री, अशाना, चलचित्ता।
चचलाहट, सं स्त्री, दे 'चचलता'।
चंचु, सं स्त्री (सं) चञ्चुका, चञ्चू (स्त्री), चोंटी।
चट, वि (सं चण्ड>) चतुर, दक्ष २ धूर्त, मायाविन्।
चड, वि (स) क्रूर, रौद्र (-द्री स्त्री), दारुण, भैरव, (-वी स्त्री), भीषण, उग्र २ कोपिन्, क्रोधिन्, सरंभिन्, अमर्षिन् ३ परुष प्रखर, तीव्र, तीक्ष्ण, घोर ४. बलवत्, दुर्दमनीय ५ कठिन, कठोर।
—कर, सं पु (सं) सूर्य, चण्डांशु।
—कौशिक, स पु (सं) (१३) मुनिनाटक सर्प, विशेष।
चडता, सं स्त्री (सं) उग्रता, भीषणता, क्रूरता २ तीक्ष्णता, प्रखरता, तीव्रता।
चडा, सं स्त्री (सं) रुद्राणी, चडा, दुर्गा, २ नायिकाभेद ३ शतपुष्पा, मधुरा। वि स्त्री (स) निष्ठुरा, कर्कशा, उग्रा, कठोरा।
चडाल, सं पु (स) चाडाल, मातग, दिवाकीर्ति (पु) निषाद, श्वपच च (पु), पुक्कस-श प। वि क्रूर-पाप, कर्मन् २ दुष्कुलीन, हीन,-जाति वर्ण।
—चौकडी, सं स्त्री, चण्डालचतुष्क दुष्ट चतुष्टयम्।
चडालिन, चडालिनी, चडानी, स स्त्री (स चडाली) चाण्डाली, मातगी, निषादी २ पापिनी, दुष्टा।
चडिका, स स्त्री (स) दुर्गा २ विवादशीला नारी ३ गायत्रीदेवी।
चंडी, चडा, स स्त्री (सं) पार्वती २ क्रोधिनी नारी ३ कलहप्रिया कामिनी।
चडू, स पु (स चड तीक्ष्ण>) अहिफेन निर्मितमादकद्रव्यभेद, चड्ड (पु)।
—खाना, सं पु (हिं+फा) चडू, गृह-शाला।
—बाज़, सं पु (हिं+फा) चडूप, चडू, पायिन्-सेविन्।

चडूल, सं पु (देश) भ(भा)रद्वाज, मारय, व्याघाट।
चद, सं पु (सं चद्र) दे 'चद्र'। २ हिंदीछंदविशेष।
—मुखी, सं स्त्री (सं चद्रमुखी) शशिवदनी, चद्रानना।
चद, वि (फा) दे 'कुछ'।
चदन, स पु (स पु न) मलयज, श्रीखण्ड, गधसार, सुगध, सर्पावास, शीतल, गधाढ्य, शीतगध। २ चदनकाष्ठ ३ चदनलेप।
—लाल, रक्त-कु,चदन, रक्त पत्राङ्गम्।
—सफेद, नैल्पर्णिक, श्वेतचदनम्।
चदला, वि पु (हिं चाद = खोपडी) खल्वाट, विकेश (-शी स्त्री)।
चँदवा, स पु (हिं चद) उल्लोच, वितान आच्छादन, पिधानम्।
चदवा सं पु (सं चद्रक) बर्हनेत्र मेचक २ वर्तुलखण्ड ह ३ मत्स्यभेद।
चदा स पु (फा चद) धनसग्रहयता, आर्थिकसाहाय्य २ धनभाग अर्धांश।
२ स्वांश, उद्धार।
—करना, क्रि स, अर्धांश सग्रह (क् प से)।
—देना, स्वभाग दा (जु उ अ)।
चँदिया, सं स्त्री (हिं चांद) शार्ष शिरो मस्तक, मध्य, मुट २ कपाल ल, शिरो स्थि (न) ३ (अय-) रोटिका।
चदिर, सं पु (स) चद्र सुधांशु २ गज द्विप ३ कर्पूर र, घनसार।
चद्र, स पु (स) साम, शशांक, शशिन्, विधु रजनी निशा शर्वरी क्षपा, कर नाथ पति, मृगाक, कलानिधि (पु), ग्लौ (पु), हिम शीत शुभ्र सुधा,-अंशु दीधिति (पु), इंदु (पु), चदमस् (पु), शशधर। २ जल ३ सुवर्ण ४ कर्पूर ५ 'एक' इति सख्या ६ चद्रक, बहनेत्रम्।
वि, आह्लादक, आनदप्रद २ सुदर।
—आनन, वि (स) दे 'चद्रमुख'।
—कला, सं स्त्री (सं) चद्र, रेखा लेखा।
—कांत, सं पु (सं) चद्र, मणि (पु)-रत्न-उपल।
—किरण, सं पु (सं) चद्रपाद, शशिकर।

—ग्रहण, सं पु (सं न), विधु इन्दु-चद्र, ग्रहण ग्रह ग्राम -उपराग ।
—प्रभा, स स्त्री (स) दे 'चद्रिका'।
—विंदु, स पु (स) अनुनासिकचिह्नम् (ँ)।
—भागा, पु स्त्री (स) चद्रभागी, चद्रिका, पचनदप्राते नदीविशेष ।
—मुख, वि (स) चद्रानन, विधु शशि, वदन । (मुखी (स्त्री) = चद्रमुखा, चद्र शशि विधु वदना वदनी आनना आननी)।
—रे(ले)खा, स स्त्री (स) दे 'चद्रकला'।
—वश, स पु (स) सोमकुलम्।
—शाला, स स्त्री, शिरोगृह, वडभी ।
—शेखर, स पु (स) चद्र, मौलि (पु)- भूषण धर, शिव ।
—हार, स पु (स) वर्तुलस्वर्णखड्हार ।
चद्रक, स पु (सं) १ 'चद्र' २ चद्रिका, कौमुदी ३ कर्पूर २ ४ बर्हनेत्र, चद्रिका ५ मत्स्य -खम् ।
चद्रमा, सं पु [स चद्रमस् (पु)] दे 'चद्र'।
चद्रहास, स पु (स) असि, खड्ग २ रावणखड्ग ।
चद्रातप, स पु (सं) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना कौमुदी २ दे 'चँदवा'
चद्रिका, स स्त्री (स) ज्योत्स्ना, शशि चद्र, प्रभा-काति (स्त्री) कौमुदी, चद्र -आलोक प्रकाश २ चद्रक, बर्हनेत्र (१ ४) स्थूल सूक्ष्म, एला।
—उत्सव, स पु (स) शरत्पूर्णिमोत्सव ।
चद्रोदय, स पु (स) चद्र सोम,-उदय उद्गम -उद्गमनम्।
चपई, वि (हिं चपा) चपक पीत, वर्ण-रग।
चपक, स पु (स) (पौधा) चाम्पेय, दीप स्वर्ण स्थिर पीत, पुष्प पुष्पक, शीतल, सुभग, भृङ्गमोहिन् वनदीप । (फूल) हेमपुष्प, चपक इ । (स न) कदलीफलभेद ।
चपा, स पु (स 'चपक' दे)।
—कली, स स्त्री, स चपककलिका, चपक कोरक २ कठाभरणभेद, चपकवल्ली।
चपत, वि (स चप्) तिरो अन्तर्, हित, लुप्त, गूढ अपसृत।
चपू, स पु (स स्त्री) गद्यपद्यमय काव्यम्।
चमेली, स स्त्री, दे 'चमेली'।
चमच, स पु, दे 'चमचा ।
चँवर, सं पु (सं चमर) चामरम्।
चक, सं पु (स चक्र) वृहत्क्षेत्र, महाभूखड ट २ ग्रामटिका, लघुग्राम ३ स्थाग, मडल, चक्र ४ पट्ट, पट्टोलिका, भूमिकरग्रहणव्यवस्थापक पत्रभेद ।
चकई, स स्त्री, दे 'चकवी'।
चकई, स स्त्री (हिं, चक) •चक्रकी, क्रीडनकभेद । वि, गोल, वर्तुल।
चकचौंध, स स्त्री, दे 'चकाचौंध'।
चकचौंधना, क्रि अ,, दे 'चुँधियाना'।
चकछूँदी, स स्त्री, दे 'छछूँदर'।
चकत्ती, सं स्त्री (स चकवती >) वस्त्र-चर्म, खड -खड शकल -शकलम्।
बादल में-लगाना मु, असभव साध् (भ्वा प अ)।
चकत्ता, स पु (स चक्रवर्त >) त्वक्तिलक क, चर्म, लाछन चिह्न । २ दतक्षतम्।
—भरना या मारना, मु, दश् (भ्वा प अ)।
चकनाचूर, वि, (हिं चिकना + स चूर्ण णि<) सुचूर्णित, शकली चूर्णी, कृत भूत, सूक्ष्मखडश कृत २ भृशश्रात, अति, क्लात आयस्त।
—करना, क्रि स, चूर्ण् (चु) खडश भज (इ प, अ)-क्षुद् (चु आ से)।
—होना, क्रि, अ, अणुश क्षुद-चूर्ण् भज् (कर्म)।
चकपक, वि (स चक >) चकित, विस्मित २ सभ्रान्त, व्यामूढ।
चकपकाना, क्रि अ(हिं चकपक) दे 'चौंकना'।
चकम(मा)क, स पु (तु) अग्निग्रावन् (पुं) पावकप्रस्तर ।
चकमा, स पु, दे 'धोखा'।
चकराना, क्रि अ, (स चक्र>) (शीर्ष) भ्रम् (भ्वा दि प से), घूर्ण् (भ्वा आ से तु प से,) २ व्यामुह् (दि प व), आकुली भू १ चकित (वि) + भू। क्रि स, चकित (वि) + कृ।
चकरानी, स स्त्री (फा चाकर) सेविका, परिचारिका।
चकरी, स स्त्री (स चक्री) पेषणी, पेषण, यन्त्र चक्र २ चक्री, पट्ट पट्ट ३ दे 'चकई'।
चकला, स पु (स चर्ष>) चमय

वेश्यावीथी, गणिकाहट्ट ३ दे 'जिला'। वि, विस्तीर्ण, परिणाहवत्।

चकलाना, कि-स प्रष्ट विस्तृ (प्रे०), प्रथ (चु)।

चकली, सं स्त्री (हिं चकला) चक्री दे 'गराडी' २ चक्री, चक्रिका, गोलपट्टिका, घर्षणी।

चकल्लस, सं स्त्री (अनु० चक) कलह, विवाद २ परिहास, विनोद, कौतुकम्।

चकवा, स पु (स चक्रवाक) कोक, चक्र, रथाग-आह्वय नामक, द्वंद्वचारिन्, कामिन्, कामुक।

चकवी, स स्त्री (हिं चकवा) चक्रवाकी, कोकी, चक्री, रथागनाम्नी इ।

चकाचक, स स्त्री (अनु) दे 'धचाधच' वि, (स चक्=तृप्ति) सम्यक सिक्त, परिपूर्ण। कि वि, भृश, भूरि प्रचुर (सब अव्य)।

चकाचौंध, स स्त्री (स चक्=चमकना, चौ=चारों तरफ, अध>) चाकचक्येन नेत्रतेज प्रतिघात, अतिशयदीप्त्या दृष्टेरस्थैर्यम्।

चकित, वि (स) विस्मित, आश्चर्यान्वित, विस्मयाकुल, साश्चर्य, विस्मय-उपहृत-अन्वित। २ सभ्रात, व्यामूढ, व्याकुल, ३ सशंक, त्रस्त।

चकोटना, कि स, (हिं चिकोटी) अङ्गुल्य ग्रण पीड् (चु)।

चकोतरा-रा, स पु (स चक्र>) (वृक्ष) मधुकर्कटी, मातुलुङ्ग, सुगधा, सदाफल, महाजम्बीर। (फल) मधुकर्कटिक, मातुलुगम् इ।

चकोर, स पु (स) कौमुदीजीवन, चद्रिकापायिन्।

चकोरी, स स्त्री (स) चद्रिकापायिनी।

चक्कर, स पु (स चक्र) रथाग, मडल २ गोल ल वृत्त वलय य ३ वात-अ वर्त्त भ्रम, वात्या ४ जल आवर्त्त, जलगुल्म। ५ उभयसमव, विकल्प ६ सभ्रम, व्यामोह ७ कृच्छ, सकट ८ कौटिल्य, वक्रत्व ९ पर्यटन, वि-आ वर्त १० भ्रमि घूर्णि (स्त्री), भ्रमरन्।

—खाना, मु, परिभ्रम् (भ्वा दि प से), घूर्ण् (तु प से)।

—मारना, मु, विचर् पर्यट (भ्वा प से)।

—में आना, मु, कृच्छ्रे पत् (भ्वा प से), सकटे मस्ज् (तु प अ)।

—में डालना, मु, कृच्छ्रे-सकटे, पत् मस्ज् (प्रे)।

चक्का, स पु (स चक्र) दे 'चक्कर' (१, २) ३ बृहद्वर्तुलखड ४ इष्टक प्रस्तर, राशि (पु)।

चक्की, स स्त्री (स चक्री) यन्त्रपेषणी, दे 'चकरी' (१-२) ३ जानुफलकम्।

—पीसना, कि स, चक्र्या पिष् (रु प अ)-क्षुद् (रु उ अ) चूर्ण् (चु)। मु, घोर अत्यधिक परिश्रम् (दि प से)-उद्यम् (भ्वा प अ)।

चक्कू, स पु दे 'चाकू'।

चक्र, स पु (स न) दे 'चक्कर' (१-४)। ५ तैलपेषणी ६ कुलाल-कुम्भकार-चक्र पट्ट ७ अस्त्रभेद ८ गण, समूह।

—धर, स पु (स) }
—धारी स पु (स रिन्) } विष्णु, चक्रभृत्।
—पाणि, स पु (स) }

—वर्ती,—स पु (स तिन्) राजाधिराज, मडलेश्वर, सम्राज् (पु), अधि, राज ईश्वर।

—वाक, सं पु (स) दे 'चकवा'।

—वृद्धि, स स्त्री (स) चक्रवाद्धष्यम्।

—व्यूह, स स (स) मडलाकार सैन्य सनिवेश।

—हस्त, स पु (स) विष्णु।

चक्राक स पु (स) (भुजादिषु) चक्र, चिह्न-लक्षणम्-अभिज्ञानम्।

चक्रांकित, वि (स) चक्रचिह्नयुक्त, सचक्र चिह्न। स पु वैष्णवसम्प्रदायभेद।

चक्राकार, स पु (स) गोल, मडलाकृति।

चक्री, स पु (स क्रिन्) चक्र-धर धारिन् २ विष्णु ३ कुलाल ४ गुप्तचर ५ तैलिक, तैलिन् ६ सर्प ७ चकवाक ८ चक्रवर्तिन्।

चक्षु, स पु [सं चक्षुस् (न)] नेत्र, नयनम्।

चखना, कि स (स चषण) आ, स्वाद् (भ्वा आ से) चष् (भ्वा उ से), रस् (चु), रस परीक्ष् (भ्वा आ से), रसनया स्पृश् (तु प अ)।

स पु, आस्वादनं, चषण, रसन, ईषद्दशनम्।

चखाना, क्रि प्रे, व 'चखना' के प्रे रूप ।
चगलना, क्रि स (अनु चग>अथवा चर्वण+गिलन>) क्षुधा विना भक्ष् (चु)।
चचा, सं पु दे 'चाचा'।
चची, स स्त्री, दे 'चाची'।
चचेरा, वि (हिं चचा) पितृव्यसंबंधिन् ।
—भाई, स पु, पितृव्यपुत्र, पितृव्यज ।
चचेरी बहिन, स स्त्री, पितृव्यपुत्री, पितृव्यजा।
चचोड़ना, क्रि स (अनु) दंतै निपीड्य आ,-चूष (भ्वा प से), बलवत् स्तन्य धे (भ्वा प अ)।

चट, क्रि वि / चटपट, „ / चटसे „ } (स झटिति) क्षणन, क्षण निमेष,-मात्रेण, सपदि, द्राक्, अजस्रा, क्षणात् सद्य, एव, तत्क्षण-त्या-गन।

—करना, मु, अशेष निगल् (भ्वा प से) २ परद्रव्यमात्मसात् कृ।
—पट करना, क्रि अ, त्वर् (भ्वा प से), आशु कृ।
चटक, स स्त्री (स चटुल>) शोभा, श्री कांति द्युति-दीप्ति (स्त्री)।
—मटक, स स्त्री, प्रसाधन, अलंकरण, मंडन २ हावभावा, विलसित, विलास ।
चटक(ख)ना, क्रि अ (अनु चट) स्फुट् (तु प से), द्विभज् भिद् (कर्म) वि, दल् (भ्वा प से)। स पु, चपेट टिका।
चटकनी, स स्त्री (अनु चट) कील ल, अर्गल, तीलकम् ।
चटकाना, क्रि स (हिं चटकना) व 'चटकना' के प्रे रूप २ अंगुली स्फुट् (प्रे)।
जूतियाँ— मु, व्यर्थं दारिद्र्येण वा भ्रम् (भ्वा दि प से)।
चटकारा वि दे 'चटकीला' २ चपल, चचल।
चटकीला, वि (हिं चटक) भासुर, उज्ज्वल प्रभावत् २ चित्र, नानावर्ण ३ दे 'चटपटा'।
चटनी, स स्त्री (हिं चाटना) अवलेह, उप-अव,-दंश, व्यंजन, उपस्कर ।
चटपटा, वि (हिं चाट) स्वादु, सुरस, सरस, रुच्य, रुचिकर २ तीक्ष्ण तिक्त।
चट(टा)पटी, स स्त्री (हिं चटपट) त्वरा, तूर्णि (स्त्री), शीघ्रता, क्षिप्रता। २ उत्सुकता आकुलता।
चटर्जी, स पुं (व) चट्टोपाध्याय, वंगप्रांतीयब्राह्मणभेद ।
चटवाना, क्रि प्रे, व 'चाटना' के प्रे रूप।
चटशाल, चटसार-ल, स स्त्री, (हिं चट्टा=चेला+स शाला) पाठशाला, विद्यालय।
चटाई, स स्त्री (स कट ?) किलिंजक, किलिंज, तृणपूली, पादपाशी, आस्तर ।
चटाक, चटाका-खा, स पु (अनु) विराव, सशब्द, भग स्फोटन, परुषस्वन, चटाक, शब्द ध्वनि (पु)।
चटाचट, स स्त्री (अनु) चटपटा,-शब्द नाद, चटचटायित, चटचटाद्,-कार -कृति (स्त्री) क्रमम्।
चटाना, क्रि प्रे, व 'चाटना' के प्रे रूप।
चटुल, वि (स) चपल, चपक, लोल २ सुंदर।
चटोरा, वि (हिं चाटना) अघर, घस्मर, अत्याहारिन्, बहुभोजिन् २ स्वादरस प्रिय लोलुप, जिह्वालोल।
चटोरपन, स पु (हिं चटोर) घस्मरता, औदरिकता २ स्वादलोलुपता, जिह्वालौल्यम्।
चट्टा, स पु (स चेट>) छात्र, शिष्य ।
—बट्टा, स पु (हिं चट्टू+बट्टा) क्रीड नकसमूह ।
एक ही थैली के चट्टे बट्टे, मु समस्वभावा तुल्यशीला मानवा ।
चट्टान, स स्त्री (हिं चट्टा=चकत्ता) शिलोच्चय, स्थूलशिला, शैल, महाप्रस्तर ।
चट्टी[1], स स्त्री (अनु चटचट) पादत्र, पादुका, पादू (स्त्री)।
चट्टी[2], स स्त्री (हिं चौंटा) हानि-क्षति (स्त्री) २ दंड, अपकारानुद्धि क्षतिनिष्कृति (स्त्री)।
चट्टू, स पु (हिं अनु चट) पाषाणमय वृहदुदू(लू)खलम्।
चड्डा, स पु (देश) जघामूल करमध्य (पुं) विदूषक । वि मदबुद्धि, मूर्ख।
चढ़ना, क्रि, अ (स उच्चलन) उद्-उत्-आ (अ प अ), उपरि उद्, गम्, अधि-आ रुह् (भ्वा प अ), अधिकम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) २ उत्था (भ्वा प अ), समुत्था (भ्वा आ अ) ३ सं,-कृप् (दि

प से), उप प्र-च्यी (कर्म) ४ आक्रम्, अभिद्रु-अवस्कन्द् (भ्वा प अ) ५ उत्पत् (भ्वा प से), उड्डी (भ्वा आ से) ६ उपहारी-उपायनी-कृ (कर्म), उपहृ निवप् (कर्म) ७ प्रवृद् (भ्वा आ से)। सं पु उदयन, उद्गमन, अधिरोहण, उत्थान, आक्रमण, उड्डयन इ।

चढ़ने योग्य, वि उदेतव्य, आरोहणीय आक्रमणीय।

चढ़ने वाला, सं पु उदेतृ-अधिरोढ़-अभिद्रावक।

चढ़ा हुआ, वि, उदित, उद्गत, अधिरूढ, आक्रान्त।

चढ़वाना, क्रि प्रे, व 'चढ़ना' के प्रे रूप।

चढ़ाई, स स्त्री (हिं चढ़ना) उद्गमन, आरोहण २ उद्गम, उदय ३ आरोह ४ आक्रम, अवस्कन्द।

चढ़ाउतरी, स स्त्री (हिं चढ़ना + उतरना) असकृत् आरोहणावरोहण-ण।

चढ़ाउपरी, स स्त्री (हिं चढ़ना + ऊपर) प्रतिस्पर्द्धा, अहपूर्विका।

चढ़ा चढ़ी, स स्त्री (हिं चढ़ना) दे 'चढ़ा उपरी'।

चढ़ाना, क्रि स, व 'चढ़ना' के प्रे रूप।

चढ़ाव, स पु (हिं चढ़ना) आरोह, उद्गम, उत्थान २ वृद्धि (स्त्री), उपचय।

—उतार, स पु आरोहावरोहौ, उद्गमावगमौ।

चढ़ावा, स पु (हिं चढ़ाना) उपहार, उपायन, उत्सर्ग, बलि (पु) २ दे 'बढ़ावा'।

चढ़ैत, स पु (हिं चढ़ना) आ अधि रोहिन्, रोहक-रोढ़।

चढ़ैता, स पु, (हिं चढ़ना) हय-अश्व-आरोह आरोहिन्, सादिन्, तुरगिन्।

चणक, स पु (स) दे 'चना'।

चतुःशाल, स पु (स न) शरीर, देह, काय, तनु-नू (स्त्री)

चतुरंग, स पु (स न) अक्षक्रीडाभेद २ चत्वारि सेनांगानि (हस्त्यश्वरथपदातय) इति ३ चतुरंगिणी सेना। वि, अंगचतुष्टयवत्।

चतुरंगिणी, स स्त्री (स) हस्त्यश्वरथपदाति रूपिणी सेना। वि स्त्री, अंगचतुष्टयवती।

चतुर, वि (सं) निपुण, दक्ष, प्रवीण, कुशल, विचक्षण, विशारद २ धीमत्, बुद्धिमत्, प्रज्ञ, प्राज्ञ ३ कापटिक-छाद्मिक [की (स्त्री)] कितव, धूर्त।

चतुरता, सं स्त्री (सं) नैपुण्य, दाक्ष्य, कौशल, प्रावीण्य २ बुद्धिमत्त्व, प्राज्ञता ३ कैतव, कापट्य इ०।

चतुराई, सं स्त्री, दे 'चतुरता'।

चतुरानन, स पु (सं) चतुर्मुख, ब्रह्मन् (पु)।

चतुर्थ, वि (स) तुर्य, तुरीय।

चतुर्थी, वि स्त्री (सं) तुर्या, तुरीया २ पक्षस्य तुरीया तिथि ३ दे 'चौथा'।

चतुर्दिक्, स पु, दे 'चतुर्दिश'।

चतुर्दिश, सं पुं (स न) दिक्चतुष्टयम्, चतुर्दिक्समूह। क्रि वि, चतुर्दिक्षु, सर्वत, समन्तत, विश्वत, समतात्, सर्वत्र (सब अव्य)।

चतुर्भुज, वि (स) चतुर्बाहु, चतुर्हस्त २ चतुष्कोण, चतुरस्र। स पु (सं) विष्णु २ चतुष्कोण, चतुरश्र-स्र ३ चतुर्भुज, वर्ग, सम, चतुर्भुज चतुरस्र।

चतुर्मुख, स पु (स) दे 'चतुरानन'। क्रि वि, सर्वत, परित, समतात् (सब अव्य)।

चतुर्युग, स पु (स न) युग-चतुष्क चतुष्टयम्।

चतुर्युगी, स स्त्री (सं) दे 'चतुर्युग'।

चतुर्वर्ग, स पु (सं) धर्मार्थकाममोक्षा।

चतुर्वर्ण, सं पु (स) ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रा, चातुर्वर्ण्य, वर्ण-चतुष्टय चतुष्कम्।

चतुष्कोण, वि (स) चतुरस्र, चतुरश्र, चतुर्भुज २ सम, चतुर्भुज-चतुरश्र। स पु (सम-) चतुर्भुज-चतुरश्र।

चतुष्टय, स पु (स न) चतु सख्या, चतुष्क, चतुर्वस्तुसमूह, चतुष्कम्।

चतुष्पथ, स पु (स पु न) दे 'चौराहा'।

चतुष्पद, स पु तथा वि (सं) दे 'चौपाया'।

चद्दर, स स्त्री (फा चादर) शयनास्तरण शय्याच्छादन, प्रच्छद, पट वस्त्र प्रच्छद उत्तरच्छद २ (धातका) फलक क, पत्रम्।

चना, स पु (स चण) हरि, मंथ मंथक मंथज, सुगंध, वाजिभोज्य, वाजिभक्ष्य, कंचुकिन्, कृष्णचंचुक।

नाकों चने चबवाना, मु, अत्यन्त परि-तप् (प्रे)।

लोहे का चना, मु, दुष्कर कर्मन् (न)।

चनाब, स स्त्री (सं चन्द्रभागा) चान्द्र चन्द्र भागा भागी ।

चपकन, स पु (हिं चिपकना) कञ्चुक उत्तरीय, भेद ।

चपकना, दे 'चिपकना' ।

चपकलश, स स्त्री (तु) खड्ग असि-कृप ण, युद्धम् २ कलह, उपद्रव ।

चपटा, वि, दे 'चिपटा' ।

चपड़चपड़, सं स्त्री (अनु) चपडचपट ध्वनि (पु) ।

चपड़ा, स पु (हिं चपटा) अलक्त-क्तक, रा(ला)क्षा २ लाक्षा-अलक्त, पत्र ३ रक्तकीट भेद ।

चपत, स पु (स चपट)चपेट टिका, चपट करतल, आघात प्रहार २ क्षति हानि (स्त्री)।

चपनी, स स्त्री (स चपन = दबाना >) पुट टी, छद, छदन, पिधान २ शराव, वर्धमानक ३ जानुफलकम् ।

चपरास, स स्त्री (फा चप = बायाँ + रास्त = दायाँ) • प्रेष्य, पट्ट पट्टक ।

चपरासी, स पु (हिं चपरास) प्रेष्य, भृत्य, नियोज्य, किंकर, चोलकिन् ।

चपल, वि (स) दे 'चचल' (१-४)५ क्षणिक, अचिरस्थायिन् ६ शीघ्र आशु कारिन्, अवि लम्बिन् ७ शीघ्र, तूर्ण, क्षिप्र, द्रुत ८ मायाविन्, समाय ९ चतुर, अवसरज्ञ १० धृष्ट, निर्लज्ज ।

चपलता, स स्त्री (स) दे 'चचलता' (१-२) ३ धृष्टता, धाष्टर्य, वैयात्यम् ।

चपला, स स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री), कमला २ विद्युत् (स्त्री), चचला ३ जिह्वा ४ पुंश्चली, कुलटा । वि स्त्री, चंचला २ शीघ्रकारिणी ।

चपली, स स्त्री (हिं० चपटी) पनडा, पनभी ।

चपाती, स स्त्री (स चर्पटी) पाली, पोलिका, रोटी(ट)का ।

चपेट, स स्त्री (स चपेट) दे 'चपत' (१ २) ३ आघात, प्रहार ।

चप्पन, स पु दे 'चपनी'(१)।

चप्पल, स पु (हिं चपटा) पादू (स्त्री), पादुका कोशी षी ।

चप्पा, स पु (स चतुष्पाद्-द >) चतुर्थांश तुर्य तुरीय, भाग, २ अङ्गुलीचतुष्टयपरिमाण ३ किष्कु (पु स्त्री), वितस्ति (पु) ४ अल्पांश ।

चप्पी, स स्त्री (स चप = दबाना >) स, वाह वाहन वाहना, चरणसेवा ।

चप्पू, सं पु (हिं चाँपना) नौका नौ, दण्ड, क्षेपणी णि (स्त्री) ।

—मारना, क्रि स, क्षेपण्या चल्-वह् (प्रे) ।

चबवाना, क्रि प्रे व 'चबाना' के प्रे रूप ।

चबाना, क्रि स (स चर्वण) चर्व् (भ्वा प से), सदश् (भ्वा प अ), दन्तै निष्पिष् (रु प अ) । स पु, चर्वण, दन्तै निष्पेषण सदशनम् ।

चबा चबा कर बात करना, मु, मद सस्वर च वद् (भ्वा प से) ।

चबे को चबाना, मु, पिष्टपेषण, चर्वितचर्वणम् ।

चबूतरा, स पु (स चत्वरम् >) वेदि (स्त्री)-दिका, वितर्दि (स्त्री)र्दी र्दिका, उन्नत स्थली २ दे 'कोतवाली' ।

चबेना, स पु (हिं चबाना), भृष्ट भ्रष्ट, अन्न धान्य, चर्वणम् ।

चबेनी, स स्त्री (हिं० चबेना) भृष्टान्नोप हार २ जलपानसामग्री ।

चभक, स पु (अनु) निमज्जन ध्वनि शब्द ।

चमक, स स्त्री (हिं चमकना) द्युति दीप्ति -द्युति रुचि (स्त्री), आभा, प्रभा २ आलोक, प्रकाश ३ कटिश्रोणी, पीडा ।

—दमक, स स्त्री, अतिशय, शोभा श्री -कांति दीप्ति -द्युति विभूति (स्त्री) ।

—दार, वि उज्ज्वल, भासुर, भास्वर, अति महा, तैजस शोभन-दीप्तिमत् प्रभ ।

चमकना, क्रि अ (स चमत्करण) प्रकाश् विद्युत् भास् शुभ् भ्राज् भ्राश भ्लाश् (भ्वा आ से), प्र, भा (अ प अ) चकास् (अ प से) दीप् (दि आ से), स्फुर् (भ्वा प से) २ समृद्धि-वृद्धि या (अ प अ), स, ऋध (दि तथा स्वा प मे) ३ अक स्मात् कम्-स्पन्द् (भ्वा आ से) सत्रस्त-भयचकित (वि) भू ।

स पु, प्रकाशन, विद्योतन, स्फुरण, समृद्धि (स्त्री), प्रउप,-त्रय, सहसा स्पदन-कम्पनम् ।

चमकाना, क्रि प्रे, व 'चमकना' के प्रे रूप ।

चमकारा, सं पुं (हिं चमक) कान्ति दीप्ति

द्युति (स्त्री) २ चाकचक्य, तीव्र, आलोक प्रकाश ।
चमकी, स स्त्री (हिं चमक) आपातरमणीय वस्तु (न)।
चमकीला, वि (हिं चमक) दे 'चमकदार'।
चमको, स स्त्री (हिं चमकना) कुल्टा, पुंश्चली २ कलह-कलि-कारी-कारिणी प्रिया।
चमचिड़ी, स स्त्री / **चमगा(गी)दड़**, स पु / **चमगिदड़ी**, स स्त्री — (स चर्मचटी) चर्मचट(टि)का, चतु(तू)का,जतुनी चर्मपत्रा, अजिनपत्रिका चा म्मि (स्त्री)।
चमचम, स स्त्री (देश) चमचमाख्य मिष्टा न्नभेद । वि , दे 'चमकदार'।
चमचमाना, क्रि अ , दे 'चमकना' (१)।
चमचमाहट, स स्त्री , दे 'चमक' (१-२)।
चमाच, स पु (स चमस -स) कंका वि (स्त्री), खज, खजाका । (लकडी का) दारु हस्तक, तर्दु तर्दू (स्त्री)।
—भर, क्रि वि , चमस मात्र परिमाणम् ।
चमचिचड़, वि (हिं चाम + चिचडी) अत्याग्रहिन्, प्रतिनिविष्ट, अत्याग्रहशील।
चमड़ा, स पु [स चर्मन् (न)] त्वच्-रोमभूमि (स्त्री) त्वच-चा, असृग, धरा वरा, छली ली। (मृत प्राणी का) अजिन,कृत्ति -दृति (स्त्री)।
—उधेड़ना, क्रि स, निरत्वचीकृ, त्वच-चर्म अपनी निर्हृ (भ्वा प अ)।
चमड़ी, स स्त्री (हिं चमडा) दे 'चमडा'।
चमत्कार, स पु (स) विस्मय, आश्चर्य, अद्भुत चमत्कृति (स्त्री) २ अलौकिक-अतिमानुष-लोकोत्तर कर्मन् (न)।
चमत्कारक, वि (स) आश्चर्य विस्मय,-जनक उत्पादक, अतिमानुष (षी स्त्री), दिव्य विलक्षण अद्भुत, आश्चर्य, चमत्कारिन् ।
चमत्कृत, वि (स) आश्चर्य विस्मय, अन्वित आपन्न-उपहत विस्मित।
चमन, स पु (फा) कुसुमाकर, पुष्प ,वन वाट वाटिका ।
चमर, स पु (स) चमरगौ (पु) धेनुग, वालप्रिय , वन्य, व्यजनिन् २ च(चा)मरम् ।
चमरस, स पु (स चर्मरस >) चर्मपादुका जनित चरणव्रण, •चर्मरस ।
चमरी, स स्त्री (स) चमरगवी, गिरिप्रिया, दीर्घवाला २ च(चा)मर ३ मञ्जरी।
चमरौट, स पु (हिं चमार) शस्ये चर्मकारभाग ।
चमस, स पु (सं पु न) दे 'चमचा'।
चमार, स पु (स चर्मकार) चर्मकृत, चर्मर (पु) २ पादू पादुका -कृत् कार ३ पादुकासधातृ (पु)। [चमारी रिन (स्त्री) = चर्मकारी ई]
चमेली, स स्त्री [स चम्पकवेल्लि (स्त्री)] (पौधा) मनोहरा, मनोज्ञा, जाती, मालती, सुकुमारा, सुरभि द्वय,-गधा २ (फूल) जाती मालती, पुष्पम् ।
चमोटा, स पु / **चमोटी**, स स्त्री — (हिं चाम) क्षुरतेजनी, चर्मपट्टी।
चय, स पु (सं) समूह गण , राशि (पु) २ मृत्तिकाचय , क्षुद्रपर्वत ३ दुर्ग ४ प्राकार , वप्र प्र ५ वेदी दिका ६ चरण पाद, पीठ पीठ ७ गृह-भित्ति ,मूल, पोट ।
चयन, स पु (स न) सग्रहण, समाहरण, राशी-एकत्र,-करणम् ।
चर,[१] स पु (सं) चार, स्पश, प्रणिधि (पु) गूढपुरुष २ मगलग्रह, कुज ३ खञ्जन ४ कपर्दक ।
वि अस्थिर, जगम, चल २ प्राणिन् , चेतन, सजीव ।
—अचर, वि , चलाचल, जडजगम, स्थावरजगम २ जडचेतन, सजीवनिर्जीव , सप्राणनिष्प्राण।
चर,[२] स पु (अनु) वस्त्रादिविदरणध्वनि (पु) परिलिशब्द ।
चरक, स पु (स) मुनिविशेष २ तत्कृत वैद्यकग्रन्थ ३ दे 'चर' (१)। ४ अभ्यग, यात्रिन् ५ भिक्षुक ।
चरकटा, स पु (हिं चारा + काटना) यवस घास -कर्तक -छेदक । २ क्षुद्र , नीच , आलम ।
चरका, स पु (फा चरक) ईषत्क्षत क्षुद्र, व्रण व्रण २ हानि (स्त्री) ३ छद्मन् ।
चरख़ा, स पु (फा चर्ख) तातदचक्र, चक्र २ आवापनम् ।

—कातना, क्रि स, ततून् कृत (रु प से)-सज् (तु प अ), तानवचक्र चल् भ्रम् (प्रे)।

चरखी, स स्त्री (हिं चरखा) लघुचक्र, चक्री, चक्रिका ३ ४ दे 'गराड़ी' तथा 'बेलन'।

चरचर, स (स्त्री) चरचराशब्द, चरचराध्वनि २ व्यर्थ अनर्थक, आलाप, प्रजल्प पनम्।

चरचराहट, स स्त्री, दे 'चरचर'।

चरट, दे 'खनन'।

चरण, स पु (स पु न) पाद, पद -द, पद् पाद् (पु), वि-क्रम, क्रमण, चलन, अंघ्रि (पु)। २ चरण, पद (छन्द) ३ चतुर्थांश ४ गमन, चलन ५ आचार ६ (तृण-) भक्षण ७ अनुष्ठान ८ विहरण स्थल ९ सूर्यादि किरण १० क्रम।

—चिह्न, स पु (सं न) पाद पद-मुद्रा चिह्न लक्षणम्।

—दासी, स स्त्री (स) भार्या, पत्नी २ उपानह (स्त्री), पादुका।

—सेवा, स स्त्री (सं) परि-उप, चर्या, शुश्रूषा।

—छूना, मु, पादयो पत् (भ्वा प से) चरणौ स्पृश् (तु प अ)।

चरणामृत, स पु (स न) चरणोदक, पादोदकम्।

—लेना, मु, चरणामृत आचम् [भ्वा प से, आच चा)मति]।

चरना, क्रि स (स चरण) यवस तृण खाद् (भ्वा प से)-भक्ष (चु)-भुज् (रु आ अ), चर् (भ्वा प से)। २ पर्यट् भ्रम् (भ्वा प से)।

चरनी, स स्त्री (हिं चरना) दे 'नाँद' (२) २ गो-चर प्रचार।

चरपट, स पु दे 'चपत'।

चरपरा, वि (अनु) तिक्त, उष्ण, तीव्र, तीक्ष्ण।

चरबी, स स्त्री (फा) मास, सार -स्नेह, वपा, वसा सा, मेदस (न)।

—की झिल्ली, स स्त्री, (१ २) गर्भ-अन्त्र, आवेष्टनम्।

—चढ़ना, मु, दे 'मोटा होना'।

—छाना, मु, मदान्ध अतिगर्वित (वि) भू।

चरम, वि (स) अन्तिम, अन्त्य, पश्चिम, अवम।

—काल, सं पु (सं) निधन मृत्यु, समय काल।

—सीमा, सं स्त्री (स) परिनिष्ठा, परमावधि (पु)।

चरवाई, सं स्त्री (हिं चरवाना) पशुचारण मूल्य वेतन २ पशुचारण, गोपालनम्।

चरवाना, क्रि प्रे, व 'चरना' के प्रे रूप।

चरवाहा, सं पु (हिं चरना) पशु-गो चारक पालक पाल रक्षक।

चरस, स पु (स चर्मन् >) १ चर्म, द्रोणी सेचनी २ चर्ममय महा, पुर -कोष ३ गजा निर्यास, मादकद्रव्यभेद।

चरसा, स पु (हिं चरस) गोमहिषादे चर्मन् (न), २ ३ दे 'चरस' (१ २)।

चरसी, स पु (हिं चरस) चरस प पायिन् २ चर्म, सेचक सेक्तृ (पु)।

चराई, स स्त्री (हिं चरना) चरण, यवस तृण, भक्षण २ ३ दे 'चरवाई' (१ २)।

चराग, दे 'चिराग'।

चरागान, स पु (फा) दीपोत्सव।

चरागाह, स स्त्री (फा) गोप्रच(चा)र यवसक्षेत्र, शाद्वल, तृणावृतभूमि (स्त्री)।

चराचर, वि (स) दे 'चर' के नीचे।

चराना, क्रि, प्रे (हिं चरना) व 'चरना' के प्रे रूप २ मुह् वञ्च् (प्रे), प्र वि-लुभ् (प्रे)।

चरिंदा, स पु (फा) तृणभक्षक यवसाद, पशु।

चरित, स पु (स न) दे 'चरित्र'।

चरितार्थ, वि (स) कृतार्थ, कृतकृत्य, पूर्ण मनोरथ, सफल २ उचित, योग्य, अनुरूप।

चरित्र, स पु (स न) आचार, आचरण, चरित, वृत्त, वृत्ति (स्त्री) चारित्र्य, शील, सौजन्य २ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ३ कार्य, कर्मन् (न), चेष्टित ४ जीवन-चरित चरित्र, जीवनी।

—नायक, सं पु (स) प्रधानपुरुष, चरितनायक।

चरित्रवान्, वि (सं ,वत्) सदाचार॰, रिन्, आचारवत् ।
चरी, स स्त्री (हिं चरना) घास, यवस, स, जवस -स, तृणादिकम् ।
चर्च, स पु (अ) दे 'गिरजा' २ सम्प्रदाय ।
चर्चरी, स स्त्री (स) गीति भेद २ होलि कोत्सव ३ करतलध्वनि (पु) ४ आमोद प्रमोदा ५ वाद्यभेद ।
चर्चा, स स्त्री (स) चर्च, अभिधान, आख्यान, कथन, कीर्तन, निर्देश, वर्णन २ वार्ता, आलाप, स, भाषण कथा, कथाप्रसंग ३ किंवदन्ती, जनप्रवाद, ४ लेपन, अभ्यञ्जनम् ।
—करना, क्रि स, समाष (भ्वा अ से), सवद् (भ्वा प से)
चर्चित, वि (स) अभ्यक्त, लिप्त २ विचारित ।
चर्म, स पु (स चर्मन्) दे 'चमड़ा' ।
—कार, स पु (स) दे 'चमार' ।
—दंड पु पु (स) दे 'चाबुक' ।
चर्मी, वि (स चर्मिन्) चर्म, मय निर्मित म॰थिन्, चर्मण्य । स पु चर्मधारि फलकभृद् योध ।
चर्य, वि (स) गमनीय, गन्तव्य (स्थानादि) २ आचरणीय, करणीय ।
चर्य्या, स स्त्री (स) कृत्यानुष्ठान, कर्त॰यपालन २ चलन, गमन, ३ आचार, आचरण ४ सेवा ५ आजीविका, वृत्ति (स्त्री) ।
चर्राना, क्रि अ (अनु) चरचरायते (ना धा) चरचरशब्द कृ २ तप (कर्म), व्यथ् (भ्वा आ से) ३ अत्यन्त अभिलष् (भ्वा उ से) ।
चर्वण, सं पु (स न) सदशन, दन्तै निष्पे षण २ च॰र्यपदार्थ ३ दे 'चबेना' ।
चर्वणा, स स्त्री (स) चर्वण, दन्तै निष्पेषण, सदशनम् २ रसास्वादन, रसानुभूति (स्त्री) ३ चर्वण दंत -रद ।
चर्वित, वि (स) दतनिष्पिष्ट, सदष्ट ।
चर्व्य, वि (स) चर्वणीय, दन्तै निष्पेषणीय । स पु (स न) भृष्ट,-अन्न भा॰यम् ।
चर्स, स पु, दे 'चरस' ।
चल, वि (स) चर, चरिष्णु, जगम, गमन शील २ चचल, अस्थिर, अधीर । स पु, शिव २ विष्णु ३ पारद॰, रस ।
—चलाव, स पु, यात्रा, प्रस्थान, २ महा प्रस्थान, मृत्यु॰ (पु) ।
—चित्त, वि (स) लोल-अस्थिर चचल, मति-बुद्धि चित्त ।
—विचल, वि (स) अव्यवस्थित, अक्रम ।
चलता, वि (हिं चलना) चलद्-गच्छत् चरत् (शत्रत) गतिमत् २ प्रचलित, सर्व समत ३ समर्थ, शक्तिमत् ४ व्यवहारकुशल, कार्यदक्ष । [चलती (स्त्री) = चलती, प्रच लित इ] ।
चलती, स स्त्री (हिं चलना) प्रभाव, अधिकार ।
चलन, स पु (स चलन) गति (स्त्री), गमन, यान, प्रस्थान २ रीति (स्त्री), क्रम, अनुसार ३ व्यवहार, उपयोग, प्रचार ।
—सार, वि चिर ,स्थायिन्, दीर्घ चिर,-काल स्थायिन् २ प्रचलि(रि)त ।
चलना, क्रि अ (सं चलन) चल-चर् व्रज (भ्वा प से), या इ (अ प अ), गम्, २ सक्रिय-सचेष्ट-सगतिक (वि) भू, स्फुर् (तु प से), कप् (भ्वा आ से) ३ स सृप् (भ्वा प अ) ४ (पद्भ्यां पादाभ्यां) चल-चर्-गम् या, परि क्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) ५ प्र,वह् (भ्वा उ अ), प्र,सु (भ्वा प अ) ६ वा (अ प अ) वह् ७ प्रवृत् (भ्वा आ से), स्था (भ्वा प अ) ८ उपयुज्-व्यवहृ (कर्म) ९ कलहायते (ना धा), विवद् (भ्वा आ से) १० सफलीभू, कृतार्थ कृतकृत्य(वि)भू । सं पु, चलन, चरण, गमन, प्रस्थान, स्फुरण वहन इ ।
चलने वाला, स पु, चलितृ-गतृ यातृ (पु) इ ।
चल पड़ना, मु, प्र,स्था (भ्वा आ अ), चल्-या ।
चल बसना, मु, मृ (तु आ अ), पचत्व या ।
चले चलना, मु चल्-गम् ।
चलनी, स स्त्री, दे 'छलनी' ।
चलवाना, क्रि प्रे, व 'चलना' के प्रे रूप ।
चला, स स्त्री (स) पृथिवी २ दामिनी ३ लक्ष्मी (स्त्री) ।
चलाऊ, वि (हिं चलना) दीर्घ चिर, कालस्थायिन्, दृढ, स्थिर ।

चलाचल, वि (सं) चपल, चचल, लोल २ जडचेतन ३ स्थावरजगम।

चलाचली, स स्त्री (हिं, चलना) प्रस्थान प्रयाण-त्वरा-सभ्रम २ प्रस्थान, प्रयाण, अप, यान गम ३ प्रस्थान, काल समय ४ प्रया णोपकल्पनम्।

च(चा)लान, सं स्त्री पु (हिं चलना) प्रचलन, प्रस्थान, प्रयाण, अप, यान गम गमन २ प्रचालन, प्रस्थापन, प्रषण णा, प्रया पण न ३ अभियोजन, अभियुक्त अधिकरणे प्रेषणम्।

चलाना, क्रि स, व 'चलना' के प्रे रूप। २ (गोली आदि) लोह, गोलान् गुलिका प्रक्षिप् विसृज् (तु प अ) ३ प्रारम्भ् (भ्वा आ अ), प्रवृत् (प्रे)।

चलायमान, वि (हिं चलना) चलत् गच्छत्-सर्पत् (शत्र) २ चचल, अस्थिर।

चलाव, स पु (हिं चलना) प्रस्थान, प्रयाण २ यात्रा ३ रीति (स्त्री), क्रम।

चलित, वि (सं) दे 'चलायमान' (१-२) ३ प्रचलित।

चवन्नी, सं स्त्री [हिं चौ (= चार) + आना] चतुराणी, रुच्य।

चवर्ग, सं पु (सं) चकारादय पचवर्णा।

चवाई, स पु (हिं औ + बाई = हवा) निंदक, अप परि, वादक २ पिशुन, कर्णे जप।

चवालीस, वि (स चतुश्चत्वारिंशत्)। स पु उक्ता सख्या, तदङ्कौ (४४) च।

चवालिसवा, वि, (हिं चवालीस) चतुश्चत्वारिंशत्तम (मी मम्)।

चश्म, स स्त्री (फा) नेत्र, नयनम्।

—दीद, वि (फा) दृष्ट, अवलोकित, प्रत्यक्ष।

—दीद गवाह, स पु (फा) प्रत्यक्ष-,साक्षिन् दर्शिन् प्रत्यक्षिन् देदय।

चश्मा, स पुं (फा) दे 'ऐनक' २ उत्स, निर्झर, प्रस्रवण, स्रोतस् (न) ३ कुल्या, नदी सरित् (स्त्री)।

चषक, सं पु (सं पु न) मद्यपानपात्रम्, अनुतर्षण, सरक, गल्वर्क २ मधु (न)।

चषण, स पुं (सं न) भक्षण, खादनम् २ हननं, मारणम्।

चसक, स स्त्री (देश) दे 'कसक'।

चसकना, क्रि अ दे 'कसकना'।

चसका, स पु (सं चषक >) आ, स्वाद, रस, प्रवृत्ति (स्त्री) अभि, रुचि (स्त्री)। बुरा—, व्यसनम्।

चस्पाँ, वि (फा) लग्न, सश्लिष्ट।

चहक, स स्त्री (हिं चहकना) कूजन, कूजित, कलरव, चुकार, राग, विरुत विराव।

चहकना, क्रि अ (अनु) कूज् (भ्वा प से), विरु (अ प से)।

चहचहा, सं पु, दे 'चहक'।

चहचहाना, क्रि अ (अनु) दे 'चहकना'।

चहचहाहट, सं स्त्री दे 'चहक'।

चहबचा, स पु (फा चाह = कूप + हिं बचा) कूपक, जल, कुड आशय।

चहल, स स्त्री (अनु चहचह) आनन्दोत्सव।

चहलकदमी, सं स्त्री (हिं चहल + फा कदम) विचरणं, विहार, परि, क्रमणं भ्रमण अटनम्।

चहल पहल, सं स्त्री (अनु) आनन्द, उत्सव, उल्लास, प्र मोद हर्ष।

चहारदीवारी, सं स्त्री दे 'चारदीवारी'।

चाँई, वि (देश चई = इक्रू जाति) अपह रणशील, चौर्यवृत्ति। धूर्त, छलिन्।

चाँचल्य, स पु (सं न) दे 'चचलता'।

चाँटा, सं पु (अनु चट) दे 'चपत'।

चाँडाल, स पु (स) दे 'चडाल'।

चाँडाली, स स्त्री (स) दे 'चडाली'।

चाँद, स पु (स चद्र) दे 'चद्र' २ चन्द्र कलाकार आभूषणभेद, चन्द्र ३ मास ४ लक्ष्यक्ष, शरव्य। स स्त्री, शिरोऽर्धं, कपालशिरं २ शिरोऽस्थि (न), कपाल लम्।

—मारी, स पु, लक्ष्यवेध, शरव्यनिर्भेद।

चाँदना, स पु (हिं चाँद) आलोक, प्रकाश २ दे 'चन्द्रिका'।

—पाख, स पुं पूर्वपक्ष शुद्ध सित, पक्ष।

चाँदनी, स पु (हिं चाँदना) दे 'चद्रिका' २ श्वेत सित, प्रच्छद। ३ गुह्ये लोव ४ तगरान्य पुष्पम्।

—चौक, स पुं (हिं + स चतुष्क) मुख्य मार्ग, प्रधानहट्ट, २ दिल्लीनगरस्य प्रधान हट्ट, चन्द्रिकाचतुष्कम्।

—रात, स स्त्री , ज्योतिष्मती, ज्योत्स्नी ।
चाँदी, स स्त्री , (हिं चाँद) रजत, रूप्य, दुवर्ण, श्वेत, कलधौतम् । २ धन, वित्त ३ आर्थिकलाभ॰ ४ दे 'चाँद', (स स्त्री) ।
—का, वि, रात-रौप्य [-त्ती,-प्यी (स्त्री)] रजत-रूप्य, निर्मित-रचित, राजत ।
—सा, वि , रूप्योपम, रजतवर्ण, अतिधवल ।
—का जूता, मु , दे 'घूस' ।
चाँद्र, वि (स) चाँद्रमस [-सी(स्त्री)] ऐंदव [-वी (स्त्री)]चद्र, सोम ।
—मास, स पु (स) चद्र सोम-विधु, मास ।
—वत्सर, स पु (स) सौम्य चान्द्रिक चान्द्र मस,वर्ष अब्द -हायन ।
चान्द्रमस, वि (स) चान्द्र, चान्द्रिक सौम्य, सौमिक (स्त्री चान्द्री, चान्द्रिकी, सौम्या, सौमिकी) ।
चान्द्रायण, स पु (स न) व्रतभेद , इदुव्रतम् ।
चाँप, स स्त्री (हिं चपना) नि, पीडन, निर्बंध॰, अतिभार २ प्रेरण-णा, प्रचोदना ३ लोहनाडी-अग्न्यस्त्र,-तालक ४ चरण पाद, शब्द॰ ।
चाँपना, क्रि स दे 'दबाना' ।
चाँयँ चायँ चाँवँ चावँ, स स्त्री (अनु) प्रलाप , प्रलपित, प्रजल्प पित, बाल, भाराप भाषणम् ।
चाक, स पु (फा) विदर , रध्र, भेद ।
—करना, क्रि स, विदॄ (प्रे), छिद् (र प अ) ।
चाक[2], स पु (अ) खटी, खटिका, कठिनी ।
चाक[3], वि (तु) सबल, स्वस्थ, दृढतनु ।
—चौबद, वि , हृष्टपुष्ट, पुष्टाग [गी (स्त्री)] २ अतद्र, क्षिप्रकारिन् , लघु ।
चाक स पु (स चक्र) कुलाल-कुम्भकार चक्रि -चक्र २ रथाग, मडल ३ दे 'गडारी ४ पेषणचक्र, पेषणीपाषाण ५ शाण -णी ।
चाकचक, वि (तु चाक) सुदृढ, सुरक्षित, दुर्गम ।
चाकचक्य, स स्त्री (स न) आभा, प्रभा, द्युति कान्ति (स्त्री) २ सौन्दर्य, शोभा ।
चाकना, क्रि स (हिं चाक) रेखाभि॰ परिवृ परिवेष्ट (प्रे)
चाकर, स पु (फा) किंकर॰, दास॰, सेवक ।
चाकरानी, स स्त्री (फा चाकर) दासी, सेविका ।
चाकरी, स स्त्री (फा चाकर) सेवा, परिचर्या ।
चाकसू, स पु (स चक्षुष्या) कुलाली, (अरण्य) कुलत्थिका, लोचनहिता, दृक प्रसादा । २ चक्षुष्याबीजम् ।
चाकी, स स्त्री (हिं चाक) दे 'चक्की' ।
चाकू, स पु (फा) छुरिका, कृपाणिका असि, पुत्रिका, धेनुका, शस्त्री, शस्त्रिका ।
चाक्षुष, वि (स) नेत्र,-सबधिन् विषयक २ चक्षुर-नेत्र,-ग्राह्य।
चाचर, स पु } (स चर्चरी) चर्चरिका,
चाचरि, स स्त्री } रागगीति,-भेद॰ २ होलि कोत्सव ३ आमोदप्रमोदा ४ उपद्रव, क्षोभ , कलह ।
चाचा, स पु (स तात >) पितृव्य, पितृ सोदर॰ २ (छोटा) खुल्लतात ।
चाची, स स्त्री (हिं चाचा) पितृव्या, पितृव्यपत्नी ।
चाट, स स्त्री (हिं चाटना) स्वादलोलुपता, रसलालसा २ दे 'चसका' ३ लालसा, उत्कटाभिलाष ४ दे 'आदत' ५ अव-उप, दश , व्यञ्जनम् ।
—लेना, दे 'चाटना' ।
चाटना, क्रि स (अनु चपट) अव-आ परि-स , लिह् (अ उ अ) २ ग्रस-भ्लस् (भ्वा आ से) ।
चाटी, स स्त्री (देश) मथनी, गर्गरी, दधि मथनपात्रम् ।
चाटु, स पु (सं पु न,) चाटूक्ति (स्त्री), चाटुवाद॰, प्रिय मधुर,-वचन, मिथ्या, प्रशसा सस्तव॰-स्तव -स्तुति (स्त्री),उपलालनम् ।
—कार, स पु (स) मिथ्याप्रशसक, चाटु वादिन् ।
—कारी, स स्त्री (स चाटुकार॰ >) चाटु वादित्व, सान्त्ववादित्व, दे 'चाटु' ।
चाणक्य, स पु (स) कौटिल्य , विष्णुगुप्त , द्रौमिण , अग्रुल , चद्रगुप्तमौर्यस्यामात्य , चणकात्मज॰ ।
चातक, स पु (स) मेघजीवन , तोकक , स्तोकक , सा(शा)रग ।

चातकानन्दन, स पु (स) मेघ, जलद, वारिद २ प्रावृष (स्त्री) मेघागम, वर्षाकाल ।
चातुरी, स स्त्री (स) दे 'चतुरता'।
चातुर्य्य, स पु (स न) दे 'चतुरता'।
चादर, स स्त्री (फा) दे 'चद्दर'।
चाप[१], स पु (स) धनुष् (न), इष्वास २ अर्द्धवृत्तम् (गणित)।
चाप[२], स स्त्री दे 'चाप' (१, ४)।
चापड़, स स्त्री (स चर्पट >) कठिन कोकस भूमि (स्त्री)। वि, समतल सपाट।
चापना, क्रि स, दे 'दवाना'।
चापलूस, स पु (फा) दे 'चाटुकार'।
चापलूसी, स स्त्री (फा) दे चाटुकारी।
चाबना, क्रि स, दे चबाना'।
चाबी भी, स स्त्री (हिं चाप – दबाव) मधारणी, कूचिका, तालिका, ताली, कुंचिका, अकुट, उद्घाटक ।
—देना, क्रि स, कुंचिकां आ परि वृत् (प्रे) कुच कुच (भ्वा प से)।
चाबुक, स पु (फा) अश्वताडनी कशा या, प्रतिष्कश य, प्रतोद ।
—मारना, क्रि स कशया तड चुद् दड(चु)।
—सवार, स पु, वाजिविनेतृ (पु), अश्व शिक्षक ।
चाम, स पु [स चर्मन् (न)] दे चमड़ा'।
चामर, स पु (स पुं न) चमर, चामरा री।
चामीकर, स पु (स न)सुवर्ण २ धुस्तूर ।
चाय, स स्त्री (चीनी चा), चा, चविका।
—पानी, पु स्त्री जलपान, ल्पाहार, अल्प स्तोक आहार कल्यवर्त्त ।
चार, वि (स चतुर) [सदा बहु चत्वार (पु) चतस्र (स्त्री) चत्वारि (न)]। २ अनेक बहु ३ कतिपय। स पुं, उक्ता संख्या तद्बोधको अङ्क (४) च।
—का समूह, चतुष्टय यी, चतुष्कम् ।
—कोना, वि चतुष्कोण, चतुरस्र श्र।
—खाना, वि चित्र, वर्गित। स पु, वर्गित चित्रित वस्त्रम्।
—गुना, वि, चतुर्गुण णित ।
—दीवारी, स स्त्री, वप्र प्र, वरण, प्राकार ।
—प्रकार से, क्रि वि, चतुर्धा, प्रकारचतुष्टयेन।
—बार, क्रि वि, चतु (अव्य), चतुर्वारम्।
—आँख, मु समागम, सम्मिलनम्।
—आदमी, मु, जन ना, लोक का ।
—दिन की चाँदनी, मु क्षणिकसुखम्, नश्वरानन्द ।
चार्ज, स पु (अ चार्ज) कार्यभार, उत्तरदायित्व, २ रक्षण, अवेक्षा।
चारजामा, स पु (फा) दे 'जीन'।
चारण, स पु (स) ब(व)दिन्, मागध, वैतालिक, स्तुतिपाठक, सस्तावक ।
चारपाई, स स्त्री (स चतुष्पाद्>) खट्वा, मचिका, पर्यंकिका।
—पर पड़ना, मु, व्याधित-रोगग्रस्त(वि) भू।
चारवाक, स पु (स चार्वाक) अनीश्वर वादी आचार्यविशेष ।
चारा, स पु (हिं चरना) दे 'चरी'।
चारा, स पु (फा) उपचार उपाय, प्रति (ती)कार ।
—जोई, स स्त्री (फा) अभियोग, व्यवहार ।
—जोई करना, क्रि स, राजकुले निविद् (प्रे), अभियुज (रु आ अ चु)।
चारित्र, स पुं (स न) चारित्र्यम्, चरित्रम्, वृत्त, चरितम्, दे 'चरित्र'।
चारु, वि (स) सुदर, मनो-हर रम, रुचिकर।
चारों तरफ, क्रि वि, चतुर्दिश, समतात, समतत, परित, सर्वत्र।
चाल, स स्त्री (स चाल >) गमन, चलन, स्पन्दन, स्फुरण, सरण २ प्र ,गति (स्त्री), चार, गमनप्रकार ३ आचार, व्यवहार ४ उपाय, युक्ति (स्त्री) ५ छल, कपट ६ विधि (पु), प्रकार ७ रीति (स्त्री), सप्रदाय ८ पर्याय, वार, परिवृत्ति (स्त्री)।
—चलन, स पु, चरित्र, आचरण, वृत्त, आचार ।
—ढाल, स स्त्री, आचार, चरितम्।
—बाज़, वि (हिं + फा) मायाविन्, कापटिक।
—बाज़ी, स स्त्री, कपट, माया, वचना।
—चलना, मु, वच् (चु), व्यामुह् (प्रे)।
—में आना, मु, वच्-व्यामुह् विप्रलभ् (कर्म)।
चालना, क्रि स, दे 'छानना'।

चाल्नी, स स्त्री (स) दे 'छल्नी'।
चाला, स पु (स चाल >) प्रस्थान, गमन २ यात्रामुहूर्ते नवोढाया प्रथमवार पतिगृहे तत पितृगृहे वा गमनम्।
चालाक, वि (फा) धूर्त, मायिक २ निपुण, दक्ष।
चालाकी, स स्त्री (फा) धूर्तता, कापट्य २ नैपुण्य, चातुर्यम्।
चालान, स पु दे, 'चलान'।
चालीस, वि (स चत्वारिंशत)। स पु, उक्त संख्या, तद्बोधकावङ्कौ (४०) च।
चालीसवां, वि (हिं चालीस) चत्वारिंश [शी (स्त्री)] चत्वारिंशत्तम [मी (स्त्री)]।
चालीसा, सं पु (हिं चालीस) चत्वारिंशत्पद्यात्मसमूह २ चत्वारिंशद् दिवसा वर्षाणि वा ३ चत्वारिंशत्पद्यात्मकग्रन्थ।
चाव, स पु (हिं चाह) अभिलाष, लालसा, उत्कटेच्छा २ अनुराग, प्रेमन् (पु न) ३ अभिरुचि (स्त्री) ४ उत्साह ५ लालनम्।
—चोचला, स पु, उप ,लालन, परिष्वग।
—निकालना, मु, अभिलाष इच्छा पूर् (चु) निर्वृत् (प्रे)
चावडी, स स्त्री दे 'पडाव'।
चावल, स पु (स तडुल) धान्यास्थि (न), धान्य शालि, सार दे 'धान', 'भात' २ गुञ्जाया अष्टमभागमित तोल।
—का धोवन, स पु, तण्डुलोदकम्, तण्डु लोदम्।
चाशनी, स स्त्री (फा) गुड-सिता शर्करा, रस २ दे 'चसका'।
चाह, स स्त्री (स इच्छा) दे 'चाव' (१ २)। ३ आदर, प्रतिष्ठा ४ आवश्यकता, प्रयोजनम्।
चाहता, वि (हिं चाह) दयित, प्रिय, कात।
चाहना, क्रि स (हिं चाह) अभिलष् (भ्वा दि प से), इष् (तु प से), इच्-कम् (भ्वा आ से, कामयते), (सन्नत या '-काम' से भी अनुवाद करते हैं, उ वह जाना चाहता है – स गतुकाम अथवा जिगमिषति) २ स्निह् (दि प वे), अनुरञ्ज् (कर्म), अनुरागवद्-मोहित (वि) भू ३ प्र-यत् (भ्वा आ से,) ४ दे 'ढूँढना'।
स स्त्री, अभिलाष, इच्छा, अनुराग, स्नेह, आवश्यकता इ।
चाहनेयोग्य, वि, अभिलषितव्य, स्पृहणीय, दयित, प्रिय इ।
चाहनेवाला, वि, इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन्।
चाहिए, अव्य (हिं चाहना) उचित, उपयुक्त, न्याय्य। (-तव्य-अनीय, ण्यत् आदि से भी इसका अनुवाद करते हैं, उ करना चाहिए–कर्तव्य करणीय, कार्य इ)।
चाही, वि (फा चाह) कूप, सिक्त सम्बन्धिन्।
चाहे, अव्य (हि चाहना) यथाकाम, यथा भिलाष, स्वैर, स्वच्छद २ वा, अथवा, यद्वा।
चिउँटा, स पु (हिं चिमटना) पिपीलक, पीलक।
चिउँटी, स स्त्री (हिं चिउँटा) (पु) पिपील, पीलक, पिपीलिक। [पिपीली, पिपीलिका (स्त्री)]।
—की चाल, मु, मद-मन्थर,-गति (स्त्री)।
—के पर निकलना, मु, आसन्नमृत्यु, निधनो न्मुख।
चिंघाड, सं स्त्री (स चीत्कार) बृंहित २ महानाद, तुमुलध्वनि (पु)।
चिंघाडना, क्रि अ (हिं चिंघाड) बृंह् (भ्वा प से,) २ उच्चै नद् (भ्वा प से)।
चिंचा, स स्त्री (स) अम्लिका, तिंतिडि(डी)-का २ अम्लिका चिंचा,-फलम् ३ रक्ता, गुंजा।
चिंतक, वि (स) विचारक, विवेचक, ध्यातृ। स पु (स) तत्त्वज्ञ, दार्शनिक।
चिंतन, स पु (स न) चिंतना, ध्यान, स्मरण २ विचारण, विवेचनम्।
चिंतनीय, वि (हिं) चिंताप्रद, उद्वेगकर (-री स्त्री), २ ध्येय, भावनीय ३ विचार्य, विवेचनीय।
चिंता, स स्त्री (स) उद्वेग, औत्सुक्य, व्यग्रता, रणरणक, आकुलता, उत्कलिका, मनस्ताप २ आ,ध्यान चिंतनम्।
—आतुर, वि (स) सचिंत, चिंतित, चिंता मग्न, उद्विग्न, व्याकुल।
—जनक, वि, चिन्ता-आकुलता, प्रद-उत्पादक।
—मणि, स पुं (स) स्वर्गमणि।

चितित, वि (स) दे 'चिंतातुर' २ विचारित, ध्यात।
चिंत्य, वि (स) दे 'चिंतनीय' (२ ३)
चिट्टी, स स्त्री (देश) खड, ल्व।
चिपाञ्जी, सं पु (अ) अफ्रीकामहाद्वीपस्थ वनमानुषभेद।
चिक, स स्त्री (तु चिक) तिरस्कारिणी, प्रतिसीरा, व्यवधा, व्यवधान, आवरण, मासिक, विशसितृ, शौ (सौ) निक।
चिक॒, स पु (अ चेक) देयादेश।
चिक॑, सं स्त्री (अनु) आकस्मिकी कटि व्यथा।
चिकन, स पु (फा) मार्मिकवस्त्रभेद, *चिकणम्।
चिकना, वि (स चिक्कण) तैलमय (-यी स्त्री), तैलाक्त, तैल,युक्त वत् २ स्निग्ध, मसृण, श्लक्ष्ण ३ परिष्कृत, संस्कृत ४ पिच्छिल, मेदुर ५ सम, सपाट। [चिकनी (स्त्री) चिक्कणा इ]।
—घड़ा, स पु, निर्लज्ज अपत्रप, मनुष्य।
—मिट्टी, स स्त्री, मृत्तिका, मृद् (स्त्री)।
—चुपड़ी बातें करना, मु, चाटुवादं वच् (सु)-प्रनृ (प्रे)।
चिकनाई, स स्त्री (हिं चिकना) चिक्कणता, स्निग्धता, श्लक्ष्णता २ समता, सपाटता ३ घृतादय स्निग्धपदार्थाः।
चिकनापन, सं पु } (हिं चिकना) दे
चिकनाहट स स्त्री } चिकनाई (१ २)।
चिकित्सक, सं पु (स) वैद्य, चक, रोग, हृत् हारिन् (पु), अगदकार, भिषज् (पु)।
चिकित्सा, स स्त्री (स) औषध, उपचार, उपक्रम, रोगप्रतीकार २ वैद्यक ३ औषध, भेषजम्।
चिकित्सालय, स पुं (स) आतुरालय।
चिकुटी, स स्त्री, दे 'चुटकी'।
चिकुर, स पु (स) केश, मूर्धज, शिरसिज २ पर्वत ३ काष्ठमार्जार, दे 'गिल्हरी'।
चिक्कण, वि (स) दे 'चिकना'।
चिखुरी, स स्त्री (स चिकुर >), 'गिल्हरी'।
चिचड़ी, स स्त्री (देश) पशुयूका, कीटभेद।
चिचिंडा, स स्त्री (स चिचिंड) अहिफला, दीर्घफला, सुदीर्घ, गृहकूलक।

चिट, स स्त्री (स चित्र >) पत्रखण्ड २ वस्त्रशकल लम्।
—नवीस, स पु (हिं + फा) लेखक, कायस्थ, लिपिकर।
चिटकना, कि अ (अनु) स्फुट् (तु प स) दृ भञ्ज भिद् (कर्म) २ सचिटचिटशब्द ज्वल् (भ्वा प से) ३ दे 'खीझना'।
चिटकाना, क्रि स, व 'चिटकना' के प्रे रूप।
चिट्टा, वि (स सित) श्वेत, शुक्ल, धवल २ दे 'रुपया'।
चिट्ठा, सं पु (हिं चिट) आयव्यय देयादेय, पञ्जि (स्त्री)-पञ्जी पञ्जिका, दे 'बही खाता' २ व्ययसूची ३ सूची ४ लाभालाभ हानिलाभ,-पत्रम्।
कच्चा—, स पु, गुह्य गुप्त, वृत्तान्त।
चिट्ठी, स स्त्री (हिं चिट्ठा), (सदेश-) पत्र, लेख रय २ लिखित पत्रखड ३ प्रमाणपत्र ४ ५ आज्ञा निमत्रण, पत्रम्।
—पत्री, स स्त्री, पत्रव्यवहार, पत्र विनिमय सवाद।
—रसाँ, स पु (हिं + फा) पत्रवाहक, लेखहार रक।
चिड़, स स्त्री दे 'चिढ़'।
चिड़चिड़ा, वि (हिं चिड़चिड़ाना) शीघ्र कोपिन्, सुलभकोप, क्रोधन, कोपन।
चिड़चिड़ाना, क्रि अ (अनु) ईषत् कुप् रुष् (दि प से) क्रुध (दि प अ), सतप् क्लिश् (कर्म)।
चिड़चिड़ाहट, स स्त्री (हिं चिड़चिड़ाना) सुलभकोपता, दुर्मनायित, कोपनता।
चिड़वा, स पुं (स चिपिट) चिपट, पृथुक, चिपि (पु)ट टक।
चिड़ा, स पु (स चटक) कलविङ्क ग, गृहनीड, विशगृह, कामुक।
चिड़िया, स स्त्री (हिं चिड़ा) पक्षिन्, खग, २ क्रीडापत्रगभेद ३ दे 'चिड़ी'।
—घर, स पु, जन्तुशाला, प्राणिशाला २ पक्षिशाला, पजरम्।
चिड़ी, स स्त्री (हिं चिड़ा) चट(टि)का, चटकका, कलविङ्की २ ३ दे 'चिड़िया' (१ २)।
—का बच्चा, सं पुं, चाटकैर।

—की बच्ची, सं स्त्री, नरका।
—मार, स पुं, जालिक, शाकुनिक, लुब्धक, पक्षिग्राहक।
चिढ़, स स्त्री (हिं चिढ़चिढ़ाना) घृणा, अरुचि (स्त्री), जुगुप्सा, विद्वेष।
चिढ़ना, क्रि अ, दे 'चिढ़चिढ़ाना'।
चिढ़ाना, क्रि स, व 'चिढ़चिढ़ाना' के प्रे रूप।
चित¹, स पुं (स चित्त) मानसम्।
—चोर, स पुं, मनोहर चित्ताकर्षक २ प्रिय, दयित, कान्त।
—लगना या लगाना, मु, अवहित (वि) भू, अवधा (जु उ अ)।
—से उतरना, मु, विस्मृ (कर्म) द 'भूलना'।
चित², वि (स चित >) उत्तान, उत्तान अवशुष्ठ,-शय शायिन्।
—करना, मु, (शत्रु मल्लयुद्ध) अवपृष्ठशायिनं कृ विजि (भ्वा आ अ)।
—होना, मु, मूर्च्छ् (भ्वा प से)।
चित, वि (स >) उत्तान, ऊर्ध्वास्यशयित।
चितकबरा, वि (स चित+कर्बुर >) चित्र, कर्बुर, चित्रविचित्र, कर्बुरित, चित्रित, शबल, चित्रांग (-गी स्त्री)।
चितला, वि दे 'चितकबरा'।
चितवन, स स्त्री (हिं चेतना) दृक्, नयन दृष्टि, पात, आलोकित, वीक्षित, २ कटाक्ष, अपांगदृष्टि (स्त्री), नयनापांग सारि, विलोकितम्।
चिता, स स्त्री (स) चित्या, चिती चिति (स्त्री), चित्य, चैत्य, चिताचूडकं, काष्ठमठी।
—भूमि, सं स्त्री (स) श्मशान, पितृ वन काननम्।
—साधन, स पुं (स न) श्मशाने मन्त्रानुष्ठानम्।
चिताना, क्रि स (हिं चेतना) (पूर्व प्रार) प्रबुध् (प्रे) अनुनाम् (अ प स), उपदिश् (तु प अ) २ अनु स्मृ (प्रे), उद् अनु-बुध् (प्रे)।
चितावनी, स स्त्री, दे 'चेतावनी'।
चितेरा, स पुं [स चित्रक(का)र] चित्रक, रञ्जीवक, रंजक, वरसार, चित्र, न्यासक कृत् (पुं), आलेख्यक, तौलिक।
चितेरी रिन, स स्त्री (हिं चितेरा) चित्र, करी-लसिका, तौलिकी २ चित्रकारपत्नी।
चित्त, स पुं (स न) अन्तःकरण, चेतस मनस् हृद् (न), हृदय, मानसं २ धी बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा, शेमुषी ३ अवधान, मनोयोग, अवेक्षा ४ स्मृति (स्त्री), धारणा।
—उद्रेक, स पुं (स) गर्व, दर्प, मद, अहंकार, अहमान।
—विक्षेप, स पुं (स) मनश्चांचल्य, मन क्षोभ।
—विभ्रम, स पुं (स) चित्तव्यामोह, मनोभ्रांति (स्त्री) २ उन्माद।
—वृत्ति, स स्त्री (स) मनो,गति वृत्ति (स्त्री), चित्तावस्था।
—करना, मु, अभिलष् (भ्वा प से), इष (तु प से)।
चित्ति, स स्त्री (स) बुद्धि (स्त्री) प्रज्ञा २ चिन्तनम् ३ ख्याति (स्त्री) ४ कर्मन् (न) ५ भक्ति (स्त्री) ६ प्रयोजनम्
चित्ती, स स्त्री (स चित्र <) विंदु (पुं), अङ्क, चिह्न २ चित्रा, चित्रसर्प ३ द्यूत, चिह्न-अंक।
—दार, वि (हिं + फा) विंदुचिह्नित, चित्र।
चित्र, स पुं (सं न) प्रति,-कृति (स्त्री), छंदस् च्छाया-रूप, आलेख्य, प्रतिमा। वि, कर्बुर, शबल, विविधवर्ण।
—कला, स स्त्री दे 'चित्रकारी'।
—कार, स पुं (स) दे 'चितेरा'।
—कारी, स स्त्री (स चित्रकार <) चित्र, कला क्रिया कर्मन् (न) विद्या २ आ चित्र, लेखनम्।
—मय, वि (सं) सचित्र, चित्रबहुल, चित्रांकित।
—वत, वि (स) चित्र आलक्ष्य, तुल्य सम सदृश २ निश्चल, स्तब्ध, स्थिर।
—विचित्र, वि (स) शबल, कर्बुर, बहुरंग।
—शाला, स स्त्री (स) आलेख्य, शाला भवनम्।
चित्रक, स पुं (स) चित्र, काय, व्याघ्र, मृगांतक, क्षुद्रशार्दूल, उपव्याघ्र, २ दे 'चितेरा'।
चित्रकूट, सं पुं (सं) पर्वतविशेष।

चित्रगुप्त, स पु (स) यमलेखक ।
चित्रा, स स्त्री (स) चतुर्दशनक्षत्र । वि, कर्बुर, शबल ।
चिथड़ा, स पु (हिं चीथना) चीर, चीवर कर्पट, नक्तक ।
चिनक, स स्त्री (हिं चिनगी) सदाहा पीडा २ मूत्रनाड्या पीडा ।
चिनगारी, स स्त्री (स चूर्ण+अगार >) क्षुद्रांगार र २ अग्नि ज्वलन,-कण-कणिका, वि ,स्फुलिंग-ग गा ।
चिनगी, स स्त्री (हिं चिनगारी) दे 'चिन गारी चपलबाल ।
चिनाई, स स्त्री (हिं चिनना) इष्टका चयन । २ ३ भित्ति गृह, निर्माणम् ।
चिन्मय, वि (स) ज्ञानमय । स पु परमे श्वर ।
चिन्ह, स पु दे 'चिह्न'।
चिन्हित, वि , दे 'चिह्नित'।
चिपकना, क्रि अ (अनु चिपचिप) सश्लिष् (दि प अ), सलग् (भ्वा प से) अनु आ म -सज (कर्म)।
चिपकाना, क्रि स , व, 'चिपकना' के प्रे रूप।
चिपचिप, स स्त्री (अनु) चिपचिपशब्द ।
चिपचिपा, वि (अनु) श्यान, सांद्र, मत्स्न शील ।
चिपचिपाना, क्रि अ (अनु चिपचिप) सत्स्नशील सांद्र(वि)भू २ दे चिपकना' ।
चिपचिपाहट, स स्त्री (हिं चिपचिपाना) मत्स्नशीलता, श्यानता सांद्रता ।
चिपटना, क्रि अ (स चिपिट) दे, 'चिप कना' २ आलिंग (भ्वा प से) परि स्वन (भ्वा आ अ)।
चिपटा, वि (स चिपिट<) अनुन्न, समरेख, सम समस्थ, सपाट ।
चिपटाना क्रि स , व 'चिपटना के प्र रूप ।
चिबुक, स पु (स चिबु(बु)क) दे 'ठोढी ।
चिमटना, क्रि अ (हिं चिपटना) दे 'चिप टना (१ २) ।
चिमटा, स पुं (हिं चिमटना) सदंश दंक , वंक मुख वदनम् ।
चिमटाना, क्रि स , व 'चिपटना' के प्र रूप ।
चिमटी, स स्त्री (हिं चिमटा) सदंशिका, लघु ,कंकमुख खम् ।
चिमड़ा, वि , दे 'लचीला' ।
चिमनी, स स्त्री (अं) धूम, नालीगर्भ २ अग्निकुण्ड,चुल्ली बिल (स्त्री) ।
चिरजीव, वि (स) दीर्घ-चिर , जीविन् आयुष ? दीर्घायु भव ।
चिरंतन, वि (स) चिरत्न [-त्नी (स्त्री)], पुरातन [-नी (स्त्री)] प्राचीन, प्राक्तन [-नी (स्त्री)]।
चिर, वि (स) दीर्घ चिर,-कालिक-कालीन २ चिरकाल-दीर्घकाल, स्थायिन् ३ दे 'चिर तन' ।
—काल, स पु (स) दीर्घसमय , महान् काल ।
—कालिक,—कालीन, वि (स) दे 'चिरतन' । (रोग) अविसर्गिन्, कालिक, दीर्घस्थायिन् ।
—जीवी, वि (स -विन्) दे 'चिरजीव' ।
—स्थायी, वि (स -विन्) दीर्घकाल, ध्रुव, स्थिर, अशीघ्रनाशिन् ।
चिरकना, क्रि अ (अनु०) अल्प-स्तोक हद (भ्वा आ अ) २ असकृत् अल्पमल उत्सृज् (तु प अ) ।
चिरकुट, (स चीरम्) दे चिथड़ा' ।
चिरचिरा, वि , दे 'चिड़चिड़ा ।
चिरत्न, वि (स) पुराण, पुरातन, प्रत्न, प्रत्न ।
चिरना, क्रि अ (स चीर्ण >) स्फुट (तु प से), विदृ विभिद् भज् (कर्म) ।
चिरवाई, स स्त्री (हिं चिरवाना) विदलन, विदारणं, विपाटन, २ विदारण वेतन मूल्य ।
चिरवाना, क्रि प्र , व 'चीरना के प्रे रूप ।
चिराइता, स पु , दे चिरायता' ।
चिराई, स स्त्री (हिं चिराना) दे चिरवाई ।
चिराग, स पुं (फा चराग) दीप , दीपक ।
—दान, स पुं , दीप आधार वृक्ष ।
चिराना क्रि प्रे , व 'चीरना' के प्रे रूप ।
चिरायँध, स स्त्री (स चर्म ध) चर्मकेशादि ज्वलनगंध , दुर्गंधि -गंध ।
चिरायता, स पुं (स चिरतिक्त) भूनिंब , ह, तिक्तक , किरातक ।

चिरायु, वि (सं चिरायुस्) दे 'चिरजीव' (१)।

चिरौंजी, सं स्त्री (सं चारबीज>) (वृक्ष) चार, चारक, खरस्कंध, बहुवल्कल, प्रियाल २ तस्य फल ३ तद्बीजगर्भ।

चिलक, स स्त्री, दे १ 'चमक' २ 'टीस'।

चिलकना, क्रि अ, दे 'चमकना' २ दे 'टीस मारना'।

चिलगोज़ा, स पु (फा) जलगोजक, निकोचक, चारुफल, सकोचम्।

चिलम, स स्त्री (फा) धूमपानचषक।

चिलमची, स स्त्री (फा) हस्तधावनी कर क्षालनी।

चिलमन, स स्त्री (फा) दे 'चिक'(१)।

चिल्लपों, स स्त्री (हिं चिल्लाना+अनु) कोलाहल, उत्क्रोश, वि राव, कलकल।

चिल्ला[1], स पु (फा) चत्वारिंशद्दिवसात्मक काल २ चत्वारिंशद्दिनव्रतम्।

चिल्ला[2], स पु (देश) ज्या, मौर्वी, प्रत्यंचा, धनुर्गुण।

—चढ़ाना, क्रि स, चाप अधिज्य कृ, धनुषि मौर्वी आरुह (प्रे आरोपयति)।

चिल्लाना, क्रि अ (अनु चिल्चिल) काल कल कोलाहल कृ, वि, रु (अ प से), उत्क्रुश् (भ्वा प से) २ चीत्कार कृ, उच्चै आक्रंद् (भ्वा आ से) ३ दे 'रोना'।

चिल्लाहट, स स्त्री (हिं चिल्लाना) दे 'चिल्लपों'।

चिल्लिका, स स्त्री (स) चिल्ली, झिल्ली, भृङ्गारी २ शाकराज, राजशाक ३ विद्युत् तडित् (स्त्री)।

चिह्न स पु (स न,) लक्षण, लाञ्छन, लिंग अभिज्ञान, अंक।

चिह्नित, वि (स) अंकित, स, चिह्न लक्षण लांछन।

चींटा, स पु, दे 'चिउंटा'।

चींटी, स स्त्री, दे 'चिउंटी'।

चीकट, स स्त्री (हिं कीचड़) तैलमल, दे 'तलछट'। वि, तैलमय [यी (स्त्री)]।

चीख़, स स्त्री (स चीत्कार) उत्क्रोश, आक्रंदित, उच्चकशब्द, रव राव।

चीखना, क्रि स (सं चषण) दे 'चखना'।

चीख़ना, क्रि अ (सं ची करण) दे 'चिल्लाना'। (२) उच्चै वद् लप (भ्वा प से)।

चीज़, स स्त्री (फा) वस्तु (न), द्रव्य, पदार्थ।

—वस्तु, स स्त्री (फा+सं) वस्तुजात, सामग्री २ गृहोपस्कर २ आभूषणादिकम्।

चीड़-ढ़, स पु (स चीडा) दारुगंधा, मङ्गल्या, भूतमारी, गन्धद्रव्यभेद २ चीरपर्ण शाल, सर्ज, दीर्घशाख (वृक्ष)।

चीतल, वि, (स चित्रल) दे 'चितकबरा'। स पु, चित्रमृग २ चित्रसर्प, अजगरभेद।

चीता[1], स पु (स चित्रक) दे 'चित्रक'।

चीता[2], वि (हिं चेतना) विचारित, चिंतित।

चीत्कार, स पु (स) दे 'चीख' २ दे 'चिल्लपों'।

चीथड़ा, स पु, दे 'चिथडा'।

चीथना, क्रि स (स चाग>) दे 'फाड़ना' तथा 'पीसना'।

चीन, स पु (स) देशविशेष २ अंशुकभेद ३ मृगभेद।

चीनी, वि (स चीन) चीन, वासिन्, सबंधिन्, चैन। स स्त्री, सिता, शुक्ला।

चीपड़, स पु (अनु चिप) दूषी वि (स्त्री), दूषिका, पिंचोडक, पिंज(जे)ट नेत्रमलम्।

चीफ, स पु (अं) पुरोग, प्रधानपुरुष, नायक, अध्यक्ष। वि, प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ, विशिष्ट।

—एडिटर, स पु (अं) मुख्य प्रधान, सम्पादक।

—कमिश्नर, स पु (अं) मुख्यायुक्त।

—कोर्ट, स पु (अं) मुख्य न्यायालय।

—जज, स पु (अं) मुख्य न्यायाधीश।

—जस्टिस, स पु (अं) मुख्य न्यायाधिपति।

चीमड़, वि (हिं चमड़ा) दे 'लचीला'।

चीर[1], स पु (स न) जीर्णवस्त्रखंड, कर्पट, नक्तक, चीवर २ वसन, वस्त्र ३ वृक्ष त्वच् (स्त्री) ४ मुनि, भिक्षु वस्त्रम्।

चीर[2], स पु (हिं चीरना) दीर्ण, छेद भेद स्फोट भिदा।

—फाड़, स स्त्री, अंगच्छेद, व्यवच्छेद।

चीरना, क्रि स (स चीर्ण) क्रकचेन छिद् (रु प अ)-दृ (क प से, प्र)-पट (चु) २ विश् (क प से) रद् (चु), भिद् (क प अ)। स पुं, विदारण, छेदन, भेदन, स्फोटनम्।
चीरने वाला, स पु, विदारक, छेदक इ।
चीरा हुआ, वि, विदारित, छेदित, भेदित, चीर्ण विदीर्ण।
—फाड़ना, स पु, अगच्छेदन, व्यवच्छेदनम्।
चीरा, स पु (हिं चीरना) शस्त्र, उपचार-उपाय कर्मन् (न)-क्रिया २ व्रण, णम्।
—देना, क्रि स, शस्त्रेण उपचर् (भ्वा प से)-साध (प्रे)।
चीरा, स पु (स चीर>) चित्रोष्णीष ष, चीरम्।
चीर्ण, वि (स) विदारित, छेदित, दीर्ण २ अनुष्ठित-कृत, सम्पादित।
—पर्ण, स पु (स) खजूर, दुरारोहा, यवनेष्टा २ निम्ब, अरिष्ट, तिक्तक।
चील, स स्त्री (स चिल) चिल्ला, आतापिन्, शकुनि (पुं), कंठनीडक, चिरमण, सकोण्ड।
—का मूत, स पु, दुर्लभ-अप्राप्य, वस्तु (न)।
चीवर, स पु (स न) दे 'चीर' (१, २ ४)।
चीस, स स्त्री, दे 'टीस'।
चुगल, स पु दे 'चगुल'।
चुगी, स स्त्री (हिं चुगल) नगर,-कर शुल्क य २ किंचिमात्र-अल्पपरिमाणं वस्तु (न)।
—खाना, स पु, शुल्कशाला।
चुचुना, स पुं, दे 'चुनचुना'।
चुंधला, स पु (हिं चुंधलना) निमेषक, निमीलक।
चुधलाना, क्रि अ (हिं चौ चार+स अध>) चाकचक्येन अस्पष्ट मद ईषद् दृश् (भ्वा प अ), इग (भ्वा आ से), नेत्रनेत्र प्रतिहन् (कर्म)।
चुधा, वि (हिं चौ+स अध>) ईषदंध, मद दृष्टि २ चिल, पिल ३ दे 'चुंधला' ४ क्षुद्र नयन।
चुधियाना, क्रि अ, दे 'चुंधलाना'।
चुंबक, स पुं (स) निसक, चुम्बित् निसित् [-त्री (स्त्री)] २ कामुक, लम्पट ३ धूर्त ४ चुबक, प्रस्तर मणि (पु) लोह, कांत चुम्बक, अयस्कांत, अयोमणि।
चुंबन, स पुं (स न) चुम्ब-बा २ निंसम, अधरपानम्।
चुंबा, स स्त्री (स) दे 'चुम्बन'।
चुंबित, वि (स) निंसित, ओष्ठस्पृष्ट २ लालित ३ स्पृष्ट।
चुंबी, वि (स चुम्बिन्) चुम्बक, निसक २ स्पर्शक, स्पर्शिन्। (प्राय समासांत में, ज गगनचुम्बी इ)।
चुकंदर, स पुं (फा) कदभेद।
चुकता, वि (हिं चुकना) समाप्त, निःशेष।
चुकती, स स्त्री (हिं चुकना) समाप्ति अवसिति (स्त्री)।
चुकना, क्रि अ (स च्युत+कृ>) पूर् समाप् अवसो (कर्म अवसीयते), अंत-समाप्ति गम्, निष् सपद् (दि आ अ)। २ दे 'चूकना'।
चुकाना, क्रि स (हिं चुकना) ऋण दा शुध् (प्रे) २ (विवादं) प्र शम् (प्रे, शमयति), स समा धा (जु उ अ) ३ स निष्पद (प्रे), सपूर् (चु) अवसो (प्रे, अवसाययति)।
चुकौता, स पु (हिं चुकना) ऋण परिशोध शुद्धि (स्त्री) २ सं समा धान ३ निर्धारण, णा, निश्चय।
चुक्र, स पु (स न) तिंतड़ीक, वृक्षाम्ल, महाम्ल, चुक्रक २ दे 'कांजी' ३ अम्लता।
चुगना, क्रि स (स चयन) चञ्च्वा आदा (जु आ अ)-ग्रह् (क्र प से) भक्ष (चु) २ चंच्वा ग्रह (भ्वा प अ)-अभिहन् (अ प अ)। स पुं, चंच्वा आदान ग्रहणं तुडेन ग्रहणम्।
चुगलखोर, स पु (फा) पिशुन, पृष्ठमांसाद, परोक्षे निंदक-परीवादक, कर्णेजप।
चुगलखोरी, स स्त्री (फा) चुगलखोर) पैशुन्य, पिशुनता, परोक्ष, निंदा परिवाद, कर्णेजाप।
चुगली, स स्त्री (फा) दे 'चुगलखोरी'।
करना या खाना, क्रि स, परोक्षे पृष्ठत निंद् अथवा अप-परि-वद् (दोनों भ्वा प से)-अधि-आ क्षिप् (तु प अ)।

चुगवाना, क्रि प्रे, व 'चुगना' के प्रे रूप।
चुगा, चुग्गा, स पु (हिं चुगना) खग, पक्षि भक्ष्य-खाद्यम्।
चुगाई, स स्त्री (हिं चुगाना) चञ्च्वा आदापन-आग्राह २ तस्य भृत्या वेतन वा।
चुगाना, क्रि स, व 'चुगना' के प्रे रूप। पक्षिभ्य अन्नकणान् विकृ (तु प से)।
चुचाना, क्रि अ दे 'टपकना'।
चुटकला, स पु दे 'चुटकला'।
चुटकी, स स्त्री (अनु चुट चुट) छोटिका, मु(तु)पुरी २ अङ्गुष्ठपीडन ३ चरणांगुलीयकम्।
—बजाना, मु, छोटिकां कृ अथवा दा।
—बजाते, मु, आशु, द्राक, सपदि, सद्य (सब अ य)।
—भर, मु अल्पस्य किञ्चिन्मात्रम्।
—भरना, मु, छोटिकया पीड (चु)।
चुटकियों में उड़ाना, मु, सुकर-माधारण परिहासमिव मन् (दि आ अ)।
—लेना, मु, अव-उप हस (भ्वा प से)।
चुटकुला, स पु (हिं चुटकी) नर्मन् (न), परिहास-नर्म-वाक्य-उक्ति (स्त्री)-आलाप-भाषण २ अमोघ विशिष्ट योग-कल्प।
चुटिया, स स्त्री, दे 'चोटी'।
चुटीला, } वि (हिं चोट) आहत, क्षणित,
चुटैला, } क्षत।
चुड़िहारा, स पु (हिं चूड़ी) चूड़ाहार, वलयविक्रायन् २ चूड़ा-वलय कार।
चुड़ैल स स्त्री (स चूड़ा>) पिशाची चिका, डाकिनी, शाकिनी, भूतभार्या, प्रेतपत्नी, २ कुरूपिणी, अरसी, स्थविरा ३ चण्डी, कोपनी क्रूरा (नारी)।
चुनचुना, स पु } (हिं चुनचुनाना) क्रिट
चुनचुनी, स स्त्री } उदर-कृमि, गुञ्जकीटक।
चुनचुनाना, क्रि अ (अनु) तीक्ष्णव्यथा अनुभू व्यथ (भ्वा आ से), तप (कर्म)।
चुनट-न, } स स्त्री (स चुन>) वस्त्र, भा पुट-
चुनन, } भंगी गि (स्त्री), ऊर्मि (स्त्री)।
चुनना, क्रि स (स चुण् तथा चि) (फूलादि) चुण् (तु प से), चि (स्वा उ अ), आदा (जु आ अ), उद्धृ समाहृ (भ्वा प अ), छिद् (रु प अ) २ पृथक् कृ, उद्ग्रह् (क्र प से) उद्धृ। ३ वृ (स्वा उ से), नियुज् (रु आ अ चु), निरूप् (चु), निधृ ४ यथाक्रम रच (चु)-स्था (चु स्थापयति) ५ अलङ्कृ, मंड (चु) ६ (दीवारादि) निर्मा (जु आ अ, प्रे निर्मापयति), विरच (चु)। स पु, चयन, उद्धरण, पृथक्करण, वरण, यथास्थान स्थापन, अलङ्करण, निर्माण इ। दे 'चुनाइ'।
चुनने योग्य, वि, चेय, समाहार्य, उद्ग्राह्य वरणीय स्थाप्य, अलङ्कार्य, निर्मेय इ।
चुनने वाला, स पु, चेतृ, समाहर्तृ, वरितृ, पृथक्कर्तृ इ (सब पु)।
चुना हुआ, वि, चित, समाहृत, वृत, रचित २ श्रेष्ठ उत्तम।
चुनरी, स स्त्री (स चूर्ण>) चित्र-शबल कर्बुर वस्त्रम्।
चुनवाँ, वि (हिं चुनना) वृत, अभीष्ट चित २ उत्तम, श्रेष्ठ।
चुनवाना, चुनाना, क्रि प्रे, व 'चुनना' के प्रे रूप।
चुनाई, स स्त्री (हिं चुनना) दे 'चुनना' स पु २ कुड्य-भित्ति-निर्माण ३ चयन, वेतन-भृत्या।
चुनाव, स पु (हिं चुनना) चिति-समाहृति (स्त्री), उद्ग्राह, उद्धार (२) वृति-पृथक्कृति (स्त्री), निर्धारणम्।
चुनावट, स स्त्री, दे 'चुनट'।
चुनिंदा, वि (फा चुनीदा) दे 'चुनवाँ'।
चुनौटी, स स्त्री (हिं चूना) चूर्णपुट।
चुनौती, स स्त्री (हिं चुनना) समर, आह्वान, अभिग्रह २ उत्तेजन उद्दीपन, उत्थापनम्।
चुन्नट-न न, स स्त्री, दे 'चुनट'।
चुन्नी[1], स स्त्री (स चूर्ण>) क्षुद्र, माणिक्य पद्मराग २ रत्न, खण्ड-लव, रत्नक ३ अन्न, कण-कणिका ४ काष्ठचूर्णम्।
चुन्नी[2], स स्त्री, दे 'चुनरी'।
चुप, वि (स चुप् निःशब्द गमन>) अवाक्, निःशब्द, नीरव, मौनिन्, तूष्णीक, अनालापिन्। स स्त्री, नीरवता, दे 'चुप्पी' २ निस्तब्धता।

—करना या होना, क्रि अ, वाच यम् (भ्वा प अ) निरुध (रु उ अ) मौन आकल् (चु) भज (भ्वा उ अ)।
—रहना, क्रि अ, मौन तूष्णीं जोष आस् (अ आ से) स्था (भ्वा प अ)।
—चाप, क्रि, वि, जोष, तूष्णीं, निःशब्द, मौन २ गुप्त गूढ़, निभृत, प्रच्छन्नम्।
चुपका, वि (हिं चुप) दे 'चुप' (वि)।
चुपके से, क्रि वि, दे 'चुपचाप'।
चुपकी, स स्त्री (हिं चुप) दे 'चुप्पी'।
चुपड़ना, क्रि स (अनु चिपचिप) अञ्ज (रु प से), उप, दिह् (अ प अ) लिप (तु प अ), अनु आ वि २ दोष गुह् (भ्वा उ से)-प्रच्छद् (चु) ३ दे 'खुशामद करना'। स पु, अंजन, उपदेहन, लेपनम् ई।
चुपड़ा, वि (हिं चुपड़ना) (घृतादिभि) उपलिप्त, अभ्यक्त, दिग्ध।
चुप्पा, वि (हिं चुप) वाचंयम, अल्प मित, भाषिन वाग्यत।
चुप्पी, स स्त्री (हिं चुप) निःशब्दता, नीरवता, मौन, तूष्णींभाव २ निःस्तब्धता, निश्चलता, निश्चेष्टता।
चुभकी, स स्त्री दे 'डुबकी'।
चुभना, क्रि अ (अनु) सलग् (भ्वा प से), सञ्ज् (कर्म), अनु आ स, सलग्नीसक्तीभू, व्यध् निर्भिद् (कर्म)।
चुभना, चुभोना, क्रि स (हिं चुभना) व्यध् (दि प अ), निर्भिद् (रु प अ), तुद् (तु प अ) निप्रविश् (प्रे)। स पुं, वेध धन, छेद-दन, निर्भेद दनम्।
चुभानेवाला, स पुं, वेधक, छेदक, निर्भेदक ई।
चुमकार, स स्त्री (हिं चूमना + सं कार >) चुचुत्कार, चुबनध्वनि (पु)।
चुमकारना, क्रि स (हिं चुमकार) सचु चुत्कार उपलल्-उपच्छद् (चु)।
चुरचुरा, वि दे 'चुरमुरा'।
चुर(रु)ट, सं पु, दे 'सिगार'।
चुरमुर, सं पु (अनु) चुरमुरशब्द।
चुरमुरा, वि (हिं चुरमुर) भंगुर, भिदुर, भिदेलिम।
चुरवाना, क्रि प्र, (१-२) व 'चुराना' तथा 'पकाना' के प्रे रूप।
चुराना, क्रि स (स चोरण) चुर्-स्तन् (चु), अपहृ (भ्वा प अ), मुष (क्र प से) २ गुह् (भ्वा उ से), प्रच्छद् (चु)। स पु, चोरण, मोषण, अपहरण गूहन, प्रच्छदन, दे 'चोरी'।
चुराने योग्य, वि, चोरयितव्य, मोषणीय।
चुराने वाला, स पु, दे 'चोर'।
चित्त चुराना, मु, मनो हृ (भ्वा प अ), वि परि मुह् (प्रे)।
चुरि, चुरी, स स्त्री (स) धूपक, रातक, लघु, कूप-अवट।
चुल, स स्त्री, दे 'खुजली'।
चुलबुल, स स्त्री (अनु) दे 'चचलता'।
चुलबुला, वि (पूर्व) दे 'चचल' तथा 'नटखट'।
चुलबुलाना, क्रि अ (पूर्व) चपल-चञ्चल (वि) भू।
चुलबुलापन, सं पु } दे 'चचलता'।
चुलबुलाहट, स स्त्री }
चुलाना, क्रि स, व 'टपकना' के प्र रूप।
चुलाव, स पु, अमांस निर्मास,-ओदन -नम्।
चुल्ली, स स्त्री (स) दे 'चूल्हा' २ चिता।
चुल्लू, स पु (स चुलुक) चुलुक, अजलि (पु), चलुक, गडूष था।
—भर, वि चुलुक-चुलुक, मात्र, अजलि गडूष, मात्र (जलादि)।
—भर पानी में डूब मरना, मु, अत्यत लज्ज् (तु आ से)-त्रप् (भ्वा आ वे)।
चुवाना, क्रि, स, व 'टपकना' के प्रे रूप।
चुसकी, स स्त्री (हिं चूसना) गडूष, चुलुक, चुलुक २ ईषत् शनैः शनैः, पान ३ तमाखुधूमकर्ष।
चुसनी, स स्त्री, दे 'चूसनी'।
चुसवाना, क्रि प्र, } व 'चूमना' के प्रे रूप।
चुसाना, क्रि प्रे }
चुस्त, वि (फा) उद्यमिन्, उद्योगिन्, क्षिप्रका रिन्, स्फूर्तिमत् २ जागरूक, दक्ष ३ आलस्य शैथिल्य,-शून्य, सुसहत ४ दृढांग, सबल।
—चालाक, वि, दक्षानलस, चतुरातन्द।
चुस्ता, सं पुं (फा) अजमेषशावकानां आमा शय २ मलाशय ३ दे 'सिल्वट'।

चुस्ती, सं स्त्री (फा चुस्त) क्षिप्रकारिता, स्फूर्ति (स्त्री), उद्यम, उद्योग ३ शैथिल्या भाव, सुदृढ़ता (स्त्री) ३ दृढता, सबलता।

चुहचुहाना, क्रि अ (अनु) दे 'चहचहाना' २ रसवत् दीप् (दि आ से)-प्रकाश् (भ्वा आ से)।

चुहचुही, स स्त्री (अनु) फुलचुही, *चुहचुही, कृष्णचटकाभेद पुष्पशिखिनी।

चुहल, स स्त्री (अनु चुहचुह >) हास्य, परिहास, विनोद, कौतुक, प्रमोद, विलास, मनोरंजनम्।

चुहिया, स स्त्री (हिं चूहा) गरिका, बालमूषिका, क्षुद्र मूषक आखु (पु) २ दे 'चूही'।

चुहुटना, क्रि. अ, तथा वि दे 'चिपकना' तथा 'चिपचिपा'।

चूँ, स पु (अनु) चुकार, चुक्रुति (स्त्री)।

—चा, सं पु दे 'चूँचरा'।

—करना, मु, किमपि वद् (भ्वा प से) २ विरुद्ध वद् अथवा प्रतिवद्।

चूँकी, अव्य (फा) यत्, यत, यस्मात्, हि।

चूँगी, स स्त्री, दे 'चुगी'।

चूँचरा, स पु (फा) प्रतिवाद प्रत्याख्यान, विरोध २ आपत्ति (स्त्री), अपवाद ३ व्याज, मिषम्।

चूँचूँ, सं स्त्री, (अनु) चुकार, चुक्रुति (स्त्री), चाटकैरशब्द २ कलरव, विरुत ३ चूँ-चूँ शब्द ४ क्रीडनकभेद।

चूक[१], सं स्त्री (हिं चूकना) अपराध, स्खलित, दोष, प्रमाद २ मार्गभ्रंश, व्यतिक्रम।

चूक[२], स पु (स चुक्र) अम्ल २ अम्लद्रव्यभेद ३ चुकर्क चुक्रिका, अम्लशाकभेद। वि, अत्यम्ल, अतिशुक्त।

चूकना, क्रि अ (स च्युत् कृ >) अपराध (दि, स्व प अ), स्खल् (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से, प्रमाद्यति) २ लक्ष्यात् सत्पथात् भ्रंश् (भ्वा आ से)-भ्रंश् (दि प से) ३ सदवसर या (प्रे यापयति)-अतिवह् (प्रे)।

चूका, सं पु, दे 'चूक' (२)।

चूची, सं स्त्री (सं चूचुक) चूचुक, चुचुक, कुचाग्र, कुचानन, स्तनवृंत २ स्तन, कुच, पयोधर।

—पीना, मु स्तन स्तन्य पा (भ्वा प से)।

चूज़ा, स पु (फा) कुक्कुटशाव वक। वि, अल्पवयस्क।

चूड़ांत, सं पु (सं) चरम, सीमा-अवधि (पु) अ, अत्यधिक, अत्यन्त वि, परम, गाढ, उत्कट।

चूड़ा, स स्त्री (सं) शिखा, जु(जू)टिका, केशपाशी २ मयूरशिखा ३ शिखर, अग्र ४ कूप, ५ चूडाकरणसंस्कार। सं पु (सं स्त्री) वलय य, कंकण २ वलयावली, चूडावली।

—करण, स पु (स न) चूडाकर्म मुंडन, संस्कार।

—मणि, सं पु (सं) शिरोरत्न, शीर्षपुष्पम्। २ प्रधान, अग्रगण्य ३ गुंजा।

चूड़ी, स स्त्री (स चूडा) वलय य, करभूषण, कौतुकम्।

—दार, वि, (हिं + फा) पुटीकृत, वलीयुत, संकुचित।

चूड़ियाँ पहनना, मु, स्त्रीवत् आचर् (भ्वा प से)।

चूत, स पु (स) रसाल, आम्र, कोकिलोत्सव २ (स न) अपान न, गुद, च्युति छुलि (स्त्री)। (हिं) योनि (स्त्री) भग, नारीगुह्यम्।

चूतड़, स पु (सं चूत >) नितंब, कटि(टी)-प्रोथ, स्फिच् चा (स्त्री), पुत, पुतक, स्थिक।

चून, स पु (स चूर्ण) दे 'आटा' तथा 'चूना'।

चूनरी, स स्त्री, दे 'चुनरी'।

चूना[१], स पु (स चूर्ण र्ण) चूर्णकम्।

चूने का पानी, सं पु चूर्णकजल, चूर्णोदकम्।

—दानी, स स्त्री, चूर्णधानी, चूर्णपुटक।

अनबुझा—, अशान्तचूर्णकम्।

बुझा—, शान्तचूर्णकम्।

चूने की भट्ठी, स स्त्री, चूर्ण-आपाक पाकपुटी।

चूना[२], क्रि अ (स च्यवन) दे 'टपकना'। वि, सच्छिद्र, स्फुटित, सरध्र।

चूनी, स स्त्री (स चूर्णिका) धान्य-अन्न-कण णी णिका २ रत्न मणि-कण-कणिका।

चूमना, क्रि स (सं चुम्बन) (मुख) चुम्ब् (भ्वा प से), निंस् (अ आ से) २ ओष्ठा-

म्यां सृश् (तु प अ) ३ (ओठ) अधर अधररसं पा (भ्वा प अ) ४ (सिर) शिर आ-उप समा घ्रा (भ्वा प अ)। सं पु, चुंबन, निंसन, अधरपान, शीर्षाघ्राणम्।

चूमने योग्य, वि, चुंबनीय, निंसितव्य।

चूमने वाला, सं पु, चुंबक, चुंबिन्, निंसक, निंसितृ (पु)।

चूमा हुआ, वि दे 'चुम्बित'।

—चाटना, मु, उप, लल् (चु) चुब।

चूमा, सं पु, चुंबन, चुब-वा।

—चाटी, स स्त्री, विलास, विहार, क्रीडा।

चूर, स पु (स चूर्ण र्ण) क्षोद, पिष्ट, रजस (न), कणा-कणिका अणव लवा (बहु)। वि, मग्न, लीन, परायण, अभिनि नि, विष्ट २ मत्त, क्षीब, मदोन्मत्त ३ श्रांत, खिन्न, क्लान्त।

—चूर, वि, चूर्णित, पिष्ट, क्षुण्ण।

चूरन, स पु (स चूर्ण र्ण) दे 'चूर्ण' २ चूर्ण, अग्निवर्द्धक पाचक, चूर्णम्।

चूरमा, स पु (स चूर्ण र्ण) मिष्टान्नभेद, मिष्टचूर्ण।

चूरा, सं पु (स चूर्ण र्ण) क्षोद, पिष्ट। दे 'चूर' (स पु)।

—करना, क्रि सं, चूर्ण् (चु), चूर्णीकृ, पिष् क्षुद् (रु प अ)।

चूर्ण, सं पु (स पु न) क्षोद, पिष्ट २ दे 'चूरन' ३ रजस् (न), धूलि (स्त्री)।

—कुंतल, सं पु (सं) अलक, कुरल।

चूर्णक, सं पु (स) भृष्टपिष्टान्नम् २ सक्तुक, भृष्टयवचूर्णम्। (स न) सुगन्धि-सुगन्धित, चूर्णम् २ कटुवर्णरहितम् अल्पसमासयुक्त गद्यम्।

—चूर्णन स पु (स न) पेषण, मर्दनं, खण्डनम्।

चूर्णित, वि (सं) पिष्ट, क्षुण्ण, चूर्णीभूत।

चूल¹, सं पुं (स चूल) केश, शिखा।

चूल², स स्त्री (देश) विवर्तनकील २ कीलाग्रम्।

चूलें ढीली होना, मु, अत्यंत श्रम्-आयम् (भ्वा दि प से)-खिद् (दि आ अ)-श्रम् (दि प से)।

चूल्हा, सं पु / **चूल्ही,** स स्त्री [स चुल्ली हि (स्त्री)] अधि (दि) का, अधिश्रयणी, उद्धान, उध्मान, अश्मन्, अश्मंतक कम्।

चूसना, क्रि स (स चूषण) आ, चूष् (भ्वा प से), पा (भ्वा प अ) २ उच्चुष् (प्रे), आ-नी पा (भ्वा प अ)। स पु, चोषणं, चोष, उच्चोषणम्।

चूसने योग्य, वि, चूष्य, चोष्य, उच्चोष्य।

चूसनी, सं स्त्री (हिं चूसना) चोषणी, क्रीडनकभेद २ चूचुकवती काचकूपी ३ चोष णयष्टि (स्त्री)।

चूहड़ा, स पुं, दे 'भंगी'।

चूहड़ी, स स्त्री, दे 'भंगन'।

चूहा, स पु (अनु चू) आखु उंदु(दु)रु (पु), खनक, बिलेशय, मूष(षि, षी)क, मूष, मूषिकार।

—दन्ती, सं स्त्री, कंकणभेद, मूषदंती।

—दान,—दानी, सं पु, सं स्त्री, मूषपिंजर, मूषकपंजरम्।

—मार, स पु, मूषमार ५ श्येन, खगान्तक।

चूही, सं स्त्री (हिं चूहा) मूषा, मूषिका। २ दे 'चुहिया'।

चेंचला, स पुं (अनु चेंचें) पक्षिशाव-वक।

चें चें, स स्त्री, दे (अनु) चुंकार, चुंकृति (स्त्री) २ प्र, जल्प जल्पितम्।

चेंवर, स पुं (अ) कोष्ठ, कक्षा, शाला २ सभागृहम् २ परिषद् (स्त्री)।

चेयर, स स्त्री (अ) दे 'कुर्सी'।

—मेन मैन, स पु (अं) प्रधान, सभापति अध्यक्ष।

चेक, स पुं (अ) देयादेश २ दे 'चारखाना'।

चेचक, स स्त्री (फा) मसूरी रिका, वसंतरोग, शीतला स्त्री।

चेट, सं पुं (स) दास, सेवक २, पति, भर्तृ। २ भट विदूषक।

चेटक, सं स (स) चेट, दास २ जार, उपपति ३ इन्द्रजाल, माया ४ सदेहहर, दूत ५ दे 'चसका'।

चेटी, सं स्त्री (सं) दासी, सेविका, परिचारिका।

चेत, स पुं [सं चेतन् (न)] चेतना, चैतन्य, सज्ञावेदन २ ज्ञान, बोध ३ अवधान, सावधानता ४ स्मरणं, स्मृति (स्त्री) ५ चित्तम्।

चेतन, सं पु (स) आत्मन् (पु), जीव २ मनुष्य ३ प्राणिन्, जीवधारिन् ४ परमेश्वर ५ मनस् (न), चित्तन्। वि, चेतनावत्, चेतोमत्, प्राण, धारिन् भृत्, जीविन्, सजीव।

चेतनता, स स्त्री, (स) सजीवता, चेतोमत्ता, दे 'चेतना'।

चेतना, स स्त्री (स) सज्ञा, चैतन्य २ ज्ञान, बोध ३ स्मृति (स्त्री) ४ मनोवृत्ति (स्त्री)। क्रि अ, सज्ञा-चेतना लभ् (भ्वा आ अ) आ प्रति पद् (दि आ अ), प्रकृति आपद्, प्रकृतिस्थ (वि) भू २ सावधान अवहित (वि) भू।

चेतावनी, स स्त्री (हिं चेतना) प्राक्-पूर्व, मूचना प्रतिबोध उपदेश।

चेप, स पु (अनु चिपचिप) निर्यास, रस २ श्यान सांद्र-वस्तु (न) ३ दूष्य, पूय-य, पूयरक्त, कुणपम्।

—दार, वि (हिं +फा) निर्यासमय [-यी (स्त्री)] २ श्यान, साद्र ३ सपूय।

चेला, स पु (सं चेटक >) शिष्य, अन्तेवासिन्, छात्र, विद्यार्थिन् २ अनुयायिन्।

—मूँड़ना, मु, उपनी (भ्वा प अ), दीक्ष् (भ्वा आ से) दीक्षा दा (जु उ अ)।

चेलिन, चेली, स स्त्री (हिं चेला) शिष्या, अन्तेवासिनी, छात्रा, विद्यार्थिनी २ अनुयायिनी।

चेष्टा, स स्त्री (स) कायिकव्यापार, चेष्टित, हस्तादिचालन, इंगित, अंगविक्षेप २ उद्योग, प्रयत्न ३ कार्य, कर्मन् (न) ४ परिश्रम।

चेस, स पु (अ) दे 'शतरंज'।

चेहरा, स पु (फा) आनन, मुख, वदन २ पुरो-अग्र, भाग ३ कपट छद्म, मुख-वदनम्।

—मोहरा, स पु, आकार, आकृति (स्त्री), रूपम्।

—उतरना, मु, मुख-वदन, म्लानि (स्त्री)-म्लानता-कान्तिक्षय-विवर्णता।

—बिगाड़ना, मु, अत्यधिक नश (चु)-प्रहृ (भ्वा प अ)।

—(रे) पर हवाइयाँ उड़ना, मु मयादिभिवैवर्ण्य विवर्णता।

चैक, स पु, दे 'चेक'।

चैत, सं पु (सं चैत्र) चैत्र (त्रि) क, चैत्रि (पु) चैत्रिन्, मधु (पु) २ चैत्रशस्यम्।

चैतन्य, स पु (स न) आत्मन् (पु), जीवात्मन् २ ज्ञान, बोध ३ परमेश्वर ४ प्रकृति (स्त्री)। वि, चेतनावत्, सजीव ५ सावधान, अवहित।

चैत्य, स पु (स न) गृह, भवन, सद्मन् (न) २ मदिर ३ यज्ञशाला। (सं पु) बुद्ध २ बुद्धमूर्ति (स्त्री) ३ अश्वत्थवृक्ष ४ बौद्धभिक्षु (पु) ५ भिक्षुविहार।

चैत्र, म पु (स) दे 'चैत' २ बौद्धभिक्षुक ३ यज्ञभूमि (स्त्री) ४ मदिरम्। वि, चित्रा, सदधिन् विषयक

चैन, स पु (स शयन >) सुख, सौख्य, सुस्थता, आनंद, मोद, विश्राम, निर्वृति (स्त्री)।

—उड़ाना या करना, मु, सानद-सुख जीव् (भ्वा प से), मु (भ्वा आ से), नद् (भ्वा प से)।

—पड़ना, मु, सुख निर्वृति लभ् (भ्वा आ-अ)।

चोंच, स स्त्री [स चञ्चु (स्त्री)] त्रोटी टि (स्त्री), तुंड, चञ्चुका, सृपाटिका। २ मुखम्।

चोंचला, स पु, दे 'चोचला'।

चोआ, सं पु (हिं चुआना) गध, गांधिक, गधद्रव्यम्।

चोकर, स पु (हिं चून = आटा + करार = छिल्का) कडगर, तुष, धान्यत्वच् (स्त्री), बुसम्।

चोखा, वि (स चोक्ष) शुद्ध, केवल, पवित्र २ शुचि शुद्धात्मन् ३ तीक्ष्ण, निशित ४ दे-'भरता' ५ उत्कृष्ट, उत्तम।

चोगा, स पु (हिं चुगना) खगखाद्य, पक्षिभक्ष्य, विहगाशनम्।

चोग़ा, स पु (तु) कञ्चुक, प्रावार-रक।

चोचला, स पु (हिं चोंच) विभ्रम, विलास, ललिताभिनय, लीला, हाव।

चोज, स पु (हिं चोंच) सुभाषित, वैदग्ध्य, नर्मालाप २ हास्य, परिहास।

चोट, स स्त्री (स चुट् = काटना >) अभिघात निर्-घात, प्रहार, आहति (स्त्री), ताडन पात। २ व्रण, क्षत ३ हानि-क्षतिः

(स्त्री) ४ वेदना, मनोव्यथा ५ विश्रम विश्राम-घात भग ६ सव्यग्यो विवाद ।
—करना, क्रि स, प्रह (भ्वा प अ), क्षि (स्वा प अ), तुद् (तु प अ) आहन् (अ प अ)।
—खाना, क्रि अ, आहन् प्रह तुद् (कर्म)।
—पर चोट, मु, सततावाता, प्रहारपरपरा, २ बम्र विपद्, परपरा ।
चोटा, स पु (हिं चोआ) मत्स्यडीरस ।
चोटी, स स्त्री (स चूडा) जु(ज्)टिका, शिखा, शिखड-ण्डक २ शिखर, श्रृग, सानु (पु, न) अग्र शिरा मूर्धन् (पु) ३ शिखड, शेखर ४ वेणीबधनसूत्र ५ वेणी, रज्जु (स्त्री)।
—का मु, अग्रय, अग्रगण्य, उत्तम श्रेष्ठ ।
चोटीदार, वि (हिं + फा) शिखावत, सानुमत २ सूच्याकार, शकाकृति ।
चोट्टा, स पु, दे 'चोर'।
चोब, स स्त्री (फा) पटमडप स्थाणु स्थूणा २ यष्टि (स्त्री) दड ।
—चीनी, स स्त्री, काष्ठौषधभेद ।
—दार, स पु (फा) वेत्र-दड यष्टि धर पाणि (पु)-हस्त २ दौवारिक, दडपाशुल ३ रक्ष-दट, पुरुष ।
चोया, स पु, दे चोआ'।
चोर, स पु (स) चौर, कुभीर(ल)क, कुभील, ऐकागारिक, तस्कर, दस्यु, प(पा)टच्चर, परास्कदि (पु), मोषक, स्तेन ।
—खिड़की, स स्त्री, पक्षद्वार, पक्षकम्।
—चकार, स पुं, दे चोर'।
दरवाज़ा, स पु, प्रच्छन्न-अन्तर गुप्त-गुढ द्वारम्।
—सीढ़ी, स स्त्री, उप प्रच्छन्न-गूढ सोपानम्।
चोरटा, स पु, दे 'चोर' (चोरटी, स्त्री)।
चोरी, स स्त्री (हिं चोर), मोषणं, अपहरण २ चौर्य, चो(चौ)रिका, चोरण स्तेय स्तै य, मोष ।
—करना, क्रि स, दे 'चुराना'।
—का माल, स पु, चोरित अपहृत-लुठित, द्रव्यम्।
—चोरी, क्रि वि, अप्रकाश, निभृत, रहस (सत्र अव्य)।
—यारी, स स्त्री, निंदितकर्मन् (न), पापन्।
—से, क्रि वि, अलक्षित, प्रच्छन्नम्।
चोल, स पु (स) दक्षिणपथे प्रांतविशेष चोला २ तत्रत्य जन ३ ४ दे 'चोला चोली' ५ कवच ६ वल्कलम्।
चोला, स पु (स चोल) स्व,कूर्पासक युतक २ दे 'चोली' ३ कचुक, प्रावारक ४ नांबूलकरक ५ शरीरम्।
—छोड़ना, मु, तनु त्यज् (भ्वा प अ)।
—बदलना, मु, देहांतर प्राप (स्वा उ अ) प्रेत्य भू।
चोली, स स्त्री (स) चोलक, चोड-डी व(कु)चुली लिका, कचूक, कुर्पासक कम्। २ दे 'चोला'(१)।
—दामन का साथ, मु, प्रगाढ, सख्य सौहार्द मित्रता प्रणय ।
चोषण, स पु (स न) चूषण, चूषा, चोष २ स्तन स्तन्य क्षीर, पानम्।
चोष्य, वि (स) चूषणीय, चूष्य ।
चौंक, स स्त्री (हि चौं + स कप), (आकस्मिक) कप पन, साध्वसात्कप, सहसा स्फुरणन्।
—उठना या पड़ना, क्रि अ, सहसा कप स्पद् (भ्वा आ से)-स्फुर (तु प से)।
चौंकना, क्रि अ (हिं चौंक) दे 'चौंक उठना' २ सहसा अवबुध् (दि आ अ) जागृ (अ प से) ३ विस्मि (भ्वा आ अ)-आश्चर्यचकित (वि) भू ।
चौंकाना, क्रि स, व 'चौंकना' के प्रे रूप।
चौंतरा, स पु, दे 'चबूतरा'।
चौंतीस, वि (स चतुस्त्रिंशत्) स पु, उक्ता सख्या, तद्बोधकाको (३४) च ।
चौंती(ति)सवाँ, वि, (हिं चौंतीस) चतुस्त्रिंशत्तम मी म, चतुस्त्रिंश शी शम्।
चौंध, स स्त्री, दे 'चकाचौंध'।
चौंधियाना, क्रि अ, दे 'चुँधलाना'।
चौंर, स पुं (स चामर) चमरम्।
चौंरी, स स्त्री (हिं चौंर) अवचूडक-च रोमगुच्छ २ दे 'चमरी'।
चौंसठ, वि (स चतुःषष्टि स्त्री) स पुं, उक्ता सख्या, तद्बोधकाको (६४) च ।
चौंसठवाँ, वि (हिं चौंसठ) चतुःषष्टितम मी म, चतुःषष्ट ष्टी ष्ट (पुं स्त्री न)।

चौ—, वि (स चतुर) केवल समास के आदि में।
—कोना—कोर, वि, दे 'चारकोना'।
—खूंट, स पु, चतुर्दिश, दिकचतुष्टयी २ भूमण्डल, पृथिवी। क्रि वि, दे 'चारों तरफ'।
—खूंटा, वि, दे 'चारकोना'।
—गिर्द, क्रि वि, दे 'चारों तरफ'।
—गुना, वि चतुर्गुण गण, चतुर्गुणित -ता तम
—पर्त, वि चतुष्पुट, चतुर आवृत्त आवर्तित
—पहल, वि, चतुर्भुज चतुष्पार्श्व चतुर्बाहु।
—पहिया वि, चतुश्चक्र। स स्त्री, चतुश्चक्र वाहनम्।
—मासा, स पु, चतुर्मास, वर्षा (स्त्री बहु) प्रावृष (स्त्री)।
—मुखा, वि, चतुर्मुख, चतुरानन। स पु, ब्रह्मन् (पु)।
—राहा स पु, चतुष्पथ थ, चतुष्कम्।
—हद्दी, स स्त्री, सीमाचतुष्टय-यी।
चौक, स पु (स चतुष्क) प्रवण, चतुष्पथ -थ, शृङ्गाटक, संस्थान। २ मुख्य प्रधान,-आपण निगम हट्ट ३ अजिर, अगन ण, चत्वर र ४ चतुरस्रवेदि (स्त्री) ५ पुरोवर्तिदन्तचतुष्टयम्।
चौकड़ी, स स्त्री (हिं चौ = चार + स कला = अंग >) प्लुत नि (स्त्री) वल्गनम्। २ नरचतुष्टयी ३ चतुरश्व वाहनम्।
—भरना, क्रि अ, वल्ग् (भ्वा प से), उत्प्लु (भ्वा आ अ)।
चण्डाल—, स स्त्री, चण्डाल-दुष्ट-चतुष्टयी, धूर्त, मण्डल मण्डली।
भूलना, मु, किंकर्तव्यविमूढ (वि), नन् (नि आ से), आकुली भू।
चौकन्ना, वि (हिं चौ-चार + स कर्ण >) अवहित, सावधान, जागरूक, प्रमादशून्य।
—रहना, क्रि अ, अवहित-जागरूक (वि) स्था (भ्वा प अ)।
चौकस, वि (हिं चौ-चार + कस-कसा हुआ >) दे 'चौकन्ना' २ उद्यमिन्, उद्योगिन् ३ यथार्थ, यथातथ।
—रहना, क्रि अ, सावधान-अप्रमत्त (वि) स्था (भ्वा प अ)।
चौकसी, स स्त्री (हिं चौकस) जागरूकता, सावधानता, दक्षता।
चौका, स पु (स चतुष्क) चतुष्टय, वस्तु चतुष्टयी २ पाक, शाला गृह, महानस, रसवती ३ भोजन, शाला-गृह-अगार ४ अग्रय दन्तचतुष्टय ५ अगन ण ६ चतुरस्रशिला ७ शीर्षफुल्ल (गहना)।
चौकी, स स्त्री (स चतुष्की) आसन, चरण पाद, पीठ पीठ, *चतुष्की २ दे 'कुर्सी' ३ निवेशस्थान, दे 'पडाव' ४ हविस (न) ५ रक्षिनिवास, प्रहरिशाला ६ ग्रैवेयक, कण्ठाभूषणभेद ७ जागरूकत्व, सावधानता।
—देना, क्रि अ, आमद्य उपविश् (प्रे) २ रक्ष् (भ्वा प से)।
—दार, स पु (हिं + फा) गृह, प पाल, प्रहरिन्, रक्षक २ वैतालिक, वैबोधिक।
—दारी, स स्त्री, रक्षा, गुप्ति (स्त्री), अवेक्षण, प्रहरित्व २ रक्षा प्रहरित्व-वेतन शुल्कम्।
चौखट, स स्त्री (हिं चौ-चार + काठ >), *कपाटलग्न, चतुष्काष्ठ २ देहली-लि (स्त्री), द्वारपिंडी, गृहावग्रहणी ३ द्वारम्।
चौखटा, स पु (हिं चौखट) *चतुष्काष्ठक, *चित्र-दर्पण, परिवेष्टन-वलनम्।
चौगान, स पु (फा) एतन्नामक खेलाभेद २ साश्विदण्डक्रीडाक्षेत्रम्।
चौड़ा, वि (हिं चौ + पाट) उरु, परिणाहवत् [ती (स्त्री)], पृथु, विशाल, विस्तृत, वितत, विस्तीर्ण।
—करना, क्रि स, प्र वि, तन् (त उ से), प्रस् (प्रे), विस्तृ (क्र उ से था प्रे), प्रथ् (चु)।
चौड़ाई, चौड़ान, स स्त्री (हिं चौड़ा) तर्यक्ता त्व, विस्तार, विशालता, पृथुता, पार्श्व, परिणाह, विस्तीर्णता।
चौतरा, स पु, दे 'चबूतरा'।
चौताला, वि, (हिं चौ + स ताल >) चतुस्ताल। स पु, होलिकागीति (स्त्री) २ चतुस्ताल।
चौथ, स स्त्री (स चतुर्थी) शुक्ला चतुर्थी २ कृष्णा चतुर्थी ३ चतुर्थांश ४ करभेद।

चौथा, वि (स चतुर्थ) तुर्य, तुरीय। स पु, चतुथक, भूनक्रीनिभेद।

चौथाई स स्त्री (हिं चौथा) चतुर्थ-तुर्य तुरीया अश भाग, पाद, तुर्य, तुरीय, चतुर्थम्।

चौथिया, (हिं चौथ) चतुर्थकज्वर २ चतुर्था शाधिकारिन्।

चौथी, वि स्त्री (स चतुर्थी) तुर्या, तुरीया। स स्त्री, वैवाहिकरातिभेद, *चतुर्थी।

चौथे, क्रि वि (हिं चौथा) चतुर्थस्थाने।

चौदस, स स्त्री (स चतुर्दशी) १ २ शुक्ल-कृष्ण,-चतुर्दशी।

चौदह, वि (स चतुर्दशन्) स पु, उक्ता सख्या, तद्बोधकाको (१४) च।

चौदहवाँ, वि (हिं चौदह) चतुर्दश शी शम्।

चौधराई, स स्त्री (हिं चौधरी) मुख्यत्व नेतृत्व प्रधानत्वम्।

चौधरानी, स स्त्री (हिं चौधरी) मुख्या, प्रधाना, नेत्री।

चौधरी, स पु (स चतुर्धुरीण >अथवा स चतुर=तकिया+धारिन्>) अग्रणी (पु), नायक, पुरोग, धुरीण।

चौपई, स स्त्री (स चतुष्पदी) छन्दोभेद।

चौपट[१], वि (हिं चौ=चार+पट किवाड़ा) अरक्षित, आवरण-आच्छादन,-हीन, प्रकट, अपावृत।

चौपट[२], वि (हिं चौ=चार+स पाट चौड़ाई) नष्ट वि, ध्वस्त, क्षीण उच्छिन्न, नाशित।

—करना, क्रि स, उच्छिद् (रु प अ) विध्वस नाश (प्रे), उत्सद् (प्रे)।

चौपड़, स स्त्री (स चतुष्पट ट>) चतुष्पट, अक्षक्रीडाभेद २ तस्य पट अक्षा च।

चौपाई, स स्त्री (स चतुष्पादी>) छन्दोभेद।

चौपाड़, स पु, दे 'चौपाल'।

चौपाया, स पु (स चतुष्पाद) चतुष्पद, चतुष्पाद् (पु) २ पशु (पु)।

चौपाल, स पु (हिं चौबार रा) गोष्ठी सभा,-गृह, आस्थान नी।

चौबच्चा, स पु, दे 'चहबच्चा'।

चौबा, स पु (स चतुर्वेद) ब्राह्मणजाति भेद २ मथुरावासी पुरोहित।

चौबाइन, स स्त्री (हिं चौबा) चतुर्वेद भार्या पत्नी।

चौबारा, [१] स पु (हिं चौ+बार=द्वार) अट्ट, अट्टाल, चद्रशाला, शिरोगृह, कूटा। २ दे 'चौपाल'।

चौबारा, [२] क्रि वि (हिं चौ+बार-वार) चतुर्थवारम्।

चौबीस, वि [सं चतुर्विंशति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सख्या तदको (२४) च।

चौबीसवाँ, वि (हिं चौबीस) चतुर्विंशति तम-मी म, चतुर्विंश-शी शम्।

चौबे, स पु दे 'चौबा'।

चौबोला, स पु (हिं चौ+बोल) मात्रिक छन्दोभेद।

चौभड़, स पु, (हिं चौ-दाढ़) चर्वण-दन्त, दष्ट्रा, दाढा।

चौमंजिला, वि (हिं चौ-फा मजिल) चतुर्भूमिक।

चौमुहानी, स स्त्री, दे 'चौक' (१)।

चौर, स पु (स) दे 'चोर'।

चौरस, वि (हिं चौ+(एक) रस तुल्य) सम, समस्थ, समरेख, सपाट २ चतुर्भुज, वर्गाकार।

चौरा, स पु, दे 'चबूतरा'।

चौरानवे, वि [स चतुर्नवति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या तदको (९४) च।

चौरासी, वि [स चतुरशीति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदको (८४) च। स स्त्री, चतुरशीतिलक्षयोनय (बहु)।

चौरेठा, स पु ह (हिं चावल+पीठा) पिष्ट चूर्णित तडुल धान्यास्थि (न)।

चौर्य, स पु (स न) स्तेय, स्तैन्य, चोरिका, चोरणम्।

—रत, स पु (स न) गुप्त, मैथुन रति (स्त्री)।

चौलकर्म, स पु (स-र्मन् न) चौड, चौल, मुण्डन चूडाकरण, सस्कार।

चौलड़ा, वि (हिं चौ+लड) चत सूत्र, चतुर्गुण (हार इ)।

चौला, स पु, दे 'लोबिया'।

चौला(रा)ई, सं स्त्री, तडुलीय, सु पथ्य शाक, बहुवीर्य, मेघनाद।

चौवन, वि [स चतु पचाशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्त सरया, तदकौ (५४) च।

चौसठ, वि [स चतु षष्टि (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्त सरया, तदकौ (६४) च।

चौसर, स पु (स चतुस्सारि) दे 'चौपड'।

चौहट्टा, स पु (हिं चौ+स हट्ट) दे 'चौक' (१ २)।

चौहत्तर, वि [स चतु सप्तति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्त सरया, तदकौ (७४) च।

चौहरा, वि (हिं चौ) चतुर्गुण-णित २ चतुष्पुट, चतुराघूरा, चतुरावर्तित।

च्यवन, स पु (स) ऋषिविशेष । (स न) क्षरण, स्रवणम्।

—प्राश, स पु (स) अवलेहभेद (आयुर्वेद)।

च्युत, वि (स) स्रुत, क्षरित २ पतित, भ्रष्ट ३ विमुख, पराङ्मुख ४ पदभ्रष्ट, अधिकारभ्रष्ट।

च्युति, स स्त्री (स) पतन, स्खलन २ अधिकारभ्रश, पदहानि (स्त्री) ३ दोष, स्खलितम्।

छ

छ, देवनागरीवर्णमालाया सप्तमो व्यजनवर्ण, चकार।

छगा, **छगुरा**, वि (हिं छ +अगुरी) षडगुल, षडगुरि।

छँगुलिया, **छँगुली**, स स्त्री, दे 'छिगुनी'।

छटना, कि अ (हिं छाँटना) वृ-उद्-ह चि उद्-ग्रह (कम), २ चट् छिद् (कर्म) ३ अप-इ (अ प अ), पृथग् भू ४ क्षि-विशृ (कम), कृशी भू।

छँटा हुआ, मु, धूर्त, चतुर, दक्ष, निपुण।

छँटवाना, कि प्रे, व 'छाँटना' के प्रे रूप।

छँटाई, स स्त्री (हिं छाँटना) वरण, उद्ग्रहण, चयन २ अवच्छेद, निकृन्तन ३ पृथक्करण ४ अवच्छेदन पृथक्करण-वेतन भृति (स्त्री)।

छन्द, स पु [स छदस (न)] वृत्त २ वेद, श्रुति (स्त्री) ३ छदशास्त्र ४ अभिलाष, कामना ५ स्वच्छदता, स्वैरिता ६ कपट, छल ७ युक्ति (स्त्री), उपाय ८ अभिप्राय ९ पद्य, श्लोक।

—शास्त्र, स पु, छदश्शास्त्र, वृत्तविज्ञानम्।

छ, **छ:**, वि [स षट् (त्रि)]। स पु, उक्त सख्या, तदक (६) च।

छई, स स्त्री, दे 'क्षयी'।

छकडा, स पु (स शकट) प्रवहण, यान, वाहन, शकटिका २ वृषभवाहन, बलीवर्दशकट, गन्त्री।

छकना[1], कि अ (स चकन) चक् (भ्वा उ से), तुष् (दि प अ), परि-सं-तृप् (दि प अ) २ क्षीव् (भ्वा दि प से), मद् (दि प से, माद्यति)।

छकना[2] कि अ (स चक>) विस्मि (भ्वा आ अ), चकित विस्मित (वि) भू २ वच् प्रतार (कर्म)।

छकाछक, वि (हिं छकना) तृप्त, तुष्ट २ परिपूर्ण ३ क्षीब, मत्त।

छकाना, कि, स, व 'छकना' (१, २) के प्र रूप।

छक्का, स पु (स षट्क) विदुषट्कयुत क्रीडापत्र २ षड्वस्तुसमूह ३ ४. अक्ष कपर्द, भेद ५ द्यूत, अक्षक्रीडा, देवन ६ सज्ञा, चैतन्यम्।

—पजा, मु, कूटोपाया, कपटप्रबधा।

—पजा करना, मु प्रतृ (प्रे), वच् (चु)।

छक्के छूटना, मु, धैर्यं मुच् (तु उ अ), अधीर मग्नोत्साह (वि) भू।

छगडा, स पु (स छागल) अज, छुभ।

छगन, स पु (स छग>) शिशु, स्तनधय।

—मगन, स पु (बहु) स्तनन्धया, शिशव (दोनों बहु)।

छगुनी, स स्त्री, दे 'छिगुनी'।

छछुन्दर, सं स्त्री (स छुछुन्दर-री) गन्धमुखी, दिवान्धिका, दीर्घतुडी २ अग्निक्रीडनकभेद।

छजना, कि अ, दे 'फबना'।

छज्जा, स पु (हिं छादन) नीध्र, पटलप्रात पट, चाल, नीम, वलीक-क २ प्रग्रीव, वरड, वितर्दी दि (स्त्री)।

छटपटाना, क्रि अ (अनु) दे 'तड़फड़ाना' २ अनिर्वृत अशात व्याकुल (वि) भू ३ अत्यन्त अभिलष (भ्वा उ से)।

छटपटी, स स्त्री (हिं छटपटाना) अधीरता, आकुलता २ लालसा, तीव्रोत्कंठा।

छटाँक, स स्त्री (स षटङ्क) सेटक-सेर षोडशांश ।

छटा[1], स स्त्री (स) कांति -दीप्ति द्युति (स्त्री) प्रभा २ चारुता शोभा सौन्दर्य रूप ३ दामिनी, विद्युत् (स्त्री)।

छटा[2], वि दे छठा'।

छठा, वि (स षष्ठ षष्ठी ष्ठम्)।

छठी, स स्त्री (स षष्ठी) जन्मत षष्ठे दिवसे षष्ठीदेवीपूजा।

—का दूध याद दिलाना, मु, अनुशास् (अ प से) दड (चु)।

छड़, स स्त्री पु (स शर >) (१ २) धातु काष्ठ दड ३ लव, यष्टि (स्त्री)-लगुड ।

छड़ा[1], स पु (हिं छड़) पादभूषणभेद ।

छड़ा[2], वि (हिं छाँड़ना) एक, एकाकिन्, असहाय, अद्वितीय एकल ।

छड़िया, स पु (हिं छड़ी) द्वारपाल, दौवारिक ।

छड़ी स स्त्री (हिं छड) यष्टि (स्त्री) दण्ड २ वेत्र वत्रयष्टि

छत, स स्त्री (स छत्र>) छदिस (न), छदि (स्त्री) पटल २ अन्तःपटल, अन्तश्छादन, पटल ३ वितान उल्लोच ।

छतरी, स स्त्री (स छत्र) शतशलाका, आतपत्र, आतपवारण, छायामित्र, पटोटज २ मडप प ३ कपोताना वेणुच्छत्रम् ।

छतीसा, वि (हिं छत्तीस) धूर्त मायिक मायिन्, छलिन्, कापटिक।

छतीसी वि स्त्री (हिं छतीसा) छलिनी, मायिन्, कापटिकी, २ कुलटा, पुंश्चली।

छत्ता, स पु (स छत्र) करड, मधुकोश, चषाल, छत्रक २ गण, समूह ३ छत्र, आतपत्रम्।

छत्तीस, वि [स षट्त्रिंशत् (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता सख्या, तत्को (३६) च।

छत्तीसवाँ, वि (हिं छत्तीस) षट्त्रिंशत्तम

छत्र, स पु (स न) दे 'छतरी' २ राजच्छत्र ३ वृहच्छत्र ४ (खुमी) छत्रक-कम्।

—छाँह, स स्त्री, छत्रच्छाया, शरण, आश्रय।

—धारी,—पति, स पु, नृप, भूप ।

छत्री, स पु, दे, 'क्षत्रिय', २ दे 'छतरी'।

छदाम, स पु (हिं छ+दाम) पणचतुर्थ, दे दमड़ी'।

छद्म, स पु [स छद्मन् (न)] छल, कपट २ गोपन गूहन ३ व्याज, मिषम्।

छन, स पु (अनु) छणिति, शब्द ध्वनि (पु) सीत्कार २ क्वणित, शिंजितम्।

छन, स पु, दे 'क्षण'।

छनक, स स्त्री (अनु) छणछण चणझण शब्द निनद, छणछणायित, झणझणायित, दे 'छन्' (१ २)।

छनकना, क्रि अ (अनु छनछन) छणछणायते झणझणायते (ना धा), छणछण शब्द कृ, क्वण (भ्वा प से), शिंज (अ आ से) २ सीत्कार कृ।

छनकमनक, स स्त्री (अनु) शिंजित, रणित २ दे 'साजबाज'।

छनकाना, क्रि स, व 'छनकना' के प्र रूप।

छनछनाना, क्रि अ स, दे 'छनकना', छनकाना ।

छनना, क्रि अ (स क्षरण) तितउना शुध् (दि प अ), निर्गल् क्षर् (भ्वा प से) २ क्षतविक्षत (वि) भू।

छनवाना, छनाना, क्रि प्रे, व छानना' के प्रे रूप।

छनाक-का, स पु (अनु) दे 'छनक'।

छन्न, वि (स) आ प्र-समा, छन्न आ प्र म, वृत, निगूढ, पिहित २ लुप्त, तिरोहित, अदृष्ट।

छप, स स्त्री (अनु) आस्फालन, ध्वनि (पुं)-शब्द २ आस्फालन, विक्षेप ।

छपका, स पु (अनु) जल-आस्फाल विक्षेप २ पिटकपिधानम्।

छपछपाना, क्रि अ (अनु) छपछपायते (ना धा), छपछपशब्दं कृ २ ईषत् नृ (भ्वा प से)।

छपना, क्रि अ (हिं चपना = दबना) अङ्क् लांछ (कर्म), मुद्रांकित चिह्नित (वि)

छपरख(खा)ट, स स्त्री (हिं छप्पर+खाट) •मशहरीखट्वा।
छपवाना, क्रि प्रे, व 'छापना' के प्रे रूप।
छपाई, स स्त्री (हिं छापना) (मुद्राक्षरैं) अकन, मुद्रण २ अकन-मुद्रण, प्रकार।
छपाका, स पु (अनु) जलास्फालनशब्द २ तोयास्फाल।
छप्पन, वि [स षट्पचाशत् (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता सख्या, तदकौ (५६) च।
छप्पय, स पु (सं षट्पद) हिंदी छन्दोभेद।
छप्पर स पु (हिं छोपना) तृण, छदि (स्त्री) पटल २ उटज ज, कुटीर।
—खाट, स स्त्री दे 'छपरखाट'।
—छाना या डालना, क्रि स, तृणादिभि आ छद् (चु)।
छबड़ा, ड़ी स पु स्त्री (देश) दे 'टोकरा-री'।
छबि, स स्त्री, दे 'छवि'।
छबीला, वि (हिं छब) सुदर [-री (स्त्री)] शोभन [-नी (स्त्री)] रूपवद्-कांतिमद् [-ती (स्त्री)]।
छब्बीस, वि [स षड्विंशति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (२६) च।
छब्बीसवाँ, वि (हिं छब्बीस) षड्विंशति तम मी मम्, षड्विंश शी शम्।
छमड, स पु (स) मातृपितृ-जनक, हीन बालक, अनाथ।
छमक, स स्त्री (अनु) दे 'ठसक'।
छमकना, क्रि अ, (अनु॰ छम) दे छम छमाना।
छमछम, स स्त्री (अनु) धारासार धारासपात, शब्द २ छमछम, रणित निनद, छमछमा यित, छणत्कार, झणत्कार। क्रि वि, सछण (म)त्कारम्।
छमछमाना, क्रि अ (अनु) छमछमायते (ना धा) छमछमनिनद कृ २ दे 'चमचमाना'।
छमा, दे 'क्षमा'।
छमाछम, स स्त्री (अनु) दे 'छमछम'।
छरकना, क्रि अ (अनु छर) सछरछरशब्द विक्षिप् विकृ (कर्म), छरछरायते (ना धा)।
छरना, क्रि अ (स क्षरण) दे 'टपकना'।
छरहरा, वि (हिं छड) कृश, तनु, कृशाग [-री (स्त्री)] २ उद्यमिन्, उद्योगिन्।

छर्दन, स पुं (स न) प्र, छर्दि(र्दी) का, वम मि (स्त्री), वमन, वमथु (पु), वांति (स्त्री), उद्गार, उत्कासिका।
छर्रा, स पु (अनु छर) लोह-सीसक, गुलिका २ दे 'ककड़ी' ३ वेगक्षिप्त जलकण समूह।
छल, स पु (स पु न) कूट, कपट, कैतव, छद्मन् (न), प्रतारणा, प्र,वचना अतिसधान २ व्याज, मिष ३ चतुर्दश पदार्थ (न्या)।
—बल, स पु, कूट,-उपाय कल्पना प्रबध।
—कपट, स पु, दे 'छल' (१ २)।
—छिद्र, स पु, दे छल (१)।
छलक, स स्त्री (हिं छलकना) परिवाह, उपरिस्राव।
छलकना, क्रि अ (अनु छल) उपरि स्रु परिवह् (भ्वा प अ), उत्सिच् (कर्म), प्रवृध् (भ्वा आ से), स्फीत-वृद्ध, जल (वि) भू।
छलकाना, क्रि स, व 'छलकना' के प्रे रूप।
छलछलाना, क्रि अ (अनु) छलछलायते, (ना धा), सछलछलशब्द स्रु (भ्वा प अ)।
छलना, क्रि स (स छलन) छलयति(ना धा), अति अभि, सधा (जु उ अ), प्रतृ मृह् (प्रे), वच् (चु)। स स्त्री, दे 'छल' १।
छलनी, स स्त्री (स्त्री चालनी) तितउ।
—करना, मु, अनेकश्छिद् निर्भिद् (रु प अ)-व्यध (दि प अ)।
छलाँग, स स्त्री (हिं उछल+स अग) प्लव, प्लवन, प्लुत ति (स्त्री), झप झपा, वल्गितम्।
ऊँची—, स स्त्री, उत्, प्लव प्लुति (स्त्री)-पतन इ।
लबी—, स स्त्री, प्र, प्लव प्लुति इ।
—मारना, क्रि स, (ऊँची)उत्पत्(भ्वा प स), उत्प्लु (भ्वा आ अ)। आगे(आगे) वल्ग् (भ्वा प से), प्लु। (नीचे) अवप्लु।
छलावा, स पु (स छल >) मिथ्या, अनल अग्नि (पु)-दीप्ति (स्त्री), दीप्त्याभास, २ मायादृश्य, इद्रजालम्।
छलित, वि (स) विप्रलब्ध, वंचित, प्रतारित।
छलिया, वि दे 'छली'।

छिछुला, वि, (हिं छूछा) अल्प-गाध, जल, गा(गा)मीर्यशून्य, उत्तान, गाध।

छिछुलाई, सं स्त्री (हिं छिछला) गाधता, गमीरताऽभाव।

छिछुली, सं स्त्री (हिं छिछला) घटदाक लनारण, बालक्रीडाभेद°।

छिछोरा, वि (हिं छिछला) क्षुद्र, अवम, अधम, तुच्छ, गाम्भीर्यशून्य।

छिछोर(रा)पन, स पु (हिं छिछोरा) क्षुद्रता, गमीरताऽभाव, अधमता, तुच्छता।

छिटकना, क्रि अ, (सं क्षिप्त>) अवा-आ प्र वि-कॄ (कर्म), विक्षिप (कर्म), प्र-सृ (भ्वा, प अ) २ प्रकाश विद्युत (भ्वा आ से)।

चाँदनी का—,स पु कौमुदीप्रसार°, ज्योत्स्ना विस्तार।

छिटकाना, क्रि स, व 'छिटकना' के सकर्मक रूप।

छिड़कना, क्रि स (हिं छिटकना) २ अव आ नि, सिच (तु प अ) अभि प्र स-उक्ष (भ्वा प से), विद्रुन्-वपाम् विक्षिप् (तु प अ)-विकॄ (तु प से)।

छिड़कवाना, छिड़काना, व 'छिड़कना' के प्रे रूप।

छिड़काव, सं पु (हिं छिड़कना) अव आ, सेक, प्रोक्षणम्।

छिड़ना, क्रि अ (हिं छेड़ना) आ प्र रभ् (कर्म), उप प्र क्रम् (कर्म)।

छितरना, क्रि अ, दे 'बिखरना'।

छित्ति, स स्त्री (स) छेदन, लवन, कृन्तनं, व्रश्चनम्।

छिदना, क्रि अ, व 'छेदना' के कर्म रूप।

छिदरा, वि (स छिद्र>) विरल, सच्छिद्र पेलव, तनु २ जीर्ण शीर्ण।

छिदाना, क्रि प्र व 'छेदना' के प्रे रूप।

छिदि, स स्त्री (स) कुठार, परशु। २ वज्र-ज्र, कुलिश, पवि।

छिद्र, स पु (स न) विवर, सुषिर, रंध्र, बिल २ दोष, वैकल्य, न्यूनता।

°छिद्रान्वेषण, सं पुं (सं न) पुरोभागित्व, दोषग्राहित्व, निंदकत्वम्।

छिद्रान्वेषी, वि (सं षिन्) पुरोभागिन्, दोषैकदृश (पु), दोषग्राहिन् निंदक।

छिद्रित, वि (सं) सच्छिद्र, सरंध्र, सविवर, २ विद्ध।

छिन, स पुं दे 'क्षण'।

छिनना, क्रि अ, व 'छीनना' के कर्म रूप।

छिनरा, वि पु, (हिं छिनरी) व्यभिचारिन्, परदारगामिन्।

छिनरी, वि स्त्री (स छिन्न+नारी>) कुलटा, व्यभिचारिणी।

छिनवाना, छिनाना, क्रि प्रे, व 'छीनना' के प्रे रूप।

छिनाल, स स्त्री, दे 'कुलटा'।

छिन्न, वि (स) कृत्त, लून, दात, दित, छात, छित, वृक्ण।

—भिन्न, वि (सं) अवा आ प्र वि-कीर्ण, निरस्त २ लून, कृत्त, खण्डित ३ ३ अस्त व्यस्त।

छिपकली, छिपकी, सं स्त्री (हिं चिपकना) गृहगोधा धिका, ज्येष्ठा ष्ठी, मुषली, गृहालिका, कुड्यमत्स्य २ तन्वी (नारी) ३ कर्णभूषण भेद°।

छिपटी, स स्त्री (स चिपिट>) तष्ट दारु दारुकलम्।

छि(छु)पना, क्रि अ, [स क्षिप्=(परदा आदि) डालना] तिरोभू, अन्तर् इ (अ, प अ) ली (दि आ अ), अन्तर्-तिरो,धा (कर्म) अदृश्य प्रच्छन्न-अपवारित (वि) भू।

छिपा, वि (हिं छिपना) अंतरित, तिरो, हित भूत।

छिपा रुस्तम, वि पुं, अज्ञात अप्रसिद्ध-अवि ख्यात-गुणिन्।

छिपे छिपे, क्रि वि गूढं, गुप्त, निभृत, प्रच्छन्नम्।

छिपाना, क्रि स, हिं (छिपना) अन्तर् तिरो,धा (जु उ अ), अपह्नु (प्रे), गुह् (भ्वा उ से), प्रच्छद् (प्रे) स पु, अंतर्धानं, तिरोधान, गू(गो)हनं, गोपन, संवरणम्।

छिपाव, स पुं (हिं छिपाना) दे 'छिपाना' सं पुं।

छियानवे, वि तथा स पुं, दे, 'छानवे'।

छियालिस, वि [स षट्चत्वारिंशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (४६) च।

छियासठ, वि [स षण्षष्टि (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता सख्या, तदकौ (६६) च।

छियासी, वि, [स षडशीति (नित्य स्त्री)]। स पु उक्ता सख्या, तदकौ (८६) च।

छिल्का, स पु (स शल्क) (फलादि का) त्वच (स्त्री) २ वल्क-ल्क, वल्कल ल ३ तुष, बुष, बुसम्।

—उतारना, कि स, दे 'छाल उतारना'।

छिलना, कि अ, व 'छीलना' के कर्म रूप।

छिलवाना, छिलाना, कि प्र, व छीलना' का प्र रूप।

छिहत्तर, वि [स षट्सप्तति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (७६) च।

छींक, स स्त्री (स छिका) क्षुत ना, क्षव, क्षवथु (पु) क्षुत् ति (स्त्री)।

छींकना, कि अ (हिं छींक) क्षु (अ प से), क्षुत क्षव छिक्का कृ।

छींट, स स्त्री (स क्षिप्त >) (जलादिका) कण णिका, बिंदु (पु), शीकर, पृषत २ वस्त्रभेद, चित्रवस्त्रम्।

छींटा, स पु (हिं छींट) दे 'छींट' २ शीकरवर्ष, पृषतपात ३ जल, आस्फाल विक्षेप ४ अक, लाछन ५ लघ्वाक्षेप।

—देना या मारना, कि स, पृषतै शीकरै क्लिद् (प्रे)-आर्द्रयति (ना धा)।

छी, अव्य, दे 'छि'।

—छी करना, मु, गुप् (पचमी के साथ सनत रूप, जुगुप्सते), कुत्स्, (चु आ से), गर्ह् (चु उ से)।

छीका, स पु (स शिक्या) शिक्यम्।

छीछालेदर, स स्त्री (अनु छी छी) दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री)।

छीज, स स्त्री (स क्षय) अपचय, ह्रास।

छीजना, कि अ (स क्षयणम्) क्षि विशृ (कर्म), ह्रस् (भ्वा प से)।

छीट, स स्त्री दे 'छींट'।

छीनना, कि स, (स छिन्न >) आच्छिद् (रु प अ), झटिति कृष् (भ्वा प अ), आक्षिप्य ग्रह् (क्र्‌ प से)-हृ (भ्वा प अ) आच्छिद्य-बलात् अपहृ ग्रह्।

छीपी, स पु (हिं छापना) वसनमुद्रक वस्त्रचित्रक।

छीर, स पु दे 'क्षीर'।

छीलना, कि स (हिं छाल) दे 'छाल उतारना' २ तनू कृ, तक्ष-त्वक्ष् (भ्वा प से) ३ अप-व्या-मृज् (अ प वे चु) विलुप् (प्रे)

छुआछूत, स स्त्री (हिं छूना) अस्पृश्य स्पर्श अशुचिसंसर्ग २ स्पृश्यास्पृश्यविचार।

छुईमुई, स स्त्री दे 'लज्जावती'।

छुछुदर, स पु, दे 'छछूदर'।

छुटकारा, (हिं छूटना) (दुःखादि से) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) मोचन २ वर्जन, रहितत्व ३ निश्चितता निर्वृति (स्त्री)।

—पाना, कि अ, वि-निर-मुच (कर्म), मोक्ष् उद्धृ विसृज् (कर्म)।

छुट्टी, स स्त्री (हिं छूटना) दे 'छुटकारा' २ अवकाश, क्षण, कार्यनिवृत्ति (स्त्री) ३ अनध्याय अनध्यायदिवस, विश्रामदिवस ४ विश्राम, काल समय।

छुड़वाना, छुड़ाना, कि प्रे, व 'छोटना' के प्रे रूप।

छुद्र, वि, दे 'क्षुद्र'।

छुधा, स स्त्री, दे 'क्षुधा'।

छुपना, छुपाना, क्रमश कि अ तथा कि स, दे 'छिपना' तथा 'छिपाना'।

छुरा, स पु (स क्षुर) कृपाण, वृहच्छुरी रिका।

छुरी, स स्त्री (स) क्षुरी, छुरिका, कृपाणी णिका, असि धनुका पुत्रिका।

—मारना, कि स, छुरिकया व्यध (दि प अ), छूर (तु प से), क्षण् (त प से)।

छुवा(ला)ना, कि प्रे, व 'छूना' के प्रे रूप।

छुहारा, स पु (स क्षुध+हार >) खर्जूर भेद, छोहारा २ पिंडखजूरफल, गोस्तनाकार पिंड, खर्जूरी, खर्जूरी।

छू, स स्त्री (अनु) मत्रपाठानतर-फूत्कार फूत्कार।

—मतर होना, मु, झटिति तिरोभू।

छूछा, वि (स तुच्छ) निसार, असार २ रिक्त शून्य, शून्यगर्भ ३ निर्धन।
छूट, सं स्त्री (हिं छूटना) दे 'छुटकारा' (१, २) ३ अवकाश, क्षण ४ ऋणमोक्ष ५ स्वातन्त्र्य स्वच्छदता ६ प्रमाद, स्खलितम्।
छूटना, क्रि अ (स छोटन=काटना >) वि, मुच (कर्म), मै-रक्ष् (कर्म), दे 'छुटकारा पाना' २ (पदार्थ) च्यु (भ्वा आ अ)-अपास् (कर्म) ३ वियुज् (कर्म), विश्लिष् (दि प अ)। ४ प्रचल् (भ्वा प से), प्रस्था (भ्वा आ अ) ५ (प्रमादात्) न अनुष्ठा विधा (कर्म)।
शरीर—, मु, दे 'मरना'।
छूत, सं स्त्री (हिं छूना) म, स्पर्श, ससर्ग, सपर्क २ अस्पृश्य, स्पर्श ससर्ग ३ मालिन्य, दूषण, अशौचम्।
—का रोग, स पु, ससर्गज-सासर्गिक सक्रामक, रोग।
छूना, क्रि, स (छोपन) छुप्-स्पृश परामृश (तु, प अ), हस्तेन आलभ् (भ्वा आ अ)। स स, सपर्क, ससर्ग, स-स्पर्श, स्पृष्टि (स्त्री), परामर्श, आलम्भनम्।
छूने योग्य, वि, स्पृश्य, छोपनीय, परामर्शार्ह।
छूनेवाला सं पु, स, स्पर्शक, स्प्रष्टृ स्पर्ष्टृ (पु)।
छुआ हुआ, वि, स्पृष्ट, ससृष्ट, आलब्ध, छुप्त, परामृष्ट।
आकाश—, मु, गगन चुम्ब (भ्वा प से.) नभ स्पृश्, अत्युच्च (वि) धृव (भ्वा आ से)।
छेंक, छेंकाव, स पु, दे 'जब्ती'।
छेंकना, क्रि स (स छो=काटना >) निरुध् (रु उ अ), निवार् (चु) २ आच्छद् (चु), व्याप् (स्वा उ अ) ३ नि रेख (वि) कृ, सर्वस्व दह (चु)-आच्छिद् (रु प अ) ४ परिवृ (प्रे), परि, वेष्ट (प्रे)। ५ अव-वि लुप् (प्रे) निर् अस (दि प से)।
छेक, सं पु (स छेक >) विवर, विवर, छिद्र २ छेद, भेद ३ वि, भाग।
—अनुप्रास, स पु (स) अनुप्रासालङ्कारभेद, वर्णाना सकृदावृत्ति (स्त्री) (उ० पावन पवन)
छेड़, स स्त्री (हिं छेड़ना) कोपोद्दीपन, प्रकोपन २ परिहास व्यग्योक्ति (स्त्री) ३ लीला, विलास, हाव ४ कलह, कलि (पु)।
—छाड़, सं स्त्री, दे 'छेड़' (१, ४)।
छेड़ना, क्रि स (हिं छेदना) कुप् कुप् रुष् (प्र) २ दे 'छूना' ३ आ-प्र-रभ् (भ्वा आ अ), उप प्र-क्रम् (भ्वा आ अ) ४ अर्द्-आयस् (प्रे), उपरुध् (रु उ अ) ५ अव परि हस (भ्वा प से) ६ कलह कृ। सं पु, 'छेड़'।
छेत्ता, वि (स-तृ) छेदक, लावक, छेदकर, छिद्। सं पु, वनच्छिद्, काष्ठच्छिद्।
छेत्र, सं पु, दे 'क्षेत्र'।
छेद, सं पु (स) छिद्र, बिल, विवर, रन्ध्र, शुषि (षि)र, कुहर, रोक, निर्व्यथन, वपा, सुषि (स्त्री) २ वि, नाश, वि, ध्वस ३ दोष, न्यूनता ४. वि, भाजक (गणित)।
छेदक, वि (सं) वेधक, भेदक, छेत्तृ, भेत्तृ, वेधिन् २ नाशक, ध्वसकर ३ विभाजक। स पु, वेधनी।
छेदन, स पु (सं न) वेध, वेधन छिद्रकरणं २ वि, नाशन ध्वसन, वि, नाश ३ कर्तनं, भेदन, लवनम्।
छेदना, क्रि स (स छेदन >) व्यध् (दि प अ), छिद्र विधा (जु उ अ)-कृ, छिद्रयति (ना धा), निर्भिद् (रु प अ), उत् समुत्-कृ (तु प से)। स पुं, दे 'छेदन'।
छेदने योग्य, वि, छेत्तव्य, छेदनीय, वेध्य।
छेदनेवाला, दे 'छेदक'।
छेदा हुआ, वि, छिद्रित, छिन्न, विद्ध, निर्भिन्न।
छेदा, सं पुं (हिं छेदना) घुण काष्ठकीट २ छिद्र, रन्ध्रम् ३ घुण कृतच्छेद।
छेदी, वि (सं रिन्) दे 'छेदक'।
छेना, सं पुं (स छेदनं >) मिष्टान्नभेद
छेनी, स स्त्री (स छेदनी) तक्षणी, टंक, व्रश्चन २ शिलाभेद।
छेम, स पुं, दे 'क्षेम'।
छेरी, सं स्त्री, दे 'बकरी'।
छेव, स पुं (स छेद) आघात, प्रहार २ व्रण ३ आगामिविपद् (स्त्री) ४ काष्ठखड।

छैल ला, स पुं (स छवि >) सुमगमन्य, ीर, रूपगर्वित, सुवेशमानिन्, वेषाभिमानिन्।
—चिकनिया, स पु, दे 'छैल'।
छोकरा-डा, स पु (स शावक >) कुमार रक, दारक बाल लक, मणव वक।
छोकरापन, स पु (हि छोकरा) बाल्य, कौम र २ चचलता, मौर्ख्यम्।
छोकरी-डी, स स्त्री (हि छोकरा) कुमारी रिका, बाला लिका, कन्या, दारिका, माणविका।
छोटा, वि (स क्षुद्र) अणु, तनु, लघु महत्त्व गौरव, रहित २ अल्प क्षुद्र,-तनु शरीर ३ अनु ग्रमज, कनीयस् यवीयस् ४ अवरपद मान, अवर।
—बड़ा, वि, विविध, बहुविध २ उच्चावच, लघुगुरु, अणुमहत ३ कनिष्ठज्येष्ठ।
छोटाई, स स्त्री (हि छोटा) अणुता, लघुता लाघव, अणिमन् लघिमन् (पु), २ क्षुद्रता, नीचता।
छोटापन, स पुं., दे 'छोटाई'।
छोड़ना, क्रि स (स छोरण) उत् वि, सृज् निर्मुच् (तु प अ), उज्झ् (तु प से), त्यज् (भ्वा प अ), हा (जु प अ), परिह (भ्वा प अ), रह्-ऽर्जे (चु) २ क्षम् सह् (भ्वा आ से), क्षम् मृष् (दि प से, क्षाम्यति), तिज् (सन्नत = तितिक्षते) ३ क्षिप् (तु प अ), अस् (दि प से) ४ प्रमाद् (न कृ अथवा अनु स्था (भ्वा प अ) ५ मोक्ष मुच (प्रे)। सं पुं, वि उत् सर्जन, त्यजन, उज्झन, परिहरणं, उत्सर्ग त्याग, परिहार इ।
छोड़ने योग्य, वि, त्याज्य, उत्स्रष्टव्य, परिहार्य।
छोड़नेवाला, स पु, विसृष्ट त्यक्त परिहर्तृ (पु)।
छोड़ा हुआ, वि, उत् वि-सृष्ट, त्यक्त इ।
छो(छु)ड़ाना, छोड़वाना, क्रि प्रे, व 'छोड़ना' के प्र रूप।
छोत, स स्त्री, दे छूत'।
छोप, स पुं, दे 'लेप'।
छोभ, स पुं, दे क्षोभ'।
छोर, स पुं (हि ओर या अनु) उपांत, प्रांत, पर्यंत, समत, परिसर, सीमन् (पुं), सीमा २ तट टी टम्।
छोलदारी, स स्त्री (देश) क्षुद्रपटवास, लघु दूष्य ष्य, पटगृहकम्।
छोला, स पु (हि छोलना = छीलना) हरित, चण-चणक।
छोह, सं पुं (सं क्षोभ >) स्नेह, प्रेमन (पुं), २ दया, कृपा।
छौंक, छौंकन, सं स्त्री (अनु) दे 'बघार'।
छौंकना, क्रि स, दे 'बघारना'।
छौना, स पुं (स शाव) शाव, शावक, डिंभ, पोत, अर्भक।
छौर, स पुं, दे 'क्षौर'।

ज

ज, देवनागरीवर्णमालाया अष्टमो व्यंजनवर्णः, जकार।
जंक्शन, स पुं (अं) •संयोजन, लोहपथ संगम।
जग, स स्त्री (फा) युद्ध, समाम।
जग, स पु (फा) अयोमल, अयोरस, मण्डूर, विष्ठ, सिंहाणम्।
—लगना, क्रि अ, सकिट्ट समडूर (वि) भू। मण्डूरेण दुष् (दि प अ)।
जगम, वि (स) चर, चल, चरिष्णु, चलन गमन-शील २ चेतन, प्राणिन्, सजीव।
जगल, स पु (स न) अटवी वि (स्त्री), अरण्य, कानन, वन, विपिन, कांतार र, गहन २ मरुस्थल, मरु (पुं)।
जंगला, स पुं (पुर्त जेंगिला) काष्ठ लोह शलाकावृति (स्त्री), काष्ठ-लोह गोधोलि (पु), काष्ठ अयो, जाल २ गवाक्ष, जालम्।
जंगली, वि (स जगल) आरण्यक, अरण्यज, वन्य, वनोद्भव, जांगल [ली (लीं)], अरण्य, वन २ मर, हिंस्र ३ असभ्य, अशिष्ट, दु शील। स पु, वनवासिन्, वनेचर, वनौकस् (पुं), आटविक, आरण्यक।

जगार ल, स पु (फा र) ताम्र विट्ट मलम्।
जगी, वि (फा) साम्रामिक सामरिक [की (स्त्री)] युद्ध रण-सबधिन् २ क्षात्र (त्री स्त्री) आयुधिक (की स्त्री)
—जहाज, स पु रणपोत ।
—बुखार, स पु समरज्वर ।
जघा, स स्त्री (स) प्रसृता टंकिका टका क २ ऊरु (पु) सक्थि (न)
जघाल, वि (स) शीघ्र द्रुत-गामिन् धाविन् चालक। स पु (स) दूत, सन्देशवाहक २ मृग ।
जघिल, वि (स) प्रजविन्, प्रधावक द्रुत गामिन्।
जचना, क्रि अ (हि जाँचना) निरीक्ष परीक्ष (कर्म) २ दृश (कर्म) ३ उचित (वि) प्रति इ (कर्म)।
जचवैया, स पु (हि जाँचना) दे 'आडिटर'
जंजाल, स पु (स जगत्+जाल>) कृच्छ्र कष्ट सकट दुःख बाधा ध २ व्यामोह चित्तविक्षेप सभ्रम ३ आवर्त जलगुल्म ४ बृहज्जालम्।
जजाली, वि (हि जजाल) उपद्रविन् कलहप्रिय।
ज़ंजीर, स स्त्री (फा) शृङ्खला ल, निगड पाश बन्धन २ अर्गल ल ला ली।
जतर, स पु, दे 'यत्र'।
जंतु, स पु (स) प्राणिन्, जीव जन्यु, भूत २ पशु, चरि, मोक ।
जत्र, स पु, दे 'यत्र'।
जंत्री, स स्त्री (हि जत्र) *यन्त्री *तारकर्षणी २ पर्चांग, तिथिपत्रम्।
जद, स पु (फा नद स छदस>) पारसी काना धर्मग्रंथविशेष २ तत्रत्य भाषा।
जबीर, जंबीरी नीबू, स पु (स जम्बीर) जम्भ जभल, जभीर दत कर्षक इपक दर्पण ।
जबु, स पु (स स्त्री) (वृक्ष) जबू-बु (स्त्री)। (फल) जबु (बु)-फल जाबवम्।
जबुक, स पु (स) शृगाल दे 'गीदड़' २ नीच अपसद, जाल्म ।
जबुद्वीप, स पु (स) भूमि सप्तद्वीपप्रथमतम ।
जबू स स्त्री (स) दे 'जबु' २ काश्मीरदेशे नगरविशेष ।

जभ, स पु (स) हनु (पु स्त्री) २ राक्षस विशेष ३ दे 'जभाई'।
जभारि, स पु (स) इन्द्र, सुरपति २ इन्द्र वज्र ज्र, ३ अग्नि ।
जभाई, स स्त्री (हि जभाना) जभा, जमथा जृम्भण जम्भिका जृम्भ भा, जृम्भित हाफिका।
जभाना, क्रि अ (स जृम्भन) ज(जृ)म्भ् (भ्वा आ से) वि जृम्भ (भ्वा आ से)।
जई, स स्त्री (हि जौ) यवसदृशधान्यभेद, *यवी २ यवांकुर ।
ज़ईफ, वि (अ) दे बूढ़ा ।
ज़ईफी, स स्त्री (अ) दे 'बुढ़ापा'।
ज़क, स स्त्री (फा) पराजय २ हानि (स्त्री) ३ लज्जा।
जकड़ना, क्रि स, (स युक्त+करण>) गाढ दृढ बध (क्र्या प अ) द्रढयति (ना धा) दृढीकृ।
ज़कात, स स्त्री (अ) दान त्याग, २ कर, शुल्क-कम्।
ज़ख़ीरा, स पु (अ) कोष निधि, भांडार २ सग्रह सचय सभार ३ वृक्षसवर्धन स्थानम्।
ज़ख़्म, स पु (फा) दे घाव ।
—ताज़ा या हरा होना, मु, अतीत दुःखं पुन आवृत् (भ्वा आ से) स्मृ (कर्म)।
ज़ख़्मी, वि, दे घायल'।
जग[1], स पु [स जगत् (न)] जगती ससार २ लोका जना ।
जग[2], स पु, (स यज्ञ) याग, मख क्रतु ।
जगण, स पु (स) छन्द शास्त्रे गणभेद गुरुमध्यग' गण (द० महेश)।
जगत, स पु [स जगत् (न)] भुवन, ब्रह्माण्ड चराचरं विश्व जगती, संसार सृष्टि (स्त्री) निविष्टप, लोक २ वायु (पु) ३ शिव ।
जगती, पु स्त्री (स) ब्रह्माण्ड विश्व २ पृथिवी २ वैदिकछंदोभेद ।
—तल, स पु (स न) भूतल पृथिवी।
जगदंबा बिका, स स्त्री (स) दुर्गा उमा, पार्वती ।
जगदाधार, स पु (स) ईश्वर २ पवन ।

जगदीश, स पु (स) परमेश्वर, जगन्नाथ, जगपति (पु) २ विष्णु ।
जगदीश्वर, स पु (स) दे 'जगदीश' (१)।
जगद्गुरु स पु (स) ईश्वर २ शिव ३ नारद ४ सुपूज्यपुरुष ५ उपाधिभेद ।
जगद्दीप, स पु (स) परमेश्वर परमात्मन् २ सूर्य रवि ।
जगना, क्रि अ (हिं जागना) दे 'जागना २ अवहित सावधान (वि) भू ३ सवेग उद्भू ४ दे 'चमकना ।
जगन्नाथ, स पु (स) जगदीश २ विष्णु ३ पुरा विष्णुमूर्ति (स्त्री) ४ पुरीनामक तीर्थम्
जगमगा, वि (अनु) प्रकाशित २ दीप्तिमत् ।
जगमगाना, क्रि अ (अनु) दे 'चमकना' (१)।
जगमगाहट, स स्त्री, दे 'चमक' (१२)।
जगह, स स्त्री (फा जायगाह) स्थान, स्थल, प्रदेश २ अवकाश प्रसर, अंतर ३ अवसर, समय ४ पद, पदवी वि (स्त्री)।
जगाना, क्रि स, व 'जागना' के प्रे रूप ।
जघन, स पु (स न) स्त्रीकट्या पुरोभाग २ नितंब
—कूपक, स पु (स) कुकुंदर, ककुंदरम् ।
जघन्य, वि (स) अन्त्य, अन्तिम, चरम २ गर्ह्य, त्याज्य ३ क्षुद्र, निकृष्ट, अधम ।
जचना, क्रि अ, दे 'जँचना'।
ज़च्चा, स स्त्री (फा) प्रसूता-तिका जाता पत्या, प्रजाता ।
—ख़ाना, स पु (फा) अरिष्ट, सूति-सूतिका, गृहम् ।
जजमान, स पु, दे 'यजमान'।
जज, स पु (अ) न्यायाधीश, धर्मन्याय, अध्यक्ष अ(आ)धिकरणिक, धर्माधिकारिन्, निर्णेतृ २ परीक्षक, विवेकिन् ।
जज़िया, स पु (अ) कर-राजस्व-भेद (इस्लाम)।
जज़ीरा, स पु (अ) दे 'द्वीप'।
जटा, स स्त्री (स) सटा-टः, जटी-टि (स्त्री), जूट, जूटक २ जटामासी, जटिला, लोमशा, जटाला (सुगंधितद्रव्यम्)।
—जूट, सं पु (सं) जटासमूह २. शिवजटा ।
—धारी, वि (स रिन्) जटाधर, सजूट २ शिव ३ गुल्मभेद ।
—मासी, सं स्त्री, दे 'जटा' (२)।
जटायु, स पु (सं) दशरथसख, जटायुस (पु)।
जटाल, वि (स) जटा, धर धारिन् ।
जटित, वि (सं) अनुविद्ध, खचित, प्रत्युत, प्रणिहित ।
जटिल, वि (स) जटाल्क, जटिक, जटाधर, जटिन् २ अस्पष्टार्थ, दुर्बोध, गहन, गूढ, कठिन, क्लिष्ट ३ क्रूर, हिंस्र । (स पु) सिंह २ अज, छाग ३ शिव ४ ब्रह्मचारिन् ५ परिव्राजक ।
जटिलता, स स्त्री (स) दुर्बोधता, गहनता, गूढता, कठिनता ।
जटी, वि (स टिन्) दे 'जटिल १'। सं पु, शिव २ प्लक्ष ।
जठर, स पु (सं पु न) उदर, कुक्षि (पु), तुद २ अन्न-आम पक्व,-आशय, कोष्ठ, पिचंड २ उदररोगभेद ३ शरीरम् । वि, वृद्ध २ कठिन ।
—अग्नि, स पु (स) जठरानल ।
—आमय, स पु (सं) जलोदररोग २ अती(ति)साररोग ।
जड़, वि (सं) अ वि,-चेतन, निर्जीव, प्राणहीन निष्प्राण २ स्तब्ध, निश्चेष्ट, हतेन्द्रिय २ मंदबुद्धि, मूर्ख ३ हिमग्रस्त ४ शीतल ५ मूक ६ बधिर ७ अनभिज्ञ, अबोध ८ मूढ, मोहग्रस्त । स पु (स न) जल २ सीसकम् ।
जड़, स स्त्री (स जटा) मूल, अंघ्रि (पु), बुध्न, ब्रध्न २ आधार, उपष्टंभ मूल ३ कारण, हेतु (पु)।
—उखाड़ना, उत्प० उन्मूल (चु), उद्धृ। (भ्वा प से), व्यपरुह् (प्रे) समूलमुद् हृ (भ्वा प अ)-उच्छिद् (रु प अ)।
—जमना, क्रि अ, दृढमूल-बद्धमूल (वि) भू, मूलं बध् (क्र प अ)।
जड़ता, स स्त्री (स) अचेतनता, निर्जीवता,
जड़त्व, स पु (स न) निष्प्राणता २ मूर्खता,

अज्ञता ३ अचलता, स्तब्धता, ४ हिमग्रस्तता, शीतलता।

जड़ना, क्रि स (सं जटन) जट् (प्रे), अनुव्यध् (दि प अ), उत्खच् (चु), प्रणिधा (जु उ अ), प्रनिबध् (क्र प अ) २ आ नि धा, अवरुह् निविश (प्रे) ३ प्रह (भ्वा प अ), आहन् (अ प अ) ३ परोक्षे आ-अभि क्षिप (तु प अ)। स पु, जटन, उत्खचन, अवरोपण प्रहरण इ।

जड़ने योग्य, वि जटयितव्य, उत्खचनीय इ।

जड़नेवाला, स पु, रत्न अनुवेधक, मणि, प्रणिधायक, जटयितृ।

जड़वाना, जड़ाना, क्रि प्रे, व 'जड़ना' के प्रे रूप।

जड़ाई, स स्त्री (हिं जड़ना) जटन, वेतन भृति (स्त्री) २ दे 'नहना' सं पु।

जड़ाऊ, वि (हिं जड़ना) रत्न, खचित-जटित अनुविद्ध।

जड़ावर, सं पु (हिं जाड़ा) उष्ण ऊर्णामय और्ण, वस्त्राणि-वासांसि (न बहु)।

जड़िमा, सं स्त्री (सं मन् पु) दे 'जड़ता'।

जड़िया, सं पु (हिं जड़ना) २ रत्न मणि, कार १ रत्न, जटक-खचक। दे 'जड़ने वाला'।

जड़ी, सं स्त्री (हिं जड़ >) ओषधी-औषध, मूलं, काष्ठौषधम्।

—बूटी, सं स्त्री, ओषधी वि (स्त्री), रोगहर हरितक, आरण्यौषधम्।

जतन, स पु, दे 'यत्न'।

जतलाना, जताना, क्रि स (स ज्ञात >) वि, ज्ञा (प्रे ज्ञापयति), बुध-अवगम् (प्रे) २ (पूर्वं) अनु प्र बुध (प्रे), उपदिश (तु प अ)।

जती, स पु (स यतिन्) यति, जितेंद्रिय, सन्यासिन्।

जतु, स पु (स न) जतुक-चा लाक्षा।

जत्था, स पु (स यूथ) गण, चय, समूह।

जत्रु, स पु (स न) जत्रुक, ग्रीवास्थि (न)।

जदीद, वि (अ) नव, नवीन।

जन, स पु (सं) मानव, मनुष्य २ लोक, जना ३ प्रजा ४ सेवक ५ समूह ६ भवन ७ ८ लोक-व्याहृति, विशेष।

जनक, सं पु (स) जन्मद, जनयितृ, उत्पादक २ पितृ जनितृ, (पु), तात, बीजिन, वप्तृ (पु) ३ मिथिलाराजवंशोपाधि (पु) ४ सीरध्वजो जनक।

—पुर, स पु (स न) मिथिलाया राजधानी।

—नंदिनी, स स्त्री (स) सीता, वैदेही।

जनता, सं स्त्री (स) जन ता, लोक का, प्रजा-जा, प्रकृतय (बहु)।

—वाद, सं पु (स) किंवदंती जन प्रवाद।

—वासा, स पु (स स) वरयात्रागृहम्।

—श्रुति, स स्त्री (स) दे 'जनवाद'।

—सत्या, स स्त्री (स) मनुष्य प्रजा लोक, सत्या।

जनना, क्रि स (स जनन) प्रसू (अ आ से), उत्पद् (प्रे), जन् (प्र जनयति)।

जननी, स स्त्री (स) दे 'माता' २ उत्पादिका।

जननेन्द्रिय, स स्त्री (स न) लिंग, मेढ्र २ योनि (स्त्री), भग।

जनपद, स पु (सं) देश २ लोक।

जनम, स पु, दे 'जन्म'।

जनमना, क्रि. अ, दे 'जन्म लेना'।

जनयिता, वि (सं तृ) जन्मद, उत्पादक। स पु (सं) तात, पितृ, बीजिन्, जनक।

जनयित्री, स स्त्री (स) जननी, मातृ (स्त्री), दे 'माता'।

जनरल, स पु (अ) सेनानायक। वि, सामान्य, साधारण।

जनवरी, स स्त्री (अ जेनुअरी) पौषमाघ, आंग्लवर्षस्य प्रथममास।

जनातिक, अव्य, (स कम्) रंगमंचे अभिनेतु र्यस्य कण कथनम् (मा०) अपवार्य (अव्य)।

जनाई, स स्त्री (हिं जनाना) सूतिका, दे दाई' २ गर्भमोचनभृति (स्त्री)।

जनाज़ा, स पु (अ) दे 'अरथी' २ शव।

ज़नानख़ाना, स पुं (फा) अंत पुर, अवरोध।

जनाना, क्रि स (हिं जानना) दे 'जतलाना'।

जनाना, क्रि प्रे (हिं जनना) व 'जनना'। के प्रे रूप।

जनाना, वि (फा) स्त्रैण, स्त्रीजातीय। सं पु, अत पुर २ नारी ३ पत्नी।
जनानी, वि स्त्री (फा) स्त्रैणी, स्त्रीसदृशी। स स्त्री, नारी २ पत्नी।
जनाव, म पु (अ) महाशय, महोदय, श्रीमत् पु।
—आली, स पु (अ) मान्यवर, महाशय महोदय।
—मन, म पु अ+फा) प्रियमहाशय।
जनित, वि स उत्पादित २ जात, उत्पन्न।
जनिता म पु स जनितृ जनयितृ जनक, पितृ पु
जनित्री, स स्त्री म जनयित्री, जननी।
जनी¹ नि, स स्त्री म) नारी २ मातृ (स्त्री) ३ पुत्रवधू स्त्री ४ जननम्।
जनी², स स्त्री (स जन दासो, सेविका २ पुत्री। वि स्त्री, जनिता उत्पादिता।
जनेउ, म पु, दे 'यज्ञोपवीत'।
जनेत, म स्त्री (स जन्य) वरयात्रा।
जन्म, म पु [स जन्मन् (न)] उद्भव, जनि (स्त्री), जनी, जनिका, उत्पत्ति प्रभृति (स्त्री), जनू नु (स्त्री)। २ जीवनम्।
—अतर, स पु (स न) अन्य अपर पुनर्, जन्मन् (न)।
—अघ, वि (स) जात्यंध, जनुषांध।
—अष्टमी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णजन्मदिवस, भाद्रपदमासस्य कृष्णाष्टमी तिथि (स्त्री)।
—दाता, सं पु (स-दातृ) पितृ (पु) २ ईश्वर।
—दिन, स पु (सं न) जन्म जनि जनु, दिवस।
—पत्र, स पु (स न)
—पत्री, म स्त्री (स) } जन्म, पत्रिका-योगपत्रम्।
—भूमि, स स्त्री (स) जन्मदेश, स्व-देश राष्ट्र-विषय।
—रोगी, वि, (स मिन्) सदारोगिन्।
—स्थान, स पु (स न) जन्म-जनि, भूमि (स्त्री)।
जन्मी, स पु (म मिन्) प्राणिन्, जीव।
जन्मी, वि (म जन्मन्>) सहज, स्वभावज, स्वाभाविक नैसर्गिक [की (स्त्री)]।
जन्मेजय, सं पु (सं जनमेजय) विष्णु २ ३ नृप-नाग, विशेष।
जन्मोत्सव, सं पु (सं) जनि जनु-पर्वन् (न)-क्षण।
जन्य, स पु (सं) पितृ (पु), जनक २ वरपक्षीय ३ साधारणो जन ४ किंव दंती। (स न) जन्मन् (न) २ उत्पन्न वस्तु (न) ३ देह ४ हट्ट ५ युद्ध ६ निंदा ७ राष्ट्र ८ जाति (स्त्री) ९ लोका, प्रजा। वि, जात, उद्भूत, उत्पन्न २ जन विषयक लौकिक ३ देशीय, राष्ट्री(ष्ट्रि)य, जातीय ४ जनयिष्यमाण।
जन्या, स स्त्री (स) जननीसखी २ वधूसखी ३ आनन्द, मोद ४ प्रीति (स्त्री), स्नेह।
जप, स पु (स) मुहुर्मुहुर्मंत्रोच्चारणम्।
—तप, स पु [स जपतपस् (न)] धर्मक्रिया, उपासन-ना, सध्यावदनम्।
जपना, कि स (स जपन) जप् (भ्वा प से), जाप कृ, मुहुर्मुहुर्मंत्र उच्चर् (प्रे)।
जपनी, सं स्त्री (हिं जपना) जपमाला, २ जपनी २ जपनीकोष, गोमुखी।
जपी, स पु (स जपिन्) जापक, जपितृ (पु)।
—तपी, स पु (स जपतपस>) उपासक, भक्त, पूजक।
जफा, स स्त्री (फा) दे 'अत्याचार'।
—कश, वि (फा) सहिष्णु, सहनशील २ परिश्रमिन्।
जब, कि वि (सं यावत्>) यदा, यस्मिन् काले।
—कभी, यदाकदाचित्, यदापि।
—कि, यदा, यावत्।
—जब, यदा यदा।
—तक,-तलक, यावत्, यदापर्यन्तम्।
—तक तब तक, यावत् तावत्।
—तब, यदा तदा, काले काले, कदापि, कदाचित्।
—देखो तब, सदा, सर्वदा।
—से, यदा प्रभृति, यस्मात् कालात्।
—होता है तब, प्राय, प्रायश, प्रायेण।
जब(भ)डा, स पु (स जभ) हनु (पु. स्त्री), हनू (स्त्री)।

निचला—, कुज, विडु (पु) पीचम्।
ज़बर, वि (फा) बलिन्, शक्तिमद २ दृढ।
—दस्त, वि (फा) दे 'ज़बर'।
—दस्ती, स स्त्री (फा) अत्याचार, अन्याय। क्रि वि, बलात्, हठात्, प्रसभ, प्रसह्य।
—दस्ती करना, क्रि स, पीड (चु), अर्द् (प्रे) बाध् (भ्वा आ से)।
ज़बरन्, क्रि वि (अ जब्रन्) दे 'ज़बरदस्ती' क्रि वि।
ज़बह, स पु (अ) हिंसा, हत्या, घात।
—करना, क्रि स, विशस (भ्वा प से), हन् (अ प अ), व्यापद् (प्रे)।
ज़बान, स स्त्री (फा) जिह्वा, रसज्ञा, रसना २ शब्द, वाक्य ३ प्रतिज्ञा ४ भाषा।
—दराज़, वि, जल्प(पा)क, वावदूक।
—दराज़ी, स स्त्री, जल्पकता, वावदूकता।
—बंदी, स स्त्री, मौन, वाग्यम २ भाषण निरोध ३ जिह्वास्तम्भ (रोगभेद)।
—का मीठा, मु, मधुरभाषिन्, मधुजिह्व।
—को मुँह में रखना, मु, जोष-तूष्णीं स्था (भ्वा प अ), मौन भज् (भ्वा उ अ)।
—देना या हारना, मु, दे 'प्रतिज्ञा करना'।
—पकड़ना, मु भाषणात् निवृत् (प्रे)-नि विनि-वृ (प्रे)।
—बंद करना, मु, मौन लम् (प्रे, लम्भयति) २ निरुत्तरी कृ।
—बंद होना, वक्तुं न पार् (चु), तूष्णीं स्था।
ज़बानी, वि (फा ज़बान) शाब्द [-ब्दी (स्त्री)], शाब्दिक [-की (स्त्री)], वाचिक वाचनिक मौखिक [-की (स्त्री)]। क्रि वि, स्मृत्या-वाचा (तृ एक) शब्दत, अखिलम्।
—पढ़ना, क्रि स, स्मृत्या पठ् (भ्वा प से) उच्चर् (प्रे)।
—जमा खर्च, मु, प्रजल्प-पन, निरर्थक वचनानि (बहु)।
ज़बून, वि (फा) निकृष्ट, गर्ह्य, निन्द्य २ अबल, निर्बल।
ज़ब्त, स पु (अ) निग्रह, निरोध, सयम २ दण्डरूपेण अपहरणं ३ राजसात्करणम्।
—करना, क्रि स, राजसात् कृ, दण्डरूपेण अपहृ (भ्वा प अ)।
—होना, क्रि अ, राजसात् भू, दण्डरूपेण अपहृ (कर्म)।
ज़ब्ती, स स्त्री (अ ज़ब्त) सर्वस्व-अपहार-दण्ड, दे 'ज़ब्त' (२)।
जब्र, स पु (अ) क्रौर्य, नैष्ठुर्य, अत्याचार।
—करना, क्रि स, अर्द् (प्रे), पीड (चु)।
जब्रन, जब्रिया, क्रि वि, दे 'ज़बरन्'।
जब्री, वि (अ) बलात् कारित, अनिवार्य।
जम, स पु, दे 'यम'।
जमघट, स पु (हिं जमना+घट्ट) जनौघ, जनसमर्द, सकुल, लोकमय।
जम-जम, अव्य (स जन्मन>) सदा, सर्वदा, नित्यम्।
जम-जम, स पु (अ) काबासमीपस्थ कूप विशेष।
जमना[1], क्रि अ [स जन्मन् (न) >] प्ररुह् (भ्वा प अ), उद्भिद् (कर्म) २ जन् (दि आ से), उत्पद् (दि आ अ)।
जमना[2], क्रि अ (स यमन नकड़ना >) घनी पिंडी ठोसी, भू, सहन् (कर्म) स्त्यै (भ्वा आ अ) २ समिल् (तु प से), समागम् (भ्वा प अ) ३ अनुषक्त समक्त (वि) भू, सल्ग् (भ्वा प स) ४ स्थरभू, निवास स्थिरीकृ ५ प्रतिदिन बद्ध मूल-(वि) भू ६ उपपद्-युज् (कर्म) सुसगत (वि) भू ७ निर्दयेन बद्(भ्वा प स)। स पु, घनी-ठोसी पिंडी-भाव सम्मेलन सस क्ति (स्त्री) स्थिरीभाव ई।
जमना[3], स स्त्री (स यमुना) कालिन्दी।
जमराज, स पु, दे 'यमराज'।
जमा, वि (अ) सगृहीत, सचित समाहृत २ निक्षिप्त, न्यस्त, निहित। स स्त्री, मूल, मूलद्रव्य धन २ धन, सपद् (स्त्री) ३ भूमि-कर ४ योग, पिंड, सकलन (गणि०) ४ बहुवचन (व्या)।
—करना, क्रि स, सचि (स्वा, उ अ), सग्रह् (क्र् प से) २ निधा (जु उ अ), निक्षिप् (तु प अ) ३ दे 'जोड़ना' (२)।
—होना, क्रि अ, सचि-सग्रह (कर्म) २ निधा निक्षिप् न्यस् (कर्म)।
—खर्च, स पु (फा) आय यौ २ आय व्ययलेख।

—जथा, सं स्त्री, सचित, धन द्रव्यम्।
—जमाई, स पु [स नामातृ (पु)] दुहितृ पुत्री, पति।
जमात, स स्त्री (अ जमाअत) कक्षा, श्रेणी २ जनौघ, जनसमर्द ३ गण सघ।
जमादार, स पु (फा) नायक, रक्षिपुरुष।
ज़मानत, स स्त्री (अ) (द्रव्य) आधि (पु) निक्षेप, न्यास, प्रातिभाव्य। (पुरुष) प्रतिभू (पु) बधक, लग्नक।
—देना, क्रि स, निक्षेप लग्नक दा अथवा दत्त्वा मुच (प्र)।
—नामा, स पु (अ + फा) प्रातिभाव्यपत्रम्
ज़मानती, वि (अ जमानत >) निक्षेपाह, प्रातिभाव्याह २ प्रतिभू (पु) लग्नक, बधक।
ज़माना, स पु (फा न) समय, काल २ चिरकाल, सुदीर्घसमय ३ जगत् (न)।
—साज़, वि (फा) कालानुवर्तिन्, समयानुरोधिन्।
—साज़ी, स स्त्री (फा) कालानुवर्तन, स्वार्थपरता।
जमाना, क्रि स, व 'जमना' के प्रे रूप।
जमाल, स पु (अ) सौन्दर्य, सुषमा मनोज्ञता लावण्यम्।
जमालगोटा, स पु (स जयपाल + गोटा >) (वृक्ष) जयपाल सारक, रेचक २ (बीज) जयपाल-कभी-कग शोधनी,-बीज, बीजरेचनम्।
जमाव, स पु (हिं जमना) जनौघ जनसमर्द २ दे 'जमना' स पु।
ज़मींदार, स पु (फा) क्षेत्रपति (पु), भूस्वामिन्।
ज़मींदारी, स स्त्री (फा) भूमि (स्त्री), भूमिरिक्थ क्षेत्र २ क्षेत्रपतित्व भूस्वामित्वम्।
ज़मींदोज़, वि (फा) भूतभौम (मी स्त्री), भूगर्भवर्तिन्, भूगृह।
ज़मीन, स स्त्री (फा) भूमि (स्त्री), पृथिवी धरा २ भू-पृष्ठ-तल ३ वस्त्रपटादेः तल ४ क्षेत्र भूरिक्थम्।
—आसमान एक करना, मु, अत्यधिक परिश्रम् (दि प से)।
—आसमान का फर्क, मु महदन्तर, महद्वैषम्य सम्भेद।
—आसमान के कुलाबे मिलाना, मु, अत्युक्त्या वर्ण् (चु) प्रतिपद् (प्रे)।
जमुना, स स्त्री, दे 'यमुना'।
ज़मीमा, स पु (अ) अतिरिक्त-क्रोड, पत्रम्।
ज़मुर्रद, स पु (फा) दे 'पन्ना'।
जमैयत, स स्त्री (अ) जन,-समुदाय समूह २ परिषद् (स्त्री) सभा।
जयत, स पु (स) इन्द्रपुत्र २ कार्तिकेय। वि [स जयत् (शत्रत)] विजयिन् जैत्र (त्री स) जिष्णु, जेतृ जित्वर [री स्त्री)] २ दे 'बहुरूपिया'।
जयती, स स्त्री (स) केतन, केतु (पु), ध्वज २ दुर्गा ३ जन्मोत्सव ४ स्थापना दिवसोत्सव।
जय, स स्त्री (स पु) वि, जय, विजिति (स्त्री)।
जय(जय जय)कार, स पु (स) जय, ध्वनि (पु) नाद स्वन शब्द।
जयजयकार करना, क्रि स जयध्वनिं कृ, जयनयेति नद् (भ्वा प से)।
—पत्र, स पु (स न) विजय,-पत्र-लेख २ आधिकरणिकस्य मुद्रितनिर्णयपत्रम् (धर्म)।
—माल, स स्त्री (स -ला) जय विजय,-माला स्रज (स्त्री) माल्यम्।
—स्तभ, स पु (स) विजयस्थूणा।
जयमा(धा)न, जयवत, जयी, वि, दे 'जयत' वि।
ज़र, स पु (फ़ा) सुवर्ण, काचन, २ धन, वित्तम्।
—खरीद, वि (फ़ा) वित्तक्रीत।
—खेज़, वि (फा) उर्वर, शस्यद, फलप्रद।
—खेज़ी, स स्त्री (फा) उर्वरता, फलप्रदता।
—दार, वि (फ़ा) धनिक, धनाढ्य।
—दोज़, स पु (फ़ा) कार्मिकवस्त्रकृत् (पु), सूचीकर्मोपजीविन्।
—दोज़ी, स स्त्री (फा) शिल्प सूचीकर्मन्(न)।
जरनल, स पु (अ) दैनिक वृत्तपत्र-समाचारपत्रम् २ पत्रिका ३ आयव्यय पञ्जी पञ्जि(स्त्री)।
जरनलिज्म, स पु (अ) पत्रकारिता पत्रकारव्यवसाय।
जरनलिस्ट, स पु (अ) पत्रकार।
जरनैल, स पु, दे 'जनरल स पु'।

ज़रब, सं स्त्री (अ) आघात, प्रहार, २ व्रण ण ३ अभ्यास°, आघात, गुणन, हनन ४ अक, मुद्राचिह्नम्।
—देना, कि स, गुणयति (ना धा), आ नि, हन् (अ प अ, या प्रे, घातयति), पुर (चु)। मु, प्रह (भ्वा प अ) तड् (चु)।
ज़रर, स पु (अ) क्षति हानि (स्त्री) २ प्रहार ३ आपत्ति (स्त्री)।
जरस, स पु (अ) घटा, घनम्।
ज़रा, वि (अ जर्र) अल्प, न्यून। कि वि, किंचिद्, ईषद्।
जरा, स स्त्री (स) दे वार्द्धक्य-क्यम्।
—ग्रस्त, जीर्ण, वि (स), वृद्ध, जरठ।
ज़राअत, स स्त्री (अ) कृषि (स्त्री) कर्षण, हलभृति (स्त्री)।
—पेशा, वि, कर्षक, कृषिजीविन्, क्षत्रिक।
जरातुर, वि (स) वृद्ध, जरठ, स्थविर, पलित, जीर्ण।
जरायु, स पु (स) उल्व कलल, २ गर्भाशय।
जरायुज, वि (स) गर्भाशयजात (मनुष्य, गौ आदि)।
जरासंध, स पु (स) चन्द्रवंशीयनृपविशेष, कंसश्वशुर।
ज़रिया, स पु (अ) दे 'साधन'।
ज़री, स स्त्री (फा) ताशास्य वस्त्र २ सौवर्ण कार्मिकवस्त्रम्।
ज़रीफ़ वि (अ) विनोद परिहास, शील, प्रिय।
जरीब, स स्त्री (फा) पचपञ्चाशद्गजात्मक क्षेत्रमानभेद°, जरीब २ यष्टि (स्त्री)।
—कश, स पु (फा) भू क्षेत्र, मापक।
—कशी, स स्त्री भू क्षेत्र मापनम्।
ज़रूर, कि वि (अ) अवश्य, अपरिहार्यतया, निश्चयेन, निःसंदेह, निःसंशयम्।
ज़रूरत, स स्त्री (अ) आवश्यकता, प्रयोजनम्।
ज़रूरी, वि (फा) अपेक्षित, आकाङ्क्षित २ आवश्यक [-की (स्त्री)], अपरिहार्य अनिवार्य, अवश्यकरणीय।
ज़र्क़ बर्क़, वि (फा) उज्ज्वल, भासुर, भासमान।
जर्जर, जर्जरित, वि (स) जीर्ण शीर्ण, सच्छिद्र २ भग्न, खंडित ३ वृद्ध।
ज़र्द, वि (फा) पीत, दे 'पीला'।
ज़र्दी, सं स्त्री (फा) पीतिमन् (पु) दे 'पीलाई' २ अल्पपीतिमन् (पु)।
जर्म, सं पु (अ) जीवाणु, रोगकीटाणु।
ज़र्रा, स पु (अ) अणु, परमाणु २ द्व्यणुक, त्र्यणुक ३, कण णी णिका, लव।
जर्राह, स पु (अ) शल्यचिकित्सक, शल्यवैद्य।
जर्राही, स स्त्री (अ) शल्य, शास्त्र चिकित्सा।
जलधर, स पु, दे 'जलोदर'।
जल, स पु (स न) पानीय, आप (स्त्री, नित्य बहु)। पयस अम्भस-अम्बु वारि (न), सलिल, अमृत, जीवन, उदक, तोय, नीर, घनरस।
—कूपी, स स्त्री (स) कूपगर्त, पुष्करिणी।
—क्रीडा, स स्त्री (स) वर, पात्र, पत्रिका, व्यात्युक्षी, जलविहार।
—चर, वि (सं) वारिचर, जलचारिन्।
—जतु, स पु (स) यादस् (न) जलजीव।
—जात, स पुं (स न) कमल, पद्मम्।
—तरंग, स पु (स) वाद्यभेद २, लहरी।
—धर, स पु (स) मेघ, जलद २ समुद्र।
—धारा, स स्त्री (स) वारिप्रवाह।
—पक्षी, स पु (स क्षिन्) जलशकुन।
—पान, स पु (स न) उपाहार, लघु भोजनम्।
—प्रपात, स पु (स) निर्झर।
—प्लावन, स पु, (स न) जलोपप्लव, तोयविप्लव।
—मार्जार, स पु (स) उद्र, जलनकुल, जलबिडाल।
—यान, स पु (स न) नौका, पोत, वाष्पपोत।
—शायी, स पु (स यिन्) वरुण।
—सेना, स स्त्री (स) नौ समुद्र, सेना सैन्यम्।
जलज, स पु (स न) कमल, वारिजम्।
ज़लज़ला, स पु (फा) भूकम्प, भूचाल।
जलडमरूमध्य, स पु (स न) सामुद्रधुनी।
जलद, स पु (स) मेघ, वारिद।
जलधि, स पुं (स) अब्धि (पुं), सागर।
जलन, स स्त्री (स ज्वलनं) ताप, दाह, २ पाक (चिकित्सा, उ नेत्रपाक), ३ ईर्ष्या

र्ष्या, सापत्न्य, मात्सर्य ४ गात्रदाह (रोग भेद)।

जलना, क्रि अ (सं ज्वलन) ज्वल (भ्वा प से) तप दह् (कर्म) दीप (दि आ से) २ असूयति (ना धा) ईर्ष्य् (भ्वा प से) परोत्कर्ष न सह् (भ्वा आ से) मृष (दि प से चु)। स पु, ताप, ज्वलन, दहन, दाह, प्लोष इ ।

जले पर नोन छिड़कना, मु क्षते क्षार क्षिप (तु प अ)।

जलरुह, स पु (सं न) जलरुह (पु), कमलम् ।

जलवा, स पु (फा स्त्री (स्त्री) प्रभा शोभा ।

जलसा, स पु (अ) उत्सव, महोत्सव समेलन वृहदधिवेशन २ सगीतोत्सव २ समोजनम् ।

जलाजलि, स स्त्री (सं पु) अजलि-करपुट-मात्र जलम् २, तर्पणम्, प्रेततर्पणजलम् ।

जलाकर, स पु (सं) समुद्र, सागर २ जल तोय-राशि ३ कूप ४ निर्झर, उत्स ।

जलाखु, सं पु (सं) दे 'ऊदबिलाव'।

जलातंक, स पु (स) अर्ल्कविमव, आल्कै, जलत्रासाख्यो रोग (हिं हल्क)।

जलात्यय, स पु (स) शरदृतु, वर्षा वसान, मेघान्त ।

जलाना, क्रि स (हिं जलना) उष (भ्वा प से), ज्वल (प्रे ज्वलयति), तप (भ्वा प अ, प्रे)। दह (भ्वा प अ), दीप (प्रे), प्लुष् (भ्वा प से) २ ईर्ष्या-असूया मात्सर्य जन् (प्रे), ३ पीड़ (प्रे) तुद् (तु प अ)। स पु, दहन तापन, प्लोषण, दीपन इ ।

जलाने योग्य, वि, ज्वलयितव्य, दग्धव्य, दीपनीय, तपनीय ।

जलानेवाला स पु, तापक, दाहक इ ।

जलाया हुआ, दग्ध, ज्वलित, दीपित ।

जला भुना वि, कुपित, क्रुद्ध, क्रुद्ध, शील, दुष्प्रकृति ।

जलार्द्र, वि (स) क्लिन्न, उन्न, उन्न ।

जलावतन, वि (अ) निर्वासित, विवासित ।

जलावतनी, सं स्त्री (अ) निर वि, वासनम् ।

जलाशय, सं पु (सं) जल तोय-आधार', तडाग-ग, वापी ।

ज़लील, वि (अ) नीच, क्षुद्र, जघन्य । (२) अपमानित, तिरस्कृत ।

—करना, क्रि स, अपकृष (भ्वा, प अ), न्यक्कृ।

जलूस, सं पु (अ) उत्सव, यात्रा, •सम्र चलनम् ।

जलेबी, स स्त्री (देश) कुण्डली, मिष्टान्नभेद ।

जलोका, सं स्त्री (सं) दे 'जोंक'।

जलोदर, स पु (सं न) जठरामय ।

जल्द, क्रि वि (अ) अचिरात्, अचिरेण, झटिति, द्राक, अविलंब, आशु, शीघ्र २ जवेन, वेगेन, सत्वरम् ।

—बाज़, वि (अ + फा) अविमृश्य असमीक्ष्य-भिघ्र-कारिन्, साहसिन् ।

—बाज़ी, सं स्त्री, अविमृश्य-असमीक्ष्य, कारिता-कारित्व, साहसम् ।

जल्दी, स स्त्री (अ) शीघ्रता, त्वरा, क्षिप्रता ।

—करना, क्रि अ, त्वर् (भ्वा आ से), आशु शीघ्र त्वरित कृ अथवा चल् (भ्वा प से)।

जल्प, स पु (सं) कथन, वदन २ प्रजल्प, प्र, जल्पित, वृथा,-आलाप -कथा, व्यर्थवार्ता ३ वादभेद (न्या०)।

जल्पक, वि (स) जल्पाक, वाचाट, वाचाल, वावदूक ।

जल्लाद, स पु (अ) घातक, दण्डपाशिक, मातग, वधाधिकृत । वि, क्रूर, निर्दय ।

जलसा, स पु, दे 'जलसा'।

जव, स पु (स) वेग, त्वरा रहस् (न)।

जवन, स पु, दे 'यवन'।

जवनिका, स स्त्री, दे 'यवनिका'।

जवाँमर्द, वि (फा) वीर, शूर, पराक्रमिन् ।

जवाँमर्दी, स स्त्री (फा) वीरता, शूरता ।

जवाखार, स पु (स यवक्षार) यवाह, यवनाल ।

जवान, वि (फा) युवन्, तरुण, अभिनव वयस्क, कुमार २ धीर, शूर । स पु, पुरुष, मनुष्य सैनिक ३ वीर ।

जवानी, स स्त्री (फ़ा) कौमार, तारुण्य, यौवन, अभिनव-पूर्व प्रथम वयस (न)।

जवाब, स पु (अ) उत्तर, प्रति, वचन वाच् (स्त्री), प्रत्युक्ति (स्त्री) प्रत्युत्तर २ प्रतिक्रिया, प्रतीकार', ३ कारभ्रशादेश, ४ पद च्युति (स्त्री), अधिकारभ्रश ।

—दावा, म पु (अ) उत्तरम् , उत्तर, पक्ष पाद ।

—देह, वि (अ + फा) उत्तर, दातृ दायिन् , अनुयोज्य प्रष्टव्य।

—देही, स स्त्री (अ + फा) उत्तरादायित्व, प्रष्टव्यता, भार ।

—सवाल, स पु प्रश्नोत्तराणि (बहु), वाद विवादौ (द्वि)।

—देना, मु, पदात् अवरुह् च्यु (प्रे)। क्रि स, दे 'उत्तर देना'।

—मिलना, मु, अधिकारात् च्यु (भ्वा आ अ), पदभ्रष्ट (वि) भू ।

जवाबी, वि (अ) उत्तरापेक्षिन्।

—कार्ड, स पु, उत्तरापेक्षि-उत्तरणीय, पत्रम्।

—तार, स पु, उत्तरापेक्षी तडित्सदेश ।

जवार, स पु, दे 'ज्वार'।

जवारा, स पु (हि जव) यव,अकुर प्ररोह।

जवाल, स पु (अ) क्षय, ह्रास २ विपद् (स्त्री)।

जवास-सा, स पु (स यवास) यास, दु स्पर्श, रोदनी, दुरालभा ।

जवाह(हि)र, स पु (अ) रत्न, मणि ।

जवाह(हि)रात, स पु (अ, बहु) रत्नानि मणय (बहु)।

जशन, स पु (फा) धार्मिकोत्सव २ उत्सव, क्षण ३ आनद, हर्ष ४ सगीतोत्सव ।

जसामत, स स्त्री (अ) स्थूलता पीनता, पीवरता।

जसीम, वि (अ) पीन, पीवर, स्थूल।

जस्टिस, स पु (अ) उच्चन्यायालयस्य धर्म अधिकारिन्-अध्यक्ष, २ न्याय, दक्षयोग ।

जस्त, जस्ता, स पु (स यशद) कुधातु (न)।

जहन्नुम, स पु (अ) नरक, निरय २ तीव्रपीडास्थानम्।

ज़हमत, स स्त्री (अ) कष्ट, अपाद् (स्त्री), २ व्यामोह, चित्तविक्षेप ।

जहर, स पु (फा 'नह) गरल, विष यम्। वि, घातक, प्राणहर २ अतिहानिकर [री (स्त्री)]।

ज़हरदार, वि (फा) विषाक्त, गरलदिग्ध।

ज़हरबाद, स पु (फा) विसर्प ।

ज़हरमोहरा, स पु (फा जहरमुहरा) विषघ्न प्रस्तरभेद ।

जहरीला, वि (फा जहर) दे 'जहरदार'।

जहाँ, क्रि वि (स यत्) यस्मिन् देशे स्थाने।

—कहीं, क्रि वि, यत्रकुत्र चित् अपि, यत्र यत्र ।

—का तहाँ, क्रि वि, तत्रैव, पूर्वस्मिन्नेव स्थले।

—तक, क्रि वि, यावत् ।

—तहाँ, क्रि वि, इतस्तत, अत्र तत्र २ सर्वत्र।

—से, क्रि वि, यत, यस्मात् स्थानात् ।

जहाँ, स पु (फा) जगत् , ससार ।

—दीद,—दीदा, वि (फा) अनुभविन् ।

—पनाह, स पु (फा) जगद्रक्षक, प्रभु २ प्रभुचरणा, देवपादा ।

जहाज, स पु (अ) तराधु (पु) बृहन्नौका, पोत थ, डोड ।

जहाज़ी, वि (अ जहाज)। स पु, नाविक, नौ पोत, वाह, समुद्रग ।

—डाकू, स पु, सागरतस्कर, समुद्रदस्यु (पु)।

—बेड़ा, स पु (रण) पोतगण ।

जहान, स पु (फा) जगत् (न), सृष्टि (स्त्री)।

जहालत, स स्त्री (अ) अज्ञानम् , मूर्खता ।

ज़हीन, वि (अ) कुशाग्रबुद्धि २ मेधाविन् ।

जहूर, स पु (अ) आविर्भाव प्रकाश ।

जहेज़, स पु (अ) शुल्क, यौतक, वाहनिक, स्त्रीधनम्।

जह्नु, स पु (स) नृपविशेष, सुहोत्रपुत्र ।

—कन्या—तनया, स स्त्री (स) गगा।

जागल,ली, वि (स जागल) आरण्यक, वन्य, २ अशिष्ट, क्रूर।

जाँघ, स स्त्री (स जघा) ऊरु (पु), सक्थि (न)।

जाँघिया, स पु (हि जाँघ) •नाधिक, •ऊरुच्छद दे 'काछा'।

जाँच, स स्त्री (हिं जाँचना) परीक्षण क्षा, विचारण णा २ अनुसंधान, गवेषणा ।

जाँचना, क्रि स (स याचन >) परीक्ष (भ्वा आ से), विमृश (तु प अ), आ पर्या लोच (चु), अनुसधा (जु उ अ), निरूप (चु) विचर् (प्र) ।

जाम्बूनद, स पु (स न) सुवर्ण, काञ्चन, हिरण्यम् ।

जा, स स्त्री (फा) स्थान प्रदेश वि, उचित, योग्य सगत

—बजा, क्रि वि, सत्र

—बेजा, वि उचितानुचित सत्यासत्य ।

जाई, स स्त्री (स जा = जाता) पुत्री दुहितृ (स्त्री) ।

जाग, स पु (स यज्ञ) मख, क्रतु ।

जाग, स स्त्री (हिं जागना) जागरण प्रजागर नागर ।

जागना क्रि अ (स जागरण) जागृ (अ प से) प्र वि-बुध (दि आ अ) स पु, दे 'जागरण' ।

जागनेवाला, स पु, जागरक, जागरितृ (पु)। अवहित जागरूक ।

जागरण, स पु (स न) प्र जागर, प्र, बोध धन निद्राभाव अभाव २ अवधान दक्षता ।

जागरित, वि (स) उन्निद्र, विनिद्र, प्रबुद्ध । २ जागरूक सावधान । स पु, (स न) दे 'जागरण' ।

जागरूक, वि (स) जागरितृ जागरक जागरिन २ अवहित, दक्ष, सावधान ।

जागर्ति, स स्त्री (स) जागर्या, जागिया, निद्राऽभाव प्रबोध २ दक्षता ।

जागीर, स स्त्री (फा) अग्रहार २ भूसपद् (स्त्री) ।

—दार, स पु (फा) अग्रहारिन् २ भूस्वामिन् ।

जाग्रत, वि (स जाग्रद) दे 'जागरूक' ।

जाग्रति, जागृति, स स्त्री, दे 'जागर्ति' ।

जाजरूर, स पु (फा जा+अ) दे 'पाखाना' ।

जाजिम, स स्त्री (तु जाजम) चित्रितास्तरण, तलाच्छादनम् ।

जाज्वल्यमान, वि (स) प्रज्वलत्, दह्यमान २ तेजस्विन्, कांतिमत् ।

जाट, स पु (स जर्त) आर्येषु जातिविशेष २ जड, मूढ ३ ग्रामीण, ग्रामीय, ग्रामिन् ।

जाठ, स पु [स यष्टि (स्त्री)] तैल इक्षु, पेषणीयष्टि

जाठर, वि (स) जठर-उदर,-सम्बन्धिन् विषयक, औदर, जठर, जठिरस्थ-वर्तिन् । स पु, जठराग्नि २ बाल ।

—अग्नि, स पु (स) जठरानल, जठराग्नि ।

जाड़ा, स पु (स जाड्य) शीतता, शीतलता, शैत्य २ शिशिर, शीतकाल, हिमागम, शीतर्तु (पु) ।

जाड्य, स पु (स न) जडता मूढता, मूढता २ मदता, मथरता ।

जात[1], वि (स) उत्पन्न, प्रसूत, सभूत २ प्रकट, व्यक्त ३ अच्छ, प्रशस्त ४ नवजात

जात[2], स स्त्री, दे 'जाति' ।

जात, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री), स्वभाव २ देह ३ व्यक्ति (स्त्री) ।

जातक, स पु (स) वत्स, बाल २ शिशु नवजात (पु) ३ भिक्षु (पु) याचक ४ बुद्धस्य पूर्वजन्मकथा (स्त्री बहु) ।

जातकर्म, स पु (स मन् न) जातक्रिया, सस्कारभेद (धर्म) ।

जातपाँत, स स्त्री, दे 'जातिपाँति' ।

जाता, स स्त्री (स) बाला, कन्या, कुमारी २ पुत्री, सुता तनुजा ।

जाति, स स्त्री (स) वर्ण २ कुल, वश ३ वशावली, गोत्र ४ भेद, प्रकार ५ वर्ग, श्रेणी ६ ७ समाज, जनसमूह ८ सामान्य ९ जातिफल १० मालती ।

—से खारिज करना, क्रि स, जाते समाजाद् बहिष्कृ या च्यु भ्रश् (प्रे) ।

—च्युत, वि (स) जातिहीन, अपांक्तेय, बहिष्कृत ।

—पाँति, स स्त्री, जात्युपजाती (स्त्री द्वि) ।

—स्वभाव, स पु (स) सहज, प्रकृति (स्त्री)-स्वभाव ।

जाती, वि (अ जात) वैयक्तिक २ स्वीय, नैज ।
जाती, स स्त्री (स) सुरभिगंधा, सुरभिया, चेतकी, मालती ।
—पत्री, स स्त्री (स) जातिकोषी, मालती पत्रिका ।
—फल स पु (सं न) जाति(ती)कोश शक्षम् ।
—रस, स पु (स न) बोल ।
जातीय, वि (स) जातिभव, जातिसबंधिन् २ राष्ट्रीय, देशीय ३ सामाजिक ।
जातीयता, स स्त्री (स) जाति, प्रेमन् (पु) अनुराग २ राष्ट्रीयता ३ सामाजिकता ।
जातुधान, स पु (स) निशाचार, राक्षस ।
जादू, स पु (फा) अभिचार, इन्द्रजाल कार्मण, कुसृति (स्त्री) कुहक-क माया, मोह, मंत्रयोग ।
—करना, क्रि स, अभिचर् (प्रे), मंत्रै वशीकृ वा मुह् (प्रे), मायां कृ ।
जादूगर, स पु (फा) कौसृतिक सौभिक, ऐं(इ)न्द्रजालिक, कुहकाजीविन्, मायाकार ।
जादूगरी, सं स्त्री (फा) ऐन्द्रजालिकता, दे 'जादू' ।
जान, स स्त्री (स ज्ञान) बोध, उपलब्धि (स्त्री), विचार २ अनुमान, ऊह, तर्क ।
—कार, वि, ज्ञातृ, ज्ञानिन्, वेत्तृ इ, अभिज्ञ (समासांत में) २ दक्ष, कुशल ।
—कारी, स स्त्री, परिचय, अभिज्ञता २ नैपुण्य, दाक्ष्यम् ।
—बूझ कर, क्रि वि, कामत, ज्ञान बुद्धि विचार, पूर्वकम् ।
—पहिचान, स स्त्री, परिचय परिचिति (स्त्री) ।
जान, स स्त्री (फा) प्राण, जीव बल श्वास २ बल, सामर्थ्य ३ सार, उत्तमांश ४ प्रिय, प्रियः ।
—जोखों, स स्त्री, प्राण, संकट संशय भयम् ।
—दार, वि (फा) प्राणिन, सप्राण ।
—फिशानी, स स्त्री (फा) परमोद्योग, घोरपरिश्रम ।
—किसी पर देना, मु अत्यंत स्निह् (दि प से, सप्तमी के योग में) ।
—खाना, मु, दु (स्वा प अ), बाध् (भ्वा आ से) ।
—छुड़ाना, मु, अपसृ अपसृप् (भ्वा प अ) ।
—में जान आना, मु, आ सम-श्वस् (अ प से), सुस्थ निर्वृत (वि) भू ।
जानकी, स स्त्री (स) सीता, वैदेही, जनकतनया ।
जानना, क्रि स (स ज्ञान) ज्ञा (क्र् उ अ), अव इ (अ प से), अवगम्, बुध् (भ्वा उ से), विद् (अ प से) २ मन् (दि आ अ), ऊह् (भ्वा आ से) वितर्क (चु) । स पु, दे 'ज्ञान' ।
जानने योग्य, वि, दे 'ज्ञातव्य' ।
जाननेवाला, स पु दे 'ज्ञाता' ।
जानपद, स पु (स) ग्रामवासिन्, ग्रामिन ग्रामीण, ग्राम्यजन २ जनपदग्रामकर वि जनपदग्राम सम्बन्धिन् ।
जानवर, स पु (फा) जीव प्राणिन्, चर, चेतन २ पशु, जंतु (पु) । वि, जड, मूर्ख ।
जानशीन, स पु (फा) उत्तराधिकारिन् ।
जाना क्रि अ (स यान) या इ (अ प अ), गम् (भ्वा प अ), चर चल् व्रज् (भ्वा प से) पद् (दि आ अ), ऋ (भ्वा जु प अ) २ प्रस्था (भ्वा आ अ) प्रया, प्रचल, निर्गम् । स पु, गमन, यान, व्रजन, प्रस्थान, प्रचलन इ ।
जाने योग्य, वि, गन्तव्य, यातव्य ।
जानेवाला स पु, गतृ यातृ,चलितृ (पु) इ ।
गया हुआ, वि, गत, यात, इत, चलित इ ।
जाने देना, मु, दे 'क्षमा करना' ।
जानी, वि (फा जान) प्राणसबंधिन् । स स्त्री, प्रिया, दयिता ।
—दोस्त, स पु, अभिन्नहृदय सुहृद् (पु) ।
—दुश्मन, स पु अंतरंग प्राणहर शत्रु (पु) ।
जानु, स पुं (स न) ऊरुपर्वन् (न), अष्ठीवत् (पु न), जानुसंधि (पु), चक्रिका ।
जाने अनजाने, क्रि वि (हिं जानना) ज्ञानतोऽज्ञानतो वा, कामतो कामतो वा, बुद्धि पूर्वमबुद्धिपूर्वं वा ।

जानो, अव्य, दे, 'मानो'।
जाप, स पु (सं) दे 'जप'।
जापक, सं पु (सं) दे 'जपी'।
जाफ्त, सं स्त्री (अ नियाफत) सद्मन, मोननम्।
जाफरान, सं पु (अ) दे 'केसर'।
जाफरानी, वि (अ) दे 'केसरिया'।
जॉब, सं पु (अ) कर्मन् (न), कार्यम् २ वैनतिक,-कार्यम् कर्मन।
जाब्ता, स पु (अ) नियम, व्यवस्था, विधि (पु)।
—दीवानी, स पु, व्यवहारसहिता।
—फौजदारी, स पु, दण्डसहिता।
बेजाब्ता, वि नियम विधि, विरुद्ध, अवैध।
बजाब्तगी, सं स्त्री, अनिमय, उरसूत्रता।
जाम[1], स पु (स याम) दे 'पहर'।
जाम[2], स पु (फा) चषक कम्।
जामदग्न्य, स पु (स) जमदग्निपुत्र परशु राम।
ज़ामन, सं पु (हिं जमाना) द्र(द्रा)प्स, त्र(द्र)प्स्यम्।
जामन, स पु दे 'नाखुन'।
जामा, स पु (फा) वसन, वस्त्र २ कञ्चुक, प्रावारक.।
जामे से बाहर होना, मु, अत्यत क्रुध् (दि प अ)।
जामे में फूला न समाना, मु, भृश हृष् (दि प से)।
जामाता, सं पु दे 'दमाद'।
जामिन, सं पु (अ) प्रतिभू (पु) बधक, लग्नक।
ज़ामिनी, स स्त्री, दे 'जमानत' (द्रव्य)।
जामिनी, सं स्त्री, (सं यामिनी) दे रात्री त्रि (स्त्री), निशा।
जामुन, स पु (स. जम्बु) (वृक्ष) जम्बू बु (स्त्री)। (फल) जम्बु (न), जम्बु जम्बू (स्त्री), जबुफल, जाम्बवम्।
ज़ायका, सं पु (अ) आ, स्वाद, रस।
जायकेदार, वि (अ + फा) स्वादु, सरस, रसवत्।
जायज, वि (अ) उचित, युक्त, सगत।
जायदाद, सं स्त्री (फा) रिक्थ, दाय, भूमि सपत्ति (स्त्री)।
जायफल, सं पु [सं जाति(ती)फल] जाति-कोष सार-शस्य, कोश(ष)म्, पपुटम्।
जाया[1], सं स्त्री (सं) पत्नी, भार्या, पाणि-गृहीती।
—पती, सं पु (सं) दम्पती जम्पती, (पु द्वि)।
जाया[2], सं पु (स जात) पुत्र, सुत। वि, उत्पन्न, जात।
ज़ाया, वि (फा) नष्ट, निरर्थक।
जार, स पु (सं) उपपति, परदारलपट।
—ज, स पु (सं) उपपतिसतान।
जारिणी, सं स्त्री (सं) कुलटा पुंश्चली, अधनचपला।
जारी, वि (अ) प्रवहत्, प्रवाहिन २ वर्त मान, प्रचलत्, प्रचलित।
जालंधर, स पु (स) (१४) नगर नृप मुनि दैत्य, विशेष।
जाल[1], सं पु (सं न) जालक, पाश, आनाय, वागुरा २ समूह, निकर ३ लता लतिका,-जालम्।
जाल[2], सं पु (अ जअल) छल, कपट, माया।
—साज, सं पु (अ + फा) धूर्त, शठ, मायिक।
—साजी, सं स्त्री, धूर्तता, कापट्य, शाठ्यम्।
जाला, स पु (सं जाल) लूता लूतिका, जाल २ जालदृष्टि (स्त्री) नेत्ररोगभेद ३ घासा दिबन्धनार्थं जालम्।
जालिक, स पु (सं) धीवर केवर्त्त २ ऐन्द्र जालिक, कुहककार ३ ऊर्ण तन्तु, नाम।
जालिम, वि (अ) घोर, क्रूरकर्मन्, आत तायिन्, पापिष्ठ।
जालिया, दे 'जालसाज'।
जाली[1], सं स्त्री (सं जाल >) छिद्रप्राय वस्त्र, जालिका २ काष्ठादिपट्टेषु छिद्रसमूह ३ सूचीकर्मभेद जालिकाकर्मन्।
जाली[2], वि (अ जअल) कृत्रिम, कृतक।
जावा, सं पु (सं यवद्वीप प) द्वीपविशेष।

ज़िल्लत, स स्त्री (अ) अपमान अवज्ञा, तिरस्कार, अनादर २ दुर्गति (स्त्री) दुर्दशा ।
जिस, सर्व (स य >) यद् ।
जिस्म, स पु (फा) शरीर, देह ।
जिह्न स पु (अ) बुद्धि -मति (स्त्री) ।
जिहाद स पु (अ) धर्मयुद्धम् ।
जिह्वा, स स्त्री (स) रसना, रसज्ञा दे जीभ'
जी, स पु (स जीव >) चित्त मानस चेतस-मनस (न) २ साहस, पौरुष ३ सकल्प विचार ।
—आना (किसी पर), अनुराग बन्ध (क्र प अ) स्निह् (दि प से सप्तमी के साथ)।
—करना मु इष (तु प से)।
—का बुख़ार निकलना, मु रोदनजल्पना दिभि मनोवेगा शम् (दि प से) ।
—खट्टा होना, मु, निर्विद् (दि आ अ तृतीया के साथ) विरक्त (वि) भू ।
—खोल कर, मु, निस्सकोच २ यथेच्छम् ।
—चुराना, मु, परिहृ (भ्वा प अ, द्वितीया के योग में) ।
—छोटा करना, मु, विषद् (भ्वा प अ) २ औदार्यं हा (जु प अ) ।
—बहलना, मु, मनोविनोद जन् (दि आ से) ।
—बिगड़ना, मु, वम् (सन्नन्त, विवमिषति), वमनेच्छा जन् ।
—भरना, मु, तृप् (दि प अ) ।
—भर कर, मु, यथेच्छ, यथाकामम् ।
—मचलाना या—मतलाना, मु, दे 'जी बिगड़ना' ।
—में आना, मु वाञ्छ (भ्वा प से) ।
—लगना, मु, दे 'जी आना' ।
जीजा, स पु (हिं जीजी) भगिनीपति, आवुत्त ।
जीजी, स स्त्री (अनु) जीजी (ज्यायसी) भगिनी, स्वसृ (स्त्री) ।
जीत, स स्त्री (स जितम्) जय, विजय २ लाभ ३ साफल्य, कृतकार्यता ।
—हार, स स्त्री, जयाजयौ, जयपराजयौ ।
जीतना, क्रि स (हिं जीत) जि (भ्वा प अ), वि परा जि (भ्वा आ अ) अभि परा भू १ वशीकृ, दम् (प्रे) ३ स्वायत्ती–आत्मसात् कृ । स पु, दे 'जीत' स स्त्री ।
—योग्य, वि, वि, जेय, जेतव्य, जयनीय, अभि परा-भवनीय दमनीय वशीकार्य इ ।
—वाला, स पु, वि, जेतृ अभिभाविन्, अभि भाव(वु)क ।
जीता, वि (हिं जीना) जीवित, सजीव, जीवोपेत सप्राण ।
जीतेजी मु यावज्जीव, जीवनपर्यन्त, जीवना वधि (न) ।
ज़ीन स पु (फा) पल्ययन, पर्याणम् ।
ज़ीनत, स स्त्री (फा) शोभा छवि (स्त्री), आभा ।
जीना, क्रि अ (स जीवन) जीव् (भ्वा प से) प्र अन् (अ प से), श्वस (अ प से) । स पु जीवन, प्राणधारणम् ।
ज़ीना, स पु (फा) सोपान, आरोहण, अधिरोहि(ह)णी ।
जीभ, स स्त्री (स जिह्वा) रसा, लोला, रसज्ञा, सुधास्रवा, रसिका, रसाका, रसना ।
—चाटना, मु, गृध् (दि प से), अभिलष् (भ्वा प से), लुभ् (दि प से) ।
जीभी, स स्त्री (हिं जीभ) जिह्वा रसना, मार्जनी शोधनी २ जिह्वा रसना मार्जन शोधनम् ३ लघु जिह्वा रसा-रसला ४ कलमाग्रम्, लेखनीचञ्चु (स्त्री) ५ पशुरोगभेद ।
जीमना, क्रि स (स जेमन) अद् (अ प अ), खाद् (भ्वा प से) ।
जीमूत, स पु (स) मेघ, वारिवाह, अभ्र २ पर्वत, नग ।
—वाहन, स पु (स) इन्द्र, वज्रिन् (पु) ।
जीरा, सं पु (स जीर) दीपक, दीप्य, जीरक, जरण ।
जीर्ण, वि (स) शीर्ण, गलित २ परिपक्व, परिणमित ।
जीर्णा, वि (स) वृद्धा, स्थविरा, पलिता, पाल्क्नी ।
जीर्णोद्धार, सं पु (स) नवीकरण, सधान, उद्धार ।

जीवत, वि (स जीवत्) सप्राण, जीवित, सजीव, जीवोपेत।

जीव, स पु (स)। जीव, आत्मन् (पु), शरीरिन्, देहिन्।

—दान, स पु (स न) प्राणदान, जीवन रक्षणम्।

—दण्ड, स पु (स) प्राणदण्ड, मृत्युदण्ड २ वध मारण हननम्।

जीवक, स पु (स) प्राणिन् जीवधारिन् २ सेवक दास ३ अ(आ)हितुडिक काल्ग्राहिन् ४ कुसीद-दक वार्द्धुषिक, कुसीदिन्।

जीवन, स पु (स न) प्राणधारण, चैतन्य सप्राणता।

—चरित, स पु (स न) जीवन, चर्या वृत्तान्त-चरित्रम्।

जीवनवृत्त,-वृत्तान्त, स पु (स) दे 'जीवन चरित'।

जीवनवृत्ति, स स्त्री (स) आजीविका व्यवसाय, उपजीविका, जीवनोपाय, जीवन साधनम्।

जीवात्मा, स पु (स त्मन्) दे 'जीव'।

जीविका, स स्त्री (स) दे 'जीवनवृत्ति'।

जीवित, वि (स) दे 'जीता'।

जुआ, स पु (स द्यूत) पण पणनदेवन ना, द्यूत अक्ष,-क्रीडा।

—खेलना, क्रि अ, दिव् (दि प से) (अक्षै) क्रीड (भ्वा प से)।

जुआरी, स पु (हिं, जुआ) द्यूतकार, कितव, अक्षदेविन्, देविन्

जु़काम, स पु (अ) प्रतिश्याय, श्लेष्म स्राव।

जुग, स पु (स युग) कालमानभेद २ युगल, द्वन्द्वम्।

जुगनू, स पु (हिं जुगजुगाना) खद्योत, ज्योतिरिङ्गण, द्युतिबिन्दु प्रभाकीट, उप सूर्यक, तमोमणि।

जुगल, स पु (स युगल) दे 'युगल' या 'जुग (२)'।

जुगालना, क्रि अ (स उद्गिरणम् >) रोमन्थ कृ, रोमन्थायते (ना धा)।

जुगाली, स स्त्री (हिं जुगालना) रोमन्थ पुनश्चर्वणम्।

जुगुप्सा, स स्त्री (स) बीभत्स, घृणा गर्हा, अरुचि (स्त्री)।

जुटना, जुड़ना, क्रि, अ (स युक्त) स,युज (कर्म) सश्लिष (दि प अ) संमिल (तु प से)।

जुटाना, जुड़ाना, क्रि प्रे, व 'जुटना' के प्र रूप।

जुतना, क्रि अ (स युक्त >) युग योक्त्र वह् (भ्वा उ अ)।

जुदा, वि (फा) पृथक, भिन्न।

—करना, क्रि स वियुज (रुध उ अ) पृथक्-कृ।

—होना, क्रि अ, पृथग्भू, विश्लिष् (दि प अ)।

जुदाई, स स्त्री (फा) वियोग पार्थक्यम्।

जुद्ध, स पु (स युद्ध) सग्राम।

जुमा, स पु (अ) शुक्र-भृगु,वार-वासर।

जुरअत, स स्त्री (फा) माहसिक्य, साहस, उत्साह।

जुरमाना, स पु (फा) दम, अर्थदण्ड।

जुर्म, स पु (अ) अपराध, दोष।

जुर्माना, स पु (फा) दे 'जुरमाना'।

—करना, क्रि अ, दण्ड् (चु द्विकर्मक)।

—देना, क्रि स, दण्ड-दम दद् (भ्वा उ अ)।

—मुआफ़ करना, क्रि स, दण्ड-दम क्षम् (भ्वा आ से)।

जुलाब, स पु (अ जुलाब) रेचन, विरेचन उदरशोधन २ रेचक-क, विरेचक-कम्।

—देना, क्रि स, विरिच् (प्रे)।

—लेना, क्रि अ (उदर) विरिच (रु प अ)।

जुलाहा, स पु (फा जौलाह) तन्तुवाय, वय, कुविन्द, तन्त्रवाय, पटकार।

जुल्म, स पु (अ) दे 'ज़ुल्म'।

ज़ुल्फ, स स्त्री (फा) कुटिल-घूर्ण-कुन्तल अलक २ द्विपार्श्वस्था चिकुरा।

ज़ुल्म, स पु (अ) अत्याचार, क्रूर घोर, कर्मन् (न)।

ज़ुल्मत, स स्त्री (अ) अन्धकार तिमिर, तमस् (न) २ तिमिर-अन्धकार,-कालिमन् (पु)-कृष्णिमन् (पु)-श्यामता।

जुल्मी, वि (अ जुल्म>) पापिष्ठ, आततायिन, अत्याचारिन, क्रूर।
जुवा, स पु (हिं जुआ) दे 'जुआ'।
जुवारी, वि (हिं जुआरी) दे० 'जुआरी'।
जुष्ट, वि (स) भुक्तशिष्ट, उच्छिष्ट २ प्रिय इष्ट प्रीत प्रेष्ठ ३ युक्त, अन्वित युत ४ सेवित।
जुस्तजू, स स्त्री (फा) अन्वेषणा गवेषणा मार्गणा।
जुही, स स्त्री (स यूथी) (सफेद) यूथिका, बालपुष्पी, वासन्ती, (पीली) पीत सुवर्ण यूथी हेमयूथिका, कनकप्रभा, हेमपुष्पिका
जूँ, स स्त्री (स यूका) केशटः केशकीट, स्वेदसमवा यूकः-का, षट्पद-दी।
जूआ, स पु (स युग्म) योक्त्र धुर्वी, प्रासग हयानबन्धन, धुर (स्त्री)।
जूआ, स पु, दे 'जुआ'।
जूठ-जूठन, स स्त्री (हिं जूठा) भुक्तशेष, उच्छिष्ट, अवशिष्टम्।
जूठा, वि (स जुष्ट) उच्छिष्ट, भुक्तशेष।
जूड़ा, स पु (स जूट) जूटक केशबन्ध, जटाग्रन्थि।
जूता-जूता, स पु (स युक्त>) पादत्राण, उपानह (स्त्री)।
—मारना, मु, पादत्राणेन तड (चु) २ तिरस्कृत।
—खाना, मु, तिरस्कार लभ् (भ्वा आ अ)।
जूती, स स्त्री, दे 'जूता'।
जूथ, स पु, दे 'यूथ'।
जूनियर, वि (इ) अवर, अधर, अवरपदगान्।
जूही, स स्त्री, दे 'जुही'।
जृम्भा, स स्त्री (स) जृम्भ, जृम्भण, जृम्भिका, जभा, जमका।
जेठ, स पु, दे 'ज्येष्ठ'।
जेठा, स पु (स ज्येष्ठ) प्रथमज, अग्रज।
जेठानी, स स्त्री, दे 'जिठानी'।
जेब, स पु (फा) (चोलकञ्चुकादीनां)कोश ष।
—कतरा, स पु, चिह्नाम, ग्रंथिच्छेदक।
जेर, स स्त्री (स जरायु) उल्ब, कलल।
जेल, स पु (अ) कारा,-गृह-आगार, वन्दि, गृह-शाला।
—खाना, स पु (अ फा) दे 'जेल'।
जेवर, स पु (फा) वि-आ, भूषण, आभरण, अलंकार, अलंकरणम्।
जेहन, स पु (अ) दे 'जिहन'।
जैन, स पु (स) जैनमतावलम्बिन् २ जैन, मत-सम्प्रदाय।
जैनी, स पु (स जैन) दे 'जैन' (१)।
जैसा, वि (स यादृश) यादृश्(श), यत्प्रकारक [जैसी (स्त्री)=यादृशी]।
—का तैसा, मु, पूर्ववत्, यथापूर्वम्।
—चाहिए, मु, यथोचित, यथार्ह, यथायोग्यम्।
जो, सर्व (स य) य (पु) या (स्त्री), यत् (न)।
—कुछ, यत्किञ्चित्।
—कोई, य कश्चित्-कश्चन कोऽपि।
जोंक, जौंक, स स्त्री (स जलौका) जलुका, रक्तपा पायिनी, जलाका, जलजन्तुका।
जोखों, स स्त्री, सकट, विपद् (स्त्री)।
जोग, स पु (स योगक्षेम ?) दे 'योग'।
जोगिया, वि (हिं जोगी) परिव्राजक, योगिसम्बन्धिन्, २ गैरिकरागयुक्त, गैरकाक्त, गैरिकवर्ण।
जोगी, स पु (स योगिन्) दे 'योगी'।
जोगिन, स स्त्री, दे 'योगिनी'।
जोजन, स पु (स योजन) दे 'योजन'।
जोड़, स पु (स जोट) बन्धन, मेलन २ योग, सकल, परिसख्या, पिंड। ३ अग सन्धि, अगग्रन्थि।
जोड़ना, क्रि स (स जोटन) एकत्र कृ, समिल् (प्रे) जुड (भ्वा तु प से) युज् (रुध उ अ), सश्लिष् (प्रे) २ सकल (चु), परिसख्या (अ प अ)।
जोड़ा, स पु (हिं जोडना) युगल, युग्म २ द्वन्द्व, मिथुन ३ उपानद्युगल ४ वेष श।
जोड़ी, स स्त्री (हिं जोड़ा) दे 'जोड़ा' (१ २)।
जोत¹, स स्त्री [स ज्योतिस् (न)] प्रकाश, आभा, द्युति।
जोत², स स्त्री (हिं जोतना) चर्मपट्ट, वरत्रा, वध्री।
जोतना, क्रि स (स युक्त>) योक्त्रयति (ना धा), युज् (चु) २ कृष् (भ्वा प अ), हल् (भ्वा प से)।
जोतिष, स पु, दे 'ज्योतिष'।

जोतिषी, स पु, दे 'ज्योतिषी'।

जोधा, स पु (स योद्धृ) योध, भट।

ज़ोफ़, स पु (अ) दुर्बलता निबलता।

जोबन, स पु (स यौवन) तारुण्यम्।

ज़ोम, स पु (अ) गर्व, दर्प अहमान, अहकार।

ज़ोर, स पु (फा) बल, शक्ति २ वश, अधिकार ३ वृद्धि-समृद्धि (स्त्री) ४ वेग, आवेश ५ आश्रय ६ परिश्रम ७ व्यायाम।

ज़ोरावर, वि (फा) बलिष्ठ शक्तिशालिन्।

ज़ोरदार, वि (फा) प्रबल, बलवत् २ अवाच्य, अखण्ड्य।

ज़ोराज़ोरी, अव्य (फा ज़ोर >) बलात्, हठात्, प्रसभ, प्रसह्य (सब अ य०)।

जोरू, स स्त्री (हिं जोडा) भार्या, पत्नी, गेहिनी।

जोलाहा, स पु, दे 'जुलाहा'।

जोश, स पु (फा) उत्तेजना उत्साह, व्यग्रता, चण्डता, मनोवेग, आवेश।

—देना, क्रि स, प्रोत्सह (प्रे), उत्तिज (प्रे) २ पच (भ्वा प अ), क्वथ् (भ्वा प से)।

जोशाँदा, स पु (फा) क्वाथ, कषाय, निर्यास।

जोशीला, वि, व्यग्र उग्र उत्साहिन्, उत्साहवत्, प्रचण्ड।

जोहड़, स पु (देश) जलाशय ह्रद, पल्वलम्।

जौ, स पु (स यव) प्रवेट दीर्घ सित, शूक, अश्वप्रिय, महाकुस।

जौहर, स पु (अ) रत्न, मणि (पु, कभी स्त्री) २ सार, तत्त्वम्।

जौहरी, स पु (फा) मणिकार, रत्नकार २ रत्नपरीक्षक।

ज्ञातव्य, वि (स) ज्ञेय, अवगन्तव्य, बोद्धव्य।

ज्ञाता, वि (स ज्ञातृ) वेत्तृ ज्ञानिन्, बोद्धृ।

ज्ञाति, स पु (स) सगोत्र, बन्धु, बान्धव २ व, स्वजन, सकुल्य, अशक, दायाद।

ज्ञान, स पु (सं न) बोध, प्रतीति (स्त्री)।

ज्या, स स्त्री (स) मौर्वी, शिञ्जिनी, गुण।

ज्यादती, स स्त्री (फा) आधिक्य, प्राचुर्य, अधिकता २, अत्याचार।

ज्यादा, वि (फा) अधिक, महत्, बहु।

—तर, वि बहुसख्याक, अधिकतर, भूयस।

ज्येष्ठ स पु (स) अग्रज, प्रथमज २ भर्तृ ज्यायान् भ्रातृ ३ ज्येष्ठ (मास)। वि, वृद्ध २ श्रेष्ठ।

ज्यों, क्रि वि (स य + इव यथा,) येन प्रकारेण।

—का त्यों, मु, यथापूर्वम्।

—त्यों, मु, यथा तथा।

ज्योति, स स्त्री [स ज्योतिस् (न)] प्रकाश, प्रभा, द्युति (स्त्री)।

ज्योतिष, स पु (स न) ज्योतिर्विद्या, ज्योति शास्त्र, नक्षत्रविद्या।

ज्योतिषी, स पु (स ज्योतिविन्) दैवज्ञ, ज्योतिर्विद्, ज्योतिषिक।

ज्योत्स्ना, स स्त्री (स) चन्द्रिका, कौमुदी।

ज्वर, स पु (स) ज्वरि, ज्वरा जूर्ति (स्त्री), महागद, तापक।

थोड़ी थोड़ी देर बाद होनेवाला—, स्वल्पविरामज्वर।

दौरेवाला—, पौन पुनिकज्वर।

प्रतिदिन होनेवाला—, अन्येद्युष्कज्वर।

रुक रुककर होनेवाला—, सविरामज्वर।

सदा—, रक्तदुष्टि (स्त्री)।

हर तीसरे दिन होनेवाला—, तृतीयकज्वर।

हर चौथे दिन होनेवाला—, चतुर्थकज्वर।

ज्वलत, वि (स ज्वलत्) उद्दीप्त, प्रकाशित।

ज्वलन, स पु (स न) दाह, ताप २, अग्नि ३ ज्वाला।

ज्वार, स स्त्री (स यावनाल) अन्नविशेष, वृत्ततण्डुल, क्षेत्रेक्षु।

ज्वार, स पु (देश) वेलावृद्धि (स्त्री)।

—भाटा, स पुं, वेलाया वृद्धिक्षयौ (द्वि)।

ज्वाला, स स्त्री (स) शिखा, अर्चि (न)।

—मुखी, स पुं (स) अग्निपर्वत।

झ

झ, देवनागरीवर्णमालाया नवमो व्यञ्जनवर्ण, झकार ।

झ, झकार, स पु स्त्री (अनु) झणत्कार, झणझणध्वनि शिञ्जितम् ।

झखाड़, स पु (हि 'झाड़' का अनु) कट गुल्म स कण्टकस्तम्ब ।

झखर, स स्त्री, (अनु) कृच्छ्रम् , आयास क्लेश वैषम्यम्

झनझनाना, क्रि अ (अनु) झणझणायते (ना धा) झणझणध्वनि उत्पद् (प्रे) ।

झनझनाहट, स स्त्री (अनु) दे 'झकार' ।

झञ्झा, स स्त्री (स) झञ्झावात ,सवृष्टिको वात ।

झंझोड़ना क्रि स (स झञ्झनम्) क्षुभ (प्र), सरभस कप (प्र) ।

झड, स पु (हि जडा) शिशो अमुण्डिता केशा , सहज-जन्मज,-केशा -कचा (पु बहु) ।

झंडा, स पु (हि झण्डी) ध्वज , केतु , केतनम् ।

—बरदार, स पु पताकिन् , ध्वजिन् , वैजयन्तिक , ध्वजपताका धारिन् वाहिन् ।

—गाड़ना, मु , स्वायत्ती आत्मसात् कृ, अभि परा, भू ।

झंडी, स स्त्री (स जयन्ती) वैजयन्ती, पताका, दे 'झडा' ।

झडूला, वि (हि झड) अमुण्डित, अलुप्त-अकृत्त अच्छिन्न, केश मूर्द्धज ।

झप, स पु (स) झपा प्लुत-ति (स्त्री) २ अश्वगलभूषणम् ।

झक, स स्त्री (अनु) आवेश , अभिनिवेश , आग्रह , निर्बन्ध २ प्रलाप असम्बद्धभाषण, प्रजल्प ।

—मारना, क्रि स ,प्रलप् प्रजल्प् (भ्वा प से), निर्विवेक भाष (भ्वा आ से) ।

झकझक, स स्त्री (अनु) दे 'झक' ।

झकना, क्रि अ , प्रलप् प्रजल्प् (भ्वा प से), विवद (भ्वा आ से) ।

झक्की, स पु (हि झक) वावदूक , प्र, जल्पक , वाचाल २ हठाग्रहिन् ।

झख, स स्त्री (अनु) दे 'झक' ।

झगड़ना, क्रि अ (हि झकझक) विवद (भ्वा आ से) विप्रलप् (भ्वा प से), कलह कृ, कलहायते (ना धा) ।

झगड़ा, स पु (हि झगडना) वाग्युद्ध, कलि , कलह , विवाद ।

झगड़ालू-डू, वि (हि झगडा) विवादिन् , कलहप्रिय ।

झट, क्रि वि (स झटिति) तत्क्षण, अनुपद, शीघ्रम् ।

—पट, क्रि वि , तत्कालमेव, सत्वरम् ।

झटकना, क्रि स (हि झट) (सहसा) वेप्-कप (प्रे) २ छलेन बलेन वा अपहृ (भ्वा प अ) ।

झटका, स पु (हि झटकना) हस्तादिकेन प्रचालन प्रेरण प्रणोदन, क्षपत,-आघात प्रहार २ सहसा वध हननम् ।

झड़, स स्त्री (हि झडना) दे 'झडी' ।

झड़झड़ाना, क्रि स (अनु) दे 'झझोडना' ।

झड़ना, क्रि अ (स झरणम्>) पत् क्षर् (भ्वा प से) शॄ (कर्म) २ धाव् निर्णिज् (कर्म) ।

झड़प, स स्त्री (अनु) कलह २ क्रोध ३ आवेश ।

झड़बेरी, स स्त्री (हि झाड+बेरी), (फल) वन्यबदरम् (वृक्ष) भूबदरी, वन्यबदर , शबराहार ।

झड़ी, स स्त्री (हि झडना) सतत क्षरण पतन २ सततवृष्टि (स्त्री) ।

झड़वाना, क्रि स (झाडना) शुध्-मृज् (प्रे) २ अपवह् (प्र) ब 'झाडना के (प्रे) रूप ।

झड़ाना, क्रि स (झाडना) दे 'झडवाना' ।

झपक, स स्त्री (हि झपकना) नेत्रनिमीलन, पक्ष्मसकोच , निमेष , तन्द्रा, ईषन्निद्रा २ पल, क्षण-णम् ।

झपकना, क्रि स (अनु झप्) निमील् (भ्वा प से) नेत्र सकुच (भ्वा प से), निमिष् (तु प से) । क्रि अ , निमील् , निमिष्

२ अल्प निद्रा (अ प अ)-स्वप् (अ प अ)।

झपकाना, क्रि स, दे 'झपकना' क्रि स ।

झपट, सं स्त्री (हिं झपटना) आच्छेद आकस्मिकग्रहण २ सहसाक्रमण, आकस्मिक प्रहार ।

झपटना, क्रि स अ (स झप >) आच्छिद् (रु प अ), सहसा आ क्रुप (भ्वा प अ) २ आक्रम् (दि प से)।

झपट्टा, स पु, } दे 'झपट'।
झपेट, स स्त्री, }

झबरा, वि (अनु) सघनकेश, लोमश दीर्घलोमन् ।

झबरीला, वि, दे 'झबरा'।

झमक, स स्त्री (हिं चमक) द्युति (स्त्री) आभा, कान्ति (स्त्री)।

झमझम, } स स्त्री (अनु) धारासार,
झमाझम }
धारापात, झञ्झा २ झणत्कार, झणझणशब्द ।

झमेला, स पु (अनु झांव) दे 'झगट'।

झरना, क्रि अ (स झरण >) क्षर् (भ्वा प से), स्रु (भ्वा प अ), प्रपत् (भ्वा प से)। स पु, प्रपात, स्रोतस (न) निझर, उत्स ।

झरोखा, सं पु (अनु झरझर + हिं गोखा) गवाक्ष, वातायनम् ।

झलक, स स्त्री (स झल्लिका) आभा, द्युति (स्त्री), प्रकाश २ प्रतिबिम्ब व, प्रतिच्छाया, प्रतिफलम् ।

झलकना, क्रि अ (हिं झलक) प्रकाश विद्युत् (भ्वा आ से) २ प्रतिफल (भ्वा प से) सक्रान्त प्रतिबिंबित प्रतिफलित (वि) भू, प्रतिमा (अ प अ)।

झलकाना, क्रि स, व 'झलकाना' के प्र रूप ।

झलझलाना, क्रि अ, दे 'चमकना' क्रि स, दे 'चमकाना'।

झलझलाहट, स स्त्री, दे 'चमक'।

झलना, क्रि स (हिं झलझल) वीज् (चु), व्यजन घूर्ण् (प्रे)।

झलमलाना, क्रि अ (अनु झलमल) सकम्प प्रकाश (भ्वा आ से)।

झलवाना, क्रि प्रे, व 'झलना' के प्रे रूप ।

झल्लाना, क्रि अ (हिं झल = क्रोध) प्रकुप् (दि प से), क्रुध (दि प अ)। क्रि स, व उक्त धातुओं के प्रे रूप ।

झष, स पु (स) मत्स्य, मीन ।

—केतु, स पु (स) काम, मार, रति पति, मनोज ।

झाई, स स्त्री (स छाया) प्रतिबिम्ब -म्ब, प्रति,-च्छाया फल-रूप २ अधकार २ छलम् ।

झांकना, क्रि अ (स झष अथवा अध्यक्ष) जालमार्गेण दृश् (भ्वा प अ) २ निगू निरूप (चु)।

झांकी, स स्त्री (हिं झांकना) ईषद् अभि व्यक्ति (स्त्री) २ ईक्षण, निरूपण ३ दृश्य ४ गवाक्ष ।

झांझ, स स्त्री (अनु झनझन) झल्लक, झल्लरी, कांस्यकरतालम् ।

झाँझन, स स्त्री (अनु) नूपुर -रम् ।

झाँझरी, स स्त्री दे 'झाँझ' तथा 'झाँझन'।

झावा, स पु (स झामकम्) दग्धेष्टका २ क्रोध ३ कुचेष्टा ।

झांसा, स पु (स अध्यास >) छल कपट, प्रतारणा ।

—देना, झांसना, क्रि स, वञ्च (चु), प्रतृ (प्रे), छलयति (ना धा)।

झाऊ, स पु (स झावु) पिचुल, झावु क्षुपभेद ।

झाग स पु (हिं गाज) फेन, डिंडीर, अम्बुकफ, मड डम् ।

झाड़, स पु (स झाट >) कण्टगुल्म म, कण्टस्तम्ब । (झाडी स्त्री)।

—झंखाड़, स पु, गोक्षुर, क्षुपकगुल्म ।

झूड, स पु, गुल्मगहन, निविडस्तम्ब ।

—पोंछ, स स्त्री, मार्जन, शोधनम् ।

—फानूस, स पु, काचदीपिका ।

—फूँक, स स्त्री यत्रमत्रम्, मत्रयोग

झाड़न, स पु (हिं झाड़ना) नक्तक, मार्जनपट ।

झाड़ना, क्रि स (हिं झडना) रेणु अपमृज् (अ प वे), निर्धूलीकृ।

—पोंछना, क्रि स, प्रोञ्छ (भ्वा प से)।

झाड़ा, सं पु (हिं झाड़ना) वस्त्र-वसन, अन्वेषणा-निरीक्षा २ गूथ -थ, मल, पुरीषम् ।

झाड़ू, सं स्त्री (हिं झाड़ना) समार्जनी, शोधनी ।

—देना क्रि स, सम्मृज (अ प वे) शुध (प)।

झामा, सं पु (स झामक) दग्धेष्टका ।

झालर, सं स्त्री (स झल्लरी) दशा (स्त्री बहु), वस्त्रदशा (स्त्री पु बहु) वस्त्रप्रान्तः ।

—दार, वि, झल्लरीयुक्त प्रान्तोपेत ।

झिझक, सं स्त्री (हिं झिझकना) आशङ्का, विकल्पः सन्देह ।

झिझकना क्रि अ (अनु) आशङ्क-विकल्प (भ्वा प से), दोलायते-चिरायते (ना धा) शङ्क (भ्वा आ से)।

झिड़क सं स्त्री (हिं झिड़कना) भर्त्सन आक्रोशः अधिक्षेपः ।

झिड़कना क्रि स (अनु) आक्रुश् (भ्वा प अ) अधिक्षिप् (तु प अ) निर्भर्त्स (चु आ से)।

झिड़की, सं स्त्री (हिं झिड़कना) दे 'झिड़क'।

झिलमिल, सं स्त्री (अनु) प्रकम्पमानः प्रकाशः ।

झिल्ली[1], सं स्त्री (स) चिल्ली, झिरी, झिरिका, झिल्लिका, भृङ्गारी ।

झिल्ली[2], सं स्त्री (स चैल >) सूक्ष्म त्वच (स्त्री)-चर्मन् (न) २ जरायु-, उल्बम् ।

झींकना, झींखना, क्रि अ (हिं खीजना) अनुशुच (भ्वा प से), अनुतप् (दि आ अ), पश्चात्ताप कृ । सं पु-, पश्चात्तापः, विप्रतीसारः, अनुतापः, अनुशयः ।

झींगुर, सं पु (अनु-झीं-झीं) दे 'झिल्ली'(१) ।

झीना, वि (स जीर्ण >) सूक्ष्म, विरल, तनु ।

झील, सं स्त्री (स क्षीर >) सरोवरः, जलाशय सरसी सरस (न)।

झीवर, सं पु (स धीवर) नाविकः, औडुपिक २ कैवर्तः, मत्स्यजीवी ।

झुंझलाना, क्रि अ (अनु) कुप (दि प से), क्रुध (दि प अ)।

झुंझलाहट, सं स्त्री (हिं झुंझलाना) कोपः, क्रोध, रोष, अमर्ष ।

झुंट, सं पुं (स) अस्कन्धवृक्षः, क्षुद्रकाण्डतरु ।

झुंड, सं पु (स झुण्ट >) समुदाय, समूह, गणः, वृन्दः, कदम्बकम् ।

झुकना, क्रि अ (स युज् >) अव, नम् (भ्वा प अ), नम्रीभू २ वक्रीभू ।

झुकाना, क्रि. स (हिं झुकना) नम् (प्रे), वक्री कृ ।

झुकवाना, क्रि प्रे (हिं झुकना) दे 'झुकाना'।

झुकाव, सं पु (हिं झुकना) प्रवणता, नतिः (स्त्री) २ वक्रता ३ प्रवृत्ति (स्त्री)।

झुकावट, सं स्त्री (हिं झुकना) दे 'झुकाव'।

झुटपुटा, सं पु (अनु झुटपुट) सायंकालः, अहोरात्रसंयोगसमय सन्ध्या ।

झुठलाना, झुठलाना, झुठाना, क्रि स (हिं झूठ) मिथ्यावादित्वं प्रमाणयति (ना धा), निराकृ, प्रत्याख्या (अ प अ) ।

झुठाई, सं स्त्री (हिं झूठ) असत्यता, अनृतत्व, अलीकता, मिथ्यात्वम् ।

झुनझुन, सं स्त्री (अनु) झात्कारः, झाङ्कारः, झाङ्कारध्वनि (पु)।

झुनझुना, सं पु (अनु)• झुनझुनक ।

झुनझुनी, सं स्त्री (अनु) •झुनझुनी, अङ्गेषु जाड्यानुभूति (स्त्री)।

झुमका, सं पु (हिं झूमना) ताडपत्रम् ।

झुरमट, झुरमुट, सं पु (स झुट >) समुदाय, समूह २ स्तम्ब, गुल्म ।

झुर्री, (हिं झुरना) वली-लि (स्त्री.), चर्मसंकोच २ पुट, भङ्ग ।

झुलसना, क्रि अ (स ज्वलन) ईषद् दह् प्लुष् (कर्म)।

झुलसाना, क्रि. स., ईषद् दह् (भ्वा प अ), प्लुष (भ्वा प से)।

झुलाना, क्रि स (हिं झूलना) प्रेङ्ख (प्रे) इतस्तत चल (प्रे)।

झूट, झूठ, सं पु (स अयुक्त) असत्य, अनृत, अलीक मिथ्यावचन, असत्यभाषणं। वि-, मिथ्या-मृषा-(समासके आदिमें) असत्य, अतथ्य, वितथ ।

झूटा, झूठा, वि (हिं झूठ) मिथ्या असत्य, असत्यवादिन् मिथ्याभाषिन् ।

झूम, सं स्त्री (हिं झूमना) तन्द्रा, आलस्य २ आन्दोलन, प्रेङ्खणम् ।

झूमना, क्रि. अ. (स भ्रम) अथवा 'घूम'का (अनु) इतस्तत चल् (भ्वा प से)।

झूल, सं स्त्री (हिं झूलना) कुथ-थः-था, प्रवेणी-णिः (स्त्री.), परिस्तोमः, रायना ।

झूलना, कि अ (सं दोलन)दोलायते(ना धा), प्रेंख्(भ्वा प से)।
झूला, सं पु (स दोला-स्त्रि टिका) प्रेंखा, हिंदोल, आन्दोल।
झेलना, कि स (स क्ष्वेलन >) सह् (भ्वा आ से), कृष् (दि उ से)।
झोंकना, कि स (हिं झुकना) अग्नौ क्षिप (तु उ अ) २ प्रेर् (चु) प्रणुद् (प्रे)।
झोंक देना, कि स., दे 'झोंकना' (२)।
झोंका, सं पु (हिं झोंकना) वायुवेग, पवनप्रहार, वातगुल्म।
झोंपड़ा, स पु (हिं छोपना?) उटज, कुटीर २ कुटी, कुटीरकः, पर्णशाला।
झोल, स पु (हिं झूलना) शैथिल्य, सकोच २ सवरण, व्यवधान ३ रञ्जनं, लेपनम्।
—फेरना, लिप् (तु उ अ), रञ्ज (प्रे)।
झोला, स पु (हिं झूलना) पुस्तक, प्रसेव कोष (झोली स्त्री = स्युपुटः ह)।

ञ

ञ, देवनागरीवर्णमालाया दशमो व्यञ्जनवर्णं, ञकार।

ट

ट, देवनागरीवर्णमालाया एकादशो व्यञ्जनवर्णं, टकार।
टक, स पु (स) भावदारण, पाषाणभेदन २ प्रखन, खनित्री ३ परशु, कुठार ४ खड्ग ५ चतुर्माषकात्मक चतुर्विंशतिरक्तिकात्मको वा तोलभेद ६ क्रोध ७ अभिमान ८ जघा ९ खनित्र १० कोष, निधि ११ मुद्रा, नाणकम्।
टंकना, कि अ (स टंकण) व 'टाँकना' के कर्म के रूप।
टकवाई, सं स्त्री (हिं टकवाना) १-३ टकन-सीवन-लेखन,-भृत्या-भृति (स्त्री)।
टकवाना, कि प्रे, व 'टाँकना' के प्रे रूप।
टका, सं स्त्री (सं) जघा, प्रसृता।
टँकाई, स स्त्री (हिं टाँकना) दे 'टकवाई'।
टँकाना, कि प्रे, दे 'टकवाना'।
टकार, स स्त्री (सं पुं) ज्या-मौर्वी,-घोष शब्द, शिञ्जिनीशिञ्जित २ टणत्कार, रणित ३ झण झण, रणित-निनद।
टकारना, कि स (स टंकार >) ज्यां धुव् (चु), मौर्वी आस्फल् (प्रे) टकारयति (ना धा)।
टकी, सं स्त्री (अ टैंक) तोयाधार, वापिका २ द्रोणी-णि (स्त्री)।
टग, स पुं (सं पुं न) भावदारण, पाषाण भेदन २ परशु ३ चतुर्मासात्मक तोलभेद ४ दे 'टाँग'।
टँगना, कि. अ, दे 'लटकना'।
टटा, सं पु (अनु टन टन) उपद्रव, कलह २ प्रपंच, आडंबर।
टक, स स्त्री (स टक - बाँधना >) अनिमेष बद्ध-स्थिर,-दृष्टि (स्त्री)।
—बाँधना, मु, अनिमि(मे)षनयन (वि) दृश् (भ्वा प अ)।
—लगाना, मु प्रतीक्ष् (भ्वा आ से)।
टकटकी, स स्त्री, दे 'टक'।
—बाँधना, मु, बद्ध-स्थिर,-दृष्ट्या अवलोक् (चु)।
टकराना, कि अ (हिं टक्कर) सघट्ट् (भ्वा आ से), अभि-आ प्रति, हन् (अ प अ), अभि-स-पत् (भ्वा प से) कि. स उक्त धातुओं के प्रे रूप।
टकसाल, स स्त्री (स टकशाला), मुद्रांकण शाला।
टकसाली लिया, स पुं (हिं टकसाल) टक अध्यक्ष पति (पु), नैष्किकः। वि., टक शालासबन्धिन् २ शुद्ध, निर्दोष ३ सर्वसम्मत ४ प्रामाणिक, परीक्षित।
टका, स पु (स टक >) कर्षार्ध पणयुगल २ रूप्य प्यकं, कार्षिक, टक ३ धनम्।
—सा जवाब देना, मु, नहीति नि प्रति-निषिध् (भ्वा. प से) प्रत्याख्या (अ प अ)।
—सा मुँह लेकर रह जाना, मु, त्रप् (भ्वा आ से), लज्ज् (तु आ से)।
टकोर, सं स्त्री. (स टकारः) दे 'टकार' (२), २ आघात, प्रहार ३ पटहप्रहार ४ दुदुभि-

पटह, ध्वनि° (पु) ५ प्र, स्वेदन, (उष्ण-जलादिना) सेक ।

टकोरना, क्रि स (हिं टकोर) भेरीं आहन् (अ प अ) २ प्रह (भ्वा प अ) ३ (उष्णजलादिभि) सिच (तु प अ), लिप् (तु प अ), प्र, स्विद (प्रे)।

टक्कर, सं स्त्री (अनु टक) सघट्ट, समर्द, ममा प्रति, घात २ विग्रह°, सग्राम, सप्रहार ३ हानि (स्त्री) ४ मस्तक शीर्ष,-आघात ।

—का, मु, सम, ममान, तुल्य ।

—खाना, मु, दे 'टकराना' क्रि अ ।

—मारना, मु, व 'टकराना' के प्रे रूप २ विरुध (रु उ अ) ३ यत (भ्वा आ मे)।

टखना, सं पु (सं टक = टाग>) गुल्फ, घुटिक, घुटी, घुण्ट, सुटक ।

टटोल, सं स्त्री (हिं टटोलना) स्पर्श, सम्पर्क, परामर्श, स्पर्शेनो बोध ।

टटोलना, क्रि स (स त्वक्+तोलन>) स्पर्शेन परीक्ष (भ्वा आ से) निरूप (चु), स्पृश् परामृश (तु प अ) २ अधकारे अन्विष् (दि प से) निरूप् परामृश।

टट्टी, सं स्त्री (सं स्थात्री ?) (वशतृणादि रचित) कपा(वा)ट ट टी, २ प्रतिसीरा, तिरस्करिणी ३ सूक्ष्मभित्ति (स्त्री) ४ शौच कूप, मलालय ५ मल, उच्चार ।

—जाना, मु, पुरीषोत्सर्गाय गम् ।

—की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना, मु, प्रच्छन्न प्रह (भ्वा प अ), निभृत पाप माचर् (भ्वा प से)।

टट्टू, सं पु (अनु) क्षुद्रघोटक अश्वशावक ।

टन, सं पु (अनु) घटाध्वनि° (पु), टण त्कार, टणिति ।

—टन, सं पु, टणटण, निनद रणित, टणटण त्कार कृति (स्त्री)।

टन, स पु (अ) अष्टाविंशतिमणकल्प, तोल भेद, °त्नम् ।

टनकना, क्रि अ (अनु) टणटणायते (ना धा), टणकार कृ २ घर्मेण शिर पीड् (कर्म)।

टनटनाना, क्रि स (अनु) घटां नद्-वद् (प्रे)। क्रि अ, दे 'टनकना'।

टनाटन, सं स्त्री (अनु) निरन्तर टणटण त्कार ।

टप[1], स पु (हिं तोपना = ढांकना) प्रवहण दीनाम् आच्छादन-आवरण-छत्रम् ।

टप[2], सं पु (अ टब) द्रोणी णि (स्त्री)।

टप[3], स स्त्री (अनु) बिंदुपातध्वनि (पु), टप् इति शब्द ।

—से, मु झटिति, आशु, शीघ्रम् ।

टपक, स स्त्री, दे 'टपकाव'।

टपकना, क्रि अ (अनु टप) कणश बिंदु क्रमेण क्षर् गल् (भ्वा प से) स्नु (भ्वा प अ) स्यन्द् (भ्वा आ से) २ (फलादि) झटिति नि-अव पत् (भ्वा प से) ३ परिस्रु, क्षर् ४ दे 'टीसना'।

टपका, स पु (हिं टपकना) स्वय पतित पक्वफलम् ।

—टपकी, स स्त्री, शीकर,-वर्ष पात २ सतत फलपात ।

टपकाना, क्रि स, व 'टपकना' के प्रे रूप ।

टपकाव, स पु (हिं टपकना), (कणश) क्षरण-गलन-स्यन्दन-स्राव ।

टपना, क्रि, अ, दे 'कूदना'।

टपाटप, क्रि वि (अनु) सतत, निरतर, अविरतम् ।

टप्पा, सं पु (अनु) प्लव, प्लवन, प्लुत ति (स्त्री), झप पा २ गीतिकाभेद ।

—खाना, क्रि अ, उत्पत् (भ्वा प से), उत्प्लु (भ्वा आ अ)।

टब, सं पु (अ) दे 'टप'[2]।

टब्बर, स पु, दे 'कुटुम्ब'।

टमकी, सं स्त्री (अनु॰ टमक) डिंडिम°, लघुपटह ।

टमटम, सं स्त्री (अ टैंडम) अश्वयानभेद, °टमटमम् ।

टमाटर, सं पु (अ टमैटो) आग्लीय-रक्त, वृन्ताकम् ।

टर, स स्त्री (अनु) टरशब्द°, अप्रिय-कर्कश कर्णकटु, शब्द २ भेकरव ३ दर्पोक्ति° (स्त्री) ४ दुराग्रह, प्रतीपता ५ तुच्छवचनम् ।

—टर, सं स्त्री, वृथालाप, प्र-,जल्प पित २ भेकरुतम् ।

—टर करना, क्रि अ, दे 'टरटराना'।

टरकना, क्रि अ, दे 'टलना' तथा 'टरटराना'।
टरकाना, क्रि स, दे 'टालना'।
टरटराना, क्रि अ (अनु टरटर) प्रलप् प्रजल्प् (भ्वा प से) २ अविनयेन मू (अ उ से) टरटरायते (ना धा)।
टर्रा, वि (अनु टरटर) वावदूक, वाचाल इ २ धृष्ट, निर्लज्ज।
टर्राना, क्रि अ (अनु टर) साभिमान वद् (भ्वा प से) धार्ष्ट्येन मू (अ उ से), कटु वद्।
टलना, क्रि अ (स टलन >) विचल् (भ्वा प से), अपसृ (भ्वा प अ) २ स्थानान्तर या (अ प अ) प्रस्था (भ्वा आ अ) ३ वि,नश् (दि प वे), लुप् (दि प अ) ४ व्याक्षिप् (कर्म), विलम्ब (भ्वा आ से) ५ अन्यथा भू ६ (समय) व्यति इ (अ प अ), गम्।
टस, स स्त्री (अनु) गुरुद्रव्यसरणशब्द, टस् इति शब्द।
—से मस न होना, मु, ईषदपि न विचल्।
टसक, सं स्त्री (हिं टसकना) दे 'टीस'।
टसकना, क्रि अ (हिं टस) अप, गम् स (भ्वा प अ), अपया (अ प अ) २ दे 'टीसना'।
टसकाना, क्रि स, व 'टसकना' के प्रे रूप।
टसर, स पु (स त्रसर >) क्षौमभेद, *टसरम्।
टसर-मसर, स पु (हिं टस+मस) विलंब, व्याक्षेप।
टसुआ, स पु (हिं अँसुआ) मिथ्याश्रु (न), वितथवाष्प।
टहना, स पु (स तनु >) विटप, शाखा।
टहनी, सं स्त्री (हिं टहना) तनु-सूक्ष्म, विटप-शाखा।
टहल, स स्त्री, दे 'सेवा'।
टहलना, क्रि. अ (सं तल+चलन ?) परि, अट् भ्रम् (भ्वा प से), विहृ (भ्वा प अ), इतस्ततः चर् (भ्वा प से), परिक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ, अ)।
टहलनी, सं. स्त्री, दे 'नौकरानी'।
टहलाना, क्रि स, व 'टहलना' के प्रे रूप।
टहलुआ-वा, **टहलू**, स पु, दे 'नौकर'।
टहलुई, स स्त्री, दे 'नौकरानी'।
टाँक¹, सं स्त्री (स टक) चतुर्माषकात्मक तौलभेद २ अर्घगणना, मूल्यनिरूपणम्।
टाँक², स स्त्री (हिं टाँकना) लेख, लिखन, लिपि (स्त्री) २ दे 'निब'।
टाँकना, क्रि स (स टङ्कन) टंक् (भ्वा प से, चु), कीलादिभि सधा (जु उ अ)-सयुज् (रु उ अ) २ सिव (दि प से), वे (भ्वा उ अ) ३ पादुका सधा ४ मश्लिष् (प्रे) सयुज् ५ पत्रिकादिषु लिख (तु प से) ६ शिलादीनि दन्तुरयति (ना धा)।
टाँका, स पु (हिं टाँकना) सधायक-मयोजक,-कील शकु २ सी(से)वन, अंश भाग ३ सी(से)वन, स्यूति (स्त्री) ४ पट वस्त्र,-खड ५ टकन, सधायक, धातु ६ व्रणसेवनम्।
टाँकी, सं स्त्री (सं टक) तक्षणी, व्रश्चन २ खर्बूजादिषु कृत छिद्र ३ दे 'टाँका'।
टाग, स स्त्री (स टगा) टक कवा जघा, प्रसृता, पाद।
—अड़ाना, मु, परकार्याणि चंच (मु प से, चु आ से)-निरूप् (चु)।
—तले से निकलना, मु, स्वपराजय स्वीकृ।
—पसार कर सोना, मु, नि शक निर्भय स्वप् (अ प अ)-शी (अ आ से) २ सानन्द जीवन या (प्र)।
टाँगना, क्रि स, दे, 'लटकाना'।
टाँगा, स पु (हिं टाँगना) अश्ववाहनभेद।
टाँगी, स स्त्री, दे 'कुल्हाड़ी'।
टाँच, सं स्त्री (हिं टाँची) कार्यबाधक,-उक्ति, (स्त्री)-कथनम्।
टाँचना, क्रि स, दे 'टाँकना'।
टाँड़, स स्त्री [स स्थाणु (पु) >] मच २ दे 'परछत्ती'।
टाँयटाँय, स स्त्री (अनु) कर्कश कटु,-शब्द ध्वनि (पु) २ प्रलाप, प्र,जल्प।
—फिस, मु, निष्फल आडंबर, व्यर्थ प्रयास।
टाइप, सं पु (अं) मुद्राक्षर २. टंकणयंत्रम्।

टाइफस बुखार, स पु (अ+अ) मोहज्वर', •यूकाज्वर ।
टाट, स पु (स नतु >) शाण पट वस्त्र शाण वरासि सि (पु)।
टाप स स्त्री (अनु) अश्व-खुर खुर शफ़ः शफम् २ अश्वपादशब्द' ।
टापना, क्रि अ (हिं टाप) खुरेण अभिहन् (अ प अ)-विलिख (तु प से) २ अधीर व्यग्र (वि) भू ३ व्यर्थ परिभ्रम् (भ्वा प से) ४ दे 'कूदना' ।
टापू, स पु, दे 'द्वीप' ।
टारना, क्रि स, दे 'टालना' ।
टारपीडो, स पु (अ) अन्तर्जलाभिनालिका अस्त्रभेद', •तारपीडु' ।
टार्च, स स्त्री (अ) विद्युज्ज्योतिर्नी ।
टाल[1], स स्त्री (स अट्टाल >) चय', राशि (पु), वल्लिर, चिति (स्त्री) २ (काष्ठ दीना) बृहद् आपण विपणि (स्त्री)।
टाल[2], स स्त्री (हिं टालना) अप-व्यप-देश, छलेन परिहरण, निह्नव ।
—टूल, —मटा(टू टो)ल, } स स्त्री, अप नि, ह्नव' अप-व्यप-देश, विलम्ब, व्याक्षेप' ।
—करना, क्रि अ, अनिपद्य (प्र) विलम्ब् (तु प अ) व्याक्षिप (तु प अ)।
टालना, क्रि स (हिं टलना) वकोक्त्या छलेन परिह (भ्वा प अ), अप-व्यप दिश (तु प अ), अप नि ह्नु (अ आ अ) २ व 'टलना' (१६) के प्र रूप ।
टायर, स पु (अ) (चक्र—) वलय यम् ।
टिंचर, स पु (अ टिंकचर) कषाय', निर्यास, फाण्ट ।
टिंडा, स पु (स टिंडिश) रोमशफल', टिंडिश, डिंडिश ।
टिकट, स पु (अ) अनुज्ञा निर्देश प्रवेश, पत्रकम् ।
टिकटिकी[1], स स्त्री, दे 'टकटकी' ।
टिकटिकी[2], स स्त्री, दे 'टिकठी' ।
टिकटी, स स्त्री (हिं तीन+काठ) त्रिकाष्ठी, २ त्रिपादी ।
टिकना, क्रि अ (सं स्थित+कृ >) वस् स्था (भ्वा प अ), वृत् (भ्वा आ. से) २ विरम् (भ्वा प अ) अवस्था (भ्वा आ अ)।
टिकली स स्त्री (हिं टीका) धातुतारा चक्रकम् ।
टिक्स, स पु (अ टैक्स) कर' राजस्व, शुल्क कर बलि (पु)।
टिकस, स पु, दे 'टिकट' ।
टिकाऊ, वि (हिं टिकना) चिर स्थायिन्, दृढ, ध्रुव, स्थिर, अक्षय ।
टिकाना, क्रि स व 'टिकना' के प्रे रूप ।
टिकाव, स पु (हिं टिकना) स्थिरता, चिरस्थायिता २ स्थिति' (स्त्री) विराम ३ दे 'पड़ाव' ।
टिकिया, स स्त्री (स वटिका) चक्रिका वटी, २ अपूप, पप, पिष्टक ।
टिकुली, स स्त्री, दे 'टिकली' ।
टिकैत, स पु (हिं टीका) दे 'युवराज' ।
टिक्कड़, स पु (हिं टिकिया) स्थूल बृहद, पूप ।
टिक्का, स पु (देश) दे 'टीका' ।
टिक्की, स स्त्री, दे 'टिकिया' ।
टिघलना, क्रि अ, दे 'पिघलना' ।
टिचन, वि (अ अटेन्शन) सज्ज, सन्नद्ध, उद्युक्त २ सिद्ध, उपक्लृप्त, आयोजित ।
टिटकारना, क्रि स (अनु) (अश्वादीन्) सटिकटिकशब्द प्रोत्सह् प्रणुद् (प्रे)।
टिटिह, हा, हरा, स पु (स टिट्टिभ') टिट्टिभक, टीटिभक, टिटिभ' ।
टिटिहरी, स स्त्री (हिं टिटिहरा) टिटि(ट्टि)-भी, टिट्टिभकी ।
टिड्डा, स पु (स टिट्टिभ >) शर(ल)भ', पतग' ।
टिड्डी, स स्त्री (हिं टिड्डा) शिरि (पु), शर(ल)भ ।
—दल, स, विपुलवृन्द, असंख्यसमूह ।
टिपटिप, स स्त्री (अनु) बिंदुपातध्वनि (पु) टिपटिपशब्द' ।
टिप्पणी नी, स स्त्री (स) टीका, भाष्य, वृत्ति (स्त्री), व्याख्या ।
टिप्पस, स स्त्री (देश) उपाय', युक्तिः (स्त्री)।
टिब्बा, स पुं, दे 'टीला' ।

टिमटिमाना, क्रि अ (स निम्=ठंडा होना>) स्फुर (तु प से) तरल मंद सकंप दीप् (दि आ से) धुत् प्रकाश (भ्वा आ से) प्रभा (अ प अ) २ आसन्नमृत्यु (वि) मृत् (भ्वा आ से)।

टिमटिमाहट, स स्त्री (हिं टिमटिमाना) तरल प्रभा, ज्योतिम (न), स्फुरण रितम्।

टीका[1], स पु (स तिलक -क) चित्रक, विशेषक -क, पुण्ड्र -टक, तमालपत्र २ तिलक, औद्वाहिकरीतिविशेष ३ अन्त, स्रावण प्रवेशन ४ (रोगनिवारणाय) रोगद्रव्यनिवेशन ५ गव्यद्रव्यसंक्रामण ६ प्रधान, मुख्य, ७ युवराज ८ राजत्व, चिह्न लक्षण ९ राज्य, अभिषेक १० बिंदु (पु), लाञ्छन, चिह्नम् ११ ललाटिका, मस्तकभूषणभेद।

—करना, क्रि स, (रोगनिवारणार्थं) रोगद्रव्य निविश सकम् (प्रे) २ गव्यद्रव्य निविश् सकम् (प्र)।

—करनेवाला, स पु, गव्य रोग द्रव्य निवेशक।

—भेजना, क्रि स, औद्वाहिकोपहारान् प्रेष् (प्रे)।

—लगाना, क्रि स तिलक कृ अथवा विधा (जु उ अ)।

टीका[2], सं स्त्री (स) व्याख्या, वृत्ति (स्त्री), भाष्य, टिप्पणी नी।

—कार, स पु (स) टीका भाष्य व्याख्या वृत्ति, -कार कृत् (पु)।

टीन, स पु (अ टिन) रंग, वंग, कस्तीर, त्रपु (न) रंगलिप्त लौहतनुफलकम्।

टीप, स स्त्री (हिं टीपना), (हस्तेन) आपीडन २ शनै प्रहरण ३ इष्टकासंधिषु सुधापूर्ति रेखा ४ (समय-) लेख पत्र ५ जन्म, पत्र पत्रिका।

—करना, क्रि स, इष्टकादिसंधिषु सुधा पूर् (चु)।

—टाप, स स्त्री, आडंबर वैभव २ संस्कार, परिष्कार, भूषा, अलंकरणम्।

—टाप करना, क्रि स, अलं परिष्, कृ, मंड् (चु)।

टीपना, क्रि स (सं टेपन = फेंकना) आपीड् (चु), संकोच् (भ्वा प से) २ लिख (तु प से) ३ शनै प्रहृ (भ्वा प अ) ४ उच्चै गै (भ्वा प अ)।

टीम, स स्त्री (अ) क्रीडकमंघ २ गण, वर्ग।

टीमटाम, स स्त्री (देश) दे 'टीपटाप'।

टीरा, स पु (स टेर) टेरक केकर, केदर, टगर, वलिर।

टीला, स पु (स अष्ठीला>) उन्नतभूभाग २ क्षुद्रपर्वत ३ मृत्तिकाचय वल्मीक कम।

टीस, स स्त्री (अनु) विध्यद् स्फुरद, व्यथा वेदना यातना।

टीसना, क्रि अ, (हिं टीस) मुहुर्मुहु व्यथ (भ्वा आ से), सस्पद पीड् (कर्म)।

टुच, वि, दे 'टुच्चा'।

टुंड, स पु (सं तुंड>) छिन्नो हस्त २ छिन्न शाख तरु, स्थाणु (पु न), ध्रुव, शंकु (पु)।

टुंडा, वि (हिं टुंड) अहस्त, छिन्नहस्त २ शाखाहीन ३ एकशृंग।

टुंडी, स स्त्री [स तुंडि (स्त्री)], नाभि (स्त्री)।

टुक, क्रि वि (सं स्तोक) क्षण, कंचित्कालम्। वि, किंचित्, अल्प, क्षुद्र।

टुकड़ा, सं पु (हिं टुक) खंड ड, शकल ल, लव, वि, भाग, अंश, वि, दल २ ग्रास, कवल, पिंड।

टुकड़े करना, क्रि स., भञ् (रु प अ), खंड् (चु), शकली कृ २ विच्छिद् विभिद् (रु प अ), विभज् (भ्वा उ अ)।

टुकड़े टुकड़े करना, मु, चूर्ण् (चु) खंडश भज्, मृद् (क्र् प से)।

टुकड़े माँगना, मु, भिक्ष (भ्वा आ से), भिक्षां याच् (भ्वा आ से)।

टुकड़ी, स स्त्री (हिं टुकड़ा) दे 'टुकड़ा (१) २ समूह, गण ३ सैन्यदल, गुल्म मम्।

टुच्चा, वि (स तुच्छ) क्षुद्र, नीच हीनजाति।

टुटपुँजिया, वि (हिं टूटी+पूंजी) परिक्षीण, निर्धन, अल्प, धन मूल, दरिद्र।

टूँडी, स स्त्री, दे 'टुंडी'।

टूकड़ा, स पुं, दे 'टुकड़ा'।

टूटना, क्रि अ (सं त्रुट्) दृ भज् भिद् (कर्म), त्रुट् (दि तथा तु प से), दल् (भ्वा प से), स्फुट् (तु प से)

२ विरम् (भ्वा प अ), विच्छिद् (कर्म), निवृत् (भ्वा आ से) ३ वियुज (कर्म), पृथक भू ४ निर्बली भू ५ दरिद्र (वि) जन् (दि आ मे) ६ आक्रम् (भ्वा प से), अभिद्रु (भ्वा प अ)। सं पु, भञ्जन, भङ्ग, विराम, विच्छेद, निवृत्ति (स्त्री)।

टूटनेवाला, सं पु, भिदुर, भगुर, सुभग।

टूटा, वि, भग्न, दीर्ण, त्रुटित, स्फुटित, विच्छिन्न, निवृत्त इ।

—फूटा, वि, दकलीसदृश,-कृत, खडित, विदीर्ण।

टूर्नामेंट, सं स्त्री (अ) पुरस्कारार्थिना क्रीडा खेला, क्रीडाप्रतियोगिता।

टूल, स पु (अ) उपकरण, साधनम्।

टेंट टी, स स्त्री (देश) शार्ङ्गीपुष्ट-स्फाटिका व्यावृत्ति (स्त्री) २ दे 'करील' (वृक्ष तथा फल)।

टेंटुआ, स पु (देश) श्वासनालिका, कण्ठ, गल।

टेंटें, स स्त्री (अनु) शुकशब्द, कीरराव, टेंटें इति ध्वनि (पु) २ प्रलाप, व्यर्थ वचनम्।

—करना, निर्विवेक भाष (भ्वा आ से), जल्प (भ्वा प से)।

टेंप्रेचर, सं पु (अ) ताप, ऊष्मन् (पु)।

टेक, स स्त्री (हिं टिकना) स्थूणा, उपस्तम्भ, उत्तम्भ, अवष्टम्भ, उपघ्न २ आश्रय, अवलम्ब ३ वेदी ४ आग्रह, अभिनिवेश ५ क्षुद्रपर्वत ६ प्रतिज्ञा ७ स्थायिन् (सगीत) ८ अभ्यास, नित्यव्यवहार।

टेकन, स पु, दे 'टेक' १ २।

टेकना, क्रि स (हिं टेक) अव-आ, लम्ब् (भ्वा आ से), अवष्टम्भ् (क्र् प से), धृ (भ्वा प अ, चु)।

माथा—, क्रि स, प्रणम् (भ्वा प अ), पादयो पद् (भ्वा प से), वद् (भ्वा आ से)।

टेकी, वि (हिं टेक) सत्यसन्ध, दृढप्रतिज्ञ २ साग्रहिन्, अभिनिवेशिन्।

टेटेनस, स पु (अ) धनुर्वात, प्रतान (मय करोग)।

टेढ़ा, वि (स तिरस्>) अराल, कुटिल, जिह्म, वक्र, आ,नत(ना)मित, आभुग्न, न्युब्ज, आकुञ्चित, विषम, तिर्यच् २ कठिन, दुष्कर ३ उद्धत, अशिष्ट, दुःशील।

—करना, क्रि स, आवृज् (चु), वक्री-कुटिली कृ, अव-आ,नम् [प्रे न(ना)मयति], आ वि,भुज् (तु प से)।

—मेढ़ा, वि, वक्र, वक्राकार, कुटिल।

—होना, मु, क्रुद्ध रुष्ट (वि) भू।

टेढ़ापन, स पु (हिं टेढा) कुटिलता, जिह्मता, वक्रता, अरालता इ।

टेढ़ी, वि स्त्री (हिं टेढा) वक्रा, कुटिला, जिह्मा इ।

—खीर, मु, दुष्कर कार्यम्।

—चितवन, मु, कटाक्ष, साचिविलोकित, अपाङ्गदृष्टि (स्त्री)।

टेढ़े, क्रि वि (हिं टेढा) तिर, तिर्यक्, वक्र साचि (सब अव्य)।

टेना, क्रि स (देश), दे 'सान देना २ दे 'मूँछ पर ताव देना'।

टेनिस, सं स (अ) कन्दुकक्रीडाभेद।

टेब(बु)ल, सं पु (अ) पादफलक कम्।

—क्लाथ, स पु (अ) पादफलक, वसन, आच्छादनम्।

टेर, स स्त्री (सं तार) तारध्वनि, उच्च स्वर २ आह्वान, संबोधन, आह्वानशब्द।

टेरना, क्रि स (हिं टेर) उच्चै गै (भ्वा प अ) २ आकृ (प्रे), आह्वे (भ्वा प अ)।

टेराकोटा, स पु (अ) पक्वमृन्मूर्ति (स्त्री), तप्तमृत्प्रतिमा २ पक्व तप्त, मृत्तिका मृद् (स्त्री)।

टेलीग्राम, स पु (अ) तडित् विद्युत्,-सन्देश।

टेलीपैथी, सं स्त्री (अ) अन्यचित्त ज्ञानम्, भाव विचार,-सङ्क्रान्ति (स्त्री)।

टेलीप्रिंटर, सं पु (अ) •दूरमुद्रकम्।

टेलीफोटोग्राफी, स स्त्री (अ) •दूरच्छाया चित्रणम्।

टेलीफोन, पु पुं (अ) दूर, भाष ध्वनम्।

टेलीविज़न, सं पुं (अ) •दूरदर्शनम्।

टेलीस्कोप, स पु (अ) दे 'दूरबीन'।

टेव, सं स्त्री (हिं टेक) दे 'आदत'।

टेवा, सं पुं (सं टिप्पनं>) जन्मपत्रिका।

टेसू, स पु (हि थेसू) किंशुक, पलाश, रक्तपुष्पक, यज्ञिय २ किंशुककुसुमम्।

टेस्टट्यूब, स स्त्री (अ) परीक्षणनालिका।

टोंटी, स स्त्री (सं तुष्ट>) नाली, नालिका।

टोक, स स्त्री (हि 'रोक' का अनु) अनराय उपरोध विन,-वचन वाक्य २ कुदृष्टि (स्त्री) ३ कुदृष्टिप्रभाव।

—टोक या टोका टाकी, स स्त्री, निषेध पृच्छा व्याघात,-वचनानि (न बहु)।

टोकना, क्रि स (हि टोक), नि-विनि, वृ (प्रे) अव नि प्रति, रुध (क प अ), (प्रश्ने) बाधू (भ्वा आ से, निषिध (भ्वा प से)।

टोकनेवाला, स पु, विघ्नकर, निवारक, प्रतिबंधक।

टोकरा, स पु (?) कहोल, करट।

टोकरी, स स्त्री (हि टोकरा) करही, कडोलक।

टोटका स पु (स त्रोटक >) गारुड, मन २ रक्षाकरंड।

टोटल, स पु (अ) योग, पिंड, मकल, परिसंख्या।

टोटा, स पु (हि टूटना) हानि क्षति (स्त्री) २ अभाव, न्यूनता ३ खड-ड, शकलम्।

टोडी, सं स्त्री (स त्रोटकी) रागिणीभेद।

टोडी, सं पु (अ) श्ववृत्ति, चाटुपटु, प्रभा स्वदश, शत्रु द्रोहिन।

टोना, स पु (स तत्र) अभिचार, मत्र, अभिचार, कुहक, वशक्रिया, मोह, योग २ गीतिभेद।

टोनेबाज़, स पु, कुहक, अभिचारिन्, कौसृतिक।

टोप, स पु (हि तोपना = ढाँकना) *टोप, आग्लीय गुरुड, शिरस्क २ शिरस्त्राण। ३ कोश प, वेष्टनम्।

टोपी, सं स्त्री (हि टोप)। शीर्षण्य, शिरस्क *टोपी।

टोला, सं पु (सं प्रतोलिका) नगर पुर, विभाग २ वर्ग, गण।

टोली, स स्त्री (हि टोला) गण, सघ, वर्ग, समूह।

टोह, स स्त्री, दे 'खोज'।

टोहना, कि स, दे 'खोजना' तथा 'टटोलना'।

ट्रक, स पु (अ) लौह आयस, पिटक पेटिका समुद्गक।

ट्राम, स स्त्री (अ) विद्युच्छकटिका, ट्रामाख्य यानम्।

ट्रेडमार्क, स पु (अ) पण्यमुद्रा।

ट्रेन, स स्त्री (अ) वाष्पशकटी।

ठ

ठ, देवनागरीवर्णमालाया द्वादशो व्यञ्जनवर्ण, ठकार।

ठठ, वि, दे 'ठूँठ'।

ठढ, स स्त्री (हि ठढा) शीत, शीतता, शैत्य हिम, हिमता, शीतलता।

ठढ(ठ)क, सं स्त्री (हि ठढा) दे 'ठढ' २ तृप्ति (स्त्री), सतोष ३ उपद्रव-रोग, शान्ति (स्त्री)।

ठढा, वि (स स्तब्ध) शीत, शीतल, उष्णता रहित, आर्द्र, हिम, शिशिर २ धीर, प्रशांत ३ तृप्त, सतुष्ट ४ मृत, दिवगत ५ निर्वाण, निर्वापित।

—करना, क्रि स, आर्द्री-शीती,-कृ, आर्द्रयति (ना धा), तापं हृ (भ्वा प अ) २ मु-, तुष् प्रसद् प्रशम् (प्रे), सात्व् (चु) २ निर्वा (प्रे निर्वापयति)।

—होना, क्रि अ, शीती शीतली भू, शीतला यते (ना धा)। मु, दे 'मरना'।

ठढी सांस, स स्त्री, दीर्घ, श्वास निश्वास, नि(नि)श्वास, उच्छ्वास।

—पड़ना, मु, उप प्र शम् (दि प से), ह्रस् (भ्वा प से), क्षि (कर्म)।

कलेजा—होना, मु, वैर, निर्यातन-साधन शुद्धि (स्त्री) जन (दि आ से) २ प्रसद् (भ्वा प अ)।

ठढा (ढा) ई, सं स्त्री (हि ठंडा) शीतपेय, तापहरपान २ मदापेयम्।

ठट्ठे-ठड्डे, अव्य० (हिं ठट्ठा) प्रातः सायं वा, आतपाभावे २ सहुखम्, सानन्दम् ३ शान्त, समौनम् (दोनों अव्य०)।

ठक, सं स्त्री (अनु) अभिघात प्रहार, शब्द, ठक इतिध्वनि (पु)।

—ठक, स स्त्री (अनु) ठकठकाध्वनि, ठकठकध्वनि २ कलह, कलि। वि स्तब्ध चकित, निश्चेष्ट।

ठकठकाना, क्रि स (अनु) ठकठकायते (ना धा), मृद अभि आ हन् (अ प अ) अथवा प्रहृ (भ्वा प अ) २ लघु प्रहृ या तट (चु)।

ठकठकिया, वि (अनु ठकठक) विवादिन्, कलह कलि प्रिय।

ठकुरसुहाती, स स्त्री (हिं ठाकुर + सुहाना) दे 'सुखामद'।

ठकुराइ(य)न, स स्त्री (हिं ठाकुर) ठक्कुरी, ठक्कुरभार्या (२) नापिती, क्षुरिणी ३ स्वामिनी, ईश्वरी।

ठकुराई, स स्त्री (हिं ठाकुर) प्रभुत्व, आधिपत्य, स्वामित्व २ अधिकार, शासन ३ महत्त्वम्

ठकुरायत, स स्त्री (हिं ठाकुर) दे 'ठकुराई'।

ठग, स पु (स स्थग) कितव, दाम्भिक, धूर्त, प्रतारक, वंचक।

—बाजी, स स्त्री, कैतव, कपट, दम्भ, प्रतारण, स्थगत्व अति-अभि, सधान, वचनम्।

ठगना, क्रि स (स स्थगन) अति-अभि, सधा (जु उ अ), प्र-मुह् (प्रे), वञ्च् शठ (चु), विप्रलभ् (भ्वा आ अ)। स पु, दे 'ठगवाजी'।

ठग(गि)नी, स स्त्री (हिं ठग) वचिका, प्रतारिका, दाम्भिकी कपटिनी।

ठगी, स स्त्री, दे 'ठगबाजी'।

ठगाना, क्रि प्रे., व 'ठगना' के प्रे रूप।

ठट, स पु, दे 'ठठ'।

ठट(ठ)री, स स्त्री (हिं ठाट) शववान, खाटी २ कंकाल, अस्थिपंजर ३ घास पलाल, जाल ४ कृशमनुष्य।

ठट्ठा, स पु (पु अट्टहास या अनु) हास्य, परि(री)हास, क्ष्वेला-लिका प्रहसन, नर्मन (न) नर्म-विनोद परिहास,-आलाप-उक्ति (स्त्री) वचन २ अपहास।

—करना, क्रि स, परिहस् (भ्वा प स) विनोदवचन उदीर (प्रे) २ अव-उप वि, हस, उपहासास्पदी कृ, अवज्ञा (क्र उ अ)।

ठट्ठेबाज, सं पु, (हिं + फा) विनोदशील, हास्यप्रिय, वैहासिक, भड।

ठट्ठेबाजी, स स्त्री विनोद,-कारिता शीलता, वैहासिकता।

ठठ, स पु (स स्थित >) समूह, समुदाय, जन, समर्द ओघ

ठठेरा री, स पु (अनु ठन ठन) कांस्य तान्न,-कार।

ठठेरिन, स स्त्री (हिं ठठेरा) कांस्य-ताम्र, कारी।

ठठोल, स पु (हिं ठट्ठा) दे 'ठट्ठेबाज'।

ठठोली, स स्त्री (हिं ठठोल) दे 'ठटठबाजी'।

ठनक, स स्त्री (हिं ठनकना) ठणिति, ठण्कार, शिञ्जा, क्वणन, झणत्कार, मृदगादीनां ध्वनि (पु) २ दे 'टीस'।

ठनकना, क्रि अ (अनु ठन ठन) क्वण (भ्वा प स), शिञ्ज (अ आ से)। ठणठणायते (ना धा), ठणिति कृ।

ठनकाना, क्रि स, व 'ठनकना' के प्रे रूप।

ठनठन, स स्त्री (अनु) दे 'ठनक'।

—गोपाल, स पु., दरिद्र, निर्धन २ निस्सार वस्तु।

ठाना, क्रि अ, (हिं ठानना) नि नि श्चि अध्यवसो (कर्म)।

ठनाका, स पु, दे 'ठनक'।

ठनाठन, क्रि वि (अनु ठनठन) सठणत्कार, सझणत्कारम्।

ठप्पा, स पु (स स्थापन) मुद्रा, मुद्रायन्त्र, २ आकार-मस्कार, साधन ३ अंक, चिह्न, मुद्रा, न्याम।

—लगाना, क्रि स, मुद्रयति चिह्नयति (ना धा), अंक (चु०), लाछ् (भ्वा प से)।

ठरना, क्रि अ, दे 'ठिठुरना'।

ठर्रा, स पु (देश) निकृष्टसुरा २ स्थूलसूत्र ३ अर्द्धपक्वेष्टका।

ठस, वि (स स्थास्नु >) घन, दृढसंधि, सुदृढ, कठिन, स्थूल, सुमस्त २ दे 'भाफ' ३ गुरु,

भारवत् ४ अलस, मथर ६ (सिक्का) कूट कपट कृत्रिम (समासारम में) ६ धनाढ्य ७ कृपण ८ अत्याग्रहिन् ९ ठसिनि शब्द, वस्तुभगध्वनि (पु)।

ठसक स स्त्री (हिं ठस) हाव, भाव, विभ्रम २ दर्प, गर्व ।

ठसका, स पु (अनु ठस) शुष्क अकफ, कास क्षवथु २ आघात, समर्द ३ पाश, वागुरा ।

ठसनी, स स्त्री (हिं ठस) अयोघन, मुद्गर ।

ठसाठस, वि (हिं ठस) परिपूर्ण, आस कीर्ण, आकुल, सकुल, समाकुल ।

ठस्सा, स पु (देश) अहकार, दर्प २ हाव भाव ३ आडवर ।

ठहरना, क्रि अ (स स्थिर) स्था (भ्वा प अ), अवस्था (भ्वा आ अ), निश्चल स्थिर स्तब्ध (वि) भू २ वस (भ्वा प अ) ३ निविश (तु प अ), प्रयाणभग कृ ४ विश्रम् (दि प से), विरम् (भ्वा प अ) ५ निश्चि निर्णी (कर्म) ६ प्रतीक्ष (भ्वा आ से) । स पु अव स्थिति (स्त्री) स्थान, निश्चलता, स्तब्धता वास, विश्राम १ ।

ठहरनेवाला, स पु, अव स्थातृ (पु) ।

ठहराना, क्रि, स, व 'ठहरना' के प्रे रूप ।

ठहराव, स पु (हिं ठहरना) अव स्थिति (स्त्री), निवेश २ निर्धारण, निश्चय ।

ठहरौनी, स स्त्री (हिं ठहराना) विवाहे युतकादिनिश्चय ।

ठहाका, स पु (अनु) सशब्द, स्फोटन भग २ अति प्र-अट्ट-उच्चैर्, हास ।

ठाँव, स पु (स स्थान) स्थल, प्रदेश २ निवास, वसति (स्त्री) ।

ठाँसना, क्रि स, दे 'ठोंसना'।

ठाकुर, स पु (स ठक्कुर) परमेश्वर, जगदीश २ पूज्य, मान्य (मानव) ३ नायक, अधिष्ठातृ (पु) ४ ग्रामेश, भूस्वामिन् ५. क्षत्रियोपाधि (पु) ६ प्रभु, स्वामिन् ७ नापित ८ देव, देवता ९ देवप्रतिमा ।

—द्वारा, स पु } देव, मदिर-स्थान आलय,
—बाड़ी, स स्त्री } मदिरम् ।

ठाकुरी, स स्त्री, दे 'ठकुराई'।

ठाट, स पु (स स्थातृ) तृण, पटल इति (स्त्री) २ दे 'ढाँचा' ३ अलक्रिया, वेश ४ आडबर, शोभा, वैभव ५ सुख, मोद ६ रीति (स्त्री), शैली ७ आयोजन समारभ ८ सामग्री, परिच्छद ९ युक्ति (स्त्री), उपाय १० आधिक्य, प्राचुर्य ११ समूह, वृदम् ।

—बाट, सं पु, आडबर, श्री (स्त्री), शोभा, ऐश्वर्य, वैभव, प्रताप ।

—बदलना, मु, आकार भाव परिवृत् (प्र)।

ठाठ, स पु, दे 'ठाट'।

ठाढ़ा, वि (स स्थातृ) इच्छित, उन्नत, ऊर्ध्व, दृढवत् उत्थित, उत्थान २ जात, उत्पन्न ३ समस्त, समग्र, अपिष्ट ।

ठानना, क्रि स (स अनुष्ठान) अध्यव स्यव सो (दि प अ, अध्यवस्यति), निश्चि (स्वा उ अ), सकल्प् (प्रे), निर्णी (भ्वा प अ) २ साग्रह प्रारभ् (भ्वा आ अ), अध्यवसायेन अनुस्था (भ्वा प अ)।

ठार, स पु (स) हिम, तुहिन, तुषार २ अतिशीत, शैत्यातिशय ।

ठाला, स पु (हिं निठल्ला) कार्य-जीविका व्यवसाय, अभाव ।

ठाली, वि, दे 'निठल्ला'।

ठिंगना, वि (हिं हेठ+अग) खर्व, ह्रस्व, वामन, ह्रस्वकाय ।

ठिकाना, स पु (हिं टिकान) स्थल-ली, स्थान, प्र, देश, भू भूमि (स्त्री) २ आ नि, वास, आ श्रि, लय ३ आश्रय निर्वाह, स्थान ४ याथार्थ्य, प्रामाण्य ५ आयोजन, मनिधा, प्रबन्ध ६ अत, सीमा ७ नामधाम परिचय ८ निर्दिष्ट-गन्तव्य, स्थानम् ।

ठिकाने लगना, मु, हन्, हिंस् (कर्म) २ समाप् (कर्म)।

ठिकाने लगाना, मु, हन् (अ उ अ), हिंस् (रु प से) २ निर्दिष्टस्थान नी (भ्वा प अ) ३ सम्यक् उपयुज् (रु उ अ) ४ कार्य समाप् (स्वा उ अ) ५ सफली कृ ।

ठिटकाना, क्रि अ (सं स्थित+करण >) अकस्मात्-अकांडे विरम् (भ्वा प अ)-रुध् (कर्म) स्तब्ध निश्चेष्ट स्तब्धगति (वि) भू ।

ठिठ(ठु)रना, क्रि अ (स ठार >) शीतो जडीभू, स्तम (कर्म) २ शीतेन कप (भ्वा आ से)।
ठि(ठु)नक, स स्त्री (अनु) गद्गद, फु (फू)त्कार।
ठि(ठु)नकना, क्रि अ (अनु) सगद्गद क्रद् (भ्वा प से)-रुद् (अ प से), शिशुवत् रुद्।
ठिरना, क्रि अ, दे 'ठिठरना'।
ठीक, वि (हिं ठिकाना) अवितथ, तथ्य, सत्य यथार्थ २ उचित, न्याय्य, धर्म्य, समजस ३ शुद्ध, निर्भ्रांत, निर्दोष ४ सुस्थ, अविकृत ५ यथार्ह, यथायोग्य, अनुरूप ६ नम्र, विनीत ७ अन्यूनाधिक, निर्दिष्ट ८ नियत ९ पूर्ण, समाप्त। क्रि वि, यथावत्, याथातथ, सम्यक, साधु तत्त्वत, पूर्णतया।
—आना, क्रि अ, उपपद्-युज् श्लिष (कर्म), सुश्लिष्ट सुसगत (वि) भू २ तुल्य-अनुरूप (वि) भू।
—करना, क्रि स, निर्दोषी-कृ, परि वि-स शुध् (प्रे) २ सुश्लिष्ट सुसगत कृ।
—ठाक, वि, सिद्ध, सज्ज, उपस्थित, उपक्लृप्त।
—ठीक, क्रि वि, दे 'ठाक' क्रि वि।
ठीकरा, स पु (हिं टुकडा) घट-शकल खड, भिन्नमृत्पात्र, क(ख)र्पर, २ भिक्षा, भाजनं पात्र ३ जीर्णपात्रम्।
ठीकरी, स स्त्री (हिं ठीकरा) क्षुद्रघटखड २ तुच्छ निरर्थक वस्तु (न)।
ठीका, स पु (हि ठीक) अभ्युपगम, नियम, पण, समय, सविद् (स्त्री) २ पट्टोलिका।
—देना, क्रि स, पण सविदं कृ, प्रतिपद् (दोनों प्रे)।
—लेना, क्रि स, पण सविद समय कृ, प्रतिपद् (दि आ अ), सविद् (अ आ से)।
ठीकेदार, स पु पणकर्तृ, कृतसमय, नियम कृत् (पु)।
ठीठी, स स्त्री (अनु) हास्यध्वनि (पु), अट्टहास।
ठीहा, स पु (सं स्थित >) भूनिखातकाष्ठ-खड म् २ उच्चस्थानम् ३ वेदिका-वेदि (स्त्री) ४ आसनम् ५ सीमा।
ठुठ, स पु, दे 'ठूँठ'।
ठुकना, क्रि अ (अनु ठुक ठुक) आहन्-ताड् प्रह् (कर्म) २ अयोघनेन विघनेन आहन् ताड (कर्म) ३ परा, भू जि (कम)
ठुकराना, क्रि स (हिं ठोकर) पादेन प्रह (भ्वा प अ)-तड (चु)-आहन् (अ प अ) २ प्रत्याख्या (अ प अ), अवमन् (दि आ अ) धिक्कृ।
ठुकवाना, क्रि प्रे, व 'ठोकना' के प्रे रूप।
ठुड्डी, स स्त्री, दे 'ठोडी'।
ठुनकाना, क्रि स (अनु) अगुल्या हस्तेन वा मन्द मन्द आहन् (अ प अ)।
ठुन ठुन, स स्त्री (अनु) ठुणठुणकार, ठुणठुणायित, धातुपात्रक्वणित २ शिशुक्रदन ध्वनि (पु), ठुणठुणशब्द।
ठुमक, स स्त्री (अनु) खेल विलास गति (स्त्री)।
—ठुमक, क्रि वि, सल विलास-गत्या सखेल सविलास (शिशु चलनम्)।
ठुमकना, क्रि अ, (हिं, ठुमक) सखेल सविलास चल् (भ्वा प से)।
ठुमका, वि (हिं ठुमक) वामन, खर्व, ह्रस्व।
ठुमरी, स स्त्री (देश) गीतक तिका।
ठुसकना, क्रि अ (अनु) दे 'ठिनकना'।
ठुसना, क्रि अ (ठूसना) अत्यत पूर् (कर्म), २, बलात् निविश (तु प अ)।
ठुसवाना, ठुसाना, क्रि प्रे, व 'ठूसना' के प्रे रूप।
ठूँग, स स्त्री | (स तुण्ड) चचु चु [दोनों
ठूँगा, स पु } (स्त्री)] २ चचुप्रहार।
—मारना, क्रि स, चच्वा प्रह (भ्वा प अ)। तुद्, न्यून तुल् (चु)।
ठूँठ, स पु (स स्थाणु) शुष्कवृक्ष, पत्र विटप, हीनतरु (पु) २ छिन्नो हस्त, निकृत्त कर।
ठूँठा, वि (हिं ठूँठ) अपत्र, अशाख, शुष्क (वृक्ष) २ छिन्नहस्त, निकृत्तकर।
ठू(ठूँ)सना, क्रि स (हिं ठस) अत्यधिक पूर (चु), भृश पृ (प्रे) २ बलात् नि प्र विश् (प्र) ३ अतिमात्र खाद् (भ्वा प से)।
ठेंगना, वि, दे 'ठिगना'।
ठेंगा, स पु (हिं अँगूठा) अंगुष्ठ २ दड, यष्टि (स्त्री), लगुड ३ मेढ्रम्।
ठेका, स पु, दे 'ठीका'।

ठेका,[2] स पु (हिं ठेक) अवलम्ब, लम्बन, अवष्टम्भ, उपघ्न २ निवेशस्थान, विश्रामस्थल ३ पटहवादनप्रकारभेद ४ कौवाली नामकस्तालभेद ५ स्खलन ६ वामभृदग ७ दे 'टीका'।

ठेठ, वि (दे) विशुद्ध, मिश्रणरहित, स्वच्छ २ केवल, मात्र (समासात में)।

ठेलना, क्रि स, दे 'धकेलना'।

ठेला, स पु (हिं ठेलना) दे 'धक्का'। २ जनौघ, जनसमर्द ३ हस्त, शकट शकटम्।

ठेस, स स्त्री (हिं, ठस), प्रहार आ-अभि, घात, ताडन, पात, आहति (स्त्री)।

ठेसना, क्रि स दे 'ठूसना'।

ठोंकना, क्रि स (अनु ठक ठक) अयोघनेन मुद्गरेण तड (चु)-प्रहृ (भ्वा प अ) २ बलेन ताडनेन प्रविश् (प्रे) ३ अभि आ हन् (अ प अ), तड (चु), प्रहृ। ४ अभियुज् (रु आ अ) राजकुले निविद् (प्रे,) ५ हस्तेन लघुप्रहृ आहन्, करेण स्पृश परामृश (तु प अ)।

ठोंक बजाकर, मु, निपुण परीक्ष्य, सम्यक पर्यालोच्य निरूप्य।

ठोंग, स स्त्री (स तुण्डम्) चञ्चू-ञ्चु (स्त्री) २ चञ्चुप्रहार ३ अङ्गुलीप्रहार।

ठोंगना, क्रि स (स तुण्ड>) तुण्डेन, चञ्चुपुटेन अभिहन् (अ प अ)-प्रहृ (भ्वा प अ), चञ्चूप्रहार कृ।

ठोंगा, स पु (हिं ठोंग) पत्र पुट पुटिका कोष।

ठोंसना, क्रि स, दे 'ठूँसना'।

ठोकना, क्रि स, दे 'ठोंकना'।

ठोकर, स स्त्री (हिं ठोकना) स्खलन, स्खलित, आघात, आहति (स्त्री) २ पादलत्ता, आघात, प्रहार ३ कष्टनुभव।

—खाना, क्रि अ, प्र,स्खल (भ्वा प स), पद विषमी भू। मु, हानि क्षति-कष्ट सह् (भ्वा आ से) ३ वञ्च् प्रतार् (कर्म) ४ जीविकार्थमितस्तत भ्रम् (भ्वा प से)।

—मारना, क्रि स, लत्तया पादेन प्रहृ (भ्वा प अ)-आहन् (अ प अ)-तड् (चु), पादप्रहार कृ।

—लगना, क्रि अ, दे 'ठोकर खाना'।

ठोड़ी ढी, स स्त्री (स तुण्ड>) चिबुक, हनु (पु स्त्री)।

ठोर, स पु (देश) पक्वान्नभेद, ठौर। २ चञ्चु, चू (स्त्री)।

ठोला स पु (देश) लघाहारशराव २ अङ्गुलि, सधि -ग्रंथि पर्वन् (न)।

—मारना, क्रि स, अङ्गुलिपर्वणा प्रहृ (भ्वा प अ)।

—रखना, मु, हन् (अ प अ), मृ (प्र)।

ठोस, वि (हिं ठस) सान्द्र, दृढ, संहत, कठिन, मध्यावयव, घन २ पूर्णगर्भ, छिद्ररहित, सगर्भ।

ठोसाई, स स्त्री (हिं ठोस) घनता, काठिन्य, निश्छिद्रता।

ठौर, स स (हिं ठाँव) स्थान, स्थली, प्रदेश २ अवसर, सुयोग, योग्यकाल।

कुठौर, मु, दुर्लक्ष-अनिष्ट, स्थाने स्थले।

ठिकाना, स पु, वासस्थान, आ नि -वास।

ड

ड, देवनागरीवर्णमालायास्त्रयोदशो व्यञ्जनवर्ण, डकार।

डंक, स पु (स दश) कटक, दशचञ्चू (स्त्री), शङ्कु (पु), (बिच्छू का) अल २ दशव्रण ण ३ दे, 'निव'।

—मारना, क्रि स, दश् (भ्वा प अ) २ मर्माणि भिद् (रु प अ)।

—वाला, वि सदश, दशिन्-दशक।

डंका, स पुं (सं ढक्का) वृहत् पटह, विजय मर्दल, दुन्दुभि, डिंडिम।

—बजाना, मु, प्र,शास् (अ प से), तन्त्र् (चु)।

—बजाना, मु, विश्रुत विख्यात (वि) भू।

डंके की चोट कहना, मु, प्रकाश उद्घुष्(चु)।

डगर, सं पु (स ढढग(क)रीय) पशु, मृग, चतुष्पद, चतुष्पाद् (पु)।

डंठल, स पु (स दण्ड) काण्ड, दं, नालं-ली ल २ वृन्त, प्रसव बन्धनम्।

डंड, स पुं (सं दण्ड) लगुड, यष्टि (स्त्री) २. बाहु (पुं), भुज जा ३ अर्थ धन,-दण्ड

४ निग्रह शासन ५ हानि क्षति (स्त्री) ६ व्यायामप्रकार साष्टाङ्ग दण्ड, व्यायाम ।
—देना, क्रि स , दड (चु) शास (अ प से , दोनों द्विकर्मक), दम् (प्रे दमयति), निग्रह् (क्र प से)।
—पेलना, क्रि अ , (दडवत्) व्यायाम् (भ्वा प अ) व्यायाम कृ ।
—भरना, क्रि अ , अर्धदड परि ,शुध (प्रे) ।
—लेना, क्रि स , अर्थदड दा (प्रे दापयति) ।
—पेल, स पु मल्ल, मल्लयोद्धृ (पु), व्यायामिन् , दृढांग , वज्रदेह ।
डडवत, स स्त्री दे 'दडवत्'।
डडा, स पु (सं दड) काष्ठ, काष्ठखड, लगुड , यष्टि (स्त्री , वेत्र वेत्रयष्टि । २ प्राचीर, प्राकार , वरण ।
डडिया, स पु (हिं डाड) करोद्ग्राहक, शुल्कग्राहक ।
डडी, स स्त्री (हिं डडा) सूक्ष्म तनु, दड यष्टि (स्त्री) २ तुलायष्टी ३ मुष्टि (स्त्री), वारग ४ कांड द, नाल ल ५ पर्वतीय वाहनभेद । स पु , दडधारिन् , सन्न्यासिन् ।
पग—, स स्त्री, चरण पाद, पथ , पद्धति (स्त्री), पद्या, पदवी ।
डडौत, स पु स्त्री, दे 'दडवत्'।
डकारना, क्रि अ (अनु) हुमारव कृ, रेभ (भ्वा आ से), नि ,नद् (भ्वा प से) ।
डकराना, क्रि अ , दे 'डकरना'।
डकार, स पु (सं उद्गार) उद्गिरण, उद्गम , उद्वमन २ गर्जन, गर्जित, निनाद ।
—लेना, क्रि अ , दे 'डकारना'।
—जाना या—बठना, मु , छलेन आत्मसात् कृ, ग्रस (भ्वा आ से)।
डकारना, क्रि अ (हिं डकार) उद्गॄ (तु प से), उद्वम् (भ्वा प से) २ दे 'डकरना' ३ दे 'डकार जाना'।
डकैत, स पु , दे 'डाकू'।
डकैती, स स्त्री , दे 'डाका'।
डकौत–तिया, स पु (देश) मिथ्यामौहूर्तिक , ज्योतिर्विदाभास २ जातिविशेष ।
डग, स पु (हिं डोंकना) दीर्घ, विक्रम, पादन्यास ।
—भरना, क्रि अ , विक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) दीर्घपादान् वियम (दि प से) निक्षिप (तु प अ)।
डगमग, वि (हिं डग + मग) प्रस्खलत्, विचलत् कपमान, वेपमान । अव्य०, सकम्पम्, सवेपथु।
डगमगाना,क्रि अ (हिं डग+मग) प्र, कम्प्, वेप (भ्वा आ से) वेल (भ्वा प से) २ प्रस्खल विचल (भ्वा प से) ३ विशंक विकल्प (भ्वा आ से), चित्त दोलायते (ना धा)।
डगमगाहट, सं स्त्री (हिं डगमगाना) प्रकप, वेपथु २ प्रस्खलन, विचलन ३ विक्षोभ , चित्तवैकल्य, धृतिनाश ।
डगर, सं स्त्री (हिं डग) दे 'मार्ग'।
डटना, क्रि अ (हिं ठाढा) दृढ स्थिर निश्चल स्था (भ्वा प अ), अवस्था (भ्वा आ अ), वृत् (भ्वा आ से)।
डट्टा, सं पु (हिं डाटना) कूपीछिद्र पिधान, अवष्टम , रोध ।
—लगाना, क्रि स, रोधेन अवष्टम्भेन अपि पि, धा (जु उ अ)-स आ वृ (स्वा उ से)।
डढ़ियल, वि (हिं डाढी) कूर्चधर, लम्बकूर्च, श्मश्रुल, सश्मश्रु ।
डपट, सं स्त्री (सं दर्प) निर्भर्त्सना, वाग्दड ।
डपटना, क्रि स (हिं डपट) तर्ज् (भ्वा प से चु आ से), वाचा दड् (चु), निर्भर्त्स् (चु आ से)।
डपोरसंख, स पु (अनु डपोर=बडा+सं शख) आत्मश्लाघिन् , विकत्थनशील २ बाल्बुद्धि (पु)।
डफ, **डफला**, स पु (अ दफ) डिंडिमभेद दफम् ।
डफली, स स्त्री (हिं डफला) लघु, डिंडिम डफम् ।
डफाली, स पु (हिं डफला) डफ डिंडिम, वादक ।
डबडबाना, क्रि अ (अनु) सास्र सबाष्प सजलनयन साश्रु (वि) भू ।
डबडबाई आँखों से, क्रि वि , सास्र, साश्रु, सबाष्प, पर्यश्रु ।

डबोना, क्रि स, दे 'डुबोना'

डब्बा, स पु (स डिंब >) सपुट, सपुटक, करडक, समुद्गक । २ (रेलगाडी का) शकट-टम् ।

डमरू, स पु (स रु) क्षीणमध्यो गुटिका द्वयुक्तो वाद्यभेद ।

—मध्य, स पु (स न) विशालभूभागद्वय योजक सवाधभूखड ।

जलडमरूमध्य, स पु (स न) सामुद्रधुनी ।

डर, स पु (स दर ?) स, त्रास, भी भीति (स्त्री), भय, साध्वस २ शका, चिंता ।

डरना, क्रि अ (हिं डर) भी (जु प अ), वि स त्रस् (भ्वा दि प से) उद्विज् (तु प अ), भयात्त भ्रस्त (वि) भू २ आ वि, शक (भ्वा आ से)।

डरपोक, वि (हिं डरना + पोंकना) भीत, भीरु, सभय, ससाध्वस २ साशक, शकित ।

डराना, क्रि स, व 'डरना' के प्र रूप ।

डरावना, वि (हिं डर) भीम, भीषण, भयकर ।

डल, स स्त्री (स तल) तगाक क (ग ग), सरोवर ।

डलना, क्रि अ (हिं डालना) न्यस् निक्षिप् (कर्म २ नि, सिच् (कर्म) सृ (भ्वा प अ) ।

डलवाना, क्रि प्रे, व 'डालना' के प्रे रूप ।

डला, स पु (स दल ल) खड ड, स्थूल, अश भाग २ पिड ड घन, गड, गुल्म ।

डला', स पु [स डल(ल)क] दे 'टोकरा' ।

डलिया, स स्त्री (हिं डला) दे 'टोकरी' ।

डली, स स्त्री (हिं डला) पिडक क, क्षुद्रगड २ शकल लसट ड ३ दे 'सुपारी' ।

डसन, स पु (स दशनम्) दश २ दश दशन रीति (स्त्री) ।

डसना, क्रि स (स दशन) दश् (भ्वा प अ), कटवेन व्यध (दि प अ) २ मर्माणि भिद् (रु प अ)।

डसनेवाला, स पु, दशक २ अरुतुर, मर्मस्पृश ।

डहडहा, वि (अनु) हरित, रसवत्, सरस, विकसित, विकच २ अभिनव, प्रत्यग्र २ प्रसन्न, आनदित ।

डहडहाना, क्रि अ (हिं डहडह) प्रफुल्ल् विक्रम (भ्वा प से), हरिती भू २ सम् ऋध (दि प से) स वि वृध् (भ्वा आ से) ३ मुद् (भ्वा आ से)।

डॉकना, क्रि स, दे 'लाँघना' क्रि अ, दे 'कै करना'

डॉग, स स्त्री (स दडक) लगुड र ल, स्थूल बृहद् दड ।

डॉट, स स्त्री (स दाति >) तर्जन, तर्जित, निर-, भ त्सना, वाग्दड ।

—डपट, स स्त्री भ्रूभगेन तर्जन, आक्रोश, विभीषिका भयदर्शन, अवकारगिर् (स्त्री)।

डॉटना क्रि स (हिं डॉट) निर् भर्त्स् (चु आ से), भय दृश् (प्रे), भी (प्र), तर्ज (भ्वा से, चु आ से)।

डॉटने योग्य, वि, तर्जनीय, निर्भर्त्सनीय वाग्दडार्ह ।

डॉटनेवाला, स पु, तर्जक निर्भर्त्सक ।

डॉड, स पुं (स दड)यष्टि (स्त्री), लगुड २ क्षेपणी, नौदड ३ पृष्ठवश कशेरुका ४ धन अर्थ दड निग्रह, शासन, दड ६ सम सरल, रेखा ७ सीमा ।

डॉड़ना, क्रि स (स दडन) अर्थ धन दड् (चु)।

डॉड़ा, स पु (हि डॉड) दे 'मेंड' ।

डॉड़ी, स स्त्री (हि डॉड) दे 'डडी' (१४)।

डॉवॉडोल, वि (हिं डोलना) अस्थिर, चचल, तरल, लोल, कम्पमान । (मनुष्य) अस्थिरबुद्धि, चलचित्त, चचलमानस ।

डॉस', स पु (स दश) दशक, अरण्य गो दश, मक्षिका, पाशुर, क्षुद्रिका ।

डॉस', स पु (अ) नृत्यम्, दे 'नाच' ।

डाइन, स स्त्री, (स डाकिनी) दे 'डा किन' ।

डाइनामाइट, सं पु (अ) विध्नसकम्, • विस्फोटकम् ।

डाक, स स्त्री (हिं डॉकना-फॉदना)। प्रेष्य पत्राणि-पत्रिका (बहु) २ पत्रवाहन, व्यवस्था सरणी ।

—खाना, स पु (हिं + फा) (प्रेष्य) पत्र, स्थान गृह-कार्यालय ।

—गाड़ी, स स्त्री, पत्रशकटी ।

—घर, सं पु, दे० 'डाकखाना'।
—बँगला, सं पु (हिं + अ) विश्राम विश्राति, गृहम्।
—महसूल, स पु (हिं + अ) } पत्रवाहन
—व्यय, स पु (हिं + स) } शुल्कम्।
डाका, सं पु (हिं डाकना) प्रसह्य चौर्यम्, लुठि (स्त्री) टी, लुठनम्।
—जनी, सं स्त्री (हिं + फा) दे 'डाका'।
—डालना, या मारना, कि स, लुट-लुठ् (भ्वा प से, चु), प्रसह्य अपहृ (भ्वा प अ)।
—पड़ना, क्रि अ, लुठकै अवस्कंद्-आक्रम् (कर्म)।
डाकिन, नी, सं स्त्री (सं नी) कुहकिनी, अभिचारिणी, योगिनी, मायाविनी, कालीगण भेद। २ स्थविरा, वृद्धा ३ कुरूपा नारी।
डाकिया, सं पु (हिं डाक) पत्रवाहक।
डाकू, सं पु (हिं डाकना कूदना) दस्यु, महासाहसिक, लुठक, लुटा(ठा)क, माचल, प्रसह्यचौर, चिल्लाभ।
डाट, स स्त्री (सं दांति >) तोरण णं २ दे 'ढट्टा' ३ दे 'डॉट'।
—लगाना, क्रि स, वृत्तखण्डाकृत्या तोरण रूपेण निर्मा० (जु आ अ)।
डाटना, क्रि स (हिं डाट) अत्यन्त पूर (चु) २ अत्यधिक भक्ष् (चु) ३ सावष्टंभ वस्त्रादिक परिधा (जु उ अ) ४ दे 'डाँटना'।
डाढ़, सं स्त्री (सं दाढा) चर्वणदंत, जंभ, दंष्ट्रा।
डाढ़ी, स स्त्री दे 'दाढ़ी'।
डाब, स स्त्री, दे 'डाभ'।
डाबर, सं पु (सं दभ्र=सागर >) अनूप कच्छ, भू (स्त्री) देश २ पल्वल ल ३ आविलजल ४ दे 'चिल्मची'।
डाभ, स पु (दर्भ) कुश श २ आम्र मंजरी ३ अपक्वनारिकेल र।
डामर, वि (स) भीषण, भयावह २ उपद्र विन, कलि-कलह, प्रिय ३ सरूप, अनुरूप, सदृश। स पु (स) उपद्रव, कलह २ उल्लास, प्रमोद।
डामल, स पु (अ० दायमुल हब्स) यावज्जीविक कारावास, आमरणान्तिक रोध निरोध आसेध प्रग्रह।
डायन, सं स्त्री (दे डाकिनी)।
डायनामो, सं पु (अ) विद्युज्जनक लघुयन्त्रम्।
डायरी, सं स्त्री (अ दैनंदिनी दैनिकी।
डायरेक्ट स्पीच, सं स्त्री (अ) प्रत्यक्षवर्णनम्।
डायर्की, सं स्त्री (अ) दे० 'द्वैराज'।
डायल, सं पु (अ) घटीमुख २ सूर्यघटी।
डायस, स पु (अ) उच्चासन, मंच।
डार, स स्त्री [सं दारु (न)] विटप, शाखा, २ पंक्ति-तति (स्त्री), श्रेणी।
डाल, स स्त्री [सं दारु (न)] विटप, शाखा २ असि, धारा पत्र फल्म्।
डालना, क्रि स (स तल्न) प्र, अस (दि प से), प्र, क्षिप (तु प अ), पत् (प्रे) २ प्र, सृ (प्रे), नि, सिच् (तु प अ) ३ परिधा (जु उ अ), वस् (अ आ अ), धृ (चु) ४ नि प्र निदा (प्रे), निधा (जु उ अ) ५ विस्मृपरित्यज (भ्वा प अ) ६ मिश्र (चु), संमिल् (प्र) ७ उप पत्नीत्वेन अवरुध् (रु उ अ)।
डालर, स पु (अ) रौप्यमुद्राभेद, डालरम्।
डाली,[1] सं स्त्री (हि. डाल) शाखा, विटप।
डाली,[2] स स्त्री (हिं डाला) दे 'टोकरी' २ उपहार, उपायनम्।
डाह, स पु (सं दाह) ईर्ष्या, अभि, असूया, मत्सर, मात्सर्य, परोत्कर्षद्वेष, २ द्वेष, द्रोह।
डिंगल, वि (सं डिंगर) दुष्ट, दुर्वृत्त २ क्षुद्र, नीच। स स्त्री, राजस्थानस्य भाषाविशेष।
डिंडिम, सं पु (स) लघु, पटह-दुंदुभि (पु)।
डिंभ, सं पु (सं) डिंब, शिशु, पृथुक, कलभ, पोत-तक, शाव-वक, अर्भक, अपत्य, पृथुक २ मूर्ख जड।
डिक्टेटर, स पु (अ) एक—अधिपति — सर्वाधिकारसम्पन्न, शासक —शासितृ।
डिक्टेशन, स स्त्री (अ) दे 'इम्ला'।
डिक्शनरी, सं स्त्री (अ) (शब्द)-कोश ष, अभिधानम्।
डिगना, क्रि अ (हिं डग) अप,-स्,-गम् (भ्वा प अ), प्र वि सृप् (भ्वा प अ) २. विचल् (भ्वा प से), पराङ्मुखी-विमुखी

भू, अति ध्वनि-द (अ प अ), अतिध्वानि चर (भ्वा प से) ३ दे 'गिरना'।
डिगरी¹, स स्त्री [अ उपाधि (पु)], उपपद २ अंश, कला, मात्रा, समकोणस्य नवतो (द्वै०) भाग।
डिगरी², स स्त्री (अ डिक्री) स्वत्वप्रापक, आधिकरणिकनिर्णय, राजाज्ञा, व्यवस्था।
—देना, कि स, स्वत्वप्रापणात्मक निर्णय दृ, व्यवस्था (प्रे)।
डिठौना, स पु (हिं डीठ) कुदृष्टिनिवारक कज्जलतिलकम्।
डिपुटी, स पु (अ डिपुटि) प्रति, निधि पुरुष हस्त हस्तक, नियोगिन्, नियुक्त।
—कमिश्नर, स पु (अ) उपायुक्त।
डिपार्टमेन्ट, सं पुं (अ) विभाग, शाखा।
डिपो, स पु (अ) भाण्डागार, आलय, शाला।
डिप्लोमा, स पु (अ) प्रमाणपत्र, अधिकारपत्रम्।
डिफथीरिया, स पु (अ) रोहिणी।
डिबिया, स स्त्री (हिं डिब्बा) कोषक, सपुटक।
डिब्बा, स पु, दे 'डब्बा'।
डिस्मिस, वि (अ) अधिकारच्युत, भ्रष्टाधिकार।
—करना, कि स, अधिकारात् पदात् च्यु भ्रंश् अवरुह् (प्रे)।
डिसिनफेक्टेंट, वि (अ) रोगाणुनाशक।
डिस्टिलेशन, स पु (अ) आसवनम्।
डींग, स स्त्री (सं डीन<) आत्मश्लाघा, स्व प्रशंसा, विकत्थनम्।
—मारना या हाँकना, आत्मान श्लाघ् विकत्थ (भ्वा आ से)।
डींगिया, वि (हिं डींग) आत्मश्लाघिन्, विकत्थनशील, पिंडीशूर।
डीठ, स स्त्री, दे 'दृष्टि'।
डील, स पु (देश) (देह) प्रमाण, मान, आकार, आकृति (स्त्री), कायमानम्।
—डौल, सं पु, मूर्ति (स्त्री), संस्थान, आकारमानम्।
डुगडुगी स स्त्री (अनु) डिंडिम, लघुपटह।
—पीटना, मु, (सडिंडिमनाद) उद् वि घुष् (चु), प्रख्या प्रख्यापयति)।
डुग्गी, स स्त्री, दे 'डुगडुगी'।

डुबकी, सं स्त्री (हिं डूबना) अवगाह, आप्लव निमज्जथु (पु)।
—लगाना, कि अ, गाह-अवगाह (भ्वा, आ से), आप्लु (भ्वा आ अ), निमस्ज (तु प अ)।
डुबाना, कि स, व 'डूबना' के प्रे रूप।
डुबाव स पु (हिं डूबना) अगाधता, गाम्भीर्यम्।
डुबोना, कि स, व 'डूबना' के प्रे रूप।
डुलाना, कि स, व 'डोलना' के प्रे रूप।
डूँगर, स पु, (स तुग>) पर्वतक, क्षुद्रपर्वत २ उच्चभू (स्त्री) मृच्चय।
डूँगरी, स स्त्री (हिं डूँगर) अनिक्षुद्रपर्वत २ क्षुद्रमृच्चय।
डूँडा, वि (देश०) एक-शृंग विषाण वृणिक। स पु एकशृंग एकविषाण, वृष वृषभ।
डूबना, कि अ, (हिं बूडना का विपर्यय, अथवा अनु डुब डुब) निमस्ज (तु प अ), निमज्जनेन मृ (तु आ अ) व्यापद् (दि आ अ) २ अस्त इ-या (अ प अ), अस्ताचल अस्तशिखर अवलंब (भ्वा आ से), प्राप् (स्वा प अ) ३ नष्ट ध्वस्त निर्मूल (वि) भू, नश् (दि प वे), ध्वस् (भ्वा आ से), परिक्षि (कर्म), प्र विं ली (दि अ अ) ४ निध्यै (भ्वा प अ), सतत आलोच् चिंत् (चु), चिंताकुल (वि) भू ५ निमग्न निरत आसक्त व्यापृत (वि) भू। स पु, निमज्जन, आप्लाव, प्लावन, निमज्जनेन मरण, अस्त, अस्तमन, नाश, ध्वंस, सततचिंतन, कार्यासक्ति (स्त्री)।
डूश, स पु (अ) योनिक्षालनम्।
डेंगू बुखार, स पु (अ + अ) दण्डक अस्थि भजन, ज्वर।
डेढ़, वि (सं अध्यर्ध) सार्द्धक।
—ईंट की मसजिद जुदी बनाना, मु (दर्पा दित) कार्यमसभूयैव कृ।
डेपुटेशन, स पु (अ) प्रतिनिधिवर्ग, शिष्ट मडल, नियुक्तजना।
डेरा, स पु (हिं ठहरना) पटवस्त्र, गृह कुटी मंडप वेश्मन् (न), दूष्य दय २, गृह, आलय, आवास ३ विश्राम, अस्थिरवास ४ शिबिर, निवेश।

—डालना मु, सं य निविश् (तु प अ) समावस (भ्वा प अ)।
डेल्टा स पु (यू अ) नदीमुखपुलिन -नम्।
डेलिगेट, स पु (अ) नियोगिन् प्रतिनिधि (पुं)।
डेवढ़ा, वि (हिं डेढ) अध्यर्द्धगुण। स पु अध्यर्द्धगुणनसूची।
डेवढ़ी, स स्त्री, दे 'ड्योढ़ी'।
डेसिमल, स पु (अ) दशमलव २ दशसंख्यक।
डेस्क, स पु (अ) लेखन पीठिका फलकम्।
डोंगा, स पु (स द्रोण<) वेडा, वारिरथ नौ (स्त्री), तरी।
डोंगी, स स्त्री (स द्रोणी) उडुप, नौका, वेटी, वेडा, तारिका।
डोंडी-डी, स स्त्री, दे 'डौंडी'।
डोडी, स स्त्री (स तुड) बीजकोष, पुट -टम्।
डोबा, स पु (हिं, डुबना) निमज्जथु (पु), निमज्जन अवगाह हन आप्लव।
—देना, क्रि स, (रंगे) नि, मिस्ज (प्र मज्जयति), अवगाह (प्र) २ क्लिन्द् (प्रे), आर्द्री कृ।
डोम, स पु (स) डोंब, अस्पृश्यजातिभेद १ दे 'मीरासी'।
डोर, स स्त्री (स पु व) सूत्रस्त्र, सूत्रशा ल्वी, वराट टक, रज्जु (स्त्री), गुण, वट टी।
डोरा, स पु (स डोर र) डोरक -क, सूत्र तंतु (पु), गुण २ रखा या, लेखा ३ अभि, धारा ४ चमसभेद ५ स्नेहसूत्र, प्रेमबंधन ६ कज्जलरेखा ७ नृत्ये ग्रीवागतिभेद।
—डालना, मु अनुरञ्ज्-मुह् (प्रे)।
डोरिया स पु (हिं डोरा) •डोरीय, सरेखों श्चुकभेद।
डोरी, स स्त्री, दे, 'डोर'।
डोल, स पु (स दोल <) •दोल, लौहसेचनम्। वि, अस्थिर, लोल।
डोलची, स स्त्री (हिं डोल) •दोलक ल्पुसेचनी।
डोलना, क्रि अ (स दोलन) सृ-सृप (भ्वा प स) चल् (भ्वा प से) २ भ्रम् पर्यट् (भ्वा प से) ३ अप, इया (अ प अ) ४ (चित्त) विचल्, चचल भू ५ दोलायते (ना धा), प्रेंख (भ्वा प से)। स पु, दोलन, प्रेंखण इ।
डोलनेवाला, सं पु, सर्पणशील पर्यंक, अपयात् (पु), चलचित्त, प्रेंखक।
डोला, स पु (स दोला) डयनं, दोलिका, शिविका।
—देना, मु, नृपादिभ्य स्वकन्यामुपह (भ्वा प अ)
डोली, स स्त्री (हिं डोला) दे 'डोला'।
डौंड़ी डी, स स्त्री (स डिंडिम) पटह, दुदुभि २ (सडिंडिमनाद) घोष पणा ३ ख्यापन, उ कीर्तनम्।
—देना या पीटना, क्रि स, दे 'डुगडुगी पीटना'।
डौल, स पु (हिं डौल) आकार, संस्थान, आकृति (स्त्री), रूप २ प्रकार, विधा (समासांत में) ३ युक्ति (स्त्री) उपाय ४ लक्षण, चिह्नम्।
ड्राल, स पु, उपाय, युक्ति (स्त्री)।
—दार, वि., सुंदर, रम्य २ पुष्ट, स्वस्थ।
ड्यूटी, स स्त्री (अ) कर्तव्य, कार्य कृत्यम्, न्याय्य स्व, कर्मन् कार्यम्।
ड्योढ़ा, वि तथा स पु., दे 'डेवढ़ा'।
ड्योढ़ी, स स्त्री (स देहली) गृहावग्रहण, द्वार, पिंडी पिंडिका २ उपशाला, द्वारागण, द्वारकोष्ठ।
—दार, —वान, } स पु, दौवारिक, द्वारपाल।
ड्राइङ्ग, स स्त्री (अ) •रेखाचित्रणम्।
—रूम, दर्शन उपवेशन,-कोष्ठ शाला कक्ष, चित्रशाला।
ड्राइवर, स पु (अ) वाहक, चालक।
ड्रापर, स पु (अ) बिंदुपातकम्।
ड्राफ्ट स पु (अ) प्रारूपम् २ धनार्पणा देश, ड्राफ्टम्।
—टेबल, स पु (अ) श्रृंगारफलकम्।
ड्राफ्टसमैन, स पु (अ) आलेख्य चित्र, कर कार इ।
ड्राम, स पु (अ) ड्रामगाम, मापव्यासम कस्तोलभेद।
ड्रामा, स पु (अ) रूपक, नाटकम्।

ड्राअर, सं पु (अ) चल,कोष्ठ सपुट ।
ड्रेस, स स्त्री (अ) वेश प, परिधानम् ।
ड्रेसिंग, स स्त्री लेप, उप, नाह देह । अ २ शृगार, मण्डनम् ।
ड्रिल, स स्त्री (अ) व्यायाम, अस्त्र शस्त्र, शिक्षा अभ्यास ।
—मास्टर, स पु (अ) व्यायाम, शस्त्र, शिक्षक ।

ढ

ढ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्दशो व्यञ्जनवर्ण, ढकार ।
ढग, स पु (स तग् = गति > ?) शैली, रीति पद्धति (स्त्री) प्रणाली २ प्रकार, जाति (स्त्री), भेद, विधा (समासांत में) ३ रचना, घटन, निर्माण ४ युक्ति (स्त्री), उपाय ५ व्यवहार, आचरण ६ व्याज, मिष ७ लक्षण, चिह्न ८ स्थिति (स्त्री), दशा ।
ढगी, वि (हिं ढग) चतुर, विदग्ध, धूर्त ।
ढंढोरा, स पुं (अनु ढढ) दे 'ढौंडी' ।
ढँढोरिया, सं पु (हि ढँढोरा) उद् घोषक, प्रत्यापक ।
ढई, स स्त्री (हिं ढहना) दे 'धरना' सं पु ।
ढकना, स पु, दे 'ढकन' । क्रि स, दे 'ढाँकना' । क्रि अ, आच्छाद् आवृ पिधा (कर्म) ।
ढकनी, सं स्त्री, दे 'ढकन' ।
ढकवाना, क्रि प्रे, व 'ढाँकना' के प्रे रूप ।
ढकेल, स पु दे 'धकेल' ।
ढकेलना, क्रि स, दे 'धकेलना' ।
ढकोसला, सं पु (हिं ढग+स कौशलम्) दम, आडबर, पाखड ड, कापट्य, छाद्मिकता ।
ढक्कन, सं पु (स ढक = छिपना) पिधान, पुट टी, छद, छदन, आवरणम् ।
ढचर, स पु (हिं ढाँचा) परिच्छद, उप करणसामग्री २ आधार, उपष्टम ३ कलह, विवाद ४ व्यवसाय, वृत्ति (स्त्री) ५ आ डम्बर ६ जरठ ।
ढप, स पु, दे 'डफ' ।
ढपना, स पु (हिं ढाँपना) दे 'ढकन' । क्रि अ, दे 'ढकना' क्रि अ ।
ढब, स पु, द 'ढग' ।
ढमढम, सं पु (अनु) पटह भेरी, नाद, ढमढमध्वनि (पु), ढगडमायितम् ।
ढरका, स पु [हिं ढर(ल कना] चि(च)लता, पिल्लता, नेत्रस्राव, अभिरय(ष्य द २ पशूना मौषधपाननल ।
ढरकी, सं स्त्री [हिं ढर(ल कना] त(त्र सर, मल्लिक ।
ढर्रा, सं पुं (हिं ढरना) मार्ग, पथिन् २ शैली, पद्धति (स्त्री) ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ आचार, आचरणम् ।
ढलकना, क्रि अ (हिं ढाल) प्र परि, सु (भ्वा प अ), पत् (भ्वा प से) प्रस्यद् श्च्युत् (भ्वा आ से) २ 'लुढ़कना' । सं पुं, स(स्रा) व, श्च्योत, अवपात ।
ढलका, स पु, दे 'ढरका' (१) ।
ढलकाना, क्रि स, व 'ढलकना' के प्रे रूप ।
ढलना, क्रि अ (हिं ढाल) विलाप्य सधा घट् रच् कल्प (कर्म) २ दे 'ढलकना' । ३ व्यति अति, इ (अ प अ), व्यतिक्रम् (भ्वा प से) ४ दे 'लुढ़कना ५ प्री (दि आ अ), अनुकूली भू ५ अस्त गम् ।
साँचे में ढला, मु, अति, सुन्दर सुभग शोभन ।
ढलमल, वि, दे 'ढीला' ।
ढलवाँ, वि (हिं ढालना) विलाप्य घटित रचित कल्प २ अवसर्पिन, प्रवण ।
ढलवाना, क्रि प्रे, व 'ढालना' के प्रे रूप ।
ढलाई, सं स्त्री (हिं ढालना) विलाप्य घटनं रचन कल्पन २ द्रावण विलापन, भृति (स्त्री) ।
ढहना, क्रि अ (स ध्वसन) ध्वस अवस्रस् (भ्वा आ से), अवपत् (भ्वा प से) २ वि,नश् (दि प वे) ।
ढहवाना, क्रि प्रे, व 'ढहाना' के प्रे रूप ।
ढहाना, क्रि स (स ध्वसन) अवस्रंस् ध्वस् अवपत् उन्मूल् उत्पट् उच्छिद् उत्सद् (प्र) २ विनश् (प्रे) । स पुं, प्र वि ध्वस, उत्पाटन, उन्मूलन, उत्सादन इ ।
ढहाने योग्य, वि, विध्वसनीय, उन्मूल यितव्य इ ।

ढहानेवाला, स पु , विध्वसक , उत्पा`क ।

ढाँकना, क्रि स (स ढक=छिपाना) आ प्र सम् आ च्छद् (चु), आ प्र सं वृ (स्वा उ से), यव पि, धा (जु उ अ), अवगुठ (चु), निगुह (भ्वा उ से , निगुहति-ते) २ आ, स्तृ (स्वा उ अ) स्त (क्र उ से)।
स पु , आ प्र-सम,-च्छादन आ ग-वरण, पिधान अवगुठन, वेष्टन आस्तरण इ

ढाँकनेवाला, स पु , आच्छादक , आवरक , पिधायक ।

ढाँका हुआ, वि , आच्छादित आवृत, पिहित इ ।

ढाँचा, स पु (स स्थाता >) आकार , आधार , उपष्टम , सस्थान, प्रारम्भिक रूप-आधार ।

ढाँपना, क्रि स , दे 'ढाँकना' ।

ढाई, वि (स अर्धद्वितीय >) सार्द्धद्वि ।

ढाक, स पु (सं आषाडक) पलाश , किंशुक , पर्ण यज्ञिय , रक्तपुष्पक , वातहर , समिद्वर ।

—के तीन पात, मु , सदादरिद्रता निरन्तर निर्धनता ।

ढाड, स स्त्री (अनु) चीत्कार , आक्रन्द , उत्क्रोश २ गर्जित, गर्जन-ना, महागम्भीर, नाद ।

—मारना, मु , सचीत्कार सात्रद रुद् (अ प से)।

ढाढस, स पु (स दृढ >) धीरता, धैर्य, चित्त स्थैर्य, शान्त (स्त्री) २ सम् , आश्वास सन, सात्वन ना ३ साहस, चित्तदार्ढ्य ।

—देना या बँधाना, मु , आ सम-श्वस् (प्रे) शं (सां)त्व (चु), विनुद् (प्रे) २ प्रोत्सह् (प्रे)।

ढाना, क्रि स , दे 'ढहाना' ।

ढाबा, स पु (देश) भोजन, गृह शाला २ दे 'परछत्ती' । ३ कुड्य,-वहोल करट ३ आलम् , पाश ।

ढारस, स पु , दे 'ढाढस' ।

ढाल[1], स स्त्री (स न) चर्मन् (न), फलक क, फल्गु ।

ढाल[2], स स्त्री (स धार >) क्रमश निम्नता प्राव य, प्रवण-ता-त्व २ निम्न, प्रवण, प्रवण अवसर्पि, भूमि (स्त्री) ३ पर्वत , उत्सग , कटक क, नितम्ब ४ प्रकार , विधि (पु), गति (स्त्री)।

ढालना, क्रि स (हिं ढाल) विलाप्य रच् घट् कल्प (प्रे) निर्मा० (जु आ अ) २ (मद्य) पा (भ्वा प अ) ३ दे 'उँडेलना' ।

ढालवाँ, वि (हिं ढाल) दे 'ढलवाँ' (१ २)।

ढालिया, स पु (हिं ढालना) पात्रकार २ सुवर्णकार ।

ढाली, स पु (स ढलिन्) ढाल चर्म फलक, धारिन् २ सैनिक , योध ।

ढासना, स पु (स धा-धारण+आसन >) पृष्ठासन (पृष्ठ-) अवष्टम अवलम्बन आधार २ उपधान, उपबर्ह ।

ढिंढोरा, स पु (अनु ढम+स ढोल >) दे 'डौंडी' (१ २)।

ढिग, क्रि वि (स दिश >) समीपमे ।
स स्त्री , सामीप्य, नैकट्य २ अत , प्रान्त ।

ढिठाई, स स्त्री (हिं ढीठ) धार्ष्ट्य, प्राग ल्भ्य, वैयात्य, अविनय , अशिष्टता, धृष्णता ।

ढिबरी[1], स स्त्री (हिं डिब्बा)मृत्तैलदीप-पिका ।

ढिबरी[2], स स्त्री (हिं दबना) •बन्धकील करोधनी ।

ढिमका, सर्व (हिं अमका का अनु) अमुक ।

ढिलढिला, वि (सं शिथिल) कोमल, स्निग्ध मेदुर, अकठिन ।

ढिल्लड, वि (हिं ढीला) मद, मथर, अलस ।

ढीठ, वि (स धृष्ट) अशिष्ट, प्रगल्भ, वियात, कुड्, शील, विनयविहीन ।

ढील, स स्त्री (हिं ढीला) काल,-अतिपात क्षप यापन-हरण,विलम्ब ,व्याक्षप २ आलस्य, मथरता ३ शिथिलता, शैथिल्य, श्लथता ।

—करना, क्रि अ , काल क्षिप् (तु प अ), विलम्ब (भ्वा आ से)।

—देना, मु , यथेष्टमाचरितु अनुमन् (दि आ अ) अनुज्ञा (क्र उ अ) २ शिथिलीकृ, श्लथ् (चु)।

ढीला, वि (स शिथिल) प्र,श्लथ, विगलित, सस्त, अदृढ, असमद्ध, २ अलस, तन्द्रिल, तन्द्रालु, मद, मथर ३ काल, अतिपातिन् क्षेपक ।

ढीलापन, सं पु , दे, 'ढील' ।

ढीढ़, स पु, दे ढीला।
ढुँढवाना, क्रि प्रे, व 'ढूँढना' के प्रे रूप।
ढुंढि, पु (स) गणेश, गणपति।
ढुंढी, स स्त्री, (स तुन्दी) १ तुद दि (स्त्री) नाभि (पु स्त्री) २ बाहु, भुज जी
ढुकना, क्रि अ (देश) प्रविश (तु प अ) २ सहसा अभिद्रु (भ्वा प अ) आक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ)।
ढुलकना, क्रि अ, दे लुढकना।
ढुलकाना, क्रि स, दे 'लुढकाना'।
ढुलना, क्रि अ, दे 'ढलकना' २ दे लुढकना' ३ प्री (दि आ अ) अनुग्रह् (क प से), दय् अनुकप (भ्वा आ से)।
ढुलवाई, ढुलाई, स स्त्री (हिं ढुलवाना) वाहन, नयनं, हरण, भरण २ वाहनवेतन, प्रापणनिर्वेश।
ढुलवाना, क्रि प्रे, व 'ढोना तथा 'ढुलना' के प्रे रूप।
ढुलाना, क्रि प्रे, व ढुकना तथा 'ढोना' के प्रे रूप।
ढूँढ, स स्त्री (हिं ढूँढना) दे 'खोज'।
ढूँढना, क्रि क (स ढुढन) दे खोजना'।
ढूह-हा, स पु (स स्तूप) राशि (पु) चय २ वामलूर, क्षुद्रपर्वत।
ढेंकली, स स्त्री (हिं ढेंक) जलकर्षणयंत्र २ धान्यकुट्टनी ३ वक्रतुडयन्त्र (अर्क उतारने का यत्र) ४ दे 'कलाबाजी'।
ढेर, स पु (हिं धरना>?) राशि (पु), निकर, चिति (स्त्री), निस, चय, स्तोम, पुज, समार। वि, प्रचुर प्रभूत, बहुल, भूरि, विपुल, पर्याप्त।
—लगाना, क्रि स, राशी कृ, सचि (स्वा उ अ)।
—करना, मु, व्यापद् य् (प्र)।
ढेरी, स स्त्री (हिं ढेर) क्षुद्रराशि (पु), दे 'ढेर'।
ढेला, स पु (हिं ढला) लोष्ट, मृद्, खड पिंड, लोष्ट ह, दरिणि (पु स्त्री) लोष्टु, २ पिंड, खड-ड ३ धान्यभेद।
ढैया, स पु (हिं ढाई) सार्द्धद्विसेरकात्मक तोल २ सार्द्धद्विगुणनसूची।
ढोंग, स पु (हिं ढग) आडंबर, दंभ, पाषण्ड, कपट, छद्मन् (न), वचना, प्रतारणा।
ढोंगी-गिया, वि (हिं ढोंग) दांभिक, वचक, प्रतारक, कापटिक छाद्मिक, पापडिन्।
ढोटा, स पु (हिं ढोटी) पुत्र २ बालक।
ढोटा, स स्त्री (स दुहितृ) पुत्री २ बालिका।
ढोना, क्रि स (स वोढ वा ऊढ, विपर्यय से ढोव) वह्, नी (भ्वा उ अ) (उत्पाट्य) हृ (भ्वा उ अ)। स पु, वहन, नयन, हरणम्।
ढोनेवाला, स पु भार, वाहक हार।
ढोर, स पु, दे, 'पशु'।
ढोल, स पु (स) आनक, पटह ह, ढक्का २ कर्णदुदुभि (पु)।
ढोलक-की, स स्त्री (स ढोलक) भेरी रि (स्त्री), दुदुभि (पु)।
ढोलकिया, स पु (स ढोलक>) ढोलक वादक, पटहताडक।
ढोंचा, स पु (स अर्द्ध+हिं चार) सार्द्धचतु गुणनसूची।

ण

ण देवनागरीवर्णमालाया पचदशो व्यजनवर्ण, णकार।

त

त, देवनागरीवर्णमालाया षोडशो व्यजनवर्ण, तकार।
तक, स पु (स) भय भीति (स्त्री) त्रास २ कष्टमय देहमय, जीवनम् ३ वियोगदु खम् ४ टक, तक्षणी।
तग, वि (फा) दृढ, शैथिल्यशून्य, ससक्त, सुसहत गाढ २ अर्दित, उद्विग्न, संतप्त, पीडित, विकल ३ विस्तारविरहित, सबाध, सकट, सकु (को) चित, सकीर्ण। स पु कक्ष्या, नध्री, वरत्रा।
—दस्त, वि (फा) निर्धन, दरिद्र।

—दस्ती, स स्त्री (फा) अकिंचनता, दारिद्र्यम्।
—दिल, वि (फा) कदर्य, कृपण, मितपच।
—आना, या होना, मु, खिद् (दि रु आ अ), सतप (कर्म)।
—करना, मु, खिद्-यथ सतप (मे)।
हाथ तग होना, मु, दरिद्रा (अ प से) निर्धन (वि) भू।
तगी, स स्त्री (फा) सकोच, सकीर्णता, विस्ताराभाव, सबाधता २ दृढता, सहति सुनमक्ति (स्त्री), गाढता ३ कष्ट, दुख ४ निधनता, दरिद्रता ५ न्यूनता।
तडुल, स पु (स) दे 'चावल'।
तति, स स्त्री (स) रज्जु (स्त्री), गुण, वर्ग रशना २ पक्ति (स्त्री), श्रेणी पि (स्त्री)।
—पाल, स पु, गोरक्षक (२) अज्ञातवासे सहदेवस्य सज्ञा (महा०)।
तत, स पु (स) सूत्र, तन्त्र, गुण २ सतान।
—वाय, स पु, दे 'जुलाहा'।
तत्र, स पु (स न) तन्तु (पु), सूत्र २ तन्तु-वाय-वाप, कुविंद, पटकार ३ पट निर्माणपरिच्छद ४ सपत्ति (स्त्री) ५ अधीनता, पराश्रय ६ शासन, शासनपद्धति (स्त्री) ७ कारण ८ काय ९ परिवार १० सेना ११ गारुड, मत्र १२ औषध १३ राज्य १४ शास्त्रभेद।
तत्री, स स्त्री (स) तन्त्रि (स्त्री), वीणादीनां गुण २ गुण, रज्जु (स्त्री) ३ वीणा, सतन्त्री वाद्य ४ देहशिरा। स पु (स तन्त्रिन्) वीणावादक २ गायक ३ सैनिक।
तदुरस्त, वि (फा) स्वस्थ, नीरोग।
तदुरस्ती, स स्त्री (फा) स्वास्थ्य, नीरोगता।
तदूर, स पु (फा तनूर) आपाक, उखा, कदु (पु स्त्री)।
तदेही, स स्त्री (फा तनदिही) परिश्रम, प्रयत्न।
तद्रा, स स्त्री (स) निद्रा, आलस्य, निद्रालुता, शयालुता, तद्रालुता।
तद्रालु, वि (स) तद्रिल, निद्रालु, निद्रा, पर-वश, सुषुप्सु, शयालु।
तबाकू, स पु, दे 'तमाकू'।
तबीह, स स्त्री (अ) शिक्षा, अनुशासन, उपदेश।
तबू, स पु (हिं तनना) पट, कुटी मडप गृह, दूष्य म्य, केणिका, मलन, स्थूलम्।
शाही—, स पु, उपकार्या।
तबूर, स पु (फा) पटह, पणव, मुरज।
तबूरा, स पु (स तुबर) तानपूरक, वीणाभेद।
तबोल, स पु (स ताबूल >) नाबूल, वर शुल्क क (पजाब) २ वरयात्रिव्यय तांबूल (बुदेलखड)।
तबोली, स पु (हिं तबोल) तांबूलिक, तांबूलविक्रेतृ (पु)।
तअज्जुब, स पु (अ) आश्चर्य, विस्मय।
तअम्मुल, स पु (अ) धैर्य, शांति (स्त्री)।
तअल्लुक, स पु (अ) भूमि (स्त्री), क्षेत्र २ प्रदेश, प्रांतभाग, मडलम्।
—दार, स पु, भू-क्षेत्र, स्वामिन्, क्षत्रपति।
तअल्लुक, स पु (अ) सबध, ससर्ग।
तअस्सुब, स पु (अ) धार्मिक जातीय, पक्षपात।
तईं, प्रत्य (प्रा तुनो) प्रति,-अर्थम्।
(इसका अनुवाद प्राय द्वितीया या चतुर्थी के रूपों से करते हैं)।
तक, अव्य (सं अत+हिं क) यावत्, पर्यन्त आ (समास में या पचमीयुक्त)। आमरण, आमरणात्, मरण यावत्, मरणपर्यन्तम् इ।
तकड़ा, वि (हिं तन+कड़ा) बलवत्, सबल, पुष्ट [तकड़ी (स्त्री)-बलवती, सबला]।
तकड़ी, स स्त्री (देश) तुला, मापन, धट, तौलम्।
तकदीर, स स्त्री, (अ) भाग्य, दैवम्।
तकरार स स्त्री (अ) कलह, विवाद।
तकरीर, स स्त्री (अ) भाषण, व्याख्यानम्।
तकला, स पु [स तर्कु (पु स्त्री)] तर्कुट, कार्पासनासिका।
तकली, स स्त्री (हिं तकला) तर्कुटी क्षुद्रतर्कु (पु स्त्री) २ आवापन, तन्तुकील।
तकलीफ, स स्त्री (अ) कष्ट, क्लेश, आपद् (स्त्री)।
तकल्लुफ, स पु (अ) शिष्टाचार, नैयमिकता।
—करना, शिष्टवत् आचर् (भ्वा प से), शिष्टाचार दृश (प्र)।

बेतकल्लुफ, वि, सरल, ऋजु।
तक्वीयत, स स्त्री (अ०) पुष्टि शक्ति (स्त्री) बलम् । २ सान्त्वनना, आश्वास, आश्वासनम्।
तकसीम, स स्त्री (अ) बटन, विभाग, विभागपरिकल्पन २ बटन, सप्रविभाग ।
—करना, क्रि स, भज् विभज् (भ्वा उ अ) २ वट् व्यश (चु)।
तक्सीर, स स्त्री (अ) अपराध, दोष ।
तकाजा, स पु (अ) (ऋणशोधनार्थं) अनुरोध, प्रेरणा।
—करना, ऋणशोधनार्थं सनिर्बंध प्रार्थ (चु आ से) २ अनुरुध् (रु प अ)।
तकावी, सं स्त्री (अ) कृषकेभ्यो बीजाद्यर्थ दत्तऋणम्।
तकिया, स पु (फा) उपधान, उपबर्ह २ आश्रय, अवलब ३ यवनभिक्षुककुटी।
—कलाम, स पु (फा+अ) •वागाश्रय, •सहजवाक्यम्।
तकुआ, स पु, दे 'तकला'।
तक्र, स पु (स न) पादांबुसयुत दधि (न), मथितम्।
तक्षक, स पु (स न) त्वक्षण, तनूकरण, काष्ठस्य समीकरण २ उत्किरण, उत्कीर्य मूर्तिनिर्माणम् ।
तक्षण, स पु (सं) पातालस्थो नागविशेष २ सर्प, अहि (पु)।
तखमीना स पु (अ) अनुमान २ मूल्य निरूपणम्।
तख्त, सं पु (फा) नृपासन, सिंहासन, भद्रासन २ फलक क, मच ।
—नशीन, वि (फा) सिंहासन-आसीन-आरूढ ।
—पोश, स पु (फा) मचाच्छादन, फलक प्रच्छद २ फलक क, मच ३ दे 'चौकी'।
तख्ता, स पु (फा) काष्ठ-दारु, फलक फलक २ पट्ट ट ३ पीठ, मच ४ द्वार, फलक यान ५ दे 'पयारी'।
तख्ती, स स्त्री (फा तख्ता) क्षुद्रफलक, पीठिका २ (काष्ठ) पट्टी पट्टिका।
तगड़ा, वि, दे 'तगड़ा'।
तगण, स पु (स) छन्द शास्त्रे गणभेद, अन्तलघुर्गण । (उ० तूफान, तैंतीस)
तगर, स पु (सं न) वक्र, कुटिल, जिह्म, दीपनम्।
तगाड़, सं पु (सं तडाग गम्>) सुधाकर्द मादिमिश्रणार्थ कुडम्, तडाग ।
तगादा, सं पु, दे 'तकाजा'।
तज, सं पु (स त्वच) बहुगंध, मुखशोधन, उत्कट, २ धवलं, सिंहलम्।
तज़्किरा, स पु (अ) वर्णन, चर्चा २ जीव नचरितम्।
तजर(रु)बा, सं पु (अ) सपरीक्षा, प्रयोग, परीक्षा क्षण, २ अनुभव, परीक्षालब्ध-अनुभव जनित, ज्ञान, बुद्धिपरिपाक ।
—कार, सं पु (फा) अनुभविन्, बहुदर्शिन्।
—करना, कि स, अनुभू २ परीक्ष (भ्वा आ से), प्रयुज् (चु)।
तजवीज, स स्त्री (अ) मत, मति (स्त्री), तर्क २ निर्णय ३ उपाय, युक्ति (स्त्री)।
तट, स पु (स तट ट) तटी टा, कूल, तीर, रोधम् (न)। क्रि वि, समीपे।
तटस्थ, वि (स) तीरस्थ, कूलस्थ २ निष्प क्षपात, उदासीन, उभयसामान्य, सम, भाव दृष्टि।
तड़, स पु (सं तट >) पक्ष, दल म्।
तड़, स पु (अनु)प्रहारज शब्द, तटत्कार ।
तड़कना, क्रि अ (अनु तड) वि, दल (भ्वा प से), स्फुट (तु प से) दृ भञ् भिद् (कर्म) २ क्रुध (दि प अ)।
तड़का, सं पु (हि तड़कना) प्रभात, विभात, उषस (स्त्री न), प्रत्यूष, अहर्मुखम्।
तड़के, कि वि, प्रत्यूषे, प्रभाते।
तड़प, स स्त्री (हि तड़पना) कप, स्पद, स्फुरित २ सक्षोभ, उपप्लव, आकुलत्वम् ।,
तड़पना, क्रि अ (अनु) क्षुभ् (दि, क्र् प से, भ्वा आ से) आकुली क्षुब्धो विह्वली भू २ अत्यधिक अभिलष (भ्वा उ से)।
तड़पाना, क्रि स, उद्विज् (प्रे) प्रविसं क्षुभ (प्रे), आकुली कृ।
तड़फड़ाना, **तड़फना**, } क्रि अ, दे 'तड़पना'।
तड़ाक का, सं पु (अनु) ताडनध्वनि (पु) २ त्रोटन भग, शब्द विराव ।
तड़ाक, स पु (सं पु न) दे 'तालाब'।

तड़ातड़, क्रि वि, (अनु) सतडतडशब्दम्।
तड़ित, सं स्त्री (स) विद्युत् (स्त्री) चपला, चचला, शपा।
—पति, स पु (स) मेघ, नीरद ।
तड़ी, स स्त्री (अनु०) चपेट, चपेटिका, चपेटकरतल, प्रहार ।
तति, स स्त्री (स) पंक्ति श्रेणी (स्त्री), २ समूह ३ विस्तार ।
ततैया, स स्त्री (स तप्त>) वरट गंटी इष्टाचिका गधोली, वरल वरोल विष, शुक-शृंगी ।
तत्काल, क्रि वि (स न) तत्क्षणात् अचिरादेव, सद्य एव, आशु द्राक, झटिति, तत्काले।
तत्कालीन, वि (स) तात्कालिक [-की (स्त्री)] तदानातन [-नी (स्त्री)]।
तत्क्षण, क्रि वि (स तत्क्षण) दे 'तत्काल'।
तत्त्व, स पु (स न) तथ्य, याथार्थ्य, सत्य, सत्यता वास्तविकता २ पचभूतानि ३ मूलकारण ४ सार, सार-अश-वस्तु (न) ५ ब्रह्मन् (न)।
—अवधान, स पु (स न) निरीक्षण अवेक्षणम्।
—ज्ञान, स पु (स न) परमार्थ ब्रह्म-ज्ञानम्।
—ज्ञानी, स पु (स निन्) । तत्त्वज्ञ ।
—दर्शी स पु (स शिन्) । दार्शनिक ।
—वादी, स पु (स दिन्) तत्त्ववक्तृ (पु) २ यथार्थ-स्पष्ट वादिन् ।
विद्, स पु (स विद्) दे 'तत्त्वज्ञानी'।
—विद्या, स स्त्री (स) दर्शनशास्त्रम्।
—वेत्ता, स पु (स वेत्तृ) दे 'तत्त्वज्ञानी'।
तत्पर, वि (स) आसक्त, निरत, व्यापृत समाहित, अभिनिविष्ट, विश, व्यग्र २ एकाग्र, सुसमाहित, सावधान ३ सनद्ध, सज्ज, सज्जीभूत, उपक्लृप्त।
तत्परता, स स्त्री (स) अभिनिवेश आसक्ति (स्त्री), मनोयोग, एकाग्रता, एकनिष्ठता, अनन्यचित्तता।
तत्पुरुष, स पु (स) परमेश्वर २ समासभेद (व्या)।
तत्र, अव्य (स) तस्मिन् स्थल-स्थाने।
तथा, अव्य (स) च, (द्वन्द्व समास से भी, उ राम तथा श्याम = रामश्यामौ इ) २ तादृश, तत्सम, तत्तुल्य।
तथापि, अव्य (स) तदपि, तत्रापि, एवमप्यपि ।
तथास्तु, अव्य (स) एव अस्तु भवतु।
तथ्य, स पु (स न) यथार्थता, सत्य, सत्यता ।
तदन्तर | तदनन्तर } क्रि वि (स तदनन्तर) तदनु, तत्पश्चात्, तत, अथ, अनन्तरम्।
तदनुरूप, वि (स) तत्सदृश, तत्तुल्य, तदाकार।
तदनुसार, वि (स) तदनुकूल, तदनुरूप।
तदबीर, स स्त्री (अ) साधन, उपाय-युक्ति (स्त्री)।
तदा, क्रि वि (स) तस्मिन् काले समये।
तदाकार, वि (स) तद्रूप २ तन्मय।
तदीय, सर्व (स) तत्सम्बन्धिन्, तस्य।
तदुपरांत, क्रि वि, दे 'तदनन्तर'।
तद्धित, स पु (स) प्रत्ययभेद (व्या) २ तद्धितांतशब्द ।
तद्रूप, वि (स) सदृश क्ष [शी क्षी (स्त्री)], तदाकार।
तद्वत्, अव्य (स) तत्सदृश, तत्तुल्यम्।
तन, स पु [फा । मि, स तनु (स्त्री)] देह, शरीर, वपुस (न), गात्रम्।
—मन, स पु, तनुमनसी देहदेहिनौ (द्वि)।
—मन मारना, मु, कामान् अवनिरुध् (रु उ अ)
—मन से, मु, सावधान, अनन्यवृत्त्या सर्वात्मना एकाग्रचित्तेन (तृ एक)।
तनख्वाह, स स्त्री (फा) दे 'वेतन'।
तनना, क्रि अ (स तनन>) प्र वि-तन् (कर्म), प्र, लंब (भ्वा आ से), प्रसृ (भ्वा प अ) विस्तृ (कर्म) २ उच्छिन उत्तान उन्नत (वि) स्था (भ्वा प अ) ३ दृप् (दि प से तु)।
तनय, स पु (स) पुत्र, सूनु (पु), आत्मज ।
तनया, स स्त्री (स) पुत्री, दुहितृ (स्त्री), आत्मजा ।
तनहा, वि (फ) एकल, एकाकिन्, असहाय। क्रि वि, एव, केवलम्।

तनहाई स स्त्री (फा) विजनता, विविक्तता २ विजन विविक्त ३ एकाकिता, असहायता।
तनाजा, स पु (अ) कलह कलि (पु) २ वैमनस्य शत्रुता।
तनिक वि (स तनुक) अल्प, स्तोक, अणु। क्रि वि किंचित्, स्तोक, ईषत्, मनाक् (सब अ य)।
तनी, स स्त्री (हिं तानना) बध, बधन, बधनी।
तनु, स स्त्री (स) तनू (स्त्री) देह काय, वपुस् (न) २ त्वच (स्त्री) ३ नारी। वि, कृश दुर्बल, क्षीणकाय २ अल्प, दभ्र ३ कोमल पेलव ४ सुदर उत्कृष्ट।
—कूप, स पु (स) रो (लो)म, कूप रध्रम्।
—धारी, वि (स रिन्) देहिन्, शरीरिन्, प्राणिन्।
तनुज, स पु (स) पुत्र आत्मज, सूनु।
तनुजा, स स्त्री (स) पुत्री, आत्मजा, तनया।
तनू स पु (स स्त्री) देह, काय।
—उद्भव, स पु (स) पुत्र, तनुज।
—उद्भवा, स स्त्री (स) पुत्री, तनुजा।
तनूर, दे 'तदूर'।
तन्मनस्क, वि (स) तल्लीन, तन्मय।
तन्मात्रा, स स्त्री (स त्रम्) सूक्ष्ममूलतत्त्वम् (उ शब्द, स्पर्श, रूप रस, गध)।
तन्मय, वि (स) नि, मग्न, दत्तचित्त, अव हित आसक्त, लीन, निरत, पर परायण।
तन्वी, स स्त्री (स) तन्वगी, कोमलागी, कृशागी।
तप[1], स पु [स तपस (न)] तपस्या, तप, व्रतादान नियमस्थिति (स्त्री), परि व्रज्या व्रतचर्या।
—करना, क्रि अ, तपस्यति (ना धा), तप तप् (दि आ अ) या आचर (भ्वा प से)।
तप[2], स पु (स) ताप, दाह, उष्म, ऊष्मन् (पु) २ ग्रीष्म ३ ज्वर।
तपक, स स्त्री (हिं तपकना) आकस्मिक, प्रकप स्फुरण-आरंभ।
तपकना, क्रि अ (हिं तमकना) स्फुर (तु प अ), अकस्मात् स्पन्द (भ्वा आ से)।
तपन, स पु (स न) ताप, ऊष्मन् (पुं), दाह, तप २ सूर्य ३ सूर्यकांतरत्न ४ ग्रीष्म।
तपना, क्रि अ (स तपन) तप (भ्वा प अ), दीप् (दि आ से), उष्णी भू २ सतप् क्लिश पीड् (कम) यत् (भ्वा आ से)।
तपश्चर्या, तपस्या, } स स्त्री (स) दे 'तप[1]'।
तपस्विनी, स स्त्री (स) तापसी, तपोधना २ प्रतिव्रता ३ दीना।
तपस्वी, स पु (स स्विन्) तापस, तपोधन, पारि (र) कांक्षिन्, पारिकांक्षक, यति (पु) २ दीन, दरिद्र।
तपाक, स पु (फा) आवेश आवेग, २ शीघ्रता।
तपाना, क्रि स, व 'तपना के प्र रूप।
तपी, स पु (हिं तप) दे तपस्वी।
तपेदिक, स प (फा तप+अ दिक) क्षयरोग, राजयक्ष्मन् (पुं)।
तपोधन, स पु (स) तपो निष्ठ निधि राशि (पु), तपस्विन्।
तपोबल, स पु (स न) तपस्याशक्ति (स्त्री)।
तपोभूमि, स स्त्री (स) तपस्यास्थानम्।
तपोवन, स पु (स न) तपस्यारण्यम्।
तप्त, वि (स) उष्ण, तापित, दे 'गरम' २ दु खित, पीडित, क्लेशित।
तफरीक, स स्त्री (अ) व्यवकलन विवर्जन, उद्धार।
—करना क्रि स, व्यवकल् विवृज-ऊन् (चु), उद्धृ (भ्वा प अ)।
तफरीह, स स्त्री (अ) प्रसन्नता, मोद २ विनोद, परिहास ३ भ्रमणम्।
तफसील स स्त्री (अ) विवरण विस्तार २ विस्तृतवर्णन ३ टीका, व्याख्या ४ सूची।
तब, क्रि वि (स तदा) तदानीं, तस्मिन् काले २ तत तत्पश्चात्, तदनु, तदनतरं, तत पर ३ अत, अनेन कारणेन इति हेतो।
—तक क्रि वि, तावत्, तावत् काल पर्यंतम्।
—भी, क्रि वि, तदपि २ तथापि, तदपि, एव सत्यपि।
—से, क्रि वि, तत तदा, प्रभृति आरभ्य।
—ही, क्रि वि, तदैव, तत्काल, तत्क्षणं, द्राक्।

तबदील वि (अ) परिवर्तित, अयथावृत्त।
—करना, क्रि स परिवृत (प्रे)।
तबदीली, स स्त्री (अ) परिवर्तनं,र्तनं, परिवृत्ति (स्त्री), विपर्यय २ विकार, विकृति (स्त्री)।
तबल्ची स पु (अ तबल)•तबल्कवादक।
तबला, स पु (अ तबल •तबल्की (द्वि) वाद्यमेद।
तबाशी(शी)र, स पु (स तवक्षीर) यवज यवचोद्भव, पयक्षीर, गोधूमज २ वंशरोचना, त्वक्क्षीरा री, वंशी, वैणवी।
तबाह, वि (फा) ध्वस्त, नष्ट उत्सन्न।
तबाही, स स्त्री (फा)प्रवि, ध्वंस, वि,नाश
तबि(बी)अत स स्त्री (अ) चित्त मानम, चेतस मनस्(न) अन्तःकरण, हृदय, स्वान्त २ प्रकृति (स्त्री), स्वभाव।
—आना, मु छिद् (दि प से) अनुरज् (कर्म)।
—बिगड़ना, मु, रुग्ण (वि) भू विवमिषति (सन्नत)।
तबीब, स पुं (अ)वैद्य चिकित्सक,भिषज(पु)।
तबेला, स पु (अ) मदुरा, अश्व वाजि, शाला।
तभी, क्रि वि (हिं तब+ही) तत्क्षण तत्काल, तदैव २ तेनैव कारणेन, इति हेतो।
—से, क्रि वि, तदारभ्य तत प्रभृति।
तमंचा, स पु (फा) दे 'पिस्तौल'।
तम, स पु [स तमस (न)] अन्धकार, तिमिर, ध्वान्त, तमिस्र स्रा २ प्रकृतेस्तृतीयो गुण (सांख्य) ३ क्रोध ४ अज्ञान, अविद्या ५ कालिमन् (पु), श्यामता ६ मोह ७ पाप ८ नरक कम्।
तमअ, स्त्री (अ) इच्छा २ लोभ।
तमक, स स्त्री (हिं तमकना) आवेश, उद्वेग २ क्षिप्रता, त्वरा ३ क्रोध, कोप ४ दर्प, अभिमान ५ (कोपादिभ्य) अरुणाननता।
तमकना, क्रि अ (अनु)(कोपादिभ्य) अरुणानन लोहितवदन (वि) भू २ अत्यन्त कुप् (दि प से)।
तमगा, स पुं (तु) पदक, कीर्ति प्रतिष्ठा मुद्रा।
तमचर, पुं (स तमीचर) राक्षस, निशाचर, पिशाच २ उल्लूक, घूक, कौशिक।
तमचुर,चूर चोर, सं पु (स ताम्रचूड) कुक्कुट कालज्ञ, चरणायुध।
तमतमाना, क्रि अ (स तम्र>) (क्रोधातपादिभ्यो मुख) अरुणी रक्ती भू, अरुणानन लोहितमुख (वि) जन् (दि आ से)।
तमतमाहट स स्त्री (हिं तमतमाना) (क्रोधादिजा) अरुणवदनता लोहिताननता।
तमन्ना, स स्त्री (फा) अभिलाष, आकांक्षा।
तमस, स पु दे तम'।
तमस्सुक, स पु (अ) ऋणपत्र समयलेख, आधिकरणिकपत्रम्।
तमा, स स्त्री (अ तमअ) लोभ वित्तहा।
तमाकू-खू, स पु (पुर्त टबैको) ताम्रकूट, तमाखु वक्त्रभूगी, कृमिघ्नी, धूम्रपत्रिका क्षार पत्र, सुरती।
—पीना, क्रि स, धूम पा (भ्वा प अ), धूमपान कृ।
तमाचा, स पु (फा) दे 'चपत'।
तमाम, वि (अ) समस्त, समग्र, सम्पूर्ण २ समाप्त, अवसित।
काम तमाम करना, मु, व्यापद् मृ (प्रे)।
तमाल, स पु (स) कालस्कन्ध, कालनील, ताल, महाबल।
तमाशबीन, स पु (अ तमाश +फा बीन) दर्शक, प्रेक्षक २ पार्श्वसमीप, स्थ ३ सामाजिक, पारिषद ४ वेश्यागामिन्।
तमाशबीनी, स स्त्री (अ +फा) वेश्यागामित्वम्।
तमाशा, स पु (अ) नाटक २ रूपक कौतुक चमत्कार, दृश्य ३ अद्भुत विलक्षण, व्यापार।
—करना, क्रि स, नट निरूप् प्रयुज (चु), अभिनी (भ्वा प अ)।
—करनेवाला, स पु, नट, अभिनेतृ (पुं)।
—गाह, स स्त्री, रंग, शाला भूमि (स्त्री), नाटकगृहम्।
तमाशाई, दे 'तमाशबीन'।
तमीज, स स्त्री (अ) विवेक, परिच्छेद, विवेचनशक्ति (स्त्री) २ ज्ञानं, बोध ३ सभ्यता, शिष्टाचार, विनय।
तमोगुण, स पु (स) प्रकृतेस्तृतीय (अधम) गुण।

तमोगुणी, वि (सं गिन्) अधमवृत्तिक, तमो गुणप्रधान।

तमोली, स पु दे 'तम्बोली'।

तय, वि (अ) समाप्त, अवसित २ निश्चित, नियत ३ निर्णीत।

तरंग, स स्त्री (सं पु) भंग, भंगी ति (स्त्री) वीची चि (स्त्री), ऊर्मी मि (स्त्री) लहरी रि (स्त्री) कल्लोल, जललता, उत्कलिका २ स्वरलहरी ३ मानसलहरी, चित्ततरंग, छन्द, छन्दस (न)।

तरंगित, वि (सं) कल्लोलमय [यी (स्त्री)], नतोन्नत भंगिमत् [ती (स्त्री)]।

तरंगी, वि स —गिन्) सभंग, ऊर्मिमत्, कल्लोलवत् २ स्वैर, स्वैरिन्, कामचारिन्, स्वच्छन्द।

तर, वि (फा) आर्द्र, क्लिन्न २ शीतल ३ हरित, सरस ४ स्निग्ध, चिक्कण ५ समृद्ध, धनाढ्य।

तरकश, स पु (फा) इषुधि (पु), निषंग, तूणीर -रम्।

तरकारी, स स्त्री (फा तर -शाक) शाक -क, शिग्रु (पु), हरितक २ पक्वशाक क, व्यञ्जन ३ मांसम् (पंजाब)।

तरकी, स स्त्री [स ताट(ड)क] कर्ण, दर्पण मुकुर, कर्णिका, कर्णभूषणभेद।

तरकीब, सं स्त्री (अ) युक्ति (स्त्री), उपाय, प्रयोग २ रचनाप्रणाली, निर्माण-विधि (पु)।

तरक्की, स स्त्री (अ) उन्नति वृद्धि (स्त्री)।

तरखान, स पु (स तक्षन्) वर्द्धकिन् विन्, तक्षक, त्वष्ट, छाद।

तरग़ीब, स स्त्री (अ) प्रेरणा, उत्तजना, प्रोत्साहनम्।

—देना, कि स, प्रेर् प्रोत्सह् उत्तिज प्रवृत् (प्रे)।

तरजीह, स्त्री (अ) अधिमान, अधिक, रुचि (स्त्री) अनुराग मान, धृति (स्त्री) वरता।

तरजुमा, स पु (अ) दे 'अनुवाद'।

तरजुमान, स पु (अ) अनुवादक, भाषान्तरकार।

तरण, स पु (स न) पारगमन, प्लवनपूर्वक देशान्तरगमन, सन्तरणम्।

तरणि, सं स्त्री (सं) तरणी, नौका। स पु, सूर्य २ किरण।

—तनूजा, सं स्त्री (सं) यमुना।

तरणी, स स्त्री (सं) दे 'नाव'।

तरतीब, स स्त्री (अ) अनु,क्रम, विन्यास, व्यवस्था, यथास्थान स्थिति (स्त्री)।

—वार, कि वि, यथाक्रम, क्रमशः, क्रमेण।

तरदीद, स स्त्री (अ) प्रत्याख्यान, खण्डन, निरास, निराकरणम्।

तरना, कि स (सं तरण) दे 'तैरना' (२), मोक्ष मुक्ति-नि श्रेयस अधिगम्।

तरफ़, स स्त्री (अ) दिश् (स्त्री), दिशा, आशा काष्ठा, ककुभ् हरित् (स्त्री) २ पार्श्व इर्व, पक्ष। कि वि, अभि, प्रति, अभिमुख, उद्दिश्य, दिशि, दिशायाम्।

—दार, स पु, पक्षपातिन्, पक्ष्य, पक्षीय, पार्श्व(श्वि)क।

—दारी, स स्त्री, पक्ष, पात अवलम्बन-ग्रहणम्।

—दारी करना, कि स, पक्ष अवलम्ब् (भ्वा आ से) ग्रह् (क प से)।

दोनों—कि वि, उभयत, उभयत्र।

सब—या चारों—, कि, वि, समन्तात्, समन्तत, चतुर्दिक्षु, सर्वत, विश्वत, परित, अभित।

तरफ़ैन, स पु (अ) उभौ पक्षौ, अर्थिप्रत्यर्थिनौ।

तरबूज़, स पु (स तरबुज। मि फ़ा तर्बुज) कालिंग गोडुब, सेतु, (न), मांसफलम्।

तरमीम, स स्त्री (अ) सशोधनं, विशुद्धि (स्त्री)।

तरल, वि (सं) चचल, कम्प्र, कपन २ अनित्य, क्षणिक ३ द्रव, प्रवाहिन् ४ भासुर, भास्वर।

तरला, स स्त्री (सं) यवागू, आणा, दक्षिका २ सुरा ३ मधुमक्षिका।

तरवन, स पुं, दे, 'तरकी' २ दे 'कर्णफूल'।

तरवर, स पु (सं तरुवर) महावृक्ष २ पादप।

तरस, सं पु (सं त्रस >) कृपा, अनुकम्पा, करुणा।

—खाना, कि स, दय् (भ्वा आ से, षष्ठी के साथ), अनुकम्प् (भ्वा आ से), दयां कृ (सप्तमी के साथ)।

तरसना, कि अ (सं तर्षण) तृष् (दि प

से,), अत्यन्त अभिलष (भ्वा दि प से) स्पृह् (चु , चतुर्थी के साथ)-कांक्ष-वांछ् (दोनों भ्वा प से), लुभ् आकुलीभू ।

तरसाना, क्रि स , व 'तरसना' के प्रे रूप ।

तरसों, क्रि वि (स तृतीय+दिवस) तृतीयो गत आगामी वा दिवस , *इतरश्व (अव्य)।

तरह, स स्त्री (अ) जाति (स्त्री), प्रकार , भेद विधा (समासान्त में) २ रचनाप्रकार , घटन ३ शैली, रीति (स्त्री) प्रणाली ४ युक्ति (स्त्री), उपाय ५ वत् इव तुल्य, उपम ।

अच्छी—, क्रि वि , सम्यक , साधु, सुष्ठु (सब अव्य), सु (समासादि में)।

इस—,क्रि वि , इत्थ एव, अनया रीत्या ।

उस—, क्रि वि , तथा, तया रीत्या।

किस—, क्रि वि , कथ, येन प्रकारेण ।

जिस—, क्रि वि , यथा, येन प्रकारेण ।

बुरी—, क्रि वि , कु ,दुर् ,असभ्यव इ ।

हर— क्रि वि सर्वथा, सर्वप्रकारेण ।

—देना, मु उपेक्ष क्षम् (भ्वा आ से)।

तराई, स स्त्री (स तल>) उपत्यका, पर्वतासन्नभू (स्त्री)।

तराज़ू , सं पु स्त्री (फा) तुला, मापनभाण्ड , तुलायन्त्र, तौलम् ।

—की रस्सी, स स्त्री , शिक्या ।

तराबोर, वि (फा तर+हि बोरना) अति, सिक्त क्लिन्न ।

तरावट, स स्त्री (फा तर) आर्द्रता, क्लिन्नता २ शीतलता ३ बलातिहर पदार्थ ४ स्निग्धभोजनम् ।

तराशना, क्रि. स (फा) दे 'काटना', 'कतरना'।

तरी,[1] स स्त्री (स) तरि (स्त्री), नौका।

तरी,[2] स स्त्री (फा) आर्द्रता, क्लिन्नता २ शीतलता ३ उपत्यका ४ कच्छ कटम् ।

तरीका, सं पु (अ) रीति (स्त्री), प्रकार , शैली २ आचार , व्यवहार , अनुसार ३ उपाय , युक्ति (स्त्री)।

तरु, स पु (स) पादप , द्रुम , दे 'वृक्ष'।

तरुण, वि तथा स पु (स) युवक , दे 'जवान'।

तरुणाई, स स्त्री (स तरुण>) यौवनम् , दे 'जवानी'

तरुणी, वि स्त्री तथा स स्त्री (सं) युवति (स्त्री) दे 'युवती'।

तरेरना, क्रि स , (सं तिर्यक+हि हेरना) तिर्यक् वक्र साचि (सब अव्य०) दृश (भ्वा प अ) २ तर्जनवर्जनार्थ वक्र ईक्ष् (भ्वा आ से)

तरोई, स स्त्री , दे 'तुरई'।

तरौना, स पु , दे 'तरकी' २ दे 'कर्णफूल'

तर्क, स पु (स) हेतु (पु), युक्ति उपपत्ति (स्त्री) २ आन्वीक्षिकी, न्याय , ऊहापोह ३ विदग्धोक्ति (स्त्री) ४ व्यग्यम् ।

—वितर्क, सं पु (स) वादविवाद , वाद प्रतिवाद , हेतुवाद २ सशय , सदेह , विकल्प , आ परि वि शका ।

—विद्या, स स्त्री (स) तर्क-न्याय,-शास्त्र विद्या तर्क , न्याय ।

तर्क, स पु (अ) त्याग , विसर्जनम् ।

तर्कश, स पु , दे 'तरकश'।

तर्ज़, सं स्त्री (अ) रीति (स्त्री), शैली, प्रकार २ रचनाप्रकार , घटनम् ।

तर्जन, स पु (स न) तर्जना, भयप्रदर्शन, भर्त्सनम् , दे 'डॉंटडपट'।

तर्जना, क्रि स (स तर्जन) दे 'डॉंटना'।

तर्जनी, स स्त्री (सं) प्रदेशिनी, अगुष्ठ समीपागुली ।

तर्पण, सं पु (स न) तृप्ति (स्त्री), प्रीणन, सन्तापण २ पित्रादिभ्यो जलदान (धर्म)।

तल, सं पु (सं पु न) मूल, अधोभाग , २ बुध्न , उपष्टम्भ ३ पाद-चरण,-तलं ४ करतल ल, प्रहस्त । ४ चपेट , चर्पट नरक पाताल, विशेष ।

तलक, अव्य , दे 'तक'।

तलख़, वि (फा) कटु कटुक २ अप्रिय, अनिष्ट ।

तलछट, स स्त्री (सं तल+हि छँटना) तलमल, किल्क, किट्ट,, खल, मल ल, शेष प, उच्छिष्ट, अत्र स, कर , असार ।

तलना, क्रि स (सं तलन), (घृततैलादिषु) भ्रस्ज् (तु उ अ भृज्जति, चु भर्जयति)-पच (भ्वा प अ)-भृज् (भ्वा आ से, भर्जते), तल् (भ्वा, प से , पाकराजेश्वर)।

सं पु, (घृतादिषु) मर्जन पचनम्।
तला हुआ वि, भ्रष्ट, भर्जित, घृतपक्व इ ।
तलफना, क्रि अ, दे 'तड़पना'।
तलफी, स स्त्री (फा) ध्वंस, विनाश २ क्षति हानि (स्त्री)।
तलफ़्फ़ुज़, स पु (अ) उच्चारणम्, भाषण विधि (पु)।
तलब, स स्त्री (अ) वेतन, भृति (स्त्री) २ अ कारण, आह्वान ३ लिप्सा।
तलबगार, वि (फा) इच्छुक २ प्रार्थिन।
तलबाना, स पु (फा) *आकारण आह्वान,-शुल्क क २ साक्ष्यशुल्क कम्।
तलबी, स स्त्री (अ) आकारण णा, आह्वानम्।
तलवा, स पु (पु तल ल) चरण पाद, तलम्।
—चाटना,
—तले हाथ रखना, } मु, दे 'खुशामद करना'।
—सहलाना,
—तलवार, स स्त्री [स तरवारि (पुं)] खड्ग असि निस्त्रिंश, चन्द्रहास, कौक्षेयक, करवा(पा)ल, कृपाण णी, ऋ(रि)ष्टि (पु), श्रीगर्भ, विजय, दुरासद, धर्मपाल।
—खींचना, क्रि स, असि कोशात् उद्धृ निष्कृष् (भ्वा प अ)।
—चलाना, क्रि स, खड्ग चल् (प्रे), असिना प्रहृ (भ्वा प अ)।
—चलानेवाला, स पु, आसिक, खड्गधर, खड्गिन्।
तला, स पु (स तल ल) अधोभाग, बुघ्न २ उपानत्तलम्।
तलाक़, स पु (अ) विवाह दापत्य उच्छेद - निराकरण, त्याग।
तलाश, सं स्त्री (तु) अन्वेषण, मार्गणम्।
तलाशी, सं स्त्री (फा) देह गेह परिच्छद, अन्वेषणा निरीक्षा।
—लेना, क्रि स, देह गेह परिच्छद अन्विष् (दि प से)-निरूप् (चु)-निरीक्ष् (भ्वा आ से)।
तली, स स्त्री, दे 'तल' तथा 'तला'।
तलुआ, स पु, दे 'तलवा'।
तले, क्रि वि (स तल>) अध, अधस्तात्, नीचे (सब अर्थ)।
—ऊपर या ऊपर तले, क्रि वि, अन्योन्यस्य अध, अधस्तात, उपरि, उपरिष्टात् वा २ अक्रम, विपर्यस्त, सकीर्ण, अव्यवस्थितम्।
तलैया, सं स्त्री (हिं ताल) क्षुद्र लघु, तडाग कासार सरस (न),
तल्प, स पु (स पु न) आस्तर, आस्त रणम् *विस्तर २ पत्नी, भार्या।
—कीट, स पु (स) ओकण, मत्कुण, उद्दश।
—ज, स पु (स) नियोगज पुत्र सुत, क्षेत्रज।
तल्ला, स पु (स तल ल्म्) उपानत्तलम्। २ दे 'मंजिल'।
तवर्ग, स पु (स) तकारादिवर्णपंचकम्।
तवा, स पु (हिं तवना) तप्तकम्।
तवाज़ा, स स्त्री (अ) सत् ,-कार -कृति (स्त्री) क्रिया, अतिथि,-सेवा सत्कार, आतिथ्य २ निमन्त्रणम्।
तवारीख़, स स्त्री (अ, तारीख का बहु) दे. 'इतिहास'।
तवी, स स्त्री (हिं तवा) ऋचीं(जीं)षम्।
तशख़ीस, सं स्त्री (अ) रोग, निर्णय निदानम्।
तशरीफ़, स स्त्री (अ) महत्त्व, गुरुत्व, प्रतिष्ठा।
—रखना, मु उपविश् (तु प अ), विराज् (भ्वा आ से)
—लाना, मु, आगम्, आया (अ प अ)।
—ले जाना, मु, प्रस्था (भ्वा. आ अ), प्रया (उक्त दोनों मुहावरों में आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग करना चाहिए। उ आप तशरीफ़ रखिए = उपविशतु श्रीमत इ)।
तश्तरी, स स्त्री (फा) शराविका, *स्थालकम्।
तसकीन, स स्त्री (अ) आ समा,-श्वास श्वासनं, धैर्यम्।
तसदीक़, स स्त्री (अ) सत्यापन, सत्याकार।
—करना, क्रि स, सत्यापयति (ना धा), प्रमाणी कृ।
तसबीह, स स्त्री (अ) जपमाला, माला।
तसमा, स पु (फा) चर्मपट्ट बध, वध्री, नध्री २ उपानद्बध।
तसला, सं पु (फा तश्त) ऋचीषम्।
तसलीम, स स्त्री (अ) नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम २ अभ्युपगम, अंगी स्वी,-कार।

तसल्ली, स स्त्री (अ) सांत्वना, आश्वासन २ शांति (स्त्री), धैर्यम्।
तसवीर, स स्त्री (अ) चित्र आलेख्यम्।
तस्कर, स पु (स) चौर २ दस्यु।
तस्मू, स पु (स त्रिवृत्क >) पञ्चाङ्गुलमानम्।
तह, स स्त्री (फ़ा) तल, अधस्तल अधोभाग मूल २ बुध्न, उपघ्न ३ तल पृष्ठ पृष्ठभाग ४ स्तर ५ व्यावृत्ति (स्त्री) व्यावर्तन पुटन ८ भग ६ तत्त्व, सार।
—करना, क्रि स, पुटयति (ना धा व्यावृत् (प्रे) पुनीपुनी कृ।
—तक पहुँचना, मु, तत्त्व अवगम् रहस्य विद् (अ प से)।
तहक़ीक़ात, स स्त्री (अ तहक़ीक़ का बहु) अनुसंधान, अन्वेषण, गवेषणा।
तहख़ाना, स पु (फ़ा) भूमिगृह तलगृह गुप्ति (स्त्री), आतभौमकोष्ठ।
तहज़ीब, स स्त्री (अ) सभ्यता, शिष्टाचार।
तहमत, स स्त्री (फ़ा तहबंद) •पुरबध, •धौतिका।
तहरीर, स स्त्री (अ) लेख, लिपि २ लेखशैली ३ लिप्र,-बंध ४ प्रमाणपत्रम्।
तहलका, स पु (अ) दे 'खलबली'।
तहस-नहस, वि (देश) वि, नष्ट प्र वि, ध्वस्त।
तहसील, स स्त्री (अ) कराग्राह, राजस्वसंग्रह, समाहरण २ राजस्व, आय आगम, उदय ३ उपमंडल ४ उपमंडले श्वरकार्यालय।
—दार, स पु, उपमण्डलेश्वर।
—दारी, स स्त्री उपमण्डलेश्वर, कार्य पदम्।
नायब तहसीलदार, स पु (फ़ा + अ + फ़ा) उपमंडलेश्वरसहायक।
तहाँ, क्रि वि (स तत्र >) तत्र तस्मिन् स्थाने, तत्स्थाने।
ताँगा, स पु, दे 'टाँगा'।
तांडव, स पु (स न) पुरुषनृत्य २ उद्धत नृत्य ३ शिवनृत्य ४ तृणभेद।
ताँत, स स्त्री (स तन्तु) आंत्र-स्नायु गुण २ मौर्वी प्रत्यञ्चा, धनुर्गुण ३ मंत्र, गुण ४ वीणातंत्री।
ताँता, स पु [स तति (स्त्री)] पंक्ति (स्त्री), श्रेणी ति (स्त्री)।
ताँती, स स्त्री (हिं ताँता) आवली लि (स्त्री) पंक्ति (स्त्री) २ संतति (स्त्री)।
ताँती, स पु (हिं ताँत) तंतुवाय पं, पत्रकार।
तांत्रिक स पु (स) तंत्रशास्त्रविद् (पु), २ मोहिन् कुहकार। वि तंत्रसंबंधिन्।
ताँबा, स पु (स ताम्र) ताम्रक म्लेच्छमुख, रवि-लोह प्रिय मुनिपित्तल लोहितायसम्।
तांबूल, स पु (स न) पर्ण नागवल्लीदल, दे पान २ पणवाटिका ३ (स्त्री) ३ पूग पूगफलम्।
ताई[1] स स्त्री (हिं ताया) ज्येष्ठपितृव्या।
ताई[2], स स्त्री दे 'तवी'।
ताईद स स्त्री (अ) समर्थन अनुमोदनं, पुष्टि (स्त्री) दृढ-करण-कार उपोद्बलनम्।
ताऊ, स पु दे ताया।
बछिया के ताऊ, मु बलीवर्द २ मूर्ख।
ताऊन, स पु (अ) दे 'प्लेग'।
ताऊस, स पु (अ) मयूर शिखण्डिन् २ मयूराकारो वाद्यभेद।
तख्त ताऊस स पु मयूरासन २ शाहजहान्य मयूरसिंहासनम्।
ताक़[1], स पु (अ) कुड्यविवर भित्तिगर्त आलय २ कुड्य,-फलक ३ असम विषम,-संख्या-अंक। वि अनुपम, अद्वितीय, निपुण।
—जुफ़्त, स पु (अ + फ़ा) समविषमक्रीडा, द्यूतभेद।
—पर रखना, मु, परित्यज (भ्वा प अ) उज्झ (तु प से)।
ताक[2], स स्त्री (हिं ताकना) अवलोकन, दर्शनम् २ अनिमिषदृष्टि (स्त्री) ३ अवसरप्रतीक्षा ४ अन्वेषणम्।
—झाँक, स स्त्री, असकृदवलोकन २ निभृत वीक्षण ३ निराक्षण ४ अन्वेषणम्।
ताक़त, स स्त्री (अ) बल शक्ति, (स्त्री)।
—वर, वि (अ + फ़ा) बलवत्, शक्तिमत्।
ताकना, क्रि स (स तर्कण >) अनिमि(मे) ष दृश् (भ्वा प अ)-अवलोक् (चु) २ निभृत (त्रिरेण) ईक्ष् (भ्वा आ से) ३ अव निर, ईक्ष् ४ हृत निभृत स्था (भ्वा प अ)।

ताकि, अव्य (फ़ा) तथा यथा, यथा।

ताकीद, सं स्त्री (अ) प्रयत्नानुरोध, दृढा देश, पुन स्मारणम्।

—करना, क्रि म, सानुरोध आदिश (तु प अ) पुन दृढ स्मृ (प्रे)।

तागा, म पु (म तावत) तन्तु (पु), डोर, गुण, शुल्वम्।

तागड़ी, म स्त्री, दे 'करधनी'।

ताज, स पु (अ) राजमु(मु)कुट, किरीट म्।

—पोशी, म स्त्री (अ+फ़ा) राज्याभिषेक, मुकुटपरिधापनम्।

ताजगी, म स्त्री (फ़ा) हरितत्व २ प्रफुल्लता ३ नवीनता।

ताज़ा, वि (फ़ा) हरित, सरस, २ नव, नूतन, प्रत्यग्र ३ अनतिशुष्क, मग्न।

मोटा—, वि, दृढाङ्ग, बलिष्ठ, सबल।

ताज़ियाना, सं पु (फ़ा) अश्वताडनी, कशा घा, प्रतोद।

ताज़ी, स पु (फ़ा) अरबाश्व २ मृगया कुक्कुर, विश्वकद्रु (पु)। वि, अरबदेशीय।

ताज़ीम, म स्त्री (अ) सत्कार समानना।

ताज़ीर, स स्त्री (अ) दण्ड, अर्थदण्ड, निग्रह।

ताज़ीराते हिंद, स स्त्री, भारतीयदण्डसंहिता।

ताज्जुब, म पु, (अ तअज्जुब) आश्चर्य विस्मय।

ताड़, म पु (म ताल) दीर्घस्कन्ध, ध्वज द्रुम, तृणराज, महोन्नत, लेख्यपत्र २ ताडन, प्रहार ३ महा-रव ध्वनि (पु)।

ताड़का, म स्त्री (म) राक्षसीविशेष, सुकेतुकन्या।

ताड़न, म पुं (म न) प्रहरणं, आहननं, आघात, प्रहार २ तर्जन ३ दण्ड, शासन ४ गुणनम्।

ताड़ना[1], क्रि म (म ताडन) तड् (चु), अभिहन् (अ प अ), आहन् (अ प अ), तुद् (तु उ अ), प्रहृ (भ्वा प अ), २ दट (चु), नाम (अ प मे) ३ तर्ज् निभर्त्स् (चु आ से)। म स्त्री, दे 'ताडन' (१ २)।

ताड़ने योग्य, वि, ताडनीय, आहन्तव्य, दण्ड्य, भर्त्सनीय।

ताड़नेवाला, म स्त्री, ताडक, दर्शयितृ तर्जक।

ताड़ा हुआ, वि, ताडित, अभिहत, दण्डित, तर्जित।

ताड़ना[2], क्रि म (म तर्कण) तर्क् (चु), अनुमा (जु आ अ), ऊह् (भ्वा आ मे)।

ताड़ी, म स्त्री (स ताली) तालकी, ताल, रस आसव मद्य, तारिका।

तात, म पु (म) पितृ (पु), जनक २ पूज्य, गुरु (पु) ३ (प्रायः छोटों के लिए सम्बोधन में) वत्स, प्रिय, अङ्ग।

तातार, म पु (फ़ा) दे 'तूरान'।

तातील, सं स्त्री (अ) अवकाश, अनध्याय विश्राम, दिवस।

तात्कालिक, वि (सं) तत्कालभव २ सम कालीन, यौगपदिक।

तात्विक, वि (सं) वास्तविक, यथार्थ, परमार्थ।

तात्पर्य, सं पु (सं न) अर्थ, आशय अभिप्राय, भाव २ तत्परता तत्परायणता।

तादात्म्य, म पु (म न) अभेद, अभिन्नता, सायुज्यम्, तद्रूपता।

तादाद, म स्त्री (अ तअदाद) संख्या, गणना।

तादृश, वि (सं) तादृश, तद्-सदृश-तुल्य समान, तथाविध।

तान, स स्त्री (म) गानांगविशेष, आलाप, लयविस्तार २ विस्तृति-तति (स्त्री), विस्तार।

—पूरा, म पु (म तुम्बुरु) तानपूर, वीणाभेद।

तानना, क्रि म (सं तनन) प्रवितन् (त उ से), आयम् (भ्वा प अ) दीर्घी कृ विस्तृ विस्तॄ (प्रे) स्तब्ध प्रमृ (प्रे)।

तानवर, मु बलवत्, पुष्टाङ्ग।

तानकर मारना, मु, निश्चित स्वप् (अ प अ)।

ताना[1], म पुं (हिं तानना) तानवम्, अन्वा नाहतन्तव (पुं बहु)।

—बाना, अन्वानाहतियर्यक्तव (पुं बहु), तान्तवौ (पु द्वि)।

ताना[2], सं पुं (अ) व्यंग्य-वक्र-वक्रोक्ति, वचनं-वाक्य-उक्ति (स्त्री), कटाक्षः।

ताना[3], क्रि म (सं तापनं) दे 'तपाना'।

—मारना, क्रि म, व्यंग्य-व्यंग्यवत आक्षिप (तु प अ), वक्रोक्त्या-कटाक्षेण उपहस (दि प म) आक्षिप (भ्वा प अ)।

तानाशाह, स पु (हिं+फा) एक अधिपति शासक, अधिनायक ।

तानाशाही, सं स्त्री अधिनायकत्वं ऐकाधिपत्यम् ।

ताप, सं पु (स) उ(ऊ)ष्मन् (पु) उष्णता, ऊष्म, उत्परिमर्, ताप, दाह २ ज्वर ३ दुःखं, कष्ट ४ वेदना, मानसक्लेश ।

—तिल्ली, सं स्त्री, प्लीहाभिवृद्धि (स्त्री) प्लीहोदरम् ।

तापना, क्रि अ (सं तापनं) पावक सूर्यातपं आ नि-सेव (भ्वा आ से) । क्रि स दे 'तपाना' ।

तापमान, सं पुं (सं न) ऊष्ममानम् ।

—यंत्र, स पु (स न) १-२ तापज्वर मापकम् ।

तापस, सं पुं (सं) दे तपस्वी' ।

ताब, सं स्त्री (फा । मि सं ताप) ऊष्म, उष्णता २ दीप्ति (स्त्री), आभा ३ सामर्थ्यं, साहसम् ।

ताबड़तोड़, क्रि वि (अनु) अनवरतं, अविश्रान्त, सततं, अनवच्छिन्नम् ।

ताबूत, सं पुं (अ) शव पेटक सपुट ।

ताबे, वि (अ) अधीन, वशवर्तिन् ।

ताबेदार, वि (अ +फा) आज्ञा, पालक कारिन् ।

तामजान, सं पुं (हिं थामना+सं यान) शिविकाभेद ।

तामरस, सं पु (सं न) रक्तोत्पलं, कोकनद, २ सुवर्णं ३ ताम्रम् ।

तामस, वि (सं) तमोगुणिन्, तमोगुणयुक्त २ काल, कृष्ण ३ अज्ञ ४ दुष्ट । स पु, सर्प २ उलूक ३ क्रोध ४ अंधकार ।

तामसिक, वि दे 'तामस' वि ।

तामिल, सं स्त्री (देश) द्रविडजातिभेद २ भाषाविशेष ।

तामिस्र, स पु (सं) नरकविशेष २ कृष्ण पक्ष ३ क्रोध ४ द्वेष ।

तामील, सं स्त्री (अ) आज्ञापालनं २ निष्पत्ति सिद्धि (स्त्री)।

ताम्र, सं पुं (सं न) ताम्रकं, मुनिपित्तलम् ।

—कार, सं पुं (सं) ताम्र-,कुट्ट उपनाविन् ।

—चूड, सं पुं (सं) कुक्कुट ।

—पत्र, स पु (स न) ताम्रपट्ट-ट्ट २ ताम्रफलक कम् ।

ताया, स पुं (स तात >) ज्येष्ठ तात, ज्येष्ठ पितृव्य पितुरग्रज ।

तार, सं पु (सं न) रूप्य, रजतं २ तार, धातु, ततु -(पुं)-सूत्र ३ तडिद् विद्युत्, संदेश -वार्ता ४ सूत्रं, गुण, ततु (पुं) ५ सततक्रम परंपरा ६ नक्षत्रं, तारा, ग्रह ७ सप्तकभेद (संगीत) । वि, उच्च, महत् (ध्वनि आदि) २ भासुर ३ निर्मल, स्वच्छ ।

—देना, क्रि स विद्युत्संदेश प्रेष (प्रे)-प्रहि (स्वा प अ)।

—कश, सं पुं (हिं+फा) तारकर्ष पंक ।

—घर, स पु, तारगृहम् ।

—तार, वि जीर्ण, विदीर्ण ।

—बर्की, स स्त्री, तडित् विद्युत्-तार ।

—तार करना, मु, (वस्त्रादिक) तन्तुशः विद्ध (प्रे)-खड (चु)।

—टूटना, मु, क्रम परम्परा त्रुट् (दि प से)।

—बाँधना, मु, निरन्तरं विधा(जु उ अ)-कृ ।

तारक, स पु (स) तार र-रा, भ, नक्षत्र २ नेत्रं ३ कनीनिका, नयनतारा ४ मोचक, मुक्तिद ५ कर्णधार ।

तारका, सं स्त्री (सं) नक्षत्र, उडु २ कनीनिका, विविनी ३ बालिपत्नी ।

तारकेश्वर, सं पु (स) शिव, महेश ।

तारकोल, सं पुं (अ कोलटार दे)

तारण, स पुं (सं न) पारनयन, उत्तारणं, संतारण २ मोचनं, उद्धारण, निस्तारणम् । स पु, तारक उद्धारक, भवभयमोचक २ विष्णु ।

तारतम्य, स पुं (सं न) न्यूनाधिकता, उत्कर्षापकर्षौ २ अन्तर, भेद ।

तारना, क्रि स (हिं तरना) पार नी (भ्वा, प अ), उत् स, तृ (प्रे) उत्, लघ (प्रे) २ मोच (चु), निस्तॄ (प्रे), उद् हृ-धृ (भ्वा प अ) (पापेभ्य, भवभयात्) मुच (प्रे)।

तारनेवाला, स पु, मोक्षक, मोचक, निस्तारक, उद्धारक, मुक्तिद ।

तारपीन, सं पु (अं टरपेंटाइन) सरल चीरपर्णं, तैलं, सरल, द्रव रस स्यन्द, शीतल, श्री-वास वेष्ट ।

तारल्य, सं पु (सं न) तरलत्व, तरलता, द्रवत्व, प्रवाहिता २ कामुकता, लंपटता, कामान्धता ।

तारा, स पु (सं स्त्री) तार र, तारका उडु (पुं) नक्षत्र, ऋक्ष भ, ज्योतिस (न) २ कनीनिका बिंबिनी ३ भाग्य, नियति (स्त्री)। स स्त्री, बलिपत्नी २ बृहस्पति भार्या।

—टूटना, क्रि अ, नक्षत्र उल्का पत् (भ्वा प से)।

—अधिप, स पुं (स) चंद्र २ बालि (पु)।

—मंडल, स पु (स न) उडु भ नक्षत्र, गण ।

—होना, मु नभ चुंब (भ्वा प से), गगन स्पृश (तु प अ)।

तारीक, वि (फा) काल, कृष्ण २ सतिमिर, निष्प्रभ ।

तारीकी, स स्त्री (फा) कृष्णता २ अधकार, तिमिरम् ।

तारीख़, स स्त्री (फा) तिथि (पु स्त्री), दिवस २ नियततिथि ।

तारीफ़, सं स्त्री (अ) लक्षण परिभाषा २ स्तुति नुति (स्त्री) ३ वर्णन ४ गुण, विशिष्टता ।

तारुण्य, स पुं (सं न) यौवनं, कौमारम् ।

तारेश, स पु (स) विधु, सुधांशु, चन्द्र ।

तार्किक, स पु (सं) तर्कशास्त्रविद् (पु) २ तत्त्वज्ञ, दार्शनिक ।

तार्क्ष्य, स पुं (सं) गरुड, वैनतेय, विष्णु रथ २ अरुण ३ अश्व ४ सर्प ५ खग ।

ताल[1], सं पु (सं तल्ल) दे 'तालाब'। २ करतल त, प्रहस्त ३ ताली, करतलध्वनि (पु), करताल लक ४ संगीते कालक्रिया, मानं ५ मल्लयुद्धे करतलेन बाहुजंघाद्यास्फालन ६ दे 'झाँझ'।

ताल[2], सं पु (स) तृणराज, मधुरस आसवद्रु (पु)।

—से बेताल होना, मु, विताल (वि) भू ।

तालमखाना, सं पु (हि ताल+मखाना) कोकिलाक्ष, काकेक्षु काण्डेक्षु, इक्षुर ।

तालव्य, वि (सं) काकुद-तालु, संबंधिन् ।

—वर्ण, सं पु (सं) तालूच्चार्यवर्णा । (इ ई चवर्ग, य, श)।

ताला, स पु (सं तालक) ताल, तालक द्वार यंत्रम् ।

—लगाना, क्रि स, तालकेन निरुध (रु उ अ) पिधा (जु उ अ)-बध (क्र् प अ)।

तालाब, स पु (हि ताल+फा आब) तडा(टा)ग गं, कासार रं, सरस (न), पुष्करिणी ।

तालिका, स स्त्री (सं) दे 'ताली' २ सूची चि (स्त्री), अनुक्रमणी णिका, नामावली लि (स्त्री)।

तालिब, स पु (अ) अन्वेषक, अनुसंधातृ (पु) २ इच्छुक, अभिलाषिन् ।

—इल्म, स पु (अ) विद्यार्थिन्, छात्र ।

ताली[1], स स्त्री (सं) तालिका, कुञ्चिका, कुंचिका, अकुट, उद्घाटनी, साधारणी ।

ताली[2], स स्त्री (सं तालिका) करताल लकं, करतल, शब्द ध्वनि (पु)।

—बजाना, क्रि स, करताल वद् (प्रे)-दा, करतलध्वनिं जन् (प्रे)।

तालीम, स स्त्री (अ) शिक्षा विद्या ।

तालीशपत्र, स पु (सं न) तालीश नील, धात्रीपत्रम् ।

तालु, स पु [सं तालु (न)] काकुद, ताळुकम् ।

—मूल, सं पु (सं तालुमूलम्) काकुदमूलम् २ गलग्रन्थि ।

तालुक, स पुं (अ तअल्लुक) सम्बन्ध, संसर्ग ।

ताव, स पु (सं ताप) दाह, उ(ऊ)ष्म ष्मन् (पु), ऊष्ण ण २ अंतर्वेग, आवेश ३ त्वरा ४ व्यावर्तन मोटन, आकुंचनम् ।

तावान, स पु (फा) दण्ड, अर्थदंड, दाम, निष्कृति (स्त्री), निस्तार ।

—देना, क्रि स, निष्कृतिं दा, निस्तॄ (प्रे)।

तावीज़, सं पु (अ तअवीज) यंत्र, कवच, क्षार २ यंत्रसंपुट ।

ताश, स पु (अ तास) क्रीडापत्राणि (न बहु), क्रीडापत्रावली २ पत्र, क्रीडापत्र ३ दे 'तरबूस्त'।

तासीर, स स्त्री (अ) गुण, प्रभाव ।

तास्सुब, स पु (अ तअस्सुब) धार्मिक जातीय, पक्षपात, २ पक्षपात ३ मतान्धता।
ताहम, अव्य (फा) दे 'तथापि'।
तिकोर, स पु (त्रिकोण) त्रिभुज, त्र्यस्रम्।
तिकोना तिया, वि (हि तिकोन) त्रिकोण, त्र्यस्र, त्रिकोण त्रिभुज, आकार।
तिक्त, स पु (स) रसभेद। वि, तिक्त रसस्वाद, तीक्ष्ण, तीव्र।
तिखूँट, स स्त्री (हिं तीन+खूँट) दे 'तिकोन'।
—नाप, स स्त्री त्रिकोणमिति (स्त्री)।
तिखूँटा वि, दे 'तिकोना'।
तिगुना, वि (स त्रिगुण) त्रिगुणित त्रिरावृत्त त्रिगुणीकृत।
—करना, क्रि स, त्रिगुणीकृ, त्रि आवृत्(प्रे)।
तिजारत, स स्त्री (अ) वाणिज्य, क्रयविक्रयौ (द्वि)।
तिजारी, स स्त्री (स त्रि+ज्वर) तृतीयक ज्वर।
तितरबितर, वि (हिं तितर+अनु) आप्रकीर्ण, क्षीण विक्षिप्त २ अव्यवस्थित, क्रमशून्य, अस्तव्यस्त।
तितली, स स्त्री (हिं तीतर अथवा स तिल) चित्रपतंग, *तितिरी।
तितिक्षा, स स्त्री (स) सहिष्णुता, सहन २ क्षमा, क्षान्ति (स्त्री)।
तितिक्षु, वि (स) सहनशील, सहिष्णु २ क्षान्त, क्षमाशील।
तिथि, स स्त्री (स पु स्त्री) मिति (स्त्री), मास पक्ष, दिन दिवस, चान्द्रदिवस।
तिनकना, क्रि अ, दे 'चिनचिड़ाना'।
तिनका, स पु (सं तृण), नाल न, पल, पलाल न, बिस, सस्य, सेग्ट, हरित, ताडव, अर्जुनम्।
—दांतों में दबाना या लेना, मु, दे 'गिड़गिड़ाना'।
तिनके का सहारा, मु, इषत् साहाय्यम्।
तिनके को पहाड़ समझना, मु, तिले ताल पश्यति।
तिपाई, स स्त्री (स त्रिपादिका) त्रिपदिका, त्रिपदम्।
तिबारा, क्रि वि (स त्रिवार) त्रि (अव्य)।
तिब्ब, स्त्री (अ) चिकित्साविज्ञानम्, २ यवन चिकित्साशास्त्रम्।
तिब्बत, स पु (स त्रिवि (पि) ष्टप >) त्रिविष्टपम्।
तिब्बती, वि त्रैविष्टप, त्रिविष्टप-सम्बन्धि विषयक। स पु, त्रिविष्टपीय, त्रिविष्टप, वासिन्-वास्तव्य। स स्त्री त्रिविष्टपभाषा, *त्रिविष्टपी।
तिमंजिला, वि (स त्रि + अ मंजिल) त्रिभूमिक।
तिमिर, स पु (स न) अधकार, तमस् (न)।
तिरछा, वि (स तिर्यञ्च्) अनसर्पिन्, प्रवण, तिरश्चीन, वक्र, कुटिल, २ वेषाभिमानिन्।
—देखना, क्रि अ तिर्यक् वक्र वीक्ष् (भ्वा आ से)।
तिरछी चितवन या नज़र, मु, तिर्यग्-वक्र, दृष्टि (स्त्री) २ कटाक्ष-अपाग-नयनोपात, वीक्षण-वीक्षित, कटाक्ष, भ्रूविलास।
तिरछापन, स पु (हिं तिरछा) प्रवणता, तिरश्चीनता, वक्रता, कुटिलता।
तिरछे क्रि वि (हिं तिरछा) तिर, मानि, जिह्म (सब अव्य)।
तिरपन, वि [स त्रिपञ्चाशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (५३) च।
तिरपाई, स स्त्री (स त्रिपादिका) त्रिपदिका, त्रिपदम्।
तिरपाल, स पु (अ टारपाल्नि) लिंदुलिप्तपट।
तिरसठ, वि [स त्रिषष्टि (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता सख्या, तदकौं (६३) च।
तिरस्कार, स पु (स) अनादर, अपमान, निकृति (स्त्री), न्यक्कार, अवज्ञा, अवमानना, तिरस्क्रिया, मानभग २ भर्त्सना, तर्जन ३ सापमान त्याग।
तिरस्कृत, वि (स) न्यक्कृत, अनादृत, अपअप, मत-मानित, अवज्ञात इ २ सापमान त्यक्त ३ आच्छादित।
तिरहुत, स पु (स तीरभुक्ति >) मिथिला प्रदेश।
तिरहुतिया, वि (हिं तिरहुत) मैथिल, मिथिला सम्बन्धिन्। स पु, मैथिल, मिथिला वासिन्। स स्त्री, मिथिलाभाषा, मैथिली।
तिरानवे, वि [स त्रिणवति (नित्य स्त्री)]। त्रयोणवति। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (९३) च।

तिरासी, वि [स त्र्यशीति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्त संख्या, तदको (८३) च।
तिराहा, म पु (सं त्रि +फा राह) त्रिपथम्।
तिरिया, स स्त्री (म स्त्री) नारी, रामा।
—चरित्तर, स पु (स स्त्रीचरित्र) रामारहस्य, वामावैदग्ध्य, नारीचरितम्।
तिरोधान, स पु (स न) अदर्शन, अतर्धान, गोपन, गूहन, सवरणम्।
तिरोभाव, स पु (स) दे 'तिरोधान'।
तिरोभूत, वि (स) अदृष्ट, अतर्हित, लुप्त।
तिरोहित, वि (स) गूढ, निलीन, आच्छादित, सवृत, निभृत, गुप्त।
तिर्यंची, स स्त्री (स) तिरश्ची, पशुमृग, योषा अगन-वधू (स्त्री)।
तिर्यक्, अव्य (स) वक्र, कुटिल, तिरस्, जिह्म, असरलम् (सद अव्य)।
तिलंगाना, स पु (स तैलग) प्रदेशविशेष।
तिलगी, वि (स तिलगाना>) तैलग देशीय।
तिल, स पु (स) पवित्र पितृतर्पण, पूतहोम, धान्य, पापघ्न, स्नेहफल। २ तिलक, कालक, जडु (डु), ल, पिप्लु (पु)। ३ क्षण ण, पल ४ तारा रका, कनीनिका।
—का तेल, स पु, तिल, तैल रस स्नेह।
—किट, स पु (स न) तिल,-खली चूर्णम्।
—कुट, स स्त्री, तिलकुट्टम्।
—चट्टा, स पु, रक्तवर्णकीटभेद।
—भुग्गा, स पु, तिलभुक्तम्।
—पपड़ी शकरी, स स्त्री, तिलपट्टी, *तिल शर्करी। तिल की ओट पहाड, मु, * विन्दौ सिन्धु, *तिले गिरि।
तिल का ताड करना, मु, तिले ताल पश्यति।
तिल तिल, मु, अल्पाल्प, किंचिकिंचित।
तिल धरने की जगह न होना, मु, स्थानाभाव।
तिलभर, मु, ईषदिव, किंचिदिव।
तिलक, म पु (म पुं न) दे 'टीका' (१ ७ ६ ८ ९ ११)।
—लगाना, क्रि. स, दे 'टीका' लगाना'।
तिलडा, म पुं } (स त्रि+हिं लड) त्रिसरो
तिलडी, म स्त्री } हार।
तिलवा, म पु (सं तिल>) *तिलमोदक।
तिलहन, (हिं तेल + धान्य) म पुं तैल स्नेह, बीज बीजक रोहि।
तिला, स पु (फा। मि स तैल) मर्दनौषधं २ लिगलेप।
तिलाक, म पु, दे 'तलाक'।
तिलि (ल) स्म, स पु (यू टेलिस्मा) दे 'इंद्रजाल'।
तिल्ली, म स्त्री (स तिल्क>) प्लीहन् (पु), प्लीहा, गुल्म २ दे 'तिल' १।
ताप—, स स्त्री, दे 'ताप' के नीचे।
तिवारी, स पु (स त्रिपाठी), दे 'त्रिवेदी'।
तिस, सर्व, दे, 'उस'।
तिहत्तर, वि [स त्रिसप्तति (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्त सख्या, तदकौ (७३) च।
तिहरा, वि दे 'तेहरा'।
तिहराना, क्रि म (हिं तिहरा) त्रि कृ, तृतीय वार विधा (जु उ अ)।
तिहवार, स पु (स तिथिवार)। पर्वन् (न), उत्सव, उद्धर्ष, उद्धव, क्षण, मह।
तिहाई, म स्त्री (स त्रिभाग>) तृतीय,-अश भाग।
तिहारा, सर्व, दे 'तुम्हारा'।
तीक्ष्ण, वि (स) नि, शात शित, तीव्र, प्र, खर, सूच्यग्र, तीक्ष्ण शित, धार २ (बुद्धि) कुशाग्र, सूक्ष्म शीघ्र, ग्राहिन्, सूक्ष्म, तीव्र ३ उग्र, प्रचड ४ दे 'चरपरा' ५ (शब्द) कर्ण कटु, अप्रिय ६ उद्यमिन्, अतद्र, क्षिप्रकर्मन् ७ अमर्ष, दु सह।
तीक्ष्णता, स स्त्री (स) तीव्रता, प्रखरता, प्रचडता इ।
तीखा, वि, दे 'तीक्ष्ण'।
तीखुर, स पु, दे 'तवाशीर'।
तीज, म स्त्री (सं तृतीया) कृष्णा शुक्ला वा तृतीया तिथि (स्त्री) २ श्रावण भाद्र, शुक्ल तृतीया।
तीत ता, वि (सं तिक्त) दे 'तिक्त' २ कटु।
तीतर, म पु (स तित्तिर) तिति (त्ति) रि (पु) तैत्तिर, याजुषोदर।
तीन, वि [सं त्रीणि (न बहु)] त्रय (पु), तिस्र (स्त्री), त्रीणि (न)। सं पु, उक्त सख्या, तदक (३) च।

—तेरह करना, मु, दिदु (प्रे), अवाआप्र विन्द (तु प से)।
—पाँच करना, मु, क्न्दायते (ना धा) विवद् (भ्वा आ स)।
न तीन में न तेरह में, मु, सामान्य, साधारण।
तीमार, स पु (फा) सेवा, परिचर्या।
—दार, स पु, रोगि-रुग्ण-सेवक-परिचारक।
—दारी, स स्त्री, रोगि-रुग्ण-परिचर्या सेवा।
तीय, स स्त्री दे 'स्त्री'।
तीर¹, स पु (स न) तट नदी।
तीर², स पु (फा) बाण, शर, इषु (पु) सायक।
—कश, स पु (फा) इषुधि (पु), दे 'तरकश'।
—चलाना या मारना, क्रि स, इषु प्र,-मुच क्षिप् (तु प अ)।
तीरंदाज़, स पु [+अंदाज (फा)] इषु धनुर,-धर, धन्विन् (पु) धानुष्क।
तीरंदाजी, स स्त्री, धनुर, विद्यावेद, शराभ्यास।
तीर्थ, स पु (स तीर्थ) पुण्यपवित्र,-स्थान २ घट्ट ३ घट्टसोपानपथ, अवतार ४ उपाध्याय गुरु (पु) ५ ब्राह्मण ६ परिव्राजकोपाधि (पु) ७ तारक, मोक्षद ८ ईश्वर ९ जननीजनकौ १० अतिथि (पु)।
—यात्रा, स स्त्री (स) तीर्थगमनम्।
—राज, स पु (स) प्रयाग।
तीर्थिक, स पु (स) तीर्थपुरोहित २ तीर्थंकर ३ तीर्थयात्रिन्।
तीला, स पु (फा तीर) दे 'तिनका'।
तीला, स स्त्री (हिं तीला) स्पृतृणाग्र २ धरवाद दृढसूक्ष्मतार।
तीव्र, वि (स) अत्यधिक, अत्यंत, अतिशय २ दे 'तीक्ष्ण (१)'। ३ सुतप्त, अत्युष्ण ४ असीम, अमित ५ कटु ६ दु:सह ७ प्रचण्ड ८ तिक्त ९ वेगवत्, शीघ्र १० तार, उच्च (स्वर)।
तीव्रता, स स्त्री (स) अत्यधिकता, बाहुल्य, अत्युष्णता, असह्यता, प्रचण्डता, तिक्तता इ।
तीस, वि [स त्रिंशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (३०) च।
—मार खाँ, मु, वीराग्रणी (पु), शूरशिरोमणि (पु) (व्यंग्य)।
तीसों दिन, मु, सदा, सर्वदा।
तीसरा, वि पु (हिं तीन) तृतीय [-या (स्त्री)]। स पु, मध्यस्थ, तटस्थ।
—पहर, स पु, तृतीयप्रहर अपराह्ण, पराह्ण, विकाल।
तीसरे, क्रि वि (हिं तीसरा) तृतीयस्थाने, तृतीय, तृतीयतः (अव्य)।
तीसवाँ, वि (हिं तीस) त्रिंशत्तम म मी, त्रिंश श शी (पु न स्त्री)।
तुंग, वि (स) दे 'ऊँचा' २ बड, उग्र।
तुंड, स पु (स न) मुख, आस्य, वदन २ चञ्चू-ञ्चु (स्त्री)।
तुंडि, स स्त्री (स पु) दे 'तुंड' (१ २)। (स स्त्री) नाभि।
तुंद, स पु (स न) उदर, तुन्दि (न), तुन्दि (स्त्री)।
तुंबा, स पु (स) अलाबु (पु स्त्री) बू (स्त्री) २ अलाबु (न), अलाबुपात्रम्।
तुंबिया, स स्त्री (सं तुंबिका >) क्षुद्रालाबु (न), क्षुद्रालाबुपात्रम्।
तुंबी, स स्त्री (स) तुंबि (स्त्री) अलाबु (पु स्त्री) २ दे 'तुंबा' (२)।
तुअर, स पु (स तुवरी) आढकी, दे 'अरहर'।
तुक, स स्त्री (हिं टूक) अंत्यानुप्रास, अक्षरमैत्री २ पद्यांश ३ पादान्तवर्ण।
बेतुका, वि, असंबद्ध, असंगत।
—जोड़ना, मु, तुकविना कु अथवा रच् (चु)।
तुख्म, स पु (अ) दे 'बीज'।
तुच्छ, वि (स) नीच, हीन, अधम, क्षुद्र, दीन, निकृष्ट २ असार, व्यर्थक, अनर्थक।
तुड़वाना, तुड़ाना, क्रि प्रे, व 'तोड़ना' के प्रे रूप।
तुतला (ता) ना, क्रि अ (अनु) अस्पष्ट शिशुवत् भाष् (भ्वा आ से)।
तुपक, स स्त्री (तु तोप) लघुनालिका २ नालास्त्रम्।
तुफ़ंग, स स्त्री (तु तोप) वायव्य नालास्त्रम्।
तुम, सर्व (स त्वम्) त्व (एक), यूयं (बहु) ('तुम को' आदि के लिए 'युष्मद्' की द्वितीया आदि के रूप बनेंगे)।

तुमड़ी, स स्त्री (स तुम्बी>) शुष्कवतुलालाबु (पु स्त्री) २ दे तुम्बा(२)।
तुमाई, स स्त्री (हिं तुमाना) कार्पासादि प्रसाधनभृति (स्त्री)।
तुमाना, क्रि प्रे, व 'तूमना' के प्रे रूप।
तुमुल, वि (स) घोररव रवरवल-कोलाहल मय-पूर्ण-युत। स पु (स पु न) भीषण-घोर-युद्ध-संग्राम २ कोलाहल, कल्कल।
तुम्हारा, सर्व (हिं तुम) युष्माक तव (त्रिलिंग) युष्मदीय, त्वदीय, तावक, यौष्माक शीण।
तुम्हीं, सर्व० (हिं तुम + ही) त्वमेव युवामेव, यूयमेव।
तुम्ह, सर्व (हिं तुम) (कर्म) त्वाम् त्वा युवाम, वाम् युष्मान् व (सम्प्रदान) तुभ्य, ते, युवाभ्या, वा, युष्मभ्यम, व।
तुरंग, तुरङ्गम, स पु (स) अश्व, घोटक।
तुरत, क्रि वि (स) द्रागिति, आशु, सद्य सपदि, तत्क्षणमेव।
तुरई, स स्त्री (स तूर >) मृदङ्गी, राज, कोशातकी, जालिनी, कृतवेधना, सु पीन पुष्पा राजिमत्फला (धिया तुरई, देखो 'नेनुआ')।
तुरक, स पु (स तुरक) तुरुष्क २ यवन ३ सैनिक ४५ टर्की तुरस्तान,-वासिन्।
तुरकी, वि (हिं तुरक) तुरुष्कदेशीय २ तुरुष्कभाषा।
तुरग, स पु (स) अश्व, वाजिन् (पु)।
तुरत, क्रि वि, दे 'तुरत'।
तुरही, तुरी, स स्त्री (स तूर) तूर्य-र्यी काहल-ला, शृङ्गवाद्यम्।
तुरीय, वि (स) तुर्य, चतुर्थ।
—अवस्था, स स्त्री (स) निश्रेयस, मुक्ति (स्त्री)।
तुरुष्क, स पु (स) दे 'तुरक'।
तुर्य, वि दे 'तुरीय'।
तुर्रा, स पु (अ) उष्णीष आलम्ब शेखर २ चूडा। मौलि (पु), शिखा, शेखर ३ अलक, चूर्णकुन्तल, भ्रमरक, कुरल। ४ वि, विचित्र, अद्भुत।
तुर्श, वि (फा) दे 'खट्टा'।
तुलना[1], स स्त्री (स) उपमा, समता, साम्य, सादृश्य २ तारतम्य, न्यूनाधिकता।
तुलना[2], क्रि अ (हिं तोलना) तुल्-तुल् (कर्म, तोल्यते, तुल्यते), तुलया मा (कर्म मीयते)।
किसी काम पर तुला हुआ, मु, कार्यविशेष कर्तुं उद्यत कृतनिश्चय विहितसंकल्प।
तुलनात्मक, वि (स) तुलनायुक्त, अन्यापेक्षक, अन्यसापेक्ष, सापेक्ष, साम्यवैषम्य, सूचक दर्शक।
तुलवाना, क्रि प्रे, व 'तोलना' के प्रे रूप।
तुलसी, स स्त्री (स) सुभगा, पावनी, भूतघ्नी, विष्णुवल्लभा, वृन्दा, पुण्या, वैष्णवी।
—दल, स पु (स न) वृंदापत्रम्।
—दास, स पु (स) भक्तविशेष, रामचरितमानसादिरचयिता (पु)।
तुला, स स्त्री (स) दे 'तराजू' २ तुलना, सादृश्य ३ राशिविशेष (ज्यो)।
—दान, स पु (सं न) देहभारसम सुवर्णादिदानम्। वि, तोलित, तुलित।
तुल्य, वि (स) सम, तोल भार परिमाण २ सम, समान, सदृश, सदृक्ष।
तुल्यता, स स्त्री (स) सम, तोलता परिमाणता २ सादृश्य, साम्य, समत्वम्।
तुष, स पु (स) तुस, बुस, कडगर, धान्यत्वच् (स्त्री)।
तुषानल, स पु (स) कुकूल, तुषाग्नि (पु)।
तुषार, स पु (स) तुहिन, हिम, प्रालेयं, म(मि)हिका, अवश्याय, नीहार। वि, हिम तुषार, तुषार हिम,-वत्।
तुष्ट, वि (स) तृप्त, तर्पित, पूर्णकाम २ प्रसन्न, मुदित।
तुष्टि, सं स्त्री (सं) तुष्टता, तृप्ति (स्त्री), संतोष २ हर्ष, प्रसन्नता।
तुहमत, सं स्त्री, दे 'तोहमत'।
तुहिन, सं पु (स न) दे 'तुषार' २ चंद्रिका, कौमुदी ३ शीतलता, हिमता।
तूंबा, सं पु दे 'तुंबा'।
तूँबी, सं स्त्री, दे 'तुंबी'।
तू, सर्व (सं त्व)।
—तड़ाक,-तुकार या-तू-तू मैं मैं करना, मु, अशिष्टभाषया कलहायते (ना धा)।
तूणधि, सं पु (सं) } दे 'तरकश'।
तूणी, सं स्त्री (स) }
तूणीर, सं पु (सं पु न) }

तूत, सं पु (फ़ा । मि स तूद) ब्रह्म,-वाद्य दारु (न), सुरूपं, सुपुष्पम्।
तूतिया, म पु, दे 'नीलाथोथा'।
तूती, स स्त्री (फ़ा) शुकभेद २ कनेरी चटका ३ चम्कभेद ४ मुखवाद्यो वाद्यभेद, दे 'तुरही'।
—बोलना, मु, प्र भू, अधिष्ठा (भ्वा प अ)।
नक्कारखाने मे-की आवाज, मु, अरण्येरुदितम्।
तूदा, म पु (फ़ा) चय, राशि (पु) २ सीमाचिह्नम्।
तून, स पु (म तुन्न) नदीवृक्ष, तुणि (णी) क।
तूफान, स पु (अ) झञ्झावात अति चट महा,-वात, वात्या, प्रभञ्जन प्रकम्पन २ तोय-जल,-ओघ वृद्धि (स्त्री)-उपप्लव विप्लव प्रलय, सम्प्लव ३ उपद्रव, सक्षोभ विप्लव ४ आपद्-आपत्ति (स्त्री) ५ दे 'तोहमत'।
—उठाना या मचाना, मु, तुमुल कृ, सक्षोभ उत्पद् (प्रे)।
तूफानी, वि (फ़ा) उपद्रविन्, कलहोत्पादक २ उग्र, प्रचड ३ पिशुन, अभ्यसूयक।
तूमडी, म स्त्री (हिं तूबा) दे 'तुंबी' २ तुम्बोनिर्मित आहितुण्डिकाना वाद्यभेद।
तूमना, क्रि स. (म स्तोम >) ऊर्णा तूल मसृण (अ प वे, तु) घृष् (भ्वा प मे)-विश्लिष् (प्रे)।
तूरान, म पु (फा) तातार-तूरान,-देश।
तूरानी, वि (फा) तातार-तूरान,-देशीय सम्बन्धिन्। स पु, तातार-तूरान-वासिन् (पु)।
तूल[१], स पु (म पु न) दे 'रूई' २ दे 'तूत'।
तूल,[२] स पु (य) दे 'लबाई'।
तूलिका, म स्त्री (स) इ(ई) षीका, तुलि (स्त्री), तूली, ईषिका।
तूली, स स्त्री (स) दे 'तूलिका' २ नाली ३ वर्ति (स्त्री)।
तृण, म पु (म न.) दे 'तिनका'।
तृणवत्, वि (म) तृण,-तुल्य-सम, तुच्छ, क्षुद्र २ अग्राह्य, त्याज्य।
तृतीय, वि (स) दे 'तीसरा'।
तृप्त, वि (स) तुष्ट, पूर्णकाम २ प्रहृष्ट, प्रमुदित।
तृप्ति, स स्त्री (स) सतोष, सौहित्य, तर्पण, प्रीणनम् २ आनद, हर्ष।
तृषा, म स्त्री (स) पिपासा, तृष्णा, उदन्या २ लोभ ३ इच्छा।
तृषित, वि (स.) पिपासित, तर्षित सतृष २ इच्छुक ३ लुब्ध।
तृष्णा, स स्त्री (स) दे 'तृषा' (१३)।
तें, प्रत्य [म तम (प्रत्य)] दे 'से'।
तेंतालीस, वि [स त्रिचत्वारिंशत्(नित्य स्त्री)] त्रयश्चत्वारिंशत्। स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (४३) च।
तेंतालीसवाँ, वि (हिं तेंतालीस) त्रि (त्रयश्) चत्वारिंशत्तम मी म, त्रि (त्रयश्) चत्वारिंश शी श (पु स्त्री न)।
तेंतीस, वि (त्रयस्त्रिंशत् (नित्य स्त्री)। म पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (३३) च।
तेंतीसवाँ, वि (हिं तेंतीस) त्रयस्त्रिंशत्तम मी-म, त्रयस्त्रिंश शी श (पु स्त्री न)।
तेंदुआ, स पु (देश) चित्रक चित्रकव्याघ्र, भेद।
तेंदू, म पु (म तिंदुक) कालस्कध, तिंदुल २ तिंदुल, तिंदुफलम्।
ते, सर्व (म पु तद् का बहु) दे 'वे'।
तेईस, वि [म त्रयोविंशति (नित्य स्त्री)] म पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (२३) च।
तेईसवाँ, वि (हिं तेईस) त्रयोविंशतितम मी म त्रयोविंश शी श (पु स्त्री न)।
तेग, स स्त्री (फा) दे 'तलवार'।
तेज, स पु [स तेजस् (न)] कांति-दीप्ति (स्त्री), आभा, प्रभा २ पराक्रम, वीर्यं, बल ३ प्रताप, अनुभाव, अभिख्या ४ ताप ऊष्मन् (पु) ५ उग्रता, प्रचडता ६ अग्नि (पु)।
तेज, वि (फा) दे 'तीक्ष्ण' (१) २ आशु शीघ्रगामिन्, जवन, महावेग ३ क्षिप्र,-कर्मन् कारिन् ४ दे 'चरपरा ५ उग्र प्रचड ६ महार्घ, बहु-महा,-मूल्य ७ कुशाग्रबुद्धि ८ अतिचचल ९ (विषादि) घोर, घातक।

तेजपत्र, स पु (स न.) पत्र पत्रम्, गध जातम्।
तेजपात, स पु, दे 'तेजपत्र'।
तेजबल, स पु (सं तेजोवती) तेजनी, तेजवती।
तेजस्वी, वि (स विन्) तेजोवत्, तेजस्वत् ओजस्विन्, वर्चस्विन्, सुप्रभ, कान्तिमत् २ प्रतापिन् प्रतापवत् ३ वीर्यवत् बलवत्।
तेज़ाब, स पु (फा) अम्ल, द्रावकम्।
तेज़ी स स्त्री (फा), निशितत्व, तीक्ष्णधारता, प्रखरता २ उग्रता, चडता ३ शीघ्रता, त्वरा ४ महार्घत्व, बहुमूल्यत्व इ।
तेता, वि, दे 'उतना'।
तेरस, स स्त्री (स त्रयोदशी) शुक्लकृष्ण पक्षयो त्रयोदशी तिथि (स्त्री)।
तेरह, वि (स त्रयोदश)। स पु, उक्ता सख्या, तदकौ (१३) च।
तेरहवाँ, वि (हिं तेरह) त्रयोदश शी श (पु स्त्री न)।
तेरा, सर्व (स तव) तावक, [-की (स्त्री)], तावकी-, त्वत्क, त्वदीय, तव।
तेल, स पु (स तैल) स्नेह, म्रक्षण, अभ्यञ्जनम्।
—मलना या लगाना, क्रि स, तैलेन अन् (रु प से)-दिह (अ उ अ)-लिप (तु प अ)।
—निकालना, क्रि स, स्नेह निष्कृष (भ्वा प अ)।
—चढ़ाना, मु, विवाहात्प्राग् वरवध्वो तैलाभ्यञ्जनम्।
जलती पर—डालना, मु, कलह वृध (प्रे)।
तेलगू, स स्त्री (स तैलग >) तैलगप्रान्त आन्ध्रप्रान्त, भाषा, तेलगू (स्त्री)।
तेलहन, सं स्त्री, दे 'तिलहन'।
तेलिन, स स्त्री (हिं तेली) तैलिनी तैलिकी, तैल, करी-कारिणी, चाक्रिकी।
तेलिया, वि (हि तेल) तैल, स्निग्ध कृष्ण भासुर। स पु, कृष्ण, रग रग-वर्ण। २ कृष्णाश्व ३ वत्सनाभ, गरल (विषभेद)।
तेली, स पु (स तैलिन्) तैलकार तैलिक, चाक्रिक, धूमर।
तेवर, स पु (हि तेह=क्रोध) सकोप सक्रोध, दृष्टि (स्त्री) २ भ्रू (स्त्री), भ्रूलता।
—बदलना, मु, भ्रूभग कृ, भ्रुकुटि बन्ध् (क्र प अ)-रच् (चु)।
तेवरी री, स स्त्री, 'त्योरी'।
तेव(त्यो)हार, स पु, दे 'तिहवार'।
तेहरा, वि (हिं तीन) त्रिगुण गुणित, त्रिरावृत्त, त्रिरावर्तित।
तैयार, वि (फा) (मनुष्य) उद्यत, उद्युक्त, सज्ज सिद्ध, सनद्ध २ (वस्तु) सज्जी, कृत भूत, आयोजित, उपस्थित, उप,-कल्प-कल्पित, सज्ज, सिद्ध ३ पीन, हृष्टपुष्ट।
—करना, क्रि स, सज्जीकृ, सनह् (प्रे), उपपरि-कल्प् (प्रे), उपस्था (प्रे)।
—होना, क्रि अ, सज्जीभू, सनह् (दि उ अ) उद्यत-सन्नद्ध (वि) भू।
तैयारी, स स्त्री (फा तैयार) सज्जता, सन्नद्धता, उद्यतता २ सिद्धि-उपस्थिति (स्त्री) ३ आडम्बर, श्री, शोभा।
तैरना, क्रि स (स तरण) पार गम् (भ्वा प अ), स, तॄ (भ्वा प से, द्वितीया के साथ)। क्रि अ, तॄ, प्लु (भ्वा आ अ)।
तैराक, स पु (हिं तैरना) तारक, तरित, तरण प्लवन,-कृत (पु)।
तैराकी, स पु (हिं तैराक) तर, तरण, प्लव, प्लवनम्।
तैल, स पु (स न) दे 'तेल'।
तैश, स पु (अ) कोप, क्रोध।
तैसा, वि (स तादृश) दे 'वैसा'।
तोंद, स स्त्री (स तुन्द) पिचिण्ड, लम्बोदरम्।
—निकलना, स पु, तुन्दप्रसार, तुन्दिलता, तुन्दिलता।
तोंद(दै)ल, वि (हिं तोंद) तुन्दिक, तुन्दित, तुन्दिभ तुन्दिल, तुन्दिन, पिचिण्डिल, लम्बोदर।
तोंदी, स स्त्री [स तुण्डि (स्त्री)] तुन्द-दी, दे 'नाभि'।
तो, तौ, अव्य (स तद् >) तस्या दशाया-मित्यर्थ (सप्तमी), तर्हि, तदा, तदानीम्।
—भी, अव्य, दे 'तथापि'।
तोड़ना, क्रि स (सं त्रोटन) त्रुट् (प्रे) खण्ड् (चु), भञ्ज् (रु प अ) २ भिद्-छिद् (रु प अ), दॄ-दृ (क्र प से) ३ अवमन्, नि (रवा उ अ), आदा (जु आ अ), ग्रह् (क्र प स) ४ नश्-ध्वंस् (प्रे) ५ स्वपक्ष ग्रह् (प्रे) स्वपक्षपातिन विधा (जु उ अ)

६ नाशमाति परिवृत (प्रे) *तुन (प्रे)। स पु, भोटन, भञ्जन, भेदन, अवन्म-त्वयन, नाश, ध्वस इ।

तोड़नेवाला, स पु, त्रोटक, भञ्जक, भेदक, अवचायक, नाशक इ।

टूटा हुआ, वि, त्रुटित, भग्न, भिन्न, ध्वस्त इ।

तोड़ा, स पु (हिं तोड़ना) नाणकमुद्रा, कोश-कोष २ धन,-कोष ग्रन्थि (पु) ३ सुवर्णरजत,-अन्दु-अन्दूः (दोनों स्त्री) ४ तट-स्थी ५ हानि (स्त्री), अपचय ६ रज्जु-खण्ड-डम्।

तोतलाना, क्रि अ, दे 'तुतलाना'।

तोता, स पु (फा) कीर, शुक, वक्र-तुण्ड चंचु (पु) किंकिरात। (स्त्री, कीरी शुकी इ)।

—**चश्म**, स पु (फा) विश्वासघातक, अप्र स्यायिन, अविश्वासिन्।

—**चश्मी**, स स्त्री (फा) अविश्वास, अप्रत्यय।

तोते की सी आँख फेरना, मु, नितान्त उपेक्ष् (भ्वा आ से)-उदास् (अ आ से)।

हाथों के तोते उड़ जाना, मु, अत्याकुली भवी भू, मन्व्यामुह् (दि प वे)।

तोप, स स्त्री (तु) शतघ्नी, अग्न्यस्त्र, *तोपम्।

—**खाना**, स स्त्री (तु+फा) शतघ्नीशाला २ अग्न्यस्त्र शतघ्नी समूह।

तोपची, स पु (तु तोप) दे 'गोलन्दाज'।

तोबड़ा, स पु [फा तो (तु) बरा] *अश्वाहार भस्त्रा।

तोबा, स स्त्री (अ तौब) पापानावृत्तिप्रतिज्ञा, पश्चात्ताप।

तोम, स पु (स स्तोम) चय, निकर, पुञ्ज, समूह।

तोमर, स पु (स पु न) भल्लसदृश प्राचीनास्त्रम् २ ३ द्वादशमात्रा-नवकम्-चन्दस (न) वृत्तम् ४ राजपुत्रवंशविशेष।

तोय, स पु (स न) जल, पानीयम्।

—**कर्म**, स पु (स-कर्म न) तर्पणम् दे०।

—**क्रीडा**, स स्त्री (स) जलक्रीडा।

—**द**, स पु (स) जलद, नीरद, अम्भोद।

—**धि, निधि**, स पु (स) जलधि, वारिधि, समुद्र।

तोरई, स स्त्री, दे 'तुरई'।

तोरण, स पु (स पु न) बहिर्द्वार २ वदनमाला ३ ग्रीवा।

तोल, स पु (स) भार, गुरुत्व २ भार मान, मान, मात्र, परिमाण ३ तोलन, भार मान, मस्ति (स्त्री)।

तोलन, स पु (स न) तुल्या भार,-मान मापन २ उत्थापनम्।

तोलना, क्रि स (स तोलन) तुल् (चु), तूल (भ्वा प से), तुलायां धृ (चु)। स पु, दे 'तोल'।

तोलनेवाला, स पु, तोलक, भारमातृ (पु)।

तोलवाना, क्रि प्रे, व 'तोलना' के प्रे रूप।

तोला, स पु (स तोल-क) तोलक, कर्ष, पण, चत्रिरक्तिपरिमाण, कोल, वटक, कर्षार्धम्।

तोशक, स स्त्री (तु) तूला, तूलिका।

तोष, स पु (स) तृप्ति-तुष्टि (स्त्री), सन्तोष २ प्रसन्नता, आनन्द।

तोहफ़ा, स पु (अ) उपहार, उपायन, उपदा, उपग्राह्यम्। वि, उत्कृष्ट, उत्तम।

तोहमत, स स्त्री (अ) मिथ्याभियोग, मृषा दोषारोप।

—**लगाना**, क्रि स मिथ्या दुष् (प्रे दूषयति), मृषा अभियुज् (रु आ अ चु)।

तौर, स पु (अ) आचार, व्यवहार २ दशा, अवस्था ३ प्रकार विधा (समासान्त में)।

—**तरीका**, स पु (अ) शिष्टाचार २ आचरणम्।

तौल, स पु, दे 'तोल'।

तौलना, क्रि स, दे 'तोलना'।

तौलिया, स पु (अ टावेल) मार्जनवस्त्र, वस्त्रम्।

तौहीन, स स्त्री (अ) अपमान, निरादर, अवमानना, अवज्ञा।

त्यक्त, वि (स) विसृष्ट, उज्झित, अपास्त।

त्याग, स पु (स) उत्सर्ग, मोचन, अपासन, उज्झन, दान २ विरक्ति (स्त्री), वैराग्य, सन्यास ३ दे 'तलाक'।

—**पत्र**, स पु (स न) उत्सर्गलेख।

त्यागना, क्रि स (स त्याग) त्यज् (भ्वा

वैक्लव्य २ स्खलित, भ्रांति (स्त्री) ३ सदेह मशय ।

त्रेता, स पु (स) त्रेता द्वितीय, युगम् ।

त्वचा, स स्त्री (स) त्वच् (स्त्री), चर्मन् (न) छविम् (स्त्री), सत्वदनी, असृग्धरा २ वल्क-क, वल्कल ल, ३ त्वगिंद्रिय ४ (साप वा) कंचुक, निर्मोक ।

त्वरा, स स्त्री (स) शीघ्रता, दे 'जल्दी'।

त्वरित, वि (स) शीघ्र, दे 'तेज'।

थ

थ, देवनागरीवर्णमालायाः सप्तदशो व्यञ्जनवर्ण थकार ।

थंब भ, स पु, दे 'स्तम्भ'

थई, स स्त्री (स स्थान) स्थल २ राशि (पु), चय ।

थकना, क्रि अ (स्थग >) परि श्रम् (दि प से), क्लम् (भ्वा दि प से) आयस् (भ्वा दि प से) २ निषद् (दि आ अ) ।

थकान, स स्त्री (हिं थकना) आयाम, क्लम, खेद, श्रम, क्लाति (स्त्री), शैथिल्यम् ।

थकाना, क्रि स, व 'थकना' के प्रे रूप ।

थकामाँदा, वि, परि, श्रान्त, क्लान्त, खिन्न, म्लान ।

थकावट, स स्त्री, दे 'थकान'।

थकित, वि, दे 'थकामाँदा'।

थड़ा, स पु (स स्थल) वेदिका, वितर्दी दि (स्त्री) २ आपणिकासन, पण्यापीठ पीठ ठम् ।

थन, स पु (स स्तन) कुच, पयोधर ।

थनेली, स स्त्री (हिं थन) स्तन-कुच, गण्ड पिटक ।

थपकना, क्रि स (अनु थपथप) करतलेन परमृश-स्पृश् (तु प अ), स्नेहन आहन् (अ प अ)-लघु प्रह (भ्वा प अ)-तड (चु) ।

थपकी, स स्त्री (हिं थपकना) करतल परामर्श, मृदुस्पृश प्रेम, आघात प्रहार चपेट ।

थपड़ी, स स्त्री (अनु०) दे० 'ताली'।

थपेड़ा, स पु (अनु थप) तरग-कल्लोल ऊर्मि वीची सघट्ट सघर्ष अभिघात २ दे 'थप्पड़'।

थप्पड़, स पु (अनु थप) चपेट टिका, तल चपेट,-आघात प्रहार ।

—मारना, क्रि स, चपेट दा, चपेटिकया तड् (चु)-प्रह (भ्वा प अ)-आहन् (अ प अ) ।

थम, स पु दे 'स्तम्भ'।

थमना, क्रि अ (स स्तभन) विरम् (भ्वा प अ), उपप्रशाम् (दि प से), रुद्धगति (वि) भू २ विश्रम, (दि प से), निवृत् (भ्वा आ से) । स पु, उपप्र, शम, विराम विरति (स्त्री) २ निवृत्ति विश्राति (स्त्री), विच्छेद ।

थरथराना, क्रि अ (अनु) (भयेन) कम्प् वेप (भ्वा आ से) २ स्फुर (तु प से), स्पन्द् (भ्वा आ से) ।

थरथराहट, } स स्त्री (हिं थरथराना)
थरथरी, } वेपन, वेपथु (पु), प्र, कप कम्पन २ स्फुरण, स्पदनम् ।

थर्मामीटर, स पु (अ) दे 'तापमानयत्र'।

थर्राना, क्रि अ (अनु) दे 'थरथराना'।

थल, स पु, दे 'स्थल'।

थलथलाना, क्रि अ (अनु थलथल >) अभीक्ष्ण विचल् (भ्वा प से), थलथलायते (ना धा) ।

थवई, स पु (स स्थपति) पलगड, सुधा जीविन्, लेपक, गृह,-कारक-सवेशक ।

थाइरायड ग्लैंड, स पु (अं) चुबिराग्रन्थि ।

थाक, स पु (स स्था>) ग्रामसीमा २ राशि (पु), चय ।

थाती, स स्त्री (स स्थातृ>) दे 'अमानत' २ दे 'पूजी'।

थान, स पु (स स्थान) स्थल, प्रदेश २ आलय, गृह ३ देवालय, मन्दिर ४ पशु, शाला स्थान ५ (वस्त्रादीना) *आवर्त ।

थानक, स पु (स स्थानकम्) स्थान, स्थलम् २ नगरम् ३ फेन ४ आलवालम् ।

थाना, स पु (स स्थान>) गुल्म, रक्षा रक्षि, स्थानम् ।

थानेदार, स पु (हिं+फा) रक्षास्थाना ध्यक्ष, *गुल्मनिरीक्षक, रक्षिपदर्शक ।

थाप, म स्त्री (स स्थापन>) मृदङ्गादिताडनो ध्वनि (पु) वा २ चपेट ३ अङ्क, चिह्न ४ प्रतिष्ठा, सम्मान ५ शपथ ६ स्तु मृदु प्रहार आघात ७ स्थिति (स्त्री)।

थापना, क्रि स (स स्थापन) स्था (प्रे स्थापयति), आ नि धा (जु उ अ), न्यस (दि प से), अवरुद्ध निरिक्ष (प्रे) इ।
स स्त्री, स्थापना, आ नि, धान, याचना, रोपण, २ मूर्त्यादीनां स्थापना प्रतिष्ठापना।

थापा, स पु (हि थापना) कराङ्क, पञ्चाङ्गुली चिह्नम्।

थापी, स स्त्री (हि थापना) १ २ मृत्तिका कुट्टिम, नाम्नानुसार ३ दे 'थपकी'।

थाम, स स्त्री (हि थामना) आ अव, लम्बनम्, धारणं, ग्रहणम्, स्तम्भनम् २ आधार, आलम्ब, अवलम्ब, आश्रय।

थामना, क्रि स (सं स्तम्भन) अव उद्-धृ संस्तम्भ (क्र प से या प्रे), अवलम्ब आलम्ब दा, अव आलम्ब (भ्वा आ स) २ अव, स्था (प्रे), वि, स्तम्भ, रुध (रु उ अ), विरम् (प्रे) ३ साहाय्य दा ४ निरुध।

थाल, स पु (१ स्थाल) धातुमयभाजनभेद।

थाला, स पु (हि थाल) आ (ल) वाल, आवाल, आवाप।

थाली, स स्त्री (हि थाल) स्थालक, लघु स्थालम्।

थाह, स स्त्री (स स्था>) (नद्यादीनां) तल अधोभाग २ गाध ३ गाम्भीर्यानुमान ४ अन्त, सीमा।

—**लेना**, क्रि स (तल-वेध) परीक्ष (भ्वा आ से) निरूप (चु) मा (जु आ अ)।

थियेटर, स पु (अ) नाट्य गृह-नाटक, शाला-गृहं मन्दिर भूमि (स्त्री)।

थिगली, स स्त्री (हि थिगली) पट-खण्ड शकल।

वस्त्र में—लगाना, मु, असमय विदीर्णानि (सन्धान)।

थियोसोफी, स स्त्री (अं) ब्रह्मविद्या २ सम्प्रदायविशेष।

थिर, वि, दे 'स्थिर'।

थिरकना, क्रि अ (अनु थिर) नृत्य चलतो नितम्बं कंपू-वेपू (भ्वा आ से)।

थिरता, स स्त्री, दे 'स्थिरता'।

थुड़ी, स स्त्री (अनु) धिक, हा हन्त, अवज्ञा-तुच्छता-गर्हा अवहेला, शब्द।

—**थुड़ी करना**, मु०, अव ज्ञा (क्र्या प से), दे 'धिक्कारना'।

—**थुड़ी होना**, मु० व० 'धिक्कारना' के कर्म० के रूप।

थुथनी, स स्त्री, दे 'थूथनी'।

थूक, स स्त्री (हि थूकना) मुखस्राव, लाला, ष्ठीवन, नि, ष्ठ्यूतम्।

—**की पिचकारी**, स स्त्री, लालाप्रवृत्ति (पु)।

—**कर चाटना**, मु, प्रतिज्ञा भञ्ज् (रु प अ), वचन व्यतिक्रम् (भ्वा प से)।

थूकना, क्रि स (अनु थू) नि, ष्ठिव (भ्वा दि प से, ष्ठीवति, ष्ठीव्यति), लाला नि सृ (प्रे), स पु, नि, ष्ठीव-वन, निष्ठ्युति (स्त्री)।

थूथनी, स स्त्री (देश थूथन) प्रलम्बमुख, लम्बास्यम्।

थूनी, स स्त्री (स स्थूणा) स्थाणु (पु), स्तम्भ, अवलम्ब।

थूहर, स पु (स स्थूणा>) नेत्रारि (पु), निस्त्रिंशपत्रिका, स्नुही-हि (स्त्री), वज्रिन, वज्र, द्रुम-कण्टक, सिंहतुण्ड, मारुण्ड।

थेथा, स पु (देश) दे 'नगीना'।

थैला, स पु (स स्थल>) प्रसेव-, स्यूत-क, पुट-क, स्यौत न, धौनकटः।

थैली, स स्त्री (हि थैला) प्रसेवक, स्यू(स्यौ) तक, पुटक।

थोक, स पु (स स्तवक) राशि (पुं), चय २ सङ्घ, गण।

—**फ़रोश**, -दार, स पु (हि + फ़ा) चय स्तूप, विक्रयिन्।

थोड़ा, वि (स स्तोक) न्यून, अल्प, स्वल्प, अनुरु-अल्प-क्षुद्र-लघु, परिमाण-मात्र, इत्वर।

—**करना**, क्रि स, ऊनयति (ना धा) अल्पा न्यूनी कृ, ह्रस् (प्रे)।

—**होना**, क्रि अ, अल्पीन्यूनी भू, भू. क्रि अपचि (कर्म)। क्रि वि, स्तोक, मनाक्, ईषत्, यद् किंचित्।

—**थोड़ा**, क्रि, वि, अल्पशः अल्पाल्प, स्तोकशः।

—**बहुत**, वि, न्यूनाधिक।

—**सा**, क्रि वि, दे 'थोड़ा' क्रि वि।

थोड़े से, वि, अनिश्चित, कतिपया, स्तोका ।

थोथा, वि (देश) रिक्त शून्य, गर्भे मध्य-उदर, सुषिर २ कुंठित, अनिशित ३ निःसार, निर्गुण ४ निरर्थक, निष्प्रयोजन ।

थोपना, क्रि स (स स्थापन) अनु प्र वि लिप् (तु प अ), दिह् (अ उ अ) २ राशी पिंडी कृ, समाक्षिप (तु प अ) ३ दुष् (प्रे), दोष आरुह् (प्रे आरोपयति) क्षिप् ।

द

द, देवनागरीवर्णमालाया अष्टादशो व्यंजनवर्ण, दकार ।

दग, वि (फा) चकित, विस्मित, स्तब्ध ।

दगई, वि (हिं दगा) उपद्रविन्, कलहप्रिय २ उग्र प्रचंड ।

दगल, स पु (फा) मल्लबाहु हस्ताहस्ति, युद्ध मल्लक्रीडा २ मल्ल भू भूमि (दोनों स्त्री) ३ जनौघ, लोकसमूह ।

दगा, स पु (फा दगल) कलह, उपद्रव २ कल्कल, कोलाहल ।

दड, स पु (स) दे 'डंड' ।

दडधर, स पु (स) यमराज, दंडपाणि २ नृप, शासक ३ परिव्राजक, सन्न्यासिन् ।

दडनीय, वि (स) दंड्य, दंडयितव्य, दमनीय ।

दडवत्, स पु स्त्री (स अव्य) साष्टांग, प्रणाम नमस्कार ।

दडी, स पु (स डिन्) दंडधर परिव्राजक २ यम ३ नृप ४ दौवारिक ५ दंडधारी मनुष्य ६ सस्कृतकविविशेष ।

दत, स पु (स) दशन, रद, रदन, दे 'दाँत' ।

—कथा, स स्त्री (स) लोकपारपरीय-कथा, पारपर्य, लोक जन, श्रुति (स्त्री) ।

—च्छद, स पु (स) ओष्ठ, रदनच्छद ।

—धावन, स पु (स न) दंत-काष्ठ मार्जनम् ।

दंती,[1] स स्त्री (स) एरंडपत्रिका, रेचनी, विशोधनी ।

दंती,[2] स पु (स निन्) गज, द्विप ।

दँतुला, वि (स दतुल) दंतुर, दंतुरित, उन्नतदंत ।

दंतोष्ठ्य, वि (स) दन्तौष्ठैरुच्चार्यवर्ण (उ, व) ।

दंत्य, वि (स) रदनविषयक २ दंतोच्चार्य (तवर्गादि) ।

दंदनाना, क्रि अ (अनु) दनदनायते (ना धा), रम् (भ्वा आ अ), नद् (भ्वा प से) ।

ददान, स पु (फा) दन्त, दशन, रदन ।

—साज़, स पु, दन्तकार, दन्तचिकित्सक ।

ददाना, स पु (फ़ा) दत, छेद ।

ददानेदार, वि (फा) दंतुर, दंतुरित, अनुक्रकच ।

दपती-ति, स पु (स दंपती पु द्वि) ज जाया भार्या, पती (पु द्वि) ।

दभ, स पु (स) कपट ट, कापट्य, आर्व रूपता, लिंगवृत्ति (स्त्री), आडंबर, वक्रव्रत, धर्मोपधा दांभिकता, छाद्मिकता २ अभि मान, दर्प ।

दभी, वि (स भिन्) कपटिन्, कापटिक छाद्मिक दांभिक [-की (स्त्री)], कपट, छद्म २ अभिमानिन्, साडंबर ।

दभोलि, स पु (स) इन्द्रवज्र जम् २ हीर रम् ।

दश, स पु (स) दे 'डाँस'[1] २ दे 'डक' (१२) ३ दंत, रदन ।

दई, स पु (स दैव) ईश्वर २ अदृष्ट, भाग्यम् ।

—मारा, वि, मद हत, भाग्य ।

दकीक़ा, स पु (अ) युक्ति (स्त्री), उपाय ।

कोई—बाकी न रखना, मु सर्वोपायान् समस्त युक्ती प्रयुज (रु आ अ, चु) ।

दक्खिन, स पु, दे 'दक्षिण' ।

दक्ष, वि (स) कुशल, निपुण, चतुर, प्रवीण, विदग्ध, विशेषज्ञ । स पु, मरूपुत्र, शिव श्वशुर, सतीपितृ ।

दक्षता, स स्त्री (स) कौशल, नैपुण्य, चातुर्य, प्रावीण्य, वैदग्ध्य, पाटवम् ।

दक्षिण, वि (स) अपसव्य, सव्येतर, वामेतर २ दक्ष निपुण । स पु, दक्षिणं आशा दिशा दिश (स्त्री), दक्षिणा, वैवस्वती, याम्या, अवाची २ दक्षिणापथ, दक्षिण ण ३ दक्षिण, पार्श्व र्श्वं ४ नायकभेद ।

—पूर्व, स पु, आग्नेयी, दक्षिणपूर्वा । वि, आग्नेय, दक्षिणपूर्व ।

—पश्चिम, स पु, नैर्ऋती, दक्षिणपश्चिमा। वि नैर्ऋत, दक्षिणपश्चिम।
दक्षिणा, स स्त्री (स) यज्ञादिविधिदान गोरोन्स्यिशुल्क क २ दान, त्याग उत्सर्ग।
दक्षिणायन, स पु (स न) भानोर्दक्षिणा गति (स्त्री)।
—सूर्य, स पु (स) मकरसंक्रांति (स्त्री)।
दक्षिणी, वि (स दक्षिण>) द (दा) क्षिण, दाक्षिणात्य अवाचीन, अवाच्य, याम्य, अगस्त्य।
दख़ल स पु (अ) अधिकार, स्वामित्व २ हस्तक्षेप परकार्यचर्चा ३ प्रवेश, उपगम।
—देना, क्रि स, परकार्याणि निरूप (चु) चर्च (चु आ से), परकर्मसु व्याप् (तु आ अ) मध्ये पत् (भ्वा प से)।
दगना, क्रि च, व 'दागना' के कर्म के रूप।
दगा, स स्त्री (अ) छल, कपट, वंचन, प्रतारणा २ विश्वासघात।
—करना या देना, क्रि स, प्रतॄ प्रलुभ् भ्रम मुह (प्रे), वञ्च (चु)।
—दार,—बाज़, वि (अ+फा) कितव, प्रतारक वंचक शठ, विश्वासघातिन् छलिन्, कापटिक।
—बाजी, स स्त्री (फा) वंचकता, कैतव २ विश्वासघातकता।
दग्ध, वि (स) ज्वलित, भस्मीभूत, भस्मसात् कृत २ दुःखित, व्यथित।
दढ़ियल, वि, दे 'न्ढ़ियल'।
दतवन, दतौन, स स्त्री, दे दातुन'।
दत्त, वि (स) वितीर्ण, विश्राणित, अर्पित।
दत्तक स पु (स) कृतक पुत्र, दत्रिम सुत, दत्तकपुत्र।
दत्तचित्त, वि (स) अवहित, समाहित अभिनिविष्ट एकाग्र अनन्यवृत्ति।
ददिहाल, स पु (हिं दादा+स आलय) पितामहालय २ पितामह, कुलवंश।
ददु, स पु (स) दद्रु-द्रूं, दद्रु, दद्रुरोग, मण्डलकुष्ठम्।
दधि, स पु (स न) दे. 'दही'।
—जात, स पु (स) चन्द्र, सोम।
दधीचि, स पु (स) मुनिविशेष।
दनदनाना, क्रि अ (अनु) दे 'ददनाना'।
दनादन, क्रि वि (अनु) सदनदनशब्द २ अनुक्रमेण, यथाक्रमम्।
दनुज, स पु (स) असुर, राक्षस।
दफती, स स्त्री (अ दफ्तीन) दे 'गत्ता'।
दफन, स पु (अ) निखनन २ श्मशाने स्थापनम्।
—करना, क्रि स, श्मशाने प्रेतभूमौ निधा (जु उ अ) स्था (प्रे) निक्षिप (तु प अ) २ निखन् (भ्वा प से,), निगुह् (भ्वा उ से)।
दफा, स स्त्री (अ दफअ) दे 'बार' २ विधान, धारा। वि, अपसारित, दूरीकृत, निष्कासित, वि, चालित।
दफ्तर, स पु (फा) कार्यालय २ बृहत्पत्र ३ सविस्तरवृत्तांत।
दफ्तरी, स पु (फा) पत्रसयोजक २ दे 'जिल्दसाज'। वि, कार्यालयसंबंधिन्।
दबग, वि (हिं दबाना) प्रभाव, वद शालिन्, अनुभाववद्, प्रतापिन्, प्रबल।
दबकना, क्रि अ (हिं दबाना) (भयेन) गुप्-गुह् (कर्म), गुप्त निलीन (वि) भू निली (दि आ अ) २ परावस्कन्दनार्थे निभृत स्था (भ्वा प अ) ३ देह नम् (प्रे), नम्रीभू।
दबकाना, क्रि स व 'दबकना' के प्रे रूप २ दे 'डाँटना'।
दबदबा, स पु (अ) आतंक प्रताप, अनुभाव, प्रभाव, तेजस (न), प्रौढि (स्त्री)।
दबना, क्रि अ (स दमन>) [भ (भा) रेण] अवआनम् (भ्वा प अ) अथवा नम्रो-वक्री, भू २ संकुच्-संपिट् मंह् (कर्म) ३ पीड्-क्लिश् (कर्म) ४ निरुद् निगुह् (कर्म) ५ प्रच्छन्न गुप्त निलीन (वि) भू ६ वश इ या (अ प अ), वशीभू ७ आक्रम् निपिष् मसृद् (कर्म) ८ भी (जु प अ), त्रस (दि प से)।
दबे पाँव (चलना), मु, अपादशब्द नीरव निभृत चल् (भ्वा प से)।
दबाना, क्रि स, व 'दबना' के प्रे रूप।
दबा लेना, मु, अन्यायेन ग्रह् (क्र् प से) आत्मसात्कृ।

दबाव, स पु (हिं दबाना) अतिभार, निर्बंध, पीडन २ अनुभव, प्रताप ।
दबैल, वि (हिं दबना) कातर, भीरु, समाध्वस त्रस्त।
दबोचना, क्रि स (हिं दबाना) बलेन सहसा अभिद्र (भ्वा प अ) आक्रम् (भ्वा प से आ अ)-ग्रह (क्र्या प से)-दृ (चु) । स पु सहसा ग्रहण धरण-आक्रमण इ ।
दबौनी, स स्त्री (हिं दबाना) *पत्रदमनी २ कास्यकाराणामुपकरणभेद ।
दभ्र, वि (स) स्वल्प, स्तोक २ सूक्ष्म कृश । स पु समुद्र ।
दम, स पु (स) आत्मसयम, इन्द्रिय-जय निग्रह, दान्ति (स्त्री), दमथ थु (पु) २ दण्ड शासन, निग्रह ३ गृह ४ कर्दम ।
दम, स पु (फा), प्रविं, श्वास, उच्छ्वास, उच्छ्वसित २ असव प्राणा (पु बहु), जीवन, जीवित ३ फूत्कार, फूत्कृत, धूमाकर्ष ४ पल, क्षण निमि (मे) ष ५ व्यक्तित्व ६ अभिमान, दर्प ७ छल, कपट ८ बाष्पेण पाचनम् ।
—दिलासा, स पु, मोसाया, सात्वन, आश्वासनम् ।
—बदम, क्रि वि अनुप्रति, क्षण-पल-निमिष, क्षणे क्षणे, पले पले ।
—चढ़ना, मु, कष्टेन-सत्वर श्वस (अ प से) कृच्छ्रेण-दीर्घ नि.श्वस ।
—निकलना, मु, दे 'मरना' ।
—भर म, मु, क्षणेन, क्षण-निमेष-मात्रेण, झटिति, सद्य एव ।
—मे दम आना, मु, चेतना-सज्ञा लभ (भ्वा आ अ)।
—लगाना, मु तमाखु-धूम पा (भ्वा प अ)।
—लेना, मु, विश्रम् (दि प से), उद्योगात् विरम् (भ्वा प अ)।
—साधना, मु, प्राणान् रुध (रु प अ)।
—नाक में आना, अत्यन्त तम-क्लिश्-पीड (कर्म)-खिद् (दि आ अ)।
दमक, स स्त्री (हिं चमक का अनु) दे 'चमक'।
दमकना, क्रि अ, दे 'चमकना'।
दमकल, स स्त्री (हिं दम+कल) *धमयन्त्रम् २ अग्नियन्त्र (फ़ायर इंजन) ३ जलोत्तोलन यन्त्रम् ।
दमकला, स पु (हिं दमकल) *जलसेचनी।
दमडी, स स्त्री (स द्रम्म>) काकिनी णी, काकिणिका बोधी पण-पाद-अष्टमभाग ।
दमदमा स पु (फा) मिश्रित्प्रसेवपुति (स्त्री)(हिं मोरचा)।
दमन, स पु (स न) अभिभव, वि, जय निरोधन नियमन, वशा-स्वायत्ती-करण, (२ ३) दे दम' (१-२)।
दमनीय वि (स) वश्य दया-श्यम्, निग्रहणीय -या-यम् सयमनीय -या-यम् ।
दमयती, स स्त्री (स) भैमी, वैदर्भी, नलपत्नी ।
दमा, स पु (फा) श्वासरोग, कृच्छ्रोच्छ्वास, तमक तमकश्वास ।
दमादम, क्रि वि (अनु०) सदम-दमशब्दम् २ निरन्तर, सततम् ।
दमामा, स पु (फा) दे 'नक्कारा'।
दमित, वि (स०) सयमित -ता-तम्, नियमित -ता-तम्, शामित-ता-तम्, निरुद्ध द्धा-द्धम् ।
दया, स स्त्री (सं) अनुकम्पा, अनुग्रह, कृपा, प्रसाद, करुणा, हितेच्छा ।
—निधान } वि, परमदयालु, परमकृपालु,
—निधि } परमकारुणिक, स पुं, ईश्वर।
—मय
—पात्र, वि (सं न) दयनीय, अनुकम्प्य, करुणार्ह ।
दयानतदार, वि (अ दयानत+फा दार) शुचि, सरल, ऋजु शुद्धात्मन्, निष्कपट, अर्थशुचि ।
दयानतदारी, स स्त्री (अ+फा) शुचिता, अर्थशौच, आर्जव, सत्यता, निष्कपटता ।
दयालु, वि (सं) दयिलु, दयाशील, दयार्द्र, कृपालु कारुणिक, अनुकम्पक, सदय, दयावत्।
दयालुता, सं स्त्री (स) कृपालुता दयाशीलता, दे 'दया'।
दर¹, स स्त्री पु, दे 'निर्ख'।
दर², स पु (फा) द्वारं, द्वार् (स्त्री), प्रति (ती) हार ।

—बदर, क्रि वि, गृहाद् गृह, द्वारे द्वारे, अनुद्वारम्।
—बदर फिरना, मु०, दारिद्र्येण परिभ्रम (भ्वा प से)।
दरकना, क्रि अ (स दर >) भज विद्, विभिद् (कर्म), स्फुट (तु प से) विदल (भ्वा प से)।
दरकाना, क्रि स, व 'दरकना' के प्रे रूप।
दरकार, वि (फा) अपेक्षित, आकांक्षित, आवश्यक।
दरकिनार, क्रि वि, (फा) दूरे आस्ताम पृथक् तिष्ठतु, का कथा।
दरख्त, स पु (फा) वृक्ष, तरु।
दरख्वास्त, स स्त्री (फा) निवेदन २ निवे दनपत्रम्।
दरगाह, स स्त्री (फा) देहली २ न्यायाल्य ३ (मृतस्य) समाधि (पु) ४ मंदिर, देवालय।
दरज, स स्त्री, दे 'दरार'।
दरद, स पु, दे 'दर्द'।
दरदरा, वि (स दरण>) अर्द्धचूर्णित, सामिपिष्ट।
दरबा, स पु (फा दर) विटंक, कपोत पालिका २ कपोतबिल्वम्।
दरबान, स पु (फा। मि स, द्वारवान्) द्वारपाल, दौवारिक।
दरबानी, स स्त्री (फा) दौवारिकता, द्वारस्थता।
दरबार, स पु (फा) राज,सभा-कुल, आस्थान नी २ अधिकरण, न्याय धर्म-सभा, व्यवहारमण्डप।
दरबारी, स पु (फा) राजसभासद् (पु), सभ्य, सचिव, राजवल्लभ, आस्थानचर।
दरमियान, स पु तथा क्रि वि, दे 'मध्य'।
दरमियानी, वि (फा) दे 'मध्यम'।
दरयाफ्त, वि, दे 'दरियाफ्त'।
दरवाज़ा, स पु (फा) दे 'दर' २ दे 'किवाड़'।
दरवेश, स पु (फा) साधु (पुं), सन्न्या सिन्, भिक्षु (पु)।
दरस, स पु (सं दर्श) दर्शन, वीक्षण २ स, आगम मिलनं ३ सौन्दर्यम्।
दराँती, स स्त्री (स दात्र) लवित्र, शस्य कर्तनी, गडगीकम्।
दराज़¹, स स्त्री (अ ड्राअर) चलसम्पुट, निष्कर्षणी।
दराज़, वि (फा) दीर्घ, लम्ब।
दरार, स स्त्री (स दर र) छेद, भेद, स्फोट, भिदा, भग।
दरिंदा, स पु (फा) श्वापद, हिंस्र घातुक पिशिताश, पशु (पुं)-जीव।
दरिद्र द्री, वि (स दरिद्र) अधन, निर्धन अकिंचन, नि स्व, अर्थ धन द्रव्य विभव, हीन, दीन, दुर्गत।
दरिद्रता, स स्त्री (स) दारिद्र्य, निर्धनता, अकिंचनता, दुर्गति (स्त्री) इ।
दरिया, स पु (फा) नदी, सरित् (स्त्री) २ सागर।
—दिल, वि (फा) उदार, दानशील, वदान्य २ महानुभाव, उदारचेतस्।
दरियाई घोड़ा, स पु (फा + हिं) करिया दस (स), नदीघोटक।
दरियाफ्त, वि (फा) ज्ञात, विदित। स स्त्री, आविष्कार।
दरी¹, स स्त्री (स) दे 'गुफा'।
दरी, स स्त्री (स स्तर >) कुथ था, आस्त रण, परिस्तोम।
दरीचा, स पु (फा) वातायन २ द्वारकम्।
दरीबा, स पु, (फा) ताम्बूलापण, ताम्बूल पर्णहट्ट, २ हट्ट, विपणी णि (स्त्री)।
दरेग, स पु (फा) अरुचि (स्त्री), विमुखता।
दर्ज, वि (फा) लिखित, लेख्ये निवेशित।
—करना, क्रि स, लिख (तु प से), लेख्ये निविश (प्रे)।
दर्जन, स पु (अं डजन) द्वादशक, द्वादश समूह।
दर्जा, स पु (अ) श्रेणी णि (स्त्री), वर्ग, छात्रगण २ कोटि (स्त्री), काष्ठा ३ पद, पदवी वि (स्त्री) ४ क्रम, परम्परा ५ भूमि (स्त्री) (मकान की मंजिल)। क्रि वि, गुण, वार, गुणितम्।
—ब दर्जा, क्रि वि, क्रमश, क्रमेण, शनै शनै।
दर्जिन, सं स्त्री (फा दर्जी) तुन्नवायी, (सी) सिवी, सूचिकर्मोपजीविनी।
दर्जी, स पु (फा) तुन्नवाय, सू (सी) चिक, वस्त्रसेवक, सूचिकर्मोपजीविन्।

दर्द, स पु (फा) पीड़ा, व्यथा, दुःख, वेदना, अ (आ) र्ति (स्त्री) यातना, क्लेश, कष्ट कृच्छ्र २ करुणा, दया, महानुभूति (स्त्री) ३ हानि-नाश-दुःखम् ।
—गुर्दा, स पु (फा) वृक्क (का) वेदना, गुद शूल स्म ।
—नाक, वि (फा) दुःखद कष्टप्रद, क्लेश कर [री (स्त्री)] सन्तापक ।
—सर, स पु (फा) शीर्ष, शूल पीड़ा-व्यथा शिरोवेदना ।
दर्दमंद, वि (फा) पीड़ित, व्यथित, दुःखित २ दयालु दयावत् ।
दर्दशी, स स्त्री (देश) गृध्रसी (ऊरुरोगभेद)
दर्दा, वि (फा दर्द) दे 'दर्दमंद' ।
दर्प, स पु (स) अभिमान, मान, स्मय चित्तोन्नति (स्त्री), गर्व, अहङ्कार, अवलेप २ उग्रता, उद्धतता ।
दर्पक, स पु (स) दृप्त, अहङ्कारिन्, गर्वित, अवलिप्त, उद्धत ।
दर्पण, स पु (स पु न) मुकुर, आदर्श, आत्मदर्श, कक, ककर, दर्शनम् ।
दर्पित, वि (स) गर्वित-न्-त, दृप्त-न्-त, अवलिप्त-न्-नम् ।
दर्भ, स पु (स) कुशभेद २ कुश ३ उल पतृण, काश ।
दर्रा, स पु (फा) सकट-सबाध, पथ मार्ग, दुर्गमचर, गिरिद्वारम् ।
दर्शक, स पु (स) द्रष्टृ (पु), प्रेक्षक, वीक्षक, दर्शिन् २ (सभा आदि के) पार्षद, पारिषद, सामाजिक ३ प्रकाशक, प्रदर्शक ।
दर्शन, स पु (स न) वि-आ-अव-,-लोकन, वि, ईक्षण, साक्षात्करण, चाक्षुषज्ञान, निवर्णन, निभालन २ स, मिलन, समागम, सगत (स्त्री) ३ तत्त्व, विद्या शास्त्र ज्ञान ४ नेत्र ५ दर्पण ।
दर्शनीय, वि (स) अव आदि,-लोकनीय, द्रष्टव्य, निभालनीय २ मनोहर, अभिराम ।
दर्शनी हुडी, स स्त्री, सद्य शोध्य धनाज्ञा देशपत्रम् ।
दल, स पु (स पु न) सेना, सैन्य २ सघ, गण, समूह ३ पत्र, पलाश, पर्ण, छद, छदन ४ अर्द्धभाग-ख ५ चक्र, मण्डली ।

—पति, स पु (स) सेना,-नी (पु)-नायक, चमूपति (पु) २ अग्रणी (पु), अध्यक्ष, प्रमुख, नायक ।
दलकना, क्रि अ, दे 'दरकना' २ दे 'थर्राना' ।
दलदल, स स्त्री (स दलाढ्य) कर्दम, पक व जबाल ल २ अनूप, कच्छ, भू भूमि (स्त्री), कच्छ ।
दलदली, वि (हि दलदल) पङ्कदूषित, पंकिल, सकर्दम, कर्दममय [-यी (स्त्री)] २ आनूप, [पी (स्त्री)], जल आढ्य पूर्ण-मग्न ।
दलन, स पु (स न) पेषण, खण्डन, चूर्णन, नियमन, मर्दन २ वि, नाश ध्वस, सहार ।
दलना, क्रि स (स दलन) स्थूलस्थूल पिष् क्षुद् (रु प अ) मृद् (क्र्या प से)-चूर्ण्-खण्ड् (चु), निर्दल् (भ्वा प से) २ सपीड् (चु), पादतलेन मृद् ३ (पिण्याविभि), द्विधा खण्ड् (चु)-शकलीकृ ४ नश्, ध्वस (प्रे) । स पु दे 'दलन' ।
दलनेवाला, स पु, स्थूल, पेषक मर्दक-चूर्णक ।
दलबादल, स पु (स दल + हि बादल) मेघमाला, कादम्बिनी, घनपङ्क्ति २ महती चमू (स्त्री) ३ बृहत्पटमडप ।
दलवाना, क्रि प्रे, व 'दलना' के प्रे रूप ।
दलहन, स पु (हि दाल) दाली द्विदल-वैदल,-मूलान्न-उपयुक्तान्नम् ।
दलहरा, स पु (हि दाल) दाली वैदल, विक्रेतृ विक्रयिन् विक्रायक ।
दलादली, स स्त्री (स दल-ल >) दल गण सघ-वर्ग, स्पर्द्धा विजिगीषा प्रतियोगिता ।
दलाल, स पु (अ) परार्थे क्रयविक्रयायोजक, क्रयविक्रयसहायक, मध्यस्थ ।
दलाली, स स्त्री (अ दलाल) क्रयविक्रय सहायकत्व २ क्रयविक्रयसहायकत्ववेतनम् ।
दलित, वि (स) खडित, चूर्णित, मर्दित, शकलीकृत २ अवन(ना)मित, अवपीड़ित ३ अस्पृश्य, अन्त्यज ४ नाशित, ध्वसित । स पु, अस्पृश्य, नीच, अत्यज, *हरिजन ।
—उद्धार, स पु (स) अस्पृश्य अन्त्यज हरिजन,-उन्नति (स्त्री)-उन्नयन-उद्धार ।
—वर्ग, स पु (स) अस्पृश्य-अन्त्यज-नीच, वर्ग-समुदाय ।

दलिया, स पु (हिं दलना) *दलितम्, दलित खंडित मर्दित, अन्नम् ।

दलील, स स्त्री (अ) तर्क, युक्ति (स्त्री), हेतु (पु) २ वाद, वाद, मवाद विवाद, शास्त्रार्थ ।

दव, स पुं (स) दे 'दावानल' ।

दवा, स स्त्री (फा) ओषधि (स्त्री), औषध भेषज २ उपचार, चिकित्सा ३ प्रति (ती)कार, प्रतिविधानम् ।

—खाना, स पु (फा) औषधालय, भेषजालय ।

—दारू, स स्त्री (फा + अ) उपक्रम, उपचार चिकित्सा ।

दवाग्नि, स स्त्री } स पु, दे 'दावानल' ।
दवानल, स पु }

दवात, स स्त्री (अ दावात) मसी,-कूपी धानी धान पात्र भाजन, मेला, नद-न्दा अधुः ।

दवामी बंदोबस्त, स पु (फ़ा) भूमिकरस्य स्थायिप्रबंध ।

दश, वि दे 'दस' ।

—आनन, —आस्य, —कंठ, —कंधर, —ग्रीव,—मुख, स पु, (स) रावण ।

दशन, स पु (स पु न) दे 'दाँत' ।

दशम, वि (स) दे 'दसवाँ' ।

दशमलव, स पु (स) दशमबिन्दु (बीजगणित) ।

दशमी, स स्त्री (स) चान्द्रमासस्य शुक्ला कृष्णा वा दशमी तिथि (पु, स्त्री) २ मरणावस्था ३ विमुक्तावस्था ।

दशमूल, स पु (स न) पाचनभेद (वैद्यक) ।

दशरथ, सं पु (स) अवधेशो नृपविशेष, श्रीरामचन्द्रस्य पिता ।

दशहरा, स पु (स स्त्री) गंगा, भागीरथी २ गंगाया अवतरणतिथि, ज्येष्ठशुक्लदशमी ३ उत्तत्तिथौ गंगावतरणोत्सव ४ विजयादशमी, रावणवधतिथि (पुं, स्त्री), आश्विन शुक्लदशमी ।

दशांश, स पु (सं दशांश >) दशम, अंश भाग ।

दशा, सं स्त्री (सं) अवस्था, स्थिति वृत्ति गति (स्त्री), भाव ।

दस, वि (स दशन्) । स पु, उक्ता सख्या, तदंकौ (१०) च ।

—**गुना**, वि, दश, गुण गुणित ।

—**प्रकार से**, क्रि वि, दशधा (अव्य) ।

—**बार**, क्रि वि, दशकृत्व (अव्य) ।

दसवाँ, वि (स, दशम मी मम्) ।

दस्तंदाजी, स स्त्री (फ़ा) हस्तक्षेप, परकार्यचर्चा ।

दस्त, स पु (फा) अति(ती)सार, द्रवमल २ हस्त, कर ।

आवन्लहू वाले—, स पु, आमरक्तातिसार ।

आँववाले—, स पु, आमातिसार ।

लहूवाले—, स पु, रक्तातिसार ।

—कार, स पु (फा) शिल्पिन्, शिल्पकार ।

—**कारी**, स स्त्री (फा) शिल्प, शिल्पविद्या, हस्त, शिल्प कमन् (न) क्रिया ।

—खत, स पु (फा) नाम हस्त, अक्षरम् ।

—खत करना, क्रि स, स्वनामन् (न) लिख् (तु प से), हस्ताक्षर कृ ।

—**बस्ता**, क्रि वि (फ़ा) साञ्जलि, अञ्जलि बद्ध्वा ।

दस्तक, स स्त्री (फ़ा) द्वार, आघात-ताडन प्रहार ।

दस्तरख्वान, स पु (फ़ा) मञ्चवस्त्र, पत्रपर ।

दस्ता, स पु (फ़ा दस्त) मुष्टि (स्त्री), वारग । (खड्ग का) मरु-त्सर (पुं) २ मुसल-ल ३ पत्रचतुर्विंशति (स्त्री) ४ सैनिकसंघ ५ दे 'गुलदस्ता' ।

दस्ताना, स पु (फ़ा) *हस्तत्राण, करच्छद ।

दस्तावर, वि (फा) वि, रेचक, रेचन, शोधन, सारक ।

दस्तावेज़, स स्त्री (फा) व्यवहार-समय, पत्र लेख ।

दस्ती, वि (फ़ा दस्त) हस्त्य, कर, हस्त २ वाग्गक, लघुमुष्टि (स्त्री) ।

दस्तूर, स पु (फा) प्रथा, रीति, (स्त्री) २ नियम, विधि (पु) ।

दस्तूरी, सं स्त्री, (फ़ा दस्तूर >) (वणिग्भिर्भृत्येभ्यो देय) प्रथाशुल्कम् ।

दस्यु, सं पुं (सं) चौर, लुंठक, २ अनार्य, म्लेच्छ ।

दह, स पु (स हद >) *मरिदगर्त २ कुंड ३ जलावर्त ।

दहक, स स्त्री दे 'धधक' ।

दहकना, क्रि अ (स दह्) दे 'धधकना' ।

दहक़ान, स पु (फ़ा) कृषाण , कृष (षि)-क , कृषावल । वि , अज्ञ, मूढ, अशिष्ट ।

दहकाना, क्रि स (हिं दहकना) दे 'धधकाना' ।

दहन, स पु (स न) ज्वलन, दाह , प्लोष २ (स पु) अग्नि (पु) ।

दहलना, क्रि अ (स दर डर>) भयेन कप् वेप् (भ्वा आ से), वि ,त्रस् (भ्वा दि प से) ।

दहलाना, क्रि प्रे , व 'दहलना' के प्रे रूप ।

दहलीज, स स्त्री (फ़ा) देहली, गृहाव ग्रहणी ।

दहशत, स स्त्री (फ़ा) त्रास , आतक , भीति (स्त्री) ।

दहसेरी, स स्त्री (स दशसेरी) दशसेरकी ।

दहाई, स स्त्री (फ़ा दह) दशत्व २. दशक, दशति (स्त्री) ३ अकगणनाया द्वितीयस्थान ४ दशमाश ।

दहाड, स स्त्री (अनु) गर्जित, गर्जन-ना, महत्-दीर्घ गभीर,-नाद शब्द २ आवि, क्रोश आर्त्तनाद ।

दहाडना, क्रि अ (हिं दहाड) गर्ज्-रस्-नद् नर्द् (भ्वा प. से) २. आ-उत् वि क्र्या, मुश (भ्वा प अ), सचीत्कार रुद् (अ प से) ।

दहाना, स पु (फ़ा) विस्तीर्णमुख २ द्वार ३ गन्तामुख ४ नदीमुखम् ।

दहिना, वि (स दक्षिण) अपसव्य, वामेतर, सव्येतर २ तुष्ट, कृपालु ।

दहिने, क्रि वि (हिं दहिना) दक्षिणेन, दक्षिणत , दक्षिणा पार्श्व-भागे ।

दही, स पु [स दधि (न)] क्षीरज, विरल, मगल्य, पयस्य, द्रप्स -स, श्रीघनम् ।

दहेज, स पु (अ जहेज) युतक, यौतुक, स्त्रीधन, शुल्क, वाहनिकम् ।

दाँ, स पु, (स -दा)-वार,-कृत्व (दोनों अव्य) । (फ़ा) वि, (समासान्त मे)-ज्ञ, (हिसाबदाँ=गणितज्ञ इ) ।

दाँए बाँए, क्रि वि (स दक्षिण+वाम>) दक्षिणतो वामतश्च, दक्षिणवामपार्श्वयो , इत स्तत , अत्र तत्र ।

दाँत, स पु (स दत) दशन , रदन , खादन , रद , द्विज , खुर (पु), दश ।
(सामने के आठ=छेदक-कर्तनक,-दन्ता , साथ के चार=भेदक रदनक,-दन्ता , उनमे पिछले आठ=अग्रचर्वणरदन्ता , पिछले बारह=चर्व णदन्ता) ।

—उगना, क्रि अ, दता उद्गम् (भ्वा प अ)-उद्भिद् (कम) । स पु, दतोद्गम ।

—किचकिचाना, } क्रि अ, (क्रोधेन)दतैर्दतान्
—किटकिटाना, } घृष (भ्वा प से)-निष्पिष्

—चबाना, } (रु प अ)-विघट्ट (प्रे) ।
—पीसना, } स पु ,दत, घर्षण-निष्पेष ।

—का दर्द, स पु , दत, पीडा शूलम् ।

—का पेस्ट, स पु , *दतलेप ।

—का बुरश, स पु , दतकूर्चक ,-कम् ।

—का मजन, स पु, निश्चूर्णम्, दतमा र्जन, रदशोध ।

—खोदनी, स स्त्री , दतोत्खेदनी, दतशोधनी ।

—बनानेवाला, स पु , दत, वैद्य चिकित्सक ।

—खट्टे करना या तोडना, मु , वि परा जि (भ्वा आ अ), अभि परा भू (भ्वा प से) ।

—तले उँगली दबाना, मु, अत्यर्थं वि स्मि (भ्वा आ अ), विस्मित चकित (वि) भू ।

—निकालना, मु, हस (भ्वा प से) २ स्वायोग्यता प्रकाश (प्रे) ।

—रखना, लगाना या होना, मु, अत्यत अभिलष्-वाछ् (भ्वा प से) ।

दाँता, स पु (हिं दाँत) दे 'ददाना' ।

—किटकिट, } स स्त्री , कलह , वाग्युद्ध
—किलकिल, } २ दे 'गालीगलौज' ।

दाँती, स स्त्री , दे 'दराँती' ।

दाम्पत्य, वि (स) पतिपत्नी जायापति विषयक, वैवाहिक, जापत्य । स पु (स न) दाम्पत्य, मवध -व्यवहार , जापत्यम् ।

दाभिक, वि (स) दे 'दभी' ।

दाइजा, स पु , दे 'दहेज' ।

दाई, वि स्त्री , दे 'दहिनी' ।

दाई, स स्त्री, (स धात्री, फ़ा दाय) मातृका,

उपमातृ (स्त्री,), अक्पाली २ माविका, प्रसवकारिणी।

—गीरी, म स्त्री, गर्भमोचनविद्या, प्रसव मुक्ति, कार्यकमन (न)।

—से पेट छिपाना, मु, रहस्यविदो रहस्य गुह (भ्वा उ वे)।

दाऊ, म पु, (म देव >) अग्रज, ज्येष्ठभ्रातृ २ बल देव राम, श्रीकृष्णाग्रज।

दाक्षायण म पु (स) दक्षप्रजापतिकृतयज्ञ २ सुवर्णम् ३ आभूषणम्। वि दक्षगोत्रीय।

दाक्षायणी, म स्त्री (स) अश्विन्य दिनक्षत्रम् २ सती ३ दुर्गा ४ अदिति (स्त्री) ५ दक्षगोत्रकन्या।

—पति, स पु (स) शिव २ चन्द्र।

दाक्षिणात्य, म पु (स) दक्षिणप्रदेश, निवासिन्-वास्तव्य २ नारिकेल अपूर्वौफलम्। वि दक्षिण-सम्बन्धिन् प्रदेशीय।

दाख, म स्त्री (स द्राक्षा) गोस्तनी, स्वाद्वी, मृद्वीका, रसाला, गुच्छफला २ शुष्कद्राक्षा ३ दे 'मुनक्का'।

दाखिल, वि (फा) प्रविष्ट, निविष्ट २ सम्मिलित, समाविष्ट ३ न्यस्त, निक्षिप्त।

—खारिज, स पु (फा) स्वत्वस्वामित्व, परिवर्तन।

—दफ्तर, वि (फा) लेखागारे निक्षिप्त।

दाखिला, स पु (फा) प्रवेश गमनम्।

दाग, म पु (फा) अङ्क, चिह्न २ कलङ्क, लाञ्छन, दोष ३ तप्तलोहमुद्राङ्क ४ बिंदु (पु), तिलक म्।

—दार, वि (फा) अङ्कित, चिह्नित २ सकलङ्क, बिंदुमत् कर्बुर ३ दूषित, कलङ्कित।

—लगना, क्रि अ, कलङ्कित दूषित-लाञ्छित (वि) भू २ तप्तलोहमुद्राङ्कित (वि) भू।

—लगाना, क्रि स, दुष (प्रे), कलङ्कयति (ना धा) २ (तप्तलोहमुद्रया) अङ्कयति चिह्नयति (ना धा)।

दागना, क्रि स (फा दाग) दे 'दाग लगाना' २ लोहादिगोलान् प्रक्षिप (तु प अ)-प्रास (दि प स)।

दागी, वि (फा दाग) दे 'दागदार'।

दाघ म पु (स) ताप, दाह, उष्णत्व (पु)।

दाडिम, म पु (स) दे 'अनार'।

दाढ़¹, स स्त्री, (स दाढा) दंष्ट्रा, जम्भ, चर्वणदंत।

दाढ़², म स्त्री (अनु) गर्जित, गर्जन नाद २ चीत्कार।

दाढ़ी, स स्त्री (दाढिका) कूर्च चि, श्मश्रु (न), व्यञ्जन, कौर्च।

—जार, म पु, दग्ध-कूर्च श्मश्रु (गालीभेद)।

—बनवाना या मुड़ाना, क्रि प्रे, कूर्च मुण्ड (चु)-आवप (प्रे)।

दाता, स पु (म दातृ) दानकर्तृ (पु) वदान्य, दानशील, दातृ (पु), मुनिर।
[दात्री (स्त्री) = दानकर्त्री]।

दातु(तौ)न, म स्त्री (हि दाँत) दन्त-धाव धावनम्।

दाद¹, म स्त्री, दे 'दद्रु'।

दाद², म स्त्री, (फा) न्याय, न्याय्यता।

—देना, क्रि म, गुणावगुणान् विविच्य प्रशंस (भ्वा प से)।

दादा, म पु (म तात >) पितामह, पितृजनक २ अग्रज।

दादी, म स्त्री (हि दादा) पितामही पितृजननी।

दादुर, म पु, (स दर्दुर) मण्डूक, भेक।

दान, म पु (स न) त्याग, उत् वि, सर्जन सर्ग, विश्राणन, वितरण, भिक्षादान २ प्रदान ददन, दत्ति (स्त्री), अतिसर्जन ३ गजमद।

—करना या देना, क्रि म, सत्कार्येषु पुण्यार्थे वित्त विसृज् (तु प अ)-व्यय् (चु, भ्वा उ म)।

—धर्म, स पु (म) भिक्षा, दान, (पुण्यार्थे) त्याग।

—पत्र, म पु (स न) दानलेख।

—पात्र, म पु (स न) दान, भाजन मञ्जूषा २ दानग्रहणाधिकारिन्।

—पुण्य, म पु (सं न) दे 'दानधर्म'।

—शील, वि (स) उदार, त्यागिन्, वदान्य, त्यागशील, दानशौंड।

दानव, सं पु (स) राक्षस, रक्षस् (न)।

—इन्द्र, म (पु) बलि।

दानवी, वि (स) दानवीय, दानव-उचित सम्बन्धिन्। स स्त्री (सं) दानव, पत्नी भार्या।

दाना¹, म पु (फा दानह्) अन्नकण सिक्थ

२ अन्न, धान्य ३ गुल्मिका ४ पिप्पिका, रक्तवर्टी, स्फोटक ।
—पानी, स पु (फा + हि) अन्नजल, अन्नाम्बु, भक्ष्यपेयम् ।
—पानी उठना, मु, व्यवसाय-आजीविका, समाप्ति (स्त्री)-अवसानम् ।
—(ने) दाने को तरसना, मु, क्षुधया बुभुक्षया मृ (तु आ अ)।
दाना[2], वि (फा) प्राज्ञ, बुद्धिमत् ।
दानाई, स स्त्री (फा) बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता ।
दानी, वि (स-निन्) दे 'दानशील' तथा 'दाता' ।
दानेदार, वि, कण कणिका-मय [-यी (स्त्री)]।
दाब, स स्त्री, दे 'दबाव' ।
दाबना, क्रि स, दे 'दबाना' ।
दाम[1], स पु (स दामन् न स्त्री) रज्जु (स्त्री), गुण, सदान २ माला, हार ३ समूह ४ समार ।
दाम[2], स पु (फा । मि स 'दाम'[1]) पाश, जाल, वागुरा ।
दाम[3], स पु (हि दमडी) पणचतुर्विशभाग २ मूल्य, अर्घ, वरन ३ धन ४ दाननीति (स्त्री, राजनीति)।
दामन, स पु (फा) चोलादीना निम्नभाग, वस्त्राञ्चल, वमनान्त २ उपत्यका ।
—पकडना, मु, शरण प्रपद् (दि आ अ), आ उपास, श्रि (भ्वा उ से)।
—फैलाना, मु, याच् (भ्वा उ से)।
दामाद, स पु (फा) जामातृ (पु), पुत्री पति (पु), कन्यावेदिन, दुहितृधव ।
दामिनी, स स्त्री (स) तडित्-विद्युत (स्त्री), चञ्चला ।
दामोदर, स पु (स) श्रीकृष्णचन्द्र २ विष्णु ।
दाय, स पु (स) पैतृक, पैतृक, रिक्थ धन, गोत्रधन २ यौतुकादिदेयधनम् ।
—भाग, स पु (स) दाय-रिक्थ-विभाग वटन-व्यंशनम् ।
दायक, स पु (स) दे 'दाता' [दायिका (स्त्री)]।
दायजा, स पु (स दाय >) दे 'दहेज' ।
दायर, वि (फा) चलत् (शत्रत), वर्तमान ।
दावा—करना, क्रि स, अभियुज् (रु आ अ, चु), राजकुले निविद् (प्रे), अभियोग प्रवृत् (प्रे)।
दायरा, स पु (अ) चक्र, मडल, वृत्तम् ।
दायाँ, वि (स दक्षिण) दे 'दहिना' ।
दायित्व, स पु (स न) उत्तरदायित्व २ दातृत्वम् ।
दायें, क्रि वि (हि दाया) दे 'दहिने' ।
दार, स स्त्री [स दारा (नित्य पु बहु)] कलत्र पत्नी, भार्या ।
—कर्म, स पु [स-मन् (न)] विवाह, पाणिग्रहणम् ।
दारक, स पु (स) शिशु (पु), बाल, बालक २ पुत्र तनय ।
दार(ल)चीनी, स स्त्री (स दारु+चीन = देशविशेष>) दे 'तज' ।
दारा, स स्त्री, दे 'दार' ।
दारिद, द्र,-द्रय, स पु (स दारिद्र्य) निर्धनता, अकिंचनता, दरिद्रता ।
दारु, स पु (स न, कहीं-कहीं पु) काष्ठ २ देवदारु (पु न)।
दारुण, वि (स) घोर, विषम, विकट, दु सह, कठोर, २ भीषण, भयङ्कर ।
दारुहल्दी, स स्त्री (स दारुहरिद्रा) दार्वी, पीता, पीतिका ।
दारू, स स्त्री (फा) औषध, भेषज २ मद्य, सुरा ३ दे 'बारूद' ।
—दरमन, **—दवा**, } स स्त्री, चिकित्सा, उपचार ।
दारोगा, स पु (फा) अध्यक्ष, अधिष्ठातृ (पु) निरीक्षक २ दे 'थानेदार' ।
दार्शनिक, स पु (स) तत्त्व, विद्-वेत्तृ (सब पु), दर्शनशास्त्रपण्डित ।
दाल, स स्त्री (स दाल = कोदों >) दाला, द्विदलान्न, वैदल, शिंबा-बिका, हरेणु (पु), हरेणुक, शमी-शिम्बी, धान्यम् ।
—दलिया, मु, रूक्षभोजनम् ।
—न गलना, मु, असमर्थ-अशक्त (वि) स्था (भ्वा प अ)।
—में काला, मु, सन्दिग्धवार्ता २ कुरहस्य ३ कुलक्षणम् ।
—रोटी, स स्त्री, सामान्याहार ।
दालचीनी, स स्त्री, दे 'तज' ।

दाल्न, स पु (म दलन>) दन्तरोगभेद, दन्तक्षय ।
दालमोठ, स स्त्री (हिं दाल+मोठ) स्नेह भर्जितदाली, सत्वण ।
दालान, स पु (फा) दे 'बरामदा'।
दालिम, स पु (स दालि (डि) म मा) (वृक्ष) कुचफल, शुरवल्लभ । (फल) कुचफल, रक्तबीज, दालि (डि) मम्।
दावँ, म पु (स प्रत्य दा>, उ एकदा) पयाय, परिवृत्ति (स्त्री), वार २ अवसर, वेला, कायकाल प्रसग ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ छल, कपट ५ मल्लयुद्धकुयुक्ति (स्त्री) ६ निभृतावस्थिति (स्त्री)।
—पर लगाना, मु, पण् (भ्वा आ से, षष्ठी के साथ, उ 'रूप्यकस्य पणते')।
—लगाना, मु, अवसर लभ (कर्म)।
दाव, स पु (स) वन २ दावानल ३ अग्नि (पु) ४ दाह ताप ।
दावत, स स्त्री (अ) भोजन, निमन्त्रण २ विशिष्टभोजनम्।
दावा, स पु (अ) स्वत्वप्रतिपादन, स्वामित्वप्रकाशन २ स्वत्व, अधिकार ३ अभियोग भाषा, पत्र ४ अभियोग, पूर्वपक्ष, भाषा, भाषापाद ५ प्रताप, प्रभुत्व ६ दृढोक्ति (स्त्री) ७ प्रतिज्ञा पक्ष, पूर्वपक्ष ।
पूर्वपक्ष स्मृत पादो, द्विपादश्चोत्तर स्मृत ।
क्रियापादस्तथा चान्य चतुर्थो निर्णय स्मृत ॥
—करना, क्रि स, अभियुज (रु आ अ, चु) दे 'दायर' के नीचे २ स्वत्व प्रतिपद् (प्रे)।
—खारिज करना, क्रि स, अभियोग अपास् (दि प से)-निराकृ।
—गीर, } म पु (अ+फा) अभियोक्तृ
—दार, } (पु), अर्थिन्, वादिन्, अभियोगिन्, सूचक, कार्यार्थिन् २ स्वत्वप्रतिपादक, स्वामित्वप्रकाशक ।
दावानल, स पु (म) दा(द)वाग्नि (पु), वनवह्नि (पु), द(दा)व ।
दास, स पु (स) किंकर, भृत्य, भुजिष्य, दासेय, दासेर, दे 'नौकर'।
दासता, स स्त्री (म) दासत्व, दास, भाव वृत्ति (स्त्री)।
दासानुदास, म पु (स) अतिनम्र किंकर, तुच्छसेवक ।
दासी, म स्त्री (स) चेटी, भुजिष्या, दे 'नौकरानी'।
दासेय, स पु (म), दासीपुत्र २ दास ।
दास्तान, म स्त्री (फा) कथा २ वृत्तान्त ३ वर्णनम्।
दास्य, स पु (स न) दे 'दासता'।
दाह, स पु (म) दाहन, ज्वालन, भस्मीकरण २ शवदाह, अन्त्येष्टि मृतक-संस्कार क्रिया ३ ताप, प्लोष, शोक, सन्ताप ४ ईर्ष्या ।
—कर्म, म पु [म मन् (न)] दे 'दाह'(२)।
दाहक, वि (म) तापक, दीपक, प्लोषक।
दाहना, क्रि स दे 'जलाना'।
दाहिना, वि, दे, 'दहिना'।
दाहिने, क्रि वि, दे 'दहिने'।
दिक्, म स्त्री [स दिश (स्त्री)] दिशा ।
—पाल, स पु (म) आशापाला, इन्द्रादयो दश देवा ।
दिक्, स पु (अ) क्षयरोग । वि, व्यथित, सन्तप्त २ अस्वस्थ, रुग्ण ।
—करना, क्रि स, तप्-व्यथ् (प्रे), पीड् (चु), बाध (भ्वा आ से)।
आँखों का—, स पु, अक्षिक्षय ।
दिक्कत, स स्त्री (अ) काठिन्य, बाधा, कष्टम् ।
दिखलाना, क्रि स, व 'दिखना' के प्रे रूप।
दिखलावा, स पु, दे 'दिखावा'।
दिखाई, स स्त्री (हिं दिखाना) प्रदर्शन, व्यञ्जन, निर्देशन, प्रकाशन, प्रकटी-व्यक्ती,-करण २ प्रदर्शन-अर्घ-मूल्यम्। (हिं देखना) अव-आ वि, लोकन, वि, ईक्षण, निभालन २ अवलोकन, शुल्क-कम् ।
—देना, क्रि अ, दृश्-दृश् (कर्म), अवभास् (भ्वा आ से) प्रतिभा (अ प अ)।
दिखाना, क्रि प्रे, व 'देखना' के प्रे रूप।
दिखावट, सं स्त्री (हिं दिखाना) दे 'दिखाई' मे 'प्रदर्शन' इ २ आडंबर, बाह्य शोभा श्री (स्त्री)।
दिखावटी, वि (हिं दिखावट) दृष्टिहारिन्, शुभगालीक, कृतक, कृत्रिम, अनुपयोगिन्, साडंबर।

दिखावा, स पु (हिं दिखाना) आडंबर, दंभ, आपातरमणीयता, बाह्यशोभा ।
दिगंत, स पु (स) दिशान्त, दिक्सीमा २ क्षितिज, दिक्तट चक्रमण्डल ३ चतस्रो दश वा दिश ।
दिगंतर, स पु (स न) अन्या दिशा २ दिङ्मध्य दिक्कोण ३ आकाश श, अन्तरिक्ष ४ विदेश ।
दिगंबर, स स्त्री (स पु) जैनसम्प्रदायविशेष २ शिव । वि, नग्न, अवसन ।
दिग्गज, स पु (स) दिग्धस्तिन् २ ऐरावतादयोऽष्ट दिग्रक्षका गजा ।
दिग्दर्शक यन्त्र, स पु (स न) दिङ्निरूपक यन्त्रम्, दिग्दर्शनम् ।
दिग्दर्शन, स पु (स न) सामान्य साधारण, परिचय ज्ञानम् २ दिग्ज्ञापन, दिशानिर्देश ३ दिग्दर्शकयन्त्रम् ।
दिग्विजय, स स्त्री (स पु) विषया युद्धेन वा जगज्जय ।
दिठौना, स पु (हिं दाठ) *कुदृष्टिनिवारण (कज्जलबिंदु)।
दिति, स स्त्री (स) कश्यपपत्नी, दैत्यजननी ।
दिन, स पु (स न) अहन् (न) दिवस, वार, वासर घस्र, अहाक, दिव (स्त्री), द्यु (न) २ समय, काल ।
—चढना या निकलना, क्रि अ, रजनी प्रभा (अ प अ), अरुण सूर्य उद् इ (अ प अ), प्रभात विभात अरुणोदय जन् (दि आ से)।
—ढलना, क्रि अ, दिन दिवस परिणम् अथवा आ-अव-नम् (भ्वा प अ), अपराह्णो वृत (भ्वा आ से)।
—डूबना, क्रि अ, सूर्य दिवस अस्त,-गम् (भ्वा प अ) अवरुध (भ्वा आ से)।
—कर,
—नाथ,
—पति,
—मणि,
—राज, } स पु (स) दिनेश, दे 'सूर्य'।
—चढे, क्रि वि, उदिते सूर्ये, प्रात (अव्य)।
—चर्या, स स्त्री (स) आह्निक २ नित्य कर्मन् (न)।
—ढले, क्रि वि, (अ) पराह्णे, दिवसस्य तृतीययामे ।
—दिन, क्रि वि, दिने दिने, अनु-प्रति-दिन दिवसम् ।
—दहाडे, क्रि वि, दिन-वाले समये एव, दिवैव ।
—बदिन, क्रि वि, अन्वह, प्रत्यह, प्रतिदिनम् ।
—भर, क्रि वि, सर्व दिनम् ।
—मे, क्रि वि, दिवा, दिवसे ।
—रात, क्रि वि, अहर्निश, दिवानिश, अहोरात्र, रात्रि नक्त, दिवम् ।
अगले—, क्रि वि, परेद्यु, परस्मिन् दिने ।
दूसरे—, क्रि वि, अन्येद्यु, पराह्णे ।
पहले या पिछले—, क्रि वि, पूर्वेद्यु, पूर्वस्मिन् दिने ।
—काटना, मु, यथाऽथचित्कृच्छ्रेण जीवन या (प्रे यापयति)।
—दूना रात चौगुना होना, मु, अहर्निश समृध (दि प से)-प्र-उप, चि (कर्म)।
—फिरना, मु, भाग्य उद् इ (अ प अ)।
दिनेश, स पु (स) सूर्य, भानु (पु)।
दिनौंधी, स स्त्री (स दिनान्ध >) दिनान्धता, दिवान्धता, नेत्ररोगभेद ।
दिमाग, स पु (अ) मस्तकस्नेह, मस्तिष्क, मस्तु, लु उ ङ्क (—ग,,गको), गोर्द २ मति धी बुद्धि (स्त्री) ३ दर्प, अभिमान ।
—चट, स पु, वाचाल, वाचाट, बहुभाषिन् ।
—दार, वि (अ + फा) धीमत्, बुद्धिमत् २ दृप्त, अभिमानिन् ।
—आसमान पर होना या चढना, मु, अति शयेन दृप्त अवलिप्त (वि) वृद् (भ्वा आ से)।
—में खलल होना, मु, विक्षिप्त-वातुल भ्रांत चित्त (वि) विद् (दि आ अ)।
—सातवें आसमान पर होना, मु, अति,-दृप्त-दर्पित-गर्वित भू ।
दिमागी, वि (अ) मानसिक, बौद्धिक, मस्तिष्कसबन्धिन् २ ३ दे 'दिमागदार'(१ २)।
दिया, स पु (स दीप) दीपक, प्रदीप, स्नेहाश, कज्जलध्वज, गृहमणि (पु) दोषास्य, दीपतिलक, नयनोत्सव ।
—सलाई, स स्त्री, दीपशलाका ।
दिये का काजल, स पु, दीप-कज्जल किट्ट-ध्वज ।
दिये की ज्वाला, स स्त्री, दीप,-कलिका-शिखा ।

. दिये की बत्ती, स स्त्री, दीपवर्ति (स्त्री) वोरी-शूपी, विदाहिका।

दियानतदार, वि, दे, 'दयानतदार'।

दिल, स पु (फ़ा) हृदय, हृद (न), अग्रमाम बुक्का बुक्काग्रमास। २ मनस चेतस (न) मानस चित्त, अतःकरण हृदय, स्वात आत्मन् अन्तरात्मन् (पु) ३ साहस, शौर्य ४ प्रवृत्ति (स्त्री), इच्छा।

—गीर, वि (फ़ा) खिन्न, विषण्ण, दुःखित।

—चस्प वि (फा) रोचक, रुचिकर, मनोहर।

—चस्पी, स स्त्री (फ़ा) रुचि (स्त्री) २ मनोरंजनम्।

—चोर, वि (फ़ा + हि) कार्यपराङ्मुख श्रमचोर।

—जमई, स स्त्री (फ़ा+अ जमअ) मनोप निर्भयत्व, शङ्काभाव।

—दरिया, वि, दे 'दरिया दिल'।

—दार, स पु (फ़ा) दयित, वल्लभ, प्रिय प्रेम स्नेह प्रीति, भाजनम्।

—पसंद, वि (फ़ा) चित्ताकर्षक, रुचिकर, इष्ट।

—बर, स पु (फ़ा) दे 'दिलदार' २ वाद्य भेद (टि दिल के बहुत से मुहावरे 'कलेजा' और 'जी' के नीचे मिलेंगे, कुछ यहाँ दिये जाते हैं)।

—रुबा, (स पु (फा) दे 'दिलदार'।)

—का कमल (या कली) खिलना, मु, आनन्द् (भ्वा प से), प्रसद् (भ्वा प अ), मुद् (भ्वा आ से)।

—तोड़ना, मु, उत्साह भञ् (रु प अ) हन् (अ प अ), साहस धैर्य ध्वंस (प्रे), अव वि-सद् (प्रे)।

—में रखना, मु, गोप्य रहस्य गुह् (भ्वा उ से) छद् (चु)।

—रखना, मु प्री (क्र प अ, चु प्रीणयति), तुष प्रसद् अनुरञ् (प्रे)।

—ही दिल में, मु तूष्णीं, निःशब्द, मौनं, जोषम्।

दिलवाना, दिलाना, क्रि प्रे, व 'देना' के प्रे रूप।

दिलावर, वि (फ़ा) शूर, वीर २ साहसिन्।

दिलावरी, स स्त्री (फ़ा) शौर्य, वीरता, पराक्रम, विक्रम।

दिलासा, स पु (फ़ा दिल) धैर्य, आश्वास, आश्वासनम्।

दिली, वि (फा दिल) हार्दिक, मानसिक २ अभिन्नहृदय, हृदयंगम।

दिलेर, वि (फ़ा) दे 'दिलावर'।

दिलेरी, स स्त्री (फ़ा) शौर्य, वीरता, साहसम्।

दिल्लगी, स स्त्री (फ़ा दिल+हि लगना) परि (री) हास, हास्य, नर्मालाप, परिहासोक्ति (स्त्री)।

—बाज़, स पु, विनोदपरिहास, शील, वैहासिक।

दिल्ली, स स्त्री (हि ढिल्ली) इन्द्रप्रस्थ, भारत राजधानी, दिल्ली।

—वाल, वि, इन्द्रप्रस्थ—दिल्ली, स्वामिन् सम्बन्धिन्।

दिवंगत, वि (स) प्रेत, मृत, स्वर्यात, स्वर्गत, स्वर्गीय।

दिवस, स पु (स) दे 'दिन'।

दिवाध, वि (स) दिनान्ध। स पु, उलूक २ दिनान्धता।

दिवाकर, स पु (स) दे 'दिनकर'।

दिवाला, स पु (हि दीया+बालना) ऋण शोधनासामर्थ्य, ऋणदानाक्षमता।

—निकलना क्रि अ, परिक्षि (कर्म), ऋण शोधनाक्षमत्व ख्या (प्रे)।

दिवालिया, वि (हि दिवाला) ऋणशोधना समर्थ, ऋणदानाक्षम, क्षीणसर्वस्व, परिक्षीण।

दिवाली, स स्त्री, दे 'दीवाली'।

दिव्य, वि (स) दैव (-वी स्त्री), अमानुष (षी स्त्री), ऐश्वर (री स्त्री), अपार्थिव (-वी स्त्री), अलौकिक (-की स्त्री), स्वर्गीय २ भास्वर, प्रकाशमान ३ अति-स्वच्छ-सुन्दर मनोहर।

—चक्षु, स पु [स क्षुस (न)] अपौरुषेय अलौकिक-दृष्टि (स्त्री) २ अंध ३ उपनेत्रम्।

—ज्ञान, स पु (स न) अतिमानुष अपौरुषेय, मानुषातिग, ज्ञानम्।

दिशा, स स्त्री (स) आशा, काष्ठा, ककुभ हरित् दिश् (स्त्री), ककुभा।

—शूल, स पु (स न) दिग्विशेषगमने निषिद्धवारा (पु)।

—जाना या फिरना, मु, पुरीषमुत्स्रष्टु या (अ प अ) मलोत्सर्गाय गम्।
दिसावर, स पु (स देशान्तर>) विपर-देश, देशान्तरम्।
दिसावरी, वि (हि दिसावर) वैदेशिक, विपर-देशीय, दे 'विदेशी'।
दिहात, स स्त्री दे 'देहात'।
दीक्षक, स पु (स) मन्त्रोपदेशक गुरु (पु), आचार्य
दीक्षांत, स पु (स) अवभृथयज्ञ।
दीक्षा, स स्त्री (स) गुरुमुखात् यथाविधि मन्त्रग्रहण २ यजन पूजन ३ प्रथम उपदेश शिक्षा, उपनय, विद्याप्रवेश।
दीक्षित, वि (स) उपनीत, यथाविधि उपदिष्ट, सम्स्कारानन्तर प्रवेशित।
दीखना, क्रि अ दे 'दिखाई देना'।
दीठ, स स्त्री (स दृष्टि, दे)।
दीदा, स पु (फा) दृष्टि (स्त्री) २ अवलोकन ३ नेत्र ४ धृष्टता।
—**दानिस्ता**, क्रि वि, ज्ञान-बुद्धिमति-पूर्वक, कामत (अव्य)।
दीदार, स पु (फा) दर्शन, साक्षात्कार।
दीदी, स स्त्री (हि दादा) अग्रजा, ज्यायसी, भगिनी।
दीधिति, स स्त्री (स पु) किरण, मयूख, अंशु मरीचि।
दीन, वि (स) दरिद्र, निधन २ खिन्न, विषण्ण ३ अति नम्र विनीत ४ सन्तप्त, दुःखित।
—**दयाल**, वि (स-लु) दरिद्रवत्सल। स पु, ईश्वर।
—**बंधु**, वि (स) दरिद्रमित्र, दीनानुकम्पिन्। स पु, परमेश्वर।
—**दीन**, स पु (अ) धर्म।
दार, वि (अ+फा) धार्मिक, पुण्यात्मन्।
—**दुनिया**, स पु (अ) लोकपरलोकौ (द्वि)।
दीनता, स स्त्री (स) दरिद्रता, निर्धनता, अकिंचनता २ आर्तता, कातरता ३ खेद, विषाद ४ अति-नम्रत्व विनय।
दीनानाथ, स पु (स दीन+नाथ) दीन-, दयालु -वत्सल -बन्धु, परमेश्वर।
दीनार, स पु (स) स्वर्णमुद्रा २ स्वर्णाभूषण ३ निष्क-तौल भार।
दीप, स पु (स) दीपक, दे 'दिया'।
—**माला**, स स्त्री (स) दीप-आलि (स्त्री) आली आवली-उत्सव मालिका २ दीपपंक्ति (स्त्री)।
—**शिखा**, स स्त्री (स) दीप-कलिका ज्वाला।
दीपक, स पु (स) स-दीप, दे 'दिया' २४ अर्थालंकार राग ताल, भेद ५ अग्नि कीटनकभेद। वि, प्रकाशक, दीप्तिकर २ पाचक, अग्निवर्द्धक ३ उत्तेजक।
दीपन, स पु (स न) प्रकाशन, ज्वालन २ जठराग्निवर्द्धन, क्षुधोत्पादन ३ उत्तेजन ना, आवेगजननम्।
दीपावलि-ली, स स्त्री (स) दे 'दीपमाला'।
दीप्त, वि (स) प्रकाशित, प्रभासमान २ प्रज्वलित, प्रज्वलत् (शतृ)।
दीप्ति, स स्त्री (स) आलोक, प्रकाश २ आभा, प्रभा, द्युति (स्त्री) ३ कांति (स्त्री), शोभा।
दीमक, स स्त्री (फा) उप-,दीका-देहिका।
—**लगना**, क्रि अ, उपदेहिकाभि भक्षू निष्कुष् (कर्म)।
दीया, दे 'दिया'।
दीर्घ, वि (स) लम्ब, आयत, आयामवत्।
—**काल**, स पु (स) सुमहान् समय।
—**जंघ**, स पु (स) उष्ट्र २ बक। वि, लम्बग।
—**जीवी**, वि (स विन्) दीर्घ चिर, आयु आयुस् आयुष्य जीविन्, आयुष्मत्।
—**दर्शिता**, स स्त्री (स) दे 'दूरदर्शिता'।
—**दर्शी**, वि (स शिन्) दे, 'दूरदर्शी'।
—**निद्रा**, स स्त्री (स) लम्बस्वाप २ मृत्यु (पु)।
—**सूत्री**, वि (स त्रिन्) दीर्घसूत्र, चिरक्रिय, विलम्बिन्।
दीर्घायु, स स्त्री (स न) चिर-दीर्घ जीवन आयुस् (न)। वि, दे 'दीर्घजीवी'।
दीर्घायुध, स पु (स न) भल्ल—लम्, कुन्त, प्रास २ शूकर, वराह, कोल ३ शल्य, छेदार। वि दीर्घ-लम्ब बृहद्,-अस्त्र-आयुध।
दीवट, स स्त्री (हि दीवा) दीप-दीपक, ध्वज-वृक्ष आधार, शिखातरु।

दीवान, स पु (अ) राजसभा, आस्थान-नी, राजकुल २ अमात्य, सचिव ३ कविनामग्रह ।
—आम, स पु (अ) *सामान्यस्थानम् ।
—ख़ास, स पु (अ) *विशेषस्थानम् ।
दीवाना, वि (फ़ा) उन्मादित, विक्षिप्त दे 'पागल' ।
दीवार, स स्त्री (फ़ा) कुड्य, भित्ति (स्त्री) ।
—गीर, स स्त्री (फ़ा) भित्तिदीप २ भित्तिस्थो दीपाधार ।
दीवाली, स स्त्री (स दीपाली) दे 'दीपमाला' ।
दुदुभ, स पु } स पु दे 'नक्कारा'
दुदुभि स स्त्री }
दुबा, स पु (फ़ा दुबाल) गोल्पुच्छो मेष-भेद ।
दु ख, स पु (स न) कष्ट, क्लेश, पीडा, बाधा, व्यथा, अ (आ) र्ति (स्त्री), कृच्छ्र, वेदना, परि-स, ताप २ आपद् विपद् (स्त्री), सकट ३ रोग, व्याधि (पु) ।
—उठाना या पाना, क्रि अ, दु खयति (ना धा), दुख सह् (भ्वा आ से)-अनुभू-उपभुज (रु आ अ)-प्राप (स्वा उ अ) ।
—देना या पहुँचाना, क्रि स, दु खयति (ना धा), तप-व्यथ्-अर्द् (प्रे), पीड (चु), क्लिश (क्र प से) ।
—दाई, वि (स-दायिन्) दु ख-कष्ट-क्लेश कर-द-दातृ-दायक प्रद जनक-उत्पादक ।
—मय, वि (स) क्लेशमय, दु खपूर्ण ।
—हर्त्ता, वि (स -र्तृ) दु ख-क्लेश-कष्ट-नाशक निवारक-हरिन् ।
दु खित, वि (स) क्लेशित, पीडित, व्यथित, दु खभाज, दून, ताडित, स परि-तप्त, दु स्थ, आर्त्त, कृच्छ्रगत, सव्यथ, दु खिन् ।
दु खिनी, वि स्त्री (स) विपन्ना, पीडिता, व्यथिता, स परि-तप्ता, आर्ता ।
दु खी, वि (स खिन्) दे 'दु खित' (दु खिनी स्त्री) ।
दु शासन, वि (स) उच्छृङ्खल, उद्दाम, दुर्निग्रह । स पु, धृतराष्ट्रस्य पुत्रविशेष २ दुःशासनम् ।
दु शील, वि (स) दुःस्वभाव, कुशील, कुस्वभाव, दुष्प्रकृति, दुर्वृत्त २ धृष्ट, उद्धत ।
दु श्रव, वि (स) कर्णकटु-श्रुतिकटु । स पु, दु श्रवत्व-श्रुतिकटुत्व-दोष (सा०) ।
दु सग, स पु (स) कुसग, कुसगम, असगति (स्त्री) ।
दु साध्य, वि (स) कठिन, दुष्कर, कष्टसाध्य २ असाध्य, दुरुपचार, अशमनीय, अचिकित्स्य, निरुपाय ।
दुआ, स स्त्री (अ) प्रार्थना २ आशीर्वाद ।
दुआबा, स पु (फ़ा) दे 'दोआबा' ।
दुकड़ा, स पु (स द्विक) द्वय, द्वितय, द्वय, युगल, २ दे 'छदाम' ।
दुकान, स स्त्री (फ़ा) पण्य, शाला-अगार, आपण, विपणि (स्त्री), निषद्या, *हट्टी ।
—दार, स पु (फ़ा) आपणिक, पण्याजीव, विपणिन्, क्रयविक्रयिक, वणिज (पु) ।
—दारी, स्त्री, पण्यशाला (अ) विधा (जु उ अ) ।
दुखड़ा, स पु (स दु ख) दु खवृत्तान्त, करुणकथा २ कष्ट, विपद् (स्त्री) ।
दुखना, क्रि अ (स दु ख>) पीड्-क्लिश तप (कर्म)-व्यथ (भ्वा आ से) ।
दुखाना, क्रि स (हिं दुखना) पीड् अर्द् (चु), व्यथ् (प्रे), दु (स्वा प अ), क्लिश (क्र प से), उपपरि-तप, तप् (प्रे) ।
दुखिया-यारा, वि (स दु ख>) दे 'दु खित' ।
दुगना, वि (स द्विगुण) द्विगुणित ।
दुग्ध, स पु (स न) क्षीर, पयस (न) ।
—फेन, स पु (स) क्षीरडिण्डी (डी) र, शार्कर ।
दुचित्ता, वि (स द्विचित्त) दोलायमान, सशयान, सदेहिन, सशिथ,-बुद्धि-मति ।
दुचित्ती, स स्त्री (हिं दुचित्ता) दोलावृत्ति (स्त्री), द्वैधीभाव, निश्चयाभाव, सशय ।
दुत, अव्य (अनु) अपसर अपेहि (लोट्) ।
—कार, स स्त्री (अनु +स कार) धिक्कार, तिरस्कार, भर्त्सना, वाग्दड २ अपसारणम् ।
दुतकारना, क्रि स (हिं दुत्कार) धिक्-तिरस्कृ, निर्, भर्त्स् (चु आ से) २ सापमान निस् अप-सृ (प्रे) ।
दुतरफ़ा, वि (फ़ा दो+अ तरफ) द्वि (द्वै)-पक्ष, द्वि (द्वै) पार्श्व, द्वि, पक्ष पक्षीय ।
दुधार, वि (हिं दूध) क्षीरिणी, दुग्धवती, पयस्वनी, पीनाध्नी (गौ इ) ।

दुधारा, वि (स द्विधार) उभयत तीक्ष्ण निशित। स पु, खड्गभेद, *द्विधार।

दुनिया, स स्त्री (अ-या) जगत् (न), ममार २ लोक, जनता ३ जगत्प्रपंच।

—दार, स पु (अ+फा) गृहस्थ, गृहिन्, समारिन्, २ व्यवहार-कुशल पटु।

—दारी, स स्त्री (अ+फा) ऐहिकतात्त्व, प्रपचानुराग, समारासक्ति (स्त्री) २ लोक, आचार मार्ग, रुढि (स्त्री) ३ व्यवहार कौशलम्।

दुनियावी, वि (अ) लौकिक सामारिक ऐहिक।

दुपट्टा, स पु (हिं दो+स पट्ट>) द्विपट्ट, द्विपटी २ उष्णीष पम्।

दुपहर, स स्त्री, दे 'दोपहर'।

दुपहरिया, स स्त्री (हिं दुपहर) बधु(धू)-क, रक्तक, बधुजीवक २ दे 'दोपहर'।

दुब(वि)धा, स स्त्री (स द्विविधा>) सशय, सदेह २ निर्णय निश्चय, अभाव ३ सकोच ४ आशका, विचिकित्सा।

दुबला, वि (स दुर्बल दे)।

दुबलापन, स पु, दे 'दुर्बलता'।

दुबारा, क्रि वि, दे 'दोबारा'।

दुबे, स पु (स द्विवेदिन्) द्विवेद, ब्राह्मणभेद।

दुभाषिया, स पु (स द्विभाषिन्) भाषाद्वयज्ञ, द्विभाषाविद् (पु) २ व्याख्यातृ, अर्थबोधक।

दुमंज़िला, वि (फा) द्वि, भूम भूमिक (प्रासाद इ)।

दुम, स स्त्री (फा) पुच्छ च्छ, लागु(गू)-ल, लूम २ अनुयायिन्, अनुग ३ अतिम भाग।

—दार, वि (फा) सपुच्छ, लागूलिन्।

—दार सितारा, स पु, उल्का, धूमकेतु (पु), उत्पात, केतु (पु)। वि, सपुच्छ लागूलिन्।

—दबाकर भागना, मु, कापुरुषवत्-सकातर्यं पलाय् (भ्वा आ से)-विद्र (भ्वा प अ)-अपधाव (भ्वा प से), कादिशीक (वि) भू।

दुमन, वि (स दुमनस्) खिन्न, विषण्ण, म्लान, अवसन्न।

दुरगा, वि, दे दो के 'नीचे'।

दुरत, वि (स) दुष्परिणाम, कुफल, दुष्फल, दुरवमान २ दुर्गम, दुरतिक्रम ३ प्रचड, उग्र ४ दुर्ज्ञेय, दुर्बोध।

दुर, अव्य (हिं दूर) अपसर-अपेहि (लोट)।

—दुर करना, मु, मत्यकृत्कार अपसृ (प्रे)।

दुराग्रह, स पु (स) दे 'हठ'।

दुराग्रही, वि (स-हिन्) दे 'हठी'।

दुराचरण, स पु (स न) दे 'दुराचार'।

दुराचार, स पु (स) कदु-आचार आचरण, दुर, वृत्त-व्यवहार आचरण, दुस, चरित चेष्टित चारित्र्य शील, अनार्यत्वम्।

दुराचारी वि (स-रिन्) दुष्ट, दुरात्मन्, पापात्मन्, पापकर्मन्, दुर्वृत्त, दुश्चरित्र, अधार्मिक पाप, खल, शठ, लपट, विषयासक्त।

दुराज, स पु (स द्विराज्य) द्विशासन, द्विराजकता।

दुरात्मा, वि (स-त्मन्) दुष्ट, पापात्मन्, दे 'दुराचारी'।

दुरुस्त, वि (फा) दे 'ठीक'।

दुरूह, वि (स) दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, गूढार्थ, गहन, क्लिष्ट।

दुर्गंध, स पु (स) पूति (स्त्री), पूतिगध, कुत्सु-दुर्-वास।

—युक्त, वि (स) दुर पूति-गधि, दुर् कुत्सित, पूति, गध।

दुर्ग, स पु (स न) कोट टि (स्त्री), दे 'किला'। वि दे 'दुगम' (१)। अगम्य, गहन, विषमस्थ, दुर्ग २ दुर्बोध ३ विकट।

—अधिपति, स पु (स) दुर्ग, पति पाल ईश अध्यक्ष।

दुर्गति, स स्त्री (स) दुर्दशा, दुरवस्था, २ नरक-वास भोग।

दुर्गम, वि (स) दुष्प्राप, दुरासद, दुरारोह।

दुर्गा, स स्त्री (स) रुद्राणी, चडी, दे 'पार्वती'।

दुर्गुण, स पु (स) अवगुण, दोष, व्यसन, दुर्लक्षण, कुलक्षणम्।

दुर्घट, वि (स) दुष्कर, दुस्साध्य।

दुर्घटना, स स्त्री (स) अशुभ-अमगल, घटना आपात समापत्ति (स्त्री) २ विपद्-आपद् (स्त्री)।

दुर्जन, स पु (स) खल, पाप, शठ, व 'दुराचारी' के पर्यायों के पु रूप।

दुर्जनता, स स्त्री (स) दुष्टता, खलता, शठता।

दुर्जय, वि (स) अधृष्य अजय्य, अदम्य, दुरासद, अ दुर् जेय।

दुर्ज्ञेय, वि (स) दे 'दुरूह'।

दुर्दमनीय, वि (स) दुर्दम्य, दुर्दान्त, नवश्य, दे 'दुर्जय'।

दुर्दशा, स स्त्री (स) दु र्गति (स्त्री), दुरवस्था।

दुर्दिन, स पु (स न) मेघच्छन्नो दिवस २ कुत्सित काल, कुसमय समय।

दुर्दैव, स पु (स न) दे 'दुर्भाग्य'।

दुर्धर्ष, वि (स) दे 'दुर्जय' २ उग्र, प्रचण्ड।

दुर्नीति, स स्त्री (स) कुनीति (स्त्री) अन्याय, अनाचार।

दुर्बल, वि (स) अबल निर्बल, अशक्त, क्षीण अल्प, बल शक्ति, निस्, तेजस् सत्त्व २ कृश, क्षाम, क्षीण, अमांस, छात, शात।

दुर्बलता, स स्त्री (स) निर्बलता, अशक्तता, अबलता २ कृशता, क्षामता।

दुर्बुद्धि, स स्त्री (स) कुमति मन्दधी (स्त्री)। वि, अज्ञ, मूर्ख, मन्दमति।

दुर्बोध, वि (स) दे 'दुरूह'।

दुर्भाग्य, स पु (स न) दुर्दैव, दौर्भाग्य, भाग्य, दुर्जात, दुर्गति (स्त्री), दैव, दुर्विपाक विपयय विपर्यास।

दुर्भावना, स स्त्री (स) दुर्भाव, दुष्ट, बुद्धि भाव, असूया, द्रोह, द्वेष, दौरात्म्यम्।

दुर्भिक्ष, स पु (स न) अकाल, दुष्काल, अनशन, प्रयाम, आहाराभाव, नीवाक।

दुर्मट, स पु (स दुर्+मुट =कूटना) *भूकुट्टन, *दुर्मुस्।

दुर्मति, स स्त्री तथा वि (स) दे 'दुर्बुद्धि'।

दुर्मुख, वि (स) कटुभाषिन् २ कुदर्शन, कुरूप।

दुर्योध, वि (स) अजेय, अवध्य, अजय्य, अदम्य।

दुर्योधन, सं पु (सं) धृतराष्ट्रस्य ज्येष्ठपुत्र।

दुर्योनि, वि (स) हीन-नीच,-जाति-वर्ण-कुल।

दुर्रा, स पु (अ०), दे० 'मोती'।

दुर्लंघ्य, वि (स) दुस्तर, दुरतनार्य, दुर्लंघनीय, दुरतिक्रम।

दुर्लभ, वि (सं) अप्राप्य, दुष्प्राप, विरल, दुरधिगम २ अत्युत्तम, अत्युत्कृष्ट।

दुर्वचन, स पु (स) दे 'गाली'।

दुर्विनीत, वि (स) अविनय, अविनीत, उद्धत, धृष्ट, अशिष्ट, असभ्य, वियात।

दुर्विपाक, स पु (सं) कुपरिणाम, कुफलम्।

दुर्वृत्त, वि (स) दे 'दुराचारी'।

दुर्व्यवस्था, स स्त्री (सं) कुव्यवस्था, कुनीति (स्त्री), दुर्णय, कुप्रणयन, कुप्रबन्ध, दुर्निर्वाह।

दुर्व्यवहार, स पु (स) दुर्वृत्ति (स्त्री), असद्व्यवहार, अप, कार क्रिया, कुचेष्टित, कुचरितम्।

दुर्व्यसन, स पु (स न) दुर्गुण, दोष, *असदासक्ति (स्त्री)।

दुर्व्यसनी, वि (सं निन्) दुर्गुण, दोषिन, दुराचारिन, पाप।

दुलकी, स स्त्री (हिं दलकना) धो (धौ)-रित नकम्।

—**चलना**, क्रि अ, धौरितेन गम्।

दुलत्ती, स स्त्री (हिं दो+सं लत्ता>)(पशुना) द्विलत्ता द्विखुर द्विपाद, आघात प्रहार क्षेप।

—**मारना**, क्रि स, लत्ताभ्या प्रह (भ्वा प अ) आहन् (अ प अ)।

दुलह(हि)न, सं स्त्री (हिं दुलहा) नव वधू (स्त्री), वधूटी, नवोढा, नवपरिणीता।

दुलहा, स पु, दे 'दूल्हा'।

दुलाई, स स्त्री (हिं तुलाई) दे 'रजाई'।

दुलार, स पु (हिं दुलारना) उप,लालन, चुम्बन, आलिंगनम्।

दुलारना, क्रि स (स दुर्लालन>) उप, लल् (चु), आलिंग् (भ्वा प से), स्नेहेन परामृश (तु प अ)।

दुश्चरित्र, सं पु (सं न) दे 'दुराचार'। वि, दे 'दुराचारी'।

दुलारा, वि (हिं दुलार) दे 'लाड़ला'।

दुशाला, सं पु (फा) द्विशाट।

दुश्मन, सं पु (फा) शत्रु, अरि (पु)।

दुश्मनी, स स्त्री (फा) शत्रुता, वैरम्।

दुष्कर, वि (सं) दुस्साध्य, कठिन, विकट, कष्टसाध्य।

दुष्कर्म, सं पु [स मन् (न)] कु,-कार्य कृत्य, पाप, अधर्म, दुष्कृति (स्त्री)।

दुष्काल, स पु (सं) कु,-काल समय २ दे 'दुर्भिक्ष'।

दुष्कुल, स पु (स न) नीच हीन-कु, कुल वश ।
दुष्कृत, स पु (स न) दे 'दुष्कर्म'।
दुष्ट, वि (स) खल, शठ, पाप, दुजान अभद्र, नीच, दुवृत्त, दे 'दुराचारी'।
दुष्टता, स स्त्री (स) दौर्जन्य दौरात्म्य, कुचेष्टा पाप, दुर्वृत्त दे दुराचार'।
दुष्प्रकृति, स स्त्री (स) दुस्स्वभाव दुश्शील्म। वि, दुशील दुष्टस्वभाव।
दुष्प्राप्य वि (स) दे दुर्लभ'।
दुष्यन्त, स पु (स) पुरुवशीयनृपविशेष शकुन्तलापति ।
दुस्तर, वि (स) दुस्तर्य दुर्लंघनीय २ कठिन दुष्कर विकट।
दुस्सह, वि (स) दुस्सह असह्य असहनीय।
दुस्साध्य वि (स), दे दुसाध्य'।
दुहना, क्रि स (स दोहन) दे 'दोहना'।
दुहरा, वि, दे 'दोहरा ।
दुहाई¹, स स्त्री (हिं दुहना) दोहन, भृति (स्त्री)-भृत्या।
दुहाई², स स्त्री (स द्वि+आह्वाय >) दे 'ढोंडी' २ आत्मत्राणार्थ आह्वान-आकारण संबोधन ३ शपथ ।
—देना, मु, स्वरक्षार्थं आ-ह्वे (भ्वा प अ)-आ-कृ (प्रे)।
दुहाना, क्रि प्रे, व 'दोहना' के प्रे रूप ।
दुहिता, स स्त्री [स दुहितृ (स्त्री)] दे 'पुत्री'।
दूकान, स स्त्री, दे 'दुकान'।
दूज, स स्त्री (स द्वितीया) शुक्ला कृष्णा वा द्वितीया तिथि (स्त्री)।
—का चाँद, मु, दिवाप्रदीप, दुर्लभदर्शन।
दूत, स पु (स) वार्तासंदेश, हर, सन्दिष्ट कथक, राज-दूत प्रतिनिधि २ प्रणिधि, चर (चा) र, गूढदूत ।
दूती, स स्त्री (स) सचारिका, दूति (ती) का, शम्भली, कुट्ट (ट्टि) नी, सारिका २ वार्ता संदेश, हरी।
दूध, स पु (स दुग्ध) क्षीर, पयस (न), स्तन्य, ऊधस्य, उधन्य, बालजीवन २ वृक्ष-क्षीर-रस ३ (गौ का) गो, दुग्ध रस, गव्यम्।
—का पानी, स पु, आमिक्षामस्तु (न), मोरट ।
—की झाग, स स्त्री, दुग्धफेन, शार्कर, शर्कर ।
—पिलाई, स स्त्री, दे दाई'।
—पूत, स पु, सपद्सन्तती धनसन्तानौ (द्वि)।
—बहन, स स्त्री, *सस्तन्या, धात्रीपुत्री, धात्रेयी स्तनधयी।
—भाई, स पु *सस्तन्य, धात्रीपुत्र, धात्रेय।
—मुँहा, वि पु स्तनधय, शिशु । स्तन-क्षीर, पायिन् प [—मुँही (स्त्री)]।
—उगलना या डालना, मु, (शिशु) दुग्ध उद्-गृ (तु प से)-उद्-वम् (भ्वा प से)।
—का दूध, पानी का पानी, मु, न्याय, नय धम ।
—की मक्खी की तरह निकाल फेंकना, मु, दुग्धमक्षिकावत् निरस् (प्रे), अविमृश्यैव निष्कस् (प्रे)।
—के दाँत न टूटना, मु, शैशवे वतमान।
—छुड़ाना या बढ़ाना, मु, स्तन्य हा (प्रे, हापयति)-त्यज् (प्रे)।
दूधों नहाना पूतो फलना, मु, धनसतानैः वर्ध् (भ्वा आ से)।
—पिलाना, मु, स्तन-स्तन्य पा धे (प्रे, पाययति, धापयति) दा।
—फटना, मु, (अम्लादियोगेन) दुग्ध विकृ (कर्म) अथवा नीरक्षीरे वि श्लिष (दि प अ)।
दूधिया, वि (हि दूध) शुक्ल, श्वेत, दुग्धवर्ण।
—पत्थर, स पु (स) *दौग्धप्रस्तर, श्वेत प्रस्तरभेद ।
दूना, वि (स द्विगुण) द्विगुणित।
दूब, स स्त्री (स दूर्वा) मार्गवी, हरिता, अनन्ता।
दूबदू, क्रि वि, (फ़ा दो या फ़ा रूबरू) मुखामुखि (अव्य), समुखम्।
दूबे, स पु, दे 'दुबे'।
दूभर, वि (स दुर्भर>) कठिन, दुस्साध्य।
दूरदेश, वि (फ़ा) दे 'दूरदर्शी'।
दूरदेशी, स स्त्री (फ़ा) 'दूरदर्शिता'।
दूर, क्रि वि (स दूर) दूरे, आरात् (अव्य),

वि , दूरत । वि , दूर दूरस्थ, विप्रकृष्ट, अन्तर वर्तिन्, दवीयस् ।
—दराज, वि (फा) सु-अति दूर दूरस्थ ।
—दर्शक, वि (स) दे 'दूरदर्शी' ।
—दर्शन, स पु (सं) पण्डित , धीमत्, बुद्धिमत्, प्राज्ञ २ गृध्र , वज्रतुट ३ दूरवीक्षण, दूर-दर्शन-यन्त्रम् ।
—दर्शिता, स स्त्री , (सं) दूरदर्शि, दृष्टि (स्त्री) दर्शित्व, बुद्धिमत्ता, अग्रनिरूपण, दूरदर्शनम् ।
—दर्शी, वि (स शिन्) दूर दोष-अग्र,-दृष्टि दर्शिन्-दर्शक, बुद्धिमत् ।
—दृष्टि, स स्त्री (स) दे 'दूरदर्शिता' ।
—बीन, स स्त्री (फा) दूरवीक्षण, दूरदर्शनयन्त्रम् ।
—वर्ती, वि (स तिन्) दे 'दूर' वि ।
—वासी, वि (स सिन्) दूरदेशीय २ विदेशीय ।
—वीक्षण, स पु (स न) दे 'दूरबीन' ।
—स्थ, वि (स) दे 'दूर' वि ।
—करना, मु , दूरी-पृथक् कृ २ पदात्-अधिकारात् अवरुह् च्यु भ्रश् (प्रे) ।
—भागना या रहना, मु , दूरे-पृथक् स्था (भ्वा प अ), संगति परि हृ (भ्वा प अ) ।
—हो, अव्य अपेहि-अपगच्छ (लोट्) ।
—होना, मु , दूरी-पृथक् भू २ नश् (दि प वे) ।
दूरी, स स्त्री (स दूर>) दूरता-त्व, विप्रकर्ष , दूरं २ (स्थान) अंतर, अन्तरालं, अध्वन् (पु) भूमि (स्त्री) ।
दूर्वा, सं स्त्री , दे 'दूब' ।
दूल्हा, स , पु (स दुर्लभ >) वर , परिणेतृ, पाणिग्राहक , परिग्रहीतृ (पु) ।
—दुल्हन, स पु , वधूवरौ (द्वि) ।
दूषक, स पु (स) अपवादक , परिवादक, अभियोगिन्, अभियोक्तृ, दोषारोपक २ दुष्ट, दुर्वृत्त । वि दोष-पाप -जनक २ अपराधिन्, दोषिन् ३ निन्द्य, कुत्सित ।
दूषण, स पु (स न) दोष , अवगुण , दुर्व्यसनं (स पु) रावणभ्रातृविशेष ।
दूषित, वि (स) सदोष, दोषिन्, कलङ्कवत् २ (मिथ्या) निंदित-कलंकित-अभियुक्त ।
दूसरा, वि (हिं दो) द्वितीय [-या (स्त्री)] २ अन्य, पर, अपर, अपरिचित ।
दूसरे दिन, क्रि वि , परार्धे, परेद्यु अन्येद्यु (अव्य) ।
दूसरी माँ, सं स्त्री , विमातृ (स्त्री) ।
दृक्, दृग, सं स्त्री (स दृश) दे 'आँख' २ दृष्टि (स्त्री) ।
दृग्विष, स पु (सं) विषाक्त-नेत्र नयन, सर्पभेद ।
दृग्वृत्त, सं पु (स न) क्षितिज, दिगन्त ।
दृढ़, वि (स) प्रगाढ, शैथिल्यशून्य २ कठोर, कठिन, कर्कश ३ सबल, बलवत् ४ स्थायिन्, स्थिर ५ ध्रुव, अविचल ६ आग्रहिन्, सनिर्बंध ।
—प्रतिज्ञ, वि (स) प्रतिज्ञापालक, स्थिरप्रतिज्ञ, सत्य, संध अभिसंध सगर ।
—मुष्टि, वि (स) कृपण, मितपच ।
दृढ़ता, सं स्त्री (सं) प्रगाढता, शैथिल्याभाव २ स्थैर्य, अचलत्व, स्थिरता ३ आग्रह निर्बंध ।
दृढाग, वि (सं) बलवत्, शक्तिमत्, दृढदेह, हृष्टपुष्ट । [-गी (स्त्री)=शक्तिमती] ।
दृश्य, वि (सं) दृग्गोचर, नेत्रदृष्टि, विषय ग्राह्य २ दर्शनीय, अवलोकनीय, सुंदर । स पु (स न) दृष्टि, गोचर पथ विषय २ रूपकं, नाटकं ३ दे 'तमाशा' ।
दृश्यमान, वि (सं) दृश्यमाण अवलोक्यमान ।
दृष्ट, वि (स) वि-अव , लोकित, वि , ईक्षित, निरूपित, लक्षित २ ज्ञात, प्रकट ।
दृष्टांत, सं पु (सं) उदाहरणं, निदर्शनं २ अर्थालङ्कारभेद ।
दृष्टि, स स्त्री (स) दृक्शक्ति (स्त्री), नेत्र, नयन,-ज्योतिस् (न) २ दृक्पात , अवलोकन ३ आशा ४ विचार ५ आशय , अभिप्राय ।
—कूट, सं पु (स दृष्टकूट) प्रहेलिका २ गूढार्थकविता ।
देखना, क्रि सं (सं दृश) दृश (भ्वा प अ) वि-प्र , ईक्ष् (भ्वा आ से), अव आ वि लोक (भ्वा आ स , चु), आलोच (भ्वा आ स , चु), निरूप् निवर्ण-कम् (चु), भल् (चु आ से), २ अव-निर्-परि ईक्ष् ३ अन्विष (दि प स), ४ रक्ष् (भ्वा प से), रक्षा कृ ५ विचर् (प्रे) ६ अनुभू ७ पठ् (भ्वा प से)

८ मद्गुप (प्रे)। सं पु, दर्शन, विलोकन, वीक्षण, निरूपण इ ।
—भालना, मु, निरीक्षण, परीक्षण, निभालन निर्वर्णनम् ।
—सुनना, मु, बोधन, वेदन परि वि ज्ञानम् ।
देखते देखते, मु, समक्षमेव २ सपदि झटिति ।
देखने में, मु, आपातत, बहाल, प्रत्यक्षत २ आकृत्या, आकारेण ।
देखने योग्य, वि, दे० 'दर्शनीय' ।
देखनेवाला, स पु, दर्शक, द्रष्ट (पु), वीक्षक निरूपक इ ।
देखभाल, देखाभाली, सं स्त्री (हिं देखन +भालना) कार्यदर्शनं, अवेक्षणं निरीक्षणं पर्यवेक्षणं २ दर्शन, साक्षात्कार ।
देखरेख, स स्त्री (हिं देखना+स प्रेक्षण>) दे 'देखभाल' (१)।
देखादेखी, स स्त्री (हिं देखना) दर्शन, विलोकनम् । क्रि वि, अनुकृत्या, अनुसृत्या, गतानुगतिकतया (सब तृतीया एकवचन)।
देखा हुआ, वि, दृष्ट, निरूपित, निर्वर्णित, निभालित ।
देग, सं स्त्री (फा) पिठर र, बृहत्स्थाली ।
देगचा, स पु (फा) स्थाली, पिठरक -कम् ।
देगची, स स्त्री (फा देगचा) उखा, पिठरी, लघुस्थाली ।
देदीप्यमान, वि (स) अत्यतमतत भाममान-भ्राजमान-द्योतमान, अति-तेजस्विन्-भासुर ।
देन, स स्त्री (हिं देना) दान, वितरण २ प्रीति दानं, उपहार, उपायन, प्रदत्तवस्तु(न)।
—दार, सं पु (हिं +फा) दे 'ऋणी'
—लेन, सं पुं, कुसीद, कौसीद्य, वृद्धिजीवन २ न्यासादान ने (क्रि)।
देना, क्रि स (सं दान) दा (जु उ अ), दा (भ्वा प अ, यच्छति), उद्विसृज् (तु प अ) विश्रण् (चु), दद (भ्वा आ से) ऋ (प्रे, अर्पयति) २ (थप्पड़ आदि) प्रह (भ्वा प अ), आहन् (अ प अ) ३ (किवाड़ आदि) (अ)पिधा (जु उ अ)। सं पु, अर्पण, प्रतिपादन, विश्राणनं, ददनं, उद्वि सर्जन, दे 'दान' (१२)।
२०
देने योग्य, वि, देव, दानीय, दातव्य, विश्राणनीय, अर्पणीय, दानार्ह ।
देनेवाला, सं पुं, दातृ (पु), त्यागिन्-द, प्रद-दायक-दायिन् (उ सुख-द-दायक इ) २ दे 'दाता' ।
दिया हुआ, वि, दत्त, अर्पित, विसृष्ट, विश्राणित ।
दे मारना, मु, दे 'पटकना' ।
देय, वि (सं) दे 'देने योग्य' ।
देर, स स्त्री (फा) विलम्ब, अतिकाल, काल -अतिपात -क्षेप -यापन-व्याक्षेप २ समय, काल ।
—करना या लगाना, क्रि अ, वि-लम्ब् (भ्वा आ से), काल अतिपत् (प्रे)-व्याक्षिप् (तु प अ)।
—तक, क्रि वि, चिराय, चिर यावत्, चिर कालान्तम् ।
—से, क्रि वि, चिरात्, चिरेण, विलम्बेन, विलम्बात्, चिर-कालेन-कालात् ।
—होना, क्रि अ, विलंब-व्याक्षिप् (कर्म) वेला अतिक्रम् (भ्वा प से), विलंबो जन् (दि आ से)।
देरी, स स्त्री, दे 'देर' (१-२)।
देव[1], स पु (फा) दैत्य, दानव, राक्षस ।
देव[2], सं पु (स) देवता, दैवत, अमर, अमर्त्य, सुर, अस्वप्न, दिविषद् दिवौकस् (पुं) निर्जर, विबुध, वृंदारक, सुमनस् (पु) २ ईश्वर ३ मित्र, आर्य, पूज्यपुरुष ४ मेघ ५ ज्ञानेंद्रिय ६ ब्राह्मण ।
—गिरि, स पु (स) रैवतकपर्वत २ नगर विशेष ।
—दारु, सं पुं, (स पु न) दे 'दियार' ।
—दासी, स स्त्री (स) वेश्या, वेशवनिता २ मदिर-देव, नर्तकी ।
—देव, सं पु (स) ईश्वर २ इन्द्र ।
—नागरी, स स्त्री (सं) लिपिविशेष ('अ' से 'ह' तक अक्षर)।
—पूजा, स स्त्री (स) प्रतिमापूजनं २ ईश्वरार्चनम् ।
—भूमि, स स्त्री (स) स्वर्ग, नाक ।
—मंदिर, सं पुं (स न.) देव, गृहं भवनं-स्थान आलय ।

—लोक, स पु (स) स्वर्ग ।
—वाणी, स स्त्री (स) देवभाषा, संस्कृतम् ।
देवकी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णचन्द्रजननी, देवकात्मजा ।
—नन्दन, स पु (स) श्रीकृष्ण ।
देवता, स पु (स स्त्री) दे 'देव'(१ ३,५,६)।
देवत्व, स पु (स) सुरत्व, अमरत्व ।
देवन, स पु (स) अक्ष सार, शार, पाशक । (स न) कांति दीप्ति (स्त्री) २ अक्षद्यूत क्रीडा ३ क्रीडा, विनोद ४ प्रमोदवाटिका ।
देवना, स स्त्री (स) द्यूतम् २ क्रीडा ३ शोक ।
देवर, स पु (सं) देवृ (पु), देवल, देवार, देवान, तुराणाव, पत्युरनुज २ पतिभ्रातृ (पु छोटा या बडा) ।
देवरानी, स स्त्री (स देवर >) यातृ (स्त्री), देवरपत्नी, जा ।
देवल, स पु (स) देवाजीव, देवपूजोप जीविन् २ नारद ३ स्मृतिकारमुनिविशेष । हिं, देवालय मन्दिरम् ।
देवागना, स स्त्री (स) दे 'अमरांगना' ।
देवालय, स पु (स) स्वर्ग २ मदिरम् ।
देवी, स स्त्री (स) देवपत्नी सुरांगना २ दुर्गा, पार्वती ३ ब्राह्मणी ४ पतिव्रता ५ पट्ट, महिषी राज्ञी ।
देश, सं पु (स) जनपद, विषय, भूभाग, नीवृत्, उपवर्तन, प्रदेश २ राष्ट्र ३ स्थानं, स्थल ४ रागभेद ।
—निकाला, सं पु, (स्वदेशात्) प्र निर वि, वासनं-वास, प्रवाजनम् ।
—भाषा, सं स्त्री (स) उपप्राकृत प्रादेशिक, भाषा ।
देशान्तर, स पु (स न) अन्य वि पर,-देश २ लम्बांश, देशान्तर (तूलवलय) ।
देशाचार, स पु (स) देश, धर्म -व्यवहार -रीति (स्त्री) ।
देशाटन, स पु (स न) भू -यात्रा भ्रमण- पर्यटनम् ।
देशी, सं स्त्री (सं देशीय) देश्य, देशिक स्वदेश जउत्पन्न ।
देस, देसी स पु तथा वि, दे 'देश' तथा देशी' ।
देसावर, स पु, दे 'दिसावर' ।
देह, स पु (सं) काय, दे 'शरीर' २ अव यव, अंग ३ जीवनम् ।
—पात, स पु (स) मृत्यु (पु) ।
देहरा, स पु (स देव + हिं घर) देवालय, मदिरम् ।
देहली, स स्त्री (स) दे 'दहलीज' २ इन्द्र प्रस्थं, देहली, दिल्ली ।
देहवत, देहवान्, वि (स देहवत्) दे 'देही ।
देहांत, सं पु (स) मृत्यु (पु) निधनं, मरणम् ।
देहात, सं पु (फा) दे 'ग्राम' ।
देहाती, वि (फा देहात) दे 'ग्रामीण' ।
देही, वि (स देहिन्) प्राणिन्, देहवत्, शरीरिन्, तनु धारिन् भृत । स पु, (सं) जीव, आत्मन् (पु), जीव, प्रत्यगात्मन् (पु)।
दैत्य, सं पु (सं) राक्षस, दानव, निशाचर ।
—गुरु, स पु (स) शुक्राचार्य ।
—पति, स पु (स) हिरण्यकशिपु ।
—माता, स पु (स तृ) दिति (स्त्री) ।
दैत्यारि, स पु (स) विष्णु २ देव ।
दैनिक, वि (स) प्रात्यहिक आह्निक [-की (स्त्री)], दैनंदिन [-नी (स्त्री)] २ नैत्यक नैत्यिक [-की (स्त्री)] । सं पुं, दे 'दैनिकी' ।
दैनिकी, सं स्त्री (स) दिन-वेतनं भृति (स्त्री) ।
दैव, स पु (सं न) भाग्यं, अदृष्टं, नियति (स्त्री), भागधेयं, भवितव्यता, दिष्ट, प्र-तन, विधि (पु), प्रारब्ध २ ईश्वर ३ आकाश शम् । वि, दिव्य, सौर, अमानुष, अपौरुष, ऐश्वर, अलौकिक (स्त्री, दे 'दैवी') ।
—गति, सं स्त्री (सं) दैवघटना, भाग्य-चक्र २ > 'दैव' (१) ।
—दुर्विपाक, सं पु (सं) दैवकोप, शोभा ग्योदय ।
—योग, सं पु (सं) यदृच्छा, दैव, गति (स्त्री)-घटना ।
—वश, क्रि वि (स द्वा) दैवात्, दैववशात् दैवयोगात्, अकस्मात्, यदृच्छया ।

दोवी, वि स्त्री (सं) आकस्मिकी, यादृच्छिकी अलौकिकी अमानुषी, नश्वरी अपार्थिवी।
दोहिक, वि (स) शारीरिक कायिक-वैग्रहिक [-की (स्त्री)]।
दो, वि (स द्वि) द्वौ (पु) द्वे (स्त्री, न) द्वयं, द्वितय -युग्म (उ दो मास मासद्वय इ)।
—अन्नी, स स्त्री, द्वयाणी।
—अर्थी, वि द्वयर्थ द्वयर्थक श्लिष्ट २ संदिग्ध।
—आब सं पु (फा) *द्वयापम्।
—गला, स पु (फ़ा) सकरज मिश्रज, विजात सांकरिक, वर्णसंकर।
—चंद, वि (फा) द्विगुण द्विगुणित।
—चित्ता, वि दे 'दुचित्ता'।
—तल्ला, वि दे 'दुमंजिला'।
—तारा, सं पु *द्वितार वाद्यभेद।
—धारा, वि दे 'दुधारा'।
—नाली, वि, द्विनाली (बंदूक आदि)।
—पहर, स स्त्री मध्याह्न मध्याह्नकाल, मध्य (ध्य)दिन, उद्दिन।
—पर्त, वि, द्विरावृत्त, द्विरावर्तित, द्विगुण, द्विगुणित।
—पहर का, वि, माध्याह्निक [-की (स्त्री)] माध्यंदिन [-नी (स्त्री)]।
—पहर पहिले, क्रि वि, अर्वाङ्‌ मध्याह्नात् (अ म =A M) प्राह्णे, पूर्वाह्णे।
—पहर ढले, क्रि, वि, पश्चान्मध्याह्नात् (प म -P M), अपराह्णे, विकाले।
—पाया, वि, द्विप(पा)द ,द्विपाद(पु)(मनुष्य)।
—बारा, क्रि वि (फा) द्वि, द्विवार, पुन (सब अव्य)।
—भाषिया, स पु, दे 'दुभाषिया'।
—महला, मंजिला, वि, दे 'दुमंजिला'।
—मानी वि, दे 'दोअर्थी'।
—मुँहा, वि, द्विमुख, द्विवदन, २ छलिन्, दाम्भिक। स पु, द्विमुख सर्प, सर्पभेद।
—रंगा, वि, द्विरंग, द्विवर्ण २ दाम्भिक।
—रंगी, स स्त्री दम्भ, द्वैध, प्रतारणा।
—राहा, स पु, द्विपथ, चतुष्पथ।
—लड़ा, स पु, *द्विसूत्रक।
—साला, वि, द्विवार्षिक द्वैवार्षिक (-की स्त्री) द्विवर्षीण, द्विवर्ष।
—सूती, स स्त्री, *द्विसूत्री।
—सेरी, स स्त्री, द्विसेरका द्विसेरी।
—हत्थड़, स पु, करयुगलाघात, द्विहस्तप्रहार।
—हत्था, क्रि वि कराभ्यां हस्तद्वयेन (तृ)।
—एक,-चार, सु, कतिपय, कति, कित्‌चन।
—करना, मु, द्विधा द्विखण्डी कृ समभागद्वयेन विभज (भ्वा प अ)।
—कौड़ी को चीज, मु, तुच्छ क्षुद्र अल्पमूल्य पदार्थ।
—घड़ी मु, कश्चित् काल समय अल्पसमय यावत्।
दोजख, स पु (फा) न(ना)रक निरय।
दोजखी, वि (फ) नारकिन्, नारकीय, नारकिक-नारक [की (स्त्री)]।
दोना, स पु (स द्रोण>) *द्रोण, पत्रपर्ण, पुट पुटक।
दोनों, वि (हिं दो) उभौ (पु) उभे (स्त्री न), उभय (प्राय एक या बहु में, कभी द्विवचन में भी), द्वौ अपि (पु), द्वे अपि (स्त्री न)।
दोला, स स्त्री (स) दोली, हिंदोला, प्रेंख खट्वा।
—यंत्र, स पु (सं न) दे 'दोला' २ वक्र सधान-यन्त्रम्।
—युद्ध, स पु, (स न) संदिग्धपरिणाम युद्धम्।
दोलायमान, वि (स) इतस्तत विचलत् (शत्रन्त), प्रेंखत् (शत्रन्त)।
दोष, स पु (स) न्यूनता, विकलता, छिद्र, विकार २ पाप, पातक ३ लांछन, कलंक, अभियोग ४ अपराध, दोष ५ रसदोषादय काव्यदोषा (सा) ६ प्रदोष, रजनीमुखम्।
—लगाना, क्रि स दुष (प्रे, दूषयति), अभि-युज (रु आ अ, चु), कलंकयति (ना धा), दोष क्षिप (तु प अ)-आरुह् (प्रे, आरोपयति), निंद (भ्वा प से)।
—कर, वि (स) अनिष्ट अहित हानि, कर कारिन्-कार।
—ग्राही, वि (स ग्रहिन्) दुष्ट, खल, दुर्जन।
—घ्न, स पु (स न) वातपित्तकफनाशक मौषधम्।
—ज्ञ, वि (स) प्राज्ञ, विद्वस।
—त्रय, स पु (स न.) वातपित्तकफदोषा, दोष, त्रिदोषी।

—दृष्टि, वि (स) दोषैकदृश, छिद्रक, पुरोभागिन, छिद्रान्वेषिन् ।
दोषी, वि (स दोषिन) सदोष, दोषवत्, अपराधिन, प्रमादिन् २ पाप, पापिन ३ अभियुक्त, दण्ड्य कृतापराध ४ व्यसनिन्, कुमार्गगामिन् ।
दोस्त, स पु (फा) सखि (ष), दे 'मित्र' ।
दोस्ताना, स पु } (फा) सखित्व, दे
दोस्ती, स स्त्री } 'मित्रता' ।
दोहता, स पु, दे 'दौहित्र' ।
दोहती, स स्त्री, दे 'दौहित्री' ।
दोहद, स पु (स पु न) गर्भिण्यभिलाष, लालसा, श्रद्धा, दौर्हृद, दौहृदम् ।
—वती, सं स्त्री, लालसावती गर्भिणी, श्रद्धालु (स्त्री) ।
दोहन, स पु (स न) स्तन्य-उधस्य उधन्य निष्कासन निष्कर्षण निस्सारण २ दे 'दोहनी' ।
दोहना, क्रि स (स दोहन) दुह् (अ प अ, द्विकर्मक) स्तन्य निस्सृ-सु (प्रे) । स पु, दे 'दोहन' ।
दोहनी, स स्त्री (स) दोहन-दुग्ध, पात्र, दोहन, दोह, पारी, लेपनम् ।
दोहने योग्य, वि दोग्धव्य, दोह्य ।
दोहनेवाला, स पु, दोग्धृ (पु), दोहक ।
दोहर, स स्त्री (हिं दो) *द्विस्तरी ।
दोहरा, वि पु (हिं दो) द्विरावृत्त, द्विरावर्तन २ द्विगुण, द्विगुणित ।
—करना, क्रि स, द्विपुटी कृ द्वि व्यावृत (प्रे), द्विगुणयति (ना धा) २ द्विगुणी कृ, द्विगुणयति (ना धा) ।
दोहराना, क्रि स (हिं दोहरा) पुन द्विकथ् (चु)-गद्-वद् (भ्वा प से)-व्याहृ (भ्वा प अ) २ मुहु द्वि कृ या अनुस्था (भ्वा प अ) आचर (भ्वा प स), अभ्यस् (दि प से) ३ पुन द्वि दृश् (भ्वा आ से) विचर् (प्रे), समुत्र (प्रे) ।
दोहराव, स पु (हिं दोहराना) पुनरीक्षण, संशोधन २ पुनरुक्ति (स्त्री), पौनरुक्त्य, पुनर्-,वचन-वाद ।
दोहा, स पु (हिं दो) हिंदीच्छन्दोभेद ।
दौड़, सं स्त्री (हिं दौड़ना) धावन पलायन, द्रवण, विद्रव, द्रुत, गमन-गति (स्त्री), २ आक्रमण (इ ०) गति उद्योग-बुद्धि, सीमा ।
—धूप, स स्त्री, घोर कठोर, प्रयास परिश्रम उद्योग उद्यम ।
—धूप करना, मु, अत्यंत आयम परिश्रम (दि प से) प्रयत् (भ्वा आ से) ।
दौड़ना, क्रि अ (स धोरण) धोर् (भ्वा प से) द्रु (भ्वा प अ) धाव् (भ्वा प स) द्रुत सवेग शीघ्र गम् २ सतत-अत्यधिक प्रयत् (भ्वा आ से)-परि श्रम् (दि प से) ३ सहसा प्रवृत् (भ्वा आ से) ४ पलाय (भ्वा अ से) । स पु, दे 'दौड़' ।
दौड़नेवाला, स पु, धावक, धोरक, शीघ्रगामिन् ।
दौड़ाना, क्रि स, व 'दौड़ना' के प्रे रूप ।
दौर दौरा, स पु (अ+हिं) आधिपत्य, शासन, प्रभुत्व, स्वामित्व, ईशत्व वश शम् ।
दौरा, स पु (अ दौर) पर्यटन, परिभ्रमण २ भ्रमण भ्रमण-भ्रमण-गमन ३ अधिकारिणो निरीक्षणार्थं भ्रमणं ४ रोगादे आवृत्ति आवर्तनं सामयिकाक्रमणम् ।
—करना, क्रि अ परिभ्रम्-पर्यट् (भ्वा प से), स्वमण्डल निरीक्षितु परिभ्रम् ।
—सुपुर्द करना, मु, अभियोग दण्डाधिकरणिक पार्श्व प्रेष् (प्रे) ।
दौरात्म्य, स पु (सं न) दुष्टता, दुरात्मत्वम् ।
दौर्जन्य, स पु (स न) दुर्जनता, दुष्टता ।
दौर्बल्य, स पु (स न) दुर्बलता, क्षामता ।
दौर्भाग्य, स पु (स न) दे 'दुर्भाग्य' ।
दौलत, स स्त्री (अ) धन, संपद् (स्त्री) ।
—खाना, स पु (अ+फा) गृह आनिवास ।
—मंद, वि (अ+फा) धनिन, सपन्न ।
—मंदी, स स्त्री (अ+फा) धनाढ्यता, समृद्धि (स्त्री) ।
दौवारिक, स पु (स) दे 'द्वारपाल' ।
दौष्कुल, वि (सं) हीन नीच शुद्र, कुलवर्ण-जातीय ।
दौष्ट्य, स पु (स न) दुष्टता खलता, दुर्जनता ।
दौष्यन्ति, सं पु (स) दुष्यन्तपुत्रो भरत ।
दौहित्र, स पु (सं) दुहितृ, पुत्र तनय ।
दौहित्री, स स्त्री (स) दुहितृ, पुत्री तनया

द्यु, स पु (स न) दिन २ आकाश ३ स्वर्ग। स पु, अग्नि।

—लोक, स पु (स) स्वर्ग।

द्युति, स स्त्री (स) कान्ति-दीप्ति (स्त्री), आभा, प्रभा २ लावण्य, सौन्दर्य, शोभा छवि (स्त्री) ३ किरण, रश्मि (पु)।

द्युतिमन्त, वि (स -मत्) कान्तिमत् दीप्तिमत्, भासुर, भास्वर।

द्यूत, स पु (स पु न) अक्षवती, कैतव, पण।

—कर, स पु (स) कितव, धूर्त दुरोदर अक्षदेविन, द्यूतकृत्।

—कार, स पु (स) सभि (भी) क २ दे 'द्यूतकर'।

द्योतक, वि (स) प्रकाशक द्योतकार, उद्भासक २ व्यापक, व्यापक।

द्रव, स पु (स) द्रवण, स्रवण, क्षरण, गलन, वहन, अभिनि, स्य (ष्य) दन २ रस (स्रा) व, प्रवाह, प्रस्रव, धार रा ३ धावन, पलायन ४ वेग, नव ५ आसव ६ रस ७. परिहास ८ द्रवत्व ९ द्रव, द्रव्य पदार्थ। वि, तरल, द्रव, प्रवाहिन्, २ आर्द्र, क्लिन्न, उन्न, ३ विलीन, विद्रुत, द्रवीकृत।

द्रवीभूत, वि (स) दयादिभि आर्द्रीभूत अभिष्यन्दित, दयालु, कृपालु। २ विलीन, विद्रुत।

द्रवत्व, स पु (स न) द्रवता, द्रवभाव, प्रवाहधर्म, रसता, तरलत्वम्।

द्रव्य, स पु (स न) पदार्थ, वस्तु (न) २ भूम्यादयो नव पदार्था ३ उपादानकारण, सामग्री ४ धन, वित्तम्।

—संचय, स पु (स) धनसंग्रह।

द्रव्यार्जन, स पु (स) धनोपार्जन, वित्तार्जनम्।

द्राक्षा, स स्त्री (स) रसाला, प्रियाला, गुच्छफला, दे 'दाख'।

द्रुत, वि (स) विलीन, विद्रुत, द्रवी कृत भूत, अवदीर्ण २ शीघ्र, क्षिप्र, त्वरित, सत्वर ३ पलायित। क्रि वि, आशु, झगिति।

—गामी, वि (स मिन्) आशुग, शीघ्रगामिन्, द्रुतगति।

द्रुम, स पु (स) पादप, तरु (पु), वृक्ष।

द्रोण, स पु (स पु न) प्राचीनपरिमाण भेद (४ सेर, १६ सेर या ३२ सेर) घट, कलश, उन्मान, अर्मण, उल्वण। स पु द्रोणाचार्य २ काष्ठकलश ३ द्रुममयो रथ ४ काराक, कृष्ण द्रोण-वृक्ष,-काक ५ दे दोना' ६ जौरा।

द्रोह, स पु (स) अहित-अनिष्ट, चिंतन वैर, वि, द्वेष, अपचिकीर्षा जिघांसा, छद्म कर, अहित-अनर्थ, इच्छा।

द्रोही, वि (स द्रोहिन्) अहित अनिष्ट-अनर्थ, चिंतक चिकीर्षक, मत्सरिन्, अभ्यसूयक।

द्वंद, स पु. (स न) मिथुनम्।

द्वंद, द्वन्द्व, स पु (स द्वन्द्व) द्वय, द्वितय, युगल, युग्म, युग, यमक, युगल २ मिथुन, जाया पत्नी, दम्पती ३ परस्परविरोधिपदार्थौ (उ. शीत-उष्ण, सुखदु ख इ) ४ रहस्यं ५ कलह, उपद्रव ६ द्वन्द्वयुद्ध ७ संशय ८ सम्भ्रम, समोह ९ कष्ट। स पु, समासभेद (व्या)।

—चारी, स पु (स चारिन्) दे 'चकवा'।

—युद्ध, स पु (स न) मल्लद्वयीर, युद्धम्।

द्वादशी, स स्त्री (स) शुक्ला कृष्णा वा द्वादशी तिथि (स्त्री.)।

द्वापर, स पु (स पु न) तृतीययुग (८६४००० वर्ष) २ संदेह।

द्वार, स पु (स न) द्वार् (स्त्री) प्रति (ती) हार २ उपाय, साधनम्।

—चार, स पु (स द्वाराचार) वधूगृहद्वारे करणीया विशिष्टरीति (स्त्री)।

—पाल, स पु (स) द्वा()स्थ, द्वारस्थ, द्वारिक, दौवारिक, प्रति(ती)हार (-री स्त्री)।

द्वार(रि)का, स स्त्री (स) द्वारा(र)वती, तीर्थविशेष।

द्वारा, अव्य (स) द्वारेण, साधनेन, कारणेन, हेतुना। (हिं प्राय इसका अनुवाद तृतीया से करते हैं)।

द्वि, वि (स) दे 'दो'।

—ककार, स पु (स) काक, वायस २ कोक, चक्र।

—गुण, वि (स) द्विगुणित।

—पद, वि (स) द्विपद्, द्विचरण।

द्विज, वि (स) द्विर्जात, द्विरुत्पन्न, द्विजन्मन्। स पु, ब्राह्मणक्षत्रियवैश्या २ खग, अण्डज ३ दंत ४ ब्राह्मण ५ चन्द्र।

—दास, स पु (स) शूद्र २०।
—पति, स पु (स) ब्राह्मण २ गरुड़ ३ चन्द्र।
—प्रिया, स स्त्री (स) सोमलता।
—बन्धु, स पु (स) कर्महीनो द्विज।
—राज, स पु (स) ब्राह्मण २ चन्द्र।
द्वितीय, वि (स) द्वितीय यथा (पु न स्त्री) २ गौण अवर।
द्वितीया, स स्त्री (स) शुक्ला कृष्णा वा द्वितीया तिथि (स्त्री)।
द्विधा, अव्य (स) प्रकारद्वयेन, द्विप्रकार २ द्विभागश (अव्य), दिसन्यो (मतभी)।
द्विविध, वि (स) द्विप्रकारक। त्रि वि दे 'द्विधा'।
द्वीप, स पु (स पु न) जलान्तर्गतभूमि (स्त्री)।
द्वेष, स पु (स) वैर, शत्रुता मात्सर्य, विरोध, द्रहभाव।
द्वेषी, वि (स विन्) विरोधिन्, वैरिन् अहित, विपक्ष। स पु, अरि, शत्रु, रिपु द्वेष्टृ।
द्वैत, स पु (स न) द्वित्वं, द्विता, द्वैत, द्वैध २ द्वैतवाद (दर्शन) ३ भेदभाव।
—वाद, स पु (स) जीवब्रह्मपृथक्त्ववाद २ देहदेहिपृथक्त्वसिद्धान्त।
—वादी, स पु (स दिन्) द्वैतिन्।
द्वैधीभाव, स पु (स) संशय निश्चयाभाव २ दम ३ उपायविशेष (राजनीति)।
द्वैपायन, स पु (सं) श्रीवेदव्यास।
द्व यणुक, स पु (न) परमाणुद्वयात्मक द्रव्यम्।

ध

ध, देवनागरीवर्णमालाया एकोनविंशो व्यञ्जनवर्ण धकार।
धधला, स पु (हिं धंधा) दम्भ, कपट, माया।
धंधा, स पु (स धनधान्य>) आजीव, आजीविका, जीविका, जीवसाधन, वृत्ति (स्त्री) २ उद्यम, व्यवसाय।
काम—, स पु, दे 'धधा'।
गोरख—, स पु, मोहकर भ्रान्तिजनक, व्यापार।
धँसना, क्रि अ (स दशन>) आ प्र विश् (तु प अ) निविश (तु आ अ), निर, भिद् (रु प अ), व्यध् (दि प अ), दे 'गड़ना'।
धँसाना, क्रि स, व 'धँसना' के प्रे रूप।
धँसाव, स पु (हिं धँसना) नि प्र वेश वेशन, वेध धनम्।
धक¹, स स्त्री (अनु) हृदयहृदयनन, स्पद स्फुरण २ हृत्सपदशब्द।
धक², स स्त्री (देश) हृदन्तिस्था लघुयूका।
धकधकाना, क्रि अ (अनु) दे 'धड़कना'।
धकेलना, क्रि स (हिं धक्का) (करादिभि) प्रणुद्प्रेर प्रचल् प्रयु (प्रे) प्रचुद् (चु)।
धकेलू, स पु (हिं धकेलना) प्रणोदक, प्रजादक, प्रेरक, प्रचालक, अपस्मारक।
धक्कमधक्का, स पु (हिं धक्का) अन्योन्यपर स्पर, मर्द, समाघात संघर्षण, अभिसपात।
धक्का, स पु (अनु धक अथवा स धक=नाश करना>) अपसारणा, प्रचालना, प्रेरणा, प्रचोदना, सघर्ष, आघात, मर्द २ सताप, क्लेश ३ आपद् विपद (स्त्री)।
—खाना, क्रि अ, अपसार् प्रेर प्रचाल् प्रणोद (कर्म)।
—देना, क्रि स दे 'धकेलना'।
—लगना, मु, विपदा अभिउपद्रु (कर्म)।
धचका, स पु (अनु) लघु प्रहार आघात, दे 'धक्का'।
धज, स स्त्री (स ध्वज>) अलंक्रिया, सज्जा, भूषा २ आकार, आकृति (स्त्री), छवि (स्त्री) ३ हावभावी (द्वि) ४ वर्तनं, शीलम्।
धजीला, वि (हिं धज) दे 'सजीला'।
धज्जी, स स्त्री (स धटी) पटखण्ड, चर्म पट्टी २ पट्टचीर, चीरम्।
—धज्जियाँ उड़ाना, मु (प्र), (चु) २ निर्दय निष्ठुर तीव्र (भ्वा प अ) हन (अ प अ)।
धड़ग, वि (हिं धड़+अंग) नग्न, दे 'नंग'।

धड, स पु (म धर >) कबध, अपनूर्ध वल्वर, अशीषशरीर २ आकण्ठग्रीव शरीरम्।
धडकन्कन, स स्त्री (अनु धड) हृदय हृत, स्पदन-स्फुरण-कपन २ हृत्पदध्वनि (पु) ३ अशका, भयम्।
—बेधडक, क्रि. वि, नि शक, निर्भय, निस्स कोचम्।
धडकना, क्रि अ (हिं धडक) कम्-वेपृ-स्पद् (भ्वा आ मे) स्फुर (तु प से)।
धडका, स पु, दे 'धडकन'।
धडकाना, क्रि स व 'धडकना' के प्रे रूप।
धडधड, स स्त्री (अनु) धडधडायते रूप कृति कृत। क्रि वि, सधडधडशब्द २ निसकोचम्।
—जलना, क्रि अ, अत्युग्रप्रचण्ड ज्वल (भ्वा प मे)-दह् (कर्म)-दीप (दि आ से)।
धडधडाना, क्रि. अ (अनु धडधड) धडधडायते (ना धा) धडधडशब्द जन् (प्रे)।
धडल्ला, स पु (अनु धड) धडधडाकार २ जनसमर्द।
धडल्लेदार, वि (अनु + फा) निर्भय, निसकोच।
धडल्ले से, मु, निर्भय, निस्सकोचम्।
धडवाई, स पु (हिं धडा) तोल्क, *धमधर।
धडा, स पु (स धम) तुला २ तोल, भार ३ पक्ष, दलम्।
धडाका, स पु (अनु०) धडाक् इति शब्द – रव –ध्वनि (पु) गुरुद्रव्यपतनध्वनि।
धडाधड, क्रि वि (अनु धड) सतत, निरतर, अविच्छिन्न, अनवच्छिन्न २ निरतर सधड धडशब्द च।
धडाम से, स पु (अनु) सशब्दम्।
धड़ी, स स्त्री (स धम >) घटी, चतु सेरी-मात्री, पच-सेरी-मात्री।
धडेबदी, स स्त्री (हिं फा) दलबध, पक्ष, पक्ष-ग्रहण-अवलबनम्।
धत, स स्त्री, दे 'लत'।
धतकारना, क्रि स (अनु धत) दे 'दुतकारना'।
धता, स पु (अनु धत) निस्सारित, अपगत।
—बताना, मु, छलेन अप-निम्-सृ (प्रे), सस्थान परिहृ (भ्वा प अ)।
धतूरिया, स पु (हिं धतूरा) धत्तुर-मोहन, प्रमादको वचक।
धत्तू (तू)रा, स पु (स. धत्तूर) धुस्तूर, शिवप्रिय, मोहन, कनक।
धधक, स स्त्री (अनु) ज्वाला, झल्का, अर्चिस् (न)।
धधकना, क्रि. अ, (हिं धधक) उद्-प्रज्व दीप (दि आ अ) उद्-प्र-ज्वल (भ्वा प से), प्रचड दह (कम)।
धधकाना, क्रि स, द 'धधकना' के प्रे रूप।
धनजय स पु (स) अर्जुन २ अग्नि।
धन, स पु (स न) वित्त, द्रव्य, ऋ(रि)क्थ, वसु (न) अर्थ, हिरण्य, द्रविण, विभव, श्री-लक्ष्मी (स्त्री), भाग्य, सम्पद्-सम्पत्ति (स्त्री) काचन, रै (पु, रा, रायौ, राय) २ गोधन ३ प्रेमपत्र ४ योगचिह्न (+, गणित) ५ मूलद्रव्यम्।
—कुबेर, स पु (स) लक्षपति (पु), कोटीश, सुसमृद्धजन।
—धान्य, स पु (स न) धनधान्ये, अर्थान्ने।
—पति, स पु (स) कुबेर, दे।
—हीन, वि (स) दरिद्र, अकिंचन।
धनक, स पु (स) धनाया, धनैषणा।
धनद, वि (स) दानशील, वदान्य। स पु (स), कुबेर।
धनाढ्य, वि (स) अर्थ धन वित्त-द्रव्य-वत्, धनिन, धनिक, स-बहु-महा, धन, वित्त-विभव धन, शालिन, सपन्न, समृद्ध, श्रीमत्, लक्ष्मीश, धनेश्वर।
धनार्जन, स पु (स न) वित्तोपार्जन, धन सग्रह।
धनिक, वि (स) दे 'धनाढ्य'।
धनिया, स पु (स धनिका) धन्या, वितुन्नक, सुगधि (न) कुस्तुम्बरी।
धनिष्ठा, स स्त्री (स) श्रविष्ठा, नक्षत्रविशेष।
धनी वि (स -निन्) दे 'धनाढ्य' २ दक्ष, कुशल। स पु, स्वामिन्, अधिपति २ पति (पु) धनाढ्य।
—मानी, वि (स धनिमानिन्) धनमान, वत्-युक्त।
बात का—, वि, प्रतिज्ञापालक, स्थिर-दृढ, प्रतिज्ञ, सत्य,-सारसध व्रत।

धनु, स पु (स) दे धनुष'।
धनुआ, स पु [स धन्व (वेद म)] दे 'धनुष' २ दे 'धुनकी'।
धनुक, स पु (स धनुस्‌ न) धनु, धनू (स्त्री), धनु (न) इन्द्र,-चाप -आयुध-धनस (न)।
धनुकी, स स्त्री, दे 'धुनकी'।
धनुर्धारी, स पु (स रिन्‌) धनुर्द्धर, धन्विन्‌, इषुधर, धानुष्क, निषंगिन्‌, धनुर्भृत्‌ धनुष्मत्‌ (पु), तूणिन्‌।
धनुर्विद्या, स स्त्री (स) शराभ्यास, इषुक्षिप्ति (स्त्री)।
धनुर्वेद, स पुं (स) धनुर्विद्यानिरूपकशास्त्रम्‌।
धनुष, स पु [स धनुस्‌ (न)] चाप प ट्वास, आस, कार्मुक, कोदण्ड, शरासन शारंग, धनू (स्त्री)।
धनेश्वर, स पु (स) धनपति २ कुबेर ३ खगभेद।
धनैषणा, स स्त्री (स) वित्तैषणा, धनाशा।
धनैषी, वि (स -षिन्‌) धनेच्छुक, वित्तार्थिन्‌ (पुं)
धन्ना, स पु दे 'धरना' स पु ४।
धन्य, वि (स) सौ, भाग्यवत, पुण्य,-वत्‌ भाज, सु,कृतिन्‌, सु भग भाग्य, महाभाग २ श्लाघ्य, स्तुत्य। क्रि वि साधु सुष्ठु, सम्यक्‌।
—**वाद**, स पु (स) कृतज्ञता,-दर्शन प्रकाशनं, उपकारप्रशंसा २ साधुवाद, प्रशंसावचनानि (बहु), श्लाघा।
धन्वन्तरि, स पु (स) सुरचिकित्सक, सुश्रुतगुरु।
धन्वा, स पु (स धन्वन्‌) धनुस्‌ (न) चाप २ मरु ३ स्थलम्‌।
धन्वी, स पु (स विन्‌) दे 'धनुर्धारी'।
धप्पा, स पु (अनु धप) चपेट क्रिया २ क्षति-हानि (स्त्री)।
धब्बा, स पु (देश) दे 'दाग'।
धम, स स्त्री (अनु) पतनशब्द, धमिति ध्वनि (पु)।
—**से**, क्रि वि धमितिशब्देन सह २ अकस्मात्‌।
धमक, स स्त्री (अनु) अवपतन आघात,-शब्द, धमिति ध्वनि (पु) २ पादन्यास शब्द ३ आघात, प्रहार ४ कम्प।
धमकना, क्रि अ (हिं धमक) धमिति शब्देन सह पत्‌ (भ्वा प से) २ व्यथ्‌ (भ्वा आ से)। आ—, मु, अकस्मात्‌ सहसा आया (भ प अ)।
धमकाना, क्रि स (हिं धमकना) भी (प्रे भाययति, भापयते, भीषयते), त्रस (प्रे) २ निर्‌, भर्त्स (चु आ से), तर्ज्‌ (भ्वा प से, चु आ से)।
धमकी, स स्त्री (हिं धमक) विभीषिका भयदर्शन २ तर्जना, भर्त्सना, अपकारगिर्‌ (स्त्री)।
—**में आना**, मु, विभीषिकाप्रभावेण कार्यं कृ।
धमधमाना, क्रि अ (अनु) धमधमायते (ना धा), धमधमशब्द नन्‌ (प्रे)।
धमनी, स स्त्री (स) धमनि (स्त्री), रक्त वाहिनी नाडी।
धमाका, स पु (अनु) भुशुण्ड्यादिशब्द, महाशब्द, धमिति ध्वनि (पु) २ पतन कृतन, शब्द।
धमाचौकड़ी, स स्त्री (अनु धम+हि चौकड़ी) कलकल, कोलाहल, तुमुल-रव, डमर, प्रक्षोभ, विप्लव।
धमाधम, क्रि वि (अनु धम) सधमधम शब्दम्‌।
स स्त्री, धमधमध्वनि (पुं) २ आघात प्रतिघातौ, उपद्रव, उत्पात।
धर, वि (स) धारक धारिन्‌, धर्तृ, ग्रहीतृ। (प्राय समासान्त मे, उ चक्रधर इ)।
धरणि धर्णी, स स्त्री (स) धरा, भूमि (स्त्री) दे 'पृथिवी'।
—**धर**, स पु (स) पर्वत २ कच्छप ३ शेषनाग ४ विष्णु (पु) ५ शिव।
—**सुता**, स स्त्री (सं) सीता, जानकी।
धरती, स स्त्री (सं धरित्री) दे 'धरणि'।
धरना, क्रि स (स धरणं) आ नि धा (जु उ अ), स्था (प्रे), न्यस्‌ (दि प अ), निक्षिप्‌ (तु प अ), आ-रुह्‌ (प्रे आरोपयति), धृ (चु) २ ग्रह्‌ (क्र प स) (हस्तेन) अव-लम्ब्‌ (भ्वा आ स) धृ ३ परि-धा (जु उ अ), वस्‌ (अ आ स)। स पु, धरणं, आ नि, धानं स्थगन २ ग्रहण ३ परिधान ४ साग्रह उपवेश स्थान वा।

—देना, मु, (उद्देश्यसिद्धये) साग्रह स्था (भ्वा प अ)।
धरवाना, क्रि प्रे, व 'धरना' के प्रे रूप।
धरहरा, स पु (हि धुर+घर) ससोपान गृहशिखर २ अत सोपान स्तम्भ ।
धरा, स स्त्री (स) भू भूमि (स्त्री)।
—**तल**, स पु (स न) भूतल, पृथिवीतल २ भूमि (स्त्री)।
—**धर**, स पु (स) दे 'धरणीधर'।
धराऊ, वि (हि धरना) महार्घ, बहुमूल्य २ विशिष्ट, उत्कृष्ट ।
धरात्मज, स पु (स) मंगलग्रह २ नरकासुर ।
धराधिप, स पु (स) धरा, अधिपति अधीश, नृप ।
धरामर, स पु (स) विप्र, ब्राह्मण, भूसुर ।
धरित्री, स स्त्री (स) पृथिवी, दे ।
धरोहर, स स्त्री (हि धरना) निक्षेप, न्यास, दे 'अमानत'।
धर्ता, स पु (स धर्तृ) धारक, धारयितृ २ ग्राहक ।
धर्म, स पु (स) अभ्युदयनि श्रेयससाधनो गुणकर्मसमूह (अहिंसा, सत्य, अग्निहोत्रादि) २ ईश्वर,निष्ठा-सेवा भक्ति (स्त्री), आस्तिक्य बुद्धि (स्त्री) ३ पुण्य, परोपकार ४ सदाचार, साधुता, सुकृत, सत्कर्मन् (न) ५ नय, न्याय, नीति (स्त्री), न्याय्यता, ऋजुता ६ पक्षपातराहित्य, समदर्शित्व ७ श्रद्धा, भक्ति, निष्ठा ८ मत, सम्प्रदाय, पथिन् (पु) ९ शास्त्रविहित,-कर्तव्य-कृत्य १० आचार, व्यवहार ११ रीति-रूढि (स्त्री) १२ प्रकृति (स्त्री), स्वभाव, नित्यगुण १३ विधि (पु), व्यवस्था, राजाज्ञा, कार्याकार्य नियम ।
—**अध्यक्ष**, स पु (स) प्राड्विवाक, अक्ष दर्शक, धर्माधिकरणिन्, न्यायाधीश, धर्माधिकारिन् ।
—**अनुसार**, क्रि वि (स र) यथाधर्मं, धर्मोक्त्तया, धर्मपूर्वकम् ।
—**अर्थ**, क्रि वि, (स अर्थ) धर्माय, पुण्याय ।
—**अवतार**, स पु (स) धर्ममूर्त (पु), अतिधर्मात्मन् (पु), धर्मिष्ठ, पुण्यात्मन् (पु)।
—**आत्मा**, वि (स त्मन्) धार्मिक, धर्मशील, धर्मवत्, पुण्यात्मन्, धर्म पर परायण ।
—**उपदेश**, स पु (स) धर्म, शिक्षा अनुशासनम् ।
—**उपदेशक**, स पु (स) धर्म,-शिक्षक -अनुशासक ।
—**कर्म**, स पु [स र्मन् (न)] सत्कर्मन् कृत्यम् ।
—**क्षेत्र**, स पु (स न) कुरुक्षेत्र २ भारतवर्षम् ।
—**ध्वजी**, स पु (स जिन्) धर्मध्वज, पाखंड, लिंग-बक वृत्ति (पु, स्त्री), बक-वैडाल,-व्रत, आय-रूप-लिंगिन्, छद्मधार्मिक, मिथ्याचार ।
—**करना**, क्रि स, धर्मं चर (भ्वा प से), पुण्यं कृ ।
—**निष्ठ**, वि (स) धार्मिक, धर्म, पर-परायण ।
—**पत्नी**, स स्त्री (स) यथाशास्त्र विवाहिता नारी २ भार्या, नारी, दारा (पु बहु), कलत्रम् ।
—**पुत्र**, स पु (स) युधिष्ठिर २ धर्मत कृत पुत्र ३ नरनारायणमुनी (द्वि)।
—**भ्रष्ट करना**, क्रि स, धर्म भ्रश् नश् (प्र)-हन् (अ प अ) २ सतीत्वं हृ (भ्वा प अ)।
—**राज**, स पु (स) धर्मात्मा नृप, २ युधिष्ठिर ३ यम ४ जिन ।
—**शाला**, स स्त्री (स) *यात्रिगृह, *तीर्थसेविनिवास ३ गुरुद्वार, शिष्यसम्प्रदाय देवालय ।
—**शास्त्र**, स पु (स न) धर्मसंहिता, स्मृति (स्त्री)।
—**शील**, वि (स) धार्मिक, धर्मात्मन् ।
—**सभा**, स स्त्री (स) व्यवहारमण्डप, न्यायसभा ।
धर्मिष्ठ, वि (स) दे 'धर्मात्मा'।
धर्मी, वि (स र्मिन्) पुण्यात्मन् २ मतानुयायिन् ।
धव, स पु (स) पति, भर्तृ २ पुरुष, नर ३ विशालवृक्ष ।
धवल, वि (स) श्वेत, शुक्ल २ भासुर ३ सुन्दर ।
धवला, स स्त्री (स) १-२ श्वेत शुक्ल गौर,-नारी-गौ (स्त्री)। वि स्त्री (स)

शुक्ला, गौरी, सिता। वि पु (हिं) श्वेत, गौर, शुक्ल। स पुं, गौर श्वेत,वृष-वृषभ।

धसकना,
धसना, } क्रि अ, दे 'धँसना'।

धस्सर, सं स्त्री, दे 'स्वारलग्निा'।

धाँधल, स स्त्री (देश धांधना) क्षोभ, विप्लव, उपद्रव २ कपट, माया ३ त्वरा, सम्भ्रम।

धाँधली, वि (हिं धाँधल) उपद्रविन्, उत्पातिन्, कुचेष्टाप्रिय २ मायिन्, कपटिन्। स स्त्री, दे 'धाँधल'।

धाँय धाँय, स स्त्री (अनु) शतघ्नी, शब्द-ध्वनि (पु) २ प्रज्वलनध्वनि।

धाक, स स्त्री (सं धक्क>) प्रभाव, आतंक, प्रताप, शासन २ ख्याति प्रसिद्धि (स्त्री)।

—बँधना, मु, आतंक प्रताप प्रसृ (भ्वा प अ) २ प्रख्यात (वि) भू।

धागा, स पु (हिं तागा) सूत्र, गुण, तन्तु (पु)।

धाड़, स स्त्री (स धाटी>) लुंठनम्, लुठि (स्त्री), लुठनाक्रमणम् २ विलाप, क्रन्दनं, रोदनम् ३ दल, गण।

—मारना, मु, उच्चैः रुद् (अ प से), आक्रन्द, (भ्वा प से)।

धाड़स, सं पु, दे 'ढाढस'।

धात, सं स्त्री, दे 'धातु'।

धाता, स पु (सं धातृ) ब्रह्मन्, चतुर्मुख, स्रष्टृ (पु), २ विष्णु (पु) ३ शिव। वि, पालक २ रक्षक ३ धारक।

धातु, स स्त्री (सं पु) अश्मविकार (गैरिकादि) २ खनिजभेद (सुवर्णादि) ३ शरीरधारक पदार्था (रसरक्तमांसादि) ४ शुक्र, वीर्यम्। सं पु (स) भूत, तत्त्वं (पृथिव्यादि) २ शब्दमूल (भू, कृ, आदि) ३ आत्मन् ४ परमात्मन् (पुं)।

धात्री, सं स्त्री (सं) अङ्कपाली, निका, उपमातृ मातृका, धात्रेयी, प्रतिपालिका २ जननी ३ पृथिवी।

—विद्या, स स्त्री (स) शिशुपालनविद्या २ सूतिकर्मन् (न) गर्भमोचनविद्या।

धान, स पुं (सं धान्य) व्रीहि शालि स्तम्बकरि (पुं) २ (पौदा) कलम, नीवार।

धाना, स स्त्री [स धाना (स्त्री बहु)] भृष्टयवा २ भृष्टतण्डुला, लाजा (पु बहु) ३ दे 'धनिया'।

धानी', वि (हिं धान) ईषद्धरितवर्ण।

धानी, स स्त्री (स धाना>) भृष्ट-यवा-गोधूमा-तडुला २ व्रीहिभेद।

धान्य, स पु (स न) अन्न, अद्य, भोग्य, भोगार्ह, जीवसाधन २ व्रीहि शालि स्तम्बकरि (पु) ३ चतुरति परिमाणं ४ धन्याक, वितुन्नकम्।

—उत्तम, स पु (स) तडुल।

—राज, स पु (स) यव।

धाभाई, स पु (हिं धाय+भाई) धात्रेय, धात्रीपुत्र।

धाम, स पु [स धामन् (न)] गृह, सद्म, अ(आ)गार २ शरीर ३ स्थानं ४ पुण्य देश, तीर्थम्।

धाय-यी, स स्त्री (सं धात्री, दे)।

धार', सं पु (स) वेगवान् वर्ष, धारा, आसार सपात २ ऋणं ३ प्रदेश।

धार, स स्त्री, (स धारा) प्रवाह, ओघ, सदाय, स्रोतस् (न), प्रस्राव, रय, वेला, वेग २ उत्स, निर्झर ३ अस्रि, कोटि, पाली लि, अणी णि (सब स्त्री), अग्रम्। ४ दिशा श (स्त्री) ५ रेखा पं।

—दार, वि (हिं +फा) तीक्ष्ण, निशित, शितधार।

—मारना, मु, मूत्र् (चु), मिह् (भ्वा प अ)।

धारक, सं पु (सं) धारयितृ, धर्तृ २ ऋणिन्, अधमर्ण।

धारण, सं पु (सं, न) धरणं, ग्रह-ग्रहणं, अवलंब-बन, करेण ग्रहणं धरण २ परिधान वसनं ३ स्वीकार, करण ४ पालनं, पोषणं, भरणम्।

—करना, क्रि स, दे 'धारना'।

धारणक, स पुं (सं) ऋणिन्, अधमर्ण।

धारणा, सं स्त्री (स) स्मृति स्मरणशक्ति (स्त्री) २ धारणाशक्ति, मेधा, धारणावती धी (स्त्री), ग्रहणसामर्थ्यं ३ धारणं, ग्रहणं ४ निश्चय, निर्णय, दृढभाव ४ बुद्धि (स्त्री) ५ मर्यादा, स्थिति (स्त्री) ६ योगांगविशेष, ध्येये चित्तस्य स्थिरबंधनं ७ मति (स्त्री), मनम्।

धारना, क्रि स (सं धारण) धृ (भ्वा उ अ, चु), ग्रह (क्र प से), आदा (जु आ अ), अवलंब (भ्वा आ से) २ परिधा (जु उ अ) वम् (अ आ से) धृ (चु) ४ अव-उद्-उप-स-स्तंभ (क्र प से) अवलंब-आलबना।

धारा, सं स्त्री (स) दे 'धार' सं स्त्री (१-५)। ६ परिच्छेद, विभाग, अधिकरणम्।

—यत्र, स प (स न) दे 'फुहारा'।

धारी स स्त्री (स धारा) रेखा, लेखा रेखा।

—दार, वि (हिं + फा) रे(ले)खांकित, सरेख।

—धारी[२], वि (रिन्)-धर, धारक (उदटधर इ) [-धरिणी (स्त्री)]।

धार्मिक, वि (स) दे 'धर्मात्मा'।

धावन, स पु (स न) धोरण, द्रुतगमन २ शोधन, मार्जन ३ शोधनसाधनम्।

धावा, सं पु (सं धावन) आक्रमण, अभिद्रव, अवस्कंद, आपात, उपप्लव।

—करना या मारना या बोलना, क्रि स आक्रम् (भ्वा दि प से), अभिद्रु (भ्वा प अ) अवस्कंद् (भ्वा प अ)।

धाह, स स्त्री (अनु) दे 'डाट'।

धिक्, अव्य (स धिक्) (प्राय द्वितीया परन्तु कभी षष्ठी के साथ) निंदा २ खिन्नमनस्ता।

धिक्कार, स पु (स) न्यक्कार, निंदा, धिक्कार, तिरस्कार, भर्त्सना, गर्हा, निंदा, परि(री)वाद, अधिक्षेप।

धिक्कारना, क्रि स (सं धिक्करण) तिरस्कृ, धिक् कृ, अप परि-वद् (भ्वा प से) (तीन) निंद् (भ्वा प से), अधि आ क्षिप (तु प अ)।

धिग्दंड, स पु (स) दे 'धिक्कार'।

धिषणा, सं स्त्री (सं) बुद्धि, धी (दोनों स्त्री), प्रज्ञा २ स्तुति-नुति (स्त्री) ३ वाणी ४ पृथिवी ५ दे 'प्याली'।

धींगा, स पु (स डिंगर) दुष्ट खल शठ, पाप।

धींगी, स स्त्री, शठता, शाठ्य, दौष्ट्य, उपद्रव ३ बलात्कार, अन्याय।

—मुश्ती, स स्त्री, कुचेष्टा, उपद्रव, खलता २, बाहूबाहवि-मुष्टीमुष्टि (अव्य)

धी[१], सं स्त्री (स दुहितृ) पुत्री।

धी, स स्त्री (सं) बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा।

धीमा, वि (स मध्यम) मंथर, मंद,-गति गामिन्, २ लघु, तीव्रता-उग्रता-चण्डता, शून्य।

—पड़ना, क्रि अ, न्यूनी भू, ह्रस (भ्वा प से), क्षि (कर्म), उप प्र शम् (दि प से)।

धीमान्, वि (स-मत्) बुद्धिमत्, प्राज्ञ [धीमती (स्त्री)=बुद्धिमती]।

धीमे धीमे, क्रि वि, मंद मंद, शनैः शनैः २ अचट, अतीव्र ३ मृदु, यथासुखम्।

धीर, वि (स) धृतिमत्, शांत, धैर्यान्वित, महत्-क्षमा, शील, सहिष्णु, क्षमिन् २ नम्र, विनीत ३ ग(ग)भीर चापल्यशून्य।

धीरज, स पु (स धैर्य) } दे 'धैर्य'।
धीरता, स पु (स) }

धीवर, स पु (स) कैवर्त, जालिक, मत्स्य आजीव -उपजीविन, मात्स्यिक, दाश -स, [धीवरी (स्त्री)=कैवर्ती]।

धुंध, सं स्त्री (स धूमांध>) धूमदृष्टि (स्त्री) २ कुज्झटिका, धूमिका, कुहेलिका।

धुधका, स पु (हिं धुंध) धूम-अग्निवाह, छिद्रं-विवरम्।

धुंधला, वि (हिं धुंध) अस्पष्ट, अव्यक्त, मंद, द्युति प्रभ, दुरालोक २ धूम्र, ईषत्कृष्ण, धूमवर्ण।

—पन, स पु, अस्पष्टता, दुरालोकता, अव्यक्तता, मंदप्रभता।

धुआँ, सं पु (स धूम) अग्नि-मरुद्,-वाह, रसनमाल, शिखिध्वज, तरी।

—कश, स पु (हिं + फा) अग्निपोत।

—धार, वि धूममय, सधूम २ धूम्र, धूम्रवर्ण ३ घोर, प्रचंड। क्रि वि, सवेग, अत्यधिक, प्रबलम्।

धुआँसा, स पु (हिं धुआँ) कज्जल, मसी मषि (स्त्री)।

धुकधुकी, स स्त्री (अनु धुकधुक) हृदय, हृद (न), अग्रमांस २ हृत्-कप-स्पंद २ त्रास, भय ४ उरोभूषणभेद।

धुन, स स्त्री (हिं धुनना) अभिनिवेश, दृढाग्रह, आसक्ति-अनिवार्यप्रवृत्ति (स्त्री)

उत्कंठा लालसा २ चिंता, विचार ३ कामचार, लहरी।

धुन, स स्त्री [स ध्वनि (पु)] स्वर, गानप्रकार २ रागभेद ।

धुनकना, क्रि स, दे 'धुनना'।

धुनकी, स स्त्री [धनुस (न) >] पिंजनी, विहनन तूलस्फोटनकार्मुक, धुनहरी।

धुनना, क्रि स (हिं धुनकी) (पिंजनेन) तूल शुध (प्रे) धु (स्वा उ अ) २ भृश तद (चु) ३ असकृत् कथ् (चु) ४ सततकृ।

धुनि¹, स स्त्री (स) नदी, धुनी।

धुनि², स स्त्री [स ध्वनि (पु)] शब्द, रव ।

धुनिया, स पु (हिं धुनना>) पिंजाशोधक, *पिंजक, *तूलधावक ।

धुरंधर, वि (स) धूर्वह, धुर्य २ भारवाह ३ श्रेष्ठ, प्रधान, प्रकांड, मुख्य।

धुर, स पु [स धुर (स्त्री)] अक्ष, ध्रुव २ भार ३ आरंभ ४ युगन्धर (जूआ)। अव्य, सम्पूर्णतया, अशेषतया, साकल्येन।

धुरपद, स पु (स ध्रुवपद) गीतभेद ।

धुरा, स पु [स धुर (स्त्री)] अक्ष, ध्रुव ।

धुरी, स स्त्री (हिं धुरा) अक्षक, ध्रुवक ।

धुलवाना, क्रि प्रे, व 'धोना' के प्रे रूप।

धुलाई, स स्त्री (हिं धुलाना) धावन, प्रक्षालन २ धावन,प्रक्षालन, भृति (स्त्री)

धुवाँ, स पु, दे 'धुआँ'।

धुवाँरा, स पु (हिं धुवाँ) पटलच्छिद्रम्, धूमच्छिद्रम्।

धुस्स, स पु (स ध्वस >) मृत्तिकाचय, मृद्राशि (पु), क्षुद्रपर्वत, २ वप्र, चय ।

धुस्सा, स पु (स द्विशाट >) प्रावेण्णि (स्त्री)।

धूआँ, स पु, दे 'धुआँ'।

धूत¹, वि (स धूर्त) वञ्चक कपटिन्, छलिन् पापच्छिन्।

धूत², वि (स) चालित, कंपित २ त्यक्त, उत्सृष्ट, भर्त्सित, तिरस्कृत।

धूता, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या।

धूनी, स स्त्री (स धूम>) धूप, सुगंधिधूम २ भिक्षुकानल, तपोवह्नि (पु)।

—देना, मु, धूप (चु), धूपम् (प्रे प्रापयति)।

—रमाना या लगाना, मु, परिव्रज (भ्वा प से), भिक्षुको भू २ तप तप (दि आ अ), तपस्यति (ना धा) ३ तपोवह्निं ज्वल् (प्रे)।

धूप¹, स स्त्री (सं धूप्-चमकना>) आतप, सूर्य, आलोक प्रकाश ।

—छाँह, स स्त्री, *धूपच्छाया, द्विवर्णो वस्त्रभेद ।

—दिखाना, मु, आतपं प्रसृ (प्रे)।

—सेकना, मु, आतपं सेव् (भ्वा आ से)।

धूप², स पु स्त्री (स पु) पावन, यावन, तुरुष्क पिंडक, सिह्न, तृण, मेरुक, २ गंधविशाखिका, धूप, धूपधूम ३ धूपवर्ति (स्त्री)।

—दान, स पु, }
—दानी, स स्त्री, } धूपधान-नी, धूपपात्रम्।

धूम¹, स पु (स) मतमाल, शिखिध्वज, दे 'धुआँ' २ वा(ब)ष्प भस्म।

—केतु, स पु (स) उल्का, खोल्का २ अग्नि (पु)।

—पान, स पु (स न) तमाखुधूमपानम्।

—पोत, स पु (स) अग्निवाष्प पोत ।

धूम², स स्त्री (सं धूम >) ख्याति प्रसिद्धि (स्त्री) २ कोलाहल, कलकल ३ समारोह आडंबर, शोभा ४ उपद्रव, क्षोभ, विप्लव ।

—धाम, स स्त्री, आडंबर, शोभा, श्री (स्त्री) बृहदायोजन, वैभवम्।

धूमर, धूमला, धूमिल, वि (स धूमल) धूम्र, धूम्रवर्ण, कृष्णलोहित।

धूर रि, सं स्त्री, दे 'धूल'।

धूर्त, वि (स) वञ्चक, मायिन, कपटिन, कापटिक, विप्रलंभक वञ्चनशील, प्रतारक। स पु, धूर्तूर (पु) अस्थिरेत्रिन् शिव २ वंचक, प्रतारक इ ।

धूर्तता, स स्त्री (स) वञ्चकता, माया, प्रतारणा, कपट, कैतवम्।

धूल, स स्त्री [स धूलि (पुं स्त्री)] धूली, रजस (न), पांसु शु (पु), रेणु, शिनिवण, महीद्रव, वातनभ, -केतु (पु), चूर्ण, क्षोद २ तुच्छवस्तु (न)।

—आड़ना, क्रि स , धूलिं-लीं धु (स्वा उ अ)।
—उड़ना, मु , (स्थान की) ध्वस् (भ्वा आ से) धूलीमत् भू । (मनुष्य को) निर अधिक्षिप् दृष् (कर्म)।
—उड़ाना, मु , दुष (प्रे दूषयति) अधिक्षिप् (तु प य) २ उपहस (भ्वा प से)।
—चाटना, मु , पादयो पतित्व। याच (भ्वा आ से) अभ्यर्थ (चु आ से)।
—छानना, मु मोघ श्रम (भ्वा प से)।
—में मिलना, मु , धूलीमात् भू नश (दि प वे)।
—समझना, मु तृण तृणाय मन (दि आ अ) अवगण (चु)।
धूलि, स स्त्री (स पु स्त्री) दे धूल'।
धूसर, वि (स) आ इपद, पाडु, पासु धूलि वर्ण २ पासु (शु) ल, धूलिधूसर, रेणु दूषित रूक्ष।
धूसरित, वि (स) दे 'धूसर'।
धूहा, स पु (हिं हूह) सगविभीषिका।
धृत, वि (स) धारित, अवलम्बित, २ आदत्त, गृहीत ३ स्थिरीकृत, निश्चित।
धृतराष्ट्र, स पु (स) दुर्योधनजनक, नृप विशेष।
धृति, स स्त्री (स) दे 'धैर्य'।
धृष्ट, वि (स) निर्लज्ज वियात, प्रगल्भ, दे 'ढीठ'।
धृष्टता, स स्त्री (स) प्रागल्भ्य, वैयात्य, दे ढिठाई'।
धेनु, स स्त्री (स) नवसू(प्रसू)तिका (गौ) २ गौ (स्त्री), दे।
धेला, स पु दे 'अधेला'।
धेली, स स्त्री , दे 'अधेली'।
धैर्य, स पु (स न) धीरत्व, धीरता, धृति (स्त्री), मन स्थैर्य, सत्त्व, द्रढिमन् (पु), दृढता, क्षोभराहित्यम्।
धैवत, स पु (स) षष्ठ स्वर (सगीत०)।
धोखा-का, स पु (सं धूक>) छल, कपट, धूकता, प्रतारणा, वञ्चना, २ मोह , भ्रम, भ्रांति (स्त्री) अयथार्थ मिथ्या प्रतीति (स्त्री) ३ माया, इन्द्रजाल, विवर्त ४ अज्ञान, अबोध ५ सशय, सदेह ६ प्रमाद, त्रुटि (स्त्री)।
—खाना, स , वञ्च् विप्रलभ्-अभिसधा प्रतार् (स)।
—देना, मु , प्रतृ (प्रे) वञ्च्-छल् (चु), अति-अभि सधा (जु उ अ), मुह् (प्रे)।
—धोखे की टट्टी, मु मोहजनक मायामय, वस्तु (न)।
धोखेबाज, वि , (हि +फा) कापटिक, छाद्मिक, मायाविन्।
धोखेबाजी, स स्त्री (हिं धोखेबाज) कापटिकता, कपट, छाद्मिकता।
धोती, स स्त्री । (स धौत>) शाटिका, धौतवस्त्र *धौता।
—ढीली होना, मु भयात् पलाय् (भ्वा आ से)।
धोना, क्रि स (स धावन) धाव् (भ्वा प से) प्र क्षल् (चु) निर निज (जु उ अ), प्रमृज् (अ प वे) २ दूरी कृ, अपसृ (प्रे)।
स पु धावनं, प्र क्षालन, निर्णेक, मार्जनम्।
धोने योग्य, वि , धावनीय, प्र क्षालयितव्य, निर्णेक्तव्य।
धोनेवाला, स पु , धावक, प्र क्षालक, क्षारक।
धोबिन, स स्त्री (हिं धोबी) रजकी-का २ रजकपत्नी, धावकभार्या।
धोबी, स प (हिं धोना) धावक, रजक, निर्णेजक, क्षारक, रजोहर।
—घाट, स पु धावकघट्ट।
—का कुत्ता, मु अकिंचित्कर, गुण सार हीन (जन)।
—का टला, मु , परपदार्थ, परवस्तु, दृप्त गर्वित।
धोया हुआ, वि धौत, धावित, मार्जित, प्रक्षालित निर्णिक्त ट।
धोवन, स स्त्री (हि धोना) धावन, प्र क्षालन २ धावनावशिष्ट जलम्।
धौंकना, क्रि स (स ध्मा>) भस्त्रया ध्मा (भ्वा प अ , धमति), दृत्या वह्नि प्रज्वल(प्रे)।
धौंकनी, स स्त्री (हिं धौंकना) भस्त्रा, भस्त्रा, भस्त्रिका, दृति (स्त्री) चर्म, प्रसेविका प्रसेवक।
धौंस, स स्त्री (स ध्वस>) तर्जना, विभीषिका, भयदर्शन २ प्रभुत्व, अधिकार ३ छल, कपटम्।
—पट्टी, स स्त्री मिथ्याऽऽशा, मिथ्या सात्वना।

धौंसा, म पु (अनु) दे 'डंका'।
धौंसिया[1], म पु (हि धौंसा) डिंडिम-ढक्का, वादक ताडक ।
धौंसिया[2], म पु (हिं धाम) भयदर्शक, विभीषक २ वञ्चक , कपटिन् ।
धौत, वि (स) दे 'धोया हुआ' २ स्वच्छ ३ स्नात ।
धौति ती, म स्त्री (म) यौगिकक्रियाभेद ।
धौरा-ला, वि (म धवल) श्वेत, शुक्ल सित । म पु धवल वृषभवर ।
धौरेय, वि (म) भार वाहक-वाहिन् । म पु (म) शकटवाहकवृष २ अश्व ३ मुख्य, नायक ।
धौल, म स्त्री (अनु) चपेट टिका, करतल घात २ क्षति हानि (स्त्री)।
—धप्पा, म पु , मुष्टीमुष्टि बाहूबाहवि (न)।
ध्यान, स पु (स न) ऐकाग्र्य, समाधि (पु) अन्तर्ध्यान, चित्तस्थैर्य २ स्मृति (स्त्री), धारणा ३ धी बुद्धि (स्त्री) ४ अवधान, मनोयोग ५ चित्त, मनस (न) ६ चिंता, मतर्क ७ भावना, मति (स्त्री) ८ मानस प्रत्यक्षम् ।
—आना, मु , स्मृ (भ्वा प अ), अनुचित (चु)।
—दिलाना, मु , अनु-स्मृ (प्रे)।
—देना, मु , अवधा (जु उ अ) मन युज (चु)।
—बटाना, मु , चित्त ध्यान अपकृष (भ्वा प अ)।
—म न लाना, मु , अवगण अवधीर (चु)।
—में मग्न होना या डूबना, मु , विचार ध्यान, मग्न (वि) स्था (भ्वा प अ)।
—रखना, मु , न विस्मृ (भ्वा प अ) मनसि कृ।
—लगाना, मु नि ध्यै (भ्वा प अ), समाधा (जु उ अ), विचिंत (चु)।
—से उतरना, मु विस्मृ (कर्म)।
ध्यानस्थ, वि (स) ध्यान चिंतन विचार, मग्न लीन ।
ध्यानी, वि (स निन्) ध्यान चिंतन, शील परायण पर, विचारवत् ।
ध्येय, वि (स) ध्यातव्य चिंतनीय। म पु (म न) लक्ष्य, लक्ष, उद्देश्य इयम् ।
ध्रुपद, स पु , दे 'धुरपद'।
ध्रुव, वि (स) अचल, अविचल, निश्चल, स्थिर २ नित्य, निर्विकार, अव्यय ३ निश्चित, नियत, असंदिग्ध। स पु (स) ध्रुवतारा, नक्षत्रनेमि (पु), उत्तानपादज , ज्योतीरथ ।
ध्वंस, म पु (स) प्रवि, ध्वंस , वि, नाश , अवसाद उच्छेद , क्षय , निपात , संहार ।
ध्वजा, म स्त्री (म ध्वज) पताका, वैजयती, केतु (पु) केतनम् ।
ध्वजी, स पु (म जिन्) पताकिन्, ध्वज, वाहक धारिन् ।
ध्वनि, स स्त्री (म पु) नि,नाद , शब्द , र(रा)व , स्वर , घोष , ध्वान , निस्(स्वा) न , निह्राद २ शब्दस्फोट ३ व्यंग्यार्थ प्रधान काव्य ४ गूढाश , गुप्ताशय ।
ध्वनित, वि (म) स्वनित क्वणित, नदित, शब्दित, रसित २ भंग्या सूचित, द्योतित, उपलक्षित, व्यञ्जित, विवक्षित ३ वादित ।
ध्वस्त, वि (म) प्रवि, ध्वस्त, वि,-नष्ट, अव सन्न, उच्छिन्न, क्षीण, निपातित, खण्डित, भग्न २ पराजित ।
ध्वांक्ष, म पु (म) काक ।
ध्वान, म पु (म) शब्द , दे 'ध्वनि'।

न

न देवनागरीवर्णमालाया विंशो व्यञ्जनवर्ण, नकार ।
नंग, स पु (हि नंगा), नग्नता-त्व दिगम्ब रता-त्व २ गुह्याङ्ग, गुह्यम् ।
—धडंग, वि } दे नंगा' (१)।
—मुनंगा, वि } दे नंगा' (१)।
नंगा, वि (सं नग्न) अ निर् वि,-वस्त्र-अम्बर वासस , दिग् , अम्बर-वासस २ अनावृत, अ ,वरण आच्छादन, रहित ३ निस्त्र, नि ।
—करना, क्रि स , नग्नी विवस्त्र विवस्त्री कृ।
—बुचा या बूचा, वि , दरिद्र, अकिंचन ।
—मादरज़ाद, वि (फ़ा) दिगंबर, दिग्वसन।
—लुचा, वि , दुष्ट, खल, दुर्जन ।
नंगे पाँव, वि , नग्नपाद, पादहीन।

नगे सिर, वि , नग्नशिरस्क निरुष्णीष ।
नंदी, स पु (स) आनन्द , मोद २ पुत्र ३ श्रीकृष्णस्य धर्मतात प्रतिपालक ४ मगधे श्वरविशेष ।
—किशोर, कुमार, नन्दन, स पु (स) श्री कृष्ण वासुदेव ।
नद , स स्त्री दे ननद' ।
नदक, वि (स) हर्ष प्रद जनक आनन्द दायक । स पु श्रीकृष्णस्य ।
नदन, स पु (स न) 'इन्द्रवनम्' । स पु पुत्र २ मेघ । वि हर्षक मोदक ।
—वन स पु (स न) शक्रोद्यानम् ।
नदना, स स्त्री (स) पुत्री तनया ।
नदनी, स स्त्री दे नन्दिनी' ।
नदि, स पु (स) आनन्द हर्ष २ शिव दौवारिक वृषभ , नन्दिकेश्वर ।
नदिकेश्वर, स पु (स) नदिकेश , शिव वृष २ शिव ३ उपपुराणविशेष ।
नदिनी, स स्त्री (स) पुत्री दुहितृ (स्त्री), तनया २ ननान्दृ-ननन्दृ (स्त्री) ३ पत्नी, भार्या ४ दुर्गा ।
नदी, स पु (स नन्दिन्) शिवगणभेद २ शिवद्वारपाल वृषभ ।
—ईश्वर, स पु (स) शिव ।
नदोई, नदोसी, स पु (हिं नन्द) ननान्दृ पति , कौतूल ।
नवर, स पु (अ) सख्या, गणना, अक २ चिह्न , लान्छन ३ पर्याय , परिवृत्ति (स्त्री), वार ।
—दार, स पु (अ + फा) भूकरोद्ग्राहक ।
—वार, क्रि वि (अ + फा) यथाक्रम, क्रमश एवैकश (सब अव्य) पर्यायेण क्रमेण (तृ) ।
नबरिंग मशीन, स स्त्री (अ) अकनयन्त्रम् ।
नबरी, वि (अ नबर) अकित, अकयुत, मार्क २ विख्यात, विश्रुत ।
—सेर, स पु , आग्ल-मेयसेर ।
न, अव्य (स) न, नहि, नो २ (सन) मा, मा स्म अ (तृतीया अथवा क्त्वा (या ल्यप) के योग में) ।
—न, मा मैव, मा तावत् ।
न न, न च नवा, न न वा न च न च, न न (उ न रामो गतो न वा कृष्ण) ।
नक, स स्त्री , (स नक्रा) नासा, नासिका ।
—कटा, वि छिन्न-नासा-न सिक २ विरूप, विग्र अविगत,-नासिक ३ निर्लज्ज, अपत्रप ।
—कटी, स स्त्री , नासाछेद २ अवमानना, मानहानि (स्त्री) ।
—घिसनी, स स्त्री भूमौ नासिकाघर्षण २ दैन्य विदाय ।
—चढा, वि दुष्प्रकृति क्रुद्ध शील ।
—छिकनी, स स्त्री छिक्कनी, छिक्किका, उग्रा, तिक्ता ।
—फूल, स पु लवग प्रमाण भूषाभेद ।
—बेसर, स पु नाथक ।
नकद, स पु (अ) टक-क नाणक, मुद्रा, मुद्राधनम् । वि , प्रस्तुत (धनादि) ।
नकदी, स स्त्री दे नकद' स पु ।
नकपुडी, स स्त्री , दे 'नथना' ।
नकब स स्त्री (अ) दे सेंध' ।
नकल, स स्त्री (अ) अनु प्रति-लिपि (स्त्री)- लेख २ अनुकृति अनुवृत्ति (स्त्री) ३ अनु, करण-सरण ३ सोपहास अनुसरण विडवनम् ।
—करना, क्रि स , अनु प्रति, लिपि कृ या लिख (तु प मे) २ अनुकृ ३ विडब (चु) ।
—नवीस, स पु (अ + फा) अनु प्रति,-लेखक , प्रतिलिपिकृ(का)र ।
नकली, वि (अ) कृतक, कृत्रिम २ कापटिक, छाद्मिक, कपट , कूट , छद्म ।
नकसीर, स स्त्री (हिं नाक + स क्षीर-जल) नासारक्तस्राव ।
—फूटना, क्रि अ , नासाया रक्तस्रु (भ्वा प अ) ।
नकाब, स स्त्री पु (अ) वणक , वर्णिका २ अवगुठन, आवरक-कम् ।
—पोश, वि वर्णिकाच्छादित , अवगुठनवत् ।
नकार, स पु (स) निषेधकवाक्य २ प्रत्याख्यान, निप्रतिषेध ३ 'न' इत्यक्षरम् ।
नकारना, क्रि अ (स नकार >) प्रतिनि, षिध (भ्वा प वे) ।
नकीब, स पु (अ०) चारण , वन्दिन् ।
नकुल, स पु (स) सर्पारि , बभ्रु २ पाडुराजस्य चतुर्थपुत्र ३ पुत्र ।
नकेल, स स्त्री (हिं नाक) नासिकारज्जु (स्त्री) ।

नक्कारख़ाना, स पु (फा) डिंडिमालय, दुंदुभिगृहम्।
—नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़, मु, अरण्यरुदितम्।
नक्कारची, स पु (फा) दुंदुभिवादक, पटह वादक।
नक्कारा, स पु (फा) आनक डिंडिम, दुंदभि (पु), पटह, भेरी।
नक्काल, स पु (अ) अनुकारिन्, विम्बकार, विदूषक २ भट, विदूषक, वैहासिक ३ नट, कुशीलव, रंगाजीव।
नक्काश, स पु (अ) उत्कारक।
नक्काशी, स स्त्री (अ) उत्किरणम्।
नक्की, स स्त्री (स नक्का) अक्षे क्रीडायां वा एकबिन्दुचिह्नम्।
—दुआ, स पु, अक्षक्रीडाभेद।
—मूठ, स स्त्री, द्यूतभेद।
नक्कू, वि (हि नाक) कुख्यातिमत, कुप्रसिद्ध, दुर्नामन्।
नक्तंचर, स पु (स) राक्षस, निशाचर २ उलूक, घूक ३ चौर, स्तेन।
नक्तंदिन, अव्य (स नक्तंदिनम्) नक्तंदिव, अहोरात्र, अहर्निशम्। दिवारात्रम् (सब अव्य)
नक्त, स पु (सं न) रात्री नि (स्त्री), निशा।
नक्र, स प (स) दे 'मगरमच्छ'।
नक्श, स पु (अ) आलेख्य, चित्र, प्रतिकृति (स्त्री) २ मुद्रा, अंक, चिह्न ३ लक्षण, आकृति (स्त्री)।
—करना, क्रि स, अङ्क मुद्र चिह्न (च) २ निविश (प्रे) न्यस (दि प से)।
नक्शा, स पु (अ) मानप्रदेश, चित्र, रेखा चित्रं २ आकार प्रतिमानरूप ३ रूप रेखालेख्यम्।
नक्षत्र, स पुं (सं न) तारा, तारका, उडु (पु) २ राशि (पु), राशिनक्षत्र ३ भगण, तारागमूह।
—नाथ,—पति,—राज, स पुं (सं) चंद्र।
नख, स पु (सं पुं न) दे 'नाखून'।
—शिख, सं प (सं न) सर्वाणि अंगानि, सर्वावयवा, गात्राणि (सब बहु) २ सर्वांगवर्णनम्।
—शिख से, मु, आपादशीर्ष, पूर्णतया, साम स्त्येन।
नख़रा, सं पु (फा) विभ्रम, विलास, लीला हव, २ चाप य ३ व्याज, कपटम्।
नख़रेबाज़, वि, (फा) सविभ्रम, लीलामय (स्त्री लीलावती, विलासिनी)।
नख़रेबाज़ी, स स्त्री (फा) ललिताभिनय, लीला।
—करना या बघारना, क्रि स, विलस (भ्वा प से), ललिताभिनय कृ २ कपट छलं व्याज कृ।
नखी, स पु (स नखिन्) सिंह २ चित्रक। वि, सनख, नखवत्।
नग¹, स पु (सं) पर्वत, गिरि (पु) २ वृक्ष ३ 'सप्तन्' इति संख्या ४ सर्प ५ सूर्य। वि, अचल, स्थिर।
—पति, स पु (स) शिव २ हिमालय।
नग², स पु, (फा नगीनह्) दे 'नगीना' २, संख्या।
नगण, स पु (स) त्रिलघुगण, छन्द शास्त्रे गणभेद (उ० नमन, चलन इ०)।
नगण्य, वि (स अगण्य) क्षुद्र, तुच्छ, साधारण, सामान्य।
नगद, स पु, दे 'नकद'।
नगनी, स स्त्री (सं नग्निका) नग्ना, निवस्त्रा, विवस्त्रा २ अपुष्पा, रजोरहिता कन्या ३ निर्लज्जा, स्वैरिणी।
नगमा, स पु (अ) सुमधुर, स्वर स्वन २ गीत, गीतिका ३ राग।
नगर, सं पु (स न) पुर (स्त्री), पुरं, पुरी, नगरी, पत्तन, पट्टनं नी, पट्ट, निगम।
—कीर्तन स पु (स न) यात्रागमगानम्।
—नारी, स स्त्री (स) नगरनायिका, वेश्या।
—वासी, स पु (स सिन्) पौर॰, पौर, जन लोक।
नगरी, स स्त्री (सं) दे 'नगर'।
नगाड़ा,—रा, सं पु दे 'नक्कारा'।
नगीना, स पु (फा) रत्नं, मणि (पं) २ देशीयवस्त्रभेद।
नग्न, वि (स) दे 'नंगा'।
नग्नता, स स्त्री (स) दे 'नंगा'।

नचवाना, नचाना, क्रि प्रे, ब 'नाचना' के प्रे रूप।
नजदीक, वि (फ़ा) सन्निहित, समीप, निकट।
नजदीकी, स स्त्री (फ़ा) सान्निध्य, सामीप्य।
नज़म, स स्त्री (अ नज्म) कविता पद्य, छन्दस (न)।
नजर, स स्त्री (अ) दृश्, दृग्शक्ति, दृष्टि (सब स्त्री) २ दयादृष्टि (स्त्री) परि, अवेक्षण अवेक्षा ३ निरीक्षण ४ दे 'नजराना' ५ कुदृश्, दृष्टि।
—अदाज, वि (अ+फ़ा) अवधीरित, निराकृत, उपेक्षित।
—आना या पड़ना, क्रि अ, दृश् ईक्ष्-अव लोक् (कम)।
—डालना, क्रि स, दृश (भ्वा प अ), ईक्ष् (भ्वा आ से)।
—बद, वि (अ+फ़ा) निरुद्ध।
—बदी, स स्त्री (अ+फ़ा) (निश्चितस्थाने) निरोध।
—बाज, स पु (अ+फ़ा) कटाक्षवीक्षक, भ्रूविलासक, *पापदृष्टि।
—सानी, स स्त्री (अ) पुनरीक्षण, संशोधनम्।
—लगना, मु, कुदृष्ट्या पीड् (कम)।
—से गिरना, मु, अप-अव-मन् (प्रे), कल्क यति (ना धा)।
नज़राना, स पु (अ) उपहार, उपायनम्।
नज़ला, स पु (अ) कफ, श्लेष्मन् (पु) २ आमष्यद, प्रतिश्याय, नासास्राव।
नज़ाकत, स स्त्री (फ़ा) लालित्य, सुकुमारता, कोमलता।
नजात, स स्त्री (अ) मुक्ति (स्त्री), अपवर्ग।
नजारा, स पु (अ) दृश्य, दृग्गोचरस्थान २ दृष्टि (स्त्री) ३ कटाक्ष।
नज़ीर, स स्त्री (अ) उदाहरण, दृष्टान्त।
नजूम, स पु (अ) ज्योतिष, नक्षत्रविद्या।
नजूमी, स पु (अ) ज्योतिषिक, ज्योतिर्विद् (पु)।
नजूल, पु (अ) राज-नृप शासक भूमि (स्त्री)।
नट, स पु (स) शैलूष, जायाजीव, भरत, अभिनेतृ, भरतपुत्रक, रंग-जीव-अवतारक, सर्ववेशिन्, नट, नप्र २ रज्जुनर्तक ३ व्यायामिन् ४ जातिविशेष।
—वर, स पु (स) श्रीकृष्ण।
नटखट, वि (स नट+अनु खट) चपल, चचल, कुचेष्टक २ धूर्त, मायाविन्।
नटखटी, स स्त्री (हिं नटखट) चपलता २ धूर्तता।
नटनी, स स्त्री, दे 'नटी'।
नटी, स स्त्री (स) शैलूषिकी, अभिनेत्री, सर्ववेशिनी २ नर्तकी ३ नटपत्नी ४ वेश्या ५ नटजातिनारी।
नतीजा, स पु (अ) परिणाम, फल २ अर्थ, पाक।
नत्थी, स स्त्री (हिं नाथना) नहन, सग्रथन २ नहनसूत्र ३ लेख्यश्रेणी।
नथ, स स्त्री (स नाथ = नाक की रस्सी) नाथ, नासावलय।
नथना, स पु (स नस्त = नाक)। नासा नासिका-रन्ध्र रंध्र-विवर २ नासापुट पुटम्। क्रि अ, व्यधर्-छिद् (कम) २ सग्रथ-सनह (कम)।
—चढ़ाना या फुलाना मु, कुप् (दि प अ)।
नथनी, स स्त्री (हिं नथ) *नाथक।
नद, स पु (स) उच्च सिंधु, सरस्वत् (पु)।
—राज, स पु (स) समुद्र।
नदारद, वि (फ़ा) अनुपस्थित, लुप्त, अदृष्ट।
नदीश, स पु (स) समुद्र, अब्धि (पु)।
नदिया, स स्त्री (स नदिका) क्षुद्र-सरित्-नदी।
नदी, स स्त्री (स) तटिनी, तरंगिणी, शैवलिनी, स्रोतस्विनी, वाहिनी सरित् (स्त्री) ह्रद (ह्रा) दिनी, धुनी, निम्नगा, आ (अ) पगा, सिंधु (पु), रोधो-स्रोतस्-वती, कूलवती, स्रवन्ती।
—कांत, स पु (स) सागर, जलधि (पु)।
—तीर, स पु (स न) सरित्-नदी-कूल तटम्।
नदीन, स पु (स) समुद्र, सागर २ वरुण।
नदीश, स पु (स) अब्धि-जलधि (पु)।
नद्ध, वि (स) बद्ध, योजित, सदलेपित।
नद्धी, स स्त्री (स) चर्म-रज्जु (स्त्री)-कक्ष्या।
नधना, क्रि अ (स नद्ध) नि, बध (कम) सयुज (कर्म) २ दे 'जुतना' ३ प्रारभ् (कम)।
ननद, ननद-दी, स स्त्री [स ननन्दृ (स्त्री)]।

ननान्द्र (स्त्री), भर्तृभगिनी, ननदिनी, ननदा, पतिस्वसृ (स्त्री)।

ननिहाल, स पु (हिं नानी+स आलय) मातामहालय, मातृकुलम्।

नन्हा, वि (स न्यञ्च्) अनिलघु, क्षुद्र, अल्पक्षुद्र, तनु, प्रतनु। स पु, शिशु, स्तनधय।

नपुंसक, स पु (स) क्लीव, तृतीय प्रकृति (पु) षण्ड, पोगण्ड, शं (ष) ढ-ढ (स न), क्लीबलिंग (व्या)। वि, भीरु, कातर।

नपुंसकता, स स्त्री (स) क्लीवता, षण्ढता, शाढता २ भीरुता, कातरता।

नफरत, स स्त्री (अ) दे 'घृणा'।

नफा, स पु (अ) लाभ, आय, उदय, फल, वृद्धि (स्त्री)।

नफीस, वि (अ) उत्कृष्ट, उत्तम, विशिष्ट २ चारु, शोभन, सुंदर ३ उज्ज्वल, विमल।

नबी, स पु (अ) सिद्ध, ईशदूत, आविष्कर्ता।

नबेड़ना, क्रि स, (स निवृत्त>) दे 'निपटाना'।

नबेड़ा, स पु (हिं नबेड़ना) न्याय, निर्णय।

नब्ज, स स्त्री (अ) नाड़ी (स्त्री)।

—**देखना,** क्रि स, नाड़ी परीक्ष (भ्वा आ से)।

नभ, स पुं [स नभस् (न)] दे 'आकाश'।

—**चर,** स पु (स नभश्चर) खग, खेचर।

नम, अव्य (स) प्रणति (स्त्री), प्रणाम, अभिवादन-वंदन, नमस्कार, नमस्क्रिया।

नम, वि (फा) आर्द्र, उन्न।

नमक, स पु (फा) लवण २ लावण्यं, विशिष्टसौन्दर्यं ३ [illegible]। (नमक के भेद, दे 'नोन')।

—**ख्वार,** स पु (फा) पराश्रित, परायत्त, सेवक।

—**दान,** स पु (फा) लवणधानी।

—**का तेज़ाब,** स पु, उदनीरिकाम्ल, लवणाम्ल।

—**हराम,** वि (फा+अ) कृतघ्न, [illegible], कृतघ्न, (नी स्त्री)।

—**हरामी,** स स्त्री कृतघ्नता, कृतघ्नता।

—**हलाल,** वि (फा+अ) अनुरक्त, भक्त, सानुराग।

—**हलाली,** स स्त्री, भक्ति अनुरक्ति (स्त्री) कृतज्ञता।

—**खाना,** मु, पराश्रय स्वीकृ (उ आ अ), पराश्रय सेव (भ्वा आ से)।

—**मिर्च लगाना,** मु, अत्युक्त्या वर्ण् (चु)। कटे पर—लगाना अथवा घाव पर—छिड़कना, मु क्षते क्षार क्षिप् (तु प अ)।

नमकीन, वि (फा) लवण, लवण क्षार,युक्त मय-गुणविशिष्ट धर्मक २ लवणित, सलवण, लवणसमृष्ट ३ अभिराम, मनोज्ञ। स पु, लवणपक्वान्न (समोसा आदि)।

नमदा, स पु (फा) नमतम्।

नमन, सं पु (स न) नमस्कार, प्रणति (स्त्री) २ अवनमन, नति (स्त्री)।

नमनीय, वि (स) पूज्य, वन्दनीय।

नमस्कार, स पु (स) दे 'नम'।

नमस्ते, वाक्य, (स) नमस्तुभ्य, नमामि त्वाम्। स स्त्री, प्रणाम, प्रणति (स्त्री), नमस्कार।

नमाज़, सं स्त्री (फा) ईश, प्रार्थना-वन्दना (इस्लाम)।

नमित, वि (स) आभुग्न, नमित, प्रवण, प्रह्व।

नमी, स स्त्री (फा) आर्द्रता, क्लिन्नता।

नमूदार, वि० (फा) उदित, प्रकट, दृग्गोचर।

नमूना, स पु (फा) आदर्श, प्रतिमा, प्रतिरूप २ उपमान, प्रतिमानम्।

नम्र, वि (स) निर्, अभिमान अहंकार, विनत, विनीत, विनयिन्, विनयशील, अभिमान गर्व-दर्प, रहित शून्य हीन, नम्रचेतस् २ नत, प्रवण।

नम्रता, स स्त्री (स) प्रश्रय-यण, विनय, विनयिता, निरभिमानता, सौम्यता।

नय, स पु (स) नय, नीति (स्त्री)।

—**नागर,** वि (सं) नय नीति, निपुण-कोविदज्ञ विद् विशारद शास्त्र।

नयन, स पु (स न) नेत्र, दे 'आँख' २ अपनयन, अपवहन।

—**गोचर,** वि (स) दृग्गोचर, दृष्टिगोचर।

—**च्छद,** स पु (स) नेत्र नयन च्छद पट।

—**जल,** स पु (स) नयन, वारि (न)-सलिल-जलम्।

नया, वि (स नव) आनातन इदानींतन [-नी (स्त्री)] आधुनिक [-की (स्त्री)],

अर्वाचीन २ अभिनव, नवीन, नूतन, प्रत्यग्र ३ अभुक्त-अदृष्ट, पूर्व ४ अनभ्यस्त, अपरिचित।
—पन, स पु, नवीनता, नूतनता, अपूर्वता।
नये सिरे से, क्रि वि, पुनः, पुनरपि अभि नवम्।
नर, स पु (स) पु (पू) रुष, ना पुम (पु), २ मनुज, मनुष्य, मानुष, मानव, मर्त्य। वि, पुनातीय, नर, पु, पुरुष-(उ, पुल्याम)।
—देव, स पु (स) नृप २ ब्राह्मण।
—नाथ, स पु (स) नरपति, भूप।
—नारायण, स पु [स णौ (द्वि)] ऋषि विशेषौ।
—पिशाच, स पु (स) महादुष्ट, महाक्रूर।
—भक्षी, स पु (स-क्षिन्) राक्षस, पिशाच।
—लोक, स पु (स) पृथिवी, मर्त्यलोक।
—सिंघ, स पु, दे 'नृसिंह'।
—सिंह, स प (स) दे 'नृसिंह'।
नरक, स पु (स पु न) दुर्गति (स्त्री), नारक, निरय अभिनिस्थान ३ दुःख पूर्णस्थानम्।
—कुंड, स पु (स न) निरय नरक, कूप कुण्डम्।
नरकट, स पु (स नल) धमन, न०, नाल, पोटगल, कुक्षिरन्ध्र।
नरक(कु)ल, नरकस, स पु, दे 'नरकट'।
नरकेश(स, ह)री, स पु, दे 'नृसिंह'।
नरखड़ी, स स्त्री } (देश) कंठ, गल २ प्राण
नरखरा, स पु } श्वास-मार्ग, नालिका।
नरगिस, स पु (फा) पुष्पभेद, *नरगिसम्।
नरद, स स्त्री (फा नर्द) शारि (पु), शारिका, शारिफलम्।
नरमी, स स्त्री, दे 'नमी'।
नरसिंघा, स पु (स नर (=नाग)+शृङ्ग>) वाद्यभेद, *नरशृङ्ग, काहल-ला-लम्।
नरसों, क्रि वि, दे 'अतरसों'।
नराच, स पु (स नराच) बाण, शर।
नराधम स प (सं) नरक, पाप, पापिष्ठ, नीच।
नराधिप, स पु (स) नृप, भूप।
नरेन्द्र, नरेश, नरेश्वर, स पु (स) नृप, नृपति, राजन् (पु)।
नर्तक, स पु (स ... लयात्मक, नृत्य-स्वर

कारिन् २ दे 'नट' (१) ३ वदिन, वैतालिक ४ दे 'नरकट'।
नर्तकी, स स्त्री (स) लयपुत्री, नृत्य-करी कारिणी, लासिका २ दे 'नटी' (१)।
नर्तन, स पु (स न) नृत्यम्। (पुरुषों का-) ताण्डव-वम्। (स्त्रियों का-) लास्यम्।
नर्बदा, स स्त्री (स नर्मदा) रेवा, मेकल कन्या, सोमसुता।
नर्म¹, स पु [स नर्मन् (न)] परि(री)-हास, विनोद।
नर्म², वि (फा) (स्वभाव) कोमल, मृदुल, सुकुमार, सौम्य, २ (पदार्थ) मसृण, स्निग्ध, श्लक्ष्ण, सुखस्पर्श, ३ (ध्वनि) मधुर, मंजुल।
नर्माना, क्रि अ (फा नर्म) मृदू भू २ दयार्द्री भू प्र शम् (दि प से)। क्रि स, मृदू कृ २ दयार्द्री कृ, प्र, शम् (प्रे शमयति)।
नर्मी, स स्त्री (फा नर्म) कोमलता, मृदुता, सौम्यता २ मसृणता, श्लक्ष्णता।
नल¹, स पु (स) नृपविशेष, दमयन्ती पति (पु)।
नल², स पु (स) दे 'नरकट'।
नल³, स पु (स न) पद्म, कमलम्।
नल⁴, स पु (स नाल) नाडी-लो, नाडि-लि (स्त्री) प्रणाल-ली।
पानी का नल, स पु प्रणालिका, मारगि (स्त्री), जलनाली।
नला, स पु (हिं नल) मूत्र-मार्ग-नाली।
नलिन, स पु (स न) कमल, सरोजम्।
नलिनी, स स्त्री, (स) अबुज, कमल २ पद्म समूह ३ पद्माकर, पुष्करिणी ४ (लता) पद्मिनी, पद्मिनी, मृणालिनी ५ नदी।
नली, स स्त्री (हिं नल) सूक्ष्म-क्षुद्र-नाली नाडी दे 'नल' (१) २ दे 'नरखरा' ३ अ न्यस्थिनालीली ४ अनुनासिक (न) ५ सप्रवेष्टन, भ्रमर।
नव¹, वि (सं) नवीन, नूतन, दे 'नया'।
—युवक, स पु, नव-युवन् (पु), तरुण, तरुण किशोर।
—यौवना, स स्त्री (स) नवयुवति (स्त्री)-ना नवतरुणी, तरुणी, तरुणी युवती।
—वधू, स स्त्री (स) नवोढा, वधू (स्त्री), नवरागिप्रभा, नववरिका।

नव², वि तथा सं पु (स नवन्) दे 'नौ'।
—ग्रह, स पु [स ग्रह (बहु)] सूर्यादय नव ग्रहा ।
—द्वार, वि (स) नवद्वारयुक्त २ नवच्छिद्र (शरीरम्)।
—निधि, स स्त्री (स पु) नवरत्नयुत कुबेरकोष।
—रत्न, स पु (स न) नवप्रकाररमणय (मोती, माणिक्य आदि) २ विक्रमादित्यस्य राजसभाया कालिदासादयो नव पंडिता ३ नवविधरत्नयुत हार केयूर वा।
—रात्र, स पु (स न) आश्विनशुक्लप्रतिप दादिनवमीपर्यन्तकर्तव्यदुर्गाव्रतविशेष ।
—सत साजना, मु, षोडशशृङ्गारैं अलङ्कृ।
नवक, स पु (स न) नववस्तुसमूह ।
नवधा, अव्य (स) नवप्रकारें, नव खण्डेषु।
—भक्ति, सं स्त्री (स) नवप्रकारा भक्ति (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदनम्)।
नवनी, नवनीत, स स्त्री, स पु, (स) दे 'मक्खन'।
नवम, वि (स) नवम नवमी (पु न स्त्री)।
नवमी, स स्त्री (स) चान्द्रमासस्य कृष्णा शुक्ला वा नवमी तिथि (स्त्री)।
नवल, वि (स) नवीन, नव्य, नूतन २ सुदर ३ युवन् (पु) ४ उज्ज्वल, स्वच्छ।
नवला, स स्त्री (स) तरुणी, युवती ति (स्त्री)।
नवाँ, वि, दे 'नौवाँ'।
नवाना, क्रि स, दे 'झुकाना'।
नवान्न, स पु (स न) नूतनान्न २ श्राद्धभेद ३ सद्यःपक्वमन्नम्।
नवाब, स पु (अ नव्वाब) राजप्रतिनिधि (पु) २ उपाधिभेद ३ प्रान्ताध्यक्ष । वि, अतिव्ययिन्, अर्थनाशिन् २ आज्ञापक, शासक।
—ज़ादा, स पु (फा) राजप्रतिनिधिप्रान्ताध्यक्ष पुत्र २ विलासिन्, सुखपरायण ।
नवाबी, स स्त्री (अ नव्वाब) राज, प्रतिनिधित्व प्रांताधिपत्य २ अधिकार, शासन, स्वाम्य ३ सुखोपभोग, विलासित्वम्।
नवासा, सं पु (फा) दौहित्र, पुत्रीदुहितृ, पुत्र । नवासी (स्त्री = दौहित्री)।
नवासी, वि [सं नवाशीति (नित्य स्त्री)]। सं पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (८९) च।
नवीन, वि (स) दे 'नया'।
नवीनता, स स्त्री (स) दे 'नयापन'।
नव्य, वि (स) दे 'नया'।
नव्वे, वि [स नवति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सख्या, तदङ्कौ (९०) च।
नशा, स पु (फा) क्षीबता, मत्तता, मद, माद, शौंडता २ मादकद्रव्य ३ धनविद्यादीना अवलेप गर्व दर्प ।
—उतरना, मु, मदो व्यपगम्।
—उतारना, मु, दर्पं हृ (भ्वा प अ), अभिमान चूर्ण् (चु)।
—ख़ोर, स पु (फा) मद्यप मधुप, पान, रत शौंड ।
—चढ़ना, मु मद् (भ्वा आ से) क्षीब मत्त. (वि) भू।
—पानी, स पु, मादकसामग्री।
नशीला, वि (फा नशा) मादक, उन्मादक, मदोत्पादक २ मदमत्त ।
नशेबाज़, स पु (फा) दे 'नशाखोर'।
नश्तर, स पु (फा) वैद्यछुरिका।
—लगाना, मु छुरिकया स्फोटक छिद् (रु प. अ), शस्त्रेण उपचर् (भ्वा प से)।
नश्वर, वि (स) क्षयिन्, क्षयिष्णु, भगुर, अनित्य, अस्थिर, वि, ध्वंसिन्।
नश्वरता, स स्त्री (स) क्षय नाश, शीलता, अनित्यता, अस्थिरता, भङ्गुरता।
नष्ट, वि (स) अदृष्ट, लुप्त, च्युत भ्रष्ट २ ध्वस्त, क्षीण प्र वि, लीन, उच्छिन्न, उत्सन्न।
नस, स स्त्री (स स्नसा) स्नायु (स्त्री) वस्नसा २ धमनी, नाडी।
नसर, स स्त्री (अ) गद्य, छदोहीनप्रबध।
नसल, स स्त्री (अ) वश, कुल, जाति (स्त्री)।
नसवार, स स्त्री दे 'नास'।
नसा, स स्त्री (स) नासिका, घ्राणेन्द्रियम्।
नसीब, स पु (अ) दे 'भाग्य'।
—जागना, मु, पुण्य उद् इ (अ प अ)।
नसीहत, स स्त्री (अ) उपदेश, शिक्षा।
—देना, क्रि स, उपदिश् (तु प अ), अनुशास् (अ प से), २ निभर्त्स् (चु आ से)।
नस्य, स पु (स न) नस्त, नावन २ नासिक्य, नासामंजिर।

नस्या, स स्त्री (स) नासा नासिका, नकेल २ नासिकारज्जु (स्त्री)।
नहट्टु, स पु (स नखशीर>) वैद्यकविहित भेद ।
नहर, स स्त्री (फ़ा) कुल्या प्रणाली, स हो- रणा भूमि (स्त्री)।
नहरनी, नहन्नी, स स्त्री स नखहरणी) नख निकृन्तना-शस्त्र।
नहला, स पु (हिं ना) नवांकयुक्त क्रीडा पत्रम्।
नहलाई स स्त्री (हि नहलाना) स्नपन भाग्न प्रधवन २ स्नपन-शुल्क प्रधावन भृति (स्त्री) भृत्य परिश्रमिकम्।
नहलाना क्रि स व नहाना के प्रे रूप।
नहाना क्रि अ (स स्नान स्ना (अ प प) अव वि... (स्ना आ मे क्रिया के यार में), स्ना (त प अ नदानों के योग मे) शुच (भ्वा प मे) शुध (दि उ मे)। स पु दे 'स्नान'।
नहाने योग्य, वि , स्नानीय अवगाहनीय।
नहानेवाला, स पु, स्नातृ अवगाहक।
नहाया हुआ, वि , स्नात अभिषिक्त, कृतस्नान।
नहार वि (फ़ा) निराहार, अकृतप्रातराश ।
—मुँह, स , अस्तिोदर, निराहारम्।
नहारी स स्त्री (फ़ नहार) प्रातराश , कल्य वर्त २ अशना पूर्वाह्न ।
नहीं अव्य (स नहि) न ना मा दे 'न'।
—तो, अव्य अन्यथा, इतरथा २ एतद्विना, न(नो)चेद ३ वा, अथवा।
नहुष स पु (स) सोमवंशायनृपविशेष २ वैदिकर्षिविशेष ३ नागविशेष ४ कुशिक वंशीयो विप्रनृप ।
नहूसत, स स्त्री (अ) अशुभ, अमंगल २ दैन्य, खिन्नता।
नाँद, स स्त्री (स नदिका>) मृद् मृत्तिका द्रोणी द्रोणि (स्त्री)।
नांदी, स स्त्री (स) मंगलाचरण, नाट्यारम्भे देवद्विजादीनामाशीर्वाद २ अभ्युदय समृद्धि (स्त्री) ३ आनंद ।
ना, अव्य (स फ़ा) न, नो, मा।
—इत्तिफ़ाक़ी, स स्त्री (फ़ा) विरोध, विसंवाद , वैमनस्य।
—उम्मेद, वि (फ़ा) निराश, भग्नाश।
—उम्मेदी, स स्त्री (फ़ा) निराशा, आशा भंग ।
—क़ाबिल, वि (फ़ा +अ)अयोग्य, असमर्थ।
—कारा, वि (फ़ा) निष्प्रयोजन, अनुपयो गिन्, निरर्थक।
—खुश, वि (फ़ा) खिन्न विषण्ण।
—गवार, वि (फ़) असह्य २ अप्रिय।
—चाज़, वि (फ़ा) तुच्छ, क्षुद्र। स स्त्री., निरर्थवस्तु।
—जायज़, वि (फ़) अनुचित, नियमविरुद्ध।
—तजरबाकार, वि (फ़ा) अनुभवहीन, अप रिपक्वबुद्धि।
—पसन्द वि (फ़ा) अप्रिय अरुचिकर।
—पाक वि (फ़ा) अशुद्ध, अपवित्र २ मलिन।
—बालिग़, वि (फ़ा) अप्राप्तवयस्क, अप्राप्त व्यवहार।
—माक़ूल, वि (फ़ा +अ) निर्बोध, निर्विवेक २ असंगत अनुचित।
—मालूम, वि (फ़ा +अ) अज्ञात, अविदित।
—मुनासिब, वि (फ़ा) अनुचित, अयुक्त।
—मुमकिन, वि (फ़ा+अ) असंभव, अशक्य।
—मुवाफ़िक़, वि (फ़ +अ) अपथ्य, अहितकर।
—याब, वि (फ़ा) अप्राप्य, दुष्प्राप, दुर्लभ।
—लायक़, (फ़ा +अ) अयोग्य, मूर्ख।
—वाक़िफ़, वि (फ़ा+अ) अनभिज्ञ, अपरिचित।
—शायस्ता, वि (फ़) असभ्य, अशिष्ट।
—समझ, वि (स +हिं) निर्बुद्धि, मूर्ख, अबोध।
—समझी, स स्त्री (हिं नासमझ) अज्ञता, मूढ़ता।
—साज़, वि (फ़ा) अस्वस्थ, रुग्ण।
नाइट्रोजन, स स्त्री (अं) भूयानि (स्त्री), नत्रजनम्।
नाई, (स न्याय) सदृश, समान, तुल्य।
नाई, नाउन, स पु (स नापित) क्षुरिन्, क्षुरिन्, क्षुरमर्दिन्, अन्तावसायिन्, दिवाकीर्ति (पु), क्षौरिक. चण्डिल, नखकुट्ट, मुंड ।
नाक, स स्त्री (स नक्र) नासा, नासिका, घ्राणं, घाणा, गंधवहा, सिंघिनी, नस्या, नासिक्य, गंधनाली २ (नाक का मल) सिंघाण

णक, शिघणी, सिद्धान्त ३ प्रधान-मुख्य, वस्तु (न) ४ प्रतिष्ठा, मान ।
—कटी, स स्त्री मानहानि (स्त्री), प्रतिष्ठानाश ।
—का बाल, स पु प्रिय प्रीतिभाजन, सहचर ।
—का फिसी, स स्त्री नासापिटिका ।
—की रसोली, स स्त्री नासार्बुद दम् ।
—घिसनी, स स्त्री, कार्पण्य, दैन्येन याचनम् ।
—बहना, क्रि अ, नासा वह् (भ्वा उ अ) अथवा प्र-सु (भ्वा प अ)।
—सिनकना, क्रि स, नासा शुध् (प्रे) या निर्मली कृ ।
—कटना, मु, अपमन् अवज्ञा (कर्म), अनादृत (वि) भू ।
—घिसना या रगड़ना, मु, पादयो पतित्वा अभि प्र-अर्थ (चु), दैन्येन याच् (भ्वा उ से)।
—चढ़ाना, मु, क्रोध घृणा वा प्रकटयति (ना धा)।
—पर मक्खी न बैठने देना, मु, दोषलवमपि न सह (भ्वा आ से) २ विमलस्वरूप (वि) स्था (भ्वा प अ)।
—बोलना, मु, नाम (भ्वा अ से) घर्घरायते (ना धा), घघरख कृ ।
—भौं चढ़ाना या सिकोड़ना, मु, अरुचि अप्रीतिं वा प्रकटी कृ ।
—में दम करना, मु, अत्यर्थं क्लिश् (क्र प से) बाध् (भ्वा आ से)।
—रखना, मु, सम्मानं रक्ष (भ्वा प से), अपमानात् त्रै (भ्वा आ अ)।
—सिकोड़ना, मु, अरुचि घृणा वा द्वश (प्रे)।
नाकों चने चबवाना, मु, अर्द् व्यथ (प्रे), परि-सन्तप् (प्रे)।
नाक[२], स पु (स) स्वर्ग २ आकाश दम्।
नाकड़ा, स पु (हिं नाक) नासापाक २ दीर्घनासिका ।
नाका[१], स पु (हिं नाकना = लाँघना) रथ्यान्त, मार्गावधि (पु) २ वीथी, मार्ग ३ नगरादीनां प्रवेशद्वार ४ नगरपाल पुररक्षक-स्थान ५ सूचीच्छिद्रम्।
—बंदी, स स्त्री, (पुररक्षकै) मार्गावरोध वीथीप्रतिबंध ।
नाका[२], स पु (स नक्र) कुम्भीर ।
नाक़िस, वि (अ) सदोष, विकल ।
नाकेश, स पु (स) इन्द्र, देवराज ।
नाखुदा, स पु (फा) पोत नौका, अध्यक्ष, कर्णधार ।
नाख़ूना, स पु (फा) अर्म मर्म, नेत्ररोगभेद ।
नाख़ून, स पु (फा नाखुन) नख-ख, नखर, कर, न अग्रज अरुश-कण्टक रह, पुनर्भव नव ।
नाख़ूना, स पु (फा) दे 'मोतियाबिंद' २ अधनेत्रेषु रक्तरेखा (स्त्री) ३ नूल कौशपट ।
नाग, स पु (स) सर्प, पन्नग २ गज, हस्तिन् ३ निर्दय, क्रूरचारिन् ४ देवभेद ५ नागकेशर ६ पुन्नाग ।
—केस(श)र, स पु (स) नागकिञ्जल्क, नागीय, पन्नग-फणि, केस(श)र ।
—पचमी, स स्त्री (स) श्रावणशुक्लपंचमी, पर्वभेद ।
—फनी, स स्त्री (स नागफण-अ) कन्थारी, दुर्धर्षा, दुष्प्रवेशा, तीक्ष्णकण्टका ।
—फाँस, स स्त्री (स नागपाश) वरुणायुध २ साऽद्भ्रद्यावर्तनात्मक पाशभेद ३ बंधन प्रकार ।
—बेल, स स्त्री (स नागवल्ली) ताम्बूली, ताम्बूलवल्ली, नागलता, पूगी ।
नागर, वि (स) दक्षिण, चतुर विदग्ध, सभ्य २ पौर, नागरिक । स पु, नगर पौर, जन, पौर, नागरिक ।
नागरक, स पु (स) शिल्पिन्, शिल्पकार २ नगरप्रबन्धक ३ चौर । वि, दे 'नागर'।
नागरमोथा, स पु (स नागरमुस्ता) चक्राङ्गा, चूडाला, कच्छरुहा, नादेयी ।
नागरिक, वि तथा स पु, दे० 'नागर'(१ २)।
नागरिकता, स स्त्री (स) नागरता, पौरता २ दाक्षिण्य, विदग्धता, सभ्यता ।
नागरी, स स्त्री (स) पुर नगर-वासिनी २ चतुरा, प्रवीणा (नारी) ३ देवनागरी लिपि (स्त्री)।
नागहानी, वि स्त्री (फा) आकस्मिकी, यादृच्छिकी ।
नागा, स पु (स नग्न) नग्नभिक्षु ।

नागा, स पु (अ) अनुपस्थिति (स्त्री), अनिर्गति (पु), कार्यपरत्याग, अवकाश ।

नागिन, नी, स स्त्री (स नागी) सर्पिणी, उरगी भुजगी, भुजगी ।

नागेश(स)र, स पु , दे 'नागकेसर' ।

नागेश(स)री, वि (हिं नागेश(स)र) पीत, दे 'पीला' ।

नागोद, स पु (स नागोदरम्) उरस्त्राणम् -त्राण, आयसी, उरश्छद ।

नागोदरिका, स स्त्री (स) कर हस्तत्राणि त्राणम् ।

नाच, स पु [स नृत्य, नृत्ति (स्त्री)] नर्तन, नृत्त, २ (कोमल) लास्य लास्यस्वरूप ३ (उद्धत) ताडव ४ नटन, नाट , नाट्यम् ।

—घर, } स पु , नृत्य, शाला-स्थानम् ।
—महल, }

—रङ्ग, स पु , आमोदप्रमोदा , उल्लास , विनोद , कौतुकम् ।

—नचाना, मु., अर्द् भ्रम (प्रे), दु (स्वा प अ) ।

नाचना, क्रि अ (स नर्तन) नृत् (दि प से) नट (भ्वा प से), नृत्य कृ । स पु , दे 'नाच' ।

नाचनेवाला, स पु , दे 'नतक' ।

नाज़, स पु (फ़ा) दे 'नखरा' ।

—अदा,—नखरा, स पु , हावभावौ, विभ्रम , विलास ।

—बरदार, स पु , चाटुकार, मिथ्याप्रशंसक ।

नाज़नीं, स स्त्री (फ़ा) सुन्दरी, वामा ।

नाजिर, स पु (अ) निरीक्षक २ आसेदृ (पु) ग्राहक ।

नाजुक, वि (फ़ा) कोमल, सुकुमार, मृदुल २ प्रतन, सूक्ष्म ३ भगुर, भिदुर ४ भयकर, भयावह ।

—बदन, वि (फ़ा) कोमलगात्र-तन्वग (-गी, तन्वी स्त्री) ।

—मिज़ाज, वि (फ़ा+अ) कोमलप्रकृति, मृदुस्वभाव ।

नाटक, स पु (स न) दृश्यकाव्य, अभिनय ग्रथ , महारूपक २ अभिनय , नाट्यम् ।

—कार, स पु (स) नाटक-रूपक,-कार प्रणेतृ (पु) ।

—शाला, स स्त्री (स) रगशाला ।

नाटकीय, वि (स) नाटक-,-विषयक-,-सबधिन् ।

नाटना, क्रि अ , दे 'इनकार करना' ।

नाटा, वि (स नत>) खर्व, वामन, ह्रस्व, ह्रस्वकाय ।

नाट्य, स पु (स न) तौर्यत्रिक नृत्यगीत वाद्य २ अभिनय ३ विडम्बन, अनुकार ।

—शाला, स स्त्री (स) रगनाट्य मदिर शाला ।

नाड़ा, स पु (स नाड>) नावी वि (स्त्री), कटिबंधन नाला ।

नाड़ी, स स्त्री [स नाडी नि (स्त्री)] दे 'नब्ज़' २ नाल नलिका प्रणाल -ली ३ धमनी रक्तवाहिनी ४ शि(सि)रा, रक्तवाहिनी ५ (रक्त की अति सूक्ष्म नाडी Capillary) केशिकानाडी ६ चालकनाडी (Motor nerve) ७ सवेदनानाडी (Sensory nerve)

—चलना, क्रि अ , नाडी स्फुर् (तु प से) स्पन्द् (भ्वा आ से) ।

—मडल, स पु (स न) नाडीजाल,-सस्थानम् ।

—छूटना, मु , दे 'मरना' तथा 'मूर्छित होना' ।

नाणक, स पु (स न) टक क, मुद्रा ।

नाता, स पु (स ज्ञाति >) सबध , बधुता, सगोत्रता, सजातिता, सपिंडता ।

नातिन, स स्त्री (हिं नाती) दौहित्री २ पौत्री ।

नाती, स पु [स नप्तृ (पु)] दौहित्र २ पौत्र ।

नाते, क्रि वि (हिं नाता) सबधेन (तृ) ।

—दार, स पु , ज्ञाति बन्धु-बांधव, गण -वर्ग जन ।

—दारी, स स्त्री , दे 'नाता' ।

नाथ, स पु (स) अधिपति (पु), प्रभु स्वामिन् २ पति , भर्तृ ३ नास्य, पशुनासा रज्जु (स्त्री) ४ योगिनामुपाधिभेद ५ अ (आ)हितुण्डिक , व्यालग्राहिन् ।

नाथना, क्रि स (स नाथन) नाथ् (भ्वा प से), वशी कृ, अभिभू (भ्वा प से) २ नासा व्यध् (दि प अ) नासायां छिद्र कृ ।

नाद, स पु (स) शब्द , ध्वनि (पु), रव २ गीत, गीतिका ३ गर्जन, गानन ४ प्रणवभेद (व्या) ५ अर्द्धचद्र , अर्द्धेंदु (पु) (व्या)

—विद्या, स स्त्री (स) सगीतशास्त्रम् ।
नादान, वि (फा) अज्ञ, मूढ, नष्ट।
नादानी, स, स्त्री, (फा) अज्ञान, मौर्ख्य, 'नादयम् ।
नादित, वि (स) वादित, ध्मात, क्वणित, ध्वनित।
नादिम, वि (अ) लज्जित, हीण।
नादिर, वि (फा) अद्भुत, विचित्र।
नादिरशाही, स स्त्री (फा नादिरशाह) निष्ठुरशासन नृशंसता, क्रूरकृत्यम् । वि, घोर नृशस।
नाधना, क्रि स (स नद्ध=बद्ध>) योक्त्र यति (ना धा) युन क्तु) २ आरभ् (भ्वा आ अ)।
नान, सं स्त्री (फा) स्थूलरोटिका।
नानखताई, स स्त्री (फा) मिष्टान्नभेद, *नानखतायी ।
नानबाई, स पु (फा नानबा) आपूपिक, कान्दविक ।
नाना[1], स पु (देश) मातामह, मातु पितृ (पु), जननीजनक ।
नाना, वि (स) विविध, बहुविध २ अनेक, बहु।
—भाँति, वि, अनेकप्रकारक, नानाजातीय।
—रूप, वि, (स) अनेक बहु, रूप।
—वर्ण, वि (सं) अनेक-बहु,-वर्ण रग ।
—विध, क्रि वि (सं पं) अनेकधा, बहुधा।
नानार्थ, वि (स) अनेकार्थक, बह्वर्थ २ अनेक बहुल,-उपयुक्त।
नानिहाल, स पु दे 'ननिहाल'।
नानी, स स्त्री (देश) मातामही, मातु मातृ (स्त्री), जननीजननी।
—मर जाना, मु, हतोत्साह गतसाहस (वि) भू ।
नाप, स स्त्री (सं मापन) प्रपरि, मार्णमिति (स्त्री) मानं २ मानदण्ड, मापनसाधनं, मानम्।
—तौल, स स्त्री, मापन-तोलने (न द्वि)।
नापना, क्रि स (स मापन) मा (दि आ अ, जु आ अ, अ प अ), मानं निरूप् (चु), दे 'मापना'।
नापित, स पु (स) दे 'नाई'।
नाफा, स पु (फा) कस्तूरी मृगमद,-कोश कोष ।
नाभि, स स्त्री (सं पु स्त्री) नाभी, तुन्द कूपी, उदरावर्त्त, तुंद -दी दि (स्त्री), तुन्दिका २ चक्रमध्यं ३ कस्तूरी।
नाम, स पु [सं नामन् (न)] अभिधा, अभिधानं, अभिधेय, आह्वा, आह्वय, आख्या, सज्ञा २ यशस् (न) ख्याति (स्त्री)।
—रखना या धरना, कि स, नाम-सज्ञा कृ, अभिधा (जु उ अ)।
—करण, सं पु (सं न) संस्कारभेद (धर्म) २ नामदानम्।
—कमाना,—करना,—पाना या—होना, मु, विख्यात विश्रुत-महायशस्क (वि) भू।
—डुबोना, मु, यश मलिनी कृ, ख्यातिं नश् (प्रे), कीर्तिं कलंकयति (ना धा)।
—पर धब्बा लगाना, मु, दे 'नाम डुबोना'।
नामक, वि (स) नामध रिन्, आख्य,-संज्ञक।
नामर्द, वि (फा) नपुंसक २ भीरु।
नामी, वि (स नामन्>) नामक, नामधेय २ विख्यात, विश्रुत।
—गिरामी, वि (फा, मि सं नामग्रामिन्) यशस्विन् प्रसिद्ध।
नायक, स पु (सं) नेतृ-अग्रणी (पु), मुख्य, प्रमुख २ स्वामिन्, प्रभु, अधिपति ३ नरव्याघ्र, जननायक ४ कथापुरुष (सा०) ५ सर्गानकुशल ६ सेनापति ।
नायका, सं स्त्री (सं नायिका) दे 'नायिका' २ वेश्याजननी ३ दूती, कुट्टिनी, शम्भली।
नाय(इ)न, स स्त्री (हि नाई) नापिती, क्षुरिणी, मुण्डनी, क्षौरिकी ।
नायब, सं पुं (अ) प्रति,-निधि (पुं)- हस्तक पुरुष २ सहाय-यक, सहकारिन् उप-(उ उपमंत्रिन्)।
—तहसीलदार, सं पुं, उपमण्डलेश-श्वर ।
नायिका, सं स्त्री (सं) शृंगाररसालम्बन भूता नारी २ सुन्दरी रूपिणी ३ कान्ता, दयिता।
नारंगी, स स्त्री (स नारंग) (वृक्ष) नाग रंग, नारंग, नागर, ऐरावत, त्वग्गन्ध, (फल) नारंग, नारंगकं, नारंगफलम् इ । वि,

पिच्छिल, कौसुम [–मी (स्त्री)], पीत लोहित।
नार-रि, म स्त्री, दे 'नारी' तथा 'नाल'।
नारकी, वि (स किन्) नारकिक, नारकीय, पापिन्।
नारद, म पु (म) देवर्षिविशेष ।
नारमल, वि (अ) सामान्य, साधारण, यथाह।
नारा, म पु, दे 'नाडा'।
नाराज, वि (फा) अप्रसन्न रुष्ट।
—होना, क्रि अ, कुप (दि प मे), रुष् (वि) भू।
नारायण, स पु (म) विष्णु, चक्रिन्, ईश्वर ।
नारायणी, म स्त्री (स) लक्ष्मी २ दुर्गा ३ मुद्गल्मुने पत्नी ३ दुर्योधनाय दत्ता कृष्णसेना।
नारियल, स पु (म नारिकेल -ली) (वृक्ष) महारम-दृढस्कंध, फल, तुग, उच्च, मगल्य (फल) उफल, कौशिकफल, नारिकेर ल।
नारियली, स स्त्री (हिं नारियल) नारिकेल २ अफल-नारिकेल-रस ३ नारिकेलसार ।
नारी, म स्त्री (म) स्त्री, सीमन्तिनी, योषि(षा), योषित् (स्त्री), अवला, वामा, वनिता, महिला, रामा, प्रिया, ललनेति (स्त्री), सुभ्रू-वधू (स्त्री), योषिता।
—दूषण, म पु, (म न) सुरापानदुर्जन ममगादय स्त्रीदोषा ।
—रत्न, म पु, (म न) श्रेष्ठ-उत्तम रूपगुण शीलवती, नारी।
नाल[1], म स्त्री (म नाल) नाल-ली-लिका, कमलादीना दड २ दे 'नल' ३ अन्यस्त्र नाडी-ली ४ मूत्रवेष्टन, भ्रमर ५ दे 'आवा नाल'।
नाल[2], स पु (अ) खुरत्र, खुरत्राण २, लोह वलय -यम्।
—बंद, स पु (अ + फा) खुरत्र, बधक योजक ।
—बंदी, म स्त्री (अ + फा) खुरत्रबधनम्।
—लगाना, क्रि म, खुरत्र बध् (क्र् प अ), खुरत्रेण सनाथी कृ।
नालकी, म स्त्री (स नाल) शिबिकाभेद, *नालकी।
नाला, स पु (स नाल) अल्प-लघु-क्षुद्र-नदी सरित् (स्त्री) २ दे 'नाडा'।
नालिश, म स्त्री (फा) अभियोग, आग, आपापाड ।
—करना या दागना, क्रि म, अभियुज् (रु आ अ न) रानपुत्रे निविद् (प्रे)।
नाली, म स्त्री (म) नाल, नालि (स्त्री), प्रणाल ली जलमार्ग, परि(री)वाह २ नाडी, धमनी, शिरा ३ घात्वादिनाली-डी।
नाव, म स्त्री [स नौ (स्त्री)] तरणि गि (स्त्री), तरी रि (स्त्री), तरिका, तरड । (णी) नौका, उडुप, कोल, प्लव ।
—चलाना, क्रि स, नौका प्रेर्-वह चल् (प्रे)।
नावक, म पु (फा) क्षुद्रबाणभेद २ मधु मक्षिकादश ।
नाविक, म पु (म) ओडुपिक, नौतरणी वह २ कर्णधार, सुरयन्त्रविक ।
नाश, म पु (म) प्रणाश, विनाश, प्रवि ध्वस उच्छेद, क्षय, सहार ३ अदर्शन, लोप, तिरोधान ३ मृत्यु (पु)।
—करना, क्रि म, प्रवि, नश् ध्वम् (प्रे) उत्-अव सद् (प्रे), क्षि विलुप् (प्रे), उच्छिद (रु प अ) २ दे 'मारना'।
—होना, क्रि अ, प्रवि, नश (दि प वे) प्राव, ध्वस् (भ्वा आ मे), प्रविली (दि आ अ), क्षय इ-या (अ प अ)।
नाशक, म पु (म) प्रवि, ध्वसक, क्षयकर [री (स्त्री)], उच्छेदक सहारक २ घातुक, अनवर [री (स्त्री)], नाशकारिन्।
नाशपाती, स स्त्री (तु) अमृतफल, फल, अमृताह्वम्।
नाशवान्, वि (स-वत्) क्षयिन्, क्षयिष्णु, क्षय नाश, शील, वि, नश्वर [री (स्त्री)] अनित्य, अध्रुव।
नाशी, वि (स शिन्) दे 'नाशक' २ दे 'नाशवान्'।
नाश्ता, म पु (फा) कल्यवर्त, प्रातराश, उप-लघु-आहार, कल्यपानम्।
नास, म स्त्री (स नस्य) धुत्करी, नासाचूर्णम्।
—दान, म पु, नस्यधान-नी।
नासपाल, म पु (फा) अपक्वदाडिमत्वच (स्त्री) २ अपक्वदाडिमम्।
नासा, म स्त्री (म)दे 'नाक'[1](१)तथा 'नथना'।
नासिका, म स्त्री (स) दे 'नाक'[1](१–२)।
नासूर, स पु (अ) नाडीव्रण, गम्।

नास्तिक, सं पु (स)अनीश्वरवादिन्, निरीश्वर, ईश्वराविश्वासिन्।

नास्तिकता, स स्त्री (स) अनीश्वरवाद, ईश्वराविश्वास, नास्तिक्यम्।

नाह, स पु, दे 'नाथ'।

नाहक, क्रि वि (फा) वृथा, व्यर्थं मुधा, निरर्थक, निष्फलम्।

नाहर (र), स पु (स नरहरि >) सिंह २ व्याघ्र।

निंदक, स पु (स) अभिशापक, अभ्यसूयक, अपपरिवादक आक्षेपक पिशुन।

निंदनीय, वि (स) निंद्य, उपालभ्य, गर्हणीय, वाच्य गर्ह्य २ अभद्र, अशुभ, कुत्सित।

निंदा, स स्त्री (स) अपपरिवाद, आ अधिक्षेप, अव अपवाद, क्रोश, कुत्सा गर्हा, गर्हण, कुत्सन, भत्सनम्।

—करना, क्रि स, निंद् (भ्वा प स) गर्ह् (चु भ्वा आ स) अधिआ क्षिप (तु प उ), अपपरि,वद (भ्वा प से) आक्रुश (भ्वा प अ), तिभर्त्स् (चु आ से)।

—होना, क्रि अ, उक्त धातुओं के कर्म रूप।

निंदासा, वि (हिं नींद) निद्रालु तंद्रिल, निद्रालस।

निंदित, वि (स) अधिआ,क्षिप्त, गर्हित, आक्रुष्ट, तिरस्कृत २ कुत्सित, गर्हित।

निंद्य, वि (स) दे 'निंदनीय'।

निंब, सं पु (स) अरिष्ट, सर्वतोभद्र, तिक्तक, शीत।

निंबकौड़ी, स स्त्री (स निंब >) दे 'निंबौरी'।

निंबू, स पु [स निंबु(बू)क] (वृक्ष) अम्लजंबीर, दंताघात, रोचन, शोधन, जंतुमारिन्, निंबू (स्त्री)। (फल) जंबीर, जंबीरफल इ।

निःशंक, वि (स) अभय, निर्भय, अभीत, निर्भीक २ निःसंकोच, निःसंदेह। क्रि वि, निर्भयं, निःसंशयम्।

निःशब्द, वि (स)नीरव, विराव, मूक, मौनिन्।

निःशेष, वि (स) अशेष, अखिल, समग्र, समस्त २ समाप्त, अवसित, संपूर्ण।

निःश्रेयस, स पु (स न) अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री), मोक्ष, २ कल्याण, मंगलम्।

निःश्वास, स पु (सं) बहिर्मुखश्वास, श्वसन, अपान, प्राण २ उच्छ्वास, उच्छ्वसित, दीर्घ (नि:)श्वास इ।

निःसंकोच, क्रि वि (स न्न) निर्विकल्प, निःसंशय, निःशंक २ निर्भय, निर्वासम्।

निःसंग, वि (स) असंग, गतसंग,संग २ निर्लिप्त ३ निःस्वार्थ।

निःसंतान, वि (स) अनपत्य, निरपत्य, निरन्वय, निर्वंश, अपुत्र। (स्त्री =वंध्या, अप्रसविनी, अनपत्या)।

निःसंदेह, क्रि वि (स न्न) निःशंक, निःसंशय, असंशय, शंका संदेह, विना। वि, निर्विकल्प, निःसंशय, असंशय निःशंक।

निःसंशय, वि तथा क्रि वि, दे 'निःसंदेह'।

निःसार, वि (स) नीरस विरस, निःसत्त्व २ तुच्छ, क्षुद्र ३ असार, तत्त्वहीन।

निःसीम, वि (स) अनंत, अमित, अपरिमित, निरवधि।

निःसृत, वि (स) निर्गत, निर्यात, निष्क्रांत।

निःस्पृह, वि (स) निष्काम, अकाम, निरिच्छ २ निर्लोभ, संतुष्ट।

निःस्वार्थ, वि (स) स्वार्थरहित स्वलाभहीन विमुख, परोपकारिन्।

निआमत, स स्त्री (अ नेअमत) अलभ्य दुर्लभ,वस्तु (न) २ स्वादुवस्तु ३ धनम्।

निकट, वि (स) आसन्न, समीप, सन्निकृष्ट सन्निहित, दे 'समीप'।

—वर्ती, वि (स र्तिन्) निकटस्थ, समीपस्थ।

निकटता, स स्त्री (स) समीपता' दे।

निकम्मा, वि (स निष्कर्मन्) वृत्तिहीन, निर्व्यापार २ अलस, आलस्यशील, निरुद्यम ३ निरर्थक, मोघ, अनुपयोगिन्।

निकर, स पु (स) गण, समूह २ राशि (पु) ३ निधि (पु)।

निकलंक, वि (स निष्कलंक) निर्दोष, निष्पाप, अनघ, दोषपाप-रहित, शुद्ध, पवित्र।

निकलंकी, स पु (स कल्कि) विष्णो दशमावतार। वि (हिं निकलंक दे०)।

निकल, स स्त्री (अ) धातुभेद, *निर्कलम्।

निकलना, क्रि अ (हिं निकालना) निर्गम्, निर्या तथा अप-इ (दोनों अ प अ), निःसृ (भ्वा प अ), निष्क्रम् (भ्वा प स), पृथग् भू २ अतिक्रम्, उत्क्रम्, सृ (भ्वा प से), अतिइ, उल्लंघ् (भ्वा आ से)

३ सफली-उत्तीर्ण भू ४ गम, या, व्रज् (भ्वा प मे) ५ उद्गम, उद्गम, उदय् (भ्वा आ मे) ६ नद् (दि आ म) प्रादुर्भू, उत्पद् (दि आ अ) ७ निष्-मध्य, सिध (दि प अ) ८ (सवाल आदि) उत्तर लभ प्राप् (कम) ९ प्रवृत् (भ्वा आ मे) प्र-चर् चल् (भ्वा प मे) १० वि निर्, सुत्र (कम) ११ आविष्कृ (कम) १२ स्थापित प्रमाणित (वि) भू, निष् १३ अप-सृ-सृप (भ्वा प अ), पलाय (भ्वा आ म) १४ आप, लभ (कर्म) १५ (समयादि) व्यति इ, अतिक्रम् नम्। स पु दे 'निकास'।

निकलनेवाला, म पु निर्गत निर्गन्तृ इ।

निकलवाना, क्रि प्रे, व 'निकलना' के प्रे रूप।

निकष, म पु (म) दे 'कसौटी'।

निकषा, स स्त्री (म) रावणादिराक्षसमाता मातृ (स्त्री)। अव्य०, समीप पे, अन्तिके, दे० 'समीप'।

निकषोपल, म पु (म) दे 'कसौटी' १।

निकाई, स स्त्री (म निक्त = स्वच्छ>) भद्रता, प्रशस्तता २ सुंदरता, मनोज्ञता।

निकाम, वि (म) पयाप्त, अलं (चतुर्थी के साथ), आवश्यकतानुरूप। २ अभीष्ट, यथेष्ट ३ विपुल, बहुल ४ इच्छुक, अभिलाषिन्, आकाङ्क्षिन्।

अव्य० अत्यन्तम्, अत्यधिक, बहु, भृश, भूरि (सव अव्य०)।

निकाय, म पु (म) गण, सघ २ चय, राशि (पु) ३ गृह, सदन (न) ४ ईश्वर।

निकाल, स पु (हिं निकलना) दे 'निकास'।

निकालना, क्रि म (स निष्कालन) व 'निकलना' के प्रे रूप।

निकाला, म पु (हिं निकालना) निर्-वि, वामन, अपसारण, निष्कासन, प्रवासनम्।

निकास, म पु (म निष्कास) अपसरण, गम, अप-निष्-क्रम क्रमण, २ निष्क्रमण, निष्कासन ३ द्वार, द्वार् (स्त्री) ४ क्षेत्र, वनभूमि (स्त्री) ५ उद्गम, प्रभव ६ रक्षो पाय ७ आयोपाय ८ आय, अर्थलाभ।

निकासी, स स्त्री (हिं निकास) प्रस्थान, निर्गम २ आय अर्थलाभ ३ विक्रय, विनियोग, निर्गमशुल्क-कम्।

निकाह, म पु (अ-विवाह इस्लाम)।

निकुंज, म पु (म पु न) कुञ्ज, लता मडप, पर्णशाला।

निकृति, म स्त्री (म) तिरस्कार, अपमान २ शठता, नीचता।

निकृष्ट, वि (म) अधम, अवर, अपकृष्ट, क्षुद्र, गर्ह्य, निच, नीच, हीन, जघन्य।

निकृष्टता, म स्त्री (म) अधमता, क्षुद्रता, हीनता, गर्ह्यता, जघन्यता, नीचता इ।

निकेत, म पु (म) निकेतन, निकेतन, गृह, स्थान, स्थलम्।

निक्षिप्त, वि (म) प्र, अस्त क्षिप्त, अव नि प्रणिहित २ त्यक्त, विसृष्ट ३ अधिकृत, न्यस्त।

निक्षेप, म प (स) नि प्र क्षेप-क्षेपण, प्रामन, प्रेरण निपातन २ त्याग, विसर्ग, उत् वि-सर्ग, विसर्जन ३ आधि-उपनिधि (पु), न्यास।

निखग, स पु, दे 'तरकस'।

निखट्टू, वि (हिं नि = नहीं + खटना = कमाना) उद्यम-उद्योग-व्यवसाय, विमुख, अलस।

निखरना, क्रि अ (स निक्षरण>) निर्मली स्वच्छी भू, शुध् (दि प अ) प्र सन्-मृज् (कर्म) २ सुदरतर (वि) जन् (दि आ से)।

निखरवाना, निखराना, क्रि प्रे, व 'निखरना' के प्रे रूप।

निखरी, म स्त्री (हिं निखरना) पक्व घृतपक्व, भोजनम्।

निखर्व, स पु (स निखर्व-र्वं) दशखवमख्या दशसहस्रकोट्यो वा, तद्वै। वि, वामन, ह्रस्वकाय।

निखार, म पु (हिं निखरना) निर्मलता, स्वच्छता २ शृङ्गार।

निखारना, क्रि म, व 'निखरना' के प्रे रूप।

निखिल, वि (म) अखिल, समस्त, सपूर्ण।

निखोट, वि (हिं नि + खोट) निर्दोष, शुद्ध।

निगदना, क्रि म (फ़ा निगाद = सीवन) तूला सिव (दि प मे)।

निगड, स स्त्री (म पु न) अदुक, अधु। २ शृखल-ला-ल, बधनम्।

निगम, म पु (स) वेद, श्रुति (स्त्री)

२ मार्ग ३ आपण, विपणी णि (स्त्री) ४ मेला, मेलक ५ वाणिज्यम्।

निगमन, स पु (स न) प्रत्याम्नाय (न्या)।

निगरण, स पु (स न) भक्षण, खादन २ कठ, गल।

निगरानी, स स्त्री (फा) निरीक्षण, पर्यवेक्षणम्।

निगलना, क्रि स (स निगलन) निगल् (भ्वा प से) निगृ (तु प से), ग्रस् (भ्वा आ से) २ दे 'खाना'।

निगह, स स्त्री दे 'निगाह'।

—बान, स पु (फा) रक्षक, परित्राता।

—बानी, स स्त्री, रक्षा, त्राणम्।

निगाली, स स्त्री (देश निगाल = बास का प्रकार) धूमपानयन्त्रनाली।

निगाह, स स्त्री (फा) दृष्टि (स्त्री) दृक्शक्ति (स्त्री) २ दर्शन, वीक्षण, विलोकन ३ कृपा दया, दृष्टि ४ विचार, मति (स्त्री) ५ विवेक।

—लड़ाना, मु, कटाक्षेण अवलोक् (चु) -बाध् (भ्वा आ से)।

निगूढ, वि (स) निलीन, प्रच्छन्न, निभृत।

निगोड़ा, वि (हिं निगुरा) दुष्ट, खल, २ अधम, नीच ३ मदहत, भाग्य, दुर्दैव।

—नाठा, स,पु, बधुहीन निर्बान्धव, अविवाहित।

निग्रह, स पु (स) अवरोध, रोध, नियन्त्रणा, बाधा, प्रति, वध रोध २ दम, दमन ३ दंड ४ पीडन, सतापन ५ निग्रहण, बधन ६ भर्त्सना।

—स्थान, स पु (स न) वादे पराजयस्थान (न्या)।

निग्राह, स पु (स) शाप २ दड।

निघंटु, स पु (स) वैदिककोषविशेष २ शब्दसग्रह।

निघर्ष, स पु (स) दे 'निघाव' २ पेषण, चूर्णन, मर्दनम्।

निघात, स पु (स) प्रहार, आघात २ अनुदात्तस्वर (व्या०)।

निघाती, वि (स -तिन्) प्रहर्तृ, आहन्तृ, प्रहारक, आघातक २ घातक, मारक, प्राणहर।

निचय, स पु (स) समूह, राशि, गण, निकर २ निश्चय ३ सचय, सग्रह।

निचला[1], वि (हिं नीचे) अर्वाच्, अधस्थ, अवर, अधस्तन, नीचस्थ, अध -(उ अधोदेश)।

निचला[2], वि (स निश्चल) अचल, स्तब्ध २ शान्त, गम्भीर।

निचाई, स स्त्री (हिं नीचा) अपकर्ष, हीनता, निम्नता २ अधमता, नीचता, गर्धता ३ निम्न-देश भूमि (स्त्री)।

निचान, स स्त्री (हिं नीचा) अवसर्पिप्रवण, भूमि (स्त्री), २ प्रावण्य, क्रमश निम्नता।

निचिंत, वि, दे 'निश्चिंत'।

निचुड़ना, क्रि अ (स निश्च्यवन) च्यु (भ्वा आ अ), च्युत् (भ्वा प से), क्षर निगल् (भ्वा प से), स्रु (भ्वा प अ), २ निष्पपीड् (कर्म), निष्कृष्-उद्वह् (कर्म) ३ दुर्बलीभू।

निचोड़, स पु (हिं निचोड़ना) मूल, मूलवस्तु (न), नियास, सार र २ तात्पर्य, निष्कर्ष, भाव, निर्गलित निष्कृष्ट पिंडित, अर्थ।

निचोड़ना, क्रि स (हिं निचुड़ना) निष्पीड् (चु), उद् निर् हृ (भ्वा प अ), निष्कृष् (भ्वा प अ), निगल् (प्रे) २ सर्वस्व हृ, निस्वनी कृ। स पु, निष्पीडन, निष्कर्षण, निगालन, सर्वस्वहरणम्।

निछावर, स पु (स न्यासावर्त मि अ निसार>) (पीडकदेवसान्त्वनार्थं) अर्पण, उपनयन, उपहरण, उत्सर्जन २ उत्सर्ग, दान, बलि (पु), उपायनम्।

—करना, मु, उत्सृज् (तु प अ), त्यज् (भ्वा प अ)।

—होना, मु, कस्मैचित् प्राणान् त्यज्।

निज, वि (स) आत्मीय स्वीय, स्वकीय, स्वक, आत्म, स्व २ व्यक्तिगत, वैयक्तिक ३ मुख्य, प्रधान।

—का या निजी, वि, दे 'निज' २।

निठल्ला ल्लू, वि (हिं नि+टहल = काम) क्षीण निर्-वृत्ति, वृत्तिहीन, निर्व्यापार २ अलस, कार्यविमुख। स पु, बातरायण।

निठाला, स पु (हिं नि+टहल) अवसाद, निर्व्यापारता।

निठुर, वि, दे 'निठुर'।

निठुराई, स स्त्री (हिं निठुर) दे 'निठुरता'।

निडर, वि (स निर्दर) अभय, अभीत, निर्भीक, विदर २ साहसिक, साहसिन् ३ धृष्ट।

—पन पना, स पु, निर्भयता, निर्भीकता ३।

निढाल, वि (हिं नि+ढाल = गिरा हुआ) श्रान्त, क्लान्त, शिथिल, अशक्त २ अलस, निरुत्साह।

नितंब, स पु (स) दे 'चूतड' २ स्कंध ३ तट-टम्।

नितंबिनी, स स्त्री (स) सुनितंबावती नारी २ सुन्दरी।

नित, क्रि वि दे 'नित्य' क्रि वि।

—नित, क्रि वि दे 'नित्य' क्रि वि (१)।

नितरां, अ य (स) पूर्णतया, सामस्त्येन, २ अतिशयेन अत्यंत ३ सदा ४ निश्चयेन।

नितांत, वि (स) अत्यधिक, सातिशय, निरतिशय, अत्यंत। क्रि वि, सर्वथा, पूर्णतया, अत्यन्तम्।

नित्य, वि (स) शाश्वत [-ती (स्त्री)] अन श्वर, अविनाशिन्, ध्रुव, सनातन, अनाद्य नंत, अमर २ आह्निक प्रात्यहिक [-की (स्त्री)]। क्रि वि अनुप्रति, दिन, दिने दिने प्रत्यह, अन्वह २ सदा, सर्वदा, ३ सतत, अविच्छिन्नम्।

—कर्म, स पु [स मन् (न)] प्रात्यहिक दैनंदिन, कार्यं, आह्निक, नित्य, क्रिया-कृत्यम्।

—प्रति, क्रि वि, दे 'नित्य' क्रि वि (१)।

नित्यता, स स्त्री (स) नित्यत्व, अमरता, ध्रुवता, शाश्वतता।

नित्यानित्य, वि (स) ध्रुवाध्रुव, शाश्वताशाश्वत।

निथरना, क्रि अ (स नि+स्थिर>) स्थैर्येण निर्मलीभू (जलादि)। स पु, निकणठन, *निषदनम्।

निथार, स पु (हिं निथरना) निर्मलजल २ तलाध-स्थित मलम्।

निथारना, क्रि स (हिं निथरना) स्थैर्येण निर्मली कृ अथवा शुध (प्रे)।

निदर्शक, वि (स) प्र,दर्शक, दर्शयितृ २ कथक, कथिक, अध्यापक, ज्ञापक।

निदर्शन, स पु (स न) उदाहरण, दृष्टान्त २ प्रदर्शन, प्रकटीकरणम्।

निदर्शना, स स्त्री (स) काव्यालंकारभेद।

निदाघ, स पु (स) ग्रीष्म, ग्रीष्म,-काल समय ऋतु (पु) २ आतप, सूर्यालोक ३ दाह, ताप।

निदान, स पु (स न) रोगनिर्णय रोग हेतु (पु) २ आदि-मूल-कारण ३ कारण ४ अंत, अवसान ५ शुद्धि (स्त्री)। क्रि वि, अंतत, अंते, अंततो गत्वा, चरमत। वि निकृष्ट, अधम।

निदारुण, वि (स) कठोर, घोर, दु सह, असह्य १ निर्दय, निष्करुण।

निदिध्यासन, स पु (स न) निदिध्यास, सतत-निरन्तर अनवरत,-चिन्तन-स्मरण ध्यानम्।

निदेश, वि (स) आज्ञा, आदेश २ कथन ३ सामीप्यम् ४ पात्रम्।

निद्रा, स स्त्री (स) स्वप्न स्वपन, स्वाप, सुप्ति (स्त्री) शयन, संवेश।

—भंग, स पु (स) जागरणम्।

—वृक्ष, स पु (स) अन्धकार।

निद्रायमान, वि (स निद्रायमाण) शयान, निद्राण, निद्रित, शयित।

निद्रालु वि (स) तंद्रालु, निद्राशील, शयालु।

निद्रित, वि (स) शयित, सुप्त, निद्रागत।

निधड़क, वि (हिं नि+धड़क) नि संकोच, निर्भय नि शंक। क्रि वि, निर्भय, नि संकोच, नि शंक, विस्रब्धम।

निधन[1], स पु (स पु न) मृत्यु २ नाश।

निधन[2], वि (स) दे 'निर्धन'।

निधान, स पु (स न) आधार, आश्रय, २ निधि, कोष ३ स्थापनम्।

निधि, स पु (स) कोष श, द्रव्य,-राशि (पु) समूह-संचय, निधान, शे(से)वधि (पु) २ आधार, आश्रय।

निनाद, स पु (स) ध्वनि, रव, शब्द।

निनानवे, वि [स नवनवति (नित्य स्त्री)] एकोनशतम्। स पु, उक्ता संख्या, तदंकौ (९९) च।

—के फेर में पड़ना, मु वित्तोपार्जनपर (वि) भू, सर्वात्मना धन मति, (स्वा उ अ)।

निपट, वि (देश) अत्यंत, अत्यधिक, नितान्त।

निपटना, क्रि अ, दे 'निबटना'।

निपटाना, क्रि स, दे 'निबटना'।

निपटा(टे)रा, स पु, दे 'निबटेरा'।

निपटावा, स पु, दे 'निबटाव'।

निपात, स पु (स) अध नि,-पतन २ प्र, ध्वंस ३ मृत्यु (पु) निधन ४ व्याकरण लक्षणानुत्पन्न पदम् (व्या.)।

निपातन, स पु (स न) अवपातन, अव भर्जन अनकृतन २ वि, नाशन ध्वसन, हननं, मारणम् ।

निपान, स पु (स) तटाग नीं, जलतोय, आधार आशय २ आह्वाव, निपानक ३ दोहनपात्र दे, 'दोहनी' ४ आचमन, पान, पीति (स्त्री) ।

निपीडन, स पु (स न) अर्दनं, सतापनं, नि-अप विध,-करणं २ मर्दन, दलन ३ निर्दू रणं, निष्कर्षण, निष्पीटनम् । ।

निपुण, वि (स) प्रवीण, निष्णात, कुशल, चतुर, दक्ष, विज्ञ, कृतिन, विचक्षण, विदग्ध, प्रौढ, कुशलिन् ।

निपुणता, स स्त्री (स) प्रावीण्यं, वैदग्ध्य, दाक्ष्य, कुशलता, दक्षता इ ।

निपूता, वि (स निष्पुत्र) अपुत्र, पुत्रहीन २ दे 'नि सतान' ।

निफाक, स पु (अ) द्रोह, वैर २ विच्छेद, विभेद, विघटनम् ।

निबध, स पु (स) बधन, नियमन, दृढी करण २ प्रस्ताव, लेख, प्रबन्ध ।

निब, स स्त्री (अ) लेखनीचचु (स्त्री), कल्माग्रम् ।

निबटना, क्रि अ (स निवर्तन) निवृत्त स्वधावकाश-कृतकार्यं (वि) भू, निवृत् (भ्वा आ से) २ समाप् (कर्म), निष्पमंपद् (दि आ अ) ३ निर्णी (कम), व्यवसो (कर्म व्यवसीयते) ।

निबटाना, क्रि स, व 'निवटना' क प्रे रूप ।

निबटाव, निबटेरा, स पु (हिं निबटना) अवकाश, कार्यनिवृत्ति (स्त्री), क्षण, विश्राम २ समाप्ति, निष्पत्ति (स्त्री) ३ निर्णय कलहान्त ।

निबडना, क्रि अ, दे निबटना' ।

निबद्ध, वि (स) निरुद्ध, बद्ध, नियंत्रित २ विरुद्ध, अर्गलित ३ स ग्रथित सगृहीत ४ निवेशित स्थापित ५ सबद्ध ।

निबरना, क्रि अ (हिं निवडना) दे 'निब टना' (१ २) २ विच्छिद् वियुज् (कर्म), व्यपइ (अ प अ) ३ विदिल्प (दि प अ) ४ वि मुच (कर्म), नैरश्य (कर्म) ।

निबल, वि, दे 'निर्बल' ।

निबहना, क्रि अ, (निवहणम्) दे 'निभना' ।

निबाह, स पु (स निर्वाह) जीवनयापन, कालक्षेप, निर्वहण २ धारण, रक्षणं ३ त्राणो पाय, रक्षासाधन ४ निवृत्ति समाप्ति (स्त्री) ।

निबाहना, क्रि स (स निवाहण) निर्वह् (भ्वा उ अ, प्रे) रक्ष (भ्वा प से), प्रवृध (प्रे), न विच्छिद् (रु प अ) २ (वचन) प्रतिज्ञा निवह् शुध (प्रे)-पा (प्र पालयति) अपवृज् (चु) ३ निवृत् निष्पद्-साध् (प्रे), समाप् (स्वा उ अ) ४ निरतरं कृ या विधा (जु उ अ) । स पु, दे 'निबाह' ।

निबाहनेवाला, स पु, निर्वाहक, सपादक, साधक, पूरयितृ (पु) ।

निबिड, वि (स) घन, सान्द्र २ कठिन ।

निबेड(र)ना, क्रि स (हिं निबट(र)ना) समाप् (स्वा उ अ), अवसो (प्रे अवसाय यति), साध्-सपद् (प्रे) २ विमुच् निर्मुच् (तु प अ प्रे), मोक्ष् (चु), ३ विश्लिष् (प्रे) पृथक् कृ, वियुज् (रु प अ) ४ निर्णी (भ्वा प अ), व्यवस्था (प्रे), अव निर् धृ (चु) ।

निबेड़ा, स पु (हिं निबेडना) मुक्ति (स्त्री), मोचन, मोक्षण २ रक्षा, त्राणं, उद्धार ३ वरण, धृति (स्त्री) ३ विश्लेष, पृथक् कृति (स्त्री) ४ निर्णय, व्यवस्था ।

निबौरी-ली, स स्त्री (स निब) निब अरिष्ट,-फलबीजम् ।

निभ, वि (स) तुल्य, समान । (स पु न) व्याज, मिष २ प्रभा, आभा ।

निभना, क्रि अ (हिं निबहना) निवह्(कर्म निरुह्यते), निवाही भू २ निष्पम,पद् (दि आ अ) समाप् (कम) ३ निरतर कृ विधा (कर्म) ।

निभाग्य, वि, (निर्भाग्य) अभाग्य, मन्द भाग्य भाग्य प्रारब्ध हीन ।

निभाना, क्रि स दे 'निबाहना' ।

निभाव, स पु, दे निबाह' ।

निभृत, वि (स) १ [illegible] २ गुप्त, अन्तर्हित ३ अगाधमुत ४ नम्र ५ अचल ६ पूर्ण ७ निर्जन, शून्य ८ नीरव, नि शब्द ९ मन्द १० विहित ११ धीर ।

निमत्रण, स पु (स न) अभ्यर्थन-ना, आमत्रण, आवाहन, आह्वान २ भोजनाय अभ्यर्थनम्।
—देना, क्रि स, अभि-आ नि-मत्र् (चु आ मे), अभ्यर्थ (चु आ से) आ-मन्त्र् हे (भ्वा प अ) आह्वाव्रह् (प्रे)।
—पत्र, स पु (स न) अभ्यर्थन-आमत्रण, पत्रम्।
निमत्रित, वि (स) आमत्रित, आहूत।
निमक, स पु, दे 'नमक'।
निमित्त, स पु (स न) कारण, हेतु (पु) २ चिह्न, लक्षण ३ शकुनम्। क्रि वि, उद्दिश्य, अभिलक्ष्य।
निमिष, स पु (स) दे 'निमेष'।
निमीलन, स पु (स न) पक्ष्मसकोचन, निमेष।
निमीलित, वि (स) मुद्रित, पिहित, सवृत।
निमेष, स पु (स) निमिष, पक्ष्मसकोच, २ क्षण, पलम्।
निमोनिया, स पु (अ) फुफ्फुसप्रदाह, श्वसनज्वर।
निम्न, वि (स) ग(ग)भीर, गहन २ नत, नीच, अधस्थ।
—लिखित, वि (स) अधो लिखित-वर्णित।
नियता, स पु (स नियतृ) व्यवस्थापक, न्याय-विधि, प्रवर्तक २ विधायक, कायमचालक ३ शासक, शासितृ (पु) ४ अश्वशिक्षक, ५ अध्यक्ष, अधिष्ठातृ, ६ सारथि (पु)।
नियत्रण, स (स न) निग्रह, निरोध प्रतिबध।
नियत्रित, वि (स) नियमित, नियमबद्ध, प्रतिबद्ध, निरुद्ध।
नियत, वि (स) सयत प्रतिबद्ध [illegible] वशीकृत २ निश्चित, स्थिरीकृत, पूर्वनिर्णीत ३ प्रतिष्ठापित, नियोजित, नियुक्त।
नियति, स स्त्री (स) भाग्य, दैव, भवितव्यता।
नियतेन्द्रिय, वि (स) जितेंद्रिय, सयमिन्।
नियम, स पु (स) विधि (पु) व्यवस्था, सूत्र, रीति पद्धति (स्त्री), मर्यादा, आ निदेश, नियोग २ प्रतिबध, नियत्रण ३ रीति (स्त्री), परपरा ४ प्रतिज्ञा, दृढसकल्प ५ दे 'व्रत'।
—धर्म, स पु (स-पौ) सदाचार, सद्वृत्तम्।
—बद्ध, वि (स) नियमाधीन, नियमिन्, नियमित, नियत्रित, सनियम।
नियमन, स पु (स न) वशीकरण अनुशासन, नियन्त्रणम् २ दमन, निग्रह, निग्रहणम्।
नियमित वि (स) दे 'नियमबद्ध'।
नियम्य, वि (स) वशीकार्य, अनुशासनीय, नियत्रणीय २ दमनीय, निग्रहणीय।
नियाज, स पु (फा) इच्छा २ प्रार्थना ३ दर्शनम्, साक्षात्कार।
—मद, वि, इच्छुक २ प्रार्थिन्, ३ दर्शनार्थिन् दिदृक्षु।
—हासिल करना मु, दर्शन कृ परिचय प्राप (स्वा उ अ)।
नियामक, स पु (स) व्यवस्थापक, विधायक प्रतिबधक २ निरोधक, प्रतिबधक ३ नाविक।
नियामत, स स्त्री, दे 'निआमत'।
नियुक्त, वि (स) आयुक्त, नियोजित, व्यापारित २ निश्चित, नियत, स्थिरीकृत।
नियुक्ति, स स्त्री (स) नियोजन, नियोग, व्यापारण, स्थापनम्।
नियुत, स पु (स न) लक्ष, लक्षदशक वा।
नियोग, स पु (स) नियोजन, नियुक्ति (स्त्री), व्यापारण २ प्रेरणा ३ अवधारण, निश्चय। ४ देवरादिभि अपुत्रायां पुत्रोत्पादन (धन) ५ आज्ञा।
नियोजन, स पु (स न) दे 'नियुक्ति' २ प्रेरण-णा।
नियोजित, वि (स) दे 'नियुक्त' (१)।
निरकुश, वि (स) स्वैर स्वरुचि स्वैरिन्, काम-वृत्ति चारिन्।
निरजन, वि (स) पूत विशुद्ध, पवित्र, निर्लेप। २ अकज्जल। स पु ईश्वर २ शिव।
निरतर, वि (स) अविच्छिन्न [illegible], स(स)तत अन २ अव्यवहित। क्रि वि, सदा, सतत निरतर, नित्य अनवरत अजस्रम्।
निरक्षर, वि (स) अनक्षर, अज्ञ, अशिक्षित मूर्ख।

निरखना, क्रि स (स निरीक्षण) दे 'देखना'।

निरपराध, वि (स) अ निर-दोष, अनवद्य, दोषहीन, अनघ, निष्पाप।

निरपेक्ष, वि (स), निरीह, अकाम, नि विगत, स्पृह, विरक्त, तटस्थ।

निरर्थक, वि (स) अर्थशून्य, अनर्थक २ निष्फल वि, फल, मोघ, वध्य, अनुपयुक्त।

निरस, वि (स) दे 'नीरस'।

निरस्त्र, वि (स) अशस्त्र, निरायुध।

निरहंकार, वि (स) निरभिमान, नम्र, विनीत।

निरा, वि (स निरालय) विशुद्ध, मिश्रण रहित, असंसृष्ट २ केवल, एव, मात्र ३ अत्यन्त, अत्यधिक।

निराकार, वि (स) अदेह, अकाय, अशरीर, अमूर्त, अरूप। स पु, ईश्वर २ आकाश शम्।

निरादर, स पु (स) अनादर, अवज्ञा, अव-अप, मान, अवधीरण-णा, तिरस्कार, परिभव।

निराधार, वि (सं) निरवलम्ब, निराश्रय २ अयुक्त, मिथ्या ३ निराहार।

निरामिष, वि (स) निर्मांस मांसरहित २ शाकाहारिन्।

निरायुध, वि (स) दे 'निरस्त्र'।

निराला, वि (स निरालय>) अद्भुत, विचित्र, विलक्षण, विशिष्ट २ अनुपम, अतुल्य, अपूर्व ३ वि निर, जन। स पु, निर्जनस्थानम्।

निराश, वि (स) भग्नाश, हताश, त्यक्ताश, आशाहीन, निरपेक्ष।

निराशा, स स्त्री (स) नैराश्य, निराशता, आशाहीनता।

निराश्रय, वि (स) अनाश्रय, अशरण, असहाय, आश्रयहीन।

निराहार, वि (स) निरन्न, अनाहार, उपोषित, कृतोपवास।

निरीक्षण, स पु (स न) दर्शनं, वीक्षण, अवलोकन २ अवेक्षण, निरूपण, कार्यदर्शनम्।

निरीक्षित, वि (स) दृष्ट, आलोकित २ अवेक्षित, निरूपित।

निरुक्त, स पु (स न) वेदांगविशेष २ यास्कमुनिप्रणीतो ग्रन्थविशेष।

निरुक्ति, स स्त्री (स) निर्वचन, व्युत्पत्ति दर्शिनी व्याख्या।

निरुत्तर, वि (स) अनुत्तर, बद्ध रुद्ध, मुख।

निरुपम, वि (स) अनुपम, अतुल-ल्य, असदृश [-शी (स्त्री)], दे 'अनुपम'।

निरूपण, स पु (स न) अव निर, धारण, निर्णय-यन, निश्चय २ अवलोकनं ३ निदर्शनम्।

निरूपित, वि (स) व्याख्यात, विवेचित सम्यक् वर्णित २ निर्धारित, निर्णीत ३ अवलोकित, ईक्षित।

निरूप्य, वि (स) व्याख्यातव्य, विवेचनीय, वर्णनीय २ निर्धारणीय, निर्णेतव्य ३ अवलोक्य, ईक्षणीय, अन्वेषणीय।

निरूहण, स पु (स न) तर्कण, विवेचन, विचारणम् २ निर्धारण, निर्णयनम्।

निरोग-गी, वि, दे 'नीरोग'।

निरोध, स पु (स) अवरोध, प्रतिबन्ध २ नाश।

निरोधक, वि (सं) निवारक, प्रतिबन्धक, प्रतिषेधक, बाधक।

निर्ख, स पु (फा) अर्घ, मूल्यम्।

—नामा, स पु (फा) अर्घसूची, मूल्यपत्रम्।

निर्गत, वि (स) निर्यात, प्रस्थित, निष्क्रान्त।

निर्गम, स पु (स) बहिर्गमनं, प्रस्थान २ द्वार, निर्गमनमार्गं।

निर्गुंडी, स स्त्री (सं) शेफालिका, सिंधुवार।

निर्गुण, वि (सं) निर्गुणातीत २ मूर्ख, गुणहीन। स पु, परमेश्वर।

निर्जन, वि (स) विजन, एकान्त, विविक्त।

निर्जर, वि (स) जराहीन। स पु, देवता।

निर्जल, वि (स) जलशून्य, शुष्क।

निर्जीव, वि (स) अचेतन, नष्ट, प्राणहीन।

निर्णय, सं पु (स) आधर्षण, निर्णयपाद, व्यवस्था, दण्डाज्ञा २ निश्चय, परिच्छेद, विवेक, अव निर्, धारण धारणा।

निर्णीत, वि (स) निश्चित, अव निर्, धारित।

निर्दय-यी, वि (सं निर्दय) निष्कृप, निष्करुण, क्रूर, निष्ठुर, निर्घृण, नृशंस, कठोर।

निर्दिष्ट, वि (स) उक्त, कथित, वर्णित २ निश्चित, नियत, संकेतित ३ आदिष्ट।

निर्देश, स पु (स) वर्णन, कथनं, विज्ञापनं, संकेत २ निश्चय, निर्णय ३ आज्ञा, आदेश ४ नामन् (न), संज्ञा।

निर्दोष, वि (स) दे 'निरपराध'।
निर्द्वन्द्व, वि (स निर्द्वन्द्व) शत्रु प्रतिद्वन्द्वि-रहित २ द्वन्द्वातीत, विरक्त ३ स्वैर, स्वैरगति।
निर्धन, वि (स) अकिंचन, दरिद्र, अधन, नि स्व, अर्थ द्रव्य धन वित्त, हीन, दुर्गत, दीन।
निर्धनता, स स्त्री (स) दारिद्र्य, अकिंचनता, दुर्गति (स्त्री), दीनता।
निर्धार, स पु (स) } निश्चय, परिच्छेद,
निर्धारण, स पु (स न) } विवेक अवधारणा
निर्धारित, वि (स) निश्चित, कृतनिश्चय, परिच्छिन्न।
निर्निमेष, वि (स) अनिमिष, पक्ष्मपातरहित। क्रि वि, अनिमि(मे)ष, निर्निमे(मि)षम्।
निर्बन्ध, स पु (स) आग्रह, अभिनिवेश २ विघ्न, अन्तराय।
निर्बल, वि (स) अबल, अशक्त, दुर्बल, निस्तेजस, निर्वीर्य, अल्प क्षीण,-बल शक्ति, नि सत्त्व।
निर्बलता, स स्त्री (स) बल-शक्ति, शून्यता, बल शक्ति सत्त्व,-क्षय -नाश -हानि (स्त्री)।
निर्बुद्धि, वि (स) मूर्ख, जड।
निर्बोध, वि (स) अज्ञान, अबोध।
निर्भय, वि (स) अभय, अभीत, अकुतोभय, निर्भीक, नि शङ्क २ प्रगल्भ, साहसिन्।
निर्भयता, स स्त्री (स) निर्भीकता, अभय, अभीति (स्त्री), नि शङ्कता २ प्रागल्भ्य, साहसम्।
निर्भीक, वि (स) दे 'निर्भय'।
निर्भीकता, स स्त्री (स) दे 'निर्भयता'।
निर्मम, वि (स) विरक्त, वैराग्यवत् २ नि स्वार्थ, निरिच्छ ३ उदासीन, तटस्थ।
निर्मल, वि (स) अमल, विमल, स्वच्छ, शुभ्र २ अपाप, पवित्र ३ निष्कलंक, निर्दोष।
निर्मलता, स स्त्री (स) विमलता, स्वच्छता २ पवित्रता ३, निष्कलंकता ३।
निर्मली, स स्त्री (स निर्मल>) अबुप्रसाद, कतक, तिक्तमरिच २ कतकबीज ३ दे 'रीठा'।
निर्माण, स पुं (स न) निर्मिति (स्त्री), रचना, विधान, सर्जन, घटन, कल्पन साधन, सम्पादन, सृष्टि (स्त्री)।
निर्माता, स पु [स -तृ] रचयितृ-स्रष्टृ(पु)।
निर्माल्य, स पु (स न) देवोच्छिष्टद्रव्य, देवार्पितवस्तु (न)।
निर्मित, वि (स) रचित, घटित, कल्पित, सृष्ट।
निर्मूल, वि (स) अमूलक, निर्मूल्य, निराधार २ उन्मूलित, उत्पाटित।
निर्मोही, वि (स निर्मोह) निर्मम, ममत्वशून्य, रूक्ष २ निर्दय, पाषाणहृदय।
निर्लज्ज, वि (स) अप-निस्,-त्रप, निर्,-व्रीड ह्रीक, त्रपा-लज्जा, हीन, धृष्ट, विवान।
निर्लोभ, वि (स) परितृप्त,-तुष्ट, तृप्त, नि स्पृह, वितृष्ण, अलोलुप, अगृध्नु।
निर्वाण, स पु (स न) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री), अपवर्ग।
निर्वात, वि (स) अपवन, निर्वात्य, वातवेग शून्य (प्रदेशादि)।
निर्वाह, स पु (स) दे 'निवाह'।
निर्विकार, वि (स) विकृति विकार परिवर्तन, रहित, अविकारिन्, अपरिवर्तन्।
निर्विघ्न, वि (स) निरन्तराय, निर्व्याघात, विघ्नरहित। क्रि वि, निर्विघ्न, शान्त्या (तृ.) निरुपद्रवम्।
निर्विवेक, वि (स) निर्बुद्धि, अविवेकिन्।
निर्वीर्य, वि (स) निस्तेजस् नि सत्त्व, निर्बल।
निवार, स स्त्री (फा नवार) पर्यंकपट्टिका, *निवारम्।
निवारक, वि (स) रोधक २ अपसारक, नाशक।
निवारण, स पु (स) नि,रोध -रोधन २ अपसारण, दूरीकरण ३ निवृत्ति (स्त्री)।
निवाला, स पु (फा) दे 'ग्रास'।
निवास, स पु (सं) वसति स्थिति (स्त्री) २ गृह, निकेतन आ(अ)गार, आवसथ, आ-नि,-लय २ वास,-गृह-स्थानम्।
—करना, क्रि अ, अधि-आ नि प्रति-वस (भ्वा प अ)।
निवासी, स पु (स -सिन्) वासहृद (पु), वासिन,-स्थ,-वर्तिन्।
निवृत्त, वि (स) वि,मुक्त, विरत, लब्धावकाश, कृतकार्य २ विरक्त, पृथग्भूत।
निवृत्ति, स स्त्री (स) उपरम, प्रवृत्त्यभाव, अप-उप वि,-रति (स्त्री), मुक्ति (स्त्री)।

निवेदन, स पु (स न) आवेदन, प्रार्थना-ना, अभ्यर्थना, याच्ञा याचना, विज्ञापना विज्ञप्ति (स्त्री)।
—करना, नि स, आ नि-विद् (प्रे) विज्ञा (प्रे, विज्ञापयति) अभि प्र अर्थ (चु आ से), याच् (भ्वा उ से)।
—पत्र, स पु (स न) आवेदन प्रार्थना, पत्रम्।
निशङ्क, वि, दे 'नि शङ्क'।
निशान्ध, वि (स) रात्र्यन्ध, दोषान्ध।
निशा, स स्त्री (स) रात्रि (स्त्री), शर्वरी।
—कर,—नाथ,—पति, सं पु (सं) चन्द्र, सोम।
निशाचर, स पु (स) राक्षस, रक्षस् (न), पिशाच २ चौर, लुंठक ३ नक्तचर। (उल्लू आदि)।
निशात, वि (स) निशित तान्त, तेजित, शित, क्ष्णुत २ परिष्कृत कान्त, उज्ज्वलित।
निशाद, स पु (स) निशादन, नक्तभोजिन् २ राक्षस पिशाच ३ घूक।
निशादि, स पु (स) सायम, (अव्य) सन्ध्या।
निशान, स पु (फा) अभिज्ञान, चिह्न, अंक, लक्षण, लाञ्छन, लिंग, व्यञ्जकं-नं २ प्रमाण, साधनं ३ किण, क्षत,-अंक चिह्न ४ लक्ष्य, शरव्यं ५ अधिकार प्रतिष्ठा,-चिह्न ६ ध्वज, वैजयन्ती।
—करना या लगाना, क्रि स, अंक (चु), चिह्नयति मुद्रयति (ना धा)।
—दार, वि (फा) चिह्नित, अंकित २ ध्वज वाहक।
—बरदार, सं पु (फा) वैजयन्तिक, पताकिन् २ अग्रेसर, पुरोग।
नाम—, चिह्न, लक्षण २ अस्तित्वलेश।
निशानची, सं पु (फा निशान) दे 'निशानबरदार' २ लक्ष्यवेधक।
निशाना, स पुं (फा) लक्ष्यं-क्षं, शरव्यम्।
—बाँधना, मु, लक्षी-क्ष्यी कृ, संधा (जु उ अ)।
—मारना या लगाना, मु, लक्ष्य प्रति क्षिप् (तु प अ) अस् (दि प से)।
निशानी, सं स्त्री (फा) दे 'निशान' २ स्मृति चिह्न स्मारकं, दान २ अभिज्ञान, स्मारकम्।
निशास्तान, स पु (स न) निशा,-अति क्रम अत्यय, प्रात (अव्य)।
निशीथ, स पु (स) अर्द्धरात्र,-रात्र, रात्रि निशा,-मध्यं २ रात्रि (स्त्री)।
निश्चय, स पु (स) निश्चितता, निश्चितत्व, ध्रुवत्व २ विश्वास, विभ्रम ३ निर्णय ४ दृढसंकल्प, अध्यवसाय।
निश्चल, वि (स) अचल, अविचल, धीर, दृढ धृतिमत् २ स्थिर, निस्पन्द निश्चेष्ट।
निश्चिन्त, वि (स) चिन्तामुक्त चित्त, शान्त, चिन्ता रहित,-रहित।
निश्चित, वि (स) सन्देह संशय शून्य, अनिश्च, अवश्य, नियत, दृढ २ निर्णीत, निर्धारित।
निश्वास, स पु (स) दे 'निःश्वास'।
निषध, स पु (स निषधा बहु) विन्ध्याच लस्थ देशविशेष २ 'नलाधिष्ठित देश ३ निषधवासिन्।
—पति, सं पु (स) नल।
निषाद, सं पु (सं पु) अनार्यजातिविशेष २ चाण्डाल, हीन ३ सप्तमस्वर (संगीत)।
निषिद्ध, वि (सं) प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट, निवारित २ दूषित, गर्ह्य, निन्द्य।
निषूदन, वि (स) मारक, मारयितृ, हन्तृ, प्राणहर, अन्तकर, घातक।
निषेक, स पुं (सं) अव आ,-सेक सेचन, अभि,-वर्षण उक्षणम् २ गर्भाधान ३ गर्भाधान संस्कार ४ क्षरण,-स्राव ५ स्खलित ६ वीर्याशुद्धि (स्त्री)।
निषेचन, स पु (स न) दे 'निषेक' १।
निषेध, सं पु (सं) प्रतिषेध, निरोध, निवारणम्, निषिद्धि (स्त्री)।
निषेधक, वि (सं) प्रतिषेधक, निवारक, प्रतिबन्धक, बाधक, निरोधक।
निष्कण्टक, वि (सं) निर्बाध निरापद, निरन्तराय २ निःशल्य, अकण्टकित।
निष्कपट, वि (सं) ऋजु, सरल, अमाय, निश्छल, विशुद्ध।
निष्काम, वि (सं) निरिच्छ, निरीह, निःस्पृह।

निष्कारण, वि (स) अकारण, निर्निमित्त । क्रि वि अकारण, अहेतुकम् ।

निष्क्रमण, स पु (स न) बहिर्गमन, निर्गमन २ संस्कारभेद (धर्म) ।

निष्ठा, स स्त्री (स) प्रत्यय , विश्रंभ , विश्वास २ भक्ति (स्त्री), श्रद्धा ।

निष्ठुर, वि (स) क्रूर, क्रूरकर्मन्, निर्दय, निर्घृण, निष्करुण, नृशंस, कठोरहृदय ।

निष्ठुरता, स स्त्री (स) क्रूरता, निर्दयता नृशंसता ।

निष्पत्ति, स स्त्री (स) अन्त , समाप्ति (स्त्री) २ परिपाक , सिद्धि (स्त्री) ।

निष्पन्न, वि (स) समाप्त, अवसित २ सिद्ध, परिणत, सम्पन्न ।

निष्पादन, स पु (स न) साधन, निर्वर्तन विधान २ सम्पादन, सम्पूरणम् ।

निष्पाप, वि (स) अपाप, अनघ, अकल्मष, अकिल्बिष, पापरहित, पुण्यात्मन् ।

निष्प्रयोजन, वि (स) निस्स्वार्थ, निष्काम २ अकारण, निष्कारण ३ अनर्थक, व्यर्थ । क्रि वि , व्यर्थं, मुधा ।

निष्फल, वि (स) निरर्थक, अनुपयोगिन्, मोघ, विफल, निष्प्रयोजन, वृथा, मुधा ।

निसबत, स स्त्री (अ) सबंध , अनुबंध २ वाग्दान, वाक्प्रदान ३ तुलना, सादृश्यम् । क्रि वि , अपेक्षया तुलनया-औपम्येन(तुलया) ।

निसर्ग, सं पु (स) स्वभाव , प्रकृति (स्त्री) ।

निसार, स पु (अ) दे 'निछावर' ।

निस्तब्ध, वि (स) जड़ी-निष्पदी, भूत, अवसन्न, जड़तुल्य, निश्चेष्ट २ अनालापिन्, मौनिन्, तूष्णीक ।

निस्तब्धता, सं स्त्री (स) निष्पदता, निःस्पंदता, जड़ता, निश्चेष्टता २ नीरवता, मौनम् ।

निस्तार, स पु (स) अपवर्ग , मुक्ति (स्त्री) २ उद्धार, त्राणम् ।

निस्तारा, स पु (स. निस्तार) निर्णय , निर्धारण २ दे 'निस्तार' ।

निस्तेज, वि (स निस्तेजस्) अप्रभ, निष्प्रभ, मलिन, हतेजोदीन २ निःसत्त्व, निर्वीर्य, निरुत्साह ।

निस्पद, वि (स) निष्पद, अकम्प, अचल, स्थिर, गतिशून्य, निस्स्पन्द, निःस्पन्द ।

निस्पृह, वि , दे 'निःस्पृह' ।

निस्फ, वि (अ) दे 'आधा' ।

निस्संकोच, वि (स) दे 'निःसंकोच' ।

निस्संतान, वि (स) दे 'निःसंतान' ।

निस्संदेह, वि (स) दे 'निःसंदेह' ।

निस्सार, वि (स) दे 'निःसार' ।

निस्सीम, वि (स) दे 'निःसीम' ।

निस्स्वार्थ, वि (स) दे 'निःस्वार्थ' ।

निहग, वि (सं निःसग) एकल, एकाकिन्, २ ब्रह्मचारिन् ३ नग्न ४ निर्लज्ज ।

निहत्था, वि (स निर्हस्त>) निरस्त्र, निःशस्त्र, निरायुध, अस्त्रशस्त्र, हीन २ निर्धन ।

निहाई, स स्त्री (स निधाति >) शूर्मि-र्मी, स्थूणा ।

निहायत, वि (अ) अत्यंत, अत्यधिक ।

निहारना, क्रि स (स निभाल्न) दे 'देखना' ।

निहाल, वि (फा) सतुष्ट, पूर्णकाम, प्रमत्त ।
—**करना**, क्रि स , प्रमद् आनद् हृष् (प्रे) ।

निहित, वि (स) स्थापित, न्यस्त, निक्षिप्त ।

निहोरा, स पु (स मनोहार >) अनुग्रह-, कृपा, उपकार २ कृतज्ञता, कृतवेदिता ३ प्रार्थना-ना, निवेदन ४ आश्रय , आधार । क्रि वि , द्वारा-कारणेन (अव्य) ।
—**मानना**, क्रि स , उपकार स्मृ (भ्वा. प. अ) कृतज्ञ (कृ उ अ) ।

नींद, सं स्त्री (स. निद्रा) स्वपन, सवेशः, दे 'निद्रा' ।
—**आना**, क्रि अ स्वप (सन्नन्त , उ , सुषुप्सति) निद्रया पराभू (कर्म) ।
—**उचाट होना**, क्रि अ, वि भग्न-निद्र (वि) भू ।
—**न आना**, सं पु , निद्रा-लोप -नाश ।
—**भर सोना**, मु , यथेष्ट स्वप् (अ प. अ) ।

नींदू, वि (हिं नींद) दे 'निद्रालु' ।

नींबू, स पु , दे 'निंबू' ।

नीक-का, वि (स निक्त>) अच्छा, सुन्दर, उत्तम, भद्र, उत्कृष्ट ।

नीच, वि (स) अधम, अवर, अपनि-कृष्ट, क्षुद्र, अल्प, गर्ह्य, जघन्य, तुच्छ, पामर । स पु , अधम , अन्त्यज , दुर्वृत्त , पृथग्जन , २ हान, जाति -वर्ण -कुल , अन्त्यजातीय , नीच-कुल-न्वशप्रसूत ।

—ऊँच, मु, भद्राभद्रे (न) २ गुणावगुणौ, ३ हानिलाभौ ४ सुखदुःखे (न) ५ संपद् विपदौ (स्त्री) ६ उत्कर्षापकर्षौ।

नीचता, सं स्त्री (सं) अधमता, क्षुद्रता, तुच्छता पामरता, २ अन्त्यजता, हीनकुलता।

नीचा, वि (सं नीच) अधःस्थ, अधस्तन (-नी स्त्री), नत, निम्न, नीचस्थ, अवाच २ दे 'नीच'।

—ऊँचा, वि, नतोन्नत, विषम, असम, २ दे 'नीच-ऊँच'।

—दिखाना, मु, पराजि (भ्वा आ अ), पराभू २ ह्री (प्रे ह्रेपयति), लघू कृ, व्रीड् (प्रे)।

नीचाई, स स्त्री (हि नीचा) नीचता, निम्नता, अधःस्थता।

नीचे, क्रि वि [स नीचैः (अव्य)] अधः, अधोभागे, अधस्तात् तले २ अधीनतया, वशे ३ न्यून, अवर।

—ऊपर, क्रि वि, अन्योन्यस्योपरि, इतरेतरस्योर्ध्वम्। २ अस्तव्यस्त, सकीर्णतया।

नीड, स पु (स पुं न) दे 'घोंसला'।

नीति, स स्त्री (स) उपाय, युक्ति-रीति (स्त्री), प्रयोग २ राजराज्यशासन, नीति नय न्याय मार्ग, नय नीति क्रम मार्ग ३ सदाचार, सद्व्यवहार, सुमत चरित ४ नीति-विद्या शास्त्रम्।

नीतिज्ञ, वि (सं) नयज्ञ, नीतिशास्त्रज्ञ।

नीतिमान्, वि (स-मत्) नयपर सदाचारिन् [-मती (स्त्री)]।

नीप, स पु (सं) कदंब विपिन, मदिरागंध।

नीबू, स पुं (स निंबुक) दे 'निंबू'।

—निचोड़, वि, अल्पदायिन् बहुग्राहिन्, अल्पदातृ बहुग्रहीतृ, अल्पद बहुग्राहक।

नीम', सं पु, दे 'निंब'।

नीम, वि (फ़ा, मि स नेम) दे 'आधा'।

—हकीम, स पु वैद्यमानिन् वैद्यमन्य, मिथ्या-कुचिकित्सक, दंभचिकित्सक।

—हकीम खतरे जान, मु, वैद्यम्मन्यात् प्राणसकटम्, छद्मवैद्य सकटावह।

नीयत, स स्त्री (अ) आशय, उद्देश, भाव, इच्छा, लक्ष्यम्।

—बदल जाना, मु पापं प्रति प्रवृत् (भ्वा आ स), धर्मं त्यज् (भ्वा प अ)।

नेक—, वि, महाशय, सुमनस्क।

बद—, वि, दुराशय, कुमनस्क।

नीर, स पु, (स न) तोय, दे 'जल'।

नीरज, सं पु (स न) पद्म, दे 'कमल'।

नीरद, स पु (स) जलद, दे 'मेघ'।

नीरस, वि (स) अरस, विरस, अ वि, द्रव, शुष्क २ अस्वादु, रसहीन, अरुचिकर।

नीरोग, वि (स) सुस्थ, कल्य, वार्त्त, दे 'स्वस्थ'।

नीरोगता, स स्त्री (स) आरोग्य, दे 'स्वास्थ्य'।

नील, स पु (स नील) (पौधा) काला, नीली, नीलिनी, रजनी, २ (द्रव्य) नील, नील वर्ण ३ प्रहारचिह्न, नीलचिह्न, नीला ४ लाञ्छन ५ वानरविशेष ६ इन्द्रनीलमणि, नीलोपल (पु) ७ संख्याविशेष (दस हजार अरब अथवा सौ अरब)। वि, दे 'नीला'।

—कंठ, स पु (स) चाष, किकीदिदि(दी)वि (पु) २ शिव ३ मयूर।

—कमल, स पु (सं न) नील,पद्मम् अब्ज इन्दि(दी)वर, इन्दीवार।

—का टीका, मु, कलंक, अपमान् (न)।

—गाय, स स्त्री, दे 'रोझ'।

नीलम, स पु [फ़ा, स नीलमणि (पु)] नील, नीलाश्म, महानील,-नीरज।

नीलाम्बर, स पु (स न) नीलकौशेयवस्त्र २ तालीशपत्रम्। स पु, बलदेव २ राक्षस।

नीलोत्पल, स पुं (फ़ा मि स नीलोत्पल) कुमुद, कैरव २ इन्दी(न्दि)वर, नील, अब्जम् इत्यादि।

नीला, वि (स नील) श्याम, मेचक, नीलवर्ण।

—रंग, स पु, नील, नीलिमा, नीलिमन् (पु)।

—पीला होना, मु, क्रुध् (दि प अ) कुप् (दि प से)।

नीलाई, स स्त्री (हि नीला) नीलत्व, नीलिमन् (पु)।

नीलाथोथा, स पु (हि नीला+स तुत्थ) हेममार, तुत्थ, नालाञ्जन, ताम्रगर्भ, मयूरग्रीवक, नील वितुन्न, मयूरकम्।

पुर ,-नर , मुख्य २ प्रभु , स्वामिन् ३ निर्वाहक , प्रवर्तक [नेत्री (स्त्री)]।

नेती, स स्त्री (स नेत्र) नयनरज्जु (स्त्री), मथगुण ।

—धोती, स स्त्री , दीपपट्टिकया अन्त्रशोधन (हठयोग)।

नेत्र, स पु (स न) नयन, चक्षुस (न) दे 'आंख' २ दे 'नेता' ३ वस्तिशलाका ।

—रंजन, स पु (स न) कज्जलम् ।

नेत्र्य, वि (स) नयन नेत्र, विषयक संबंधिन् २ नयन नेत्र, हितकर ।

नेदिष्ठ, वि (स) निकटतम २ अतिकम ३ निपुण ।

नेनुआ वा, स पुं (?) घोष पक , आदाना, देवदानी, ऐमी, महाफला ।

नेपचून, स पुं (अ) नेपचून , ग्रहविशेष ।

नेपथ्य, स पु (स न) वेश प, परिधान, वस्त्र , आभरण, अलंकार २ (रंगशालाया) वेशस्थान, अलंकारकोष्ठ ३ रंग, भूमि (स्त्री) शाला ।

नेपाल, स पु (स) भारतोत्तरवाम देश विशेष । (सं न) दे 'ताम्बा' ।

—जा, स स्त्री (स) नेपालजाता दे मैनसिल ।

नेब्यूला, स पु (अ) नीहारिका ।

नेमि, स स्त्री (स) नेमी, प्रधि चक्रपरिधि (न) २ कूपानिस्सममस्थल ३ कूपसमीपे रज्जुधारणार्थं त्रिदारुयन्त्र, त्रिका ।

नेवता, स पु , दे 'निमंत्रण' ।

नेवर, स पु (स नूपुर) दे 'नूपुर' २ अश्व पादक्षतम् ।

नेवला, स पुं (स नकुल) पिंगल , भुजी वदन , लोहितानन , अगूप , वश ।

नेवार, स पु , दे 'निवार' ।

नेस्त, वि (फा) नष्ट, लुप्त ।

—नाबूद, वि (फा) नष्टभ्रष्ट, उच्छिन्न ।

नेस्ती, स स्त्री (फा) अनस्तित्व, अभाव २ आलस्य ३ नाश ।

नेह, स पु (स स्नेह) प्रेमन् (पु), प्रीति (स्त्री) २ घृत, तैलम् ।

नैतिक, वि. (सं) नीति, विषयक शास्त्रीय ।

नैत्य, वि (स) नैत्यक नैत्यिक[-की (स्त्री)], नित्य संबंधिन्-करणीय ।

नैन ना, स पु (स नयन) दे 'आंख' ।

नैपुण्य, स पु (स न) कौशल, दाक्ष्य, पाटवम् ।

नैमित्तिक, वि (स) निमित्त, न य त्पन्न, अनैत्यिक ।

नैया, स स्त्री , दे 'नाव' ।

नैयायिक, स पु (स) न्याय तत्त्व, शास्त्रज्ञ, न्यायवित् (पु), तार्किक ।

नैराश्य, स पु (स न) दे 'निराशा' ।

नैर्ऋत, स स्त्री (स नैर्ऋती) नैर्ऋतकोण, अवाची प्रतीच्योर्मध्य या दिक् (स्त्री) ।

नैवेद्य, स पु (स न) देवबलि (पु) भोजन, भोग ।

नैसर्गिक, वि (सं) प्राकृतिक स्वाभाविक, स्वाभाविक सांसिद्धिक [की (स्त्री)], प्रकृति स्वभाव, सिद्ध ।

नैहर, स पु , दे 'मायका' ।

नोक, स स्त्री (फा) अग्र, अग्रभाग , अणि (पु स्त्री) प्रान्त मुख शिखर चञ्चु (स्त्री) २ उदग्र-प्रविष्टि, शाण अग्र ।

—झोक, स स्त्री , नम, आलाप भाषित परि (री)हास , व्यंग्यम् ।

—दार, वि , दे 'नुकीला' ।

नोकीला, वि , दे 'नुकीला' ।

नोच, स स्त्री (हि नोचना) लुंच , लुंचनं २ आकस्मिक आच्छेद , लुंठन ३ परिनो यातनम् ।

नोचना, क्रि स (स लुंचन) लुंच् (भ्वा प से), उत्पट् (चु), अभिछिद् (रु प अ) २ वि कृत् (तु प से) ३ अपनी निर्ह व्यपह (भ्वा उ अ) ४ अव त्रिन्द् (भ्वा), निःकृन्त्(रु प अ), त्रुट् (तु प से) ।

नोट, स पुं (अ) स्मृत्यर्थ लेख लेखन टिप्पणं, २ स्मरण, स्मरणचिह्न, अभिज्ञान ३ पत्र, पत्रिका ४ टिप्पणी, टीका ५ धनपत्रं, नाणकपत्रम् ।

—करना, क्रि स , लिख् (तु प से), अंक (चु) ।

—कर्ता, स पु [स र्तृ (पु)] दे 'न्यायाधीश'।

—सभा, सं स्त्री (स) दे 'न्यायालय'।

न्यायाधीश, स पु (स) न्याय धर्म, अध्यक्ष, आधिकरणिक निर्णेतृ-व्यवहारद्रष्टृ (पु) प्राड्विवाक ,धर्माधिकरणिक , दंड नायक पर।

न्यायालय, स पु (सं) धर्म न्याय,-सभा, व्यवहारमंडप , अधिकरणम्।

न्यायी, वि (स यिन्) न्याय,-पर परायण-शील, न्यायवर्तिन्।

न्याय्य, वि (सं) उचित, धर्म्य, युक्त, योग्य, तथ्य।

न्यारा, वि (स निर्+आरात्>) दूरस्थ, दूरवर्तिन् २ विश्लिष्ट, पृथक स्थित ३ अन्य, अपर भिन्न ४ विलक्षण, विचित्र[न्यारी(स्त्री)]।

न्यारिया, स पु (हिं न्यारा) दावन, बधुल।

न्यारे, क्रि वि (हिं न्यारा) दूर, दूरे, आरात् २ पृथक, विश्लिष्ट।

न्यास, स पु (स) निधान, स्थापन, न्यसन निक्षेपण २ उपनिधि (पु), निक्षेप ३ अर्पण, त्याग।

न्यूक्लियस, स पुं (अं) नाभिरूप।

न्यून, वि (सं) अल्पतर, अल्पीयस्, क्षोदीयस, लघीयस्, ऊन २ अवर, अधर ३ क्षुद्र, नीच।

न्यूनता, स स्त्री (सं) ऊनता, अल्पता, अपूर्णता, पर्याप्तताभाव २ हीनता, अभाव।

न्योछावर, स स्त्री , दे 'निछावर'।

न्योतहरी, स पु (हिं न्योता) निमंत्रितजन।

न्योता, स पु , दे 'निमंत्रण'।

न्योला, सं पु , दे 'नेवला'।

न्योली, स स्त्री (स नली) हठयोगक्रियाभेद।

प

प, देवनागरीवर्णमालाया एकविंशो व्यंजनवर्णः, पकारः।

पक, स पु (स पुं न) कर्दम, चिकिल, दे 'कीचड़'।

पकज, स पु (स न)पद्म, सरोज, दे 'कमल'।

पकजासन, स पु (स) चतुर्मुख ब्रह्मन् (पुं)।

पकिल, वि (स) सपक, सकर्दम, सचिकिल।

पक्ति, स स्त्री (स) रेखा पा, लेखा २ तति, राजी ति श्रेणी णि आवली लि (सब स्त्री)।

—च्युत, वि (स) जातिच्युत।

—दूषक, वि (स) हीन, नीच, कुजाति।

—पावन, स पु (स) विप्रवर, ब्राह्मणश्रेष्ठ, द्विजोत्तम।

पख, स पु (स पक्ष) बाज, गरुत्, पत्र, पतत्र, छद तनूरुहम्।

पखड़ी, सं स्त्री [स पक्ष्मन् (न)] पुष्पदलम्।

पखा, स पु (हिं पखा) व्यजन, वीजनं, तालवृन्तम्।

—झलना, क्रि स , वीज् (चु)।

कपड़े का—, आलावर्त।

चमड़े का—, धवित्रम्।

पखी, स स्त्री (हिं पंखा) व्यजनक-वीजनकम्।

पखी, स पु, दे 'पक्षी'।

पगत ति, स स्त्री (स पक्ति) दे 'पक्ति' (१ २) २ सभा, समाज।

पगु, वि (स) श्रोण, खञ्ज, खोलक।

पच, वि (स पचन्)। सं पु , उक्ता सख्या, तदक (५)च २ लोक, जनता ३ निर्णेतृसभा, मध्यस्था।

—तत्त्व, स पुं , (स न) पचभूतम् (पृथिवी जलानलानिलाकाशानि)।

—नद, स पु (सं) पचनदीयुत प्रांतविशेष, *पंजाब।

—नामा, सं पु (सं +फा) *पचनिर्णयपत्रम्।

—प्राण, स पु (स प्राणा) प्राणपचकम् (प्राण , अपान , समान , व्यान , उदान)।

—भूत, सं पुं (सं न) पंचतत्त्वं, पंच, तत्त्वानि भूतानि।

—महायज्ञ, सं पु (सं -यज्ञा) ब्रह्म-देव पितृ बलिवैश्वदेव नृयज्ञा।

—रत्न, सं पु (स न) कनकहीरकनील मणिपद्मराग मौक्तिकानीति पचरत्नानि।

पचक, सं पुं (स न) पचवस्तुसमुदाय।

पचत्व, स पु (स न) मरणं, निधनं, मृत्यु, पचता।

पंचम, वि (सं पंचम -मी मं) २ सुंदर ३ दक्ष। सं पुं , पंचमस्वर (सगीत)।

पंचमी, सं स्त्री (सं) शुक्ला कृष्णा वा पंचमी

निधि (स्त्री) २ विनम्मिविशेष (व्या) ३ द्रौपदी।

पचाग, स पु। स न) कर्मनिमित्तप्रयोग करणात्मकपत्रिका पत्रिका।

पचाग्नि, स स्त्री (स न) तपस्याभेद पचतपा।

पचानन वि (स न) पच मुख अभ्य। स पु शिव २ सिंह ३ महादेव।

पचाननी, स स्त्री (स) दुर्गा २ सिंही।

पचायत, स स्त्री (स पचायतन>) *पच सभा समिति (स्त्री) २ ग्रामसभा।

—नामा, स पु (हि+फा) पचसभानिर्णयपत्रम्।

पचायती वि (हिं पचायत) पचसभा सबधिन् २ सर्वसाधारण सार्वजनिक।

पचाली, स स्त्री (स) पुत्तला, वस्त्रनिर्मित पुत्रिका २ द्रौपदी पाचाली।

पछा, स पु, दे 'पक्षा'।

पजर, स पु (स) कंकाल, देहास्थिसमूह २ देह, शरीर ३ दे 'पिंजरा'।

पजा, स पु (फा) पचक २ हस्तचरणाना पचाङ्गुलीसमूहाग्रभागा वा ३ (व्यायामीना) भार।

—पजे में, मु, अधिकारे, वशे।

पजाबी, वि (फा) पावनद [-दी (स्त्री)]। सं पु, पचनदवासिन्।

पजारा, स पु (स पिंजकार) तूलकार करकर २ दे 'धुनिया'।

पजीरी, स स्त्री (फ़ पजा) गोधूमनिर्मितचूर्ण, मिष्टान्नभेद।

पँडवा, स पु, (?) महिषी पयस्विनी, गाव गावक।

पडा, स स्त्री (स पण्डित>) तीर्थपुरोहित।

पडाइन, स स्त्री (हिं पडा) तीर्थपुरोहित भार्या पत्नी।

पडाल, स पु, (तमिल पैन्दल) दे 'मण्डप'।

पडित, स पु (स) बुध, कोविद प्राज्ञ, विद्वस् (पु) २ ब्राह्मण। वि, पाण्डित्य, बुद्धिमत् २ चतुर, दक्ष ३ सस्कृतज्ञ।

पडिता, स स्त्री (स) विदुषी, बुद्धिमती नारी।

पडिताई, स स्त्री, दे 'पाण्डित्य'।

पडिताऊ, वि (हिं पण्डित) पडितब्राह्मण, तुल्य-सदृश।

पडितानी, स स्त्री (हिं पण्डित) पण्डित कोविद पत्नी भार्या २ ब्राह्मणी, द्विजोत्तमा।

पडुक, स पु (स पाडु>) कपोतजातीय खगभेद, पाडुर, *धूसर।

पथ, स पु (स पथिन्) मार्ग, वर्त्मन् (न) २ सम्प्रदाय, मत, धर्ममार्ग ३ रीति (स्त्री)।

पथी, स पु (हिं पथ) पथिक, यात्रिन् २ साम्प्रदायिक मतावलम्बिन्।

पँवाडा, स पु (स प्रवाद) आख्यान वृहद् विस्तृत कथा, अविस्तर वृत्तान्।

पसारी, स पु (स पण्यशालिन्>) औषध विक्रयिन *पण्यशालिन्।

पसेरी, स स्त्री (स पच+सेर>) पचसेरी, पचसेटकी।

पकड, स स्त्री (स प्रग्रह>) ग्रह ह धा(ध)रण, ग्रसन, आरम्भ २ मल्लबाहु,युद्ध ३ दोषान्वेषण, आक्षेप, आपत्ति (स्त्री)।

—धकड, स स्त्री, निरोधाभिधौ, ग्रहणधरणे (दोनों द्वि)।

पकडना, क्रि स (स प्रग्रह>) ग्रह (क्र प मे), धृ (भ्वा प अ, चु), आदा (जु आ अ), अवलम्ब् (भ्वा आ मे), परामृश् (तु प अ) २ निरुध (रु उ अ), आमिध् (भ्वा प मे), बध् (क्र प अ) ३ आसद (प्रे), रुध (भ्वा आ मे, चु), पश्चात् आसद अतिक्रम् (भ्वा प से), पश्चात् आमिल (तु प से) ४ निवृत्तम (प्रे), स्थिरीकृ ५ अन्विष (दि प से), अनुसधा (जु उ अ) ६ ग्रस् (भ्वा आ से), आक्रम् (भ्वा प मे)। स पु, दे 'पकड'।

पकडनेवाला, स पु, ग्रहीतृ धर्तृ धारयितृ (पु) निरोधक, आमेक्ष द।

पकडवाना, **पकडना**, क्रि प्रे, व 'पकडना' के प्रे रूप।

पकडा हुआ, वि, गृहीत, धृत, निरुद्ध, ग्रस्त।

पकना, क्रि अ (स पक्व>) पच श्रा-श्री (कम), सिध (दि प अ) २ पाक व्रज् (भ्वा प से), पाकोन्मुख (वि) भू। (केश) धवली शुक्ली भू।

पकवाई, स स्त्री (हिं पकवाना) पाचन, मूल्य भृति (स्त्री)।

पक्वान, स पु (स पक्वान्न दे)।

पकाई, स स्त्री दे पकवाई २ पाचन पाक, दे 'पक'।

पकाना, क्रि स (हिं पक्का) पच (भ्वा प अ) श्री (क उ अ) श्रा (अ प अ, चु अपचति) (अन) मन्दूं अथवा सिध (प्रे साधयति)

पकाने योग्य, वि पचनीय, श्रातव्य, श्रेतव्य।

पकानेवाला स पु पाचक, सूद वल्लव।

पकाया हुआ, वि पक्व, पाचित, साधित, संस्कृत, श्राण।

पकाव, स पु (हिं पकना) पचन, पाक २ (व्रणादीनां) सपूयत्व, परि, पाक।

पका हुआ, वि, पक्व सिद्ध, श्राण, शृत।

पको(कौ)डा, स पु (हिं पकौरी) पक्व पौढ।

पको(कौ)डी, स स्त्री (स पक्ववटी) पक्व वटिका।

पक्का, वि (स पक्व) सु परि, पक्व, परिणत, पक्वतामापन्न २ प्रौढ, सिद्ध, परिनिष्पन्न ३ संस्कृत, संशोधित ४ पक्व, श्राण, शृत ५ अनुभविन्, बहुदर्शिन् ६ दक्ष, निपुण ७ दृढ, स्थिर ८ निश्चित, ध्रुव ९ प्रामाणिक, प्रमाणसिद्ध।

पक्व, वि (स) दे 'पक्का' (१, ३ ४)।

पक्वान, स पु (स न) संस्कृत सिद्ध शृत, अन्नम्।

पक्वाशय, स पु (स) नाभ्यधोभाग, लम्ब नाराभिरो भाग।

पक्ष, स पु (स) पार्श्व अर्ध, पक्षपार्श्व, भाग, कुक्षि (पु) २ दे 'पर' ३ दल वर्ग, सघ ४ अर्धमास, मासार्द्ध ५ सहायक, मति (पु) ६ गृह ७ मत, विचार।

उत्तर—, स पु (स) सिद्धान्त, कृतान्त, समाधि (पु)।

पूर्व—, स पु (स) शास्त्रीयप्रश्न, सिद्धान्त विरुद्धकोटि (स्त्री), चोद्य, देश्य, फक्किका।

पक्षक, स पु (स) गुप्तद्वार, द्वारद्वार् (स्त्री) २ पार्श्व दर्वे, पक्षभाग ३ सहाय सहायक।

पक्षति, स स्त्री (स) पक्षमूल,मूलम्, शुक्ल प्रथमतिथि (स्त्री), प्रतिपदा, प्रतिपदी।

पक्षपात, स पु (स) पक्षपातित, असम, दृष्टि बुद्धि (स्त्री), असमता।

पक्षपाती, स पु (स तिन्) पक्ष्य, पक्षधर पक्षावलम्बिन्, सपक्ष, पक्षिन्।

पक्षात, स पु (स) अमावस्या २ पूर्णिमा।

पक्षाघात, स पु (स) पक्षवध, जाड्य स्तम्भ, मान्द्य।

पक्षिणी, स स्त्री (स) पत्रिणी, पतत्रिणी, पक्षमती वक्त्रिणी, नौपक्षा, नीलीडवा।

पक्षी, स पु (स पक्षिन्) विहग, विहग म, खग, शकुन ति (पु), शकुन्ति (पु) द्विज, पत्रिन्, पतत्रिन्, अण्डज, वक्त्रिन् वि (पु), पतत्रि (पु), गरुत्मत् (पु), पतग, पतङ्ग २ पक्ष्य, पक्ष पातिन्।

पख, स पु (स पक्ष >) कलह, विवाद २ दोष, त्रुटि (स्त्री) ३ विघ्न प्रतिबंध।

पखवारा डा, स पु (स पक्ष + वार >) कृष्ण शुक्लो वा पक्ष २ अर्द्धमास, स मासार्द्ध।

पखारना, क्रि स (स प्रक्षालन) दे 'धोना'।

पखावज, स स्त्री (स पक्षवाद्य >) मृदङ्ग भेद, भक्ष्य वाद्यम्।

पखेरू, स पु [स पक्षालु (पु)] दे 'पक्षी'।

पखौं रा डा, स पु (स पक्ष >) अंसास्थि (न) भुजस्कन्धसंधि (पु)।

पग, स पु (स पदक) पद, पद, चरण न २ पद, क्रम ३ पादत्राण, चरणत्र।

—डंडी, स स्त्री, पदा, चरणवीथि (स्त्री), पथिकमार्ग, पद्धती।

पगडी, स स्त्री (स पग) उष्णीष, शिरोवेष्टन, बन्ध, वेष्टक, मौलिबन्ध।

—बाँधना, क्रि स, उष्णीष परिधा (जु उ अ) बध (क्र्य प अ)।

—उछालना, मु, लघू कृ, अपमन् (प्रे)।

—उतारना, मु, दे 'पगडी उछालना' २ लुण्ठ (भ्वा प स), धन अपहृ (भ्वा उ अ)।

—बदलना, मु, सौहार्द स्था (प्रे स्थापयति)।

पगना, क्रि अ (स पग >) स्नन सधु

पछाड़ना, क्रि स (हिं पछाड़) जय ति पद (प्र) २ (शत्रु) पराति (भ्वा आ अ)। **पछाड़ी**, स स्त्री दे पिछाड़ी।
पचारा, म प (फा) इश्तहार।
पट¹, स पु (स) वस्त्र, वसन, सुचल्क २ तिरस्करिणी व्यवधान प्रतिमारा ३ चित्रपट ४ धातुमय पत्र पट्ट पट्टिका।
—खोलना, क्रि स तिरस्करिणीं अपास विचल। (प्रे)
—मडप—वास, स पु (स) दे 'तम्बू'।
पट², क्रि वि (चट का अनु) झटिति, सपदि। पट (अनु) पतन-ताडन, ध्वनि (पु), पतिति।
पट⁴, स पु (देश) ऊरु (पु)। वि, अधो मुख, अधरोत्तर, अवमूर्धशय।
पट, स पु (स पट्ट) कपा(वा)ट सीट द्वार, द्वार् (स्त्री)।
—खोलना—बद करना, क्रि स, दे 'द्वार'।
पटकना, क्रि स (अनु पटक) उत्थाप्य भूमौ रभसा नि-अव पत् (प्रे) २ बाहुयुद्धे प्रति द्वन्द्विन जि (भ्वा प अ)।
पटकनी, स स्त्री (हिं पटकना) रभसा अध नि अव पात पतनम्।
—देना, क्रि स, दे 'पटकना'।
पट(टु)का, स पु (स पट्टक >) परिकर, कटि-बधनी-वलयम्।
—बाँधना, मु परिकर बध् (क्र प अ), उद्यत-सन्नद्ध (वि) भू।
पटचर, स पु (स) चौर, स्तेन। न, जीर्णवस्त्रम्।
पटड़ा रा, स पु (स पट्ट-क) काष्ठ दार,-फलक फलक २ काष्ठ-दार, पीठम्।
—कर देना, मु, निर्हली नि सत्त्वी कृ ३ अव उन्-मद् (प्रे) उच्छिद् (रु प अ)।
पटड़ी री, स स्त्री (हिं पटड़ा रा) पट्टक-क २ पट्टिका ३ पथा, चरणपथ (स्त्री), पाद चरण पथ।
पटना, स पु (स पट्टन >) कुसुमपुर, पुष्प पुर, पाटलिपुत्रम्।
पटना, क्रि अ (हि पट = भूमि की सतह के बराबर) आ-समा छाद् (कर्म), आ सं वृ (कर्म) २ व्याप् आस्तृ (कर्म) ३ पूर (कर्म) आ प्रम पूर् (कर्म) ४ मिल (कर्म) ५ समन् (दि आ अ), एकचित्ती भू ६ ऋणात् मुच (कर्म)।
पटपट, स स्त्री (अनु) पटपटाशब्द, पटपट ध्वनि (पु)। क्रि वि, सपटपटशब्दम्।
पटरानी, स स्त्री (स पट्टराज्ञी) पट्ट, देवी महिषी रानी, महिषी।
पटल, स प (स न) छदिस् (न) छदि (स्त्री) २ आवरण, आच्छादन ३ तिरस्करिणी, व्यवधान ४ आ,स्तर, फलक कं ५ दृष्टि-आवरण ६ समूह, पटली ७ अध्याय, परिच्छेद ८ चय, राशि (पु) ९ परिच्छद १० तिलक ११ दे 'मोतियाबिंद'।
पटवा, स पु (स पट्ट + हिं वाहा) *पट्टवाह, *पट्टहार।
पटवाना, क्रि प्रे, व 'पटना' के प्रे रूप।
पटवारगरी, स स्त्री (हिं पटवारी + फा गरी) ग्रामभूलेखत्व २ ग्रामभूलेखपदम्।
पटवारी, स पु (स पट्ट + हिं वार) *ग्राम भूलेखक।
पटसन, स पु (स पाट + शर्ण >) शण, अलसी, मसृणी।
पटह, स पु (स) दुदुभि (पु), भेरी, पणव।
पटहार, स पु, दे 'पटवा'।
पटा, स पु (स पट्ट क) काष्ठ पट्ट पीठ २ मिथ्याखड्ग ३ लगुड, दड।
पटाई, स स्त्री (हिं पटना) पटलन आच्छादनम् २ पटलाच्छादनभृति (स्त्री)।
पटाक, स स्त्री (अनु) तारध्वनि (पु), महा शब्द नाद।
पटाका खा, स पु (अनु पटाक) अग्निक्रीड नकगद, *पटाक।
पटाक्षेप, स पु (स) यवनिका यवनिकापात अपटी निपात अवपात।
पटाना, क्रि स, व 'पाटना' के प्रे रूप।
पटापट, क्रि वि (अनु पट) सपटपटशब्दम्। स स्त्री, पटपट शब्द।
पटु, वि (स) कुशल दक्ष निपुण, प्रवीण, निष्णात, विशारद, विदग्ध।
पटुता, स स्त्री (सं) कौशलम्, दक्षता,

नैपुण्यं ण, प्रावीण्य, वैचक्षण्य, पटुत्व, वैद ग्ध्यम्।

पटेबाज़, म पु (हि +फा) लगुडाभ्यासिन्, 'मध्यासियोध ।

पटेल, म पु (हि पट्टा) ग्रामणी (पु), ग्रामाध्यक्ष २ दक्षिणभारतवर्षे उपाधिभेद ।

पटोल-ल, म पु (स पटोल) लताराज अमृत(ता)-कटु नाग, फल, कुष्ठारि (पु), नागमदन ।

पट्ट, स पु (स पु न) पीठ ठी, उप आसन २ पट्टिका ३ धातुमय, पत्र पट्टिका ४ चर्मन् (न) फलक-क ५ पेषणपाषाण, शिला ६ उष्णीष ७ व्रण, बन्धन आवेष्टन ८ उत्तरीय ९ नगर १० चतुष्पथ-थ, शृंगाटक ११ राज, सिंहासन १२ कौशेय १३ शाण १४ दे 'पट्टा'।

पट्टन, म पु (स न) पत्तनं, पुर, नगर २ महानगरम्।

पट्टा, स पु (सं पट्ट) पट्टोल्लेख, आविहित कालात् भूम्यधिकारपत्र २ (कुक्कुरादीनां) ग्रैव ग्रीवापट ३ वेश, पाश-कल्प ४ पाठ ५ चर्ममय-कटिबन्धना परिकर ६ दे 'चप राम' ७ खड्गभेद ८ अधिकारपत्रम्।

पट्टे पर देना कि स, आविहितभयात् निरुपितमूल्येन दा अथवा विसृज् (तु प अ)।

पट्टी¹, स स्त्री (सं पट्टिका) काष्ठ, पट्टिका २ पाठ, प्रपाठक, ३ शिक्षा, उपदेश ४ वचनात्मकोपदेश, ५ (वस्त्रादिस्य) दीर्घ-खण्ड शकल ६ व्रण-बन्धन आवेष्टन ७ *नखावेष्टनी ८ औषधभेद, पट्टी ९ पंक्ति नति (स्त्री) १० प्रमाधिना केश ११ रिक्थभाग १२ सरवाया पथ-खाइन्ट १३ मिष्टान्नभेद ।

—बाँधना, कि स, पट्टिका बंध (क्र् प अ) व्रणं आवेष्ट् (चु)।

—दार, मं पु (हि+फा) अंशिन्, भाग ग्राहिन्।

—दारा, स स्त्री (हिं+फा) अंशित्व, भागग्राहित्वम्।

पट्टी², स स्त्री (स) अश्ववक्षोबन्धनरज्जु (स्त्री), कक्ष्या, वरत्रा २ ललाटभूषा ३ यन्त्रकम्।

पट्टू, म पु (हिं पट्टी) और्णपटभेद, नाशार ।

पट्ठा, म पुं (स पुष्ट) तरुण, युवक, युवन्, कुमारक २ शाव, पोत, डिंभ ३ मल्ल, बाहुयोध भिन् ४ दीर्घस्थूलपत्र ५ स्नसा, स्नायु (स्त्री), पेशी।

पठक, म पुं (सं) पाठक, वाचक ।

पठन, मं पु (म न) अध्ययनं, पाठ, अधीति (स्त्री), वाचन २ श्रावणं, उच्चारणम्।

—पाठन, स पु (म न) अध्ययनाध्या पनन्द्वे (द्वि)।

पठनीय, वि (स) पठितव्य, अध्येतव्य, पाठ्य, वाचनीय, पठन अध्ययन,-अर्ह ।

पठान, म पु (पश्तो पुख्ताना) यवनजाति-भेद, *पख्तून *पठान ।

पठानी, स स्त्री (हिं पठान) पख्तूनी, पठानी २ पठानत्व, पख्तूनत्वम्।

पठार, स पु (स प्रस्तार >) अधित्यका, २ प्रस्तार ।

पठावनी, स स्त्री (स प्रस्थापनम्) प्रपण, प्रहिति (स्त्री) २ प्रस्थापनभृति ।(स्त्री)।

पठित, (वि स) अधीत, वाचित २ श्राविन ३ साक्षर, विद्यावत, विद्वस्।

पड़छत्ती (त्ती), सं स्त्री दे 'परछत्ती'।

पड़ताल, म स्त्री (स परितोलन >) अनु-सधान, अन्वेषण २ अन्वीक्षण, विमर्श, निरूपणम्।

—करना, कि स, अनुसंधा (जु उ अ), अन्विष् (दि प से) २ विमृश् (तु प अ), निरूप (चु), अनु परि ईक्ष् (भ्वा आ से)।

पड़तालना, कि स, दे 'पड़ताल करना'।

पड़ती, मं स्त्री (हिं पड़ना) अकृष्ट अहल्य, भूमि (स्त्री)।

पड़दादा, म पु (स प्र+तात >) प्रपिता मह ।

पड़दादी, मं स्त्री (हिं पड़दादा) प्रपिता मही।

पड़ना, कि अ (स पतन) अव नि, पत् (भ्वा प से), भ्रश-स्रंस् (भ्वा आ से), च्यु (भ्वा आ अ) २ घट्-वृत् (भ्वा आ. से) आ स पद प्रसन (कर्म) संवृत, स

ममाप्न (दि प्मा अ) ३ मविश् (तु प अ), विश्रम् (दि प से) शी (अ आ स), स्वप् (ज प अ) ४ रुग्ण (वि) वृत् रोगेण अभिभू (कर्म) ५ प्रविश् (तु प अ)।

क्या पड़ा है मु , कोऽर्थ , किं प्रयोजनम् ।

पड़नाना, स पुं (सं प्र+दे नाना) प्रमाता मह ।

पड़नानी, स स्त्री (हिं पड़नाना) प्रमाता मही ।

पड(र)वा स स्त्री , दे 'प्रतिपदा' ।

पड़वाल, स पुं , दे परवाल' ।

पड़ाव, स पु (हिं पड़ना) प्रयाणभग , निवेश अवस्थिति (स्त्री) २ निवेश विश्राम, स्थानम् ।

पड़ोस, स पु (स प्रतिवास या प्रतिवेश) निकट-समीप-सन्निहित,-देश , सनिवि (पु), २ सानिध्य प्रातिवेश्यम् ।

पड़ोसी, स पु (हिं पड़ोस) प्रतिवेश इय शिन्, प्रतिवासिन्, प्रातिवेशिक , [पड़ो सिन (स्त्री)-प्रति, वेशिनी-वासिनी इ]।

पढ़ना, क्रि स (स पठन) पठ् (भ्वा प से), अधि इ (अ आ अ), (अपने आप पढ़ना) अनुवच् (प्रे) २ वच् (प्रे), उच्चर् (प्रे) २ अभ्यस् (दि प से), आवृत् (प्रे)। स पु तथा भाव, पाठ, पठन, अध्ययन, वाचन, उच्चारण, अभ्यसन, अभ्यास , आवर्तन, श्रावणम् ।

—लिखना, स पु , पाठलेखौ पठनलखने, विद्याभ्यास , शिक्षा ।

पढ़नेयोग्य, वि , दे 'पठनीय' ।

पढ़नेवाला, स पु, अध्येतृ पठितृ (पु) वाचक , पाठक , अधीयान [अध्येत्री, पठित्री, पाठिका (स्त्री)]।

पढ़ा हुआ, वि , दे 'पठित' ।

पढ़वाना, क्रि प्रे , व 'पढ़ना' के प्रे रूप ।

पढ़ा, वि (स पठित, दे)।

—लिखा, वि , विद्वस् , उपात्तविद्य, साक्षर, शिक्षित, व्युत्पन्न ।

पढ़ाई, स स्त्री (हि पढ़ना) दे 'पढ़ना' स पु । २ अध्यापन, पाठन, शिक्षण ३ अध्यापन, शैली रीति (स्त्री) ४ अध्ययन अध्यापन, शुल्क-वेतनम् ।

पढ़ाना, क्रि स (हिं पढ़ना) पठ शिक्ष् (प्रे), अधि इ (प्रे अध्यापयति), शास् (अ प से), उपदिश् (तु प अ)। स पु तथा भाव, अध्यापन, उपदेश , शिक्षा क्षण, पाठनम् ।

पढ़ानेवाला, स पु, अध्यापक , शिक्षक , गुरु , उपदेष्टृ शास्तृ (पु)।

पण, स पु (स) द्यूत, देवन, दुरोदर, कैतव २ ग्लह (शर्त) ३ मूल्य, निर्वेश ४ शुल्क ल्क, प्रतिफल ५ धन, रिक्थ ६ पणितव्य, विक्रेयवस्तु (न) ७ व्यवसाय , व्यवहार ८ स्तुति (स्त्री) ९ मुष्टिमान १० (पैसा) ताम्रमुद्राभेद , पणमुद्रा ।

पतग, स पु (स >) पत्रचिल्ल ला, चिल्ला भास, *पतग २ सूर्य ३ खग ४ शलभ ।

—उड़ाना, क्रि स, पत्रचिल्ल पतग उड्डी (प्रे उड्डाययति)।

—बाज़, स पु , पतगोड्डायक ।

—बाज़ी, स स्त्री , पतगक्रीडा ।

पतंगा, स पु (स पतग) शलभ २ स्फुलिंग , अग्निकण ।

पतञ्जलि, स पुं (सं) योगदर्शनकारऋषि विशेष २ महाभाष्यकारो मुनिविशेष ।

पत¹, स पु (स पति) भर्तृ, धव २ प्रभु , स्वामिन् ।

पत², सं स्त्री (स प्रत्यय >) प्रतिष्ठा, गौरव, मान , यशस् (न) कीर्ति (स्त्री)।

—उतारना या लेना, मु , अप अव मन् (प्र), दुष (प्रे दूषयति)।

—रखना, क्रि स , गौरव रक्ष् (भ्वा प से)।

पतझड़, सं स्त्री (स पत्र+हिं झड़ना) शिशिर , शिशिरर्तु (पु) (माघफाल्गुन मासौ) २ अवनतिकाल , संकटमय समय ।

पतत्प्रकर्ष, स पु (स) काव्यदोषभेद (सा०)।

पतत्र, स पु (स न) पक्ष , बाज , छद २ यान, वाहन, युग्य, वाह ।

पतत्रि, स पु (स) पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, खग , विहग ।

पतन, स पु (स न) अव नि-अध , पात ,

पत्र म पु (स न) पर्ण छदन, पलाश, दल ल ग्द - (पुस्तकादीना) पत्र, पर्ण, पृष्ठ ३ समाचार-वृत्त पत्र ४ सदेश, पत्र, लेख ग्ध्य ५ लेखपत्र ६ (धात्वादे पट्ट इ, पत्रक-कम्)

—कार, म पु (स) वृत्तपत्र लेखक सपादक ।

—वाहक, म पु (स) लेखहार, सदेशहर ।

—व्यवहार, म पु (स) पत्रविनिमय, लेखव्यवहार ।

पत्राधान, स पु (स न) मशीपी-सी, मसि, वि मि (सब (स्त्री)।

पत्रा, स पु (स पत्र>) पचाग, पजिका २ पृष्ठ, पर्ण, पत्रम् ।

पत्राचार, स पु (स), पत्र,-व्यवहार विनिमय ।

पत्रावलि, स स्त्री (स) पर्ण-दल छद-श्रेणी राजी-आवली २ पत्रभग ।

पत्रिका, स स्त्री (स) सदेश पत्र २ साम यिक, पुस्तक ग्रथ ३, समाचार वृत्त, पत्र ४ लघुलेख ।

पत्री, स स्त्री (स) लिपिपत्रिका, लघुलख २ सदेश, पत्रम् ।

जन्म—, स स्त्री (स) जन्मपत्रिका ।

पथ, स पु (स) पथिन् (पु), मार्ग, अध्वन् (पु), वर्त्मन् (न), पदवी वि (स्त्री) २ रीति (स्त्री), विधानम् ।

—गामी, स पु दे 'पथिक'।

—(प्र)दर्शक, म पु (स) मार्ग-दर्शक उप देशक, नेतृ, नायक ।

पथरी, स स्त्री (हिं पत्थर) प्रस्तर कटोरा रिका २ अश्मरी, अश्मरी र ३ अष्ठीला (स्त्री बहु), पाषाणशकला (पु बहु) ४ दे 'चरमक' ५ पक्षिजठर र ६ शमर शाणी ।

पथरीला, वि (हिं पत्थर) प्रस्तर उपल, सकुल आकीर्ण-बहुल ।

पथिक, स पु (स) अध्वग, अध्वनीन, अध्वन्य, पाथ, पथिल, यात्रि(तृ)क, यातृ-गतृ (पु), पथक ।

पथ्य, स पु (स न) उपयुक्ताहार । २ मंगलम् । वि, स्वास्थ्यकर, आरोग्यावह ।

पद, स पु (स न) पाद, चरण, अंघ्रि (पु) २ पाद पद चिह्न मुद्रा ३ पग, पद पाद न्याम विक्षेप, वि,क्रम, ४ स्थान, स्थिति (स्त्री), पदवी ५ वृत्ति (स्त्री), व्यवसाय ५ पद्य, छ दस (न) ६ पदपाद, छदश्चरण ७ उपाधि (पु) मानपद ८ सुप्तिडन्त प्रातिपदिक, सविभक्तिक शब्द (व्या) ९ भक्तिगीति (स्त्री) १० नि श्रे यस, मुक्ति (स्त्री)।

—चर, स पु (स) पदग, पदातिक ति (पु)।

—च्छेद, स पु (स) समस्तसमासयुक्तवाक्य स्थ पदाना विभाग (व्या)।

—च्युत, वि (स) भ्रष्टाधिकार, अधि कारच्युत ।

—दलित, वि (स) पाद पद, आक्रान्त मर्दित २ अपत्रपत, अवधीरित ।

पदक, स पु (स न) कीर्ति प्रतिष्ठा, मुद्रा ।

पदवी, स स्त्री (स) पद, वृत्ति स्थिति, (स्त्री) स्थान २ उपाधि (पु), उपमान, पद, कीर्तिचिह्न ३ मार्ग ४ रीति (स्त्री)।

पदाति, स पु (स) प(पा)दातिक, पदिक, पत्ति (पु) प(पा)दग, प(पा)दात (पु), पादात ।

पदाना, क्रि स व 'पदना' के प्रे रूप ।

पदार्थ, स पु (स) मूर्त, द्रव्य, वस्तु (न), अर्थ २ शब्दार्थ ३ धर्मार्थकाममोक्षा ४ द्रव्यगुणकर्मादय प्रमेयविषया (दर्शन)।

—विज्ञान स पु (स न) विज्ञान भौतिक शास्त्रम् ।

पदार्पण, स पु (स न) चरणार्पण, पादन्य सन, शुभागमनम् ।

पदावली, स स्त्री (स) शब्दश्रेणी २ गीत सग्रह ।

पद्धति, स स्त्री (स) मार्ग, पथ, पथिन् २ पंक्ति तति (स्त्री) ३ रीति (स्त्री), परिपाटी टि (स्त्री) ४ प्रकार, विधा ५ सस्कारविधिदर्शको ग्रन्थ ।

पद्धरि री, स स्त्री (स पद्धटिका) मात्रिकसमन भेद (मा०) प्रतिचरण १६ मात्रा, अन्त म जगण, उ० नभ रैनि मदन नमनय विराम । पद अदरत कमक दमनाम ।]

पद्म, स पु (स न) सरोज, पुण्डरीक, दे

'कमल' २ विन्गोगपुष्पविशेष ३ घोन्दसंख्या निनी सख्या (т १००००००००००००००००)।
—कद, स पु (स पु न) शालु(लू)क, जल्लुक, पद्ममूलम्।
—नाभ भि , सं पु (स) दे 'विष्णु'।
—पाणि, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ सूय ३ बुद्ध।
—योनि, स पु (स) दे ब्रह्मा।
—राग स पु (स) लाहितक, लोहित, शोणरत्न, कुरविन्दकम्।
पद्मा, स स्री (स) दे लक्ष्मी।
पद्माकर, स पु (स) तग(ड़ा)ग सरोवर, सरसी, सरस (न), सरकम्।
पद्माक्ष, स स्री (स) विष्णु २ सूय ३ पद्मबीजम्। वि (स) कजाक्ष कमलनयन, कमलनेत्र।
पद्मालया, स स्री (स) कमला, पद्मा, श्री, इन्दिरा, रमा।
पद्मासन, स पु (स न) योगासनविशेष। २ (स पु) दे 'ब्रह्मा'।
पद्मिनी, स स्री (स) कमलिनी नलिनी, बिसिनी २ दे 'पद्माकर' ३ स्त्रीभेदविशेष, (जो कामलागी सुशीला, सुन्दरी तथा पतिव्रता हो) ४ हस्तिनी ५ कि लक्ष्मी।
—वल्लभ, स पु (स) सूय।
पद्य, स पु (स न) छन्दस (न), श्लोक २ काव्य, कविता।
—मय, वि (स) पद्य, रूप-आत्मक, छन्दो बद्ध।
पधारना, स प (हिं पग+धरना) गमन, प्रस्थान २ उप, आगमन, प्राप्तम्।
पन¹, स पु (स पण) प्रतिज्ञा, दृढसकल्प।
पन², स पु [स पवन (न)>] आयुषो चतुर्थभाग।
पन³, प्रत्यय (हि)त्व,-ता (उ बाल्पन बाल्यत्व-ता।
पनघट, स पु (हि पानी+घाट) घट्ट-ट्टी।
पनचक्की, स स्री (हि पानी+चक्की) जल, चक्री पवनी-यन्त्रम्।
पनडुब्बा, स पु (हिं पानी+डूबना) निमज्ज (पु), अवगाहक २ मगभेद ३ जलकुक्कु।
पनडुब्बी, स स्री (पूर्व) •जलमग्ना (नौका)।
पनपना, क्रि अ (स पर्ण) पुन पल्लवित हरित (वि) भू २ पुन स्वास्थ्य लभ् (स्वा आ अ) अथवा पुष (दि प अ)।
पनपाना, क्रि स , व 'पनपना' के प्रे रूप।
पनवाडी, स स्री (हिं पान+वाडो) •पर्ण वाटिका ताम्बूलवाटिका।
पनवाडी, स पु (हिं पान) दे 'तमोली'।
पनस, स पु (स) (वृक्ष) कण्टकिफल, फल, स्थूल, मृदङ्गफल (फल) पनस, दे 'कटहल'।
पनसारी, स पु दे 'पसारी'।
पनसाल स स्री (स पानीयशाला) प्रपा, दे सबील'।
पनहा, स पु (स परिणाह) दे 'चौड़ाई' २ गूढाशय, मर्मन् (न)।
पनहारा स पु (स पानीयहार) जल, वाहक बोढ़ (पु)।
पनहारिन री, स स्री (हिं पनहारा) जल वाहिका-वोढी।
पनाती, स पु [स प्रनप्तृ (पु)] प्रपौत्र २ प्रदौहित्र।
पनारा-ला, स पु , दे 'परनाला'।
पनाह, स स्री (फा) परि , त्राण, रक्षा २ रक्षास्थान, आश्रय।
पनीर, स पु (फ़ा) कूर्चिका २ निर्जल दधि (न)।
पनीरी, स स्री (स पर्ण>) पर्णबीजानि (न बहु)।
पन्नग, सं पु (स) दे 'साँप'।
पन्ना, स पु (स पर्ण>) पुस्तक, पत्र पृष्ठ २ धातुपट्ट-ट्ट ३ मरकत, हरिन्मणि (पु), अश्मगर्भज, सौपर्ण ४ देशीयोपानह उपरिभागम्।
पन्नी, स स्री (हिं पन्ना) त्रपु पित्तल, पत्रम्।
पपडा, स पु (स पर्पट >) शुष्ककाष्ठलकखण्ड २ रोटिकाया बाह्यभाग।
पपड़ी, स स्री (हि पपडा) बाह्य, फल-वेष्टन, वल्क, शुष्कत्वम् (स्री) २ दे 'खुरण्ड' ३ पर्पटक ४ वल्कल-लम्।
पपनी, स स्री (देश) दे. 'बरौनी'।

पपीहा, स पु (देश) चातक मेघजीवन, सारंग, स्तोकक ।
पपीता, स पु (देश) स्थूलैरण्ड, महापक्षा हुल २ पीपीकर, क्रीडनकभेद ।
पपीहा, स पु (अनु) दे 'चातक' ।
पपैया, स पु (अनु) चातक २ पीपीकर, क्रीडनकभेद ३ आम्रवृक्षक ।
पपोटा, स पुं (स प्रपट >) दे 'पलक' ।
पब्लिक, स स्त्री (अ) लोका, जनता, जना । वि, सार्व, जनिक नवीन लौकिक ।
—प्रासिक्यूटर, स पु (अ) राजकीय प्राभियोक्तृ ।
—वर्क्स डिपार्टमेंट, स पु (अ) लोक निर्माणविभाग ।
पब्लिशर, स पु (अ) पुस्तक ग्रंथ प्रकाशक । दे 'प्रकाशक' ।
पय, स पु [स पयस (न)] दुग्ध, क्षीर २ जल ३ अन्नम् ।
पयस्विनी, स स्त्री (स) क्षारिणी दोग्ध्री, दुग्धदा, दुधा ।
पयाल, स पुं (स पलाल न) निष्फलकाट, निस्सस्यो धान्यनाल ।
पयोज, स पु (स न) सरोज, पद्म, दे 'कमल' ।
पयोद, स पुं (स) मेघ, दे 'बादल' ।
पयोधर, स पु (स) कुच, स्तन २ ऊधस् (न), आपीन ३ मेघ ।
पयोधि, **पयोनिधि**, } स पु (स) सागर, समुद्र ।
परंच, अव्य (स पर+च) अपर च, अपि च, अथ च २ तथापि, किंतु, परंतु ।
परंतप, वि (स) अरिमर्दन, रिपुसूदन ।
परंतु, अव्य (स पर+तु) किंतु, पर, तथापि ।
परंपरा, स स्त्री (स) अनुक्रम, आनुपूर्व्यं, पूर्वापरक्रम २ सतान, सतति (स्त्री) ३ परिपाटी-टि (स्त्री) प्रथा ।
—गत, वि (स) पारंपरीण, साम्प्रदायिक पौराणिक [-की (स्त्री)], क्रम, आगत प्राप्त ।
पर[१], वि (स) अपर, अन्य, इतर, व्यतिरिक्त, आत्मभिन्न २ परकीय, अन्यदीय, अन्य, पर (समासारम्भ में), अन्यस्य, परस्य ३ दूर, दूरस्थ-वर्तिन्, विप्रकृष्ट ४ अपर, उत्तर, उत्तरकालीन, पाश्चात्य ५ अतिरिक्त, भिन्न ६ उत्तम, श्रेष्ठ ७ लीन, मग्न, परायण । (उ स्वार्थपर-स्वार्थमग्न) । स पु (स) शत्रु अरि (पु) ।
पर[२], अव्य (स पर) तदनु, तत, तत्पश्चात् २ परतु किंतु, तथापि ।
पर, प्रत्य (स उपरि) प्राय सप्तमी विभक्ति से (उ कुर्सी पर-आसने) अधि, उपरिष्टात् ।
पर[४], स पु (फ़ा) पक्ष, गरुत (पु) वाज ।
—दार, वि सपक्ष, वाजिन्, पक्षिन्, गरुत्मत ।
—कट जाना, मु, अशक्त असमर्थ (वि) भू ।
—न मारना, मु, गन्तु न शक (स्वा प अ) ।
—निकलना, मु, दृप (दि प अ), गर्व् (भ्वा प से) प्रगल्भ (भ्वा आ से) ।
परकार, सं पु (फ़ा) ।
परकीय, वि (सं) दे 'पर'[१](२) ।
परकीया, स स्त्री (स) नायिकाभेद, पर पुरुषानुरागिणी ।
परकोटा, स पु (स परिकूट >) प्राकार, वप्र प्र, साल, वरण न
परख, स स्त्री (स परीक्षा) विमर्श, सूक्ष्म, निरूपण परीक्षण-ज्ञान २ विवेक विचारणा परिच्छेद ।
परखना, क्रि स (स परीक्षण) परीक्ष् (भ्वा आ से) विमृश (त प अ) २ विविच (रु उ अ), विनिश्चि (स्वा उ अ), परिच्छिद् (रु प अ) । स पुं, दे 'परख' ।
परखनेवाला, स पु, दे 'परीक्षक' ।
परखा हुआ, वि, दे 'परीक्षित' ।
परगना, स पु (फ़ा.) ग्रामवर्गविभाग, ग्रामसमूह, *परिगण ।
परगहनी, स स्त्री (स प्रग्रहण >) सुवर्णकारस्य नालाकार उपकरणभेद, *प्रग्रहणी ।
परचना, क्रि अ (स परिचयन) परिचि (स्वा उ अ), सुपरिचित (वि) भू, रूढ बद्ध-सख्य-सौहृद (वि) भू ।
परचा, स पु (फ़ा) (पराशाखा) प्रश्न-पत्र २ संदेश, पत्र ३ पत्रखड-कम् ।
परचाना, क्रि स, दे 'परचना' के प्रे रूप ।

परचून, स पु (स पर-अन्य+चूर्ण= आटा>) प्रकीर्ण विविध, पण्य *परचूर्णम् ।
परचूनिया, सं पु (हिं परचून) स्तोकश अल्पश विक्रयिन् विक्रेतृ, खडवणिज (पु)।
परछत्ती, स स्त्री (स प्र+हिं छत) *प्र छदि (स्त्री)-न्मि (न) पटल २ तृण पल्ल दि ।
परछन, स स्त्री (स परि+अर्चन) (वधू सबधिनाभि वरस्य) पर्यर्चनं पर्यर्चा।
परछाई, स स्त्री (स प्रतिच्छाया) छाया छायाकृति (स्त्री) २ प्रतिबिंब व प्रति, रूप फलमूर्ति (स्त्री)।
परनौट, स पु (हि परजा) *गृहभूमिकर ।
परतत्र वि (स) पराधीन परायत्त पराजित परवश, परावलबिन्, परनिघ्न ।
परतत्रता, स स्त्री (स) पराधीनता पराश्रय परावलम्बन परवशता इ ।
परत, स स्त्री (स पत्र>) अथवा स्तर तल २ पुट भग वलि (स्त्री) ३ दे 'पपनी (१)।
परतल, स पु (स परतल>) *अश्व गोणी प्रसेव भार ।
—का टट्टू, स प तृष्य स्थौरिन् ।
परतला, स पु (स परि+तल) खड्ग कृपाण, पट्टिका ।
परती, स स्त्री, दे 'पड़ती'।
परदा, स पु (फा) अपटी, तिरस्करिणी वातप्रच्छद, न(य)वनिका, प्रतिमा (सी)रा २ व्यवधान ३ अवगुठन ठिका ४ (नारीणा) एकान्तवास, परपुरुषात्प्रच्छन ५ स्तर तल ६ व्यवधायककुड्य ७ पटल, आवरक ८ आवरण, आच्छादन ९ वाद्याना स्वरोत्पत्तिस्थानम् ।
—उठाना या खोलना, मु, रहस्य उद् प्रका *शनि (ना धा)प्रकाश (प्रे)।*
—करना या रखना, मु, अवगुंठ् (चु), अन्तःपुरे वस् (भ्वा प अ)।
—नशीन, वि (फा) अवगुठनवती अन पुरवासिनी।
परदादा, स पु, दे 'पड़दादा'।
परदेस, स पु (स परदेश) विदेश ।
परदेसी, स पु (स परदेशीय) विदेशीय, पारदेशिक, वैदेशिक'। वि, अन्य पर,-देशीय।

परनाना, स पु, दे 'पड़नाना'।
परनाला, स पु (स) प्रणाल ।
परनाली, स स्त्री (स प्रणाली) परि(री)-वाह, सरणि (स्त्री) निगम जलनिस्सरण मार्ग जलोच्छ्वास ।
पर(ड)पोता, स पु (स प्रपौत्र) पुत्रपौत्र, पौत्रपुत्र ।
पर(ड)पोती, स स्त्री (स प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री।
परब्रह्म, स पु (स न) परमेश्वर, निर्गुणो जगदीश्वर ।
परभृत, स स्त्री (स पु) कोकिल, पिक ।
परम, वि (स) उत्तम, श्रेष्ठ २ आदिम, प्रथम ३ प्रधान, मुख्य ३ अत्यधिक अत्यंत।
—गति, स स्त्री (स) / **—धाम**, स पु [स -मन्(न)] / **—पद**, स पु (स न) } मोक्ष, मुक्ति (स्त्री), अपवर्ग, नि श्रेयसम्।
—ज्ञान, स पु (स न) ब्रह्मज्ञानम्।
—तत्त्व, स पु (स न) मूलसत्ता २ ईश्वर ।
—पिता, स पु [स तृ(पु)] / **—पुरुष**, स पु (स) / **—ब्रह्म**, स पु [स -ह्मन् (न)] } परमेश्वर सच्चिदा नदो जग दीश्वर-।
—हंस, स पु (स) सन्यासिभेद २ ईश्वर ।
परमानंद, वि (अ) स्थिर, स्थायिन् ।
परमाक्षर, स पु (स न) ओङ्कार, प्रणव ।
परमाणु स पु (स) भूजलानलानिलाना सूक्ष्मतमो लव ।
—वाद, स पु (स) परमाणुभ्यो जगद्रचना इति न्यायवैशेषिकसिद्धात ।
परमात्मा, स पु (स त्मन्) परमेश्वर, परब्रह्म (न) जगदीश्वर, वि, भाद् (पु) चोम (अव्य) सच्चिदानन्द ।
परमानंद, स पु (स) अत्यतसुख २ ब्रह्म सायुज्यसुख ३ आनदस्वरूप ब्रह्म (न)।
परमान्न, स पु (स न) पायस -स, क्षीरिका।
परमायु, स स्त्री [स -युस् (न)] अधिका धिकायुस (न), जीवनसीमा (यह मनुष्यों की १२० वर्ष है)।
परमार्थ, स पु (स) उत्कृष्टवस्तु (न) २ यथार्थतत्त्व ३ मोक्ष ४ सुखम्।

परमार्थी वि (स र्थिन्) तत्त्वज्ञानाभिलाषिन् २ मुमुक्षु, मोक्षेच्छुक।

परमेश्वर, स पु (स) दे 'परमात्मा' २ विष्णु ३ शिव।

परला, वि (स पर) पर, परस्थ, परवर्तिन्, २ अनन्तर निरन्तराल ३ दूर, दूर-स्थ वर्तिन्।

परलोक, स पु (स) लोकान्तर २ देहान्तर प्राप्ति (स्त्री), प्रेत्यभाव, पुनर्जन्मन् (न)।

—गमन, स पु (स न) मृत्यु (पु) निधनम्।

—वासी, वि (स सिन्) मृत, विपन्न, दिवगत स्वर्गिन्।

—सिधारना, मु, दिव-स्वर्गं धनत्वं गम्।

परवरदिगार, स पु (फा) पालक २ ईश्वर।

परवरिश, स स्त्री (फा) पालन, पोषण भरणम्।

—करना, क्रि स, परि प्रति पा (प्रे पालयति) संवृध परिपुष (प्रे)।

परवल, स पुं (स पटोल) दे 'परोर'।

परवश श्य, वि (स) दे परतन्त्र'।

परवशता, स स्त्री (स) दे परतन्त्रता'।

परवा[1], स स्त्री (फ) आशंका चिंता, व्यग्रता, उद्वेग २ आश्रय, अवलंब।

परवा[2], स स्त्री (स प्रतिपदा' दे०)

परवाज़, स स्त्री (फा) उड्डयन, उत्पतन, डी विसर्पणम् २ गर्व, अवलेप।

परवानगी, सं स्त्री (फा) अनुमति (स्त्री), अनुज्ञा।

परवाना, सं पु (फा) आज्ञा शासन अनुज्ञा पत्र २ पतंग शलभ, दीपशत्रु (पु)।

—राहदारी, स पु दे 'पासपोर्ट'।

परवाल, स पु (सं पर+वाल >) पक्ष्म प्रकोप।

परशु, सं पुं (स) पशु (पु) परश्वध पर्श्वध कुठार।

—राम, सं पु (स) भार्गव, जामदग्न्य, पर्शुराम।

परसा, सं पु, दे 'परशु'।

परसाल, स पु (सं पर+फा साल) (पिछला) गतवर्ष परुत् (अव्य) २ (आगामी) उत्तर-पर-आगामि वर्षम्। क्रि वि, परुत्, गतवर्षे २ आगामि,-वत्सरे-वर्षे।

परसों, क्रि वि [स परश्व (अव्य)] श्व परदिन २ ह्य पूर्वदिनम्।

परस्पर, क्रि वि (स परस्पर) अन्योन्य, इतरेतर, मिथ (सब अव्य)।

—का, वि, परस्परस्य अन्योऽन्यस्य इतरेतरस्य (केवल एकवचन में), परस्पर, अन्योन्य, इतरेतर, मिथ।

परहित, स पु (सं न) दे 'परोपकार'।

परहेज़, स पु (फा) कुपथ्यत्याग, पथ्य सेवन, मित-अशन पान, आहार-पानाशन,-नियम २ सयम, जितेन्द्रियता, दोष-दुर्गुण, त्याग।

—करना, क्रि स, कुपथ्यं त्यज् (भ्वा प अ), २ दोषान् परि वि-वर्ज् (चु)।

—गार, स पु (फा) कुपथ्यत्यागिन्, सयताहार २ सयमिन्, जितेन्द्रिय।

—गारी, सं स्त्री (फा) दे 'परहेज' (१-२)।

परोंठा, स पु (हि पलटना?) *परम घृत गर्भ, रोटिका, परोठ।

परात, स पु (म) मृत्यु, निधनम्।

—काल, स पु (स) मृत्युसमय २ मुमुर्षुता देहत्यागकाल।

परा[1], स स्त्री (सं) ब्रह्म-उपनिषद्, विद्या। वि स्त्री (स) परवर्तिनी दूरस्था २ श्रेष्ठा।

परा[2], स पु (फा पर-पक्ष?) पंक्ति-तति (स्त्री)।

पराकाष्ठा, स स्त्री (स) अतिभूमि परा कोटि (स्त्री), चरमसीमा, परमावधि (पु), अत्यन्तता।

पराक्रम, स पु (सं) वीर्यं, शौर्यं, विक्रम, पौरुष, ओजस्-महस् तरस (न), रणोत्साह।

पराक्रमी, वि (सं मिन्) वीर, शूर, विक्रमिन्, विक्रान्त, वीर्यविक्रम, शालिन्, साहसिन् [-नी (स्त्री)], तेजस्विन् [नी (स्त्री)]।

पराग, स पुं (सं) पुष्प-कुसुम धूलि (स्त्री)-रजम् (न)-रेणु (पु) २ रजस, धूलि ३ स्नानीयसुगंधिचूर्णं ४ चंदनं ५ कपूर-रजस।

पराङ्मुख, वि (सं) विमुख, पराचीन २ प्रतिकूल, विपरीत, विरक्त [पराङ्मुखी (स्त्री)]।

पराजय, सं पु (सं) परामव, हारी-रि (स्त्री) भंग।

पराजित, वि (स) हारित, पराभूत, निर्-वि, जित।

परात, स स्त्री (म पात्र>) पारीत्रा।

पराधीन, वि (स) दे 'परतंत्र'।

पराधीनता, स स्त्री (स) 'परतंत्रता'।

पराभव, स पु (स) दे 'पराजय' २ तिरस्कार, मानहानि (स्त्री) ३ विनाश।

पराभूत, वि (स) दे पराजित' २ तिरस्कृत ३ ध्वस्त, नष्ट।

परामर्श, स पु (स) विवेचन विचारणा, चिंतन, मंत्रणा २ उपदेश अनुशासनम्।

परायण, वि (स) लग्न, मग्न, प्रवृत्त पर, निरत (प्राय समासान्त मे उ धर्मपरायण= धर्मपर इ)।

पराया, वि पु (स पर) दे 'पर[१] (२)।

परार, स पु [स परारि (अव्य)] पूर्वतर वत्सर, गततृतीयवर्ष पूर्व।

परार्द्ध, स पु (स न) शत-ख, अष्टादशाक वती संख्या (१०००००००००००००००००)।

परावर, वि (स) पूर्वापर २ निकटदूर ३ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

परावर्त, स पु (स) (निर्णयादिकस्य) परावृत्या, वृत्ति (स्त्री) वर्तनम्।

—व्यवहार, स पु (स) अभियोगस्य निर्णयस्य वा पुनर्विचार।

परावर्तन, स पु (स न) प्रतिनि नि परावृत्या, वृत्ति (स्त्री)-वर्तनं, अप, क्रमण-सरण यानम्।

पराशर, स पु (स) व्यासपितृ।

पराश्रय, स पु (स) अन्य पर, सश्रय अवलम्ब-अवलबन २ दे 'परतंत्रता'।

पराश्रित, वि (स) अन्य पर,-सश्रित-अवलंबित २ दे 'परतंत्र'।

परासु, वि (स) प्रेत-ता-त, मृत-ता-तम्, परेत-ता-त, निर्जीव-वा-व, प्रणीत-ता-तम्।

परास्त, वि (स) दे 'पराजित'।

पराह्ण, स पु (स) अपराह्ण, विकाल।

परिंदा, स पु (फा) पक्षिन्, पत्रिन्, पतत्रिन्, खग।

परिकर, स पु (स) परिजन, अनुचरवर्ग २ कटिबंध, प्रगाढगात्रिकाबंध ३ कुटुम्ब ४ समूह ५ अर्थालंकारभेद (सा)।

परिकल्पित, वि (स) रचित, आविष्कृत २ कल्पित, उद्भावित ३ निश्चित।

परिक्रमा, स स्त्री (स-म) प्रदक्षिण-णा-णं, (पूजार्थं) परिभ्रमणम्।

—करना, क्रि स, परिक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ), (पूजार्थं) परि भ्रम् (भ्वा प से) प्रदक्षिणा कृ।

परिखा, स स्त्री (स) खात, खेयम्।

परिख्यात, वि (स) विख्यात, विश्रुत।

परिगणन, स पु (स न) संख्यान, सम्यक् गणनम्।

परिगृहीत, वि (स) स्वीकृत, उररीकृत २ प्राप्त, लब्ध २ अंतर्भूत, समाविष्ट।

परिग्रह, स पु (स) आदान, ग्रहण, प्रतिग्रह २ लब्धि प्राप्ति (स्त्री) ३ धनादि संग्रह ४ स्त्री-अंगी,-कार ५ विवाह ६ पत्नी ७ परिजन, परिवार ८ परिवेष्टनम्।

परिघ, स पु (स) परिघातन लोहमुसलगुड २ परि,-घात हनन ३ अर्गल-ला-ली ४ मुद्गर ५ शूल ६ कलस ७ भवन प्रतिबंध, बाधा।

परिचय, स पु (स) परि, ज्ञान, अभिज्ञता, बोध २ प्रमाण, उपपत्ति (स्त्री) ३ अभ्यास।

परिचर, स पु (स) अनुचर, सेवक, दे 'परिचारक'।

परिचर्या, स स्त्री (स) सेवा, शुश्रूषा षणा, उपस्थान, उपचार, उपासनम्।

परिचायक, स पु (स) परिचयदायक, परि-अभि, ज्ञापक २ सूचक, द्योतक, बोधक, निर्देशक, ज्ञापक। परिचायिका (स्त्री)।

परिचारक, स पु (स) सेवक, किंकर, दास, भृत्य, प्रेष्य, भुजिष्य, नियोज्य।

परिचालन, स पु (स न) (कार्य) निर्वाह सचालन २ प्रचोदना, प्रेरणा, प्रोत्साहनम्।

परिचित, वि (स) अभि परि ज्ञात, परिचयविशिष्ट २ ज्ञात, बुद्ध, विदित।

परिच्छद, स पु (स) परिधान, वेश ष, वसन २ आच्छादन ३ राजचिह्नानि (न बहु) ४ राजसेवकवर्ग ५ परिजन, *परिवार, कुल ६, उपस्कर, संभार, सामग्री।

परिच्छेद, स पु (स) अध्याय, प्रकरण,

उल्लाम, उच्छ्वाम २ विभजन, खटन ३ मीमा, इयत्ता ४ विवेक ५ निर्णय ६ विभाग, विभाजनम्।

परिजन, सं पु (स) परिवार, कुटुंब, कुल २ दास अनुचर,-वर्ग, परिवार।

परिणत, वि (स) विकृत, रूपांतर विकार प्राप्त, सविकार २ पक्व ३ जीर्ण, जठराग्नी पक्व ४ पुष्ट, प्रौढ।

परिणय, स पु (स) विवाह, दारपरिग्रह।

परिणाम, स पु (स) फल २ अत, पार, उदय ३ विकार, विक्रिया, रूपातर-अवस्था तर, प्राप्ति (स्त्री), दशापरिवर्तनम्।

परिताप, स पु (स) दुःख, क्लेश, व्यथा २ सताप, क्षोभ २ अनुपश्चात्, ताप।

परितोष, स पु (स) तृप्ति (स्त्री), सतोष २ हर्ष, मोद।

परित्याग, स पु (स) सर्वथा त्याग -वर्जन उत्सर्ग २ निष्कामन, बहिष्करणम।

परित्राण, स पु (स न) रक्षा, रक्षण, पालन २ हस्तवारण, मारणोद्यतस्य निवारणम्।

परिधान, स पु (स न) वसन, वस्त्र, वासस (न), परिच्छद, नेपथ्य, वेश ब २ वस्त्रे आवेष्टन-आच्छादन, वस्त्रधारणम्।

परिधि, स स्त्री (स पु) परिणाह, परिवेश, मडल २ सूर्यचद्रसमीपमडल, ३ प्राचीर, वृति (स्त्री) ४ नियतमार्ग।

परिधेय, वि (स) धार्य, वसनीय, धारणीय, परिधातव्य।

परिनिर्वाण, स पु (स न) मुक्ति परि निवृत्ति (स्त्री), मोक्ष।

परिनिष्ठा, स स्त्री (स) चरमसीमा, परमा वधि (पु), पराकाष्ठा, पार रम्।

परिनिष्ठित, वि (स) पारगत, सुनिपुण, सुदक्ष, विज्ञ।

परिपक्व, वि (स) सम्यक्, सिद्ध-सस्कृत-पक्व २ (जठरे) सुष्ठु-जीण पक्व परिणत ३ प्रौढ, सुविकसित, पुष्ट ४ अनुभविन्, बहुदर्शिन ५ कुशल, प्रवीण।

परिपक्वता, स स्त्री (स) दे 'परिपाक'।

परिपाक, स पु (स) (जठरे) पचन, पाचन परिणाम २ प्रौढता, पूर्णता ३ अनुभव, बहुदर्शिता ४ नैपुण्य, प्रावीण्य ५ परिणाम, फल ६ कर्म-विपाक फलम्।

परिपाटी, स स्त्री (स) अनु, क्रम, परिपाटि (स्त्री), परपरा, आनुपूर्वी-र्व्यं २ शैली, प्रणाली, विधि (पु) ३ रीति पद्धति (स्त्री), सप्रदाय।

परिपालन, स पु (स न) रक्षण, पालन २ रक्षा, त्राणम्।

परिपूर्ण, वि (स) व्याप्त, सभृत, सपूर्ण, पूरित, निभर २ अतितृप्त, सतर्पित, २ अवसित, समाप्त।

परिभ(भा)व, स पु (स) तिरस्कार, अप अव-मान, अनादर।

परिभाषा, स स्त्री (स) लक्षण, निर्वचन, निर्देश, परिच्छेद, प्रज्ञप्ति, समयकार २ ग्रथ सक्षेपनिर्वाहार्थ सकेत सज्ञा विशेष ३ परि ष्कृतभाषण ४ निंदा।

परिभूत, वि (स) पराजित २ तिरस्कृत।

परिभ्रमण, स पु (स न) पर्यटन, विचरण २ घूर्णन-ना ३ दे 'परिधि'।

परिमल, स पु (स) आमोद, सौरभ, सुवास, सुगध २ मैथुनम्।

परिमाण, स पु (स न) मान, प्रमाण, प्रमिति, मिति (स्त्री) २ मात्रा, भार ३ विस्तार, इयत्ता ४ परिधि (पु)।

परिमार्जन, स पु (स न) परिधावन, परि शोधन, परिष्करणम्।

परिमार्जित, वि (सं) परि धौत धावित, परिष्कृत परिशोधित।

परिमित, वि (स) परिच्छिन्न, सावधिक, ससीम, समर्याद, रित, २ अल्प, न्यून।

परिरभ, स पु (स) } उपगूहन, परि
परिरभण, सं पु (स न) } ष्वग, आलिंगनम्।

परिवर्त, स पु (स) विनिमय-वर्तन आवृत्ति (स्त्री), घूर्णन २ विनिमय, परिवृत्ति (स्त्री)।

परिवर्तन, स पु (स न) विकार, विकृति (स्त्री), विक्रिया, रूपात, दशांतर २ विनि मय, परिदान, नैमेय, व्यति(ती)हार, परावर्त, विमय, वैमेय ३ आवर्तन, घूर्णन ४ काल युग-समाप्ति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, परिवृत् (प्रे), परिवर्तन

अन्यथा कृ २ प्रतिदा (जु उ अ) विनि निमे (भ्वा आ अ)।
—होना, क्रि अ , परिवृत् (भ्वा आ से), विकृ (कर्म), विपयम (ि प से) २ व्यतिहृ -प्रतिदा-विनिमे (कम)।

परिवर्तित, वि (स) विकृत, रूपान्तरित, दशान्तर प्राप्त २ विनिमित, व्यतिहृत विनिमयेन प्राप्त।

परिवर्द्धन, स पु (स न) परिवृद्धि (स्त्री), वृ द्धण, स्फीति (स्त्री)।

परिवर्द्धित, वि (स) विस्तृत विस्तीर्ण प्र वि न्त, उपचित २ विशालीकृत वृद्धि नीत अप्र ापित।

परिवा, स स्त्री , दे 'प्रतिपदा'।

परिवाद, स पु (स) निंदा, अपवाद, दोषकथन २ *वीणावादनवलय (मिजराब)।

परिवादक, स पु (स) निंदक , अपवादक दोषकथक २ अभियोक्तृ (पु) अर्थिन् वादिन् ३ वीणावादक ।

परिवार, स पु (सं >) कुटुंब, पुत्रकलत्रादीनि, गृहजन , *परि(री)वार ।
—**नियोजन**, स पु (स न) परिवार कुटुम्ब-नियन्त्रण-निरोध , सन्तति-म लान निरोध ।

परिवाह, स पु (स) जलोच्छ्वास तोयप्लाव ।

परिवृत, वि (स) परिवेष्टित, परिगत, परिक्षिप्त २ आच्छादित, आवृत ।

परिवृत्त, वि (स) 'परिवर्तित (२) २ परिवेष्टित, परिगत ३ समाप्त।

परिवेषण, स पु (स न) भोजनपात्रे भोजन निधान २ परिधि (पु), वेष्टन ३ परिवेश प ।

परिवेष्टन, स पु (स न) सवलन, परिक्षेपण, परिवारण २ आच्छादन, आवरण पुट, वेष्टन,क श प ३ परिधि (पु)।

परिव्रज्या, स स्त्री (स) सन्न्यास , वैराग्य चतुर्थाश्रम २, परिभ्रमणम् ।

परिव्राजक, स पु (स) } भिक्षु,
परिव्राज् ,स पु (स व्राज्) } दे 'सन्यासी'।

परिशिष्ट, स पु (स न) परिशेष,-पूरण उत्तरग्र न्थ, शेषग्रथ खिलम् । वि , अव शिष्ट शेष, उद्धृत ।

परिशीलन, स पु (स न) गभीर-समनन, अध्ययन पठन २ स्पर्शनम् ।

परिशीलित, वि (स) सम्यक्-सुष्ठु,-अधीत पठित ।

परिशुद्ध, वि (स) पूर्ण, शुद्ध अमल-निर्दोष पूत २ कारा-कारावास,-मुक्त ।

परिशुद्धि, स स्त्री (स) पूर्ण शुद्धि (स्त्री) पवित्रता निर्दोषता २ कारागार-मुक्ति (स्त्री)।

परिशेष, स पु ,(स) अन्त , समाप्ति (स्त्री), दे परिशिष्ट' स पु तथा वि ।

परिशोधन, स पु (स न) परिमार्जन, परिधावन, २ ऋण, शोधन शुद्धि (स्त्री)।

परिश्रम, स पु (स) आ प्र-यास , श्रम , उद्यम , उद्योग प्र यत्न २ क्लम , क्लान्ति श्रांति ग्लानि (स्त्री), खेद ।
—**करना**, क्रि अ , आयस् परिश्रम् (दि प से), उद्यम् (भ्वा प अ), व्यव-सो (दि प अ)।

परिश्रमी, वि (स मिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्, उद्यम-उद्योग-परिश्रम, शील, आयसिन् ।

परिश्रांत, वि (स) क्लांत, म्लान, खिन्न, आयस्त ।

परिषद् त्, स स्त्री (स षद्) सभा, समाज , समिति (स्त्री) २ जनसमूह ।

परिषद, स पु (स) सदस्य, सभासद् (पु)। २ राजवल्लभ ,-सभासद् ।

परिष्कार, स पु (स) शौच शुद्धि (स्त्री), शुचिता, सस्कार २ निर्मलत्व, स्वच्छता ३ आभूषण, अलकार ३ मडन, प्रसाधनम् ।

परिष्कृत, वि (स) मार्जित, धावित, धौत २ मडित, प्रसाधित, अलकृत ३ सस्कृत, शोधित।

परिसख्या, स स्त्री (स) सख्या, गणना २ अर्थालकारभेद (सा)।

परिस्तान, स पु (फा) अप्सरोलोक २ सुदरीस्थानम् ।

परिहरण, स पु (स न) बलाद् ग्रहण अपहरण २ परि ,त्याग ,उत्सर्ग ३ दोषादीना निवारण, निराकरण म् ।

परिहार, स पु (स) (दोषादे) निवारण, निराकरण २ उपचार, उपाय ३ त्याग , परिवर्जन ४ गोप्रचर , प्रचारभूमि (स्त्री)

५ युद्धार्जित धन, विजितद्रव्य ६ (करादे) मोचन,वर्जन ७ प्रत्याख्यान, खंडन ८ अवज्ञा, अपमान ९ उपेक्षा ।

परिहार्य, वि (स) परिवर्जनीय, प्रोज्झनीय, हेय, त्यक्तव्य ।

परि(री)हास, स पु (स) नर्मन् (न), नर्मालाप, प्रहसन, हास्य, विनोद,-उक्ति (स्त्री) भाषणम् ।

परी, स स्त्री (फा) अप्सरस (स्त्री), योगिनी, यक्षिणी, विद्याधरी २ सुंदरी ।

—ज़ाद, वि (फा) अतिसुंदर, परमशोभन ।

परीक्षक, स पु (स) प्राश्निक , अनुयोक्तृ परीक्षितृ (पु) २ विचारक निरूपक ३ समालोचक, समीक्षक ।

परीक्षा, स स्त्री (स) परीक्षण, प्रश्न, अनुयोग २ समालोचना, समीक्षा, ३ निरीक्षा, अवेक्षा, आलोकन, निरूपण ४ दिव्य ५ प्रयोग, अनुभव ।

परीक्षित, वि (स) नृपविशेष, अभिमन्यु पुत्र २ प्रश्नित, अनुयुक्त, कृतपरीक्ष ३ समालोचित, समीक्षित ४ अनुभूत, प्रयुक्त ।

परुष, वि (स) क्रूर, निर्दय, निर्घृण, २ अप्रिय, कटु ।

परे, क्रि वि (स पर) दूर, दूरे, दूरत, २ पृथक, बहिस् ३ तत्तु, तत, तदनन्तर ४ उपरि, उच्चै (सब अव्य) ।

—परे करना, मु परिहृ (भ्वा प अ), अप, वृज् (चु), न संगम् (भ्वा आ अ) ।

परेवा, स पु (स पारावत) दे 'कबूतर' ।

परेशान, वि (फा) उद्विग्न, व्यग्र, व्याकुल ।

परेशानी, स स्त्री (फा) उद्विग्नता, व्याकुलता ।

परोक्ष, वि (स) अदृश्य, अलक्ष्य, अचाक्षुष २ गुप्त, गूढ़ । स पु (स न) अनुपस्थिति (स्त्री), अविद्यमानता ।

परोपकार, स पुं (स) परोपकृति (स्त्री) परहित, लोकमाहात्म्य, उदारता ।

—करना, क्रि स, परोपकारं कृ, परहित सपद् (प्रे) परमाहात्म्य विधा (जु उ अ) उपकृ ।

परोसना, क्रि स (स परिवेषण) भक्ष्याणि पात्रे स्था (प्रे स्थापयति), परिविष (प्रे) । सं पुं, परि(री)वेष णम् ।

परोसनेवाला, स पु, परिवेषक, परिवेष्टृ (पु) ।

परोसा हुआ, वि, परिवेषित, पात्रे निहित ।

पर्चा, स पु, दे 'परचा' ।

पर्जन्य, सं पु (स) जलद, दे 'मेघ' ।

पर्ण, स पु (सं न) दे 'पत्र' (१) २ ताम्बूली नागलता,-दल, ताम्बूलम् ।

—लता, स स्त्री (स) पुन्नागवल्ली, नागलता ।

—शाला, स स्त्री (स) पर्णकुटी, उटज जम् ।

पर्णाद, स पु (स), पत्र पर्ण,अशन आहार भक्षक (वनिन्) २ ऋषिविशेष ।

पर्णाशन, स पु (स) दे 'पर्णाद' ।

पर्णाहार, स पु (स) दे 'पर्णाद' ।

पर्णी, स पु (स पर्णिन्) वृक्ष, तरु, पादप, विटप पिन् ।

पर्त, स स्त्री, दे, 'परत' ।

पर्दा, स पु, दे 'परदा' ।

पर्यंक, स पु (स) पल्यंक, अवसक्थिका, पर्यस्तिका, परिकर ।

पर्यटन, स पु (स न) दे भ्रमण ।

पर्यंत, अव्य (स पर्यन्त) यावत, आ, पर्यंत (उ, मृत्युपर्यंत, मृत्यु यावत, आमृत्यो, मरणपर्यंतम्) ।

पर्याप्त, वि (सं) प्रभूत, प्रचुर, पूर्ण, यथेष्ट, उपयुक्त, अल (चतुर्थी के साथ) २ समर्थ, शक्त ।

पर्याय, स पु (स) तुल्यार्थ समार्थ, शब्द २ क्रम, परपरा, आनुपूर्व्यं वी ३ अर्थालंकार भेद ४ अवसर, उचितसमय ।

—वाची, वि (स त्रि) पर्यायवाचक, सम समान तुल्य अर्थक ।

पर्व, स पु [स पर्वन् (न)] उत्सव, उद्धव, उद्धष, क्षण, मह २ पचपर्वाणि (चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा, रविसंक्रांति) ३ ग्रथपरिच्छेद, काण्ड, ४ सधि (पु) ग्रथि (पुं) ५ खंड, ट, भाग ।

पर्वत, स पु (स) अद्रि गिरि (पु), शैल, धरणीकीलक, सानुमत् क्ष्माभृत् शिखरिन् (पु), अचल, भूधर, अग, नग, कुधर अवनी मही धरणी, भू धर, भू भृत् (पु) २ चय, राशि (पु) ।

—नंदिनी स स्त्री (स) दे 'पार्वती' ।

—राज, स पु (स) दे 'हिमालय'।

—वासी, स पु (स सिन्) गिरि शैल-वासिन्, पार्वत [-ती (स्त्री)], पार्वतीय [-यी (स्त्री)]। वि, पार्वत, पार्वतीय इ।

पर्वतीय, वि (स) सपर्वत, नगप्राय, शैल अद्रि,-मय [मयी (स्त्री)]

पलग, स पु, दे 'पर्यंक'।

—पोश, स पु (हिं+फा) पर्यंकप्रच्छद।

पल, स पु (स) विघटिका, घटिकाया षष्टितमो भाग षष्टिविपलात्मक काल (~२४ सेकंड) २ क्षण, मुहूर्त, निमि (मे)ष।

—भर में या—मारते, मु, क्षणेन, क्षणात्, निमेष पल, मात्रेण।

पलक, स स्त्री (स पल) दे 'पल' २ नेत्र नयन,-छद।

—मारना, क्रि अ निमील (भ्वा प से), निमिष् (तु प से) २ चक्षुषा संकेत दा।

—मारते या झपकते, मु, दे 'पल भर में'।

पलटन, स स्त्री (अ प्लैटून), सैनिकानां द्विशती, सैन्य,-दल-गण।

पलटना, क्रि अ (स प्रलोठन) नि प्रतिनि प्रत्या,-वृत् (भ्वा आ से) प्रत्या,गम् (भ्वा प अ)-या (अ प अ) २ पर्यस् (कर्म), अधोमुखी अधरोत्तरीभू, परिवृत्। ३ (दशा) परिवृत्, अवस्थान्तर जन् (दि आ से) ४ परि परा,-वृत्। क्रि स, व 'पलटना' के प्रे रूप। स पु, नि प्रत्या, वर्तन, वि, पर्यास परिवर्तनम्।

पलटा, स पु (हिं पलटना) नि प्रत्या,-वृत्ति (स्त्री), दे 'पलटना' स पु २ प्रतिफल, कर्मविपाक ३ स्वरपरावृत्ति (संगीत) ४ उत्पात, उत्प्लव ५ व्यतिहार, विनिमय ६ *परिवर्तक, (भाजनभेद)७ दे 'बदला'।

पलटाना, क्रि स, दे 'लौटाना'।

पलटा हुआ, वि, प्रतिनिवृत्त विपर्यस्त परिवृत्त, परावृत्त।

पलड़ा, स पु (स पटल>) तुला, पटल फलकम्।

पलथी, स स्त्री (स पर्यस्त>) स्वस्तिकासनम्।

—मारना, क्रि अ, स्वस्तिकासनेन उपविश् (तु प अ)।

पलना, क्रि अ (स पालन>) पाल पोष सभृ (कर्म) २ परि, पुष (कर्म) प्याय् (भ्वा आ से), पुष्ट-पीन (वि) भू।

पलवाना, क्रि प्रे, व 'पालना' के प्रे रूप।

पलस्तर, स पु (अ प्लास्टर) *पलस्तर, लेप, सुधा २ उपनाह, प्रलेपपट्टिका।

—करना, क्रि स, सुधया लिप (तु प अ) २ उपनह (दि प अ)।

—ढीला होना या बिगड़ना, मु, अत्यंत क्लिश पीड खिद् (कर्म)।

पलाडु, स पु (स) दे, 'प्याज'।

पलाद, स पु (स) पलादन, पलाश, राक्षस। वि, मांस, भक्षक आहारिन्।

पलान, स पु (स पल्ययन) पर्याण, पर्ययण, दे 'जीन'।

पलाव, स पु (स न) दे 'पुलाव'।

पलायक, स पु (स) वि-प्र-, पलायिन्, युद्ध-विमुख, पराङ्मुख-त्यागिन्।

पलायन, स पु (स न) वि, द्रव, उद्रा प्रति, द्राव, चक्रम, श्रृगालिका, अप, क्रम -यानम्।

पलायमान, वि (स) प्र वि, द्रवत्, अप, धावत् क्रामत्, परायत् (सब शत्रन्त)।

पलाश, स पु (स) किंशुक, याज्ञिक, त्रिपर्ण, ब्रह्मवृक्षक, पूतद्रु (पु), (स न) पत्र, पर्णम्।

पलाशी, स पु (स -शिन्) वृक्ष, तरु २ क्षीरवृक्ष (गूलर पीपल, बरगद, महुआ इ०) ३ राक्षस। वि सपत्र, पत्रवत् २ मांस भक्षक।

पलित, वि (स) वृद्ध, दे 'बूढ़ा' २ पक्व, धवल, श्वेत, सित, (केश)। स पु (सं न) केशपाक।

पली, स स्त्री (स परिघ>) *स्नेहनिष्कासनी, पलिका।

पलीता, सं पु (फा) भूतवद्रावकी वर्तिका वर्त्ति (स्त्री) २ दहनवर्त्ति। वि कोपाकुल, सरम्भ २ शीघ्रगामिन्।

पलीद, वि (फा) मलिन, मलीमस, अपवित्र २ नीच, खल।

पलेथन, स पु (स परिस्तरण>) (गोधूमादीना) शुष्कचूर्ण, *रोटिकापरिस्तरणम्।

—निकालना, क्रि स, परुष तड् (चु)।

पलौठा, वि (हिं पहला) *प्रथमज (पलौठा-प्रथमजा)।
पल्लव, स पु (स पु न) किस(श)लय य प्रवाल, नवपत्र, किस(श)ल २ प्र, शाखा विटप ३ नवपत्रस्तवक।
पल्लवित, वि (स) सपल्लव, सकिसलय २ तत विस्तृत ३ रोमांचित।
पल्ला¹, क्रि वि (स पर या परे>) दूर, दूरे, दूरत। स स्त्री, दूरता, विप्रकर्ष।
पल्ला पल्लू, स पु (स पटाञ्चल) वसनांत, वस्त्र,अचल २ पार्श्व अधिकारे ३ दिशा।
—छुड़ाना, मु, आत्मान उद्ह (भ्वा प अ)-मुच (प्रे), अनिष्ट त्यज (भ्वा प अ)-अपास (दि प से)।
—पसारना, मु, याच (भ्वा आ से)।
पल्ले पड़ना, मु, लभ् अधिगम् (कम)।
पल्ला³, स पु, दे 'पलटा'।
पल्ली, स स्त्री (स) ग्रामक, ग्रामटिका २ ग्राम ३ कुटी ४ गृहगोधिका।
पवन, स पु (स) अनिल, वात, दे 'वायु'।
—चक्की, स स्त्री, वायुपेषणी, *पवनचक्री।
—चक्र, स पु (स न) वातावर्त, चक्रवात।
—पुत्र, स पु (स) हनुमत् २ भीमसेन।
पवनाशन, स पु (स) पवनाश, सर्प।
पवि, स पु (स) वज्र ज, कुलिश, अशनि (पु स्त्री)।
पवित्र, वि (स) वि, शुद्ध शुचि, स्वच्छ, विशद, निर्मल २ पुण्य, निष्पाप, अनघ, अकल्मष।
पवित्रता, स स्त्री (स) शुचिता, शौच, वि,शुद्धि (स्त्री), शुद्धता २ स्वच्छता, वैशद्य, निर्मलता ३ पुण्यता, निष्पापता।
पवित्रात्मा, वि [स-त्मन (पु)] विमल शुद्ध-आत्मन् (पु), शुद्ध, मति हृदय।
पवित्री, स स्त्री (स पवित्र) पवित्रक, कुशाङ्गुलीयकम्।
पशम, स स्त्री (फा पश्म) उत्तमोर्णा, मूर्णा २ उपस्थलोमन् (न) ३ अतितुच्छवस्तु (न)।
पशमीना, स पु (फा पश्मीनह्) दे 'पशम' २ उत्तमौर्ण,-वस्त्र पट।
पशु, स पु (स) लोमलाङ्गूलवज्जीव (सिंह -व्याघ्रगोमहिषादय), जन्तु (पु), सुदार ना, मृग २ प्राणिन्, जीवमात्रम्।
—पति, स पु (स) शिव २ पशुप्रभु।
—पाल,स पु (स) पशु गो, रक्षक पालक।
—राज, स पु (स) मृगेन्द्र, सिंह।
पशुता, स स्त्री (स) पशुत्व, पशु,भाव धर्म २ मौर्ख्य, औद्धत्य, जाड्यम्।
पशुत्व, स पु (स न) दे 'पशुता'।
पश्चात्, अव्य (स) तत, तदनन्तर, तत्पश्चात, तदनु, तत, पर ऊर्ध्वम्।
पश्चात्ताप, स पु (स) अनु,-ताप शय शोक, पाप-दुष्कृत-खेद, विप्रतीसार।
—करना, क्रि अ, दे 'पछताना'।
पश्चिम, स पु (स पश्चिमा) प्रतीची, वारुणी, पश्चिम, दिशा आशा। वि, पश्चाद् उत्पन्न, २ अत्य, अंतिम।
पश्चिमा, स स्त्री (स) दे 'पश्चिम'।
पश्चिमी, वि (स पश्चिमा>) प्रतीच्य, पाश्चात्य, पश्चिमाशासंबधिन्।
पश्चिमोत्तर, स पु (स पश्चिमोत्तरा) उत्तर पश्चिमा वायवी। वि, वायव, वायुदिक्स्थ।
पश्तो, स स्त्री (देश) पश्चिमोत्तरसीमाप्रान्तस्य भाषाविशेष।
पश्यती, स स्त्री (स) वेश्या, गणिका, क्षुद्रा, रूपाजीवा २ वाणीभेद, वायुसंयोगात नातिभिन्न शब्द।
पसद, स स्त्री (फा) अभि,रुचि (स्त्री), मनोबंध। वि, मनोनीत, रुचिकर, स-अभि, मत, प्रिय।
—करना, रुच् (भ्वा आ से चतुर्थी के साथ) अभि प्रति, नंद् (भ्वा प से) अनुमुद् (भ्वा आ से) २ दे 'चुनना'।
पसंदीदा, वि (फा) अभीष्ट, वृत, रुचिकर, रोचक, उत्तम।
पस¹, स पु (अ), पूय -य, क्षतज, मलज, कुणपम्।
पस², अव्य (फा) तदनु, तत्पश्चात, तदनन्तरम्।
—(सो) पेश, पु विर्प, व्याज, छलम्।
पसरना, क्रि अ (सं प्रसरण) प्रसृ (भ्वा प अ) प्र वि तन् (कर्म) २ विस्तृ (कर्म), वृध् (भ्वा आ से) ३ करचरणान् प्रसार्य शी (अ आ से)।
पसली, स स्त्री (स पर्शुका) पार्श्वास्थि (न), पार्श्व रम्।

—का रोग, स पु, श्वसनक ।
हड्डी—तोडना, मु, भृश तड् (चु)।
पसाना, क्रि स (स प्रस्रावण), मड प्रस्रु (प्रे) २ अतिरिक्तजलांश अवस्रव (प्रे)।
पसार–रा, स पु, दे 'प्रसार'।
पसारना, क्रि स (स प्रसारण) व 'पसरना' के प्रे रूप। दे 'फैलाना'।
पसाव, स प (स प्रस्राव >) प्रस्रव, मड-ड, दे 'माड'।
पसीजना, क्रि अ (स प्रस्वेदन) (शनै) क्षर्-गल् (भ्वा प से) मु (भ्वा प अ) प्रस्नु (अ प से) २ दयार्द्रीभू (वि) भू, अनुकम्प्-दय (भ्वा आ से)।
पसीना, स पु (हिं पसीजना >) प्र,स्वेद, घर्म, घर्मस्वेद, उदक जलबिंदु (पु) श्रम वारि (न)।
—आना, क्रि अ, प्र,स्विद् (दि प अ) स्वेद सुनिस्सृ (भ्वा प अ)।
पसोपेश, स पु (फा) विचिकित्सा, वितर्क, संशय आ परि वि, शंका २ परिणाम, हानिलाभौ।
—करना, क्रि अ, दोलायते (ना धा) विलंब विकल्प् (भ्वा आ से)।
पस्त, वि (फा) पराजित, विजित २ परिश्रान्त, क्लान्त।
—कद, वि (फा) वामन, खर्व।
—हिम्मत, वि (फा) भीरु, कातर।
पहचान, स स्त्री (स परिचयन या प्रत्यभिज्ञान) प्रति,अभिज्ञा-अभिज्ञान, २ विवेक, विचारण गा, परिच्छेद ३ लक्षण, चिह्न ४ परिचय, परि,ज्ञानम्।
पहचानना, क्रि स (हिं पहचान) प्रति, अभिज्ञा (क्र उ अ) अनुस्मृ (भ्वा प अ) परिच्छिद् (र प अ), संविद् (अ प से) २ विच् (जु उ अ), विशिष् (रु प अ), परिच्छिद् ३ अवगम् ज्ञा (क्र उ अ), बुध (भ्वा प से), विद् (अ प से)। स पु, दे 'पहचान'।
पहचाननेवाला, स पु, प्रति, अभिज्ञातृ (पु), परिच्छेदक, विवेकिन्, ज्ञातृ, बोद्धृ (पु)।
पहचाना हुआ, वि, विविक्त, परिच्छिन्न, प्रति, अभिज्ञात, बुद्ध, विदित।

पह(हि)नना, क्रि स (स परिधान) परिधा (जु उ अ), वस् (अ आ से), धृ (भ्वा प अ, चु), भृ (जु उ अ)। स पु, परिधान, धा(धा)रण, भरण, वसनम्।
पहनने योग्य, वि, परिधेय, धार्य, वसनीय।
पहननेवाला, स पु, परि,धाय (पु) धायक, धर्तृ धारयितृ (पु)।
पहनवाना, क्रि प्रे } व 'पहनना'
पहनाना, क्रि स } के प्रे रूप।
पहनावा, स पु (हिं पहनना) वेश प, परिधान वस्त्राभिवसनानि (न बहु), नेपथ्य, परिच्छद।
पहना हुआ, वि, परिहित, धृत, धारित, वसित ३।
पहर, स पु (स प्रहर) याम, होरात्रय्यी २ काल युग, समय।
पहरना, क्रि स दे 'पहनना'।
पहरा, स पु (हिं पहर) रक्षा, रक्षणं, जागरण, निरूपण, अवेक्षण-क्षा, गोपन, गुप्ति (स्त्री) २ रक्षक, रक्षिन्, रक्षापुरुष, रक्षिवर्ग, प्रहरिन्, वैवोधिक ३ रक्षणकाल, प्रहर ४ प्रहरि, भ्रमण पर्यटन ५ प्रहरिपरिवर्तन ६ प्रहरिधाप।
—देना, क्रि अ, रक्षार्थं जागृ (अ प से) परि, अम् अट् (भ्वा प से)।
पहरेदार, स पु (हिं+फा) दे 'पहरा'(२)।
पहरावनी, स स्त्री (हिं पहरना) २ *परिधापनी, *परितोषवेष।
पहरी, पहरुआ, पहरू, स पु दे 'पहरा'(२)।
पहल, स स्त्री (हिं पहला) उपक्रम, प्र, आरम्भ २ अनि-आ,-क्रम, प्रथमापराध।
पहलवान, स पु (फा) मल्ल, बाहु,-योध-योद्धृ (पु) -योधिन् २ दृढाङ्ग, वज्रदेह।
पहलवानी, स स्त्री (फा) मल्ल-बाहु,-युद्धम्।
पह(हि)ला, वि (स प्रथम) दे 'प्रथम'।
पहलू, स पु (फा) पक्ष, पार्श्व-र्श्वं (सब अर्थों में) २ पक्ष पार्श्व, भाग, वपाधोभाग ३ विचारविषयस्य अग्र-भाग,-विशेष ४ गूढाशय ५ व्यंग्यार्थ।
—बचाना, मु, संघट्ट परिहृ (भ्वा प अ)।
—में बैठना, मु, अतिसमीपे उपविश (तु प अ) -निषद् (भ्वा प अ)।

पहले, अव्य (हिं पहला) पूर्व, प्रथम, आदौ, प्राक, आरम्भे २ पूर्वे, पुरा, पूर्वप्राचीन, काले ।

—पहल, अव्य , सर्वप्रथम प्रथमवारे, आदौ ।

पहाड़, म पु (स पाषाण >) दे 'पवत' (१) ३ दुस्साध्य-दुष्कर, कार्यम् ।

पहाड़ा, म पु (स प्रस्तार >) गुणनसूची ।

पहाड़िया, वि (हिं पहाड़) दे 'पवतवासी' ।

पहाड़ी, स स्त्री (हि पहाड़) पवतक , लघु गिरि (पु) २ वल्मीक क, वामलूर ।

पहिया, म पु (स परिधि) चक्र, रथाङ्गम् ।

पहिलौठा, वि , दे 'पलौठा' ।

पहुँच, स स्त्री (स प्रभूत>) उपसर्पण, अभि उप,-गम प्रवश २ गतिसीमा ३ प्राप्ति (स्त्री), प्राप्तिसूचना, अभिज्ञतासीमा, परिचय ४ आगमन, उपस्थिति (स्त्री) ।

पहुँचना, कि अ (हिं पहुच) आ, गम्-सद् (भ्वा प अ) समा सद् प्र-स आप (स्वा प अ), प्रपद् (दि आ अ) २ विस्तृ (क्रम) ३ प्रविश (तु प अ) ४ लभ् प्राप (कर्म) । स स्त्री, दे 'पहुच' ।

पहुँचनवाला, स पु , आगत उपस्थातृ (पु), लब्धप्रवेश , सहायक ।

पहुँचा, स पु , दे 'कलाइ' ।

पहुँचाना, वि स, व 'पहुँचना' के प्रे रूप ।

पहुँचा हुआ, वि, आगत, उपस्थित, प्राप्त, प्रपन्न, प्रविष्ट, लब्ध, अधिगत, सिद्ध ।

पहुँची, स स्त्री (हिं पहुचा) आवापक , मणिबन्धवलय ।

पहुनाई, स स्त्री (हिं पाहुना) प्राहुण अतिथि, सेवा सत्कार । २ अतिथित्व, प्राहुणता ।

पहेली, स स्त्री [स प्रहेलीलि (स्त्री)] प्रहेलिका मरनदृती, प्रवह्लीलि (स्त्री)-लिका २ समस्या, गूढार्थव्यापार ।

पह्लवी, म स्त्री (म पह्लव >) पारसीक देशस्थ प्राचीन भाषा, पह्लवी ।

पाँच, वि (स पञ्चन्) । स पु , उक्ता सख्या तद्क (५) च ।

—भौतिक, वि (स) पञ्चभूतनिर्मित (शरीरादि) ।

पाँचों उँगलियाँ घी में होना, मु , सर्वथा प्र उप रि (कम) समृध (दि प से) ।

पाँचवाँ, वि (हिं पाँच) पचम-मःमी (पु न स्त्री) ।

पांचाल, म पु (स) पचाल । वि पचाल देशोद्भव ।

पांचाली, म स्त्री (स) शाल भजीजिका, पुत्रिका, पचालिका २ रीतिविशेष (सा) ३ द्रौपदी, कृष्णा, याज्ञसेनी ।

पांडव, स पु (स) पाडुनन्दन, पञ्च पाण्डवा ।

पांडित्य, स पु (स न) बुद्धिधी, मत्त्व, व्युत्पत्ति (स्त्री), विद्वत्ता, विद्वत्त्व, ज्ञान, प्राज्ञता ।

पांडु, म पु (म) नृपविशेष २ सितपीत-वर्ण, हरिण, पा(डु)र ३ रक्तपीतवर्ण ४ श्वेतवर्ण ५ दे 'पाडुरोग' ।

—रोग, स पु (म) कामल-ला, पाडु (पु) ।

पांडुर, वि (स) सितपीतवर्ण, पाडु २ पीत ३ शुक्ल । स न (स) श्वित्ररोग । स पु (म) दे 'पाडुरोग' ।

पांडुलिपि, स स्त्री (म) पाडुलख , •शोध नीयलेख ।

पांडे, }
पांडेय, } स पु (स पडित) द्विज कायस्थ, भेद ३ प्राज्ञ , विद्वस् (पु) ४ शिक्षक , अध्यापक ५ पाचक , सूद ।

पाँत, **पाँति**, स स्त्री , दे 'पक्ति' ।

पांथ, स पु (स) पथिक , यात्रिन् २ प्रवासिन् ३ वियोगिन् ४ भानु ।

—निवास, स पु (स) पाथशाला, यात्रिगृहम्, धर्मशाला ।

पाँव, स पु (सं पाद) पद, चरण ण, अंघ्रि (पु) २ जघा ३ मूल, आधार , उपष्टम्भ ४ धैर्य, स्थैर्यम् ।

—का अगूठा स पु , पादागुष्ठ ।

—का सोना, स पु , पाददर्प (रोग) ।

—की अँगुली, म स्त्री , पादागुली लि (स्त्री) ।

—अड़ाना, मु , दे 'टाग अड़ाना' ।

—उखड़ना, मु , परा जि (कम), पलाय् (भ्वा आ से) ।

—उठाना, मु , निष्क्रम् (भ्वा प से) २ मत्वर चल् (भ्वा प से) ।

—जमाना, मु , निश्चल दृढ स्था (भ्वा प अ)।

—तले की मिट्टी निकल जाना, मु , जड़ी निष्पदी भू , विस्मयेन उपहन् (कर्म)।
—पड़ना, मु , चरणयो अवपत् (भ्वा प से), अनिमतया याच् (भ्वा आ से)।
—पसारना, मु प्रसृते प्रस् (प्रे) सुख स्वप (अ प अ) २ दे 'मरन'।
—पाँव, मु , पादचारी भूत्वा, पद्भ्यामेव चल्द (शत्रंत)।
—पूजना, मु चरणौ चुब् (भ्वा प से)- -सेव (भ्वा आ से)।
—फटना, मु , पादौ शीतेन स्फुट् (त प से)।
—फूँक-फूँक कर रखना, मु, सवधान प्रवृत् (भ्वा आ से) कार्येषु।
—फैला कर सोना, मु निश्चिंत स्वप (अ प अ)।
—भारी होना, मु , गर्भं आधा (जु उ अ)- धृ (जु)।
दबे—आना, मु , निभृत अया (अ प अ)।
धरती पर—न रखना, मु, नितरा दृप् (दि प अ), गर्व (भ्वा प से)।
पाँवड़ा, म पु (हिं पाँव) पादवराम्तरणम।
पाँवड़ी, म स्त्री (हिं पाँव) दे 'खड़ाऊ' तथा 'जूता'।
—**पाश (स) न**, वि (स) दूषक, कलंक जनक।
पाशु, म स्त्री (स पु) पांसु (पु), धूली लि (स्त्री), रजस (न)।
पाशुल, वि (स) रेणु-दूषित रूक्ष, धूम्रिधूसर।
पाँसा, स पु (स पाशक) अक्ष, देवन, सार, शार।
—उलटना, मु , यत्नो विपरीतफलो नम् (दि आ से)।
पा, स पु (फ़ा) पाद, पद, चरण मम्।
—अंदाज, स पु पद-पाद-प्रक्षण प्रोंछनम्।
पाइओरिया, म पु (अ) दन्तपूयम्।
पाई, स स्त्री (स पाद >) पादिका २ चतुर्थीशसूचिका ऊर्ध्वरेखा (उ ४।-मवा चार) ३ आकारमात्रा (।) ४ पूर्णविराम चिह्नम् (।)।
पाउंड, म पु (अं) निष्क', दीनार' २ पौण्ड, अङ्गरेजराज्यको देशीय आंग्लतोलभेद।
पाउडर, म पु (अ) पिष्ट, क्षोद, चूर्ण २ पम्वासक, पिष्टातक, पिष्टाप।
पाक', स पु (म) पचन, पाचन, श्रानि (स्त्री), अधिश्रयण, पक्ता, रन्धन (सात प्रकार का पाक—
भर्जन तल्न स्वेद पचन क्वथन तथा।
तार पुटपाकश्च पाक सप्तविधो मत ॥)
२ पक्व-सिद्ध, अन्न ३ परिणति (स्त्री) ४ औषधभेद ५ जठरे आहारपचन ६ दैत्य विशेष।
—शाला, म स्त्री (स) महानस-सम्।
—शासन, म पु (स) दे 'इन्द्र'।
पाक' वि (फ़ा) पवित्र, वि शुद्ध २, निष्पाप, निष्कल्मष ३ समाप्त।
—दामन, वि (फ़ा) पतिव्रता, सती।
—साफ, वि (फ़ा+अ) स्वच्छ, निर्मल।
पाकेट, स पु (अ) दे 'जेब'।
पाक्षिक, वि (स) अर्द्धमासिक, मासार्द्धिक २ पक्षपातिन्।
पाखंड, स पु (स पाषण्ड-ण्ड) दम्भ, दाम्भिकता, छाद्मिकता, आयरूपता, कपटधर्म, कुटलिंग, वृत्ति (स्त्री) कापट्यम्।
पाखंडी, वि (स पाषण्डिन्) पाषण्डक, दम्भिन्, दाम्भिक कपटिन्, कापटिक, आर्य, रूप लिंगिन्, छद्म-कपट,-वेशिन्।
पाख, म पु (स पक्ष) दे 'पखवारा'।
पाखर, स स्त्री (म प्रखर) प्रक्षर, अश्वगज, सन्नाह।
पाखा (पा) न, म पु (म पाषाण) प्रस्तर शिला, अश्मन्, ग्रावन् (पु)।
पाख़ाना, स पु (फ़ा) शौच-कूप स्थान २ उच्चार, गूथ-थ, मल, पुरीष, विष (स्त्री) विष्ठा, शकृत् (न), शमलम्।
—निकलना, मु , नितरा भी (जु प अ), त्रस् (दि प से)।
पाखाने जाना, मु , शौचकूप या (अ प अ) पुरीष उत्सृज (तु प अ)।
पाग', म स्त्री (हिं पाग) दे 'पगड़ी'।
पाग', म पु (म पाक >) मधु शर्करा,-क्वाथ २ मधुक्वाथपक्वकल्कमौषध वा।
पागना, क्रि स (म पाक >) गुड-सिता, रसे निमस्ज् (प्रे)।
पागल, स पु (देश) उन्मत्त', वातुल',

अचल २ मञ्च, मञ्चक ३ कूपच्छादनम् ४ उद्बन्धनपट्ट-टम् ५ कुड्यकोणपट्ट-टम्।

पाणि, स पु (स) कर हस्त।

—ग्रहण, स पु (स न) उद्वह, दे 'विवाह'।

—ग्राहक, स पु (स) भर्तृ (पु), दे पति'।

पाणिनि, स पु (स) अष्टाध्यायीप्रणेता वैयाकरणविशेष।

पात[1], स पु (स पत्र) दे 'पत्ता'।

पात[2], स पु (स) अध नि, पतन, स्रमन, च्युति (स्त्री) २ पातन, ३ वि नाश ध्वस ४ मृत्यु (पु), अधोनयनम्।

पातक, स पु (स न) दे 'पाप'।

पातकी, (स किन्) दे 'पापी'।

पाताल, स पु (स) अधो भुवन लोक, नागलोक २ विवर, बिल ३ भुवनविशेष।

पातिव्रत, स पु (स न) पातिव्रत्य-सतीत्वम्।

पातुर, स स्त्री (स पातली>) दे 'वेश्या'।

पात्र, स पु (स न) भाजन, अमत्र, भाण्ड कोश शी, कोष षी, कोषि(शि)का पात्री २ नट, अभिनेतृ (पु) ३ तीरद्वयान्तर (हि पाट) ४ दानमन्त्रिन् ५ स्रुवादीनि यज्ञोपकरणानि ६ *नाटकस्य कथापुरुष (नायकादि) ७ सत्पात्र, गुणास्पदम्। वि, योग्य, उचित, अर्ह।

पात्रता, स स्त्री (स) विद्य तपस्याचारयुक्तता, पात्रत्व, योग्यता, अर्हता, गुण।

पाथ[1], स पु (स पाथ) पाथस् (न), जलम्।

पाथ[2], स पु (स पथ) मार्ग, अध्वन् (पु)।

पाथना, क्रि स (हिं थापना) गोमयानि रच् (चु) निर्मा (जु आ अ) २ तट (चु)।

पाथेय, स पु (स न) स(श)म्बल पथि उपभोक्तव्य द्रव्यम्।

पाथोधि, स पु (स) सागर।

पाद[1], स पु (स) पद, चरण-ण, पद् (पु), अंहि-अंघ्रि (पु) २ मन्त्रश्लोकादीना चरण ३ चतुर्थभाग ४ प्रथमभाग ५ गिरिवृक्षादीना मूलम्।

—टीका, स स्त्री (स) पृष्ठतल पाद-टिप्पणी।

—त्राण, स पु (स न) दे 'पादुका'।

—पीठ, स पु (स न) पदासनम्।

—प्रहार, स पु (स) चरणाघात, दे 'ठोकर'।

पाद[2], स प (स पर्द) अपान अधो-वायु (पु)।

—मारना, क्रि अ, दे 'पादना'।

पादना, क्रि अ (स पर्दन) पर्द् (भ्वा आ से), अपानवायु उत्सृज (तु प अ)।

पादप, स पु (स) तरु, दे 'वृक्ष'।

पादरी, स पु (पुर्त पैद्रे) निस्तमत, पुरोहित उपदेशक।

पादविक, स पु (स) पथिक, पाथ, यात्रिन्।

पादागुली, स स्त्री (स) } दे 'पाँव' के
पादागुष्ठ, स पु (स) } नीचे।

पादात, स पु (स) पाद पद चरण, अग्र अग्रभाग २ पद-चरणावमानम् (स०)।

पादुका, स स्त्री (स) पादू (स्त्री), पाद, त्र त्राण पादरक्षिका, कौषी। २ दे 'जूता' तथा 'बूट'।

पाद्य, स पु (स न) पादप्रक्षालनजलम्।

पाधा, स पु (स उपाध्याय) गुरु (पु), आचार्य, शिक्षक २ पडित, विद्वस (पु)।

पान[1], स प (स न) पीति (स्त्री), आच मन, धयन, द्रवद्रव्यस्य गलाध करण २ मद्य सुरा, पान ३ पेयद्रव्य ४ मद्य ५ जलम्।

—करना, क्रि स, दे 'पीना'।

—पात्र, स पु (स न) पान, चषक, सरक, पानभाजनम्।

पान[2], स पु (स पर्ण) ताम्बूली, ताम्बूलवल्ली, नाग-लता-वल्ली २ ताम्बूल, पर्ण, नागवल्ली दल ३ क्रीडापत्ररगभेद ४ पत्र, किसलय।

—गोष्ठी, स स्त्री (स) आपान, मद्यपान, चक्र सभा।

—दान, स पु (हि+फा) *पर्णधान, ताम्बूल करक।

पानक, स पु (स न) *मधुराम्लपेयम्।

पाना, क्रि स (स प्रापण) प्र, आप (स्वा उ अ), लभ (भ्वा आ अ), विद (तु उ वे), समासद (प्रे) आपत्ति पद (दि आ अ) अधिगम्, आदा (जु आ अ), ग्रह (क्र प से), २ (सुखादि) अनुभू, भुज (रु आ अ) ३ बुध (भ्वा उ से), विद (अ प से) ४ तुल्य-सदृश (वि) भू

५ पाद (भ्वा प से) ६ सह (भ्वा आ से)। स पु, प्रापण, लब्धि (स्त्री), अधिगमन, आदान, अनुभव, बोध, भुक्ति इ।
पानेवाला, स पु, प्रापक, अभिगन्-आदातृ महीतृ (पु) इ।
पाने योग्य, वि, प्राप्य लभ्य, अादेय, ग्राह्य इ
पाया हुआ, वि, प्राप्त, अधिगत, लब्ध गृहीत इ।
पानिप, सं पुं (हिं पानी) द्युति कांति (स्त्री) २ दे 'पानी'।
पानी, स पु (स पानीय) वारि-अम्भस् (न), दे 'जल' २ कांति द्युति (स्त्री) ३ प्रतिष्ठा, सम्मान ४ वृष्टि (स्त्री) ५ पौरुष, वीर्य ७ वातवर्षादिसामग्री, *वायु (न) ७ रस ८ शीतवस्तु (न) ९ समय, अवसर १० परिस्थिति (स्त्री)।
—दार, वि (हिं + फा) कांतिमत्, भासुर २ मान्य ३ आत्माभिमानिन्।
—देवा, स पु, तर्पक, पिंडद २ पुत्र ३ स्वकीय।
—फल, सं पु, दे 'सिंघाड़ा'।
—से डरना, स पुं, [illegible] नल, आतङ्क सराम।
—कर देना, मु, क्रोध अपनी (भ्वा प अ) शम् (प्रे, शमयति)।
—का बुलबुला, मु, क्षणभंगुर, असार, नश्वर।
—की तरह बहाना, मु, अपव्यय् (चु), अमित व्यय, मुधा क्षि (प्रे, क्षपयति)।
—के मोल, मु, स्वल्पमूल्येन, अल्पमौल्येन।
—देना, मु, (पितॄन्) उदकेन तृप् (प्रे) २ उदकं दा (प्रे) सिच् (तु प अ)।
—पड़ना, मु, वृष् (भ्वा प से)।
—पानी होना, मु, अतीव लज्ज्-लस्ज् (तु आ से)।
—पी पी कर कोसना, मु निरंतरं आक्रुश् (भ्वा प अ) अभिशप् (भ्वा प से)।
—भरना, मु, (तुलनायां) तुच्छ (वि) प्रतीयते।
—में आग लगाना, मु, [illegible] पुन उद्दीप् (प्रे) नवीकृ।
—लगाना, मु, प्रतिकूलजलवायुनाऽस्वस्थ (वि) भू।
—का पतला, मु, जलरूप, अल्पबहुल, जल विरल।
अदरक का—, सं पु, आर्द्रकजलम्।
खारा—, स पु, क्षारजलम्।
पानीय, वि (स) पेय, पातव्य। सं पु (स) (न) दे 'जल'।
पाप, सं पुं (सं न) अधर्म, पाप्मन् (पुं) पातक, किल्बिष, कल्मष, वृजिन, अघ, अंहस्, एनस् (न), दुरित, दुष्कृत, पातक, शल्य २ अपराध, दोष ३ वध ४ पापबुद्धि (स्त्री) ५ अनिष्ट, अहितम्।
—कटना, क्रि अ, पापभ्य मुच् (कर्म) पाप नश् (दि प वे)।
—करना, क्रि स, पापं कृ अथवा आचर् (भ्वा प से) २ अपराध् (दि स्वा प अ)।
—नाशी, वि (स शिन्) पापघ्न, अघनाशक, पापहर।
—बुद्धि, वि (सं) पाप कुबुद्, मति-बुद्धि।
—रोग, सं पुं (सं) रतिजरोग (प्रमेहादि)।
—लोक, स पु (सं) दे 'नरक'।
पापक, वि (सं) दुर्जन, दुष्ट, पापिन्। स पु, दुर्जन, पाप, पातकिन् २ कुकृत्य, पापम्।
पापड़, सं पु (सं पर्पट) माषयोनि, शिंबी पूप, वैदलपिष्ट। वि, तनु २ शुष्क।
—बेलना, मु, घोरं परिश्रम् (दि प से) २ दुःखं जीव् (भ्वा प स)।
पापड़ा, स पुं (सं पर्पट) वरक, वरव, प्रगध, सुतिक्त २ दे 'पित्तपापड़ा'।
—खार, स पु (सं पर्पटक्षार) *[illegible]।
पापर, सं पुं (अं) दरिद्र, अकिंचन, निर्धन।
पापाचार, स पु (सं) दुराचार, दुर्वृत्तम्।
पापात्मा, वि (सं-त्मन्) दे 'पापी'।
पापिनी, वि स्त्री (सं) पापिनी, दुष्टा, दुराचारिणी, पाप-कारी-कारिणी, एनस्विनी-२ अपराधिनी, दोषिणी।
पापिष्ठ, वि, (सं) पापिष्ठ तम, दुष्टतम [पापिष्ठा (स्त्री) = पापतमा, दुष्टतमा]।
पापी, वि (सं पिन्) पातकिन्, पाप, पाप कर, दु पाप-दुष्ट-दुष्, कर्मन्, एनस्विन्, किल्बिषिन्, पाप, निरतबुद्धि मति, पापकृत् पापात्मन् २ अपराधिन्, दोषिन्।

पापोश, स स्त्री (फ़) दे 'जूता'।
पाबंद, वि (फ़ा) ाि, बद्ध, परतन्त्र, निरुद्ध सयत, नियन्त्रित।
पाबंदी, सं स्त्री (फ़ा) बंध, बंधन, निय न्त्रणा २ विवशता, बाध्यता।
पाम, सं पु (सं पामन्) पामा, विचर्चिका, खर्जू—घ्नी (स्त्री)।
—घ्न, सं पु, (स) पामारि, गन्धक सौगन्धिक।
पामन, वि (सं) पाम पामा-सज्, पीड़ित ग्रस्त।
पामर, वि (स) दुष्ट खल, दुर्वृत्त २ नीच अधम ३ मूर्ख, जड़।
पामाल, वि (फ़ा) पदा ति, पददलित पादधुण्ण, अव मर्दित २ वि ध्वस्त-नष्ट।
पायँचा, स पु (फ़ा) *पादायामजंघा।
पायँता, स पुं (हिं पयँ) सिरहाना *पदान, *पदतान।
पायँती, सं स्त्री, दे 'पायँता'।
पायंदाज़, सं पु (फ़ा) *पादपर्यंगम्।
पाय, सं पु (सं पाद) दे 'पाँव'।
पायख़ाना, स पु, दे 'पाख़ाना'।
पायजामा, स पु दे 'पाजामा'।
पायजेब, स स्त्री, दे 'पाजेब'।
पायदार, वि (फ़) स्थिर, स्थायिन्, दृढ।
पायदारी, सं स्त्री (फ़ा) स्थिरस्थायिता, दृढ़ता।
पायमाल, वि (फ़ा) दे 'पामाल'।
पायल, स स्त्री (हिं पाय) दे 'पाजेब' २ वशनि श्रेणी ३ द्रुतगामिनी हस्तिनी।
पायस, स पु (स पु न) परमान्न, दे 'खीर' २ श्रीवास, दे 'सारपीन'।
पाया, सं पु (सं पाद) (पर्यङ्कादीनां) पाद, अघ्रि, टंगा, २ स्तभ, स्थूणा, स्थाणु (पु) ३ पद, पदवी वि (स्त्री), स्थिति (स्त्री) ४ सोपान, पथ-मार्ग, परम्परा।
पायु, सं पु (स) दे 'गुदा'।
पारंगत, वि (स) पारग, परतीर पार-गत, २ प्रौढ़र्शिन्, अधीतिन्, सुविज्ञ, शास्त्र मर्मज्ञ।
पार, सं पु (सं पु न) पर, तीर तट २ अपवर तट ३ पर अभिमुख पार्श्व दिशा ४ अन, पर्यंत, सीमा ५ तल, अधोभाग। अव्य, पारे, दूरे, अग्रे, परत।
—करना, क्रि स, स-उद,-तृ (भ्वा प से), उत्,-प्लु (भ्वा आ से, सु), अति इ (अ प अ), अतिक्रम् (भ्वा प से)। २ समाप् (स्वा उ अ) सपूर् (चु), निर्वृ (प्रे) दे 'बींधना'।
—दर्शक, वि (स) स्वच्छ, किरणप्रकाश, मेय।
—दर्शी, वि (सं शिन्) दूरदर्शिन, भविष्य दर्शिन्।
—पाना, मु, सम्यक् बुध (भ्वा प से), आयत या (अ प अ) अथवा सपूर् (चु)।
आर—, सं पु पारापार, पारावारम्। क्रि वि, अवारपारम्।
वार—, स पुं, दे 'आरपार'।
पारखी, सं पु (हिं परख>) परीक्षक, गुण दोषविद् (पुं)।
पारग, पारगत, वि (सं) दे 'पारंगत'।
पारण, सं पुं (सं न) पारणा, उपवासान न्तर प्राथमिकभोजनं २ तर्पणं ३ समाप्ति (स्त्री)।
पारतन्त्र्य, स पु (सं न) दे 'परतन्त्रता'।
पारद, स पु (सं) दे 'पारा'।
पारदेशिक द्दी, वि, दे 'परदेसी'।
पारधी, सं पुं, दे 'शिकारी'।
पारलौकिक, वि (सं) आमुष्मिक, परलोक, सबंधिन् विषयक, अपार्थिव।
पारस, सं पुं (सं स्पर्श>) स्पर्श-मणि उपल २ अतिलाभद पदार्थ।
पारसाल, सं पुं (सं+पार+फ़ा साल) गत वर्ष, परुत् (अव्य)। क्रि वि, गताब्दे, परुत्।
पारसी, वि (फ़ा) पारसवासिन् २ भारतस्था पारसीका ३ 'फ़ारसी'।
पारसीक, सं पु (सं) पारसदेश, पारसिक २ पारसवासिन् ३ पारसप्रोद्भ, वानायुज।
पारम्परिक, वि (सं) दे 'परस्पर का'।
पारा, सं पु (स पार) महा-दिव्य, रस, रस, राज नाथ उत्तम इन्द्र, चपल, पारद, शिवबीज, सिद्धधातु।
पारायण, सं पु (स न) समापन, समाप्ति (स्त्री) २ आद्यन्तपाठ।
पारावत, स पुं (स) कपोत, २ कपि ३ पर्वत।

पारावार, स पु (स) समुद्र। (स न) तटद्वय २ सीमा पर्यंत, अवधि।

पारिजात, स पु (स) सुरदेवकल्प, तरु वृक्ष, मदार।

पारिजातक, स पु (स) देवतरुषु अन्यतम २ हरश्रृंगार ३ काचनाल, कोविदार ४ पारिभद्र देववृक्षविशेष।

पारितोषिक, स पु (स न) सिद्धिपाल, नयलाभ, दे 'इनाम'।

पारिपथिक, स पु (स) परिपथिन्, लुंट (टा ठा) क, मार्गतस्कर।

पारिभाषिक, वि (स) साकेतिक, परिभाषा सकेत, सबधिन्।

पारिषद, स पु (स) सभासद् (पु), सभ्य, पारिषद्य २ गण, अनुचरवर्ग।

पारी, स स्त्री, दे 'बार'।

पार्थक्य, स पु (स न) पृथक्त्ता, भिन्नता २ वियोग, विरह, विश्लेष।

पार्थिव, वि (स) मृण्मय (यी स्त्री), मातक (-की स्त्री) २ भौम, पृथिवीसबधिन् ३ लौकिक, ऐहिक (-की स्त्री)। स पु, नृप २ कुज।

पार्लियामेंट, स स्त्री (अ) व्यवस्थापिका सभा।

पार्वती, स स्त्री (स) उमा, अद्रिजा, अविरा, गौरी, नदा, भवानी महादेवी, शिवा, रुद्राणी, सती, सिंहवाहिनी, हिमाद्रितनया, हैमवती।

—नंदन, स पु (स) कार्तिकेय।

पार्श्व, स पु (स पु न) वक्षाधोभाग, पार्श्व पक्ष, भाग, कुक्षि २ पक्ष, पार्श्व ४ समीप निकट, स्थान ३ पार्श्वास्थि (न), पार्श्वकम्।

—वर्ती, स पु (स र्तिन्) समीपस्थ निकटस्थ, जन।

—शूल, स पु (स पु, न) शूलरोगभेद।

पाल[1], स पु (स) पालक, पोषक २ पत्रद्रुह, दे 'पीकदान'।

पाल[2], स पु (हिं पालना) फलपाकार्थ पलालास्तरणम्।

पाल[3], स पु (स पट वा पाट >) नौ, * वातपट २ पट, मंडप गृह ३ शकटाच्छादनम्।

पाल[4], स स्त्री [सं पालि (स्त्री)] सेतु, धरण, वप्रबध २ उच्च, तीर-कूल, दे 'कगार'।

पालक,[1], स पु (सं) पोषक, रक्षक, पालन कर्तृ पालयितृ २ अश्व, पाल रक्ष ३ दत्तक पुत्र ४ चित्रकवृक्ष।

पालक[2], स पु (स पालक) पालकी, सु स्निग्ध, धत्रा, मधुरा, क्षुरपत्रिका, ग्रामीणा।

पालकी, स स्त्री (स पल्यक >) शिरस्का, डयन, शिविका, *पल्यकी, रथगर्भक, याप्य यानम्।

—गाड़ी, स स्त्री, *पल्यकी शकटी।

पालतू, वि (स पालित) गृह,वर्धित पोषित, गृह्य, छेक, गृह, ग्राम।

पालथी, स स्त्री, दे 'पलथी'।

पालन, स पु (स न) भरण, पोषण, स, वर्धन, अन्नवसनै रक्षण २ निर्वाह, अनुकूला चरण, अनुवर्तन, साधन, पूरणम्।

पालना, क्रि स (स पालन) परि, पा (प्रे पालयति), परि, पुष् (भ्वा क् प से तथा प्रे), सवृध् (प्रे), सं, भृ (भ्वा जु प अ) २ (पशुविहगान्) विनी (भ्वा प अ), दम् (प्रे), गृहे पुष् सवृध् (प्रे) ३ अनुकूल आचर् (भ्वा प से), निवह् (प्रे) सपूर् साध (प्रे)। स पु, दे 'पालन' २ (शिशु) प्रेंसा दोला।

पालने योग्य, वि, परि, पालनीय पोषणीय, भरणीय, विनेय, निर्वाह्य, इ।

—वाला, स पु, दे 'पालक'(१) २ विनेतृ, गृहे पोषक ३ निर्वाहक, साधक।

पाला[1], स पु (स प्रालेय) तुषार, नीहार, कुज्झटिका, मिहिका, तुहिन, २ घनजल, जल घन, तुषारसघात, हिम ३ शीत, शैत्य, हिम।

—मार जाना, मु, नीहारेण नश् (दि प वे), तुषारेण ध्वस् (भ्वा आ से)।

पाला[2], स पु (हिं पल्ला) व्यवहारावसर, सबध।

—पड़ना, मु, व्यवहार सबध-कार्यं जन् (दि आ से)।

पाले पड़ना, मु, वशाभू, अधीन (वि) जन्।

पाला[3], स पु (स पट्ट >) प्रधानस्थान, मुख्यकार्यालय २ विभाजनरेखा ३ क्षेत्रसीमा ४ अन्नार्थं वृहत्पात्र ५ मल्लयुद्धभूमि (स्त्री), व्यायामशाला।

पालागन, स स्त्री (हिं पाँव+लगना) चरणचुंबन, पादप्रणति (स्त्री), प्रणाम, वंदना, नमस्कार।

पाला हुआ, वि , परि ,पालित, पोषित, स भृत, गृहे सवर्धित, सपूरित, रक्षित, इ ।
पालित, वि (स) दे 'पाला हुआ'।
पालिश, स स्त्री (अ) प्रमार्जम्, *कान्तिकरी।
पालिसी, स स्त्री (अ) नीति (स्त्री) नय २ राजनीति शासनरीति (स्त्री) ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ आयनिरक्षणसमयलेख्न सभाव्यहानिरक्षण पत्रम् आश्वासिका ।
—होल्डर, स , पु आश्वासिकाधारक ।
पालि¹, स स्त्री (स पालि -पक्ति >) भारत वर्षस्य प्राचीनभाषाविशेष (प्राय बौद्ध धर्म ग्रथ इसी मे है)।
पाली², वि (स ल्नि) पालक पोषक २ रक्षक।
पाली³, स स्त्री (स पल्लि स्थान>) कुक्कुट युद्ध भूमि (स्त्री)।
पावँ, स पु , दे 'पाव'।
पाव, स पु (स पाद) चतुर्थ, अश भाग, तुर्य, तुरीय २ (चार गिरह) गनतुर्य, हस्तार्द्ध ३ सेर, पाद , षट्कचतुष्कम्।
पावक, स पु (स) अनल , अग्नि २ ताप ३ सूर्य । वि , पावन, शोधक, मार्जक।
पावन, वि (सं) शुद्ध, पूत पवित्र, शुचि २ दे 'पावक'। वि [पावनी (स्त्री)]।
पावस, स स्त्री (स प्रावृष) दे 'बरसात' (मौसिम)।
पावा, स पु , दे 'पाया'(१)।
पाश, स पुं (सं) शस्त्रभेद , बधनं, २ जाल, मृगबधनी, पातिली, वागुरा ३ 'फाँसा'।
पाश्चात्य, वि (स) पश्चिमदेशज, प्रतीच्य २ उत्तर, उत्तरगामिन् ३ पश्चिम, चरम, अपर, अवर।
पापड, सं पुं , दे 'पाखड'।
पापडी, वि , दे 'पाखडी'।
पाषाण, स पु (स) दे 'पत्थर'।
पासग, सं पु (फ़ा) प्रतितोलक तुल्यपूरकम्।
पास¹, स पु (स पार्श्व -र्श्व) पक्ष , दिशा २ अधिकार , आधिपत्यं (अव्य), निकटे, समीप पे, अतिके-के, आरात्, उपकठ, निकषा, समया, सविधे (सब अव्य)।
—पडोस, सं पु , समीप-सनिहित-देश , प्रति वेश २ प्रातिवेश्या प्रतिवासिन (पु बहु)।
आस—, क्रि वि , इतस्तत अभित , परित २ दे 'लगभग'।
पास², स पु (अ) *अनुज्ञापत्रम्। वि उत्तीर्ण, सफल, सफलीभूत २ स्वीकृत, उररीकृत।
—पोर्ट, स पु (अ) पार निष्क्रम पत्रम्।
—बुक, स स्त्री (अ) धनागारपुस्तकम्।
पासा, सं पु (स पाशक) दे 'पाँसा' २ दे चौसर'।
—फेंकना, मु , भाग्यं परीक्ष (भ्वा आ से) २ अर्थे न्वि (दि प से)।
पाहुना, स पु (स प्राघुण) प्राघुण(णि)क , प्राघूणक , अतिथि २ जामातृ दे दामाद'।
पाहुनी, सं स्त्री (हि पाहुना) प्राघुणिका-की, प्र घूणकी २ आतिथ्य, अतिथि-सत्कार ।
पिंग, वि (स) आ इषत् पीत २ कपिल, पिंगल, पिशग ३ आ इषत् पिंगल-कपिल।
पिंगल, स पुं (स) छद सूत्रकारो मुनि विशेष २ (पिंगलरचित) छद शास्त्र ३ कपि ४ उल्लूक ५ अग्नि । वि , दे 'पिंग'।
—शास्त्र, स पु (स न) छन्दो,विचा विज्ञानम्।
पिंगला, स स्त्री (स) शरीर नाडीभेद ।
पिंगी, सं स्त्री (स) शमी, शिवा, भद्रा २ २ मूषा मूषिका ३ क्षुद्र मूषक-आखु ।
पिंजडा रा, स पु (स पिंजर) पजर -र, वि (वी)तस ।
पिंजर, स पु (स न) कायास्थिवृद ककाल , अस्थिपजर र २ स्वर्ण ३ दे 'पिंजडा'। वि , ईषत् पीत २ सुवर्णाभ ३ कपिल, पिंगल।
पिंड, स पु (स पु न) गोल -ल, वर्तुलद्रव्य २ लोष्ठ ठ, मृद्-खड पिंड, द्रव्यखड -ड, गड , घन ३ चय , राशि , ४ निवाप , श्राद्धोपयोगिभक्तगोल ५ आहार ६ शरीर, देह ।
—खजूर, सं स्त्री (स पिंडखर्जूर) राजजबू (स्त्री), स्थूलपिण्डा, पिंडखर्जूरी, दीप्या, फल्गुष्पा, हयभक्षा।
—दान, स पु (स न) पितृनिर्वाप ।
—छोडना, मु , न बाध (भ्वा आ से)।
पिंडली, स स्त्री (स पिंडी) जघापिंड , पिंडिका पिंडि (स्त्री), पिचिण्डिका।
पिंडा, स पु (स पिंड -ड) दे पिण्ड' (१, २, ४, ६)।
—पानी देना, मु , पितृभ्य पिंडोदक दा।

पिडालू, स पु (पिंडालु) रोमाल, रोम पिंट,-कद, रोमश ।
पिडिका, स स्त्री (स) क्षुद्रपिंड -ड २ लोष्टक ३ दे 'पिंडली' ४ चक्रनाभि (स्त्री) ५ प्रति मावेदिका।
पिडित, वि (स) पिंडी-घनी, भूत २ गणित ३ गुणित ।
पिड़ी, स स्त्री (स) दे 'पिंटिका' (१,३,४)। २ अलाबू (स्त्री) ३ पिंडखर्जूर ४ बलि वेदी ५ मृत्तगोल -लम्।
पिउ, वि (स प्रिय) वल्लभ, कान्त, दयित। स पु, पति, भर्तृ।
पिक, स पु (स) कोकिल, दे 'कोयल'।
—बंधु, स पु (स) पिक, राग-वल्लभ, आम्रवृक्ष ।
—बैनी, स स्त्री, कोकिलकंठा-ठी, सुमधु, कठा ठी।
पिकानन्द, स पु (स) पिकबान्धव, वसन्त, ऋतुराज ।
पिघलना, क्रि अ (स प्रघरणम्>) गल्, क्षर् (भ्वा प से), वि, द्रु (भ्वा प अ), द्रवीभू, वि, ली (दि आ अ) २ करुणार्द्रीं दयार्द्रीभू, करुणया द्रु, दय (भ्वा आ से)। स पु क्षरण, गलन, विलयन, द्रवण २ दयार्द्री भाव, दयनं, अनुकम्पनम्।
पिघलनेवाला, वि, वि, लेय, द्रवणीय, गलनाई।
पिघलाना, क्रि स, व 'पिघलना' (१ २) के प्रे रूप। स पु, वि, द्रावण-लावन, द्रवीकरणम्।
पिघलानेवाला, स पु, विद्रावक, विलयनकृत्।
पिघला हुआ, वि, वि-लीन, वि, द्रुत, गलित।
पिघलाया हुआ, वि, वि, द्रावित-लापित, क्षारित, गालित।
पिघालबिंदु, स पु (हिं +स) द्रावाङ्क, द्रवण, अङ्क बिंदु ।
पिच (चि) ड, स पु (स पुं न) उदर, जठर, फट ।
पिचकना, क्रि अ, व 'पिचकाना' के कर्म के रूप।
पिचकाना, क्रि स (अनु पिच) आ नि-स-पीड् (चु), समृद् (क्र् प से), आ-सं-कुच् (भ्वा प से । स पुं, संपीडनं, संमर्दनं, संकोचनम्।
पिचकानेवाला, स पु, सपीडक, संमर्दक इ।
पिचकाया हुआ, वि, सपीडित, सकोचित इ।
पिचकारी, स स्त्री (अनु पिच>) रेचन यन्त्र, शृङ्ग, शृङ्गक, वस्ति (पुं स्त्री)।
—छोड़ना या मारना, मु, शृङ्गेण क्षिप् (तु प अ), तरलद्रव्यं सवेग प्रास् (दि प से)।
पिचपिचा, (हिं पिचपिचाना) उन्न, क्लिन्न, श्यान, सार्द्र।
पिचपिचाना, क्रि अ (अनु पिचपिच>) पिचपिचायते (ना धा), शनैः क्षर् (भ्वा प से), प्रस्नु (अ प से)।
पिचुका, स पुं, दे 'पिचकारी' २ दे 'गोल गप्पा'।
पिच्छ, स पु (स न) पुच्छ, पक्ष-बाज २ मयूरपुच्छ, बर्ह र्हं, शिखण्ड, कलाप ३ शरपक्ष, पुख खम् ४ पक्ष, बाज ५ शिखा, शेखरम्।
पिच्छल, वि (स) चिक्कण -णा णम्, मेदुर रा-रम्, श्लक्ष्ण क्ष्णा-क्ष्णम्।
पिछड़ना, क्रि अ (हिं पिछाड़ी) मंद चल् र् (भ्वा प से), मदायते चिरायति (ना धा), पश्चात् वृत् (भ्वा आ से)।
पिछड़नेवाला, स पु, मद, मथर मद गामिन्।
पिछलगा, पिछलग्गू, स पु (हिं पीछे+ लगना) अनुयायिन्, अनुगामिन्, अनुवर्तिन्, शिष्य २ सेवक ३ आश्रित ।
पिछला, वि (हिं पीछा) पृष्ठस्थ, पश्चिम, पृष्ठ्य, पश्च, पश्चात्, २ उत्तर, उत्तरकालीन, अपर, पर, पाश्चात्य ३ अन्त्य, अन्तिम, उत्तर ४ गत, अतीत, पुराण।
पिछवाड़ा, स पु } (हिं पीछा) गृहस्य
पिछवाड़ी, सं स्त्री } पृष्ठ, पृष्ठभाग २ पृष्ठ पश्चाद्, भाग ३ गृहपृष्ठवर्तिभूमि (स्त्री)।
पिछाड़ी, स स्त्री (हिं पीछा) पृष्ठ, पृष्ठ पश्चाद्, भाग -देश २ (अश्वादीना) पृष्ठपादरज्जु (स्त्री)।
पिटना, क्रि अ (हिं पीटना) ताड् आहन् (कर्म)।
पिटवाना, क्रि प्रे, व 'पीटना' के प्रे रूप।
पिटाई, सं स्त्री (हिं पीटना) ताडनं, प्रहरणं, आहनन २ ताडनभृति (स्त्री)।

पिटारा, सं पु (स पिट) पेट, करड, कटोल ।
पिटारी, सं स्त्री (हिं. पिटारा) पिटक-क, पे(ग)क, पेटा, मजूषा, पेटि(डि)का, तरी रि (स्त्री)।
पिट्ठू, स पु (हिं पीठ) अनुगामिन्, अनुयायिन् २ सहाय, साहाय्यकारिन्।
पित, स स्त्री (स पित्त>) घर्मचर्चिका, घर्मस्फोटक ।
पितपापडा, स पु (स पपट) अरक, वरक, सु, तिक्त, चरक, क्षीन, प्रगाथ ।
पितर, स पु (स 'पितृ'का बहु) पिंड स्वधा श्राद्ध,भुज भाज, पिंडाश (सब बहु)।
पितराई, स स्त्री (हिं पीतल) पित्तल-नाश, रिष्ट-मलस्वाद, दे 'कमाव'।
पिता, स पु (स पितृ) तात, जनक, वप्तृ, प्रसवितृ, जनयितृ, जनितृ, जन्मद, बीजिन्।
—मह, स पु (स) दे 'दादा'।
—मही, स स्त्री (स) दे 'दादी'।
पितृ, स पु (स) दे 'पिता' २ दिवगता पूर्वपुरुषा २ देवविशेषा ।
—ऋण, स पु (स न) जायमानस्य ऋणभेद (अपना पुत्र उत्पन्न होने पर मनुष्य पितृ ऋण से मुक्त होता है। धर्म)।
—कर्म, स पु [स-र्मन् (न)] श्राद्धतर्पणादिक्रिया।
—गृह, स पु (स न) श्मशान २ दे 'मायका'।
—तर्पण, स पु (स न) तिलनिर्वाप, निवपन, निर्वपण २ दे 'तिल'।
—तिथि, स स्त्री (स पु स्त्री) अमाव(वा)स्या।
—तीर्थ, स पु (स न) गया २ वाराणस्यादितीर्थस्थानानि ३ तर्जन्यगुष्ठयोर्मध्यम्।
—पक्ष, स पु (स) आश्विनकृष्णपक्ष २ पितृसबधिन (बहु)।
—यज्ञ, सं पु (स) पितृतर्पणम्।
—लोक, सं पु (स) पितृभुवनम्।
पितृक, वि (स) दे 'पैतृक'।
पितृव्य, स पु (स) दे 'चाचा'।
पित्त, स पु (स न) मायु, पलज्वल, तिक्तधातु ।
—घ्न, वि (स) पित्त-मायु,-हर-नाशक।
—ज्वर, स पु (स) पैत्तिक-मायुन,-ज्वर ।
—की थैली, स स्त्री, पित्तकोष (gall-bladder)।
—पथरी, स स्त्री, पित्ताश्मरी।
—पापडा, स पु, दे 'पितपापडा'।
—प्रकृति, वि (स) मायुप्रकृति २ क्रोधिन्।
—प्रकोप, स पु (स) पित्त-मायु, प्रकोप-आधिक्य विकार ।
—हर, वि (स) दे 'पित्तघ्न'।
पित्तल, स पु (स न) आरकूट,-ट, आर, क्षुद्र-सुवर्ण, रीती ति (स्त्री), पीतलक, पातक, पिंगललोहम्।
—का, वि, पित्तल पीतक,-मय (-यी स्त्री)।
पित्ता, स पु (स पित्त>) दे 'पित्ताशय' २ साहस, वीर्य, शौर्य ३ कोप, क्रोध ।
—खौलना, मु, अत्यत कुप् (दि प अ)।
—निकालना, मु, नितरा परिश्रम् (प्रे)।
—पानी करना, मु, सुतरा परिश्रम् (दि प मे)।
—मारना, मु, क्रोध नि नियम् (भ्वा प अ)।
पित्ताशय, स पु (स) पित्त-मायु,-कोष ।
पित्ती, स स्त्री (स पित्त>) शीतपित्तम्, पित्तविकारज त्वग्रोगभेद, २ दे 'पित'।
पित्र्य, वि (सं) दे 'पैतृक'। स पु, (स) अग्रज २ माघमास ३ मघानक्षत्रम् ४ मधु (न) ५ माष, मासल ।
पित्र्या, स स्त्री (स) अमावस्या २ पूर्णिमा।
पिदडी, स स्त्री, दे, 'पिद्दी'।
पिद्दा, स पु } (अनु पिद)
पिद्दी, स स्त्री } चटकभेद २ तुच्छ,-जीव पदार्थ ।
पिधान, स पुं (स न) आच्छादनं, आवरण, कोष २ छद, छदन, पुट-टी ३ असि कोष ।
पिधायक, वि (स) आ प्रच्छादक, आवरक।
पिन, स स्त्री (अ) *धातुकटक-क, अल्प सूची।
पिनकना, क्रि अ (अनु) (अहिफेनमदेन) ईषत् निद्रा-स्वप् (अ प अ)।
पिनाक, स पु (स पु न) (शिवस्य) चाप, धनुस् (न) २ त्रिशूलम्।

पिनाकी, स पु (स किन्) शिव , महादेव ।

पिन्ना, स पु (स पिंड-ड) तैलकिट्ट पिण्याक, पिंड-ड २ मूत्र-गोल पिंड ।

पिन्नी, स स्त्री (स पिंडी) पिंटिका, पिटि (स्त्री) शादव, मिष्टान्न भेद २ दे 'पिडली' ।

पिपरमिंट, स पुं (अं) पुदीनजातीय क्षुप, *पिपरमिंट २ *पिपरमिंन्ट्।

पिपरामूल, स पु (स पिप्पलीमूल) चोल कटु-मूल, ग्रंथिक, सर्व पट्-कटु ग्रंथि (न) ।

पिपली, स स्त्री (स पिप्पली) पिप्पलि (स्त्री) श्यामा कृष्णा, मागधी, उ(ऊ)षणा, कोला, दतफला ।

पिपासा, स स्त्री (स) तृषा, दे 'प्यास' ।

पिपासित, वि (सं) तृषित, दे 'प्यासा' ।

पिपासु, वि (स) तृषित, दे 'प्यासा' ।

पिपीलक, स पु (स) पिपील , पिपीलिक , पीलक , दे 'चींटा' ।

पिपीलिका, स स्त्री (स) पिपी(पि)ली, हीरा, दे 'चींटी' ।

पिप्पल, सं पु (स) अश्वत्थ , दे 'पीपल' ।

पिप्पलाद, स पु (स) ऋषिविशेष ।

पिप्पली, सं स्त्री (स) दे 'पिपली' ।

—मूल, स पु, दे 'पिपरामूल' ।

पिय, पिया, वि (स प्रिय) वल्लभ, कान्त, दयित । स पु, पति भर्तृ ।

पियानो, स पु (अं) आंग्लवाद्यभेद, *प्रियध्वान ।

पिरिच, स पु (देश) दे 'तश्तरी' ।

पिरोना, क्रि स (स प्रोत>) सूत्र् (चु), गु(गुं)फ (तु प से) स,ग्रथ् (क्र्य प स), स, दृभ् (चु, भ्वा, तु प से) । सं पु, सूत्रण, गुम्फन, ग्रथन, सन्दर्भणम् ।

पिरोने योग्य, वि , सूत्रयितव्य गुम्फनीय इ ।

पिरोनेवाला, स पु, गुम्फक, ग्रथक, सूत्रयितृ इ ।

पिरोया हुआ, वि , सूत्रित, गुम्फित, ग्र(ग्रं)थित, सदृब्ध इ ।

पिल, स स्त्री (अं) गुटिका, गुलिका, वटिका ।

पिलना, क्रि अ (स पेल्न>) सहसा प्रविश् (तु प अ) २ सवर्ग अभिद्रु (भ्वा प अ)-आपत् (भ्वा प स) ३. सोत्साह प्रवृत् (भ्वा आ से) अत्यन्त परिश्रम् (दि प से) ४ निष्पीड् निकृष् (कर्म) ।

पिलपिला, वि (अनु पिलपिल) शिथिल, अतिपक्व, अतिमृदु ।

पिलाना, क्रि प्रे (हिं पीना) पा (प्रे पाय यति), धे (प्रे, धापयति), चम् (प्रे, चाम यति), २ स्तन्य-स्तन पा धे (प्रे) ।

पिल्ला, स पु (तामिल) श्व, शावक शिशु ।

पिशग, वि (स) कपिल, पिंगल ।

पिशाच, स पु (स) भूत , प्रेत , राक्षस , बेताल , असुर , दानव , दैत्य , निशाचर ।

पिशाचनी, स स्त्री (स पिशाची) पिशाचिका, निशाचरी, राक्षसी ।

पिशुन, स पु (स) छिद्रान्वेषि, सूचक, कर्णेजप २ परोक्षनिंदक, परिवादरत ३ दुर्जन, खल, नीच, गर्ह्य ।

पिशुनता, स स्त्री (स) पैशुन्य, पिशुनत्व, छिद्रान्वेषिता २ परोक्ष, निंदा परि(री)वाद ३ दुर्जनता ।

पिष्ट, वि (स) चूर्णित, चूर्णीकृत, क्षुण्ण । स पु, दे 'पीठी' ।

—पेषण, स पु (स न) चूर्णितचूर्णन, क्षुण्णक्षोदन २ पुनरुक्ति (स्त्री), पौनरुक्त्य, पुनर, वचन वाद ।

पिसनहारी, स स्त्री, (हिं पीसना) *पेषण कारी ।

पिसना, क्रि अ, द 'पीसना' के कर्म के रूप ।

पिसाई, स स्त्री (हिं पीसना) पेषण, चूर्णन, विदलन, क्षोदन २ पेषण-चूर्णन, भृति (स्त्री)-भृत्या ३ घोरपरिश्रम ।

पिसान, सं पुं (हिं पिसा+सं अन्नम्) दे 'आटा' ।

पिसा(सवा)ना, क्रि प्रे, द 'पीसना' के प्रे रूप ।

पिसौनी, सं स्त्री, पेषण, चूर्णनम् २ अन्न चूर्णन-व्यवसाय ३ अतिपरिश्रम ।

पिस्ता, स पुं (फा) मुकूलकम् ।

पिस्तौल, सं पु (अं पिस्टल) गुलिकास्त्र, लघ्वग्न्यस्त्रम् ।

पिस्सू, सं पु (फा पश्शह्=मच्छर)*कुटरी, देहिका, कुट ।

पिहित, वि (स.) तिरोहित, गुप्त २ अर्थाल कारभेद (सा)।

पींजना, क्रि स (स पिंजन=धुनकी>) *पिंज (प्रे पिंजयति) दे 'धुनना'।

पी, स पु (स प्रिय) कान्त, दयित, वल्लभ, २ पति, भर्तृ, प्राणेश्वर ।

पीक, स स्त्री (अनु पिच) पणष्ठयूत, ताबूलहाला ।

—दान, स पु (हिं +फा) पतद्ग्रह, प्रतिग्रह, *लालापात्र, निष्ठीवनपात्रम् ।

पीच, स स्त्री (स पिच्छा) पिच्छल स्त्रा, भक्तमण्ड, दे 'माड'।

पीछा, स पु (स पश्चात्>) पृष्ठ, पृष्ठ पश्च पश्चाद्भाग देश २ अनु-गमन-सरण-धावन ३ अन्वेषणम् ।

—करना, मु, अनु, इ-या (अ प अ) अनु, गम्-सृ (भ्वा प अ), अनु धाव व्रज् (भ्वा प से) २ साग्रह प्रार्थ (चु आ स)।

—छुड़ाना, मु, परिहृ (भ्वा प अ), वि परि-त्यज् (चु), आत्मानं रक्ष् (भ्वा प से)- त्रै (भ्वा आ अ)।

—छोड़ना, मु, न बाध् (भ्वा आ से) व्यथ्-मनथ् (प्रे)।

पीछे, क्रि वि (हिं पीछा) अनु (द्वितीया के साथ), पृष्ठत, पश्चात्, पश्चात्पृष्ठ, भागे-देशे २ अनन्तर, ऊर्ध्वं, पर, पश्चात् (सब अव्य) ३ अनुपस्थितौ, अभावे, परोक्षे ४ निष नानन्तर ५ हेतो, कारणात्, निमित्तात् ६ -अर्थं,-अर्थे, कृते (षष्ठी के साथ) ७ अन्त, अंते, परिणामे।

—आना, मु, विलंबेन या कालमतिक्रम्य आया (अ प अ)।

—छूटना या रहना, मु, अतिक्रम्-अतिलंघ् (कर्म) मद चल् (भ्वा प से) मन्दायते (ना धा)।

—चलना, मु, अनु, इया (अ प अ), अनु, व्रज् (भ्वा प से)-सृ (भ्वा प अ)-कृ।

—पड़ना, मु, साग्रह प्रार्थ (चु आ से) २ सतत बाध् (भ्वा आ से)-अर्द-व्यथ् (प्रे)।

—लगना, मु इष्टसिद्धये सतत अनुगम्, २ रोगादिभि निरतरं पीड् (कर्म)।

पीटना, क्रि स (स पीडन>) अभि-उप-प्र, हन् (अ प अ), आहन् (अ उ अ), प्रह (भ्वा प अ, सप्तमी के साथ) २ तड् (चु), तुद् (तु प अ), प्रह, आहन्, अर्द, पीड (चु) ३ दड् (चु), निग्रह (क्र प से)। स पु, आहति (स्त्री), आघात, प्रहार, ताडन, प्रहरण, पीडन, दडन, निग्रह, भ्रूलु, दौर, आपद्-विपद् (स्त्री)।

पीटने योग्य, वि, आहननीय, प्रहरणीय, ताडनीय, दडयितव्य ।

पीटने वाला, स पु, आ अभि, हन्, प्रहर्तृ, ताडयितृ, पीडक, दडयितृ ।

पीटा हुआ, वि, आहत, प्रहृत, ताडित, दडित इ ।

पीठ[1], स स्त्री (स पृष्ठ) पश्चिमाग, तनु चरम २ पश्चाद्पृष्ठ, भाग-देश ।

—चारपाई से लगना, मु, नितरां क्षि (भ्वा प अ)-कृशी भू।

—ठोंकना, मु, उत्तिन् प्रोत्सह (प्रे)।

—दिखाना या देना, मु, पलाय् (भ्वा आ से) अपधाव (भ्वा प से) २ परित्यज (भ्वा प अ)।

—पर हाथ फेरना, मु, दे 'पीठ ठोंकना' २ पृष्ठ परामृश् (तु प अ)।

—पीछे, मु, अनुपस्थितौ, परोक्षे।

—पीछे कहना, मु परोक्षे निंद् (भ्वा प से)।

—फेरना, मु, प्रस्था (भ्वा आ अ) २ पराङ्मुखी भू (३ ४) दे 'पीठ दिखाना'।

—लगना, मु, मल्लयुद्धे उत्तानो निपत् (भ्वा प से) २ सर्वथा पराजि (कर्म)।

—लगाना, मु, मल्लयुद्धे उत्तान निपत् (प्रे) ३ सर्वथा विजि (भ्वा आ अ)।

पीठ[2], स पु (स न) (काष्ठपाषाणधात्वा दिनिर्मित) आसन, पीठी २ (व्रतिना) कुशासन, विष्टर ३ प्रतिमाधार ४ अधिष्ठान, आवास ५ सिंहासन ६ वेदी-दिवा ७ प्रदेश, प्रान्त ।

पीठक, स.पु, दे 'पीठ'[2] १। २ शिबिकाभेद ।

पीठा, स पु, (स पिष्ट >) भोज्यभेद । पिष्ट ।

पीठिका, स स्त्री (स) दे 'पीठ' (१)। २ (स्तम्भादीना) आधार, पाद ३ प्रथमभाग ।

पीठी, स स्त्री (स पिष्टिका), पिष्टाद्रदाली लि (स्त्री), पिष्टद्विदल ।

पीड़क, स पु (स) दु ख,द न्दायक दायिन्, क्लेशकर, पीडावह ।
पीडन, स पु (स न) अर्दन, बाधन, उप मदन, क्लेशन २. दे 'दबाना'।
पीडा, स स्त्री (स) वेदना व्यथा, दु ख, रुन (स्त्री) रुजा, अ(आ)र्ति (स्त्री), क्लेश, बाध धा यातना, कष्ट, कृच्छ्र, परि स नाप ।
—कर, वि (स) दु ख कष्ट-व्यथा,-कर आवह प्रद इ [—करी (स्त्री) = दु खदा]।
मानसिक—, स स्त्री (सं) आधि, मनोव्यथा, चित्तोद्वेग ।
शारीरिक—, स स्त्री (स) व्याधि, रोग ।
पीडित, वि (स) दु खित, व्यथित, क्लेशित, सव्यथ, सरुन, कृच्छ्रगत ।
पीढ़ा, स पु (स पीठ) दे 'पीठ' (१)।
पीढ़ी, स स्त्री (स पीठी) पीठक क(काष्ठ विनिर्मित) उपासना, क्षुद्रासनम् ।
पीढ़ी[२], सं स्त्री (स पीठी) वशपरम्परावा पितृपितामहपुत्रपौत्रादीना पूर्वापरस्थान, *सन्तति क्रम ।
पीत, वि (स) हरिद्राभ, दे 'पीला'।
पीतल, स पु, दे 'पित्तल'।
पीतांबर, स पु (स न) हरिद्राभवस्त्र २ श्रीकृष्णचन्द्र । वि, पीतवस्त्रधारिन् ।
पीदड़ी, स स्त्री, दे 'पिद्दी'।
पीन, वि (स) पीवर, स्थूल, पुष्ट, मांसल ।
पीनक, स स्त्री (हिं पिनकना) अफेनतन्द्रा, अहिफेननिद्रा ।
पीनता, स स्त्री (स) पीवरता, स्थूलता, पुष्टता ।
पीनस[१], स पु (स) अपीनस, नासिका मय, घ्राणशक्तिराहित्यम् ।
पीनस[२], स स्त्री (फा फीनस) दे 'पालकी'।
पीना, क्रि स (स पान) पा पे (भ्वा प अ), चम् (भ्वा प स), पान कृ २ मद् (भ्वा आ स) ३ (क्रोधादीन्) निर्-यम् (भ्वा प अ), प्र, शम् (प्रे) ४ मद्य पा, सुरापान कृ ५ उद्, धूप् (प्रे) ६ धूम पा, धूमपानं कृ। स पु, धय, पान, आचमन, पीति (स्त्री)।
पीने योग्य, वि पेय, पानीय, चमनीय, धेय।
पीनेवाला, स पु धय पायिन्, पातृ २ पान, आसक्त रत शौंड, मद्यप ।
पीया हुआ, वि, पीत, धीत, चात ।
पीनोध्नी, स स्त्री (स) पीवरस्तनी गौ ।
पीप ब, स स्त्री (स पूय-य) क्षतज, मलज, प्रमित, पूयन, कुणपम् ।
—पड़ना, क्रि अ, पूय (भ्वा आ से)।
पीपल[१], स पु (स पिप्पल) अश्वत्थ, क्षीरशुचिबोधि, द्रुम, चल,दल पत्र, कुञ्जराशन ।
पीपल[२], स स्त्री, दे 'पिपली'।
पीपलामूल, स पु, दे 'पिपरामूल'।
पीपा, स पु (देश) *पटहपात्रम्।
पीयु, स पु (स) काक, वायस २ सूर्य ३ अग्नि (पु) ४ उलूक ५ समय ६ सुवर्णम्।
पीयूष, स पु (स पु न) सुधा, अमृत २ (नवप्रसूतायाः गो) दुग्धम्।
—वर्षी, वि (स र्षिन्) सुधास्यन्दिन्, सुमधुर।
पीर[१], सं स्त्री (स पीडा) दे 'पीडा' २ सहानुभूति (स्त्री) ३ प्रसवपीडा।
पीर[२], वि (फा) वृद्ध, जरठ २ धूर्त। स पु, धर्मगुरु, सिद्ध (मुसलमान)।
पीरी, स स्त्री (फा) जरा, वार्धक्यम्।
पील, स पु (फ़ा) गज, द्विप ।
—पाँव, स पु (फ़ा + हिं) श्लीपद, शिलीपदम्।
पीला, वि (स पीत) पीतल, हरिद्राभ, सुवर्ण कुंकुम,-वर्ण २ निस्तेजस्क, कान्तिहीन। (पीली (स्त्री) = पीता, हरिद्राभा)।
—बुखार, स पु, पीतज्वर ।
—पड़ना या होना, मु, पाण्डुच्छाय (वि) भू, गतश्रीक नीरक्त (वि) जन् (दि आ से)।
पीलिया, सं पुं (हिं पीला) दे 'पांडुरोग'।
पीलू, सं पुं (सं पीलु) गुडफल, शीतसह, विरेचन, श्याम, करभवल्लभ २ कृमि, बीर ३ रागभेद ।
पीव, स पुं, दे० 'पी'। सं स्त्री, दे० 'पीप'।
पीवर, वि (स) दे 'पीन'।
पीसना, क्रि स (स पेषण) पिष् क्षुद (रु प अ), चूर्ण् (चु), चूर्णी कृ, मृद् (क्र्या प से) २ मजलं पिष् इ ३ विरद

परिश्रम् (दि प से)। म पु, पेषण, चूर्णन, मर्दन, मर्दन २ पषणीयपदार्थ ।
पीसने योग्य, वि, पेषणीय, चूर्णयितव्य इ ।
पीसने वाला, स पु पेषक, चूर्णयितृ मर्दक ।
पीसा हुआ, वि, पिष्ट, चूर्णित, मर्दित ।
—पीसना, मु, मनन घोर च परिश्रम् ।
पीहर, स पु (स पितृगृह>) नारीणा पितृ वेश्मन् (न)।
पुगव, स प (स) वृष वृषभ । वि श्रेष्ठ उत्तम (उ नरपुगव =मानवोत्तम)।
पुज, स पु (स) उत्कर, राशि, चय ।
पुड, स पु (स) पुण्ड्र, दे 'तिलक' ।
पुडरीक, स प (स न) शुक्लपद्म शतपत्र, महापद्म, सित, अबुज अभोज २ कमल ३ सिंह ४ व्याघ्र ५ तिलक ६ श्वेतच्छत्र ७ शकरा ८ तीर्थविशेष ९ कुष्ठभेद ।
पुडरीकाक्ष, स पु (स) विष्णु । वि, कमल नयन (नयनी सा स्त्री)।
पुड्र, स पु (स) दे 'पुड्रक' (१) २ दे 'पुडरीक' (१) ३ दे 'पुड' ।
पुड्रक, स पु (स) रसाल -ली, इक्षुवाटी योनि (स्त्री), रसदालिका, करकशालि, इक्षुभेद । २ माधवी लता ३ तिलक ४ तिलकवृक्ष ।
पुलिग, स पु (स न) पुरुषचिह्न २ शिश्न ३ (प्राय) पुरुषवाचकशब्द (व्या)।
पुश्चली, स स्त्री (स) कुल्टा, व्यभिचारिणी, चपरडा, स्वैरिणी ।
पुसवन, स पु (स न) सस्कारभेद (धर्म)।
पुस्त्व, स पु (स न) पौरुष, पुरुषत्व, मैथुनसामर्थ्य २ शुक्र, वीर्य ३ तेजस्, ओजस् (न)।
पुआ, स पु (स पूप) अपूप, पिष्टक ।
पुआल, स पु, दे 'पयाल' ।
पुकार, स स्त्री (हिं पुकारना) आह्वयन, आह्वान, आहाव, अहू(हू)ति (स्त्री), आका (क)रणं-णा, सबोधन २ परिदेवन, दुःख निवेदन ३ प्रबलप्रार्थना, उच्चस्वरेण याचना ४ चीत्कार, उत्क्रोश ।
पुकारना, क्रि स (स प्लुतकरण>) आ ह्वे (भ्वा प अ) आकृ-सबुध् (प्रे) २ उच्चै वच (चु), उद्घुष (प्रे) ३ तार स्वरेण याच् (भ्वा आ से) प्रार्थ् (चु आ से) ४ रक्षार्थे आ वि क्रुश (भ्वा प अ) ५ (प्रतिकारार्थे) परिदेव (भ्वा आ से, चु) दु ख निविद् (चु) ६ नाम कृ, अभिधा (जु उ अ)। स पु, दे 'पुकार' ।
पुकारने योग्य, वि, आह्वेय आकार्य, सबोधनीय ।
पुकारने वाला, स पु आह्वायक, आकारक इ ।
पुकारा हुआ, वि, आहूत आकारित इ ।
पुक्कश, पुक्कस, स पु (स) निषादात् शूद्राया जातो मनुष्य वर्णसकरभेद । वि अधम नीच (-शी -सी स्त्री)।
पुखराज, स पु (स पुष्पराज) पुष्पराग, पीत, पीत स्फटिक -मणि -अश्मन् (पु), मजुमणि ।
पुख्ता, वि (फा -तह्) सबल, प्रबल २ दृढ, कठिन ३ स्थायिन् ४ पक्वेष्टकानिर्मित ५ अभिज्ञ ६ अनुभविन् ७ निश्चित ।
पुचकार री, स स्त्री (हिं पुचकारना) पुच,-कार -करण-कृति (स्त्री)।
पुचकारना, क्रि स (अनु पुच) पुचपुचायते (ना धा), पुचिति शब्द कृ ।
पुचारना, क्रि स, दे 'पोतना' ।
पुच्छ, स स्त्री (स पु न) दे 'पूँछ' ।
पुच्छल, वि (स पुच्छ>) पुच्छिन्, सपुच्छ, लागूलिन्, लागूलवत् ।
—तारा, स पु, धूम, केतु, उल्का, उत्पात ।
पुछल्ला, स पु (हिं पूछ) दीर्घपुच्छ -च्छं, लब्लागूल २ चाटुकार, मिथ्याशसक ३ परिहायसगिन् ।
पुजना, क्रि अ (हिं पूजना) पूज्-अभ्यर्च् (कर्म)।
पुजवाना, पुजाना, क्रि प्रे, व 'पूजना' के प्र रूप ।
पुजापा, स पु (स पूजापत्र) पूजा, प्रसेव पुट २ पूजासामग्री, देव,-उपायन-उपहार, नैवेद्यम् ।
पुजारी, स पु (स पूजाकारिन्) प्रतिमा, पूजक, देवल -लक २ भक्त, उपासक ।
पुट', स पु (अनु) शीकरासेक २ आ ईषद्, रजन ३ आ ईषद्, मिश्रण-सपर्क ।

पुट², स पु (स पु न) आच्छादन, आवरण, कोष, पिधान, वेष्टन २ पर्णपुट-ट, पत्र, द्रोण ३ द्रोणाकारपदार्थ (उ, अनलिपुट) ४ औषधपाकाय पात्रभेद ।
—पाक, स पु (स) पुटस्थौषधपचनं (वैद्यक)।
पुटकी, स स्त्री (स पुटकं>) दे 'पोटली'।
पुटित, वि (स) चूर्णित, पिष्ट २ विदारित, छेदित ३ सकुचित, आकुचित ।
पुट्ठा, स पु० (स पृष्ठ>) नितम्ब, जघन, कटिप्रोथ, २ अश्वादीना नितम्ब इ ३ ग्रथावरकपृष्ठम् ।
पुट्ठी, स स्त्री (हिं पुट्ठा>) शरग्नेमी भाग ।
पुड़ा, स पु (स पुट-ट) पत्रकोश २ दे 'पुड़ी'।
पुड़िया, स स्त्री (स पुटिका) पत्र, पुटिका २ औषधपुटिका ।
पुड़ी, स स्त्री (सं पुटी>) दे 'पुड़िया' २ पटहचर्मन् (न)।
पुण्य, स पु (स न) शुभादृष्ट, सुकृत, धर्म सुभद्र, कृत्य, धर्म, वृष, श्रेयस् (न)। वि, शुभ, मगल, पवित्र, भद्र, शास्त्र धर्म, विहित।
—भूमि, स स्त्री (स) भारत, भ(भा)रतवर्ष, आर्यावर्त ।
—लोक, स पु (स) स्वर्ग, नाक, सुर लोक ।
—वान्, वि (स-वत्) } दे 'पुण्यात्मा'।
—शील, वि (स) }
—श्लोक, वि (स) सच्चरित, आर्यवृत्त।
—स्थान, स पु (स न) पवित्रस्थल २ तीर्थस्थानम्।
पुण्यात्मा, वि (स-त्मन्) पुण्यवत्, पुण्य शील, धर्मशील, धार्मिक, धर्मात्मन् ।
पुण्योदय, स पु (स) सौभाग्योदय, पूर्व सुकृतारम्भ ।
पुतला, स पु (स पुत्तलक) दे 'पुतली'(१) (मृत्तिकावस्त्रादिनिर्मिता) प्रतिमूर्ति प्रति कृति (स्त्री)।
अक्ल का—, वि, चतुर, दक्ष ।
खाक का—, सं पुं, मानव, मनुष्यशरीरम्।
पुतली, स स्त्री (सं पुत्तली) पुत्रिका, पुत्त लिका, कुरटी, पाचालीलिका, शालभजिका २ कनीनिका, तारा,-तारका ३ तन्वी, कृशांगी ४ वस्त्रयत्र ५ मैनाकारमश्वखुरमासम्।
—का तमाशा, स पु, पुत्तली-कौतुकनृत्यम्।
—घर, स पु, वस्त्रयन्त्रालय ।
—फिरना, मु, कनीनिके स्तम्भ (कर्म, मृत्यु चिह्न) २ दृप (दि प अ)।
पुताई, स स्त्री (हिं पोतना) लेप, लेपन २ लेपन,भृति (स्त्री) भृत्या ३ सुधालेप ।
पुतारा, स पु, (हिं पोतना) उपदेहन, प्रलेपनम् २ लेपन उपदेहन, पट-वस्त्रम् ।
पुत्तलिका, स स्त्री (सं) दे 'पुतली' (१)।
पुत्तिका, स स्त्री (स) पतंगिका, मधुमक्षिका विशेष। २ दे 'दीमक'।
पुत्र, स पु (स) पुत्र, आत्मज, तनय, सुत, सूनु, तनु(नू)ज, पुत्रसतान, दायाद, नदन, आत्मजन्मन् (पु), अगज, कुमार दारक ।
—कदा, स स्त्री, (स) लक्ष्मणाकन्दा, पुत्रद औषधिभेद ।
—घ्नी, स स्त्री, गर्भनाशकयोनिरोगभेद ।
—वती, वि स्त्री (स) सपुत्रा, सुतवती।
—वधू, स स्त्री (सं) स्नुषा, वधू (स्त्री), जनी, पुत्रपत्नी।
पुत्रिका, स स्त्री (सं) दे 'पुत्री' २ दे 'पुतली' ३ कनीनिका, तारा।
पुत्री, स स्त्री (स) कन्या, आत्मजा, दुहितृ (स्त्री), तनुजा, सुता, तनया, स्वजा, नदिनी।
पुत्रेष्टि, स स्त्री (स) पुत्रनिमित्तक-यज्ञभेद ।
पुदीना, स पु (फा पोदीनह्) पुदीन, व्यञ्जन, सुगधिपत्र, वातहारिन्, अजीर्णहर, रुचिष्य ।
पुन, अव्य (स पुनर्) भूय (अव्य)।
—पुन, अव्य (स) भूयोभूय, वारंवार, रेण, अनेकवार, मुहु, असकृत्, पौन पुन्येन ।
पुनरावृत्ति, स स्त्री (स) पुन पाठ, पुन रध्ययन २ आवृत्ति प्रत्यावृत्ति (स्त्री) ३ पुन, विधान सपादन करण ४ पुनरीक्षण, सशोधनम्।
पुनरुक्ति, सं स्त्री (स) पौनरुक्त्य, पुन र्वचनम्।
पुनर्जन्म, सं पु [स-जन्मन् (न)] पुन

र्भव, पुनरत्पत्ति (स्त्री), प्रेत्यभाव, देहातरप्राप्ति (स्त्री)।
पुनर्भू, स स्त्री (स) द्विरूढा, दिधिषू (स्त्री)।
पुनर्वसू, स पु (स द्वि) यामकौ, आदित्यौ (द्वि)।
पुनीत, वि (स) पूत, पवित्र शुद्ध, निर्दोष।
पुन्य, स पु, दे 'पुण्य'।
पुमान्, स पु (स पुस) नर पु(पू) रुप, नृ (पु)।
पुरदर, स पु (स) दे 'इद्र' २ नगरभंजक ३ चौर।
पुरध्री, स स्त्री (स) पुरध्रि (स्त्री), कुटुबिनी २ नारी।
पुर, अव्य (स पुरस) अग्रे, अग्रत, समुखे, पुरत, पुरस्तात्, समक्ष (सब अव्य षष्ठी के साथ) २ पूर्वे, प्राक, अवाक् (सब अव्य पचमी के साथ) ३ प्राच्या दिशि।
पुर, स पु (स न) नगरी, पुर् (स्त्री) पुरी, पत्तन, स्थानीय २ शरीर ३ दुर्ग। ४ गृह ५ लोक, भुवनम्।
—द्वार, स पु (स न) नगर, द्वारम्।
—वासी, स पु (स मिन्) पौर, नागरिक, पुरन्नगर (जन)।
अत —, स पु (स न) अवरोध, शुद्धान
पुरखा, स पु (स पुरुष >) पूर्वजा, पूर्वपुरुषा, पितर, वशकरा (प्राय बहु मे)।
पुरजा, स पु (फा) (पत्रकस्वादोनाम्) खड ट, शकल २ अवयव, अगम्।
चलता—, सु, चतुर ३ उद्योगिन्।
पुरवा[1], स पु (स पुर>) लघुग्राम, ग्रामटिका।
पुरवा[2], स पु (स पूर्ववात) प्राचीपवन।
पुरश्चरण, स पु (स न) पुरस्क्रिया, पूर्वानुष्ठानम्।
पुरस्कार, स पु (स) पारितोषिक, उपायन, प्रतिफल २ आदर, सम्मान, पूजा।
पुरस्कृत, वि (स) आदृत, सम्मानित २ प्राप्तोपायन, लब्धपारितोषिक।
पुरा[1], अव्य (स) पूर्व प्राचीन पुरातन,-काले। वि, अतीत, प्राचीन (उ. पुरावृत्त)।
पुरा, स पु (स पुर>) ग्राम।
—कल्प, स पु (स) पूर्वकल्प २ प्राचीन काल।
पुराण, वि (स) प्राचीन, पुरातन। स पु (स न) प्राचीन,-कथा आख्यान २ हिंदू नामष्टादश आख्यानग्रथा (ब्रह्मविष्णुशिव पुराणादि)।
पुरातन, वि (स) पुराण, प्रतन, प्रत्न, चिरतन, चिरत्न, प्राचीन। (पुरातनी स्त्री)।
पुराना, वि (स पुराण) दे पुरातन' २ जीर्ण, शीर्ण ३ अनुभविन्, सानुभव।
—खुर्राट, सु, वृद्ध, जरठ २ अत्यनुभविन्।
पुरी, स स्त्री (स) नगरी, नृपावास, दे पुर'।
पुरीष, स पु (स न) विष्ठा, दे 'पाखाना' २ जलम्।
पुरु, स पु (स) नृपविशेष, ययाते कनिष्ठ पुत्र। वि, प्रचुर, बहु।
पुरुष, स पु (स) मनुज, मानुष, दे 'मनुष्य' २ नर, नृ, पुम ३ परमेश्वर ४ आत्मन् ५ पूर्वज, पूर्वपुरुष, ६ पति ७ क्रियासर्वनामादीना रूपभेद (व्या) ८ शरीरम्।
—कार, स पु (स) उद्योग, पुरुषार्थ।
—घ्नी, स स्त्री (स) पतिघातिनी नारी।
—धर्म, स पु (स) मनुष्यमात्रस्य धर्म।
—धौरेयक, स पु (स) नरपभ नरपुगव।
—पुर, स पु (स न) गाधारदेशराजधानी (वर्तमान पिशावर)।
—मेध, स पु (स) यज्ञभेद, नरमेध।
—वार, स पु (स) रवि मगल बृहस्पति शनि,-वार वासर।
—सूक्त, स पु (स न) ऋग्वेदस्य यजुर्वेदस्य च सूक्तविशेष (यह 'सहस्रशीर्षा' से आरभ होता है)।
महा—, स पु (स) महानन, नरकुञ्जर, महात्मन् २ दुष्ट, दुरात्मन्।
पुरुषत्व, स पु (स न) पौरुष, वीर्य, साहस २ पुस्त्व, नरत्वम्।
पुरुषार्थ, स पु (स) उद्यम, प्रयत्न, उद्योग, परिश्रम, पौरुष, पराक्रम, पुरुषकार २ पुरुष, प्रयोजन-लक्ष्य (धर्मार्थकाममोक्षा) ३ शक्ति (स्त्री), बलम्।
पुरुषार्थी, वि (स थिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्, परिश्रमिन्, उद्योग-उद्यम परिश्रम, शील-पर २ समर्थ, बलवत्।

पुरुषोत्तम, स पु (स) पुरुषर्षभ, नरकुंजर, मनुजश्रेष्ठ २ विष्णु ३ श्रीकृष्ण ।
पुरोहित, स पु (स) पुरोधस (पु), सौवस्तिक धर्मकर्मादिकारयितृ याज्ञिक, याजक ऋत्विज ।
पुरोहिताई, स स्त्री (स पुरोहित >) पौरोहित्य, पुरोहितकर्मन् (न) २ पुरोहित दक्षिणा ।
पुरोहितानी, सं स्त्री (स पुरोहित >) पुरोहित, पत्नी भार्या ।
पुल, स पु (फ़ा) सेतु, वारण संवर ।
—बाँधना, सेतु बध् (क् प अ) निर्मा (जु आ अ)।
पुलक, स पु (स) रोमाच राम, उद्गम हर्ष विकार-उद्भेद, त्वक्पुष्प, त्वगकुर २ रत्नभेद ।
पुलकावली, स स्त्री (सं) पुलकावलि (स्त्री), हर्षोत्फुल्लरोमाणि (न बहु)।
पुलकित, वि (स) रोमांचित, रोमांकित, पुलकित, जातपुलक, सपुलक, कण्टकित २ प्रहृष्ट, प्रसन्न ।
—करना, क्रि स, रोमांचयति (ना धा), रोमाणि उद् हृष् (प्रे)।
—होना, क्रि अ, रोमाणि उद्गम् (भ्वा प अ) हृष (दि प से)।
पुलपुला, वि (अनु) दे 'पिलपिला'।
पुलाव, स पु (फ़ा) मांसौदन, भक्तामिषम्, पलान्नम्।
पुलिंद, सं पु (स) चाण्डालभेद, प्राचीन जातिविशेष ।
पुलिंदा, स पु (हिं पूला) कूर्च, भार, पोट्टली ।
पुलिन, सं पु (स पु न) तोयोत्थितनतट तटी २ कूल, तीर, तट, ३ सैकत, सिकता मय तटम्।
पुलिस, स स्त्री (अ) नगररक्षका, पुरपाला, रक्षापुरुषा (बहु) रक्षिगण ।
—इन्सपेक्टर, स पुं (अं) रक्षक-रश्मि, निरीक्षक ।
—मैन, स पु (अ) रक्षक, दण्डधर, रक्षक रक्षारश्मि, पुरुष, नगरपाल, राजपुरुष ।
—सब इन्सपेक्टर, स पु (अ) रक्षकोप निरीक्षक, दे 'थानेदार'।
—सुपरिन्टेंडेंट, स पु (अ) रक्षकाध्यक्ष ।
पुवाल, स स्त्री, दे 'पयाल'।
पुश्त, स स्त्री (फ़ा) दे "पीठ" २ दे 'पीढ़ी'।
—दर पुश्त, क्रि वि, 'वंशपरंपरया'।
पुश्तैनी, वि (फ़ा पुश्त>) कुलक्रम-वंश परंपरा, आगत प्राप्त, परंपरीय, परंपरीण ।
पुष्कर, स पुं (स न) कमल, पद्म २ जल ३ तडाग-न ४ गजशुण्डाग्र ५ तीर्थविशेष ।
पुष्करिणी, स स्त्री (स) कासार २, तडाग क, सरसी, सरोवर ।
पुष्कल, वि (स) अधिक, बहु, प्रचुर, प्रभूत, बहुल, विपुल २ पर्याप्त, पूर्ण ।
पुष्ट, वि (स) पालित स, वर्धित, पोषित, भृत २ बलिष्ठ, पीन, पीवर ३ बल, प्रद वर्धक ४ दृढ ।
पुष्टई, स स्त्री (सं पुष्ट>) पुष्टिकर भक्ष्य मौषध वा, रसायनम्।
पुष्टता, स स्त्री (स) पीनता, पीवरता, दृढ़ागता।
पुष्टि, सं स्त्री (स) भरण, पोषण, स, वर्धन २ बलिष्ठता, दृढाङ्गता, पीवरता ३ दृढ़ता ४ समर्थन, अनुमोदन, दृढीकरण, उपो द्बलनम्।
—कारक, वि (सं) पुष्टि,-कर-दायक, बल वीर्य-वर्धक।
पुष्प, स पु (सं न) कुसुम, प्रसून, मणी चक, सुम, सून, सुमन, प्रसव, सुमनस् (स्त्री न, केवल बहुवचन में) २ आर्तव, ऋतुस्राव, रजःस्राव ३ नेत्ररोगभेद (हिं फूला) ४ कुबेरविमानम्।
—करंड,—डक, सं पु (सं) उज्जयिन्या प्राचीनदिव्योद्यानम् २ कुसुमकरण्डः ।
—काल, स पु (स) वसन्त, ऋतुराज । २ नारीणाम् आर्तवरज, समय ।
—कीट, स पु (स) भ्रमर, षट्पद २ कुसुमकीट ।
—द, सं पुं (सं) मकरन्द, भ्रामरम्, पुष्परस ।
—धन्वन,-बाण,-शर, —पुर, स पु (सं) पुष्पधन्वन् (पु) मदन, दे 'कामदेव'।
—पुर, स पुं (स न) दे 'पन्ना'।

—रस, स पु (स) पुष्पासव, भ्रामर, मकरद ।
—राज, स पु (स) दे 'पुखराज' ।
—रेणु, स पु (स) पराग , पुष्पधूलि (स्त्री) ।
—वाटिका, स स्त्री (स) पुष्प-कुसुम-वाटी उद्यानम् ।
—वृष्टि, स स्त्री (स) पुष्प-कुसुम,-आसार वृष्टि ।
पुष्पक, स स्त्री (स पु न) कुबेरविमान २ पुष्प ३ चक्षुरोगभेद ४ पित्तलभस्मन् (न) ।
पुष्पित, वि (स) कुसुमित, कुसुम पुष्प, विशिष्ट-युक्त ।
पुष्पोद्यान, स पु (स न) दे 'पुष्पवाटिका' ('पुष्प' के नीचे) ।
पुष्य, स पु (स) सिध्य , तिष्य , (अष्टम नक्षत्र) २ पौषमास ।
पुस्तक, स पु (स पु न) ग्रंथ , पुस्त-ती ।
पुस्तकालय, स पु (स) ग्रंथ, आलय अगार शाला ।
पूँछ, स स्त्री (स पुच्छ) लागू(गु)ल, लूम, (बालोंवाली पूँछ) बालधि , वालहस्त २ पृष्ठ पश्चाद् भाग ३ दे पिछलगा' ।
पूँजी, स स्त्री (स पुञ्ज >) मूल,-द्रव्य धन, मूल २ संचितसपत्ति (स्त्री) धन, पुञ्ज राशि ।
—पति, स पु , द्रव्यवत, धनिक , कोषीश्वर , धनाढ्य ।
पूआ, स पु (स पूप) अपूप , पिष्टक ।
पूग, स पु (स) गु(गू)वाक , क्रमु , क्रमुक २ समुदाय , समूह ३ (स न) क्रमुक गु(गू) वाक , फलम् ।
—फल, **पूगीफल**, स पु , (स पूगफल) पूग, चिक्का कण-कणा, उद्वेगम् ।
पूछ, स स्त्री (हिं पूछना) पृच्छा, प्रच्छना, अनुयोग , प्रश्न , जिज्ञासा २ आदर ,समान , प्रतिष्ठा ३ आवश्यकता, प्रयोजन ४ अन्वेषण णा, गवेषण णा ।
—गाछ, **—ताछ**, **—पाछ**, स स्त्री, दे 'पूछ'(१) ।
पूछना, क्रि स (स पृ(प्र)च्छन) प्रच्छ् (तु प अ), प्रश्नयति (ना धा),अनुयुज् (रु आ अ) २ आदृ (तु आ अ) समन् (प्रे) । स पु , प्रच्छन-ना, पृच्छा, अनुयोग , जिज्ञासा ।
पूछने योग्य, वि , प्रष्टव्य, जिज्ञासितव्य, अनुयोक्तव्य ।
पूछनेवाला, स पु प्रष्टृ, अनुयोक्तृ, जिज्ञासु ।
पूछा हुआ, वि , पृष्ट, अनुयुक्त, जिज्ञासित इ ।
बात न—, मु , न आदृ (तु आ अ) न समन् (प्रे) ।
पूजक, स पु (स) पूजयितृ, अर्चक , उपासक , आराधक भक्त ।
पूजन, स पु (स न) पूजा, अभि , अर्चन ना अर्चा, आराधन-ना, सपर्या, उपासन-ना २ समानन, सत्करण ३ वदन-ना ।
पूजना, क्रि स (स पूजन) पूज् (चु), अभि, अर्च् (भ्वा प से , चु), उपास् (अ आ से), आराध (स्वा प अ), भज (भ्वा उ अ) २ समन् (प्रे), आदृ (तु आ अ) ३ वद् (भ्वा आ से), नमस्यति (ना धा) ४ उत्कोच दा । स पु , दे 'पूजन' ।
पूजनीय, वि (स) दे 'पूज्य' ।
पूजा, स स्त्री (स) दे 'पूजन' ।
पूजार्ह, वि (स) दे 'पूज्य' ।
पूजने योग्य, वि , दे 'पूज्य' ।
पूजनेवाला, स पु , दे 'पूजक' ।
पूजा हुआ, वि , दे 'पूजित' ।
पूजित, वि (स) अभि , अर्चित, आराधित, उपासित २ समानित, आदृत, सत्कृत ३ वदित, नमस्कृत ।
पूज्य, वि (स) पूजनीय, पूजयितव्य, पूजार्ह, अभि ,अर्चनीय, आराधनीय, भजनीय २ आदरणीय, माननीय, सत्कार्य, वदनीय ।
—पाद, वि (स) परम-अत्यत, पूजनीय आराध्य ।
—पूजा, स स्त्री (स) सत्कारनमस्कार , अर्चनीय पूजनीय,-वन्दना-समादर ।
पूड़ा, स पु (स पूप) अपूप , पिष्टक ।
पूड़ी, स स्त्री दे 'पूरी' ।
पूत, वि (सं) दे 'पवित्र' ।
पूत, स पु , दे 'पुत्र' ।
पूतड़ा, स पु (हिं पूत) शिशु-बालक, आस्तर-विस्तर ।

—(डो) का अमीर, मु परम्परागत क्रमागत परंपरीण, धनिक धनाढ्य ।
पूतना, स स्त्री (स) राक्षसीविशेष २ बाल रोगभेद ।
पूति, स स्त्री (स) दे पवित्रता' ।
पूनी, स स्त्री (स पू>) पिंजिका, तूल, नालिका वर्त्तिका ।
पूप, स पु (स) अपूप पिष्टक ।
पूर, स पु (स) जलविप्लव वृद्धि २ व्रण संशुद्धि (स्त्री) ।
पूरक, वि (स) पूरयितृ, पूरणकृत् २ गैल्कि परिशिष्टात्मक । स पु, बीजपूर, मातुलुंग, सुफल २ गुणकांक (गणित) ३ प्राणायामभेद ।
पूरण, स पु (स न) भरण, निचयन, सकुल्यीकरण व्यापन २ निर्वतन, निष्पादन, समापन, सपादन ३ अंकगुणनम् । वि, पूरक, पूरयितृ ।
पूरना, क्रि स (स पूरण) पूर् (चु) पृ भृ (जु उ अ) २ आच्छद् (चु) ३ सपद् साध् (प्रे) ४ ध्मा (भ्वा प अ), (वाद्यना) पूर् (च) ५ दे 'बटना' ।
पूरब, स पु, दे 'पूर्व' ।
पूरबी, वि, दे 'पूर्वी' ।
पूरा, वि (स पूर्ण) पूरित, व्याप्त, सकीर्ण, आसमन्ता, कुल, आविष्ट, निचित, सभृत २ समग्र, समस्त, सकल, ३ अविकल, निर्दोष ४ यथेष्ट, पर्याप्त ५ सपन्न, सपादित, कृत ।
—**करना**, क्रि स समाप (स्वा उ अ) निर्वृत (प्रे), निःशिष (प्रे), अंत गम् (प्रे), सपूर (चु) ।
—**होना**, क्रि अ, समाप (कर्म), अंत गम् (भ्वा प अ), निःशेषी भू, सपद (दि आ अ) ।
—**उतरना**, मु, यथोचित वृत (भ्वा आ से) २ सफली भू ।
—**होना**, मु, स्वर्गं दिव गम्, मृ (तु आ अ) ।
पूरित, वि (स) दे 'पूरा (१)' । २ तृप्त, तुष्ट ३ गुणित, आनि हत ।
पूरी, सं स्त्री (स) पू(पो)लिका, पूपिका । कस्ता—, शष्कुली ।
पूर्ण, वि (स) दे 'पूरा'(१ ५) ।
—**काम**, वि (स) आप्तकाम, सफलमनोरथ २ निष्काम, अकाम, निरिच्छ ।
—**चंद्र**, स पु (स) पूर्णेन्दु ।
—**विराम**, स पु (स) वाक्यपूर्णताचिह्नम् ।
पूर्णतया, **पूर्णत**, } क्रि वि (स) अशेषत, सर्वथा, साकल्येन, सामग्र्येण, सामस्त्येन, निरवशेषम् ।
पूर्णता, स स्त्री (स) समग्रता, साकल्य २ सिद्धि, समाप्ति (स्त्री) ३ अविकलता, निर्दोषता ४ पूरितत्व, सभृतता ।
पूर्णमासी, स स्त्री (स) दे 'पूणमा' ।
पूर्णाहुति, स स्त्री (स) यागान्ताहुति (स्त्री) २ अनुष्ठानावसानकृत्यम् ।
पूर्णिमा, स स्त्री (स) पूणमा, पौर्णमासी, राका, पित्र्या, चान्द्री सिता, इन्दुमती, ज्योत्स्नी ।
पूर्त्त, स पु (स न) पालन २ वापीकूप तडागादिनिर्माणम् ।
पूर्त्ति, स स्त्री (स) (आरब्धस्य) समाप्ति निवृत्ति सिद्धि निष्पत्ति (स्त्री) २ पूर्णता, समग्रता ३ पूरण ४ गुणन ५ अपेक्षितद्रव्योपस्थापनम् ।
पूर्व, स पु (स पूर्वा) प्राची, पूर्व, दिशा दिश (स्त्री) आशा, ऐंद्री २ पूर्वदेश, पौरस्त्यजनपद । वि, अग्रग, पूर्वग, अग्र पूर्व गामिन् वर्तिन् २ पुराण, प्राचीन ३ दे 'पिछला' । क्रि वि, प्राक्, अर्वाक् (दोनों अव्य) ।
—**काय**, सं पु (स) (पशूना) देहाग्रभाग २ (नराणा) देहोर्ध्वभाग ।
—**काल**, स पु (स) प्राक् पूर्व प्राचीन, समय काल वेला ।
—**कालिक**, वि } (स) पुराण, प्राचीन, प्राक्
—**कालीन**, वि } कालीन, पुरातन, प्राक्तन ।
—**कृत**, वि (स) प्राग्विहित २ पूर्वजन्मकृत ।
—**जन्म**, स पु [स जन्मन् (न)] प्राग्जनि (स्त्री) ।
—**दिशा**, स स्त्री (स) दे. 'पूर्व' स पु (१) ।
—**पक्ष**, स पु (स) शास्त्रीय, प्रश्न शंका, चोद्य, देश्य, पंक्तिका २ कृष्णपक्ष ३ दे 'पूर्ववाद' ।
—**पक्षी**, स पु (सं पक्षिन्) वादिन्, सिद्धान्त विरोधिन् ।

—मीमांसा, स स्त्री (स) जैमिनिमुनिप्रणीत दर्शनग्रन्थविशेष ।
—वत्, क्रि वि (स) यथापूर्वं, पूर्वमद्गताम् ।
—वर्ती, वि (स निंद्) प्राग्वर्तिन्, पूर्व-अग्र, गामिन् ।
—वाद, स पु (स) भाषा, भाषापाद पूर्व, पक्ष, प्रतिज्ञा, अभियोग दे 'नालिश' ।
—वादी, स पु (स दिन्) अभियोक्तृ अर्थिन्, वादिन् शिरोवर्तिन्, दे 'मुद्दई' ।
पूर्वज, स पु (स) पूर्वपुरुषा, पितर (बहु) २ अग्रज, ज्यायान् भ्रातृ । वि, प्रागुत्पन्न ।
पूर्वत, अव्य (स) प्रथम, प्रथमत २ पुरत अग्रत (सब अव्य) ।
पूर्वतन, वि (स) पुरातन, प्राचीन, प्रतन, प्रत्न ।
पूर्वापर, वि (स) अग्रिमपश्चिम पूर्वपरवर्तिन् । स पु प्राचीनप्रतीच्यौ (द्वि) २ हानिलाभौ (द्वि) ।
पूर्वाभिमुख, (वि स) प्राङ्मुख (-खी स्त्री) ।
पूर्वाह्न, स पु (स) दिवा विभक्तदिवसस्य प्रथमभाग, प्राह्न, प्रातरह्न ।
पूर्वी, वि (स पूर्वीय) प्राच्य, पौरस्त्य, पूर्वदेशीय, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् [ची (स्त्री)]। स स्त्री, पूर्वीयभाषाविशेष २ रागिणीभेद ।
पूर्वीय, वि (स) दे 'पूर्वी' वि ।
पूला, स पु (स पूल) पूलक ।
पूष, पूस, स पु, दे 'पौष' ।
पृथक्, वि (स) भिन्न, व्यतिरिक्त, विश्लिष्ट, विभक्त, असलग्न । अव्य, विना, ऋते, अतरेण (सब अव्य) ।
—पृथक्, अव्य, वि, वि, भिन्नम् ।
पृथक्ता, स स्त्री (स) पृथक्त्व, पृथग्भाव, पार्थक्य, भिन्नता, विश्लेष, विभेद ।
पृथा, स स्त्री (स) कुन्ती, पाण्डुपत्नी, युधिष्ठिरादिजननी ।
—तनय, स पु (स) युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, (प्राय अर्जुन, पार्थ) ।
—पति, स पु (स) पाण्डुनृप, कुन्तीपति ।
पृथिवी, स स्त्री (स) पृथ्वी, पृथिवि (स्त्री), क्षिति भू भूमि (स्त्री), धरा, धरित्री, क्षोणी, वसुधा, वसुमती, वसुधरा, अवनी नि (स्त्री), मेदिनी, धरणी-णि (स्त्री), मही हि (स्त्री), अचलकीला, अचला, स्थिरा, इडा ।
—तल, स पु (स न) भू धरणी,-तल २ ससार ।
—नाथ, स पु (स) भू, पति पाल ।
पृथु, वि (स) विस्तीर्ण, विस्तृत, विशाल, २ बहु, प्रभूत ३ विशिष्ट ।
—कीर्ति, वि (स) अतियशस्विन् । स स्त्री, वसुदेवभगिनी ।
—दर्शी, वि, (स) दूरदर्शिन्, प्राज्ञ ।
—लोचन, वि, विशाल-नेत्र-नयन ।
—शेखर, स पु, (स) गिरि, पर्वत ।
—स्कध, स पु (स) शूकर, कोल ।
पृष्ट, वि (स) अनुयुक्त, प्रश्नित, जिज्ञासित ।
पृष्ठ, स पु (स न) दे 'पीठ' (१ २) । २ पुस्तक, पत्र पर्ण ३ पुस्तकपृष्ठम् ।
—पोषक, स पु (स) सहाय-यक, उपकर्तृ ।
पेंग, स स्त्री (स प्रेंखा>) दोलन, प्रेंखण, दोलादि (स्त्री) ।
—चढाना या बढाना, मु, सवेग प्रेंख् (प्रे), उच्चै प्रेंखोलयति (ना धा) ।
पेंदा, स पु (स पिंड-ड>) तल, अधोभाग, बुध्न ।
पेंसिल, स स्त्री (अं) अङ्कनी, स्वयलेखनी, वर्तिका, वर्णमातृ (स्त्री) ।
पेच, स पु (फा) व्यावर्तन, मोटन, आ, कुचन २ विघ्न, विघात प्रत्यूह ३ धूर्तता, शाठ्य ४ उष्णीष-व्यावर्तन ५ यत्र ६ यन्त्रावयव ७ वल्यर्कील्क ८ पतगसूत्रसग्रथन ९ (मल्ल युद्धादीना) कपटोपाय, युक्ति (स्त्री) १० उष्णीषादेरलकार ११ दे 'पेचिश' ।
—कश, स पु (फा) *वलयकीलकर्ष २ *पिधानकर्ष ।
—खाना, क्रि अ, मडली-वर्तुली भू ।
—डालना, क्रि स, पतगसूत्राणि मिथ सश्लिष् (प्रे) ।
—ताब, स पु (फा) अत,-कोप क्रोध ।
—दार, वि (फा) आकुचित, व्यावर्तित २ गहन, कठिन, दुर्बोध ३ सश्लिष्ट, सग्रथित ।
—पडना, क्रि अ, पतगसूत्राणि परस्पर सश्लिष (दि प अ) ।
—वान, स पु (फा) बृहद्धूमपानयन्त्र २ धूमपानयन्त्रस्य वृहन्नाली ।
पेचक, स स्त्री (फा) सूत्र-तन्तु,-गोल गोलम् ।

पेचिश, स स्त्री (फा) प्रवाहिका आमरक्तम् २ उदरवेदनाभेद ।

पेचीदगी, स स्त्री (फा) कौटिल्य, वक्रत्व २ दुर्बोधता क्लिष्टत्व, गहनत्वम् ।

पेचीदा, वि (फा) } दे 'पेचदार'।
पेचीला, वि (फा पेच) }

पेज, स पु (अ) पुस्तक , पृष्ठम् ।

पेट, स पु, (स पेट >) उदर , जठर २ कुक्षि , पेट , मलुक २ गर्भ ३ आमाशय ४ अन्तःकरण ५ अवकाश ६ विस्तार ७ जीवन, प्राणधारणम् ।

—काटना, मु , धनसंचयाय अल्प खाद् (भ्वा प से) ।

—का धधा, मु , जीवनोपाय , आजीविका साधनम् ।

—का पर्दा, मु , अन्त्रावरणम् ।

—का हलका, मु , क्षुद्रप्रकृति, तुच्छ, प्राकृत ।

—की आग, मु , क्षुधा, बुभुक्षा ।

—की आग बुझाना,—मु , क्षुधा निवृत् (प्रे) ।

—गिरना, मु , गर्भः पत् (भ्वा प से)स्रु (भ्वा प अ) ।

—गुडगुडाना या बोलना, मु , कर्दनं जन् (दि आ से) कर्द् (भ्वा प से) ।

—दिखाना, मु , निजदारिद्र्य प्रकटयति (ना धा) ।

—पालना, मु , कृच्छ्रेण जीव् (भ्वा प से), यथाकथंचित् उदरं पृ (जु प से) ।

—पीठ एक होना, मु अत्यंतं क्षि (भ्वा प अ),कृशीभू ।

—फटना, मु , अधीर (वि) भू , धैर्यं मुच् (तु प अ) ।

—फूलना, मु , हासातिशयेन उदरं स्फुर् (भ्वा आ से)श्वि (भ्वा प से) ।

—भर, मु , उदरपूर्ति यावत् २ यथेष्टम् ।

—भरना, मु , स परि तुष् (दि प अ), परि ,तुष् (दि प अ) २ उदर पूर् (कर्म) ।

—मे चूहे कूदना या दौड़ना, मु , नितरा क्षुध् (दि प अ), अत्यन्तं अशनायति (ना धा) ।

—रहना, } मु गर्भं धृ (चु), अन्तर्वत्नी
—से होना, } भू ।

—वाली, मु , गर्भिणी, गर्भवती, अन्तर्वत्नी ।

—से पाँव निकालना, मु सन्मार्ग कुमार्गे प्रवृत् (भ्वा आ से) ।

पेटा, स पु (हिं पेट) मध्य, मध्यभाग २ विस्तृतविवरण ३ दे 'घेरा' ४ सीमा ५ परिधि ६ सरित्प्रवाहमार्ग ७ नदी विस्तार ८ पक्षत्र ९ *पतगसूत्रशिथिलभाग ।

पेटी', स स्त्री (स) पेटिका, लघु पेट पेट पेटा, मजूषा, समुद्गक २ नापितकोश प ।

पेटी , स स्त्री (हिं पेट) कटिसूत्र बंध, मेखला, काची २ कुल्लुल्करसूत्रम् ।

पेटीकोट, स पु (अ) चोली, पटवास ।

पेटू, त्रि (हिं पेट) औदरिक, उदरम्भरि, अग्नर, घस्मर ।

पेटेंट, वि (अ)विशिष्टाधिकाररक्षिता मकरचना ।

पेटून, स पु (अ) सरक्षक दे ।

पेट्रोल, स पु (अ) *प्रस्तरतैलम् ।

पेठा, स पु (देश) (सफ़ेद) पीनपुष्प, कुष्माड, पीतपुष्प, पुष्प बृहत्, फल (पोला पेठा-दे 'कुम्हड़ा') ।

पेड़, स पु (स पिंड ट>) दे 'वृक्ष' ।

पेडा, स पुं (स पिंड) क्षीरपिंड-ड २ आर्द्रचूर्णपिंड ।

पेडी, स स्त्री (हिं पेड) तरु, स्कन्ध प्रकाण्ड २ कबन्ध ३ नागवल्लीदलभेद ४ सद्गुल्लजो नीलीक्षुप ।

पेडू , स पु (हिं पेट) वस्ति (पु स्त्री) २ गर्भाशय ।

पेदड़ी, स स्त्री , दे 'पिद्दी' ।

पेन्शन, स स्त्री (अ) वार्धक्यपूर्वसेवा, वृत्ति (स्त्री) ।

पेन्शनर, स पु (अ) पूर्वसेवावृत्तिभोजिन् ।

पेन्सिल, स स्त्री (अ) दे 'पेंसिल' ।

पेपर, स पु (अ) पत्र, दे 'कागज़' २ लेख , लेख्यपत्र ३ वृत्त समाचार, पत्रम् ।

पेय, वि (स) पानीय, पानार्ह, धेय । स पुं, पातव्यद्रव्य २ जल ३ दुग्धम् ।

पेयूष, स पु (स पे(पी)यूष प) सद्यः प्रसूताया गो क्षीर २ अमृत ३ अभिनवघृतम् ।

पेरना, क्रि स (स पीडन) (रसतैलादिक) निष्पीड् (चु), निष्पिष् (भ्वा प अ) २ नितरा पीड् (चु)-अर्द् (भ्वा प से) ।

पेलना, क्रि स (स पीडन) सहसा निविश्

(प्रे) बल्ता अन प्रविश् (प्रे) २ (हस्ता दिकेन) प्र वि चल (प्रे), प्रणुद प्रवृत (प्रे) ३ उपेक्ष (भ्वा आ से) अवाण (चु) ४ स्यन् (भ्वा प अ), ग्राम (दि प से) ७ बल प्रयुत् (रु आ अ) ६ ७ दे पेरना (१२)।

पेल्वाना, क्रि प्रे द 'पेल्ना' के प्र रूप।

पेला, म पु (हिं पेल्ना) कलह, वग्युद्ध २ अपराध, दोष ३ आक्रमण ४ (बन्द) अपमारण मचान्नन्।

पेश, क्रि वि (फ़ा) अग्रे पुर, पुरत, समुख (सब अव्य)।

—आना, मु, व्यवह (भ्वा प अ), आचर् (भ्वा प से) २ मट्वृत (भ्वा आ से)।

—करना, मु पुरत स्था (प्र स्थापयति) दृश् (प्रे) २ उपह (भ्वा प अ), ऋ (प्रे अर्पयति)।

—चलना या जाना, मु, प्रभुत्व वृत्।

—होना, मु, उपस्था (भ्वा आ अ), पुरत स्था (भ्वा प अ)।

पेशगी, म स्त्री (फ़ा) प्राग्दत्तमूल्य,*अग्रार्घ ।

पेश (प, स) ला, वि (म) सुकुमार, मृदु, मृदुल २ तनु क्षीण ३ सुन्दर, मनोज्ञ ४ विज्ञ, दक्ष ५ छलिन्, मायिन्।

पेशवा, स पु (फ़ा) नेतृ, नायक, अग्रणी २ पुरोहित ३ महाराष्ट्रामात्योपाधि ।

पेशवाई, स स्त्री (फ़ा) प्रत्युद्गमन, दे अगवानी २ नेतृत्वम्।

पेशा, म पु (फ़ा) व्यवसाय, उपजीविका, वृत्ति (स्त्री)।

—कमाना या करना, मु वेश्यावृत्त्या निवाह कृ।

पेशानी, म स्त्री (फ़ा) मस्तक २ भाग्य ३ अग्रभाग ।

—पर बल आना या पड़ना, मु, क्रुध (दि प अ), कुप्‌ (दि प से)।

पेशाब, म पु (फ़ा, मि० स प्रस्राव)मूत्रम्।

—की अधिकता, स स्त्री, मूत्र,मेह आधिक्यम्।

—खाना, स पु (फ़ा) मूत्रालय, मेहनशाला, प्रस्रावागारम्।

—निकल कर आना, स पुं, मूत्रकृच्छ्रम्।

—रुकना, स पु, मूत्र, रोध स्तम्भ ।

पेशावर,[1] म पु (फ़ा) व्यवसायिन्, उपजीविन्।

पेशावर,[2] स पु (फ़ा पेश+अवर>) पुरुषपुरम्।

पेशी[1], स स्त्री (फ़ा) व्यवहारदर्शन, विचार २ उप पुर, स्थान स्थिति (स्त्री), *पुरोभाव ।

पेशी,[2] स स्त्री (स) (देहस्था) मांस पिण्डी ग्रन्थि (पु) २ वज्र ३ अण्ड ४ असि कोश ५ ५. गर्भावेष्टनचर्ममयकोष ।

पेशानगोई, म स्त्री (फ़ा) भविष्यद्वाद, अनागतकथनम्।

पेषण, स. पु (म न) चूर्णन, मर्दन खण्डनम्।

पेषणी, स स्त्री (स) पेषणशिला, पेषणि (स्त्री), पट्ट गृहाश्मन् (पु)।

पैंजनी, स स्त्री (हिं पायँ+अनु. झन>) पादांगद, नूपुर -र, मञ्जीर -रम्।

पैंठ, म स्त्री (स पण्यस्थान) दे 'बाजार' २ दे 'दुकान'।

पैंड, स पुं (स पाददण्ड>) पादन्यास, चरणपात, क्रमण २ पद, क्रम ३ मार्ग ।

पैंडा, म पु (हिं पैंड) मार्ग, पथ, पथिन् २ मन्दुरा, वाजिशाला ३ रीति (स्त्री), प्रणाली।

पैंताना, म पु. (हिं पायँ) खट्वाया पदस्थान, *पदस्थान ।

पैंतालीस, वि [स पञ्चचत्वारिंशत् (नित्य स्त्री)]। म पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (४५) च।

पैंतीस, वि [स पञ्चत्रिंशत् (नित्य स्त्री.)]। स पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (३५) च।

पैंसठ, वि [स पञ्चषष्टि (नित्य स्त्री)।] स पु, उक्ता संख्या, तदङ्कौ (६५) च।

पै[1], अव्य (म पर) परन्तु किन्तु, पर २ अनन्तर, तदनु ३ निश्चयेन, अवश्यम्।

जौ—, यदि।

तौ—, तदा।

पै[2], अव्य (हिं पास या म प्रति) समीपे, पे, निकटे २ प्रति, दिशि।

पै, प्रत्य (स उपरि) अधि, प्राय सप्तमी विभक्ति मे २ द्वारा, प्राय तृतीया विभक्ति मे।

पकेट, स पुं (अ) ल्पुकूच २ पत्रकोश।

पैगवर, सं पु (फा) देवदूत, धर्मप्रवर्तक।

पैगाम, स पु (फा) सदेश वार्ता।

पैठ, स स्त्री (स प्रविष्ट>) प्रवेश, प्रविष्टि (स्त्री.) २ गति प्राप्ति (स्त्री), गतागतम्।

पैड, स पु (अ) पत्राली।

पैड़ी, स स्त्री (हिं पैर) दे 'सीढ़ी'।

पतरा, स पु (स पदान्तर>) युद्धे पादन्यास प्रकार।

—बदलना, मु पादन्यास परिवृत् (प्रे)।

पैतृक, वि (स) पितृ-सबंधिन् विषयक, पित्र्य, पैत्र [पैतृकी, पैत्री, (स्त्री)]।

पैत्त, वि (स) पैत्तिक, पित्तप्रकोपज, पित्त, जनित उद्भूत।

पैत्तल, वि (स) पीतलक पीतक-पित्तल, मय निर्मित-सम्बन्धिन्।

पैत्र, वि (स) दे० 'पैतृक'।

पैदल, क्रि वि (स पाद >) पादचारी भूत्वा, पद्भ्यामेव, यान विना। वि, पाद चारिन् गामिन्। स पु, पदिक, पादग, पादगामिन्, पदाति नि, पदातिक, पद्ग, पत्ति, पद्ध २ पत्तय, पदातय, पदातिका (सब बहु)।

पैदा, वि (फा) जात, उत्पन्न २ प्रवृत्ति, आविर्भूत ३ आर्जित, प्राप्त।

पैदाइश, स स्त्री (फा) उत्पत्ति (स्त्री), जन्मन् (न)।

पैदाइशी, वि (फा) सहज, औत्पत्तिक २ स्वाभाविक, प्राकृतिक, नैसर्गिक।

पैदावार, स स्त्री (फा) कृषिफल, शस्य २ आय, अर्थागम।

पैना, वि (स पैण्>) तीक्ष्ण, निशित(शा)त, तेजित, क्ष्णुत। स पु, कृपाण, तीव्र-वेणुकम्।

पैमाइश, स स्त्री (फा) मान, प्र परि माण, मापनम्।

—करना, क्रि स, दे 'मापना'।

पैमाना, स पु (फा) मान, मान, दड-सूत्र इ, प्र परि, माणम्।

पैर, स पु, दे 'पाँव'।

—गाडी, स स्त्री, द्विचक्री त्रिका, पादयानम्।

पैरना, क्रि अ (सं प्लवन) दे 'तैरना'।

पैरवी, स स्त्री (फा) अनु-गमन सरण, २ आज्ञापालन ३ पक्ष, मंडन-समर्थन ४ उद्यम, प्रयत्न।

पैरा, पैराग्राफ, स पु (अं) (प्रस्तावादिवस्य) खड, भाग, अनु परि, च्छेद।

पैराक, स पु, दे 'तैराक'।

पैराव, सं पु, दे 'डुबाव'।

पैराशूट, सं पु (अ)*उयन उत्र,*परिप्लुतम्।

पैरोकार, सं पुं (फा पैरवीकार) अनु यायिन् गामिन् २ पक्षसमर्थक, सहायक।

पैरोल, स पुं (अं) प्रतिज्ञा, संगर।

—पर, वि, प्रतिज्ञा-संगर, बद्ध।

पैवंद, स पु (फा) पटखंड ड, प्रथित शकल-ल २ वृक्षान्तरनिवेशित, प्ररोह शाखा, दे 'कलम'।

—लगाना, क्रि स, वृक्षान्तरे निविश (प्रे) २ पटखडै सिव (दि प से) संधा (जु उ अ)।

पैवंदी, वि (फा) दे 'कलमी'।

पैशाचिक, वि (स) पैशाच, आसुर, भौत २ घोर, बीभत्स, क्रूर, निर्दय।

पैशाची, स स्त्री (सं) प्राकृतभाषाविशेष।

पैशुन्य, सं पुं (स न) दे 'पिशुनता'।

पैसा, सं पु (स पणांश >) पण, पणक २ धन, वित्तम्।

पैसेवाला, मु, धनिक, धनाढ्य २ पणार्ध।

पोंगा, स पु (सं पुटक >) कीचकपर्वन् (न), अन्त शून्यवेणुनाली। वि, शून्यगर्भ, शून्योदर २ अज्ञ, अज्ञ।

पोंगी, स स्त्री (हि पोंगा) दे 'बाँसुरी'।

पोंछना, क्रि स (स प्रोञ्छन) प्रोञ्छ् (भ्वा प से) मृज् (अ प से, चु), निघृष् घुष् (प्रे) निघृष् (भ्वा प से)। सं पु, प्रोञ्छन, मार्जन, निर्घर्षणम्।

पोंछने योग्य, वि, प्रोञ्छनीय, निर्घृष्य, शोधनीय।

—वाला, सं पुं, प्रोञ्छक, मार्जक।

पोंछा हुआ, वि, प्रोञ्छित, निर्घृष्ट, शोधित।

पोखर रा, स पुं (सं पुष्कर) दे 'तालाब'।

पोट, सं स्त्री (सं पोट >) पोट्टली-लिका २ राशि।

पोटला, सं पुं (हिं पोटली) कूर्च चं,भार।

पोटली, स स्त्री (स मोट्टली) पोट्टलिका, लघु-कूर्च भर ।
पोटा, स पु (स पुट >) उदर, जठर, उदराशय २ साहस, शौर्य ३ सामर्थ्य ४ अगुल्यग्र ५ अगुलीपर्वन् (न)।
पोटाशियम, स पु (अं) दहातु (न), पोगशम्।
पोत, स पु (स) पोथ, पाहित्य, प्रवहण, होड महानौका २ शाव-वत्स, अर्भक, पोतक, पृथुक, डिम्भ ३ वस्त्र ४ दश वर्षो गज।
पोतडा रा, स पु (हिं पोतना) *पोतन (शिशुमल) *प्रोंछन।
पोतना, क्रि स (स पोतन>) (सुधा मृत्तिकादिभि) लिप् (तु प अ) - अन (रु प से) दिह (अ उ अ)। स पु, लेपनवस्त्रम्।
पोता, स पु (स पौत्र) पुत्रपुत्र, नप्तृ।
पर—, स पु (स प्रपौत्र) पुत्रपौत्र पौत्रपुत्र।
पोता, स पु (हिं पोतना) लेपनवस्त्र २ लेपनकूर्चीविशेष ३ (लेपनाय) अर्द्र मृत्तिका।
—फेरना, मु., सवस्त्र लुठ (चु) २ सुधा मृत्तिकादिभि लिप् (तु प अ)।
पोताई, स स्त्री दे 'पुताई'।
पोती, स स्त्री (स पौत्री) पुत्रपुत्री, नप्त्री।
पर—स स्त्री (स प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री।
पोत्या, स स्त्री (स) पोतसमूह, नौका पंक्ति (स्त्री)।
पोथा, स पु (स पुस्तक) बृहद् पुस्तक ग्रंथ।
पोथी, स, स्त्री (स पुस्ती) पुस्तक ग्रथ।
पोदीना, स पु, दे पुदीना'।
पोना, क्रि स, (हिं पूआ—ना) उत्क्वथ रोटिका रच् (चु) २ रोटिका पच् (भ्वा प अ) ३ दे 'पिरोना'।
पोप, स पु (अं) रोमीयधर्म, अध्यक्ष अधिपति।
—लीला, स स्त्री (अं + स) धर्माडम्बरविस्तर।
पोपला, वि (हिं पुल्पुल) दंत-दशनरदन विहीन-रहित।
पोर, स स्त्री [स पर्वन् (न)] अगुली, ग्रथि-सधि पवन् २ अगुलीग्रथ्यो मध्यभाग पर्वन् ३ वशेक्ष्वादिग्रथ्योर्मध्यभाग, पर्वन्।
—पोर में, क्रि वि, पवणि पवणि, सर्वपवसु।
पोरी, स स्त्री (हिं पोर) दे 'पोर' (३)।
पोल, स प (हिं पोला) अवकाश, शून्य स्थान २ सारहीनता, निस्सारता, शून्यगर्भता, निगुणता, अनर्घता।
—खुलना, मु, पाप प्रकटीभू, दोष विवृ (कर्म)।
पोला, वि (स पोल >) अत शून्य, रिक्त-शून्य-मध्य-गर्भ-उदर २ निस्सार, तत्त्वहीन ३ दे 'पुल्पुला' [पोली (स्त्री)]।
पोलिटिकल, वि (अं) राजनीतिक, राज-शासन, विषयक।
—एजट, स पु (अं) राजनीतिकप्रतिनिधि।
पोलो, स पु (अं) दे 'चौगान'।
पोशाक, स स्त्री (फ़ा पोश) वेशभूषा, परिधान, वसनानि (बहु)।
पोशीदा, वि (फ़ा) गुप्त, प्रच्छन्न।
पोषक, वि (सं) पालक, पालयितृ, पोष यितृ सवर्द्धक पोष्टृ २ सहायक।
पोषण, स पु (स न) पालन, भरण, सवर्द्धन २ पुष्टि (स्त्री) ३ माहात्म्यम्।
पोषित, वि (स) पालित, सवर्द्धित।
पोष्य, वि (स) पालनीय, सवर्द्धनीय।
—पुत्र, स पु. (स) दत्तक।
पोसना, क्रि स (स पोषण) दे 'पालना' (१२)।
पोस्ट, स स्त्री (अं) पद, अधिकार २. पत्र-वाहनसस्था ३ दे डाक'।
—आफ़िस, स पु (अं) पत्रालय।
—कार्ड, स पु (अं) पत्रम्।
—मार्टम, स प (अं) शवपरीक्षणम्।
—मास्टर, स पु (अं) पत्रालयाध्यक्ष।
—मैन, स पु (अं) पत्रवाहक।
पोस्टेज, स स्त्री (अं) पत्रशुल्कम्।
पोस्त, सं पु (फ़ा) खसतिल-खसखस फल २ खसखसवृक्ष ३ त्वच (स्त्री) ४, वल्कल, वल्क-कम्।
पोस्ती, स पु (फ़ा) खसखसफलसेविन् २ अलस, मथर।
पोस्तीन, स पु (फ़ा) *चर्मकंचुक।
पौंचा, स पु (हिं पाच) सार्द्धपचगुणनसूची।
पौंड, स पु (अ.) निष्क, स्वर्णमुद्रा(१) अर्द्धसेर देशीय भारतोल।

पौंडा, स पु (स पौंड्र) पौंड्रक । इक्षुभेद ।

पौ,[1] स स्त्री (स पाद >) किरण रश्मि, ज्योतिस् (न) अहर्मुख, उषा ।

—फटना, मु , वि प्र, भात जन (दि आ मे) अरुण उत् इ (अ प अ) ।

पौ,[2] स स्त्री (स पद>) अक्षपातभद ।

—बारह होना, मु, जि (भ्वा उ अ) २ भाग्य उत् इ (अ प अ) ।

पौडर, सं पु (अ) क्षोद चूर्ण २ पटवासक पिष्टान ।

पौढ़ना, क्रि अ , दे 'लेटना' ।

पौत्र, स पु (स) दे 'पोता' ।

पौत्री, स स्त्री (सं) दे 'पोती' ।

पौद, स स्त्री (स पोत >) बालवृक्ष वृक्षक, २ स्थानातरे आरोपणीय उद्भिज्ज ३ सन्तान, वंश ।

पौधा, पौधा, स पु. (स पोत >) क्षुद्रपादप , वृक्षक , उद्भिज्ज , बालतरु २ क्षुप , गुल्म ।

पौन,[1] वि (स पादोन) त्रिचतुर, त्रितुर्य, त्रिपाद [पौनी (स्त्री)] ।

पौन,[2] स पु स्त्री दे 'पवन' ।

पौना, सं पु (स पादोन) पादोनगुणनसूची । वि , दे 'पौन' ।

पौने, वि (स पादोन) दे 'पौन' ।

—सोलह आने,मु , प्राय सामान्येन-मामस्त्येन साकल्येन ।

पौर, वि (स) नागरिक पुर नगर सन धिन् जान ।

—कन्या, स स्त्री (सं) पौर नगर पुर नगर-कन्या कुमारी २ नागरी पौराङ्गना ।

—जन, स पु (स) पौर नि नागर नागरिक , पौर , पुर , पुर नगर-वासिन् ।

—मुख्य, स पु (स) पौरवृद्ध महार्घ ।

—रक्ष्य, स पु (स न) नगरनागरिकता ।

पौराणिक, वि (स) पुराणमर्मज्ञ २ पुराण, वेत्तृपाठक २ प्राचीन ३ काल्पनिक ।

पौरिया स पु (हिं पौरि) द्वारप = द्वारस्थ ।

पौरी ~~ड़ी~~, स स्त्री (सं प्रतो ~~ली~~ >) (नगर दुर्गादीना) द्वार २ दे 'ड्योढ़ी' ।

पौरुष, स पु (सं न) पुरुषत्व, पुरुत्व २ पुरुषार्थ , उद्यम , उद्योग ३ साहसम् पराक्रम । वि , पुरुषसबधिन्, मानुष, मानव ।

पौरुषेय, वि (स) पौरुष, मानवीय, मानव मनुष्य, रचित ।

पौर्णमासी, स स्त्री (स) दे पूर्णिमा' ।

पौवा, स पु (स पाद) (सेर) पाद २ पादमानपात्रम् ।

पौष, स पु (स) तिष्य , तैष , पौषिक, हैमन सहस्य ।

पौष्टिक, वि (स) पुष्टि, कर कारक, बलवीर्य, वर्द्धक ।

पौसर—ला, पौसाला, स स्त्री (स पय शाला) प्रपा, दे सबील' ।

प्याऊ, स पु (स प्रपा) पयःशाला, दे 'सबील' ।

प्याज़, स पु (फा) पलाण्डु, मुखदूषण, उष्ण शूद्रप्रिय , कृमिघ्न , दीपन , बहुपत्र , रोचन , मुखगन्धक ।

प्याज़ी, वि (फा प्याज) पलाण्डुवर्ण ।

प्यादा, स पु (फा) पादग , पदग , पत्ति, पदाति २ दूत, सदेशहर ३ शारिभेद ।

प्यार, स पु (हिं प्यारा) प्रीति (स्त्री), प्रेमन् (पु न), स्नेह , अनु , राग , भाव, प्रणय , अभिनिवेश २ लालन, चुम्बन आलिंगन इ ।

—करना, क्रि स , भाव अनुराग बध् (क्र प अ) कम् (भ्वा आ से) स्निह् (दि प स सप्तमी के साथ) २ लल् (चु), आश्लिष् (भ्वा प से), परिरभ् (भ्वा आ अ) चुम्ब् (भ्वा प से) ।

प्यारा, वि (सं प्रिय) दयित वल्लभ, कान्त, प्रेमपात्र २ हृद्य, रम्य, मनोज्ञ, रुचिर, रुच्य [प्यारी (स्त्री)=प्रिया, वल्लभा, दयिता २ कामिनी, हृदया इ] ।

प्याला, सं पु (फा) चषक क, शराव ।

प्यास, स स्त्री (स पिपासा) तृष् (स्त्री) । तृष्णा, तृषा, तर्ष , उदन्या, पिपासा २ लालसा, प्रबलेच्छा ।

—बुझाना, मु , तृषा शम् (प्रे) अपनी (भ्वा प अ) ।

—लगना, मु , उदन्यति (ना धा), पिपासति (सन्नन्त) तृष् (दि प स) ।

प्यासा, वि (हिं प्यास) पिपासु, तृषार्त, तृषित, तृष्णज्, तर्षित ।

प्रकप, स पु (स) वेपथु, रायथु, दे 'कपकपी'।
प्रकट, वि (स) स्पष्ट, व्यक्त, स्फुट, उल्वण उद्रिक्त २ आविर्भूत, दृष्ट।
—करना, क्रि स, प्रकटयति (ना धा), प्रकटी कृ, प्रकाश् (प्रे)।
—होना, क्रि अ, आविर् प्रकटी, भू, प्रकाश (भ्वा आ से)।
प्रकटित, वि (स) प्रादुर आविर् प्रकटी भूत, २ आविष प्रकटी, कृत।
प्रकरण, स पु (स न) पौर्वापर्य, पूर्वापर सबध, प्रसग २ अध्याय, परिच्छेद ३ दृश्यकाव्यभेद।
प्रकर्ष, स पु (स) उत्कर्ष श्रेष्ठत्व उत्तमता २ आधिक्य, प्राचुर्यम्।
प्रकाट स पु (स पु न) स्कध, दण्ड, का० १ शाखा ३ वृक्ष। वि, सुमहत् सुवि स्तृत, सुविशाल।
प्रकार, स पु (स) भेद, वा जाति (स्त्री) २ रीति (स्त्री), सारणी, विधि ३ सादृश्यम्।
प्रकाश, स पु (स) आलोक, उज्ज्वला, आभा, आभास, द्युति धुति-दीप्ति त्विष्-भास् (सब स्त्री), भासस-ज्योतिस्-तेजस् (न), श्री, द्योत, प्रभा २ आतप, सयालोक, घर्म ३ अभिव्यक्ति (स्त्री), आवभाव ४ प्रसिद्धि (स्त्री) ५ अध्याय।
प्रकाशक, स पु (स) द्योतक, दर्शक, उद्भासक २ ख्यापक, प्रकाशयितृ।
प्रकाशन, स पु (स न) प्रकटी आविष्करण २ प्रख्यापन, प्रचारण (पुस्तकादि का)।
प्रकाशमान, वि (स) भासमान, द्योतमान, भासुर १ प्रसिद्ध, विश्रुत।
प्रकाशित, वि (स) दे 'प्रकाशमान' २ उद्भासित, आलोकित ३ प्रचारित, प्रख्यापित, प्रकट।
प्रकाश्य, वि (स) प्रकाशनीय, प्रख्यापनीय, प्रचारणीय।
प्रकीर्ण, वि (स) अवकीर्ण, नष्ट, व्यस्त, विक्षिप्त, विकिरण।
प्रकीर्णक, वि (स) दे 'प्रकीर्ण'। स पु (स पु न) चमर, चामरम्। स पु (स) घोट, अश्व। स पु (स न) नाना विविध-बहुविध-वस्तुसग्रह २ प्रकरण, अध्याय ३ विविधविषयाध्याय।
प्रकुपित, वि (स) अति-कुपित-क्रुद्ध-सरब्ध।
प्रकृत, वि (स) वास्तविक-तात्त्विक [-की (स्त्री)] तथ्य, अवितथ, यथार्थ २ सविशेष कृत-रचित विहित।
प्रकृति, स स्त्री (स) स्वभाव, वृत्ति (स्त्री), शील, स्वरूप, धर्म, गुण २ दे 'तासीर' ३ प्रधान माया, जगत उपादानकारण, पृथ्व्यादि परमाणव (बहु)।
—ज, वि (स) सहज, स्वाभाविक, सह जात, नैसर्गिक।
—मडल, स पु (स न) राष्ट्र, राज्य, देश।
—सिद्ध, वि (स) सहज, स्वाभाविक, नैस र्गिक, औत्पत्तिक।
—स्थ, वि (स) स्वस्थ, शान्त, विकार क्षोभ रहित।
प्रकोप, स पु (स) अत्यत-कोप क्रोध मन्यु अमर्ष २ (रोगादीना) प्रसार, आधिक्य ३ देहधातुविकार।
प्रकोष्ठ, स पु (स) कफोणेरधोमणिबन्ध पर्यन्तो हस्तभाग २ बहिर्द्वारपार्श्वस्थ कोष्ठ ३ विशालागनम्।
प्रक्षालन, स पु (स न) धावन, मार्जनम्।
प्रक्षालित, वि (स) धौत मार्जित, जलशोधित।
प्रक्षिप्त, वि (स) प्रास्त, अपास्त, निरस्त २ कालान्तरे मिश्रित योजित।
प्रक्षेप, स पु (स) प्रासन, निरसन, प्रक्षेपण, अपासन २ विकिरण ३ पश्चात् मिश्रणम्।
प्रखर, वि (स) उग्र, प्र, चड, प्रबल, तीव्र २ निशित(शा)त, तीक्ष्णाग्र, दे 'तेज'।
प्रख्यात, वि (स) दे 'प्रसिद्ध'।
प्रख्याति, स स्त्री (स) दे 'प्रसिद्धि'।
प्रगट, वि, दे 'प्रकट'।
प्रगल्भ, वि (स) चतुर, दक्ष, कुशल, प्रवीण २ प्रत्युत्पन्नमति, प्रतिभाशालिन् ३ उत्साहिन्, साहसिन् ४ निर्भय, अभय ५ वावदूक, प्रजल्पक ६ गम्भीर, प्रौढ ७ प्रधान, मुख्य ८ धृष्ट, निर्लज्ज, अपत्रप ९ उद्धत, विनय शून्य १० अभिमानिन्, दृप्त ११ पुष्ट १२ समर्थ, शक्त।
प्रगल्भता, स स्त्री (स) दाक्ष्य, कौशल, प्रावीण्य २ प्रतिमा ३ निर्भयता ४ उत्साह ५ वाक्चातुर्य, प्रत्युत्पन्नमतित्व ६ गाम्भीर्य ७ प्रधानता ८ धाष्टर्य, निर्लज्जता ९ औद्धत्य,

वैपुल्य १० अभिमान ११ पुष्टत्व १२ प्रन ल्प, वावदूकता १३ सामर्थ्यम्।

प्रगाढ़, वि (स) अत्यन्त अत्यधिक प्रभूत, प्रचुर २ अतिग(ग)भीर अतिगहन ३ कठिन, कठिन धन।

प्रग्रह, स पु (स) ग्रहण धारण २ अश्वा दीना रश्मि ३ किरण ४ (तुला) सूत्र ५ बाहु ६ इन्द्रियनिग्रह।

प्रचड, वि (स) तीव्र, उग्र घोर, प्र खर, २ प्रबल, बलवत् ३ भीषण, भयकर ४ कठिन, कठोर ५ असह्य, दुस्सह ६ बृहत् महत् ७ पुष्ट, पीन ८ प्रतप्त ९ प्रतापिन्।

प्रचडता, स स्त्री (स) उग्रता, तीव्रता, प्रखरता, २ भीषणता भयकरता।

प्रचलन, स पु (स न) दे प्रचार'।

प्रचलित, वि (स) प्रचरित, सचारित प्रसिद्ध, लोकसिद्ध, वर्तमान, विद्यमान।

प्रचार, स पु (स) प्रचलन, प्रसार, सतोप योग, निरन्तरव्यवहार।

—करना, क्रि स प्रचर्-प्रचल् प्रसृ (प्रे)।

प्रचारक, वि (स) प्रसारक, प्रचालक, विस्ता रक। [प्रचारिका (स्त्री)]।

प्रचुर, वि (स) विपुल, बहुल, अधिक, प्रभूत, प्राज्य, बहु, भूयिष्ठ, भूरि।

प्रचुरता, स स्त्री (स) बाहुल्य, आधिक्य, वैपुल्य, भूयिष्ठत्वम्।

प्रच्छन्न, वि (स) गुप्त, गूढ अदृष्ट, तिरो भूत २ आच्छादित आवेष्टित।

प्रजा, स स्त्री (स) सतान, सतति (स्त्री) २ प्रकृतय शासितजना राज्यनिवासिन (सव बहु)।

—तंत्र, स पु (स न) जनतत्रशासन, प्रजा सत्ताक राज्य, जनताप्रभुत्वम्।

—नाथ, स पु (स) नृप २ ब्रह्मन् ३ मनु ४ दक्ष।

—पति, स पु (स) सृष्टि नगन्‌,-कर्तृ-रच यितृ-स्रष्टृ, २ ब्रह्मन् ३ मनु ४ नृप ५ सूर्य ६ अग्नि ७ पितृ ८ गृहपति।

प्रजावती, स स्त्री (स) भ्रातृजाया, दे 'भावज' २ अग्रजपत्नी ३ गर्भवती ४ सता नवती।

प्रज्ञ, स पु (स) प्राज्ञ, बुद्धिमत् विद्वस्, पण्डित।

प्रज्ञा, स स्त्री (स) बुद्धि (स्त्री) ज्ञान २ सरस्वती ३ एकाग्रता।

—चक्षु, स पु (स क्षुस्) धृतराष्ट्र २ अध (व्यग्य) ३ बुद्धिनेत्रम् ४ प्राज्ञ।

—पारमिता, स स्त्री (स) पूर्णज्ञान, सर्व ज्ञता (बौद्ध०)।

—वाद, स पु (स) पाण्डित्य विद्वत्ता पूर्णोक्ति (स्त्री)।

—हीन, वि (स) मूर्ख, मूढ, जड, अज्ञ।

प्रज्वलित, वि (स) देदीप्यमान, दंदह्यमान, जाज्वल्यमान प्रदीप्त, २ सुस्पष्ट, स्वच्छ।

प्रण[1], स पु (स पण >) व्रत, दृढसकल्प, प्रतिज्ञा, शपथ, वाचा।

—करना, सशपथ प्रतिज्ञा (कृ आ अ), प्रतिश्रु (स्वा प अ)।

प्रण[2], वि (स) पुराण, प्राचीन।

प्रणत, वि (स) प्रह्वीभूत २ वदमान ३ नम्र ४ निधन।

प्रणति, स स्त्री (स) प्रणाम, प्रणिपात, नमस्कार, नमस्क्रिया, वदना २ नम्रता ३ निवेदनम्।

प्रणय, स पु (स) दे 'प्यार' २ सस्नेह-प्रार्थनम्।

प्रणयन, स पु (स) लेखन, रचन, निर्माण, विधान, करणम्।

प्रणयिनी, स स्त्री (स) प्रिया, वल्लभा दयिता २ पत्नी भार्या।

प्रणयी, स पु (स यिन्) रमण, वल्लभ कान्त दयित २ पति, भर्तृ।

प्रणव, स पु (स) ओंकार २ परमेश्वर।

प्रणाम, स पु (स) दे 'प्रणति' (चतुर्विध अष्टाग, पचाग अभिवादन, वरशिर मर्याद)।

—करना, क्रि स, नमस्कृ, प्रणम् (भ्वा प अ) अभिवद् (चु आ स) वद् (भ्वा आ से)।

प्रणाली, स स्त्री (स) जलप्रवाह परि वाह, सरणि (स्त्री) २ प्रथा, परिपाटी, परपरा, रीति (स्त्री) ३ युक्ति पद्धति (स्त्री)।

प्रणिधान, स पु (स न) समाधि २ भक्ति वर्धन ३ कर्मफलत्याग ४ चित्तैका ग्रम् ५ प्रार्थना ६ व्यवहार।

प्रणिधि, स पु (स) दे गुप्तचर'।

प्रणिपात, स पु. (स) दे 'प्रणति' ।
प्रणीत, वि (स) लिखित, रचित, निर्मित, कृत, विहित २ सस्कृत, सशोधित ३ आनीत ४ प्रेषित ।
प्रणेता, स पु (स प्रणेतृ) लेखक , रचयितृ, कर्तृ, निमातृ ।
प्रतप्त, वि (स) तापित, अत्युष्णी,-कृत भूत ।
प्रताप, स पु (स) तेजस्-ओजस् (न), अनुभाव , अभिख्या, गौरव, ऐश्वर्य, महिमन् (पु) २ पौरुष, वीर्य, शौर्य ३ ताप , उष्णता, धम ।
प्रतापी, वि (स -पिन्) प्रतापवत् तेजस्विन्, ओजस्विन्, अनुभाववत् २ वीर, शूर ।
प्रतारणा, स स्त्री (स) वचनता, कपट, प्रतारण २ धूर्तता, कैतवम् ।
प्रति, स स्त्री (स प्रति>) प्रति-अनु,-लिपि (स्त्री), प्रतिलेख । (उपसग) समक्ष, सम्मुख तुलनाया २ प्रति (द्वितीया के साथ, सप्तमी विभक्ति से भी, उ , भगवान् के प्रति श्रद्धा = भगवत प्रति अथवा भगवति श्रद्धा) ३ दिशि (सप्तमी) ।
प्रति(ती)कार, स पु (स) प्रतिकृति (स्त्री), प्रतिक्रिया, निर्यातन, शमनोपाय २ चिकित्सा, उपचार ।
प्रतिकूल, वि (स) विपरीत, विरुद्ध, प्रतीप, विषम ।
प्रतिकूलता, स स्त्री (स) वैपरीत्य,विरोध ।
प्रतिकृति, स स्त्री (स) प्रतिमूर्ति (स्त्री), प्रतिमा २ चित्र, आलेख्य ३ छाया, प्रतिबिंब ४ प्रतिक्रिया, प्रति(ती)कार ।
प्रतिक्रिया, स स्त्री (स) प्रति(ती)कार, प्रतिकृति (स्त्री) २ प्रतिघात , प्रत्याघात ३ निवारण शमन,-उपाय ।
प्रतिक्षण, क्रि वि (स -क्षण) अनुक्षण, क्षणे क्षणे, प्रति-अन, पलम् ।
प्रतिग्रह, स पु (स) स्वी-अगी,-कार , आदान, ग्रहण २ विवाह , पाणिग्रहणम् ।
प्रतिघात, स पु (स) प्रतिप्रहार , प्रत्याघात , प्रतिहति (स्त्री) ३ विघ्न , बाधा ।
प्रतिच्छाया, स स्त्री (स.) प्रतिबिंब, छाया, प्रतिरूप, प्रतिरूप २ चित्र ३ मूर्ति (स्त्री)।
प्रतिज्ञा, स स्त्री (स) प्रतिश्रव , सगर , समय , सविद्-आगू (स्त्री), वचन, वाचा शपथ , दृढसल्प २ साध्यनिर्देश (न्या)।
—करना, क्रि स , आ प्रति-स-श्रु (भ्वा प अ), प्रतिज्ञा (क्र आ अ) । [illegible] अ, प्रतिज्ञा कृ, वचन दा ।
—तोडना, क्रि स , प्रतिज्ञा भन् (रु प अ), उल्लघ् (चु), विसवद् (भ्वा प से) ।
—पालना, क्रि स वचन पा (प्रे पालयति) शुध (प्रे) ।
—पत्र, स पु (स न) समय प्रतिज्ञा पत्र लेख्यम् ।
—पालन, स पु (स न) प्रतिज्ञानिर्वाह , सगरशोधनम् ।
—भग, स पु (स) वचनव्यतिक्रम प्रतिज्ञो ल्लघन, विसवाद ।
—विवाहित, वि (स) वाग्दत्त दा दत्त, प्रदत्त दा दत्त, प्रदत्त दा दत्तम् ।
प्रतिज्ञात, वि (स) प्रतिश्रुत, सश्रुत, आश्रुत ।
स पु (स न) प्रतिज्ञा, दृढसकल्प ।
प्रतिदड, वि (स) दुशाल-साल, धृष्ट धृष्ट धृष्टम्, आज्ञालघिन्, अननुवर्तिन् ।
प्रतिदान, स पु (स न)प्रत्यर्पण २ विनिमय ।
प्रतिदिन, क्रि वि (स दिन) अनु, दिन दिवस, प्रत्यह अन्वह, दिने दिने ।
प्रतिद्वद्विता, स स्त्री (स) शत्रुता, वैर, विरोध २ प्रतिस्पर्धा, प्रत्यर्थिता ।
प्रतिद्वद्वी, स पु (स द्विन) अरि , शत्रु , विरोधिन् २ प्रत्यर्थिन्, प्रतिस्पर्धिन् ।
प्रतिध्वनि, स स्त्री (स पु) प्रति,ध्वनि नाद शब्द -श्रुति (स्त्री) ।
—उठना या होना, क्रि अ , प्रति, ध्वन्-नद् (भ्वा प से) ।
प्रतिनिधि, स पु (स) प्रतिपुरुष , प्रतिहस्त स्तक २ प्रतिमा, प्रतिमूर्ति (स्त्री) ।
प्रतिपक्षी, स पु (स -क्षिन्) विपक्षिन्, प्रतिवादिन् २ विरोधिन, प्रतिद्वद्विन् ३ शत्रु , वैरिन् ।
प्रतिपत्ति, स स्त्री (स) प्राप्ति -उपलब्धि (स्त्री) अधिगमन २ ज्ञान ३ अनुमान ४ दान, अर्पण ५ निरूपण, प्रतिपादन ६ प्रवृत्ति (स्त्री) ७ निश्चय ८ परिणाम ९ गौरव १० प्रतिष्ठा, सत्कार ११ स्वीकृति (स्त्री) १२ सप्रमाण प्रदर्शनम् ।

प्रतिपदा, म स्त्री (सं) प्रतिपद् (स्त्री) पद्नि (स्त्री) शुक्ला प्रथमतिथि (स्त्री), प्रतिपदी।

प्रतिपन्न, वि (स) ज्ञात, अवबुद्ध अधिगत २ स्वीकृत ३ निर्धारित, निश्चित ४ शरणागत ५ सम्मानित ६ प्राप्त ७ प्रवृद्ध।

प्रतिपादक, वि (स) दातृ,दायक, २ निरूपक, व्याख्यातृ ३ उन्नायक ४ निष्पादक।

प्रतिपादन, स पु (स न) निरूपण, सप्रमाण कथन साधन स्थापन २ सम्यग ज्ञापन अवबोधन ३ दान, अर्पणम्।

प्रतिपादित, वि (स) सम्यग अवबोधित ज्ञापित २ निर्धारित निश्चित ३ दत्त।

प्रतिपाद्य, वि (स) निरूपणीय, अवबोधनीय २ देय।

प्रतिपालन, स पु (स न) पालन, पोषण, संवर्धन २ रक्षण, त्राण ३ निर्वाह वहणम्।

प्रतिफल, म पु (स न) दे 'प्रतिच्छाया'(१) २ परिणाम, फल ३ प्रत्युपकार ४ प्रत्यपकार, निष्कृति (स्त्री)।

प्रतिबंध, सं पु (स) विघ्न, बाधा, अन्तराय २ प्रतिरोध, व्याघात ३ दे 'प्रबंध'।

प्रतिबिंब, म पु (स न) दे 'प्रतिच्छाया'।

प्रतिबिंबित, वि (स) प्रतिफलित,प्रतिरूपित।

प्रतिभा, म स्त्री (स) नवनवो मेषशालिनी प्रज्ञा, चमत्कारिणी बुद्धि (स्त्री), मतिप्रकर्ष २ बुद्धि मति धी (स्त्री) ३ वैदग्ध्य, बुद्धिचातुर्य ४ दीप्ति (स्त्री)।

प्रतिभाशाली, वि (स लिन्) प्रतिभावत्, प्रतिभान्वित, सप्रतिभ २ धीमत्, बुद्धिमत्।

प्रतिभू, म पु (स) लग्नक, दे 'जामिन'।

प्रतिमा, म स्त्री (स) अनुकृति मूर्ति (स्त्री), बिंब, प्रतिकृति (स्त्री) मान रूप चन्द्रक २ प्रति,बिं, छाया ३ माप, मान, तोल भार, मान ४ अलंकारभेद (सा)।

प्रतियोगिता, स स्त्री (स) प्रतिद्वंद्विता, प्रतिस्पर्धा, अहमहमिका, विजिगीषा २ विरोध, शत्रुता।

प्रतियोगी, म पु (स गिन्) प्रतिद्वंद्विन्, प्रतिस्पर्धिन, विजिगीषु २ शत्रु, वैरिन् ३ सहायक ३ अरिन्, अदाभान्।

प्रतिरूप, मं पु (स न) मूर्ति (स्त्री), प्रतिमा २ चित्र, आलेख्य ३ प्रतिनिधि।

प्रतिरोध, म पु (स) विरोध, प्रातिकूल्य, वैपरीत्य २ बाध धा, व्याघात, प्रतिबंध।

प्रतिलिपि, म स्त्री (स) अनुलिपि (स्त्री), प्रतिलेख।

प्रतिलोम, वि (स) प्रतिकूल, विपरीत, विरुद्ध २ तुच्छ, नीच ३ विलोम, विपर्यस्त, व्यत्यस्त।

प्रतिलोमज, म पु (स) वर्णसंकर २ उत्तमवर्णाया नार्यो अधमवर्णात् पुरुषात् जात।

प्रतिवचन, स पु (स न) उत्तर, प्रतिवचस (न) २ प्रतिध्वनि।

प्रतिवत्सर, अव्य (स) प्रति-अनु,-वर्ष-वत्सरं अब्द वर्षे-वर्षे, वत्सरे-वत्सरे।

प्रतिवनिता, स स्त्री (स) सपत्नी, सभार्या, समानपतिका।

प्रतिवस्तु, स स्त्री (स) सदृश-समान तुल्य, वस्तु (न), पदार्थ २ प्रतिदत्तपदार्थ ३ उपमानम्।

प्रतिवस्तूपमा, स स्त्री (स) अर्थालंकारभेद।

प्रतिवाद, स पु (स) प्रत्याख्यान, निराकरण, निरास, दे 'खंडन' २ विवाद ३ उत्तरम्।

प्रतिवादी, स पु (स दिन्) प्रत्यर्थिन्, अभियुक्त २ विपक्षिन, प्रतिपक्षिन्, प्रत्याख्यातृ।

प्रतिवासी, म पु (सं सिन्) दे 'पड़ोसी'।

प्रतिवेशी, स पु (स शिन्) दे 'पड़ोसी'।

प्रतिशोध, स पु (स >) निर्यातन, प्रति, अपकार द्रोह।

प्रतिश्याय, म पु (स) दे 'जुकाम' २ पीनस रोग।

प्रतिषिद्ध, वि (स) दे 'निषिद्ध'।

प्रतिषेध, स पु (स) दे 'निषेध' २ खंडन, निरसन ३ अर्थालंकारभेद (सा)।

प्रतिष्ठा, म स्त्री (स) सत्कार, अर्हणा, संमान, आदर, गौरव २ यशस् (न), कीर्ति विख्याति प्रसिद्धि (स्त्री) ३ स्थापन ना निधानम्।

प्रतिष्ठित, वि (स) सत्कृत, स,मानित, अभ्यर्चित २ विश्रुत, प्रसिद्ध, विख्यात २ स्थापित, प्रतिष्ठापित।

प्रतिस्पर्द्धा, सं स्त्री (सं) प्रत्यर्थना, प्रतिद्वंद्विता, विजिगीषा, अहमहमिका २ कलह।

प्रतिस्पर्द्धी, स पु (स द्विन) प्रत्यर्थिन, प्रतिद्वन्द्विन्, विजिगीषु ।

प्रतिहत, वि (स) अव प्रति-रुद्ध प्रतिबाधित २ पराणुन्न, परावर्तित ३ अपमन्न, क्षिप्त ४ पतित ५ निराश ६ पराजित, परास्त ।

प्रति(ती)हार, स पु (स) द्वार (स्त्री) द्वार् २ द्वारपाल, द्वास्थ ।

प्रति(ती)हारी, स पु (स रिन्) द्वारपाल, द्वास्थ, दौवारिक । स स्त्री (स) द्वारपालिका ।

प्रतिहिंसा, स स्त्री (स) प्रत्यपकार प्रत्यपक्रिया, प्रतिद्रोह, प्रति,नियातनम् ।

प्रतीक, स पु (स न) प्रतिमा, मूर्त २ मुख, आनन ३ अग्र अग्रभाग ४ श्लोकादे प्रथमशब्द ५ अग, अवयव ६ चिह्न, लक्षण ७ आकार, रूप ८ प्रतिरूप, स्थानापन्न वस्तु (न)।

प्रतीकार, स पु (स) दे 'प्रतिकार'।

प्रतीक्षा, स स्त्री (स) प्रतीक्षण, उदीक्षा, प्रत्याशा, अपेक्षा ।

—करना, क्रि अ, अप उद् प्रति ईक्ष (भ्वा आ से) अनु प्रति पा (प्रे पालयति)।

प्रतीची, स स्त्री (स) दे 'पश्चिम'।

प्रतीत, वि (स) ज्ञात, विदित, अवगत, बुद्ध २ प्रसिद्ध ३ प्रसन्न ।

—होना, क्रि अ, ज्ञा-अवगम्-बुध् प्रती (=प्रति इ) (सब कर्म)।

प्रतीति, स स्त्री (स) ज्ञान, बोध, अवगम २ ख्याति (स्त्री) ३ विश्वास ४ आनद ५ आदर ।

प्रतीप, वि (स) विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल ।

प्रतीहार, स पु (स) दे 'प्रतिहार'।

प्रत्यचा, स स्त्री (स) मौर्वी, शिञ्जिनी, ज्या, धनुर्गुण ।

प्रत्यक्ष, वि (स) दृश्य, दृग्गोचर, पुर स्थित २ इन्द्रियग्राह्य, इन्द्रियगोचर, ऐन्द्रियक ३ प्रकट, स्पष्ट । स पु (स न) प्रमाणभेद (न्याय), अनुभवभेद । क्रि वि, नयनयो पुरत २ स्पष्ट व्यक्तम् ।

—दर्शी, स पु (स शिन्) (प्रत्यक्ष) साक्षिन् (

—प्रमाण, स पु (स न) प्रमाणभेद (न्या)।

प्रत्यय, स पु (स) विश्वास, विश्रम्भ २ शब्दान्त्यभाग, प्रकृत्युत्तर जायमान आगम (सुप तिङ आदि, व्या) ३ प्रमाण, साधन ४ ज्ञान ५ विचार ६ व्याख्या ७ कारण ८ आवश्यकता ९ प्रसिद्धि (स्त्री) १० चिह्न ११ निर्णय १२ सम्मति (स्त्री) १३ सहायक १४ स्वाद ।

प्रत्याख्यान, स पु (स न) निराकरण, निरसन, खडनम् ।

प्रत्याशा, स स्त्री (स) आशा, आशसा, आकाक्षा २ उदीक्षा, प्रतीक्षा, अपेक्षा ।

प्रत्याशी, वि (स शिन्) परीक्षार्थिन् २ पदान्वेषिन् ३ आशावत्, आशान्वित ।

प्रत्याहार, स पु (स) प्रत्याहरण, उपादान, इन्द्रियनिग्रह २ अल्पेन बहूना ग्रहण (उ पत्न-सत्र स्वरवर्ण, व्या)(

प्रत्युक्ति, स स्त्री (स) उत्तर, प्रतिवचनम् ।

प्रत्युत, अ य (स) दे 'बल्कि'।

प्रत्युत्तर, स पु (स न) उत्तरस्योत्तर, उत्तरप्रतिवचनम् ।

प्रत्युत्थान, स पु (स न) स्वागतार्थम् उत्थान अभ्युत्थानम् २ शत्रुसम्मुखस्थार्थम् उत्थिति (स्त्री) ३ कार्यविशेषाय सज्जी भू, सन्नह (दि उ अ)।

प्रत्युत्पन्न, वि (स) पुनरुत्पन्न २ स्वावसरे उत्पन्न ।

—मति, वि (स) तत्कालधी, कुशाग्रीय मति, सूक्ष्मदर्शिन २ प्रतिभान्वित । स स्त्री (स) तत्कालधी (स्त्री), कुशाग्रबुद्धि (स्त्री) २ प्रतिभा ।

प्रत्युद्गमन, स पु (स न) प्रत्युत्थान, प्रत्युद्गम ।

प्रत्युपकार, स पु (स) प्रति, उपकृति (स्त्री)-साहाय्यम् ।

प्रत्येक, वि (स) एकैक, सर्व, सकल ।

प्रथन, स पु (स न) विस्तार, विस्तृति (स्त्री) २ यश प्रसरण प्रसारणम् ३ क्षेपण ४ प्रदर्शनम् ।

प्रथम, वि (स) आद्य, आदिम, अग्रिम २ श्रेष्ठ, उत्तम ३ प्रधान, मुख्य । क्रि वि (स न) अग्रे, आदौ, पूर्वं, प्रथमत ।

—कल्प, स पुं (स) सर्वोत्तम, उपाय युक्ति (स्त्री) २ मुख्यनियम ।

—पुरुष, स पु (स) अन्यपुरुष (व्या०)।
—वय, स पुं (स-वयस् न) यौवन तारुण्यम्, नववयस् (न)।
प्रथमा, स स्त्री (स) विभक्तिविशेष (व्या) २ मदिरा।
प्रथा, सं स्त्री (स) रीति-रूढि (स्त्री), अनुसार, आचार, व्यवहार २ दे 'प्रसिद्धि'।
प्रथित, वि (स) दे 'प्रसिद्ध'।
प्रदक्षिणा, स स्त्री (स) प्रदक्षिण र्ग, परिक्रम।
प्रदत्त, वि (सं) अर्पित, विश्राणित, उत् वि सृष्ट, सत्रामित।
प्रदर, स पु (स) नारीरोगभेद, असृग्दर (दो भेद—श्वेतप्रदर रक्तप्रदर)।
प्रदर्शक, स पु (स) प्रदर्शयितृ, दर्शनकार यितृ २ दर्शक, द्रष्टृ, प्रेक्षक ३ गुरु।
प्रदर्शन, स पु (स न) प्रकटन, प्रकाशन, व्याख्यान, विजृम्भण, प्रकटी आविष्करण २ दे 'नुमाइश'।
प्रदर्शनी, स स्त्री (स) दे 'नुमाइश'।
प्रदर्शित, वि (स) प्रकटीकृत, प्रकटित, प्रकाशित।
प्रदान, स पु (सं न) दान, विश्राणन, अर्पण, सक्रामण २ विवाह।
प्रदिशा, स स्त्री (सं) प्रदिश् विदिश (स्त्री) विदिशा, दिक्कोण।
प्रदीप, स पु (स) दीप, कज्जलध्वज, नयनोत्सव दीपक्य २ प्रकाश।
प्रदीपन, स पु (स न) उद्दीपन, दीपन, प्रज्वलन २ प्रद्योतन, प्रकाशन, ३ उत्तेजन, प्रोत्साहनम्।
प्रदीप्त, वि (स) प्रज्वलित, उद्दीप्त, समिद्ध २ प्रकाशित, प्रकाशमान ३ उज्ज्वल, भासुर।
प्रदेश, स पु (स) चक्र, मण्डल, प्रान्त, देशविभाग, भूखण्ड २ स्थान, स्थल ३ अंग, अवयव।
प्रदोष, स पु (स) सन्ध्यासमय, स ध्या, सायंकाल, दिनावसान, रजनीमुख २ सन्ध्या धकार।
प्रधान, वि (सं) मुख्य, श्रेष्ठ, अग्रय, अग्रिम, परम, उत्तम, प्रमुख, विशिष्ट। सं पु, नेतृ, नायक, पुंगव, अग्रणी २ मन्त्रिन्, सचिव ३ प्रकृति (स्त्री), जगत उपादान कारण, प्रधान ४ सभा, पति-अध्यक्ष ५ ईश्वर।
—मन्त्री, स पु (सं मन्त्रिन्) महामन्त्रिन्, प्रधान-अमात्य-सचिव।
प्रधानता, स स्त्री (सं) उत्तमता, श्रेष्ठता, मुख्यता २ नेतृत्व, नायकत्व ३ अध्यक्षता, सभापतित्व ४ मन्त्रिपद, मन्त्रित्वम्।
प्रध्वंस, सं पुं (सं) वि नाश, प्रणाश, विध्वंस, उच्छेद संहार।
प्रपंच, स पु (स) सृष्टि (स्त्री), संसार, जगजाल २ विस्तर, विस्तार, ३ छल, आडम्बर, कपट ४ दे 'बखेड़ा'।
प्रपंची, वि (स प्रपंचिन्) कापटिक, मायाविन्, छलिन् २ चतुर, धूर्त ३ कलहप्रिय।
प्रपन्न, वि (सं) प्राप्त, आगत २ शरणागत।
प्रपात, स पु (स) दे 'झरना' २ अतट, भृगु, निरवलंब पतनादिपाश ३ अव, पात-पतनम्।
प्रपितामह, स पु (सं) दे 'परदादा'।
प्रपितामही, स स्त्री (स) दे 'परदादी'।
प्रपौत्र, स पु (स) दे 'परपोता'।
प्रपौत्री, सं स्त्री (स) दे 'परपोती'।
प्रफुल्ल, वि (स) विकसित, स्फुटित, उद्भिन्न फुल्ल, प्रबुद्ध, भिन्न, विकच २ कुसुमित, पुष्पित ३ उन्मीलित, उन्मिषित (नेत्र) ४ स्मित, आनंदित।
—नयन, वि (स) विकचनेत्र [श्री भी (स्त्री)]।
—वदन, वि (स) स्मितानन, प्रसन्नमुख [नी (स्त्री) = स्मिताननी प्रसन्नमुखी स्त्री]।
प्रफुल्लित, वि (स) दे प्रफुल्ल'।
प्रबंध, स पु (स) संविधा, उपाय, आयो जन, प्रयोग, युक्ति (स्त्री) २ संग्रह ग्रन्थ, निबंध ग्रन्थ, प्रवर्तन, अधिष्ठान, व्यवस्थापन, पालन, व्यवस्था ३ निबंध, लेख, प्रस्ताव ४ महाकाव्य, संग्रथितकविता।
—कर्ता, सं पु (स-तृ) प्रबंधक, आयो जक, व्यवस्थापक, निबाहक, चालक, ५ यंत्र, अधिष्ठात, अधिकर।

—कल्पना, स स्त्री (स) स्वेकमत्या कल्पनाबहुला कथा।

—कारिणी, स स्त्री (स) प्रबन्धव्यवस्था, कर्त्री समिति (स्त्री)।

—काव्य, सं पु (स न) कथनबद्धकाव्यम्, श्रव्यकाव्यभेद (सा०)।

प्रबधक, स पु (स) दे 'प्रबधकर्ता'।

प्रबल, वि (स) बलवत् सबल बलिन्, शक्तिमत्, ऊर्जस्विन प्रभविष्णु २ उग्र, घोर, तीव्र, प्रचड।

प्रबुद्ध, वि (स) जागरित, उनिद्र जाग्रत (शत्रत) २ विकसित ३ ज्ञानिन्।

प्रबोध, स पु (स) जागरण, प्रबोधन निद्राभग-त्याग २ यथार्थ पूर्ण ज्ञान ३ सान्त्वनम्‌ ४ विकास ५ पूर्वनिवेदन ६ चेतनावास, मूर्च्छाभाव।

प्रबोधन, स पु (स न) (निद्रात) उत्थान, निद्राभजन २ आवरण ३ उद्बोध, उपदेश, ज्ञापन ४ सान्त्वनम्।

प्रभजन, स पु (स) वायु, पवन २ वात्या, झझावात, प्रकपन। (स न) उत्पाटन, उन्मूलन, वि-, नाशनम्।

प्रभव, स पु (स) जन्महेतु (पु) उत्पत्ति कारण २ उत्पत्तिस्थान, आकर ३ सृष्टि (स्त्री) ४ (नद्यादीना) उद्गम, उद्भव, मूलम्।

प्रभा, स स्त्री (स) दीप्ति-द्युति-कांति-रुचि शोचि (स्त्री) आभा, विभा प्रकाश, त्विषा।

—कीट, स पु (स) खद्योत, दे 'जुगनू'।

प्रभाकर, स पु (स) दिवाकर, दे 'सूर्य'।

प्रभात, सं पु (स न) विभात, प्रातःकाल, उषा, उषस्, उष, ऊष, अहर्मुख, क(का)ल्य, व्युष्ट, प्रत्यु(त्यू)ष, अरुणोदय, दिवसारम्भ, उषस (स्त्री)।

प्रभाव, स पु (स) सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री), बल २ माहात्म्य, महत्त्व ३ वशता प्रभुत्व ४ परिणाम, फलम्।

प्रभु, स पु (स) परमेश्वर परमेश्वर २ स्वामिन ईश ३ अधिपति, नायक ३ श्रेष्ठजनोपाधि।

—भक्त, वि (स) स्वामिभक्त, स्वाम्यनुरक्त, सत्सेवक २ प्रभुभक्तिमत्, भगवद्भक्त।

प्रभुता, स स्त्री (स) महत्त्व, महत्त्व २ शासकता, अधिकारित्व ३ वैभव ४ स्वामित्व, प्रभुत्वम्।

प्रभूत, वि (स) दे 'प्रचुर' २ उत्पन्न, उद्भूत, उद्गत।

प्रभृति, क्रि वि (स) तदारभ्य, ततोऽनन्तर, आदि, इत्यादि। स स्त्री, आरभ।

प्रभेद, सं पु (स) प्रकारः, वर्ग, जाति (स्त्री) २ अतर, भेद, भिदा।

प्रमत्त, वि (स) उन्मत्त, मदोन्मत्त, मत्त, क्षीब २ उन्मत्त, वातुल, उन्मादिन्।

प्रमथन, स पु (स न) विलोडन २ वधार्न ३ हननम्।

प्रमद, स पु (स) आनद, हर्ष २ क्षीवता। वि क्षीव।

प्रमदा, स स्त्री (स) सुदरी, उत्तमयोषित् (स्त्री)।

प्रमा, स स्त्री (स) यथार्थज्ञान, शुद्धबोध २ दे 'माप'।

प्रमाण, स पु (स न) निदर्शन, साधन, उपपत्ति (स्त्री) तुल्यहेतु २ साक्ष्य, प्रामाण्य ३ सत्यता ४ इयत्ता, निर्दिष्टपरिमाण ५ शासनम्। वि, सत्य, सिद्ध २ मान्य, स्वीकार्य।

—पत्र, स पु (स न) आगमनिर्देश निदर्शन-पत्रम्।

प्रमाणित, वि (स) साधित, उपपादित, स्थापित, प्रमाणी-सत्या-कृत, सत्यापित।

प्रमाता, स पु (स-तृ) प्रमाणी ज्ञातृ-बोद्धृ।

प्रमातामह, स पु (स) मातामहपितृ।

प्रमातामही, स स्त्री (स) प्रमातामहपत्नी।

प्रमाद, सं पु (स) अनवधानता, उपेक्षा, सावधानताऽभाव २ भ्रांति त्रुटि (स्त्री),

प्रमुख, वि (स) प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य २ प्रथम, आदिम ३ प्रतिष्ठित, मान्य।

प्रमुदित, वि (स) प्रहृष्ट, प्रसन्न आनंदित।

प्रमेह, स पु (स) मेह मूत्रदोष, बहुमूत्रता।

प्रमोद, सं पु (स) हर्ष, आनंद, प्रसन्नता २ सुखम्।

प्रयत्न, स पु (स) उद्यम, अध्यवसाय, आयाम, चेष्टा, चेष्टित २ जीवव्यापार (न्या)।

—शील, वि (स) प्रयत्नवत्, सयत्न, उद्यमिन्, अध्यवसायिन्, सचेष्ट।

प्रयाग, स पु (स) तीर्थविशेष २ महायज्ञ।

प्रयाण, स पु (स न) प्रस्थान, गमन, प्रज्या, यात्रा २ युद्धयात्रा।

—काल, स पु (स) गमनकाल २ मृत्युसमय।

प्रयास, स पु (स) उद्योग, प्र-यत्न, परि-श्रम।

प्रयुक्त, वि (स) व्यवहृत व्यापृत, उपयुक्त, सेवित, उपभुक्त।

प्रयोग, स पु (स) उपयोग, उपभोग, सेवन, व्यवहार २ अनुष्ठान, साधन ३ प्रक्रिया, विधान ४ तान्त्रिकोपचार ५ अभिनय ६ कुसीदाय ऋणदानम्।

—करना, उप प्र-युज् (रु आ अ), व्यापृ (प्रे), सेव (भ्वा आ से), उपभुज् (रु आ अ)।

प्रयोजक, स पु (स) अनुष्ठातृ, उपयोक्तृ २ प्रेरक ३ व्यवस्थापक।

प्रयोजन, स पु (स न) अर्थ, कार्य २ उद्देश्य, अभिप्राय, आशय।

प्रलयंकर, वि (स) प्रलय विनाश-संहार, कर-कारिन्।

प्रलय, सं पु (स) कल्पान्त, प्रतिसंचय, ब्रह्माण्डनाश, विलय, संक्षय।

प्रलाप, स पु (स) निरर्थकवचनानि (बहु), प्र, जल्प-जल्पनम्।

प्रलोभन, स पु (सं न) विलोभन, लोभन प्रवर्तन २ प्रलोभकपदार्थ, विकारहेतु।

प्रवचना, स स्त्री (स) धूर्तता, कैतव, छलम्।

प्रवचन, स पु (स न) व्याख्यान, विवरण, प्रकाशन, स्पष्टीकरण २ व्याख्या ३ वेदागम्।

प्रवर, वि (स) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (स न) गोत्रम्। (सं पु) सतति (स्त्री) २ गोत्र प्रवर्तकमुनिव्यावर्तको मुनिगण।

प्रवर्तक, स पु (स) आरम्भक, संस्थापक, प्रवर्तयितृ २ संचालक, निर्वाहक ३ प्रेरक, नियोजक ४ उत्तेजक ५ आविष्कारक।

प्रवर्तन, स पु (स न) कार्योपक्रमण, २ कार्य-सञ्चालन निर्वहण ३ प्रचार ४ उत्तेजनम्।

प्रवाद, स पु (स) जनश्रुति (स्त्री), किंवदंती, लोक-वाद-वार्ता २ अपवाद, मिथ्यारोप।

प्रवाल, स पु (स पु न) विद्रुम २ किसलय ३ वीणादण्ड।

प्रवास, स पु (स) विदेशवास २ विदेश।

प्रवासी, वि (स सिन्) प्रोषित, विदेशस्थ, विदेशवासिन्।

प्रवाह, स न (स) स्रव, स्रवण, स्रुति (स्त्री), स्राव २ (जल) धारा, वेग, ओघ स्रोतम् (न) ३ कार्यनिर्वाह ४ व्यवहार ५ प्रवृत्ति (स्त्री) ६ क्रम, सततगति (स्त्री)।

प्रविष्ट, वि (स) कृतप्रवेश, अन्तर्गत।

प्रवीण, वि (स) निपुण, कुशल, दक्ष, पटु, चतुर, निष्णात, विज्ञ २ वीणावादनकुशल।

प्रवीणता, स स्त्री (स) नैपुण्य, दाक्ष्य, कौशल, पाटव, चातुर्यम्।

प्रवृत्त, वि (सं) रत, मग्न, पर, परायण २ उद्यत ३ नियुक्त।

—करना, क्रि स, प्रवृत् (प्रे), नि उद्-युज् (चु) प्रवणी कृ, प्रेर् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, प्रवृत् (भ्वा आ से), रत मग्न तत्पर (वि) भू।

प्रवृत्ति, स स्त्री (स) रुचि (स्त्री) छंद, अभिलाष, भाव २ वृत्तान्त ३ कार्यनिर्वाह ४ विषयासंग ५ उत्पत्ति (स्त्री)।

प्रवेश, स पु (स) अन्तर, विगाहन-गमन २ गति (स्त्री), उपगम ३ बोध, ज्ञान, परिचय।

—पत्र, स पु (सं न) प्रविष्टि, पत्र पत्रकम्।

—शुल्क, स पु (स) प्रविष्टि, शुल्क कम्।

प्रवेशिका, सं स्त्री (स) परीक्षाभेद २ प्रवेष्ट्री।

प्रव्रजित, वि (सं) सन्यासिन्, चतुर्थाश्रमिन्, परिव्राजक।

प्रव्रज्या, सं स्त्री (सं) संन्यास, वैराग्य, चतुर्थाश्रम।

प्रशंसक, सं पु (सं) स्तोतृ, स्तावक, वन्दक, श्लाघक २ चाटुकार।

प्रशंसनीय, वि (सं) प्रशस्य, श्लाघ्य, स्तुत्य नुत्य प्रशंसार्ह।

प्रशंसा, सं स्त्री (सं) श्लाघा, स्तुति-नुति नु (स्त्री), स्तव, कीर्तन ईडा।

—करना, क्रि स, प्रशंस (भ्वा प से) श्लाघ् (भ्वा आ से), नु (अ प से), स्तु (अ प अ) ईड (अ आ से)।

—होना, क्रि अ, प्रशंस-स्तु-नु श्लाघ् (कर्म)।

प्रशंसित, वि (सं) दे 'प्रशस्त'।

प्रशमन, सं पु (सं न) शमन, शान्ति (स्त्री) २ नाशन ३ मारण ४ वशीकरणम्।

प्रशस्त, वि (सं) नुत, स्तुत, श्लाघित, प्रशंसित २ दे 'प्रशंसनीय' ३ उत्तम श्रेष्ठ।

—पाद, सं पु (सं) दर्शनाचार्यविशेष।

प्रशस्ति, सं स्त्री (सं) दे 'प्रशंसा' २ पत्रारम्भ प्रशंसावाक्य ३ राज्ञां निदेश ४ प्राचीन नृपाणां लेखकादिपरिचायकानि अक्षरन

प्रसक्त, वि (सं) संलग्न, संश्लिष्ट २ आसक्त ३ प्रसारित।

प्रसन्न, वि (सं) संतुष्ट, संहृष्ट, सानंद, आनंदित, प्रमुदित, प्रफुल्ल २ निर्मल।

—करना, क्रि स, आनंद् आह्लाद्-तुष् प्रसद् प्रमुद् प्रहृष् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, प्रसद् (भ्वा प अ), आह्लाद्-प्रमुद् (भ्वा आ से), प्र,हृष् (दि प से)।

प्रसन्नता, सं स्त्री (सं) आनंद, आह्लाद, हर्ष, संतोष, प्र,मोद उल्लास २ अनुग्रह ३ स्वच्छता।

प्रसव, सं पु (सं) जनन प्रसूति (स्त्री), गर्भमोचन २ जन्मन् (न), उत्पत्ति (स्त्री) ३ संतान ४ फल ५ कुसुमम्।

प्रसविनी, वि (स्त्री) उत्पादयित्री, जनयित्री, प्रसवित्री।

प्रसाद, सं पु (सं) कृपा, दया, अनुग्रह २ प्रसन्नता ३ स्वच्छता ४ काव्यगुणविशेषः (सा) ५ देवाद्यवशिष्टपदार्थ, शेष ६ भोजन ७ नैवेद्य, वायनम्-नकम्।

प्रसून, स पु (सं न) कुसुम, पुष्प २ फलम् । वि, जात, उत्पन्न ।

—वर्ष, स पु (स) पुष्पवृष्टि (स्त्री) ।

—वाण, स पु (स) पुष्प,शर-वाण, काम, मदन ।

प्रसृत, वि (स) प्रगत, प्रचलित २ विस्तृत, विस्तीर्ण ३ लब, दीर्घ, आयत ४ व्यस्त, सल्ग्न ५ सुशील, विनम्र ६ गत, यात ७ स्फूर्तिमत्

प्रसृता, स स्त्री (स) जघा, टक्किका ।

प्रसेक, स पु (स) आस्रव, सेक सेचनम्, अभिवर्षण, अभ्युक्षण, प्रोक्षणम् क्षरण, गलनं, स्रवणम् ३ वमन, वय , वमि (स्त्री) ४ दावका,-कटोरिका अग्रभाग ।

प्रस्तर, सं पु (स) शिला, पाषाण, दे 'पत्थर' ।

प्रस्ताव, स प (स) अवसर, उचितकाल २ प्रसग, विषय ३ प्रकरण ४ उपक्षेप, उपन्यास ५ प्रनि,बध, लेख ६ दे 'प्रस्तावना' ।

प्रस्तावना, स स्त्री (स) भूमिका, उपोद्घात, प्राकक्थन, आमुख, अवतरणिका २ आरम्भ, उपक्रम ।

प्रस्तुत, वि (स) स्तु(तु)त, श्लाघित । २ उक्त, कथित ३ प्रासगिक, प्रसगप्राप्त ४ उपस्थित, प्रतिपन्न ५ उद्यत, सन्न ६ निष्पन्न, संपादित ।

प्रस्थान, स पु (सं न) प्रयाण, अपक्रम, गमन, यात्रा २ विजिगीषुसेनाया प्रयाणम् ।

प्रस्वेद, स पु (स) दे पसीना' ।

प्रहर, स पु (स) याम दे 'पहर' ।

प्रहरी, वि (स रिन्) दे 'पहरा' स पु २ ।

प्रहसन, स पु (स न) रूपक नाटक, भेद, २ परिहास, विनोद ३ अवहास, हास ।

प्रहार, स पु (स) आघात, ताड, निघात, हथ ।

—करना क्रि स आहन् (आ प अ), प्रह (भ्वा प अ), तड् (चु), प्रहार कृ ।

प्रहृष्ट, वि (सं) प्रमुदित, सुप्रसन्न, अत्यानदित ।

प्रहेलिका, स स्त्री (स) प्रश्नदूती, दे 'पहेली' ।

प्रागण, स पु (सं न) अजिर, अंगनं, चत्वरम् ।

प्राजल, वि (स) सरल, ऋजु, २ सत्य, यथार्थ ३ सम, समतल ।

प्रात, सं पु (स) देशभाग, राष्ट्रविभाग २ भूखड, प्रदेश ३ सीमा, समत ४ अग्र, कोटि (स्त्री) ५ दिशा (स्त्री) ।

प्रातीय, वि (स) प्रातिक, प्रात,सबधिन् विषयक ।

प्राइवेट, वि (अं) स्वकीय, आत्मीय २ विशिष्ट, असार्वजनिक ३ गुप्त, संवरणीय ।

—सेक्रेटरी, स पु (अ) *स्वकीयसचिव ।

प्राकार, स पु (स) वप्र म, शा(सा)ल, वरण ।

प्राकृत, वि (स) प्रकृतिज, प्राकृतिक २ स्वाभाविक, नैसर्गिक ३ साधारण ४ लौकिक ५ तुच्छ, नीच ६ भौतिक । स स्त्री (स न) व्यवहारभाषा २ प्राचीन भाषाविशेष ।

प्राकृतिक, वि (स) दे 'प्राकृत' ।

प्राची, स स्त्री (सं) पूर्वदिशा, पूर्वदिश् (स्त्री) २ पूजकपूज्ययो पुरोवर्तिदिशा ।

प्राचीन, वि (स) पुराण, प्राक्तन, पुरातन, पूर्व, प्राक्कालीन २ पूर्वदेशीय, प्राच्य, पौरस्त्य, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् ।

प्राचीनता, स स्त्री (सं) पुराणता, पुरातनता इ ।

प्राचीर, स पु (स न) प्रान्ततो वृत्ति (स्त्री) प्रावर, प्रावृति (स्त्री), दे 'प्रकार' ।

प्राचुर्य, स पु (स न) 'प्रचुरता' ।

प्राच्य, वि (स) दे 'प्राचीन' (१ २) ।

प्राज्ञ, वि तथा स पुं (सं) पडित( ), विज्ञ ( ), धीमत्, बुद्धिमत्, विद्वस् ।

प्राज्ञी, स स्त्री तथा वि (स) पण्डिता, बुद्धिमती विदुषी (नारी) ।

प्राण, स पु (स प्राण बहु) असव (बहु) हृन्मारुत २ श्वास, उच्छ्वास, श्वसित, ३ पवन, अनिल ४ बल, शक्ति (स्त्री) ५ जीवन, जीवित ६ आत्मन् ७ प्रियो मनुष्य पदार्थो वा ।

—घात, स पु (स) मृत्यु, निधन २ आत्महत्या-घात ।

—दंड, सं पु (स) देहमृत्यु-दड , उत्तमसाहसम् ।

—धारण, सं पु (सं न) जीवनं, प्राणनं, देहधारणम् ।

प्रारब्ध, स स्त्री (स न) भाग्य, दैव, अदृष्ट, प्राक्तन, नियति (स्त्री)। वि, कृता रभ, उपक्रान्त।

प्रार्थना, स स्त्री (स) याचना याचना, अभि शस्ति (स्त्री), आ नि,-वदन, अभि, अथना।

—करना, क्रि स अभिप्र, अर्थ (चु आ मे), याच (भ्वा उ से), सविनय आ नि विद् (प्रे)।

—पत्र, स पु (स) आवेदनपत्रम्।

प्रार्थनीय, वि (स) याचनीय, अभ्यर्थनीय।

प्रार्थित, वि (स) याचित, अभ्यर्थित, निवेदित।

प्रार्थी, स पु (स थिन्) प्रार्थयितृ, याचक निवेदक।

प्रालब्ध, स स्त्री, दे 'प्रारब्ध' स स्त्री।

प्रासंगिक, वि (स) प्रसंग, आगत प्राप्त उचित, अनुरूप प्रस्तुत, प्रास्ताविक [-की (स्त्री) = प्रास्ताविकी]।

प्रासाद, स पु (स) राज-नृप गृह भवन मंदिर हर्म्य सौध धम्।

प्रिंदम, स पु (अ) निपादवराच।

प्रिय, वि (स) दे 'प्यारा' २ मनोहर, अभिराम। सं पु, पति २ कान्त, दयित ३ जामातृ ४ हितम्।

—तम, वि (स) प्रेष्ठ, प्राण प्रिय। स पु, पति, भर्तृ। २ वल्लभ, कान्त।

—तमा, वि (स) प्रेष्ठा, प्राणप्रिया। स स्त्री, पत्नी २ कान्ता।

—दर्शन, वि (स) सु शुभ,-दर्शन, चक्षुष्य सुरूप, शोभन, सुंदर।

—भाषी, वि (स षिन्) मधुरभाषिन्, प्रिय, वादिन्-वचन।

—वर, वि (स) प्रेष्ठ, प्रियतम।

प्रिया, सं स्त्री (स) नारी, रमणी २ पत्नी, भार्या ३ प्रेयसी, प्रेमवती, कान्ता।

प्रीतम, स पु, दे 'प्रियतम'।

प्रीत, }
प्रीति, } सं स्त्री [स प्रीति (स्त्री)] दे 'प्यार' २ तृप्ति (स्त्री) ३ आनंद, हर्ष।

—पूर्वक, क्रि वि (स-क) प्रेम्णा, स्नेहेन।

—भोज, सं पु (सं-भोग) प्रीतिभोजन, भोजनोत्सव।

प्रेक्षक, स पु (स) दर्शक, द्रष्टृ २ (नाटकादि में) पार्षद, सामाजिक।

प्रेक्षण, स पु (स न) नेत्र २ अवलोकनं, दर्शनम्।

प्रेत, स पु (स) नरकस्थप्राणिन् २ भूतभेद, वेताल ३ मृतमानव, शव।

—कर्म, स पु [स-कर्मन् (न)] प्रेत, कार्य क्रिया कृत्य, आमृत्यो सपिंडीकरणपर्यंत क्रियाकलाप।

—गृह, स पु (सं न) प्रेतभूमि (स्त्री) श्मशानम्।

—दाह, स पुं (सं) अन्त्येष्टि मृतक, संस्कार।

—पक्ष, स पु (सं) पितृपक्ष, गौण चान्द्राश्विन कृष्णपक्ष।

—पति, स पु (स) यमराज।

प्रेतनी, स स्त्री (स प्रेत) पिशाची चिरा, प्रेतपत्नी।

प्रेम, सं पु [स प्रेमन् (पु न)] स्नेह, अनु, राग प्रणय, दे प्यार' २ काम, श्रृंगार, रति (स्त्री) ३ ईश्वरभक्ति (स्त्री)।

—कहानी, स स्त्री प्रेमकथा, शृंगाराख्यायिका।

—पात्र, स पु (स न) स्नेहभाजन (मानव वा पदार्थ)।

—पाश, स पु (स) स्नेह-अनुराग प्रेम, बन्धन रज्जु (स्त्री) शृंखला-जालम्।

—पुत्तलिका, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या, कलत्रम्।

—वारि, सं पु (सं न) प्रेमाश्रु (न), स्नेहाश्रम्।

प्रेमालाप, स पु (सं) स्नेहसंभाषण २ शृंगार संवाद।

प्रेमाश्रु, स पु (स न) प्रेम, जल वारि(न), अनुरागबाष्पम्।

प्रेमिक, स पुं दे 'प्रेमी'।

प्रेमिका, स स्त्री, दे 'प्रेयसी'।

प्रेमी, स पु (सं मिन्) प्रणयिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन्, अनुराग प्रणय,-वत् २ कामिन्, कामुक, रमण, वल्लभ। वि, प्रिय, आसक्त निरत, सक्त (उ, *संगीत का प्रेमी = संगीत,* प्रिय-आसक्त इ)।

प्रेय, वि (सं प्रेयस्) प्रियतर, अतिप्रिय

२ लौकिकसामारिक-सुखानि भोगा ३ अल वारभेद (सा०)।

प्रेयसी, स. स्त्री (न) प्रेमवती, प्रमिणी, प्रिया, वल्लभा, कान्ता, दयिता।

प्रेरक, म पु (स) प्रचोदयितृ, प्रवर्तयितृ प्रोत्साहक, उत्तेजक।

प्रेरणा, म स्त्री (स) प्रचोदना, प्रोत्साहना, उत्तेजन-ना, प्रवर्तन २ दे 'धक्का'।

—करना, क्रि म, उत्तिजृ प्रवृत् प्रेर् प्रचुद्-प्रोत्सह (प्रे)।

प्रेरित, वि (स) प्रचोदित, प्रोत्साहित, उत्तेजित, प्रवर्तित।

प्रेस, म पु (अ) मपीन्त्रयन्त्र २ मुद्रणायन्त्र ३ मुद्रणयन्त्रालय।

प्रेसिडेंट, म पु (अ) सभा, पति अध्यक्ष प्रधान।

प्रोग्राम, म पु (अ) कार्यक्रम २ कार्य क्रमपत्रम्।

प्रोटीन, म पु (अ) प्रोभूजिन, मानवन्त्र ...।

प्रोत, वि (म) ग्रथित, निहित २ स्यूत, ग्रथित, गुम्फित।

प्रोत्साहन, म पु (स न) धैर्य-उत्साह,-वर्द्धन, उत्तेजन, आश्वासनम्।

प्रोत्साहित, वि (स) उत्तेजित, आश्वासित, वर्द्धतोत्साह, प्रेरित।

प्रोथ, वि (स) विश्रुत, प्रख्यात २ प्रचलित, प्रस्थित ३ स्थापित, स्थिरीकृत (स पु न) १ ... ३ ... नाना... ३ शूकर ...।

प्रोदक, वि (स) उत्त ... आर्द्र २ निर्मल, निर्मल, शुद्ध।

प्रोनोट, म पु (अ) ऋणनिस्तारप्रतिज्ञा-लेख, ऋणपत्रम्।

प्रोपगैंडा, म पु (अ) प्रचार, प्रचारकार्यम्।

प्रोप्राइटर, म पु (अ) स्वामिन्, प्रभु, ईश।

प्रोफेसर, म पु (अ) (महाविद्यालयस्य विश्वविद्यालयस्य वा) उपाध्याय।

प्रोषित, वि (स) विदेशस्थ, प्रवासिन्।

—पतिका, म स्त्री (सं) प्रोषितभर्तृका, नायिकाभेद।

प्रौढ, वि (स) प्रवृद्ध, एधित, प्रोपचित २ संपरि-,पूर्ण, मपन, सिद्ध ३ परिणत, परिपक्व ४ पुष्ट, दृढ ५ निपुण, चतुर।

प्रौढता, स स्त्री (सं) प्रौढत्व, प्रवृद्धि (स्त्री) २ परिपूर्णता ३ परिपक्वता ४ पुष्टि (स्त्री) ५ निपुणता।

प्रौढा, स स्त्री (सं) चिरिंटी, श्यामा, सुवया-, दृष्टरजा (स्त्री एक) (३० से ५५ वर्ष तक की नारी) २ नायिकाभेद। वि, पुष्टा, परिपक्वा, दृढा।

प्लग, स पु (अ) निगम्।

प्लवग, म पु (म) कपि, वानर २ हरिण ३ मण्डूक।

प्लवन, म प (म न) कूर्दन २ तरणम्।

प्लाटिनम, म पु (अ) महातु।

प्लावन म पु (स न) महाप्रवाह, जल, प्रलय-वृष्टि-विप्लव।

प्लावित, वि (सं) जलमग्न।

प्लास्टर, स पु (अ) दे 'पलस्तर'।

—आव पेरिस, म पु, दग्धचूर्णम्, परिस प्रलेप।

प्लीहा, स स्त्री (स) प्ला(लि)हन् (पु), गुल्म, प्लिहा।

प्लुत, स पु (म) त्रिमात्रवर्ण। वि, उत्प्लुत २ प्लावित ३ सिक्त ४ त्रिमात्र।

प्लूरिसी, म स्त्री (अ) पुप्फुसवेष्टनपाक, फुप्फुसावरणप्रदाह।

प्लेग, म पु (अ) महा,-मारी, मारिका २ मूषिकरोग अग्निरोहिणी।

प्लेट, म स्त्री (अ) दे 'तश्तरी' २ (धातु दिकस्य) पट्ट-ट्टः, फलक-कम्।

—फार्म, म पु (प) वेदी, वेदिका, मञ्च, पीठिका।

फ

फ, देवनागरीवर्णमालाया द्वाविंशतितमो व्यञ्जनवर्ण, फकार।

फंका, स पु (हिं फाँकना) मुष्टि (पु स्त्री), अञ्जलि (पु), मुष्टि-अञ्जलि,-मात्र अन्नादिक २ खण्ड-ड, शकल-लम्।

फंकी, स स्त्री (हिं फका) चूर्ण, चूर्णौषधम्।

फंद, स पु (स बंध) बंधन २ दे 'फंदा' ३ छल, कपट ४ रहस्य, गूढ़वार्ता ५ दु खम्।

फंदा, स पु (स बंध) पाश बन्धन, वागुरा, पाशिनी, मृगबंधनी २ जाल ३ दु ख बंधन्।

—लगाना, मु, छल (चु) विप्रलभ (भ्वा आ अ) वच्प्रद् (प्रे) २ जाल निक्षिप् (तु प अ) निधा (जु उ अ)।

फंदे में पड़ना, मु, पाशे बंध ग्रह् (कर्म), वशी भू, २ विप्रलभ प्रतार (कर्म)।

फंसना, क्रि अ (हि फासना) सम्बध् मसंश्लिष् सबध् (कर्म), आकुलीसकीर्णी भू, सशक्त सलग्नसश्लिष्ट (वि) भू २ जाले पाशे वा धृ-बध (कर्म) जालबद्ध (वि) भू।

फंसवाना, क्रि प्रे, व 'फंसाना' के प्रे रूप।

फंसाना, क्रि स (हि फसना) साश्लिष् (प्रे), सम्बध् (क्र् प से), आकुल सलग्नीसकीर्णी कृ २ पाशेन बंध (क्र् प अ) जाल धृ (चु), पाशे पत् (प्र)।

फंसाव, स पु } (हि फसना) संश्लिष्टता,
फंसावट, स स्त्री } प्रथिलत्व २ सकुलता, व्यतिकर, सकर।

फ़क़, वि (अ फ़क़) श्वेत, शुक्ल, स्वच्छ २ विवर्ण, मदप्रभ।

रंग—होना या पड़ जाना मु पाडुच्छाय विवर्णं (वि) भू, मदम्लान मलिन,प्रभ(वि) जन् (दि आ से) २ आकुली भू, मुह (दि प से)।

फ़क़त, वि (अ) अलं, पर्याप्त २ एकाकिन्। क्रि वि, केवलम्।

फ़क़ीर, स पु (अ) भिक्षु, भिक्षुक २ मधु, सन्यासिन् ३ निर्धन।

फ़क़ीरनी, स स्त्री (अ फकीर>) भिक्षुकी, भिक्षोपजीविनी, भिक्षाचरी २ परिव्राजिका, सन्यासिनी, वैरागिणी।

फ़क़ीरी, स स्त्री (अ फकीरी) भिक्षुकता, याचकत्व २ सन्यास ३ दारिद्र्यम्।

फक्कड़, वि (अ फकीर) निश्चिन्त २ निर्धन, ३ निर्विवादहि। स पु, गाली, अश्लील वचन, अश्लीलग्राम्य भाषा२, व र्जन २ मिथ्यावचनम्।

—बाज़, स पु, अश्लीलग्राम्य अश्लील भाषिन् २ मिथ्याभाषिन्।

—बाज़ी, स स्त्री, अश्लीलभाषिता, अवाच्य वाचकता।

फक्रिका, स स्त्री (स) तत्त्वनिर्णयार्थमुपस्था पित पूर्वपक्ष २ छल, कपट, दभ।

फ़ख़्र, स पु (फा फख्र) गर्व, अभिमान।

फगुआ, स पु (हि फागुन) होलिकोत्सव २ होलिकागीतानि (न बहु)।

फ़ज़ीलत, स स्त्री (अ), गौरव, महत्ता।

—की पगड़ी, मु, विद्वत्ताप्रमाणम्, वैदुष्यो ष्णीषम्।

फ़ज़ीहत, स स्त्री (अ) दुर्गति (स्त्री) दुर्दशा, २ कलह।

फ़ज़ूल, वि (अ) निरर्थक, व्यर्थ।

—ख़र्च, वि (अ+फा) मुक्तहस्त, अप व्यर्थ-व्ययिन्।

—ख़र्ची, स स्त्री, अति अप अमित-व्यय, मुक्तहस्तता।

फ़ज़्ल, स पु (अ) कृपा, अनुग्रह।

फट, स स्त्री (अनु) फटिति शब्द ध्वनि।

—फट, स स्त्री, फटफटाशब्द २ प्रलाप।

—से, क्रि वि, झटिति, सपदि।

फटक¹, स पु दे 'स्फटिक'।

फटक², क्रि वि (अनु) तत्क्षणे, झटिति।

फटकन, स स्त्री (हि फटकना) तुषमं, तुष, असारद्रव्यम्।

फटकना, क्रि स, (अनु फट) प्रस्फुट् (प्रे), प्रसर्गेनेन शूर्पेण विशुध् (प्रे) २ दे 'पीटना' ३ दे 'फटफटाना'। ४ रेणु अपमृज (अ प से), निधूली कृ ५ क्षिप् (तु प अ), प्रस् (दि प से)। क्रि अ, या (अ प अ), गम् २ दूरी पृथक् भू ३ 'तड़फड़ाना' ४ श्रम् (दि प से)।

फटकरी, स स्त्री, दे 'फिटकरी'।

फटकार, स स्त्री (अनु फट्+सं कार>) निर्भर्त्सना, वाग्दंड, उपालम्भ, निंदा, आक्रोश, गर्हा।

फटकारना, क्रि स (पूर्व) शिलायां आस्फाल्य आहत्य वस्त्राणि प्रक्षल् (चु) २ दूरी पृथक्, कृ ३ निर्भर्त्सनं तर्ज् (चु आ से) वाचा दंड् (चु), निंद् (भ्वा प से) ४ फटफट शब्द एजकम्प् (प्रे)।

फटकारने योग्य, वि, निर्भर्त्सनीय, तर्जनीय।

फटकारने वाला, स पु, निभत्सक, तर्जक ।
फटकी, स स्त्री (हि फटका) शाकुनिक पनरम् ।
फटना, क्रि अ (हि फाटना) विद् विभिद् विदृ (कर्म) २ स्फुट (तु प से), दल (भ्वा प से) ३ खण्डो भिद् (कर्म) शकली भू ४ अपवि कृ (तु प से) इतस्तत विद्रु (भ्वा प अ) ५ अत्यंत व्यथ (भ्वा आ से) ६ अम्ली भू ।
फट पड़ना, मु सहसा आपद (भ्वा प से) उपस्था (भ्वा आ अ) ।
छाती—, (शोकातिशयेन) हृदय विदृ द्विधा भिद् (कर्म) ।
फटफटाना, क्रि स (अनु फटफट) प्र, जल्प (भ्वा प से) अपार्थक वद् (भ्वा प से) २ दे फड़फड़ाना' ३ प्रयस् परिश्रम् (दि प से) ४ फटफटायते (ना धा), फटफटाशब्द कृ ५ आजीविकार्थे भृश चेष्ट (भ्वा आ से) ।
फटा, वि (हि फटना) विदीर्ण, विशीर्ण २ स्फुटित, विदलित ३ शकलीभूत । स पु, छिद्र, छेद, भेद ।
—दूध, स पु, अम्लीभूत क्षीरम् ।
—पुराना, स पु, चीर, चीवर, कर्पट ।
फटे में पाँव देना, मु. अव्यापारेषु व्यापार कृ, परकार्येषु व्यापृ (तु आ अ) ।
फटिक, स पु दे 'स्फटिक' ।
फट्टा, स पु (हि फटना) विदीर्णवेणुदंड ।
फड़, स स्त्री (स पण) कलह २ द्यूत, शाला-सभा ३ क्रयविक्रयस्थान ४ पंक्ति (स्त्री), समूह ।
—बाज़, स पु (हि + फा) कलिक, द्यूतकारक २ वाचाल, वावदूक ।
फड़क, स स्त्री (अनु) प्र,स्पद, स्फुरण, कंप २ पक्ष-चालन-आस्फालनम् ।
—उठना, मु, प्रमद् (दि प अ) ।
—जाना, मु, अनुरज् (कर्म), स्निह् (दि प से) ।
फड़कना, क्रि अ (पूव) स्फुर् (तु प से), वेप्-कंप्-स्पंद (भ्वा आ से) २ क्षुभ् (दि प से), आकुली भू २ पक्ष विचल् (भ्वा प से), विधू (कर्म) ।
फड़काना, क्रि स, व 'फड़कना' के प्रे रूप ।
फड़फड़ाना, क्रि स (अनु फटफट) फटफटायते (ना धा), फटफटाशब्द तन् (प्रे) २ पक्षौ विधू (स्वा उ से, क्र उ से, भ्वा उ से, चु), आस्फल् विचल (प्रे), दे 'फटफटाना' । क्रि अ, क्षुभ (दि प से), आकुली भू २ उत्सुक वृत् (भ्वा आ से) ।
फड़फड़ाहट, स स्त्री (हि फटफड़ाना) पक्ष,-आस्फालन विधुवन विचालन २ स्फुरण, स्पंदन, विकंप ३ आकुलता, चित्त,-वेग भ्रम, म,क्षोभ ४ प्रयास, अनि प्र यत्न, चेष्टितम् ।
फड़वाना, **फड़ाना**, क्रि प्रे, व 'फाड़ना' के प्र रूप ।
फड़िया, स प (हि फड) द्यूतकारक, सभिक २ दे 'परचूनिया' ।
फण, स पु (स) फणा, फण, कट,-टा-टी, स्फट-टा, भोग, स्फुट-टा, दर्वी-दर्वि (स्त्री) ।
—कर, स पु (स) सर्प, अहि ।
—धर, स पु (स) नाग, सर्प २ शिव ।
—मणि, स स्त्री (स पु) सर्पमणि-रत्नम् ।
फणा, स स्त्री (स) दे 'फण' ।
फणी, स पु (स -णिन्) फणधर, फणाकर, दे 'सर्प' ।
फणीन्द्र, **फणीश**, स पु (स) अनंत, शेष, भुजगेश, सर्पराज ।
फ़तवा, स पु (अ) व्यवस्था, निर्णय (इस्लाम) ।
फ़तह, स स्त्री (अ) विजय २ साफल्यम् ।
—मंद, **—याब**, (अ + फा) विजयिन्, विजेतृ ।
फतिंगा, स पुं (स पतंग) शलभ, पतंगम ।
फतूर, स पु (अ) दोष, विकार, २ हानि (स्त्री) ३ विघ्न ४ उपद्रव ।
फन, स पु, दे 'फण' ।
फन, स पु (फा) गुण, वैशिष्ट्य २ विद्या, ज्ञान ३ कलाकौशल, शिल्प ४ व्याज, छद्मन् (न) ।
फ़ना, स स्त्री (अ) प्रलय, वि,नाश, प्र,ध्वंस ।
फनी, स पु, दे 'फणी' ।
फफोला, स पु (स प्रस्फोट) त्वक्-स्फोट, शोफ । दे 'छाला' ।
दिल के फफोले फोड़ना, मु, वैर-साधनं

शोभन नियातन कृ (ना धा), प्रतिदिम् (रु प स), क्रोध प्रकटयति (ना धा),
फब, स स्त्री , दे 'फबन'।
फबती, स स्त्री (हिं फबना) क्ष्वेला लिका, नमन् (न), नर्मोक्ति (स्त्री), व्यग्यवचन २ समयोचितवृत्ति (स्त्री)।
—उड़ाना, मु अव-उप हस (भ्वा प से), वक्रोक्त्या आक्षिप (तु प अ)।
—कहना, मु , सहास्य उपालभ (भ्वा आ अ) सहास व्यग्यवचन प्रयुज (रु ना अ)।
फबन, स स्त्री (हिं फबना) शोभा , छवि (स्त्री), सौन्दर्य २ मडन प्रसाधन, परिष्कार ।
फबना, क्रि अ , (स प्रभवन>) शुभ् (भ्वा आ से) युज (कर्म) उपपद (दि आ न), उचित उपपन्न अनुरूप युक्त सदृश (वि) भूत (भ्वा आ से)।
फबनेवाला, वि , शोभन, उचित, युक्त, अनु रूप, सदृश ।
फबीला, वि (हिं फब) शोभन, सुन्दर, २ उचित अनुरूप।
फरक, फरकन, स स्त्री , दे 'फडक ।
फरक़, स पु , दे फ़र्क'।
फरकना, क्रि अ , दे 'फड़कना'।
फरज़न्द, स पु (फा) पुत्र , तनुज ।
फरज़ी, स पु , दे 'फर्जी'।
फरद, स स्त्री , दे 'फर्द'।
फरफद, स पु (अनु फर+हिं. फदा) माया, कपट, छल, छद्मन्, (न), व्याज २ भाव , हाव ।
फरफर, स पु (अनु) पक्ष, स्फुरण आस्फा लनम्। क्रि वि सवेगं शीघ्र, द्रुत २ अप्रतिहतम् ।
फरफराना, क्रि स , क्रि अ , दे 'फड़फड़ाना'।
फरमा[1], सं पु (अ फ्रेम) घटना, रचना २ दे 'कालबूत' ३ आकारसाधनम् ।
फरमा[2], सं पु (अं फार्म) सकृन्मुद्रणार्हं पूगपत्रम् ।
फरमान, सं पु (फ़ा) राजकीयं आज्ञापत्र, अनुशासनपत्र २ आज्ञा, आदेश ।
फरमाना, क्रि स (फ़ा) आज्ञा (प्रे), आदिश् (तु प अ) शास् (अ प स.) २ वच् (मु)।
फरयाद, स स्त्री (फा) दु खनिवेदन २ प्रार्थना, अभ्यर्थना ३ अभियोग ।
फरयादी, स पुं (फ़ा) दु खनिवेदक २ अभियोक्तृ ३ प्राथिन् ।
फरलाग, स पु (अं) क्रोशस्य षोडशो भाग , अध्वमानभेद ।
फ़रलो, स स्त्री (अं) सार्द्धवेतनो दीर्घाव काश , अवकाशभेद ।
फरवरी, स स्त्री (अं फेब्रुअरी) आंग्लसंव त्सरस्य द्वितीयो मास ।
फरसा, स पु (सं परशु) दे 'कुल्हाड़ा'।
फरहग, स पुं (फा) कोश प , अभिधानं, शब्दसग्रह २ टीका, कुंचिका, व्याख्या ।
फरहत, सं स्त्री (अ) मोद , हर्ष , प्रसन्नता ।
फरहरा, स पु (हिं फहराना) पताका, केतु ।
फराख, वि (फा) आयत, विस्तृत, विशाल ।
—दिल, वि (फा) विशालहृदय उदार ।
फरागत, स स्त्री (अ) व्यवसाय विश्राम , उद्योगविश्राति (स्त्री), अवकाश । २ निश्चिंतता ३ मलत्याग ।
फरामोश, वि (फा) विस्मृत ।
फरामोशी, सं स्त्री (फा), विस्मृति (स्त्री), विस्मरणम् २ स्खलनं, स्खलितम् ।
फरार, वि (अ) (दडभयात्) पलायित, अपक्रान्त ।
फरिश्ता, सं पुं (फा, मि स प्रेरित) दिव्य दूत, दूत २ देवता ।
फरीक़, सं पुं (अ) प्रतिद्वन्द्विन्, विपक्षिन् २ वादिन, अर्थिन, प्रतिवादिन्, प्रत्यर्थिन् ३ पक्ष, प्रतिपक्ष ४ पक्ष्य , सपक्ष ५ श्रेणी, वर्ग ।
—सानी, (सं पु अ) प्रतिवादिन् ।
फ़रीकैन, सं पुं (अ) (व्यवहारे) पक्ष प्रतिपक्षौ, वादिप्रतिवादिनौ, अभियोग्य भियुक्तौ ।
फरुहा, सं पु , दे 'फावड़ा'।
फरेंदा, सं पुं (सं फलेन्द्र) राजजम्बू, • ज्बु , नद ।
फ़रेब, सं पु (फ़ा) छलं, कपटं, प्रतारणा ।
फरेबी, वि (फ़ा) छलिन्, कापटिक, प्रतारक ।

फ़रोख्त, स स्त्री (फ़ा) विक्रय यणम्।
फ़र्क़, स पु (अ) पृथक्ताव्व, भिन्नत्व, इतरत्व २ अतर, भेद, विशेष ३ दूरताव्व, अतर ४ न्यूनता, विकलता।
फ़र्ज़, स पु (अ) भागवतकृत्य (इस्लाम) २ कर्तव्यकमन् (न) ३ कल्पना ४ उत्तरदायित्वम्।
—करना, क्रि अ कल्पय (प्रे), उत्प्रेक्ष (भ्वा आ ते) (प्रमाण विना) सिद्ध मन् (दि आ अ)।
फ़र्ज़ी, सं पु (फ़ा) कल्पित, काल्पनिक, २ मत्ताहीन वितथ।
फ़र्द, स स्त्री (अ) सूची वि (स्त्री) नामावलि (स्त्री), अनुक्रमणिका २ पृथक्स्थित पत्रकादिरिः ३ प्रच्छदपट स्योवपुः। वि अनुपम, अतुल्य।
फ़याद, स स्त्री, दे फ़रियाद'।
फ़र टा, स पु (अनु) त्वरा, वेग २ दे 'फ़र्राटा'।
फ़र्राश, स पु (अ) कुथप्रसारक २ किंकर।
फ़र्श, स पु (अ) कुट्टिम म, शिलास्तर २ गृहभूमि (स्त्री) आस्तरण, कुथ-था, नमत, परिस्तोम।
फल, सं पु (स न) शस्य, प्रसव, उत्पन्न २ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ३ परिणाम, ४ गुण, प्रभाव ५ कर्मभोग ६ प्रतिफल, प्रतीकार ७ धारा, पत्र, फल (खड्गादिकस्य) ८ फाल, कुशी, कृषक ९ फलक-क १० ढाल, फर, चर्मन् (न) ११ उद्देश्यसिद्धि (स्त्री) १२ गुण्य (गति) १३ गणित क्रियापरिणाम (उ योग गुणन, फल) १४ क्षेत्रफल १५ ग्रहयोगपरिणाम (ज्यो) १६ प्रयोजन, अर्थ १७ वृद्धि (स्त्री), दे 'सूद'
—आना, या लगना, क्रि अ, फल् (भ्वा प से), सफलीभू, फलवत् जन् (दि आ से), फलित (वि) भू।
—दार, वि (सं + फ़ा) फलवत्, फलदायक, फलद, फलप्रद, फलित, फलिन्, सफल २ अमोघ, अवध्य।
—पाक, सं पु (स) करमर्दक २ नला मलक ३ फलपरिणति (स्त्री)।
—पाना, क्रि स, (स्वकर्मणाम्) फल भुज् (रु आ अ) लभ् (भ्वा आ अ) प्राप् (स्वा प अ)।
—प्राप्ति, स स्त्री (स) कृतकार्यता, मनोरथसिद्धि (स्त्री)।
—भोग, स पु (स) उदर्कानुभव, परिणामोपभोग।
—दान, स पु (स) दे तरबूज' २ दे 'खरबूजा'।
फलक, स पु (स पु न) (काष्ठादिकस्य) पट्ट २ शिला ३ ढाल, चर्मन् (न) ४ रजकपट्ट ५ आस्तरण ६ पत्र,पृष्ठ ७ हस्ततल ८ फल ९ पीठ, पीठिका।
फ़लक, स पु (अ) आकाश द, गगन २ स्वर्ग।
फलत, अव्य (स) परिणामत, अत, इति हेतो, अस्मात् कारणात्।
फलद, वि (स) फल-दायक प्रद जनक।
फलना, क्रि अ (स फलन) दे फल आना' ('फल' के नीचे) २ फल आवह (भ्वा प अ), लाभ जन् (प्रे)।
—फूलना, मु, समृध् (दि प से), सवृध (भ्वा आ से), उत्कर्ष या (अ प अ)।
फ़लसफ़ी, स पु (अ) दर्शनशास्त्र, तर्क, विद्याशास्त्रम्।
फ़लसफ़ा, सं पु (अ) दार्शनिक, तत्त्वज्ञ, दर्शनशास्त्रज्ञ।
फ़लां, वि (फ़ा) अमुक।
—फ़लां, वि अमुकामुक, विशिष्ट, निर्दिष्ट।
फलांग, स स्त्री, दे 'कुदान'।
फलांगना, क्रि अ (स प्रलंघनम्) दे 'कूदना'।
फलाकांक्षी, वि (स क्षिन्) फलेच्छुक, फलाभिलाषिन्।
फ़लाना, वि, दे 'फलां'।
फलार्थी, वि (स-र्थिन्) फलेच्छुक, फलाभिलाषिन् २ परिणामोत्सुक।
फलाहार, स पु (स) फलभक्षण, फलैर्निर्वहणम्।
फलाहारी, वि (स-रिन्) फलभक्षक।
फलित, वि (स) फलवत्, फलिन्, प्राप्तफल २ सफल, पूर्ण।

—ज्योतिष, स पु (स न) दैवज्ञविद्या।
फली, स स्त्री (हिं फल) बीजपुट, बीजकोष।
फलीता, स पु (अ फतीलह्) वर्तिका, वर्ति (स्त्री) २ नालाकास्त्रवर्ति फली।
फलीभूत, वि (स >) सफल, फलप्रद।
फलोदय स पु (स) फलोत्पत्ति (स्त्री) २ लाभ ३ हर्ष ४ स्वर्ग।
फसल स स्त्री (अ फस्ल) शस्य, धान्य, अन्नम् २ ऋतु ३ काल।
फसाद, स पु (अ) संक्षोभ विप्लव २ कलह उपद्रव २ विकार, विक्रिया।
फसादी, वि (फा) विद्रोहिन् विप्लवकारिन् २ उपद्रविन् कलहप्रय।
फसाना, स पु (फा) आख्यायिका, लघु, कथा।
फसाहत, स स्त्री (अ) भाषा सौष्ठव परिष्कृति (स्त्री)।
फसील, स स्त्री (अ) प्राकार, वरण, वप्र, वप्रम।
फहरना, क्रि अ (स प्रसरणम्) प्रसृ (भ्वा प अ) उड्डी (भ्वा आ से)।
फहराना, क्रि स 'फहराना' के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप।
फाँक, स स्त्री (स फलकम् >) खण्ड, शकल २ छुरिका ३ रेखा।
फाँकना, क्रि स (हिं फकी) हस्ततलेन मुखे निक्षिप (तु प अ)। स पु, चूर्णस्य मुखे निक्षेपणम्।
फाँदना, क्रि अ (स फणन >) कुर्द् (भ्वा आ से) उत्प्लु (भ्वा आ अ) २ उल्लङ्घ (भ्वा आ स)। स पु उत्प्लवन, कूर्दनं, उल्लङ्घनम्।
फाँस, स स्त्री (स पाश) बंधनम्, दे 'फंदा'।
फाँसना, क्रि स (हिं फाँस) पाशयति (ना धा) २ वञ्च (चु) (ने)।
फाँसी, स स्त्री (हिं फाँस) उद्बंधनम् २ मृत्युदण्ड ३ पाश बंधनम्।
—देना, क्रि स, उद्बध्य हन् (अ प अ)।
फाइल, स स्त्री (अं) पत्रसमूह २ पंक्ति (स्त्री) ३ सूत्र, गुण।
फाका, स पु (अ फाकह्) उपवास, उपोषित, लंघनम्।

फाग, स पु (हिं फागुन) होलिकोत्सव २ रक्तचूर्णभेद ३ होलिकागीतम्।
फागुन, स पु (स फाल्गुन दे)।
फाटक, स पु (स कपाट) अर्गलद्वार, बृहद् द्वारम् २ लौहद्वारम् ३ दे 'काँजी हौद'।
फाड़ना, क्रि स (स स्फाटनम्) प्रथ (तु प से) भिद् छिद् (रु प अ), विद् (ते) २ खण्ड (चु), भञ्ज (रु प अ)। स पु, मथन, भेदन, छेदन, विदारण, विपाटन २ खण्डन भञ्जनम्।
फानूस, स पु (फा) *दीप-कोष पुट।
फायदा, स पु (अ फ़ाइदह्) लाभ, धनागम, आय २ प्रयोजनसिद्धि ईप्सितप्राप्ति (स्त्री) ३ सुफल सुपरिणाम ४ नीरोगता।
—मद, वि लाभदायक, उपकारक।
फारखती, स स्त्री (अ फारिग+खती) दायित्वत्याग २ दायित्वत्यागपत्रम्।
फारम, स पु (अ फ़ार्म) प्रपत्रम्।
फारमूला, स पु (अ) सूत्रम्।
फारस, स पु (फा) पारसि(सी)क।
फारसी, स स्त्री (फा) पारसी।
—दाँ, वि पारसीविद्, पारसीपठित।
फारिग, वि (फा) लब्धावकाश, निर्वर्तित व्यापार, निवृत्त।
—होना, मु कार्यमुक्त, लब्धावकाश भू २ शौचाय गम्।
फारन, वि (अ) विदेशीय, परदेशीय, वैदेशिक, पारदेशिक।
—आफिस, स पु (अ) विदेश पराराष्ट्र, कार्यालय।
—सेक्रेटरी, स पु, विदेश पराराष्ट्र, सचिव।
फारेनर, स पु (अ) विदेशीय, परदेशीय, वैदेशिक, पारदेशिक।
फारेनहाइट, स पु, जर्मनवैज्ञानिकविशेष।
—थर्मामीटर, सं पुं (अ) फारेनहाइट तापमापकम्।
फारेस्ट, स पु (अं) वन, जगलम्।
—डिपार्टमेंट, स पु (अं) वनजंगल, विभाग।
फाल, स स्त्री (सं पु न) कुशिक, कृषिका, हलापरणम्।
फ़ाल्टू, वि (हिं फाल=टुकड़ा) उपयुक्ताव

(भ्वा प अ) २ नृत् (दि प से)। म ण उत्प्लवनं, नर्तनम्।
फुनगी, स स्त्री (स स्फुटनम्) शाखा विटप, अग्रपत्र -अग्राकुरा (बहु०)।
फुप्फुस स पु (स) दे 'फेफड़ा'।
फुफकार, स पु (अनु) दे 'फुकार'।
फुफेरा वि, (हि फूफा) पैतृष्वसेय, पि (पै) तृष्वस्रीय।
फुरकत, स स्त्री (अ) वियोग, विरह।
फुरती स स्त्री (स स्फूर्ति) शीघ्रता, क्षिप्रता।
फुरतीला, वि (हिं फुरती) शीघ्र क्षिप्र, कारिन्, स्फूर्तिमत्।
फुरना, क्रि अ (स स्फुर) प्रादुर्भू, प्रकटीभू २ चपलेय् (भ्वा आ से) ३ प्रकाश् (भ्वा आ से) ४ पुरपुरायते (ना धा)।
फुरसत, स स्त्री (अ) अवकाश, रिक्तसमय २ अवसर, समय।
फुलका, स पु (हि फूलना) लघुतनु, रोटिका २ विस्फोट, पिटिका।
फुलझड़ी, स स्त्री (हि फूल+झड़ना) पुष्पक्षारिणी २ कलहकारिणी वाता।
फुलवाड़ी, स स्त्री (सं पुष्पवाटी) पुष्प कुसुम-वाटी-वाटिका, उद्यानम् २ वरयात्राया कागज निर्मिता पुष्पवाटी ३ पुत्रकलत्रादय।
फुलाना, क्रि स, व 'फूलना' के प्रे रूप।
फुलेल, सं पु (हि फूल+तेल) सुगन्धितैलम्।
फुल्ल, वि (स) विकसित स्फुटित, उन्निद्र।
फुसफुसा, वि (अनु फुस) शिथिल, श्लथ २ भंगुर, भिदुर ३ अशक्त, दुर्बल।
फुसलाना, क्रि स (हिं पिसलाना) प्रवञ्च् (प्रे), विप्रलभ् (भ्वा आ अ)।
फुहार, स स्त्री (स फूत्कार >) शीकरवर्ष, मन्दवृष्टि (स्त्री)।
फुहारा, सं पु (हिं फुहार) जलधारा, यन्त्रम् २ जलोत्क्षेप।
फूँक, स स्त्री (अनु फू) फुत्कार, ध्मानम् २ मुखमारुत, श्वास।
—मारना, क्रि स, फुत्कृ, ध्मा (भ्वा प अ)।
फूँकना, क्रि स (हिं फूँक) दह् (भ्वा प अ), भस्मसात् कृ २ फुत्कृ।
फूँकनी, सं स्त्री, दे 'फुँकनी'।
फूँस, स स्त्री (घास में ०-०) पलाल-लै, पल २ शुष्क, तृण-घास।
फूट, स स्त्री (हिं फूटना) चित्रा, मञ्जा, चिर्भिटा पक्वा २ विश्लेष ३ विरोध, मतभेद।
—डालना, क्रि स, विरोध जन् (प्रे)।
फूटना, क्रि अ (स स्फुटनम्) भिद्-छिद् विद् (कर्म) स्फुट् (तु प से) २ विरम् पुत्र (भ्वा प से)।
फूत्कार, स पु (स) दे 'फुकार'।
फूफा, स पु (देश) पितृष्वसृ-पति स्व।
फूफी, स स्त्री (हि फूफा) पितृष्वसृ।
फूल, स पु (स फुल्लम्) कुसुम, प्रसून, पुष्पम्।
—दान, स पु, कुसुमभाजन पुष्पधानम्।
—दार, वि, पुष्पित, सपुष्प।
फूलना, क्रि अ (हिं फूल) फुल्ल् विकस् (भ्वा प से) २ प्रमुद् (भ्वा आ से)। स पु विकास, प्रस्फुटन २ प्रमाद, आह्लाद।
फूला, स पु } (हिं फूल) शुक्र, पुष्पम्,
फूली, स स्त्री } पुष्पक नेत्ररोगभेद।
फूस, स पु, दे 'फूस'।
फूहड़, वि (अनु) मन्द, मूढ, मन्दमति २. कदाचार, कुरूप, कुदर्शन।
फेंकना, क्रि स (स क्षेपणम्) क्षिप्-मुच् (तु प अ) प्र अस् (दि प से) २ प्रम देन पत् (प्रे) ३ सावधान त्यज् (भ्वा प अ) ४ अपव्यय (चु)। स पु, क्षेपण, प्रासन, पातन, अपव्यय।
फेंकने योग्य, वि क्षेपणीय, त्यक्तव्य।
—वाला, स पु, क्षेपक, प्रासक।
फेंका हुआ, वि, क्षिप्त, प्रास्त, त्यक्त।
फेटना, क्रि स (सं पिष्ट) मथ् (भ्वा प स), मथ्-स्वन् (भ्वा प स) २ क्रीडापत्राणि मिश्र् (चु)।
फेंटा, सं पु (हिं पेट या पट्टी) परिकर, कटि-, बन्ध पट २ लघूष्णीष।
फेन, स पु (स) जलकुसुम, अब्धिकफ, मण्ड -, डिण्डीर, अबुकफ।
फेनिल, वि (स) फेन-युत अन्वित, फेनल।
फेनी, सं स्त्री (सं फेनिका) पक्वान्नभेद।
फेफड़ा, सं पु (सं फुफ्फुस-सम्) क्लोम, फुफ्फुस, क्लोमन् (न), फुफ्फुसम्, श्वसनक।

फेफड़ी, स स्त्री दे 'पपड़ी'।
फेर, स पु (हिं फेरना) भ्रमण, परिवर्तनम् २ भ्रान्ति (स्त्री), भ्रम ३ पुनर् (अव्य)।
फेरना, क्रि स (स प्रेरणम्) घूर्ण परिभ्रम् (प्रे) २ प्रतिदा प्रत्यृ (प्रे) ३ प्रतिया प्रतिनिवृत् (प्र) स पु घूर्णन परिभ्रामण, प्रतिदान, प्रत्यर्पणम्, प्रतियापन प्रतिनिवर्तनम्।
फेरफार, स प (हिं फेरना) परिवर्तन विपर्यास विपर्यय २ व्याज, कपटम्।
फेरा, स पु (पूव) प्रत्यावर्तन, प्रत्यागमन २ भ्रमणम् परिक्रमणम् ३ द्विरागमन ।
फेरी, स स्त्री (पूव) परिक्रमा प्रदक्षिणा २ दे 'फेरा' ३ दे 'फर'।
—वाला, स पु, भाण्डवाह, वर्वणिक ।
फेल, वि (अ) विफल, मोघयत्न अनुत्तीर्ण।
फेक्टरी, स स्त्री (अ) शिल्पशाला।
फैलना, क्रि अ (स प्रसरणम्) वितन् विस्तृ (कर्म) २ व्याप् (स्वा प अ) ३ अत्यै (भ्वा आ अ) पीनी भू ४ प्रख्यात (वि) तन् (दि था मे) ५ आग्रह कृ। स पु, विस्तार, विततिः व्याप्ति (स्त्री)।
फैला हुआ, वि विस्तृत, विस्तीर्ण व्याप्त, अत्यासित पीन, प्रख्यात, प्रसिद्ध।
फैलसूफ, स पु (अ फिलसफ़) बुध, प्राज्ञ २ छलिन्, कपटिन् ३ अपव्ययिन्।
फैलसूफी, स स्त्री, (अ) बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता २ छल, कपटम् ३ अपव्यय, सुमहत्वता।
फैलाना, क्रि स, दे 'फैलना' के प्रे रूप।
फैलाव, स पु (हिं फैलना) विस्तार, प्रसार २ विततिः व्याप्ति (स्त्री)।
फैशन, स पु (अ) रीति, प्रथा २ शैली, विधि, वेषभूषा।
फैसला, स पु (अ फ़स्ल) निर्णय, सम्प्रधारणम्
फोक, स पु (हिं फूँकना) मल ल,उच्छिष्ट शेष, अवकर ।
फोकट, वि (हिं फोक) निस्सार, तत्त्वहीन ।
फोकस, स पु (अ) रश्मिकेन्द्रम्।
फोटो, स प (अ) छायाचित्र, नाशकालेख्यम्।
—का कमरा, स पु, छायाचित्रपेटिका।
—ग्राफर, स पु (अ) छायाचित्रक ।
—ग्राफी, स स्त्री (अ) छायाचित्रणम्।
फोड़ना, क्रि स (स स्फोटनम्) स्फुट विदारय् (प्रे)। स पु, विदारण, स्फोटन, खण्डनम्।
फोड़ा, स पु (स स्फोट), पिटक, गण्ड, विद्रधि ।
फौज, स स्त्री (अ) सेना, बलं, सैन्यम्।
—दार, स पु, (फ़ा) सेनापति, सेनानी ।
—दारी, स स्त्री (फ़ा) दण्डाधिकरणम् २ कलह, युद्ध ।
फौजी, वि (फ़ा) सैनिक, यौध। स प, सैनिक, योध ।
फौरन, क्रि वि (अ) सपदि, सद्य झगिति, अचिरात् (सब अव्य)।
फौलाद, स पु (फ़ा पोलाद) वज्रायस, सारलोह, शस्त्रकम्।

ब

ब, देवनागरीवर्णमालाया त्रयोविंशो व्यञ्जन वर्णः बकार ।
बंग, स पु (स बंगा बहु) भारतस्य प्रान्त विशेष ।
बंगला¹, वि (हिं बंगाल) वाग, वगदेशीय। स स्त्री, वंगभाषा।
बंगला², स पु (अ बंगलो) एकभूमि भवनम्।
बंगाल, स पु (स वंग बहु) प्रान्त ।
बंगाली, वि (हिं बंगाल) वंगीय, वगदेशीय। स पु, वंगवासिन्।
बंजर, वि (हिं बन+ऊसर) उषर, ऊषवत्, अशस्यप्रद। स पु ऊषर-स्थ, अनुर्वरा भू (स्त्री) ३ मरुस्थलम्।
बंजारा, स पु (स वणिज्) धान्य-वणिज् व्यवसायिन्।
बँटना,क्रि अ (स वटनम्) विभज्-वट् (कर्म)।
बँटवाना, क्रि प्रे, 'बाँटना' के धातुओं के प्रे रूप।
बंडल, स पु (अ) पोट्टलिका, गुच्छ, पोट्टरा, सघात, भार, कूर्च ।
बंडी, स स्त्री (हिं बंद) कुर्पासक कम्।
बंद, स पु (फ़ा) बन्ध, बन्धनम् २ अवरोध,

बक्की, वि , दे 'बकवादी' ।
बक्स, स पु (अ बॉक्स) पेटिका, मंजूषा समुद्ग , समुद्गक , पिटक कम् ।
बखिया, स पु (फ़ा) दृढसूक्ष्म-सीवनस्यूति (स्त्री)।
बख़ूबी क्रि वि (फ़ा) सम्यक् , साधु, सुष्ठु (सब अव्य)।
बखेड़ा, स पु (हिं बिखेरना) विपत्ति सकटम् २ विवाद ३ कठिनता।
बखेड़िया, वि (हिं बखेड़ा) विवाद-कलि कलह प्रिय विवादिन्।
बखेरना क्रि स दे 'बिसराना'
बख्त, स पु (फा) भाग्य, दैव अदृष्टम् २ सौभाग्यम्।
बख्तावर, वि (फा) भाग्यशालिन् सुभग महाभाग।
बख्शना, क्रि स (फ़ा बख्श) दा (भ्वा आ स), वितृ (चु), उत्सृज् (तु प अ)।
बख्शिश, स स्त्री (फ़ा) दानम् २ दत्त वस्तु (न) ३ पुरस्कार ४ क्षमा, अनुग्रह ।
बगल, स स्त्री (फ़ा) कक्षा बाहुरोम्न्, दामूलम्।
बगला, स पु (स बक) बक, दीर्घपाद, तापस दाम्भिक, तीर्थसेविन्, मीनघातिन् शुक्लवायस ।
बगावत, स स्त्री (अ) राजद्रोह , विप्लव उपप्लव ।
—का झंडा बुलंद करना मु , राजद्रोह-राज विरोध कृ।
बगीचा, स पु (फ़ा बागचह्) वाटिका, वाटिका, उपवनम्।
बगूगोशा स पु (देश) मधुगोल दे 'नाशपाती'।
बगूला, स पु (हिं वाऊ+गोला) चक्रवात, वातावर्त्त वातभ्रम , धूल्चक्र, वात्या।
बगैर, अव्य (अ) विना, अन्तरा, अन्तरेण, विहाय, वर्जयित्वा, ऋते।
बग्घी, स स्त्री (अ बोगी) चतुश्चक्र सपञ्जर यानम्।
बघारना, क्रि स (स अवधारणम्) अवधृ (भ्वा प स , चु , जु प अ , भ्वा उ अ) व्यञ्जन तप्तघृतादिकेन सिच् (तु प अ)।
बघेला, स पु (हिं बाघ) व्याघ्र , मृगान्तक ।
बचत, स स्त्री (हिं बचना) लाभ , प्राप्ति (स्त्री) २ सञ्चय , सग्रह ३ सचित-रक्षित, अवशिष्ट धनम्।
बचना, क्रि अ (स वञ्चनम्>) रक्ष निर्मुच् (कर्म) २ अवशिष् (कर्म)।
बचपन, स पु (हिं बच्चा) बाल्य, कौमार, बालत्वम्।
बचाना, क्रि स (हिं बचना) परित्रै (भ्वा आ अ), रक्ष-गुप (भ्वा प से) २ अव शिष (प्रे) अचि (स्वा उ अ)।
बचाव स पु (पूर्व) रक्षा त्राण, उद्धार, गोपन ऊति (स्त्री)।
बख़्शीश, स स्त्री (फा शिश) दानम् २ पारितोषिकम्।
बच्चा, स पु (फ़ा बच्च) वत्स बाल , बालक, शिशु २ शाव शावक ३ अज्ञानिन्।
—दानी, स स्त्री , गर्भाशय गर्भकोष ।
बच्ची, स स्त्री (फा) वत्सा, बाला, बालिका।
बछड़ा स पु (स वत्स) गोवत्स , गोशावक , तर्ण ।
बछेड़ा स पु (हिं बच्छड़ा) बालाश्व , अश्व शावक ।
बजट, स पु (अ) आयव्ययिकम्, व्याकल्प ।
बजना, क्रि अ (स वदन>) क्वण् स्वन् (भ्वा प स), वाद् (कर्म)।
बजरंग, वि (स वज्राङ्ग) दृढावयव, अशनि कठोर।
—बली, स पु हनुमत्।
बजवाना, क्रि प्रे , व 'बजाना' के प्रे रूप।
बजा, वि (फा) युक्त, उचित। क्रि वि, सत्यम् ओम्।
बजाज, स पु (अ बज्जाज) वस्त्रविक्रेतृ।
बजाजा, स पु (फ़ा) वस्त्रहट्ट ।
बजाजी, स स्त्री (फ़ा) वस्त्रविक्रय २ वस्त्र निचय ।
बजाना, क्रि स (हिं बजना) वाद (चु), स्वन् ध्वन् (प्रे)। स पु, वादनम्।
बजानेवाला, स पु, वादक , वादयितृ।
बजाय, अव्य (फा) स्थाने, प्रतिनिधौ।
बज्र, स पु (स वज्र) ऐन्द्रास्त्र, अशनि, पवि ।
बट, स पु (स वट) जटिल, न्यग्रोध ।

बटखरा, स पु (स वटक >) दे 'बाट'।
बटन, स पु (अ) कुडुप, गण्ड ।
बटना, क्रि स (स वर्तनम्>) व्यावृत (प्रे), तन्तून् घूर्ण भ्रम (प्र) स पु, व्यावर्तन, तन्तु,घूर्णन भ्रामणम ।
बटमार, स पु (हिं बाट+मारना) पारिपन्थिक, लुण्ठक प्रतिरोधक ।
बटलोई, स स्त्री (हिं बटला) दे 'देगचा ।
बटवारा, स पु (हिं बॉटना) भूविभाग, भूमिव्यवहानम् २ धनविभाग, दायभाग ।
बटा, स पु (हिं बँटना) भिन्न अपूर्णाङ्क, राशिभाग प्रभाग ।
बटुआ, स पु (स वर्तुल>) मुद्रा नागव कोष ।
बटेर, स स्त्री (स वर्तका) वर्तक, वर्तनी, वातका ।
बटोरन, स स्त्री (हिं बटोरना) अवस्कर, निस्सारवस्तुसमूह उच्छिष्टम् ।
बटोरना, क्रि स (स वतुल>) सचि (स्वा उ अ) सग्रह् (क्र उ से) ।
बटोही, स प (हिं बाट) पान्थ, पथिक ।
बट्टा[1], स पु (स वार्त्ता>) दोष, कल्क ।
—खाता, स पु, अप्राप्यधनलेख ।
बट्टा, स पु (स वटक) पेषणपाषाण, कुट्टनप्रस्तर २ प्रस्तरादीना वर्तुलखण्ड ।
बड[1], स पु (स वट) दे 'बट'।
बड[2], वि (हिं 'बडा' से, समास के आरम्भ में ही) दे 'बडा'।
बडप्पन, स पु (हिं बडा) श्रेष्ठता, महत्ता, गौरवम् २ वयस्कता, प्रौढता ।
बडबड, स स्त्री (अनु) प्र,लाप ,व्यर्थवचनम्।
बडबडाना, क्रि अ (अनु बडबड) प्र,लप् (भ्वा प से) २ असन्तोषम् नीचै वद् (भ्वा प से)।
बडबोला, वि (हिं बडा+बोल) विकत्थन, विकत्थनशील।
बडभागी, वि (हिं बडा+भाग) महाभाग्य, सुकृत, भाग्यशालिन् ।
बडवा, सं स्त्री (स वडवा) घोटी, तुरगी २ बडवाग्नि ।
बडवानल, स पुं (सं वडवानल) वडवाग्नि, वडवामुख ।
बडा, (सं वृध>) आयत, विस्तृत, विशाल २ महत्, गुरु ३ वयोवृद्ध, अधिक वयस्क ४ उत्तम, श्रेष्ठ ५ अधिक, अतिमात्रिन्। स पु, धनाढ्य २ महापुरुष ।
बडाई, स स्त्री (हिं बडा) मान, गौरवम् । महत्ता, प्रतिष्ठा २ वृद्धता, गुरुत्वम् ।
बडी, स स्त्री (स वटी) वटिका, वैदल-हिंवा,वटिका ।
बढई, सं पु (स वर्धकि) तक्षक, तक्षन्, वर्धकिन्, त्वष्टृ, छाद ।
बढती, स स्त्री (हिं बढना) उन्नति वृद्धि (स्त्री), उपचय, उत्कर्ष ।
बढना, क्रि अ (स वर्द्धनम्) वृध् (भ्वा आ से), उपचि (कर्म), वृद्धि प्राप् (स्वा उ अ), एध् स्फाय आप्याय् (भ्वा आ से), वृह (भ्वा तु प स)। स पु, दे 'बढती'।
बढा हुआ, वि., उन्नत, वृद्ध, उपचित, स्फीत, पीन, आप्यान।
बढाना, क्रि स, व 'बढना' के धातुओं के प्रे रूप।
बढिया, वि (हिं बढना) महार्घ, बहुमूल्य २ उत्कृष्ट, गुणवत् ।
बणिक, सं पु (सं वणिज्) पण्याजीव, दे. 'बनिया'।
बतकही, स स्त्री (हिं बात+कहना) वार्तालाप २ विवाद ।
बतख, स स्त्री (अ बत) वटट, कादव, हसजातीय खगभेद ।
बतलाना, क्रि स (हिं बात) कथ-वर्ण (चु), आख्या (अ प अ), आवक्ष् (अ आ), निविद् (प्रे) २ बुध् ना (प्रे) ३ निर्दिश् (तु प अ), प्रदृश (प्रे)। स पुं, कथन, वर्णन, निवेदन, आवर्णन,बोधन, ज्ञापन,निर्देश, प्रदर्शनम्।
बतलाने योग्य, वि, कथनीय,वर्णनीय,आवेद्य।
—वाला, स पु आख्यातृ, कथक, वर्णयितृ २ बोधक, ज्ञापक ३ निर्देशक, प्रदर्शक ।
बतलाया हुआ, वि, कथित, वर्णित, आवेदित, बोधित, ज्ञापित ३ निर्दिष्ट, प्रदर्शित ।
बताना, क्रि स, दे 'बतलाना'।
बताशा, सं पु (हिं बताम) फेन मिष्टबुद्बुद, वाताश ।
बत्ती, स स्त्री (स वर्ति) वर्ती, वर्तिका, तैलिनी, शिखी २ दीप ।

बत्तीस, वि [स द्वात्रिंशत् (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सख्या तदंकौ (३२) च।
—वाँ, वि, द्वात्रिंशत्तम मीम, द्वा[illegible] शीशम्।
बत्तीसी, स स्त्री (हिं बत्तीस) द्वात्रिंशत्पदार्थ समूह २ मानवदन्तसमूह, दशनावलि (स्त्री)।
बथुआ, स पु (स वास्तुकम्) शाकराज, राजशाक, शाकश्रेष्ठ।
बद, वि, (फा) दुष्ट, पाप, खल, नीच।
—किस्मत, वि, मन्दभाग्य।
—चलन, वि, दुर्वृत्त, कुचरित।
—ज़बान, वि, कटुभाषिन्, दुर्भाषिन्।
—ज़ात, वि नीच, क्षुद्र, निकृष्ट।
—तमीज़, वि, अशिष्ट, असभ्य, ग्राम्य।
—नीयत, वि, वक्र दुराशय।
—परहेज़, वि, कुपथ्यसेविन्।
—परहेज़ी, स स्त्री, कुपथ्यम।
—बू, स स्त्री, दुर्गन्ध, दे।
—माश, वि, दुर्वृत्त, दुश्चरित्र।
—शक्ल, वि, कुरूप, दुर्दर्शन।
—हज़मी, स स्त्री, अजीर्ण, अग्निमान्द्य, अपाक।
बदन, स पु (फा) शरीर, देह, काय।
—टूटना, मु, अगसंधिषु-अवयवग्रंथिषु वेदनानुभव (ज्वरपूर्वरूपम)।
—में आग लगना, मु, अत्यन्त कुप् (दि प मे) क्रुध् (दि प अ)। २ अतीव सन्तप्त (वि) भू।
—साँचे में ढला होना, मु, लावण्य सौन्दर्य, अतिशय-अतिशय्यम्।
—सूख कर काँटा हो जाना, मु, अत्यर्थं कृश-क्षीण शुष्काग (वि) भू।
बदर, स पु (स) बदरी, बदरिका, बदर, बदरीफलम्।
बदलना, क्रि अ (अ बदल) स्थानान्तर रूपान्तर-अवस्थान्तर गम्, अन्यथा भू, विकृ (कर्म), परिवृत् (भ्वा आ से), विपर्यस (दि. प से)। क्रि स, परिवृत् (प्रे), अन्यथा कृ, विकृ, विपर्यस् (प्रे), विनिमे (भ्वा आ. अ)। सं पु, अवस्थान्तर रूपान्तर-स्थानान्तर, प्राप्ति (स्त्री.), परिवर्तन, विनिमय, विक्रिया, विपर्यास, परिवृत्ति, (स्त्री), विपरिणाम।
बदला, स पु (हिं बदलना) विनिमय, आदानप्रदानम् २ प्रतिशोध, प्रति(ती)कारः ३ परिणाम, फलम्।
बदलाना, क्रि स, दे 'बदलना' क्रि स।
बदली, सं स्त्री (हिं बदलना) परिवृत्ति (स्त्री), परिवर्तनम्।
बदावदी, स स्त्री (स वद्>) वैर, द्वेष, विरोध २ प्रतिस्पर्धा।
बदौलत, क्रि वि (फा) कृपया, अनुग्रहेण २ कारणेन साधनेन, द्वारा।
बद्ध, वि (स) नियन्त्रित, वशी-कृत भूत, सयत।
—कोष्ठ, स पु (स) मलावरोध, विड्ग्रह।
बधाई, सं स्त्री (स वर्द्धन>) वर्धापन, वृद्धि व [illegible]न, अभिनन्दनम्।
—देना, क्रि स, वर्धापन दा (जु उ अ)।
बधिया, स पु (हिं वध-मारन) नपुंसकः पशु, षण्डीकृत चतुष्पाद।
बधिर, वि (स) अकर्ण, एड, श्रोत्रविकल।
बधूटी, स स्त्री (स वधूटी), दे 'वधू'।
बन, स पु (स वनम्) अरण्य, कानन, कान्तार।
—चर, स पु, अरण्यवासिन्, आटविक।
—बास, स पु, वनवास, अरण्यवास।
बनजारा, स पु (हिं बनज) द्रव्यव्यवसायिन्, वाणिज्यजीविन् २ वणिज, दे 'बनिया'।
बनना, क्रि अ (स वर्णन>) निर्मा रच-विधा अनुष्ठा (कर्म)।
बना हुआ, वि निर्मित, रचित, विहित, कृत, सृष्ट, सम्पन्न, निष्पन्न।
बनमानुस, स पु (सं वनमानुष) वानर भेद २. असभ्यमानव।
बनवाई, स स्त्री (हिं बनवाना) निर्माण-भृति (स्त्री)-शुल्क।
बनवाना, क्रि प्रे, व 'बनाना' का प्रे रूप।
बनात, स स्त्री (हिं बाना) उत्तमौर्णपटभेद।
बनाना, क्रि स (हिं बनना) निर्मा (अ प अ, जु आ अ), रच् (चु), कृ, क्लृप-घट् (प्रे) २ जन् उत्पद् (प्रे) ३ सपद्-साध् (प्रे), अनुष्ठा (भ्वा प. अ.),

विधा (जु उ अ) ४ अव न्प हम (भ्वा प मे)। म पु, रचन करण, निमाण क प्. जनन, त्पादन, सपादन, अनुष्ठानम्।

बनाने योग्य, वि, निमातव्य रचनीय, घट नीय, विधेय, अनुष्ठेय, ननयितव्य।

—वाला, म पु, निमातृ, रचयितृ विधायक, जनयितृ, उत्पादक, अनुष्ठातृ।

बनाया हुआ, वि, निर्मित, रचित, कल्पित, विहित, जनित, उत्पादित, अनुष्ठित, सपादित।

बनारसी, वि (हि बनारस) काशीस्थ, वाराणसेय।

बनाव, स पु (हि बनाना) निमाण, रचना २ श्रृंगार, अलंकरणम्।

बनावट, स स्त्री (हि बनाना) रचना, रचनाकौशल, घटना २ आडंबर ३ कृत्रि मता।

बनावटी, वि, (हि बनावट) कृत्रिम, कृतक, अनैसर्गिक।

बनिया, स पु (सं वणिज्) नैगम, सार्थवाह, क्रयविक्रयिक, पण्याजीव २ आप णिक, विपणिन्।

बनिस्बत, अव्य (फा) अपेक्षया, तुलनायाम् २ उद्दिश्य, अधिकृत्य।

बबर, स पु (फ़ा) केसरिन्, हरि, सिंह।

बबूल, स पु (स बर्बुर) कण्टालु, तीक्ष्ण कटक, स्वण५ष्प, युग्मकटक, कफान्तक।

बम, सं पु (अ बाव) अग्निगोलकास्त्रम।

बया, स पु (स वयनम्>) वय, खगभेद।

बयान, स पु (फा) वर्णनं, कथनम् २ वृत्तान्त, उदन्त।

बयाना, स पु (अ बै) दे 'पेशगी'।

बयार, स स्त्री (स वायु) पवन, वात।

बयालीस, वि [स द्वि(द्वा)चत्वारिंशत् (नित्य स्त्री)]। स पु, उक्ता संख्या, तदकौ (४२ च।

—वाँ, वि, द्वि(द्वा)चत्वारिंशत्तम मी मम्, द्वि(द्वा)चत्वारिंश शी शम्।

बयासी, वि [सं द्वयशीति (नित्य स्त्री)] सं पुं, उक्ता संख्या, तदकौ (८२) च।

बरकत, सं स्त्री (अ) सम्पत्ति-समृद्धि विभूति (स्त्री)।

बरखास्त, वि, (फा) विसृष्ट, विसर्जित २ पदच्युत, भ्रष्टाधिकार।

—करना, क्रि स, विसृज् (तु प अ) २ पदात् च्यु (प्रे)।

बरगद, स पु, दे 'बड़'।

बरछा, स पु (स भ्रश) कुन्त, प्रास, शक्ति (स्त्री)।

बरजोर, वि (सं बल+फा जोर) बलवत्, शक्तिशालिन्। क्रि वि, बलात्, हठात्।

बरतन, स पु (स वर्तन>) पात्र, भाजनं, भाण्डम्।

बरतना, क्रि अ (स वर्तनम्) व्यवहृ (भ्वा प अ), आचर् (भ्वा प से)। क्रि स, उपयुज् (प्रे), व्याप्त (प्रे)।

बरताना, क्रि स (स वितरणम्) वितृ (भ्वा प से), विभज (भ्वा उ अ)। स पु, विभाजन, वितरणम्।

बरताव, स पु (हिं बर्तना) व्यवहार, आचरणं, वृत्ति (स्त्री)।

बरदार, वि (फा) वोढृ धारयितृ।

बरदाश्त, स स्त्री (फ़ा) सहन, मर्षण, सहिष्णुता।

—करना, क्रि अ, मृष् (भ्वा आ से)।

बरफ, स स्त्री (फा बर्फ) हिम, घनवारि (न)।

बरफी, स स्त्री (हिं बरफ) *हैमी, पायस-मिष्टान्नभेद, मिष्टान्नभेद।

बरबस, नि वि (सं बल+वश>) हठात्, बलात् २ मुधा, व्यर्थम् (चारों अव्य)।

बरबाद, वि (फा) नष्ट, ध्वस्त।

बरमा, स पु (देश) वेधनी, तक्षोप-करणभेद।

बरमा, सं पु (सं) ब्रह्मदेश।

बरमी, स पु (हिं बरमा) ब्रह्मदेशवासिन्। सं स्त्री, ब्रह्मदेशभाषा।

बरवा, सं पु (देश) एकोनविंशतिमात्रात्मक-छन्दोभेद, भुजंगप्रयात, छन्दस् (न)।

बरस, स पु, (सं वर्ष) वत्सर, संवत्सर, अब्द।

—गाँठ, सं स्त्री, वर्षग्रन्थि, जन्म दिनं दिवस।

बरसना, क्रि अ (स वर्षणं) वृष् (भ्वा प. से)। सं पुं, वृष्टि (स्त्री), वर्षणम्।

बरसात, वि (हिं बरसना) वर्षा (स्त्री बहु) मयूरम, प्रावृष (स्त्री) वर्षाकाल ।
बरसाती, स स्त्री (हिं बरसात) वर्षत्र, वृष्टिवारिणी ।
बरसी, स स्त्री (हिं बरस) वार्षिक श्राद्ध, वार्षिकी मृत्युदिवस ।
बराडा, स पु (अ बेरान्डा) प्रघ(घा)ण, अलिंद, विण्क ।
बराडी, स स्त्री (अ) सुरासार, *मनीवनी सुरा।
बरात, स स्त्री (स वरयात्रा) विवाहयात्रा, २ प्रमोद ।
बराती, स पु (हिं बरात) वरयात्रिक ।
बराबर, वि (फा बर) सम, समान, तुल्य ।
बराबरी, स स्त्री (हिं बराबर) समानता, साम्यम् ।
बरामद, वि (फा) बहिरागत २ लब्ध ।
बरामदा, स पु (फा) दे 'बराडा' ।
बरी, वि (फा) मुक्त, विमोचित ।
बरोठा, स पु (स द्वारम्>) देहली-लि (स्त्री)।
बर(रौ)नी, स स्त्री (स वरण>) पक्ष्मन्, वल्गु (दोनों न)।
बरताव, स पु, दे 'बरताव' ।
बर्फ, स स्त्री, दे 'बरफ' ।
बर्बर, वि (स) नृशस, निर्दय २ असभ्य, अशिष्ट ।
बलन्द, वि (फा) उच्च, तुग ।
बल, स पु (स न) सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री) २ पराक्रम, शौर्यम ३ सेना ४ बलदेव ।
बलगम, स स्त्री (अ) श्लेष्मन्, कफ, श्लेष्म, बलास ।
बलवा, स पु (फा) मक्षोभ, समद २ राजाभिद्रोह प्रजाक्षोभ ।
बलवान्, वि (स-वत्) बलिन्, बलशालिन्, मन्त्र-बल वीर ।
बलहीन, वि (स) निर्बल, दुर्बल, अबल, अशक्त ।
बला, स स्त्री (अ) आपत्ति विपत्ति (स्त्री) २ दुख, कष्टम ३ प्रेतबाधा ४ रोग ।
बलात्, क्रि वि (स) हठात, सरभसम ।
बलात्कार, स पु (स) साहस, प्रमथ २ हठभोग, प्रमह्यगमनं, धर्षणम्, दूषणम् ।
बलि, स स्त्री (स पु) राजस्व कर शुल्क २ उपहार, उपायनम् ३ पूजा, सामग्री ४ वरण ४ बलिवैश्वदेवयज्ञ ५ देवभोज्य ६ भक्ष्य, अन्नम् ७ नैवेद्यम् ८ देवनार्थ हत पशु ९ हव्य, आहुति (स्त्री)।
—चढाना, मु, देवतार्थं हन् (अ प अ)।
—जाना, मु, दे 'बलिहारी जाना' ।
बलिदान, स पु (स न) उत्सर्ग, परित्याग, विनियोग, समर्पणम् ।
बलिष्ठ, वि (स) बलवत्तम, शक्तिमत्तम । स पु, उष्ट्र ।
बलिहारी, स स्त्री (स बलिहार>) आत्मो त्सर्ग, आत्मसमर्पण, आत्मनिवेदनम् ।
—जाना, मु, आत्मान समर्प (प्रे) उत्सृज (तु प अ)।
बली, वि (स-लिन्) सबल, बलवत्, बलशक्ति, शालिन्, महाबल, वीर ।
बल्कि, अव्य (फा) प्रत्युत, अपि तु, अपि ।
बल्लम, स पु (स बल=शाखा>) यष्टि (स्त्री), दड, लगुड २ सुवर्ण-रजत-दड ३ कुन्त, प्रास ।
बल्लमटेर, स पु (अ वालन्टियर) स्वयसेवक ।
बल्ला, स पु (स बल=शाखा>) लगुड, २ स्थूलदड ३ नौकादड ४ कन्दुकक्रीडापट्ट ।
बवडर, स पु (स वायुमण्डल>) चक्रवात, वातावर्त, वातभ्रम २ वात्या, झझावात ।
बवासीर, स स्त्री (अ) अर्शस (न), गुदाकुर, गुदकीलक, दुर्नामकम् । (खूनी) रक्तार्शस् (बादी) वात-शुष्क-अर्शस् (न)।
बसत, स पु (स) वसन्त दे ।
—पञ्चमी, स स्त्री, श्रीपचमी, माघशुक्ल पचमी ।
बस, अव्य, वि (फा) अल, पर्याप्त २ वश, अधिकार ३ केवलम् ।
बसना, क्रि अ (स वसन>) नि अधि-प्रति नि, वस (भ्वा प अ) स्था (भ्वा प अ) २ अधिवस, आधष्ठा । स पु अधि-प्रति नि-वस -वसन-वसति (स्त्री)।
बसने योग्य, वि, वासोचित ।
—वाला, स पु, अधि नि-वासिन् ।
बसा हुआ, वि, अध्युषित, अधिष्ठित ।
मन में—, मु, सदा स्मृ (कर्म)।

बसना², क्रि अ (हिं बास=गंध) सुगंधित (वि) भू।
बसर, स पु (फा) निर्वाह, कालयापनम्।
बसाना, क्रि स (हिं बसना) अधिवस्–निवस (प्रे)।
बसूला, स पु (स वासि पु स्त्री) तक्षणी।
बसेरा, स पु (हिं बसना) आवास, निवास २ वास, वसति (स्त्री)।
बस्ता स पु (फा नह्) पोट्टलिका, कूर्च।
बस्ती, स स्त्री (स बसति) निवास २ ग्राम, ग्रामटिका।
बहँगी, स स्त्री (स विहंगिका) वेणुशिक्या, स्कंधवाहनी।
—का छींका, स पु, विहंगिकाशिक्या।
बहकना, क्रि, अ (हिं बहना) अनिमधा, (वर्ग), वच्(कम) २ पथभ्रष्ट (वि) भू ३ लक्ष्यभ्रष्ट (वि) भू ४ मद् (दि प से)।
बहकाना, क्रि स (हिं) 'बहकना' के प्रे रूप बनाएँ।
बहत्तर, वि [सं द्विसप्तति (नित्य स्त्री)] सं पु, उक्ता संख्या, तदंकौ (७२) च।
—वां, वि, द्विसप्ततितम -मी मं, द्विसप्ततितम्।
बहन, स स्त्री (सं भगिनी) दे 'बहिन'।
बहना, क्रि अ (सं वहनम्) वह् (भ्वा उ अ), क्षर् (भ्वा प से), स्रु (भ्वा प अ)। स पु, वहनं, क्षरणं, सरणं, स्राव, स्रुति (स्त्री)।
बहनापा, स पु (हिं बहन) स्वसृत्व, भगिनीत्वम्।
बहनोई, सं पु (हिं बहन) आवुत्त, नशिक, स्वसृपति, भगिनीभर्तृ।
बहनौता, स पु, दे 'भाँजा'।
बहरा, वि पु (सं बधिर) एड, अकर्ण, अश्रोत्र।
बहलना, क्रि अ (हिं बहलाना) चित्त विनोद नन्द् (दि आ मे)।
बहलाना, क्रि स (फ़ा बहाल) चित्तं रञ् विनुद् नन्द् (प्रे)।
बहलाव, सं पु (हिं बहलना) विनोद, मनोरंजनम्।
बहली, सं स्त्री (सं वहल=बैल>) रथ सदृशी वृषशकटी।
बहस, स स्त्री (अ) वाद, वादप्रतिवाद, ऊहापोह, प्रश्नोत्तरम्।
—करना, क्रि अ, वादप्रतिवादं कृ, विवद् (भ्वा आ से)।
बहादुर, वि (फ़ा) शूर, वीर, बलिष्ठ, पराक्रमिन्।
बहादुरी, सं स्त्री (फा) वीरत्व, शूरता, पराक्रम।
बहाना¹, क्रि स, व 'बहना' के प्रे रूप।
बहाना², स पु (फा नह्) मिष, व्याज छलम्।
—करना, क्रि अ, व्यपदिश् (तु प अ)।
बहार, स स्त्री (फा) शोभा, श्री (स्त्री), दर्शनीयता २ मधुमास वसन्त ३ मनो विनोद।
बहाल, वि (फा) पूर्ववत् स्थित, पदारूढ २ स्वस्थ ३ प्रसन्न।
बहाव, स पु (हिं बहना) प्रवाह, स्राव २ धारा, मन्दाक स्रोतस् (न)।
बहिन, स स्त्री (स भगिनी) सोदरा, सहोदरा, स्वसृ, जामि (स्त्री)।
छोटी—, अनुजा, बड़ी—, अग्रजा, अंबिका।
बहिरंग, वि (स) बाह्य, बहिर्भव, बहिस्थित।
बहिश्त, सं पु (फा बिहिश्त) स्वर्ग, नाक। २ सुखावास।
बहिष्कार, सं पु (सं) अपसारण २ निष्कासनम्, विवासनम्।
बहिष्कृत, वि (स) अपसारित २ विवासित, निष्कासित।
बही, स स्त्री (हिं बँधी ?) आयव्यय, पञ्जि (स्त्री)।
बहु, वि (सं) अधिक, अनेक २ प्रचुर, बहुल।
—क्षीरा, सं स्त्री (सं) बहुलप्रचुर, दुग्धा स्तन्या गौ (स्त्री)।
—गंधा, सं स्त्री (सं) १ यूथी, यूथिका, हेमयूथिका, स्वर्णप्रभा। २ चंपक कलिका बीजक ३ कृष्णजीरक।
—गुण, वि (सं) प्रचुर गुण २ प्रचुर विशेष।
—जल्प, वि (सं) वाचाल, मुखर, जल्प (पा)क।

बहुकर, स स्त्री (स बहुकरी) समार्जनी, शोधनी। वि, परिश्रमिन्।
बहुत, वि (सं बहुतर) असरय २ यथेष्ट, पर्याप्त ३ प्रचुर, विपुल, भूरि।
बहुतायत, स स्त्री (हि बहुत) अतिशय, आधिक्यम् २ पर्याप्तता।
बहुधा, क्रि वि (स) प्राय, प्रायश (दोनों अव्य) २, बहुप्रकारं।
बहुभाषी, वि (स षिन्) वाचाल।
बहुमूल्य, वि (स) महार्घ, दुष्क्रय।
बहुरंगा, वि (म-न) चित्रविचित्र, अनेकवर्ण २ बहुवेश ३ चलचित्त।
बहुरूपिया, वि (म बहुरूप>) वशानाविन्, बहुरूपक।
बहू, स स्त्री (स वधू) वधूटी, नवोढा, नववधू।
बहेडा, स पु (स विभीतक) कलिद्रुम, भूतवास।
बाँका, वि पु (स वक्र>) तिर्यञ्च, वक्र, कुटिल, २ सुंदर, मनोहर ३ वेशमानिन्, रूपगावत।
बाँग, स स्त्री (फ़ा) प्रात कुक्कुटनाद २ यवनपुरोहितस्य पूजासमयसूचकमहानाद।
बाँझ, स स्त्री (स वध्या द)।
बाँटना, क्रि स (वटनम्) विभज् (भ्वा उ अ), अंश्-वट् (चु), परिक्लृप् (प्रे), यथाभाग वितॄ (भ्वा प से)। स पु, अंशन, वटन, परिकल्पन, विभाजन, वितरणम।
बाँटन योग्य, वि, अंशनीय, वटनीय, विभाज्य।
—वाला, स पु, विभाजक, अंशयितृ।
बाँटा हुआ, वि, विभक्त, विभाजित, वटित।
बाँदी, स स्त्री (फा बदा) दासी, सविका, परिचारिका।
बाँध, स पु (हि बाँधना) बन्ध, सेतु।
बाँधना, क्रि स (स बन्धनम्) बध् (क्र् प अ), स नि-यम् (भ्वा प अ), पिनह् (दि प अ), ग्रथ् (क्र प स, भ्वा आ से, चु)। स पु, बधनम्, स नि-यमन, पिनाह, ग्र(ग्र)थनम्।
बाँधा हुआ, वि, बद्ध, नियत, सयत, पिनद्ध, ग्रथित।

बांधव, स पु (स) अशर, दायाद, सगोत्र, सकुल्य, ज्ञाति।
बांधव्य, स पु (स न) सगोत्रता, रक्त सम्बन्ध, बन्धुता, बन्धुत्वम।
बाँबी, बाँमी, स स्त्री (सं वल्मीक>) वल्मीक वामलूर वम्री,-कूट शैल। २ सर्प अहि, विवर बिलम।
बाँस, स पु (स वंश) वेणु, तृणध्वज, वेणु, कीचक, त्वक्सार, मृत्युपुष्प।
—पर चढना, मु, अपकीर्ति-दुष्कीर्ति-वाच्यताम् लभ (भ्वा आ अ)।
—पर, चढाना, मु, कुख्याति गपकीर्ति कृ।
—बराबर, मु, अति-दीर्घ आयत-त्व।
—(सो) उछलना, मु, अत्यर्थं मुद् (भ्वा आ से)।
बाँह, स स्त्री (स बाहु पु) भुज-जा।
बाइसिकिल, स स्त्री (अ साइकल) द्विचक्रिका, पादयानम्।
बाई[1], स स्त्री (स वायु) वात, दोष रोग।
बाई[2], स स्त्री (हि बाबा) कुलवधूनामादर सूचक शब्द, देवी २ वेश्या।
बाईस, वि (स द्वाविंशति नित्य स्त्री)। स पु., उक्ता संख्या, तदकौ (२२) च।
—वाँ, वि, द्वाविंशतितम-मी म, द्वाविंश शी शम्।
बाएँ, क्रि वि (हिं बायाँ) वामत, वाम सव्य, पार्श्वे।
बाकी, वि (अ) अवशिष्ट, उद्वृत्त। स पु, अव, शेष।
बाग, स पु (अ) उपवन, उद्यानम्, आराम।
बाग, स स्त्री (स वल्गा) अभीशु, प्रग्रह, रश्मि।
बागडोर, स स्त्री (स वल्गा+डोर) दे 'बाग' २ प्रभुत्व, अधिकार।
बागवान, स पु (फ़ा) मालाकार, मालिक, उद्यानपाल।
बागी, वि (अ) विद्रोहिन, राजद्रोहिन्।
बागीचा, स पु (फ़ा बागचह्) कुसुमोद्यान, पुष्प, वाटिका।
बाघ, स पु (स व्याघ्र) चुतुरु, भेल, चन्द्रकिन, हिंसारु, व्याड, मृगान्तक।

—शाही, स स्त्री, मधुमण्ठ ।

बाल्य, स पु (सं म) दे बचपन'।

बावजूद, क्रि वि (फा) एव सत्यपि, इति स्थितेऽपि।

बावन, वि [स द्वापञ्चाशत् (नित्य स्त्री)]। सं पु, उक्ता सख्या, तदकी (५२) च।

—वाँ, वि, द्वि (द्वा) पञ्चाशत्तम मी-मम्।

बावरची, सं पु (फा) सूद, पाचक ।

बावला, वि (स वातुल) विक्षिप्त, उन्मत्त २ मूर्ख।

बावली, स स्त्री (स वापी) वापिका, सोपानकूप ।

बाशिंदा, स पु (फा) नि-वासिन, वास्तव्य ।

बास, सं स्त्री (स वास) सुगन्ध, सुवास, परिमल, सौरभ २ दुर्गंध, पूतिगंध ।

बासठ, वि [स द्विषष्टि (नित्य स्त्री)]। स पु उक्ता संख्या, तदकौ (६२) च।

—वाँ, वि., द्वि(द्वा)षष्टितम मी-म, द्वि(द्वा)षष्टीष्टम्।

बासन, स पु (सं वासनम्) दे 'बरतन'।

बासमती, स पु (स वासमती) वाम वद्व्रीहि ।

बासी, वि (स वासिन्) निवासिन्, वास्तव्य २ शुष्क, म्लान, पर्युषित, व्युष्ट।

बाहर, क्रि वि (स बहिस) बाह्यत, बहिर्भवनम्।

बाहरी, वि (हिं बाहर) बाह्य, बहिःस्थ, बहिर्भव, बहिर्वर्तिन, बहिस ।

बाहु, स स्त्री (स पु) दे बाँह'।

बाहुल्य, स पु (सं न) दे 'बहुतायत'।

बिंदा, स स्त्री (सं बिन्दु) ललाटे रक्तवर्ण बिन्दु २ अंक, चिह्नम् ३ तिलक-क, चित्रकम्।

बिंदु, स पु (स) कण, लव, पृषत २ दे 'बिंदी' १ २ ३ भ्रूमध्यम्।

बिंब, सं पु (स पुं न) प्रतिच्छाया, प्रतिबिंब-कृति (स्त्री) २ सूर्यचन्द्र-मण्डल ३ बिंबफलम्।

बिकना, क्रि अ (स विक्रयण) विक्री (कर्म)।

बिकवाना, क्रि प्रे (हिं बिकना) विक्री (प्रे, विक्रापयति)।

बिकाऊ, वि (हिं बिकना) विक्रेय, पण्य, विक्रयणीय।

बिक्री, स स्त्री (स विक्री) पणन, विक्रय, विक्रयणम्।

बिखरना, क्रि अ (स विकिरणम्) विकॄ (कर्म) २ प्रसृ (भ्वा प अ)।

बिखरा(खेर)ना, क्रि स (स विकिरणम्) अव विकॄ (तु प स), अस्तृ (क्र प स), विक्षिप् (तु प अ)। स पु भाव अव वि, किरण, विक्षेप, आस्तरणम्।

बिगड़ना, क्रि अ (सं विकरणम्) विकृ (कर्म), दुष् (दि प अ), क्षि (कर्म), दुर्दशा प्राप (स्वा प अ) २ उन्मार्ग गम्, सुपथभ्रष्ट (वि) भू ३ कुप (दि प से) ४ दुर्दान्त (वि) जन् (दि आ से)।

बिगड़ा हुआ, वि, विकृत, दूषित, क्षीण, २ दुर्नीति ३ दुर्दान्त।

बिगाड़ना, क्रि स (हिं बिगड़ना) दुष (प्रे) आविलयति मलिनयति कलुषयति (ना धा) २ सन्मार्गात् भ्रंश (प्रे) ३ अत्यन्त लल् (चु)।

बिगुल, सं पु (अ) काहल-ला।

बिचकाना, क्रि अ (अनु) मुख विरूप् (चु) आननं वक्रीकृ।

बिचला, वि (हि बीच) मध्यम, मध्यवर्तिन।

बिचवई, स पु (हिं बीच) प्रमाणपुरुष, निर्णेतृ, मध्यस्थ, मध्य वर्तिन्-स्थायिन्, सहायक। सं स्त्री, मध्यस्थता, माध्यस्थ्यम्, निर्णायकत्वम्।

बिच्छू, सं पुं (स वृश्चिक) आलि, आलिन्, द्रुण ।

बिछु(छु)ड़ना, क्रि अ (सं विच्युत्>)वियुज् विरह (कर्म), विघट (भ्वा आ से), विश्लिष् (दि प अ), पृथक् भू। स पुं, दे 'बिछोहा'।

बिछाना, क्रि स (स विस्तरणम्) आ वि स्तॄ (क्र उ से), आ वि, तन् (त उ से), प्रसृ (प्रे)। स पु, आ वि, स्तार, प्रस्तार, प्रसारणम्।

बिछावन, सं पु दे 'बिछौना'।

बिछिया, स स्त्री (हि बिच्छू) पादांगुलीभूषणम्।

बिछुआ (वा), सं पु (हि बिच्छू) दे 'बिछिया' २ कटारभेद ।

बीभत्स, वि (स) घृणावह कुत्सित २ क्रूर ३ पापिन् ४ भयावह।
बीभत्सा, स स्त्री (स) जुगुप्सा घृणा।
बीम¹, स पु (अ) दे 'शहतीर'।
बीम² (फा) भय सकटम्।
बीमा, स पु (फा बाम-भय>) सभाव्य हानेः रक्षणम् २ सभा यहानिपूरक शुल्कम्।
बीमार, वि (फा) रोगिन् रुग्ण।
बीमारी, स स्त्री (फा) रोग, व्याधि।
बीस, वि [स विंशति (नित्य स्त्री)]। स पु उक्ता सख्या तदङ्की (२०) च।
—वॉ, वि, विंशतितम मी म, विंश शी शम।
बीहड, वि (स विकट) निविड, दुर्गम २ विषम, नतोन्नत।
बुंदा, स पु (स बिन्दु>) कर्णाभरणभेद, लोलकम्।
बुकचा, स पु (तु च) पोट्टलीलिका, कूर्च-र्चम, भार।
बुकनी, स स्त्री (हिं बूकना-पीसना) चूर्ण, क्षोद।
बुखार, स पु (अ) ज्वर ताप।
—पुराना, स पु, जीर्णज्वर।
बुज़दिल, वि (फा) भीरु, त्रस्नु, कातर, निस्साहस।
बुजुर्ग, वि (फा) वृद्ध, स्थविर। स पु, पूर्वज, वशकर, गुरु।
बुझना, क्रि अ (देश) शम् (दि प से), निर्वापित (वि) भू २ शीतो भू ३ उत्साही नश् (दि प वे)।
बुझाना, क्रि स (हिं बुझना) निर्वा (प्रे), ज्वाला शम् (प्रे) २ शीती कृ ३ उत्साह नश (प्रे)। स पु निर्वाप अग्निशमनम्।
बुझारत, स स्त्री (हिं बूझना) प्रहेलिका, कूटप्रश्न।
बुडबुडाना, क्रि अ (अनु) जल्प् (भ्वा प से)।
बुड्ढा, वि पु (...) दे 'बूढा'।
बुढापा, स पु (हिं बूढा) वार्धक्य, जरा ज्यानि (स्त्री), स्थाविर्य।
बुत, स पु (फा) मूर्ति, प्रतिकृति (स्त्री), प्रतिमा।
—परस्त, वि, मूर्ति प्रतिमा, पूजक।
बुदबुद, स पु, दे 'बुल्बुला'। (स बुद्बुद) स प (अनु) फेन, जलविकार (तद्रूप विकार), अम्बुस्फोट। २ गर्भस्थानयवविशेष।
बुद्ध, वि (स) ज्ञानवत् ज्ञानत् २ बुद्धदेव, सुगत, सर्वार्थसिद्ध मुनीन्द्र।
बुद्धि, स स्त्री (स) धी मति (स्त्री), पण्डा प्रज्ञा मनीषा धिषणा, धिषणा, बुधा, मेधा।
—मान्, वि (स मत्) धीमत्, प्राज्ञ, बुध, मनीषिन् पण्डित, मेधावित्, विचक्षण, विदग्ध विवेकिन्, चतुर।
बुध, स पु (स) बुधवासर २ चन्द्रसुत, चतुर्थग्रह ३ ज्ञानिन् पण्डित ४ देव।
बुनना, क्रि स (स वयनम्) वे वप् (भ्वा उ अ)। स पु भाव, वयन, वयन, वस्त्रनिर्माणम्।
बुनने योग्य, वि वयनार्ह, वपनीय, वानय्य।
—वाला, स पु, तन्तुवाय, तन्तुवाप, कुविंद, पटकार।
बुना हुआ, वि, उत, ऊत।
बुनियाद, स स्त्री (फा) वस्तु, वास्तु (न), गृहमूल, पीठ, भित्तिमूलम् २ यथार्थता।
बुरका, स पु (अ) अवरणम्।
बुरा, वि (स विरूप>) दूषित दुष्ट, निकृष्ट, मद, २ निर्गुण, अशुभ ३ गर्ह्य, कुत्सित ४ खल, दुर्वृत्त।
बुराई, स स्त्री (हिं बुरा) दुष्टता, नीचता, निकृष्टता, दुर्वृत्त, खलत्वम्।
बुरादा, स पु (फा) काष्ठचूर्ण, दारुक्षोद।
बुरुश, स पु (अ ब्रश) आघर्षणी, लोममयी मार्जनी २ तूलिका, वर्तिका।
बुर्ज, स पु (अ) प्राचीर, शिखर शृङ्गम।
बुलबुल, स स्त्री (फा) प्रियगीत, ... मनमद।
बुलबुला, स पु (स बुद्बुद>) जल विकार, फेन द बुद्बुद।
बुलाना, क्रि स (देश) आह्वे (भ्वा प अ), आहूय, ... (... प से) ... (तु) स पु ... अह्वान, ... न, समाह्वानम्।
बुलावा, स पु (हिं बुलाना) दे बुलाना' स पु।
बुलेटिन, स स्त्री (अ) राजकीयपत्रिका, २ राजकीय आधिकारिक विज्ञप्ति (स्त्री)।

बुप, बुस, स पु (स बुसन्) बुसन, तुप स २ गुन्तो,मयमल पुरीष विण।
बुहारना, क्रि स (स बहुकरो>) समूहन (अ प द), शुध् (प्र०)।
बुहारी, स स्त्री (हिं बुहारना) शोधनी, दे 'बहुकर'।
बूँद, स स्त्री (स बिंदु) कण, लव, पृषत, पृषद् (न) विप्रुष (स्त्री) द्रप्स।
बूँदा-बाँदी, स स्त्री (हिं बूँद+अनु) मन्द वृष्टि (स्त्री) शीकरवर्ष।
बूँदी, स स्त्री (हिं बूँद) बिन्दव (पु बहु), मिष्टान्नभेद २ वृष्टिजलबिंदु।
बू, स स्त्री (फ़ा) गंध, वास २ दुर्गन्ध।
—उड़ना या फैलना, मु, दुरयान-अपरयान (वि) भू।
बूआ, स स्त्री (देश) पितृष्वसृ (स्त्री), पितृभगिनी २ अग्रजा।
बूचड़, स पु (अ बुचर) शौ(सौ)निक, मांसिक, र्पाटिक, कौटिक।
—खाना, स पु, सूना, शूना।
बूझ, स स्त्री (स बुद्धि) बोध, ज्ञान, विवेक २ प्रहेलिका।
बूझना, क्रि अ (हिं बूझ) ज्ञा (क्र उ अ), बुध् (भ्वा उ से) २ प्रच्छ् (तु प अ)।
बूट, स पु (अ) उपानह (स्त्री), पत्रद्रुमी।
बूटा, स पु (स विटप) वृक्षक, बालवृक्ष, लता, ओषधि (स्त्री) २ बड़ा, बड़ापरपरा।
बूटी, स स्त्री (हिं बूटा) ओषधि (स्त्री), काष्ठौषधम २ भाग ३ वस्त्रस्था पत्रपुष्परचना।
बूड़ना, क्रि अ, दे 'डूबना'।
बूढ़ा, स पु (स वृद्ध) नरठ, स्थविर, पलित, नरित। वि, जरठ, नरितन्न, ज्यान, जीर्ण, वयस्क, प्रवयस्, वृद्ध, स्थविर, पलित।
—होना, क्रि अ, जॄ (दि क्र् प से), ज्या (क्र् प अ), परिणम् (भ्वा प अ), वृद्ध (वि) भू।
—पन, स पु, जरा, परिणति ज्यानि जीर्णि (स्त्री), वार्धक्य, वृद्धावस्था।
बूढ़ी, स स्त्री (हिं बूढ़ा) वृद्धा, जरती, स्थविरा, पलिता, पलिक्नी। वि, व 'बूढ़ा' वि के स्त्री रूप।
बूता, स पु (स वित्त>) बल, शक्ति (स्त्री)।
बूरा, स पु (हिं भूरा) शर्करा २ सुपिष्ट, शुभ्रा ३ चूर्ण, क्षोद ४ काष्ठचूर्ण।
बृहत्, वि (स) विशाल महत् २ दृढ, दीर्घ ३ पर्याप्त ४ उच्च (स्वर हि)।
बृहस्पति, स पु (स) देवताविशेष, सुरगुरु, वाचस्पति, गीष्पति (पु न) २ मंगलस्थ पंचमो ग्रह।
—वार, स पु (स) गुरु-वार-वासर।
बेंच, स स्त्री (अ) (काष्ठादिनिर्मित) आसन, २ धर्म-व्यवहार-आसन ३ अधिकारिणो धर्माध्यक्षा (पु बहु)।
बेंत, स पु (स वेत्र) वेतस, वानीर, वञ्जुल, नीरप्रिय, अभ्रपुष्प। २ वेत्र-वेतस-दण्ड यष्टि (स्त्री)।
बेंदी, स स्त्री (स बिंदु) वर्तुलचिह्न २ तिलक-क ३ शून्य, खम्।
बे,[1] अव्य (स है) अरे, रे, अयि।
बे,[2] अव्य (फ़ा, मि स वि) अ, अन्, वि, निर्, रहित, वाचक-अतिरिक्त-वर्जित।
—अक़्ल, वि (फ़ा+अ) निर्बुद्धि, मूर्ख।
—अक़्ली, स स्त्री, निर्बुद्धता, मौर्ख्य्।
—अदब, वि (फ़ा+अ) अविनीत, धृष्ट।
—अदबी, स स्त्री, धृष्टता, वैयात्यम्।
—आबरू, वि (फ़ा) निराकृत अवधीरित, सम्मानरहित।
—आबरूई, स स्त्री, अवधीरणा, अवज्ञा, अपमान।
—इंतिहा, स पु (फ़ा+अ) अनन्त, असीम।
—इन्साफ़, वि (फ़ा+अ) अन्यायिन्, अधार्मिक।
—इन्साफ़ी, स स्त्री, अन्याय, अधर्म।
—इज़्ज़त, वि (फ़ा+अ) दे 'बेआबरू'।
—इज़्ज़ती, स स्त्री, दे 'बेआबरूई'।
—इल्म, वि (फ़ा+अ) अविद्य, निरक्षर।
—ईमान, वि (फ़ा+अ) कुटिल, निन्द्य, धन-न्याय, विमुख, कपटिन्, वंचक, शठ।
—ईमानी, स स्त्री, कुटिलता, वंचना, अधर्म।
—औलाद, वि (फ़ा+अ) निरपत्य, निस्सन्तान।
—क़दर, वि (फ़ा) दे 'बेआबरू'।
—क़दरी, स स्त्री (फ़ा) दे 'बेआबरूई'।
—क़रार, वि (फ़ा) अशान्त, विकल, व्याकुल।
—क़रारी, स स्त्री (फ़ा) अशान्ति (स्त्री), व्याकुलता।

—कल, वि , आकुल, व्याकुल, अशान्त ।
—कली, स स्त्री , आकुलता व्याकुलता अशान्ति (स्त्री) अधीरता ।
—कस, वि (फ) निस्सहाय २ दरिद्र ३ अनाथ मातृपितृहीन ।
—कसी, स स्त्री , दैन्यम्, विवशता, दीनता ।
—कानूनी, वि , अवैध, विधि नियम, विरुद्ध विपरीत ।
—क़ाबू, वि (फा +अ) मर्यादाशून्य, निरंश २ अदम्य, अवश्य ।
—काम, वि (फ +हिं) वृत्तिहीन, व्यवसाय शून्य २ व्यर्थ, निरर्थक ।
—क़ायदा, वि (फा +अ) नियमविरुद्ध, अवैध अनियमित ।
—कार, वि (फा) दे 'बेकाम' (१-२) । क्रि वि , व्यर्थ निष्प्रयोजनम् ।
—कारी, स स्त्री नियोगाभाव , वृत्तिराहित्यम् ।
—क़ुसूर, वि (फा +अ) निरपराध, निर्दोष ।
—खटके, क्रि वि (फा +हिं) नि सकोच, नि शक, निर्भयम् ।
—ख़बर, वि (फ) अज्ञ, अपरिचित २ मूर्च्छित, नि सज्ञ ।
—ख़बरी, स स्त्री , अज्ञता, प्रमाद २ मूर्च्छा, मादः, मत्तता ।
—खौफ़, वि (फा) निर्भय, त्रासहीन ।
—गरज़, वि (फ +अ) निरपेक्ष निश्चिन्त ।
—गुनाह, वि (फा) निष्पाप २ निरपराध ।
—चैन, वि (फ) विकल, अशान्त २ विनिद्र ।
—चैनी, स स्त्री व्याकुलता २ विनिद्रता ।
—छद, स पु (हिं +स छदस) अत्यानु प्रासहीन छन्दस (न) अमित्राक्षर वृत्तम् ।
—ज़बान वि (फ) अवाच, मूक २ दीन ।
—जा, वि (फ) अनुचित, असगत २ कुत्सित, गद्य ।
—जान, वि (फ) निष्प्राण, मृत २ निर्बल, अशक्त ।
—ज़ाब्ता, वि (फा +अ) अवैध, अनैयमिक ।
—जोड, वि (फा +हिं) अनुपम २ अखंड ।
—ठिकाने, वि (फ +हिं) स्थान, च्युत भ्रष्ट, २ निराधार ३ असगत ।
—डौल, वि (फा +हिं) कुरूप, कदाकार ।
—ढगा, वि (फा +हिं) अनाचारिन्, दुराचार २ कुरूप ३ अक्रम, कुव्यवस्थित ।
—ढब वि (फा +हिं) कदाचार, कुशील, २ दुर्दर्शन, कुरूप ।
—तकल्लुफ़, वि (फा +अ) उपचारापेक्ष, निराडम्बर २ ऋजु सरल ।
—तकल्लुफ़ी, स स्त्री , उपचारापेक्षा, आडम्बर हीनता २ आर्जव, सरलता ।
—तमीज़, वि (फा अ) अशिष्ट, असभ्य, उद्धत, विवार ।
—तरह, क्रि वि (फा +अ) अनुचित, अत्यन्ते, असम्यक् २ असाधारण विलक्षण रूपेण । वि , अत्यधिक ।
—तरीक़ा, वि (फा+अ) अनुचित, अनैय मिक । क्रि वि , अनुचितम् ।
—तहाशा क्रि वि (फा +अ) अति, नवेन वेगेन शीघ्रतया २ ससभ्रम ३ अविचार्य, अविमृश्य ।
—ताब वि (फा) दुर्बल २ विकल ।
—ताबी, स स्त्री (फा) निर्बलता २ व्याकुलता ।
—तार, वि (फ +स) वितार, तन्तुहीन ।
—तार का तार, स प *वितारतार , वितारी विद्युत्संदेश ।
—तुका, वि (फा +हिं) विषमस्वर, साम ञ्जस्यहीन २ दे 'बेढब' ।
—दख़ल, वि (फा) निष्कासित, निरस्त, अपास्त, अधिकारभ्रष्ट ।
—दख़ली, स स्त्री (फा) निष्कासनं, अपासनं अधिकारभ्रंश ।
—दम, वि (फा) मृत, निष्प्राण २ मृतप्राय, मरणासन्न ।
—दर्द, वि (फा) निर्दय, निष्करुण ।
—दाग़, वि (फा) निष्कलंक, शुद्धाचार २ निर्दोष निरपराध ३ स्वच्छ ।
—धड़क, क्रि वि (फा +हिं) नि सकोचं २ निर्भयं ३ अविमृश्य । वि , नि सकोच, निर्भय, अविमृश्यकारिन् ।
—नज़ीर, वि (फा +अ) अनुपम, अद्वितीय ।
—नसीब, वि (फा +अ) मंदभाग्य, भाग्य ।
—परदा, वि (फा) अनावृत, निरावरण २ नग्न ।
—परवाह, वि (फा) निश्चिन्त, वीतचिन्त । २ स्वच्छन्दचारिन् ३ उदार ।

—परवाही, स स्त्री, निश्चितता २ स्वेच्छाचार ३ औदार्यम्।
—पीर, वि (फा + हिं) निर्दय, अकरुण २ सहानुभूतिशून्य।
—फायदा, वि (फा) निष्फल, निरर्थक। क्रि वि, मोघ, निष्फलम।
फिक्र, वि (फा) दे 'बेपरवाह'।
—फिक्री, स स्त्री, दे 'बेपरवाही'।
—बस, वि (स विवश) अशक्त, अवश निरधिकार २ परवश पराधीन।
—बसी, स स्त्री (हिं) विवशता, अवशता २ परवशता।
—बहरा, वि, भाग्यहीन २ विद्याहीन।
—बाक, वि निर्भय धृष्ट।
—बाक, वि (फा) निरतारित शोधित।
—बुनियाद, वि (फा) निर्मूल, निराधार।
—भाव, वि (फा + हिं) असंख्यात, अगणित।
—भाव की पडना, मु, मृश ताड (कर्म)।
—मजा, वि (फा) नीरस, विरस, निस्स्वाद।
—मतलब, अ०, निष्प्रयोजनम्, व्यर्थम।
—मानी, वि (फा + अ) निरर्थक।
—मुरव्वत, वि (फा) नि सकोच, अविनीत, अदक्षिण कुशील।
—मेल, वि असगत, विषम।
—मौक़ा, वि (फा) असामयिक, अस मयोचित।
—रहम, वि (फा + अ) निष्ठुर, निर्दय।
—रहमी, वि निर्दयता, निष्ठुरता।
—रोक, } क्रि वि (फा + हिं) निष्प्रति
—रोक-टोक, } बध, निर्विघ्न, निर्व्याघातम्।
—रोजगार, वि (फा) दे 'बेकार'।
—रोज़गारी, स स्त्री, दे 'बेकारी'।
—रौनक, वि (फा) शोभाहीन, नि श्रीक २ निष्प्रभ, कान्तिहीन।
—लाग, वि (फा + हिं) नि सग, निर्मोह २ निष्कपट, निर्व्याज।
—वफ़ा, वि (फा + अ) विश्वास-घातक घातिन, भक्तिहीन २ दु शील ३ कृतघ्न।
—वफ़ाई, स स्त्री (फा) विश्वासघात २ दुश्शीलता ३ कृतघ्नता।
—शऊर, वि (फा + अ) दे 'बेतमीज़'।
—शक, क्रि वि (फा + अ) अवश्य, नि सदेहम।
—शरम, वि (फा शर्म) निर्लज्ज, अपत्रप।
—शरमी, स स्त्री, निर्लज्जता, निर्व्रीडता।
—शुमार, वि (फा) अगणित, असख्य।
—सबर, वि (फा + अ सब्र) अधीर २ असतुष्ट।
—सबरी, स स्त्री, धैर्यलोप २ सतोषाभाव।
—सरो सामान, वि (फा) निष्परिच्छद, दरिद्र, अकिंचन।
—सुध, वि (फा + हिं) मूर्च्छित, नष्टसज्ञ, निश्चेत २ अज्ञ, जड।
—सुधी स स्त्री, मूर्च्छा २ जडता।
—सुर—सुरा, वि (स विस्वर) विषमस्वर २ अश्राव्य, कटुस्वर ३ दे 'बेमौक़ा'।
—स्वाद, वि (स विस्वाद) दे 'बेमज़ा'।
—हद वि (फा) असीम, निस्सीम, अपरिमित २ अत्यधिक।
—हया, वि (फा) दे 'बेशरम'।
—हयाई, स, स्त्री, दे 'बेशरमी'।
—हाल, वि (फा + अ) विकल २ दुर्गत।
—हाली, स स्त्री, विकलता २ दुर्गति (स्त्री) दारिद्र्यम्।
—हिसाब, क्रि वि (फा + अ) अत्यधिक, अपरिमितम्। वि, अत्यत, अगणनीय।
—होश, वि (फा) दे 'बेसुध'।
—होशी, स स्त्री, दे 'बेसुधी'।
बेकल, वि (स विकल) अशान्त, विह्वल, दे 'व्याकुल'।
बेकली, स, स्त्री, (हिं बेकल) अशान्ति अनिवृति (स्त्री) दे 'व्याकुलता'।
बेकिंग पाउडर, स पु (अ) भर्जनक्षोद।
बेक्टीरिया, स पु (अ) जीवाणव (पु बहु)।
बेगम, स स्त्री (तु) राज्ञी, राजपत्नी २ राजचित्राङ्कितक्रीडापत्रभेद।
बेगाना, वि (फा) अस्वीय अस्वकीय, अनात्मीय पर, अन्य २ अपरिचित, अज्ञात।
बेगार, स स्त्री (फा) विष्टि आजू आजुर (स्त्री)।
—टालना, मु, असमनोयोगेन कृ, येन केन प्रकारेण विधा (जु उ अ)।

बेहूदगी, स स्त्री (फा) अशिष्टता, असभ्यता।
बेहूदा, त्रि (फा) अशिष्ट, असभ्य २ अशिष्टतापूर्ण।
—पन, स पु दे 'बेहूदगी'।
बगन, स पु (स वगन) (पौधा) साम वृत्तन्ती, पण्या, वर्ताको, वृन्ताक ती वा २ (तरकारी) वृन्ताक तत्फलम्।
बैंग(न)नी, वि (हि बैंगन) नील, लोहित अरुण।
[बै]न, स स्त्री (अ) विक्रय, विक्रयण, मूल्येन दानम्।
[बै]कुण्ठ स पु (स वैकुठ) स्वर्ग नाक।
[बै]जती, बैनयती, स स्त्री, दे 'वैनयती'।
[बै]ज, स पु (अ) चिह्न, लक्षण, लक्ष्मन् (न) २ दे 'चपरास'।
[बै]टरी, स स्त्री (अ) विद्युद्घट २ *विद्युदीपिका, दे 'टार्च' ३ दे 'तोपखाना'।
[बै]ठक, स स्त्री (हि बैठना) *उपवेश कोष्ठक, दर्शनगृह, सभाभवनगोष्ठ २ आसन, पीठ ३ अधिवेशन ४ उपवेशन ५ उठना बैठनात्मको व्यायामभेद ६ सभा।
[बै]ठकी, स स्त्री (हि बैठक) व्यायामभेद, *उपवेशनी २ आसन, पाठम ३ पादफलक प्रदीप।
[बै]ठना, क्रि अ (स विश्>) उपविश (तु प अ), निषद् (भ्वा प अ), आस् (अ आ से) २ सच-अनुबन्ध (कर्म) ३ अभ्यस्त (वि) भू ४ अध अथवा तलगम् ५ नि, मस्ज् (तु प अ) ६ सकुच (तु भ्वा प से), मूल्येन प्र- (कर्म), क्री (कम) ७ लक्ष्य व्यय (दि प अ) निधि (दि प अ) ८ आ अविश् (भ्वा प अ) ९ आ, रोप (कर्म) निधा (कर्म), प्रति स्थप (कम) १० दृढ वस (भ्वा प अ) ११ (वनादि मह) पतिवत्वेन सवस १२ वृत्तिशून्य, (वि) वृत (भ्वा आ से) १३ तरिद्रा भू, परिक्षि (कम) १४ अप, नृगम् (भ्वा प अ)। स पु उपवेशन, निषदन अनिल, आसन निर्गत्ति (स्त्री)।
बठने योग्य, वि, उपवेशनीय, निषदनीय, आसितव्य।
बठनेवाला, स पु, उपवेशक, उपवेष्टृ, उपवेशिन, आसक, निषदिन।
बैठा हुआ, वि, उपविष्ट, निषण्ण, आसीन।
बैठे-उठते, क्रि वि, सदा, प्रतिक्षणम्।
बैठे बैठे, बैठे बैठाए, क्रि वि, निष्कारण अहेतुक २ अनायासेन अप्रयत्नम्।
बठलाना, क्रि प्रे, व 'बैठना' के प्रे रूप।
बठाना, बठालना, क्रि स व 'बैठना' के प्रे रूप।
बैत, स स्त्री (अ) पद्य, श्लोक।
—बाजी, स स्त्री पद्यपाठप्रतियोगिता २ अन्त्याक्षरी।
बैतरनी, स स्त्री दे 'वैतरणी'।
बैताल, स पु, दे 'वेताल'।
बैन, स पु (स वचन*) शब्द २ वार्ता ३ *परिदेवनपद्यम् (पजाब)।
बैना, स पु (स वायन) वायनम्, सास्दारिकमिष्टान्नम्।
बैनामा, स पु (अ बै+फा नामह) विक्रयपत्रम्।
बैरंग, वि (अ *वेयारंग) शुल्कापेक्षिन, *निस्तार्य।
—लौटना, मु, विफल अकृतक य (वि) प्रत्यावृत् (भ्वा आ से)।
बैर, स पु, दे 'वैर'।
बैरक, स पु (तु) सैनिक, ध्वज केतु २. सैनिक-आवास-आगार।
बैराग, स पु, दे 'वैराग्य'।
बैरागी, स पु, दे 'वैरागी'।
बैरी, स पु, दे 'वैरी'।
बैरोमीटर, स पु (अ) वायुभारमापकम्।
बैल, स पु [स व(ब)लीवर्द] बलद, वृष, वृषभ, उक्षन् अनडुह् वृषन् ककुद्मत् (पु), पुगव, शाक्वर, सौरभेय २ जन, मूढ।
—गाड़ी, स स्त्री, बलदशकटी वृषभव(वा)हनम्।
छकड़े का—, स पु, शाकट, धुरधर, धुरीण, धौरेय, प्राज्य
बूढा—, स पु, जरद्गव।
हल खींचनेवाला—, स पु हालिक, हालिक।
बैलून, स पु (अ) दे 'गुब्बारा'।
बैसाख, स पु, दे 'वैशाख'।
बैसाखी[1], स स्त्री (स वैशाखी) जाता पर्वविशेष।
बैसाखी[2], स स्त्री (स वैशाख >) *वैशाखी, कुक्षियष्टि (स्त्री)।

बोझ, स पु (स वोढव्य ?) भार, भर, धार्यः पदार्थः २ गुरुत्व, तोल, भार ३ दुष्करकार्यं ४ कार्यचिन्ता ५ व्ययभार ६ उत्तरदायित्वम् ।

बोझ(झि)ल, वि (हि बोझ) गुरु, भारवत्, भारिक, भारिन्, दुर्वह ।

बोटा, स पु (स वृत>) छिन्नस्थूलकाष्ठखण्ड २ खण्ड ०, शकल-लम् ।

बोटी, स स्त्री (हि बोटा) मांसखण्ड कम् ।

—बोटी काटना, मु शरीर खण्डश कृत् (तु प से)-शस्त्रैः देह खण्डशः छिद् (चु) ।

बोतल, स स्त्री (अ बॉटल) काचकूपी ।

बोदा, वि (स अबोध) दुर्मेधस् जड, मति धी बुद्धि मूढ २ अलस, मंथर ३ निर्बल, अवीर्य ४ शिथिल, श्लथ ।

बोध, स पु (स) उपलब्धि प्रतिपत्ति (स्त्री) ज्ञान २ धैर्य, आश्वासनम् ।

—गम्य, वि (स) ज्ञेय, बुद्धिगम्य, सुबोध, सुगम ।

बोधक, स पु (स) अध्यापक, शिक्षक । वि, ज्ञापक, व्यंजक ।

बोधन, स पु (स न) अध्यापन, शिक्षण २ ज्ञापन, सूचन ३ उत्थापन, निद्राभञ्जन ४ उद्दीपन, प्रज्वलनम् ।

बोधनीय, वि (स) विज्ञापनीय २ निद्राया उत्थापनीय ।

बोधि, स स्त्री (स पु) समाधिभेद, पूर्ण ज्ञान, प्रकाश उपलब्धि (स्त्री) २ कुक्कुट ।

—द्रुम, स पु (स) बोधि-तरु वृक्ष, पावन, पिप्पल चलदल-कुञ्जराशन ।

—सत्त्व स पु (स) बुद्धत्वोन्मुखो महात्मन् ।

बोना, क्रि स (स वपन) आ नि,वप् (भ्वा उ अ), (बीजानि)विकॄ (तु प से)-आरुह् (प्रे) । स पु, उप्ति (स्त्री), वपन, वाप, वप बीज, विकिरण आरोपणम् ।

बोने योग्य, वि, वपनीय, वप्तव्य, वाप्य ।

बोने वाला, सं पु, वप, वपक, वप्तृ, वापिन् ।

बोया हुआ, वि, उप्त, भूमौ विकीर्ण (बीज) ।

बोरा, स पुं (स पुट=दोना>) स्यूत, स्यार, प्रसेव ।

बोरिक एसिड, स पु (अ) टङ्कणाम्ल ।

बोरिया, स स्त्री (हि बोरा) कट, किलिञ्ज २ अल्पतर स्यूत, *विष्टर ३ दे 'बोरी' ।

—(अथवा बोरिया बधना) उठाना, मु, गमन प्रस्थान-उद्यत (वि) भू ।

बोरी, स स्त्री (हि बोरा) स्यूतक, स्योतक, प्रसेवक ।

बोल, स पु (हि बोलना) वाणी, गिर् वाच उक्ति व्याहृति (स्त्री), वचस (न), शब्द, वाक्य, वचन २ व्यंग्य-व्याज छेक, उक्ति (स्त्री), दे 'बोली' ३ प्रतिज्ञा ४ वाद्यानां नियतध्वनि ५ गीतांश ।

—चाल, स स्त्री, सौहर्द, सद्भाव, आलापः ।

—चाल की भाषा, स स्त्री, लौकिक-व्यावहारिक, भाषा ।

—बाला होना, मु, वाक्य अर्ह (कर्म) २ भाग्य उदि (अ प अ) ३ यशो वृध् (भ्वा आ से) ।

बोलना, क्रि अ (स ब्रू) आल्प्-गद्-भण् (भ्वा प से), ब्रू (अ उ अ), वच् (आ प अ) २ किलकिलायति-ते (ना धा), कूज् (भ्वा प से) ३ कथ् (चु) ४ गै (भ्वा प अ) । स पु, आलपन, निगदन, भणन, वचन, गदन कथन, कूजनम् ।

बोलने योग्य, वि, आलपनीय, वचनीय, गेय ।

बोलने वाला, स पु, वाचक, वक्तृ, निगादिन्, कथक, व्याख्यातृ, गायक ।

बोला हुआ, वि, उक्त, गदित, कथित, गीत ।

बोली, स स्त्री (हि बोलना) गिर्-वाच् (स्त्री) गिरा, उदीरणा, वाणी २ वचन उक्ति (स्त्री), वाक्य, शब्द ३ विक्रय घोषणा ४ भाषा, वाणी गिरा ५ उपप्राकृत प्रादेशिक, भाषा ६ वक्र-व्यंग्य-व्याज छेक भणित, उक्ति (स्त्री) भाषित, कटाक्ष ।

—ठोला, सं स्त्री, दे 'बोली' (६) ।

—ठोली मारना, मु, व्यंग्या क्षिप् (तु प अ) वक्रोक्त्या अधिक्षिप्, व्याजोक्त्या सूच् (चु) ।

बोवा(आ)ना, क्रि प्रे, व 'बोना' का प्रे रूप ।

बोहनी, स स्त्री (स बोधन>) प्रथमविक्रय ।

बौखलाना, क्रि अ (सं वायुस्खलन>) ईषद् उन्मद् (दि प से)-वातुलीभू ।

बौछाड़ र, स स्त्री (स वायुसरण>) झड़ा, यझा,-अनिल वात -मरुद (पु) २ आसार, धारासम्पात ३ *मननसपात ४ व्यंग्योक्ति (स्त्री) दे 'बोला'(६)।

बौद्ध, स पु (स) गौतमबुद्धानुयायिन्। वि, बुद्ध,-मवधिन प्रचारित।

—धर्म, स पु (स) बुद्धप्रवर्तितधर्म, बुद्धमतम्।

बौना, स पु (स वामन) खर्व, ह्रस्व सङ्कुन, न्यक्, न्यच। वि खर्व, ह्रस्व।

बौरा, वि (स वातुल) विक्षिप्त, उन्मत्त। ३ अन मूक।

बौली, स स्त्री (देश) विक, नव प्रसूताया गोर्दुग्धम्।

ब्याज, स पु दे 'सूद'।

ब्याध, स पु, दे 'व्याध'।

ब्याना, क्रि स (स बीन>) नन्-उत्पद् (प्रे), प्रसू (अ आ मे)।

ब्यालू, स पु (स वैकालिक>) साध्य भोजन, *नक्ताश। *वैकालिकम्।

ब्याह, स पु (स विवाह) उद्वाह, परिणय, उपयम, पाणि,ग्रह ग्राह ग्रहण, दार, परिग्रह अधिगम।

ब्याहता, वि स्त्री (स विवाहिता) ऊढा, परिणीता। स पु, पति, भर्तृ।

ब्याहना, क्रि स, (सं विवहन) (पत्नीग्रहण) उद्-वि-वह् (भ्वा प अ), परिणी (भ्वा प अ), उपयम् (भ्वा आ अ), परि,प्रति ग्रह् (क्र प से) २ (पति ग्रहणे) पति विद् (तु उ वे) लभ (भ्वा आ अ) अधिगम् (भ्वा प अ) वृ (स्वा उ से), भर्त्रा सयुज (कम) ३ उद्वह कृ (प्रे), पाणि ग्रह् (प्रे) विवाहेन-सयुज (प्रे), पाणि ग्रहण सपद् (प्रे)। स पु, दे 'ब्याह' स पु।

ब्याहने योग्य, वि, उद व-वाह्य वोढव्य, परिणेय, विवाहयोग्य।

ब्याहने वाला, स पु, वि-उद्-वोढृ परिणेतृ परिणायक, पाणि,ग्रह ग्राहक ग्रहीतृ।

ब्याहा हुआ, वि पु, विवाहित, सपत्नीक, सभार्य, कृतदार, स्त्रीमत, कुटुम्बिन्, ऊढ, परिणीत। (वि स्त्री) सभर्तृका, पतिवत्नी, सधवा, सुवासिनी, परिणीता, ऊढा।

ब्योंत, स स्त्री (स व्यवस्था) वृत्त, वृत्तान्त २ काय, विधि प्रणाली शैली ३ युक्ति (स्त्री), उपाय ४ आयोजन, उपकल्पन ५ अवसर ६ व्यवस्था, प्रबध ७ सीवनाय वस्त्रकर्तनम्।

ब्योंतना, क्रि स, दे कतरना'।

ब्योपारी, स पु दे 'व्यापारी'।

ब्योरा, स पु (स विवरणम) विस्तृत, वर्णन वृत्तान्त २ उदन्त, वृत्तान्त ३ अन्तरम भेद।

—(रे)वार, अ० स विस्तर विस्तरम्, विस्तारपूर्वकम्।

ब्योहार, स पु, दे व्यवहार'।

ब्रज, स पु, दे व्रज'।

ब्रत, स पु दे 'व्रत'।

ब्रह्म, स पु [स ब्रह्मन् (न)] परमात्मन्, परमेश्वर, सच्चिदानद नामरूप २ आत्मन्, देहिन ३ ब्राह्मण (प्राय समासारभ में, उ ब्रह्महत्या) ४ चतुर्मुख, विधि, पद्मासन ५ वेद ६ ब्रह्मा", भुवनकोश।

—चर्य, स पु (स न) आश्रमभेद, प्रथमाश्रम २ वीर्यरक्षा, अष्टागमैथुनप्रतिषेध, यमभेद (योग), ऊर्ध्वरेतस्त्वम्।

—चारिणी, स स्त्री (स) ब्रह्मचर्यधारिणी, २ प्रथमाश्रमिणी ३ अनूढा, कुमारी।

—चारी, स पु (स रिन्) व्रतिन्, लिंगिन्, लिङ्गस्थ, ब्रह्मचर्यधारिन् वर्णिन् २ प्रथमाश्रमिन्, अविवाहित।

—ज्ञान, स पु (स न) परमेश्वरबोध।

—ज्ञानी, स पु (स -निन्) ब्रह्मवेत्ता २ अद्वैतवादिन्।

—दिन, स पु (स न) परमेष्ठिदिवस, सृष्ट्यवधि (= १०० चतुर्युगी)।

—देश, स पु (स) अर्यावर्तस्य भागविशेष (कुरुक्षेत्र च मत्स्याश्च पचाला शूरसेनका। एष ब्रह्मर्षिदेशो वै ब्रह्मावर्तादनन्तर -मनु० २।१९)

—पुराण, स. पु (स न) पुराणविशेष।

—बधु, स पु (स) पतितो विप्र।

—भोज, स पु (स ज्य) ब्राह्मणभोजनम्।

—मूहूर्त, स पु (स पु न) सूर्योदयात् चिचतुरघटीपूर्ववर्तिकाल, ब्रह्मराय।

—यज्ञ, स पु (स) ब्रह्मसत्र, सविधि वेदाध्ययनाध्यापनम्।

—रंध्र, स पु (स न) ब्रह्म, छिद्रद्वारम।
—रात्रि, स स्त्री (स) ब्रह्मणो निशा, प्रलया वधि (= १०० चतुर्युगी)।
—वर्चस, स पु (स न) तप स्वाध्याय न तेजम् (न)।
—वर्चस्वी, वि (स स्विन्) ब्रह्मवर्चसविशिष्ट।
—वादिनी, स स्त्री (स) गायत्री। वि, वेदापदेष्ट्री।
—वादी, वि (स न्नि) वेदोपदेशक।
—विद्, वि (स) ब्रह्मवेत्तृ २ वेदार्थज्ञ।
—विद्या, स स्त्री (स) उपनिषद्, परा, विद्या।
—वेत्ता, स पु (स वेत्तृ) ब्रह्मज्ञ।
—वैवर्त्त, स पु (स न) पुराणविशेष।
—समाज, स पु (स) श्रीराममोहनराय प्रवर्तित सम्प्रदायविशेष।
—सूत्र, स पु (स न) दे 'यज्ञोपवीत' २ शारीरिकसूत्रम्।
—हत्या, स स्त्री (स) विप्रवध।
—हत्यारा, स पु (स+हि) विप्र न ब्राह्मणघातक।
ब्रह्मत्व, स पु (स न) परमेश्वर,त्वता २ ब्राह्मणत्वम।
ब्रह्मर्षि, स पु (स) वसिष्ठादयो मन्त्रद्रष्टार ऋषय २ ब्राह्मण ऋषि।
ब्रह्मा, स पु (स ब्रह्मन् पु) चतुर्मुख, अष्ट कर्ण, अज, क, धन, कमलपद्म अब्ज, योनि, वि,धातृ, नाभिज, पद्मासन, पर मेष्ठिन्, पितामह, विधि, विरिंचि वि धन, विश्वसृज, सर्वतोमुख, स्रष्टृ, स्वयभू, हस वाहन, हिरण्यगर्भ (सब पु)।
ब्रह्माड, स पु (सं न) भुवनकोष, विश्व गोलक, विश्व, जगत् (न), जगती, त्रिभुवनम्।
ब्रह्माक्षर, स पु (स न) ओम् इत्यक्षरम्, प्रणव ओङ्कार।
ब्रह्माणी, स स्त्री (स) ब्रह्मण पत्नी, शतरूपा, सावित्री, सरस्वती, गायत्री।
ब्रह्मानंद, स पु (स) ब्रह्मदर्शनाह्लाद।
ब्रह्माभ्यास, स पु (स) वेद,अध्ययन स्वाध्याय।
ब्रह्मावर्त्त, स पु (स) तपोवन, सरस्वत दृषद्वत्योर्मध्यवर्तीदेश।
ब्रह्मासन, स पु (स न) योग ध्यान आसनम्।
ब्रह्मास्त्र, स पु (स न) ब्रह्मस्वरूपमस्त्र २ अमोघास्त्रम्।
ब्राह्मण, स पु (स) आर्याणामुत्तमो वर्ण २ विप्र, ज्येष्ठवर्ण, अग्र जन्मन् जातक। भूदेव, द्वि जन्मन् जाति, वक्त्रज, द्विज, गुरु, द्विजोत्तम, षट्कर्मन्, ब्रह्मन् (सब पु)।
ब्राह्मणत्व, स पु (सं न) द्विजत्व, विप्रत्व, ब्राह्मण्यम् इ।
ब्राह्मणी, स स्त्री (स) ब्राह्मणपत्नी २ ज्येष्ठ वर्णा, द्विजोत्तमा ३ बुद्धि (स्त्री)।
ब्राह्ममुहूर्त्त, स पु (सं पु न) अरुणोदय कालस्य प्रथमदण्डद्वयम्।
ब्राह्मी, स स्त्री (स) दुर्गा २ भारतवर्षस्य प्राचीनलिपिविशेष ३ (बूटी) सोमवल्लर सुरसा, परमेष्ठिनी, ब्रह्मकन्यका, शारदा सरस्वती।
ब्रिटिश, वि (अ) आंग्ल।
ब्रुश, सं पु (अ) आवपणी, लोममयी शोधनी मार्जनी २ कूर्चिका ना, तूलिका, वानरा।
ब्रूरी, स स्त्री (अ ब्रूरी) यवासवनी।
ब्रोंकाइटस, स पु (अ) श्वासनालीमुखप्रदाह।
ब्लाक, सं पु (अ) चित्रफलक क २ चतु रस्रो भूखड ३ गृहवर्ग।
ब्लीचिंग पौडर, सं पु (अ) श्वेतनक्षोद, रगनाशकचूर्णम्।
ब्लैडर, स पु (अ) मूत्राशय, बस्ति (पु स्त्री) २ पित्ताशय ३ (पादकन्दुकस्य) अन्त कोष।

भ

भ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्विंशो व्यजनवर्ण, भकार।
भग¹, स स्त्री दे 'भाग'।
भग², स पु (स) भजन, भेदन २ विनाश, विभ्रम ३ अतिक्रमण, उल्लघन ४ तरग, कल्लोल ५ पराजय ६ गठ-ड ७ बाधा, विघ्न ८ वक्रता, जिह्मता ९ दे 'लकवा'।
भंगड़, वि (हि भाग) भगाप, भगाप विन्।
भँगरा¹, स पु (सं भृगराज) भैरव, भृंगराज, कुन्तलवर्द्धन पत्रपुष्पिका भृग, भृंगराज।

भँगरा[१], स पु (हिं भग) शाणपट, बराशि मि ।

भगराज, स पु (स भृङ्गराज) पिककार खगभेद २ दे 'भँगरा'[१]।

भगिन, स स्त्री (हिं भगी[१]) तन्तूः (स्त्री), सम्मा।न्या।

भगिमा, स स्त्री (स भङ्ग प) वक्रता, कुटिलता, जिह्मता, अरालता।

भगा,[१] स प (स भक्त >) त प् (प) मलहारक, संम न्र २ क्षुद्रजातिभेद ।

भगा, वि (हि भा) दे भग ।

भगी,[१] स स्त्री (स) भेद विच्छेद २ त्रुटि न्ता, वक्रता २ आभिनिवेश ४ उद्योग लहरा ५ ध्यान ६ प्रवृत्ति (स्त्री)।

भगी,[२] वि (स भगि) भिदुर नुटि स्नना भञ्जनशील २ भञ्जक भञ्जन, मठ खण्ड।

भगुर, वि (स) भिदुर स्नना २ नश्वर, अध्रुव २ कुटिल, वक्र।

भञ्जक, वि (स) खण्डन, खण्डन, त्रोटक २ उल्लङ्घक अतिक्रमणकारिन।

भञ्जन, स पु (स न) खण्डन, त्रोटन, भेदन, शकलीकरण २ अतिक्रम भग, उल्लङ्घन, भग, व्याहनन ३ वि, ध्वमन ४ भग, ध्वम ५ नाशन, लोपनम्। वि, दे भञ्जक' (१ २)।

भजना, क्रि अ (स भञ्जन) दे 'टूटना'।

भटा, स पु (स वृन्ताक) दे 'बैंगन'।

भड, स प (स) दे 'भाड'।

भडा, स पु, दे 'भाडा'।

भडार, स पु (स भाडागार) कोश प निधि, शेवधि, निधान २ धान्य-कोष्ठ, अ(अ)गार २ ३ पाकशाला ४ उदर, जठर ५ भाडा गार-र ६ 'दे' 'भण्डा'।

भडारा, स पु (हिं भडार) दे 'भडार' (१ २) २ समूह, राशि ३ साधूना भोजनोत्सव ।

भडारी, स (हिं भडार) कोष्ठक, अ(आ)-गारक क २ कोश प ।

भडारा, स पु (भाडारिन) कोशा(षा)ध्यक्ष, धनाध्यक्ष २ भाण्डागारिक, भाण्डारिक ३ सूद, पाचक ।

भभीरी, स स्त्री (अनु) रक्ताग पतङ्गभेद, *भभीरी २ दे 'तीतरी'।

भँवर, स पु (स भ्रमरक) जल-आवर्त गुल्म, भ्रमि (स्त्री) आवर्त, अवघूर्ण, कुण्डुम्क, तानूर २ दे 'भ्रमर' ३ गर्त नै, अवट ।

भँवरा, स प, दे 'भ्रमर'।

भँवरी,[१] स स्त्री (हिं भँवर) दे 'भँवर' १ शरीरास्थ रोम, वतुल मण्डलम्।

भँवरी, स स्त्री (हिं भँवरना, स भ्रमण>) > भावर' २ वैवधिकता, भारवाहकता ३ (प्रजारक्षार्थ अधिकारिणा) पर्यटन पार्श्वभ्रमणम्।

भउआ, स पु (हिं भाइ, दे)।

भक, स स्त्री (अनु) ज्वाला-झलका, ध्वनि (पु)।

भक्त, वि (स) धार्मिक, धर्मात्मन, पुण्य धन शील पुण्यात्मन। स पु, पूजक, उपासक सेवक २ अनुयायिन, अनुगामिन ३ रक्षरतिन, सनातक ।

भक्ताई, स स्त्री, दे 'भक्ति'।

भक्ति, स स्त्री (स) इश्वर, सेवा, पूजा-अर्चा उपासना परायणता २ नियम, धामरता, धर्मक्रिया, तपस् (न) ३ श्रद्धा, निष्ठा ४ परायणता, निरति (स्त्री), अनुराग, अभिनिवेश ।

भक्ष, स पु (स) भोजनम् २ भक्षणम्।

—कार, स पु (स) खादिक २ पाचक ।

भक्षक, वि (स) खादक, अशर, भोक्तृ, घस्मर, भोजिन [भक्षिका (स्त्री) = खादिका, भक्षिका, भोक्त्री]।

भक्षण, स पु (स न) अशन, आस्वादन, खादन, भोजन, अभ्यवहरण २ आहार ।

भक्षित, वि (स) भुक्त, खादित, अदित ।

भक्षा, वि (स क्षित) दे 'भक्षक'।

भक्ष्य, वि (स) खाद्य, भोज्य, अभ्यवहार्य। स पु (स न) भोजन, आहार, खाद्यवस्तु (न), अन्नम्।

भगदर, स पु (स) अपानदेशे व्रणरोगभेद ।

भग, स पु (स) सूर्य २ ऐश्वर्य, धन ३ सौभाग्य, भाग्य ४ चन्द्र ५ योनि (स्त्री) ६ गुद ७ पूर्वाफल्गुनीनक्षत्र ८ धन ९ कान्ति (स्त्री) १० मोक्ष ११ माहात्म्य १२ यत्न ।

भगण, स पु (स) नक्षत्रसमूह २ गणभेद । (ऽ।।, छंद शास्त्र)।

भगत, स पु तथा वि, दे 'भक्त'।

भगतानी, सं स्त्री (हिं भगत) भक्त भार्या पत्नी २ ईश्वर,-उपासिका पूजिका भक्तिका, धर्मशीला ३ अनुगामिनी ।

भगती, सं स्त्री, दे 'भक्ति'।

भगदड़, स स्त्री (हिं भाग+दौड़) पलायन, अपक्रमण, स्थान, विद्राव ।

—पड़ना या **मचना**, क्रि अ, पलाय (भ्वा आ से), विप्रद्रु (भ्वा प अ), अपधाव (भ्वा प से)।

भगवत, स पु (स भगवत् >) ईश्वर, भगवत् (पु)।

भगवती, स स्त्री (स) देवी २ गौरी ३ सरस्वती ४ गंगा ५ दुर्गा।

—भगवत्, वि (स) श्रीमत्, लक्ष्मीवत्, ऐश्वर्यशालिन् २ पूज्य, मान्य, अर्चनीय। स पु (स) परमेश्वर, जगदीश्वर २ विष्णु ४ शिव ५ जिन ६ बुद्ध ।

—गीता, स स्त्री (स) श्रीकृष्णार्जुनसंवादा त्मको विख्यातो धर्मग्रंथविशेष ।

—पदी, स स्त्री (स) गंगा, देवनदी।

भगवाँ वा, सं पु, दे 'गेरू'। वि, दे 'गेरुआ'।

भगवान्‌न्, वि (स भगवत्) दे 'भगवत' वि तथा स पु ।

भगाना, क्रि स, व 'भागना' के प्रे रूप।

भगिनी, स स्त्री (स) सोदरा, दे 'बहन'।

भगीरथ, स पु (सं) अयोध्यापतिविशेष । वि, सुमहत्, विपुल, अत्यधिक।

भगोड़ा, वि (हिं भागना) रणविमुख, युद्धत्यागिन् २ अपधावित, प्रपलायित ३ भीरु, कातर।

भग्न, वि (स) खंडित, त्रुटित, ध्वस्त २ भिन्न, वि,दीर्ण ३ पराजित, पराभूत।

भग्नावशेष, स पुं (सं) ध्वंसावशेष, दे 'खंडहर'।

भजन, स पु (सं न) पूजा, अर्चा, सेवा, सपर्या २ जप, सततस्मरण ३ भक्ति गीत गिरा ।

—करना, क्रि स, दे 'भजन'।

भजना, क्रि स (स भजन) भज् (भ्वा उ अ), पूज्-सभाज् (चु), उपास् (अ आ से), आराध् (चु), नमस्यति (ना धा), सेव् (भ्वा आ से) २ जप (भ्वा प से), निरंतर स्मृ (भ्वा प अ) ३ आ,श्रि (भ्वा उ से)। क्रि अ, दे 'भागना'। स पु, दे 'भजन' (१२)।

भजनानंद, स पु (स) भक्ति,-आनन्द -रस आह्लाद । वि भक्तिपरायण।

भजनानंदी, वि (स दिन्) भक्त्यानन्द, मग्न लीन परायण।

भजनीक, स पु (स भजन>) गायक, गातृ, गातु, गेष्ण ।

भजनीय, वि (स) पूज्य, सम्मान्य, सेव्य।

भजने योग्य, वि, भजनीय, उपास्य, सेव्य, नपाद्द, आश्रयणीय।

भजने वाला, स पु, भक्त, उपासक आराधक ।

भट, सं पु (स) योध, योद्धृ (सैनिक, आयुधिक) २ वीर, शूर ३ वर्णसंकरभेद ।

भटकटाई, **भटकटैया**, स स्त्री (स भट + कटक >) दुःस्पर्शा, दुष्प्रधर्षिणी, बहुकंटा, चित्रफला।

भटकना, क्रि अ (स भ्रान्तक>) मोघ पर्यट् परिभ्रम् (भ्वा प से) २ पथभ्रष्ट (वि), इतस्ततः या (अ प अ), विपथगम् ३ भ्रम, मुह् (दि प से)। स पु, व्यर्थपर्यटन, पथ भ्रंश, उन्मार्गगमन, भ्रम, माया, मोह ।

भटकाना, क्रि स, व 'भटकना' के प्रे रूप।

भटका हुआ, वि, उन्मार्ग विपथ,-गामित, पथ-भ्रष्ट, भ्रांत, मूढ़।

भट्ट, स स्त्री, (स वधू >) (सम्बोधन में हा! (हे) सखि! (हे) आलि! (हे) वयस्य

भट्ट[1], स पु (स भट्ट) जातिविशेष २ स्तुति पाठक, दे 'भाट'।

भट्ट[2], स पु, दे 'भट'।

भट्ठा, स पु (स भ्राष्ट्र >) आपाक, कन्दु-(पु स्त्री),पाकपुटी।

भट्ठी, सं स्त्री (हिं भट्ठा) अश्मंत, उद्धान, अंतिका, अंदिका, अधिश्रयणी, अग्निकुंड २ संधानी, अभिषवशाला ३ रजकटाह ।

भठियारा, सं पुं (हिं भट्ठा) पाथागार, अध्यक्ष पति २ भ्राष्ट्रकार, भ्राष्ट्रमिंध, भर्जन,-कार कर्तृ।

भठियारिन री, सं स्त्री (हिं भठियारा) पाथा गाराध्यक्षा २ भजन,कारी-कर्त्री, भृष्टकारी।
भड़क, स स्त्री (अनु) औज्ज्वल्य, प्रभा, भाम् (स्त्री), अनिवाह्य,-शांति दीप्ति (दोनों स्त्री)-शोभा।
—दार, वि (हिं +फा) भासुर, भासमान, उज्ज्वल, दीप्तिमद्।
भड़काना, क्रि अ (हिं भड़क) उद्प्र ज्वल (भ्वा प से), उद्भ्रम दीप (दि आ से) २ समाध्वस अपस् (भ्वा प अ)-परवृत (भ्वा आ से), सहसाकप (भ्वा आ से) ३ क्रुध् (दि प अ)।
भड़काना, क्रि स व, 'भड़कना' के प्रे रूप २ उत्तिन उद्दाप-(प्रे)।
भड़कीला, वि (हि भड़क) दे 'भड़कदार'।
भड़भड़िया, वि (अनु भड़भड़) वाचाल, वाचाट, वावदूक, जल्पक, बहुभाषक।
भड़भूँजा, स पु (हिं भाड भूनना) दे 'भठियारा' (२)।
भड़भूजी,-जिन, स स्त्री (हिं भड़भूजा) दे 'भठियारिन' (२)।
भड़ुआ, स पु, (हिं भाँड) भगाजीविन्, वेश्याचार्य, कुट्टारिन्, विट।
भड्डर, स पु (स भद्र>) क्षुद्रब्राह्मणभेद।
भणित, वि (स) उक्त, कथित, व्याहृत।
भतीजा, स पु (स भ्रातृज) भ्रातृव्य, भ्रात्री (त्रे)य, भ्रातु पुत्र।
भतीजी, स स्त्री (हिं भतीजा) भ्रातृजा, भ्रातृव्या भ्रात्रीया, भ्रातु पुत्री, भ्रात्रेयी।
भत्ता, स पु (स भक्त>) भक्त, मार्गव्यय, यात्रावृत्ति (स्त्री), यात्रिकम्।
भदभद, वि (अनु) अतिस्थूल २ दुर्दर्शन।
भद्दा, वि (अनु भद) कदाकार, कुदर्शन, कुरूप, विषमाग २ नैपुण्य-दाक्ष्य शून्य ३ अश्लील, अवाच्य।
भद्र[१], वि (स) सभ्य, शिष्ट, सुशिक्षित, श्रेष्ठ, गुणिन, प्रशस्त, साधु, सुवृत्त, सुशील २ मगल, कल्याण, शुभ ३ उचित, उपयुक्त। सं पु (स न) कल्याण, क्षेम, मगल, कुशल, हित २ चदन ३ गजजातिभेद ४ सुवर्ण ५ समृद्धि (स्त्री)।
भद्र[२], स पु (स भद्राकरण) केशकूर्चश्मश्रु मुण्डन, मुण्डनम्।
भद्रता, स स्त्री (स) शिष्टता, सभ्यता, सज्जनता, सुशीलता।
भद्रासन, स पु (स न) नृपासन, सिंहासन २ योगासनभेद।
भद्रिका, स स्त्री (सं) भद्रा तिथि (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) २ वृत्तभेद।
भनक, स स्त्री (स भण्>) मद-अस्पष्ट ध्वनि २ जनप्रवाद, किंवदंती।
भनभनाना, क्रि अ (अनु) भणभणायते (ना धा), गुञ्ज (भ्वा प से) झकार कृ।
भनभनाहट, स स्त्री (हिं भनभनाना) भणभणायित, भणभणध्वनि, गुञ्जन, गुञ्जित, झंकार।
भब(भ)का, स पु (हिं भाप) बकयन्त्र,यन्त्रम्।
भभक, स स्त्री (अनु भक) ज्वालोत्थान, कीलोद्गति (स स्त्री) २ दे 'उज्वाल'।
—मारना, क्रि अ, गर्ज् (भ्वा प से)।
भभकना, क्रि अ (हि भभक) प्रज्वल् (भ्वा प से), उद्दीप (दि आ से) २ तापादिवशेन स्फुट् (तु प से)-भग् (कर्म) ३ दे 'उबलना'।
भभकी, स स्त्री (हिं भभक) विभीषिका, तर्जना, भर्त्सना, भयदर्शनम्।
—देना, क्रि स, निर्-,भर्त्स्, तर्ज् (दोनों चु आ से)।
गीदड़—, स, कपटविभीषिका, मिथ्या तर्जना।
भभ्भड़, स पु, दे 'भीड़भाड़'।
भभूका, स पु (हिं भभक) ज्वाला, शिखा, अर्चिस (न)।
भभूत, स स्त्री [स विभूति (स्त्री)] गोमयभस्मन् (न) २ वैभवम्।
—लगाना, क्रि स, विभूत्या विग्रह लिप् (तु उ अ)। स पु भस्मगुण्ठनम्।
भयकर, वि (सं) त्रास भीति भय,-जनक-द प्रद आवह, भीम, भीषण, भयानक, रौद्र, भैरव।
भयकरता, स स्त्री (स) भीमता, भीषणता, भयानकता इ।
भय, स पु (स न) भी भीति (स्त्री),

मात्वस, स,शाम, दर र, भिया २ आतंक ३ आशंका ।

—कारक,—प्रद, वि, दे 'भयंकर'।

—खाना या लगना, क्रि अ, भी (जु प अ), वि म त्रस् (भ्वा दि प से), दे 'डरना'।

—भीत, वि (स) भीत, भयात, ससाध्वस, त्रस्त सभय, सदर।

—हीन, वि (स) निर्भय, अभय, निर्भीक, अकुतोभय दे 'निर्भय'।

भयातुर, वि (स) दे 'भयभीत'।

भयानक, वि (स) दे 'भयकर'।

भयावना, वि (स भय>) दे 'भयंकर'।

भयावह, वि (स) दे 'भयकर'।

भर, वि (हिं भरना) समस्त, सम्पूर्ण, समग्र, यावत् (ती स्त्री) तावत् (ती स्त्री)। क्रि वि, यावत् (द्वितीया के साथ) आ (पंचमी के साथ मात्र, मित, परिमित, परिमाण।

आयु—, क्रि वि, यावज्जीव, आमृत्यो।

कोस—, क्रि वि, क्रोश यावत्, क्रोशमात्रम्।

बालि—, वि, वश, मात्र मित परिमाण।

शक्ति—, क्रि वि, यथाशक्ति (न), याव च्छक्य, यावच्छक्ति (अव्य)।

सेर— वि, सेरमैटक,मात्र परिमित।

भरण, स पु (स न) पालन, पोषण, संवधन, रक्षण, समालंबनम्।

भरणी, स स्त्री (स) नक्षत्रविशेष, यमदेवता २ घोषकलता। वि स्त्री (स) पालयित्री, पोषिका।

भरत, स पु (स) कैकेयीपुत्र, रामानुज २ शाकुन्तलेय, दौष्यन्ति, सर्वदमन ३ ऋषभदेवपुत्र ४ नाट्यशास्त्रलेखको मुनिविशेष ५ नट।

—खंड, स पु (स न) भारत, भारतवर्ष २ भारतान्तर्गतकुमारिकाखंडम्।

भरता[1], स पु (देश) भृतवार्ताकम्।

भरता[2], **भरतार**, स पु [स भर्तृ (बहु)] भर्तृ, पति, धव २ स्वामिन्, प्रभु।

भरती, स स्त्री (हिं भरना) सैन्यप्रवेश २ प्रवेश ३ भरण, पूरण, पूर्ति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, सैन्यप्रवेशं कृ (प्रे)।

—डालना, क्रि स, गर्ते पूर् (चु)।

—होना, क्रि अ, सेनायां प्रविश् (तु प अ)।

भरना, क्रि स (स भरणं) भृ (भ्वा उ अ), भृ (जु उ अ), पृ (जु प अ), पृ (तु प से) पूर् (चु), व्याप् (स्वा प अ) २ प्रस्तुप्र (प्रे) ३ ऋणादिक शुध् निस्तृ (प्रे) ४ सह् (भ्वा आ से) ५ उत्तेजि प्रकुप् (प्रे) ६ लिप् (तु उ अ)। क्रि अ, भृ पृ पृ व्याप् पूर् (कर्म) २ अंत कुप् (दि प से) ३ ऋणादिक शुध् (दि प अ) ४ पुष् (कर्म)। सं पु, भरणं, पूरण, व्यापनं, पूर्ति भृति (स्त्री) २ ऋण ३, उत्कोच।

भरनी[1], स स्त्री (हिं भरना) मक्षिक, तन्तु-सर, सूत्रवेष्टनं २ निर्यकृतत्व (पु बहु)।

भरनी[2], स स्त्री, दे 'भरणी'।

भरने योग्य, वि, भर्तव्य, भरणीय, पूरणीय, पूरयितव्य २ शोधनीय (ऋणादि)।

—वाला, स पु, पूरक, भर्तृ, पूरयितृ २ ऋणादिशोधक।

भरा हुआ, वि, सं,भृत, पूर्ण, पूरित, आकीर्ण, व्याप्त, निचित, संकुल, आविष्ट।

भरपूर, वि (हिं भरना+पूरा) सं परि, पूर्ण पूरित भृत संकीर्ण व्याप्त, निचित। क्रि वि, पूर्णतया, अशेषेण २ सम्यक्, साधु।

भरभराना, क्रि अ (अनु) आकुल (वि) भू।

भरम, स पु (सं भ्रम) भ्रान्ति, मिथ्या मति (दोनों स्त्री), माया, आभास, अविद्या २ भेद, रहस्यम् ३ प्रतिष्ठा, प्रत्यय।

भरमार, सं स्त्री (हिं भरना+मार) बहुलता, प्रचुरता, विपुलता, भूयिष्ठता।

भरराना, क्रि अ (अनु०) सहसा पत् (भ्वा प से) २ मुट् (दि तथा तु प से)।

भरवाना, क्रि प्रे, व 'भरना' के प्रे रूप।

भरसक, क्रि वि [हिं भर+सक (=शक्ति)] यथा शक्तिबल-सामर्थ्यं, पूर्ण, शक्त्या-बलेन।

भरा, वि (हिं भरना) पूर्ण, पूरित, (सं) भृत, निचित, आविष्ट।

—(री) जवानी, पूर्ण-यौवन-तारुण्यम्।

—(री) थाली में लात मारना, मु, लाभ प्रदजीविकां परित्यज् (भ्वा प अ)।

—पूरा, वि (हिं भरना+पूरा) संपन्न, समृद्ध २ परिसंत,पूर्ण।

भराई, सं स्त्री (हिं भरना) दे 'भरना' सं पुं २ भरणपूरणं, भृति (स्त्री)—वेतनम्।

भराना, क्रि प्रे , दे 'भरना' के प्रे रूप ।
भरी, स स्त्री (हि भर) दशमाशो ।
भरोसा, स पु (हिं भरा+स विश्राम >) विश्राम , प्रस्तव २ आश्रय , अवलब वन, आधार ३ आशा ।
—करना, क्रि अ , आ-अव-लब् (भ्वा आ से) २ विश्वस (अ प से) ३ आशा बध् (क्र प अ) ।
भर्ता, भर्तार, स पु (स भर्तृ) दे 'भरता' ।
भर्ता, स पु , दे 'भरता' ।
भर्ती, स स्त्री , दे 'भरती' ।
भर्त्सना, स स्त्री (स) तर्जना, निर्भर्त्सना, अधिक्षेप , निंदा, गर्हा वाग्दड , उपालभ ।
—करना, क्रि स , निभर्त्स्-तर्ज (चु आ से), गर्ह् (भ्वा आ से), निंद् (भ्वा प से) ।
भलमनसत, भलमनसाहत, भलमनसी, स स्त्री (हिं भला+मानुस) भद्रता, सज्जनता, आयत्व, महानुभावता ।
भला, वि (स भद्र) शुभ, वर, शोभन, उत्तम, श्रेष्ठ, गुणवत, निर्दोष, साधु, प्रशस्त, प्रशस्य, वर सु, सत् २ उत्कृष्ट, विशिष्ट । स पु (स न) कल्याण, कुशल, मगल, हित २ लाभ , प्राप्ति (स्त्री) । अव्य , भवतु, अस्तु, तावत् ।
—करना, मु , उपकृ, साहाय्य दा (जु उ अ) ।
—चगा, वि , नीरोग स्वस्थ, निरामय ।
—बुरा, स पु , दुर्-अश्लील-वचन २ हानि लाभौ ।
—मानुस, स पु , भद्र , आर्य , सज्जन ।
भले ही, मु , काम, (लोट् , विधिलिङ् में भी अनुवाद किया जाता है) ।
भलाई, स स्त्री (हिं भला) सज्जनता, साधुता, आर्यता २ उपकार , उपकृति (स्त्री), परहितम् ।
भव, स पु (स) ससार , जगत् (न) २ जन्मन् (न), उत्पत्ति (स्त्री) ३ पुन र्जन्मदुःख ४ सत्ता ५ शिव ६ मेघ ।
—बधन, स पु (स न) जगज्जालम् ।
—भजन, स पु (स) ईश्वर , मुक्तिद ।
—भय, स पु (स न) पुनर्जन्मत्रास ।
—मोचन, वि (स) मोक्षद ।
—सागर, स पु (स) ससारपारावार ।
भवदीय, सर्व (स) भावत्क, युष्मदीय, त्वदीय, तावक यौष्माक [—की (स्त्री)], यौष्माकीण ।
भवन, स पु (स न) अ(आ)गार-र, वेश्मन् सद्मन् (न), सदन, निकेतन, मदिर, गृह, गेह २ प्रासाद , नृपमदिरम् ।
भवानी, स स्त्री (स) दे 'पार्वती' ।
भवितव्य, वि (स) अवश्य भाविन्, भवनीय ।
भवितव्यता, स स्त्री (स) नियति (स्त्री), भाग्य, भागधेय, दैवम् ।
भविष्णु, वि (स) भविष्य, भविष्यद्, आगामिन्, भूष्णु ।
भविष्य, वि (स) आगामिन्, अनागत, उत्तर, भविष्यत, श्वस्तन [—नी (स्त्री) । स पु (स न), भविष्यत्-आगामि-भावि उत्तर-अनागत-काल-समय , अनागत, श्वस्तन, प्रगेतन, भाविन्-आगामिन् (न), आयति. (स्त्री), उदर्क ।
भविष्यत् , वि तथा स पु , दे 'भविष्य' ।
भविष्य(द्)वक्ता, स पु (स -वक्तृ) भविष्यद् वादिन्, दैवज्ञ ।
भविष्य(द्)वाणी, स स्त्री (स) भावि कथन-सूचन, भविष्यद्वाद ।
भव्य, वि (स) सश्रीक, शोभान्वित, दिव्य, सुप्रभ, शोभन २ शुभ, मगल ३ सत्य, यथार्थ ४ योग्य ५ भाविन् ६ श्रेष्ठ ७ प्रसन्न ८ महत, गुरु ।
भव्यता, स स्त्री (स) दिव्यता, शोभा, श्री (स्त्री), सुदरता इ ।
भषक, स पु (स) कुक्कुर , सारमेय ।
भसींड, स स्त्री (देश) मृणाल-लं, शालूक (विमर्द ?), बिस, नालीक २ करहाट , कर्कट , शिफाकद ।
भसुड, स पु , दे 'हाथी' ।
भसुर, स पु (हिं ससुर का अनु) ज्येष्ठ , भर्तृभ्रातृ ।
भस्म, स पु [स भस्मन् (न)] भसित, विभूति (स्त्री.) ।
—करना, क्रि स , भस्म (स्मी)कृ, भस्मसात् कृ २ दे 'जलाना' ।

भागना, क्रि अ (स भाज्) पलाय (भ्वा आ से), अपधव् (भ्वा प से), विद्रु (भ्वा प अ), अपसृप् (भ्वा प अ) २ वृज (चु) परिहृ (भ्वा प अ)। स पु, पलायन अपधावन, अप, यान द्रवण परिहरण।

भाग दौड़, स स्त्री, दे 'भगदड़'।

सिर पर पैर रखकर भागना, मु, महावेगेन पलायन या अपधाव।

भागनेवाला, स पु दे 'भगोड़ा'।

भागवत, स पु (स न) श्रीमद्भागवत, महापुराणविशेष २ देवीभागवतपुराण ३ भगवद्भक्त। वि, ऐश्वर, वैष्णव।

भागार्थी, वि (स थिन्) भाग-अंशखंड, इच्छुक-कामिन् अर्थिन्।

भागार्ह, वि (स) अंशिन्, अंशभागिन्, भाग धारिन् भागिन् २ विभज्य, अंशनीय, वण्टनीय।

भागिनेय, स पु (स) दे 'भांजा'।

भागी, स पु (स गिन्) अंशिन्, अंश भाग, अंशहारिन् २ दायाद, दायिक, रिक्थिन् अंशक।

भागीरथ, वि (स) भगीरथ-सम्बन्धिन् विषयक-सदृश।

भागीरथी, स स्त्री (स) गंगा, जाह्नवी २ गंगाया वामतीरशाखाविशेष।

भाग्य, स पु (स न) भागधेय, दिष्ट, अदृष्ट, दैव, नियति (स्त्री) विधि, भवितव्यता, विपाक, प्राक्तनम्।

—उदय, स पु (स) पुण्योदय, दैवानुकूलता।

—चक्र, स पु (स न) दैवगति (स्त्री), भाग्यचक्र।

—वश,—वशात्, क्रि वि नैभाग्येन, सुदैवेन दिष्ट्या दैवात्।

—वान्, वि (स वत्) भाग्यवान्-न्, महाभाग, सुभग, धन्य, सौभाग्य पुण्य, वत् सुकृतिन्, धनिन्।

—हीन वि (सं) हतदुर्-मन्द, भाग्यभाग, दुर्दैव, दैवहतक।

भाजक, वि (स) विभाजक, विभेदक, विच्छेदक, विभाजयितृ २ हर, हार, हारक (गणित) दे 'भागफल' में।

भाजन, स पु (स न) दे 'पात्र'।

भाजित, वि (स) विभक्त, विभाजित २ पृथक्कृत, विश्लेषित।

भाजी, स स्त्री (स) व्यंजन, उपसेचन, अवसेचक, दाक, हरितक, शिग्रु २ दे 'भाड़'।

भाज्य, वि (स) भागार्ह, भजनीय। स पु (स न) भाज्यांक (गणित) दे 'भागफल' में।

भाट, स पु (स भट्ट) वाग्मिजातिविशेष। २ चारण, वंदिन्, वैतालिक, मागध, स्तुति पाठक, मखक ३ चाटुकार ४ राजदूत।

भाटा, स पु (हिं भाटना) वेला, परिवर्त अपचय, क्षीयमाण-अपचीयमान, वेला।

ज्वार—, स पु वेलोपचयापचयौ (पु द्वि)।

भाड़, स पु (स भ्राष्ट्र पु) अवरीष, भर्जनापाक।

—झोंकना, मु, क्षुद्रकार्य कृ २ काल व्यर्थ या (प्रे यापयति)।

—में झोंकना वा डालना, मु, नश् (प्रे), क्षै (प्रे क्षपयति) २ त्यज् (भ्वा प अ), उपेक्ष् (भ्वा आ से)।

—में पड़े, मु, नश्यतु, भस्मसात् भवतु।

भाड़ा, स पु (स भाटक-क) भाट, भाटि (स्त्री)।

—भाड़े का टट्टू, मु, अस्थिर, मत्यायिन् २ स्वार्थपर, अर्थपर ३ अल्पमूल्य, गुण सार, हीन।

भात, स पु (स भक्त) ओदन-न, अन्न, अंधस (न) कूर, भिस्सा, दीदिवि २ वर वधूपित्रोर्भक्तभोजनात्मको वैवाहिकरीतिभेद।

भाथा, स पु (स भस्त्रा) दे 'तरकश'।

भादों, स पु (स भाद्र) भाद्रपद, नभस्य, प्रोष्ठपद।

भाद्र, भाद्रपद, स पु (स) दे 'भादों'।

भाद्रपदी, स स्त्री (स) भाद्री, भाद्र भाद्रपद, पूर्णिमा।

भान, स पु (स) प्रकाश, ज्योतिस् (न) २ ज्ञान ३ आभास, प्रतीति (स्त्री)।

भानजा, स पु., दे 'भांजा'।

भानजी, स स्त्री दे 'भांजी'।

भानमती, स स्त्री (स भानुमती) ऐन्द्र-जालिकी, मायिनी।

—का पिटारा, स पु, विषमवस्तुसंग्रह ।
भाना, क्रि अ, दे 'पसन्द आना'।
भानु, स पुं (स) रवि, सूर्य २ किरण ।
भानुजा, } स स्त्री (स) यमुना, कालिन्दी,
भानुतनया, } भानुसुता ।
भाप, स स्त्री (स वा(वा)ष्प पम् ।
—निकलना, क्रि अ, वा(वा)ष्पायते (ना धा) वाष्प उत्क्षिप् (तु प अ)-उद्गृ (तु प से)।
—देना, क्रि स, वाष्पेण स्विद् (प्रे) या पच् (भ्वा प अ)।
—बनना या बनाना, उद्वाष्पण, वाष्पी, भवन-करणम् ।
भाभी, स स्त्री (स भ्रातृभार्या) अग्रजपत्नी २ भ्रातृ,-जाया-पत्नी, प्रजावती ३ जननी।
भामा, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ नारी ३ क्रुद्धा स्त्री।
भामिनी, स स्त्री (स) कोपना स्त्री २ नारी।
भार, स पु (सं) दे 'बोझ'।
—वाह, स पु (स) भारिन्, भारिक, भार-हर-हार, वाह(हि)क ।
—उठाना, मु, प्रत्यर्पणं अगीकृ ।
—उतरना, मु, उत्तरदायित्व ह्रा (जु प अ)।
भारत, स पुं (स न) भारतवर्ष पुं, भ(भा)रतखंड २ महाभारतग्रन्थ ।
भारती, स स्त्री (स) गिर-वाच् (स्त्री), वाणी २ सरस्वती, शारदा ३ वृत्तिभेद (सा)।
भारतीय, वि (स) भारत,-देशीय-वर्षीय। सं पु, भारतवासिन्।
भारी, वि (स रिन्) भारिन्, गुरु, दुर्वह, भारवत् २ कराल, भीषण ३ महत्, वृहत्, विशाल ४ अत्यन्त, अत्यधिक ५ असह्य, दुर्भर, दुधर ६ प्रबल ७ शान्त, गंभीर ८ शांत, ग(गं)भीर।
—पन, स पु, भारवत्त्व, गुरुत्व, गरिमन्।
—भरकम, वि, अति-बहु, भारवत्।
पैर भारी होना, मु, गर्भं धृ (चु)।
भार्या, स स्त्री (स) दारा (पु बहु), द 'पत्नी'।
भाल, सं पु (सं न) ललाट, अलिक, गोधि (पु स्त्री), निट(टि)ल, मूर्धन् (पु), कन्न, मस्त(स्ति)क, मस्तक ।
—चन्द्र,—नेत्र,—लोचन, स. पुं (सं) शिव ।
भाला, सं पु (स भल्ल स्त्र) द 'बरछा'।
—बरदार, स पुं (हि + फा) द 'बरछैत'।
भालू, स पु (स भल्लूक) भ(भ)ल्ल(ल्लु)क, ऋक्ष, भल्ल, दुर्नाम, दीर्घकेश, दुश्चर, भाल्लुक, भाल्लूक ।
भाव, स पु (स) अस्तित्व, सत्ता, विद्यमानता २ मानस मनो, विकार-वृत्ति (स्त्री), विचार ३ अभिप्राय, आशय ४ मुखाकृति (स्त्री) ५ जन्मन् (न) आत्मन् (पु) ७ पदार्थ ८ विद्वस् (पु) ९ जन्तु १० कृत्य, विभूति (स्त्री)। ११ संविषय, भोग १२ प्रेमन् (पु न), अनुराग १३ समार १४ कल्पना १५ स्वभाव १६ गूढेच्छा १७ शैली रीति (स्त्री) १८ दशा १९ भावना २० विश्राम २१ प्रतिष्ठा २२ वस्तु, गुण धर्म २३ उद्देश्य २४ मूल्य, अर्घ, वस्न, अवक्रय, अर्घमूल्य, प्रमाण २५ श्रद्धा, भक्ति (स्त्री) २६ स्थायि व्यभिचारिसात्त्विकभावा (काव्य), नायिकादिमानसविकारा २७ हाव, दे 'नखरा'।
—ताव, स पु, मूल्य, अर्घ ।
—वाचक, स स्त्री (स -वाचिका) संज्ञाभेद (व्या, उ श्रेष्ठता)।
—वाच्य, स पु (स न) वाच्यभेद (व्या, उ हस्यते)।
—उतरना या गिरना, मु, अर्घः अपचि (कर्म), मूल्य ह्रस् (भ्वा प से), मदायते (ना धा)।
—चढ़ना या बढ़ना, मु अर्घः वृध् (भ्वा आ स), अवक्रय उपचि (कर्म)।
भावक, वि (स) उत्पादक, स्रष्टृ २ कल्याण कारक ३ उत्प्रेक्षक ४ काव्यरसिक।
भावज, सं स्त्री (सं भ्रातृजाया) द 'भाभी' (१)।
भावता, वि (हि भावना = अच्छा लगना) प्रिय, रुचिकर, रोचक। स पु, कान्त, प्रियतम, प्रेमपात्रम्।
भावन, वि (स) उत्पादक, प्रकाशक। स पु (स) निमित्तकारणम् २ सृष्टिकर्तृ ३ शिव। (स न) ध्यान-चिन्तनम् २ चिन्तनम् ३ कल्पना ४ अतिभावना।
भावना, स स्त्री (सं) ध्यान, चिन्ता, विमर्श,

विचार २ कामना, वासना, इच्छा ३ स्मृत्य नुभवजश्चित्तसंस्कारभेद ४ सामान्य, विचार-कल्पना ५ दे 'पुट' (वैद्यक)। वि, शोभन, प्रिय, रोचक। क्रि अ, दे 'पसंद आना'।

भावनीय, वि (स) चिन्तनीय, कल्पनीय।

भावाभाव, स पु [स-वौ (द्वि)] अनित्यत्वानित्यत्वे (न) २ उत्पत्तिविनाशौ ३ जन्म मृत्यू (सब द्वि)।

भावार्थ, स पु (स) तात्पर्यार्थ, आशय, तात्पर्य, भाव २ भावप्रधानटीका।

भावित, वि (स) विचारित, चिन्तित।

भावी, वि (सं विन्) दे 'भविष्य' (वि)। स स्त्री, दे 'भविष्य' स पु २ दे भवितव्यता'।

भावुक, वि (सं) रसिक, सरस, रसभूयिष्ठ, भावप्रधान २ चिंतक, विचारक।

भाव्य, वि (स) भवितव्य, अवश्यभाविन्।

भाषण, स पु (स न) कथन, वचन, उक्ति (स्त्री) २ व्याख्यान, प्रवचन, उपदेश।

भाषांतर, स पु (स न) अनुवाद।

—कार, स पु (स) अनुवादक।

भाषा, स स्त्री (स) वाणी, वाच्, गिर् (स्त्री), भारती, गिरा, उदीरणा २ हिन्दीभाषा ३ वचस् (न), वचन, वाक्य, उक्ति (स्त्री), व्याहार, निगद, शब्द, भाषित, आलाप ४ सरस्वती ५ अभियोगपत्र (अर्जीदावा)।

भाषित, वि (स) कथित, उक्त, उदीरित। स पु (स न) कथन, वार्तालाप।

भाषी, स पु (स षिन्), वादिन्, वक्तृ।

भाष्य, स पु (सं न) टीका, व्याख्या, वृत्ति (स्त्री) विवरणम्।

—कार, स पु (स) टीका भाष्यव्याख्या, कार कृत् (पुं) २ महाभाष्यकार, पतञ्जलि, गोनर्दीय।

भास, स पु (स) सस्कृतभाषाया महाकवि विशेष २ कान्ति-दीप्ति (स्त्री) ३ कल्पना ४ गोष्ठ ५ कुक्कुट ६ गृध्र ७ पक्षिन्।

भासना, क्रि अ (स भासन) भास् प्रकाश् (भ्वा आ से) २ प्रति इ (कर्म) ३ दृश (कर्म)।

भासुर, वि (स) दे 'भास्वर'।

भास्कर, स पु (स) सूर्य २ अग्नि, (स न) सुवर्ण ३ ज्योतिषग्रन्थकारो भास्कराचार्य।

भास्वर, वि (स) द्युति कान्ति दीप्ति-मत्, उज्ज्वल, भासुर, देदीप्यमान, भ्राजमान।

भिंडी, स स्त्री (स भिंटा) भिण्डा भिण्डक, सुशाक, करपर्ण, वृत्तबीज, चतुष्पुण्ड्र।

भिक्षा, स स्त्री (स) याञ्चा, याचना, अर्थना, २ भिक्षान्न ३ भक्ष्य, दानम्।

—पात्र, स पु (स न) भिक्षादान, पात्र भाजनम्।

भिक्षु, स पु (स) परिव्राज, परिव्राजक, व्रजक, (बौद्ध) सन्न्यासिन्, मस्करिन्, प(पा) राशरिन् २ दे 'भिखारी'।

भिक्षुक, सं पु, (स) दे 'भिखारी'।

भिखमंगा, स पु दे 'भिखारी'।

भिखारिन, स स्त्री (हिं भिखारी) भिक्षुकी, भिक्षाकी, भिक्षाचरी।

भिखारी, स पु (हि भीख) भिक्षु, भिक्षुक, भिक्षाक, भिक्षाचर, भिक्षाशिन्, मार्गण, याचक, याचनक, वनीयक, अर्थिन्।

भिगोना, क्रि स (हिं भीगना) क्लिद् (प्रे), उद् (रु प से), आर्द्रीकृ।

भिजवाना, क्रि प्रे, ब 'भेजना' के प्रे रूप।

भिटनी, स स्त्री (देश) स्तनाग्र, चूचुकम्।

भिड़, स स्त्री (हिं बरें?) वरट-टा-टी, द्रुणा विका, गन्धोली, गृहकारिका।

भिड़ना, क्रि अ (अनु भड?) सघट्ट (भ्वा आ से) समृद्-सहन् (कर्म) उप, ऋ या (अ प अ), समिल (तु प से) ३ कलहायते (ना धा), युध (दि आ अ)।

भिड़ाना, क्रि स, ब 'भिड़ना' के प्रे रूप।

भितल्ला, स पु (हिं भीतर+तल) दे 'अस्तर'। वि आन्तर, आभ्यन्तर, दे 'भीतरी'।

भितल्ली, स स्त्री, (हिं भितल्ला) पेषण्या अधस्थ पाषाण।

भित्त, स पु (स न) भाग, अश २ खण्ड, शकल-लम् ३ दे 'भित्ति'।

भित्ति, स स्त्री (स) कुड्य, कुन्य, कुड्यक, भित्तिका २ भित्ति-गृह,-मूलम् ३ चित्राधार ४ छेद, भेद ५ खण्ड शकल ६ भग्न वस्तु (न) ६ कण, किलन, तृणपूली ७ दोष ८ अवसर।

भिदना, क्रि अ (स भिद्) विध्-व्यध् (कर्म), छिद्रित (वि) भू २ आहन् व्रण् (कर्म)।

भिनकना, भिनभिनाना, क्रि अ (अनु भिनभिन) भिणभिणायते/ना धा), भिणभिण, रणित निनद नन् (प्रे)।

भिनभिनाहट, स स्त्री (हिं भिनभिनाना) भिणभिणायित, भिणभिण, रणित निनद, चक्कार, गुञ्जनम्।

भिन्न, वि (स) असंबद्ध, अलग्न, पृथग्भूत, विश्लिष्ट २ अन्य, इतर, अपर। स पु (स न) अपूर्णांक, राशि, भाग ।

—भिन्न,वि, अनेक, विविध २ विभिन्न, विभ।

भिन्नता, स स्त्री (स) भिन्नत्व, पृथक्त्व, भेद, अंतरम्।

भिलावाँ, स पु (स भल्लातक) भल्लात, शोथहृद (पु), वीर,-तरु वृक्ष, कृमिघ्न, भूतनाशन, स्फोटबीजक, अग्निकृत (पु)।

भी, अव्य (स अपि) च, अपि च २ अवश्य ३ अधिकम्।

भीख, स स्त्री (स भिक्षा) दे 'भिक्षा' (१ ३)।

—मांगना, क्रि स, भिक्ष् (भ्वा आ से), भिक्षा याच (भ्वा आ से)।

भीग(ज)ना, क्रि अ (स अभ्यंजन>) क्लिन्नी-आर्द्री भू, उद् (कर्म उद्यते), क्लिद् (दि प वे)।

भीगी बिल्ली होना, मु, भयात् तूष्णीं स्था (भ्वा प अ)।

भीड़, स स्त्री (हिं भिन्ना) जन,-समुदाय समर्द-ओघ-समूह २ आ द्विपद् (स्त्री)।

—भड़क्का, स पु | —भाड़, स स्त्री } सुमहान् जनसमर्द इ ।

भीत¹, वि (स) भयात्त, त्रस्त, सभय।
औंदे की भीत ज्यों बालू की भीत, मु, * क्षुद्रस्य हि नश्वरम्।

भीत², स स्त्री, दे 'भित्ति'।

भीतर, क्रि वि (स अभ्यंतरे) अंत, गर्भे, -तरे, दे 'अंदर'। स पु, हृदय, मानस, अंत करण २ अंत पुर, अवरोध ।

भीतरी, वि (हिं भीतर) आंतर अभ्यन्तर [-री (स्त्री)], अन्तर, अन्तरस्थ, अन्तर्भव २ गुप्त, गूढ़, प्रच्छन्न।

भीति, स स्त्री (सं) दे 'भय'।

भीम, सं. पु (सं) युधिष्ठिरानुज, भीमसेन, वृकोदर। वि, दे भयंकर २ सुमहत्, अति विशाल।

—के हाथी, मु, अप्रत्यागामि अप्रत्यावर्ति, पदार्थ ।

भीरु, वि (स) कातर, त्रस्नु, भयशील, भय(लु)क।

भीरुता, स स्त्री (स) कातर्य, कापुरुषत्व, क्लीवता, त्रस्नुता।

भील, स पु (स भिल्ल) म्लेच्छजातिविशेष।

भीलनी, स स्त्री (हिं भील) भिल्ली, भिल्लनारी।

भीषण, वि (स) दे 'भयंकर'।

भीषणता, स स्त्री (स) दे 'भयंकरता'।

भीष्म, स पु (स) गांगेय, देवव्रत, शान्तनु पुत्र २ शिव । वि, दे 'भयंकर'।

भुक्खड़, वि (हिं भूख) बुभुक्षित, क्षुधार्त २ औदरिक, बहुभोजिन् अघस्मर, घस्मर, अत्याहारिन् ३ दरिद्र, दीन।

भुक्त, (स) भक्षित, जग्ध २. उपभुक्त, व्यवहृत।

—शेष, वि (स) उच्छिष्ट, जुष्ट।

भुक्ति, स स्त्री (स) भोजन, आहार, अन्न २ विषयोपभोग, लौकिकसुखम्।

भुखमरा, वि (हिं भूख-मरना) दे 'भुक्खड़' (२, ३)।

भुगतना, क्रि स (स भुक्त>) उप,भुज् (रु आ अ), अनुभू, प्राप् (स्वा प अ) २ क्षम्, सह (भ्वा आ से), मृष् (दि प से, चु) ३ (ऋणादिक) शुध् (दि प अ), अपाकृ (कर्म)। क्रि अ, समाप् (कर्म), पूर् (कर्म), निवृत् (भ्वा आ से) अवसो (दम)।

भुगतान, स पुं (हिं भुगतना) निवृत्ति समाप्ति सिद्धि पूर्ति (स्त्री) २ (ऋणादि वस्य) निस्तार, परिशुद्धि, अपनयनम्।

भुगताना, क्रि प्रे व 'भुगतना' क्रि स के प्रे रूप।

भुग्गा, वि मूढ, जड़, अज्ञ, निर्बुद्धि।

भुग्न, वि (स) अराल, जिह्म, वक्र, न्युब्ज, आ न(ना)मित।

भुच्च, भुच्चड़, वि (स भूत+हिं चढ़ना) जड़, अज्ञ, मूढ, जडमति।

भुजंग, भुजगम } स पु (स) दे 'सर्प'।
भुजगी गिनी, म स्त्री, दे 'सर्पिणी'।
भुज, म पु (स) भुजा, वाहु, दोर्दंड २ (ज्योमैट्री में) भुज, बाहु, पार्श्व ।
—दड, म पु (म) दोर-बाहु-दड ।
—पाश, म पु (म) अलिंगन, परिरंभ ।
—बन्ध, म पु, अगद, केयूर, वाहुवलय ।
—मूल, म पु (स न) कक्षा, दोर्मूल, खडिक ।
भुजना, स पु (हिं भूजना) *भृष्टान्नम्।
भुजा, स स्त्री (म) दे 'भुज'।
भुजिया, म स्त्री (हिं भूजना) *भर्जिता भृष्टशुष्क शाक शिम्बु । स पु क्वथितधान्य २ क्वथितधान्यतडुल ।
भुट्टा, म पु (स भृष्ट>) मकायकणिशम्।
भुतना, म पु दे 'भूत' (७-९)।
भुनगा, स पु (अनु) (१२) कीट पतंग, भेद ।
भुनना, क्रि अ, व 'भूनना' के कर्म रूप २ व 'भुजना' के कर्म रूप।
भुनभुनाना, क्रि अ (अनु) गुणगुणायते (ना धा) अव्यक्त वद (अ प अ)।
भुनवाना, क्रि प्रे, व 'भूनना' के प्रे रूप । २ व 'भुनाना' के प्रे रूप।
भुनाई[1], म स्त्री (हिं भूनना) भर्जन, भृति भाटि (दोनों स्त्री)।
भुनाई[2], स स्त्री (हिं भुनाना) नाणकवि निमयभाटि भृति (दोनों स्त्री)।
भुनाना[1], क्रि प्रे व 'भूनना' के प्रे रूप।
भुनाना[2], क्रि म (सं भजन) अल्पनाण केभ्य बृहन्नाणकानि प्रतिदा (जु उ अ) नाणकानि*भन*चुर (प्रे) नाणकानि विनि मे (भ्वा आ अ)।
भुरकुस, स पु (अनु भुर>) *चूर्ण, क्षोद ।
—निकालना, मु, निर्दयं तड् (चु) २ नश घम (प्रे)।
भुरता, म पु (अनु भुर>) दे 'भरता' २ चूर्णित विकृत, पदार्थ ।
—करना, मु, आपट्य चूर्ण (चु)-पिष् (रु प अ)।
भुरभुरा, वि (अनु) भिदुर, भगुर, सुभग २ वालुकानिभ।

भुलक्कड, वि (हिं भूलना) विस्मरणशील, मद अल्प,स्मृति २ प्रमादिन, प्रमत्त ।
भुलाना, क्रि प्र व 'भूलना' के प्रे रूप।
भुलावा, म पु (हिं भुलाना) प्र,वचना, प्रतारणा, छलम्।
—देना, क्रि स, प्रतॄ (प्रे), वच (चु)।
भुव, अव्य (म) आकाश, अतरिक्ष लोक द्वितीयलोक २ द्वितीयमहाव्या हृति (स्त्री)।
भुवन, स पु (म न) जगत् (न), जगती, सृष्टि (स्त्री), ससार २ जल ३ जन, लोक ४ चतुर्दश-भुवनानि (न बहु)-लोका ।
त्रि—, म पु (स न) त्रिलोकी, लोकत्रयम् ।
भुशुडि, स पु (म) काकभुशुडि । (म स्त्री) भुशुडी, अस्त्रभेद ।
भुस, म पु, दे 'भूसा'।
भुसी, स स्त्री, दे 'भूसी'।
भूँकना, क्रि अ (अनु) दे 'भौंकना' (१२)।
भूँचाल, (स भूचाल) मही, भू-कप प्रकप चलन, क्ष्माचलनम्।
भूँजना, क्रि स, दे 'भूनना' (१२)।
भूँडोल, स पुं दे 'भूँचाल'।
भू, म स्त्री (स) धरणी, धरा, दे 'पृथिवी' २ स्थान, स्थलम्।
—कप, स पु (म) दे 'भूँचाल'।
—चाल, —डोल, } दे 'भूँचाल'।
—तल, स पु (म न) धरातल २ पृथिवी ।
भूख, स स्त्री (म बुभुक्षा) क्षुधा,क्षुध (स्त्री), जिघत्सा, अशनाया, अशनायित २ आवश्य कता ३ अभिलाष ।
—का अभाव, स पु, अरुचि (स्त्री), भक्त उपरान द्वेष ।
—प्यास, सं स्त्री, क्षुधापिपासे, क्षुत्तृषे ।
भूखों मरना, मु, आहाराभावात् मृ (तु आ अ)-अवसद् (भ्वा प अ)-नश् (दि प वे)।
—लगना, क्रि अ, क्षुध् (दि प अ, चतुर्थी के साथ), बुभुक्ष (सन्नन्त, बुभुक्षति ने) क्षुधया अर्द-पीड् (कर्म)।

भूखा, वि (हिं भूख) क्षुधा आविष्ट आतुर आर्त अविन पीड़ित, क्षुधित, जिघत्सु, बुभुक्षु, अन्नार्थिन अशनायित २ इच्छुक ३ दरिद्र।

—नंगा, वि दीन, दरिद्र निधन अकिंचन।

—प्यासा, वि क्षुत्पिपासित क्षुत्तृषार्त।

भूखे प्यासे, मु *निरन्नपान अन्नपान विना।

भूगर्भ, स पु (स) धरा अन्तर अभ्यन्तर-गर्भ।

—गृह, स पु (स न) भू-गेह गृहम्।

—शास्त्र, स पु (स न) भूतत्त्व शास्त्र विद्या विज्ञानम्।

—शास्त्रवेत्ता, स पु (स-तृ) भू-तत्त्वज्ञ, भूगर्भशास्त्रज्ञ।

भूगोल, स प (स) भूमण्डल भुवनकोष २ भूगोल, विद्या शास्त्र, भूपृष्ठविद्या।

—वेत्ता, स पु (स-तृ) भूगोलशास्त्रज्ञ।

भूचक्र, स पु (स न) पृथ्वीपरिधि २ विषुवद्रेखा ३ अयनवृत्त ४ क्रान्तिवृत्तम्।

भूचर, स पु (स) स्थलचर २ शिव।

भूत, स पु (स न) पृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाश पञ्चक २ जड़चेतनपदार्थ, चराचरवस्तु (न) ३ प्राणिन्, जीव ४ भूत-अतीत,-काल ५ शव ६ क्रियारूपभेद (व्या) ७ रुद्रानुचर, पिशाचा ८ मृतस्य आत्मन् (पु) ९ पिशाच, प्रेत रक्षस् (न) रात्म। वि (स) गत, वि, अतीत २ युक्त ३ सदृश ४ परिणत (सब प्राय समासान्त में)।

—उतारना क्रि स, भूतान् निष्कस (प्रे)-अपनुद् (तु प अ)-अपसृ (प्रे)।

—काल, स पु (स) पूर्वभूत अतीत काल समय।

—नाथ, }
—भावन, } सं पु (स) शिव।

—पूर्व, वि (सं) प्राक्तन पूर्वतन, पौर्वक।

—सञ्चार, स पु (स) भूतावेश।

—चढ़ना या सवार होना, मु, अनिर्वचनीय अवस्था (भ्वा आ अ) २ आग्रहं कृ (दि प से)।

भूतदविद्या, स स्त्री (स) दे 'भूतभावविद्या'।

भूतात्मा, स पु (सं-त्मन्) जीवात्मन्, देहिन् २ शरीर ३ परमेश्वर ४ विष्णु ५ शिव।

भूतानुकम्पा, स स्त्री (स) जीव भूत प्राणि, दया कृपा अनुकम्पा।

भूताविष्ट, वि (स) पिशाच भूत, ग्रस्त पीड़ित-आक्रान्त।

भूतावेश, स पु (स) भूत-सवार आदि (स्त्री), पिशाचावेश।

भूति(त)नी, स स्त्री (हि भूत) शाकिनी, डाकिनी, राक्षसी, पिशाची चिका।

भूदेव, स पु (स) ब्राह्मण भूसुर।

भूधर, स पु (स) गिरि, पर्वत।

भूनना, क्रि स (स भर्जन>) भृज् (भ्वा आ से), भ्रस्ज् (तु उ अ), ईषत्तापेन प्लुष (भ्वा प से) शुष (प्रे)।

भूप, स पु (स) भूपति, भूपाल, नृप, राजन् (पु)।

भूपति, }
भूपाल, } स पु (स) नृप, दे 'राजा'।

भूभल, स स्त्री (स भू + हिं बलना) उष्ण, भसित भस्मन् (न) -बालुका।

भूमण्डल, स पु (स न) पृथिवी, धरा, धरित्री।

भूमिका, सं स्त्री (स) प्रस्तावना उपोद्घात, अवतरणिका, आमुख, मुखबन्ध २ वेशान्तर परिग्रह।

भूमि, स स्त्री (स) धरा, धरित्री, दे. 'पृथिवी'।

—ज, वि (स) भूमिजात।

—जा, स स्त्री (सं) जानकी, सीता।

—पुत्र, सं पु (स) मङ्गलग्रह, भौम।

—सुता, सं स्त्री (सं) सीता वैदेही।

भूय, अव्य (सं भूयस्) पुन, पुनरपि।

भूरा, वि (स बभ्रु) धूम्रिमृद् -वर्ण रत २ कपिश, पिंग, पिंगल। सं प १-२ बभ्र पिंगल -वर्ण -रंग ३ शर्करा, सिता।

भूरि, वि (स) अधिक, बहु प्रचुर २ महत्, गुरु।

भूल, सं स्त्री (हिं भूलना) विस्मरण विस्मृति (स्त्री) २ दोष अपराध ३ अशुद्धि (स्त्री), स्खलित स्खलनं २ मोह, भ्रम।

—चूक, स स्त्री, प्रमाद, अपराध, त्रुटि (स्त्री), स्खलितम्।
—भुलैयाँ, स स्त्री, सुगहनस्थान, भ्रान्तिचक्र २ संशय-संदेह, असमंजस।
भूलना, क्रि स (प्रा भुल्लइ) विस्मृ (भ्वा प अ) २ स्खल् (भ्वा प से), प्रमद् (दि प से) ३ त्यज् (भ्वा प अ), हा (जु प अ)। क्रि अ, विस्मृ (कर्म) २ भ्रश-भ्रन्श् (दि प से), च्यु (भ्वा आ अ) ३ गर्वित अवलिप्त (वि) भू ४ क्रन्द् (भ्वा आ से), स्निह् (दि प से, सप्तमी के साथ)। स पुं, विस्मरण, विस्मृति (स्त्री) २ प्रमाद, स्खलित ३ भ्रंश, नाश।
भूलने योग्य, वि, विस्मर्तव्य, विस्मरणीय।
भूलनेवाला, स पु, दे 'भुलक्कड़'।
भूला भटका, वि, पथभ्रष्ट, भ्रष्ट।
भूला हुआ, वि, विस्मृत, स्मृतिपथच्युत अपेत।
भूलोक, स पु (स) मर्त्यलोक, भूमि (स्त्री)।
भूशायी, वि (स-यिन्) धराशायिन्, मृत, २ भूमिशयन ३ भूमौ पतित।
भूषण, स पु (स न.) आभरण, अलंकार, अभि, भूषण, दे 'गहना'।
भूषणीय, वि (स) भूष्य, अलंकार्य, मडनीय।
भूषा, स स्त्री (स) अलंक्रिया, परिष्कार क्रिया, प्रसाधन, नेपथ्यम्।
भूषित, वि (स) अलंकृत, परिष्कृत, प्रसाधित, मण्डित।
भूसा, स पु (स तुष>) पलाल, यवस, धान्यतृण, पल।
भूसी, स स्त्री (हिं भूसा) दे 'भूसा' २ तुष, बुस, तुषम, कडंगर, धान्यत्वच (स्त्री)।
भूसुर, स पु (स) विप्र, ब्राह्मण।
भृंग, स पु (स) भ्रमर, षट्पद २ कीटभेद।
—राज, स पुं (स) पक्षिभेद २ केदार जन, केश्य, कुन्तलवर्द्धन, भृंगराज।
भृकुटी, स स्त्री (स) दे 'भौं'।
भृगु, स पु (स) मुनिविशेष २ परशुराम।
—नाथ, सं पु (स) परशुराम भृगुराम।
भृत, वि (स) पूरित, पूर्ण, निचित २ पालित, पोषित।

भृतक, स पु (स) वैतनिक, कर्मकर।
भृतकाध्यापक, स पु (स) सवेतन शिक्षक।
भृति, स स्त्री (स) वेतन, मूल्य २ कर्मण्या, तुलिका, भरण्य, भर्मण्या ३ मूल्य ४ पूरण, भरण ५ पालन ६ वैतनिकता।
भृत्य, स पु (स) सेवक, दे 'नौकर'।
भृत्या, स स्त्री (स) सेविका, दासी २ दे 'भृति'।
भृश, क्रि वि (स भृश) अत्यंत, अत्यधिकम्।
भैंगा, वि (देश) केकर, केदर, टेर, टगर, वलिर।
—पन, स पु, तिर्यग्दृष्टि (स्त्री), टेरता इ।
भेंट, स स्त्री (स भिद्>) स(समा)गम, सम्मिलन, साक्षात्कार २ उपहार, उपायनं, प्राभृतक, प्रदेशनम्।
—करना, क्रि स, संमिल् (तु प से), अभि-सं-मुखीभू, सङ्ग (अ प अ) २ उत्सृज (तु प अ), उपहृ (भ्वा प अ), उपढौक (प्रे), ऋ (प्रे अर्पयति)।
भेक, स पु (स) दे 'मेंढक'।
भेख, स पु दे 'वेष'।
भेजना, क्रि स (स व्रजन>) स, प्रेष (प्रे), प्रहि (स्वा प अ), प्रस्था (प्रे), विसृज् (तु प अ), स, प्रेर् (प्रे)। स पु, स, प्रेषण प्रेरण, विसर्जन, प्रस्थापन, प्रहिति (स्त्री)।
भेजने योग्य, वि, प्रेषणीय, प्रस्थाप्य, प्रहयणीय।
भेजनेवाला, स पु, प्रेषक, प्रहेतृ।
भेजा हुआ, वि, प्रेषित, विसृष्ट, प्रहित।
भे(भि)जवाना, क्रि प्रे, व 'भेजना' का प्रे रूप।
भेजा, स पु (देश) दे 'मगज'।
भेड़, स स्त्री (स मेण्ड >) मेषी, एडका, अविला, उरणी, उरा, कुररी, जालकिनी, अवि (स्त्री), रुजा (पु, दे 'भेड़') २ मूर्ख, मूढधी, ऋजु।
भेड़ना, क्रि स, दे 'बंद करना'।
भेड़ा, स पु (स मेड) अवि, उरण, उरभ्र, ऊर्णायु, एडक, मेढ़, हुड, रो(लो)मश, मेढ्र, मेण्ड।
भेड़िया, स पु (हिं भेड) वृक, कोक, ईहामृग।
—धसान, स पु, अंध-अनुकरण-अनुसरण-अनुवर्तनम्।

भेड़ी, स स्त्री, दे 'भेड़' ।
भेद, स पु (स) छेद दे 'भेदन' २ शत्रु वशीकरणोपायभेद, उपजाप ३ रहस्य, गूढाशय ४ अन्तर, विशेष ५ प्रकार, जाति (स्त्री) ।
—खोलना, क्रि स, रहस्य विवृ (स्वा उ से)।
—पाना, क्रि स, गुह्य बुध (भ्वा प से) ।
—बुद्धि, स स्त्री (स) विश्लेष, विच्छेद, ऐक्याभाव ।
—भाव, स पु (स) अन्तर, विशेष ।
—लेना, क्रि स, गोप्य ज्ञा (सन्नत जिज्ञासते)।
भेदक, वि (स) भेत्तृ छेतृ २ रेचक ।
भेदन, स पु (स न) विदारण, छेदन, वेधन व्यध धन, त्रोटनम् । वि, भेदक २ रेचक ।
भेदिया, } स पुं (सं भेद >) दे 'जासूस'
भेदी,[1] } २ रहस्यविद् (पु) ।
भेदी[2], वि (स भेदिन) छेदक, विदारक ।
भेद्य, वि (स) छेद्य, विदारणीय ।
—रोग, स पुं (स) शल्यचिकित्स्यो रोग ।
भेरी, स स्त्री (स) भेरि (स्त्री), दुंदुभि, डिंडिम, पटह, ढक्का ।
भेली, सं स्त्री (देश) गुडपिंड -डम् ।
भेष, स पु, दे 'वेष' ।
भेषज, स पु (स न) औषधं, अगद, भैषज्यम् ।
भेस, स पु, दे वेष' ।
भैंस, स स्त्री (स महिषी) मदगमना, महा क्षीरा पयस्विनी कलुषा ।
भैंसा, स पु (स महिष) अश्वारि कलुष, वाहर कृष्णशृग, गद्‌गदस्वर, नर ( )१, यमरथ लुलाय (द), वीरस्कन्ध, सैरिभ, हेरव ।
भैया, स पु, दे 'भाई' ।
भैरव, स पु (स) शकर, शिव २ शिवगण भेद ३ रागभेद । वि, भीम, भीषण, भयङ्कर ।
भैरवी, स स्त्री (स) चामुण्डा, देवीविशेष २ रागिणीभेद ।
भैरो, स पु, दे 'भैरव' ।
भोंकना, क्रि स (अनु भक) सहसा शस्त्र ण्कि निविश (प्रे), व्यध (दि प अ) २ अकस्मात् आहन् (अ प अ) ।
भोंडा, वि, दे 'भद्दा' ।
भोंदू, वि दे, बुद्धू' ।
भोंपा, स पु (अनु भों) दे 'भोंपू' २ मूख, जड ।
भोंपू, स पु (अनु भों) काहल -ला, मुखवाद्यभेद ।
भो, अ० (स) हे, अरे, अयि ।
भोक्तव्य, वि (स) दे० 'भोग्य' ।
भोक्ता, वि (स भोक्तृ) स्वादक, भक्षक २ विलासिन्, विषयिन् ३ प्र-उप-योक्तृ। स पु, पति ।
भोग, स पु (स) सुख दु खादीनामनुभव २ सुख ३ दु ख ४ रति (स्त्री), सभोग ५ सर्पफण णणा ६ सर्प ७ धन ८ गृह ९ भक्षण १० शरीर ११ परिमाण १२ विपाक, कर्मफल १३ भुक्ति (स्त्री) (कुन्त्ता) १४ नैवेद्य १५ भाटक कम् ।
—लगाना, क्रि स, देवाय नैवेद्य ऋ (प्रे अर्पयति) २ भक्ष् (चु) ।
—विलास, स पु (स) आमोदप्रमोदा (पु बहु), सुख हर्ष ।
भोगना, क्रि स (स भोग >) दे 'भुगना' (१२) ।
भोगी, वि (स भोगिन्) भोग-विषय,-आसक्त-लम्पट, विलासिन् २ सर्प ।
भोग्य, वि (स) उपयोक्तव्य, उपयोगिन् २ भोगार्ह, उपभोक्तव्य ३ भक्ष्य । सं पुं (स न) धनं २ धान्यम् ।
भोज[1], स पु (स) धारानगरस्य नृपविशेष ।
भोज[2], स पु (स भोजन) भक्ष्य, आहार २ सहभोज, भोजनं सन्धि (स्त्री) ।
भोजन, स पु (स न) भक्षण, स्वादन, अशन, आस्वादनं २ खाद्यं, भोज्यं, भक्ष्यम् ।
—करना, क्रि स, भुज् (रु आ अ), भक्ष् (चु) ।
—भट्ट, सं पु (स भोजनभट्ट) अत्याहारिन्, अदर, घस्मर ।
—शाला, स स्त्री (सं) भोजन आलय आगार (र) २ पाकशाला महानस -सम् ।
भोजनाच्छादन, स पुं (स न) अन्नवस्त्र, अशनवसनम् ।
भोजपत्र, सं पु (सं) भूर्जवृक्ष, बहुलवल्कल, छत्रपत्र, मृदु बहु-त्वच् (पुं) ।

भोज्य, वि (स) भक्ष्य, खाद्य, अभ्यवहार्य । स पु , भक्ष्यपदार्थ ।

भोर, स पु (स विभावरी>) उषा, उपस (स्त्री) किम्र, भान, विहान -नम् ।

भोला, वि (हिं भूलना) सरल, ऋजु, निष्क पट, निश्छल २ मूर्ख, जड ।

—नाथ, स पु (हिं + स) शिव ।

—पन, स पु आर्जव, सरलता, निर्व्याजता २ मौर्ख्य, अज्ञता ।

—भाला, वि , निष्कपट, सरल, ऋजु ।

भौं, स स्त्री., दे 'भौंह' ।

भौंकना, क्रि अ (अनु भौं भौं) बुक्क (भ्वा प से, चु), भष् (भ्वा प से) २ प्र,जल्प् (भ्वा प से)। स पु, बुक्कन, भषण २ जल्पनम् ।

भौंतुवा, (हिं भौना=घूमना) तैलिक-तैलकार, वृष वृषभ । २ कीटभेद ३ हस्तरोगभेद ।

भौंर, स पु (स भ्रमर) दे 'भ्रमर' २ जल्प वर्त, भ्रमि (स्त्री) ।

भौंरा, स पु (स भ्रमर) दे 'भ्रमर' २ भ्रमरक-क, क्रीडनकभेद ३ भू ,गेह गृहम् ।

भौंरी, स स्त्री (स भ्रमरी) षट्पदी, मधुकरी २ घोटकादिशरीरस्थ रोम, चक्र-मडल-वर्तुल ३ वैवाहिक,-परिक्रम प्रदक्षिणा ४ आवर्त, जलगुल्म ।

भौंह, स स्त्री [स भ्रू (स्त्री)] विल्लिका, भ्रूलता, नयनोर्ध्ववर्ति रोमराजी ।

—चढाना या तानना, क्रु , कुप (दि प से), क्रुध (दि प अ) २ भ्रू(भ्रू)कुटीं बध् (क्र प अ)-रच् (चु) ।

भौगोलिक, वि (स) भूगोल, विषयक सम्बन्धिन् ।

भौंचक, भौचक्का, वि (स भयचकित>) विस्मयापन्न, विस्मित, ससाध्वस, भयाभिभूत, स्तमित ।

भौजाई, भौजी, स स्त्री (स भ्रातृजाया) दे 'भाभी (२)' ।

भौत, वि (स) भौतिक, भूतातिविष्ट २ पैशाचिक ३ भूताविष्ट । (स पु) भूतपूजा २ भूतयज्ञ ।

भौतिक, वि (स) भूतात्मक, भूतमय, आधिभौतिक २ पार्थिव ३ शारीरिक, दैहिक, दैव ।

भौम, वि (स) पार्थिव, भौमिक २ भूमिज । स पु , मगलग्रह , कुज ।

—वार, स पु (स) मंगलवासर ।

भौमिक, वि , दे 'भौम' वि । स पु , क्षेत्र, पति -स्वामिन् ।

भौमी, स स्त्री (स) जानकी, सीता, वैदेही ।

भ्रश, स पु (स) अध अव,-पतन पात २ वि ,नाश =ध्वस ३ पलायनम् ।

भ्रशित, वि (स) अव पातित २ वचित ।

भ्रम, स पु (स) भ्रांति (स्त्री), माया, मिथ्या,-मति (स्त्री) ज्ञान, आभास , अविद्या २ सशय सदेह ३ मूर्च्छाभेद ४ मूर्च्छा ५ कुलालचक्र ६ भ्रमण ७ भ्रमद्वस्तु (न) ।

भ्रमण, स पु (स न) पर्यटन, विचरण, परिभ्रमण २ गतागत ३ यात्रा ।

—करना, क्रि अ , पर्यट विचर (भ्वा प से), परिक्रम् (भ्वा दि प से) ।

भ्रमात्मक, वि (स) भ्रमोत्पादक २ सदिग्ध ।

भ्रमर, स पु (स) षट्पद, द्विरेफ, मधु, कर प-लिह् (पु), अलि, अलिन्, भृग , शिलीमुख , पुष्पधय , चचरीक २ कामुक ।

भ्रमरी, स स्त्री (स) षट्पदी, मधुकरी, शिलीमुखी २ जतुकालता, पुत्रदात्री ३ पार्वती ४ मृगीरोग , भ्रामरम् ।

भ्रमी, वि (स -मिन्) भ्रांत, भ्रमविशिष्ट, मिथ्याज्ञानिन् २ चकित, विस्मित ३ शका शील, साशक ।

भ्रष्ट, वि (स) अध -अव,-पतित, अव ,गलित स्रस्त, च्युत २ विकृत,दूषित, सदोष ३ दुर्वृत्त,-दुराचारिन् ।

—करना, क्रि स, भ्रश्-दुष्-आधृष् (प्रे) च्यु (प्रे) २ सतीत्व नश (प्रे) ३ मलिनी कलुषीकृ ।

—होना, क्रि अ , भ्रश (दि प से), भ्रश (भ्वा आ से) २ दुष (दि प अ), विकार आपद् (दि आ अ) ३ मलिनी कलुषी भू ४ क्षीणवृत्त (वि) भू ।

भ्रष्टा, स स्त्री (स) कुलटा, पुश्चली ।

भ्रांत, वि (स) भ्रांति भ्रम, विशिष्ट २ व्याकुल, विह्वल ३ उन्मत्त ४ पथभ्रष्ट ५ आवर्तित, चक्रवद् चालित ।

विश्रमगृह २ (मस्करदिन्द) शाल, आच्छादन २ देवाल्योधभाग ।
मडराना, क्रि अ, दे 'मँडलाना'।
मडल, स पु (स न) वृत्त, वतुल, चक्र बन्ध २ गोल-लड ३ परिवेश, ४ परिधि, उपसूचक ४ निनिज, दिक, चक्रत, दि न ५ द्वादशराजक ६ समाज, समुदाय ७ व्यूहभेद ८ चक्र, दे 'पहिया' ९ ऋग्वेद परिच्छेद १० गोलचिह्न ११ ग्रह,-कक्षा-मार्ग १२ भूप्रदेश।
मडलाकार, वि (स) गोल, वतुल, चक्राकार वृत्त।
मँडलाना, क्रि अ (स मडल>) चक्राकार उड़ी (ब्वा दि आ से) अथवा खे चर् (ब्वा प से) २ परि, भ्रम, अट्-कन् (ब्वा प स)। स पु, चक्रवद उड्डयन, परि, क्रमण भ्रमणम्।
मडली,[1] स स्त्री (स) समाज, सभा, समिति (स्त्री), गोष्ठी २ सघ, समुदाय ३ दूर्वा ४ गुडूची।
मडली,[2] स पु (स-लिन्) सर्प २ सर्पभेद ३ सूर्य ४ बिडाल ५ मडलाधिप ६ वट, न्यग्रोध।
मँडवा, स पु (स मडप, दे)।
मडा, स स्त्री (स) सुरा, मद्य २ दे 'आँवल'।
मडित, वि (स) भूषित, अलकृत, परिष्कृत।
मडी, स स्त्री (स मडप>) मन्डाट्ट, पण्यागार, बृहद् आपण-विपणी।
मडूक, स पु (स) दे 'मेडक'।
मडूर, स पु (स पु न) लौहमल, सिंघाण, सिंघानकम्।
मतव्य, स पु (स) विचार, मतम्। वि, स्वीकार्य, विश्वसनीय, अभ्युपगतव्य २ मननीय, मान्य।
मत्र, स पु (स) वेदवाक्य २ वेदाना सहिताभाग ३ मत्रणा, परामर्श, विचार ४ गोप्य, रहस्य, गुप्त ५ अभिचारतत्र (तत्र)।
यत्र—, स पु, दे 'जादू टोना'।
—कार, स पु (स) मत्र, रचयितृ-कर्तृ-द्रष्टृ।
—गृह, स पु (स न) मत्राभवनम्।
—विद्या, स स्त्री, तत्र, तत्रविद्या।
मत्रणा, स स्त्री (स) परामर्श, विचारणा, सम्मति (स्त्री) २ उपदेश, अनुशासनम्।
मत्रित्व, स पु (स न) साचिव्य, मत्रिता, अमात्यत्व, मत्रि-सचिव, कार्य-पदम्।
मत्री, स पु (स मत्रिन्) अमात्य, सचिव, धी सचिव-सरा, सानववदिक, राज, अमात्य-सचिव।
प्रधान—, स पु (स त्रिन्) मुख्य-महा, मत्रिन्, प्रधानामात्य, महामात्र।
मथन, स पु (स न) मथन, विलोडन, २ अनुसधान, अवगाहन, निरूपण ३ दे 'मथनी'।
मथर, वि (स) मद, अल्स २ जड, मदमति ३ स्थूल, नरवलु ४ अधम। स पु (स) दे 'मथनी' २ ज्वरभेद।
मद, वि (स) अलस, तद्रालु, कार्यविमुख, उद्योगशून्य २ मथर ३ शिथिल ४ मूर्ख ५ दुष्ट।
—बुद्धि, मति, वि (स) मूढ, मूर्ख, जड बन्धिर।
—भाग्य, वि (स) हतभाग्य, दुर्दैव। स पु (स न) दुर्-दैव-भाग्यम्।
—मद, क्रि वि (स-द) शनै-शनकै (अव्य) मदगत्या, सौम्यतया, गाम्भीर्येण।
मदता, स स्त्री (स) आलस्य २ मथरता ३ क्षीणता।
मदर, स पु (स) मथशैल, पर्वतविशेष २ स्वर्ग ३ मुकुर। वि, मद, मथर।
मँदरा, वि, दे 'बौना'।
मदा, वि (स मद) मथर, बहल २ शिथिल ३ अल्प, अर्धमूल्य, सुलभ ४ निकृष्ट, हीन ५ विकृत, भ्रष्ट।
मदाकिनी, स स्त्री (स) स्वर्गनदी, गगा, स्वापगा, सुरदीर्घिका।
मदाक्रान्ता, स स्त्री (स) वर्णवृत्तभेद।
मदाग्नि, स स्त्री (स पु) अजीर्ण, अपचन अपाक, अग्निमाद्यम्।
मदार, स पु (स) स्वर्गवृक्षविशेष २ अर्क-वृक्ष ३ मदरपर्वत ४ गज ५ स्वर्ग ६ दे 'धतूरा'।
मदिर, स पु (स न), देवायतन, देव-गृह भवन-निकेतन-आलय २ गृह, गेह, सदन् वेदमन् (न) ३ आनि-वास, वसत्यानम्।
मदी, स स्त्री (स मद>) मन्दपन, पयसु ल्पता, मूल्यापकर्ष।

मद्र, म पु (स) गंभीरध्वनि (पु) (सगात) २ मृदंगर । वि, मनोहर २ प्रसन्न ३ गंभीर ४ मंद गंभीर (शब्दादि) ।

मशा, म स्त्री (अ) दे मसा' ।

मसब, स पु (अ) पद, पदवी, स्थान २ कर्तव्य ३ अधिकार ।

मसा, स स्त्री (अ मशा) इच्छा, कामना २ मकसद ३ आशय ।

मसूख, वि (अ) विलुप्त, अपसृष्ट, निरस्त, निवर्तित, गलित ।

मसूखी, स स्त्री (अ मसूख) विलोप, निराम निवनन, खंडनम् ।

मसूबा, स पु (फा) सत्य, विचार २ युक्ति (स्त्री), उपाय ।

—बाँधना, मु, निश्चि (स्वा उ अ), सकल्प (प्रे) २ उपाय चिन्त् (चु) ।

मई, सं स्त्री (अ मे) आंग्लवर्षस्य पचमो मास, वैशाखज्येष्ठम् ।

मकद, म स्त्री (म मकाय) कठिन ।

मकडा, सं पु (स मकर्ट >) वृहल्लूता ।

मकडी, स स्त्री (हिं मकडा) लूता, तंतु, वाय नाभ, ऊर्णनाभ, मर्कट वर्ग, जालिक कोषकार अष्टापद ।

—का जाला, म पु, मकरन्दजालम् ।

मकतब, स पु (अ) पाठशाला ।

मकतबा, म पु (अ) पुस्तकालय २ ग्रंथविपणि (स्त्री) ।

मकदूर, म पु (अ) सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री) ।

मकनातीस, स पु (अ) दे चुंबक' ।

मकबरा, सं पु (अ) समाधि (पु), *मृतकमंदिरम् ।

मकबूजा, वि (अ) अधिकृत, हस्तगत ।

मकबूल, वि (अ) स्वीकृत मत २ प्रिय ।

मकरन्द, सं पु (म) मरन्द मरन्द, पुष्प, रस मार स्वेद नियास निदाघ, मधु (न), पुष्प २ किंजल्क विजल्क ३ कुदपुष्प ।

मकर, म पु (म) नक्र ग्राह, घड़ियाल जलचर जन्तुतर २ दशमराशि आका दर ३ माघमास ४ व्यूहभेद ५ दे 'मछली' ।

—ध्वज, म पु (म) मकर, वतु केतन, कामदेव ।

मकर[2], स पु (फा) कपट, छलम् ।

मकरूज, वि (अ) दे 'ऋणी' ।

मकरूह, वि (फा) कलुष, मलीमस २ घृणोत्पादक ।

मकसद, स पु (अ) मन कामना २ अभिप्राय ।

मकान, स पु (फा) अ(आ)गार र, भवन-वेश्मन्-सद्मन् (न), सदन, दे 'घर' ।

—किराये पर देना या लेना, क्रि स, सदन भाटकेन दा अथवा आ-दा (जु आ अ) ।

मालिक—, सं पु, गृ, सदन-स्वामिन् पति ।

मकोडा, म पु (हिं कीडा का अनु०) क्षुद्रकीट ।

मकोय, स स्त्री (सं काकमाता म विप०) काकमाची चिरा, कुष्ठघ्नी, वायसी, रसायनी, बहुतिक्ता, काका, काकिनी २ काकमाची-फल ३ ३ दे 'रसभरी ।

मक्का, स पु, दे मरद ।

मक्कार, वि (अ) कपटिन्, छलिन् ।

मक्कारी, स स्त्री (अ) कपट, छलम् ।

मक्खन, स पु (स म्रक्षण >) नवनीत, मन्थन, नवोद्धृत तक्र-सार, दधि-जस्नेह, पीथ हैयंगवीनम् ।

मक्खी, सं स्त्री (म मक्षिका) मक्षिका, माक्षिका, भवरोलुपा, भम, पतंगिका, वमनीया, पल्लवा, नीला, ववणा २ मधुमक्षिका ३ *अल्पमक्षिका ।

—चूस, मं पु (म कृपण, मितपच, कदर्य) जीती मक्खी निगलना मु, जानन्नपि पाप कृ ।

नाक पर मक्खी न बैठने देना, मु, उपकारं न सह (भ्वा आ से) ।

मक्खी छोडना और हाथी निगलना, मु, पाप कानि परित्यज्य महापापेषु प्रवृत् (भ्वा आ से) ।

मक्खी पर मक्खी मारना, मु मक्षिका स्थाने मक्षिका, निर्विवेकमनुलिपि (स्त्री) ।

मक्खी मारना या उडाना, मु, उद्योगहीन (वि) स्था (भ्वा प अ) ।

मक्षिका, मं स्त्री (सं), दे 'मक्खी' ।

—मल, मं पु, दे 'मोम' ।

मख, सं पु (सं) यज्ञ, क्रतु ।

मख़तूल, स पु (स महाधनूल>) कृष्ण, कौशेयकीटसूत्रम् ।
मख़मल, स स्त्री (अ) *मसमल, श्लक्ष्ण वस्त्रभेद ।
मख़मली, वि (अ मख़मल) मखमल-मय निमित २ श्लक्ष्ण, स्निग्ध ।
मख़ौल, स पु, (दे 'ठठ्ठा') ।
मग, स पु, दे 'मार्ग' ।
मगज़, स पु (अ मग्न) मस्तिष्क मस्तुलुङ्ग २ बुद्धि-मति (स्त्री) ३ दे 'गिरी' ।
—चट, स पु (अ+हिं) वाचाट, वाचाट ।
—चट्टी, स स्त्री, वाचालता, प्रजल्प ।
—पच्ची, स स्त्री (अ+हिं) बौद्धिकश्रम ।
—खाना या चाटना, मु वावदूकतया खद् (प्रे) ।
—खाली करना या पचाना, मु, प्र, तल्प (भ्वा प से) २ मस्तिष्क खिद् आयस् (प्रे) ।
मगज़ी, स स्त्री, (अ मग्ज़) चीरी गि (स्त्री), दशा ।
मगध, स पु (स) कीकटदेश, बिहार प्रान्तस्य दक्षिणभाग २ चारण, वन्दिन् ।
मगन, वि, दे 'मग्न' ।
मगर, अव्य (फ़ा) किंतु, पर, परंतु ।
मगर, } स पु (स मकर)
मगरमच्छ, } दे 'मकर' (१) २ महा, मत्स्य-मीन ।
मगरिब, स पु (अ) दे 'पश्चिम' ।
—ज़दा, वि, पाश्चात्यसभ्यतया प्रभावित, पश्चिम-आकृष्ट प्रेरित प्रवर्तत ।
मग़रिबी, वि (अ) दे 'पश्चिमी' ।
—तहज़ीब, स्त्री, पाश्चात्यसभ्यता ।
मगरूर, वि (अ) दे 'अभिमानी' ।
मगरूरी, स स्त्री (अ मगरूर) दे 'अभिमान' ।
मग्न, वि (स) जलात प्रविष्ट, निमज्जनेन, मृत-नष्ट २ लीन, निरत, आसक्त,-पर, परायण ३ मत्त, क्षीव, मदोद्धत ४ प्रसन्न, प्रहृष्ट ।
—होना, क्रि अ, प्र, हृष् (दि प से) २ निरत-लीन-आसक्त (वि) भू ।

मघवा, स पु (स -वन्) इन्द्र, आखण्डल ।
मघा, स स्त्री (सं) नक्षत्रविशेष, मघा (स्त्री बहु भी) २ औषधभेद दे 'पिप्पली' ।
मचक, स स्त्री (हिं मचकना) भार, पीडन २ अस्थिसन्धिपीडा ३ कम्पनम् ।
मचकना, क्रि अ (अनु मच मच>) अस्थिसन्धि व्यथ् (भ्वा आ से)-पीड् (कर्म) २ भारेण समचमचध्वनि कम्प् (भ्वा आ से), निमिष (तु प से), निमील् (भ्वा प से) ।
मचकाना, क्रि स (हिं मचकना) व 'मचकना' के प्रे रूप ।
मचकोड, स स्त्री (हिं मचकना) सन्धि, व्यावर्तन व्याक्षेप ।
मचना, क्रि अ (अनु मच) प्र-आरभ् (कर्म), प्रवृत् (भ्वा आ से) ।
मचलना, क्रि अ (अनु) निर्बंधेन वद् (भ्वा प से), साग्रह (वि) अवस्था (भ्वा आ अ) ।
मचला, वि (हिं मचलना) कपटमूढ, अज्ञलक्षण, व्याजजड ।
मचलाना, क्रि अ (अनु) वम् (सन्नन्त, विवमिषति), वमनेच्छया पीड् (कर्म) ३ दे 'मचलना' ।
मचलापन, स पु (हिं मचलना) कपट मूढता, व्याजजडत्वम् ।
मचलाहट, स स्त्री (हिं मचलना) निर्बंध, आग्रह २ विवमिषा, वमनवाञ्छा ।
मचान, स पु (स मच) मचक उच्चासनं, वेदिका, इद्रकोष ।
मचाना, क्रि स (हिं मचना) व 'मचना' के प्रे रूप ।
मचिया, स स्त्री (स मच>) मचिका, पीठी, पीठक, क्षुद्रासनम् ।
मच्छ-छ, सं पु (स मत्स्य>) महा-बृहद्, मीन-मत्स्य झष ।
—अवतार, स पु, दे 'मत्स्यावतार' ।
मच्छड़र, स पु (सं मशक) वज्रतुण्ड, मशा, सूच्यास्य, सूक्ष्ममक्षिका, रात्रिजागरद ।
—दानी, सं स्त्री, मश(शक)हरी, चतुष्की, मशूरिका, नीशार ।

मच्छर पर तोप लगाना, मु, तुच्छशत्रौ बहूद्यम ।

मच्छी, सं स्त्री (हिं मच्छ) दे 'मछली' ।

मछंदर, सं पु (सं मत्स्येन्द्र या बंदर से अनु) कपि वानर २ आखु मूषिक ३ जड, मूढ ४ मिथ्यावेश ५ विदूषक, वैहासिक ६ मिथुर ।

मछरायँध, सं स्त्री (हिं मछली+सं गंध) मत्स्यगंध मीनपूति (स्त्री) ।

मछली, सं स्त्री (सं मत्स्य) मीन, झष, अण्ड विसार पृथुरोमन् (पु), शकुलिन, वैसारिण आत्माशिन्, तिमि, जलपिप्पक । वि शवर मरचारिन् स्थिरजिह्व, बहुलक्षय २ मत्स्याकारो भूषणभेद ।

—वाला, सं पु, दे 'मछुआ' ।

—की तरह तड़पना, मु, जलहीनमीनवद् व्याकुलीभू ।

मछवा, सं पु (हिं मच्छी) मत्स्यभारिनौका २ दे 'मछुआ' ।

मछुआ वा, सं पु (हिं मच्छी) मत्स्य, आजीव मत्स्यजीविन्,मात्स्यिक, धीवर, कैवर्त ।

मज़दूर, सं पुं (फ़ा) भार हर हार -वाहक वाह, भारिक, वोढृ, वाह, वाहक २ कार्म, कर्मिन, श्रमजीविन्, कर्म,-कर -कार ।

मज़दूरी, सं स्त्री (फ़ा) भारवहन, श्रम, व्रात २ कर्मण्या, भृति (स्त्री), भृत्या, कर्मण्या, भर्म, पारिश्रमिकम् ।

मजनूँ, सं पु (अ) उन्मत्त, उन्मादिन्, वातुल २ ललना-वल्लभ, कैस ३ प्रणयिन्, प्रेमिन्, कामुक, कामिन् ४ कृशाङ्ग, क्षीणदेह ।

मज़बूत, वि (अ) दृढ, २ स्थिर ३ बलवत् ।

मज़बूती, सं स्त्री (अ मज़बूत) दृढता २ स्थिरता ३ बलवत्ता ४ साहसम् ।

मजबूर, वि (अ) दे 'विवश' ।

मजबूरन्, क्रि वि (अ) बलेन, बलात्, हठात् प्रसह्य प्रसभम् ।

मजबूरी, सं स्त्री (अ मजबूर) विवशता, अगतिकता, अपरिहार्यता ।

मजमा, सं पु (अ) जन,-समर्द समुदाय ।

मजमूआ, सं पुं (अ) समुदाय, संग्रह, समूह ।

मज़मून, सं पु (अ) प्रस्ताव, निबंध, लेख २ व्याख्यानस्य विषय ।

—नवीस, सं पुं, निबन्ध,-कार,-लेखक ।

मज़मूम, वि (अ) निन्दित, दुष्ट २ हीन, वर्गच्युत ।

मज़म्मत, सं स्त्री (अ) निन्दा, कुत्सा २ भर्त्सना ।

मजरूह, वि (अ) आहत, दे 'घायल' ।

मजलिस, सं स्त्री (अ) सभा, समाज, गोष्ठी । मीर—सं पु (फ़ा+अ) सभा,-पति अध्यक्ष, प्रधान ।

मजलिसी, वि (अ) सामाजिक ।

मज़हब, सं पु (अ) धर्म, सम्प्रदाय, मतम् ।

मज़हबी, वि (अ) धार्मिक, साम्प्रदायिक । सं पु, खल्पू, शिष्य, शिष्य(सिक्ख), जाति-विशेष ।

मज़ा, सं पु (फ़ा) आ,-स्वाद, रस २ आनंद, सुखं ३ विनोद, हास्यम् ।

—उड़ाना या लूटना, मु, मुद् (भ्वा आ से), रम् (भ्वा आ अ), नन्द् (भ्वा प से) ।

—दिखाना या चखाना, मु, दण्ड् (चु, द्विकर्म) २ प्रतिहिंस (रु प से), प्रत्यपकृ ।

मज़े में, मु, सानंद, ससुख, निर्विघ्नम् ।

मज़ाक़, सं पु (अ) दे 'ठट्ठा' ।

मज़ार, सं पु (अ) समाधि २ दे 'क़ब्र' ।

मजाल, सं स्त्री (अ) सामर्थ्यं, शक्ति स्त्री) ।

म(मे)जिस्ट्रेट, सं पुं (अं) दण्ड,-नायक अध्यक्ष अधिकारिन् ।

म(मे)जिस्ट्रेटी, सं स्त्री (अं मेजिस्ट्रेट) दण्डनायक-दण्डाध्यक्ष,-पद-कार्यं २ दण्डनायक-सभा ।

मजीठ, सं स्त्री (सं मंजिष्ठा) रक्ता, रोहिणी, रक्तयष्टिका, रागाढ्या, अरुणा, रागाङ्गी, वस्त्रभूषणा, विकसा, जिंगी ।

मजीठी, वि (हिं मजीठ) रक्त, रञ्जित, अरुण ।

मजीरा, सं पु (सं मञ्जीर) नूपुर, पादाङ्गद (न) २-विष्कम्भ, कुटर ।

मजेदार, वि (फ़ा) स्वादु, रुच्य, रुचिकर २ उत्कृष्ट, उत्तम ३ आनंद,-दायक प्रद ।

मज्जन, सं पुं (सं न) स्नानं, दे 'नहाना' सं पुं ।

मज्जा, सं स्त्री (सं) शुक्रकर, पैत्तिक, अस्थि,-स्नेह -सार -सम्भव, अस्थिजम् ।

मझधार, सं स्त्री (सं मध्यधारा) नद्या

मध्य-केन्द्रीय-मध्यस्थ-मध्यम,-धारा प्रवाह - मराक स्रोतम (न) २ कार्य,-मध्य मध्यम् ।
मझ(झो)ला, वि (स मध्य) मध्यम, मध्य, वर्तिन्-स्थ २ मध्यमाकार, मध्यमपरिमाण ।
मटक, मटकन, स स्त्री (हिं मटकना) हाव, विभ्रम, विलास २ गति (स्त्री) सचार ।
मटकना, क्रि अ [म मट (सौत्रधातु) = अवमाद] विलस (भ्वा प से), सविलास चल् (भ्वा प सै) विभ्रम् (भ्वा दि प से)।
मटका, स पु (हिं मिट्टी) मणिक-क, अलिंजर ।
मटकाना, क्रि स (हिं मटकना) सविलास अगानि चल (प्रे) विभ्रम (प्र)।
मटकी, स स्त्री (हिं मटका) क्षुद्र-मणिक अलिंजर ।
मटमैला, वि (हिं मिट्टी+मैला) दे. 'मलियाला'।
मटर, स पु (स मधुर) कलाय, काल धूर, मुण्डचणक, रेणुक, वातुल, सतीन (ल)क, हरेणु, खडिक ।
मटरगश्त, स पु स्त्री (स मधर+फा गश्त) सुखाटन, विहार, विहरण, यथेष्टभ्रमण, सुखसचरणम् ।
मटियामसान } वि दे 'मलियामेट'।
मटियामेट
मटियाला, वि (हिं मट्टी+वाला) धूलि रेणु धातु-वर्ण-रग।
मट्टी, स स्त्री, दे 'मिट्टी'।
मट्ठा, स पु (स मथित) अनरोदक-घोल, नवनवनीत शून्य घोल्म ।
मट्ठी, स स्त्री (स मठ) पक्वान्नभेद ।
मठ, स पु (स पु न) आनि,-वास, २ आश्रम, विहार, मुनिवास ३ धार्मिक-विद्यालय ४ मदिर, देवालय ।
—धारी, स पु (स रिन्) मठपति, मठिन् ।
मढना, क्रि स (स मण्डन>) कोशे निविश् (प्रे), आवेष्ट (भ्वा आ से) २ चमादिभि र्वाससुखा अच्छद् (प्रे) ३ बलात् अरुह (प्रे), दे 'थोपना'। स पु, अवेष्टन, आच्छादन, अरोपणम् ।
मढ़ने योग्य, वि, अवेष्टनीय, आच्छादनीय ।
मढ़नेवाला, सं पु, अवेष्टक, आच्छादक ।
मढवाना, क्रि प्रे, व 'मढना' के प्रे. रूप ।
मढा हुआ, वि., आवेष्टित, चमादिभिराच्छादित, बलादारोपित ।
मढी, स स्त्री (सं मठ>) क्षुद्रमठ ठ, लघु मदिर २ कुटी, पर्णशाला ३ ४ क्षुद्र-मदन-मडप ।
मणि, स स्त्री (स पु स्त्री) रत्न २. नर,-पुगव-कुजर-ऋषभ ।
—कांचन योग, सं पु (स) उभयशोभा-वद्धकसयोग ।
—दीप, स पु (स) दीपोज्ज्वलमणि, रत्न दीप २ मणिरत्नजटितदीप ।
—धर, स पु (स) सर्प, अहि ।
—बध, स पु (स) मणि, पाणिमूल, कलाचिका ।
—माला, स स्त्री (स.) रत्नहार २ रमा, पद्मा, कमला, इन्दिरा ३ वर्णवृत्तभेद ।
मतग, स पु (स) गज २. मेघ ३ ऋषि विशेष ।
मत[1], स पु (स न) धर्म, सप्रदाय २ मति (स्त्री), तर्क ३ आशय, अभिप्राय । वि, पूजित ।
मत[2], क्रि वि (स मा) न, नो, मा, अल (तृतीया के साथ)।
मतलब, स पु (अ) आशय, अभिप्राय, तात्पर्य २ शब्द-वाक्य,-अर्थ ३ स्वार्थ ४ उद्देश, उद्देश्य ५ सबध, सपर्क ।
—निकालना, मु, स्वार्थ साध् सिध् (प्रे)।
बे—क्रि वि, व्यर्थ,मोघ,निष्प्रयोजन,निरर्थकम्।
मतलबी, वि (अ मतलब) स्वार्थिन, निजहित-स्वार्थ,-पर-परायण निरत ।
मतलाना, क्रि अ, दे 'मचलाना' (१)।
मतली, स स्त्री, दे. 'मचलाहट' (२)।
मतवाला, वि (स मत्त) मदोद्धत, मदोदग्र, क्षीब २ उन्मत्त ३ अभिमानिन् ।
मताधिकार, स पु (स) मतप्रकाशनाधिकार ।
मतावलबी, स पु (स-बिन्) धर्ममत, अनुगा मत-अनुयायिन्-अनुवर्तिन् अनुसारिन् ।
मति, स स्त्री (स) धी (स्त्री), धि(धी)षणा, प्रज्ञा, बुद्धि (स्त्री) २ मत, तर्क, अभिप्राय ३ इच्छा ४ स्मृति (स्त्री)।
—मान्, वि (स-मत्) प्राज्ञ, चतुर ।

—हीन, वि (स) ज्ञ, मूढ मूर्ख।
मतीरा, म पुं, दे 'तरबूज'।
मत्कुण, स पु (स) रक्तपायिन्, रवटा, मत्कुणाश्रय, उद्दश।
मत्त, वि (स) शौण्ड, उत्कट क्षीब, उन्मद, मदाढ्य, समद, मदिरोत्कट, मद-मत्त-उन्मत्त वहत्‌-उद्दम २ निर्विवेक ३ वातुल, उन्मत्त ४ प्रसन्न।
—गयद, सं पु (स मत्तगजेन्द्र >) सवैयाछन्दोभेद। (७ भगण+२ गुरु अक्षर)।
मत्था, सं पु, दे 'मस्तक' (२)।
मत्सर, स पुं (स) मत्सर्य्य, परोत्कर्षद्वेष, असूया, ईर्ष्या २ क्रोध।
मत्स्य, स पु (सं) दे 'मछली' २ मीन राशि ३ विराटदेश (दीनाजपुर-रंगपुर, अथवा प्राचीन पांचाल के अन्तर्गत) ४ महापुराणविशेष ५ विष्णोरवतारविशेष, मत्स्यावतार।
मथन, स पु (स न) दे मथन १ २।
मथना, क्रि स (स मथन) दे 'बिलोना' २ ध्वस्-नश (प्रे) ३ अन्विष् (दि प से) ४ असकृत् अनेकवार कृ। स पु, दे 'मथानी' २ मथन, मंथ।
मथनी निया, सं स्त्री (स मथनी) मथनघटी, गर्गरी, मथिनी २ दे 'मथानी'।
मथानी, स स्त्री (स मंथान) मथ-मथन, द॰, मथ, मथन, खज॰, वैशाख, मंथि, मथिन् (पु), तक्राट।
मथुरा, स स्त्री (सं) मधुपुरी।
मंद, स पुं (सं) मत्त॰, शौंडता, क्षीबता २ वातुलता, उन्माद, मतिभ्रम ३ दर्प, अभिमान ४ सुरा, मद्य ५ हर्ष, मोद ६ कस्तूरी रिका, मृग-मद-नाभि ७ गजगंड जल, मद, दानवारि (न), दान ८ पुंस्, वीर्य ९ अन्न, प्रमद १० मदन, काम।
—माता, वि, दे 'मत्त' (१) २ कामार्त्त, अनार्यमति।
मद², स स्त्री (अ) लिखितपद २ स्थानापद ३ प्रकरणम्।
मदक, स स्त्री (म मद >) मदक मादक द्रव्यभेद।
मदद, स स्त्री (अ) दे 'सहायता'।
—गार, वि (अ + फा) दे 'सहायक'।
मदन, स पुं (सं) मन्मथ, कंदर्प, अनंग दे 'कामदेव' २ कामचेष्टा, मैथुन ३ विद्रुम चुम्बुद, कर्णिका ४ धुस्तूर ५ भ्रमरः ६ मदन ७ दे 'मैना'।
—कदन, म पु (स) शिव, मदनदहनः।
—गोपाल, सं पु (स) मदनमोहन, कृष्ण।
—बाण, स पुं (स) कामशर, पुष्पभेद।
—सदन, स पु (स. न) मदन-गृह-भवन, भगम्।
—महोत्सव, स पु (स) मदनोत्सव, सुवसन्त, मदनपूजासारीनराविजागरणादियुक्तचैत्रे भव प्राचीनोत्सवभेद।
मदनोद्यान, स पुं (स न) प्रमोदवनम्।
मदर, स स्त्री (अ) मातृ (स्त्री), जननी।
मदरसा, स पु (अ) विद्यालय, पाठशाला।
मदांध, वि (स) दे 'मत्त' (१)।
मदार, स पुं (स मदार) दे 'अर्क'।
मदारी, स पु (अ मदार) दे 'कलंदर' २ सौभिक, दे 'जादूगर'।
मदिरा, स स्त्री (सं) सुरा, हाला, मद्य, वारुणी, कादम्बरी, हलिप्रिया, गधोत्तमा, इरा, प्रसन्ना, परिस्रुता, कश्य, गंधमादनी, माधवी, मदः, मत्ता, मदगंधा, मधु, माध्वीक, अब्धिजा, देवसृष्टा, मदना, मुद्रा, मैरेय, सीधु, महानदा, मदनी, मोदिनी, मनोज्ञा, अमृत, आसव, प्रिया, चपला, मत्ता, कामिनी।
मदिराक्ष, वि (सं) मत्तलोचन (-नी स्त्री)।
मदीय, वि (सं) मामकीन, मामक(-निका स्त्री), मत्।
मदीला, वि (सं मद >) दे 'नशीला'।
मदोन्मत्त, वि (स) मद-उत्कट-उद्दम-उद्धत।
मद्धि(द्ध)म, वि, दे 'मध्यम'।
मद्य, स पु (सं न) दे 'मदिरा'।
—प, वि (स) सुराप, दे 'शराबी'।
—पान, स पु (स न) सुरापानम्।
—भाजन, सं पु (सं न) सुरा पात्र-भाजनम्।
मधु, सं पु (स न) क्षौद्र मर्माक्षौद्र, कुसुम पुष्प, आसव, लिंग, पवित्र, माक्षीक, सारघ, पुष्परस, पुष्पजाव, मधुकरीकृत, मूत्र-वान २ मदिरा ३ दुग्ध ४ जल

५ मकरंद, पुष्परस ६ अन्न ७ वसन्तर्तु ८ चैत्रमास ९ दैत्यविशेष । वि, मधुर,स्वादु।

—कंठ, स पु (स) कोकिल, पिक ।

—कर, स पु (स) भ्रमर २ कामुक ३ भृङ्गराजवृक्ष ।

—करी, स स्त्री (स) षट्पदी, भ्रमरी २ भिक्षान्नपक्वान्नभिक्षा ।

—कार, स पु (स) मधुमक्षिका।

—कोष, स पु (स) मधु क्रम चक्रपटल कोश, करन्द चषाल ।

—प, सं पु (स) भ्रमर २ मधुमक्षिका।

—पर्क, स पु (स) दधिमधुमिश्र आज्य, (अतिथ्यादिभ्य)।

—मक्खी, स स्त्री (म -मक्षिका) मधु,कार कारिन् सरघा।

—मय, वि (स) मधुर, मधुर, मिष्ट, स्वादु, रुचिर।

—मास, स पु (स) चैत्र।

—मेह, स पु (स) मधुप्रमेह, मूत्ररोगभेद ।

मधुर, वि (स) मिष्ट, मधुर, मधुल, मधुक, मधुमय २ रुच्य, रुचिकर, स्वादु ३ कर्ण श्रुति-मधुर, दल, मजुल ४ सुदर, मनोज्ञ ।

—भाषी, वि (स 'षिन्) प्रियवद, मधुर सुवाच, चारुभाषिन्।

मधुरिमा, स स्त्री [स रिमन् (पु)] माधुर्य २ सौन्दर्यम्।

मधूकरी, स स्त्री, दे 'मधुकरी' (२)।

मध्य, वि (स) दे 'मध्यम'। क्रि वि, मध्ये, अन्तरे,अभ्यन्तरे। स पु, मध्य, मध्य-भाग देश -स्थल-स्थान २ गर्भ, अभि, अन्तरम्।

—देश, स पु (स) हिमाचलविंध्याचलकुरु क्षेत्रप्रयागमध्यस्थो देश २ मध्यप्रात ।

—भाग, स पु (स) मध्य,-स्थल स्थान, केन्द्रम्।

—लोक, स पु (स) भूमि (स्त्री), पृथिवी।

—वर्ती, वि (स तिन्) केन्द्रीय, मध्य, मध्यम, मध्य,-स्थ स्थित।

मध्यम, वि (स) मध्य, मध्य,-स्थ-स्थित वर्तिन् २ मध्यपरिमाण ३ सामान्य, साधारण ४ व्यवहित, अन्तरालस्थ। स पु (स) चतुर्थस्वर (संगीत) ५ ४ नायक-मूलराग, भेद ।

—पुरुष, स पु (स) पदविशेष (व्या त्वं पचसि इ)।

मध्यमा, स स्त्री (स) ज्येष्ठाङ्गुली-लि (स्त्री), मध्या, ज्येष्ठा २ नायिकाभेद ३ रजस्वला नारी।

मध्यस्थ, स पु (स) निर्णेतृ प्रमाणपुरुष २ उदासीन, निष्पक्ष, तटस्थ । वि., दे 'मध्यम'।

मध्यस्थता, स स्त्री (स) माध्यस्थ्य, निर्णय २ तटस्थता।

मध्याह्न, स पुं (स) मध्य(ध्य)दिन, मध्याह्न, काल -समय वेला।

मध्याह्नोत्तर, स पु (स न) अपराह्ण, पराह्ण, विकाल ।

मन¹, स पु [स मनस् (न)] चित्त, चेतस् (न), हृदय, स्वान्त, हृद् (न), मानस, अन्त, अनगक, अन्तःकरण २ अन्तःकरणस्य सकल्पविकल्पात्मकवृत्ति (स्त्री) ३ विचार, सकल्प ४ इच्छा, कामना।

—गढ़त, वि, मन कल्पित, काल्पनिक, अवास्तविक, मन प्रसूत।

—चला, वि, निर्भय २ साहसिक ३ रसिक।

—चाहा,-चीता, वि, अभीष्ट, मनोवांछित।

—जात, स पु, मनोज, कामदेव ।

—भावता, भावन, वि, रुच्य, रुचिकर, प्रिय, अभिमत।

—मति, वि, स्वच्छन्द, अनियन्त्रित, स्वेच्छाचारिन्।

—मथ, स पु, मन्मथ, कदर्प ।

—माना, वि, रुच्य, रुचिकर २ अभिमत, मनोनीत ३ यथेष्ट, यथेच्छ, यथेप्सित। क्रि वि, यथेष्ट, यथाभिलाषम्।

—मानी, स स्त्री, यथेच्छ,-कार्य-कर्मन् (न)।

—मुटाव, स पु, वैमनस्य, वैमत्य, दुष्ट, भाव-बुद्धि द्वेष ।

—मोदक, स पु, काल्पनिकसुख, मन कल्पितानन्द ।

—मोहन, स पु, श्रीकृष्ण । वि, मनोहर,हृद्य।

—मौजी, वि, स्वैरिन्, स्वेच्छाचारिन्।

—रजन, वि., मनोरञ्जक। स पुं, मनोरञ्जनम्, चित्तविनोद ।

—हर, —हरण, —हारी, } १ व, मनोहर, मनोहर्तृ, मनोहारिन्, २ सुदर, मनोज्ञ ३ प्रिय, हृद्य।
(टिप्पणी—मन के बहुत से यौगिक शब्दों और मुहावरों के पर्यायवाची 'जी', 'दिल' और 'कलेजा' के नीचे मिलेंगे, कुछ यहा देते हैं)।
—अटकना, मु, स्निह् (दि प से), अनुरन्(कर्म)।
—करना, मु, अभिलष् वाउ (दि भ्वा प से)।
—के लड्डू खाना, मु, गगनकुसुमानि चि (स्वा उ अ), मोघाशया हृष् (दि प से)।
—बहलाना, मु, मनो विनुद् रन् (प्रे), विह् (भ्वा प अ)।
—बसना, मु, रुच् (भ्वा आ से), दे 'मनमाना'।
—भर, वि, यथेष्ट, यथेच्छम्। (क्रि वि), यथा रुचि, यथाभिलाष, यथेष्टम्।
—भरना, मु, परितुष्, तृप्-तुप् (दि प अ)।
—भाना, मु, इष (तु प से), अभिलष्, रुच्।
—भाना मुंडिया हिलाना, मु, मनसि काम यमानोऽपि शिर कपेन (वाचा) निषिध् (भ्वा प से)।
—माने, वि तथा क्रि वि, दे 'मनभर'।
—मारना, मु, मन निग्रह् (क्र प से) २ धैर्येण सह् (भ्वा आ से)।
—मिलना, मु मानान ऐकमत्य वृत् (भ्वा आ से)।
—ललचाना, मु, लुभ (दि प से) भल्य धिक स्पृह् (चु, चतुर्थी के साथ)।
—हरा होना, मु, मुद् (भ्वा आ से)।
मन,[२] स पु (स मण) चत्वारिंशत्सेटकमित भारमानम्।
—भर, वि, मण, मित परिमितमात्र।
मनका,[१] स पु (सं मणिक >) आर, गुटिका २ जपमाला।
मनका[२] स स्त्री (स मन्याका) मन्या, अवटु, कृकाटिका, शिर पीठं, घाट ?।
—ढलना, मु, मरणोन्मुख-मुमूर्षु-आसन्नमृत्यु (वि) वृत् (भ्वा आ से)।
मनकूला, वि (अ) चर, चल, अस्थिर।
—गैरमनकूला जायदाद, स स्त्री (अ + फा) स्थावरविषय, स्थिरसपद् (स्त्री)।
—जायदाद, स स्त्री, (अ + फा) उपकरणविषय, चरसपद् (स्त्री)।
मनन, स पु (स न) अनुचिंतन, ध्यान, आलोचनम्।
—शील, वि, विचार, शील-वत्।
मननीय, वि (स) विचारणीय, चिन्तनीय, विचारास्पद, मननार्ह।
मनवाना, क्रि प्रे, व 'मानना' के प्रे रूप।
मनशा, स स्त्री, दे 'मंशा'।
मनसब, सं पु (अ) पद, पदवी २ अधिकार ३ स्तर ४ सेवा।
मनसा[१] स स्त्री, दे, 'मंशा'।
मनसा, अ (सं) चित्तेन, हृदयेन। स स्त्री-१ जरत्कारु पत्नी २ वासुकिभगिनी।
मनसिज, स पु (सं) कामदेव, पंचशर।
मनसूख, वि दे 'मसूख'।
मनसूबा, सं पु, दे 'मंसूबा'।
मनस्ताप, सं पु (सं) मनोवेदना, आधि २ अनुपश्चात्ताप।
मनस्वी, वि (स विन्) महाशय, महानुभाव २ बुद्धिमत्, सुबुद्धि ३ स्वेच्छाचारिन्।
मनहुँ, क्रि वि, दे 'मानो'।
मनहूस, वि (अ) अशुभ, अमगल २ कुरूप, दुर्दर्शन ३ अलस, मथर।
मना, वि (अ) निषिद्ध, प्रतिषिद्ध वर्जित।
स पु दे 'मनाही'।
—करना, क्रि स, निषिध्-प्रतिषिध् (भ्वा प स), निवृ (प्रे), निवन्ध् (स्वा उ अ)।
मनादी, सं स्त्री (अ मुनादी) उद्घोषणा, प्रख्यापनम्।
—करना, क्रि स, उद्घुष् (चु), प्रख्या (प्रे, प्रख्यापयति)।
मनाना, क्रि स, व 'मानना' के प्रे रूप।
मनाही, स स्त्री (अ मना) निषिद्धि, प्रतिषेध, निरोध, निवारण, प्रत्यादेश।
मनिहार, स पु (स मणिकार) रत्नकार, रत्नाभिविद् २ ३ कांचकंकण-कार विक्रयिन्।
मनिहारी, सं स्त्री (हि मनिहार) मणि-व्यव-

साय-वाणिज्य, रत्नव्यवहार २ कांचद्रव्य व्यवसाय ।

मनी-आर्डर, म पु (अ) धनादेश ।

—फार्म, म पु (अ) धनादेशपत्रम् ।

मनीष, स स्त्री (म) बुद्धि (स्त्री) २ स्तुति (स्त्री) ।

मनीषी, वि (स विन्) पंडित, बुद्धिमत् ।

मनु, म पु (म) ब्रह्मण पुत्र, धर्मशास्त्र कारो मुनिविशेष २ मनुष्य ।

मनुज, स पु (स) मनुष्य, मानव ।

मनुष्य, स पु (स) मानुष, मनुज, मानव, मर्त्य, नर, द्विपद, मनु, पचजन, पु(पू) रुष, पुम्स्-न् (पु), मण, विश् (पु) ।

मनुष्यता, स स्त्री (स) मनुष्यत्व, मानवता २ सभ्यता, शिष्टता ३ दया, सौहार्दम् ।

मनुष्यी, स स्त्री (स) नारी, मानुषी, मानवी, मर्त्या, मनुनी, नरी ।

मनुहार, स स्त्री (म मानहार >) प्रसादन, उपशमन, सान्त्वन २ विनय, प्रार्थना ३ आदर, माननम् ।

मनो[1], क्रि वि, दे 'मानो' ।

मनो, (म मनस न) दे 'मन' ।

—कामना, म स्त्री (स मनःकामना) अभिलाष, वाञ्छा ।

—गत, वि (स) हृदयस्थ, हार्दिक ।

—ज, स पु (स) मदन, कंदर्प ।

—ज्ञ, वि (स) सुन्दर, अभिराम ।

—नीत, वि (स) रम्य, रुचिकर, हृद्य २ वृत ।

—योग, स पु (स) अनन्यमनस्कता, चित्तै काग्र्य, अवधानम् ।

—रंजक, वि (स) चित्ताह्लादक, सुखकर, हर्षावह हृदयहारिन्, मनोविनोदक ।

—रंजन, स पु (म न) मनोविनोद, चित्ताह्लादनम्, क्रीडा, कौतुकम् ।

—रथ, स पु (स) स्पृहा, वाञ्छा ।

—रथ सफल होना, क्रि अ, सफलमनोरथ (वि) भू, अभिलषित अधिगम् ।

—रम, वि (सं) मनोज्ञ, सुंदर ।

—वांछित, वि (म) अभिलषित, अभीष्ट ।

—विकार, स पु (म) चित्त-विकृति (स्त्री) विकार, मनो, धर्म-वृत्ति (स्त्री) वेग ।

—विज्ञान, सं पु (म न) मानसशास्त्रम् ।

—वृत्ति, म स्त्री (म) चित्तवृत्ति (स्त्री), मनोविकार, मानसी दशा ।

—हर, वि (म) सुन्दर, हृदयहारिन् ।

—हरता, म स्त्री (म) सौन्दर्य, चित्ताकर्षकता, मनोज्ञता ।

मनौती, म स्त्री (हिं मानना) दे 'मनुहार'(१) २ दे 'मन्नत' ।

मन्नत, स स्त्री (हिं मानना) देवपूजा, प्रण प्रतिज्ञा शपथ ।

—उतारना या बढ़ाना, मु, देवपूजाप्रतिज्ञा पा (प्रे पालयति) ।

—मानना, मु, अभीष्टसिद्धये देवपूजा प्रतिज्ञा (कृ आ अ) ।

मन्वंतर, स पु (म न) एकसप्तति चतुर्युग्यात्मक काल, ब्रह्मदिनस्य चतुर्दशो भाग ।

मपना, क्रि अ, ब 'मापना' के कर्म के रूप ।

मपवाना, **मपाना**, क्रि प्रे, ब 'मापना के प्रे रूप ।

मफ़रूर, वि (स) पलायित, गुप्त, अन्तर्हित, प्रच्छन्न, व्यपसृत ।

मम, सव (स) दे 'मेरा' ।

ममता, स स्त्री (स) } स्वाम्य, स्वामित्व,
ममत्व, म पु (स न) } अधिकार, स्वत्व, प्रभुत्व २ स्नेह, प्रेमन् (पु न) ३ वात्सल्य ४ मोह ५ लोभ ६ अभिमान, गर्व ।

ममिया, वि, दे 'ममेरा' ।

—ससुर, म पु, पति पत्नी-मातुल ।

—सास, स स्त्री, पति पत्नी-मातुली ।

ममियौरा, म पु (हिं मामा) मातुलगृहम् ।

ममीरा, स पु (अ मामीरान) नेत्ररोगोपकारक क्षुपमूलभेद ।

ममेरा, वि (हिं मामा) मातुलीय, मातुलिक ।

—भाई, म पु मातुलपुत्र, मातुलेय (—यी स्त्री), दे 'भाइ' के नीचे ।

ममोला, स पु, दे 'खंजन' ।

मयंक, स पुं (स मृगांक) दे 'चाँद' ।

मयस्सर, वि (अ) प्राप्त, लब्ध २ प्राप्य, सुलभ ।

मयूख, स पु (स) किरण, रश्मि ।

मयूर, स पु (स) दे 'मोर' ।

मयूरी, स स्त्री (स) दे 'मोरनी' ।

मरक, स पु (स) दे 'मरी'।
मरकत, स पु (स न) हरिन्मणि अश्मगर्भ मरकत राजनील गारुत्मम्।
मरकना, क्रि अ (अनु) भारेण भग्न भिद् द्रु (कम)।
मरघट स पु (हि मरन+घाट) शवदाह, श्मशान पितृवानन प्रेतभू (स्त्री)।
मरज़ स पु (अ मर्ज) रोग व्याधि २ दुर्व्यसन कुवृत्ति (स्त्री)।
मरजिया वि (हि मरना+जीना) मृत्युमुक्त, मृतजीवित २ मरण उन्मुख आसन्न ३ मृत प्राय-कल्प। स पु (मुक्त रूप) नियक्त विगाहक।
मरण, स पु (स न) मृत्यु निधनम्।
—**धर्मा** वि (स धर्मन्) मर्त्य, मरणशील।
मरतबा, स पु (अ) पद, पदवी २ बार।
मरतबान, स (दे 'अमृतबान'।
मरदूद, वि (अ) निरस्कृत, अपमानित २ क्षुद्र।
मरना क्रि अ (स मरण) मृ (तु आ अ), पंचत्व इ या (अ प अ) असून् प्राणान्-देह तनु जीवित त्यज (भ्वा प अ) उत्सृज (तु प अ) हा (जु प अ), प्र इ (अ प अ) गतासु परासु (वि) भू, विपद् (दि आ अ) प्रमी (कम), २ कष्टेन निशयं सह (भ्वा आ से) ३ शुष (दि प अ) म्लै (भ्वा प अ) ४ अत्यन्त लज्ज (तु आ से)-स्वज (भ्वा आ स) ५ पराभू परि भू (कर्म) परा वि नि (कम) ६ शम् (दि प से) ७ क्रीडायां बहिष्कृ (कम)। स पु मरण निधन, दे मृत्यु।
—**जीना** मु सुखदुःखे हर्षशोके वा।
किसी पर— मु अनुरञ्ज् (कम) भाव अनुराग बंध (ब प अ)।
पानी— मु कलंकित दूषित अपमानित (वि) भू अवगुण अवमन् (कर्म)।
मर कर, मु, अ याय मन, अतिकठिनतया।
मर के बचना, मु मृत्युमुखात् मुच् (कम) मरणासन्नादपि पुनः स्वास्थ्यं लभ (भ्वा आ अ)।
मर मिटना, मु, श्रमनिरर्थेन नश् (दि प से)।
मरने तक को फुर्सत न होना, मु, अनिर्व्याप्त भवकाश (वि) दुर (भ्वा आ से)।
मरने योग्य, वि, मरणार्ह, अर्थजीवित, २ हनक सत्व, दुष्ट।
मरनेवाला, स वि, मरिष्यमाण, मरणोन्मुख, आसन्नमृत्यु २ मर्त्य, मृत्युवश, नश्वर।
मरा हुआ वि, मृत, गतासु पचत्व-गत प्राप्त इत प्रेत, परेत, उपरत संस्थित, विपन्न, प्रमीत, विचेतन निष-गत, प्राण।
मरभुक्खा, वि (हि मरना+भूखा) क्षुधा अर्दित-पीडित-आर्त-अवसन्न २ अकिंचन, निधन।
मरमर[1], स स्त्री (अनु) मर्मर ध्वनि शब्द, ममर पत्र-वस्त्र-स्वन।
मरमर[2], स पु (यू०) चिक्कणप्रस्तरभेद, मरमर।
मरमरा वि (अनु०) भिदुर, भंगुर, सुभग।
मरमराना, क्रि अ (हि मरमर) मर्मर रव कृ मर्मरायते (न धा) २ सममर्रशब्दं अव भा नम् (भ्वा प अ)।
मरम्मत स स्त्री (अ) जीर्ण, उद्धार, प्रति, समाधान संधान, संस्कार, नवीकरण, पूर्वावस्थाप्रापणम्।
—**करना,** क्रि अ, पूर्ववद् नवी-कृ, उद्धृ (भ्वा प अ), सं ममा प्रतिसमा, धा (जु उ अ) २ तड् (चु)।
मरवाना, क्रि प्रे, व 'मारना' के प्रे रूप।
मरसा सं पु (स मारिष) वधर, मार्षिक (शाकभेद)।
मरसिया स पुं (अ) निधनकाव्य, शोकमयी कविता।
मरहटा ग, स पु (सं महाराष्ट्र >) महाराष्ट्रवासिन, महाराष्ट्रा (बहु)।
मरहटा-ठी, स स्त्री (म महाराष्ट्री)माहाराष्ट्री।
मरहम, स पु (अ) अनु,लेप, उपदेह, समालभ अभ्यञ्जनम्।
—**पट्टी,** स स्त्री (अ+स) लेपपट्टी, व्रणोपचार।
मरहमत, सं स्त्री (अ) अनुग्रह, कृपा।
—**करना या फरमाना,** दे 'देना'।
मरहूम, वि (अ) स्वर्, गत-यात, दिवंगत, मृत।
मराल, स पुं (सं) राजहंस २ कारंडव ३ अश्व ४ गज ५ मेघ।
मरिच, सं स्त्री (सं न) दे 'मिर्च'।

मरियल, वि (हिं मरना) मृतकल्प, कृश, निर्बल।

मरी, स स्त्री (स मारी) जन मर, महामारी, मारिका।

मरीचि¹, स स्त्री (स पु स्त्री) किरण, रश्मि २ कान्ति (स्त्री) ३ मरनराचिकि।

मरीचि², स पु (स) १-४ ऋषि-मरद दानव-दैत्य, विशेष।

मरीन, वि (अ) रुग्ण, रोगिन्।

मरीचिका, स स्त्री (स) दे 'मृगतृष्णा'।

मरु, स पु (स) धन्वन् (पु), मरु-स्थल स्थली ऊसर-र खिल्न।

—भूमि, स स्त्री (स) } दे 'मरु'।
—स्थल, स पु (स न) }

मरुआ, स पु (स मरुव) गन्ध-खर पत्र शीतल- बहुवीर्य (क्षुपभेद)।

मरुत, स पु (स) दे 'वायु'।

मरोड, स पु (हिं मरोडना) आकुंचन, व्यावर्तन २ अन्त्र-उदर, वेदना-शूल पीडा ३ दर्प ४ क्रोध ५ दे 'पेचिश'।

—फली, स स्त्री, मधूलिका, मूर्वा, मूर्वी, मधुरसा, रान्दिव,लता।

मरोडना, क्रि स (हिं मोडना) कुच-कुच (भ्वा प मे), व्यावृत् (प्रे), कुटिली वक्री कृ २ पीड (चु), दु:खयति (ना धा) ३ मुष्टिना-मुष्ट्या ग्रह (क्र प मे) धृ (भ्वा प अ)।

मरोडा, स पु, (हिं मरोडना) दे. 'मरोड' (१-२) २ दे 'पचिश'।

मरोडी, स स्त्री (हिं मरोडना) दे 'मरोड'(१) २ कुचित-व्यावर्तित-वस्तु (न) ३ ग्रंथि।

मर्कट, स पु (स) दे 'वदर'।

मर्ज, स पु (अ) दे 'मरज'।

मर्जी, स स्त्री (अ) इच्छा, रुचि (स्त्री) २ प्रसन्नता ३ स्वाकृति (स्त्री), अनुज्ञा।

मर्त्य, स पु (स) मनुष्य, मानव, २ शरीरम्।

—लोक, स पु (स) भूमि (स्त्री), भूलोक।

मर्द, स पु (फा) मानव मनुज, २ पुम (पु), पुरुष, नर ३ वीर सहनिन्, योधा ४ पति।

—बच्चा, स पु, वीरबाल।

मर्दन, स पु (स न) पद्भ्यां पीडनं क्षोद- आक्रमण २ अभ्यंजन, मर्दन, मर्दन, घर्षण ३ ध्वसन, नाशन ४ पेषण, चूर्णनम्।

मर्दनगी, स स्त्री (फा) शूरता, वीरता, पुरुषत्वम्।

मर्दाना, वि (फा) पुरुष-नर शूर,-उचित २ पुरुष-नर,-सदृश उपम विक्रान्त,-नर पुरुष।

—भेष स पु पुरुषवेश नरोचितवेष।

मर्दित वि (स) दलित पीडित क्षुण्ण-आक्रान्त २ मर्दित, चूर्णित ३ नाशित।

मर्दुम, स पु (फा) जन, मनुष्य।

—खोर, स पु, नरभक्षक मनुजाद।

—शिनास, वि, नर-मानव,-अभिज्ञ।

—शुमारी, स स्त्री (फा) जन,-मनुष्य गणना।

मर्म, स पु [स मर्मन् (न)] तत्त्व, स्वरूप २ रहस्य, गोप्यवृत्त ३ सन्धिस्थान ४ जीव स्थानम्।

—ज्ञ, वि (स) तत्त्वज्ञ, मर्मवेदिन् २ रहस्यविद् (पु)।

—पीडा, स स्त्री (स) हृद्‌शूल, मनव्यथा।

—भेदी, वि (स -दिन) मर्म,भिद् (पु) भेदक छेदक-विदारक।

—स्थान, स पु (स्त्री) मर्मस्थल, जीवन स्थानम्।

मर्मर, स स्त्री (अनु) दे 'मरमर'।

मर्यादा, स स्त्री (स) स्थिति (स्त्री), धारणा, मरया, नियम २ सीमा ३ कूल ४ प्रतिष्ठा, समय ५ सदाचार, सद्वृत्त ६ गौरव, प्रतिष्ठा ७ धर्म।

मलंग, स पु (फा) मलंग, यवनभिक्षुभेद २ पक्षभेद ३ स्वेच्छाचारिन्।

मल, स पु (स पु न) अवस्कर, धन्वज, किट्ट २ कर्दम, पङ्क ३ उच्चार, गूथ-थ पुरीष, विष (स्त्री), विष्ठा, शकृत (न), शमलम्।

मलना, क्रि स (स मर्दन) अन (क प मे), लिप् (तु प अ), दिह् (अ उ अ), भ्रंश् (भ्वा प से) २ घृष् (भ्वा प मे), मृद् (क्र प से, प्रे) ३ परि-प्र-मृज् (अ प मे), निज् (जु उ अ) ४ करत

लाम्या चूर्ण (सु) । म पु, अनन, लेपन, घर्षण, मर्दन, मार्जन, चूर्णनम् ।
हाथ—, मु, अनुपश्चात् तप् (दि आ अ), अनुशुच् (भ्वा प से) अनुशी (अ आ से)।
मलबा, म पु (स मल-) दे 'मल' १ २। २ शकलराशि ।
मलमल, स स्त्री (स मल्लमल्लक >) *मल मल्लक, सूक्ष्म तूलवस्त्रम् ।
मलमास, स पु (स) अधिमास, मलिम्लुच, असंक्रान्तमास, नपुंसक ।
मलय, स पु (स) दक्षिणाचल, चंदनाद्रि, आषाढ, मलयाचल २ तैलपर्णिक, श्वेतचंदन ३ नंदनवनम् ।
मलयज, स पु (स न) दे 'चंदनम्'।
मलयाचल, स पु (स) मलय, अद्रि गिरि पवन ।
मलयानिल, स पु (स) मलय, पवन वात समीर ।
मलवाई, स स्त्री (हिं मलवाना) मर्दन अनन घर्षण, भृति (स्त्री)।
मलवाना, मलाना, क्रि प्रे, व 'मलना' के प्रे रूप ।
मलहम, स पु, दे 'मरहम'।
मलाई, स स्त्री (फा बालाई) (दूध की) संतानी निका, क्षीर, सार, दुग्ध, अग्र तालीय, शार्कर, शाकर, (दही की) दे 'सार' (४) २ सार उत्तमांश ।
मलामत, स स्त्री (अ) दे 'फटकार'।
मलार, स पु (सं मल्लार) रागभेद ।
मलाल, स पु (अ) खेद २ औदासीन्यम् ।
मलिक, स पु (अ) नृप २ अधीश्वर ।
मलिका, स स्त्री (अ) राज्ञी २ अधीश्वरी ।
मलिन, वि (स) आविल, कलुष मलीमस, समल, पंकिल सकर्दम, मलदूषित २ दूषित, विकृत ३ धूम्रवर्ण ४ धूमवर्ण ५ पापात्मक, दुष्ट, पाप ६ विषण्ण, म्लानमुख ।
मलिनता, स स्त्री (स) आविलत्व, कालुष्य, मालिन्य, पंकिलत्व इ ।
मलियामेट, सं पुं (हिं मलना+मिटना) वि, ध्वंस नाश, क्षय, उच्छेद ।
—**करना**, क्रि, स, उच्छिद् (रु प अ), ध्वस्-नश् (प्रे), निर्मूल् (चु)।

मलीदा, स पु (फा मालीदा) मर्दित, स्निग्धमिष्टरोटिकाचूर्ण २ ऊर्णावस्त्रभेद, मर्दित ।
मलीन, वि, दे 'मलिन'।
मलेरिया, स पु (अ) विषमज्वर, *मशक-कुपवन-ज्वर ।
मल्ल, स पु (स) प्राचीनजातिविशेष २ बाहु-योध योधिन् । वि, महाबल, मांसल, स्थूल-महा-काय ।
—**भूमि**, स स्त्री (स) मल्लशाला ।
—**युद्ध**, स पु (स न) बाहु नि-युद्ध, दे- 'कुश्ती'।
—**विद्या**, स स्त्री (स) नियुद्धविद्या ।
मल्लाह, स पु (अ) नाविक, नौ पोत-वाह, औडुपिक, मार्गर २ धीवर, कैवर्त ।
मल्लिका, स स्त्री (स) दे 'मोतिया' २ छन्दोभेद ।
मल्लू, स पु (स मल्लुक) ऋक्ष, दे 'रीछ' २ वानर ।
मवक्किल, स पु (अ मुवक्किल) अभिभाषकनियोजक ।
मवाद, स प (अ) दे 'पीप'।
मवेशी, स पु (अ मवाशी) पशव (पुं- बहु), पशुसमूह, गोकुलम् ।
—**खाना**, स पु (अ +फा) गोष्ठ इ, व्रज ।
मश(स)क¹, स पु (स) दे 'मच्छड़'।
मशक², स स्त्री (फा) जलभस्त्रिका ।
मशकूक, वि (अ) संदेह संशय, आस्पद पात्र, संदिग्ध ।
मशकूर, वि (अ) कृत-उपकार-वेदिन, उपकारज्ञ, उपकारस्मर्तृ, आभारिन् ।
मशक्कत, स स्त्री (अ) परिश्रम, प्रयास ।
मशक्कती, वि (अ) उद्योगिन्, परिश्रमिन् ।
मशगला, स पु (अ) कायम्, व्यवसाय, अर्जनिका, वृत्ति (स्त्री)।
मशगूल, वि (अ) व्यापृत, व्यग्र, कार्यमग्न ।
मशरिक, स स्त्री (अ) प्राची, दे 'पूर्व' (दिशा)।
मशविरा, स पु (अ) मंत्रणा, परामर्श ।
मशहूर, वि (अ) विख्यात, प्रसिद्ध ।
मसान, स पु (स श्मशान) दे 'मरघट'।
मशाल, सं स्त्री (अ) दीपिका, शिखिनी, अग्नि, उल्मुक, उल्का ।

—लेकर या जलाकर ढूंढना, मु, सम्यक् अन्विष (दि प से)।
मशालची, स पु (अ + फा) उल्काधारिन्, उत्सुक-दीपिका-वाहक ।
मशीन, स स्त्री (अं) यन्त्रम् ।
मश्क, स स्त्री (अ) दे 'अभ्यास'।
मष, वि (स मष>) मौन, नि शब्दता।
—मारना, मु, तूष्णीं स्था (भ्वा प अ)-भू ।
मसकना, क्रि अ (अनु मस) व 'मसकाना' के कर्म के रूप। क्रि स दे 'मसकाना'।
मसकाना, क्रि स (हिं मसकना) विदल्-विद् (प्रे), विघट् (चु) २ सदल मृद् (क्र प से)-निपीड (चु)।
मसखरा, स पु (अ) विदूषक, भड, वैहासिक ।
—पन, स पु, भडता, वैहासिकता, परिहास, क्ष्वेडा।
मसजिद, स स्त्री (फा) *यवनमंदिर, मोहम्मदीयदेवालय ।
मसनद, स स्त्री (अ) च(चा)तुर, चक्रगड्डु, बृहद्वालिश महामसूरक २ धनिकासनम्।
मसल, स स्त्री (अ) आभाणक, लोकोक्ति । (स्त्री)।
मसलन्, क्रि वि (अ) यथा, उदाहरण-दृष्टान्त,-रूपेण ।
मसलना, क्रि स (हिं मलना) हस्तेन पादेन वा समृद् (क्र् प से, प्रे), सपीड् (चु) २ सदल निपीड (चु) ३ दे 'गूँधना'।
मसलहत, स स्त्री (अ) *नीति-युक्ता, शुभ मगल भद्र, औचित्य, युक्तता ।
मसला, स पु (अ) दे मसल २ विषय, समस्या ।
मसविदा, स पु (अ मुसविदा)। मस्कार्य शोधनाय,-लेख २ हस्त अमुद्रित, लेख ३ युक्ति (स्त्री), उपाय ।
—बाँधना, मु, उपाय चिंत (चु)।
मस(छ)हरी, स स्त्री (स मशहरी) दे 'मच्छरदानी'।
मसा, स पु (स मासकीउ) चर्मकील ल २ अर्श,-कील कील, मासकील कम्।
मसान, स पु (स श्मशान) पितृ वनकानन, अन्तशय्या, शतानक, रुद्राक्रीड, दाहसरस् (न)-स्थल २ पिशाच ३ रणक्षेत्रम्।
ममाना, स, पु (अ) मूत्राशय, वस्ति (पु स्त्री)।
मसाला, स पु (फा) वेश(ष,स)वार, उपस्कर, उपस्करसामग्री, स्वादन २ उपकरणानि, उपसाधनानि (न बहु), सामग्री ।
—डालना, क्रि स, उपस्कृ, स्वादूकृ, अधिवास (चु)।
मसालेदार, वि (फा) उपस्कृत, सोपस्कर, वेशवारयुक्त, स्वादूकृत ।
मसि, स स्त्री (स स्त्री पु) मसिजल, पत्राजन, मेला, मसी, रजनी, मशी, काली।
—दान, स पु } स + फा) दे 'मसिपात्र'।
—दानी, स स्त्री }
—पात्र, स पु (स न) मसि(सी)-कूपी-घटी धान-धानी-आधार ।
मसी, स स्त्री (स) दे 'मसि'।
मसीह, स पु (अ) दे 'ईसा' २ विषत्रातृ।
मसूडा, स पु [स श्मश्रु (न)>] दंत, मूल-मास, दंतवेष्ट ।
मसूर, स पु [स मसु(सू)र] मसु(सू)रा, मसूरक-का, मगल्य-ल्या, पृथु गुट-कल्याण, बीज, व्रीहिकाचन ।
मसूरिया, स स्त्री (स मसूरिका) वसन्तरोग, पापरोग, रक्तवटी, मसूरी, शीतला-ली, दे 'चेचक'।
मसूरी, स स्त्री (स) दे 'मसूरिया' २ दे 'मसूर'।
मसो(सू)सना, क्रि अ (फा अफ़सोस) (मनसि) खिद्-दु (कर्म), शुच् (भ्वा प से), तप् (दि आ अ) २ मनोवेग रुध् (रु प अ) शम् (प्रे) ३ ४ दे 'मरोडना' तथा 'निचोडना'।
मसौदा, स पु, दे 'मसविदा'।
मस्त, वि (फा) दे स 'मत्त'(१) २ निश्चिन्त, निरुद्विग्न ३ कामुक, कामिन् ४ स्वैरिन्, स्वेच्छाचारिन् ५ दृप्त, गर्वित ६ प्रहृष्ट, अतिप्रसन्न ७ उन्मादिन, वातुल ८ समद, मदघूर्णित (नेत्रादि)।
माल—, वि, वित्तमत्त, धनमूढ ।
मार—, वि, पीनप्रमोदिन् ।
मस्तक, स पु (स पु न) शिरस (न), उत्तमाग, शीर्ष, मूर्द्धन (पु), मुंड, शिर, वराग, मौलि, कपाल, केशभू (स्त्री)

२ ललाट, अलि(ली)क, भाल, ललाट भाल, पट्ट, गोधि ।

मस्तगा, स स्त्री (अ मस्तगी) उत्तमनिर्यास भेद, *मस्तगी ।

मस्ताना, वि (फा) मत्त तुल्य सदृश २ मत्त, क्षीव, मदिरोन्मत्त ।

मस्तिष्क, स पु (स न) गोद, गोर्द, मस्तकस्नेह, मस्तुलुङ्ग (मस्तिष्कभागा – इदं मस्तिष्क, लघुमस्तिष्क सुषुम्णाशीर्षकम्) ।

मस्ती, स स्त्री (फा) मत्तता, क्षीवता, शौंडता, मदाढ्यता, उन्मदता, २ सुरतेच्छा, रतिकामना ३ अभिमान ४ मद, मदजल, दानम् ।

मस्तूल, स पु (पुर्त) कूपक, गुणवृक्ष-क्षक, कूपदंड ।

मस्सा, स पु, दे 'मसा' ।

महँगा, वि (स महार्घ) महार्घ, बहु मूल्य, महामूल्य ।

महँगाई, } स स्त्री (हिं महँगा) महार्घता,
महँगी, } बहुमूल्यता २ दुर्भिक्ष, दुष्काल ।

महत, स पु (स महत्>) मठाधीश, २ साधूत्तम । वि, प्रधान, श्रेष्ठ ।

महती, स स्त्री (हिं महत) मठाधीशता २ साधुनेतृत्वम् ।

महक, स स्त्री (महमह से अनु) दे 'सुगंध' ।

—**दार**, वि (हिं+फा) दे 'सुगंधित' ।

महकना, क्रि अ (हिं महक) सुवास-सौरभ उत्सृज्-मुच् (तु प स) ।

महकमा, स पु (अ) विभाग ।

महकाना, क्रि स (हिं महकना) अधि, वास् (चु), सुरभीकृ, धूप (चु भ्वा प, से), परिमलयति (ना धा) ।

महकूम, वि (अ) शासित, अधीन २ आदिष्ट, आज्ञापित ।

महज़, वि (अ) शुद्ध, केवल । क्रि वि, केवल, एव, मात्रा ।

महत्, वि (स) गुरु, विशाल, बृहत्, स्थूल, दीर्घ २ उत्तम, श्रेष्ठ ।

महता, स पु (स महत्>) ग्रामणी (पु), अग्रिम, पुरोग, नायक २ लेखक, कायस्थ ।

महताब, सं पु (फा) चंद्र, सोम । स स्त्री (फा) चंद्रिका, कौमुदी ।

महताबी, सं स्त्री (फा) वर्तिकाकाराग्नि क्रीडनकभेद, चन्द्राभा ।

महतारी, सं स्त्री दे 'माता' ।

महती, वि स्त्री (स) बृहती, विशाला, विपुला, प्रचुरा ।

महतो, स पु (स महत्>) ग्रामनायक, ग्रामणी (पु) ग्रामाध्यक्ष ।

महत्तत्त्व, स पु (स न) प्रकृते प्रथम विकार (सांख्य), बुद्धितत्त्वम् ।

महत्तम, वि (स) महिष्ठ, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, वरिष्ठ, गरिष्ठ, विशालतम, प्रथिष्ठ । स पु (स न) [= आदे आनम (गणित) ।

महत्तर, वि (सं) बृहत्तर, गुरुतर, विशाल तर, उत्तर ।

महदूद, वि (अ) मित, परिमित, ससीम, मर्यादित ।

महफ़िल, स स्त्री (अ) संगीतसभा, प्रमोद परिषद् (स्त्री), रंगशाला ।

महफ़ूज़, वि (अ) सुरक्षित, परि, त्रात त्राण ।

महबूब, स पु (अ) प्रिय, कांत, दयित ।

महबूबा, स स्त्री (अ) प्रिया, कांता, दयिता ।

महरा, स पु (सं महत्तर >) दे 'कहार' ।

महराब, स स्त्री, दे 'मेहराब' ।

महरूम, वि (अ) वंचित, विरहित, हीन (प्राय सब समासांत में) ।

महर्षि, सं पु (स) ऋषीश्वर, ऋषिश्रेष्ठ २ रागभेद ।

महल, स पु (अ) प्रासाद, सौध ध, हर्म्य, राज-नृप, कुल-भवन मंदिरम् ।

—**सरा**, स स्त्री (अ + फा) अंत पुर, अवरोध ।

महल्ला, सं पु (अ) पुरभाग, नगरविभाग ।

महल्लेदार, स पु (अ + फा) पुरभाग नायक २ समपुरभागवासिन् ।

महसूर, वि (अ) परिवेष्टित, रुद्ध, बाधित, परिवृत ।

महसूल, स पु (अ) कर, राजस्व, शुल्क, वलि २ भाटं, भाटक ३ दे 'मालगुजारी' ।

—**खाना**, स पु, वारभू (स्त्री) ।

महसूस, वि (अ) अनुभूत, ज्ञात, अवगत, विदित ।

महा, वि (सं महत्) अत्यंत, अत्यधिक, अतिशय, बहुल २ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्टतम ३ विस्तीर्ण, विशाल, विपुल ।

—**काय**, वि (सं) विशालदेह ।

—**काल**, सं. पुं (सं) शिवरूपविशेष ।

—काली, स स्त्री (सं) महाकालपत्नी।
—काव्य, स पु (स न) मगवर, काव्य भेद ।
—चन्द, स पु (स) मनदन २ शकर ।
—देव, स पु (स) शिव ।
—देवी, स स्त्री (स) दुर्गा २ पट्टराज्ञी उमादि ।
—द्वीप, स पु (स) भूखण्ड वर्ष षण्ड्।
—धातु, स पु (स) सुवर्णम्।
—निद्रा, स स्त्री (स) मृत्यु ।
—निशा, स स्त्री (स) निशीथ, अर्द्ध मध्य रात्र रात्रि (स्त्री), महागात्रम्।
—पथ, स पु (स) प्रधानमहा-राज,मार्ग २ मृत्यु धरा-श्री,पथ, समरण, राज वमन् (न)।
—पाप, स पु (स न) महापातकम्।
—पापी, स पु (स-पिन्) महापातकिन्।
—पात्र, स पु (स) मुख्यप्रधान मंत्री, मन्त्रिन्-अमात्य सचिव ।
—पुरुष, स पु (स) पुरुषर्षभ, नरोत्तम २ दुष्ट (व्यंग्य में)।
—प्रभु, स पु (स) पवित्रात्मन, महात्मन् २ नृप ३ विष्णु ४ शिव ५ इन्द्र ।
—प्रलय, स पु (स) त्रिलोकीनाश , संसार संहार ।
—प्रस्थान, स पु (स न) मृत्यु ।
—प्राण, वि (स) महाप्राण, महाबल। स पु (स) वर्णमालाया अक्षरविशेषाः (ख्, घ्, छ, झ, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्, श, ष, स, ह)।
—बली, वि (स-लिन्) बलिष्ठ।
—बाहु, वि (स) दीर्घ-आजानु,-बाहु २ बलवत्।
—ब्राह्मण, स पु (स) गद्यविप्र ।
—भाग, वि (स) सौभाग्यशालिन्।
—भारत, स पु (स न) व्यासप्रणीत इतिहासग्रन्थ ।
—भाष्य, स पु (स न) अष्टाध्यायीभूत्राणा पतञ्जलिकृत वृहद्भाष्यम्।
—मांस, स पु (स न) (१८) गो-नर-गजघोटक महिष-वराह-उष्ट्र-मेष -मांसम्।
—माई, स स्त्री (स + हिं) दुर्गा २ काली।
—माया, स स्त्री (स) प्रकृति (स्त्री) २ दुर्गा ३ गंगा ४ गौतमबुद्धजननी।
—मारी, स स्त्री (स) मारिका, जनमार ।
—मुनि, स पु (स) मुनिपुंगव, मुनीन्द्र ।
—मूल्य, वि (स) महार्घ, बहुमूल्य।
—यज्ञ, स पु (स) वृहद्याग २ आर्य प्रत्यह कार्या पञ्चयज्ञा (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ नृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ)।
—यात्रा, स स्त्री (स) मृत्यु ।
—युग, स पु (स न) चतुर्युगी।
—रथी, स पु (स महारथ) महायोद्धा ।
—राजा, स पु (स महाराज) राजेश्वर, राजेन्द्र, नृपश्रेष्ठ सम्राज (पु), अधिराज ।
—राजाधिराज, स पु (स) चक्रवर्तिन्-सार्व-भौम-नृप ।
—रात्रि, स स्त्री (स) महाप्रलयाधकार २ दे 'महानिशा'।
—रानी, स स्त्री (स महाराज्ञी) अधिराज्ञी।
—हास, स पु (स) अट्टहास , अति,-हास हसितम्।
महाजन, स पु (स) नरर्षभ, पुरुषोत्तम २ साधु ३ धनिक, धनाढ्य ४ कुसीदिक दिन, वार्धुषिक विन ऋणद ५ वणिज् (पु) ६ आय , मानन ।
महाजनी, स स्त्री (स महाजन >) वृद्धि जीविका, अर्थप्रयोग, कुसीद, कौसीद २ लिपिविशेष ।
महातम, स पु, दे 'माहात्म्य'।
महात्मा, स पु (स-त्मन्) महाशय , महानुभाव , महामनस् (पु), उदारचरित।
महान्, वि (स महत्) दे 'महा' (१३)।
महाराष्ट्र, स पु (स) दक्षिणापथे प्रान्तविशेष ।
महाराष्ट्री, स स्त्री (स) दे 'मरहटी' २ प्राकृतभाषाभेद ।
महावत, स पु (महामात्र) हस्तिपक, हास्तिक गजाजीव, निषादिन , आधोरण, इभ्य ।
महावर, स पु (स महावर्ण ?) यावयावक-अलक्तक-लाक्षा रस ।
महावरा, स पु, दे 'मुहावरा'।
महाशन, वि (स अद्मर, घस्मर, औदरिक, उदरंभरि ।
महाशय, स पु (स) महात्मन् , महामनस्,

सज्जन, आर्य, उदार, चेतस्-मति धी, महानुभाव। (स्त्री महाशया)।

महास्पद, वि (स) उच्च, पदस्थ अधिकारिन् २ शक्तिशालिन्, सशक्त, शक्तिमत्।

महि, स स्त्री (स) दे 'पृथिवी'।

—पाल, स पु (स) दे 'राजा'।

महिमा, स स्त्री [स महिमन् (पु)] महत्त्वं, माहात्म्य, गौरव, महत्ता, गरिमन् (पु), गुरुत्वं २ श्री (स्त्री), शोभा, प्रभाव, *प्रताप, तेजस् (न), प्रभा, विभूति (स्त्री)* ३ सिद्धिविशेष (योग)।

महिला, सं स्त्री (सं) नारी, रामा, स्त्री, ललना, वनिता।

महिष, स पु (स) असुरविशेष २ दे 'भैंसा' ३ अभिषिक्तो नृप।

महिषी, स स्त्री (स) १ 'भैंस' २ पट्टराज्ञी।

मही, स स्त्री (सं) दे 'पृथिवी'।

—धर, स पु (स) पर्वत, गिरि २ शेषनाग।

—प,-पति, सं पु (स) दे 'राजा'।

—रुह, स पु (सं) वृक्ष, पादप।

—सुर, सं पु (स) ब्राह्मण।

महीन, वि (महा-क्षीण) दे 'सूक्ष्म' तथा 'बारीक'।

महीना, सं पु [स मास, मास् (पु), मिका माह] दे 'मास' २ मासिकवेतनम्।

महुआ, स पु (स मधूक) गुडपुष्प, मधुद्रम, मधु, मधुक, मधु,पुष्प-वृक्ष स्रव, माधव।

महेंद्र, स पु (स) दे 'इन्द्र' २ विष्णु ३ पवनविशेष।

महेश, सं पु (सं) शिव २ ईश्वर।

महेश्वर, स पु (सं) शिव २ परमेश्वर ३ सुवर्णम्।

महेश्वरी, सं स्त्री (स) दुर्गा, पावनी।

महोत्सव, स पुं (सं) महा,-क्षण -उद्धर्ष-पर्वन् (न) -महस् (न) -मह १

महोदधि, सं पु (सं) महा,-सागर -अब्धि।

महोदय, सं पु (सं) महाशय महानुभाव (आदरसूचक सबोधन) २ ऐश्वर्य, वैभव ३ स्वर्ग ४ मोक्ष। (स्त्री महोदया)

महोपाध्याय, सं पु (स) प्राध्यापक, पण्डित।

,महौषध, सं पु (सं न) भूम्याढ्य २ शुंठी ३ लशुन ४ वाराहीकन्द ५ वत्सनाभ ६ पिप्पली ७ अतिविषा।

माँ, स स्त्री (स मा) दे 'माता'।

माँग, स स्त्री (हि मांगना) दे 'मांगना'। स पु २ आवश्यकता, पृच्छा, निघृक्षा, प्रेप्सा, लिप्सा ३ प्रार्थनाविषय।

माँग², स स्त्री (स मार्ग ?) सीमत, *मूर्द्धजरेखा।

—निकालना, क्रि स, सीमन्त्यति (ना धा), *सीमत उन्नी (भ्वा प अ)।*

—चोटी, सं स्त्री, केश,विन्यास सस्कार।

—जली, स स्त्री, विधवा।

माँगना, क्रि अ (स मार्गण>) भिक्ष् (भ्वा आ से) भिक्षाटन कृ। क्रि स, याच् (भ्वा आ से), अभि प्र अर्थ् (चु आ से) २ *ऋणं कृ अथवा ग्रह् (क्र प से)*। सं पु, भिक्षण, भिक्षा, भिक्षाटन, याचन-ना, याच्ञा, अभ्यर्थन ना, प्रार्थन-ना।

माँगने योग्य, वि, याचनीय, अभि प्र,-अर्थ्-नीय, प्रार्थयितव्य।

माँगनेवाला, स पु भिक्षु, भिक्षुक, याचक, प्रार्थक, प्रार्थिन् इ।

मांगलिक, वि (स) शिव शुभ,-कर (-री स्त्री), शिव, शुभ, कल्याण (-णी स्त्री), मगल, भद्र, मांगल्य।

मांगल्य, वि (सं) दे 'मांगलिक'। स पु (स न) शुभ, भद्र, कल्याणं, शिवम्।

माँगा हुआ, वि, प्रार्थित, याचित।

माँजना, क्रि स (सं मार्जन) प्र सं-मृज् (अ प से, चु), प्रक्षल् (चु), धाव् (भ्वा प से, चु), अव निर्,निज् (जु उ अ), पवित्री कृ २ पतगगुणं तीक्ष्णीकृ, मृज् (भ्वा प से)। क्रि अ, अभ्यस् (दि प से)। सं पु, मार्जनं, प्रक्षालनं, धावन, अभ्यसनम्।

माँजने योग्य, वि, मृज्य, मार्जनीय, प्रक्षालनीय, धावनीय।

माँजनेवाला, सं पुं, मार्जक, प्रक्षालक, धावक, पावक, शाणक।

माँजा हुआ, वि, मार्जित, मृष्ट, प्रक्षालित इ।

माँझा¹, सं पुं (सं मध्य>) पुलिनं, नदीमध्यस्थं, द्वीप २ वरप्रदत्तं मनोजनं ३ औद्दार्य पातवेदा ४ प्रगाढ, स्तम्भ।

माँझा², स पु (स मार्जन>) *पतगगुण गुन्जि, *मार्जन ।
माँझी, म पु (म मध्य>) दे 'मल्लाह' ।
माँड, स प (स मट-ड) भक्तमट, आच म, पिच्छल-लल्ला, निस्र(स्रा)व, मासर, विच्छा च्युत् ।
माँडना, क्रि म, दे 'रौंदना', 'मसलना' और 'गूधना' ।
माडलिक, म पु (स) मंडल, ईश्वर-अधीश, अध्यक्ष ।
माँडव, म पु (स मडप) औद्वाहिकमटप ।
माडवी, म स्त्री (म) भरतपत्नी कुशध्वजपुत्री ।
माडा, स पु (स मडक) पिष्टकभेद ।
माँडी, म स्त्री (स मट>) श्वेतसार मड-डम् ।
मात्रिक, वि (स) मत्र-सम्बन्धिन् विषयक । म पु (स) मत्रविद्, वेदपाठिन् २ अभिचारिन्, मायिन् ।
माँद¹, वि (स मद) निःश्रीक, खिन्न, विवर्ण २ मदतर, निकृष्टतर, मलिनतर ।
माँद², म स्त्री (देश) शुष्कगोमयराशि, शकृच्चय २ (हिंस्रपशुना) गुहा, गह्वर, विवरम् ।
माँदगी, स स्त्री (फा) रोग २ क्लान्ति ग्लानि (स्त्री) ।
माँदा, वि (फा) श्रात, क्लात २ अवशिष्ट ३ रुग्ण, रोगिन् ।
माम, स पु (स न) पिशित, पल, पलल, तरस, क्रव्य, आमिष, अस्त्र, कीर, जाङ्गलम् ।
—का घी, स पु, माम-सार स्नेह, मेदस (न) ।
—पेशी, म स्त्री (स) शरीरस्थ माम पिण्ड, मार्मपिंटी, स्नमा, वरस्नमा, स्नायु, स्नाव (ये पुरुष मे ५००, स्त्रियों मे ५२० होती हैं) २ द्वितीयसप्ताहे गर्भरूपम् ।
—भक्षक, स पु (स) मास-अद् (पु)-अन्न भोजिन् भक्षिन्-आहारिन्-आशिन् ।
—भक्षण, म पु (स न) माम भोजन अशन अदन-आहार ।
—रस, स पु (म) मामसड-ड, दे 'यखनी' ।
मामल, वि (स) पीन, पीवर, मामपूर्ण २ पुष्ट, दृढाग ३ बलवत्, बलिन् । स पु, दे 'उड़द' ।

मा, म स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री) २ मातृ (स्त्री) ।
—बाप, म पु, दे 'मातापिता' ।
माइक्रोमीटर, स पु (अ) अणुमापकम् ।
माई म स्त्री [स मातृ (स्त्री)] दे 'माता' २ वृद्धा, जरती स्थविरा ।
—का लाल, स पु, उदार, वदान्य २ वीर शूर ।
माक़ूल, वि (अ) यथार्थ, न्याय्य, उचित, युक्त, योग्य २ पर्याप्त ३ उत्तम ।
माखन, म पु, दे 'मक्खन' ।
—चोर, म पु, श्रीकृष्ण ।
मागध, स पु (स) मगधवासिन् २ जरा मध ३ चारण, वदिन् ।
माघ, म पु (स) शिशुपालवधमहाकाव्य लेखक महाकविविशेष । २ तपस् (पु), मासविशेष (जनवरी-फ़रवरी) ।
माजरा, स पु (अ) वृत्त, वृत्तात २ घटना ।
माजाया, वि (सं मातृजात) सोदर, सहोदर, सोदर्य ।
माजू, स पु (फ़ा) मज्ज मायि छिद्रा-फल, मायिका ।
—फल, स पु (फ़ा+म) माया-मायि छिद्रा, फल, मायिकम् ।
माजून, म स्त्री (अ) अवलेह, लेह्य (औषध) २ भंगामिश्रितावलेह ।
माट, म पु (हि मटका) बृहन्नीलभाड २ 'मटका' ।
माटी, म स्त्री, दे 'मिट्टी' ।
माणिक, म पु (स माणिक्य) शोण, रत्न उपल, पद्मराग, लोहितक, रत्नम् ।
मातग, म प (स) द्विप, गज ।
मात, स स्त्री (अ) परा-अभि परि, भव, पराजय २ पराजित, परास्त, पराभूत ।
—करना, क्रि म, विजि (भ्वा आ अ), पराभू ।
—होना, क्रि अ, पराभू (कर्म), विजित (वि) भू ।
मातदिल, वि (अ मोतदिल) अनुग्रहीन, मध्यम, सामान्य, मध्यमप्रकृतिक ।
मातबर, वि (अ मोतबिर) दे 'विश्वसनीय' ।
मातबरी, स स्त्री (अ+फ़ा) दे 'विश्वस नीयता' ।

मातम, स पु (अ) मृतक ,शोक क्रन्दन, विलाप परिदेवना।

—ख़ाना, स पु , शोकसदनम्।

—पुर्सी, सं स्त्री (अ + फ़ा) आश्वासनम्, -श्वासन, सान्त्वन, शोकशमन अनुशोचनम्।

—पुर्सी करना, क्रि स अनुशोक प्रकाश (प्र) अनुशुच (भ्वा प से), मृतकबन्धून समाश्वस (प्रे)।

मातमी, वि (फ़ा) शोक-सूचक प्रकाशक पूर्ण।

—लिबास, स पु (फ़ा + अ)शोक-वेश (पु)।

मातरिश्वा, स पु (स -श्वन्) वायु दे वात , पवन अनिल।

मातलि, स पु (स) इन्द्रसारथि।

—सूत, स पु (स) सुरेश , शचीपति , इन्द्र।

मातहत, वि (अ) अधीन, आयत्त।

मातहती, सं स्त्री (अ मातहत) अधीनता, आयत्तता।

माता[1], स स्त्री [स मातृ (स्त्री)] जननी, जनयित्री शुश्रू (स्त्री), जनी नि (स्त्री), जनित्री, सवित्री, प्रसू (स्त्री), अक्का, अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका, माता (क्वचित्)। २ वृद्धा, स्थविरा, पूज्यनारी ३ गौ (स्त्री) ४ भूमि (स्त्री) ५ शीतला-ली, दे 'चेचक' ६ मसूरिका, दे 'खसरा'।

—ढलना, क्रि अ , शीतला शम् (दि प से)।

—निकलना, क्रि अ , शीतला आविर्भू।

—पिता, स पु पितरौ, मातापितरौ, मातर पितरौ, मातरौ, अम्बाजनकौ।

—मह, स पुं (स) मातुर्जनक।

—मही, स स्त्री (सं) मातुर्जननी।

छोटी—,स स्त्री , लघुमसूरिका (हि लाकड़ा काकड़ा)।

माता[2], वि , दे 'मत्त' (१)।

मातुल, स पु (स) मातृभ्रातृ, पितृश्याल , मातुलक।

मातुली, सं स्त्री (सं) मातुला-लानी, मातुल-पत्नी।

मातृ, स स्त्री (स) दे 'माता'।

—भाषा, सं स्त्री (स) जन्मभाषा।

मातृक, वि (सं) मातृ विषयक-सम्बन्धिन्। सं पु (स) दे 'मातुल'।

मातृका, सं स्त्री (सं) दे 'माता' २ उप-मि,माता, मातृसपत्नी ३ धात्री, धातृका, अक्षराली ४ ब्रह्म्यादय सप्तदेव्य ५ स्वर वर्णचिह्नानि, मात्रा (ा, ि , ई)।

मात्र, अव्य (स -मात्र) एव, केवलम्।

मात्रा, स स्त्री (स) परिमाण,मान, मान, अंश , भाग २ सकृत्सेव्य औषधमात्रा ३ मात्रिका, कला, ह्रस्ववर्णोच्चारणापेक्षित काल ४ स्वरवर्णचिह्न (ा, ि , ई)।

मात्सर्य, स पु (स न) दे 'मत्सर'।

माथा, स पु (स मस्तक -क>) दे 'मस्तक' (२) अग्र, अग्र भाग -देश ३ मूर्धन् (पु), शिरस्म्।

—पच्ची, } सं स्त्री, दे 'मगजपच्ची'।
—पिट्टन, }

—टेकना, मु , चरणयो पत् (भ्वा प से), प्रणम् (भ्वा प अ)।

—ठनकना, मु , भाविसङ्कट आशङ्क् (भ्वा आ से)।

—रगड़ना, मु , पादयो पतित्वा याच् (भ्वा आ से)।

मादक, वि (स) मद,-कारक-जनक।

मादकता, स स्त्री (स) मदकारकता।

मादर, सं स्त्री [फ़ा , मि स मातर (मातृ से)] जननी, जनित्री, मातृ (स्त्री)।

—ज़ाद, वि (फ़ा), मि स, मातृजात) सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक, जात्या जन्मना जन्मत (अन्ध , बधिर इ) २ दिगंबर, नग्न ३ सोदर, सहोदर।

मादा, सं स्त्री (फ़ा) नारी, स्त्री , स्त्रीजाति यको जीव।

माद्दा, सं पुं (अ) प्रकृति (स्त्री) उपा दानकारणं २ योग्यता ३ दे 'पीप'।

माधव, सं पुं (स) विष्णु , नारायण २ वैशाख ३ वसन्त।

माधवी, सं स्त्री (सं) वासन्ती, सुगन्धा, चन्द्रवल्ली, भद्रलता, अतिमुक्तक माधविका २ सुराभेद।

माधुरी, स स्त्री (सं) मधुरता २ सुन्दरता ३ मद्यम्।

माधुर्य, सं पुं (स न) मधुरता-त्व, मिष्टत्वं, स्वादुत्वं मधुमयता मिष्टता २ सौन्दर्यं, लावण्य ३ चित्तद्रवीभावमयो ह्लाद , काव्य गुणभेद।

माध्यंदिन, वि (स >) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन्। स पु, मध्याह, मध्य(ध्यं) दिनम्, उदिनम् २ वाजसनेयिसहिताया शाखाविशेष।

माध्यम, वि (स) माध्यमक [—मिका (स्त्री)], माध्यमिक (—मिकी स्त्री) माध्य [—ध्यी (स्त्री)], केन्द्रीय, मध्यम। स पु (स न) उपकरणं, साधन २ मृत सदेशहर'।

माध्यमिक, वि (स) मध्य, मध्यम, मध्यवर्तिन्। स पु बौद्धसम्प्रदायविशेष।

माध्यस्थ्य, स पु (स न) दे 'मध्यस्थता'।

माध्वी, स स्त्री (स) मध्यादिनिर्मितसुरा २ माधवी, वासन्ती, सुगधा।

मान, स पु (स) गर्व, अभिमान, दर्प, अहकार, अवलेप २ समान, प्रतिष्ठा, आदर, समावना, पूजा, प्रणय-यण ३ कोप, प्रीतिप्रसाद-अभाव। (स न) यौतव, पौतवं, माप्य, द्रुवय (हि तौल नाप) २ प्रमाण,—माण, मात्रा ३ इयत्ता, विस्तार ४ भार, गुरुत्व, तोल ५ मारभाव, परिमाण, मात्र, माड ६ मान-दट-सूत्र इ ७ साधन, हेतु, युक्ति (स्त्री)।

—करना, क्रि स, सद्‌पुरस-कृ, समन् (प्रे), पूज्-मह् (चु)। क्रि अ, मान धा (जु उ अ), क्रुध (दि प से) २ दृप् (दि प अ), गर्व (भ्वा प मे)।

—चित्र, स पु (स न) देशालेख्य, प्रदेशचित्र, दे 'नक्शा'।

—मंदिर, स पु (स न) वेधशाला २ कोपभवन, मानगृहम्।

—मनौती, स स्त्री (स + हि) दे 'मन्नत' २ पारस्परिकप्रेमन् (पु न) ३ कोपप्रसादनम्।

—मोचन, स पु (स न) कोप, उपशमन अपनयनं, प्रसादनम्।

—रखना, क्रि स, दे 'मान करना' क्रि स २ स्वाभिमानं-आत्मसमान रक्ष (भ्वा प मे)।

—हानि, स स्त्री (स) अपमान, वाद, अपभाषा अवधीरणा, मानभग, अवमानना।

मानता, स स्त्री (हि मानना) दे 'मन्नत' २ समान, प्रतिष्ठा।

मानना, क्रि अ (स मनन) क्लृप् (प्रे), तर्क् (चु), उत्प्रेक्ष (भ्वा आ से) २ अगीस्वी-कृ अभ्युपगम्, अभ्युपइ (अ प अ), मन् (दि आ अ) ३ सम्मानितम् भू। क्रि स, दे 'मानना' क्रि अ २ दक्ष प्रवीण पूज्य मन् (दि आ अ) ३ श्रद्धा (जु उ अ), विश्वस् (अ प से) ४ दे 'मन्नत मानना'। स पु, स्वीअगी,-करण-कार, अभ्युपगम-गमन, कल्पन, उत्प्रेक्षाक्षा, विश्वसनम्।

माननीय, वि (स) पूज्य, पूजनीय, सत्काय, आदरणीय, समान्य।

मानने योग्य, वि, स्वीअगी,-कार्य, मतव्य, अभ्युपेय २ श्रद्धेय, पूज्य, विश्वसनीय।

माननेवाला, स पु, स्वीकर्तृ, मंतृ २ श्रद्धालु, विश्वासिन्।

मानव, स पु (स) दे 'मनुष्य'।

मानवी, स स्त्री (स) मानुषी, स्त्री, नारी। वि, मानव, मानुष, पौरुषेय, मनुजोचित।

मानस, स पु (स न) मनस् चेतस् (न), हृदयं, दे 'मन' (१४)। २ कैलासवर्ती सरोवरविशेष ३ कामदेव, कदर्प। वि, मानसिक, चैत्त बौद्धिक, हार्दिक।

—शास्त्र, स पु, (स न) मनोविज्ञानम्।

मानसिक, वि (स) मनोभव, मानस, दे 'मानस' वि।

माना हुआ, वि, स्वीअगी-कृत, मत २ पूजित प्रतिष्ठित, विश्वस्त।

मानिंद, वि (फा) तुल्य, सदृश,-वत्।

मानिक, स पु, दे 'माणिक'।

मानित, वि (स) आदृत, प्रतिष्ठित, पूजित।

मानिनी, स स्त्री (स) रुष्टनायिका। वि, मानवती, अभिमानिनी २ रुष्ट, प्रतीपा, कुपिता।

मानी[1], वि (स निन्) अहकारिन्, दृप्त, गर्वित २ समानित, प्रतिष्ठित। स पु, रुष्ट नायक २ सिंह।

मानी[2], स पु (अ) अर्थ, तात्पर्य २ तत्त्व, रहस्य ३ प्रयोजनम्।

मानुष, स पु (स) मनुष्य, नर, दे 'मनुष्य' २ प्रमाताभेद (धन)। वि, मानुषि(ष)क, मानुष्यक, मनुष्यसबधिन्, मानुष्य, मानुषीय।

मानुषिक, वि (स) दे 'मानुष' वि ।
मानुष्य, स पु (स न) मनुष्यत्वम् । वि, दे मानुष वि ।
माने, स पु दे 'मानी' (१ ३) ।
मानो, अव्य (हिं मानना) इव, (प्राय मद्) (हिं आ अ) मे अनुवाद करते हैं ।
मान्य, वि (स) दे माननीय' ।
माप, स स्त्री (हिं मापना) (सामान्य) मान प्र परि -माण, यौ(पौ)त्व, पथ्य, द्रव्य २ (गजादि) मान, दड सूत्र इ, ३ (बड़ा) भारमान, माढ मात्र ४ (पात्र) प्रतीमान, प्रस्थ ५ मान, मापन, माननिरूपण ६ परिमाण इयत्ता, दे 'मान' ।
मापक, स पु (सं) माननिरूपक , मातृ (पु) २ दे 'माप' (१ ४) ।
मापन, सं पु (स न) दे 'मापना' स पु ।
मापना, क्रि स (सं मापन) प्र परि,मा (अ प अ जु आ अ, दि आ अ) मान निरूप (चु) २ तुल् (चु), भार निरूप , दे 'तोलना' । स पु, स न, मान निरूपणं मापन मस्ति (स्त्री), तोलन, भारनिरूपणम् ।
मापने योग्य, वि , परि-मेय, तोलयितव्य ।
मापनेवाला, स पु , दे 'मापक' ।
मापा हुआ, वि परि मित, मानमान, तोलित ।
माफ, वि दे 'मुआफ़' ।
माफ़िक, दे 'मुआफ़िक' ।
माफ़ी, दे 'मुआफ़ी' ।
मामता, स स्त्री (स ममता) दे 'ममता' (१ ४) ।
मामा[१], स पु, दे 'मातुल' ।
मामा[२], स स्त्री (फ़ा) मातृ (स्त्री) जननी २ वृद्धा ३ दासी ४ धात्री, मातृका ।
मामि(म)ला, स पु दे 'मुआमिला' ।
मामी, स स्त्री दे 'मातुली' ।
मामू, स पुं, दे मातुल' ।
मामूल, वि (अ) दे 'अभ्यस्त' २ रीति - परिपाटि (स्त्री) ।
मामूली, वि (अ) साधारण, सामान्य ।
मायका, स पु (हिं माय) उद्भव पितृ-मातृ -गृहम् ।
मायल, वि (फ़ा) आनत, प्रवृत्त, प्रवण २ मिश्रित ।

माया, सं स्त्री (स) द्रव्यं, धन, संपद्(स्त्री) २ अज्ञान, भ्रांति (स्त्री), अविद्या ३ छल, कपट ४ प्रकृति (स्त्री), सृष्टे उपादान कारण ५ ईश्वरीयशक्ति (स्त्री) ६ इंद्रजाल कुहक ७ देव,-लीला शक्ति (स्त्री) प्रेरणा ८ ममता-त्वम् ।
—कार, स पु (सं) मायाजीविन, ऐंद्र जालिक ।
—जोड़ना, क्रि स , धन स चि (स्वा प अ) ।
—मोह, स पु (स) जगज्जालं २ ममता त्वम् ।
—रूप, वि (स) मायामय, अलीक, भ्राँति मय, मायिक ।
—वती, सं स्त्री (सं) रति (स्त्री), काम पत्नी ।
—वाद, स पु (स) भ्रांतिवाद , जीवजग न्मिथ्यात्ववाद ।
मायाविनी, स स्त्री (स) मायिनी, कपटिनी, वचनशीला २ ऐंद्रजालिकी ।
मायावी, स पु (स विन्) मायिन् कपटिन, वचक , धूर्त्त , शठ २ ऐन्द्रजालिक , कुहक जीविन्, मायाकार' ।
मायिक, वि (स) कृतक, कृत्रिम, २ दे 'मायावी' (२) ।
मायी, वि (स यिन्) मायाविन्, धूर्त, वचक, कपटिन् ।
मायूस, वि (फ़ा) दे 'निराश' ।
मायूसी, स स्त्री (फ़ा) दे 'निराशा' ।
मार[१], स पु (स) कामदेव २ विघ्न ३ विष ४ धुस्तूर ।
मार[२], स स्त्री (सं मृ) मारणं, हननं, हिंसनं २ घात , वध , हत्या ३ ताडनं, आह ननं, प्रहरण ४ आघात , प्रहार ५ युद्धम् ।
—काट, स स्त्री , युद्ध २ वध , घात , हननं, हिंसनम् ।
—धाड़, } सं स्त्री., मारणं, मारणताडनं,
—पीट, } अभिमर्द , अभिमर्पात ।
—खाना, } मु , ताड्,प्रहृ (कर्म) ।
—सहना, }
—गिराना, मु , अन्हत्य निपद् (प्रे) ।
—डालना, मु , हन् (अ प अ), मृत्या पद् (प्रे) ।

—**बैठना**, मु , परद्रव्य कपटेन आत्मसात्-कृ ।
—**भगाना**, मु , विद्रु (प्रे), पलाय् (प्रे), सर्वथा परा जि (भ्वा आ अ) ।
—**मारना**, मु , भृश-अत्यर्थं निर्दयं तड् (चु) ।
—**लाना**, मु , लुठ् (चु), अन्यायेन अपहृ (भ्वा प अ) ।
—**लेना**, मु , दे 'मार बैठना' ।
—**हटाना**, मु , बलेन अपसृ (प्रे)-विद्रु (प्रे) ।
मारक, वि (स) घातक, हिंसक, महारक, नाशक ।
मारका[1], स पु (अ मार्क) चिह्न, लक्षण, अभिज्ञानम् ।
मारका[2], स पु (अ) युद्ध, संग्राम २ विशिष्ट, वृत्त-घटना ।
मारकीन, स स्त्री (अं नैनकिन) *मारकीन, स्थूलवस्त्रभेद ।
मारण, सं पु (स न) हनन, हिंसन, व्यापादन २ तान्त्रिकप्रयोगभेद ।
मारतौल, म पुं (पुर्त० मोर्टेली) महा-बृहद्, घन विघन ।
मारना, क्रि स., (स मारण) मृ-व्यापद् (प्रे), हन् (अ प अ), हिंस (भ्वा रु प से) सूद् (चु) २ तड (चु), प्रह (भ्वा प अ), आहन् (अ प अ) ३ पीड् (चु), दु:खयति (ना धा) ४ मल्लयुद्धे रिपु निपत् (प्रे)-पराजि (भ्वा आ अ) ५ (किवाड़ादि) अ-पिधा (जु उ अ), आ-मन्त्र् (स्वा उ से) ६ मुच-प्रक्षिप् (तु प अ), आम (दि प से) ७ निग्रह् (क्र प से) निरुध् (रु प अ) ८ नश् ध्वंस (प्रे) ९ (धात्वादिक) भस्मीकृ १० अन्यायेन आत्मसात् कृ ११ अनुन्था (भ्वा प अ) १२ जि (भ्वा प अ) १३ दश (भ्वा प अ) । सं पु , मारण, हनन, निषूदन, हिंसन, विशसन, व्यापादन, प्रमापण २ हत्या, वध, हिंसा, घात ३ आहनन, ताडन, प्रहरण ४ पीडन ५ निपातन ६ पिधान ७ नाशन, ध्वसन ८ भस्मीकरण ९ अन्यायेन आत्मसात्करण १० दशन, इ ।
मारने योग्य, वि , हन्तव्य, हिंसितव्य, व्यापाद्य २ ताडयितव्य, आहननीय, इ ।
मारनेवाला, स पु , घातक , हिंसक , ताडक ।
मारपेच, म स्त्री (हिं मारना + पेच) कैतव, कपटोपाय ।
मारवाड, स पु , राजस्थानस्य भागविशेष ।
मारवाडी, स पुं , मारवाडवासिन् । सं स्त्री मारवाडी, मारवाडभाषा ।
मारा, वि (हिं मारना) दे 'मारा हुआ' (१ २)।
—**जाना**, क्रि अ , हन्-हिंस्-सूद् (कर्म) ।
—**मार**, स स्त्री , मिथ ताडन, कलि , संघर्ष । क्रि वि , सत्वर, सवेग, शीघ्रतया ।
—**मार करना**, मु , त्वर् (भ्वा आ से.), शीघ्रता (अ प अ)-कृ ।
—**मारा फिरना**, मु , मुधा परिभ्रम् (भ्वा दि प से), क्षीणवृत्तिक (वि) पर्यट (भ्वा प से) ।
—**हुआ**, वि , हत, व्यापादित, मारित, २ ताडित, प्रहृत आहत ।
मारी, स स्त्री (स) दे 'मरी' ।
मारुत, स पु (स) वायु , मरुत् (पु), मरुत ।
—**तनय**, म पु (स) पवन-सुत पुत्र-ज , मारुति , आंजनेय ।
मारू, स पु (हिं मारना) रागभेद २ रण, भेरी-दुंदुभि । वि , मारक, हृदयवेधक ।
मारे, अव्य (हिं मारना) कारणेन-गात, हेतो ।
मार्ग, सं पु (सं) अध्वन् पथिन् (पुं), पथ·, वर्त्मन् (न) २ चरणपथ , पदवी वि (स्त्री), पद्या, पद्धती ति (स्त्री) ३ प्रतोली, राजपथ , रथ्या, वाहनी, श्रीपथ , सरणी-णि (स्त्री) ४ वीथी-थि (स्त्री), विशिखा ५ उपाय , युक्ति (स्त्री) ।
मार्गशीर्ष, स पु (स) आग्रहायणिक , मार्ग , मार्गशिर -रस् (पु), सहस् (पु) ।
मार्जन, म पु (स न) मार्ष्टि -शुद्धि (स्त्री), मार्जना, मृजा, प्रक्षालन, धावन, शोधन, पवन, निर्मलीकरणम् ।
मार्जनी, स स्त्री (स) दे 'झाड़ू' ।
मार्जार, सं पु (स) दे 'बिल्ला' (-री स्त्री) ।
मार्जित, वि (स)पूत, शोधित, प्रक्षालित, धौत ।
मार्तंड, म पु (स) सूर्य २ अर्कपुष्प ३ शूकर ।
मार्दव, म पु (स न) दे 'मृदुता' ।
मार्फ़त, अव्य (अ) दे 'द्वारा' ।

मार्मिक, वि (स) प्रभावशालिन् हृदयग्राहिन् ।

माल, स पु (अ) सपद्-संपत्ति (स्त्री), वित्त, अर्थ २ सामग्री, परिच्छद ३ पण्य जात, पणसा (पुं बहु), क्रय्यद्रव्याणि (न बहु) ४ राजस्व, कर ५ उत्पन्न प्रसव, फल ६ स्वादुभोजन ७ गो पशु, धनम् ।

—खाना, स पुं (फा) भाडार, पण्यागारम् ।

—गाड़ी, सं स्त्री (फ़ा+हि) द्रव्यशकटी, दे 'गाडी' ।

—गुज़ार, स पुं (फ़ा) राजस्वदायक, भूमिकरद ।

—गुज़ारी, सं स्त्री (फ़ा) भूमिक्षेत्र,-कर शुल्क ।

—टाल, स पु, धनं, वित्त, सपद (स्त्री) ।

—दार, वि (फा) धनिक, धनाढ्य ।

—मस्त, वि (फ़ा) रिक्तद्रम, धन ,गर्वित मत्त ।

माला—, वि, ह्रसपत्र, ह्रसमूढ ।

मालकंगनी, स स्त्री (हिं माल[1]+स कगुनी) महाज्योतिष्मती, कगुनी, कनकप्रभा, सुरलता, तीव्रा, तेजस्विनी (लताभेद) ।

मालती, स स्त्री (स) सुमना, सुमनस् (स्त्री, न), जाती ति (स्त्री) २ ज्योत्स्ना ३ रात्री ।

मालदह, स पु (देश०) बिहार राज्यस्य नगरविशेष २ आम्रभेद ।

मालपु(पू)आ, सं पु (अ माल+स पूप) पूप, पिष्टक, दे 'पुआ' ।

मालवा, स पुं (स मालव) अवन्तिदेश ।

मालवीय, वि (स) मालवसम्बन्धिन् । स पु, मालववासिन् २ विप्रभेद ।

माला, स स्त्री (स) माल्यं, स्रज् (स्त्री), माल(लि-ला)का, आपीड अवतंस, आलि (स्त्री) २ पंक्ति-आवलि-राजि श्रेणि (स्त्री) ३ समूह, निकर ४ अक्षजप,-माला ५ कंठ माला, हार ।

—कार, स पु (स) दे 'माली' ।

—फेरना, मु, ईश्वरं, भज (भ्वा उ अ), प्रजपं जप (भ्वा प से) ।

मालामाल वि (अ) समृद्ध, सम्पन्न, धन धान्यपूर्ण ।

मालिक, सं पुं (अ) परमेश्वर २ स्वामिन्, प्रभु ३ पति [मालिका (स्त्री) ।]

मालिका, सं स्त्री (सं) पंक्ति श्रेणि तति (स्त्री) २ माला ३ कठभूषणभेद ४ द्राक्षा, मद्य ५ मालिनी ६ दे 'चमेली' ।

मालिकी, स स्त्री (फा मालिक) स्वामित्व, प्रभुत्व, स्वत्वम् ।

मालिक्यूल, स पु (अ) व्यूहाणु, अणु ।

मालिन, स स्त्री (स मालिनी) मालाकारी, मालिकी ।

मालिन्य, सं पु (स न) दे 'मलिनता' २ अधकार ।

मालियत, स स्त्री (अ) मूल्य, अर्घ २ धन ३ मूल्यवद्द्रव्यम् ।

मालिया, सं पु, दे 'मालगुजारी' ।

मालिश, स स्त्री (स) अभ्यजनं, मर्दनं, घर्षणं, सवाहनम् ।

माली[1], सं पु (स लिन्) मालाकार, मालिक, उद्यानपाल २ जातिविशेष ३ मालाधारिन् ।

माली[2], वि (अ माल) आर्थिक, सांपत्तिक, अर्थ-द्रव्य धन, विषयक ।

मालीख़ोलिया, स पु (यूनानी) विषाद वायुरोग, श्लैष्मिकोन्माद ।

मालीदा, सं पु (फा) दे 'मलीदा' ।

मालूम, वि (अ) ज्ञात, दे 'विदित' ।

माल्टाफीवर, स पु (अ) माल्टाज्वर ।

माल्य, स पु (स न) दे 'माला'(१) २ पुष्प, कुसुमम् ।

मावस, सं स्त्री दे 'अमावस्या' ।

मावा, स पुं (स मंड) दे 'मांड' २ किलाट ३ गोधूमादिकस्य दुग्ध ४ अंड,-गर्भ पीतिमन् (पु) ५ तमाखु,-मासर स्निग्ध ६ सार, निष्कर्ष ७ सामग्री, उपकरणजातम् ।

माशकी, स पु (फा मशक) दृतिहर ।

माशा पा, स पु, दे 'मासा' ।

वल्लभ, प्रिय ।

माशूक़, स पुं (अ) कांत, दयित, वल्लभ, प्रिय ।

माशूक़ा, सं स्त्री (अ) प्रिया, कांता, दयिता, वल्लभा ।

माष, सं पुं (सं) कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषाकर, मामल, बलाढ्य, पित्र्य, पितृ भोजन २ दे 'ममा' ३ दे 'माशा' ।

मास[1], सं पुं (स पु न) वर्णन, वर्णाह, शुक्लकृष्णपक्षद्वयात्मक काल त्रिंशद्दिनात्मक

समय, मास (पु, इसके पहले पांच रूप नहीं होते), मासक २ चान्द्रमास, मास, सावत्सर ३ सौरमास, सावन।

—भर का, वि, मास्य, मासीन (कल्पनादि)।

हर—, क्रि वि, प्रतिअनु-मास, मासे मासे।

मास², स पु, दे 'मान'।

मासड, स पु (हि मासी) मातृष्वसृ, धव पति।

मासा, स पु (स मास) माषक, माष, हेम, धानक, अष्टगुञ्जाभाड।

—भर, वि, माष-माषमात्र २ अत्यल्प।

—तोला होना, मु, दशाया अस्थिरत्वं अनु वत्व परिवर्तितत्वम्।

मासिक, वि (स) मासानुमासिक, प्रतिमास-मिक, मासि भव, मासान। स पु (स न) अन्वाहार्य, श्राद्धभेद २ रजोदर्शन ३ मासि दवेतनम्।

—धर्म, स पु (स) ऋतु, आर्तव, रजस् (न) रज, रजःस्राव।

—पत्र, स प (स न) प्रतिमासिकपत्रिका।

मासी, स स्त्री (स मातृष्वसृ) जननी भगिनी।

—का लडका, स पु, मातृष्वसेय, मातृष्वस्रीय।

—की लडकी, स स्त्री, मातृष्वसेयी, मातृष्वस्रीया।

मासीन, वि (स) मासिक, मास्य, मास्या नुमासिक।

माह, स पु (फा) दे 'मास' २ चन्द्र ३ प्रिय।

—ताब, स पु (फा) चन्द्र २ चन्द्रिका।

—ताबी, स स्त्री (फा) दे 'महताबी'।

—वार, वि (फा) दे 'मासिक'। क्रि वि, प्रतिमासम्। स पु, मासिकवेतनम्।

—वारी, वि (फा) दे 'मासिक'।

माहात्म्य, स पु (स न) महिमन्-गरिमन् (पु), महत्त्व, महत्ता, गौरव, माहात्म्य, २ तीर्थस्थानादेः प्रशंसनादिरूप विशिष्टवर्णनम्।

माही, स स्त्री, (फा) मीन, मत्स्य।

—गीर, स पु (फा) दे 'मछुआ'।

माहुर, स पु (स मधुर) विष, गरल आदि।

मिकदार, स स्त्री (अ) मात्रा, परिमाण, मानम्।

मिक्स्चर, स पु (अ) मिश्रम्।

मिचकाना, क्रि स (हि मिचना) नेत्रे उत्फुल्ल निमील् (भ्वा प से) उन्मील् च, नयने पुन पुन निमिष् (तु प से) उन्मिष् च, अनुकूल निमेषोन्मेष कृ २ दे 'मीचना'।

मिचना, क्रि अ, दे 'मीचना' के कर्म रूप।

मिचलाना, क्रि अ, दे 'मचलाना' (१)।

मिजराब, स स्त्री (अ) परि(री)वाद., वादनमुद्रा।

मिज़ाज, स पु (अ) प्रकृति, स्वभाव २ शारीरिक-मानसिक-अवस्था-दशा ३ दर्प।

—दार, वि (अ+फा) दृप्त, गर्वित।

—पुरसी, स स्त्री (अ+फा) कुशलपृच्छा।

—शरीफ, वाक्यांश (अ), अपि कुशली भवान्।

मिटना, क्रि अ (स मृज्>) अपशब्द्या,मृज् (कर्म), विलुप् (दि प से) २ उच्छिद् (कर्म), विनश् (दि प वे), उन्मूल् (कर्म) ३ निर-अस् (कर्म), खड् प्रत्याख्या (कर्म)। स पु, लोप, अपमार्जन, मृष्टि (स्त्री), उच्छेद, विनाश, निरास, प्रत्याख्यानम्।

मिटाना, क्रि स, दे 'मिटना' के प्रे रूप।

मिटा हुआ, वि, अपमार्जित,मृष्ट, विलुप्त, विनष्ट, खण्डित।

मिट्टी, स स्त्री [स मृत्ति (स्त्री)] मृत्तिका, रेणु, धूलि (स्त्री) मृदा, मृद् (स्त्री)। (अच्छी मिट्टी) मृत्स्ना, मृत्स्ना २ पृथिवी ३ भस्मन् (न, शवादि का) ४ शरीर ५ शव।

—का तेल, स पु, मृत्तैलम्।

—का शिंगर, स पु, नश्वरदेह।

—का पुतला, स पु, मनुष्य २ मानव शरीरम्।

—का माधव, स पु, जड, मूर्ख।

—करना, मु, नाशयति (प्रे) २ कलुषयति (ना धा)।

—के मोल, मु, अत्यल्प, मूल्येन-अर्धेण, निर्मूल्यमिव।

—ठिकाने लगाना, मु, अन्त्येष्टिं कृ २ शव भूमौ निधा (जु उ अ) न्यस् (प्र)।

—डालना, मु, शम् (प्रे, शमयति), गुह् (भ्वा उ से)।

—पलीद या खराब होना, मु, परिक्षि (कर्म), क्षय-नाश इ-या (अ.प.अ.),

२ समिल् (तु प से), सङ्ग(अ प अ), सगम् (भ्वा आ अ), आ-समा-मद् (भ्वा प अ), आ समा,-गम्, अभिमुखी-समुखी भू, नयन,पथ विषयं या (अ प अ) ३ तुल्य-सम-सदृश (वि) वृद् (भ्वा आ से) सवद् (भ्वा प से) ४ आलिङ् (भ्वा प से), परिरभ (भ्वा आ अ) ५ यम् (भ्वा प अ), सुरत आतन् (त प से) ६ लभ (भ्वा आ अ) अधिगम ७ एक-सम,स्वर (वि) भू (सितारादि)। स पु, दे 'मिलन' (१२)। ३ सादृश्य, साम्य ४ आलिंगन ५ मैथुन ६ लाभ ७ समस्वरता, इ।

मिलनी, सं स्त्री (हिं मिलना) औद्वाहिक मि(मे)लनम्।

मिलवाना, क्रि प्रे, व 'मिलना' के प्रे रूप।

मिला-जुला वि, मिश्रित २ सम्मिलित।

मिलान, सं पु (हिं मिलाना) समेलन, समिश्रण २ समी-सदृशी,-करण, तुलना ३ सत्यापन, प्रामाण्यपरीक्षा।

मिलाना, क्रि स, व 'मिलना' के प्रे रूप।

मिलाप, स पु (हिं मिलना) दे 'मिलन'(१) २ सौहार्द यं, मैत्री ३ सयोग, रति (स्त्री)।

मिलावट, स स्त्री (हिं मिलाना) अपद्रव्येण मिश्रण-मेलनम्।

—करना, क्रि स, (अपद्रव्येण) समिश्र (चु)।

मिला हुआ, वि, मिश्र, मिश्रित, सपृक्त, ससृष्ट २ सगत, समिलित, समुदीभूत ३ लब्ध, प्राप्त।

मिलिंद, सं पु (स) भ्रमर, षट्पद।

मिलिटरी, वि (अ) साग्रामिक सामरिक, सैनिक। स स्त्री, सेना, सैन्य, वाहिनी।

मिल्क, स पु (अ) दुग्ध, पयस (न), क्षीरम्।

मिल्कियत, स स्त्री (अ) भूमि (स्त्री) रि(ऋ)क्थ २ द्रव्य, सपत्ति (स्त्री), दाय।

मिल्लत[१], स स्त्री (हिं मिलना) मैत्री २ मिलनशीलता।

मिल्लत[२], सं स्त्री (अ) धर्म, संप्रदाय, मतम्।

मिल्लिग्राम, स पु (अ) सहस्रिधान्यम्।

मिल्लिमीटर, स पुं (अं) सहस्रिंश ? स्र मुक्तभूमि।

मिशन, स पु (अ) उद्देश्य, लक्ष्यम् २ प्रचारकमण्डलम् ३ प्रतिनिधिमण्डलम्।

मिशनरी, स पु (अ) विधर्म, प्रचारक २ दे 'पादरी'।

मिश्र, स पु (स) द्विप्रोपाधिभेद २ निश्रित, मिश्रितद्रव्य, योग मञ्र मनिपात। वि, मिश्रित, मिश्रापन, स-सृष्ट-मिश्र-मिलित ३ श्रेष्ठ।

मिश्रण, स पु (स न) सयोजन, समेलन, समिश्रण, एकी एकत्र,-करण, ममर्जन २ नाना द्रव्यसमुदाय, दे 'मिश्र' (२)। ३ योग, सक लन, दे 'जमा' (गणित)।

मिश्रित, वि (स) ससृष्ट, समिश्र, दे 'मिश्र' (वि)।

मिष, स पु (स न) छल, कपट २ व्यप देश, व्याज, कृतकहेतु।

मिष्ट, स पु (स) मधुररस। वि, दे 'मीठा' (१)।

—भाषी, वि (स षिन्) मधुरभाषिन्, प्रियं वद।

मिष्टान्न, स पु (स न) दे 'मिठाई' (१)।

मिस[१], स पु, दे 'मिष' (१)।

मिस[२], स स्त्री (अ) कुमारी, कन्या, अक्षता।

मिसरा, स पु (अ) पद्यपाद, श्लोकचरण।

मिसाल, स स्त्री (अ) उपमा २ उदाहरण, दृष्टान्त ३ लोकोक्ति (स्त्री), आभाणक।

मिसिल, स स्त्री (अ) लेख, पञ्जिका।

मिस्कीन, स पु (अ) नि सहाय, निराश्रय २ दरिद्र, अकिंचन ३ सरल, सुशील।

मिस्टर, स पु (अ) मिश्र, महाशय महोदय।

मिस्तरी, स पु (अ मास्टर) कुशल,-शिल्पिन् शिल्पकार।

मिस्र, स पु (अ = नगर) मिश्रदेश।

मिस्री[१], स पु (अ मिस्र) मिश्रदेशवासिन्। स स्त्री, मिश्रदेशभाषा।

मिस्री, स स्त्री, (अ) खण्ड, मोदक शर्करा, शर्करजा, शार्कर, सान्द्र, सितोपला, निता खण्ड, खण्डक।

मिस्ल, वि (अ) तुल्य, समान, इव।

मिस्सा, स पु (स मिश्र>) *मिश्रान्नम्।

मिस्सी रोटी, स स्त्री, वेढमिका।

मिस्सी-सी, स स्त्री (फ़ा मिसी) दत, *मसी-मसि (स्त्री), दन्तचूर्णभेद।

—खाना करना, मु अत्यान भूप-मद (मु) प्रमाथ (प्रे)।
मीगा, स स्त्री दे 'गिरी'।
मीआद, स स्त्री (अ) काल, अवधि, नियत समय २ अभिष-कारावास-अवधि।
मीआदा, वि (अ मीआद) सावधिक, नियतकालवत्।
—बुखार, स पु, सावधिकज्वर २ सान्निपात विज्वर।
मीचना, क्रि स (स मिष्) निमिष (तु प से) एमील्-निमील (भ्वा प से) नैत्रे मुकुलयति (ना धा)।
मीज़ान, स पु (अ) योग, सकल, परिसख्या।
मीटिंग, स स्त्री (अ) सभा, गोष्ठी, अधिवेशनम्।
मीठा, वि (स मिष्ट) मधुर मधुर, मधुमधुमय २ सरस, स्वादु सस्वाद, स्वादवत् ३ अम्ल, मधर ४ मध्यम, साधारण ५ मन्द मद ६ नपुसक ७ प्रिय, रुचिकर। ८ सुशील सरल। स पु, मधुरनीरी, मिष्टनिवृक्ष, मधुरनीर, मधुरीम्पूर, मधूली, मधुफला २ मिष्ठान्न ३ मिष्ट, गुड, शर्करा इ।
—आलू, स पु, दे 'शकरकद'।
—चावल, स पु, मिष्ट-गुड-ओदन (नम्)।
—तेल, स पु तिल, तैलस्नेह २ सरस तैलम्।
—तेलिया, स पु वत्सनाभ, प्रणाहारक, अमृतुन गरल, श्वेट, प्रदीपन।
—नीबू, स पु दे 'मीठा' स पु (१)।
—पानी स पु वीरपेयम्।
—बोलना, मु, प्रिय ब्रू (अ उ), मधुर भण (भ्वा अ से)।
मीठा छुरा, स स्त्री, अन्तशत्रु, कपटमित्र, विश्वासघाती २ कुटिल कपटिन्।
मीठामार, स स्त्री, गूढ गुप्त-आन्तरिक-ताडन प्रहार।
मीन, स पु (सं) दे 'मछली' (२) राशि, राशि-लग्नम्।
—मेख निकालना, मु, गुणदोषान् परीक्ष (भ्वा आ स) २ छिद्रं अन्विष् (दि प से)।

मीना, स पु (फ़ा) चित्र-बहुवर्ण-काच २ नीलप्रस्तरभेद ३ *धातु-रजन-चित्रण (इनमैल) ४ सुराग्रह।
—कार, स पु (फ़ा) *धातु-रजक-चित्रक।
—कारी, स स्त्री (फ़ा) दे 'मीना'(१)।
—बाज़ार, स पु (फ़ा) *कांतापण, मनोरमेला, प्रदर्शनी।
मीनार, स पु (अ मनार) स्तम्भप्रासाद, स्तम्भ-धि।
मीमांसा, स स्त्री (स) दर्शनशास्त्रविशेष २ विचार, विवेचन, निर्णय।
मीर, स पु (फ़ा) नायक, प्रधान।
—मजलिस, स पु (फ़ा) सभा-पति अध्यक्ष।
—मुशी, स पु (फ़ा+अ) मुख्य-लेखक, कायस्थ।
मीरास, स स्त्री (अ) रिक्थ, दाय, पितृद्रव्यम्।
मीरासी, स पुं (अ मीरास) सगीतकुशल-यवनजाति विशेष २ भड, वैहासिक।
मील स पु (अ माइल) कोशार्द्ध, अर्द्धक्रोश, *मील, *मीलकम्।
मीलन, स पु (स न) पिधान, निमीलन, मुद्रणम् २ सकोचन, सहरणं, आकुचनम्।
मीलित, वि (स) पिहित, निमीलित, मुद्रित २ सकोचित, सहृत, आकुचित।
मुँगरा, सं पु (सं मुद्गर) वि, घन द्रुघण न, प्रगण। [मुँगरी(स्त्री) क्षुद्रमुद्गर इ.]।
मुग, स पु, दे 'मूँग'।
मुड, सं प (स पु न) शिरस् (न), शीर्ष मूर्धन् (पु), मस्तक २ छिन्न-शिरस्, शापम्। सं पुं, स्थाणु, निष्पत्री वृक्ष २ राहु ३ नापित, मुडन ४ उपनिषद्विशेष। वि मुडित, वापितमुड, कृत्तकेश (शा, शी स्त्री) २ अधम।
—माला, सं स्त्री (सं) छिन्नमस्तकमाल्यम्।
—मालिनी, स स्त्री (स) काली।
—माली, स पु (स न्नि) शिव।
मुडक, सं पुं (सं) नापित २ उपनिषद्विशेष ३ छिन्न-शीर्षम्।
मुडन, स पुं (सं न) क्षौर, वेश-छेदनं वपन, परिवापनं, भद्रकरणं २ चूडा, चूडाकर्मन्-कर्मन् (न), संस्कारविशेष (धर्म)।

मुँडना, क्रि अ (स मुडन) व 'मूँडना' के कर्म के रूप।

मुंडा, स पु (स मुड) मुंडित, उसकेश, छिन्नमूर्द्धन, कृत्तकेश २ कृत्तकेश साधु शिष्य ३ शृङ्गहीनपशु ४ अग्र-अवयव शाखा, हीन ५ लिपिविशेष (महाजनी, लण्डे) ६ उपानत्प्रकार।

मुंडाई, स स्त्री (हिं मूँडना) दे 'मुण्डन' (१)। २ मुण्डन, मूल्य भृति (स्त्री)।

मुँडासा, स पु [स मुण्डवासस् (न)] उष्णीष प, दे 'पगड़ी'।

मुडित, वि (स) दे 'मुंड' वि।

मुंडी¹, स, स्त्री (हिं मुंडा) मुंडा, कृत्तकेशा स्त्री २ विधवा।

मुंडी², स पुं (स मुण्डिन्) मुंडित, कृत्तकेश २ नापित ३ सन्यासिन्।

मुँडेर, स स्त्री (स मुड >) दे 'मुंडेरा' २ दे 'मेंड'।

मुँडेरा, स पु (स मुड >) प्राकारशीर्ष, •कुड्यमुड-डम्।

मुँडेरी, स स्त्री, दे 'मुँडेरा' तथा 'मेंड'।

मुडो, स स्त्री (स मुण्डा) मुण्डिता, वपिता, क्षुदिता, उप्तकृत्त, स्थासुमूर्द्धजा २ विधवा, मृतभर्तृका।

मुतकिल, वि (अ) स्थानान्तर नीत २ पर हस्ते समर्पित परस्वत्वे दत्त।

मुतखब, वि (अ) निर्वाचित, वृत, चित २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ।

मुतजिम, स पु (अ) अध्यक्ष, व्यवस्थापक।

मुतजिर, वि (अ) प्रतीक्षक, प्रतीक्षाकारिन्।

मुँदना, क्रि अ (स मुद्रण) व मूँदना के कर्म के रूप।

मुँदरा, स पु (स मुद्रा) (योगिनां) कर्ण, मुद्रा-कल्पन।

मुदरी, स स्त्री (हिं मुँदरा) अंगुली(री)यक, ऊर्मिका।

मुशियाना, वि (अ०) लेखक सदृश-उपयुक्त। सं स्त्री, लेखक-भृति (स्त्री)-मूल्य।

मुशी, सं पु (अ) लेखक, कायस्थ लिपिकार।

मुसिफ़, स पुं (अ) निर्णेतृ, धर्मन्याय अध्यक्ष-अधिकारिन्।

मुसिफ़ाना, वि (अ) न्याय्य, उचित-युक्त अनुसारिन्, न्याय्य।

मुसिफी, स स्त्री (अ मुंसिफ़) १ २ न्यायाध्यक्ष पदकार्य-सभा ४ निर्णय ५ न्याय।

मुँह, स पु (स मुख) आस्य, तुंड, वक्त्र, वदन, लपन, आनन २ मुख-वदन-आनन, मंडल ३ (बर्तन आदि का) कण्ठविवर, मुख ४ छिद्र, रन्ध्र ५ आदर ६ सामर्थ्य ७ साहस ८ उपरितनभाग, कर्ण, कठ प्रान्त ९ विद्यमानता, उपस्थिति (स्त्री)।

—अँधेरा—स पु, प्र-वि, प्रात, विहान-न, उषा, उषस् (स्त्री)।

—काला, स पु अपमान, अपयशस् (न)।

—चोर, वि, लज्जालु, ह्रीमत्, सलज्ज।

—ज़बानी, वि, वाचिक, लेखरहित। क्रि वि, वाचैव मुखेनैव।

—ज़ोर, वि, वाचाल, वावदूक २ दुर्दान्त ३ दे 'मुँहफट'।

—दिखाई, स स्त्री, नवोढामुखदर्शन २ मुख दर्शनोपहार (विवाह की रीतियाँ)।

—देखा, वि, बाह्य, उपरितन, कृत्रिम।

—फट, वि अवाच्यवद, वाक्चपल, वाग्दुष्ट, अविमृश्यवादिन्।

—बोला, वि, धर्म (धर्म भ्राता आदि)।

—मांगा, वि, यथेष्ट, यथेच्छ, यथेप्सित।

—उतरना या निकल आना, मु, कृशीभू, तनू भू, इष्टवदन (वि) भन् (दि आ से), क्षि (भ्वा प अ)।

—का कौर, मु सुलभद्रव्यवस्तु (न)।

—काला करना, मु, दुष् (प्रे दूषयति), कलङ्कयति (ना धा), अपकीर्ति जन् (प्रे)।

—काला होना, मु, कलङ्कितदूषित (वि) भू, अपयशस (न), लभ (भ्वा आ अ)।

—की खाना, मु, नितरां पराजि (कर्म) सुतरां अभिभू (कर्म) २ लज्जितो भू ३ दुर्गां आपद् (दि आ अ)।

—खोलना, मु, वद्(भ्वा प से) २ गाली दा अपभाष (भ्वा आ से) ३ अवगुंठन अपास (प्रे)।

—जुठारना या जूठा करना, मु, नाममात्रमेव भुज (रु आ अ)।

—त(ता)कना, मु, स्थिर आ-अव-लोक् (चु) २ विस्मि (भ्वा आ अ), चकित (वि) स्था (भ्वा प अ)।

—देखते रह जाना, मु, दे 'मुँह ताकना'।

—देखे की प्रीत, मु, मृषास्नेह कृत्रिमानुराग ।
—पर लाना, मु वद् (भ्वा प मे) कथ् (चु)।
—पर हवाइयां उडना, मु (भयल्लज्जादिभि) मुख विवर्णीभू ।
—फक होना मु, दे 'मुँहपर हवाइयां उडना'।
—फुलाना या सिकोडना, मु, रुष्-कुपित क्रुद्ध (दि) भू ।
—फेरना, मु, उपेक्ष् (भ्वा आ मे), अपरज्ज (दि उ अ)।
—बनाना, बिगाडना या चिढ़ाना, मु, विम्ब (चु) मुख विकृ, स्वमुखविकारैं उपअवहस् (भ्वा प मे)।
—मीठा करना, मु, उत्कोचं दा।
—में पानी भर आना, मु, वि प्र-लुभ् (दि प से) अत्यर्थं अभिलष् (भ्वा उ मे)।
—लटकाना, मु, दे 'मुँह फुलाना'।
—(किसी के) लगना, मु, उद्धत इव आचर् (भ्वा प से) २ धृष्टतया प्रश्नोत्तर कृ।
—लगाना, मु, हीनान् मित्रीयति (ना धा,) अनुग्रह् (क्र प मे), उद्धतान् विधा (जु उ अ)।
—से फूल झडना, मु सुमधुर वच (वम)।
मुहीं—, मु परिपूर्ण, आवर्ण पूर्ण, निभर।
मुँहासा, स पु (हिं मुँह) यौवन-कटक पिट(टि)का।
मुअज्जम, वि (अ०) पूज्य, ममान्य २ महत्, ज्येष्ठ।
मुअत्तल, वि (अ) आनियतकाल अधिकाराच् च्यावित अथवा कृदित। २ दे 'बेकार'।
मुअत्तली, सं स्त्री (अ मुअत्तल) आनियत काल अधिकार, भ्रश च्युति (स्त्री) २ दे 'बेकारी'।
मुअद्दब, वि (अ) सभ्य, शिष्ट।
मुअद्दबाना, अव्य (अ) सविनयम्, वि, नम्र, विनयेन, नम्रतया।
मुअम्मा, स पु (अ) प्रहेली, प्रहेलिका, प्रश्नदूती २ गुह्य, गोप्यं, रहस्यं।
मुअल्ला, वि (अ) उच्च, उत्कृष्ट, प्रकृष्ट २ उच्च-पद-अधिकार।
मुआ, वि, दे 'मुर्दा'।
मुआफ, वि (अ) क्षान्त, मर्षित, दोषदंड-मुक्त।
—करना, दे 'क्षमा करना'।
मुआफिक, वि (अ) अनुकूल, अनुरूप २ सदृश, तुल्य ३ अन्यूनाधिक ४ यथेष्ट।
मुआफी, स स्त्री (अ) दे 'क्षमा' २ कार मुक्तभू (स्त्री)।
मुआमिला, स पु (अ) उपजीविका, वृत्ति (स्त्री), व्यवसाय २ पारस्परिकव्यवहार, क्रयविक्रय, दानादान ३ वृत्त, वार्त्ता, विषय ४ कलह, विवाद ५ अभियोग ६ प्रतिज्ञा, समय।
मुआयना, स पु (अ) दे 'निरीक्षण'।
मुआवजा, सं पु (अ) निष्कृति (स्त्री), निस्तार, प्रतिफल २ क्षतिपूरण हानिपूरण, मूल्यम्।
मुकद्दमा, स पु (अ) अभियोग, अर्थ, अथ, कार्यं, व्यवहार, व्यवहारपदम्।
—करना या खडा करना, क्रि स, अभियुज् (रु आ अ, चु), राजकुले निविद् (प्रे)।
मुकद्दमेबाज, सं पु (अ + फा) कार्यार्थिन्, वादिन्, व्यवहृत्, अभियोगशील।
मुकद्दमेबाजी, सं स्त्री (अ + फा), अभियोगशीलता, व्यवहर्तृत्वम्।
मुकद्दमा, स पु, दे 'मुकदमा'।
मुकद्दर, स पु (अ) भाग्यं, दैवम्।
मुकद्दस, वि (अ) पवित्र, पुण्य, पावन।
मुकम्मल, वि (अ) समाप्त, अवसित २ संपूर्ण, निःशेष।
मुकरना, क्रि अ (सं मा+न+करणं) अप-निह्नु (अ आ अ), अपलप (भ्वा प से) निराकृ।
मुकरनी, सं स्त्री, दे 'मुकरी'।
मुकरी, स स्त्री (हिं मुकरना) कविताभेद, अपह्नुतियुता कविता।
मुकर्रर, क्रि वि (अ) पुनरपि, द्वितीयवारं, भूय।
मुकर्रर, वि (अ) नियत, निश्चित २ नियुक्त।
मुकाबला, सं पु (अ) विरोध, प्रतिद्वंद्विता, प्रातिकूल्यं १ स्पर्धा, संघर्ष, अहमहमिका, प्रतियोगिता ३ समाम, युद्धं ४ तुलना, औपम्यं ५ साम्यं, सादृश्यं ६ सम्मी-सदृशी, करणम्।
—करना, क्रि. स, स्पर्ध् (भ्वा आ से), संघृष् (भ्वा प से) २ प्रतिद्, विरुध्

(ह उ अ) ३ युध (दि आ अ) ४ तुल (चु), उपमा (नु आ अ) ५ समी-सदृशी,-कृ।

मुकाम, स पु (अ) स्थान, स्थल २ विराम स्थान, दे 'पटाव' ३ विराम, निवेश ४ आनिवास, गृह ५ अवसर।

—करना, क्रि अ, विश्रम् (दि प से), निविश (तु प अ), विरम् (भ्वा प अ)।

मुकुंद, स पुं (स) श्रीकृष्ण २ रत्नभेद ३ पारद ४ मोक्षद, परित्रातृ।

मुकुट, स पु (स न) किरीट-ट, मकुट, कोटीर, मौलि, उत्तंस।

मुकुर, स पु (स) दर्पण, दे।

मुकुल, स पु (स पु न) कुड्मल, दे 'कली' २ आत्मन (पु) ३ शरीर ४ पृथिवी।

मुकुलित, वि (स) समुकुल, सकुड्मल २ ईषद्विकसित, अर्द्धोन्मिषित अर्द्धनिमीलित ३ निमेषोन्मेषयुक्त।

मुक्का, स पु (स मुष्टिका) मुष्टि (पु स्त्री), मुस्तु, मुचुटी, संपिंडितांगुलिबद्धपाणि २ मुष्टिमुचुटी, प्रहार-घात-ताड हथ।

—मारना, क्रि स, मुचुट्या प्रहृ (भ्वा प अ)।

मुक्केबाज, (हिं + फा) मुष्टि,-योध-योधिन्।

मुक्केबाजी, स स्त्री, (हिं + फा) मुष्टियुद्ध, मौष्टा, मुष्टिक, मुष्टी(ष्टा)मुष्टि (अव्य)।

मुक्त, वि. (स) लब्ध प्राप्त,-मोक्ष निर्वाण, निस्तीर्ण २ मोचित, स्वाधीन, बंधन-निरोध रहित।

—कंठ, वि (स) तारस्वर, महास्वन २ अविमृश्यवादिन्, अयतवाच।

—हस्त, वि (स) व्ययशील, अतिव्ययिन्, बहुव्यय।

मुक्ता, स स्त्री (स) } दे 'मोती'।
—फल, सं पु (स न) }

—हार, स पु (स) मुक्तावली।

मुक्तागार, स पु (स न) शुक्ति (स्त्री), शुक्तिका, मौक्तिक-प्रसू (स्त्री) प्रसवा।

मुक्ति, स स्त्री (स) मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण, श्रेयस (न), निःश्रेयस, अमृत, अपवर्ग, अपुनर्भव २ मोचन, निर्यातना, तिरोधाभाव ३ स्वच्छंदता, स्वतंत्रता।

—क्षेत्र, स पु (स न) काशी वाराणसी।

—धाम, स पुं (स न) मोक्ष स्थानम् तीर्थम्।

—फौज, स स्त्री (स + अ०) मुक्तिसेना, खिस्तधर्मप्रचारकसंघ।

मुख, स पु (सं न) दे 'मुँह'।

—बंध, स पु (स न) प्रस्तावना, भूमिका।

मुखड़ा, स पु (स मुख) दे 'मुँह' (२)।

मुख़तार, स पु (अ) प्रतिनिधि पुरुष हस्तक २ पराभियोगकारिन् ३ उपाभिभाषक।

—नामा, स पु (अ + फा) *प्रातिनिध्य प्रतिनिर्मितत्व पत्रम्।

मुख़तारी, स स्त्री (अ मुखतार) पराभियोग कारितात्व २ उपाभिभाषकत्वा-त्व ३ प्रातिनिध्यम्।

मुख़बिर, स पु (अ) दे 'जासूस'।

मुख़बिरी, स स्त्री (अ मुखबिर) दे 'जासूसी'।

मुखर, वि (स) बहु-अप्रिय-वादिन् भाषिन् दुर्मुख २ वाचाल, वाचाट ३ नेतृ, अग्रयायिन् ४ शब्दायमान।

मुखरित, वि (स) प्रति,-ध्वनित नादित।

मुखस्थ, वि (स) मुखाग्र, कंठाग्र, कंठस्थ।

मुख़ालिफ़, वि (अ) विपक्षिन्, विरोधिन् २ वैरिन् ३ प्रतिद्वंद्विन्।

मुखिया, स पु (स मुख्य) नेतृ, नायक, पुरो अग्र,-गामिन्, अग्रणी, प्रधान, मुखर २ ग्रामणी (पु), ग्राममुख्य।

मुख़्तलिफ़, वि (अ) भिन्न, अपर २ बहु अनेक, विध।

मुख़्तसर, वि (अ) संक्षिप्त २ लघु, क्षुद्र ३ अल्प। सं पु, संक्षेप।

मुख्य, वि (स) प्रधान, अग्र्य, अग्रिम, प्रमुख परम, उत्तम, श्रेष्ठ, विशिष्ट, ऋषभ, इंद्र, पुगव,-वर।

मुख्यत, } क्रि वि, (स) प्रधानत -तया,
मुख्यतया, } विशेष तया, प्रधान-मुख्य विशेषेण, रूपेण।

मुगदर, स पु, दे 'मुदगर'।

मुग्ध, वि (स) आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव, सानुराग, कामासक्त २ मूढ, भ्रांत ३ सुन्दर, अभिराम ४ नव, नवीन।

मुग्धता, स स्त्री (स) आसक्ति (स्त्री), अनुराग २ मूढता ३ सौंदर्यम्।

मुग्धा, स स्त्री (स) नायिकाभेद २ सुकुमारी तरुणा।

मुचलका, स पु (तु) निस्तार ।

मुछँदर, स पु (हिं मूछ) महा-गुप्त श्मश्रु व्यञ्जन श्मश्रुल २ कपि ३ मूषिक ४ कुरूप मूर्ख, जड ।

मुज़क्कर, वि (अ) पुल्लिंग (-ग)।

मुजरा, स पु (अ) उद्धृत-व्यवकलित, धन २ अभिवादनं, प्रणिपात ३ वेश्याया सनृत्यमनृत्य वा गानम्।

मुजरिम, स पु (अ) अपराधिन्, कृतापराध दण्ड्य २ अभियुक्त ।

मुजस्सिम, वि (अ) सशरीर, देहवद्, शरीरिन्।

मुज़िर, वि (अ) हानि, कारक, प्रद ।

मुझ, सर्व (हिं मुझे) (अस्मद् क रूप बनेंगे)।

—को, मा, मा २ मह्य, मे।

—से, मया २ मत्।

—मे, मयि।

मुटाई, सं स्त्री, दे 'मोटाई'।

मुट्ठा, स पु (हिं मुट्ठी) मुष्टि (पु स्त्री) मुष्टिमात्र द्रव्य २ वारग, दण्ड, मुष्टि (पु स्त्री)।

मुट्ठी, सं स्त्री [स मुष्टि (पु स्त्री)] दे मुक्का' (१)। २ मुष्टिमेय पदार्थ, मुष्टि ३ सवाह हस्तहस्ता ४ मर्द-हस्तम्।

—भरना, क्रि स, संवह् (प्र), मृद् (क्र प से)।

—चाँपी, स स्त्री, दे 'मुट्ठी' (३)। २ सेवा, परिचर्या।

—भर, वि, मुष्टि, मात्र-मेय मित।

—गरम करना, मु, उत्कोच दा।

—मे, मु, वशे, अधिकारे।

मुठभेड़, स स्त्री (हिं मुट्ठी+भिड़ना) सघट्ट, समाघात २ सग्राम, युद्धं ३ सामुख्यं, सम्मुखगमन म, मिलन आगम ।

मुठिया, स स्त्री (सं मुष्टिका>) (खड्गादिनां) त्सरु, वारग, मरु २ कष्ट, वण, मुष्टि गिरा, तल-स ३ *विनरदण्ड ।

मुड़ना, क्रि अ (सं मुरण) वक्रीभू, नम् (भ्वा प अ) २ प्रत्यागम, प्रतिगम, प्रतिनिवृत् (भ्वा आ, से) ३ भ्रावृद्। सं पुं, वक्रीभाव, नमन, प्रति, गमन आगमन, व्यावर्तनम्।

मुड़ाना, क्रि प्रे व 'मूड़ना' के प्रे रूप।

मुड्ढा, स पु (स मूर्द्धन्>) स्कध २ *मृत पिंड-च, तूलपीठी।

मुड्ढी, स स्त्री (हि मुड्ढा) छिन्नतरुमूलम्।

मुतअल्लिक़, वि (अ) सबद्ध, सलग्न, सगत। क्रि वि, विषये, सबधे।

मुतफ़र्रिक़, वि (अ) बहु नाना वि, विध, प्रस-कीर्ण।

मुतवन्ना, स पु (अ) दे 'दत्तक'।

मुतलक़, क्रि वि (अ) किंचिद् मनाग् ईषद् अपि २ केवल, सर्वथा। वि, केवल, ऐरातिक।

मुताबिक़, क्रि वि (अ)-अनुसार रेण, -अनुरोधेन धात्, यथा, अनु, वि, अनुकूल, अनुरूप।

मुताल्बा, स पु (अ) प्राप्तव्यधन २ ऋण देय, शेष शेष ।

मुदित, वि (स) प्रसन्न, आनदित, प्रहृष्ट।

मुद्गर, स पु (स) घन, दुघन-ण, प्रघण २ गोपुच्छाकारो व्यायामोपयोगी स्थूलदण्ड ३ अनियाध, मधराज ।

मुद्दआ, स पु (अ) अभिप्राय, तात्पर्यम्।

मुद्दई, स पुं (अ) परिवादक, अभियोगिन्, वादिन्, अर्थिन्, अभियोक्तृ २ शत्रु, वैरिन्।

मुद्दत, स स्त्री (अ) अवधि, समयसीमा, नियतकाल, २ चिरं, चिरकाल, महान् समय, युग-गम्।

—का वि, चिर-कालिक-कालीन, पुराण, पुरातन।

—तक,—मे, नि वि, चिर, चिरेण, चिराय, चिरात्, चिरस्य चिरे।

मुद्दाअलेह, स पुं (अ) अभियुक्त, प्रत्यर्थिन, प्रति-वादिन्, उत्तरवादिन्।

मुद्रक, स पु (स) मुद्रण कार कृत्।

मुद्रण, स पु (सं न.) मुद्राङ्कनं अङ्कनं, मुद्रासनं २ मुद्रानिर्माणम्।

मुद्रणालय, स पु (सं) मुद्रणगृह, दे 'प्रेस'।

मुद्रांकित, वि (सं) म द्रित, मुद्र, मुद्राचिह्नित २ नारायणायुधचिह्नयुक्त (वैष्णव)।

मुद्रा, सं स्त्री (सं) मुद्रिका, प्रत्ययकारिणा, * नामाङ्कनी २ अगुली(री)यं-यकं, ऊर्मिका ३ नाणक, टङ्क-क ४ मुद्रित शब्द चिह्न ५ दे 'मुँदरा' ६ शरीरस्य तदवयवानां वा

स्थितिविशेष, अगविन्यास, सरणि (स्त्री) ७ मुख,-आकार-आकृति (स्त्री) ८ भक्त देहाकित भगवदायुधचिह्न ९ अगस्त्यपत्नी, लोपामुद्रा १० मुद्रा,-लाञ्छन चिह्नम्।
—मार्ग, स पु (स) मज्जारध्रम्।
—यत्र, स पु (स) मुद्रणयत्रम्।
—राक्षस, स पु (स न) विशाखदत्तप्रणीत सस्कृतनाटकम्।
—शास्त्र, स पु (स न) मुद्रातत्त्वम्।
मुद्राक्षर, स पु (स न) सीसक धातुमय-मुद्रण,-अक्षराणि।
मुद्रिका, स स्त्री (स) अगुलीयक, ऊर्मिका २ अनामिकाधार्यं कुशागुलीयक, पवित्र ३ नाणक ४ मुद्रा।
मुद्रित, वि (स) दे 'मुद्राकित' २ मुद्राक्षरैं सीससाक्षरैं अंकित ३ पिहित, सवृत, निमी लित मुकुलित।
मुधा, अव्य (स) व्यर्थं, वृथा २ असत्य, मृषा (अव्य)। वि, व्यर्थ २ असत्य। स पु, असत्य, अनृतम्।
मुनक्का, स पु (अ) कापिलद्राक्षा, गोस्तनी, फलोत्तमा, दुग्धी चिका।
मुनहसि(स)र, वि (अ) आश्रित, अव लम्बित।
मुनाजरा, स पु (अ) शास्त्रार्थ, वाद, तर्कशास्त्रम्।
मुनादी, स स्त्री (अ) दे 'मनादी'।
मुनाफा, स पु (अ) लाभ आय फलम्।
मुनासिब, वि (अ) उचित, युक्त, योग्य।
मुनि, सं पु (स) विचारक चिंतक, तत्त्व, ज्ञ-दार्शन, प्राज्ञ २ मौनिन्, वाचयम, ऋषि, व्रतिन्, तपस्विन्।
मुनीम, स पु (अ मुनीब) सहाय-यक, उपकारिन्, उप-(उ उपमन्त्रिन् आदि) २ गणक, कायस्थ, लेखक।
मुनीश, स पु (स) मुनीश्वर, मुनिपुगव २ श्रीबुद्धदेव।
मुन्ना, मुन्नू, स पु (स मुड >) शिशु बालक २ (बच्चों को बुलाने में) अग, तात।
मुफरद, वि (अ) एकाकिन्, असहाय २ अमिश्रित (औषधादि), केवलैक।
मुफर्रह, वि (अ) आनन्द-मोद,-दायक प्रद।
मुफलिस, वि (अ) अधन, अकिंचन, दरिद्र।
मुफलिसी, स स्त्री (अ) निर्धनता, दरिद्रता।
मुफस्सल, वि (अ) स, विस्तर प्रपच। क्रि वि, सविस्त(स्ता)र, विस्त(स्ता)रेण, विस्तरत। सं पु, नगर,-उपांत प्रान्त, पुरोपकण्ठ २, उप शाखा, नगर पुरम्।
मुफीद, वि (अ) उपकारिन्, उपयोगिन्, हितकर[-री (स्त्री)]।
मुफ्त, वि (अ) नि शुल्क, निर्मूल्य।
—खोर रा, वि, परपिंडाद, परान्नपुष्ट।
—में, मु, नि शुल्क, निर्मूल्य, मूल्य विना २ व्यर्थं, निष्प्रयोजनम्।
मुफ्ती, स पु (अ) न्याय,-अधीश अधि-पति, धर्माध्यक्ष (इस्लाम)।
मुबतिला, वि (अ) ग्रस्त, गृहीत, पीडित।
मुबर्रा, वि (अ) मुक्त, अनिरुद्ध २ निर्दोष, पूत।
मुबल(लि)ग, वि (अ) सर्व, समस्त। स पु, मात्रा २ रूप्यकादिसख्या।
मुबारक, वि (अ) शुभ भद्र, मगल। अव्य, शुभ भद्र भूयात, स्वस्ति।
—बाद, स पु } (फा) दे 'बधाई'।
—बादी, स स्त्री }
मुबालिगा, स पु (अ) अत्युक्ति (स्त्री)।
मुबाहिसा, स पु (अ) स वि,वाद, हेतु वाद, प्रति,वाद, ऊहापोह, विचार-रणा।
मुमकिन, वि (अ) सभाव्य, संभवनीय, संभव, शक्य, सभावित, साध्य, सपाद्य।
मुमानियत, स स्त्री (अ) दे 'मनाही'।
मुमुक्षु, वि (स) मोक्षार्थिन, अपवर्गाभिला षिन् २ श्रमण, मुनि, साधु, भिक्षु।
मुमूर्षु, वि (स) आसन्नमृत्यु २ निधनेच्छुक।
मुम्तहिन, स पु (अ) दे 'परीक्षक'।
मुरकना, क्रि अ (हिं मुडना) व्यावृत् (भ्वा आ से), आकुच् (कर्म) २ वि, नश् (दि प वे) ३ अभिगम (भ्वा आ से) ४ प्रतिगम् प्रत्यागम्, प्रतिनिवृत् (भ्वा आ से) ५ अस्स्मात् त्रुट् (तु दि प से) स्फुट (तु प से) ६ दे 'मोच आना'।
मुरकाना, क्रि स, व 'मुरकना' के प्रे रूप।
मुरकी, स स्त्री (हिं मुरकना) कर्णपूरक, कर्णवलयक-कम्।
मुरगा, स पु (फा मुर्ग) उषाकल, कृकवाकु, दे 'कुक्कुट' २ पक्षिन्।

मुरगाबी, स स्त्री (स) जलकुक्कुट, यष्टिक, शुक्लकण्ठ ।

मुरज, स पु (स) दे 'मृदंग' ।

मुरझाना, क्रि अ (स मूर्च्छन>) ग्लै म्लै (भ्वा प अ), निशृ (क्रम), ग्लान म्लान विशीर्ण (वि) भू, जृ (दि प स) २ अवसद् विषद् (भ्वा प अ), दुर्मनायते (ना धा), विषण्ण-अवसन्न विच्छाय (वि) भू । स पु, ग्लानि-म्लानि (स्त्री) ३ विषाद, अवसाद वैच्छीर, मनस्थम् ।

मुरझाया हुआ, वि ग्लान, म्लान, जीर्ण, शीर्ण २ विषण्ण, निर्विण्ण, अवसन्न, दीन ।

मुरदा, स पु (फ़ा) मृतक-क, शव व, कुणप, प्रतम् । वि, उपरत, प्रेत, परेत, विपन्न, परासु मृत, निर्जीव, निष्प्राण, प्रमीत २ दुर्बल २ म्लान ।

मुरदार, वि (फ़ा) मृत, प्रेत २ दूषित, अपवित्र ३ जड़, स्तभित, स्तब्ध ।

मुरब्बा[1], (अ मुरब्बह्)मिष्टपाक, फलोपस्कर ।

मुरब्बा[2], स पु (अ मुरब्बअ) समचतुरस्र, समचतुर्भुज २ वर्ग, द्विघात ३ समचतुरस्र समचतुर्भुज-वर्गाकार, भूखण्ड(-ण्डम्) । वि, वर्गीकृत, वर्ग-(गज, फुट आदि) ।

मुरमुरा, स पु (अनु मुरमुर) भिष्मा, भिष्मिका-टा भिस्म(स्मि)टा ।

मुरमुराना, क्रि अ (अनु मुरमुर) मुरमुरायते (ना धा) ।

मुरली, स स्त्री (सं) वंशी शिखा, वंश, वेणु, वंश नालिका, नालिका ।

—**धर**,
—**मनोहर**, } स पु (स) श्रीकृष्णचंद्र ।

मुरव्वत, स स्त्री (अ) शील २ सज्जनता ।
बे—, वि रूक्ष महानुभूतिशून्य ।

मुराद, स स्त्री (अ) अभिलाष, कामना २ आशय, अभिप्राय ।

मुरादों के दिन, मु, यौवनम् ।

मुरारी, स पु (सं-रि) श्रीकृष्णचन्द्र ।

मुरीद, स पु (अ) शिष्य २ अनुयायिन् ।

मुर्दनी, स स्त्री (फ़ा मुर्दन) मृत्यु-लक्षणानि (न बहु) छाया २ अवसाद, विषाद, दौर्मनस्य, निर्वेद, उत्साहाभाव ।
चेहरे पर मुर्दनी छाना या फिरना, मु, मृत्युलक्षणानि प्रादुर्भू २ अति, विषण्ण-निराश (वि) खिद् (दि आ अ) ।

मुर्दा, स पु, दे 'मुरदा' ।

मुर्रा, स पुं (हिं मरोड़) दे 'मरोड़' (२) । २ दे 'पेचिश' ।

मुलज़िम, वि (अ) अभियुक्त, दूषित ।

मुलतवी, वि (अ) विलंबित, व्याक्षिप्त, *स्थगित ।

मुलतान, स पु (स मूलत्राण) प्रह्लादपुर, साम्बीपुरम् ।

मुलतानी, वि (हिं मुलतान) मूलत्राण-विषयक-संबंधिन्, मौलत्राण । स स्त्री, रागिणी भेद २ *पीतगैरिक, मौलत्राणीमृत्तिका ।

मुलम्मा, वि (अ) भासुर, भ्राजमान २ सुवर्ण-रजत, लिप्त रञ्जित । स पु, हेमलेप, रजतरञ्जन २ आडंबर, आपातरम्यता ।

—**करना**, क्रि स, रजतेन-स्वर्णेन लिप् (तु प अ)-रञ्ज् (प्रे) ।

—**साज़**, स पु (अ + फ़ा) *धातु हेम-लेपकार ।

मुलहटी-ठी, स स्त्री, दे 'मुलेठी' ।

मुलाक़ात, स स्त्री (अ) दे 'मिलन' (१) ।

—**करना**, क्रि स, दे 'मिलना' ।

—**करवाना**, क्रि प्रे, परिचय कृ (प्रे), परिचि (प्रे) ।

मुलाक़ाती, स पु (अ मुलाक़ात) परिचित २ दर्शक ।

मुलाज़िम, स पुं (अ) दे 'नौकर' ।

मुलाज़िमत, स स्त्री (अ) दे, 'नौकरी' ।

मुलायम, वि (अ) कोमल, सुकुमार २ श्लक्ष्ण, चिक्कण ।

—**करना**, मु, परस्य क्रोध शम् (प्रे शमयति) ।

मुलाहिज़ा, स पुं (अ) दे 'निरीक्षण' २ आदर ३ अनुग्रह ।

मुलेठी, स स्त्री [स मधुयष्टी-ष्टि (स्त्री)] यष्टिमधु (न), मधुयष्टिका, मधुक, क्लीतकम् ।

मुल्क, स पुं (अ) देश २ प्रांत ३ संसार ।

मुल्की, वि (अ) स्व-देशीय २ शासन संबंधिन् ।

मुल्ला, स पुं (अ) यवनपुरोहित २ अध्यापक ।

मुवक्किल, स पु (अ) *अभिभाषकनियोक्तृ ।

मुवा-आ, वि (स मृत) निर्जीव, निष्प्राण २ नीच, तुच्छ।
मुशाइरा, स पु (अ) कविसम्मेलनम्।
मुशाबहत, स स्त्री (अ) सादृश्य, साम्यम्।
मुश्क¹, स पु (फ़ा) कस्तूरी रिका, मृगमद २ दुर् गंध।
मुश्क², स स्त्री (देश) भुज, बाहु।
मुश्कें कसना या बाँधना, मु, बाहू पृष्ठत नियम (चु)।
मुश्किल, वि (अ) कठिन, दुस्साध्य। स स्त्री, कठिनता २ विपत्ति (स्त्री)।
—कुशा, वि सङ्कटक्लेश विघ्न, हर विनाशक।
—आसान होना, मु, सङ्कटहरणम्, विपद् विनश (दि प से)।
मुश्की, वि (फ़ा) कृष्ण श्याम २ मृगमद-मिश्रित ३ श्यामाश्व, खुशाह।
मुश्त, स पु (फ़ा) मुष्टि (पुं स्त्री)।
एक—, क्रि वि, युगपद् (अव्य)।
मुष्टामुष्टी, स स्त्री [स ष्टि (अव्य)] मुष्टी मुष्टि (अव्य), मुष्टियुद्धम्।
मुष्टि, सं स्त्री (स पुं स्त्री) दे 'मुक्का' (१)। २ पलपरिमाण (४ या ८ तोल का) ३ चौर्य ४ दुर्भिक्ष ५ स्सर, सर।
—युद्ध, स पु (स न) दे 'मुक्केबाजी'।
मुष्टिका, स स्त्री (स) दे 'मुक्का' २ दे 'मुठठी' (२)।
मुसक(कि)राना, क्रि अ (स स्मयकरण) स्मि (भ्वा आ अ), इषत् मद मृदु हस (भ्वा प मे) मृदुहास्य कृ। स पु, स्मयन, दरद्हसन, स्मित, मृदुहास।
मुसकरानेवाला, स पु, स्मेर, सस्मित, स्मय मान, स्मित -कारिन् शालिन्।
मुसक(कि)राहट, स स्त्री (हिं मुसकराना) स्मित ति (स्त्री), मद-मृदु,-हास हसित-हास्यम्।
मुसन्निफ़, स पु (अ) ग्रथकार, पुस्तकप्रणेतृ।
मुसल, स पु दे 'मूसल'।
मुसलमान, स पु (अ) यवन मोहम्मदीय, *मुसल्मान।
मुसलमानी, स स्त्री (फ़ा) यवनी *मुस ल्मानी २ दे 'खतना' ३ दे 'इस्लाम'। वि, यावन (-नी स्त्री), यवनधर्मसबंधिन्।
मुसलाधार, } दे 'मूसल' के नीचे।
—मेह बरसना, मु }
मुसलामुसलि, स स्त्री (स) मुस (श, ष) ल,-युद्ध-सग्राम।
मुसलिम, स पु (अ) दे 'मुसलमान'।
मुसली, स स्त्री (स मुश(ष)ली) मुश(ष)लिका, ताल -मूलिका पत्रिका, अर्शोघ्नी, भूताली, दीर्घ कंदिका हेमपुष्पी, गोधापदी।
मुसल्ला, स पु (अ) *आराधनास्तर, *उशासनासनम्।
मुसव्विर, स पु (अ) दे 'चित्रकार' तथा 'फोटोग्राफर'।
मुसाफिर, स पु (अ) पथिक, पाथ, दे 'यात्री'।
—खाना, सं पु (अ+फ़ा) पथिकाश्रम, पाथ, शाला-गृह, *धर्मशाला।
मुसाफ़िरी, स स्त्री (अ) पथिकत्व २ यात्रा, प्रवास।
मुसाहब, स पु (अ) परिपार्श्व(र्श्वि)क-, पार्श्वग।
मुसीबत, स स्त्री (अ) कष्ट,क्लेश २ आपद् विपद् (स्त्री)।
मुस्ट(ण्ट)डा, वि (स दृढ का अनु) पुष्टाग, दृढ,-देह-तनु-अग, बलवत् २ दुर्वृत्त, खल।
मुस्तक़िल, वि (अ) ध्रुव, अचल २ दृढ, चिरस्थायिन्।
मुस्तनद, वि (अ) प्रामाणिक, विश्वसनीय।
मुस्तहक़, वि (अ) अर्ह, योग्य, पात्र, अधि कारिन्।
मुस्तैद, वि (अ मुस्तअद) सज्ज, सनद्ध २ आशु क्षिप्र,-कारिन्।
मुस्तैदी, स स्त्री (हिं मुस्तैद) सन्नद्धता, सज्जता २ आशुकारित्व, क्षिप्रता।
मुहताज, वि (अ) निर्धन, अकिंचन २ दीन, पराश्रित ३ आकांक्षिन्।
मुहब्बत, स स्त्री (अ) प्रेमन् (पु न) २ मित्रता ३ अभिलाष, काम, प्रणय।
मुहम्मद, स पु (अ) श्रीमोहम्मद, यवन धर्मप्रवर्तक।
मुहर्रिर, स पु (अ) लेखक, लिपिकार।
मुहल्ला, स पु दे 'महल्ला'।
मुहाना, स पु (हिं मुँह) नदीमुख, सरि त्सगम २ प्रवेशद्वारम्।

मुहाफ़िज़, वि (अ) रक्षक, त्रातृ।
मुहाल, वि (अ) कठिन दुष्कर २ असंभाव्य, अशक्य, असंभव। स पु, दे 'महल्ला'।
मुहावरा, स पु (अ) वाग्धारा, वाग्-रीति (स्त्री) संप्रदाय २ अभ्यास ३ शीलम्।
मुहासिरा, सं पु (अ) उपरोध, अवरोधनम्।
—करना, कि स, अव-उप,-रुध (रु उ अ)।
मुहिम, स स्त्री (अ) दुष्करकार्य २ आक्रमण ३ युद्धम्।
मुहु, अव्य (स) पुन।
—मुहु, अव्य, पुन पुन, असकृत।
मुहूर्त, स पु (स पु न) द्वादशक्षणपरिमित-काल २ घटिकाद्वय, अहोरात्रस्य त्रिंशो भाग ३ मांगलिकसमय (ज्यो)।
मूँग, स स्त्री पु (स मुद्ग) सूपश्रेष्ठ, रमो त्तम, हयानंद, वाजिभोजन, शुक्ल।
छाती पर मूँग दलना, मु, दे 'छाती' के नीचे।
मूँगफली, स स्त्री (स भूमिफली) मंडपी भूस्था, भूशिम्बिका, भूचणक।
मूँगा, स पु (हि मूँग) विद्रुम, प्रवाल-ल, भोमीश।
मूँगिया, वि (हि मूंग) मुद्ग-हरित (त)-पलाश,-वर्ण।
मूँछ, स स्त्री [स श्मश्रु (न)] गुंफ, ओष्ठ रो(लो)मन् (न)।
—उखाड़ना, मु, कठोर दण्ड् (चु) २ गर्वं चूर्ण् (चु)।
—नीची होना, मु, लज्जित (वि) भू २ अवमन् (कर्म)।
—पर ताव देना या हाथ फेरना, मु, शौर्यं प्रदृश् (प्रे), वीरताभिमानेन श्मश्रुव्यावृत् (प्रे)।
मूँज, स स्त्री (स मुंज) मुंजनक दृढ-तृण मूल, ब्राह्मण्य, रंजन, दूरमूल, शरभग।
मूँड, स पु (सं मुंड-ड) दे 'मुंड' (१)।
—मुड़ाना, मु, परिव्रज् (भ्वा प से), संन्यस् (दि प से)।
मूँडन, स पु, दे 'मुंडन'।
मूँडना, क्रि स (सं मुण्डन) मुण्ड् (भ्वा प से), वप् (भ्वा उ अ, प्रे), क्षुर् क्षुर् (तु प से), केशान् कृन्त् (तु प से)-छिद् (रु प अ)-लू (क्र उ स) २ वंच् (प्रे), छल् (चु), प्रतॄ (प्रे), विप्रलभ् (भ्वा आ अ) ३ दीप् (भ्वा आ से प्रे), उपन्नी (भ्वा प अ)। ४ चेलोर्णी कृ (तु प से)। सं पु, मुण्डन, क्षौर, वपन, केश-छेदन-लवन-कर्तनम्।
मूँडने योग्य, वि, मुण्डनीय, वप्तव्य, वप्य।
मूँडनेवाला, स पु, मुण्डक, नापित, मुंडिन्।
मूँडा हुआ, वि, मुण्डित, क्षुरित, उप्त, वप्त-केश श्मश्रु।
मूँडी, स स्त्री, दे 'मुण्ड' (१)। २ मुण्डाकार ऊर्ध्वभाग।
मूँदना, क्रि स (सं मुद्रण) प्र-आ,-च्छद् (चु), स-आ, वृ (स्वा उ से), आ, स्तृ (स्वा उ अ), स्तॄ (क्र उ से) २ अ, पिधा (जु उ अ) ३ निमील् (भ्वा प से), (प्रे) मुद्रयति (ना धा)। सं पु, आ प्र,-च्छादन, आ-स,-वरण, पिधान, निमीलन, मुद्रणम्।
मूक, वि (स) अवाच्, वाणीहीन *निर्गिर।
मूगरी, सं स्त्री (स मुद्गर >) * वसन कुट्टनी, *मुद्गरी।
मूज़ी, वि (अ) दु खक्लेशकृत्,-द-दायक-२ दुष्ट, दुर्जन, खल।
मूठ, स स्त्री, दे 'मुट्ठी' (१ २) तथा 'मुठिया' (१ २)।
मूठा, स पु, दे 'मुट्ठा'।
मूढ़, वि (सं) अज्ञ, मूर्ख, मंदधी, मंद, निर्बुद्धि २ स्तब्ध, निश्चेष्ट ३ व्यामोहित, भ्रष्टमत।
—मति, वि (सं) मूढ, बुद्धिहीनम्।
मूढ़ता, स स्त्री (स) अज्ञता, मूर्खता, बुद्धि-हीनता इ।
मूत, स पु (स न) स्रव, प्रस्राव, मेह, गुह्यनिस्यंद।
—करना, क्रि अ, मूत्रयति (चु), मूत्रोत्सर्गं कृ, मिह् (भ्वा प अ), मूत्र उत्सृज् (तु प अ)।
—कृच्छ्, सं पु (स न) अश्मरी २ कृच्छ् ३ मूत्ररोग।
—स्थान, स पु (सं न) *प्रस्रावागार-रम्, मूत्रालय।
मूर्ख, वि (स) निर्-दुर्,-बुद्धि, अ निर्, बोध, अज्ञ, अनभिज्ञ, अज्ञान तिन, मंद, मंदधी, विद्या प्रज्ञा ज्ञान-बुद्धि, हीन शून्य-रहित इ।
मूर्खता, स स्त्री (सं) अज्ञता, अनभिज्ञता,

मंदता, दुर्-निर्, दुर्बिल, अज्ञान, अबोध, जन्ता इ ।

मूर्च्छना, सं स्त्री (स) संगीतप्रकार ।

मूर्च्छा, सं स्त्री (स) संमोह, कश्मल, मूर्च्छन, मूर्च्छाय, चैतन्यस.ज्ञा-लोप-नाश ।

—आना, क्रि अ मूर्च्छ् (भ्वा प से), मुह (दि प से) मोह-मूर्च्छा प्राप् (स्वा प अ), संज्ञा चेतना हा (जु प अ), नष्ट संज्ञ-लुप्तचेतन (वि) भू ।

मूर्च्छित, वि (स) मूढ, मुग्ध, मोहवश, मूर्च्छान्वित, नष्ट-लुप्त-विगत,-चेतन-चैतन्य-संज्ञ ।

मूर्त, वि (स) मूर्तिमत्, स्थूल, आकृतियुक्त २ कठिन, स्थूल, सुसंहत, घन ३ 'मूर्च्छित' दे ।

मूर्ति, सं स्त्री (स) चित्र अलेख्य रेख चित्र २ प्रतिकृति (स्त्री), प्रतिच्छंद, प्रतिमा ३ आकृति (स्त्री), आकार, स्वरूप ४ शरीर, देह ।

—कार स पु (स) चित्रकार २ प्रतिमाकार ।

—पूजा, स स्त्री (स) प्रतिमापूजनम् ।

—विद्या, सं स्त्री (स) मूर्ति-निर्माण-घटना ।

मूर्तिमान्, वि (स मत्) सशरीर, शरीरिन्, काय-देह,-भृत्-धारिन्-वत्, देहिन्, मूर्त २ दृश्य, दृष्टिगोचर, प्रत्यक्ष, साकार ।

मूर्द्धज, स पुं (स) शिरोरुह, दे 'केश' ।

मूर्द्धा, स पु (स-द्धन्) शीर्ष, दे 'सिर' ।

मूल, सं पु (स न) शिफा-का जटा, ब्र(बु)ध्न, अंघ्रिनामक २ कंद ३ उपक्रम, आरंभ, आदि ४ आदि,-कारण बीज हेतु, प्रकृति (स्त्री) ५ मूलवित्त, दे 'पूंजी' ६ आद्य-आरंभिक,-भाग ७ गृह मूल, वास्तु (पु न) ८ मूलग्रंथ, व्याख्येय वाक्य ९ नक्षत्रविशेष १० समीप ११ दे 'पिपलामूल' । वि, मुख्य, प्रधान ।

—धन, स पु (स न) मूल, मूल,-द्रव्य वित्त, सामकम् ।

—मूलक, वि (सं समासान्त में) -कारणक, उद्भूत,-उत्पन्न (उ अज्ञानमूलक, अज्ञान कारणक इ)।

मूली, स स्त्री (सं मूलक क) राजलुक, महाकंद, हस्तिदंत, कंदमूल, दीर्घ,-मूलक-पत्रक-कंदकम् । (छोटी मूली) मूलकपोतिका, चाणक्यमूलक, लघुमूलकम् ।

किसी को मूली गाजर समझना, मु, तृणाय-तृणमन् (दि आ अ), अवधीर् अवज्ञा (चु)।

मूल्य, स पु (स न) वस्न-न, अर्घ, अर्हा, अवक्रय, पण्य ।

—रहित, वि (स) तुच्छ, निस्सार, व्यर्थ, क्षुद्र ।

—वृद्धि, स स्त्री (स) वस्न-अर्घ-वृद्धि-उदय-उन्नति (स्त्री)।

मूल्यवान्, वि (स-वत्) बहुमूल्य, महार्घ, अतिमूल्य, अमूल्य ।

मूल्यांकन, सं पु (सं न) मूल्य वस्न अर्घ,-निर्धारण-निश्चयनम् ।

मूष, मूष(षि)क, स पु (स) उन्दुरु, दे 'चूहा' ।

—वाहन, स पु (स) गणेश ।

मूसल-र, स पु (स मुसल-ल) मुश(स)ल-ल, अयोऽग्रम् ।

—चंद, स पु, अशिष्ट, असभ्य २ पुष्टदुष्ट ।

मूसल(ला)धार बरसना, मु, अतीव-अति वेगेन धारासारैः वृष् (भ्वा प से)।

मूसलाधार वर्षा, आसार, धारा,-आसार (नि-सं)पात -वर्ष -वर्षम् ।

मूसली, स, स्त्री, दे 'मुसली' ।

मूसा, स पुं (स मूष) दे 'चूहा' ।

मृग, स पुं (स) हरिण, कुरंग, -रंग, वातायु, (अ)जिनयोनि, एणक, ऋष्य, रिष्य-श्य, चारुलोचन, सारंग, कृष्णसार, पृषत-त् (पु), प्लाविन् (पुं), मरुक, रुरु, रोहित, लिंगु, वनन, शंबर, रौहिष, वातप्रमी (पु) २ पशुमात्र ३ वन्यपशु ४ मार्गशीर्षमास ५ मकरराशि ६ पुरुषभेद ।

—छाला, स स्त्री (सं+हिं) मृग हरिण, अजिन चर्मन् (न)।

—तृष्णा, स स्त्री (स) मृग,-तृष्-तृषा-तृष्णि-तृष्णिका-मरीचिका (सब स्त्री)।

—नयनी, स स्त्री (स) कुरंग मृग,-दृश् (स्त्री) -लोचन (-नी)-अक्षी-ईक्षणा-नयना ।

—राज, स पु (स) मृगेन्द्र, दे 'सिंह' ।

—शिरा, सं स्त्री (सं) मृग-शिर-शिरस् (न)-शीर्षम्।

मृगया, सं स्त्री (सं) दे 'शिकार'।

मृगांक, सं पु (सं) शश-अंक-लांछन, दे 'चाँद'।

मृगी, सं स्त्री (सं) हरिणी, कुरंगी, एणी, पृषती २ अपस्मार ३ कस्तूरी।

मृगेन्द्र, सं पु (सं) मृग-पति-राज, दे 'सिंह'।

मृणाल, सं पु (सं पु न) बिस-नं, मृणाली, पद्म-कमल-नाल, पद्मतन्तु।

मृत, वि (सं) दे 'मुरदा' वि।

मृतक, सं पु (सं पु न) दे 'मुरदा' सं पु।

—कर्म, सं पु [सं-मन् (न)] प्रेतकृत्य (अन्त्येष्टि इ)।

मृत्तिका, सं स्त्री (सं) दे 'मिट्टी' (१)।

मृत्युंजय, सं पु (सं) जितमृत्यु २ शिव।

मृत्यु, सं स्त्री (सं पु) मरण, निधन-नं, पञ्चत्व-ता, प्राणनाश-, तनु-त्याग-विच्छेद, कालधर्म, दिष्टान्त, संस्थिति (स्त्री), प्रलय, अत्यय, प्राण-अन्त, नाश, मृति (स्त्री), अवसान, दीर्घनिद्रा।

—लोक, सं पु (सं) यमलोक २ मर्त्यलोक।

मृदंग, सं पु (सं) मुरज, पटह-, घोष।

मृदु, वि (सं) श्लक्ष्ण, मसृण, सुखस्पर्श, २ श्रुति मधुर, कर्कशशून्य, मञ्जुल ३ सुकुमार, पेलव, कोमल, मृदुल, सौम्य, ४, मन्द, मन्थर, विलम्बकारिन्।

मृदुता, सं स्त्री (सं) श्लक्ष्णता, मसृणता २ मञ्जुलता, श्रुति मधुरता ३ सुकुमारता, कोमलता ४ मन्दता, मन्थरता इ।

मृदुल, वि (सं) दे 'मृदु'।

मृदुलता, सं स्त्री (सं) दे 'मृदुता'।

में[1], अव्य (सं-मध्ये)-अन्तरे, अन्त-, प्राय सप्तमी विभक्ति से (उ घर में गृहे)।

—से, मध्यात् (षष्ठी के साथ), प्राय षष्ठी तथा सप्तमी विभक्ति द्वारा (उ रत्नानां रत्नेषु वा इम श्रेष्ठ)।

में[2], सं स्त्री (अनु) रैभणं, अजरम्भ।

मेंगनी, सं स्त्री (हि मींगी) अजपुरीषिका, ...।

मेगनीज, सं पु (अं) लोहकं, मान्गनम्।

मेंडक, सं पु, दे 'मेढक'।

मेंढा, सं पु, दे 'मेढा'।

मेंबर, सं पु (अं) सदस्य-, समासद् (पुं)।

मेंह, सं पु (सं मेघ>) दे 'वर्षा'।

मेंहदी, सं स्त्री, दे 'मेहदी'।

मेक्सिमम, वि (अं) भूयिष्ठ, अधिकतम।

मेख, सं पु, दे 'मेष'।

मेख़, सं स्त्री (फ़ा) दे 'खूँटा' २ दे 'कील' ३ दे 'पच्चड़'।

—मारना, मु, बाध् (भ्वा आ से), विहन् (अ प अ), विघ्न (ना धा, विघ्नयति)।

मेखल-ला, सं स्त्री (सं मेखला) कांची चि (स्त्री), रसना-दा-नान, सारस(स)न, कक्ष्या। सप्तकी-ञ्ची २ कटिसूत्र ३ खड्गादि निबन्धन ४ शैलनितंब ५ नर्मदा।

मेगज़ीन, सं पु (अं) शस्त्रास्त्रकोष्ठ २ सामयिकपत्रिका।

मेगनेशियम, सं पु (अं) भास्वरधातु, मग्नकं, माग्निषम्।

मेघ, सं पुं (सं) जल-पयो-धारा-अम्भो-धर-, अभ्र, अम्बु-वारि-वाह, स्तनयित्नु, बलाहक-, अब्द-, नीरद-, वारिद, जलद, तोयद, मुदिर, अम्भोद-, पयोद, घन, जीमूत, धूम योनि, वारि-जल-पयो-मुच् (पुं), घनाघन-, पर्जन्य २ रागभेद (संगीत)।

—काल, सं पु (सं) प्रावृष् (स्त्री) वर्षा (स्त्री, बहु), वर्षा-घन-काल-समय।

—गर्जन, सं पुं (सं न) मेघ-दुंदुभि-नाद-स्वन, गर्जितं, गर्जन-ना, स्तनित, वि, स्फूर्जथु।

—दूत, सं पु (सं न) कालिदास प्रणीतं खण्डकाव्यम्।

—धनु, सं पु [सं-धनुस् (न)] इन्द्रचाप।

—नाथ, सं पु (सं) मेघपति, इन्द्र।

—नाद, सं पुं (सं) इन्द्रजित् २ मेघगर्जनम् ३ वरुण।

—मण्डल, सं पु (सं न) घनपंक्ति, मेघमाला घनश्रेणी।

—वर्ण, वि (सं) घनश्याम।

—वाहन, सं पुं (सं) इन्द्र, शक्र।

मेज़, सं स्त्री (फ़ा) पादफलक-कम्।

—पोश, सं पुं (फ़ा) पादफलकाच्छादनम्।

मेजवान, सं पु (फा) आतिथ्यकारिन्, अतिथिसेवक ।
मेटना, क्रि स दे मिटाना' ।
मेड, स पु (स भित्त) क्षेत्र,-सीमा पर्यन्त ।
मेढक, सं पु (स मडूक) भेक, प्लव, प्लवग, दर्दुर, वर्षा, भू-घोष, अडुक, कंडुक, हरि, शालु, शा(मा)लूर ।
मेढ़ा, स पु (स मेढ्र) दे 'भेडा' ।
मेथिलेटिड स्पिरिट, स स्त्री (अ) मिथिलिन सार ।
मेथी, स स्त्री (स) मेथि (स्त्री), मेथिका मेथिनी, दीपनी, बहुपर्णी, गन्ध,-फला-बीना ।
मेद, स पु [स मेदस् (न)] वपा, वसा, मेद २ मेदस्विता स्थौल्य ३ कस्तूरी ।
मेदा, स पु (अ) पक्वाशय, पिचड, फड, मलुक ।
मेदिनी, स स्त्री (स) धरा, दे 'पृथिवी' ।
मेध, स पु (स) यज्ञ, मख २ हविस्(न) ।
मेधा, स स्त्री (स) धारणावती बुद्धि (स्त्री), स्मरणशक्ति (स्त्री), धारणा ।
मेधावी, त्रि (स) पण्डित, धीमत्, मेधावत् ।
मेम, स स्त्री (अ मैडम) गौरांगी, श्वेतांगी (विदेशीय नारी) ।
मेमना, स पु (अनु मे-में) अजपोत, छागशाव २ अविर्टिम, मेषशिशु ।
मेमार, सं पु (अ) स्थपति, वास्तुशिल्पिन्, गृहनिवेशक, फलगड, *गेहकर ।
—का काम, स पु, सूत्रकर्मन् (न) ।
मेरा,री, सर्व (हिं मैं) मम, मदीय (-या स्त्री), मामकीन(-ना स्त्री), मामक (-मिका स्त्री), मत्- ।
मेरु, स पु (स) सुमेरु, हेमाद्रि, रत्नसा_, सुरालय २ जपमालाया प्रधानगुटिका ।
—दड, स पुं (स) पृष्ठ,-वश अस्थि (न) २ ध्रुवमध्यरेखा ।
मेल, स पु (सं) दे 'मिलन' (१२) ३ ऐकमत्य, सामत्य, वैमत्याभाव ४ सख्य, मित्रत्व, सौहार्द ५ आनुकूल्यं, सामनस्य ६ साम्यं, सादृश्यम् ।
—जोल, —मिलाप, } स पु, सुपरिचय, अभ्यतरत्व, गाढसौहृदम् ।
मेला, सं पुं (सं मेल) मेल्क, यात्रा, समाज, उत्सव २ जनसमर्द, सकुलम् ।
—ठेला, स पु, जनौघ, जनसमर्द ।
मेवा, स पु (फा) शुष्क,-फलम् ।
—फरोश, स पु (फा) फल, विक्रेतृ विक्रयिन् ।
मेष, स पु (स) दे 'भेडा' २ क्रिय, राशिविशेष ।
मेहदी, स स्त्री (स मेंधी) रागागी, मेंधिका, यवनेष्टा, नख, रजिनी, रागगर्भा, कोकदता ।
मेह[1], स पु (स) मूत्र २ प्रमेह ३ मेष ।
मेह[2], स पु (स मेघ) जलद २ वृष्टि (स्त्री), दे 'वर्षा' ।
मेहतर, स पु (फा, मि स महत्तर) ज्येष्ठ, प्रधान २ मलवाहक, दे 'भंगी' (मेहतरानी स्त्री) ।
मेहनत, स स्त्री (अ) परिश्रम, प्रयास ।
—मज़दूरी, स स्त्री, शारीरिक-कायिक,-श्रम व्रातम् ।
—ठिकाने लगना, मु, श्रमसाफल्यम्, श्रमेण कार्यसिद्धि (स्त्री) ।
मेहनताना, स पु (अ + फा) * पारिश्रमिक, कर्मण्या, समंण्या ।
मेहनती, वि (अ मेहनत) परिश्रमिन्, उद्योगिन् ।
मेहमान, स पु (फ़ा) अतिथि, दे ।
—ख़ाना, स पु, अतिथि प्राघुण, शाला-गृहम् ।
—नवाज़, वि, अतिथि प्राघुण,-सेवक-पूजक-सत्कारक ।
—नवाज़ी, स स्त्री, दे 'मेहमानदारी' ।
मेहमानदारी, स स्त्री (फ़ा) } आतिथ्य
मेहमानी, स स्त्री (फा मेहमान) } अतिथि, सेवा सत्कार ।
मेहर, स स्त्री (फा) कृपा, अनुग्रह ।
मेहरबान, वि (फा) कृपालु, अनुग्रहशील ।
मेहरबानी, स स्त्री (फ़ा) दया, अनुकपा ।
मेहराब, स स्त्री (अ) तोरण -ण, वृत्तखण्ड-डम् ।
—दार, वि (अ + फा) तोरणाकार (द्वारादि) ।
मैं, सर्व (स अस्मद्>) अहम् । स स्त्री, अहमति (स्त्री), अहकार ।
मैका, स पु, दे 'मायका' ।
मैत्री, स स्त्री (स) मैत्र्य, दे 'मित्रता' ।
मैथिल, वि (स) मिथिलासबधिन् । स पु, मिथिलावासिन् २ जनक ।

मैथिली, सं स्त्री (सं) वैदेही, जानकी ।

मैथुन, सं पु (सं न) रत, सुरत, रति, क्रियाक्रीडा, महासुख, क्रीडारत्न, अब्रह्मचर्यक, निधुवन, धर्षित, सभोग ।

—करना, क्रि स, सुरत आतन् (त प से), संभोग-रतिक्रीडां कृ, महासुख अनुभू ।

मैदा, सं पुं (फा) समिता, अपूप्य, *अट्टसार ।

मैदान, सं पुं (फा) समभूमि (स्त्री) स्थल-स्थली प्रदेश, उपशल्य २ क्रीडा, भूमि क्षेत्र ३ युद्धभूमि, रणक्षेत्रम् ।

—मारना, मु, विपराजि (भ्वा आ अ), दे 'जीतना' ।

मैन, सं पु (सं मदन) कामदेव २ दे 'मोम' ।

मैनफल, सं पु (सं मदनफल) श्वसन-छर्दन शल्य-करहाटक,-फल २ (वृक्ष) मदन, श्वसन, छर्दन, शल्य ।

मैनसिल, सं पु (सं मन शिला) नैपाली, मनोज्ञा, शिला, कुनटी, दिव्यौषधि (स्त्री), नागजिह्विका, कल्याणिका ।

मैना, सं स्त्री (सं मदना) शा(सा)रिका, चित्रलोचना, कुणपी, मधुरालापा, मेधाविनी, गो, किराटा किराटिका, कलहप्रिया ।

मैनाक, सं पु (सं) हिमवत्सुत, सु हिरण्य, नाभ ।

मैया, सं स्त्री (सं मातृका) दे 'माता' ।

मैल, सं स्त्री (सं मलिन>) दे 'मल' (१-२) । ३ दोष, विकार ।

—खोरा, वि (हिं+फा) मल,-गोपिन्-गोप्तृ । सं पु, अन्तर्-वस्त्र-वसनं वासस् (न) २ दे 'साबुन' ।

हाथ की—, मु, तुच्छवस्तु (न) क्षुद्रद्रव्यम् ।

मैला, वि (सं मलिन) दे 'मलिन' । सं पु, दे 'मल' (१-३) ।

—करना, क्रि स, आविलयति-मलिनयति (ना धा), पङ्किली-मलिनीकृ ।

—होना, क्रि अ, आविली मलिनीभू, कलुष पंकिल (त्रि) जन् (दि आ से) ।

—कुचैला, वि, अति आविल कलुष मलिन ।

मों, सं स्त्री, दे 'मूछ' ।

मोंढा, सं पुं (सं मूर्धन्>) *शरकाण्डपीठं २ भुजमूल स्कंध,-प्रदेश ।

मोक्ष, सं पु (सं) दे 'मुक्ति' ।

—विद्या, सं स्त्री (सं) वेदान्तशास्त्रम् ।

मोगरा, सं पु (सं मुद्गर) अतिगन्ध गन्ध, राज सार, विट,प्रिय, जन मृग, इष्ट २ दे 'मुँगरा' ।

मोघ, वि (सं) व्यर्थ, निष्फल ।

मोच, सं स्त्री (सं मुच्>) संधि,-व्याक्षेप व्यावर्तन, स्नायुवितान ।

—आना या निकलना, क्रि अ, संधि व्याक्षिप् (कर्म)-व्यावृत् (भ्वा आ से), स्नायु वितन् (कर्म) ।

मोचक, सं पु (सं) मुक्तिद २ सन्यासिन् ३ कदली ।

मोचन, सं पुं (सं न) मोक्षण, मुक्तिदानं, बंधनभंजन, मुक्ति (स्त्री) । वि, मोचक, मोक्षक, मुक्तिप्रद ।

मोचना, सं पु (सं मोचन>) *मोचन, *बालोत्पाटन २ मुचुटी, लोहकारोपक रणभेद ।

मोचरस, सं पु (सं) मोच,-स्राव-सार निर्यास, शाल्मलीवेष्ट, सुरस ।

मोची, सं पु (सं मुच्>) चर्मकार, पादू,-कार सधायक ।

मोज़ा, सं पु (फा) अनुपदीना, *चरणावरणं, दे 'जुर्राब' ।

मोजिज़ा, सं पु (अ) चमत्कार, कौतुकं, आश्चर्यम् ।

मोट, सं स्त्री, दे 'गठरी' ।

मोटन, सं पुं, (सं न) पेषणं, चूर्णनं, मर्दन, पण्डनम् ।

मोटर, सं पु (अं) चालन प्रवर्तक,-यन्त्रम् ।

—कार, सं. स्त्री (अं) चित्रतैल,-रथ, *मोटरम् ।

—खाना, सं पु, मोटरागारम् ।

—ड्राइवर, सं पु, मोटरचालक ।

—बस, सं स्त्री *मोटर,बसम् ।

—बोट, सं स्त्री *मोटरनौका ।

—साइकिल, सं स्त्री *मोटरसाइकिलम्, *फटफटिया ।

मोटा, वि (सं पुष्ट> ?) पीन, पीवर, पुष्ट, पुष्टांग (गी स्त्री), स्थूल, स्थूलदेह, मदस्विन् २ घन, निविड, सांद्र, गाढ, स्थूल ३ कणमय, कुपिष्ट, ४ अप,-निकृष्ट, हीन, गर्ह्य ५ कुरूप

६ 'समाधर'', विशिष्ट ७ दृष्ट, गर्व ८ महत्, बृहत् ९ धनाढ्य, धनद।
—असामी, स पु, धनिन्, धनशालिन्, श्रीमत्।
—ताजा, वि, हृष्टपुष्ट, पुष्ट, मांसल।
मोटी बात, स स्त्री, सामान्य-साधारण प्राकृत, वार्ता।
मोटे हिसाब से, क्रि वि, स्थूलमानेन।
मोटाई, स स्त्री
मोटापन, मोटापा, स पु } (हिं मोटा) पीवरता, मेदोवृद्धि (स्त्री), स्थूलता पीनता २ धन ना ...डता, मादता इ
मोठ, स स्त्री (स मकुष्ठ) वान-अरण्य-वन, मुद्ग मुकुष्ठ क, मद(कु)ष्ठ-ष्टक।
मोड स पु (हिं मुड़ना) (नदी मा आदि का) वक्र आवृत्ति (स्त्री) २ वक्रता, वक्रिमन् (पु), वक्रीभाव, जिह्मता ३ दे 'मुड़ना' स पु।
मोड़ना, क्रि स, दे 'मुड़ना' के प्रे रूप।
मोढ़ा, स पु, दे 'मोंढा'।
मोतदिल, वि दे 'मातदिल'।
मोतिया, स पु (हिं मोती) मल्ली, मल्लिका, वन, चन्द्रिका, गौरी, प्रिया सौम्या, मिता, दे 'मोगरा' (१)।
मोतियाबिंद, स पु (हिं मोती+स बिंदु) मौक्तिक-मुक्ता बिंदु (नेत्ररोग)।
मोती, स पु (स मौक्तिक) मुक्ता, शौक्तिक, मुक्ताफल शुक्तिज।
—पिरोना, क्रि स, मौक्तिकानि सूत्र (चु)-गुम्फ्(तु प से) समथ् (क प से)। मु, सुमधुर भाष् (भ्वा आ से) २ सुरूप शैली लिख् (तु प से) ३ रुद् (अ प से) ४ सुमुद्रमार्ये कृ।
मोतीचूर, स पु (हिं मोती+चूर) मुक्ता मोदक।
—आँख, स स्त्री, *मौक्तिकनेत्र, लघुगोलभासुरनेत्रम्।
मोतीज्वर, स पु (हिं मोती+स ज्वर) शीतला-मसूरिका, ज्वर।
मोतीझि(झ)रा, स पु (हिं मोती+झरना) आन्त्रिक मन्थर, ज्वर।
मोथा, स पु (सं मुस्तक-क) मुस्ता, कुरुविंद, भद्रा, भद्रक।
मोद, स पु (स) हर्ष, आनंद, दे 'प्रसन्नता'।
मोदक, स पु (स) मिष्टान्नभेद। वि, हर्षजनक, आह्लादक।
मोदी, स पु (स मोदक>) अन्न, विक्रेतृ विक्रयिन्, दे 'परचूनिया'।
—खाना, स पु (हिं+फ़ा) अन्न भाडारम्।
मोम, स पु (फ़ा) सिक्थ, सिक्थक, मक्षि कामल-ल, मधुज, मधुशेष, मधूच्छिष्ट, मधूत्थ, मधूत्थम्।
—की नाक, स स्त्री, मु, चलचित्त, अस्थिरमति।
—जामा, स पु (फ़ा) *माधुज-सैक्थिक-सिक्थाक्त, वस्त्रम्।
—दिल, वि (फ़ा) मृदुमानस, आर्द्रचित्त।
—बत्ती, स स्त्री (फ़ा+हिं) मधुज सिक्थ, वर्ती-र्ति (स्त्री)।
—करना या बनाना, मु, दयार्द्रीकृ, करुणार्द्र (वि) विधा (जु उ अ)।
—होना, मु, दयार्द्र (वि) भू, अनुकम्प् (भ्वा आ से)।
मोमियाई, स स्त्री (फ़ा) कृत्रिमशिलाजतु (न), कृतकशिलाजित (स्त्री) २ व्रण-पूरक स्निग्धौषधभेद।
मोमी, वि (फ़ा) सिक्थमय, माधुज, सैक्थिक।
मोर, स पु (स मयूर) बर्हिण, नीलकंठ, चित्र, पिच्छक पत्रक, कलापिन्, केकिन्, चन्द्रकिन्, नर्तनप्रिय, बर्हिन्, भुजंगारि, मेघानंदिन्, शिखंडिन्, शिखावल, वर्षामद, प्रचलाकिन्।
—की ध्वनि, स स्त्री, 'केका' दे।
—की पूंछ, स स्त्री, कलाप, पिच्छ, प्रचलाक, बर्ह, शिखंड।
—चंद्रिका, स स्त्री, चन्द्रक, मेचक।
—पंखी, स स्त्री, केलि-वि ...र-नौका।
—मुकुट, स पु, मयूरमुकुट-ट, शिखंड शेखर।
—शिखा, स स्त्री, बर्हिचूडा, शिखिशिखा, शिखालु।
मोरचा[1], स पु (फ़ा) दे 'जंग' २. मुकुर मलम्।

मोरचा², स पु (फा मोरचाल) परिखा, खेय, खातम्।
—बंदी करना, मु, परिखया परिवेष्ट (प्रे) परिखा खन् (भ्वा प मे) सेना खातेषु नियुज् (रु आ अ)।
—लेना, मु, युध (दि आ अ)।
मोरछल, स पु (हिं मोर+छड) *शिखंड चामर, *कलापव्यजनम्।
मोरनी, स स्त्री (हिं मोर) मयूरी शिखंडिनी, बर्हिणी, केकिनी।
मोरी, स स्त्री (हिं मोहरी) नाली, नालि (स्त्री) *वहनी, जलमार्ग।
मोल, स पु (स मूल्य, दे)।
—लेना, क्रि स, दे 'खरीदना'।
—तोल, स पु, अर्घनिर्धारण, मूल्यनिर्णय।
मोह, सं पु (स) भ्रम, भ्रांति-मिथ्यामति (स्त्री), विवर्त, आभास, प्रपंच, अविद्या अज्ञान २ ममता त्व ३ स्नेह, राग, प्रेमन् (पु न) ४ कष्ट, दु:ख ५ मूर्च्छा।
—लेना, क्रि स, मुह (प्रे), मन ह (भ्वा प अ), वशी कृ।
मोहक, वि (स) चेतोहर, मनोहारिन् रम, २ मोहजनक।
मोहताज, वि (अ) दे 'मुहताज'।
मोहन, सं पु (स) मोहक, मनोहारिन् २ श्रीकृष्ण ३ मूर्च्छाकारक उपचारभेद (तंत्र) ४ अस्त्रभेद ५ कंदर्पबाणविशेष ६ धत्तूरक्षुप। वि, मोहक, चेतोहर।
—भोग, स पु (सं) (१-३) सयाव कदली-आम्र, भेद।
मोहना, क्रि अ (स मोहन) अनुरञ्-आसञ् (कर्म), आसक्त-अनुरक्त-बद्धभाव भू २ मुह् (दि प से), दे 'मूर्च्छा आना'। क्रि स, प्रीति-अनुराग-अभिलाष जन् (प्रे), अनुरञ् (प्रे), वशी कृ २ भ्रम भ्रांति-संदेह जन् (प्रे), प्रवञ्च (प्रे)। स पु, अनुरंजन, अनुराग मूर्च्छा, मोहनं, वशीकरणं, वंचन, प्रतारणम्।
मोहनी, सं स्त्री (स) विष्णो रूपविशेष २ मिष्टान्नभेद ३ मोहन, शक्ति (स्त्री) मंत्र ४ माया। वि स्त्री (सं) मोहिका, चेतोहरी।
—डालना, मु, अभिचारेण मायया वा वशीकृ।
मोहर, स स्त्री (फा) दे 'मुद्रा' (१-४)। २ सुवर्णमुद्रा, निष्क क, दीनार।
—लगाना, क्रि स, मुद्रयति (ना धा), मुद्रया अंक (चु)।
मोहरा¹, स पु (हिं मुँह) पात्र भाजन, मुख २ पदार्थस्य अग्र-ऊर्ध्व, भाग ३ पशुमुख जालक ४ नासीरचरा (पु बहु), सेना मुख ५ निर्गमनमार्ग, द्वारम्।
मोहरा,² स पु (फा मोहर) शार-रि, खेलनी २ मृण्मय *मस्थानपुट (साचा) ३ दे 'जहरमोहरा'।
मोहलत, स स्त्री (अ) अवकाश २ अवधि।
मोहित, वि (स) मोहग्रस्त, भ्रांत २ आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव।
मोहिनी, वि तथा स स्त्री (सं) दे 'मोहनी' वि तथा स स्त्री।
मोही, वि (स-हिन्) मुग्धकारिन्, चेतोहर २ अनुरागिन्, स्नेहिन् ३ भ्रांत ४ लुब्ध, लोभिन्।
मौंजी, स स्त्री (स) मुंजमेखला।
—बंधन, स पु (स न) मुंजमेखलधारणम्।
मौका, स पु (अ) घटनास्थानं २ स्थान, प्रदेश ३ अवसर, अवकाश।
—देखना, मु, अवसर प्रतिपाल् (प्रे, प्रतिपालयति)।
—हाथ से न जाने देना, मु, अवसर न वा (प्रे वापयति) हा (जु प अ, प्रे, हापयति)।
मौकूफ, वि (अ) दे 'बरखास्त'।
मौकूफी, स स्त्री (अ) दे 'बरखास्तगी'।
मौक्तिक, स पु (स न) मुक्ता, मुक्ताफलं, शौक्तिकम्, शुक्तिजम्।
—दाम, सं पु (स-मन् न) मुक्ता-मौक्तिक, हार-सर मुक्तावली।
—सर, स पु (सं) दे 'मौक्तिकदाम'।
मौखिक, वि (सं) वाचिक लेख विना।
मौज, स स्त्री (अ) तरंग, कल्लोल, वीची चि (स्त्री) २ कामचार, छंद, छंदस् (न), चित्ततरंग ३ आनंद, मोद ४ वैभव, विभव ५ दे 'धुन'।
—आना, मु, स्वच्छंदतया सहसा प्रवृत् (भ्वा आ से)।

—मनाना या उड़ाना, मु , नन्द् (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से), रम् (भ्वा आ अ)।
मौज़ा, स पु (अ) ग्राम ।
मौजी, वि (अ मौज) आनन्दिन्, उल्लासिन् २ कामचारिन्, स्वैरिन् ३ अस्थिरमति ।
मौजूद, वि (अ) उपस्थित, विद्यमान ।
मौजूदगी, स स्त्री (अ + फ़ा) उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता ।
मौजूदा, वि (अ) वर्तमान, विद्यमान, प्रचलित, आधुनिक, साम्प्रतिक ।
मौत, स स्त्री (स मृत्यु दे)।
—सिर पर खेलना, मु , जीवितसंशये वृत् (भ्वा आ से)।
अपनी—मरना, मु , प्रकृत्या स्वभावेन मृ (तु आ अ)।
मौन, स पु (स न) निःशब्दता, तूष्णीं भाव , वाक्-रोध-नियमन-स्तम्भ २ मुनि व्रतम्। वि , दे 'मौनी'।
—व्रत, स पु (स न) मूकता-मूकिम-तूष्णींकता, प्रतिज्ञा सकल्प व्रतम्।
—खोलना, क्रि अ , मौनं भञ् (रु प अ), तूष्णींभाव त्यज् (भ्वा प अ)।
—धारण करना, क्रि अ , वाचयम् (भ्वा, प अ)-निरुध् (रु उ अ), मौन धृ (चु) भज् (भ्वा उ अ)।
मौनी, वि (स निन्) वाचयम, मौनव्रतिन्, मूक, निःशब्द, तूष्णीक। स पु (स) मुनि , तपस्विन्।
मौर, स पु (स मुकुट>) वरस्य तालपत्र मुकुट, *मुकुट, २ प्रधान , शिरोमणि ।
मौरी, स स्त्री (हिं मौर) वध्वास्तालपत्रमुकुटक, *मुकुटकम्।
मौरूसी, वि (अ) पैतृक, पित्र्य, परपरागत।
मौर्ख्य, स पु (स न) मूर्खता, अज्ञता, जडता, मूढता।
मौर्य, स पु , (स) प्राचीन भारतस्य वश विशेष ।
मौर्वी, स स्त्री (स) धनुर्गुण , प्रत्यचा, ज्या ।
मौलसिरी, स स्त्री (स मौलि + श्री >) बकुल , सीधुगध , मुकु(कु)ल , मधुपुष्प सुरभि , स्थिरकुसुम , भ्रमरानद ।
मौला, स पु (अ) परमेश्वर ।
मौलि, सं स्त्री (स पु स्त्री) शिखर, शृंग, ऊर्ध्वभाग २ शीर्ष, मस्तक ३ मुकुट, किरीट ४ जूट , जूटक ५ अशोकवृक्ष ६ प्रधान , मुख्य ७ पृथिवी ।
मौलिक, वि (स) मौल, आधारभूत २ प्रधान, मुख्य ३ आद्य, आदिम ।
मौसा, स पु , दे 'मासड'।
मौसिम, स पु (अ) ऋतु , काल , समय २ उपयुक्तसमय , उचितकाल ।
मौसिमी, वि (फ़ा) आर्तव, ऋतु-सबधिन् विषयक २ समयानुकूल, कालानुरूप ।
मौसी, सं स्त्री , दे 'मासी'।
मौसेरा, वि (हिं मौसी) मातृष्वसृसबधिन्।
—भाई, स पु , मातृ ष्वसेय ष्वस्रीय ।
मौसेरी बहिन, स स्त्री , मातृ ष्वसेयी ष्वस्रीया।
म्याँवँ, स स्त्री (अनु) विडालशब्द, *म्यूँकार ।
—करना, मु , भयेन मदमद वद् (भ्वा प से)।
म्याद, स पु., दे 'मीआद'।
म्यान, स स्त्री , दे 'मियान'।
म्लान, वि (स) ग्लान, विशीर्ण २ दुर्बल ३ मलिन ४ खिन्न, अवसन्न ।
म्लानि, स स्त्री (स) म्लानता, कान्तिक्षय , विवर्णता २ खेद , अवसाद , शोक , ग्लानि (स्त्री)।
म्लेच्छ, स पु (स) वर्णाश्रमधर्मविहीन , अनार्य २ गोमांसभक्षक ४ अस्पष्टभाषिन् ४ दुर्वृत्त , दुष्ट । वि , अधम, नीच, पापिन् ।

य

य, देवनागरीवर्णमालाया षड्विंशो व्यजनवर्ण , यकार ।
यता, स पु (स यन्तृ) शासक , निदेशक २ वाहन-चालक , सारथि । ३ हस्तिपक , गजाजीव ।
यंत्र, सं पु (स न) देवाधिष्ठान, विविध प्रभावयुक्त अंकाक्षरयुत कोष्ठकचित्र (तत्र.) २ दारुयन्त्रादि, यन्त्र (मशीन) ३ साधन, उपकरण ४ अग्न्यस्त्र ५ वाद्य, वीणा ६ दे 'ताला'।
—गृह, स पु (स न) यन्त्रशाला २ मान मंदिर, वेधशाला ३ (अपराधिना) यन्त्रणागृहम्।
—मंत्र, स पु (स न) अभिचार , कुहक, कुसृति ।

—विद्या, स स्त्री (स) यंत्र शास्त्र विज्ञानम्।
—शाला, स स्त्री (स) दे यंत्रगृह'।
यंत्रज्ञ, स पु (स) यंत्रकार यंत्रज्ञ, शिल्पिन्।
यंत्रण, स पु (स न) नियंत्रण, दमनम् २ बंधन, संयमनम् ३ पीडा, वेदना ४ रक्षण, अभिरक्षा।
यंत्रणा, स स्त्री (स) कष्ट, क्लेश, यातना २ वेदना पीडा।
यंत्रालय, स पु (स) यंत्र-गृह शाला २ मुद्रणयंत्रालय।
यंत्रित, वि (स) यंत्रबद्ध २ तालकबद्ध।
यकता, वि (फा) अनुपम, अद्वितीय, अग्रतम।
यकसाँ, वि (फा) तुल्य, सम, सदृश।
यक़ीन, स पु (अ) निश्चय २ विश्वास।
यकृत्, स पु (स न) कालखंड, कालक, कालेय, करडा, महास्नायु, दे 'जिगर' २ यकृत्, उदरवृद्धि।
यक्ष स पु (स) देवजातिभेद, गुह्यक २ कुबेर।
—राज, स पु (स) कुबेर, यक्षराज।
यक्षिणी, स स्त्री (स) यक्षभार्या, यक्षी, २ कुबेरपत्नी।
यक्ष्मा, स पु (स यक्ष्मन्) क्षय, शोष, राजयक्ष्मन् (पु), रोगराज।
यख़नी, स स्त्री (फा) मांस, मंड-रस २ शाक,-मंड रस।
यगानत, स पु, आत्मीय, संबंधिन्, बांधव, बंधु। वि, एकाकिन् २ अनुपम।
—बेगाना, स पुं, स्वकीयपरकीया (बहु) २ मित्रबांधवा (बहु)।
यजमान, स पु (स) यज्ञपति, यष्टृ, व्रतिन्, यज्ञ-कर्तृ २ दानिन्, दातृ।
यजुर्वेद स पु (स) अर्थाता धर्मग्रंथविशेष, यजुस् (न), यजुः श्रुति (स्त्री)।
यजुर्वेदी, स पु (स-दिन्) यजुर्विद् (पुं)।
यज्ञ, स पु (स) याग, अध्वर, सव-सत्र, मख, क्रतु, सन, हवनं होम यज जि, इज्या, इष्टि (स्त्री), मख्तनु, मह २ विष्णु।
—कर्म, स पु [स कर्मन् (न)] यज्ञ, क्रिया कृत्य २ यज्ञकर्म।
—कुंड, स पुं (स पु न) हवन, वेदी-कुंडम्।
—पति, स पु (स) दे 'यजमान'।
—पशु, स पुं (सं) यज्ञियचरि २ अश्व ३ छाग।
—पात्र, स पु (स न) याग, भाजन भाण्ड।
—भूमि, स स्त्री (स) यागक्षेत्रम्।
—शाला स स्त्री (स) यज्ञ सदनं-मंदिरं आगारम्।
—सूत्र, स पु (स न) यज्ञोपवीतम्।
—स्तंभ, स पु (स) यागयूप।
यज्ञांग, स पु, (स न) यज्ञभाग २ यज्ञ साधनम् सामग्री उपकरणम्। (सं पुं) उदुम्बर जंतुफल २ खदिर, दंतधावन ३ विष्णु।
यज्ञागार, स पु (स न) यज्ञ, शाला वेदी वेदि (स्त्री)।
यज्ञोपवीत, स पु (स न) पवित्र, सावित्री यज्ञ मंत्र, सूत्र, द्विजायनी।
यति¹, स पु (सं) यतिन्, जितेंद्रिय, तापस, परिव्राजक, सन्न्यासिन्, योगिन्, भिक्षु, रक्तवसन २ ब्रह्मचारिन्।
—धर्म, स पु (स) सन्न्यास, भिक्षाचर्यम्।
यति², स स्त्री (स) विराम, विरति (स्त्री), विश्राम, पाठविच्छेद (छंद)।
यतिनी, स स्त्री (स) सन्न्यासिनी, परिव्रजिका २ विधवा।
यती स पुं (स तिन्) दे 'यति' 'सं पु'।
यतीम, सं पु (अ) छ(छि)मड, अनाथ, मातृपितृहीन।
—ख़ाना, स पु (अ+फा) अनाथालय, छ(छि)मडालय।
यत्न, स पु (स) प्रयत्न, उद्योग, उद्यम, अध्यवसाय, चेष्टा ईहित, आ प्र-याम, परि, श्रम, व्यवसाय २ उपाय, युक्ति (स्त्री) ३ चिकित्सा, उपचार, रोगप्रतिकार।
—करना, क्रि अ, प्र, यत् तथा चेष्ट् (भ्वा आ मे) परि, श्रम् (दि प से), अध्यव-व्यव सो (दि प अ), उद्यम् (भ्वा प अ), आयम (भ्वा दि प से) प्रयत्नं परिश्रमं अध्यवसायं कृ।
—शील, वि (स) यत्नवत्, उद्यमिन्, उद्योगिन्, आ प्र-यामिन्, परिश्रम उद्योग रत, शील पर-परायण इ।
यत्र, अव्य (सं) यस्मिन् देशे स्थले-स्थाने।
—तत्र, अव्य (स) अत्र तत्र, इतस्ततः २ अनेकत्र, बहुत्र।
यथार्थ, अव्य (सं न) यथा, मार्ग खण्डम्,

म'न अत, अनुस'र-अनुकू न् २ यथायोग्यम्, यथोचितम्।

यथा, अव्य (सं) येन प्रकारेण, यदा रीत्या २ दृष्टान्त उदाहरण,-रूपेण,तथा यथा हि, ननु, इव, यद्वत्, अनुरूप, अनुसारम्।

—काम, क्रि वि (स न) यथा, इच्छं इष्ट ईप्सित अभिमतम्।

—क्रम, क्रि वि (स न) क्रमेण, क्रमानुसारेण।

—तथा, क्रि वि (स) यथाकथंचित्, येन केन प्रकारेण।

—मति, क्रि वि (स न) यथाबुद्धि, यथाज्ञानम्।

—योग्य, वि (स) यथोचित, यथार्ह।

—रुचि, क्रि वि (स न) दे 'यथाकाम'।

—वत्, क्रि वि (स) यथोचित, यथार्ह, यथायुक्त २ यथाविधि, नियमानुसार ३ यथा नर्थ, यथ रत्यम्।

—शक्ति, क्रि वि (स न) यथा-बलसामर्थ्यं क्षमम्।

—शास्त्र, क्रि वि (स न) शास्त्रानुकूलम्।

—सम्भव, क्रि वि (स न) यथाशक्यम्।

—समय, क्रि वि (स न) यथाकाल, कालानुसारम्।

—साध्य, क्रि वि (स न) यथा,शक्ति समर्थम्।

—स्थान, क्रि वि (स न) स्थानानुकूल, उचितस्थानेषु।

यथार्थ, वि (स) सत्य, अवितथ, निर्दोष, निर्भ्रान्त २ उचित, रतयुक्त, युक्त। क्रि वि (स न) युक्त, यथार्ह, साम्प्रत, सम्यक्।

यथार्थता, स स्त्री (स) सत्यता, निर्दोषता २ औचित्य, युक्तता।

यथेच्छ, क्रि वि (स न) 'यथाकाम' दे। वि, (न) यथेष्ट, यथेप्सित, यथाकाम।

यदृच्छाचार, स पु (स) स्वेच्छाचार, यथेच्छव्यवहार।

यदृच्छाचारी, वि (स दिन्) स्वच्छन्द, स्वैर, स्वैरिन, अनियन्त्रित।

यथेष्ट, वि तथा क्रि वि दे 'यथेच्छ'।

यथोचित, वि (स) यथा,योग्य अह युक्त। क्रि वि (स न) यथा,योग्य-अर्हम्।

यदा, अव्य (स) यस्मिन् काले-समये।

—कदा, अव्य (स) काले काले, कदाचित्, कदापि।

यदि, अव्य (स) चेत् (यह वाक्यारंभ में नहीं आता)।

यदु, स पु (स) ययातिपुत्र।

—नन्दन, स पु (स) यदु,नाथ -श्रेष्ठ पति राज, श्रीकृष्ण।

यद्यपि, अव्य (स) षष्ठी वा सप्तमी से भी, जैसे, यद्यपि दशरथ विलाप करता रहा तो भी राम वन को चल दिया = विलपति दशरथे (विलपतो दशरथस्य) रामो वनं ययौ।

यम, स पु (स) धर्मराज, पितृपति, कृतान्त यमुनाभ्राता वैवस्वत, काल, दण्डधर, अन्तक धर्म महिषध्वज, महिषवाहन, जीवितेश २ इन्द्रियनिग्रह ३ योगाङ्गविशेष, अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहयमपालन ४. वायु ५ दे 'यमज'।

—दूत, स पु (स) धर्मराजचर।

—पुर, स पु (स न) यमपुरी, यमलोक।

—राज, स पु (स) दे 'यम' (१)।

यमक, स पु (स न) शब्दालंकारभेद (काव्य), (स पु) संयम २ दे 'यमज'।

यमज, स पु (स-औ) यमौ, यमकौ, यमलौ २ अश्विनीकुमारौ (जोड़े में से एक) यम, यमल। वि, यम, यमक, यमल।

यमल, स पु तथा वि, दे 'यमज'।

यमुना, स स्त्री (स) कालिन्दी, कलिन्द-कन्या-नदिना, यमी, यमनी, सूर्यसुता, तरणितनुजा २ दुर्गा।

ययाति, स पु (स) नहुषपुत्र, पुरुपिता, चन्द्रवंशीनृपविशेष।

यरकान, स पु (अ) पाण्डु,रोग -आमय, कामला, पाण्डुक।

यव, स पु (स) सित-ताङ्ग,-शूक, मध्य, दिव्य, अक्षत, धान्यराज, तुरगप्रिय, शक्तु, महेष्ट, पवित्रधान्यम्।

—क्षार, स पु (स) यवज, पाक्य, यवाग्रज।

यवन, स पु (स) यूनानवासिन् २ दे 'मुसलमान' ३ विदेशीय ४ म्लेच्छ ५. वेग ६ वेगवान् अश्व।

यवनानी, स स्त्री (स) १ २ यवन-यूनान, भाषा-लिपि (स्त्री)।

यवनारि, स पु (सं) कृष्ण, नन्दनन्दन, वासुदेव, मधुसूदन।

यवनिका, स स्त्री (स) जवनिका, अपटी, कांडपट २ तिरस्करिणी प्रतिसीरा, व्यवधानम्।
यवनी, स स्त्री (स) यवनभार्या २ यवन जातेर्नारी।
यवस, स स्त्री (स पु न) घास, शाद, तृणम् २ पल, पलाल धान्यतृणम्।
यवागू, स पु (स स्त्री) उष्णिका, श्राणा, विलेपी, तरला।
यश, स पु [स यशस (न)]ख्याति-कीर्ति विश्रुति प्रसिद्धि (स्त्री) श्लोक, विश्राव, अभिख्यान, समाख्या।
—गाना, मु प्रशस (भ्वा प से), श्लाघ (भ्वा आ से) २ कृतज्ञ (क्र उ अ), उपकार विद् (अ प से)।
यशस्वी, वि (स स्विन्) कीर्तिमत्, प्र वि, ख्यात लोकविश्रुत, सुयश यशोधर, कीर्तित, पुण्यश्लोक, प्रसिद्ध। [यशस्विनी (स्त्री) = कीर्तिमती, विरदाना इ]।
यष्टि, **यष्टिका**, स स्त्री (स) दंड, लगुड, यष्टी २ हारभेद।
यह, सव (स इह>) इदम् एतद्।
यहाँ, क्रि वि (सं इह) अत्र, अस्मिन देशे-स्थाने।
—तक, क्रि वि, एतद्-अत्र, पर्यंत-यावद्-अवधि-अनम्।
—वहाँ, क्रि वि, अत्र तत्र, इतस्तत, अत्रामुत्र।
—से, क्रि वि इत, अस्मात् स्थानात् २ अत इत, पर-ऊर्ध्व प्रभृति।
यही, क्रि वि (हि यह+ही) अयं इय इद एष एषा एतद्-एव।
यहीं, क्रि वि (हि-यहाँ+ही) इहैव, अत्रैव, अस्मिन्नेव स्थाने।
यहूदी, सं पु (इब्रानी, यहूद) यहूद-वासिन् भाषा लिपि (स्त्री)।
यों, क्रि वि, दे यहाँ'।
या, अव्य (फा) वा, अथवा यदा, (प्रश्न करने में) नु।
याकूत, स पु (अ) दे 'लाल' (रत्न)।
याग, स पुं (स) दे 'यज्ञ'।
याचक, सं पु (स) अर्थिन्, प्रार्थक २ भिक्षु, भिक्षुक।
याचना, सं स्त्री (सं) याचनं, याञ्चा, प्रार्थना। क्रि स, दे 'मांगना'।
याजक, स पु (सं) याजयितृ, पुरोहित।
याज्ञवल्क्य, सं पु (सं) वैशंपायनशिष्य, वाजसनेय २ जनकसभ्यो योगीश्वरयाज्ञवल्क्य ३ स्मृतिकारविशेष।
याज्ञिक, सं पु (स) यजमान, यष्टृ २ याजयितृ। वि, यज्ञि(ज्ञी)य, यागविषयक। [याज्ञिकी (स्त्री)]।
यातना, स स्त्री (स) पीडा-वेदना-व्यथा-अतिशय २ यमदण्डपीडा।
यातायात, स प (स न) गतागत, आयातनियात २ प्रेत्यभाव, पुनर्जन्मन् (न)।
यात्रा, स स्त्री (स) प्रस्थान, प्रयाण, व्रज्या, गम मन,प्रवस ,देश, भ्रमण पर्यटन, प्रस्थिति (स्त्री), अध्व मार्ग-गमन क्रमणम्।
—करना, क्रि अ, प्र या (अ प अ) प्रवस् (भ्वा प अ), देशे अट (भ्वा प से), यात्रा कृ।
यात्री, वि (स त्रिन) पथिक, पथिल, पाथ, अध्वग, अध्वय, पादविक, प्रवासिन, मार्गिक, यात्रिक, सारणिक २ तीर्थयात्रिन, कार्पटिक।
याद, स स्त्री (फा) धारणा, स्मृति-स्मरण शक्ति (स्त्री) २ स्मरणम्।
यादगार, स स्त्री (फा) स्मृतिचिह्न, स्मारकम्।
याददाश्त, स स्त्री (फा) स्मृति (स्त्री), धारणा २ स्मरण, स्मारक टिप्पणी।
यादव, स पु (स) यदुवंश्य, यदुवंशज २ श्रीकृष्ण। वि, यदुसंबंधिन्।
यान, स पु (स न) प्रवहणं, रथ स्यंदन, शताङ्ग, वाहनं, वहम्।
यानी-ने, अव्य (अ) अय आशय, एष भाव, इद तात्पर्यं, अर्थात्।
यापन, सं पुं (स न) कालक्षेप, समयातिवहनम्।
याबू, स पुं (फा) दे 'टट्टू'।
याम, सं पुं (सं) दे 'पहर' २ समय।
यामिनी, स स्त्री (सं) रात्रि, रजनी, निशा।
यार, सं पुं (फा) मित्र, सुहृद् (पु) २ उपपति, जार।
यारनी, सं स्त्री (फा यार) उपपत्नी, भुजिष्या २ प्रिया, दयिता।

याराना, सं पु } (फ़ा) मत्यं, मित्रता
यारी, स स्त्री } २ अधर्म्य अनुचित, प्रणय प्रेमन् (पु न), अनुराग ।
याल, स स्त्री (तु) दे 'अयाल'।
यावक, स पु (सं) सक्तु २ अलक्तक ।
यावज्जीवन, क्रि वि (स न) आ,-मरण मृत्यो, यावज्जन्म, यावज्जीवम् ।
यावत्, वि (स) दे 'जितना' २ समस्त, सकल (अव्य) पर्यन्तम्, आ-(समास मे वा पचमी युक्त)।
यावनी, स स्त्री (स) करकशालिनामक इक्षु, गुडतृणभेद, वि स्त्री यवन-सम्बन्धिनी ।
युक्त, वि (स) उचित, उपपन्न, योग्य, औपपत्तिक २ संश्लिष्ट, सहित, संलग्न, मिलित।
युक्ति, स स्त्री (स) उपाय, प्र,-योग -युक्ति (स्त्री) २ कौशल, चातुर्य ३ रीति (स्त्री), प्रथा ४ न्याय, नीति (स्त्री) ५ अनुमान, तर्क ६ हेतु, कारण ७ ऊहा, तर्क ८ योग, सश्लेष ।
—युक्त, वि (स) उचित, उपपन्न न्याय्य, यथार्थ।
युग, सं पुं (स न) द्वय, द्वितय, युग्म, युगल, युतक, यमक २ समय ३ सुदीर्घ कालपरिमाणविशेष, कृतादिकालचतुष्टय (दे 'कलियुग' आदि) ४ धुर् (स्त्री), धुर्वी, प्रासग, युग न ५ शार रि, खेलनी ६ एक कोष्ठस्थ शारद्वयम् ।
—युग, क्रि वि (स न) निरतरं, सदा, शाश्वत, नित्य, चिर, (सब अव्य)।
—धर्म, सं पु (सं) युगानुरूप,-कर्तव्य आचार ।
युगपत्, अव्य (स) सहैव, समकालम् ।
युगल, स पु (स) दे 'युग'(१)। २ दपती (द्वि) जपती ।
युगात, सं पुं (स) महाप्रलय, कल्पात २ सत्यादियुगविशेषस्य समाप्ति (स्त्री)।
युगातर, स पु (सं न) अन्य द्वितीय,-युग २. परिवर्तित समय ।
—उपस्थित करना, मु, सवथा परिवृत (प्रे) क्राति कृ ।
युग्म, सं पु (स न) दे 'युग' (१)।
युत, वि (स) युक्त, संलग्न, सहित, मिलित, सश्लिष्ट ।
युद्ध, स पुं (स न) संग्राम, आयोधन, जन्य, प्रधन, मृध, आस्कन्दन, समय, समर, रण, विग्रह, सप्रहार, अभिसपात, कलि, आहव, विदार, आजि (पु स्त्री) कलह, युध् (स्त्री)।
—काल, स पु (स) समर-सग्राम,-समय काल -वेला ।
—क्षेत्र, सं पु (स न) युद्ध रण-सगर, भू (स्त्री) भूमि (स्त्री)-क्षेत्रम्-अजिरम् ।
—विद्या, स स्त्री (स) रण-समर-सगर,-शास्त्र विज्ञानम् ।
—वीर, स पु (सं) भट, योध, शूर, योद्धृ ।
युधिष्ठिर, सं पु (स) पाडवराज, अजात-शत्रु, धर्मपुत्र, शल्यारि, अजमीढ ।
युरेनियम, स पु (अ) किरणधातु, वरु-णिकम् ।
युवक, सं पु (स) दे 'युवा'।
युवती, स स्त्री (स) युवति (स्त्री), तरुणी, यूनी, धनि(नी)का, मध्यमा,-मिका, वयस्था, वर्या, ईश्वरी, दृष्टरजस् (स्त्री), प्राप्तयौवना ।
युवराज, स पु (स) राज्याधिकारिन्, राज-कुमार ।
युवा, सं पु (स युवन्) तरुण, तलुन, वय-(य)स्थ ।
यूँ, अव्य, दे 'यों'।
यूका, स पु (स) यूक, केशकीट, स्वेदज, बालकृमि, पालीलि (स्त्री), षट्पद । दे 'जूँ' २ दे 'खटमल'।
यूथ, स पु (स न) कुल, वृद, गण, समज, सजातीयवस्तुसमूह २ सैन्य, दल -लम् ।
—पति, स पु (स) यूथ,-प नाथ २ दल-पति ।
यूनान, स पु (ग्रीक, आयोनिया) यूनन, यवनदेश ।
यूनानी, वि (हिं यूनान) यवनदेशसबधिन् । स्त्री, (१-२) यवनदेश यूनान, भाषा-चिकित्सा प्रणाली । स पु, यवनदेशीय, यूनानवासिन् ।
यूनिवर्सिटी, स स्त्री (अ) विश्वविद्यालय ।
यूप, स पु (स) यज्ञ-याग,-स्तभ २ वि,-जयस्तभ, कीर्तिस्तभ ।

यूरोप, स पु (अ युरोप) *यूरोप, महाद्वीप विशेष।

यूरोपियन, वि (अ) *यूरोपीय, यूरोप सम्बन्धि विषयक। स पु, यूरोपीय, यूरोप वासिन्।

यूष, स प (स पु न) जूष प, द्विदल क्वाथरस। दे शोरवा'।

ये, सव (हिं यह) इमे एते इदम एतद् के बहुवचन के रूप।

यों, अव्य (स एवमेव>) इत्थ, एव, अनेन प्रकारेण, एतया रीत्या।

—तो, क्रि वि प्राय, प्रायश, प्रायेण २ साधारण्येन, सामान्यत।

—ही, क्रि वि, एवमेव, इत्थमेव २ व्यर्थं, मुधा, निष्प्रयोजन ३ अकारण, अहेतुकम्।

—ही सही, क्रि वि, एवमस्तु, एव भवतु, तथास्तु।

योग, स पुं (स) चित्तवृत्तिनिरोध, मन स्थैर्यं २ दर्शनशास्त्रविशेष ३ मोक्षोपाय, मुक्तियुक्ति (स्त्री) ४ सधि, संग, स(समा)-गम, सहति (स्त्री), सयोग, सश्लेष ५ उपाय ६ औषध ७ धन ८ लाभ ९ शुभ मगल,-अवसर मुहूर्तं (र्त्तं) १० दूत, चर ११ वञ्चकद्रव्यं १२ चातुर्यं १३ वाहन १४ परिमाण १५ नियम १६ उपयुक्तता १७ सामाद्युपायचतुष्टय १८ वशीकरणोपाय १९ ध्यान, चिंतन २० सवध २१ धनोपार्जनवर्द्धने २२ सौहार्द २३ वैराग्य २४ संकलन, परिसख्या, पिन् यारण (गणित) २५ सौकर्य २६ तिथिवार नक्षत्रादीना स्थितिविशेष (ज्यो)।

—क्षेम, स पुं (स न) अनागतानयनागत रक्षणे (न द्वि), प्राप्तिरक्षणे। जीवननिर्वाह २ मगल ३ लाभ ४ राष्ट्रसुव्यवस्था ५ दायादेषु अविभाज्य वस्तु (न)।

—निद्रा, स स्त्री (स) योगसमाधि २ वीरगति (स्त्री)।

—फल, सं पुं (सं न) सङ्कल, पिंड, परिसख्या (गणित)।

—बल, सं पुं (सं न) तपोबलं, योग शक्ति (स्त्री)।

योगांग, सं पुं (सं न) योग,-साधनानि उपाया (पु) [यमनियमासनप्राणायाम प्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टावगानि।

योगांजन, स पु (स न) सिद्धाञ्जन, भूग भस्वपदार्थदर्शनक्षमञ्जनम् २ नेत्ररोगनाश काञ्जनम्।

योगाभ्यास, स पु (स न) योगानुष्ठान योगसाधनम्।

योगासन, स पु (स न) ध्यानासन, ध्यानासनम्।

योगिनी, स स्त्री (स) योगाभ्यासिनी तपस्विनी २ रण, पिशाची पिशाचिका।

योगी, स पु (स गिन्) योगाभ्यासिन, तपस्विन, तापस, यति मुनि, वैरागिन गिन्, सन्यासिन्।

योगीश्वर, सं पु (सं) योगीन्द्र, योगिराज।

योगेश्वर, सं पु (स) श्रीकृष्ण २ शिव ३ योगेन्द्र, सिद्ध, योगेश।

योग्य, वि (स) क्षम, शक्त, समर्थ, पात्र २ सुशील, श्रेष्ठ, ३ चतुर, दक्ष, निपुण ४ उचित, उपपन्न, युक्त।

योग्यता, स स्त्री (सं) क्षमता, सामर्थ्यं २ चातुर्य, नैपुण्य ३ औचित्य, युक्तता।

योग्या, स स्त्री (सं) युवती, तरुणी २ अभ्यास ३ शल्यक्रियाभ्यास।

योजक, वि (स) सयोजक, सम्मेलक सश्लेषक। सं पु डमरमध्यम, बृहद्भूखण्ड युग्मयोजकसूक्ष्मभूभाग।

योजन, स पुं (स न) (१-३) द्विचतु अष्ट,-क्रोशी ४ योग ५ सयोजनम्।

योजना, स स्त्री (सं) उपाय, कल्पना, प्रयोग, प्रयुक्ति (स्त्री) २ नियुक्ति (स्त्री) ३ रचना, विन्यास ४ व्यवस्था, आयोजनं।

योद्धा, योधा, } स पु (स योद्धृ) भट, योध, वीर, शूर सैनिक, आयुधिक, युद्ध शस्त्र उपजीविन्, अस्त्रशस्त्र धर भृत आजीव।

योनि, स स्त्री (स पु स्त्री) भग, वराँग, स्मरमंदिर, रतिगृहं, अधर, स्मरकूपक, कूप नाडी, गुह्यं उपस्थ, समरागार २ कारण ३ उद्गम, उद्भव, निगम ४ प्राणिजाति (स्त्री) ५ देह ६ गर्भ ७ जन्मन् (न) ८ गर्भाशय।

योनिज, वि (स) भगज, योनिसंभव। म पु, (स) जरायुज अण्डजो वा जीव।
योरोप, स पु, दे 'यूरोप'।
यौगिक, स पु (स) व्युत्पन्न, प्रकृतिप्रत्यय योगलभ्यार्थवाचक शब्द २ समस्तशब्द।
यौतक, स पु (स न) यौतुक, युतक, दे 'दहेज'।
यौवन, स पु (स न) तारुण्य, पूर्वं प्रथम नव-वयः (न)।
—काल, स पु (स) यौवन, दशा पदवी, तारुण्यावस्था।

र

र, देवनागरीवर्णमालाया सप्तविंशो व्यञ्जनवर्ण, रेफ, रकार।
रंक, वि (स) दरिद्र, निर्धन २ कृपण, कदर्य। स पु, भिक्षुक २ दरिद्र।
रंग, सं पु (स) राग, वर्ण २ वर्णक-का, लेप ३ नृत्यगीते (न द्वि), संगीत ४ नाट्य रंग-क्षेत्र, शाला-गृह-मंडप-स्थल-भूमि (स्त्री) ५ युद्ध-रण-क्षेत्र-भूमि ६ शरीरस्वग, वण ७ यौवन ८ सौंदर्य ९ प्रभाव १० कौतुक, क्रीडा ११ युद्ध १२ कामचार, छंद (पु) १३ आनंद १४ दशा १५ कांड, अद्भुत व्यापार १६ कृपा १७ अनुराग १८ प्रकार, रीति (स्त्री)।
—करना, क्रि स, दे 'रंगना'।
—चढना, क्रि अ, व 'रंगना' के कर्म के रूप।
—ढंग, स पु, आकार, रूप, २ दशा ३ आचार।
—दार, वि, रंजित, वर्णित, सराग, रागयुक्त, चित्रित।
—बिरंग-गा, वि, अनेक-बहु-नाना-रंग-वर्ण, चित्र, कर्बुर, शबल। २ विशिष्ट, अनेक-बहु नाना विध प्रकारक।
—भूमि, स स्त्री (स) उत्सव-स्थल-स्थान २ क्रीडा-कौतुक-स्थल ३ दे 'रंग' (४)।
—र(रे)लियाँ, स स्त्री, आमोदप्रमोद, परिहास, विनोद, लीला, हासिका, विहार, क्रीडा।
—रस, स पु, दे 'रंगरलियाँ'।
—रसिया, स पु, क्रीडाप्रिय, विलासिन्, विनोदिन, आनंदिन, हास्यशील।
—रूप, स पु (स न) आकार, आकृति (स्त्री), रूपम्।
—रेज, स पु (फा) रंजक, रंगाजीव। [स्त्री (स्त्री)-रंगनकार]।
—शाला, स स्त्री (स) दे 'रंग' (४)।
—साज, स पु (फा) रंजक, वर्णचारक, कृणु वर्णाट, तौलिक, तौलिकिक, रंगकार-जीवक आजीव २ रंग, निर्मातृ रंग चित्रकार।
—साजी, स स्त्री (फा) रंजन, वर्णन, रंजकता, तौलिकता।
—महल, स पु (स+अ) रंगभवन, प्रमोदप्रासाद।
—उडना या उतरना, मु, पाण्डुच्छाय (वि) जन् (दि आ से), विवर्णता प्रपद् (दि आ अ), मलिन-म्लान-मद, प्रभ-कांति द्युति जन्।
—जमाना या बाँधना, मु, स्वगौरव प्रतिष्ठा (प्रे प्रतिष्ठापयति), निजप्रतिष्ठा प्रसृ (प्रे)।
—पीला (फक, फीका या मंद) होना, मु, दे 'रंग उडना'।
—बदलना, मु, क्रुध् (दि प अ), कुप् (दि प से)।
—में भंग पडना, मु, आनंदोत्सव विघ्न (नम), रंगभंगो जन्।
—र(रे)लियाँ मनाना, मु, मुद् (भ्वा आ से), रम् (भ्वा आ अ), विहृ (भ्वा प अ), सद्-क्रीड विलस् (भ्वा प से)।
रंगत, सं स्त्री (स रंग >) दे 'रंग' (१६) २ आनंद, स्वाद ३ दशा, अवस्था।
—लाना, मु, परिवर्तनं जन् (प्रे), प्रभाव उत्पद् (प्रे)।
रँगना, क्रि स (स रंग >) रंज् (प्रे), चित्र-वर्ण (चु) २ दे 'मोहना' क्रि स (१) तथा क्रि अ (१)। सं पु, रंजन, चित्रण, वर्णनम्।
रंगने योग्य, वि रंजनीय, चित्रयितव्य, वर्णनीय।
रंगनेवाला, स पु, दे 'रंगरेज' तथा 'रंगसाज'।

रगरूट, सं पु (अ रिक्रूट) नवनूतन, सैनिक २ नव, नात्र-दीक्षित-शिष्य, शैक्ष।
रँगरेज़, स पु दे 'रंग' के नीचे।
रगवाई, स स्त्री (हिं रगवाना) रंजन वर्णन, भृति (स्त्री) भृत्या।
रगवाना, क्रि प्रे, व 'रगना' के प्रे रूप।
रगाई, स स्त्री (हिं रगना) दे 'रगवाई' २ दे 'रगना' स पुं।
रगा हुआ, वि, रचित, चित्रित, वर्णित, रागयुक्त।
रगी, वि (स गिन्) विनोदिन्, आनन्दिन्, उल्लासिन् २ सरग रंगयुक्त *३ रंजक, ४ अनुरक्त ५ अभिनेतृ।
रगीन, वि (फ़ा) दे 'रंगदार' २ विलासिन् आनंदित, विहारिन्, विनोदिन्, रसिक ३ चमत्कृत, अलंकृत (भाषा आदि)।
रगीनी, सं स्त्री (फ़ा) सरागता, सचित्रता २ शृगार, अलंक्रिया ३ अनुरागिता, कामुकता।
रगीला, वि (स रग >) दे 'रगीन' (२)। २ सुदर ३ अनुरागिन्, कामुक।
रगोपजीवी, सं पु (सं विन) नट, अभिनेतृ, शैलूष, भरतपुत्रक।
रच, रचक, वि (स न्यंच् >) अल्प, स्तोक।
रज, सं पु (फ़ा) शोक, परिताप, आर्ति (स्त्री)।
रजक, स पुं (सं) दे 'रंगसाज' (२) दे 'रंगरेज'। वि (सं) रंगकार, वर्णकारक २ आह्लादक, आनंदप्रद।
रजन, स पु (स न) चित्रण, वर्णन २ आह्लादन, परितोषणम्।
रंजित, वि (स) वर्णित, चित्रित, सराग २ आह्लादित, सहर्ष ३ अनुरक्त, आसक्त।
रंजिश, सं स्त्री (फ़ा) वैर, शत्रुता २ अप्रीति, राग, प्रसाद प्रीति, अभाव।
रंजीदगी, स स्त्री (फ़ा) दे 'रंजिश' (२)। २ शोक।
रंजीदा, वि (फ़ा) शोकग्रस्त, परितप्त २ विषण्ण, प्रसन्नताशून्य।
रंड, वि (स) धूर्त, वंचक २ विकल, निष्फल ३ छिन्न-विकल अंग। स पु (स) निरपत्य, निस्सन्तान २ निष्फल आम्र-वृक्ष।

रंडा, सं स्त्री (स) विधवा, गतभर्तृका, विश्वस्ता, कात्यायनी। स पु (प०) दे 'रँडुआ'।
रंडापा, स पु (स रंडा) वैधव्य, दे।
रंडी, स स्त्री [(प) विधवा सं रण्डा >] वेश्या भोग्या, गणिका।
—बाज़, स पु (हिं+फ़ा) वेश्यागणिकागामिन्।
—बाज़ी, स स्त्री (हिं+फ़ा) वेश्यागमनं, रम्भारमणम्।
रंडुआ या, स पुं (हिं रांड) मृतपत्नीक, गतभार्य, विधुर।
रंदा, स पु (फ़ा) तक्षणी, त्वक्षणी।
—फेरना, क्रि स, तक्षण्या समीकृ, श्लक्ष्णीकृ, तक्ष् (भ्वा स्वा प से)।
रंध्र, सं पु (स न) छिद्र, विवर, बिल २ योनि (स्त्री) ३ दोष।
रंबा, स पु (प) क्षुरप्र।
रंभा, सं स्त्री (स) कदली, दे 'केला' २ गोध्वनि ३ अप्सरोविशेष ४ वेश्या।
रंभाना, क्रि अ (स रंभण) रभ् रैभ (भ्वा आ से), मृदु नर्द (भ्वा प से)। स पु, रंभा, हंवा भा, रेभणम्।
रअय्यत, स स्त्री (अ) प्रजा २ कृषीवल।
रईस, स पु (अ) धनाढ्य, धनिक, श्रीश २ भूस्वामिन्, क्षेत्रपति।
रक़्बा, सं पुं (अ) क्षेत्रफलम्।
रक़म, सं स्त्री (अ) संख्या, परिमाण २ संपत्ति (स्त्री), धनं ३ प्रकार, विधा।
रकाब, सं स्त्री (फ़ा) (सादिन) पादाधार *पादधानं २ दे 'तश्तरी'।
—पर पैर रखना, मु, गंतु सज्जीभू।
रकाबी, सं स्त्री (फ़ा) दे 'तश्तरी'।
रकीब, सं पुं (अ) सपत्न, प्रत्यर्थिन् प्रतिस्पर्धिन्।
रक्त, सं पुं (सं न) दार्ग, शोणित, लो(रो)हित, लोह, रुधिर, अस्र, असृज् (न), क्षतज अंगज, स्वज, उर्मा २ कुंकुमं ३ ताम्र ४ सिंदूर ५ पद्मं ६ हिंगुलम्। वि, अनुरक्त, आसक्त २ रक्त-लोहित-वर्ण ३ रूपज, कामिन्, कामुक।
—कमल, सं पु (सं न) कोकनदं, रवि

प्रिय, रक्त-अरुण शोण, अभोज कमल पद्म वारिजम्।

—कोढ, स पु (स रक्तकोढ) रक्तकुष्ठ ह, विसर्प।

—चदन, स पु (स न) अर्क-कु शोणित क्षुद्र, चदन तिलपर्ण, रजन, ताम्रवृक्ष, लोहितम्।

—पात, स पु (स) रुधिर-रक्त, स्रवण स्राव क्षरण २ शोण-रक्त, पातन स्रवण ३ नर नृ, हत्या पात।

—पायी, वि (स -यिन) शोणप, रक्तप। स पु मत्कुण, दे 'खटमल'।

—पित्त, स पु (स न) रोगभेद २ दे 'नकसीर'।

—प्रदर, स पु (स) प्रदरभेद, नारीरोग भेद।

—प्रमेह, स पु (स) रक्तमेह, मूत्ररोगभेद।

—बहना, क्रि अ, रक्त स (भ्वा प अ)- क्षर (भ्वा प से)।

—बहाना, क्रि स, रक्त शोण पद स्रुमुच् (मे), सृ (प्रे), हन (अ प अ)।

—मोचन, स पु (स न) रक्त-मोक्षण मोक्ष, शोणितस्राव, दे 'फस्द'।

—लोचन, स पु (म) कपोत। वि, लोहितेक्षण।

—वर्ण, वि (स) अरुण, लोहित, शोण, रक्त।

—स्राव, स पु (स) रुधिरक्षरण, असृक् सृति (स्त्री)।

—हीन, वि (स) शोणशून्य, रुधिररहित २ निर्वीर्य, निस्तेजस्क।

रक्षक, स पु (स) शरण्य, शरण, प, पाल (समासांत में), रक्षित्, रक्षिन्, त्रात, पातृ, गोप्तृ २ प्रहरिन्, यामिक ३ पालक, सवर्द्धक, पोषक।

रक्षण, स पु (स न) परि, त्राण, गोपन, रक्षा, गुप्ति २ पालन, पोषण, सवर्द्धनम्।

रक्षणीय, वि (स) रक्ष्य, रक्षितव्य, त्रातव्य, गोपनीय २ पालनीय, पोषणीय।

रक्षा, स स्त्री, (स) दे 'रक्षण' (१)। २ कष्ट निवारक-यत्र, रक्षिका।

—करना, क्रि स, अव् गुप् रक्ष् (भ्वा प से), पा (अ प अ)।

—बधन, स पु (स न) श्रावणी, पर्वविशेष २ श्रावणपूर्णिमायांवेदस्वाध्यायोपाकर्मन्(न)।

रक्षित, वि (स) त्रात, त्राण, गुप्त, गोपायित, पात, ऊत, अवित २ प्रतिपालित, पोषित ३ स्थापित।

रखना, क्रि स (स रक्षण>) न्यस् (दि प से), निक्षिप् (तु प अ), निधा (जु उ अ), स्था (प्रे स्थापयति) २ रक्ष्-अव-गुप् (भ्वा प से), त्रै (भ्वा आ अ) ३ सचि (स्वा उ अ), सग्रह् (क्र उ से) ४ आधीकृ, उपनिधा (जु उ अ), न्यस ५ धृ (चु), भृ (जु उ अ) ६ आत्मसात्-स्वायत्तीकृ ७ (गौ आदि) अस (अ प) विद् (दि आ अ) वृत (भ्वा आ से) ८ नियुज (चु, रु प अ) ९ विलब् (प्रे), व्याक्षिप् (तु प अ) १० उपपतित्वेन उपपत्नीत्वेन वा स्वीकृ ११ अव्ययेन सचि। स पु, न्यसन, निक्षेपण, निधानं, स्थापन २ रक्षण, गोपनं, ३ सचयन, सग्रहण ४ आधीकरण, उपनिधान ५ धारण, भरण ६ आत्मसात्करण ७ नियोजन, ८ विलंबन इ।

रखनी, स स्त्री (हिं रखना) दे 'रखेली'।

रखने योग्य, वि, न्यसनीय, स्थापयितव्य, रक्षितव्य, सचेय, उपनिधेय, धार्य, नियोक्तव्य।

रखनेवाला, स पु, निधातृ, स्थापक, रक्षक, सचायक, उपनिधायक, धारक इ।

रखवाई, स स्त्री (हिं रखना) रक्षा, भृति (स्त्री) भृत्या।

रखवाना, क्रि प्रे, व 'रखना' के प्रे रूप।

रखवाला, स पु (हिं रखना) दे 'रक्षक' (१ २)।

रखवाली, स स्त्री (हिं रखवाला) दे 'रक्षण' (१)।

रखा हुआ, वि, न्यस्त, निहित, रक्षित, सचित, उपनिहित इ।

रखेली, स स्त्री (हिं रखना) उप, पत्नी भार्या कलत्रम्।

रग, स स्त्री (फा) धमनी, नाडी, रक्तवाहिनी, शिरा, ईल्का।

—में, मु, सर्वस्मिन्नपि शरीरे।

—से वाकिफ होना, मु, सम्यक्-सु ठु-साधु ज्ञा (क्र उ अ) परिचि (स्वा उ अ)।

—रेशा, म पु (फा) शरीर, अवयवा ङ्गानि (बहु) २ पत्र,पल्लव,नाड्य (स्त्री बहु)।

रगड़, स स्त्री (हिं रगड़ना) दे 'रगड़ना' में प । २ त्वग्भगहीनक्षुद्र,व्रण (प) ३ कलह, विवाद ४ ,विघ्न, परिश्रम प्रयास ।

—खाना या लगना, क्रि अ , दे 'रगड़ना' के कर्म के रूप।

रगड़ना, क्रि स (अनु) घृष्(भ्वा प स), मृद्(क् प से) २ चूर्ण् (चु), पिष् (रु प अ) ३ श्लक्ष्णीकृ, परिष्कृ ४ परि प्रमृज (अ प से प्रे), निन्(चु उ अ) ५ अभ्यस (दि प से), पुन पुन कृ ६ सवेग सपरिश्रम च सपद् (प्रे) अनुष्ठा, (भ्वा प अ) ७ पीड् (चु), सतप् (प्रे) ८ तड् (चु), आहन (अ प अ)। स पु, घषण, मर्दन २ चूर्णन, पेषण ३ श्लक्ष्णीकरण ४, परिमार्जन, प्रक्षालन, ५ अभ्यसन, आवृत्ति (स्त्री) ६ पीडन ७ ताडन ८ सवेग सपादन इ ।

रगड़ने योग्य, वि, घर्षणीय, मर्दनीय, पेषणीय इ ।

रगड़नेवाला, सं पु, घर्षक, मर्दक, पेषक इ ।

रगड़वाना, क्रि प्रे, व 'रगड़ना' के प्रे रूप।

रगड़ा, सं पुं (हिं रगड़ना) दे 'रगड़ना' सं पुं । २ अतिशय-अत्यत, परिश्रम उद्योग ३ चिरस्थायिकलह, नैत्यिकविवाद ।

—झगड़ा, सं पु (नित्य सतत) विवाद कलह कलि ।

—हुआ, वि, घर्षित, मर्दित, पिष्ट, अभ्यस्त।

रगड़ी, वि (हिं रगड़ा) विवादक, कलह कलि,प्रिय, विवादिन्।

रगबत, सं स्त्री (अ) कामना २ रुचि प्रवृत्ति (स्त्री)।

रगेदना, क्रि स (स खेद), अनुनुद (तु प अ), निर्‌अपधाव् (प्रे)।

रघु सं पु (सं) सूर्यवशी नृपविशेष, दिलीपसूनु ।

—नंदन, सं पुं (सं) रघुनाथ पति-राम चर-वीर, श्रीरामचंद्र ।

—वश, सं पुं (सं) रघुकुल २ महाकवि कालिदासप्रणीतो महाकाव्यविशेष ।

रचना[1], क्रि स (सं रचन) सृज् (तु प अ), निर्मा (अ प अ, जु आ अ), जन्‌-उत्पाद् (प्रे) २ क्लृप्‌-घट (प्रे), रच (चु), कृ ३ प्रणी (भ्वा प अ), निबध (क्‌ प अ) रच् (चु), लिख् (तु प से) ४ यथाविधि न्यस् (दि प से) स्था (प्रे) ५ परिष्कृ, अलकृ, भूष् (भ्वा प से, चु) ६ आयुज् (प्रे), मत्र (चु आ से)। स पु, दे 'रचना' स स्त्री (१ ३, ८ ९), परिष्करण, भूषण, आयोजनम्।

रचना[2], क्रि स (स रजन) दे 'रगना'। क्रि अ अनुरज् (कर्म), स्निह् (दि प से) २ व 'रगना' के कर्म के रूप।

रचना[3], स स्त्री (स) रचन, निर्माण, सर्जन, घटन, विधान, कल्पन, साधन, निष्पादन, उत्पादन,जनन २ ३ रचना निर्माण उत्पादन,कौशल-रीति (स्त्री) ४ रचित निर्मित, वस्तु (न) ५ गद्यमयी पद्यमयी वा कृति (स्त्री) ६ केशविन्यास ७ पुष्पगुफन ८ स्थापन ९ प्रणयन, नि प्रबन्धनम्।

रचने योग्य, वि, स्रष्टव्य, निर्मातव्य, रचनीय, प्रणेतव्य, यथाविधि, स्थापनीय इ ।

रचनेवाला, स पु, स्रष्टृ, निर्मातृ, जनयितृ, घटयितृ रचयितृ,प्रणेतृ,लेखक आयोजक इ ।

रचयिता, म पु (सं तृ) निर्मातृ, स्रष्टृ, विधातृ, उत्पादक २ लेखक, प्रणेतृ इ ।

रचवाना या रचाना, क्रि प्रे व 'रचना' के प्रे रूप।

रचा हुआ, वि, सृष्ट, निर्मित, जनित, रचित, घटित, प्रणीत, लिखित, परिष्कृत इ ।

रचित, वि (स) निर्मित, घटित, २ सृष्ट, जनित ३ लिखित, प्रणीत।

रज, सं पु [सं रजस (न)] पुष्प, कुसुम, आर्तव, ऋतु, रज (पु) २ प्रकृतेर्गुणविशेष, रज (पुं) ३ आकाश दर्श ४ पाप ५ जल ६ पराग, रेणु (पु स्त्री), पुष्पधूली (स्त्री) ७ भुवन, लोक । सं स्त्री, रजम् (न), धूली (स्त्री) २ रात्री ३ प्रकाश।

—का रुक जाना, सं पुं, रजोरोध २ रजो निवृत्ति (स्त्री)।

—की पीड़ा, सं स्त्री, ऋतुशूल, रज कृच्छ्रम्।

रजक, सं पु (सं) निर्णेजक, धावक, शौचेय, वर्मशील्क ।

रजकी, स स्त्री (स) रजका, निर्णेनिका, धाविका।
रजत, सं स्त्री (सं न) रूप्य दे 'चाँदी' २ सुवर्ण ३ गजदत ४ हार। वि, रजतमय २ शुक्ल।
—कुभ, स पु (सं) रूप्य-श्वेत-कुभ-घट कलश ।
—पात्र, सं पु (स न) रूप्य-श्वेत-सुवर्ण, पात्र भाजनम्।
रजनी, स स्त्री (स) निशा, रात्रि २ हरिद्रा ३ जतुका ४ नीली ५ लाक्षा।
—कर, स पुं (स) रजनी,-पति-नाथ, चद्र।
—चर, स पुं (सं) राक्षस, निशाचर।
—मुख, सं पुं (स न) साय, प्रदोष, दिनात।
रजवाड़ा, सं पु (हि राज+वाडा) देशीय राज्य २ नृप, राजन् (पु)।
रजस्, स पु स्त्री (सं न) दे 'रज' स पु स्त्री।
रजस्वला, स स्त्री (स) स्त्रीधर्मिणी, ऋतुमती, पुष्पवती, पुष्पिता, म्लाना, पांशुला।
रज़ा, स स्त्री (अ) इच्छा, काम २ समति (स्त्री), एकचित्तता, मतैक्य ३ अनुज्ञा, अनुमति (स्त्री)।
—मद, वि (फ़ा) सहायक,-मत-चित्त,समत।
—मदी, स स्त्री (फ़ा) दे 'रज़ा' (२ ३)।
रज़ाइस, रजायस, रजायसु, स स्त्री (स राजादेश >) आ-नि,-देश, नियोग, आज्ञा, शासनम् २ अनुमति-स्वीकृति (स्त्री)।
रज़ाई, स स्त्री (<सं रजन ?) *विपुल प्रच्छद, तूलाच्छादनम्।
रजिस्टर, स पुं (अ) पजिका, पजी।
रजिस्टर्ड, वि (अ) पञ्जीबद्ध।
रजिस्ट्रार, स पुं (अ) पजी पजिका,-लेखक।
रजिस्ट्री, स स्त्री (अ) पजीनिबधनम्।
—कराना, क्रि प्रे, राजकीयपजिकाया लिख (प्रे)।
—शुदा, वि, पजी-पजिकाकृत, लिखित।
रजिस्ट्रेशन, स पु (अ), पजी पजिका-करण लेखनम्।

रज़ील, वि (अ) अधम, नीच २ अन्त्यज।
रजोगुण, स पु (सं) दे 'रज' स पु (२)।
रजोदर्शन, स पु (स न) कन्याया प्रथम पुष्पस्राव।
रजोधर्म, स पु (स) दे 'रज' स पु (१)।
रज्जु, स स्त्री (स) दे 'रस्सी २ वेणी।
रट, स स्त्री (हि रटना) असकृत् उच्चार, आम्रेडनं, अभीक्ष्णं वचन, पौन पुन्येन पठनम्।
रटना, क्रि स (स रटन>) अभ्यस (दि प से), असकृत् आवृत् (प्रे) २ मुखस्थ हृदयस्थ-कठस्थ (वि) कृ, स्मरणार्थे पुन पुन उच्चर् (प्रे)-वद्-पठ (भ्वा प से)। क्रि अ, अभीक्ष्ण रण-क्वण् (भ्वा प से)। स पु, अभ्यसन, आवतन, आवृत्ति (स्त्री), कठे करण, हृदये धारण, पुन पुन उच्चारणम्।
रटने योग्य, वि, आवतनीय,स्मर्तव्य स्मरणार्ह।
रटनेवाला, स पु, अभ्यासिन्, आवर्तयितृ।
रटा हुआ, वि, अभ्यस्त, आवर्तित, कठे कृत।
रण, स पु (स पुं न) सग्राम, दे 'युद्ध'।
—क्षेत्र, स पु (सं न) रणागण-न युद्ध-रग, भूमि (स्त्री)-स्थल-क्षेत्रम्।
—छोड़, सं पु, श्रीकृष्ण।
—बाँकुरा, स पु (स+हिं) शूर, भट।
—रग, स पु (सं) युद्धोत्साह २ युद्ध ३ रणक्षेत्रम्।
—स्तंभ, सं पुं (स) विजय-स्तम्भ-यूप।
रत, वि (स) व्यापृत, मग्न, लग्न, लीन, आसक्त २ अनुरक्त, बद्धभाव।
रतजगा, स पु (हिं रात+जागना) रात्रि, जागरण-जागरा २ *नैशोत्सव।
रतनार, वि (स रत्न>) आ ईषद्,-रक्त लोहित।
रतालू, सं पु (सं रक्तालु) (=लाल शकरकद) रक्त पिंडक-पिंडालु, लोहित, लोहितालु, रक्तकद।
रति, स स्त्री (स) कामदेवकलत्र, मदनपत्नी २ मैथुन, सभोग, कामक्रीडा ३ अनुराग, प्रीति (स्त्री) ४ शोभा, सौन्दर्य, छवि (स्त्री) ५ सौभाग्य ६ स्थायिभावभेद ७ रहस्यम्।
—क्रिया, स स्त्री (सं) रति, केलि (स्त्री)-कलह-समर, मैथुनम्।

—गृह, स पु (स न) रति, मदनमंदिर २ योनि (स्त्री)।
—नाथ, स पु (स) रति,-कांत पति प्रिय राज रमण, कामदेव ।
—बंध, सं पुं (स) सुरतासनम्।
—शास्त्र, स पु (स न) कामशास्त्र, कोक शास्त्रम्।
रतौंधी, सं स्त्री (हिं रात+अंधा) निशांध तान्ध्यम्।
रत्ती, स स्त्री (सं रक्तिका) काक,निक्ता-वल्लरी पीलु-जया-चिंची, कृष्णला, दे 'गुंजा'। २ रक्तिकापरिमाणम्।
—भर, वि, अल्प, स्तोक, ईषत्।
रत्थी थी, स स्त्री (सं रथ) *विमान, शव, यान, पल्यक, दे 'अरथी'।
रत्न, स पु (स न) मणि (पु स्त्री), अश्मभेद २ स्वजातिश्रेष्ठ ३ माणिक्यम्।
—गर्भा, स स्त्री (सं) वसुंधरा, वसुधा।
—जटित, वि (स) मणि,-खचित-अनुविद्ध व रचित।
—दाम, स स्त्री [स-मन् (न)] मणिमाला।
—पारखी, स पु, रत्नपरीक्षक २ मणिकार, रत्नाजीविन्।
नौ—, स पुं, दे 'नवरत्न'।
रत्नाकर, स प (स) रत्नालय, समुद्र २ मणि खानि (स्त्री) गंजा ३ वाल्मीके प्रथमनामन् (न)।
रत्नावली, सं स्त्री (स) मणिमाला, रत्न दामन् (न)।
रथ, स पु (स) शताग, स्यदन, चक्र यानम्। (युद्ध का रथ) सांपरायिक, वैना यिक। (सैर का रथ) पुष्प-रथ। (यात्रा का) पारियानिक। २ शरीर ३ चरण-गम।
—कार, सं पुं (सं) रथ-स्यन्दन-चक्रयान, निर्मातृ-रचयितृ-कर्तृ। २ वर्णसंकरजातिभेद।
—चर्या, सं स्त्री (सं) रथ चक्रयान,-यात्रा व्रज्या गमनम्।
—पति, स पुं (स) रथिन्, रथिक, रथिर रथिर।
—यात्रा, सं स्त्री (स) आषाढशुक्लद्वितीयां यस्यां श्रीजगन्नाथस्य रथारोहणमहोत्सव।
—वीथि, सं स्त्री (स) रथ मुख्य प्रधान, मार्ग पथ।
—शाला, स स्त्री (सं) स्यन्दनागारम्।
—विद्या, स स्त्री (स) रथ,-शास्त्र विज्ञानम्।
—सूत, स पु (स) सारथि, रथवाह।
रथवान्, स पु (सं रथवत्) रथ,-वाह वाहक, सारथि, दे 'सारथी'।
रथांग, स पु (स न) चक्रम् २ मत्स्यभेद ३ कोक, चक्र, कामुक।
—पाणि, सं पु (स) चक्रपाणि, विष्णु।
रथी, स पु (सं रथिन्) रथिक, रथिन, रथिर रथ,-आरोहिन्-स्वामिन्, साराश। वि, रथस्थ, रथारूढ। २ रथस्थ-महा,-योध योद्धृ। ३ (स रथ) दे 'रत्थी'।
रद, रदन, } स पु (स) दंत, दे 'दाँत'।
—च्छद, —पुट, } स पु (सं) ओष्ठ, दे 'ओठ'।
रद्द, वि (अ) मोघ, निरर्थक २ मंद, निष्प्रभ, ३ निरस्त, खडित।
—करना, क्रि स, निरस् (दि प से), खंड (चु), निवृत् (प्रे)।
—बदल, स पु (अ+फ़ा) परिवर्तन, विपर्यय, परि(री)वर्त।
रद्दा, सं पु (देश) इष्टका-मृत्तिका,-स्तर।
—रखना या लगाना, क्रि स, भित्तिं चि (स्वा उ अ), स्तरं रच् (चु) निर्मा (जु आ अ)।
रद्दी, वि (अ रद्द) निरर्थक, अनुपयोगिन्। स स्त्री, निरर्थकपत्राणि (न बहु)।
रन(नि)वास, सं पु (हिं रानी+सं वास) अन्तःपुर, शुद्धान्त, अवरोध।
रपट¹, सं स्त्री (हिं रपटना) दे 'फिसलाहट' २ धावनं, सत्वरगमन ३ निम्नभू (स्त्री), प्रवणम्।
रपट², सं स्त्री (अं रिपोर्ट) सूचना, आख्या।
रपटना, क्रि अ (सं रपन) दे 'फिसलना'।
रफ़, वि (अं) चिक्कणताशून्य, दुःस्पर्श, विषम २ संस्कार परिष्कार शून्य।
रफ़ा, वि (अ) अपसारित, दूरीकृत २ निवारित, शमित, शांत ३ समान, पूर्ण।
रफ़ू, सं पु (अ) -जुभिन्न तन्तुपूरणम्।

—करना, क्रि स, वस्त्रछिद्र ततुभि पूर(तु)। मु, स्वविरोधिवचनेपु सामजस्य द्रश (प्रे)।
—गार, म पु (फा) वस्त्रछिद्रपूरक।
—चक्कर होना, मु, पलाय् (भ्वा आ से), अपधाव (भ्वा प से)।
रफ्तार, स स्त्री (फा) गति (स्त्री) २ वेग, जव।
रफ्ता रफ्ता, क्रि वि. (फा) शनै शनै (अव्य) २ क्रमश (अव+)।
रब, स पु (अ) परमेश्वर, जगदीश।
रबड[1], स पु (अ रबर) *घर्षक, घृषि(न)- वृक्षनिर्यासभेद २ वटजातीयो वृक्षभेद, *घपक।
रबड[2], स स्त्री (हिं रगड) व्यर्थ,-श्रम प्रयास २ दूरता, विप्रकर्षे।
रबडना, क्रि स (हिं रपटना) तरलद्रव्य परि भ्रम्-चल (प्रे)। श्रम् क्लम् (प्रे), मुधा धाव (प्रे), आयस खिद् (प्रे)। क्रि अ, वृथा भ्रम् (भ्वा प से)-परिश्रम् (दि प से), आयस (भ्वा दि प से)।
रबडी, म स्त्री (हिं रबडना) किलाटिका, क्षीरेयम्।
रबाब, स पु (अ) वाद्यभेद, *रवापम्।
रबाबिया, रबाबी, स पु (अ रबाब) रबापवादक।
रब्त, स पु (अ) अभ्यास २ सबंध।
—ज़ब्त, स पु, गाढसौहृद, सुपरिचय।
रब्बी की फ़सल, स स्त्री (अ) चैत्रशस्यम्।
रमण, स पु (स न) क्रीडा, विलास, विहरण, विहार, केलि (पु स्त्री), खेला, लीला २ मैथुन, रति (स्त्री) ३ भ्रमण, पर्यटन ४ जघनम्। (स पु) पति २ कामदेव। वि, मनोहर २ प्रिय, आनदप्रद ३ क्रीडापर।
रमणी, स स्त्री (स) नारी २ सुन्दरी, वरवर्णिनी, वामा।
रमणीक, वि (सं रमणीय) मनोज्ञ, मनोहर, दे 'सुन्दर'।
रमणीय, वि (स) सुरूप, शोभन, दे 'सुन्दर'।
रमणीयता, सं स्त्री (स) सुरुचि (स्त्री), मनोहरता, दे 'सुन्दरता'।
रमता, वि (हिं रमना) स्थिरत विहरव भ्रमत् (शतृ)।
रमना, क्रि अ (स रमणं) रम् (भ्वा आ अ) नद क्रीड् (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से) २ सुखोपलब्धये वस् स्था (भ्वा प अ) ३ विह (भ्वा प अ), पर्यट् (भ्वा प से) ४ व्याप (स्वा प अ), व्यश् (स्वा आ से) ५ अनुरज् (कर्म), स्निह् (दि प से, सप्तमी के साथ) ६ कामक्रीडा कृ सुरत आतन् (त प से.)। स पु रमण, नदन, क्रीडन, क्रीडा, मोद, सुखाय वसन, विहरण, विचरण, व्यापन, व्यशन, अनुराग, निधुवन द।
रमा, म, स्त्री (स) दे 'लक्ष्मी'।
—पति, स पु (स) विष्णु।
रम्ज़, सं स्त्री (अ) (नेत्रादिभि) संकेत, इगितम् २ रहस्य, गुह्य, कूप्म ३ आशय, अभिप्राय।
रम्माल, स पु (स) दैवज्ञ, ज्योतिषिक।
रम्य, वि (स) दे 'रमणीय'।
रम्या, स स्त्री (स) स्थलपद्मिनी २ रजनी ३ गगा ४ निर्गुण्डी, इन्द्राणी।
रम्हाना, क्रि अ (स रभण) दे 'रंभाना'।
रय्यत, स स्त्री (अ रअय्यत) दे 'प्रजा'।
रव, सं पु (सं) शब्द, नि,नाद, ध्वनि, वि,रव राव २ कलकल, कोलाहल, उत्क्रोश।
रवाँ, वि (फा) प्रवहत् प्रस्रवत् प्रचलत् (शतृन) २ अभ्यस्त ३ निशित, तीक्ष्ण (शस्त्रादि) ४ प्रस्थित।
रवा[1], सं पु (स रज) कण, लव, अणु, लेश २ दे 'सूजी'।
रवा, वि (फा) उचित, युक्त २ प्रचलित, विद्यमान।
रवाज, स पु (अ) दे 'रिवाज'।
रवानगी, स स्त्री (फा) प्रस्थान, प्रयाणम्।
रवाना वि (फा) प्रस्थित, प्रचलित २ प्रेषित, प्रहित।
—करना, क्रि स, प्रस्था (प्रे प्रस्थापयति), प्रहि (स्वा प अ), स, प्रेष् (प्रे), प्रचल् (प्रे)।
—होना, क्रि अ, प्रस्था (भ्वा आ अ), अप, स-गम् (भ्वा प अ), प्रया (अ प अ)।
रवानी, म स्त्री (फा) प्रवाह, प्रगति (स्त्री)।

रवायत, स स्त्री (अ) कथा २ लोकोक्ति (स्त्री)।
रवि, स पु (स) अर्क भानु, दे 'सूर्य'।
—वार, स पु (स) आदित्य-वार वासर ।
रवैया, सं पु (फ़ा रविश) आचार, आचरण, चेष्टित, वृत्ति (स्त्री), व्यवहार ।
रशना, स स्त्री (सं) काञ्ची, दे 'मखला' (१) २ जिह्वा ३ रज्जु (स्त्री)।
रश्क, स पु (फ़ा) ईर्ष्या, मात्सर्यम्।
रश्मि, सं स्त्री (स पु) किरण २ अश्वरज्जु (स्त्री) ३ पक्ष्मन्-वपु (न)।
रस, सं पुं (स) आ-स्वाद २ षट् इति संख्या ३ शरीरस्थधातुविशेष, रसिका चम रक्त-सार, तेज-अग्नि-आहार-सम्भव ४ तत्त्व, सार ५ काव्यनाटकानुभवन श्रृङ्गारादिदश विधो मानसानन्दभेद (काव्य) ६ 'नव' इति संख्या ७ आनन्द, सुख, आह्लाद, प्रमोद ८ अनुराग ९ रति (स्त्री), सुरत १० उत्साह, औत्सुक्य ११ गुण १२ द्रव, सार, रस, आसव, नियास, सत्त्व १३ जल, १४ मू(जू)ष प १५ द 'शरबत' १६, वीर्य १७ विष १८ पारद १९ दे 'शिंगरफ़' २० धातुभस्मन् (न) २१ आनन्दरूप ब्रह्मन् (न) २२ २३ गधशिला-रस २४ प्रकार, रूपं २५ चित्ततरंग, छन्द ।
—चूना या टपकना, कि अ, रस क्षरश निस्यन्द (भ्वा आ स)-स्रु (भ्वा प अ)।
—लेना, क्रि अ, नन्द (भ्वा प से), मुद् (भ्वा आ से)।
—कपूर, स पु (म रसकपूर) कर्पूररस ।
—गुल्ला, सं पुं, *रसगोल ।
—भरा, वि, रस-पूर्ण-मय-युक्त-वत्, सरस रसिन्।
—भरी, स स्त्री, *रसवदरी।
—पति, सं पु (सं) चन्द्र २ नृप ३ पारद, *रसराज ४ शृंगाररस रसराज ।
—सिंदूर, स पु (स न) सिंदूररस ।
रसज्ञ, स पु (सं) रसस्वाद, विद्-ज्ञ २ काव्यमर्मज्ञ, काव्यालोचक ३ निपुण, कुशल ४ अनुरागिन्, रसिक, प्रेमिन् ५ गुणग्राहक ६ रसवैद्य ७ रसायनविद् (पु)
रसद[1], वि (सं) सुखद, आनंदप्रद, २ स्वादु, सुरस। स पुं (सं) चिकित्सक वैद्य, भिषज्।
रसद[2], स स्त्री (फा) अन्नसामग्री भक्ष्यजातम्।
रसना[1], स स्त्री (स) रसा, जिह्वा, रसज्ञा, लोला, रसनेन्द्रिय २ काञ्ची, मेखला ३ रज्जु (स्त्री) ४ अभीशु पु, वल्गा।
रसना[2], क्रि अ, दे 'रिसना'।
रसनीय, वि (स) आस्वाद्य, चषणीय २ स्वादु, रुच्य, रुचिकर।
रसनेन्द्रिय, स स्त्री (स न) जिह्वा, रसा, लोला, रसज्ञा।
रसम, सं स्त्री (अ रस्म) प्रथा, परिपाटी-टि (स्त्री), रीति (स्त्री)।
रसा[1], स स्त्री (स) पृथिवी २ जिह्वा, रसना ३ पाठा ४ रास्ना, एलापर्णी ५ द्राक्षा ६ नदी ७ रसातलम्।
—पति, सं पु (स) नृप, भूप ।
—पायी, वि (सं-यिन्) जिह्वापायिन्। स पु, श्वन्, कुक्कुर, सारमेय ।
रसा[2], स पु (स रस >) मू(जू)ष प*रस-, दे 'शोरबा'।
रसाई, स स्त्री (फ़ा) दे 'पहुँच'।
रसांजन, सं पु (स न) दे 'रसौत'।
रसातल, सं पु (स न) पाताल २ पाताल विशेष ।
रसायन, स पु (स न) जराव्याधिनाश कौषध २ तक्र ३ विषं ४ रस विद्या शास्त्र सिद्धि (स्त्री) ५ रसायनशास्त्र, दे 'कैमिस्ट्री' ६ धातुविद्या।
—बनाना, मु, (क्षुद्रधातून्) सुवर्णरूपेण परि णम् (प्रे) अथवा सुवर्णीकृ।
—शास्त्र, सं पु (सं) दे 'कैमिस्ट्री'।
रसाल, स पुं (स) इक्षु, दे 'गन्ना' २ आम्र । वि, स्वादु, सुस्वाद २ सरस ३ मधुर ४ सुंदर।
रसिक, सं पुं (सं) रसास्वादिन्, स्वाद ग्राहिन् २ प्रणयिन्, अनुरागिन्, कामुक ३ सहृदय, भावुक, काव्यमर्मज्ञ ४ आनं दिन्, विनोदिन् ५ भक्त, प्रेमिन्।
रसिकता, सं स्त्री (सं) विनोदित्व, परि हासप्रियता २ सहृदयता, भावुकता ३ कामु कता, विलासिता।
रसिया, सं पुं, दे 'रसिक'।
रसीद, सं स्त्री (फ़ा) प्राप्ति-उपलब्धि (स्त्री) २ *प्राप्तिपत्रम्।

—बुक, म स्त्री (फ़ा + अ) प्राप्तपत्रपञ्जिका।
रसीला, वि (स रस >) दे 'रसभरा'।
रसूल, स पु (अ) ईशदूत।
रसेंद्र, स पु (स) पारद, दे 'पारा'।
रसोइया, स स्त्रा (हिं रसोई) पाचक, सूद सूपकार, बल्लव, आरालिक, आंधसिक, औदनिक, रन्धक।
रसोई, स स्त्री (स रसवती) पाकशाला, महानस २ सिद्धान्न, पक्वाहार., भोजनम्।
—घर, स पु, दे 'रसोई' (१)।
—दार, स पु, दे 'रसोइया'।
कच्चा—, स स्त्री (घृतादिपु) *अपक्वभोजनम्।
पक्की—, स स्त्री, (घृता दपु) *पक्वभोजनम्।
रसौत, स स्त्री (स रसोद्भूत) रसाञ्जन, रसगर्भ, कुलक, बाल्भैषज्य, वर्याञ्जनम्।
रस्सा, स पु (हिं रस्सी) स्थूलसदान, बृहद्रज्जु (स्त्री), स्थूलरश्मि।
रस्सी, स स्त्री [स रश्मि (पु)] रज्जु (स्त्री), गुण, दामन् (न), वराट, शुल्वा, वर्गी, रश(स)ना।
रहँट, स पु, दे 'अरहट'।
रहटा, स पु, दे 'चरखा'।
रहते, क्रि वि (हिं रहना) उपस्थितौ, विद्यमानतायां, जीवने (सब सप्तमी एक)।
रहन¹, स स्त्री (हिं रहना) वास, वसन, वसनी-ति (स), वस्ति (स्त्री), स्थिति (स्त्री) २ आचार, व्यवहार, चरित, वर्तन, वृत्ति (स्त्री)।
—सहन, स स्त्री दे 'रहन' (२)।
रहन², स स्त्री (हिं रखना) आधानं, दे 'गिरवी'।
रहना, क्रि अ (स रहन >) अधि-नि प्रति, वस (भ्वा प अ) २ अवस्था (भ्वा आ अ), वृत् (भ्वा आ से), स्था (भ्वा प अ) ३ जीव (भ्वा प से) प्राणान् धृ (चु) ४ विरम् (भ्वा प अ), विश्रम् (दि प से) ५ अव उद् परि, शिष् (कम) ६ उज्जि-त्यज् (कर्म) ७ विद् (दि आ अ), उपस्था (भ्वा प अ) ८ सुधा वार्ल या (प्रे)। सं पु, अधि-नि प्रति, वसन वसती ति (स्त्री), अवस्थान, अवस्थिति (स्त्री), जीवन, प्राणधारणं, अवशिष्टता, त्याग, उपस्थिति (स्त्री)।
रहने योग्य, वि, निवसनीय, वासार्ह।
रहनेवाला, स पु., नि, वासिन्,-स्थ,-वर्तिन्, (तद्धित प्रत्यय से भी, व, भारतीया, पाचनदा)।
रह रह के, मु, पुन पुन, भूयो भूय, पौन पुन्येन, वार वारम्।
रहम¹, स पु (अ) कृपा, दया, करुणा, अनुकंपा।
—दिल, वि, कृपालु, सकरुण।
रहम, स पु (अ रहम) गर्भाशय, दे.।
रहमत, स स्त्री (अ) कृपा, अनुग्रह।
रहमान, वि (अ) अतिशय-परम, कृपालु-दयालु। स पु, परमेश्वर।
रहस्य, वि (स) गोप्य, गोपनीय, गुह्य २ गुप्त, गूढ, प्रच्छन्न। स पु (सं न) गुह्य, गोप्य, मर्मन, गूढ,-मंत्र, वार्ता।
रहा-सहा, वि, 'बचाखुचा'।
रहा हुआ, वि, उषित, अव, स्थित, अव-उद परि, शिष्ट, उपस्थित इ।
रहाइश, स स्त्री (हिं रहना) वसती-तिः (स्त्री), वास, अवस्थान, अवस्थिति (स्त्री)।
रहित, वि (स) हीन, विरहित, वर्जित, शून्य, वियुक्त, विनाभूत।
रहीम, वि (अ) दयालु। स पु, ईश्वर।
राँग, गा, स पु (म रग-ग) वग, त्रपु, त्रपुष, पूतिगध, कुरूप्य, मधुर, हिम, पिच्चटम्।
राँड, वि (स रडा) विधवा दे। २ वेश्या।
राँधना, क्रि स (स रधन) दे 'पकाना'।
राँपी, स स्त्री (देश) चर्मकारछुरिका, *चर्मकर्तनी।
राँभना, क्रि अ, दे 'रंभाना'।
राई, स स्त्री (स राजी) रक्तसर्षप राजिका, आसुरी, क्षव, क्षवक, क्षुतक। दे 'सरसों' के भेद २ अत्यल्प,-मात्रा-परिमाणम्।
—नोन उतारना, मु राजीलवणधूमेन कुदृष्टि प्रभाव नश (प्रे)।
—भर, मु, तिल अणु-लेश-राजी,-मात्र, अत्यल्पम्।
—से पर्वत करना, मु, अणुमपि पर्वतीकृ, तिलं ताल पश्यति, अत्युक्त्या वर्ण् (चु)।
राईफल, स स्त्री (अ) कुक्षिभृतास्त्र, नाल्न अस्त्रभेद।

राका, स स्त्री (स) सपूर्णचद्रा, पौर्णमासी २ पूर्णिमा, पूर्णा, पूर्णमासी।
राकेश, स पु (स) राकापति, चद्र।
राक्षस, स पु (स) निशा रजनी रात्रि नक्त, चर, क्रव्याद -द् (पु), रक्षस (न), पलाश शिन, भूत, क्षपाट, सन्ध्याबल, यातु, यातुधान, अस्र-कौण, प, कर्बुर, दैत्य, असुर दानव २ दुष्टप्राणिन, पाप ३ विवाहभेद (धर्म)।
—विवाह, सं पुं (स) विवाहभेद, युद्धेन कन्यां प्राप्य विवाह।
राक्षसी, स स्त्री (सं) पिशाची, निशाचरी, दानवी। वि, राक्षस दानव, उचित-योग्य, अमानुषिक।
राख, स स्त्री (स रक्ष>) भस्मन्, भस्मन् (न), भूति (स्त्री)।
राखी, स स्त्री (स रक्षा>) दे 'रक्षाबंधन' २ दे. 'राख'।
राग, सं पु (स) अभिमतविषयाभिलाष, सुखैषणा २ क्लेश, कष्ट ३ मात्सर्य, ईर्ष्या ४ प्रीति (स्त्री), अनुराग ५ अंगराग ६ लोहित, रग-वर्ण ७ रजन, आह्लादन ८ कथा ९ सगीतशास्त्रीयराग (भैरवादि)।
—रग, सं पु (सं) विनोद, विलास क्रीडा कौतुक, संगीत, रजनम्।
अपना—अलापना, मु, (परविचारान् अश्रुत्वा) स्वकीयानेव विचारान् सरभस श्रु (प्रे)।
रागान्वित, वि (स) अनुरक्त, आसक्त, सकाम २ कुपित, क्रुद्ध।
रागिनी, सं स्त्री (सं रागिणी) रागपत्नी (भैरवी, गुर्जरी आदि) २ विदग्धा नारी।
रागी, स पु (सं गिन्) रागविद् (पु), गायक, गातृ ३ अनु-रागिन्-रक्त, प्रेमिन्। वि, रजित, सराग २ लोहित-रक्त,-वर्ण ३ विषयासक्त, भोगिन्।
राघव, सं पुं (स) रघुवंश्य २ अज ३ दशरथ ४ श्रीरामचंद्र।
राछ, स पु (स रक्ष>) (शिल्पिना) उपकरण, साधन, यत्र २ वरयात्रा ३ दे 'जलूस' ४ चर्मपेषणी,-कीलक।
राज, सं पु (स राज्य) शासन, शिष्टि (स्त्री), देश प्रबंध व्यवस्था, प्रजापालन, आधिपत्य १ जनपद, नीवृत् (पुं), राष्ट्र, देश, राज्य, विषय, उपवर्तन ३ अधिकार, आधिपत्य ४ शासन-राजत्व-राज्य,-काल। स पु (स राजन्) नृप २ 'मिमार'।
—करना, क्रि स, प्र, शास (अ प से), ईश् (अ आ से) अधिष्ठा (भ्वा प अ), परि पा (प्रे, पालयति), तन् (तु आ स)।
—कर, सं पुं (स) राज, स्व राजि शुल्क (क) धनम्।
—काज, स पु (स कार्य) शासन, व्यवस्था कृत्यम्।
—कुमार, स पु (सं) राज, पुत्र-सुत, -सूनु।
—कुमारी, स स्त्री (स) राज नृप,-कन्या सुता पुत्री।
—कुल, स पु (स न) राज-नृप,-वंश अन्वय।
—गद्दी, स स्त्री, नृपासन, राजसिंहासन २ राज्य, अभिषेक, राजतिलक म्।
—गीर, स पु, दे 'मिमार'।
—गुरु, सं पु (स) राज, शिक्षक पुरोहित।
—गृह, सं पु (स न) नृप-राज, प्रासाद भवन मंदिर सदन, सौध, सुधामय २ मगध प्रांतस्य प्राचीनराजधानी।
—तिलक, स पु (स पु न) दे 'राजगद्दी' २ अभिषेकोत्सव।
—दंड, स पुं (स) राज शासन, प्रजापालन २ राज्यनियमविहित आर्थिक-शारीरिक,-दंड ३ दे 'राजकर'।
—दंत, स पु (सं) पुरोवर्तिदंतचतुष्कं २ उपरिश्रेणीमध्यवर्तिदन्तद्वयम्।
—दरबार, सं पुं, दे 'राजसभा'।
—दूत, स पु (स) नृप,-वार्तिक -सादेशिक।
—द्रोह, स पु (स) नृपविरोध, राजविप्लव, प्रजाक्षोभ।
—द्रोही, स पु (सं हिन्) नृपविरोधिन्।
—धानी, स स्त्री (सं) नृपनगरी।
—नीति, स स्त्री (स) नृप-राज, नय विद्या, शासनरीति (स्त्री) (सधिविग्रहसामदानादि)।
—नैतिक, वि (सं) राजशासनविषयक तत्त्वसंबंधिन।
—पथ, सं पु (सं) राज, मार्ग वर्त्मन् (न), महा-पंथ श्री, पथ।
—पाट, स पुं, (सं) राजसिंहासनं २ शासनाधिकार ३ जनपद, राष्ट्रम्।

—पुत्र, स पुं (स) राजकुमार २ क्षत्रिय जाति भेद ३ बुधग्रह ।

—पूत, स पुं (स राजपुत्र >) क्षत्रियजाति भेद , *राजपुत्र ।

—पूती, स स्त्री (हिं राजपूत) शौर्यं, वीर्यम् ।

—फोड़ा, स पुं *राजस्फोट , *स्फोटराज , दे 'कारबंकल' ।

—बाहा, स पु , राज महा-कुल्या ।

—भंडार, स पु (स भाण्डार) राज-राज्य,- कोष (श)-भांडागार (रम्) ।

—भक्त, स पु (स) राज्य-राज, भक्त निष्ठ ।

—भक्ति, स स्त्री (स) राज्य-राज, भक्ति (स्त्री)-निष्ठा ।

—भवन, —मंदिर, } स पु (स न) दे राजगृह'(१) ।

—मज़दूर, स पु , पल्गंडकार्मिका , गेहकार कर्मकारा (प्राय बहु) ।

—महल, स पु, दे 'राजगृह' (१) ।

—मार्ग, स पु (स) दे 'राजपथ' ।

—माष, स पु (स) बबर-टी, नील-नृप, माष , नृपोचित ।

—मुद्ग, स पु (स) मुकुष्ठ , दे 'मोठ' ।

—यक्ष्मा, स पु (सं-क्ष्मन) राजयक्ष्म , दे 'यक्ष्मा' ।

—योग, सं पु (स) अष्टांगयोग ।

—राजेश्वर, स पु (स) सम्राट् (पु), राजाधिराज ।

—रोग, स पु (स >) असाध्यव्याधि २ दे 'यक्ष्मा' ।

—लक्षण, स पु (सं न) सद्गुण राजचिह्न (सामुद्रिक) ।

—लक्ष्मी, स स्त्री (स) राजश्री (स्त्री), २ नृपच्छवि (स्त्री), नृपवैभवम् ।

—वशी, वि (स राजवंश >) राजवंश्य, नृपकुलोद्भूत, राजकुलज ।

—सत्ता, स स्त्री (स) राज ,शक्तिः-अधिकार (स्त्री), राजनीत्वम् ।

—सभा, स स्त्री (स) राज-परिषद्-संसद् (दोनों स्त्री) २ नृपतिसमाज ।

—हस, स पु (सं) मराल २ कलहंस , कदंब ३ नृपोत्तम ।

राज़, सं पुं (फ़ा) रहस्य, गुह्य, गोप्यम् ।

राजकीय, वि (स) राज नृप ,राज्य राज्य, विषयक २ नृपोचित, राजार्ह ।

राजत, वि (स) रौप्य -रूप्य -मय, रूप्यमय योग्य, रजत,-मय निर्मित-कृत ।

राजत्व, स पु (स न) राजता, नृपत्व राज अधिकार आधिपत्यम् ।

राजस, वि (स) रजोगुण,-उद्भूत जनित- प्रधान-मय (राजसी स्त्री) ।

राजसिक, वि , दे० 'राजस' ।

राजसी, वि (स राजस>) राज,-योग्य-अर्ह, नृपोचित, राजकीय ।

राजसूय, स पु (स) नृपाध्वर , क्रतु,-राज उत्तम ।

राजस्व, स पु (स पु न) राज,धन कर बलि ।

राजा, स पु (स राजन) नृप , भूप , पार्थिव , नर-नृ भू-मही, पाल पति , क्ष्मा-मही भू भृत् (पु) , पार्थ , महींद्र, नरेंद्र , प्रजेश्वर , भूमिप , दण्डधर , अवनि,-प-पति, इन., भूभुज् (पु) राज् (पु), महीक्षित् (पु), नाभि , अश्वपति , प्रभु २ स्वामिन , अधि पति ३ उपाधिभेद ४ धनाढ्य ।

राजाज्ञा, स स्त्री (स) नृपादेश , राजशा सनम् ।

राजाधिकारी, स पु (स -रिन) राज,-नियो गिन भृत्य -कर्मकर पुरुष २ न्यायाधीश , धर्माध्यक्ष ।

राजाधिराज, स पु (स) राजराजेश्वर , सम्राज (पु) ।

राजाधिष्ठान, सं पु (स न) राजधानी, नृपनगरी, राजपुरम् ।

राजानक, स पु (सं ?) राजक , साधारण, नृप भूप पार्थिव , सामंत ।

राजाभियोग, स पु (स) प्रजया बलात् कायकारणम्, दे 'बेगार' ।

राजिका, स स्त्री (स) श्रेणी, पंक्ति (स्त्री) २ रेखा ३ दे 'राई' ।

राजी, स स्त्री (स) दे 'राजि' ।

राज़ी, वि (अ) एक-सह-स,-मत-चित्त २ स्वस्थ ३ प्रसन्न ४ सुखिन् ।

—करना, क्रि स , प्रसद् (प्रे), स-परि तुष (प्रे), प्री (क्र्‌ उ अ) ।

—होना, क्रि अ, प्रसद् (भ्वा प अ) स-परि तुष् (दि प अ) प्री (कर्म.)।
—नामा, स पु (अ+फा) समाधान २ समाधानपत्रम्।
राजीव, स पु (स न) नीलकमल २ पद्म, सरोज, कमलम्।
राजेन्द्र, स पु (सं) दे 'राजाधिराज'।
राज्ञी, स स्त्री (स) राजपत्नी, दे 'रानी'।
राज्य, स पु (स न) दे 'राज' (१२)।
—च्युत, वि (स) राज्यभ्रष्ट, सिंहासनच्युत।
—च्युति, स स्त्री (स) राज्य, भ्रश भग, सिंहासनावरोपणम्।
—तन्त्र, सं पु (स न) शासन,-प्रणाली-व्यवस्था।
—पाल, स पु (सं) राज्यप्रदेशप्रान्त, शासक। (प्रादेशिक शासन का सर्वोच्च प्रबन्धक)।
—लक्ष्मी, सं स्त्री (स) दे 'राजलक्ष्मी'।
—व्यवस्था, स स्त्री (सं) राज्य,-नियम-व्यवस्था।
राज्याभिषेक, सं पु (सं) राज्य-सिंहासन, आरोहण, राजतिलक कं २ सिंहासनारोहणे राजसूये वा नृपस्नानविशेष।
राणा, सं पु (सं राजन्) राजपुत्रनृपाणा उपाधि।
रात, सं स्त्री [स रात्रीति (स्त्री)] रा(श)र्वरी निशा निशीथिनी त्रियामा, क्षणदा, क्षपा, विभावरी, रजनी यामिनी तमी, तम स्विनी श्यामा, घोरा, नक्त, दोषा।
—दिन, क्रि वि, नक्तदिनं, नक्तदिव, सदा, सर्वदा।
—भर, क्रि वि, यावत्नक्त, निशान्त यावद्।
आधी— स स्त्री मध्य अर्ध रात्र निशीथ, निशा-रात्रि-मध्यम्।
रातों— क्रि वि, निशीथे एव।
रात्रि श्री, स स्त्री (स) दे 'रात'।
राध्यध, सं पु (स) निशाध (मनुष्य या पशु आदि)।
राधा धिका, सं स्त्री (सं) रासेश्वरी, रसिकेश्वरी कृष्णप्रिया, वृषभानुतनया।
—रमण, सं पुं (स) राधावल्लभ, श्रीकृष्ण।
रान, सं स्त्री (फा) ऊरु, सक्थि (न)।

राना, स पु, दे 'राणा'।
रानी, स स्त्री (सं राज्ञी) राजपत्नी, नृप-कलत्र २ स्वामिनी।
छोटी—, स स्त्री, परिवृक्ती।
पट्ट—, स स्त्री, पट्ट-राज्ञी-महिषी देवी, महा पट्ट राज्ञी।
प्रिय परन्तु छोटी—, स स्त्री, वावाता।
राब, स स्त्री (सं द्रावक) फाणित, अर्द्धावर्तितेक्षुरस।
राबड़ी, स स्त्री, दे 'रबड़ी'।
राम, स पु (सं) परशुराम २ बल,-राम देव ३ श्रीरामचंद्र ४ परमेश्वर ५ 'त्रि' इति सख्या।
—कली, स स्त्री (स) रामक(कि)री (रागिणी)।
—कहानी, सं स्त्री, बृहत्कथा २ करणकथा।
—जनी, सं स्त्री, हिंदू नर्तकी २ वेश्या।
—तरोई, सं स्त्री, दे 'भिंडी'।
—दूत, स पु (सं) हनुमत् (पु), पवनपुत्र।
—धनुष, स पुं [सं नुस् (न)] इन्द्रचाप।
—नवमी, सं स्त्री (सं) श्रीरामजन्मतिथि, चैत्रशुक्लनवमी।
—नामी, सं पु [सं रामनामन् (न)] रामनामांकितवस्त्र २ रामनामांकितहारभेद।
—पुर, सं पु (स न) स्वर्ग २ अयोध्या।
—बाण, सं पु (स) अजीर्णनाशक औषध विशेष २ रामशर, शरवृक्षभेद। वि, अमोघ, सद्य फलदायिन्।
—रस, स पु (स) लवणं २ भंगामव (मदरास में)।
—राज्य, स पु (सं न) धर्म्यन्याय्य, राज्यम्।
—राम, अव्य (सं) प्रणाम, नमस्कार।
—लीला, सं स्त्री (सं) रामायणाभिनय।
—सखा, सं स्त्री (सं-ख) सुग्रीव।
—करके, मु, अत्यायासेन, अतिकृच्छ्रेण, यथाकथंचित्।
—जाने, मु, न वेद्मि, न जाने, ईश्वरो जानाति २ ईश्वर साक्षी, अहं सत्यं ब्रवीमि।
—नाम सत्य है, मु, रामनाम(गोविन्दनाम)-सत्य, प्रेतवहनकालोचितवाक्यम्।

रामचद्र, सं पु (स) दशरथस्य ज्येष्ठसुत , रघुनदन , सीतापति , रामभद्र , रावणारि ।

रामा, सं स्त्री (स) सुदरनारी, सुन्दरी, वामा २ नारी ३ सगीतकुशला नारी ४ सीता ५ राधा ६ रुक्मिणी ७ लक्ष्मी ८ शीतला ।

रामानद, स पु (स) वैष्णवाचायविशेष ।

रामानुज, स पु (सं) लक्ष्मण , सौमित्रि २ श्रीवैष्णवसम्प्रदायप्रवर्तकाचार्य (स १०७३ ११९४) ।

रामायण, स पु (स न) श्रीवाल्मीकि प्रणीतो महाकाव्यविशेष २ रामचरितम् ।

रामायणी, वि (स रामायणम्>) रामायण, सम्बन्धित-विषयक, रामायणीय । स पु रामायण, पाठिन् पठित ।

राय[1], स पु (स राजन्) नृप , भूप २ सामत , नायक ३ चारण , वदिन ४ राजकीयोपाधिभेद , राजन् (पु) ।

—बहादुर, स पु (हिं + फ़ा) *राज वीर (उपाधिभेद) ।

—साहब, स पु (हिं + फ़ा) *राजमहोदय (उपाधिभेद) ।

राय[2], स स्त्री (फ़ा) मतं, मति (स्त्री) आशय , अभिप्राय , विचार , तर्क ।

—देना, कि अ , निजमत-स्वमति प्रकटयति (ना धा) ।

—पूछना या लेना, क्रि स, परमत प्रच्छ् (तु प अ), (स्वहिताय) परविचार ज्ञा (सन्नत, जिज्ञासते) ।

रायगाँ, वि, (स) व्यर्थ, निरर्थक, अपार्थक ।

रायज, वि (म) दे 'प्रचलित' ।

रायता, स पु (स राज्यक्ता) दाधिस्व्यञ्ज नभेद , दाधेयम् ।

रायल, वि (अ) राजकीय, राजोचित, नृपो चित, राजार्ह ।

रार, स स्त्री [स राटि (स्त्री)] दे 'झगड' ।

राल[1], स पु (स) शाल-साल-वृक्ष २ सर्ज साल, निर्यास -रस , सुर धूप धूप , सुरभि , अग्निवल्लभ , दे 'धूप' ।

राल[2], स स्त्री (स लाला) सृणि(णी)का, स्यदिनी, द्राविका, मुखस्राव ।

—गिरना चूना या टपकना, मु , लालायते (ना धा) लाल यित (वि) भू , अत्यर्थ अभिलष् (भ्वा प मे) ।

राव, स पु , दे 'राय' ।

—चाव, सं पु , सगीतोत्सव , दे 'रागरंग' २ लालनम् ।

रावण, स पु (स) पौलस्त्य , लकेश , दश, कधर ग्रीव आनन आस्य ।

रावल[1], स पु (स राजपुर>) अतःपुर, दे 'रनवास' ।

रावल[2], सं पु (स राजपुत्र >) नृप २ सामत ३ सम्मानसूचक संबोधनपद, राजन् ! ४ योध , भट ।

रावी, स स्त्री (स इरावती) ऐरावती, पचनदप्रवर्तिनदीविशेष ।

राशि, स स्त्री (स पु) पु(पि)ज , पुजि (स्त्री), उत्कर, कूट -ट, समुच्चय , निकर , दे 'ढेर' २ ज्योतिष्चक्रस्य द्वादशाश ३ उत्तराधिकार ।

—चक्र, स पु (स न), ज्योतिश्चक्र, भ, मडल पजर -चक्रम् ।

—भाग, स पु (स) राश्यंश , भगांश (ज्यो) ।

—भोग, स पु (स) राशौ ग्रहावस्थिति (स्त्री) २ राशौ ग्रहावस्थितिकाल ।

राशी[1], स स्त्री , दे 'राशि' ।

राशी, वि (अ) दे 'रिशवतखोर' ।

राष्ट्र, स पु (स न) देश , विषय , जनपद , दे 'राज' (२) । २ राष्ट्रवासिन , राष्ट्रिका, जना , प्रजा (सब बहु) लोक , जनता ३ राष्ट्रीय ,उपद्रव , दे 'ईति' ।

—पति, स पु (स) राष्ट्रिक , राष्ट्रिय , राष्ट्रनायक , प्रजातत्रप्रधान ।

—पाल, स पु (स) नृप , भूप । २ कस भ्रातृ ।

—विप्लव, स पु (स) राजद्रोह , प्रजा क्षोभ क्रान्ति (स्त्री) ।

राष्ट्रीय, वि (सं) देशीय, देश्य, राष्ट्रिय, जानपदिक ।

राष्ट्रीयता, स स्त्री (स) देशीयता, देश भक्ति (स्त्री) ।

रास[1], स पु (स) कोलाहल , कलकल , महाध्वान २ ध्वनि , शब्द । सं स्त्री

(स पु), गोपाना नृत्य क्रीडाभेद २ नाटक रूपक, भेद ३ श्रृखला ४ प्रचलितगानिविभेद ५ विलास ६ लम्य ७ नतकसमाज ।
—क्रीडा, स स्त्री (स) रामविलास २ रम लीला २ कृष्णगोपिकानृत्यम् ।
—धारी, स पु (स गिन्) रामाभिनेतृ ।
—विहारी, स पु (स रिन्) श्रीकृष्ण ।
रास¹, स स्त्री (अ) दे 'लगाम' ।
रास², स स्त्री, दे 'राशि' (१२) ।
रासभ, स पु (स) गर्दभ २ अश्वतर (रासभी स्त्री) ।
रास्त, वि (फ़ा) सरल २ उचित ३ अनुकूल ४ यथार्थ ।
रास्ता, स पु (फ़ा) मार्ग, पथिन् (पु) २ रीति (स्त्री) ।
रास्ती, स स्त्री (फ़ा) सत्य, तथ्य, ऋत २ आर्जव, धर्मशीलता ।
राह, स स्त्री (फ़ा) पथिन् (पु), दे 'मार्ग' २ प्रथा, रीति (स्त्री) २ नियम ।
—खर्च, स पु (फ़ा) मार्गव्यय ।
—गीर, स पु (फ़ा) यात्रिन, पथिक ।
—चलता, स पु (फ़ा + हिं) पथिक २ अपरिचित ।
—ज़न, स पु (स) दस्यु, परिपन्थिन्, मार्गतस्कर ।
—ज़नी, स स्त्री (फ़ा) लुण्ठन, मोषण, अपहार ।
—दारी, स स्त्री (फ़ा) पथ-कर-देय, मार्ग शुल्क-कम् ।
—रीति, स स्त्री (फ़ा + सं) परस्पर, व्यवहार सम्पर्क ।
—ताकना या देखना, मु, प्रतीक्ष (भ्वा आ से), प्रतिपा (प्रे प्रतिपालयति) ।
—नापना, मु, व्यर्थं पर्यट (भ्वा प से) ।
—निकालना, मु, युक्ति चिंत (चु) उपाय कल्पू (प्रे) ।
—पर आना, मु, सुपथे प्रवृत् (भ्वा आ से), सन्मार्ग अवलम्ब (भ्वा आ से) ।
—बताना, मु स्वपदात् भ्रन्श् (प्रे) २ मार्ग दृश् (प्रे) ।
—रखना, मु, व्यवह (भ्वा प अ) सम्पर्क रक्ष (भ्वा प से) ।
—देना, मु, प्रस्था (भ्वा आ अ), या (अ प अ) ।
राहत, स स्त्री (अ) सुख, आनंद ।
राही, स पु (फ़ा) पान्थ, पथिक ।
राहु, स पु (स) विधुंतुद, सैंहिकेय, तमस (पु न), स्वर्भानु, शीर्षक, कबंध ।
—ग्रास, स पु (स) राहु-ग्रसन-दशन-स्पर्श ग्राह उपराग, सूर्य चंद्र, ग्रहणम् ।
रिआयत, स स्त्री (अ) मूल्य-न्यूनता २ अनुग्रह, व्यवहारमार्दवं, प्रसाद: ३ पक्षपात ।
—करना, क्रि स, मूल्य न्यूनीकृ २ अनुग्रह् (क्र प से) ३ सपक्षपातं आचर (भ्वा प से) ।
रिआयती, वि, (अ) प्रासादिक, आनुग्रहिक, न्यूनमूल्य ।
रिआया, स स्त्री (अ) प्रजा, दे ।
रिकशा, स स्त्री (अ रिक्षा) नर-यान-वाहनम् ।
रिकाब, सं स्त्री, दे 'रकाब' ।
रिकाबी, स स्त्री, दे 'तश्तरी' ।
रिकट्स, स पु (अ) बालग्रह (रोगभेद) ।
रिक्त, वि (स) पर,शून्य, शून्यगर्भ २ निर्धन ।
—हस्त, वि (सं) शून्यपाणि ।
रिक्थ, सं पु (सं न) दाय, पैतृकधनम् ।
—हारी, स पु (सं रिन्) रिक्थिन्, दायाद ।
रिज़क, स पु (अ रिज़्क) आजीव,-जीविका, वृत्ति (स्त्री) ।
रिज़र्व, वि (अं) रक्षित, निश्चित, नियत ।
रिज़ल्ट, स पु (अं) परीक्षा-फल-परिणाम २ परिणाम, फलम् ।
रिझाना, क्रि स, व 'रीझना' के प्रे रूप ।
रिपु, सं पु (सं) अरि, वैरिन्, दे 'शत्रु' ।
रिपोर्ट, स स्त्री (अं) सूचना २ विवरणिका, विवरणं, प्रतिवेदनम् ।
रिपोर्टर, स पु (अं) संवाद-दातृ लेखक, वृत्तान्त-समाचार-लेखक ।
रिपोर्टिंग, सं पु (अं) घटनादृष्टान्तानां साहित्यिकविवरणं, साहित्यगविशेष, रिपोर्ताजम् ।
रिफार्म, सं पु (अ) संशोधनं, दोषापनयनं, संस्करणम्, संस्कार । सुधार ।

रिफ़ार्मर, म पु (अ) (समान) मशोधक मस्कारक -दोषहृत्, *सुधारक ।

रिफ़ार्मेटरी, म स्त्री (अ) कारागृहात्मक सस्कारकपाठशाला *मशोधिका *मस्कारिका, *सुधारिका ।

रिब्बन, म पु (अ) पट्टिका ।

रिमझिम, म स्त्री (अनु) शीकर-वर्ष पात ।

—होना, क्रि अ, मद मद वृष् (भ्वा प से)।

रियासत, स स्त्री (अ) देशीयराज्य, राज्यं २ ऐश्वर्य, वैभवम् ।

रिवाज, म पु (अ) दे 'रीति' ।

रिशवत, म स्त्री (अ रिश्वत) उत्कोच, आमिष, ढौकन, लुचा २ उत्कोचदानादानम् ।

—खाना, क्रि अ, उत्कोच ग्रह (क्र् प से)- आदा (जु आ अ)।

—ख़ोर, म पु (अ + फा) उत्कोचग्राहिन्।

—ख़ोरी, म स्त्री (अ + फा) उत्कोच, आदान ग्रहणम् ।

—देना, क्रि म, उत्कोच दा ।

रिश्ता, स पु (फ़ा) दे 'मबध ।

रिश्तेदार, म पु (फ़ा) दे 'सबधी' ।

रिश्तेदारी, स स्त्री (फा) दे 'मबध' ।

रिस, स स्त्री (स रिष् >) कोप, क्रोध ।

रिसना, क्रि अ (स रस >) बिंदुश कण क्रमेण स्यंद् (भ्वा आ से)-क्षर-गल (भ्वा प से), री (दि आ अ) २ मद मद स्रु (भ्वा प अ)-प्रस्नु (अ प से)-स्यद्, री।

रिसालदार, स पु (फ़ा) सादि-सैना-नी (पु)-पति ।

रिसाला[1], म पु (अ) सामयिक, पत्रिका, २ पुस्तिका ।

रिसाला[2], म पु (फा) तुरगबल, सादिसैन्य, अश्वारोहा कम् ।

रिहा, वि (फ़ा) निर वि, मुक्त विमोचित, दे 'मुक्त' ।

रिहाई, म स्त्री (फा) (बधनादिभ्य) वि, मुक्ति (स्त्री) उद्धार, निस्तार ।

रींगना, क्रि अ, दे 'रेंगना' ।

रींधना, क्रि स (म रधन) दे 'पकाना' ।

री, अव्य (स रे) अरे, भो, अयि, हे, दे 'अरी' ।

रीछ, म पु (म ऋक्ष) भल्लूक, दे 'भालु' ।

रीझ, म स्त्री (हिं रीझना) तुष्टि तृप्ति प्रीति (स्त्री), प्रसाद, २ दे 'रीझना' स पु ।

रीझना, क्रि अ (स रजन) अनुरज्-आसञ्ज् (कर्म) अनुरक्त-आसक्त-बद्धभाव (वि) भू, विस्मरि,-मुह् (दि प से) २ तुष-तृप् (दि प से), प्रमद् (भ्वा प अ) । म पु, अनुराग आसक्ति (स्त्री) • तुष्टि प्रीति (स्त्री) ।

रीझा हुआ, वि, अनुरक्त, आसक्त, बद्धभाव, वि,मुग्ध, प्रेमिन, प्रणयिन् ।

रीटार्ट, म पु (सं) वकभाण्डम् ।

रीठा, म पुं (स रिष्ट) अरिष्ट द्रुम, मागल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन पीतफेन, गुच्छफल, फेनि(णि)ल २ रिष्ट फेनि(णि)ल-फलम् ।

रीढ़, स स्त्री (स रीढक) पृष्ठवश, पृष्ठास्थि (न), कशे(से)रु( )(पु न), कशेरुका ।

रीता, वि (स 'रिक्त' दे) ।

रीति, स स्त्री (स) रूढि (स्त्री), आचार, व्यवहार प्रथा, परिपाटी टि (स्त्री) २ मस्कार, कृत्य, विधि, कल्प ३ प्रकार, विधा, पद्धति (स्त्री) ४ नियम ५ रसा दीना उपकर्त्री पदसघटना (काव्य, उ) वैदर्भी, गौडी इ) ५ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री), धर्म ।

—रिवाज, सं पु, रूढय, आचारव्यवहारा, सस्कारा (भीनों बहु)।

रीस, म स्त्री (स ईर्ष्या) मात्सर्य २ स्पर्द्धा, विजिगीषा ।

—करना, क्रि अ, स्पर्ध (भ्वा आ से), संघृष् (भ्वा प से) । (प) अनुकृ ।

रुड, म पु (स पु न) कबध, नि शीर्षकाय २ छिन्नपाणिपादो देह ।

रुँ(रुँ) दवाना, क्रि प्रे व 'रौंदना' के प्रे रूप ।

रुधना, क्रि अ (स रुद्ध) अव-उप, रुध् (कम) प्रतिबाध् स्तभ (कर्म) ।

रुकना, क्रि अ, व 'रोकना' के कर्म के रूप ।

रुकवाना क्रि प्रे, व 'रोकना' के प्रे रूप ।

रुकाव, स पु
रुकावट, स स्त्री } (हिं रुकना) दे 'रोक' ।

रुका, स पु (अ रुकअह्) पत्रक, लघुपत्रम् ।

रुक्म, स पु (स न) सुवर्ण, कार्त्स्न २ लोह ३ रुक्मिणीभ्राता । वि भास्वर ।

—रथ, स पु (सं) रुक्मवाहन द्रोणाचार्य ।

रुक्मिणी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णस्य प्रथम पत्नी, विदर्भेशभीष्मपुत्री ।

रुक्मी, स पु (सं रुक्मिन्) विदर्भेश्वरभीष्मस्य ज्येष्ठपुत्र ।

रुख, स पु (फ़ा) मुख, वदन, आनन, २ कपोल, गल्ल ३ मुखमुद्रा आकृति (स्त्री) ४ भाव, आशय ५ कृपा-दया, दृष्टि (स्त्री) ७ रथ-गज नामकश्चतुरंगहार । क्रि वि, प्रति (द्वितीया के साथ), दिशाया २ समक्ष, पुरत ।

—करना या देना, मु, अवधा (जु उ अ) मनोयुज (चु) २ अभिमुखीभू ।

—बदलना या फेरना, मु, पराङ्मुखीभू २ मनोऽन्यत्र युज् (चु), अन्यमनस्क (वि.) भू ।

रुख़सत, स स्त्री (अ) प्रस्थान, प्रयाण २ अवकाश दे 'छुट्टी' ।

रुखाई, सं स्त्री (हिं रूखा) शुष्कता, शोष, नीरसता २ रूक्षता, औदासीन्य, स्नेहाभाव, उपेक्षा, रौक्ष्यम् ।

रुखानी, स स्त्री (सं रोकखानी) काष्ठ खननी, वर्धक्युपकरणभेद ।

रुचना, क्रि अ (सं रोचनं) रुच् (भ्वा आ स), प्रिय भद्र-रुचिकर प्रति इ (कर्म) । इष्-अभिलष (कर्म) ।

रुचि, सं स्त्री (सं) अभिरुचि-प्रीति-तुष्टि प्रवृत्ति (स्त्री), छंद, काम २ अनुराग, प्रेमन् (पु न) ३. किरण ४ सौंदर्य, छवि (स्त्री) ५ बुभुक्षा, जिघत्सा, क्षुधा ६ आ,स्वाद ।

—कर, वि (सं) स्वादिष्ट, सुरस २ हृद्य, प्रिय, मनोहर, रुचिकारक ।

—वर्द्धक, वि (सं) रुचिकारक-वर्धकारिन् २ पाचक, दीपक, अग्निवर्द्धक ।

रुचिर, वि (सं) सुन्दर, मनोहर २ मधुर, सुस्वादु ।

रुठाना, क्रि स, व 'रूठना' के प्रे रूप ।

रुतबा, सं पुं (अ) पद, पदवी २ मान, प्रतिष्ठा ।

रुदन, सं पुं (सं) रुदित, रोदनं, विलपनं, विलाप, क्रंदनं, क्रंदितं, अश्रुपात ।

रुद्ध, वि (स) वेष्टित, वलयित, सवीन, २ मुद्रित अ,पिहित, आ स,-वृत ३ स्तंभित, निश्चलीकृत ।

—कंठ, वि (सं) गद्गदस्वर, स्खलद्वचन २ वक्तुमक्षमथ (प्रेमादि के कारण) ।

रुद्र, सं पुं (सं) शिवस्य रूपविशेष, शिव २ गणदेवताभेद ३ 'एकादश' इति संख्या ४ रसभेद (काव्य) । वि, भीम, भयंकर भीषण ।

रुद्राक्ष, स पु (स) (वृक्ष) तृणमरु, अमर, पुष्पचामर २ (फल) शिव हर नीलकंठ,-अर्क्ष, पावन, भूतनाशनम् ।

रुधिर, सं पु (स न) शोणित, दे 'रक्त' ।

रुपया, सं पु, (स रूप्य) रूप्यक, रूपक, टङ्कक, रजतमुद्रा २ धनम् ।

—उड़ाना, मु, धन अपव्यय् (चु) अथवा वृथा क्षे (प्रे) ।

—जोड़ना, मु, धनं सचि (स्वा उ अ) ।

—भुनाना, मु, दे 'भुनाना' ।

—वाला, वि, धनिक, धनाढ्य ।

रुपहला, वि (हिं रूपा) रूप्य रजत,-मय, राजत २, रूप्य-रजत,-वर्ण, धवल ।

रुमाली, सं स्त्री (फ़ा रूमाल) दे 'लंगोट' ।

रुरुआ, स पु (हिं ररना) भीषणरव उलूक भेद ।

रुलाई, स स्त्री (हिं रोना) दे 'रुदन' २ रोदनप्रवृत्ति (स्त्री), रुरुदिषा ।

रुलाना, क्रि स, व 'रोना' के प्र रूप ।

रुष्ट, वि (स) कुपित, क्रुद्ध ।

रूँधना, क्रि स (सं रोधनं) (रक्षार्थं कण्टकादिभि) परि,वेष्ट् (भ्वा आ स, प्रे), परिवृ (स्वा उ से, प्रे) २ परि इ (अ प अ), परिच्छिद् (चु), सवरयति (ना धा) संवृ (भ्वा आ स) ३ अव-नि रुन्ध् (रु उ अ), पिधा (जु उ अ) ।

रूँ रूँ, सं स्त्री (अनु) शिशु,-रुदित-रुदनं, रुँकार ।

—करना, क्रि अ, मंद मंद रुद् (अ प स) ।

रू, सं पु (फ़ा) मुखं, वदनं (२ ३) उपरि अग्र, भाग ।

—स्याह, वि (फ़ा) अपकीर्तिमत्, कलंकित ।

—स्याही, सं स्त्री (फ़ा) अप-यशम् (न), कीर्ति (स्त्री) ।

रुई, स स्त्री [स रोमन् (न)] (पौदा) वर्पास स-न्त्री, कार्पासी सिका २ (धूआ) कार्पास, तूल-ल, पिचु, पिचुल, पिचु तूलम्।
—का गाला, स पु, पिचुपिंड न्द्।
—दार, वि, कार्पास (-सी स्त्री), कार्पासिक (-की स्त्री)।
—दार वस्त्र, स पु, कर्पास, फाल, बादर, तूलावरन्।
रूक्ष, वि (स) दे 'रूखा'।
रूख, स पु (स वृक्ष) पादप, तरु।
रूखा, वि (स रूक्ष) स्निग्धता चिक्कणता मसृणता श्लक्ष्णता शून्य-रहित २ घृत-तैल, हीन रहित ३ विरस, स्वादहीन ४ शुष्क, निर्जल, नीरस ५ उदासीन, प्रेमहीन, विरक्त ६ कठोर परुष ७ विषम नतोन्नत।
—सूखा, वि, रूक्षशुष्क (भोजनादि), विरस, नि स्वाद।
रूखापन, स पु, दे रुखाई'।
रूठन, स स्त्री (हिं रूठना) दे 'रूठना' स पु।
रूठना, क्रि अ (स रुष्ट) रुष् (दि प से) अप वि रज (भ्वा उ से) रुन(ज्य)ति-ते, रुष्ट-कुपित-कुपित (वि) भू। स पु, रोष, अप वि-राग, प्रीति प्रसाद परितोष,-अभाव।
रूठा हुआ, वि, रुषित, कुपित, अप-वि-रक्त, कृतरोष।
रूढ, वि (स) आ-अधि, रूढ, उपर्यासीन २ प्रचलित, प्रसिद्ध ३ कठिन, कठोर ४ अविभाज्य (संख्या) ५ अशिष्ट, ग्राम्य।
रूढि, स स्त्री (स) प्रथा, दे 'रीति' (१)। २ ख्याति प्रसिद्धि (स्त्री) ३ आ-अधि, रोह ४ वृद्धि (स्त्री)।
रूप, स पु (स न) आकार, आकृति मूर्ति (स्त्री) संस्थान २ प्रकृति, स्वभाव ३ गुण, सौन्दर्य-द्युति (स्त्री)-वर्ण ४ काय, देह ५ वेश-प ६ दशा ७ लक्षणम्।
—बिगाडना, क्रि स, विरूप् (चु), आकृति दुष् (प्रे) विकृ।
—रग, स पु (स न) वर्णाकारम्।
—रेखा, स स्त्री, दे 'रूप' (१)।
—भरना या बनाना, मु, वेष ग्रह् (क्र प से), रूपं धृ (भ्वा प अ, चु)।
रूपक, स पु (स न) नाटक २ अर्थालकार भेद (काव्य)। स पु, दे 'रुपया'।
रूपवती, वि (स) सुरूपिणी, वरवर्णिनी।
रूपवान्, वि (स -वत्) सुदर, सुरूप, रूप शालिन्।
रूपा, स पु (स रूप्यं) रजत, श्वेतं, शुभ्र, मित, दे 'चाँदी'।
रूपी, वि (स -पिन्) रूपान्वित, रूपधारिन् २ तुल्य, समान।
रूपोपजीविनी, स स्त्री (स.) वेश्या, वारागना।
रूपोपजीवी, स पु (स -विन्) दे 'बहु-रूपिया'।
रूपोश, वि (फा) (दडभयाद्) पलायित गुप्त-गूढ प्रच्छन्न।
रूपोशी, स स्त्री (फा) (दडादिभयाद्) गुप्ति (स्त्री), अज्ञातवास, प्रच्छन्नता।
रूप्यक, स पु (स न) दे 'रुपया'।
रूबरू, क्रि. वि (फा) अभि स, मुख-मुखे, पुर, पुरत (सब अव्य)।
रूमाल, स पु (फा) वरक, कर,-वस्त्र पू (पु), कर्पट।
—पर रूमाल भिगोना, मु, अत्यधिक रुद् (अ प से), अश्रुधारा प्रवह् (प्रे), वाष्पवर्षं कृ।
रूल, स. पु (अ) नियम, विधि २ पत्ररेखा ३ *रेखादड।
—दार, वि (अ+फा) रेखाकित, सरेख (पत्रादि)।
रूलर, स पु (अ) *रेखादड २ प्रमाण-पट्टिका ३ शासक।
रूम, स पु (फा) *रूम, देशविशेष।
रूसी, स पु (फा) रूसवासिन्। स स्त्री, रूसभाषा।
रूह, स स्त्री (अ) जीव, आत्मन् (पु) २ तत्त्व, सार-रम्।
—केवड़ा, स स्त्री, केतकीसार।
—गुलाब, स स्त्री, जपा,-तत्त्व-सार।
रेंक, स स्त्री (हिं रेंकना) *रेंकार, खर-गर्दभ, नाद, चि(ची)त्कार, हेष पा पितम्।
रेंकना, क्रि अ (अनु) आरट् (भ्वा प से), रेंक, चीत्कृ, हेष्-हेष् (भ्वा आ से) २ परुषं गै (भ्वा प अ)।

रेंगटा, स पु (हि रेंकना) गर्दभार्भक रासभशावक ।
रेंगना, क्रि अ (स रिंगण) रिग्-(भ्वा प से) सृप् (भ्वा प अ) उरसा गम् २ निभृत शनैः अनिमद चल (भ्वा प से)-सृप् । स पु, रिंगणं, सर्पणं, उरसा गमनं, शनैः चलनम् ।
रेंगनेवाला, स पु, उरोगामिन्, सर्पन् ।
रेंट-टा, स पु (देश) सिंघाण, सिंहाण-नं, नासामलम् ।
रेंड, स पु (स एरण्ड) अरुबक, हस्तपर्णः ।
रेंडी, स स्त्री (हि रेंड) एरण्डबीजम् ।
—का तेल, स पु, एरण्डतैलम् ।
रेंदी, स स्त्री (देश) क्षुद्रस(र्ष)र्बुज २ क्षुद्र तरबु॰ (प रेंदी) ।
रें रें, स स्त्री (अनु) दे रूँ रूँ ।
रे, अव्य (स) अरे, अयि, भो (सब अव्य) ।
रे, स पु (स ऋषभ) ऋषभस्वर (संगीत) ।
रेख, स स्त्री (स रेखा) दे 'रेखा' २ चिह्न ३ संख्या, गणना ४ नवश्मश्रु (न), श्म श्रूद्भेद ।
रेखांश, स पु (स) द्राघिमांश ।
रेखा, स स्त्री (सं) रेफा, लेखा, दण्डाकार लिपि (स्त्री) २ चिह्न, अङ्क ३ गणना, संख्या ४ आकार ५ पाणिपादादिरेखा (सामुद्रिक) ६ हीरकदोषभेद ७ भाग्यम् ।
—गणित, स पुं (स न) भूज्या, मिति (स्त्री) ।
कर्म—, सं स्त्री (सं) भाग्यलेख, दैवम् ।
रेगिस्तान, स पु (फ़ा) मरु, मरु-स्थलं भूमि (स्त्री), रिल, धन्वन् (पु), ऊषर-रम् ।
रेचक, वि (स) वि, रेचक रेचन, दे 'दस्तावर' ।
रेचन, सं पु (स न) वि, रेक, प्रस्कन्दनं, रेचना, विरेचनं, उदरशोधनम् । स पु, मारक वि, रेचक रेचनम् ।
रेज़ा, स पु (फ़ा) लव, लेश, अणु, कण ।
रेजीमेंट, स स्त्री (अं) सैन्य-दल-गुल्मम् ।
रेट, स पु (अं) अर्घ, मूल्यम् ।
रेडियम, सं पु (अं) रेडियमं, धातुभेद २ तन्तु (न) ।
रेणु सं स्त्री (स पु) पांशु-सु, धूली-लि (स्त्री) २ बालुक, सिकता ३ कण-निका ।
—रंजित, वि (सं) धूलिधूसरित २ गर्त्ते ।
रेणुका, स स्त्री (स) दे 'रेणु' १, २, ३ जमदग्निपत्नी, परशुराम जननी ।
रेत, स पु [स तस (न)] वीर्य २ पारद ३ जलम् ।
रेत, स स्त्री (स रेतना) बालुका, सिकता, सिक्ता, शीतला, महा, सूक्ष्मा ।
रेतना, क्रि स (हि रेत) प्रश्नन्या घृष् (भ्वा प से), लोहमार्जन्या श्लक्ष्णीकृ २ प्रश्नन्यादिभि शनैः शनैः कृत् (तु प से) । स पु, लोहमार्जन्या घर्षण श्लक्ष्णीकरणं कर्तन छेदनम् ।
रेतल-ला, वि, दे 'रेतीला' ।
रेता, सं पु (हि रेत) दे 'रेत' २ धूली लि (स्त्री) ३ सिकतिलस्थलम् ।
रेतिया, स पु (हि रेतना) (लोहमार्जन्या) घर्षक ।
रेती[1], स स्त्री (हि रेतना) लोहमार्जनी, प्रश्चन •नी ।
रेती[2], स स्त्री (हि रेत) पुलिनं, सैकत २ सरिन्मध्ये सिकतिलद्वीप पम् ।
रेतीला, वि (हि रेत) सिकतिल, सैकत, बालुका सिकता मय-युत ।
रेफ, स पुं (स) रवर्ण, रकार (र) २ वर्णा न्तरमूर्धस्थो रकार (उ, र्प) ।
रेल[1], स स्त्री (अं) लोहपथभाग ।
—की लाइन, स स्त्री, लोह पथ सारणी मार्ग ।
—गाड़ी, स स्त्री, वाष्पशकटी ।
रेल[2], सं स्त्री (हि रेलना) धारा, प्रवाह २ आधिक्यं, बाहुल्यम् ।
—पेल, सं स्त्री जनौघ, जनसंमर्द २ बाहुल्यं
रेलना, क्रि स (देश) दे 'धकेलना' ।
रेलवे, सं स्त्री (अं) लोहपथ २ लोहपथ विभाग ।
रेला, सं पु (देश) दे 'धक्का' २ दे 'धावा' ३ प्रवाह, आप्लाव ४ पंक्ति, राशि (स्त्री) ।
रेवद, सं पु (फ़ा) पीतमूली, गन्धिनी ।
रेवड़, सं पुं (देश) (अजमेषादीना) यूथं, वृन्दं, समज, कुलं, षण्ड-ण्डम् ।
रेवड़ी, स स्त्री (देश) •गुडतिलगुली ।
रेवती, स स्त्री (सं) नक्षत्रविशेष २ बलदेव पत्नी, रैवतपुत्री ३ गौ (स्त्री) ४ दुर्गा ।
—रमण, स पुं (सं) बल, देव राम ।

रेवा, स स्त्री (स) नर्मदा २ कामपत्नी, रति (स्त्री) ३ दुर्गा।
रेश, स स्त्री (फ़ा) श्मश्रुका, कूर्च, कूर्चम्।
—सफ़ेद, सं पु (फा) वृद्ध, स्थविर, जरठ।
रेशम, स पु (फ़ा) कौशेय, कीट-जसूत्र, कौश, पट्ट-टम्।
—का कीडा, स पु, ततु पट्ट-कीट।
रेशमी, वि (फ़ा) कौश, कौशिक, कौशेय, पट्ट, कौश—।
—कपडा, स पु, कौशिक, चीनपट्ट, अशुक, दुकूल, कौशाबरम्।
रेशा, स पु (फ़ा) (फल्वल्कलादीना) गुण, ततु, सूत्र २ नाडी, दे 'रग' ३ दे जुकाम'।
रेशेदार, वि (फ़ा) सूत्र-तंतु,-मय-युक्त।
रेहन, स पु (फ़ा) दे 'गिरवी'।
रैदास, स पु (स राजदास) भक्तविशेष, श्रीरामानंदशिष्यविशेष २ चर्मकार।
रैन, स स्त्री (स रजनी) दे 'रात'।
रैयत, स स्त्री (अ) प्रजा, दे।
रोआँ, स पु, दे 'रोम'।
रोंगटा, स पु [स रोमन् (न)] लोमन् (न), आ वर्तन्वर्, -च, तनुरुहम्।
रोंगटे खडे होना, मु, रोमाच-रोमहर्ष-रोमो द्गम जन् (दि आ से), दे 'रोमाच'।
रोक[1], स स्त्री (स रोधक>) विराम, विरति (स्त्री), गतिविच्छेद, अवरोध २ निप्रति-षेध, प्रत्याख्यान ३ बाधा, विघ्न, प्रतिबंध ४ वरण, वृति (स्त्री)।
—टोक, स स्त्री, दे 'रोक' (२ ३)।
बे—रोक, क्रि वि, निरंतराय, निर्विघ्न, निर्बाध (सब अव्य)।
रोक[2], स पुं (स) प्रस्तुतकैर्व्यवहार २ टकः, नाणक, मुद्रा, दे 'नकद' ३ दीप्ति (स्त्री)।
रोकड, स स्त्री (स रोक>) दे 'रोक' (२) २ मूलद्रव्यं, दे 'पूंजी'।
—वही, स स्त्री (हि रोकड) मूलद्रव्य आयव्यय-लेखनपत्रिका।
रोकडिया, स पु (हि रोकड+प्र इया), आयव्ययमूलद्रव्य, लेखक-प्रसेव।
रोकना, क्रि स, (हिं रोक) अवनि प्रति-रुध् (र उ अ), अवरुध् (प्रे), प्रतिरुध् (क्र प अ), वि, स्तम्भ् (क्र प से) २ निविनि वृ (प्रे), नि प्रति-षिध् (भ्वा प से), निवृत् (प्रे) ३ वशीकृ, निग्रह् (क्र प मे), नियम् (भ्वा प अ) ४ प्रतियुध् (दि आ अ), शत्रुसैन्य प्रति बध् प्रतिरुध्। स पु, अवनि प्रति-स, रोध रोधन, निवारण, नियमन, निग्रह-हणं, प्रति योधन, नि प्रति-षेध षेधनम्।
रोकनेवाला, स पु., अवनि, रोधक, निवा रक, प्रतिषेधक, प्रतिरोध ३।
रोका हुआ, वि., अवनि, रुद्ध, निवारित, निरुद्ध ३।
रोग, स पु (स) रुज् (स्त्री), रुजा, व्याधि, गद, अ(आ)म, आमय, उपताप, मृत्युभृत्य।
—कारक, वि (स) व्याधिजनक।
—ग्रस्त, वि (स) रोगाक्रांत, दे 'रोगी'।
—नाशक, वि (स) रोगघ्न, हारिन्-हर, स्वास्थ्यकर।
—निदान, स पु (स न) रोग-निर्णय-निरूपणम्।
—राज, स पु (स) राज-यक्ष्मन् (पु)-यक्ष्म।
—लक्षण, स पु (स न) व्याधिचिह्न २ रोग निदानम्।
—लगना, क्रि अ., रोगेण ग्रस्-उपसृज्-बध् (कर्म)।
रोगन, स पु (फ़ा रौग़न) तैल, दे. 'तेल' २ कुंकुम, रग, राग, वर्ण-रंजक-रंजिका।
—करना, क्रि स., रज् (प्रे), वर्ण् (चु), २ कुंकुमेन लिप् (तु प अ)।
—जर्द, स पु (फ़ा) घृत, आज्यम्।
रोगी, वि (स) व्याधित, रुग्ण, रोग-युक्त पीडित-आर्त-आक्रांत, आतुर, अभ्यांत, अभ्य मित, मामय, आमयाविन्, गद, विकृत। [रोगिणी (स्त्री) = रुग्णा, व्याधिता]।
रोचक, वि (स) आह्लादक, मनोरंजक २ दे. 'रुचिकर' (२)।
रोचन, वि (स) रोचक, रुचिकर २ दीप्ति मत्, छविमत् २ हृद्य, प्रिय।
रोचना, स स्त्री (स) कोकनद, रक्तकमल २ गोरोचना ३ वरनारी, सुन्दरी ४ दे. 'वरमाचन'।
रोज़, स पु (फ़ा) दिन, दिवस, अहन् (न)। क्रि वि, दिने दिने, प्रति अनु-दिन-अहम्।

—बरोज़,
—मर्रा,
—रोज़, } क्रि वि, दे, 'रोज' क्रि वि ।

रोज़गार, स पु (फा) आ-उप,-जीविका, वृत्ति (स्त्री), व्यवसाय २ वाणिज्य, वणिक् कर्मन् (न)।

रोज़नामचा, स पु (फा) दे 'डायरी' २ दैनिकायव्ययपंजिका, दैनिकलेख ।

रोज़ा, स पु (फा) व्रत, उपवास, उपोषण पितम् (इस्लाम)।

रोज़ाना, क्रि वि (फा) प्रतिदिन २ सवदा।

रोज़ी, स स्त्री (फा) दैनिकान्न, प्रात्याहिक भोजन २ आ-उप,-जीविका, व्यवसाय ।

रोज़ीना, वि (फा) प्रात्यहिक, दैनिक । स पु, प्रात्याहिक-दैनिक,-वृत्ति भृति (स्त्री)-वेतनम् ।

रोट, स पु (हिं रोटी) बृहद-स्थूल,-रोटि(ट)का २ मिष्टस्थूलरोटिका ।

रोटी, सं स्त्री (स रोटिका) रोटका २ भोजनं, सिद्धान्नम् ।

—कपड़ा, मु, भोजनवस्त्र, निर्वाहसामग्री २ ग्रासाच्छादनमात्रम् ।

—दाल, मु, सामान्य-साधारण, भोजन, अन्नो दकमात्रम् ।

—दाल चलना, मु, जीवन निर्वह्, सामान्य निर्वाह भू ।

किसी के यहाँ—तोड़ना, मु, पराान्नेन जीव् (भ्वा प से), परार्पित भुज् (रु आ अ)।

रोड़ा, स पु (स लोष्ट-ष्ट) लोष्टक, लोष्टु पाषाण प्रस्तर इष्टका,-खण्ड शकल ।

—अटकाना, या डालना, मु, बाध् (भ्वा अ से), अव-उप नि प्रति स, रुध् (रु प अ), प्रतिबध (क्र्य प अ)।

रोदन, स पु (सं न) दे 'रुदन'।

रोधन, सं पुं (स) अवरोध दे 'रोक' २ दमनम् ।

रोना, क्रि अ (स रोदन) रुद् (अ प से), अश्रूणि पत् (प्रे)-विमुच् (तु प अ), आ, क्रन्द् (भ्वा प से) क्रुश् (भ्वा प अ), क्रुश् (भ्वा प से) २ दे 'रूठना' ३ अनुतप् (दि आ अ), अनुशी (अ आ स) पश्चात्ताप कृ। क्रि स, अनुरुद् विलप् (भ्वा प से), परिदेव् (भ्वा आ से)। स पु, दे 'रुदन'।

रोनी, वि स्त्री (हिं रोना) विषण्णा, शोकमयं ।

रोनेवाला, स पु, रोदक, अश्रुमोचक, आक्र दक २ अनुशोचक, परिदेवक, विलापक ।

रोपना, क्रि स (स रोपण) दे 'बोना ।

रोब, स पु (अ रुअब) आतक, तेजस्(न), प्रताप, प्रभाव, प्राबल्यम् ।

—दाब, सं पुं (अ) दे 'रोब'।

—दार, वि (अ+फा) तेजस्विन, प्रतापिन्, प्रभावशालिन् ।

—जमाना, मु, स्वप्रभाव नन् (प्रे), स्वगौरव प्रतिष्ठा (प्रे), निजतेजसा अभिभू ।

—में आना, मु, परतेजसा अभिभू (कर्म), परप्रतापेन नम् (भ्वा प अ)।

रोबीला, (अ) दे 'रोबदार'।

रोमंथ, स पु (सं) उद्गीर्य चर्वणं, दे. 'जुगाली'।

रोम[1], स पु [स रोमन् (न)] दे 'रोंगटा'

—कूप, स पु (स पु न) लोम,-विवर छिद्र, रोम,-द्वार-गर्त ।

—राजी, स स्त्री (स) रो(लो)मलता, रोमाली, रोमावली लि (स्त्री)।

—हर्ष, स पु (सं) रोमांच ।

—हर्षण, स पु (स न) रोम,-उद्गम -उद्भेद हर्ष । वि (स) रोमांचकर, भीषण।

—रोम में, मु, सर्वदेहे, सपूर्णशरीरे।

—रोम से, मु, सर्वात्मना, साभिनिवेशम् ।

रोम[2], सं पुं (सं रोमक) रोम, पत्तन-नगर, रोमम् ।

—वासी, स पु (सं सिन) रोमका (प्राय बहु)।

रोमन, स पु (अ) रोम, निवासिन्-वास्तव्य । वि रोम, सम्बन्धिन्,-विषयक।

—कैथलिक, स पु, ख्रिस्तसम्प्रदायविशेष ।

रोमांच, सं पुं (स) रोम,-उद्गम -उद्भेद - विकार विक्रिया हर्ष हर्षणं, पुलक, कंटक कं, उद्धर्षणं, उद्धसनं, उल्वणवम् ।

रोमांचित, वि (सं) हृष्टरो(लो)मन, पुलकित, कंटकिन्, सपुलक ।

—करना, क्रि स, कंटकयति पुलकयति-रोमांचयति (ना धा)।

—होना, क्रि अ, पुलकित-कंटकित (वि) जन् (दि आ से)।

रोया, स पु , दे 'रोंगटा' तथा 'रोम' (१)।
रोलर, सं पु (अ) (१२) समीकरण-पिंडी करण,-यन्त्र ३ दे 'बेलना'।
रोला¹, स पु (सं रावण) कोलाहल, कलकल तुमुल, महा, शब्द-स्वन-ध्वन-घोष-रव राव, निनाद, निस्वन, उत्क्रोश, उद्घोष २ तुमुलयुद्धम्।
—डालना या मचाना, क्रि स, कलकल-कोलाहल कृ, वि,-रु (अ प अ), उत्क्रुश (भ्वा प अ)।
रोला², सं पुं (स) चतुर्विंशतिमात्रिक छन्दस् (न)।
रोली, स स्त्री (सं रोचनी>) चूर्णहरिद्रा निर्मित तिलकोपयोगि रक्तचूर्णम्।
रोशन, वि (फा) प्रकाशित, प्रदीप्त २ भास्वर, प्रकाशमान ३ प्र-वि,-ख्यात ४ प्रकट, व्यक्त।
—दान, सं पु (फा) गवाक्ष-छदिर्वातायनम्।
—दिमाग, वि, प्राज्ञ, बुद्धिमत्।
रोशनाई, सं स्त्री (फा) दे 'मसी' २ प्रकाश।
रोशनी, स स्त्री (फा) प्रकाश, आलोक २ दीप ३ दीपमालिका ४ ज्ञानालोक।
रोष, स पु (स) कोप, क्रोध, मन्यु।
रोहिणी, स स्त्री (स) धेनु (स्त्री), गौ (स्त्री) २ तडित् (स्त्री), चपला ३ नक्षत्र विशेष ४ बलदेवजननी।
—पति, स पु (स) चन्द्र २ वसुदेव।
रोहित, वि (स) रक्त, लोहित। सं पु, रुधिर, रक्त २ रक्त,-वर्ण रंग (३४) मृग मीन,-भेद ५ हरिश्चन्द्रपुत्र।
रोहू, स स्त्री (स रोहिष) (१-२) मीन मृग,-भेद।
रौंद(घ)ना, क्रि. स (स मर्दन?) पादाभ्या मृद् (क्र्‌ प से)-क्षुद् (रु प अ)।
रौ, स स्त्री (फा) धारा, प्रवाह, मदाक, स्रोतस् (न)।
रौगन, स पु (फा) दे 'रोगन'।
रौज़ा, स पु (अ) समाधि, चैत्य २ उद्यानम्।
रौद्र, वि (सं) रुद्र, विषयक-सबधिन् २ भीम, भीषण ३ चड, सरम्भ, कोपान्वित। स पु (स) रुद्रोपासक २ कोप ३ रसभेद (काव्य) ४ यम।
रौनक, स स्त्री (अ) कांति-दीप्ति-द्युति (स्त्री) २ श्री (स्त्री), शोभा, छटा ३ जन-ओघ-समुदाय।
रौप्य, स पु (स न) रूप्य, रजतम्। वि (स) राजत, रजतमय, रजतोपम।
रौरव, वि (स) भीम, घोर २ धूर्त, कापटिक ३ *हस्तसर्वस्वन्*। स पु (स) नरकविशेष।
रौला, सं पु, दे 'रोला'।
रौशन, वि, दे 'रोशन'।

ल

ल, देवनागरीवर्णमालाया अष्टाविंशो व्यञ्जनवर्णः, लकारः।
लंक, स स्त्री (स लंका, दे)।
—नाथ-नायक-पति, सं पु (स) रावण, दशानन।
लंका, सं स्त्री (सं) रक्षःपुरी, रावणराजधानी २ भारतदक्षिणवर्तिद्वीपविशेष।
—पति, स पु (स) दे 'रावण'।
लंग¹, स स्त्री, दे 'लांग'।
लंग², स पु (स) दे 'लंगडापन'।
लँगड़ा, वि (स लंग >) पंगु (-गू स्त्री), स्र-न, श्रोण, खोड-रल-ल, विकलगति २ एकपाद हीन (मेज आदि)। स पु, उत्तमाम्रभेद।
लँगड़ाना, क्रि. अ (हिं लंगडा) खञ्-खोल्-खोर-खोड्-लग् (भ्वा प से), सल्लंग चल् (भ्वा प से)। स पु, खजन, खोडन-रण लनं, लगनं, लग विकल,-गति (स्त्री)।
लंगड़ापन, स पुं (हिं लंगडा) खजता, पंगुता, खोड(रल)ता, लंग, विकलगति (स्त्री)।
लंगर, सं पु (फा) लागल, पोतस्तंभन २ महानस, पाकशाला ३ अनाथ-दरिद्र, भोजन ४ 'लंगोट' ५ लोहमयीस्थूल शृंखला ६ लटक, लोलक ७ दुष्टधेनूनां गललगुड। वि, भारवत्, गुरु २ खल, दुष्ट।
—खाना, सं पु (फा) *क्षेत्र*, अनाथभोजन शाला।
—गाह, स पु (फा) नौकाशय, नौकाश्रय।

—करना, मु , कुत्सित चेष्ट (भ्वा आ से), कुचेष्टा कृ ।

लगूर, स पु (स लागूलिन्) कपि , मर्कट , वानर २ कपि-वानर, पुच्छ, लागु(गू)ल ३ श्वेतलोमा कृष्णमुखो वानरभेद ।

—फल, स पु (हिं+स) नारिकेल , लागलिन् ।

लगूल, स पु (स न) लागूल, पुच्छ, दे पुच्छ' ।

लँगोटा, स पु (स लिंग+हिं ओट) पुटी पटी, कौपीन लिंगावरणम् ।

—बद्द, वि , ब्रह्मचारिन्, ऊर्ध्वरेतस् ।

लँगोटिया यार, स पु (हिं फ़ा) सहपांशु क्रीडिन् शैशव-बाल्य-मित्र सखि (पु) ।

—मे मस्त, मु , दारिद्र्येऽपि प्रसन्न, अकिंचन त्वेऽपि सतुष्ट ।

लँगोटी, स स्त्री (हिं लँगोट) दे 'कछनी' २ ल्घु पुटी-कौपीन चर्चिका ।

लघन, स पु (स न) उपवास , उपोषण पित अनाहार, व्रत २ दे 'लाँघना' स पु प्लवन ३ अति,-क्रमण-क्रम नियम भग -उल्ल घन ४ घोटकाना अनित्वरितगति (स्त्री) ।

लघना, क्रि स (स लघन) दे 'लाँघना' ।

लच, स पु (अ) मध्याह्न-माध्यन्दिन, भोजनम् ।

लठ, वि (हिं लट्ठ) जड, मूर्ख २ धृष्ट ।

लडूरा, वि (देश) अलागु(गू)ल, छिन्नपुच्छ, लूमहीन (खगादि) २ परित्यक्त, निराश्रय ।

लप, स पु (अ लैंप) दे 'लालटेन' ।

लपट, वि (स) लिप्त, अभिक, कामिन्, कामुक, विषय-काम,-आसक्त, रतेच्छु, स्मरार्त, व्यभिचारिन्, दुराचारिन् ।

लपटता, स स्त्री (स) व्यभिचारी , विषया सक्ति (स्त्री), कामुकता, अभिरुता, लांपट्य, दुराचार ।

लब, स पु (स) स्कन्ध (=अम्बुद) । वि (स) दे 'लबा' ।

—कर्ण, स पु (स) अज २ गज ३ खर ४ शश ५ राक्षस ६ श्येन । वि (स) दीर्घश्रवण ।

—ग्रीव, स पु (स) उष्ट्र , क्रमेलक ।

लबतड़ग, वि (स लंब+ताल +अंग) तालतुग, अत्युच्च, अत्युच्छ्रित ।

लबा, वि (स लब) दीर्घ, दीर्घ आकार परि माण, आयत, आयामवत् २ उच्च, प्रांशु, तुग, उच्छ्रित ३ विशाल, महत्, बहु, अधिक ।

—करना, क्रि स , दीर्घी-लंबी-आयती वितनी कृ आयम् (भ्वा उ अ), विस्तृ प्रसृ (प्रे) प्र-वि,-तन् (त उ से) । मु , प्रस्था (प्रे) २ भूमौ अवपत् (प्रे) ।

—चौडा, वि , विशाल, विपुल, महत्, बृहत्, लबोरु, आयतविस्तृत ।

—होना, क्रि अ , दीर्घीभू , विस्तृ प्रतन आयम् (कर्म) । मु , प्रस्था (भ्वा आ अ), प्रया (अ प अ) ।

लबाई, स स्त्री (हिं लबा) दीर्घता-त्व, दैर्घ्य, द्राघिमन् (पु) आयाम , आय मन, आयति (स्त्री) लबता, आनाह २ उच्चता ।

—चौडाई, स स्त्री , आनाहपरि(री)णाही, दीर्घत्वपृथुत्वे आयामविस्तारौ (सब द्वि) २ म न, प्र परि,-माणम् ।

लबान, स स्त्री (हिं लबा) दे 'लबाई' ।

लबी, वि स्त्री (हिं लबा) दीर्घा, आयता, आयामवती ।

—तानना, मु , निश्चिन्त नी (भ्व प से) ।

—सास भरना, मु , दीर्घ नि श्वस् (अ प से) ।

लबोतरा, वि (हिं लबा) दीर्घचतुरस्र अढ,-आकार-आकृति ।

लबोदर, वि (स) तुदिक भल्लत । स पु (स) गणेश २ औदरिक , घस्मर ।

लकड़बग्घा, स पु (हिं लकड+बाघ) ईहा मृक , लगुडव्याघ्र ।

लकड़फोड़, स पु (हिं लकड+फोडना) दार्वाघाट , काष्ठकूट ।

लकड़हारा, स पु (हिं लकड+हारा) काष्ठिक , काष्ठच्छिद, लगुडहार ।

लकड़ा, स पु (स लकुट) लगुड -र -ल, स्थूल-दृढ,-काष्ठ-दारु (न) ।

लकड़ी, स स्त्री (हिं लकडा) काष्ठ, दारु (न) २ इधन, एध , दड , यष्टि (स्त्री), वेत्र ३ दे 'गतका' ।

—देना, मु , अन्त्येष्टि कृ, शव दह् (भ्वा प अ) ।

लकब, स पु (अ) उपाधि , उपनामन् (न) ।

लक्लक, स पु (अ) लबग्रीवा-जलखगभेद , •लक्लक ।

लक्वा, सं पु (अ) आदनम् ।
लकीर, स स्त्री (स लेखा) रेखा-सा, दड का राजि (स्त्री) २ पंक्ति-श्रेणि आलि (स्त्री) ।
—का फकीर, गु , विवेकशून्य, अध,अनुगा मिन-अनुयायिन् अनुवर्तिन्, परपरानुसारिन् ।
—पर चलना, —पीटना, } मु , अंधवत् अनुगम् (भ्वा प अ)-अनुया(अ प अ) ।
लकुट, स पु (स) लगुड , यष्टि (स्त्री), दड ।
लक्कड़, स पुं , दे 'लकड़ा' ।
लक्का, सं पु (अ) व्यजनपुच्छ पारावत , कपोतभेद ।
लक्ष, वि तथा स पु (स) दे लाख' ।
लक्षक, वि (स) प्रदर्शयितृ, प्रकाशक । स प (स) लक्ष्यार्थप्रकाशक शब्द । (स न) दे 'लाख' ।
लक्षण, स पु (स न) अक , चिह्न , लिंग, लाछन, व्यजन, अभिज्ञानम् । २ परिभाषा, परिच्छेद , निर्देश ३ विशिष्टलिंग, विशेष ४ चरित्र, आचार ।
लक्षणा, सं स्त्री (स) शब्दशक्तिभेद , शक्य संबंध (सा) २ सारसी ३ हसी ।
लक्षित, वि (स) निर्दिष्ट, ज्ञापित २ दृष्ट, वीक्षित ३ अनुमित, तर्कित ४ चिह्नित, अंकित ।
लक्ष्मण, स पु (सं) रामानुज , सौमित्रि २ दुर्योधनपुत्रविशेष ३ सारस ।
लक्ष्मी, सं स्त्री (स) श्री , कमला, पद्मा, पद्मालया, हरि,प्रिया-वल्लभा, इदिरा, मा, रमा, क्षीराब्धितनया, भार्गवी, लोकमातृ (स्त्री) २ धन, सपद् (स्त्री) ३ छवि (स्त्री), शोभा ४ दुर्गा ५ सीता ६ वीरनारी ७ गृहस्वामिनी ।
—नारायण, स पु (स) लक्ष्मीजनार्दन शाल्ग्रामभेद ।
—पति, स पुं (सं) विष्णु २ श्रीकृष्ण ३ नृप ।
लक्ष्मीश, स पु (स) विष्णु २ आम्रवृक्ष ३ धनाढ्य ।
लक्ष्य, स पुं (सं न) शरव्य, लक्ष, वेध्य, वेध, प्रतिकाय २ निंदा-आक्षेप-उपालभ, विषय ३ आशय , उद्देश , अभि ,इष्ट, मनोरथ , इप्सित ४ लक्ष्यार्थ । वि , दर्शनीय, अवलोकनीय ।
—वेधी, स पु (सं धिन्) वेध्यवेधक ।
लखपती, स पु (स लक्षपति) लक्ष, ईश्वर,-अधीश २ धनिक धनाढ्य ।
लखेरा, स पु (हिं लाख) लाक्षा-जतु,-कार २ हिंदूपजातिभेद ३ कुक्कुभ,-लेपक लेपिन् ।
लग, क्रि वि (स लग्न) दे, 'तक', २ समीप मे। अव्य ,सह, सार्द्धं २ दे 'लिए' ।
—भग, क्रि वि प्राय , प्रायश , प्रायेण,-प्राय, कल्प, उप ,आसन्न- ।
लगन¹ स स्त्री (हिं लगना) आसग, प्रीति (स्त्री), आ प्र सक्ति (स्त्री), अभिनिवेश, दे 'धुन' २ प्रेमन् (पु न), अनुराग , स्नेह ३ दे 'लगना' स पु ।
लगन², स पु (स लग्न) राशीनामुदय (ज्यो) २ (विवाहस्य) शुभमुहूर्त लग्नम् ।
—कुण्डली स स्त्री (सं लग्नकुडली) जन्मकुंडली ।
—लगना, क्रि अ , अनुरज् (कर्म), स्निह (दि प से) ।
लगना, क्रि अ (स लग्न) स , युज् (कर्म), लग (भ्वा प स), सहन्-सधा (कम), संश्लिष् (दि प अ) संपृच् सक्ल (कम) २ आरोप्-मूल् (कर्म ३ निवेश्-स्थाप् (कम) ४ आहन्-ताड प्रहृ-व्यध् (कम) ५ स्पृश-समालभ परामृश (कर्म) ६ विन्यस-व्यवस्थाप्-व्यूह् (कर्म) ७ दृश-लभ् प्रती (कर्म), प्रति ,भा (अ प अ) ८ संबन्ध् (कर्म), सम्बन्ध ज्ञातित्व वृत् (भ्वा आ से) ९ स्वाद-रस धा १० अनुरज (कर्म), स्निह् (दि प से) ११ कर शुल्क नियोज् (कर्म) १२ मूल्य अपेक्ष (भ्वा आ से), मूल्येन लभ (कम) १३ व्यापृ (तु आ अ), मग्न-व्यापृत (वि) वृत १४ पण् (कर्म) १५ पूतीभू, पूय् (दि प से), पूय (भ्वा आ से) । स प तथा भाव, लगन, स, योग , सधान, स श्लेष श्लेषण, सपर्क , संसृष्टि (स्त्री), आरोपणं, मूलनं, निवेश , स्थापन, आघात , प्रहार , स्पर्श , समालम्भ , विन्यास , व्यूह , व्यवस्थिति , प्रतीति (स्त्री), भान, व्यापृति आसक्ति (स्त्री) १६ पूतीभाव , पूयन इ ।

लगा हुआ, वि , स , युक्त, लीन लग्न सहत, सपृक्त, ससृष्ट, आरोपित निवेशित स्पृष्ट, विन्यस्त, अनरक्त, व्यापृत मग्न इ ।

लगवाना, क्रि प्रे , व 'लगाना' के प्रे रूप ।

लगातार, क्रि वि (हिं लगना+तार) सतत, अविच्छिन्न, दे 'निरतर' ।

लगान, स पु (हिं लगाना) भू भूमि,-कर , शस्यशुल्क, राजस्वम् ।

लगाना, क्रि स , व 'लगना' के स रूप ।

लगाम, स स्त्री (फा) कविक-का, खलीन नं, व वि(वी)थ, कवी, पचागी २ वल्गा, रश्मि , अवक्षेपणी, कुशा ।

—चढ़ाना या देना, मु , सयम्(भ्वा प अ), निग्रह् (क प से), वशीकृ, निरुध् (प्रे) ।

लगालगी, सं स्त्री (हिं लगना) अनुराग , प्रेमन् (पु न) २ संबंध , सपर्क , ससर्ग , सगति (स्त्री) ।

लगाव, स पु } (हिं लगाना) दे 'लगालगी' १ २ ।
लगावट म स्त्री }

लगुड-र-ल, स पु (स) दड यष्टि (स्त्री) २ लोहमयोऽस्त्रभेद ।

लग्गा, स पु (सं लग्न>) लव,-वेणु -वश २ नौदंड ३ आकर्षणी ।

लग्गी, सं स्त्री (हिं लग्गा) मीनदण्ड २ ४ दे 'लग्गा' १ ३ ।

लग्न[१], स (पु स न) दे 'लगन[२]' (१ २) ।

लग्न[२], वि (स) सयुक्त, सश्लिष्ट, सल्गित, सवद्ध २ आसक्त, मग्न, व्यापृत, पर, परायण, निष्ठ ३ लज्जित ।

लघु, वि (सं) अल्प ईषद्, भार, सुगुग, हास २ अणु, महत्त्व-वृहत्त्व, शून्य, क्षुद्र, तनु अल्प, आकार-आकृति-काय ३ निस्तत्त्व, निस्सार ४ अल्प, स्तोक (मात्रा) ५ अधम, नीच ६ दुर्बल, निबल ६ कनीयस , यवीयस ।

—चेता, वि (सं -तस) तुच्छ, क्षुद्रमति, क्षुद्राशय ।

—शंका, सं स्त्री (सं) मूत्रोत्सर्ग , मेहनम् ।

लघुता, स स्त्री (स) लघुत्वं, लघवं, लघिमन् (पु), अल्पभारवत्त्वं २ अणुता, तनुता, क्षुद्रता ३ अधमता ४ कनीयस्त्व ५ अल्पता ।

लचक, स स्त्री (हिं लचकना) स्थितिस्था परतास्त्वं, नम्यता, कुंचनं शक्ति २ दे 'लचकना' सं पु ।

—दार, वि (हिं +फा) नम्य कुचनीय, नमन कुचन शील स्थितिस्थापक, प्रकृतिप्रापक ।

लचकना, क्रि अ (हिं लच अनु) अव, नम् (भ्वा प अ), वक्रीभू । स पु तथा भाव, अव नमन नति नाम , वक्रीभाव ।

लचकाना, क्रि स , व 'लचकना' के प्रे रूप ।

लचकीला, } वि (हिं लचक) दे 'लचकदार' ।
लचलचा, }

लचना, क्रि अ , दे 'लचकना' ।

लचाना, क्रि स व 'लचना' के प्रे रूप ।

लचीला, वि , दे 'लचकदार' ।

लच्छा, स पु (स लवगुच्छ >) सूत्रस्तवक, गुणगुच्छ , ततुपची २ सूत्राकारा , पट्टिका कारा वा तनुदीर्घखडा ३ सूक्ष्मततुरूप पाणिपादभूषणभेद ४ मिष्टान्नभेद ।

लच्छेदार वि (हिं +फा) गुच्छ-सूत्र पट्टिका, आकार २ श्रुतिमधुर, सुश्राव्य, सुखश्रव ।

लजाना, क्रि अ , दे 'लज्जित होना' ।

लजालू, स पु , दे 'लाजवती' ।

लज़ीज़, वि (अ) सुस्वादु, सुरस, स्वादिष्ट (भक्ष्य) ।

लजीला, वि (हिं लाज) दे 'लज्जाशील' ।

लज्ज़त, स स्त्री (अ) आ स्वाद , रस ।

—दार, वि (अ +फा) दे 'लज़ीज़' ।

लज्जा, स स्त्री [सं व्रीड-डा ह्री (स्त्री)] त्रपा, मदार्प, शालीनता, लज्या २ मान , प्रतिष्ठा ।

—कर, वि (स) त्रपा-लज्जा प्रद-जनक आवह, गर्हित ।

—शील, वि (सं) ह्रीमत् शालीन, लज्जालु, सलज्ज, विनीत, लज्जावत् लज्जान्वित ।

—हीन, वि (सं) निर्लज्ज, निर्व्रीड, धृष्ट, निस्त्रप, अत्रप, लज्जा त्रपा, शून्य ।

लज्जालु, वि (सं) दे 'लाजवती' २ दे. 'लज्जाशील' ।

लज्जित, वि (सं) ह्रीत, ह्रीण, व्रीडित, त्रपित, त्रपा-लज्जा,-अन्वित ।

—करना, क्रि स , लज्ज् त्रप् व्रीड् ह्री (प्रे) ।

—होना, क्रि अ , लज्ज् (तु आ से), त्रप् (भ्वा आ से), व्रीड (दि प से), ह्री (जु प अ) ।

लट,[१] सं स्त्री (सं लट्वा) अलक , चूर्णकुन्तल ,

कुरल २ केशपाश, कचपक्ष ३ नग, सटा, सहिन्दिवेशा ।

—दारी, म प, नटिन्, नटिन् (भिनु)।

लट,[२] म स्त्री (हिं लपट) ज्वाला, अग्निशिखा।

लटक, स स्त्री (हिं लटकना) दे लटकना स पु । २ कुचनीयता, नम्यता ३ आवेश, सावेग ४ हाव, विभ्रम, मनोहरी(री) आभंगि (स्त्री)।

—चाल, म स्त्री सविभ्रमगति (स्त्री)।

लटकन, स पु (हिं लटकना) दे लटकना' म पु २ हाव, विभ्रम ३ प्रालम्ब लोलक ४ नासिकाभूषणभेद ५ उष्णीषलम्बितो रत्नगुच्छ ।

लटकना, क्रि अ (स लटन>) अवप्रलम्ब (ना आ मे), उद्बन्ध (कम)२ दोला यन (ना धा)। प्रेंख (भ्वा प मे) ३ विलंबं कृ, चिरायति ते (ना धा), विलम्ब (भ्वा आ मे)। स पु तथा भाव, अवप्र,लम्ब-लम्बन उद्बधन २ प्रेंखण, दोलन ३ विलम्बन, कालक्षेप ।

लटका, स पु (हि लटक) गति (स्त्री), चार २ हावभावौ, विभ्रम ३ सविलासं भाषण ४ वागाधार (=तकिया कलाम) ५ संक्षिप्त,-योग-उपचार-औषध ६ चल्द् गीत ७ माया यातु,-यष्टि (स्त्री) ८ अभि चारमन्त्र ।

लटकाना, क्रि स, व लटकना' के प्रे रूप।

लटकाव, स पु, दे 'लटकना' स पु ।

लटकीला, वि (हिं लटक) दे 'लचकदार'।

लटपटा, वि (हिं लटपटाना) प्रस्खलद् विचलद् (गमन), अस्थिरगतिक २ शिथिल, अपरिष्कृत, अस्तव्यस्त, अवस्रस्त ३ अस्पष्ट, स्खलद् (शब्द) ४ क्रमहीन, असंगत ५ खिन्न, श्रान्त, ग्लान, अशक्त ६ उदपेष, गाढघन ७ वलियुत (वस्त्रादि)।

लटपटाना, क्रि अ (स लट+पत्) प्रस्खल (भ्वा प मे) २ पतत् चल (भ्वा प से) ३ चपलतया गम् ४ वेप (भ्वा आ से) ५ अनुरञ्ज (कम)। स पु, प्रस्खलन, दूषि तानि (स्त्री), कम्पन, अनुराग ।

लटा, वि (स लट्ट) लम्पट २ नीच ३ तुच्छ ४ पतित ५ दुष्ट।

लटापटी, सं स्त्री (हिं लटपटाना) दे 'लट पटाना' स पु २ कलह, कलि ।

लटी, सं स्त्री (हिं लटा) १ २ असद् असत्य,वार्ता ३ भिक्षा(क्षु)की ४ वेश्या ५ पनीजि (स्त्री)।

लटूरी, स स्त्री (हिं लट) दे 'लट' (१)।

—उतरवाना, चूडावरणसंस्कार कृ (प्रे)।

लटोरा, स पु (देश) कलिंग, धूम्राटः, खगभेद ।

लट्टू, स पु (स लुठन>) भ्रमरक-क, २ लबक लम्बमीसकम् ।

—होना मु अत्यधिक स्निह् (दि प से), गाढ अनुरञ्ज (कर्म)।

लट्ठ, स पु [सं लगुड-यष्टि (स्त्री)] स्थूल बृहद्-दंड-यष्टि लकुट, लगुड ।

—बाज, वि (हिं+फा) यष्टियोधिन्, दंडधर, दंडिक ।

—बाजी, स स्त्री (हिं+फा) दंडा-डि (अव्य), यष्टियुद्धम् ।

—मार, वि (हिं) दे 'लट्ठबाज' २ कटु, कठोर (वचन)।

—मारना, क्रि स, दंडेन-यष्ट्या प्रहृ (भ्वा प अ)। मु, परुष ब्रू (अ उ से)।

पीछे—लिये फिरना, मु., सतत विरुध् (रु उ अ) २ प्रतिकूल आचर् (भ्वा प से)।

लट्ठा[१], सं पु (हिं लट्ठ) दीर्घकाष्ठ २ तुला, छदि, स्थूणा ३ सार्द्धपञ्चगजमितो भूमानदंड ।

लट्ठम्—, स पु, दे 'लट्ठबाजी'।

लट्ठा[२], स पु (अ लागक्लाथ) *लंबपट ।

लठ, स पु, दे 'लट्ठ'।

लठालठी, स स्त्री, दे 'लट्ठबाजी'।

लठैत, स पु (हिं लठ) दे 'लट्ठबाज'।

लड़त, स स्त्री (हिं लड़ना) दे 'लड़ाई'।

लड़, स स्त्री [स यष्टि (स्त्री) ?] आवली लि (स्त्री), सरल,-माला-हार २ रज्जो घटक-सूक्ष्म,-तंतु ३ शृंखल-ला-ला ४ श्रेणि पंक्ति (स्त्री)।

लड़कपन, स पु (हिं लड़का) बाल्य, कौमार २ चापल्यं, चाचल्यम् ।

लड़कबुद्धि, स स्त्री (हिं+स), बालबुद्धि (स्त्री), अपक्वमति (स्त्री)।

लड़का, स पु (हिं लाड) बालक, कुमार २ पुत्र ।

—वाला, स पु, संतति (स्त्री), संतान २ ∗परिवार, कुटुम्बम्।
—लड़की, स स्त्री, संतति (स्त्री)।
लड़केवाला, मु, (विवाहे) वरस्य जनक संरक्षको वा।
लड़कों का खेल, मु, सुकरकर्मन् (न), सुसाध्यकार्यम्।
लड़की, स स्त्री (हिं लड़का) बालिका, कुमारी २ पुत्री।
—वाला, मु (विवाहे) वध्वा जनकः संरक्षको वा।
लड़कौरी, वि स्त्री (हिं लड़का) बालोत्संगा, शिशुमती।
लड़खड़ाना, क्रि अ (सं लड्+हिं खड़ा) प्रस्खल (भ्वा प से), घूर्ण् (भ्वा आ से) २ गद्गदवाचा भाष (भ्वा आ से), सगद्गद म् (अ उ से) स्खल्। स पु, प्रस्खलन, घूर्णन २ सगद्गद भाषण, स्खलनम्।
लड़ना, क्रि अ (सं रणन>) विग्रह् (क्र प से) युध (दि आ अ), युद्धसंग्राम समर कृ २ विवद् (भ्वा आ से) विप्र लप (भ्वा प से), कलहायन्ते (ना धा) ३ दंश (भ्वा प अ) ४ संघट (भ्वा आ से), संमृद् (क्र् प से) ५ मल्लयुद्ध कृ, हस्ताहस्ति मुष्टीमुष्टि युध्। स पु तथा भाव, विग्रह, युद्ध, विवाद, विप्रलाप, कलह, दशनं, संघट्टन, संमर्द, मल्लयुद्धम्।
लड़बड़ाना, क्रि अ, दे 'लड़खड़ाना'।
लड़बावरा, वि (हिं लड़का+बावरा) मूर्ख, अज्ञ, बालबुद्धि २ अशिष्ट, ग्रामीण।
लड़ाई, सं स्त्री (हिं लड़ना) संग्राम, दे 'युद्ध' २ मल्लबाहु, युद्ध ३ वाग्युद्ध, कलह ४ वाद, वादप्रतिवाद ५ संघट्ट, समाघात ६ विरोध, वैरम्।
—करना, क्रि स, दे 'लड़ना'।
—का मैदान, रणक्षेत्र, युद्धभूमि (स्त्री)।
—मोल लेना, मु, कामतः कलहे प्रवृत् (भ्वा आ से), युध (सन्नत, युयुत्सते)।
लड़ाका, स पु (हिं लड़ना) योध, भट, योद्धृ। वि, कलहकारिन्, प्रिय, युयुत्सु, विवादिन्।
लड़ाकू, वि (हिं लड़ना) सांग्रामिक (-की स्त्री), योद्ध (-द्री स्त्री)।
लड़ाना, क्रि स, व 'लड़ना' के प्रे रूप।
लड़ी, स स्त्री, दे 'लर'।
लड़ीला, वि, दे 'लाडला'।
लड्डू, स पु (स लड्डु) लड्डुक, मोदकः।
—खिलाना, मु, निमंत्र् (चु आ स)।
—मिलना, मु, सफल अधिगम्।
मन के**—खाना**, मु, मनोराज्यं विजृम्भ् (प्रे)।
लढ़ा, स पु } [हिं लुढ़(ढक)ना]
लढ़िया, स स्त्री } बलदशकटी।
लत, स स्त्री (स रति >) कु-वृत्ति (स्त्री), शील, कदभ्यास, दुर्व्यसन, दुष्प्रवृत्ति (स्त्री), दे 'आदत' (बुरी)।
लतखोरा, वि (हिं लात+फा खोर) पाद प्रहारसह, अपमानसह, कुकर्मिन् २ नीच, क्षुद्र। स पु, दास, किंकर २ देहली, अव ग्रहणी ३ दे 'पायदान' [लतखोरिन (स्त्री)]।
लतपत, वि, दे 'लथपथ'।
लता, स स्त्री (स) वल्ली, व(वे)ल्लि प्र(प्र)-तति (स्त्री) (बहुत शाखाओं तथा पत्तों वाली) प्रतानिनी, गुल्मिनी, वीरुध (स्त्री), उलप २ सुन्दरी, तन्वी, रोचना।
—मंडप, स पु (स) लता-भवन कुंज गृह, नि-कुंज -ज, कुडंग -गम्।
लताड़, स स्त्री, दे 'लथाड़'।
लताड़ना, क्रि स (हिं लात) दे 'रौंदना'।
लतिका, स स्त्री (सं) लघु-वल्ली, ततति (स्त्री)।
लतीफा, स पु (अ) दे 'चुटकुला'।
लत्ता, स पु (सं लक्तक) नक्तक, कर्पट ट, चीर, पटच्चर, जीर्णवसन २ वस्त्रखण्ड ३ वस्त्रम्।
—कपड़ा, स पु, परिधानं, वस्त्राणि वासांसि (न बहु)।
लत्ती[1], स स्त्री (हिं लात) पादप्रहार, लत्ताघात, खुर, आघात-क्षेप।
लत्ती[2], स स्त्री (हिं लत्ता) ∗पतंगपुच्छं २ लम्बवस्त्रखण्ड दम्।
लथड़ना, क्रि अ, व 'लथेड़ना' के कर्म के रूप।
लथपथ, वि (अनु) अति-क्लिन्न उन्न क्लिन्न आर्द्र २ (पंकादिभि) लिप्त लिप्त मलिन, कलुष।
लथाड़, स स्त्री (अनु लथपथ) भूमौ पात

थित्वा इतस्ततं कषणं २ पराजय ३ हानि (स्त्री) ४ अधिक्षेप, निर्मत्सन ना, तर्जनम्।

लथाड़ना, क्रि स, दे 'लताड़ना' २ 'लथेड़ना'।

लथेड़ना, क्रि स (अनु लथपथ) पंकेन मलिनयति (ना धा), कर्दमे कृष् (भ्वा प अ) २ समिश्र् (चु), ससज् (तु प अ) ३ निर्भर्त्स् (चु), अधिक्षिप् (तु प अ) ४ व्यथ् (प्रे), पीड् (चु)।

लदना, क्रि अ (स लब्ध>) ब 'लादना' के कर्म के रूप २ मृ (तु आ अ)।

लदवाना, } क्रि प्रे, ब 'लादना' के प्रे रूप।
लदाना,

लदा फँदा, वि (हिं लदना+फँदना) भाराक्रांत, भारग्रस्त, पर्याहारपीडित।

लदाव, स पु (हिं लादना) दे 'लादना' स पु २ भार, भर, पर्याहार ३ पटला दिषु निराधार इष्टकाचय।

लदुवा, **लद्दू**, वि (हिं लादना) धुरधर, धुरीण, धौरेय, धुर्य, पृष्ठ्य, स्थूरिन् (घोडा, बैल आदि)।

लद्धड़, वि (हिं लदना) अलस, मंथर।

—पन, स पु, आलस्य, मन्थरत्वम्।

लप[१], स स्त्री (देश) अंजलि, करपुट २ अजलि, मित-मात्र वस्तु (न)।

लप[२], स स्त्री (अनु) वेत्र-यष्टि, शब्द, लपलपध्वनि २ खड्गादीनां तरलप्रभा।

लपक, स स्त्री (अनु) ज्वाला, अग्निशिखा २ क्षणिक-अस्थिर, दीप्ति (स्त्री) प्रभा ३ वेग, जव, त्वरा, लाघव ४ प्लुति (स्त्री), झंपा।

लपकना, क्रि. अ (हिं लपक) धाव् (भ्वा प से), द्रु (भ्वा प अ), सत्वर गम् २ स्फुर् (तु प से), तरलप्रभया प्रकाश् (भ्वा आ से) ३ वल्ग् (भ्वा प से), उत्, प्लु (भ्वा प अ) ४ धृ (चु), ग्रह् (क्र् प से)। स पु, धावन, स्फुरण, उत्, प्लवन, धारणम्।

लपकाना, क्रि स, ब 'लपकना' के प्रे रूप।

लपकी, स स्त्री (हिं लपकना) सरलसीवन भेद।

लपझप, वि (अनु लप+हिं झपटना) चपल, चपल २ क्षिप्र, आशु।

लपट, स स्त्री (हिं ली+पट) वह्निशिखा, ज्वाला २ तप्तपवन, घर्मानिल ३ सुगन्ध, सुवास, दुर्गंध, पूतिगंध ४ सुगन्धि-दुर्गंधि, पवनतरंग।

लपटना क्रि अ, दे 'लिपटना'।

लपड़शपड़, स स्त्री (स लपन+अनु) प्र, जल्पन, निरर्थकशब्दा (बहु)।

लपन, स पु (स न) मुख २ भाषणम्।

लपलप, स पु (अनु) लेहन, लेह। वि, क्षिप्र शीघ्र-कारिन्, आशु। क्रि वि, क्षिप्र, द्रुतं, झगिति (सब अव्य)।

—करना, क्रि स, लिह् (अ उ अ), जिह्वाग्रेण पा (भ्वा प अ)।

—खाना, क्रि स, सत्वर भक्ष् (चु)।

लपलपाना, क्रि स (अनु लपलप) (जिह्वा-खड्गादिकं) परिभ्रम् (प्रे)-विधू (स्वा क्र् उ से)। क्रि अ, खड्गवत् प्रकाश् भाम् युत् (भ्वा आ से)। स पु तथा भाव, विधुवन, विधूति (स्त्री), विधूनन, परिभ्रा(भ्र)मण, प्रकाशन, भासन, द्योतनम्।

लपलपाहट, स स्त्री (हिं लपलपाना) (खड्गादीनां) द्युति-दीप्ति (स्त्री), प्रभा २ दे 'लपलपाना' स पु।

लपसी, स स्त्री (सं लप्सिका) द्रवप्राय संयाव ३ द्रवप्राय मद्यम्।

लपेट, स स्त्री (हिं लपेटना) दे 'लपेटना' स पु व्यावर्त, व्यावृत्ति (स्त्री) बंधन चक्र ३ परिधि, परिणाह, परिवेश, मंडल ४ कष्ट, क्लेश, कृच्छ्र, जाल ५ कुंडुप, प्रभाव ६ वेष्टन, बंधन ७ पुट, भंग, वलि (स्त्री)।

लपेटना, क्रि स (हिं लिपटना) सवेष्ट (प्रे), संपुटीकृ २ भ्रम्-घूर्ण् (प्रे) ३ व्यावृत् (प्रे), पुटीकृ, पुटयति (ना धा) ४ पिण्डी वर्तुलीकृ ५ आच्छद् (चु), परिवेष्ट् (भ्वा आ से, प्रे) ६ सग्रथ् (क्र प से) ७ अन्तर्गम् (चु) संश्लिष् (प्रे)। स पु तथा भाव, सवेष्टन, संपुटीकरण, भ्रामण, घूर्णन, व्यावर्तन, पिण्डीकरण, आच्छादन, संग्रथन, संश्लेषणम्।

लपेटवाँ, वि (हिं लपेटना) संपुट, सभग, वलियुत २ व्यावृत्त, आकुंचित, ३ गूढार्थ, गुप्ताशय, व्यंग्य ४ वक्र।

लप्पड, स पु , दे 'थप्पड़' ।
लप्पा, स पु (देश) सौवर्ण-राजत,-तन्तुजाला भरणभेद. ।
लफंगा, स पु (फ़ा-ग) लपट , व्यभिचारिन् २ कुपथग , दुर्वृत्त ।
लफ़टंट, स पु (अ लेफ्टिनेंट) गणाध्यक्ष २ प्रतिपुरुष ।
—गवर्नर, स पु (अ) उपप्रान्ताध्यक्ष , उप भोगपति ।
—जनरल, स पु (अ) अक्षौहिणीप. ।
सेकेंड—, स पु (अ) गुल्मप ।
लफ्ज़, स पु (अ) शब्द , पद २ उक्ति (स्त्री), भाषणम् ।
—बलफ्ज़, क्रि वि, शब्दश , यथाशब्द, अक्षरश ।
लफ़्ज़ी, वि (अ) शाब्द्बिक ।
—तर्जुमा, स पु (अ) अक्षरश शब्दश - मूलशब्दानुवर्ति भावोपेक्षक,-अनुवाद ।
—बहस, स स्त्री (अ) भावोपेक्षक शाब्दिक,- वादप्रतिवाद. ।
लफ़्फ़ाज़, वि (अ.) वावदूक, वाचाल, बहुभाषिन्, मुखर ।
लफ़्फ़ाज़ी, स स्त्री (अ) वावदूकता, वाचालता, मुखरता, अल्पकता ।
लब, स पु (फ़ा) अधर , ओष्ठ , दतच्छद २ स्यंदिनी, लाला ३ प्रान्त , मुख, कठ , धार , कर्ण ।
—रेज़, वि , परि पूर्ण, सभृत ।
लबड़धोंधो, स स्त्री (अनु) कोलाहल,- कलकल २ अन्धुन्दुर,-व्यवस्था, संकुल, क्रमाभाव ३ अन्याय , अधर्म , अनीति (स्त्री) ४ वाकूछल, वाग्वचना ।
लबलबा, सं पु (अनु) क्लोम, पर्द्किया (अं पेनक्रियास) । वि , चिक्कण, सल्ग्नशील ।
—का रस, स पुं, क्लोमरस ।
लबादा, स पुं (फ़ा) *पिचुकंचुक २. कंचुक ।
लबार, वि (सं लपन>) मिथ्याभाषिन् २ जल्पाक , मृषाल्पायिन् ।
लबालब, क्रि वि (फ़ा) आ,-कंठ मुखकर्णम् । वि , आकर्ण, परिपूर्ण ।
लबी, स स्त्री , दे 'राब' ।
लबेरा, सं पुं (देश) दे 'लसोड़ा' ।
लब्ध, वि (सं) अवाप्त,-आप्त, अधिगत, समासादित २. उप, अर्जित । स पु (स न) फल, लब्धि. (गणित) २ दामभेदः ।
—प्रतिष्ठ, वि (स.) लब्ध,-कीर्ति-नामन्, वि प्र,-ख्यात ।
लब्धि, स स्त्री (स) प्राप्ति (स्त्री), लाभ. २ उत्तर, लब्धाक (गणित) ।
लभ्य, वि (स) पाप्य, अधिगम्य २ उचित ।
लमछड़, स पु (हिं लबा+छड़) लबयष्टि (स्त्री) २ कुत , प्रास ३ स्वाग्न्यस्त्रम् । वि , तनुलब ।
लमटंगा, वि (हिं लबी+टाग) दीर्घजघ (-घा, घी स्त्री) २ दे 'लमढींग' ।
लमढींग, स पु (देश) सारस , पुष्कराह. ।
लमतड़ंग, वि , दे. 'लंबतडंग' ।
लमहा, स पु (अ) क्षण , पल, निमि(मे)ष. ।
लय, स पु (स) एकरूपता, ऐकरूप्यं, एकी सदृशी,भाव , सायुज्यं, मग्नता, लीनता २ एकाग्रता, समाधि , अनन्यमनस्कता ३ अनुराग , प्रेमन् (पुं न) ४ महाप्रलय , कल्पात ५ अदर्शन, लोप, तिरोभाव ६ स- श्लेष , सम्मिश्रण ७ नृत्यगीतवाद्यानां साम्यं (सगीत) ८. मूर्च्छा । स स्त्री , स्वरोद्गम- प्रकार (२ ३) दे 'तर्ज' तथा 'सम' ।
लरज़ना, क्रि अ (फ़ा. लरजा) कप्-वेप् (भ्वा आ से) २ भी (जु प अ), वि- स त्रस् (भ्वा दि. प. से.) ।
लरज़ा, सं पु (फ़ा.) कप , वेपथु २ भूकंप ३ *कपज्वर ।
ललक, स स्त्री (सं लल् = चाहना>) उत्कटेच्छा, लालसा, अभिलाषातिशय. ।
ललकना, क्रि अ (हिं. ललक) अत्यन्त स्पृह् (चु , चतुर्थी के साथ), अतीव अभिलष- वाञ्छ् (भ्वा प से.) ।
ललकार, स स्त्री (हि अनु. लेल+सं कारः) समर , आह्वानं, युद्धाय आकारणं-णा, रणनि- मत्रणं २ आक्रमण,-उत्तेजना प्रेरणा ।
ललकारना, क्रि स (हिं ललकार) आह्वे (भ्वा आ अ), (योद्धुं) आकृ उदीप्-उत्तिज- प्रचुद् (प्रे) । सं पु तथा भाव, दे 'ललकार' ।
ललचना, क्रि. अ (हिं. लालच) दे 'लल- चाना' क्रि. अ ।

ललचाना, क्रि अ (हिं ललचना) (अत्यन्तं) लुभ (दि प मे) सह् (चु) क्रम (भ्वा आ से) अभिलष (भ्वा दि प मे) २ मुह् (दि प मे)। क्रि म, अभिलाषा नन्द (प्रे) म, लुभ (प्रे) २ मुह (प्रे) वशीकृ।

ललचौहाँ, वि (हिं लालच) लोलुप म गृध्नु अयभिलाषिन्, अत्याकांक्षिन्।

ललन, स पु (स) प्रियलालित बाल कुमार २ बाल वल्लभ ३ (नायकसंबोधन पद) ललन! प्रियवर! ४ विहार, क्रीडा, केलि (स्त्री)।

ललना, स स्त्री (स) कामिनी रामा २ जिह्वा।

लला-ल्ला, सं पु (स लल>) दे 'ललन' (१३) २ (बालसंबोधनपद) अग! वत्स! *ललित! लालितक!

ललाई, स स्त्री (हिं लाल) दे 'लाली'।

ललाट, स पु (स न) अलि(ली)क, गोधि (पु स्त्री) भाल, निटि(टा)ल, दे 'माथा' २ भाग्य, दैवम्।

—पटल, स पु (स न) ललाटमस्तक, पट्टफलकम्।

—रेखा, स स्त्री. (स) भाग्यलेख।

ललाटिका, स स्त्री (स) पत्रपाश्या, ललाटा भरणभेद २ ललाट, चर्चा चर्चा, भालस्थचंदन, तिलक कम्।

ललाम, वि (स) रम्य, सुदर २ रक्त, लोहित ३ श्रेष्ठ, प्रधान। स पु (स न) आ,भूषण २ रत्न ३ चिह्न ४ ध्वज ५ शृंग ६ अश्व ७-८ अश्व,भूषण, भाल चिह्न ९ प्रभाव १० केस(श)र ११, दे 'अयाल'।

ललित, वि (स) सुदर, मनोहर, रम्य, २ इप्सित, अभीष्ट ३ लोल, चचल, कम्र।

—कला, स स्त्री (स) कोमल-उत्कृष्ट,कला शिल्प (काव्य, सगीत, चित्रकारी इ)।

—लोचन, वि (स) सु,नेत्र-नयन।

ललिता, स स्त्री (स) रमणी, सुन्दरी २ राधिकाया सखीविशेष।

ललिताई, सं स्त्री (स ललित>) सौंदर्य, रम्यता।

लली,ल्ली, स स्त्री (हि लला-ल्ला) प्रिय पुत्री, ललितननुजा २ (नायिकासंबोधनपद) प्रिये! कान्ते! वल्लभे! ३ (बालिकासंबोधनपद) ललिते! वत्से! कन्यके।

ललौंहाँ, वि (हिं लाल) आ ईषद्,रक्त लोहित।

लल्लो स स्त्री (स ललना) जिह्वा-रसना।

—चप्पो, } स स्त्री चाटु (पुं न),
—पत्तो, } चाटूक्ति (स्त्री), उपच्छदनम्।

—पत्तो करना, मु, मिथ्या प्रशम् (भ्वा प मे) उपछद (चु), चाटुभि तुष् (प्रे)।

लवग, स पु (स न) दे 'लौंग'।

—लता, स स्त्री (स) श्रीपुष्पलता (२ राधा सखीविशेष।

लव स पु (स) परम अणु, लेश, कण, कणिका, क्षुद्रखड, बिंदु २ काष्ठाद्वय, षट् त्रिंशन्निमेषमित काल ३ श्रीरामपुत्र, कुशभ्रातृ।

—लेश, स पु (स) ११ अत्यल्प,मात्रा समग।

लवण, स पु (स न) दे 'नमक'। स पु (१३) राक्षस-रस-समुद्र, विशेष। वि, लवणित, लावणिक, दे 'नमकीन' २ सुन्दर।

—भास्कर, स पु (स) पाचकचूर्णभेद (वैद्यक)।

लवणाकर, स प (स) लवणख(खा)नि (स्त्री) २ सागर।

लवनि नी, स स्त्री (स लवन) शस्य,लाव मवय।

लवलीन, वि (स लय +लीन>) व्यग्र, नि, मग्न, पर,-परायण, निरत, लीन, आसक्त, व्यापृत।

लवा, स पु (स लव) लाव (ब), लाव (ब)क, लघुजगल।

लश्कर, स पु (फा) सेना, सैन्य, अनीक नी २ जन,-ओघ समर्द ३ शिबि(वि)र, निवेश ४ नाविका-नौवाहा (बहु)।

लश्करी, वि (फा लश्कर) सैनिक, सेना सबंधिन् २ पौनःपु, हौड। स पु, सैनिक २ नाविक।

—भाषा, स स्त्री, मिश्रित सैनिक,भाषा २ दे 'उर्दू'।

लसुन, स पु (स न) दे 'लहसुन'।

लस, स पु (स लस>) सलग्नशीलता,

—लुहान होना, मु, लोहितक्लिन्न रुधिर स्नात रक्तरंजित शोणशोण (वि) भू।

लाग, म स्त्री (स लाङ्गल>) कच्छ च्छ, कच्छ(च्छा)टिका, कच्छाटा कक्षा दे 'काँछ'।

—खुलना, मु, अत्यर्थं भी (जु प अ), साहस धैर्यं मुच् (तु प अ)।

लागल, स पु (स न) दे 'हल'।

लागली, स पु (सं लिन्) बलराम २ सर्प।

लागूल, स पु (स न) पुच्छं २ शिश्नम्।

लागूली, स पु (स -लिन्) कपि वानर।

लाँघना, क्रि स (स लघन) लघ (चु), अतिक्रम् (भ्वा दि प से), तॄ (भ्वा प से) २ उत्प्लुत्य लंघ् (भ्वा आ से, चु)। स पु तथा भाव, अतिक्रमण, लंघन, तरण, उत्प्लुत्य लंघनम्।

लाछन, स पु (स न) कलङ्क, दोष, दूषण, अपकीर्तिचिह्न २ चिह्न, लक्ष्म लक्ष्मन् (न), लिंगम्।

—लगाना, दुष (प्रे) कलङ्कयति, यशो मलिनयति (दोनों ना धा)।

लाइन, स स्त्री (अ) पंक्ति (स्त्री) २ रेखा ३ लोहमार्ग, ४ पंक्तिसेना ५ दे 'बारक'।

—डोरी, स स्त्री, दे 'वेशरोला'।

ला, अ (अ) विना, न, ऋते (सब अव्य)।

—इलाज, वि (अ) असाध्य, निरुपाय, अचिकित्स्य, अप्रतिवार्य।

—इल्म, वि (अ) निरक्षर, शिक्षाशून्य, विद्याविहीन, अज्ञ।

लाइट, स स्त्री (अ) प्रकाश, आलोक।

—हाउस, स पु (अ) प्रकाश स्तम्भ गृहम्, आकाशदीप दीपस्तम्भ।

लाकड़ा काकड़ा, स पु दे 'माता(लोटी)'।

लाक्षणिक, वि (सं) लक्षणागम्य (अर्थ), लाक्षण २ लक्षणज्ञ लभ्य ३ गौण अप्रधान ४ लक्षणसंबंधिन्।

लाक्षा, स स्त्री (स) कीटजा, जतुका, दे 'लाख'।

—गृह, स पु (स न) पाण्डवदाहार्थं दुर्योधनर्निर्मापितो जतुगृहविशेष।

—रस, सं पु (स) दे 'महावर'।

लाख', स स्त्री (स लाक्षा) राक्षा, याव, यावक क, जतुरंजन, जतु (न) रक्ता, अलक्त (क्त), द्रुम, आमय व्याधि, मुद्रिणी, नतुका २ रक्तवर्ण कृमिभेद।

—चपड़ा, स स्त्री, पत्रकलाक्षा।

लाख², वि (स लक्ष) नियुत, अयुतदशक, सहस्रशतक २ असंख्य, अगण्य। स पु (स न) उक्ता संख्या, तदंकाश्च (=१०००००)। क्रि वि, अनकृत्, अनेकवार, बहु, अधिकम्।

—टके की बात, मु, अत्युपयोगिवार्ता।

—से खाक होना, मु, वैभवाद् दारिद्र्य उप इ (अ प अ), विगत परिर्द्धि (कर्म)।

लाखा, स पु (हिं लाख) ओष्ठरंजको लाक्षिकरग।

लाखी, स स्त्री (हिं लाख) लाक्षिकरग। वि, लाक्षिक लाक्षा, निर्मित रंजितवर्ण सबंधिन्।

लाग, स स्त्री (हिं लगना) संपर्क, संसर्ग, संबंध २ प्रेमन् (पु न), अनुराग ३ अभिनिवेश, आसक्ति (स्त्री) ४ युक्ति (स्त्री), उपाय ५ इन्द्रजाल माया ६ प्रतियोगिता स्पर्द्धा ७ वैर, शत्रुता ८ अभिचार ९ भूमिकर १० धातुभस्मन् (न), दे 'भस्म' ११, *लगन।

—डाँट, स स्त्री (हिं) वैर, द्वेष २ प्रतियोगिता स्पर्द्धा।

—लपेट, स स्त्री (हिं) पक्षपात, पक्षपातिता, [समदृष्ट्यभाव (स्त्री) २ मनोवृत्ति-सद्भाव (स्त्री)।

लागत, स स्त्री (हिं लगना) व्यय, विनियोग, विमर्दन २ मूल्य, अर्घ, अर्हा।

—आना या बढ़ना, क्रि अ, मूल्येन क्री-प्रह (कर्म) २ व्ययेन सम्पद्-बाध् (कर्म)।

लाघव, स पु (स न) दे 'लघुत' (१५)। ६ क्षिप्रता, द्रुतता, दक्षता ७ क्लीबता ८ आरोग्यम्।

लाचार, वि (फा) विवश, निरुपाय, अगतिक। क्रि वि, विवश-निरुपाय-अगतिक-तया।

लाचारी, स स्त्री (फा) विवशता, अगतिकता।

लाची, स स्त्री, दे 'इलायची'।

लाज, स स्त्री (स लज्जा) दे 'लज्जा' (१२)।

—आना या करना, क्रि अ, दे लज्जित होना'।

—रखना, मु, प्रतिष्ठा रक्ष (भ्व प से), अपमानात् त्रै (भ्वा आ अ)।

लानवत, वि (स लज्जावत्) दे 'लज्जाशील'।
लानवती, वि (हिं लानवत) लज्जावती, कामनी। स स्त्री, लज्जालु (पु स्त्री), सकोचिनी, स्पर्शलज्जा, महाभीता, महौषधि (स्त्री) रक्त पादी-मूला।
लाजवर्द, सं पु (फा, मि स राजावत) नृपावत आवनर्माण २ (विदेशीय) नीलम्।
लाजवर्दी, वि (फा) नीलवर्ण, शान्दन्त् नील।
लाजवाब, वि (अ) निरुत्तर, मूकी, कृत भूत वादे पराजित ३ अनुपम, अतुल।
लाजा, स स्त्री [स लाजा (पु वहु)] अक्षता (पु बहु) २ तंदुल।
लाज़िम, वि (अ) आवश्यक अवश्यकर्तव्य २ उचित युक्त।
लाज़िमी वि (अ लाजिम) दे 'लाजिम।
लाट[1], स पु (अ लॉर्ड) शासक, शासितृ २ भोगपति, प्रानाध्यक्ष।
लाट[2], स स्त्री (हिं लट्ठा) स्तम, मेढि थि, यूप।
लाट, स पु (सं बहु) प्रान्तविशेष (गुजरात, अहमदाबाद के आसपास) २ लाट प्रांतवासिन (बहु) ३ (लाट) अनुप्रास भेद (सा) ४ जीर्णवसनभूषणादिक ५. वसनानि-वासासि (न बहु) ५ पतित।
लाटरी, सं स्त्री (अ) गुटिकापात, पाटक, कण्ठगी।
लाटानुप्रास, स पु (स) शब्दालंकारभेद (सा)।
लाटिका, लाटी, स स्त्री (स) रीतिभेद (सा) २ प्राकृतभाषाविशेष।
लाठ, स पु, दे 'लाट' (१-२)।
लाठी, स स्त्री (स लकुटयष्टी>) यष्टिका, यष्टि नि (स्त्री), लगुड, लकुट, दंड, प्रतुन २ वेत्र, वेत्रयष्ट (स्त्री)।
—चलना, मु, दण्डादण्डि जन (दि आ मे)।
—टेक टेक चलना, मु, यष्टिमवलम्ब्य दण्डाग्रयोग चल् (भ्वा प से)।
—बाँधना, मु, यष्टि धृ (चु)।
लाड, स पु (स लाड) लाडनं, उप लालनं, २ परिष्वग आलिंगनं, परिरंभण ३ चुम्बनं, निम्न ४ क्रीडारणम् ई।
—करना, कि स, लालन-लाड (चु), चुब् आलिंग (भ्वा प से), क्रीडि इ।
लाडला, वि (स लाड >) उप, लालि(लि)त चुंबित, आलिंगित, प्रेम-लालन, आस्पद-पात्र भाजन, प्रिय, अभिमत।
अत्यधिक—, वि, दुर्ललित, अतिलालित लालनदूषित।
लाडा, स पु (हिं लाड) दे 'वर'।
लाडी, स स्त्री (हिं लाडा) दे 'वधू'।
लात, स स्त्री (देश) पदा आघात, प्रसृत २ पाद, चरण ण, पद ३ पदा पाद, प्रहार आघात ४ क्षुरप्रहार-शेष आघात।
—चलाना, मु, पादेन पदया प्रह (भ्वा प अ) तड (चु)।
—जाना, मु, (गौ भैंस आदि) दुग्ध न दद् (भ्वा आ मे)।
—मारना, मु, तुच्छ मत्वा त्यज (भ्वा प अ)।
लाद, स स्त्री (हिं लादना) दे 'लादना' स पु २ उदर ३ अंत्रम्।
लादना, क्रि स (हिं लदना) भार न्यस (दि प से), निधा (जु उ अ) आरुह् (प्रे) निविश (प्रे), भाराक्रान्त कृ, भारेण पूर् (चु) ३ राशी के समान नि (स्वा उ अ)। स पु भ(भा)र,-न्यास निवेशनं-आधानं आरोपणम्।
लादनेवाला, स पु भ(भा)र,-आरोपक-निवेशक।
लादवा, वि (अ) दे 'लाइलाज'।
लादा हुआ, वि, भार, ग्रस्त आक्रान्त, आरोपित निवेशित-स, भार।
लादी, स्त्री (हिं लादना) भार, पोटलिका।
लादू, वि (हिं लादना) दे 'लद्दू'।
लानत, स स्त्री (अ लअनत) धिक्कार, न्यक्कार, निर्भर्त्सन-ना, अधिक्षेप गर्हा।
—मलामत करना, क्रि स, निभर्त्स् (चु आ से) अधिक्षिप् (तु प अ)।
लानती, स स्त्री (अ लानत>) निंद्य, गर्ह्य, निर्भर्त्सनीय, दुष्ट, खल।
लाना, क्रि स (हिं लेना + आना) आनी (भ्वा प अ), उपानी, आहृ (भ्वा प अ), आवह् (भ्वा प अ) २ उपस्था (प्रे), पुरो निधा (जु उ अ), उपयम (नि प स) ३ उपह (भ्वा प अ), समृ-ऋ (प्रे), उपायनं दा ४ उत्तरदा न (प्रे)। सं पु,

आनयन, आ उपा हरणं, आवहन, उपस्थापन, उत्पादनं इ ।

लाने योग्य, वि , आनेय उपाहार्य, उपस्थाप्य ।

लानेवाला, सं पु , आनेतृ, आ-उपा, हतृ हारक ।

लापता, वि (अ ला+हिं पता) अलभ्य, अदृश्य, तिरोहित, अन्तर्हित, गुप्त, प्रच्छन्न, अज्ञातवास ।

लापरवा वाह, वि (अ ला+फ़ा परवाह) निश्चित, अनवहित, प्रमत्त, प्रमादिन् ।

लापरवाही, स स्त्री (अ+फ़ा) निश्चिन्तता, अनवधानता, प्रमत्तता, प्रमाद ।

लाफ़, स स्त्री (फ़ा) आत्म-स्व, श्लाघा प्रशसा, विकत्थनम् ।

—ज़न, वि , आत्मश्लाघिन्, विकत्थनशील ।

—ज़नी, स स्त्री , आत्मश्लाघिता, विकत्थन शालता ।

लाफ़िंग गैस, स स्त्री (अ) हसनवानि (स्त्री) ।

लाभ, स पु (स) अव प्र, आप्ति , उप, लब्धि (दोनों स्त्री) अधिगम -मन, आ सादन २ फल, अय , उदय , वृद्धि (स्त्री), लभ्य ३ कल्याण, उपकार , हितम् ।

—उठाना, क्रि अ , लाभ अधिगम्, अर्ज् (भ्वा प से , प्रे), लभ (भ्वा आ अ) समासद् (प्रे), विद् (तु उ वे) ।

—दायक, वि (स) लाभ,-कारक-कारिन् -जनक प्रद, गुणकारिन्, हित, हितकर, फल दायक, उपयोगिन् ।

लाभालाभ, स पु (स भौ द्वि) आयापायौ, अधिगमापगमौ, वृद्धिक्षयौ, उपचयापचयौ ।

लाम, स पु (फ़ा लाम) सैन्य, सेना २ जनौघ ३ युद्धम् ।

लामज़हब, वि (अ) धर्मविमुख, नास्तिक ।

लायक़, वि (अ) योग्य, क्षम, समर्थ, शक्त २ अनुरूप, अनुकूल, उपयुक्त ३ गुणिन्, गुणवत् सुशील, श्रेष्ठ, भद्र ।

लाया हुआ, वि , आनीत, आ-उपा, हृत, उप स्थापित, उपन्यस्त ।

लार, स स्त्री (स लाला) दे 'राल' (२) ।

लार्ड, स पु (अ) जगदीश २ स्वामिन् ३ क्षेत्रपति ४ आंग्लदेशे उपाधिभेद ।

लाल, स पु (फ़ा) पद्मराग , दे 'माणिक्य' वि , रक्त, लोहित, शोण ।

—आलू, सं पुं, दे 'रताल' २ दे 'अरुई' ।

—इलायची, स स्त्री , दे 'इलायची' (बड़ी) ।

—कुर्त्ती, स स्त्री , आंग्लसैन्यनिवेश , शिबि (वि)रम् ।

—चंदन, स पुं , रक्त-कुचंदन, रंजन, दे 'चंदन' में ।

—पानी, स स्त्री , सुरा, मद्यम् ।

—पेठा, स पु , दे 'कुम्हड़ा' ।

—बुझक्कड़, स पु , पंडितंमन्य प्राज्ञमन्य , प्राज्ञ-पंडित मानिन्-अभिमानिन्-वादिन् ।

—मिर्च, स स्त्री , दे 'मिर्च' में ।

—मूली, स स्त्री , दे 'शलजम' ।

—शक्कर, सं स्त्री , दे 'खाँड' ।

—सागर, स पु , रक्तसागर ।

—सुर्ख़, वि , अग्निरूप, अंगारवर्ण, अतिलोहित २ अति,-कुपित-संरब्ध ।

—पीला होना,-पीली आँखें निकालना, मु , अत्यंत कुप् (दि प से) क्रुध् (दि प अ), सरभानिशयेन लोहितलोचन रक्तवदन (वि)भू ।

लालच, सं स्त्री (स लालसा) लोलुपता, दे 'लोभ' ।

लालची, वि (हिं लालच) लोलुप, दे 'लोभी' ।

लालटेन, स स्त्री (अ लैंटर्न) प्रदीप पञ्जर, प्रदीपकोश (ष) ।

लालड़ी, स स्त्री (फ़ा लाल) मिथ्यामाणिक्य, कृत्रिमलोहितकम् ।

लालन[1], स पु (सं न) दे 'लाड' स पु ।

—पालन, स पु (स न) पालन भरण,-पोषण, संवर्द्धन, भरण, रक्षणम् ।

लालन[2], स पु (हिं लाला) प्रिय-लालित,-पुत्र-कुमार २ बालक ।

लालसा, स स्त्री (स) उत्कटेच्छा, लिप्सा-आकांक्षा-वांछा-स्पृहा-इच्छा-अभिलाष, अतिशय २ उत्कंठा, उत्सुकता ३ गर्भ ,दोहद ।

लाला[1], स पु (सं लालक >) महाशय , महोदय , श्रीमत्, श्रीयुत २ (क्षत्रियवैश्याना संबोधन) श्रीमन् ! महोदय ! श्रेष्ठिन् ३ कायस्थ ४ शिशु , बाल ५ (बालसंबोधनपद) वत्स ! अंग ! ललित ! लालिनक ! ६ पितृ,-जनक ।

—भैया करना, मु सादर सभाष (भ्वा आ मे)-सबुध् (प्रे) २ लट ल्स (चु)।
लाला², म स्त्री (म) मुखस्राव, दे 'राल'(२)।
लाला³, स पु (फा) मसृणमसृणनिल पुष्पम्।
लालायित, वि (स) ल्लाट भाल, सर्वचिन्‌ २ भैव आयत्त निरदृष्ट ३ सावधान। स पु, मावधान सवक २ अल्म।
लालायित, वि (म) अत्यभिलाषिन्, अ त्याकाङ्क्षिन् अत्युत्सुक, लाल्म।
लालित, वि (स) लालित, चुम्बित, आलिङ्गित, क्रीडित प्रिय २ सवाद्धन पालित।
लालित्य, स स्त्री (म न) सौंदर्य, मनोज्ञता मनोहरता छवि (स्त्री), माधुर्यम्।
लालिमा, म स्त्री (फ़ा लाल) दे 'लाली'।
लाली, म स्त्री (फा लाल) रक्तवर्णता, लौहित्य रक्तिमन्-लोहितिमन्-अरुणिमन् (पु) अरुणता, लोहितता-त्व, २ सम्मान, प्रतिष्ठा ३ प्रिय, कन्य(यि)का-कुमारिका।
लाले, म पु (स लाला>) लालसा, उत्कण्ठा।
(किसी चीज के)—पडना, मु, अतिलालायित (वि) भू, अत्यर्त स्पृह् (चु, चतुर्थी के साथ) २ दुर्लभदुष्प्राप (वि) भू (भ्वा आ से), कृच्छ्रेण लभ प्राप (कम)।
लाव¹, स पु (स) कर्तन, कृतन, लवनं, छेदनम् २ लव, लावक, लवुतगल।
लाव², सं स्त्री (देश) दे 'रस्सा, रस्सी'।
लावक, म पु (स) लव, लावक, लघु नगर २ छेदक, छेत्तृ, छेदकर, -च्छिद्।
लावण्य, सं पु (सं न) लवणता-त्व, क्षारता २ विशिष्ट-सौंदर्य-रूप, छवि (स्त्री), चारुता, श्री-कान्ति (स्त्री)।
लावनी, म स्त्री (देश) (१ २) छन्दो-गीतिका, भेद, लावणी।
लावलश्कर, सं पुं (हिं+फा) मपरिच्छद सैन्यम्।
लावल्द, वि (अ) निस्संतान, निरपत्य।
लावा¹, म पुं (स लाव-क) दे 'लवा'।
लावा², म पु (अं) ज्वालामुखी अग्निमय, उद्गार।
लावारिस, वि (अ) अदायाद, दायादरहित (मनुष्य) २ अदायिक, स्वामि प्रभु, हीन (धन)।
—माल, म पु (अ) अदायिक स्वामिहीन, रिक्थ-द्रव्य धनम्।
लाश, स स्त्री (फा) दे 'शव'।
लासा, स पु (हिं लस) मद्रलेपक, द्रव्य-लेप २ द्रुमदुग्ध क्षुपक्षीरम्।
—लगाना, मु, प्र वि लुभ् (प्रे) प्रवञ्च् (प्रे) २ उत्तिज् उद्दीप (प्रे) ३ मद्रलेपक द्रव्येण खगान बध (क्र प अ)।
लासानी, वि (अ) अनुपम, अप्रतिम, अद्वितीय।
लास्य, म पु (म न) नृत्य २ भावताल लय-आश्रय नृत्य ३ स्त्रीनृत्य ४ तौर्यत्रिकम्।
लाहौरी नमक, म पु (हिं +फा) दे 'सैंधा नमक' (नमक के नीचे)।
लिंग, स पु (म) चिह्न लक्षण अभिज्ञान, लक्ष्मन् (न) २ अनुमा-कारण, साधक हेतु ३ मूलप्रकृति (स्त्री, सा) ४ मेढ्र-ढ, दे 'लिंगेंद्रिय' ५ शिवमूर्ति भेद ६ शब्द रूपभेद (व्या) ७ पुराणविशेष।
—देह, सं पु (स) सूक्ष्म लिंग, शरीर (=१० इन्द्रियाँ, ५ तन्मात्रा, मन, बुद्धि–१७ तत्त्व)।
—पुराण, म पु (म न) शैवानां पुराण विशेष।
—वृत्ति, म पु (स) धर्मध्वजिन्, दाम्भिक, लिंगिन्।
—स्थ, स पु (म) ब्रह्मचारिन्।
लिंगेंद्रिय, सं पुं (सं न) शेफ, शिश्न न, लिंग, उपस्थ-स्थ, शेपस् (न), राग काम,-लता मेढ्र-ढ्र, मेहन, शङ्कु, काम-मदन, अङ्कुश, ध्वज, कंदपमुषल।
लिंगोटी, म स्त्री, दे 'लंगोटी'।
लिट, सं पु (अ) मयोपयोगी दक्षणाक्रमभेद।
लिंफ, स पु (अं) देहरस।
लिए, अव्य (कारकचिह्न) (के लिए या हेतु) –अर्थे,-अर्थ-अर्थाय कृते, हेतो, (प्राय चतुर्थी विभक्ति, मै, उ राम के लिए-रामाय)।
लिखत, म स्त्री (स लिखित) लेख, लिपि बद्ध-अक्षरावलि,-विषय २ लिखितपत्रं ३ लिखित दे 'दस्तावेज'।
लिखना, क्रि म (सं लिखन) लिख् (तु प से), रच् (चु)-प्रतिपद् (प्रे),

पत्रे आरुह निविश (प्रे), लिपिबद्ध (वि) कृ २ (ग्रंथादि) प्रणी (भ्वा प अ), रच (चु), निर्मा (जु आ अ, अ प अ), ग्रथ् (क्र प से), निप्र,-बध (क्र प अ) ३ वर्ण् (चु), आ-अभि,-लिख, चित्र (चु)। सं पु लि(ले)खन, पत्रे आरोपणं नवेशन २ रचन, निर्माण, प्रणयन ३ आलिखन, चित्रणम्।

लिखने योग्य, वि, लेख्य, लेखनीय, लेखाह इ।

लिखने वाला, स पु, दे लेखक।

लिखवाई, स स्त्री, दे 'लिखाई' (४)।

लिखवाना, क्रि प्रे, व 'लिखना' के प्रे रूप।

लिखाई, स स्त्री (हिं लिखना) लिखन, लेखन, अक्षरविन्यास २ लिपि (स्त्री)-पी, अक्षर रचना ३ लि(ले)खन,-रीति (स्त्री) शैली ४ लि(ले)खन,-भृति (स्त्री)।

—पढ़ाई, स स्त्री, विद्याभ्यास, शिक्षा, लिखनपठनम्।

लिखाना, क्रि प्रे, व 'लिखना' के प्रे रूप।

—पढ़ाना, मु, शिक्ष् (प्रे), विद्याभ्यास कृ (प्रे)।

लिखापढ़ी, स स्त्री (हिं लिखना+पढ़ना) लेख-पत्र,-व्यवहार २ लिखितेन दृढीकरणम्।

लिखावट, स स्त्री (हिं लिखना) लिपी-पि (स्त्री), अक्षर,-विन्यास-सस्थान २ लेख लेखन, प्रणाली शैली।

लिखा हुआ, वि लिखित, लिपिबद्ध, लेख्यर्पित २ रचित, प्रणीत, निर्मित ३ चित्रित।

लिखित, वि (स) लेख लिपि,-बद्ध, अंकित, लेख्य, कृत आरूढ स पु (स न) लि(ले)खन, लेख २ लिपी-पि (स्त्री) ३ लिखितं, दे 'दस्तावेज' ४ प्रमाणपत्रम्।

—पाठक, स पु (स) हस्तलेख,-पाठक अध्येतृ।

लिटमस, स पु (अं) शैवलम्।

लिटाना, क्रि स, व 'लेटना' के प्रे रूप।

लिथड़ना, क्रि अ, व 'लथेड़ना' के कर्म के रूप।

लिपटना, क्रि अ (स लिप्त>), आ प्र-स, मन (भ्वा प अ), स परि,-स्वञ्ज् (भ्वा प से) मसक्त परिलग्न (वि) भू, श्लिष् (दि प अ) २ आलिङ्ग् (भ्वा प से), आश्लिष्, परि,स्वञ्ज् (भ्वा आ अ), उपगुह् (भ्वा उ से) २ लीन मग्न-व्यापृत निरत परायण (वि) भू। स पु, आसग, परिलगन, श्लेष २ आलिंगन, परिरंभण, परिष्वजनम्।

लिपटनेवाला, स पु, आसंगिन, संलग्नशील २ आलिंगनकर्तृ, परिरंभक ३ आलिंगित।

लिपटाना, क्रि स, व 'लिपटना' के प्रे रूप।

लिपटा हुआ, वि, परिलग्न, ससक्त, उपगूढ।

लिपड़ी, स स्त्री (स लेप>) उपनाह, उत्कारिका, प्रलेप।

लिपना, क्रि अ, व 'लीपना' के कर्म के रूप।

लिपवाना, लिपाना, क्रि प्रे, व 'लीपना' के प्रे रूप।

लिपाई, स स्त्री (हिं लीपना) प्र वि,-लेप लेपन, उपनाहन, लिप, लिंप लिपी पि (स्त्री) २ लेपन भृत्या-कर्मण्या भमण्या।

लिपि, स स्त्री (स लिपी पि, स्त्री) लिपिका, लिबी वि वि (स्त्री), अक्षर, विन्यास मस्थान रचना, लिखित, लि(ले)खनम्।

—कर, स पु (स) लेपक, लेपकार, पलगंड, लिंप लिपिकर २ लेखक, पत्रिकार, लिपिकार।

—कार, स पु (स) दे 'लिपिकर'(२)।

—बद्ध, वि (सं) लिखित, अक्षरांकित, लेखनिवेशित।

—सज्जा, स स्त्री, लेख,-साधनानि-उपकरणानि (न बहु)।

लिप्त, वि (स) चर्चित, दिग्ध, लेपान्वित, २ मग्न, लग्न, निरत, आसक्त, लीन।

लिप्सा, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलाष, ईप्सा २ लोभ, लोलुपता।

लिप्सु, वि (स) इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन् २ लोलुप-भ, गृध्नु।

लिफ़ाफ़ा, स पु (अ) पत्र, पुट-कोष-आवेष्टन अवरण २ आपानरमणीयवेश ३ आडंबर ४ भगुर भिदुर, पदार्थ।

—खुलना, मु, रहस्य विद् (कर्म), स्वरूप प्रकटीभू।

—बनाना, मु आडंबर रच (चु)।

लिबास, स पु (अ) दे 'वेश'।

लियाक़त, स स्त्री (अ) योग्यता, क्षमता २, गुण, कला ३ सामर्थ्य ४ शीलम्।

लिवाना, क्रि प्रे , दे 'लेना' तथा 'लाना' के प्रे रूप ।
लिवा लाना, क्रि स , सह आनी (भ्वा प अ)।
लिसोड़ा, स पु , दे 'लसोड़ा' ।
लिहाज़, स पु (अ) अवेक्षणं अवधान २ कृपा-दया,दृष्टि (स्त्री) अनुग्रह ३ पक्ष पात तिता ४ लज्जा, त्रपा ५ प्रतिष्ठा-मर्यादा, विचार ६ शीलसंकोच ।
—करना, क्रि अवधा (जु उ अ) २ आदृ (तु आ अ) ३ अनुग्रह (क्र् प से) ४ मर्यादा पा (प्रे पालयति) ।
लिहाज़ा, अ (अ) अत , अत एव (दोनों अव्य) ।
लिहाफ़, स पु (अ) दे 'रजाई' ।
लीक, स स्त्री (स लेखा) रेखा-खा, दण्डाकार लिपि पि (स्त्री) २ (शकटादीना) चक्र-मार्ग ३ दे 'पगडंडी' ४ यशस् (न), प्रतिष्ठा ५ रीति (स्त्री), लोकाचार , प्रथा ६ कलंक , लाञ्छनं ७ गणनाचिह्नम् ।
—पर चलना, } मु दे 'लकीर' के नीचे ।
—पीटना,
—से बेलीक होना, मु पथभ्रष्ट (वि) भू , रूढि त्यज् (भ्वा प अ) ।
लीख, स स्त्री (स लिक्षा) लिक्षा, यूकाण्ड, लि(ली)क्का, लिक्ष्य ।
लीचड़, वि (देश) अलस, मंद, मंथर २ सलग्नशील, दृढग्राहिन् ३ कृपण, कदर्य ।
—पन, स पु, आलस्य, कार्पण्य, सलग्न शीलता ।
लीची, स स्त्री (चीनी-लीचू) अलीचिका, फलभेद ।
लीडर, स पु (अ) दे 'नेता' ।
लीद, स स्त्री (देश) (गजाश्वादीना) अव स्कर , उच्चार , शमल, पुरीष, पुरुष्म् ।
लीन, वि (स) व्याप्त, समाविष्ट, व्याप्त २ तन्मय, नि मग्न, आसक्त, तद्गतचित्त, निरत, व्यापृत पर, परायण । ३ द्रवीभूत ४ तिरोहित, लुप्त ।
लीनता, सं स्त्री (स) तन्मयता, तत्परता, निमग्नता, आसक्ति (स्त्री) ।
लीपन, स पु (स लेपन) दे 'लिपाई'(१)।
लीपना, क्रि स (स लेपन) अनु प्र-वि, लिप् (तु प अ) २ दिह् (अ उ अ), उपनह् (दि प अ), अञ्ज (रु प वे)। स पु, अनु प वि, लेप -लेपन, उपनाहन, उपदेहनम् ।
—पोतना, क्रि स , शुध् (प्रे), संस्कृ ।
लीपनेवाला, स पु, लेपक, पल्गण्ड, २ उपदेहक ।
लीपा हुआ, वि , प्र-वि ,लिप्त, दिग्ध, अक्त ।
लीमू, सं पु (फ़ा) दे 'नींबू' ।
लीला, सं स्त्री (सं) क्रीडा, केलि (स्त्री), खेला, खेलनं, कूर्दनं, क्रीडनं २ विहार, विनोद , रजनं ३ शृङ्गारभावचेष्टा, विलास , काम, क्रीडा-केलि (स्त्री) ४ हावभेद (सा) ५ विचित्रव्यापार, रहस्यकृत्य ६ चरित्रा भिनय (उ रामलीला इ) ।
—गृह, स पु (स न) विलास-क्रीडा,-भवनम् ।
—पुरुषोत्तम, स पु (स) श्रीकृष्ण ।
—स्थल, सं पु (स न) क्रीडाभूमि (स्त्री)।
लीलावती, वि स्त्री (स) विलासिनी । सं स्त्री (स) भास्कराचार्यभार्या २ गणित-ग्रन्थविशेष (३ ४) रागिनी छंदो, भेद ।
लुंगी, स स्त्री (हिं लाग) •निष्कच्छ, शाटी धौतिका २ •रेखोष्णीष प, चित्रशिरो वेष्टनम् ।
लुंचन, स पु (स न) उत्पाटन, उद्धरणं, उत्कर्षण, २ पृथक् करणं, अपनयन ३ कर्तन छेदनम् ।
लुंज जा, वि (स लुंचन>) करचरणविहीन, अपांग, व्यंग, विरल, विकलांग, श्रोण । सं. पु , स्थाणु भुव , शंकु अपत्रपादप ।
लुंठक, स पु (स) लुंठा(ठा)क , दे 'लुटेरा' ।
लुंठन, स पु (सं न) अपहरणं, मोषणं, दे. 'लूटना' (सं पुं) ।
लुंड, सं पुं (सं) चौर , तस्कर ।
लुंड , स पु (सं रुंड -ड) कबन्ध ।
—मुंड, वि (सं रुंड+मुंड>) दे 'लुंज' वि तथा सं पु २ पोट्टलीवत् व्यावर्तित ।
लुंडा, वि (स रुंड>) दे 'लंडूरा' ।
लुआठी, सं स्त्री (सं उल्का+काष्ठ>) अलात, उल्का, प्रदीप्तकाष्ठम ।
लुआब, सं पुं (अ) संलग्नशील , पण्मार २ लाला, स्यन्दिनी ।

—दार, वि (अ + फ़ा) सलग्नशील, दे 'लसदार'।
लुक, सं पु (सं लोक >) वुक्कुम (स्त्री निंदा) २ ज्वाला।
लुकना, क्रि अ (स लुक् = लोप>) दे 'छिपना'।
—लुकछिपकर, मु, निभृत, रहसि, रह (सव अव्य)।
लुकमा, स पु (अ) कवल, ग्रास, गुडक।
लुक़मान, स पु (अ) प्राचीनो वैद्य विशेष।
—के पास दवा नहीं, मु, असाध्य-अप्रति कार्य-निरुपाय,-रोग व्याधि आमय।
—को हिकमत सिखाना, मु, प्राज्ञाय प्रज्ञा दा (जु उ अ), चतुरमपि चातुर्यं शिष् (प्रे)।
लुकाट, स पु (स लकु(क)च) (वृक्ष) लिकुच, डहु, कदय, दृढवल्कल, वहु। २ (फल) लकु(कु)चं, डहु ड।
लुकाना, क्रि स (हिं लुकना) व 'छिपना' के प्रे रूप।
लुगदी, सं स्त्री (देश) आर्द्रगोलक-कम्।
लुगाई, स स्त्री (हिं लोग) नारी २ पत्नी।
लुचपन, सं पु (हिं लुच्चा) लपटता, कामुकता २ दुर्वृत्त, दुराचार, दौर्जन्यम्।
लुच्चा, स पु (हिं लुचकना, स लुचन से) लुचक, अपहारक, दुर्वृत्त, दुराचारिन्, कुपथ गामिन् २ लपट, कामुक ३ क्षुद्र, दुष्ट, निर्लज्ज [लुच्ची (स्त्री)]।
लुची, स स्त्री (सं चूर्णिका) पक्वान्नभेद।
लुटना, क्रि अ, व 'लूटना' के कर्म के रूप।
लुटवाना, क्रि स व 'लूटना' के प्रे रूप।
लुटाना, क्रि स (हिं लूटना) व 'लूटना' के प्रे रूप। २ अमित व्यय् (चु), अप व्यय-अतिव्यय कृ अपव्यय् (चु) ३ मूल्य विना दा ४ मुष्टिभि परिक्षिप् (तु प अ) पर्यस् (दि प से)। सं पु, अप-अति अमित-व्यय २ मुधा विशेष।
लुटानेवाला, स पु, अपव्ययिन्, विक्षेपिन्।
लुटार, वि (हिं लुटाना) अप अति वृथा, व्ययिन्, मुक्तहस्त, अधनाशिद्।
लुटिया, सं स्त्री (हिं लोटा) लघुकमडलु।
—डुबाना, मु, अपमान व्यय कृ (प्रे)।
लुटेरा, स पु (हिं लूटना) मागनस्कर, हठमोषक, पाटच्चर, परिपन्थिन्, लुण्ट(टा,ठा)क २ वचक, प्रतारक।
लुढकना, लुढ़ना, क्रि अ (स लुंठन) वि लुठ् (तु प से), विलुठ् (भ्वा दि प से) २ स्रु (भ्वा प अ), बहि पत् निर्गल् (भ्वा प से), नि सृ (भ्वा प अ)। स पु वि, लुठन-लोठन २ बहि पतन, निगलन, च्यवनम्।
लुढ़काना, लुढाना, क्रि स, व 'लुढकना' के प्रे रूप।
लुढ़ियाना, क्रि स (हिं लोढिया) वर्त्तिका कार सिव् (दि प से)।
लुतरा, स पु (देश) परोक्षनिंदक, पिशुन, कलहसाधक। वर्णोप २ अपकारक, कुचे ष्टक। [लुतरी (स्त्री)]।
लुत्फ़, स पु (अ) आनद, मोद २ रस, आ,स्वाद ३ उत्तमता ४ कृपा ५ रोचकता।
लु(लो)नाई, स स्त्री (हिं लोना) दे 'लावण्य'(२)।
लुपरी-ड़ी, सं स्त्री (स लेप >) दे 'लिपडी' २ द्रवप्राय भक्ष्य, लप्सिका।
लुप्त, वि (स) गुप्त, प्रच्छन्न, निभृत २ अन्त र्हित, तिरोभूत, अदृष्ट ३ नष्ट, ध्वस्त। स पु, लुप्त, चौर्यधनम्।
लुब्ध, वि (स) गृध्नु, गर्द्धन, दे 'लोभी'। २ मुग्ध, मोहित, हृत। सं पु, दे 'लुब्धक'।
लुब्धक, स पु (स) व्याध, दे. 'शिकारी' २ लपट ३ गृध्नु।
लुब्बलुबाब, स पु (अ) तत्त्व, सार, साराश २ दे 'गूदा'।
लुभाना, क्रि अ (हिं लोभ) विलुभ् (प्रे), दुराचारे-कुमार्गे प्रवृत् (प्रे) २ वि, मुह् (प्रे), प्रलुभ् (प्रे) ३ सम्, आकृष् (भ्वा प अ)। क्रि अ, दे 'रीझना'।
लुहडा, स पु (स लोहहंडी) *अयस्थाली।
लुहा(हं)गी, स स्त्री (स लोहाग>) *लोहांगी, लोहमुखी यष्टी छि (स्त्री)।
लुहार, स पु (सं लो(लौ)हकार) अयस्कार, व्योकार, कमार, कमकार (लुहारिन स्त्री)।
लुहारी, स स्त्री (हिं लुहार) लो(लौ)हकारी,

जयस्वारी २ लोहकारव्यवसाय, कर्मारता, अय शिल्पम्।

लू, स स्त्री (हिं लूक) घर्मवात, उष्णानिल तप्तपवन।

—चलना, क्रि अ, उष्णानिल वा(अ प अ)।

—मारना या लगना, मु, घमवातेन व्यथ (भ्वा आ से)।

लूक, स स्त्री (स लोक>) ज्वाला २ दे लुआठी' ३ दे 'लू' ४ उल्का।

लूट, स स्त्री (हिं लूटना) वि लुंट(ठ)न, बलाद अपहरण मोषण, लुटा ठा, लुठित, लुंगी ठी टि ठि (स्त्री) २ अन्याय्य-व्यवहार ३ लोत, लोत्र लोप्त्र त्री, स्तेय-अपहृत लुठित, धन, लुपम्।

—का माल, सं पु, दे 'लूट' (३)।

—खसोट पाट, स स्त्री लुठनध्वसन, लुठालु ठि (न)।

—खूट, मार, स स्त्री मोषणहिंसन लुठन मारणं लुठामारम्।

—पड़ना या मचना, क्रि अ, व 'लूटना' के कर्म के रूप।

—मचाना, क्रि स, दे लूटना'।

लूटना, क्रि स (सं लुठन) वि लुंट-लुठ् (भ्वा प से, चु) लुट (भ्वा दि प से), बलात् अपहृ (भ्वा प अ), प्रसह्य मुष् (क्र प से) २ चुर् (चु) मुष, अपहृ ३ वि ध्वस नश् (प्रे) ४ छलेन अन्यायेन वा आदा (जु आ अ)-हृ ५ अत्यधिक अनुचित, मूल्य आदा ६ मुह् (प्रे), वशी कृ मनो हृ। स पुं, दे 'लूट'।

लूटने योग्य, वि, लुठनीय, लुंठितव्य।

लूटनेवाला, स पु, दे 'लुटेरा'।

लूटा हुआ, वि, लुटि(ठि)त, बलात् अपहृत मुषित।

लूता, स स्त्री (सं) मर्कटक, ऊर्णनाभि, दे 'मकड़ी' २ पिपीलिका ३ मर्कटमूत्र स्पर्शज त्वग्रोग।

लूती, सं स्त्री, दे 'लुआठी'।

—लगाना, मु, कलह जन् (प्रे), दे 'चुगली करना'।

लून, वि (सं) छिन्न, कृत्त।

लून, स पुं (सं लवण) दे 'नमक'।

लूनिया, वि (हिं लून) लवण क्षार। स पु, लवणकार।

लूम, स पु (स ल) लाङ्गूलं, पुच्छम्।

लूमड़ी, सं स्त्री, दे 'लोमड़ी'।

लूला, वि (स लून>) छिन्न-लून पाणि-हस्त-कर २ अपाग, व्यंग ३ असक्त, असमर्थ।

लेंडी, स स्त्री (स लेंड>) बद्धमलं, •विष्ठा वर्ति (स्त्री) २ दे 'मेंगनी'।

लेंस, स पुं (अ) वीक्षम्।

—मैग्निफाइङ्ग लेंस, वृहद्दर्शकवीक्षम्।

लेंहड़ा, सं पु (देश) पशु वृन्द-यूथ कुल समज।

ले, लेकर, अव्य (हिं लेना) आरभ्य, प्रभृति, आ, (पचमी से भी उ, गाव से ले(कर)= आग्रामात्, ग्राम त कल से ले(कर) = श्व (प्रभृति आरभ्य) २ गृहीत्वा, आदाय।

लेई[1], स स्त्री (सं लेप>) सद्द्लेपकलेप, २ •सुपेष्टकचूर्णलेप।

लेई[2], स स्त्री (सं लेह) अवलेह, दे २ लप्सिका, द्रवप्रायसत्त्व।

लेकिन, अव्य (अ) किंत, परतु २ तथापि।

—अगर, अव्य (अ + फ़ा) किंतु, यदि।

लेक्चर, सं पु (अ) व्याख्यान, भाषणं २ प्रपाठ, अध्यापनम्।

—बाज़ी, सं स्त्री (अ + फ़ा) व्याख्यान प्रचुरत्वम्।

—झाड़ना, मु, सोत्साह व्याख्या (अ प अ) अथवा अधि इ (प्रे, अध्यापयति)।

लेक्चरार, सं पुं (अं लेक्चरर) व्याख्यातृ, उपदेशक, वक्तृ २ अध्यापक, उपाध्याय।

लेक्टोमीटर, सं पुं (अं) दुग्धमापकम्।

लेख, सं पुं (सं) लिपी(बी)-पि (बि) (स्त्री) २ लिखित-लिपिबद्ध-विषय वार्ता ३ प्रस्ताव, निबंध ४ दे 'लिखाई' (१-३)। ५ गणनं, संकलनम्।

लेखक, सं पु (सं) प्रबंधकार, पुस्तक-लेखक रचयितृ प्रणेतृ २ लिपि(पी-बी) कार, मसिपण्य, पंजीकार, लिपिक, वाणिज।

लेखन, स पु (सं न) दे 'लिखाई'(१)। २ लेखन-कला विद्या ३ गणनं, संख्यानं ४ भूर्जत्वच् (स्त्री)।

लेखनी, सं स्त्री (सं) अक्षर-वर्ण, तूली

लिपि कल्प, चित्र, कराश्रय, वर्णिका, दस्री।
लेखा, म पु (सं लेख >) गणन, सत्यान, ...ना २ व्ययमूल्य निरूपण अनुमान ३ आय-व्यय-देयादेय, विवरण ४ अनुमान विचार।
—डालना, मु, आयव्ययपत्रिकायां नामन् (न) लिख (त प मे)।
—पूरा या साफ करना, मु, अवशेष शुध (प्रे)।
लेखिका, म स्त्री (स) ग्रथकर्त्री, पुस्तक प्रणेत्री २ लिपिकारी, लिपिज्ञा।
लेखे, क्रि वि (हिं लेखा) विचारेण २ मध्ये।
लेख्य, वि (म) लि(ले)खितव्य, ले(लि)खनार्ह, ले(लि)खनीय। स पु (स न) लिखित लिखितम्, विषय, लेख २ दे 'दस्तावेज'।
लेजिस्लेटिव काउंसिल, म स्त्री (अ) व्यवस्थापकसभा।
लेट¹, वि (अ) चिरयित, विलंबित, काल समय अतीत।
लेट², म स्त्री (देश) दे 'पाव'।
लेटना, क्रि अ (हिं लेटना) संविश (तु प अ), शी (अ आ मे) २ विश्रम् (दि प से) ३ दे 'मरना'। म पु, संवेश शयन, शयनम्।
लेटनेवाला, स पु, संवेशोत्सुक शयालु।
लेटर, म पु (स्त्री) (अ) पत्र, लेख, लेख्य, पत्रिका, पत्री पत्रक लिखित, संदेशपत्र। २ अक्षर, वर्ण, मातृका अभिलिखान।
—बाक्स, स पु (अं) पत्रपेटिका।
लेटाना, क्रि स, व 'लेटना' के प्रे रूप।
लेटा हुआ, वि, सविष्ट, शयान, शयित।
लेड, स पु (अ) सीस, सीसकम्, दे 'सीसा'।
लेडी, स स्त्री (अ) महिला, कुलांगना, आर्या २ नारी, रमणी ३ लार्डोपाधिधर स्य पत्नी।
—डाक्टर, सं स्त्री (अ), जीवदा, चिकित्सा जीविनी, चिकित्सिका, रोगहारिणी।
लेन, स पु (हिं लेना) अदान, ग्रहण, धारण २ दे 'लहना' (१-२)।
—दार, स पु (हिं + फा) उत्तमर्ण, ऋणद, महाजन।
—देन, म पु (हिं) आदानप्रदान, व्यवहार २ कौसीद, वृद्धिजीवनविद्या।
लेना, क्रि स (स लभन) आदा (जु आ अ) प्रतिग्रह (तु प मे), प्रतिपरि, ग्रह (क्र प मे) २ अधिगम् (भ्वा प अ) आसद् (प्रे) प्राप् (स्वा प अ), लभ (भ्वा आ अ) ३ धृ (भ्वा प अ, चु) अव-आ-लंब (भ्वा आ मे) ग्रह ४ जि (भ्वा प अ) अभिभू (भ्वा प से) वशीकृ ५ क्री (क्र् उ अ) ६ ऋण ग्रह् ७ अके-क्रोडे निधा (जु उ अ) ८ स्वी-अगी-कृ प्रतिपद् (दि आ अ) ९ प्रत्युद्-नम् व्रज (भ्वा प से) या (अ प अ) सत्कृ समनु-संभू (प्रे) १० कर्यभार स्वीकृ ११ रुचि (स्वा प अ) संग्रह (क्र प मे) १२ उपहस् (भ्वा प से), व्यंग्योक्तिभि लज्ज (प्रे)। स पु, आदान ग्रहण, प्रतिग्रह, अधिगमन, प्रापण आसादन, आलंबन, धारण, ऋणादान, अंगीकरण वशीकरण, सचय-यन, क्रयण, क्रय इ।
लेने योग्य, वि (स) आदेय, ग्राह्य, ग्रहीतव्य, प्राप्य, आसादनीय क्रेय, क्रयणीय इ।
लेने वाला स पु, आदातृ, गृहीतृ, अधिगतृ, आसादयितृ, अंगीकर्तृ, क्रेतृ, ग्राहक।
लिया हुआ, वि (स) आत्त, आदत्त, गृहीत, प्राप्त अधिगत, धृत, अंगीकृत, वशीकृत, क्रीत इ।
ले आना, मु, दे ३ 'लाना'।
ले च ना या ले जाना, मु, आदाय गम् २ आत्मना सह नी (भ्वा प अ)।
ले डूबना, मु, परमपि आत्मना सह क्षै अवमद्-नश (प्र)।
ले देकर, मु, सर्वं मकलय्य २ कृच्छ्रेण, कथमपि।
लेना एक न देना दो, मु, न कोऽप्यर्थ, न किमपि प्रयोजनम्।
लेना देना मु, दानादान, आदानप्रदान २ कौसीद, वृद्धिजीवनम्।
लेने के देने पड़ना, मु, भद्रस्याभद्र फल, इष्टाशायामनिष्टप्रसग।
ले भागना, मु, सह नीत्वा पलाय् (भ्वा आ से), अपहृ (भ्वा उ अ)।

ले भरना, मु दे 'लि डूबना'।
लेन्स, स पु (अ) काच।
लेप, स पु (स) अभि अजन, उपदेह, समा लभ, उपनाह, प्रलेपपट्टिका २ लेपन, सुधा ३ लेपस्तर ४ उद्वर्तन, दे 'उबटन' ५ सपर्क, सम्बन्ध।
—चढ़ाना, क्रि स, दे लीपना'।
लेपक, स पु (स) लेपिन्, लेपकार, पल गट, लेप्यकृत्।
लेपन, सं पु (सं न) दे 'लिपाइ' (१)।
लेपना, क्रि स, दे 'लीपना'।
लेपालक, स पु (हिं लेना+पालना) दत्तक, दे।
लेबर, स पु (अ) परि,श्रम, आयाम, प्रयाम २ श्रमिक-कर्मकर, वर्ग।
—पार्टी, स स्त्री (अं) श्रमिकदल लम्।
—यूनियन, स स्त्री (अ) श्रमिक-कर्मकर, सघ-समाज सभा।
लेबुल, स पु (अ) लेपपत्रम्।
लेबोरेटरी, सं स्त्री (अ) प्रयोगशाला, २ रसायनशाला।
लेमोनेड, स पु (अ) जबीर पेय पानकम्।
लेरुवा, म पु (सं लेह >) दे 'बछड़ा'।
लेवा, वि (हिं लेना) आ,-दातृ-दायक।
—देवा, स पु, आदानप्रदानम्।
नाम—, स पु, पुत्र २ दायाद।
लेश, स पु (स) दे 'लव' २ चिह्न, लक्षण ३ सबध ४ अलकारभेद (सा) २ अल्प, स्तोक।
—मात्र, वि (स) अणु-अल्प,-मात्र (-त्रा, त्री स्त्री)।
लेस, सं पु, दे 'लासा' (१)।
—दार, वि (हिं+फा) दे 'लसदार'।
लेहन, सं पु (स न) जिह्वया स्वादनस्व दनरसनम्।
लेहाज़ा, क्रि वि (अ) अत, अतएव।
लेहिन, स पु (स) टकणन, रसशोधन, बिडम्।
लेह्य, वि (सं) लेहनीय स्वाद्य। स पु (सं न) दे 'अवलेह' २ लेहनीयाहार ३ अमृतम्।
लैन, सं स्त्री, दे 'लाइन'।
लैसन्स, स पु (अ लाइसेंस) अधिकारपत्र अनुज्ञालेख।
लैस, म पु (अ लेस) सज्ज, सन्नद्ध, सिद्ध २ जालाभरण, दे 'फीता'।
लौंद, सं पु, दे 'मलमास'।
लौंदा, स पुं (स लोष्ट ष्ट) आर्द्र पिंड (-ड)-घन, क्लिन्नगोल (-ल) लोष्ट (-ष्ट)।
लो, अव्य (हिं लेना) दृश्यता प्रेक्ष्यता, अवलोक्यता। (केवल इन्हीं रूपों में)।
लोई[१], स स्त्री (स लोमीय) लोमी, नीशार, अविकं ऊर्णायु कबलभेद।
लोई[२], स स्त्री, दे 'पेडा' (गूधे हुए आटे का)।
लोक, स पु (स) भुवन, भूभुव स्वरादय चतुर्दशस्थानविशेषा २ जगत् (न), जगती विश्व, चराचर, ब्रह्मांड, भुवन, विष्टप ३ निवास, वास ४ दिशा, प्रदेश ५ लोक-का, जन-ना ६ समाज ७ प्राणिन्।
—कटक, स पु (स) जनपीडक।
—तत्र, स पु (स न) जनप्रजा-तत्रम्।
—त्रय, स पु (स न) त्रिभुवन, त्रैलोक्य, त्रिलोकी।
—नाथ, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ विष्णु ३ शिव ४ बुद्ध ५ लोकपाल।
—पति, स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ नृप ३ लोकपाल।
—परलोक, स पु (स-कौ) उभौ लोकौ, लोकद्वयम्।
—पाल, स पु (स) दिक्पाल २ नृप।
—प्रवाद, स पु (सं) जन-लोक,-रव श्रुति-(स्त्री)-प्रवाद।
—मर्यादा, सं स्त्री (सं) लोक, आचार-व्यवहार, जगद्रीति (स्त्री)।
—यात्रा, सं स्त्री (स) जीवनं, प्राणधारणं।
—विश्रुत, वि (सं) जगद्विख्यात। २ व्यव हार, लौकिककृत्यानि (न बहु)।
—श्रुति, सं स्त्री (सं) दे 'लोकप्रवाद'।
—संग्रह, स पुं (सं) लोकरंजन, रजनं प्रसादनं २ लोकहितैषणा।
लोकातर, सं पु (सं न) परप्रेत-लोक।
लोकाचार, सं पु (सं) जगद्रीति रूढि (ढी) लौकिक, लोक,-मार्ग-व्यवहार।

लोकाट, स पु (चीनी लु+क्यू) लवक्, चैनन् ।

लोकालोक, स पु (स) चक्रवाल पर्वत विशेष (पुराण)।

लोकैषणा, स स्त्री (स) अभ्युदयाभिलाष २ ख्यातिलिप्सा।

लोकोक्ति, स स्त्री (स) आभाणक, जनवाद लौकिक-न्याय २ अलङ्कारभेद (सा०)।

लोकोत्तर, वि (स) अलौकिक, असाधारण अपाधव लोकातिशायिन्, दिव्य, अति, विलक्षण अद्भुत।

लोग, स पु (स लोक) लोक-या जन ना, मानवा, मनुष्या, नरा, मानुषा, मर्त्या, मनुजा (स्व बहु)।

लोच[1], स स्त्री (हिं लचक) दे 'लचक २ कोमलता, मृदुता।

लोच[2], स पु [स रुचि (स्त्री)] अभिलाष, इच्छा।

लोचन, स पु (स न) नयन, नेत्रम्, दे 'आँख'।

लोट, स स्त्री (हिं लोटना) लु(लो)ठन, लोटन, वेल्लन, लुठा, लुठा, लोट ।

—पोट, वि, लु(ठि)त, वल्लित, स्खलित २ मुग्ध, बद्धभाव, अनुरागिन् ३ वि, आकुल ४ व्यस्त, विपर्यस्त।

—जाना, मु, मूर्च्छ् (भ्वा प से, मूर्च्छति) २ मृ (तु आ अ) ३ विभ्रम् (दि प से) ४ चकितो मुग्धो वा भू।

—पोट होना, मु, (पीडातिरेकेण) वि, लुठ (तु प से, भ्वा आ से) २ भाव-अनुराग बध (क प अ), ३ सहसा विलुप्य वा मृ (तु आ अ)।

—होना, मु, अनुरक्त-आसक्त (वि) भू २ व्याकुलीभू।

लोटन, स पु (स न) दे 'लोट' २ *लोट नकपोत ३ लागलभेद ४ मार्गकरा।

लोटना, क्रि अ (स लोटन) लुट (भ्वा दि प से), लुठ (भ्वा आ से, तु प से) २ पर्यवर्त परिवृत् (प्रे) ३ आकुल-व्याकुल (वि) भू। स पु तथा भाव, दे 'लोट' सं स्त्री ।

लोटा, सं पु (हिं लोटना) कमण्डलु, दे ।

लोडन, स पु (स न) मथन, आविलोडनम्, मथ ।

लोडित, वि (स) मथित, आविलोडित, व्याघट्टित।

लोढ़ा, स पु, (स लोष्ट इ>) दे 'बट्टा'।

लोथ[?], स स्त्री (स लोष्ट इ>) शव दे ।

—पोथ, मु गति, शिथिल श्रान्त-खिन्न ।

लोधड़ा, स पु (हिं लोथ) पलल-माम, पिण्ड (ड)।

लोध, स स्त्री (स लोध्र)(लाल) लोध्र, रक्त, मार्जन, तिरीट तिंदुक । (सफेद) शुक्र, सहा शबर लोध्र, शावर ।

लोन, स पु (स लवण) दे 'नमक' २ लावण्य विशिष्टसौन्दर्यम्।

लोना, वि (हिं लोन) लवण दे 'नमकीन' २ सुन्दर, चारु। स पु, *कुड्य-भित्ति, लवण ३ लवणातिकुड्यस्य धूलि (स्त्री)।

लोनिया, स पु (हिं लोन) दे 'लुनिया'। स पु ।

लोप, स पु (स) वि, नाश, क्षय, वि, ध्वस ३ अदर्शन, तिरोभाव, अतर्धान ३ अभाव, अविद्यमानता ४ वर्णविनाश (व्या) ५ विच्छेद, विराम ।

लोपामुद्रा, स स्त्री (स) अगस्त्यमुनिपत्नी, लोपा, वरप्रदा, कौशीतकी।

लोबान, स पु (अ) सुगंधिनिर्यासभेद *लोबानम्।

लोबिया, स पु (स लोभ्य = मूँग) क्षुधाभिजनक, चपल(व)ल, चर्वर, सुकुमार, शिम्बिका, दीर्घ-शिम्बीबीज ।

लोभ, स पु (स) परद्रव्याभिलाष, गृध्या, गृध्नुता, स्पृहा, लौल्य, लिप्सा, गर्द्ध, तृष्णा, वाञ्छा, दशा, लोलुपता मता, इच्छा, वांछा, मनोरथ, अभिलाष, काम २, कार्पण्य, कदर्यता।

लोभित, वि (स) मोहित, आकृष्ट, हृतचित्त, लुब्ध, मुग्ध।

लोभी, वि (स-भिन्) गृध्नु, गर्द्धन, लुब्ध, लोलुभ-प, लिप्सु, अभिलाषुक, तृष्णक।

लोम, स पु (स) लोमन् (न) दे. 'रोंगटा' २ लांगूल, पुच्छम्।

—हर्षण, स पु (स न) रोमांच, दे। वि, दे 'रोमहर्षण'।
लोमड़, स पु (स लोम >) *लोमश, *लोमाश, दे 'गीदड़'।
लोमड़ी, स स्त्री (हि लोमड़) लोमशा, लोमाशिका, दे गीदड़ी (संस्कृत में गीदड़ लोमड़ तथा गीदड़ी-लोमड़ी के लिए समान शब्दों का ही प्रयोग होता है।)।
लोमश, स पु (स) ऋषिविशेष २ मेष, दे 'भेड़ा'। वि, बहुलोमान्वित, केशल, केशिक २ ऊर्णाप्रिय (-यी स्त्री), औण (णी स्त्री)।
—मार्जार, स पु (स) गन्धमार्जार, पूतिक, मूत्रपातन।
लोरी, स स्त्री (स लोल >) निद्राशयन, गीतिका।
—देना, क्रि स, निद्रागीतिकया स्वप् (प्रे)।
लोल, वि (स) सस्प, कम्पमान, वेपमान, कम्पित, कप २ चचलचित्त ३ क्षणभगुर, पम्, क्षणिक ४ उत्सुक, उत्कठित।
लोला, स स्त्री (स) जिह्वा, रसना २ लक्ष्मी श्री (स्त्री)।
लोलुप, वि (स) दे 'लोभी'।
लोलुपता, स स्त्री, दे 'लोभ'।
लोशन, स पु (अ) व्रणक्षालक, धावनौषध, *औषधजलम्।
लोष्ट, स पुं (स पु न) लोष्ट, मृत्तिकाखड, दलि (पु स्त्री) दल्नी २ अश्मखण्ड।
लोह, सं पु (स लोह ह) लौह, दे 'लोहा' २ रुधिर ३ रक्तराग।
—कांत, सं पुं (सं) अयस्कान्त, लोह, चुबक।
—कार, सं पु (सं) अयस्कार, दे 'लुहार'।
—किट्ट, स पु (स न) लोह,मल, मडूर, लोहज, कृष्णचूर्ण, अयो-मल-रजस (न)।
—चून,
—चूर, } स पु (स लोहचूर्ण) काष्ठभेद।
—चूर्ण,
—द्रावी, सं पु (सं वित्) लोहित, टकण न दे सोहागा'।
लोहांगी, सं स्त्री (सं लोहांगी) लोहदार्थ, यष्टी-दंड-लगुड।
लोहा, स पुं (सं लोह ह) कृष्ण, अयस् (न) आयस, काल, कालायस, लौह, अश्म गिरिसार, दृढ, पिंड २ अस्त्र, शस्त्र, ३ लोहमयद्रव्यम्। वि, रक्त, लोहित २ अति, दृढ-कठोरम्।
लोहे का, वि, लौह (ही स्त्री), लौहज, अयो, मय (-यी स्त्री), आयस (सी स्त्री), लोह, आयस,।
लोहे का चना, मु, सुदुष्कर कर्मन् (न)।
लोहे के चने चबाना, मु, सुदुष्कर कम सपद् (प्रे)।
—गहना या लेना, मु, युध् (दि आ अ) दे 'लड़ना'।
—बजना, मु, युद्ध प्रवृत् (भ्वा आ से)।
(किसीका)—मानना, मु, (अन्यस्य) प्रमुखं *स्वीकृ २ विपरा, जि (कर्म)।
लोहार, स पु (स लोहकार) दे 'लुहार'।
—की स्याही, स स्त्री, दे, 'हीराकसीस'।
लोहित, वि (स) रक्त, शोण। स पु (सं) मगलग्रह, कुज, भौम २ रक्तवर्ण। (स न) रक्त, रुधिरम्।
—चदन, स पु, केसर-र, कश्मीरज, कुकुमम्।
—नयन, वि, (सं) रक्तलोहित, नेत्र-नयन ईक्षण, कुपित, क्रुद्ध।
—शतपत्र, स पु, कोकनद, रक्त, उत्पल नीरजम्।
लोहिया, सं । (हिं लोहा) लोहपण्य विक्रेतृ, लोहविक्रयिन् २ लोहितवर्ण ३ लोह गुल्या।
लोहू, स पु (स लोहित) दे 'रक्त' तथा 'लहू'।
लौं, अव्य (हिं लग) दे 'तक' २ सदृश, तुल्य।
लौंग, स पु (स लवग) देवकुसुम, श्री, प्रसून पुष्प मख, लवगक, दिव्य, शायर, लव २ लवग (घ्राणभूषणभेद)।
लौंडा, सं पु (हिं छोना) (लावण्यविशिष्ट) बालक दारक। वि, अबोध, अज्ञ २ चपल, चचल।
—पन, सं पुं, बाल्य २ चापल्यम्।
लौंडी दिया, स स्त्री (हि लौंडा) कन्या, कुमारी २ पुत्री ३ दासी।
लौंडेबाज़, वि (हि + फा) पुमैथुनकारिन्।

लँडिवाज़ी, सं स्त्री (हिं + फ़ा) पुमैथुनम् ।
लौ, स स्त्री (हि लपट) कील-ला अग्नि ज्वाला(ल)ज्वाला, जिह्वा, शिखा २ दीपशिखा ।
लौ, स स्त्री (हि लाग) अभिलाष राग २ चित्तमनो, वृत्ति (स्त्री) ३ कामना, वाछा ।
—लगना, क्रि अ, उत्पन्न (वि) भू २ (भक्त्यादिषु) लीन-मग्न-निरत(वि) भू ।
—लगाना, क्रि स, सतत अभिलष् (भ्वा प मे) २ आत्मान भक्त्यादिषु निमस्ज्-आसञ् (प्रे) ३ आक्रि (प्रे) ।
—लीन, वि (स) मग्न, आसक्त, निरत ।
लौकिक, वि (स) सासारिक, ऐहिक, प्रापचिक, लौक्य २ व्यावहारिक आचारिक ।
लौकी, स स्त्री (स लाव-बू दोनों स्त्री) अलाबु बू (स्त्री) दे 'कद्दू' ।
लौटना, क्रि अ (हिं उलटना) दे 'वापस आना' तथा 'वापस जाना' ।
लौटफेर, स पु (हिं लौटना+फेरना) बृहत् महा, परिवर्त परिवर्तनम् ।
लौटाना क्रि स, दे 'वापस करना' ।
लौह, स पु (स न) दे 'लोहा' (१) । वि, दे 'लोहे का' ('लोहा' में) ।

व

व, देवनागरीवर्णमालाया ऊनत्रिंशो व्यजनवर्ण, वकार ।
वंक, वि (स) अराल, वृजिन, कुचित, वक्र, आनत, जिह्म, वेल्लित, आभुग्न, कुटिल । स पु (स) नदीवक्रम् ।
वंकिम, वि (स) ईषद्-किंचित्,-अराल-वक्र-वृजिन ।
वंग, स पु [स वगा (पु बहु)] वंगप्रांत (=बगाल) । (स न) त्रपु, त्रपु (न), रग, नागन, वस्तीर २ सीसनमक सीसपत्रम् ।
—भस्म, स पु [स भस्मन् (न)] रगभस्मन् (न) ।
वगन, स पु, दे 'बैंगन' ।
वचक, वि तथा स पु (स) कपटिन्, प्रतारक (, धूर्त () ।
वचना, सं स्त्री (स) वचन, प्रतारणा, माया, कपट, कैतव, वचथ ।
वचित, वि (सं) प्रतारित, विप्रलब्ध २ हीन, रहित ।
वदन, स पु (स न) वदना, प्रणाम, प्रणति (स्त्री) नमस्कार २ पूजा, अर्चा, आराधना ३ स्तुति-नुति (स्त्री) ।
—वार, स स्त्री (स वदनमाल्य) वदनमाला स्त्रिया, तोरणस्रज (स्त्री) ।
वदना, स स्त्री (स) दे 'वदन' (१ ३) ।
वदनीय, वि (स) नमस्य, वद्य २ पूज्य, अर्चनीय ३ स्तुत्य, नाम्य ।
वदी, स पु (स न्दिन्) स्तुतिपाठक, मागध, चारण, वदथ २ कारागुप्त, बदी दि (स्त्री) ।
—गृह, सं पु (सं न) कारा, कारागृह गारम् ।
वंद्य, वि (स) दे 'वदनीय' ।
वंध्या, स स्त्री (स) दे 'बध्या' ।
वश, स पु (स) कुल, अन्वय, अन्ववाय, गोत्र, अभिजन २ जाति (स्त्री), वर्ग ३ कुटुब, गृहजन, पुत्रकलत्रादीनि (न बहु) ४ वेणु, तृणध्वज, दे 'बाँस' । ५ मुरली, वशी ६ पृष्ठास्थि (न), पृष्ठवश ७ भुजादीना दीर्घास्थि (न) ।
—ज, स पु (सं) पुत्र २ सतान ।
—धर, सं पु (स) वशज, सतति (स्त्री) ।
—लोचन, सं पु [स-रोचना(रो)चना]वशशर्करा, वशजा, वाशी शुभा ।
—हीन, वि (स) निर्वंश २ अपुत्र ।
वंशानुक्रम, स पु (स) वश, अन्वय क्रम, परम्परा (स्त्री)-अवलि विततिः ।
वंशावली, स स्त्री [स -ली-लि (स्त्री)] वश, क्रम-श्रेणी परपरा ।
वशी, स स्त्री (स) वशिका, मुरली दे ।
—धर, स पु (स) मुरलीधर, श्रीकृष्ण
व, अव्य (फ़ा) च, दे 'और' ।
वक स पु (स) दे 'बगला' २ राक्षस विशेष ।
—वृत्ति, स स्त्री (अ) बिडालवृत्ति, दभ ।
वकालत, स स्त्री (अ) अभिभाषकता त्व, वाक्कौशल्य, व्यवहारदर्शकतात्व २ परप्राति निध्य, परकार्यसाधकत्व ३ दूतकर्मन् (न) ४ परपक्षमडनम् ।

—करना, क्रि अ, परिपक्ष समर्थ (चु) २ अभिभाषकवृत्ति उपजीव् (भ्वा प से)।
—नामा, स पु (अ+फ़ा) अभिभाषकता पत्रम्।
वकील, स पु (अ) अभिभाषक, व्यवहार दर्शक, वाक्कील, पक्षवादिन् २ राज, दूत ३ प्रतिनिधि, प्रतिहस्तक ४ पर पक्ष पोषक।
वकुल, स पु (स) दे 'बकुल'।
वकूफ़, स पु (अ) ज्ञान २ बुद्धि (स्त्री)।
बे—, वि (फ़ा+अ) निर्बुद्धि।
वक्त, स पु (अ) समय, काल २ अवसर ३ अवकाश ४ ऋतु ५ मृत्युकाल।
—की चीज़, स स्त्री, कालानकूलो राग।
—बे वक्त, क्रि वि कालऽकाले वा, समयेऽसमये वा।
—काटना, मु, येन केन प्रकारेण काल या (प्रे यापयति) २ मनो विनुद् (प्रे)।
—पड़ना, मु, आपद् आपत् (भ्वा प से), उपनम् (भ्वा प अ)।
वक्तन् फ़ौवक्तन, क्रि वि (अ) कदा कदा, यदा कदा २ यथाकालम्।
वक्तव्य, वि (स) कथनीय, वचनीय २ हीन, वर्हित। स पु (स न) कथन, वचन २ व्याख्यानम्।
वक्ता, स पु (स वक्तृ) वाग्मिन्, वाक्पटु २ व्याख्यातृ, उपदेशक ३ कथ(थि)क।
वक्तृता, सं स्त्री (स) वक्तृत्व, वाग्मिता, वाक्पाटव, भाषणशीलत्व २ व्याख्यान, भाषण, कथनम्।
वक्त्र, सं पुं (स न) मुख आस्य, लपनं, वदनम् २ चञ्चु—चू (स्त्री) ३ छन्दस्, प्रलम्बसमम् ४ वाणाग्रम् ५ कार्यारम्भ ६ परिधानभेद।
—प, स पु (सं) ब्राह्मण, विप्र २ दन्त, दशन, रदन, खादन।
—तुंड, सं पु (स) गणेश, गजवक्त्र।
—शोधन, सं पु (स न) मुखशुद्धि (स्त्री) २ निंबुक, जंबीरम् ३ मातुलुंगम्।
वक्फ़, स पुं (अ) परोपकाराय दान २ धर्मार्थ उत्सृष्टा संपद् (स्त्री)।
—नामा, सं पुं (अ+फ़ा) दानपत्रम्।
वक्फ़ा, स पु (अ) अवकाश २ उद्योग विश्रान्ति (स्त्री)।
वक्र, वि (स) दे 'वक' २ छलिन्, कपटिन्, धूर्त। स पु) शनैश्चर २ मंगल, भौम। (स न) नदीवक्र, वक्र।
—गामी, वि (स) कुटिलगति २ शठ, कुटिल।
—तुंड, स पु (स) गणेश २ शुक।
वक्रता, स स्त्री (स) जिह्मता, आनति (स्त्री), कौटिल्य २ छल, कपट, शाठ्यम्।
वक्रोक्ति, स स्त्री (स) काकूक्ति (स्त्री) २ शब्दालङ्कारभेद (सा) ३ चमत्कृत कुटिल उक्ति (स्त्री)।
वक्ष स्थल, सं पु (स न) उरस्-वक्षस् (न), अंक, उत्सङ्ग, उर स्थलम्।
वग़ैरह, अव्य (अ) आदि, प्रभृति।
वचन, स पु (स न) भाषा, सरस्वती, वाणी दे २ उक्ति (स्त्री), कथन भाषण, वाक्य ३ एकत्वादिबोधक शब्दरूपभेद (व्या) ४ प्रतिज्ञा, संगर।
वजह, स स्त्री (अ) कारणं, हेतु।
वज़न, स पु (अ) भार, गुरुत्वम्।
वज़नी, वि (अ वजन) भारवत्, गुरु २ मान्य प्रभावशालिन्।
वज़ा, स स्त्री (अ वज़अ) रचना २ आकृति (स्त्री) ३ आचार, व्यवहार ४ दशा ५ रीति (स्त्री)।
वज़ारत, स स्त्री (अ) साचिव्य, अमात्यत्वं, मन्त्रित्वम्।
वज़ीफ़ा, स पु (अ) (छात्र)-वृत्ति -भृति (स्त्री)।
वज़ीर, स पु (अ) अमात्य, सचिव, मन्त्रिन्, मन्त्रधर, मन्त्रज्ञ, धी-बुद्धि-सहाय।
वज़ीरी, सं स्त्री, दे 'वज़ारत'।
वज़ू, सं पु (अ) प्रार्थनायां पूर्वं अंग प्रक्षालनं (इस्लाम), *अङ्गस्पर्श।
वजूद, सं पुं (अ) अस्तित्वं, सत्ता २ शरीरं ३ सृष्टि (स्त्री) ४ अभिव्यक्ति (स्त्री)।
वज्र, स पु (सं पुं न) कुलिशं, पवि, अशनि (पु स्त्री), दंभोलि, ह्रादिनी, शतधार, अभ्रोत्थं, शब, गिरिकंटक २. हीर १, हीरक, रत्नं २ विद्युत् (स्त्री)। वि, अति-दृढ-संहत-कीकस-कठिन, दुर्भेद्य २ घोर, भीषण।

—धर, स पु (स) इन्द्र, वज्रिन्, वज्रपाणि-बाहु-मुष्टि ।
—पात, स पु (स) वज्रपतन ।
—मय, वि (स) दे 'वज्र' वि (१)।
—हृदय, वि (स) पाषाणहृदय, निष्करुण, निर्दय।
वट, स पुं (स) न्यग्रोध, वृक्षनाथ, रक्तफल, क्षीरिन्, जटाल, अवरोहा, मह द्राय ।
वटी, स स्त्री (स) गुलीतिका, वटिका, निष्पली, दे 'गोली'।
वटु, } स पु (स) बालक, माणवक
वटुक, } २ वर्णिन्, ब्रह्मचारिन्।
वडी, स स्त्री (स वटी) माषवटी।
वणिक्, स पु (स वणिज) पण्यजीव क्रयविक्रयिक २ वैश्य ।
वतन, स पु (अ) जन्म भू भूमि (दान' (स्त्री) स्वदेश २ निवासस्थान ३ ग्राम स्थानम्।
वतीरा, स पु (अ) प्रथा, रीति (स्त्री) २ आचार' वृत्तम्।
वत्स, स पु (स) गोशिशु, तर्णक दोषक, तर्णक ३ शिशु, बालक ।
वत्सतर, स पु (स) दम्य, दुर्दान्त, गन्ति ।
वत्सतरी, स स्त्री (स) त्रिहायणी गौ (स्त्री)।
वत्सर, स पु (स) अब्द, हायन, वर्षम्।
वत्सल, वि (स) अपत्यानुरागिन्, सतत स्नेहिन्, पुत्रप्रेमिन् २ स्नेहिन्, प्रेमिन् ।
वत्सलता, स स्त्री (स) (सन्तानादिविषय) अनुराग स्नेह ।
वदन, स पु (स न) मुख, आननम्।
वदान्य, वि (स) बहुप्रद, दानशील, उदार २ वल्गुवाच मधुरभाषिन्।
वदाम, स पु, दे 'बदाम'।
वदावद, वि (स) वाचाल, वाचाट।
वध, स पु (स) घात हनन, हत्या, विशसन, प्रमाथ, संहार ।
वधक, स पु (सं) नरघातक, हन्, हिंसक २ व्याध, शाकुनिक ३ मृत्यु ।
वधू, वधूटी, स स्त्री (स) नवोढा, नववधू, पाणिगृहीता २ पत्नी ३ पुत्रवधू ।
वध्य, वि (स) वधार्ह, शीर्षच्छेद्य, हतव्य ।
वन, सं पु (स न) अरण्य, विपिन, अटवी, कानन गहन, दाव, कान्तार २ वारिश ३ सद्म् ।
—चर स पु (स) वन, चरिन् विहारिन् २ वन्य पशु मनुष्य ।
—माली, स पु (स) श्रीकृष्ण २ वनपुष्प मालाधारिन्।
—राज, स पु (स) सिंह ।
—वास, स पु (स) विपिनवसतिं (स्त्री)।
—वासी, स पु (स सिन्) आटविक, वनेचर वनौकस् वनिन् ।
—स्थली स स्त्री (स) काननभूमि, अरण्यप्रदेश ।
वनस्पति, स स्त्री (स प) पुष्पहीन फलि वृक्ष (उ बड, पीपल आदि) २ वृक्ष पादप ३ वट, न्यग्रोध ।
—शास्त्र, स पु (स न) वनस्पतिविज्ञानम्।
वनिता, स स्त्री (सं) नारी, रमणी २ प्रिया, कान्ता।
वनी, स स्त्री (स) वन, दे ।
वनी, स पु (स-निन्) वानप्रस्थ दे. २ दे 'वनवासी'।
वन्य, वि (स) वन-उद्भव उद्भूत-जात, आरण्यक जाल २ असभ्य, अशिष्ट ३ क्रूर, हिंस्र।
वपन, स पु (स न) केशमुण्डन २ बीजाधानम्।
वपा, स स्त्री (स) मेदस् (न), वसा।
वपु, स पु [स वपुस् (न)] शरीरम्।
वप्र स पु (सं पु न) वरण, साल, प्राकार २ क्षेत्र ३ धूलि (स्त्री) ४ तुगतट ५ गिरिशिखर ६ वल्मीक-क मृत्तिकाचय ।
—क्रीडा, स स्त्री (स) वप्रक्रिया।
वफ़ा, स स्त्री (अ) प्रतिज्ञापालन २ आज्ञा, शान्ति-अनुसरण पालन ३ विश्वसनीयता ४ सुशीलता।
—दार, वि (अ+फ़ा) विश्वसनीय, विश्रब्ध, स्वामिभक्त २ आज्ञा, कारिन् पालक ३ कर्तव्यपालक।
—दारी, स स्त्री (अ+फ़ा) दे 'वफ़ा'।
वबा, स स्त्री (अ) मडा, मारी, जन, मार, मारिका २ स्पर्शसंचारिरोग ।
वबाल, स पु (अ) भार, भर २ कष्ट, विपद् (स्त्री)।

वमन, सं पु (स न) वम, वमि (स्त्री), छर्दन, छर्दिका २ वान्तवमन, द्रव्यम ।
—करना, क्रि स, उद्,वम् (भ्वा प से), छर्द् (चु)।
वय सधि, स स्त्री (स पु) बाल्यभौवन मध्यकाल ।
वय, सं स्त्री [स वयस (न) आयुस् (न), वय क्रम, अतीतजीवनकाल ।
वयस्क, वि (स) प्रौढ, प्राप्तव्यवहार, दे 'बालिग'।
वयस्य, स पु (स) समवयस्क २ मित्र, सखि (पु)।
वयस्या, स स्त्री (स) सखी दे ।
वयोवृद्ध, वि (स) स्थविर, जरठ्ण, जरित न्, वृद्ध।
वरच, अव्य (स) अपि तु, दे 'बल्कि' २ परतु, किंतु।
वर, स पु (स) वृति (स्त्री), तपोभि देवेभ्यो याचितो मनोरथ २ (देवादीना) अनुग्रह, प्रसाद, आशिस् (स्त्री) ३ जामातृ ४ परिणेतृ, वोढृ ५ पति, भर्तृ। वि (स)- उत्तम,-श्रेष्ठ (उ ऋषिवर =ऋषिश्रेष्ठ)।
—मागना, क्रि स, वर याच (भ्वा आ से) वृ (स्वा उ से)-वृ (क्र् उ से)।
—दान, स पु (स) मनोरथपूरण, अभीष्ट प्रदान २ दे 'वर' (२)।
—दायक, स पु (स) वरन्द प्रद -दातृ, वाञ्छितार्थद, समर्द्धक ।
—यात्रा, स स्त्री (सं) *जनेत, परिणेतृ प्रस्थानम्। दे 'बरात'।
—वर्णिनी, स स्त्री (स) वर,-अगना नारी, सुदरी।
वरक्र, स पु (अ) (पुस्तक-) पत्र पर्ण २ ३ सुवर्ण रजत, पत्रम्।
—गरदानी, स स्त्री, (अ +फ़ा) मन्दे विहगमदृष्टि (स्त्री), अध्ययनाडम्बर, अध्ययनाभास ।
—स्याह करना, मु, अत्यत-अत्यर्थं लिख् (तु, प स)।
वरगलाना, क्रि. स (फ़ा वरगलानीदन) प्रलुभ् विमुह् (प्रे) २ प्रवृत् (प्रे)।
वरज़िश, स स्त्री (फ़ा) व्यायाम, दे ।
वरण, स पु (स न) वृति (स्त्री), उपग्रहण २ भर्तृत्वेनाङ्गीकरण पतित्वेन स्वीकरण ३ पूजा ४ आवरण, आच्छादनम् ।
वरद, स पु (स) दे 'वरदायक' ('वर' के नीचे)।
वरदी, स स्त्री (अ) *नियतपरिधान, विशिष्ट-वर्गीय-वेष ।
वरन्, अव्य (सं वर>) अपि तु।
वरना, अव्य (अ) अन्यथा, इतरथा, नो चेद्।
वराटिका, स स्त्री (स) कपर्दिका, दे 'कौड़ी'।
वरानना, स स्त्री (स) सुदरी, वरवर्णिनी, सुवदना नी।
वराह, स प (स) शूकर, दे 'सूअर' २. विष्णु, विष्णोरवतारविशेष ।
वरिष्ठ, वि (स) उत्तम श्रेष्ठ, पूज्यतम।
वरुण, स पु (सं) पाशिन, प्रचेतस, अप् अपा पति, जलेश्वर, मेघनाद २ जल ३ सूर्य ४ ग्रह विशेष (अं नेपचून)।
वरुणालय, स पु (सं) सागर ।
वरूथिनी, स स्त्री (स) सेना, सैन्यम्।
वरे, क्रि वि [स अवारत (अव्य)] इत, एतत्स्थान प्रति, अत्र २ समीपे पेपन, अतिकके (सब १ २ अव्य)।
वरेण्य, वि (स) प्रधान, मुख्य २ वरणीय, सत्कार्य।
वर्कशाप, सं स्त्री (अं) प्रावेशन, शिल्प - शाल शाला।
वर्ग, सं पु (स) (सजातीयानां) गण, जाति (स्त्री), समूह, श्रेणी णि (स्त्री) २ समस्थानवद् व्यजनपंचक (उ कवर्ग, इ) ३ अध्याय, परिच्छेद ४ सम, चतुर्भुज चतुरस्र ५ समद्विघात, वर्गफल, कृति (स्त्री) (उ ३×३=९ वर्गीय)।
—फल, स पु (सं न) दे 'वर्ग' (५)।
—मूल, स पु (सं न) पूरितसमानाङ्कद्वय स्थायक, पद (उ ९ रा वर्गमूल=३)।
वर्चस्, सं पु (स न) तेजस् (न), कांति (स्त्री)।
वर्चस्वी, वि (स स्विन) तेजस्विन, कांतिमद।
वर्जन, स पु (सं न) त्याग २ निरोध ।
वर्जनीय, वि (सं) त्याज्य, हेय, वर्ज्य २ निषेधार्ह।
वर्जित, वि (सं) त्यक्त, उत्सृष्ट २ निषिद्ध, हेय।
वर्ण, सं पु (सं) आर्याणां ब्राह्मणादिविभाग

चतुष्टय, जाति (स्त्री) २ रंग राग ३ प्रकार, विधा ४ अक्षर ५ रूप, आकार।
—धर्म, स पु (स) ब्राह्मणादिकतव्यकलाप।
—नाश, स पु (स) वर्ण-अक्षर, लोप पात (निरुक्त) (उ, पृषनोदर से पृषोदर)।
—माला, स स्त्री (स) वर्णसमाम्नाय, अक्षरश्रेणी (अ से ह तक)।
—विकार, स पु (स) अक्षरविक्रिया (निरुक्त) (उ गार्गी से गारी)।
—विचार, स पु (स) व्याकरणाविशेष, शिक्षा।
—विपर्यय, स पु (स) अक्षरव्यत्यास (निरुक्त, उ हिंस से सिंह)।
—वृत्त, स पु (स न) अक्षरछंदस (न)।
—श्रेष्ठ, स पु (स) ब्राह्मण।
—संकर, स पु (स) वर्ण-जाति, मिश्रण २ मिश्रन, संकरज, सांकरिक।
—हीन, वि (स) वहिष्कृत, अपांक्तेय।
वर्णन, स पु (स न) निरूपण, विवरण, व्याख्यान, सविस्तरकथन, वर्णना २ स्तवन, गुणकथन ३ रंजन, चित्रणम्।
—करना, क्रि स, विवृ (स्वा उ से), निरूप्, वर्ण् (चु), सविस्तर कथ् (चु), व्याख्या (अ प अ)।
वर्णनीय, वि (स) वर्णयितव्य, निरूपयितव्य, व्याख्येय, वर्ण्य।
वर्णित, वि (स) निरूपित, व्याख्यात २ उक्त, कथित।
वर्णी, स पु (स णिन्) ब्रह्मचारिन् २ लेखक ३ चित्रकार।
वर्ण्य, वि (स) वर्णनीय, निरूपयितव्य, प्रस्तुत, उपमेय, व्याख्यातव्य।
वर्तन, स पु (स न) व्यवहार, वृत्त, चेष्टित, आचरण २ वृत्ति (स्त्री), आजीव, जीविका ३ पात्रम्, भाजन, दे 'बर्तन'।
वर्तनी, स स्त्री (स) मार्ग, पथ, पदवि २ पेषणभृत (स्त्री) ३ तर्कु (पु स्त्री), तर्कुटम्। ४ वमनी-नि (स्त्री), अर्वाध्वनि (स्त्री) ५ वर्णविन्यास, शब्दाक्षरोच्चारणम्।
वर्तमान, वि (स) प्रचरित(लि)त, प्रचल सर्वसमत २ उपस्थित, विद्यमान ३ आधुनिक(-की), अधुना इदानीं, तन(-नी स्त्री)।
स पु (स) क्रियाया कालभेद (व्या) २ वृत्तांत ३ प्रचलितव्यवहार।
वर्ती, स स्त्री (स) वर्ति तिका (स्त्री), दे 'बत्ती' २ शलाका।
—वर्ती, वि (स -तिन्) स्थ,-वासिन्।
वर्तुल, वि (स) गोल, मंडल चक्र,आकार।
वर्दी, स स्त्री, दे 'वरदी'।
वर्द्धन, स पु (स न) वृद्धि उन्नति (स्त्री) २ समृद्धि (स्त्री)।
वर्मा, स पु (स वर्मन्) क्षत्रियोपाधि।
वर्बर, स पु (स) देशविशेष २ वर्बरवासिन् ३ असभ्य, ग्राम्य ४ म्लेच्छ, बबर, बर्बर, अनार्य।
वर्ष, स पु (स पु न) अब्द, हायन, समा, शरद् (स्त्री), सं,वत्सर, सवत् (अव्य) २ मेघ ३ वृष्टि (स्त्री) ४ महा भूभाग।
—गांठ, स स्त्री (स+हिं) वर्षवृद्धि (स्त्री), जन्म, दिवस दिन तिथि।
—फल, स पु (स न) वार्षिकग्रहफल दर्शक पत्रिका।
वर्षा, स स्त्री [सं वर्षा (स्त्री बहु)] प्रावृषा ष (स्त्री), मेघागम, घनकाल, जलार्णव, घनागम २ वृष्टि (स्त्री), वर्षण, गोधृत, परामृतम्।
—काल, स पु (स) दे 'वर्षा' (१)।
—होना, क्रि अ, वृष् (भ्वा प से), वृष्ट भू। मु, अनिमान्त अवपत् (भ्वा प से)।
वलद, स पु (अ वल्द) पुत्र २ सन्तान।
वलय, स पु (स पु न) कटक, आवापक २ वेष्टन ३ मंडलम्।
वलयित, वि (स) परिवेष्टित, परिवृत।
वलवला, स पु (अ) उत्साह, औत्सुक्यम्।
वलाहक, स पु (स) मेघ, जलद २ पर्वत।
वलि, स स्त्री (स) दे 'वली'।
वलित, वि (स) न(ना)मित, आभुग्न २ आवर्जित, प्रह्व ३ वलयित, दे ४ वलीमत्, वलिभ, वलिन ५ आच्छादित ६ सहित ७ लग्न।
वली, स स्त्री (सं) वलि (स्त्री), वलीलि (स्त्री), दे 'झुर्री' २ श्रेणी अवली लि (स्त्री) ३ रेखा ४ पुट, भग।

वली, स पु (अ) स्वामिन्, प्रभु २ शासक ३ साधु ।
—अह्द, स पु (अ) युवराज ।
वल्कल, स पु (स पु न) वस्त्र के वृक्षत्वचा च (स्त्री) चोच शल्क, छल्ली २ वल्कल-वल्क, वसन-वस्त्रम् ।
वल्द स पु (अ) दे 'वल्द'।
वल्दियत, स स्त्री (अ) पितृनामन् (न)।
वल्मीक, स पु (स) वामलूर, वामकूट, कृमिशैल: नाकु २ वल्मीकि मुनि ।
वल्लभ, वि (स) प्रियतम दयित । स पु (स) नायक प्रियतम, कान्त २ पति, भर्तृ।
वल्लभा, वि (स) प्रियतमा, कान्ता, दयिता । स स्त्री (स) प्रिया, पत्नी भार्या।
वल्लरी रि, स स्त्री (सं) लता, वल्ली लि (स्त्री) २ मञ्जरी।
वशवद, वि (स) वशवर्तिन् अनुग, आज्ञाकारिन् । स पु (स) सेवक दास ।
वश, स पु (स पु न) अधिकार, प्रभुत्व २ शक्ति (स्त्री) प्रभाव, सामर्थ्य ३ अधीनता, आयत्तता ४ इच्छा, कामना। वि (स) अधीन, आयत्त।
—(में) करना, क्रि स, वशीकृ दम् (प्रे प मे), वश नी (भ्वा प अ), नियम् (भ्वा प अ)।
—वर्ती, वि (स-वर्तिन्) वशग, वशानुग, -वश, -अधीन -आयत्त परतन्त्र।
वशिष्ठ सं पु, दे 'वसिष्ठ'।
वशी, वि (सं शिन्) जितेन्द्रिय, संयमिन् २ अधीन, -आयत्त ३ शक्तिमत्, समर्थ।
वशीकरण, स पु (स न) (मणिमन्त्रौषधादिभि) स्ववशीकरणं २ दम मन निग्रह इ०, वशीकार ।
वशीकृत, वि (सं) वश नीत २ मन्त्रमोहित ३ मुग्ध।
वशीभूत, वि (स) अधीन, आयत्त २ परवश ।
वश्य, वि (स) विनेय शिक्ष्य, दम्य।
वश्यक, वि (सं) आज्ञावचन, अनुवर्तिन् भाविन् सेवित् पाल्य ।
वश्यका, सं स्त्री (सं) आज्ञानुवर्तिनी पत्नी।
वश्यता, सं स्त्री (स) अधीनता, परवशता, पराधीनता।

वश्या, स स्त्री (सं) वशवर्तिनी, आज्ञानुवर्तिनी, पत्नी।
वषट्, अव्य (स) देवनिमित्तकहविस्त्यागमंत्र ।
—कार, स पु (सं) होम, देवयज्ञ ।
वसंत, सं पु (सं) ऋतुराज, दे 'बसंत' २ शीतलारोग ३ मसूरिकारोग ४ रागभेद ५ तालभेद ।
—तिलक, स प (सं व -का-का) वर्णवृत्त भेद ।
—पंचमी, स स्त्री (सं) श्रीपंचमी, माघ शुक्लपंचमी।
वसती, वि, दे 'बसती'।
वसती, स स्त्री (स) वसति वस्ति (स्त्री), नि, वास २ गृह, सद्मन् (न)।
वसन, स पु (स न) वस्त्र, वासस् (न)।
वसिष्ठ, स पु (स) ऋषिविशेष २ सप्तर्षिमण्डलान्तर्गतो नक्षत्रविशेष ।
वसीका, स पु (अ) समय प्रतिज्ञा संविद्, लेख पत्रम्।
—नवीस, स पु (अ + फ़ा) दे 'अर्जीनवीस'।
वसीयत, स स्त्री (अ) (मरणसमयस्य) अन्त्यादेश २ रिक्थविभागव्यवस्था।
—करना, क्रि स, मृत्युपत्रेण दा (जु उ अ)-ऋ (प्रे, अर्पयति)।
—नामा, स पु (अ + फ़ा) मृत्यु पत्र लेख ।
वसीला, स पु (अ) उपाय, साधन, २ साहाय्य ३ संबंध ।
वसुंधरा, स स्त्री (स) वसुधा दा, पृथिवी, दे ।
वसु, स पु (स न) धन २ रत्न ३ सुवर्ण ४ जलम् । (सं पु) गणदेवताविशेष, अष्ट वसव (धरो ध्रुवश्च सोमश्च विष्णुश्चैवानिलो नल । प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवोऽष्टौ क्रमात् स्मृता) २ बकवृक्ष ३ रश्मि । अष्ट संख्या ४ सूर्य ५ विष्णु ६ सज्जन ।
वसुदेव, स पु (सं) कृष्णपितृ आनकदुंदुभि ।
वसुधा, सं स्त्री (स) वसुदा, वसुमती, पृथिवी, दे ।
वसूल, वि (अ) प्राप्त, लब्ध २ समाहृत ।
वसूली, स स्त्री (अ वसूल) प्राप्ति (स्त्री) अधिगम २ समाहार ।
वस्ति, सं स्त्री (स पु स्त्री) नाभेरधोभाग, दे 'पेड़ू' २ मूत्राशय ३ रेचनयंत्र, शहरु वं, दे 'पिचकारी'।

—कर्म, म पु [म -र्मन् (न)] यंत्रेण मल मूत्रनिष्कामनम् ।
वस्तु, स स्त्री (म न) पदार्थ, द्रव्य २ मत्य ३ वृत्तांत ४ नाटकीयाख्यान, कथावस्तु(न)।
वस्तुत, अव्य (स) यथार्थत, तत्वत, याथार्थ्येन, मत्य, यथाथम् ।
वस्त्र, म पु (म न) नि वसन, वासस (न) आच्छादन चेल क, अशुक, अवर, पट, निचय, परिधान, छाद, वाम, कपट ।
वस्फ़, म पु (अ) सद् गुण, विशेष धर्म २ स्तुति (स्त्री)।
वस्ल, स पु (स) सगम समागम, मिलनम् ।
वह, सव (स म) तद् तथा अन्स के रूप। [उ स, अमौ (पु), सा, अमौ (स्त्री), तद्, अद (न)]।
वहन, स पु (म न) प्रापण, स्थानान्तरे नयनं, २ धारण, उत्थापनम् ।
वहम, म पु (अ) भ्रम, भ्रान्ति (स्त्री) २ मिथ्या, शका-सदेह ३ मिथ्याधारणा ४ गर्भकल्पना, कुक्षिरोग ।
वहमी, वि (अ वहम) सशयात्मन्, शकाशील, आशङ्किन् ।
वहशी, वि (अ) वन्य, आरण्य २ असभ्य, अशिष्ट ३ दुर्दान्त, दुर्दमनीय।
वहाँ, क्रि वि (हिं वह) तत्र तस्मिन् स्थाने।
—से, क्रि वि, तत, तस्मात् स्थानात् ।
वहीं, क्रि वि (हिं वहा+ही) तत्रैव, तस्मिन्नेव स्थाने।
वही, सर्व (हिं वह+ही) स एव, असावेव (पु), सैव, असावेव (स्त्री), तदेव, अद एव (न) इ ।
वह्नि, म पु (स) अनल अग्नि, दे 'आग'।
वाञ्छनीय, वि (स) स्पृहणीय, कमनीय, काम्य २ वाञ्छित, दे ।
वाञ्छा, स स्त्री (सं) इच्छा, अभिलाष, कामना ।
वाञ्छित, वि (म) अभिलषित, अभीष्ट ।
वा, अव्य (स) अथवा। २ दे 'वह'।
वाइदा, मं पु, दे 'वादा ।
वाइस चान्सलर, स पु. (अ) विश्वविद्यालयस्य उपाध्यक्ष, कुलपति ।
वाइस प्रेसिडेंट, म पु (अ) उपसभापति, उपप्रधान ।
वाइसराय, स प (अ) राज निर्निधि ।
वाक्, म पु [म वाच (स्त्री)] वाणी, वाक्य २ सरस्वती शारदा ३ वागिन्द्रिय, वाक्शक्ति (स्त्री)।
—पटु, वि (स) वाक्कुशल, वाग्मिन् ।
—पटुता म स्त्री (म) वाक्पाटव, वाग्मिता, वाग्वैदग्ध्यम् ।
—पारुष्य, म पु (म न) अप्रियवाक्योच्चारण कटुभाषणम् ।
—सयम, स पु (स) वाग्यम, मितवाच् (स्त्री)।
वाक़, म पु (स) वाक्य, वचनम् उक्ति (स्त्री)। स स्त्री, वाणी, सरस्वती, शारदा।
वाक़ई, क्रि वि (अ) वस्तुत, यथार्थत । वि, यथार्थ सत्य।
वाक़ा, वि (अ) स्थित, वर्ति, स्थ।
वाक़ि(क़)आ, स पु (अ) घटना, वृत्त २ समाचार ।
वाकिफ, वि (अ) परिचित, अभ्यस्त २ ज्ञातृ बोद्धृ अभिज्ञ ३ अनुभविन् ।
—कार, वि (अ+फा) कार्याभिज्ञ, कुशल, निष्णात ।
वाकफियत, मं स्त्री (अ) परिचय, परिज्ञान २ अनुभव ।
वाक्य, स पु (स न) पदसमूह, योग्यताकांक्षासक्तियुक्त पदोच्चय २ कथन, वचन ३ सूत्र ४ आभाणक ।
वागा, स स्त्री (स) वल्गा, दे 'लगाम'।
वागीश, स पु (म) बृहस्पति २ ब्रह्मन् (पु) ३ वाग्मिन्, कवि । वि (स) सुवक्तृ, सुव्याख्यातृ ।
वागुरा, स स्त्री (स) मृगबधनार्थं जालभेद ।
वागुरिक, सं पु (म) व्याध, शाकुनिक ।
वाग्जाल, स पु (म न) वाग्डबर, शब्दडबर, वाक्प्रपच ।
वाग्दण्ड, स पु (स) निर्भर्त्सना, अधिक्षेप ।
वाग्दत्ता, स स्त्री (स) *नियतवरा, *वाचा पिता (कन्या)।
वाग्दान, सं पु (सं न) कन्यादानप्रतिज्ञा।
वाग्दुष्ट, वि (म) कटुभाषिन् २ अभिशस्त ।
वाग्देवी, मं स्त्री (स) सरस्वती, दे ।

वाग्मी, स पु (स वाग्मिन्) वाग्विदग्ध वाक्पटु सुवक्तृ २ पंडित प्राज्ञ ३ बृहस्पति ।

वाग्विलास, स पु (स) मानन्दो वार्तालाप ।

वाङ्मय, वि (स) वाक्यात्मक २ वाग्विहित (पापादि)। स पु (स न) भाषा २ साहित्यम् ।

वाच, स स्त्री (स) वाणी २ वाक्यम् ।

वाच स स्त्री (अं) *घटिका ।

वाचक वि (स) ज्ञापक, द्योतक, सूचक, बोधक २ पाठक वाचयितृ ३ वक्तृ ।

—लुप्ता, स स्त्री (स) उपमालंकारभेद ।

वाचन स पु (स) पठन अध्ययन, उच्चारण २ कथन ३ प्रतिपादनम् ।

वाचस्पति, स पु (स) बृहस्पति, सुविद्वस ।

वाचा, स स्त्री (सं) वाणी, गिरा २ वाक्य, वचनम् ।

वाचाट-ल, वि (स) बहुभाषिन्, मुखर, जल्प(ना)क २ वाक्पटु ।

वाचाल(ट)ता, स स्त्री (स) मुखरता, बहुभाषिता २ वाग्वैदग्ध्यम् ।

वाचिक वि (स) वाग्विषयक २ मौखिक ।

वाची, वि (स वाचिन्) -सूचक -बोधक ।

वाच्य, वि (स) वचनीय, कथनीय २ अभिधेय, अभिधावृत्त्या बोध्य (अर्थ) ३ कुत्सित, हीन ।

वाच्यार्थ, स पु (स) अभिधेय-मूलशब्द, अर्थ शब्दार्थ ।

वाच्यावाच्य, वि (सं) भद्राभद्र (वाक्य दि)।

वाज़, स पु (अ) उपदेश, धार्मिक व्याख्यानम् ।

वाजपेय, स पु (स पु न) श्रौतयागभेद ।

वाजपेयी, स पु (स यिन्) हुतवाजपेय २ ब्राह्मणोपाधिभेद ३ सुकुल्ज ।

वाजसनेय, स पु (सं) यजुर्वेदस्य शाखा विशेष २ याज्ञवल्क्य ।

वाजिब-बी, वि (अ) उचित, योग्य, युक्त ।

वाजी, स पुं (स -जिन्) अश्व, घोटक २ आमिक्षावस्तु (न), मोरट (=फटे हुए दूध का पानी) ३ पक्षिन् ४ बाण ५ वासक ।

—कर, वि (सं) कामोद्दीपक (औषधादि)।

—करण, स पु (स न) वीर्यवृद्धिकर प्रयोग ।

वाट, स पु (स) मार्ग २ वास्तु ३ मण्डप ।

वाटर, स पु (अ) जल, वारि (न) २ जलाशय ३ मूत्रम् ४ हीराभा ।

—प्रूफ, वि (अ) अक्लेद्य, जलाभेद्यम् ।

—फाल, स पु (अ) जलप्रपात ।

—वर्क्स, स पु (अ) *जलयंत्र २ जलय मालय ।

वाटिका, स स्त्री (स) क्षुद्र आराम उद्यान दे 'बगीचा'।

वाडवाग्नि, स स्त्री (स) वाडव व(वा)ड वानल ।

वाण, स पु (स) बाण, दे ।

वाणिज्य, स पु (स न) क्रयविक्रय, निगम, वणिक्कर्मन् (न), व्यापार ।

वाणी, स स्त्री (सं) दे 'वाणी' ।

वात, स पु (स) पवन, वायु, दे । २ देहस्थवायु ३ रोगभेद ।

—चक्र स पु (स न) चक्रवात, वातावर्त ।

—ज, वि (स) वातप्रकोपज (रोगादि)।

—जात, स पु (स) हनुमत् मारुति ।

—तूल, स पु (स न) वृद्धसूत्रक, ग्रीष्म हासम् ।

—ध्वज, स पु (स) वातरथ, मेघ ।

—पट, स पु (स) ध्वज, पताका ।

—पुत्र, स पु (स) हनुमत् २ भीम ३ महाधूर्त ।

—प्रकोप, स पु (सं) (शरीरे) वायुवृद्धि (स्त्री)।

—रोग स पुं (स) वायुजात-व्याधि, वातरोग, अनिलामय, दे 'गठिया'।

—वैरी, स पु (सं रिन्) वाताद, दे ।

वाताद, सं पुं (सं) नेत्रोपमफल, वाताम्र, वातवैरिन् । (फल) वाताम्र, वादामम् (दे बादाम)।

वातायन, सं पु (स न) क्षुद्रखटकिका २ दे 'रोशनदान'।

वातुल, सं पु (सं) उन्मत्त, दे 'बावला'।

वात्सल्य, स पुं (सं) रसविशेष (काव्य)। (स न) पितो: अपत्यस्नेह, वत्सलता ।

वात्स्यायन, सं पु (सं) न्यायसूत्रभाष्यकार २ कामसूत्रप्रणेतृ, पक्षिल, मल्लनाग ।

वाद, स पु (स) वादानुवाद , वादप्रति वाद, ऊहापोह , *शास्त्रार्थ , दे । २ सिद्धांत , राद्धांत ३ कलह , विवाद ।

—विवाद, स पु (स) दे 'वाद' (१)।

वादक, स पु (स) वाद्यवादयितृ २ वक्तृ ३ वादिन्, तार्किक।

वादन, स पु (स न) वाद्यवादित्र ध्वनन २ वाद्य, दे ।

वादरायण, स पु (स) महर्षि वेदव्यास ।

वादा, स पु (अ वादः) नियतसमय २ प्रतिज्ञा, वचन, सगर ।

वादानुवाद, स पु (स) दे 'वाद' (१)।

वादी, स पु (स –दिन्) अभियोक्तृ, अभि योगिन् अर्थिन्, शिरोवर्तिन्, दे 'मुद्दई' २ प्रस्तावक, प्ररोचक ३ वक्तृ ।

—प्रतिवादी, स पु (स वादिप्रतिवादिनौ) अर्थिप्रत्यर्थिनौ २ पक्षिप्रतिपक्षिणौ (सब द्वि)।

वाद्य, स पु (स) वादित्र, आतोद्यम् ।

वानप्रस्थ, स पु (स) तृतीयाश्रमिन्, वानस्थ आरण्यक , तापस २ तृतीयाश्रम ३४ मधूक पलाश वृक्ष ।

वानर, स पु (स) कपि , मर्कट , दे 'बंदर'।

वानरी, स स्त्री (स) मर्कटी, वलीमुखी ।

वापस, वि (फा) वि प्रत्या प्रतिनि-वृत्त, प्रति-गत-आगत-यात-आयात ।

—आना, क्रि अ , प्रत्यागम्, प्रत्यावृत् (भ्वा आ से)।

—करना, क्रि स , प्रतिगम, प्रतिनिवृत् (प्रे) २ प्रतिदा (जु उ अ), प्रति ऋ (प्रे प्रत्यर्पयति)।

—जाना, क्रि अ , प्रति-गम् निवृत् ।

—लेना, क्रि स , प्रत्यादा, पुन स्वीकृ।

—होना, क्रि. अ , दे 'वापस जाना' २ प्रति दा-आदा (कम)।

वापसी, वि (फा वापस) प्रत्या-प्रतिनि-वृत्त। स स्त्री , प्रति-गमन-आगमन-आवृत्ति (स्त्री) २ प्रति-दान-अर्पण-आदानम् ।

वापी, स स्त्री (स), वापि (स्त्री•) दीर्घिका, वापिका।

वाबस्ता, वि (फा) बद्ध, सयत, २ लग्न, श्लिष्ट ३ संबद्ध, सग्रथित ।

वाम, वि (स) सव्य, दक्षिणेतर, दे 'बायाँ' २ प्रतिकूल, विरुद्ध प्रतीप ३ कुटिल ४ दुष्ट, नीच ५ अभद्र, अमगल ।

—देव, स पु (स) शिव ।

—मार्ग, स पु (स) वामाचार वेदविरुद्ध सम्प्रदायविशेष ।

—मार्गी, स पु (स र्गिन्) वामाचारिन्, वेदविरोधिन ।

—लोचन, स स्त्री (स) वामाक्षी, सुंदरी, शोभना ।

वामन वि (स) खर्व, ह्रस्व, लघुकाय । स पु (स) खट्टन , खट्टेरक , खर्व , ह्रस्व २ विष्णु ३ शिव ४ पुराणग्रथविशेष ।

—अवतार, स पु (स वामनावतार) अदितिगर्भगतो विष्णो पचमावतार ।

वामनी, स स्त्री (स) खर्वा खट्टनी ।

वामा, स स्त्री (स) नारी, रामा, २ दुर्गा, गौरी ३ लक्ष्मी , सरस्वती ४ स्कन्दानुचरी ।

वामी, स स्त्री (स) वडवा, २ रासभी ३ शृगाली ।

वायव्य, त्रि (स) १ ३ वायु-सबधिन् देवताक निर्मित, वायवीय ।

—कोण, स पु (स) पश्चिमोत्तर-कोण दिशा, वायवी ।

वायस, स पु (स) काक , ध्वाक्ष ।

—वायु, स स्त्री (स पु) वात , पवन , अनिल , गधव(वा)ह , समीर-रण , मरुत्, मा त(रु)त , श्वसन , मातरिश्वन्, सदागति , अगत्प्राण , नभस्वत्, पवमान , प्रभजन , धूलिध्वज , फणिप्रिय ।

—कोण, स पु (स) पश्चिमोत्तरदिशा, वायवी।

—गुल्म, स पु (स) वातचक्र, चक्रवात , वात्या २ जल-गुल्म आवर्त ३ वातगुल्म , उदरव्याधिभेद ।

—पुत्र, स पु (स) पवन-सुत पुत्र ,हनुमत्।

—भक्षण, स पु (स) वायु-भक्ष भुज्, यतिभेद २ पवनाशन , सर्प ।

—मंडल, स पु (स न) अतरि(री)क्ष, गगन २ वातावरणम् ।

वारट, स पु (अ) अधिकारपत्रम् ।

—गिरफ्तारी, स स्त्री (अ + फ़) *आसेधाधिकारपत्रम् ।

—तलाशी, स पु (अ + फ़ा) *अन्वेषण निवारयत्रन् ।

—रिहाई, स पु (अ + फ़ा) (कारागारा द्विम्य) मोचनानिवारयत्रन् ।

वारवार, क्रि वि, दे 'बारबार' ।

वार, स पु (स) पर्याय, क्रम २ अवसर समय ३ सप्ताह-दिन-दिवस वासर ४ द्वार ५ आघात, प्रहार, आक्रमण ६ आवरण ७ समूह ८ पार-रम् ।

—करना, क्रि स अभिद्रु (भ्वा प अ) अवस्कन्द (भ्वा प अ) आक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) ।

—खाली जाना, मु, लक्ष्य न व्यथ (कर्म) अस्त्र अपलक्ष्य पत् (भ्वा प से) २ युक्ति निष्फलीभू ।

वारक, वि (स) निषेधक, प्रतिबधक ।

वारण, स पु (स न) निप्रति षेध, २ विघ्न, अन्तराय । (स पु) गज, वाण वार, कवच -चम् ।

वारदात, स स्त्री (अ) दुघटना २ विप्लव, सक्षोभ ।

वारना, क्रि स (स वारण>) अनिष्टवारणाय उत्सृज् (तु प अ) त्यज (भ्वा प अ) । स पु, हानिकर उत्सर्ग, कष्टवारक दानम् ।

वारनारी, स स्त्री (स) वारसुन्दरी, वारागना, वेश्या, वाराङ्गमिनी ।

वारपार, स पु [स अवारपारौ रे (पु न)] (नद्यादीना) तटद्वय २ अन्त, सीमा । क्रि वि, अवारात् पार यावत् २ निकटपार्श्वात् परपार्श्वपर्यंतम् ।

वारागना, सं स्त्री (स) वारनारी, दे ।

वारा, सं पु (स वारण>) मितव्यय २ लाभ ।

वाराणसी, स स्त्री (स) काशिका, शिवपुरी, तपस्थली, व(वा)राणसी ।

वारान्यारा, स पु (हिं वार + न्यारा) निर्णय, निश्चय, निर्धारण २ समाधान, सधि, शम -मनम् ।

वारापार, सं पु तथा क्रि वि, दे 'वारपार' ।

वाराह, सं पु (स) वराह, दे ।

वारि, स पुं (सं न) पानीय, जल, दे ।

—चर, सं पु (स) जलजन्तु २ मत्स्य ।

—ज, सं पु (स न) कमल, वारिज-जन्मद्रम् ।

—द, स पु (स) वारि, धर-वाह, मेघ ।

—धि, स पु (स) वारिनिधि, सागर ।

—यत्र, स पु (स न) जलयत्र, दे 'फव्वारा' ।

वारित, वि (स) नि-अव, रुद्ध, निवारित २ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट ३ आच्छादित, आवृत ।

वारिद[1], स पु (स) मेघ, जलद ।

वारिद[2], वि (अ) आगत, आयात २ प्रकट, आविर्भूत ।

वारिस, स पु (अ) अंश, हर हारिन भाज्, दायाद, दायिक २ उत्तराधिकारिन् ।

—होना, क्रि अ, पैतृकसपदाधिकारी जन् (दि आ से), दायादीभू ।

वारीश, स पु (स) वारीश, सागर ।

वारुणी, स स्त्री (स) मदिरा, मद्य, सुरा २ पश्चिमदिशा ३ दूर्वा ।

वार्ड, स पु (अ) रक्षा, गोपन २ पुर-विभाग ३ कारागारादीना विभाग ।

वार्डर, स पु (अ) रक्षक २ कारारक्षक ।

वार्त्ता, स स्त्री (सं) विषय, प्रसग २ किंवदती, जनश्रुति (स्त्री) ३ समाचार, वृत्त ४ वार्तालाप दे ।

वार्त्तालाप, स पु (स) सलाप, सवाद, सभाषण, आलाप ।

—करना, क्रि अ, सलप्-सवद् (भ्वा प से), सभाष् (भ्वा आ से) ।

वार्त्तिक, स पु (स न) उक्तानुक्तदुरुक्तार्थ प्रकाशको ग्रथ, टीका । (सं पु) चर २ दूत ।

वार्द्धक्य, स पु (सं न) वार्द्धक, वृद्धत्व, वृद्धावस्था, स्थविरत्वम् ।

वार्षिक, वि (स) आब्दिक, वात्सरिक, सांवत्सरिक २ प्रावृषेण्य ।

वालंटियर, सं पु (अ) स्वयंसेवक, स्वेच्छासेवक ।

वाल(लि)दैन, सं पु (अ) पितरौ, मातापितरौ (दोनों द्वि) ।

वालिद, सं पुं (अ) पितृ, जनक ।

वालिदा, स स्त्री (अ) मातृ (स्त्री), जननी ।

वाल्मीकि, स पुं (सं) रामायणप्रणेतृमुनिविशेष, व(वा)ल्मीक, प्राचेतस, आदिकवि, कविविशेष ।

वावदूक, सं पु (स) वाग्मिन् २ वाचाल ।

वावैला, स पु (अ) विलाप २ कोलाहल ।
वाप्प, स पु (सं) उष्मन्, दे 'भाप' २ अश्रु (न)।
वासंती, स स्त्री (स) माधवी, प्रहसंनी, वसनजा २ यूथी ।
वास, सं पुं (स) अव,-स्थान-स्थिति (स्त्री) नि ,वस्ति (स्त्री) २ गृह, भवन ३ सु,गध ४ दुर्,गध ।
वासक, स पु (स) अटरूप , वैद्य भिषड्, मातृ (स्त्री), वासा-सक ।
वासकेट, स स्त्री (अ वेस्टकोट) वासकटि ।
वासना, स स्त्री (स) कामना, अभिलाष, वाछा २ सस्कार , भावना, स्मृतिहेतु ३ ज्ञान ४ प्रत्याशा ५ देहात्मबुद्धिजन्यो मिथ्यासं स्कार (न्याय)।
वासर, स स्त्री (स पु न) दिवस , दिनम् ।
वासव, स पु (स) इन्द्र, दे ।
वासित, वि (स) भावित, सुरभीकृत २ वस्त्रवेष्टित ३ पर्युषित ।
वासी, स पु (स-सिन्) निवासिन्, वास्तव्य ।
वासुदेव, स पु (स) श्रीकृष्ण ।
वास्तव, वि (स) सत्य, यथार्थ, अवितथ ।
—में क्रि वि , वस्तुत , सत्यम् ।
वास्तविक, वि (स) तथ्य, सत्य, तात्त्विक, दे 'वास्तव' ।
वास्ता, स पु (अ) सबध , सपर्क ।
—पड़ना, मु , व्यवहारावसर जन् (दि आ से)।
वास्तु, सं पु (स पु न) वेश्मभू , गृहपो तक २ गृह, सौध ।
—विद्या, स स्त्री (स) भवननिर्माणकला, स्थापत्यम् ।
वास्ते, अव्य (अ)—अर्थं,—निमित्तम्, चतुर्थी विभक्ति से भो (उ., तेरे वास्ते = त्वदर्थं, तुभ्यम् ।
वाह', अव्य (फ़ा) साधु, वर, भद्र, शोभन २ अद्भुतं, आश्चर्य ३ धिक् ४ हत ।
वाह , अव्य , साधु-साधु इ ।
—करना, क्रि स , अभि प्रति,-नद् (भ्वा प से), साधु-वादान् दा २ करतलध्वनिं कृ ।
—होना, मु , अभि प्रति-नद् (कर्म)।

वाहक, स पु (स) भारवह , भारिक २ सारथि , यतृ ।
वाहन, स पुं (स न) यान, युग्य, दे 'सवारी' ।
वाहवाही, स स्त्री (फ़ा) ख्याति विश्रुति (स्त्री), साधुवाद , प्रशसा ।
—लेना या लूटना, मु , यश वितन् (त उ मे), साधुवादान् लभ् (भ्वा आ अ), प्रशसापात्र भू ।
वाहिद, वि (अ) एक, एकाकिन, एकल, अद्वितीय ।
वाहिनी, स स्त्री (स) सेना २ नदी ३ सैन्यभेद (= ८१ हस्ती, ८१ रथ, २४३ घडे, ४०५ पैदल)।
—पति, स पु (स) सेनापति ।
वाहियात, वि (अ वाही + फ़ा यात) व्यर्थ, निरथक २ दुष्ट, खल ।
वाहीतबाही, वि (अ + फ़ा) निरर्थक, निष्प्र योजन २ असगत, असबद्ध । स स्त्री , प्र, जल्प पन २ गालि (स्त्री), अपभाषणम् ।
वाह्य, वि (सं) वोढव्य २ वोढृ ।
विंदु, स पु , दे 'बिंदु' ।
विंध्याचल, स पुं (स) विंध्य , पर्वतविशेष ।
वि, उप (स) वैशिष्ट्यनिषेधादिबोधक उपसर्ग (व्या)।
विकच, वि (स) विकसित, उत्फुल्ल २ केश हीन ।
विकट, वि (स) कठिन, दुस्साध्य, दुष्कर २ भीम, भीषण, भयप्रद ३ विशाल, विस्तीर्ण ४ दुर्गम ५ वक्र, कुटिल ।
विकराल, वि (स) दे 'विक-' (२)।
विकल, वि (स) विह्वल, उद्विग्न, वि ,आकुल, अज्ञान २ खडित, अपूर्ण ।
विकलांग, वि (स) अ,पोगड, अगहीन, विकल-न्यून,-अङ्ग इद्रिय ।
विकला, स स्त्री (स न) कलाया षष्टितमो भाग ।
विकल्प, स पु (स) भ्रम , भ्राति (स्त्री) २ सदेह , सशय ३ विभाषा (व्या) ४ विरुद्ध विपरीत, विचार -कल्पना ५ चित्त वृत्तिभेद (यो) ६ अर्थालंकारभेद (सा) ७ अवान्तरकल्प ८ ऐच्छिकविषय ।

विघ्न, स पु (स) व्याघात, अंतराय, प्रत्यूह, प्रतिबंध, बाधा, रोध, प्रति वि, ष्टम्भ ।
—कारी, वि (स रिन्) बाधाजनक विघ्न,-क्र-कर्तृ विघातिन् ।
—नाशक, स पुं (स) विघ्न,-विनायक पति-राज नायक, गणेश ।
विचक्षण, वि (सं) विद्वस्, बुद्धिमत् २ कुशल, दक्ष, निपुण ।
विचरण, स पु (स) चलन, गमन, २. भ्रमण, पर्यटन, विहरणम् ।
विचल, वि (स) कम्पमान, कम्प्र २ चञ्चल, चल ।
विचलता, स स्त्री (स) अस्थैर्य, चाञ्चल्य २ वि आकुलता ।
विचलित, वि (स) पतित, स्खलित २ लोल, अधीर, चञ्चल ।
विचार, स पु (स) मति (स्त्री), कल्पना, भावना, संकल्प, तर्क, मत, अभिप्राय २ चिंतन, ध्यान, आलोचन, विचारण-णा, तत्त्व-निर्णय, वितर्क-कण, मनसा कल्पन, विवेचनं ३ व्यवहारदर्शन, विचारकरणम् ।
—शील, वि (स) विचारवत्, विवेकिन्, समीक्ष्य विमृश्य,-कारिन् ।
—शीलता, स स्त्री (स) विवेकिता, बुद्धिमत्ता ।
विचारक, स पु (स) विचार धर्म-न्याय, अध्यक्ष, आधिकरणिक २ विवेकिन्, गुण दोषज्ञ, विवेचक, आलोचक ।
विचारणीय, वि (स) विचार्य, चिंतनीय, विचारार्ह, ध्येय २ संदिग्ध ।
विचारना, क्रि अ (स विचारण) विचर-सम् (प्रे), चित्-तर्क (चु) ध्यै (भ्वा प अ), विमृश् (तु प अ), आ पर्या, लोच् (चु) ।
विचारित, वि (स) ध्यात, चिंतित, तर्कित, पर्यालोचित, विमृष्ट २ निर्णीत निश्चित ।
विचार्य, वि (स) दे 'विचारणीय' ।
विचिकित्सा, स स्त्री (स) संशय, संदेह ।
विचित्र, वि (स) कर्बुर-रित, कल्माष षित, शार, शबल २ विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण ३ अद्भुत, आश्चर्य, विस्मापक ४ सुन्दर ।
—वीर्य, स पु (स) चन्द्रवंशीयो नृपविशेष ।
—शाला, स स्त्री (स) अद्भुतालय ।
विच्छिन्न, वि (सं) निकृत्त, विलून, विवृक्ण २ वियुक्त, विश्लिष्ट, पृथक्-स्थित ३ समाप्त, अवसित ।
विच्छेद, स पु (स) लवन, लाव, कर्तन, विच्छेदन २ विश्लेष-षण, वियोजन ३ क्रम,-नय नयन ४ विरह, वियोग ।
विछोह, स पु (स विक्षोभ >) वियोग, विरह ।
विजन, वि (स) निर्जन, विविक्त, निःशलाक, एकांत ।
विजय, स पु (स) जय, जयन, वशी स्वायत्ती करणम् ।
—दशमी, स स्त्री (स) दे. 'दशहरा' ।
—पताका, स स्त्री (स) जयकेतु २ जयचिह्न ।
—शील, वि (स) विजयिन, सदाजयिन्, जिष्णु ।
—श्री, स स्त्री (स) जयलक्ष्मी (स्त्री) ।
विजया, स स्त्री (सं) भंगा, हर्षिणी, दे 'भांग' २ उमासखी ३ दुर्गा ।
—दशमी, स स्त्री (स) आश्विनशुक्लदशमी, आर्याणां पर्वविशेष, विजयोत्सव ।
विजयी, वि. (स-यिन्) वि, नेतृ, जयिन्,-जित, जिष्णु (विजयिनी स्त्री) ।
विजयोत्सव, स पु (स) विजयदशमी-विजयादशमी,-उत्सव-मवन् (न)-क्षण । २ जय,-उत्सव-क्षण-उद्धर्ष ।
विजर, वि (सं) अजर, निर्जर, वार्द्धक्य रहित २ नूतन, नवीन ।
विजल, वि (स) अजल, निर्जल, जल-वारि, रहित ।
विजातीय, वि (स) भिन्न-असमान,-जाति वर्ण २ साम्यरहित, असम ।
विजिगीषा, स स्त्री (स) विजयकामना २ उत्कर्ष ।
विजिगीषु, वि (स) जयाभिलाषिन् ।
विज़िट, स स्त्री (अ) अभिगम, अभ्यागम, दर्शनार्थं गमन,-दर्शनयात्रा ।
विज़िटर, स पु (अ) दर्शक, प्रेक्षक २ अभ्यागत, गृहागत ।
विज़िटिंग कार्ड, स पु (अ) *दर्शकपत्रम् ।
विजित, वि (स) पराजित, अभि-परा, भूत, वशी-स्वायत्ती,-कृत ।
विजेता, स पु (स-तृ) दे 'विजयी' ।

विज्ञ, वि (सं) प्रवीण, कुशल, विशेषज्ञ २ धीमत्, बुद्धिमत् ३ कोविद, पंडित ।
विज्ञता, स स्त्री (स) प्रवीणता २ बुद्धिमत्ता ३ विद्वत्ता ।
विज्ञप्ति, स स्त्री (स) सूचन, ख्यापनम् ।
विज्ञात, वि (स) अवगत, अवबुद्ध २ प्रसिद्ध ।
विज्ञान, स पु (स न) ज्ञान, बोध, अवगम, उपलब्धि (स्त्री) २ विषयविशेषस्य विशिष्ट ज्ञान ३ अध्यात्म-विद्या ज्ञान ४ कर्मन् (न) ५ आत्मानुभव ।
—मयकोष, स पु (स) ज्ञानेन्द्रियसहिता बुद्धि (स्त्री) ।
विज्ञापन, स पुं (स न) बोधन, सूचन घोषणं, ख्यापन, विज्ञप्ति (स्त्री), विज्ञापना २ विज्ञापनपत्रम् ।
विट, स पु (स) कामुक, लम्पट २ धूर्त ३ नायकभेद (सा) ३ वेश्यानुचर ।
विटप, स पु (स प न) शाखा शाखा पल्लवसमुदाय २ क्षुप गुल्म म ३ वृक्ष ।
विटपी, स पु (स पिन्) वृक्ष, पादप ।
विटामिन, स पु (अ) खाद्यौजम् ।
विडंबना, स स्त्री (स) अनु-करण-कार कृति (स्त्री) २ अव-उप हास, अवहेलना २ निर्भर्त्सन ना ।
—करना, क्रि स, अव-उप-हस (भ्वा प से) २ सोपहास अनुकृ विडम्ब् (चु) मवहास अवमन् (दि आ अ) ।
विडारना, क्रि स (हिं डालना) विकृ (तु प से), विक्षिप (तु प अ) २ (वि, नश (प्रे) ३ विद्रु पलाय (प्रे) ।
वि(बि)डाल, सं पु (स) मार्जार दाक्ष लोचन-अक्ष, दे 'बिल्ला' ।
वितंडा, स स्त्री (स) परपक्षदूषणपूर्वक स्वपक्षस्थापन २ प्रतिपक्षस्थापनाहीनो जल्प ३ व्यर्थ-कलह विवाद ।
वितत, वि (स) विस्तृत, विस्तीर्ण ।
वितथ, वि (स) वितथ्य, असत्य, अनृत २ व्यर्थ ।
वितरण, स पुं (स न) दान, अर्पण, उत्सर्ग २. विभाजनं, अंशदानम् ।
—करना, क्रि स, अंश (चु) विभज् (भ्वा उ अ) ।
वितर्क, स पु (सं) ऊह हन, ऊहापोह २ संदेह ३ अनुमान ४ अर्थालंकारभेद (सा) ।
वितल, स पु (स न) पातालविशेष ।
वितस्ता, स स्त्री (स) पंचनदप्रान्तवर्ती नदविशेष ।
वितस्ति, स स्त्री (स पु स्त्री) द्वादशांगुल, दे 'बित्ता' ।
वितान, स पु (स पु न) उल्लोच, चंद्रातप २ विस्तार ३ यज्ञ ।
वितुंड, सं पु (स वि + तुंड>)गज, द्विप ।
वितृष्ण, वि (स) निःस्पृह, निष्काम, संतोषिन् ।
वित्त, स पु (स न) संपत्ति (स्त्री), धन, दे ।
—वान्, वि (स -वत्) धनाढ्य ।
—हीन, (वि) निर्धन ।
विदग्ध, वि (स) चतुर, दक्ष, कुशल २ व्युत्पन्न, पंडित ३ प्लुष्ट, प्लुष्ट । स पु (सं) रसिक २ विद्वस् ।
विदग्धता, स स्त्री (स) चातुर्य २ पांडित्य, विद्वत्ता ।
विदा, स स्त्री (अ विदाअ) प्रस्थान, प्रयाण ३ गमनानुमति (स्त्री), प्रस्थानानुज्ञा ।
—करना, क्रि स, प्रस्था प्रया (प्रे) विसृज् (तु प अ) ।
—होना, क्रि अ, प्रस्था (भ्वा आ अ), प्रया (अ प अ) ।
विदाई, स स्त्री (हिं विदा) दे 'विदा' (१ २) । ३ प्रास्थानिक धन द्रव्यं वा ।
विदारक, वि (स) विपाटक, विभेदक, विदारण ।
विदारण, स पु (सं न) विपाटन, विभेदन, विदलन २ हनन ३ युद्धम् ।
विदारीकंद, स पु (सं पु न) भूमिकुष्माड, विदारी-रिका, वृष्य स्वादु-कंदा ।
विदित, वि (स) अवगत, बुद्ध, ज्ञात, दे ।
विदिशा, सं स्त्री (स) दशार्णानां राजधानी, नगरविशेष (भेलसा) २ दिक्-दिशा-कोण ।
विदीर्ण, वि (सं) विपाटित, विदलित, विभिन्न २ त्रुटित, भग्न ३ हत ।
विदुर, सं पु (स) धृतराष्ट्रस्य भ्राता मंत्री च ।
विदुष, स पु (सं विद्वस्) पंडित, प्राज्ञ ।
विदुषी, वि (सं) विप्रकृष्ट, सुदूरवर्तिन् ।
विदूर, सं पुं (सं) वैदूर्यगिरि, प्रदर्शित, प्रांतिक, वामगिरि २ भद्र ।

विदेश, स प (म) परदेश , देशान्तरम् ।
विदेशी, वि (स विदेशीय) अन्य पर, देशीय, वैपर न्देशिक।
विदेह, वि (म) अकाय अशरीर रिन् ।
स पु (म) जनक, मिथिलेश्वर ।
—पुर, म प (म न) जनकपुरी मिथिला, विदेहा।
विद्ध, वि (म) सच्छिद्र, समुत्कीर्ण सुषिर वेधित, छिद्रित, निर्भिन्न २ क्षत, व्रणित ३ भिन्न, अस्त।
विद्यमान, वि (स) वर्तमान, भवत्, २ प्रत्यक्ष, समक्ष, उपस्थित।
विद्यमानता, स स्त्री (म) उपस्थिति (स्त्री), वर्तमानता।
विद्या, म स्त्री (म) ज्ञान, विज्ञान, बोध २ अध्यात्मविद्या, परा विद्या ३ शास्त्रम् ।
—दान, स पु (स न) अध्यापन २ पुस्तक दानम् ।
—प्राप्ति, स स्त्री (स) ज्ञानाधिगम, अध्ययनम् ।
—वान्, वि (स,-वत्) विद्वस्, प्राज्ञ ।
—हीन, वि (स) अशिक्षित, निरक्षर, अज्ञ, अविद्य ।
विद्यारंभ, म पु (स) १ वेदारम्भसंस्कार २ अध्ययनोपक्रम, शिक्षाप्रारम्भ ।
विद्यार्जन, म पु (स न) ज्ञान-बोध, प्राप्ति उपलब्धि (दोनों स्त्री) २ विद्यया धनोपार्जनम् ।
विद्यार्थी, स पु (स र्थिन्) छात्र, शिष्य, २ अधीयान, अध्येतृ, पाठक ।
विद्यालय, स पु (स) पाठशाला, विद्या, गृह-मन्दिरम् ।
विद्युत्, स स्त्री (स) चचला, चपला, तडित् (स्त्री), दे 'बिजली'।
—प्रिय, स पु (स न) कास्य २ कास्य पात्रम् ।
विद्रुम, स पु (स) प्रवाल, भौमीर, दे 'मूगा' २ रत्नवृक्ष ३ पल्लव -व, किस(रा)-लय -यम् ।
विद्रोह, स पु (स) राज-द्रोह, विरोध, प्रजाक्षोभ, प्रकृतिप्रकोप, राज्यविप्लव ।
विद्रोही, स पु (स -हिन्) राज-द्रोहिन् विरोधिन् द्रुह् ।
विद्वत्ता, स स्त्री (स) पाण्डित्य व्युत्पत्ति (स्त्री), विद्वत्त्व, विद्याप्रकर्ष ।
विद्वान्, स पु (म वद्स) पण्डित प्राज्ञ, बहुज्ञ विपश्चित् ज्ञानवत् ।
विद्वेष, म प (स) वैर, शत्रुता, विरोध ।
विद्वेषी, स पु (स षिन) वैरिन, विरोधिन्, शत्रु ।
विधवा, म स्त्री (स) रण्डा, मृतभर्तृका, विश्वस्ता, यतिनी जालका।
—पन, स पु (म + हिं) वैधव्य, दे ।
विधवाश्रम, म पु (स) *विश्वस्तालय ।
विधाता, म पु (स तृ) ब्रह्मन् (पु), जगदुत्पादक सृष्टिकर्तृ परमेश्वर २ विधायक, रचयितृ ३ व्यवस्थापक, *प्रबन्धक ।
विधात्री, स स्त्री (स) रचयित्री, विधायिका २ व्यवस्थापिका।
विधान, स प (स न) अनुष्ठान, करण, सपादन, निष्पादन, साधन २ व्यवस्था, आयोजन, *प्रबन्ध ३ रीति पद्धति (स्त्री), प्रणाली ४ निर्माण, रचन-ना ५ उपाय, युक्ति (स्त्री) ६ पूजा, अर्चा ७ शासन पद्धति (स्त्री), राज्यव्यवस्था ८ विधि, नियम, कल्प ।
—करना, क्रि स, विधा, आदिश (तु प अ), शास् (अ प से)।
—परिषद्, स स्त्री (स) विधि-अधिनियम, निर्मात्री सभा।
विधायक, म पु (स) अनुष्ठातृ, कर्तृ, निष्पादक, साधक २ निर्मातृ, रचयितृ, विधातृ, ३ व्यवस्थापक प्रबन्धक, प्रस्तोतृ ।
विधि, स स्त्री (स पु) (शास्त्र णा) आदेश, नियोग, नियम, कल्प, अनुशासन २ रीति (स्त्री), कार्यक्रम, प्रणाली ३ व्यवस्था, सगति (स्त्री), क्रम ४ आचार, व्यवहार ५ प्रकार, रीति (स्त्री) ६ भाग्यम्।
स पु (स) ब्रह्मन्, विधातृ (पु)।
—निषेध, स पु [स धौ (द्वि)] नियोग प्रतिषेधौ (द्वि)।
—पूर्वक, क्रि वि (स -र्वक) यथाविधि, यथाशास्त्र २ यथातथ, यथोचितम् ।
—वत्, क्रि वि (स) दे 'विधिपूर्वक'।
—वशात्, अ (स) दैवात्, भाग्येन, भाग्यदैव-वशात्।

—वाहन, स पु (स) हंस, मराल, धवलपक्ष ।

—हीन, वि (स) अतैर, आवाहन, विधि विरुद्ध, अनियमित ।

विधु, स पुं (स) चन्द्र, सोम ।

—वदनी, स स्त्री (स) चन्द्रमुखी २ सुन्दरी ।

विधुर, वि (स) दुःखित पीड़ित २ आर्त, त्रस्त ३ वि,आकुल ४ असमर्थ ५ परित्यक्त ६ विमूढ [विधुरा (स्त्री)] ।

विधेय, वि (स) अनुष्ठेय, कर्तव्य, निष्पाद्य, साध्य २ वशवर्तिन्, विनीत, वश्य विनय, वचनेस्थित ३ विधानार्ह, अनुशासनीय । सं पु (स न) विशेषण, वाक्यांशभेद (व्या) ।

विध्वंस, स पुं (सं) वि,नाश, अवसाद, निर्मूलन, उच्छेद ।

विध्वंसी, वि (स सिन्) विध्वंसक वि, नाशक, निर्मूलयितृ ।

विध्वस्त, वि. (स) वि नष्ट, उच्छिन्न, निर्मूलित, उत्सन्न ।

विनत, वि (स) प्रणत, वदमान २ आवर्जित, प्रवण ३ वक्र, निम्न ४ सकुचित ५ नम्र ६, शिष्ट ।

विनती, स स्त्री (स ति) प्रार्थना, याचना २ विनय, नम्रता, शिष्टता ३ प्रवणता, प्रह्वता ।

विनय, स स्त्री (स पु) प्रश्रय, नम्रता, शालीनता, सौजन्य, दाक्षिण्य २ शिक्षा ३ निवेदन, प्रार्थना ४ निर्भर्त्सना ५ नीति (स्त्री) ।

—शील, वि (सं) नम्र विनीत, शिष्ट, दक्षिण, सभ्य, सुजन, सुशील ।

विनश्वर, वि (स) क्षयिष्णु, नश्वर, अनित्य, अस्थायिन् ।

विनष्ट, वि (स) वि,ध्वस्त, अवसन्न, उच्छिन्न, निर्मूलित २ मृत ३ विकृत ४ भ्रष्ट ।

विना, अव्य (स) अन्तरेण मुक्त्वा, वर्जयित्वा विहाय (सब द्वितीया के साथ) । ऋते (पचमी के साथ) ।

विनायक, सं पुं (स) गणेश, दे ।

विनाश, सं पु (सं) दे 'विध्वंस तथा 'नाश' ।

विनाशक, सं पुं (स) नाशकर्तृ, विध्वंसक ।

विनिपात, स पु (स) वि,नाश ध्वंस २ वध, हत्या ३ अपमान, अनादर, अवधीरणा ।

विनिमय, स पु (स) परिवर्तन-वृत्त (स्त्री), प्रतिपरि,दानम् ।

—करना, क्रि स, विनिमे (भ्वा आ अ), प्रतिदा, परिवृत् (प्रे) ।

विनियोग, स पु (स) कृत्यविशेषे मन्त्रप्रयोग २ उपयोग प्रयोग ३ प्रेषण ४ प्रवेश ।

विनीत, वि (स) दे 'विनयशील' २ निर्जितेन्द्रिय ३ शिक्षित ४ अपनीत ५ दण्डित ६ धार्मिक ।

विनोद, सं पुं (स) कु(कौ)तूहल, कौतुक, मनोरंजकव्यापार २ खेला, क्रीड़ा, लीला ३ परिहास, प्रमोद ४ आनंद, हर्ष ।

विनोदी, वि (सं दिन्) कु(कौ)तूहलिन्, कौतुकिन् २ लीलामय, क्रीडाशील ३ आनन्दिन् उल्लासिन् ४ परिहासशील,प्रमोदप्रिय ।

विन्यास, स पु (सं) स्थापन, न्यसन, निधान २ रचन, परिष्करण, अलंकरण ३ प्रणिधान, उत्तम्भन, अनुबन्धन ४ क्षेप पणम् ।

विपंची, स स्त्री (स) वीणाभेद २ केलि (स्त्री) ।

विपक्ष, स पु (स) प्रति विरुद्ध-विपरीत प्रतियोगि-विरोधि, पक्ष २ विरोधिवर्ग, प्रतिद्वन्द्विवर्ग ३ प्रतिवादिन्, विरोधिन् ४ विरोध ५ अपवाद, बाधकनियम (व्या) ६ साध्याभाववान् पक्ष (न्या) । वि (स) विरुद्ध २ असहाय ३ निरुद्ध, निवारित ।

विपक्षी, सं पु (सं क्षिन्) प्रतिपक्षिन्, प्रतिवादिन्, पर,पक्षीय पक्ष्य पक्षपातिन् प्रतिद्वन्द्विन् २ शत्रु, वैरिन् ३ निष्पक्ष, पक्षहीन (पक्षी आदि) ।

विपणि, णी, सं स्त्री (स) आपण, हट्ट, पण्य शाला-वीथी, २ विक्रेयपदार्थ (पु) ३ वाणिज्य, व्यापार ।

विपत्ति, स स्त्री (सं) आपद् विपद् आपत्ति (स्त्री), व्यसन, महा,दु संकट २ आपद्विपद,काल समय ।

—आना या पड़ना, क्रि अ, व्यसनं आपत् (भ्वा प अ) वर्त् आ-समा पद् (भ्वा प से) विपद् उपनम् (भ्वा प अ) ।

विपथ, सं पुं (सं) कु,पथ मार्ग २ कद्,आचार आचरणम् ।

—गति, स स्त्री (सं) कुमार्ग-कुपथ,गमन गति (स्त्री)।
—गा, स स्त्री (सं) कुमार्गगामिनी नारी २ नदी, सरित (स्त्री)।
—गामी, वि (स मिन्) कुमार्ग-गामिन, दुर्वृत्त, दुराचारिन्।
विपद्-दा, स स्त्री (स) दे 'विपत्ति'।
विपन्न, वि (स) विपद्-अपद्, ग्रस्त, २ दुःखित ३ श्रान्त ४ मृत।
विपरीत, वि (सं) विरुद्ध, प्रतीप, अप प्रति, सव्य, प्रतिकूल, विलोमक २ रुष्ट, क्रुद्ध ३ कष्ट कर, दु खप्रद।
विपरीतता, स स्त्री (स) प्रतीपता, प्रति कूलता, विरोध, वैपरीत्यम्।
विपर्यय, स पुं (सं) व्यत्यास, व्यत्यय, विपर्यास, व्यतिक्रम २ अव्यवस्था, क्रमाभाव ३ भ्रांति (स्त्री), स्खलित ४ मिथ्याज्ञानम्।
विपर्यस्त, वि (स) व्यत्यस्त, अधरोत्तर २ अव्यवस्थित, भग्नक्रम, सकुल, सकीर्ण।
विपर्यास, स पु (स) दे 'विपर्यय'(१ २,४)।
विपल, स पु (स न) क्षण, निमिष, पलस्य षष्टितमो भाग।
विपाक, स पु (स) पचन, पक्वता २ चर मोत्कर्ष, पूर्णता ३ फल, परिणाम ४ कर्म फल ५ जठरे भोजनस्य रसरूपेण परिणति (स्त्री) ६ स्वाद ७ दुर्गति (स्त्री)।
विपिन, स पु (स न) जगल, वन, दे। २ उपवन, वाटिका।
विपुल, वि (स) बहु, भूरि, प्रभूत, अत्यधिक २ विशाल, विस्तीर्ण ३ बृहत्, महत् ४ अगाध, अतिगभीर।
विपुलता, स स्त्री (स) आधिक्य, बहुत्व, अतिशय २ विशालता, विस्तीर्णता ३ महत्ता, बृहत्ता।
विपुला, सं स्त्री (स) पृथिवी, दे।
विप्र, स पु (स) ब्राह्मण दे २ पुरोहित।
विप्रतिपत्ति, स स्त्री (स) विरोध, विस वाद, असगति (स्त्री) २ परस्परविसवादि वाक्यम् (न्या), कुख्याति (स्त्री) ४ विकृति (स्त्री) ५ असिद्धि (स्त्री)।
विप्रतिषेध, स पु (स) मिथोविरोध, असगति (स्त्री)।
विप्रलम्भ, स पु (स) वियोग, विरह, रागिणोर्विच्छेद २ छल, वचनम्।
विप्लव, स पु (स) उपद्रव, डिंब, समर २ विद्रोह, दे ३ कुव्यवस्था क्रमहीनता ४ आपद् विपद् (स्त्री) ५ विनाश आप्लाव, जलप्लवनम्।
विफल, वि (स) निष्फल, दे।
विबुध, स पु (स) पंडित, प्राज्ञ २ देव ३ चद्र ४ शिव।
विबोध, स पु (स) जागरण २ सम्यग्ज्ञान ३ सावधानता ४ विकास।
विभक्त, वि (स) कृतविभाग, परिकल्पित २ पृथक्कृत, विश्लेषित ३ विभिन्न, प्राप्त विभाग।
विभक्ति, स स्त्री (स) विभजन, विभाग २ वियोग, पार्थक्य ३ सुपप्रत्यय, तिङ् प्रत्यय (व्या)।
विभव, स पु (स) धन, सपत्ति (स्त्री) २ ऐश्वर्य, प्रताप ३ मोक्ष, नि श्रेयसम्।
—शाली, वि (स लिन्) धनाढ्य २ प्रता पिन्।
विभा, सं स्त्री (स) कांति (स्त्री), प्रभा २ किरण ३ सौन्दर्यम्।
विभाग, स पु (स) परिकल्पन, विभजन, अशन, वटन २ अश, भाग, खड, एक देश ३ दायाश, रिक्थभाग ४ प्रकरण, अध्याय ५ शाखा, कार्यक्षेत्रम्।
—करना, क्रि स, दे 'बाँटना'।
विभाज, स पु (स) विभाजयितृ, विभाग, परिकल्पक, वट(ड)क।
विभाजन, स पु (स न) वट(ड)न, विभ जन, विभाग, परिकल्पनम्।
विभाजित, वि (स) कृतविभाग, परिकल्पित, वटित, पडित।
विभाज्य, वि (स) विभजनीय, विभागार्ह, वटि(डि)तव्य।
विभावना, स स्त्री (स) अर्थालंकारभेद (सा)।
विभावरी, स स्त्री (स) शर्वरी, रात्री २ दूती, कुट्टनी।
विभाषा, स स्त्री (स) विकल्प (व्या)।
विभिन्न, वि (सं) विच्छिन्न, लून, कृत्त

७ विभक्त वियुक्त, पृथक्‌स्थित ९ नाना अनेक-बहु-विविध ।

विभिन्नता, स स्त्री (स) विविधता ~ पृथक्ता-त्वम् ।

विभीषण, स पु (स) रावणभ्रातृ । वि (स) भयङ्कर, भीम ।

विभु, वि (स) सर्वव्यापक विश्वव्यापिन् सर्वग, सर्वगत, २ नित्य ३ सुमहत् ४ शक्तिमत् । स पु (स) ईश्वर २ स्वामिन् ३ आत्मन् ।

विभूति, स स्त्री (स) विभव, ऐश्वर्य २ धन, वित्त ३ अलौकिक-दिव्य शक्ति सिद्धि (दोनों स्त्री) ४ शिवधृतभस्मन् (न) ५ लक्ष्मी (स्त्री) ६ (विविध) सृष्टि (स्त्री), वृद्धि (स्त्री) उत्कर्ष ।

विभूषण, स पु (स न) अलङ्करण, मण्डन २ आभूषण अलङ्कार ।

विभूषित, वि (स) अलङ्कृत, मण्डित २ युक्त, सहित ३ सुशोभित ।

विभ्रम, स पु (स) विभ्रान्ति (स्त्री), भ्रम स्खलित २ संदेह ३ भ्रमण ४ स्त्रीणां हावभेद ५ सौन्दर्यम् ।

विमति, स स्त्री (स) विपरीत-विरुद्ध, मत विचार २ कुमति (स्त्री) ।

विमन, वि (स नस्) खिन्न, विषण्ण, दुर्मनस् ।

विमर्श, स पु (स) विचार-रण रणा मन्त्रणा, विवेचनं २ समीक्षा आलोचना ३ परीक्षा ४ परामर्श ।

विमल, वि (स) स्वच्छ निर्मल, दे २ निर्दोष ३ सुंदर ।

—**मणि**, स पु (स) दे 'स्फटिक' ।

—**मति**, वि, (स) शुद्ध हृदय चित्त ।

विमलता स स्त्री (स) निर्मलता दे ।

विमला, स स्त्री (स) सरस्वती, शारदा २ सिद्धिविशेष ।

—**पति**, स पु (स) ब्रह्मन् (पु), विधि ।

विमांस, स पु (सं पुं न) अस्वच्छ अपवित्र-अभक्ष्य, मांसम् । (कुक्कुरादीनाम्) ।

विमाता, स स्त्री (स-तृ) मातृसपत्नी ।

विमान, सं पु (स पु न) देवरथ, वायु व्योमयान २ रथ, वाहनं ३ घोटक ४ सप्तभूमिकं गृह ५ शवयानम् ।

विमुख, वि (स) विरत निरपेक्ष, निरीह, औत्सुक्यहीन २ विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल ३ निराश, अपूर्णकाम ४ अवदन ।

विमुखता, स स्त्री (सं) विरति (स्त्री), औदासीन्य २ विरोध, विपरीतता ।

विमूढ़, वि (स) अज्ञ, अज्ञानिन्, २ निस्संज्ञ, मूर्च्छित ३ आकुल-व्याकुल, विक्लव ३ अति, मुग्ध-मोहित ।

विमोक्ष, स पु (स) दे 'मोक्ष' ।

वियोग, स पु (स) विरह, विप्रलम्भ, विप्रयोग २ विच्छेद, विश्लेष, विभेद ३ पार्थक्य, पृथग्भाव ४ व्यवकलनं (गणित) ।

वियोगांत, वि (स) दुःख, अंत पर्यवसायिन् (नाटकादि) ।

वियोगिनी, वि स्त्री (स) विरहिणी, वियुक्ता, प्रोषित, पतिका भर्तृका ।

वियोगी, वि (सं गिन्) विरहिन्, वियुक्त ।

वियोजक वि (स) विश्लेषक, विच्छेदक ।

विरंचि, स पु (सं) विधातृ, ब्रह्मन् (पु) ।

—**सुत**, स पु (स) नारद ।

विरक्त, वि (स) विरत, विमुख, निरीह, निवृत्त २ उदासीन, निष्प्रयोजन ३ खिन्न, रुष्ट वैरागिन्, वैरागिक ।

विरक्ति, सं स्त्री (सं) विरति (स्त्री), विराग, विमुखता, वैराग्यं, विरक्तता २ औदासीन्य ३ खेद ।

विरत, वि (स) दे 'विरक्त' (१, ४) साव काश, अव्यापृत-अनिव्यापृत,-पर,-परायण ।

विरति, सं स्त्री (सं) दे 'विरक्ति' (१ ३) ४ विराम, विच्छेद, उपर(रा)म ।

विरद स पुं, दे 'विरुद' ।

विरल, वि (स) घनता-विरहित, शून्य २ दुर्लभ, दुष्प्राप प्रापण ३ तनु ४ निर्जन ५ अल्प ६ विप्रकृष्ट, दूरस्थ ।

—**पातक**, वि (स) न्यून अल्प पातक पाप, अविज्ञेय-अलक्ष्य पुन्न, प्राय-कल्प ।

विरला, वि (सं विरल) दे 'विरल' (१ २) ।

विरव, वि (स) निःशब्द, नीरव ।

विरस, वि (सं) नीरस, दे २ अप्रिय ।

विरमा, सं पुं (अ) दे 'विरामन ?' ।

विरह, सं पुं (सं) दे 'वियोग' (१ ३) । ४ वियोगजन्य दुःखम् ।

—जनित, वि (स) विरह-ज-जन्य, वियोग-ज-उद्भूत।
विरहिणी, वि स्त्री (स) वियोगिनी, दे।
विरही, वि (स हिन्) दे 'वियोगी'।
विराग, स पु (स) दे 'वैराग्य'।
विरागी, वि (स गिन्) दे 'वैरागी'।
विराजना, क्रि अ (स विराजन) शुभ विराज् (भ्वा आ मे) प्रतिभा (अ प अ) २ वृत (भ्वा आ मे), विद् (दि आ अ), उपविश् (तु प अ) आस (अ आ से)।
विराजमान, वि (स) प्रकाशमान, शोभमान, भासमान, भासुर २ विद्यमान, उपस्थित, वर्तमान ३ उपविष्ट, आसीन।
विराट्, स पु (स-राज्) विश्वरूप, महान् (न) २ क्षत्रिय।
विराट, स पु (स) मत्स्यदेश २ तद्देशीयो राजविशेष।
—पर्व, स पु [स-वंन (न)] श्रीमहाभारतस्य चतुर्थं पर्वन् (न)।
विराम, स पु (स) दे 'विरति' (४)। २ विश्राम, विश्रान्ति (स्त्री) ३ वाक्याव सान ४ यति (स्त्री)।
विराव, स पु (स) शब्द, ध्वनि २ कलकल।
विरासत, स स्त्री (अ) दाय, पैतृकधन, रिक्थ २ दायादत्व, रिक्थहरत्वम्।
विरुद, स पु (स) गुणोत्कर्षवर्णन, यशःकीर्तन, प्रशस्ति (स्त्री) २ यशस् (न), कीर्ति (स्त्री) ३ नृपोपाधिशब्द।
विरुदावली, स स्त्री (स) स्तवमाला, यशोगणनम्।
विरुद्ध, वि (स) प्रतिकूल, विरोधिन्, विपरीत, प्रतीप २ रुद्ध, विद्ध ३ अनुचित, अन्याय्य।
विरूप, वि (स) बहुरूप, नानाकार २ कुरूप, कुदर्शन ३ परिवर्तित ४ निःश्रीक, शोभाहीन ५ विरुद्ध ६ भिन्न।
विरेचक, वि (सं) सारक, मलभेदक, विरेचकारक, दे 'रेचक'।
विरेचन, स पु (स न) मलभेदकौषध, दे 'रेचन' २ रेक, रेचन-ना, मलभेद।
विरोध, स पु (स) वैर, शत्रुता-त्वं, वि, द्वेष, सापत्न्यं २ असंगति (स्त्री), विसंवाद, विपरीतता ३ विप्रतिपत्ति (स्त्री), व्याघात ४ अर्थालंकारभेद (सा)।
—करना, क्रि स विप्रतिकृ (रु उ अ), प्रतिरुध् प्रत्यवस्था (भ्वा आ अ) विप्रतिहन् (अ प अ) २ विप्रलप (भ्वा प मे), प्रतिक्षिप (तु प अ)।
विरोधी, स पु (स धिन्) वैरिन्, शत्रु, ३ विपक्षिन्, प्रातिद्वन्द्विन् ४ विरोधकर, विघ्नकर।
विलम्ब, स पु (स) अतिकाल, वेलातिक्रम, कालक्षेप हरण दे 'देर'।
विलंबित, वि (स) चिरायित, व्याक्षिप्त २ प्रलम्ब लम्बमान।
विलक्षण, वि (स) असाधारण, असामान्य, अद्भुत अपूर्व, विशिष्ट।
विलक्षणता, स स्त्री (स) वैलक्षण्य, विशिष्टता इ।
विलय, स पु (स) विलयन, द्रवीभवन २ लोप, अदर्शन ३ मृत्यु ४ वि, नाश ५ प्रलय।
विलाप, स पुं (स) परिदेवन,-ना, शोकवचन अनुशोचनोक्ति (स्त्री) २ क्रन्दनं, र(रो)दनम्।
—करना, क्रि अ, विलप् अनुशुच् परिदेव् (भ्वा प से)।
विलायत, स पुं (अ) विपर-देश २ दूरदेश (यूरोप, अमेरिका आदि)।
विलायती, वि (अ) दे 'विदेशी'।
—बैंगन, स पु (अ+हिं) दे 'टमाटर'।
विलास, स पु (स) विभ्रम, लीला, हावभेद दे 'नखरा' २ आनन्द, हर्ष ३ मनोरञ्जन विनोद ४ सुखभोग ५ कम्पन, गति (स्त्री) ६ आह्लादक हर्षप्रद-मनोहरलसित, चेष्टा क्रिया।
विलासिनी, स स्त्री (स) कामिनी, सुंदरी, वरांगना २ नारी ३ वेश्या ४ वर्णवृत्तभेद।
विलासी, वि (स सिन्) भोगिन्, विषयम -आसक्त, कामिन् २ लोलापर, क्रीडाप्रिय, कौतुकिन् ३ सुखैषिन्।
विलीन, वि (स) अन्तरितो हित, लुप्त २ नष्ट ३ गुप्त, गूढ।
विलोपन, स पु (स विलयन) विलयन, द्रवीभाव २ क्षरण, गलनम्।

विलुंठन, स पु, विलुठन, लुटा, लुठा २ चोरण मोषणम् ३ लुठन, लोठनम्।
विलोकना, क्रि स (स विलोकन) दे 'देखना'।
विलोडना, कि स, दे 'बिलोना'।
विलोम, वि (स) प्रतिकूल, विपरीत, प्रतिलोम, प्रतीप २ स्वरावरोह (संगीत)।
विलोल, वि, (स) चल, अस्थिर २ सुंदर।
विवक्षा, स स्त्री (स) वक्तुमिच्छा, विवक्षा २ तात्पर्य ३ संदेह।
विवक्षित, वि (स) वक्तुमिष्ट २ अपेक्षित।
विवर, स पु (स न) छिद्र, बिल २ गर्त्त, अवट, खात ३ कदरा, गुहा।
विवरण, स पु (स न) व्याख्यान, विवेचन २ विस्तृत, वर्णन-वृत्तात ३ टीका, भाष्य, व्याख्या।
विवर्जित, वि (स) निषिद्ध, वर्जित २ उपेक्षित, अनादृत ३ वचित, रहित।
विवर्ण, वि (स) निस्तेजस, निष्प्रभ, कांतिहीन २ क्षुद्र, नीच।
विवर्त, स पु (स) भ्रम, भ्रांति (स्त्री) २ रूपातर, दशातरम्।
—वाद, सं पु (स) वेदान्तसिद्धातविशेष।
विवश, वि (स) अनन्तिक, निरुपाय २ पराधीन ३ दुर्दांत ४ निर्बल।
विवस्वान्, स पु (स स्वत्) सूर्य २ अरुण, सूर्यसारथि।
विवाद, स पु (स) वाद, अनुवाद प्रतिवाद, वाग्-वाद, युद्ध, तर्कवितर्क २ कलह, कलि ३ मतभेद ४ व्यवहार, ऋणादि न्याय, दे 'मुकदमेवाजी'।
—करना, कि अ, विवद् (भ्वा आ से), विप्रतिपद् (दि आ अ), विप्रलप् (भ्वा प से)।
विवादास्पद, वि (स) विवाद-अर्ह प्रश्न योग्य, संदिग्ध।
विवाह, स पु (स) पाणि, ग्रहण-करणं पीडन, उपय(या)म, परिणय, उद्वाह, दार, परिग्रह-कर्मन्।
—करना, कि स, उद् वि वह् (भ्वा उ अ), दारान् परिग्रह् (क्र् प स), परिणी (भ्वा प अ)।
—(में) देना, क्रि स, विवाहे दा, पाणि ग्रह् (प्रे), उद्वह् (प्रे)।
विवाहित, वि पु (सं) ऊढ, परिणीत, निविष्ट, कृतविवाद, उपयत, स्त्रीमत, सपत्नीक।
विवाहिता, सं स्त्री (स) पतिवत्नी, सभर्तृका, ऊढा, परिणीता, उपयता।
विविक्त, वि (स) पृथग्भूत, वियुक्त २ एकल, असहाय ३ पूत, निर्दोष ४ विवेकिन्, विवेकशील।
विविध, वि (स) अनेक-नाना-बहु, विध प्रकार-रूप-जातीय।
विवेक, स पु (स) परिच्छेद, सदसज्ज्ञान, मिथो व्यावृत्त्या वस्तुस्वरूपनिश्चय, पृथग्भाव, पृथगात्मता, विवेचन २ भद्राभद्र-सदसद्, परिच्छेदशक्ति (स्त्री), ३ बुद्धि मति (स्त्री) ४ सत्यज्ञानम्।
विवेकी, वि (स किन्) परिच्छेदक, विवेचक, गुणदोषज्ञ, विशेषज्ञ, विवेकवत् २ बुद्धि-मति, मत् ३ ज्ञानिन् ४. न्यायशील ५ आधिकारिक।
विवेचक, वि (सं) दे 'विवेकी'।
विवेचन, सं पु (स न) दे 'विवेक'(१)। २ सम्यक्, परीक्षा-क्षणं, गुणदोषविचारण, परि,-आलोचन ना ३ अनुसधान ४ तर्कवितर्क ५ मीमासा।
विवेचना, स स्त्री (सं) दे 'विवेचन'।
विशद, वि (स) निर्मल, विमल, स्वच्छ २ सुवि, स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट, स्फुट ३ सित, उज्ज्वल, श्वेत ४ सुंदर।
विशाखा, स स्त्री (स) राधा, नक्षत्रविशेष।
विशारद, वि (स) कुशल, दक्ष, प्रवीण २ विज्ञ, विशेषज्ञ, व्युत्पन्न, निष्णात।
विशाल, वि (स) विस्तृत, विस्तीर्ण, महत्, बृहत्, पृथु उरु २ भव्य, सुंदर ३, विख्यात।
विशालता, स स्त्री (सं) प्रथिमन्, विस्तार, बृहत्ता, पृथुता।
विशिख, स पु (सं) बाण, इषु। वि- (सं) शिखाहीन।
विशिष्ट, वि (स) युत, युक्त, अन्वित, सहित २ विशेष-, असामान्य ३ अद्भुत, विलक्षण ३ अनिर्दिष्ट ४ यशस्विन् ५ प्रसिद्ध।
विशिष्टता, सं स्त्री. (स) दे 'विशेषण'।

विशिष्टाद्वैतवाद, स पु (स) भेदाभेदवाद, द्वैताद्वैतवाद ।

विशीर्ण, वि (स) शुष्क २ क्षीण ३ जीर्ण ।

विशील, वि (स) दुश्चरित दुःशील, कुशील ।

विशुद्ध, वि (स) दे 'शुद्ध' २ सत्य ।

विशुद्धि, स स्त्री (स) शुद्धता पवित्रता २ संदेहनाश, निवारणम् । ३ प्रति(ती)कार, प्रतिशोध ४ शणशोधनम् ५ परिष्कार ६ पुनर्शनम् ।

विशूचिका, स स्त्री, दे 'विसूचिका' ।

विशेष, वि (स) असाधारण (णी स्त्री), विशिष्ट, विलक्षण । स पु (स) समपदार्थान्तर्गतपदार्थविशेष (वैशेषिक) २ अन्तर, भेद ३ अर्थालंकारभेद (सा) ।

विशेषज्ञ, वि (स) प्रवीण, निपुण, विज्ञ, पारगत, पारदर्शिन् ।

विशेषण, स पु (स न) सज्ञादीना विशेषताबोधक पद (व्या) २ उपाधि गुण, विशेष्यधर्म ।

विशेषत, अव्य (सं) विशेषेण, प्रधानत ।

विशेषता, स स्त्री (स) विशिष्टता, असाधारणता, विलक्षणता ।

विशेष्य, स पु (स न) विशेषणान्वित सज्ञादिपद (व्या) ।

विशोक, वि (स) शोकहीन, प्रसन्न, मुदित, प्रहृष्ट ।

विश्रम्भ, स पु (स) विश्वास, प्रत्यय २ अनुराग प्रेमन् (पु न) ।

विश्रब्ध, वि (स) विश्वसनीय, विश्वासार्ह २ शान्त ३ निर्भय ।

विश्रान्त, वि (स) व्यपगतश्रम, क्लान्ति श्रान्ति, शून्य ।

विश्रान्ति, स स्त्री (स) विश्राम, दे ।

विश्राम, स पु (स) विश्रान्त, विश्राति (स्त्री), श्रमोपशम, कार्यव्यापार, निवृत्ति (स्त्री) २ सुख ३ शान्ति (स्त्री) ।

—करना, क्रि अ, विश्रम् (दि प से), आविश्रम् (भ्वा प अ), कायात् निवृत (भ्वा आ से) ।

विश्रुत, वि (सं) विख्यात, प्रसिद्ध, दे ।

विश्लिष्ट, वि (स) पृथग्भूत, भिन्न, वियुक्त २ विकसित ३ प्रकट ४ अपावृत ५ शान्त ६ व्यक्त ।

विश्लेष, स पु (स) विघटन, विच्छेद, पृथग्भाव २ विरह, वियोग ।

विश्लेषण, स पु (स न) व्यवच्छेद, व्याकृति (स्त्री), पृथक्करणम् ।

विश्वंभर, सं पु (स) परमेश्वर २ विष्णु ।

विश्वंभरा, सं स्त्री (स) धरणी, पृथिवी दे ।

विश्व, स पु (स न) जगत् (न), जगती (स्त्री), त्रिभुवन, ब्रह्माण्ड २ भू-पृथिवी, लोक । वि (स) सर्व, सकल, समस्त ।

—कर्ता, स पु (सं तृ) परमेश्वर ।

—कर्मा, स पु (स-मन्) विश्वकृत, देव, वर्द्धकि शिल्पिन, त्वष्टृ परमेश्वर ३ ब्रह्मन् (पु) विधि ४ सूर्य ५ तक्षक, वर्धकि ६ लोहकार ७ गृहकारक, पल्गड ।

—कोश (-ष), सं पु (स) सर्वविषयबृहद्कोष ।

—जित्, सं पु (स) यज्ञयाग, भेद । वि (स) जितविश्व, विश्वविजयिन् ।

—देव, स पु (स-बा बहु) देवगणभेद ।

—नाथ, सं पु (सं) शिव २ साहित्यदर्पणकार पंडितविशेष ।

—पति, स पु (स) ईश्वर ।

—बन्धु, स पु (स) शिव २ जगद्रक्षक ।

—विद्यालय, स पु (स) दे 'यूनिवर्सिटी' ।

—व्यापी, वि (स पिन्) विश्व-सर्व-व्यापक (ईश्वरादि) ।

—साक्षी, स पु (स-क्षिन्) सर्वद्रष्टा जगदीश्वर ।

विश्वसनीय, वि (स) विश्वास्य, विश्वास, योग्य अर्ह, विश्रम्भ, पात्र भाजन आस्पदम् ।

विश्वसनीयता, स स्त्री (स) विश्वास्यता, विश्वासपात्रता ।

विश्वस्त, वि (स) दे 'विश्वसनीय' ।

विश्वामित्र, स पु (स) गाधेय, गाधिज, कौशिक (ब्रह्मर्षिविशेष) ।

विश्वास, स पु (स) प्रत्यय, विश्रंभ, २ श्रद्धा, दे ।

—करना, क्रि, अ, विश्वस् (अ प से), श्रद्धा (जु उ अ), प्रति इ (अ प अ) ।

—दिलाना, क्रि स, उपर्युक्त धातुओं के प्रे रूप ।

—घात, स पु (स) विश्रम्भभंग प्रत्यय भञ्जन समय-लघन भग ।
—घातक, वि (स) विश्रम्भभंजक, विश्वासघातिन् ।
—पात्र, स पु (स न) विश्वास्य विश्वसनीय ।
विश्वेश्वर, स पु (स) परमेश्वर २ शिवमूर्तिविशेष ।
विष स पु (स पु न) गरल, ज(ना)गुल, क्ष्वेड, कालकूट, ह(हा)लाहल, गर, गरद, घोर, तीक्ष्णम् ।
—कन्या, स स्त्री (स) मैथुनमात्रेण सभोक्तृहन्त्री कुमारी नारी वा ।
—धर, स पु (सं) सर्प ।
—हर, वि (स) विष-नाशक-घातिन् ।
—की गाठ, मु, अपकारक, हानिप्रद ।
—देना, मु, विषेण सूदन (प्रे) ।
विषक्त, वि (स) रुम्भित, बद्धमूल, दृढबद्ध सलग्न ।
विषण्ण, वि (सं) शोकमग्न, परिग्न-,त्रस्त, अवसन्न ।
—मुख, वि (स) विषण्णवदन, सशोकास्य । आर्त्त, विदून ।
विषण्णता, स स्त्री (स), मनःक्षता, परिसन्नता, अवसन्नता, शोकार्त्तता ।
विषम, वि (सं) असम, नतोन्नत, पिटलावृत, २ अयुग्म, दे 'ताक़' ३ विरुद्ध, कठिन, दुस्साध्य ४ अति, तीव्र तीक्ष्ण ५ भीषण, घोर ।
—ज्वर, स पु (सं) ज्वरभेद २ दे 'मलेरिया' ।
—नयन, स पु (स) विषमनेत्र, शिव ।
—बाण, सं पु (स) कदर्प, काम ।
—वृत्त, स पु (स न) असमचरण वृत्त (छद) ।
विषमता, स स्त्री (स) वैषम्य, समताऽभाव २ अयुग्मता ३ वैर, विरोध ।
विषय, स पु (स) गोचर, इंद्रिया (=शब्दस्पर्शरूपरसगधा) २ देश, जनपद ३ प्रकरण, प्रसंग ४ उपभोग, आस्वाद दर्न ५ सुरत, मैथुन ६ द्रव्य, पदार्थ ७ कार्य, व्यापार, अर्थ ।
—सुख, सं पु (सं न) इंद्रियसौख्यम् ।
—विषयक, वि (सं)-सबधिन्, उद्दिश्य, अधिकृत्य, आश्रित्य ।
विषयी, वि (सं विन्) भोग विषय, आसक्त, लम्पट विषय, निरत पर परायण-अधीन, कामिन्, विलासिन्, रसिकलम्पटक, इंद्रिय, औपभ्यिक ।
विषाण, स पु (स न) शृग, दे 'सींग' २ गजदंत ३ कोलदंत ।
विषाद, स पु (स) अवसाद, दुःख, शोक, परि-स, ताप, आधि (पु), आर्ति (स्त्री) २ जाड्य ३ मौर्ख्यम् ।
विषुव, सं पु (स न) विषुवत् (न), विषुप, विषुण, समरात्रिंदिवकाल [= मीर चैत्र मास की नवीं (२१ मार्च) तथा मीर आश्विन मास की नवीं (२२ सितंबर)] ।
—रेखा, स स्त्री (सं) निरक्ष, भूकक्षा, भूमध्यरेखा, विषुवद्रेखा ।
जल—, स पु (स न) विषुपद (२२ सितंबर)।
महा—, स पु (स न) हरिपद (२१ मार्च) ।
विषूचिका, स स्त्री, दे 'हैजा' ।
विष्ठा, स स्त्री (स) उच्चार, गूथ-थ, मल, पुरीष, शमल, शकृत् (न), विष् (स्त्री) ।
विष्णु, स पु (स) चक्रिन्, चतुर्भुज, चक्रपाणि, जनार्दन, त्रिविक्रम, हरि, हृषीकेश, श्री,-पति निवास वत्स-कर धर, वैकुंठ, माधव, मधुसूदन, पुरुषोत्तम, पीतांबर, दामोदर, पद्मनाभ, नारायण, केशव, कृष्ण, गोपाल इ । २ अग्नि ३ आदित्य विशेष ।
—गुप्त, स पु (स) वैयाकरणविशेष २ चाणक्य ।
—पद, सं पु (सं न) आकाश २ पद्म ३ क्षीरोद ।
—पदी, स स्त्री (स) गगा ।
—पुराण, स पु (सं न) पुराणग्रंथविशेष ।
विसर्ग, स पु (स) विसर्जनीय, वर्णविशेष (= व्याः) २ दान ३ त्याग ४ मुक्ति (स्त्री), नि श्रेयस ५ मृत्यु ६ प्रलय ७ विरह ।
विसर्जन, सं पु (सं न) परि,त्याग उत्सर्ग, मोचन, उज्झन २ स,प्रेषण, प्रस्थापन ३ प्रस्थान, प्रयाण ४ समाप्ति (स्त्री), अंत ५ दान, वितरणम् ।
विसाल, सं पु (अ) संयोग, संगम ।

विसूचिका, स स्त्री (स) विसूची, दे 'हैजा' २ अजीर्णरोगभेद ।

विस्तर, स पुं (स) विस्तार, दे २ आसन, पीठम् ।

विस्तार, स पु (स) विस्तर, प्रसार, आयाम, वितति (स्त्री) विग्रह, व्याम, विस्तीर्णता २ विटप, शाखा ।

—करना, क्रि स, प्रसारयति (प्रे), दे 'फैलाना' ।

विस्तीर्ण, व (स) विस्तृत प्रसृत, वितत आयत २ विपुल, प्रचुर ३ विशाल, महत्, बृहत् ।

विस्तृत, वि (स) दे 'विस्तीर्ण' ।

विस्फोट, स पुं (सं) स्फोट, आस्फुटन स्फोटन २ विस्फोटक, फोड़ा, स्फोट रुज ।

विस्फोटक, स पु (स) दे 'विस्फोट' (२)। २ स्फोटनशील ३ दे 'चेचक' ।

विस्मय, स पु (स) आश्चर्य, चमत्कार २ गर्व ३ सन्देह । वि (स) हतदर्प ।

विस्मरण, स पु (स न) विस्मृति (स्त्री), स्मृति-नाश-लोप ।

विस्मित, वि (स) विस्मय-आश्चर्य, अपन्न चकित, चकित, विस्मयाकुल ।

विस्मृत, वि (स) स्मृतिभ्रष्ट, स्मृतिपथच्युत अचेत ।

विस्मृति, सं स्त्री (स) विस्मरण, दे ।

विस्रम्भ, स पु (स) विश्वास, प्रत्यय २ हत्या, वध ।

विहग, विहंगम, विहंग, स पु (स) खग, दे 'पक्षी' ।

विहरण, स पुं (स न) विचरण, अटन, भ्रमण २ वियोग ३ प्रसरणम् ।

विहार, स पुं (स) परिक्रमण-भ्रमण, पर्यटन, परिभ्रमण, विहरण विचरण २ सुरत, संभोग ३ सुरतालय ४ सघाराम, आश्रम, मठ दे ।

विहारी, स पु (स-रिन्) भोगासक्त २ विहारकर्तृ ३ श्रीकृष्ण ।

विहित, वि (स) (शास्त्रादिभि) आदिष्ट, दिष्ट, उपदिष्ट २ न्याय्य, धर्म्य, उचित ३ कृत, अनुष्ठित ४ दत्त ।

विहीन, वि (स) परि-त्यक्त उज्झित २ रहित, वर्जित हीन, वंचित, शून्य ।

विह्वल, वि (स) विक्लव, व्याकुल, दे ।

विह्वलता, स स्त्री (स) व्याकुलता, दे ।

वीची, स स्त्री (स) लहरी, तरंग, दे २ रश्मि, मरीचि, दीधिति, (सब पु) ३ कान्ति-दीप्ति (स्त्री) ।

—क्षोभ, स पु (स) लहरीविलास ।

—तरंग न्याय, स पु (स) दे यत्र परिशिष्ट ।

—माली, स पु (स-लिन्) सागर, समुद्र, अर्णव ।

वीज, स पु (स न) बीज, दे ।

वीजन, स पु (स न) व्यजन, दे 'पंखा' ।

वीणा, स स्त्री (स) वल्लकी, विपञ्ची-विपची, ध्वनिमाला, घनमल्ली, परिवादिनी घोषवती, कण्ठकूणिका २ विद्युत् (स्त्री) ।

—दंड, स पु (स) प्रवाल ।

—पाणि, स स्त्री (स) सरस्वती ।

वीत, वि (स) प्रस्थित, प्रयात २ परित्यक्त ३ मुक्त ४ समाप्त ५ रहित, हीन ।

—भय, वि (सं) विगत-निर्-भय ।

—राग, वि (स) विरक्त, निस्स्पृह ।

—शोक, वि (स) निश्शोक । स पु (स) अशोकवृक्ष ।

वीथी, स स्त्री (स) वीथि (स्त्री), वीथिका, रथ्या, मार्ग २ पंक्ति (स्त्री) ३ रूपकभेद (सा) ।

वीर, स पु (स) शूर, शौटीर, सुविक्रान्त, प्रवहावत्, वीर, जेतृ २ योध, योद्धृ, भट, सैनिक ३ नायक, अग्रणी (पुं) ४ पुत्र ५ पति ६ भ्रातृ । वि (स) विक्रान्त, वीर्यवत्, साहसिक, पराक्रमिन् ।

—केसरी, स पु (स-रिन्) वीर, पुंगव उत्तम ।

—गति, सं स्त्री (स) युद्धे मरणाद् स्वर्ग लाभ २ स्वर्ग ।

—चक्र, स पु, (स वीर+चक्र) सैनिकानां असाधारण-मान्यतापूर्वक-स्वानुरूप राजत वा पदकम् २ पुरस्कारविशेष ।

—पत्नी, स स्त्री (स) वीरभार्या ।

—प्रसू, स स्त्री (स) वीर-मातृ (स्त्री)-जननी ।

—भद्र, स पु (स) अश्वमेधाश्व २ वीरोत्तम ३ शिवगणविशेष ।

—लोक, सं पु (स) स्वर्ग ।

वीरता, स स्त्री (स) वीर्य, शूरता, शौर्य, पराक्रम, साहस, रणोत्साह, ओजस् धामन् (न) ।

वीरान, वि (फ़ा) निर्मानुष, निर्जन, नष्ट २ निश्श्रीक, शोभाहीन ।

वीराना, स पु (फ़ा) विजन, निर्जनप्रदेश ।

वीरानी, स स्त्री (फ़ा) विजनता, निर्जनता ।

वीर्य, स पु (स न) शुक्र, रेतस्-तेजस (न) बीज, चरमधातु इन्द्रिय २ दे 'रज' ३ वीरता, दे ४ बीजम् ।

—के कीड़े, स पु, शुक्रकीटा ।

—ज, स पु (स) पुत्र, तनय ।

—विरहित, वि (स) निःशक्त २ क्लीब ३ भीरु ।

वीर्यवान्, वि (स-वत्) बलवत्, दृढांग २ मांसल ।

वुकूफ, स पु (अ) परिचय २ ज्ञानम् ३ बुद्धि (स्त्री) ।

वुज़ू, स पु (अ) अंगप्रक्षालनम् (इस्लाम) ।

वृंत, स पु (स न) चूचुक-क, स्तन कुच, अग्र २ प्रसवबंधन, दे 'डंठी' ।

वृंद, सं पु (स न) समूह, निकर २ कोटिशतक, अर्बुदम् ।

वृंदा, स स्त्री (स) तुलसी (पौदा) दे २ राधा ।

—वन, स पु (स) वृंदारण्य २ तीर्थविशेष ।

वृक, सं पु (स) कोक ईहामृग २ शृगाल ।

वृक्ष, स पु (स) तरु, पादप, शाखिन्, विटपिन्, द्रु, द्रुम, पलाशिन्, महीक्षितिभू, रुह न अग, नग, विटप ।

वृत्त, स पुं (सं न) चरित, चरित्र, आचार, आचरण २ सद्वृत्त आचार ३ समाचार, वृत्तान्त, उदन्त ४ वर्णवृत्तछन्दस (न) ५ मंडल, वर्तुलम् ।

—खंड, स पु (स पु न) मंडलवर्तुल, अंश ।

वृत्ति, स स्त्री (सं) आजीव-वर्तन विका, जीवन, जीविका २ उपजीविका, भृति (स्त्री) ३ संक्षिप्तगंभीरव्याख्या, सूत्रार्थविवरण, टीका ४ वृत्त, वृत्तान्त ५ नाटकीयशैली (सा कैशिकी इ) ६ व्यवहार ७ चित्तावस्था (योग, क्षिप्तमूढादि) ७ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ।

वृत्ति, स स्त्री (स) शिक्षणोपजीविका ।

मनो, स स्त्री (स) स्वभाव, प्रकृति (स्त्री), प्रवणता ।

वृथा, वि (स) व्यर्थ, निरर्थक, मोघ । क्रि वि (स) मुधा, व्यर्थ, निष्फलम् ।

वृद्ध, वि (स) स्थविर, वयस्थ, जीर्ण, जीर्ण, जरितृन । सं पु (स) जरठ, स्थविर इ, दे 'बूढ़ा' २ पंडित ।

वृद्धता, स स्त्री (स) जरा, वार्धक्य, दे 'बुढ़ापा' ।

वृद्धा, स स्त्री (स) स्थविरा, जरती, दे 'बुढ़िया' ।

वृद्धावस्था, स स्त्री (स) दे वृद्धता' ।

वृद्धि, स स्त्री (स) वर्धन, वृंहण, उन्नति (स्त्री), उत्कर्ष, उपचय, आधिक्य, विस्तार २ कुसीद, वार्धुष्य, दे 'सूद' ३ अभ्युदय, समृद्धि (स्त्री) ४ धृष्याद्यष्टवर्गोपचय (राजनीति), स्फीति-स्फाति (स्त्री) ५ जीवभद्रा (औषधविशेष) ।

—जीवक, स पु (स) कुसीदिन्, वार्धुषिक ।

—जीवन, सं पु (स न) कौसीद्य, वृद्धि जीविका ।

वृश्चिक, स पु (स) वृश्चन, पृदाकु, दे 'बिच्छू' २ अष्टमराशि (ज्यो) ३ अग्रहायणमास ।

वृष, स पु (स) ऋषभ, वृषभ, दे 'बैल' २ पुरुषप्रकार (कामशास्त्र) ३ धर्म ४ द्वितीयराशि (ज्यो) ५ पति ।

वृषभ, स पु (स) बलीवर्द, उक्षन्, दे बैल' ।

वृष्टि, स स्त्री (सं) वर्ष, वर्षण, पराभृत, दे 'वर्षा' ।

वृहस्पति, सं पु (स) सुराचार्य, दे 'बृहस्पति' २ नवग्रहान्तर्गतपंचमग्रह ३ गुरुवार ।

वे, सर्व (हिं वह का बहु) ते अमी (दोनों पु बहु) ता, अमू (दोनों स्त्री बहु), तानि, अमूनि (दोनों न बहु) ।

वेग, स पुं (सं) प्रवाह, धारा, वेणी, ओघ २ जव, स्यद, रय, तरस्-रहस (न), रभस, प्रसभ ३ मूत्रविष्ठादिनिर्गमप्रवृत्ति (स्त्री) ४ त्वरा, शीघ्रता ५ आनंद ६ प्रवृत्ति (स्त्री) ७ उद्योग ८ वृद्धि (स्त्री) ९ वीर्य, शुक्र १० गुणभेद (न्याय) ।

वेगवान्, वि (स-वत्) क्षिप्र, द्रुत, शीघ्र, जवन, आशु।
वेणी, स स्त्री (स) वेणि (स्त्री), प्रवेणी णि, वेणिका २ जलौघ, स्रोतप्रवाह।
वेणु, स पु (स) वंश, दे 'बाँस' २ वंशी, दे 'बाँसुरी'।
वेतन, स पु (स न) भरण्य, निर्वेश, भृति (स्त्री), मूल्या, कर्मण्या, कर्मण्या २ मासिक, मासिकभृति (स्त्री)।
—भोगी, स पु (स गिन्) वेतन भृति, भुज्, वैतनिक।
वेताल, स पु (स) द्वारपाल २ भूतभेद ३ भूताधिष्ठितशव।
वेत्ता, स पु (स-तृ) ज्ञातृ, बोद्धृ, विद्।
वेद, स पु (स) श्रुति (स्त्री), छन्दस् (न), आम्नाय, निगम, ब्रह्मन् (न), प्रवचन, आर्यधर्मग्रन्थविशेषा (ऋग, यजु, साम, अथर्व = ४ वेद) २ सत्यज्ञानम्।
—त्रयी, स स्त्री (स) वेदत्रयम्।
—निंदक, स पु (स) श्रुतिविरोधिन्, नास्तिक २ बुद्ध ३ बौद्ध।
—पारग, स पु (स) वेद,श विद्-मूर्ति वेत्त ज्ञानिन्-दर्शिन्।
—मंत्र, स पु (स) श्रुति,-वचन-वाक्यम्।
—माता, स स्त्री (स तृ) गायत्री, सावित्री २ सरस्वती ३ दुर्गा।
—वाक्य, स पु (स न) वेद,-मंत्र -वचनं २ प्रामाणिकवचनम्।
—विद्, स पु (स) दे 'वेदपारग'।
—विहित, वि (स) वेद, प्रतिपादित आदिष्ट उक्त।
—व्यास, स पु (स) दे 'व्यास'।
—सम्मत, वि (स) वेद, अनुकूल अनुमोदित।
वेदना, स स्त्री (स) पीडा, व्यथा, यातना, संताप २ वेदनं, अनुभव, संवेद, ज्ञानम्।
वेदनीय, वि (स) ज्ञातव्य, ज्ञेय, बोद्धव्य २ ज्ञापनीय, बोधयितव्य ३ कष्टप्रद, दुःखद।
वेदांग, स पु (स न) श्रुत्यवयवषट्प्रकार शास्त्र [= शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्दस् (न)]।
वेदांत, स पु (स) ब्रह्म अध्यात्म, विद्या, ज्ञानकांड २ उपनिषद् (स्त्री) ३ उत्तरमीमांसा, दर्शनशास्त्रविशेष।
वेदांती, स पु (स तिन्) वेदान्तशास्त्रवेत्तृ ब्रह्मवादिन्।
वेदाभ्यास, स पु (स) वेद,-अध्ययन स्वाध्याय -पाठ।
वेदी,[1] स स्त्री (स) वेदि, वेदिका, वितर्दी र्दिका (सब स्त्री)।
वेदी,[2] स पु (स-दिन्) पण्डित २ ज्ञातृ।
वेदोक्त, वि (स) वेदविहित, दे।
वेध, स पु (स) वेधन, निर्भेद -दन, व्यध। यंत्रैर्ग्रहनक्षत्रावलोकनम्।
—शाला, स स्त्री (स) मानमंदिरम्।
वेधक, स पु (स) वेधनकर, छिद्रकार, वेधिन्।
वेधना, क्रि स (स वेधन) व्यध (दि प. अ), विध्-सम्-उत्कृ (तु प से), छिद्रयति (ना धा)। स पु, वेध धर्न, व्यध धन, समुत्किरणं (दे वेधक, विद्ध १)।
वेधनी, स स्त्री (स) वेधनिका, आस्फोटनी, वृषदंशिका।
वेधी, स पु (स धिन्) वेधक, दे।
वेला, स स्त्री (स) काल, समय २ सागरतरंग ३ समुद्रतट -टम्।
वेल्डिंग, स पु (अ) सन्धानम्।
वेल्व, स पु (अ) कपाट।
—ट्यूब, स स्त्री (अ), कपाटनलिका।
वेश, स पु (स) आकल्प, प्रसाधन, नेपथ्य, प्रतिकर्मन् (न), वेष २ परिधानं, वस्त्राणि वसनानि (न बहु) ३ पट,-कुटी-मंडप ४ गृहम्।
—धारी, स पु (स रिन्) वेषधर, कपट छद्म,-वेशिन् २ दम्भिन्।
—भूषा, स स्त्री (स) परिधान, वस्त्राभरणम्।
क्रिया का—धारना, मु, अन्यवेशं परिधा, वेष परिवृत् (प्रे), वेशान्तरं विधा।
वेश्या, स स्त्री (स) वेश,-युवती-वधू (स्त्री)-वनिता स्त्री, वार, अंगना-वधू विलासिनी नारी स्त्री, गणिका, रूपाजीवा, साधारणस्त्री, पण्यांगना, कामरेखा, भोग्या, भुजिष्या, क्षुद्रा।
—पन, स पु गणिकावृत्ति (स्त्री), वेश्यात्वं।
वेष, स पु (स) दे 'वेश'।
वेष्टन, स पु (स न) पुट-ट, कोश प,

प्रावरण २ आच्छादन परिवेष्टन ३ उष्णीषम्।
वेष्टित, वि (स) वलयित, नवीन, कृतवेष्टन २ रुद्ध।
वेसर, स पु (स) वेश(स)र, अश्वतर, वेगसर, दे 'खचर'।
वेसवार, सं पुं (स) उपस्कर, वेश (स) वार।
वैकल्पिक, वि (स) ऐच्छिक, स्वाधीन २ संदिग्ध, विकल्प्य ३ एकांगिन्।
वैकुंठ, स पु (स न) स्वर्ग, विष्णुलोक (स पु) विष्णु।
वैजयन्ती, स स्त्री (स) केतु, पताका ध्वज।
वैज्ञानिक, स पु (सं) विज्ञान-वेत्तृ विद्। वि (स) विज्ञान-सम्बन्धिन् विषयक मूलक।
वैतनिक, सं पु (स) दे 'वेतनभोगी'।
वैतरणी, स स्त्री (स) यमद्वारवर्ती नदी विशेष (पुराण)।
वैताल, वि (स) वेताल, विषयक-सम्बन्धिन्। सं पुं दे 'वेताल' तथा 'वैतालिक'।
वैतालिक, स पु (स) वैताल स्तुतिपाठक, बोधकर।
वैद, वि (स) वेद, विषयक सम्बन्धिन्, श्रौत, छन्दस् २ वेद, अनुकूल विहित समाधत ३ वेदज्ञ। स पु (स) वेदज्ञ-वेदनिष्णात विप्र ब्राह्मण।
वैदिक, वि (स) छांदस, श्रौत, वेद, विषयक सबन्धिन्-उक्त प्रतिपादित।
वैदूर्य, स पु (स न) केतुरत्न, विदूररत्नजम्।
वैदेशिक, वि (स) अन्य पर वि-देशीय। स पुं (स) पारदेशिक, विदेशीय।
—मंत्री, सं पु (सं त्रिन्) पारदेशिकसचिव।
वैदेही, स स्त्री (स) विदेहतनया, जानकी, सीता।
वैद्य, स पुं (स) भिषज्, अगदंकार रोगहारिन्, चिकित्सक, आयुर्वेदिद् २ पंडित।
—राज, स पु (स) भिषग्वर।
वैद्यक, स पुं (सं न) आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्रम्।
वैध, वि (स) वैधिक (-की), धर्म्य, न्याय्य शास्त्र, समत-अनुकूल २ उचित, युक्त।
वैधव्य, स पुं (सं न) रंडात्वम्।
वैनतेय, स पु (स) गरुड, दे।
वैभव, स पु (स न) वित्त, धन, विभव, संपद्-संपत्ति (स्त्री) ऐश्वर्य २ महिमन् (पु), सामर्थ्यम्।
—शाली, वि (सं लिन्) समृद्ध, धनिन्।
वैमनस्य, स पु (सं न) वैर, वि, द्वेष २ अन्यमनस्कता।
वैयाकरण, सं पु (स) व्याकरण-वेतृ-अध्येतृ पंडित।
वैर, स पु (स न) विरोध, वि, द्वेष, शत्रुता त्व, सापत्न्य, विपक्षता, द्वंद्वभाव।
—करना, वि द्विष (अ उ अ), विरुध् (रु प अ), वैरायते (ना धा), अभित्रायते (ना धा)।
वैराग, स पु, दे 'वैराग्य'।
वैरागी, स पु (स गिन्) वैरागिक वैराग्यवत्, विरक्त' दे। २ वैष्णवसम्प्रदायविशेष।
वैराग्य, स पु (सं पु) विरक्ति (स्त्री), वैरक्त्य, अनासक्ति (स्त्री)।
वैरी, स पु (स रिन्) अरि, शत्रु, सपत्न, रिपु, अराति, जिघांसु, द्वेष्टृ, प्रत्यर्थिन्, परिपंथिन्।
वैवाहिक, वि (सं) औद्वाहिक (-की स्त्री), वैवाह (ही स्त्री)।
वैशाख, सं पु (सं) माधव, राध, सौर प्रथम चान्द्रद्वितीय-मास।
वैशेषिक, स पु (स न) कणादमुनिप्रणीतो दर्शनग्रंथविशेष, औलूक्यदर्शनम्।
वैश्य, स पुं (सं) ऊरुज, अर्य्य, विश, वणिज्, पणिक, भूमिजीविन्, वार्तिक, व्यवहर्तृ।
वैश्यानी, सं स्त्री (सं वैश्य) वैश्या, अर्य्या, अर्य्याणी।
वैश्वदेव, स पु (सं) विश्वदेवसंबंधियज्ञ।
वैश्वानर, सं पुं (सं) अग्नि २ परमेश्वर।
वैषम्य, सं पु (सं न) विषमता, दे।
वैष्णव, सं पु (सं) विष्णु-उपासक भक्त, कार्ष्ण २ सम्प्रदायविशेष। वि (सं) वार्ष्ण, हार, विष्णुसंबंधिन्।
वैसा, वि (हि वह+सा) तादृश-श, तद, तुल्य-सदृश, तथाविध।
वैसा—, वि [मामान्य, साधारण, प्राकृत।
—का वैसा, क्रि वि, पूर्ववत्, यथापूर्वम्।

वैसे, क्रि वि (हिं वैसा) तथा, तद्वत, तत्सदृशम् ।
—ही, क्रि वि , मूल्य विना, दे 'मुक्त' ।
वोट, सं पु (अ) मत, छंद, छन्दस् (न) २ मतदर्शन ३ मतदर्शनाधिकार ।
वोटर, सं पुं (अ) मतदर्शक २ मतदर्शनाधिकारिन् ।
व्यंग, वि (सं) अकाय, अशरीर २ विकलहीन,-अंग ३ 'व्यंग्य' ।
व्यंगार्थ, स पुं , दे 'व्यंग्य' ।
व्यंग्य, सं पु (मं न) व्यंजनया बोध्योऽर्थ , गूढ-गुप्त,-अर्थ-आशय २ उपालभ , अधिआ,-क्षेप ।
—कसना या छोड़ना, क्रि स, उपालभ (भ्वा आ अ), अधि-आ,-क्षिप (तु प अ), अव-उप-हस् (भ्वा प से) ।
व्यंजन, स पुं (स न) स्फुटी प्रकटी,-करण भवन, प्रकाशन २ दे 'व्यंजना' ३ चिह्न, लक्षणं ४ अर्द्धमात्रक, ककारादयो वर्णा ५. अगं, अवयव ६ श्मश्रु (न) ७ तेम, तेमन, निष्ठान, अन्नोपस्करणं ८ सिद्धान्न ९ उपस्थ ।
—कार, स पु (स) पाचक , सूद , रन्धक ।
—संधि, स स्त्री (सं पुं) व्यंजन,-सयोग सन्निकर्ष ।
व्यंजना, सं स्त्री (सं) दे 'व्यंजन' (१) । २ शब्दशक्तिविशेष (सा) ।
व्यक्त, वि (स) प्रकट टित, स्फुट, विशद, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, प्रकाशित ।
—करना, क्रि स, व्यञ् (रु प से, प्रे.) प्रकाश (प्रे), प्रकटी विशदी-स्पष्टीकृ ।
—होना, क्रि. अ व्यञ् (कम), प्रकटी स्पष्टी-आविर् , भू , प्रकाश (भ्वा आ स) ।
व्यक्ति, स स्त्री (स) स्पष्टता, विशदता, स्फुटता, प्राकट्य, आविर् प्रादुर् , भाव २ मनुष्य, मानव ३ व्यष्टि (स्त्री), पृथक्त्व ४ वस्तु (न), पदार्थ ५ भूतमात्र ६ प्रकाश ।
—गत, वि (सं) व्यक्ति, स्थ,-वर्तिन्-सबंधिन्, वैयक्तिक, पुरुषविशेषानुबद्ध ।
व्यग्र, वि (स) सम्भ्रान्त, अधीर, व्याकुल, दे. २ भीत, त्रस्त ३ व्यापृत, कार्यमग्न, व्यासक्त ।
व्यग्रता, स स्त्री (स.) उद्वेग , सम्भ्रम , व्याकुलता दे २ चिंता, रणरणक , उत्कण्ठा ३ व्यासक्ति (स्त्री) ।
व्यजन, सं पु (स न) तालवृन्तक, दे 'पंखा' ।
व्यतिक्रम, सं. पु (स) क्रम, भग विपर्यय विपर्यास व्यत्यय २ अंतराय , विघ्न ।
व्यतिरिक्त, वि (सं) भिन्न, अपर, इतर २ अधिक, विशिष्ट । क्रि वि (स न) विना, अतिरिक्तम् ।
व्यतिरेक, सं पु (स) भेद , भिन्नता, पृथक्त्व, अंतर २ वृद्धि (स्त्री) ३ अतिक्रमण ४ अर्थालंकारभेद (का) ।
व्यतीत, वि (स) अतीत, गत, अतिक्रान्त ।
व्यत्यय, **व्यत्यास**, } स पु (स) दे 'व्यतिक्रम' (१) ।
व्यथा, स स्त्री. (स) पीडा, वेदना, यातना २ कष्ट, क्लेश , दु:खम् ।
व्यथित, वि (स) पीडित, आर्त २ दु:खित, स परि,-तप्त ३ शोकमग्न ।
व्यभिचार, सं पु (स) जारकर्मन् (न), पारदार्य, परयोषित्गम । (स्त्री का) पतिलंघन, परपुरुषगमन २ कदाचार , दुराचार , दुर्वृत्तम् ।
व्यभिचारिणी, स स्त्री (स) जारिणी, पुंश्चली, बंधकी, परपुरुषगामिनी ।
व्यभिचारी, स पु (स रिन्) पारदारिक , परस्त्रीगामिन्, जार , भुजग , परतल्पग , उपपति २ दुर्वृत्त , दुराचारिन् ३ दे 'सचारी' (भाव) ।
व्यय, स पु (स) वित्त ,विनियोग , अर्थ , उत्सर्ग , २ दानं ३ परित्याग ।
—शील, वि (स) मुक्तहस्त, अमितव्ययिन् ।
व्यर्थ, वि (स) विफल, निष्फल, मोघ, निरर्थक, निष्प्रयोजन, वृथा , मुधा २ अपार्थक, अर्थहीन । क्रि वि (स न) निरर्थक, वृथा, मुधा, निष्प्रयोजन, निर्निमित्त, निष्फलम् ।
व्यवच्छेद, स पु (स) पार्थक्य, पृथक्त्व, २ विभाग , खंड ३ विराम , ४ निवृत्ति (स्त्री) ।
व्यवधान, स पुं. (स न) व्यवधा, आवरण,

२ तिरस्करिणी, प्रतिसीरा ३ विभाग, खंड ४ विच्छेद ।
व्यवसाय, स पु (स) वृत्ति (स्त्री), उपजीविका, आजीव २ व्यापार, क्रय विक्रय ३ कार्य-आरंभ-उपक्रम ४ निश्चय ५ प्रयत्न, उद्यम ।
व्यवसायी, स पु (स यिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन् २ क्रयविक्रयिक, वणिज् ३ वृत्तिमत्, व्यवसायविशिष्ट ४ अनुष्ठातृ ।
व्यवस्था, स स्त्री (स) शास्त्रनिरूपित, विधि विधान निर्णय २ रचना, विन्यास, क्रमेण स्थापन व्यूहन ३ प्रबंध, कार्यनिर्वाहण अवेक्षण ४ स्थिरता ।
व्यवस्थापक, सं पु (स) व्यवस्थादायक, व्यवस्थापयितृ २ अधिष्ठातृ, अध्यक्ष, चालक, निर्वाहक, प्रबंधक ।
—**मंडल**, स पु (स न) व्यवस्थापिका सभा ।
व्यवहार, स पु (स) वृत्त, वर्तन, चरित, आचार, चेष्टित २ कर्मन् (न), कार्य २ व्यवसाय, व्यापार ३ कौसीद, वृद्धिजीवन ४ विवाद ५ कलह, पण ६ अभियोग, कार्य (-मुकदमा) ७ प्रउप,-योग ।
—**करना**, क्रि स, व्यवहृ (भ्वा उ अ), वृत् (भ्वा आ से), आचर् (भ्वा प से) ।
व्यवहारी, वि (स रिन्) व्यवहारक, व्यवहर्तृ २ प्रचलित, लौकिक । स पु (सं) वणिज्, कार्य, अर्थिन् ।
व्यवहार्य, वि (सं) व्यवहरणीय २ उपयोक्तव्य ।
व्यवहित, वि (स) व्यवधानविशिष्ट, सावरण, तिरोहित ।
व्यवहृत, वि (सं) व्यापारित, उप प्र,-युक्त २ आचरित, अनुष्ठित ।
व्यसन, स पु (सं न) दोष, दुर्गुण, दुःशील, दुर्वृत्ति (स्त्री) २ विपद्-विपत्ति (स्त्री) ३ दुःख, कष्ट ३ अनिष्ट, अमंगल ४ विषय, अनुराग-आसक्ति (स्त्री) ५ दुरोदर, भार्या ६ अभिरुचि (स्त्री) ।
व्यसनी, वि (सं निन्) दुःशील, दुर्वृत्त, विषयासक्त २ वेश्यागामिन् ।
व्यस्त, वि (सं) संभ्रान्त, व्याकुल दे २ व्यासक्त, लीन, मग्न ३ व्यात ४ मिश्र ५ प्रत्येक, पृथक्-पृथक् ६ क्रमहीन, अव्यवस्थित ।
व्याकरण स पु (सं न) वेदांगविशेष, शब्दशास्त्र २ व्याकरणग्रंथ ।
व्याकुल, वि (स) आकुल, व्यग्र, संभ्रान्त, विकल, विह्वल, मोहित, विक्षिप्त, वि-मूढ, कातर, विह्वल, अधीर, सम्भ्रान्त-व्यस्त विक्षिप्त मूढ-चित्त मनस २ अति,-उत्क-उत्कंठ-उत्सुक ।
—**करना**, क्रि स, मुह-संभ्रम् (प्रे), आकुलीविह्वलीकृ, वि स,-क्षुभ् (प्रे) ।
—**होना**, क्रि अ, आकुलीभू, मुह् (दि प से), २ अत्युत्सुक (वि) भू ।
व्याकुलता, स स्त्री (स) आ-व्या,-कुलता कुलत्व, व्या,मोह, व्यग्रता, संभ्रम, विकलता, व्यस्तता, विह्वलता, संवि, क्षोभ, चित्तवैक्लव्य-अशांति अनिर्वृति (स्त्री), उद्वेग, व्याक्षेप, उद्विग्नता २ उत्कंठातिशय, लालसा ।
व्याख्या, स स्त्री (स) स्पष्टी विशदी,-करण, विवरण, प्रकाशन, व्याख्यान, प्रवचन २ टीका, टिप्पणी, भाष्य (विविधभेद) ३ विवरणात्मको ग्रन्थ ।
—**करना**, क्रि स, व्याख्या (अ प अ), निरूप् (चु), विवृ (स्वा उ से), व्याचक्ष् (अ आ अ), स्फुटी विशदी स्पष्टी कृ ।
—**स्थान**, स पुं (सं न) व्याख्यानभवन सभाभवनम् २ विद्यालय ।
व्याख्याता, सं पु (स -तृ) भाष्य-व्याख्या टीका,-कार २ प्र,वक्तृ, उपदेशक, व्याख्यानदातृ, सम्भारक ।
व्याख्यान, सं पु (स न) दे 'व्याख्या'(१) २ भाषण, उपदेश, प्रवचनम् ।
—**देना**, क्रि स, व्याख्या (अ प अ), सभाष (भ्वा आ से) उपदिश् (तु प. अ), प्रवच् (अ प अ) ।
—**शाला**, सं स्त्री (स) सभा-व्याख्यान, स्थान भवनम् २ शिक्षालय ।
व्याघात, सं पु (सं) विघ्न, दे २ प्रहार, आघात ३ अलंकारभेद (सा) ।
व्याघ्र, स पु (सं) शार्दूल, द्वीपिन्, मृगारि, हिंसारु, चंद्रकिन्, सेन, व्याड २ पंच,-नख रक्त-तिलक माल्य, सिंह दे ।
व्याज[1], सं पु, दे 'ब्याज' ।
व्याज[2], सं पु (सं) अपदेश, देश,

कपट, छल, छद्मन (स), मिष २ विघ्न ३ विलंब।
—निंदा, स स्त्री (स) कपटनिंदा २ अलंकार भेद (सा)।
—स्तुति, स स्त्री (स) कपटप्रशंसा २ अलंकारभेद (सा)।
व्याजोक्ति, स स्त्री (स) कपट-छल-वाक्य २ अलंकारभेद (सा)।
व्याध, स पु (स) मृगयु, मृगजीवन, लुब्धक, द्रोहाट, बल्वागुन अखेटक, मृगवधाजीव २ शाकुनिक, जालिक पक्षिग्राहक, जीवानक।
व्याधि, स, पु (स) रोग, दे २ विपत्ति (स्त्री)।
व्यान, स पुं (स) देहस्थवायुभेद।
व्यापक, वि (स) व्यापिन्, प्रसारिन् २ आच्छादक।
सब—, वि (स) विश्वव्यापिन्, सर्वग।
व्यापकता, स स्त्री (स) व्याप्ति, दे।
व्यापना, क्रि स (स व्यापन) व्याप (स्वा प अ), वि-अश (स्वा आ से), अत प्रस (भ्वा प अ)।
व्यापादन, स पुं (स न) अपकार-अनिष्ट, चिन्ता विन्तनम् २ वध, हत्या ३ नाश, ध्वस।
व्यापार, स पु (स) वाणिज्य, वणिक्कर्मन (न), क्रयविक्रय, निगम २ कार्य, कमन् (न) ३ व्यापार, इंद्रियार्थप्रयोग (न्या) ४ व्यवसाय।
—करना, क्रि अ, क्रयविक्रय-वाणिज्य कृ, पण् (भ्वा आ से)।
व्यापारी, स पुं (स रिन्) वणिन्, वणिज, आपणिक, नैगम, क्रयविक्रयिण, पण्याजीव, सार्थिक, श्रेष्ठिन, व्यापारिन्।
व्यापी, वि (स पिन्) दे 'व्यापक'।
व्यापृत, वि (स) कार्य-सलग्न-लग्न-रत २ निहित, स्थापित। स पु (स) मन्त्रिन, उच्चकर्मचारिन्।
व्याप्त, वि (स) ओत प्रोत, अत प्रसृत २ भृत, परिपूरित।
व्याप्ति, स स्त्री (स) व्यापन, परिपूरण, अंत प्रसार।
व्याम, स पु (स) व्यामन, दैर्घ्यमानभेद।
व्यामोह, स पु (स) विसं,मोह, विवेक भ्रंश।
व्यायाम, स पु (स) मल्लक्रीडा, बलवर्द्धक, श्रम २ परिश्रम।
व्यायोग, स पु (स) रूपक-नाटक, भेद (सा)।
व्याल, स पु (स) सर्प, अहि २ सिंह ३ व्याघ्र ४ हिंस्रपशु। वि (स) दुष्ट, अपकर्तृ।
—ग्राही, स पु (स हिन) दे 'संपेरा'।
व्यावहारिक, वि (स) वनन-व्यवहार, विषयक २ अभियोगसम्बन्धिन् ३ सामान्य, साधारण।
व्यास, स पु (स) पाराशर-रि-र्य, कृष्ण, द्वैपायन, कानीन, बादरायण-णि, सत्य, भारत व्रत-रत, माठर, वेदव्यास, सात्यवत २ कथावाचक ३ विष्कंभ, गोलस्य मध्यरेखा ४ विस्तार।
व्यासक्त, वि (स) अत्यतानुरक्त।
व्याहृति, स स्त्री (स) उक्ति (स्त्री) २ मन्त्रविशेष (= भू, भुव, स्व)।
व्युत्पत्ति, स स्त्री (स) विशिष्टज्ञान २ उद्गमस्थान, मूल ३ निरुक्ति (स्त्री), शब्द-साधन सिद्धि (स्त्री), निर्वचनम्।
व्युत्पन्न, वि (स) निष्णात, प्रवीण, निपुण, विशेषज्ञ, विज्ञ २ व्युत्पत्तियुत ३ सस्कृत।
व्यूह, स पु (स) सैन्य-सेना-विन्यास-सस्थान २ सेना ३ समूह ४ रचना, ५. तर्क ६ शरीरम्।
—रचना, क्रि स व्यूह् (भ्वा प से), सैन्य विन्यस (दि प से), व्यूह रच् (चु)।
व्योम, स पु [स मन् (न)] आकाश २ जल ३ जलद।
—यान, स पु (स न) विमान-नं, वायुयान, *वातपोत।
व्रज, स पु (स) समूह, समुदाय २ मथुरावृन्दावनयोश्चतुपार्श्ववर्तिदेश, व्रज-मडल भूमि (स्त्री) ३ गोष्ठम्।
—नाथ, स पु (स) श्रीकृष्ण, व्रजमोहन-राज-वल्लभ इश्वर इद्र।
—भाषा, स स्त्री (स) शौरसेनीप्राकृतादुद्भूतो भाषाविशेष।

व्रण, स पु (स पु न) क्षतंनि (स्त्री), अरुस् (न), इर्मं मैं २ दे 'विस्फोट' (२)।
व्रत, स पु (स पु न) नियम(या)म, पुण्यक, २ उपवास उपोषणं, लंघन ३ दृढ़ सवल्प अध्यवसाय निश्चय प्रतिज्ञा।
—रखना, क्रि अ, उपवस (भ्वा प अ), लघ (भ्वा आ से), उपोषण कृ, व्रतयति (ना धा)।
—लेना, क्रि अ, दृढ़सवल्प कृ, सशपथ प्रतिज्ञा (क्र आ अ), व्रत धृ (चु) चर (भ्वा प से)।
व्रती, स पु (स तिन्) व्रत, धर न्थ चारिन् २ यजमान ३ ब्रह्मचारिन् ४ तापस, तपस्विन्।
व्रात्य, स पु (स) सस्कारहीन २ सावित्री पतित ३ साकरिक, मिश्रज ।
व्रीडा, स स्त्री (सं) त्रपा, लज्जा ।
व्रीहि, स पु (स) शालि, स्तवकरि २ धान्यमात्रम्।
बहु—, स पु (स) समासभेद (व्या)।

श

श, देवनागरीवर्णमालाया त्रिंशो व्यञ्जनवर्ण, शकार ।
शंकर, वि (सं) शुभ(भ)कर, मगल्य, शुभ, शिव, भद्र। सं पु (स) महादेव, शिव, दे। २ शंकराचार्य ।
शंकरा, स स्त्री (स) पार्वती २ मंजिष्ठा ३ शमीवृक्ष । वि स्त्री, सुख-मगल-कारिणी दायिनी।
शंकराचार्य, स पु (स) अद्वैतमतप्रवर्तक आचार्यविशेष ।
शंकरी, स स्त्री (सं) पार्वती, उमा २ मंजिष्ठा, रक्ता ३ शमीवृक्ष ४ रागिणीभेद । वि स्त्री, मगल-कल्याण-कारिणी।
शंका, स स्त्री (स) भय, भीति (स्त्री), त्रास, दर, साध्वस २ सदेह, सशय, विकल्प, आशंका ३ अशुभ ।
शंकित, वि (स) भीत, त्रस्त, सभाध्वस २ सदिग्ध, अनिश्चित ३ सशय-संदेह-मग्न, आशंकित, साशक।
शंकु, स पु (स) तीक्ष्णाग्र निशिताग्र, पदार्थ २ कील ३ नागदन्त, कल्क ४ कुन्त, प्राम ५ (शासदाना) फल फल्क ६ दशलक्षकोटि (स्त्री) (सम्याविशेष) ७ मेरु ८ गोपुराकार स्तम्भरूपी यूप ।
शंख, स पु (स पु न) कबु, कबोज, अर्णोभव, पावनध्वनि अन्तकुटिल, महा-शुक्ल, बहुनाद, सुनाद, हरिप्रिय २ लक्ष कोटि (स्त्री) दशनिखर्वसंख्या ३ गड ४ गजगड गण्डतमध्य वा ५ असुरविशेष ।
—बजाना, क्रि स, शख ध्मा (भ्वा प अ), शखेन पूर् (चु)।
—ध्वनि, स स्त्री (स पु) कंबुनाद ।
—पाणि, स पु (स) शंखधर, विष्णु २ कृष्ण ।
शंखिनी, स स्त्री (स) चतुर्विधनारीष्वन्य तमा २ सरमहाभद्र, तिक्ता, सूक्ष्मपुष्पी ३ दे 'सीप'।
शंठ, स पु (सं) अविवाहित, अकृतविवाह, कुमार २ मूर्ख ३ क्लीव ।
शंड, स पु (स) क्लीव, निमुष्क, षट, नपुंस (पु), नपुंसक (क) २ गोपति, बलीवर्द ३ उन्मत्त ।
शंतनु, स पु (स) महाभीष्म, प्रातीप, भीष्मजनक ।
शंबर, स पु (स) दैत्यविशेष २ युद्धम्। (स न) जल २ मेघ ३ धनम्।
—सूदन, सं पु (सं) कामदेव ।
शंबूकक, स पु (स) शबूक वा, शबु, जल, शुक्ति (स्त्री) डिंब, दुश्चर, पत्रमहूक, घोंघ २ शंख ३ क्षुद्रशंख ।
शंभु, सं पु (स) महादेव, शिव दे. २. ब्रह्मन् ३ विष्णु ।
—बीज, स पु (स न) पारद, दे 'पारा'।
—भूषण, स पु (स. न) चद्र ।
शऊर, सं पु (अ) विवेक, सूक्ष्म, दृष्टि बुद्धि (स्त्री) २ योग्यता, कौशल ३ शिष्टता, सुशीलता।
—दार, वि (अ + फ़ा) विवेकिन् २ योग्य ३ शिष्ट।
शक, सं पु (सं) जातिविशेष २ शाकादित्य, शालिवाहन ३ शालिवाहनप्रवर्तित संवत्-विशेष ।

शक², स पु (अ) सदेह, सशय २ अविश्वास, प्रत्ययाभाव ।
—करना, क्रि अ, दे 'सदेह करना' ।
शकट, स पु (स पु न) वहन, अक्ष, अनस् (न) २ शरीर, देह ।
—का भार, स पु, शलाट, शाकटीन ।
शकटिका, स स्त्री (स) लघुशकट ट, शकटी ३ शकटकीटनकम् ।
शकर, स स्त्री (स शर्करा, फा) शार्कं, स्थूल-रक्त, शर्करा, गुडचूर्णम् ।
—कद, स पु (स शर्करानद द) (लाल) रक्तालु, लोहितालु, रक्त-कद पिंडक (सफेद) शर्करा-मधुर-कद ।
—पारा, स पु (स फा) शरपाल, शर्करा पाल ।
—बादाम, स पु (फा) खुरमानिका, दे 'खुरमानी' तथा 'नद आलू' ।
शकल¹, स स्त्री (अ शक्ल) आकार, आकृति (स्त्री), रूप २ मुख-मुद्रा ३ रचना, घटना ४ उपाय ५ मूर्ति (स्त्री), दे 'रूप' ।
—बिगाडना, मु, भृश तड् (चु) ।
शकल², स पु (स पु न) खड न्ड, लव, भाग ।
शकील, वि (अ शक्ल) आकृतिमत, सुदर, सुरूप, चारु ।
शकुन, स पु (स) खग, दे 'पक्षी' २ कीट भेद ३ विश्वामित्रपुत्र ।
शकुतला, स स्त्री (स) कण्वप्रतिपालिता मेनकाविश्वामित्रयो कन्या, दुष्यतपत्नी २ श्रीकालिदासप्रणीत प्रख्यातनाटकम् ।
शकुन, स पु (स पु न) फलपूर्व-लक्षण, अजन्य, निमित्त २ मगलमुहूर्त (र्तं), तत्र भव कार्य वा ३ पक्षिन् ४ गृध्र ४ माङ्गलिक गीत ५ विवाहनिश्चायकी वरोपहार, *शकुनम् ।
—देखना या विचारना, मु, (कायारम्भात् प्राक) शकुनै फल चिंत (चु) ।
शकुनि, स पु (स) पक्षिन् २ गृध्र ३ गाधारीभ्रातृ, सौबल्क ४ महादुष्ट ।
शक्कर, स स्त्री (स शर्करा) दे 'शकर' २ दे 'चीनी' ।
शक्की, वि (अ शक) सशयात्मन, विश्वास विहीन, श्रद्धाशून्य, शंकाशील ।
शक्त, वि (स) समर्थ, क्षम, योग्य २ सबल, शक्तिमत् ३ धनिक ४ मधुरभाषिन् ।
शक्ति, स स्त्री (स) बल, सामर्थ्य, प्रभाव, तरस-ओजस् तेजस ऊर्जस् महस (न), शौर्य, पराक्रम, शुष्म, सह, स्थामन् शुष्मन् (न), प्राण २ वश, अधिकार ३ शत्रुविजयसाधन प्रभु मन्त्र उत्साह, शक्ति (स्त्री), ४ माया, प्रकृति (स्त्री) ५ दुर्गा, भगवती ६ गौरी ७ लक्ष्मी (स्त्री) ८ काष्ठ-मूर्ति (स्त्री), शस्त्रभेद ९ खड्ग १० देव नावलम् ।
—धर, स पु (स) शक्ति, ग्रह ध्वज पाणि भृत, कार्त्तिकेय ।
—वाला, वि, शक्ति-मत् शालिन्, बलवत्, शक्त, बलिन्, पराक्रमिन्, ऊर्जस्विन्, समर्थ ।
—हीन, वि (स) अशक्त, अबल, निर्बल, बलहीन, असमर्थ २ नपुसक, क्लीब ।
शक्य, वि (स) सभवनीय, सभाव्य, सभावित २ सपाद्य, साध्य २ दे 'शक्त' । स पु (स) वाच्यार्थ ।
शक्यता, स स्त्री (स) सभाव्यता, सभव २ साध्यता, सपादनीयता ।
शक्र, स पु (स) पुरन्दर, दे 'इन्द्र' ।
शक्राणी, स स्त्री (स) शची, इन्द्राणी ।
शक्ल, स स्त्री (अ) दे 'शकल' (१) ।
शख्स, स पु (अ) जन, मनुष्य, दे 'व्यक्ति' ।
शख्सियत, स स्त्री (अ) व्यक्तित्व, दे ।
शगल, स पु (अ) व्यवसाय, उपजीविका २ मनोविनोद ।
शगु(गू)न, स पु, दे 'शकुन' ।
शगुनिया, सं पु (हिं शगुन) निमित्तज्ञ, दैवज्ञ ।
शगूफा, स पु (फा) कोरक-क, कलिका २ पुष्प ३ विलक्षणवृत्तांत ।
—खिलना, मु, अद्भुत, सवृत् (भ्वा आ मे) ।
शचि ची, सं स्त्री (स) पौलोमी, ऐन्द्री, दे 'इन्द्राणी' ।
—पति, स पु (स) शचीश, बलभिद्, दे. 'इन्द्र' ।
शजर, सं पु (अ) पादप, वृक्ष ।

शजरा, स पु (अ) वशावलीलि (स्त्री), वशवृक्ष २ वृक्ष ३ क्षेत्रमानचित्रम्।

शठ, वि (स) धूर्त वचक, प्रतारक माया विन् २ दुर्वृत्त, दे लुचा ।

शठता, स स्त्री (स) धूर्तता माया शाठ्य, कपट २ दुर्वृत्त दुराचार, दौर्जन्यम्।

शडप्पा, स पु (अनु शडप) शब्दप्रकार, द्रुतनिगरणध्वनि ।

—मारना, मु, द्रुत निग (तु प से) शब्दप्रकारै भुज्ज (क्र आ अ)।

शण, स पु (स) दीघ, शाम्ब पल्लव माल्य पुष्प, त्वक्सार, वमन, कटुतिक्तक २ भगा, विनया ३ शणपुष्पी ।

शत, वि [स शत (नित्य न)]। स पु, दशगुणितदशसख्या तद्बोधका अङ्काश्च (१००), दे सौ'।

—कोटि, स पु (स) वज्र, पवि । स स्त्री (स) अब्जसख्या, अर्बुददशक अर्बम्।

—क्रतु, स पु (स) शतमख, इद्र ।

—घ्नी, स स्त्री (स) अस्त्रभेद, लोहकटक सछन्ना महती शिला ।

—च्छद, स पु (स) काष्ठकुट्टपक्षिन्। (स न) शतदलपद्मम्।

—दल, स पु (स न) शतपत्र, कमलम्।

—पत्र, स पु (स पु न) दे 'शतच्छद'।

—पथ ब्राह्मण, स पु (स न) शुक्लयजुर्वेदस्य ब्राह्मणग्रंथविशेष ।

—पथिक, वि (स) नानामतावलविन्, नानापथगामिन्।

—पद, स पु (स) शतपदी, कर्णजलौका २ पिपीलिका । वि, शत-पद्,पाद्।

—पदी, स स्त्री (स) कणवीगी, शतपादिका, कर्ण-जलुका-जलौरम (स्त्री) शतपाद् (स्त्री)।

—भिष, स पु (स शतभिषा) नक्षत्रविशेष, शतभिषज् (स्त्री)।

—लक्ष, स पु (स न) कोटि (स्त्री)।

—वादन, स पु (स न), अनेकवाद्याना युगपद् वादनम्।

—वर्ष, वि (स) शताब्द, शतायुस। स पु (स न) शताब्दी ब्दम्।

—सहस्र, स पु (स न) लक्षम्।

शतक, स पु (स न) शतवर्ष, वर्षशत, शताब्द ब्दी २ शत, शतवस्तुसमूह । वि, शतसख्याविशिष्ट, शत।

शतधा, अव्य (स) शतप्रकार २ शतखण्डेषु ३ शतगुणित ।

शतद्रु, स स्त्री (स) शितद्रु, शतद्रू, शुतुद्रि द्रू (सब स्त्री)।

शतरज, स पु (फा) चतुरगम्।

—का मुहरा, स पु, खेलनी, शार रि ।

—की बिसात, स स्त्री, अष्टापद, शारिफलम्।

—बाज़, स पु (फा) चतुरगक्रीडक ।

—बाज़ी, स स्त्री (फा) (१२) चतुरग, क्रीडा-व्यसनम्।

शतरजी, स स्त्री (फा) विचित्रावरोटिका २ बहुवर्ण-कुथास्तरी ३ अष्टापद, शारिफलम्। स पु, चतुरगचतुर ।

शतश, अ (स) शत शतमिति कृत्वा २ शतकृत्व (अव्य) शतवारान् ३ अनेकधा, बहुधा नानाप्रकारेण।

शताब्दी, स स्त्री (स) दे 'शतक'(१)।

शतायु, वि (स -युस्) शत-वर्ष अब्द।

शतिक, वि (स) शतवान् २ शत, सबधिन विषयक।

शती, स स्त्री (स) शती, शताब्दी २ शत वस्तुसमूह ।

शत्रुजय, स पु (स) शत्रु-अमित्र-जित्, शत्रुतप, अरिंदम, रिपुसूदन ।

शत्रु, स पु (स) रिपु, अरि, सपत्न, वैरिन्, द्वेषण, द्विष, दुहृद्, दौर्हृद, पर, शात्रव, अराति, प्रत्यर्थिन्, परिपथिन्, प्रतिपक्षिन्, द्वेषिन, निघासु घातक, हिंस्र, २ शत्रुमना।

शत्रुघ्न, स पु (स) लक्ष्मणानुज, शत्रुमर्दन । (अन्य) दे 'शत्रुजय'।

शत्रुता, स स्त्री (स) वैर, सापत्न्य, विद्वेष, प्रति वि, पक्ष(ति)ता, विरोध ।

—करना, क्रि अ, वैरायते, अमित्रयति, अमित्रयति, अमित्रायते (सब ना धा), वि, द्विष् (अ उ अ)।

शदीद, वि (अ) गभीर, प्रबल, भयकर तीव्र।

शनाख्त, स स्त्री (फा) दे 'पहचान'

शनि, स पु (स) शनैश्चर सौरि, मद, छायासुत, असितवार, वक्र, पगु सूर्यपुत्र २ दौर्भाग्य ३ शनिवासर ।

—प्रिय, स पुं (स) नीलमणि, दे 'नीलम'।
—वार, स पु (सं) शनि शनैश्चर,-वार वासर।
शनै, अव्य (स) मद शनकै।
—शनै, अव्य (सं) मद मद, शनकै शनकै।
शनैश्चर, स पु (म) दे 'शनि' (१३)।
शपथ, म स्त्री (म) दे 'सौगंद' २ दिव्य ३ प्रतिज्ञा।
शफ, स पु (स न) (गवादीना) खुर, दे।
शफक, सं स्त्री (अ) सधा, सध्या, सध्याशु।
शफ़क़त, स स्त्री (अ) अनुग्रह २ प्रेमन् (पु न)।
शफ़तालू, स पुं (फ़ा) (पे॰) सप्तालुक। (फल) सप्तालुक, आरूक, दे 'आड़ू'।
शफ़ा, सं स्त्री (अ) स्वास्थ्य, नीरोगता।
—ख़ाना, स पु (अ + फ़ा) चिकित्सालय।
शब, सं स्त्री (फ़ा) रात्री त्रि (स्त्री), रजनी।
शबनम, स स्त्री (फ़ा) अवश्याय, दे 'ओस'।
शबल, वि (स) कर्बुर, कल्माष, नानावर्ण, चित्र।
शबाब, सं स्त्री (अ) यौवनं २ सौन्दर्या तिशय।
शबाहत, स स्त्री (अ) आकृति (स्त्री) २ समानता।
शबीह, स स्त्री (अ) चित्र २ साम्यम्।
शब्द, म पु (सं) निन(ना)द, वि, र(रा)व, निर्घोष, स्व(स्वा)न, ध्वनि, ध्व(ध्वा)न २ पद, सार्थकोऽक्षरसमूह ३ ओश्म्, प्रणव ४ भक्तिगीतम्।
—कोष, सं पु [म -ष (श)] अभिधान, शब्द संग्रह।
—चातुर्य, सं पु (सं न) वाग्मिता, वाक पाटवम्।
—चित्र, सं पु (स न) अधमकाव्यभेद, अनुप्रास।
—चोर, सं पु (स) कुम्भिल, शब्दतस्कर।
—चोरी, सं स्त्री, शब्दचौर्य, कुम्भिलत्वम्।
—पति, स पु (सं) अनुयायिरहितो नेता।
—प्रमाण, स पु (सं न) आप्तप्रमाणम्।
—विरोध, सं पु (सं) विरोधाभास, मिथ्या वैपरीत्यम्।
—ब्रह्मन्, स पु (स न) चत्वारो वेदा।
—भेदी, वि (स -दिन) शब्द,-वेधिन्-पातिन्।

सं पु, अर्जुन २ दशरथ ३ बाणभेद ४ पायु।
—वेधी, सं स्त्री (सं धिन्) दे 'शब्दभेदी'।
—शक्ति, स स्त्री (स) शब्दानामर्थबोधक-शक्ति (स्त्री) (=अभिधा, लक्षणा व्यञ्जना)।
—शास्त्र, स पुं (स न) शब्दविद्या, व्याकरणम्।
—श्लेष, स पु (म) शब्दालङ्कारभेद (सा), अनेकार्थकपदप्रयोग।
—सौष्ठव, सं पुं (स न) पदलालित्यम्।
शब्दाडबर, स पु (म) शब्द पद,-जाल प्रपञ्च।
शब्दातीत, वि (स) शब्दातिग, अवर्णनीय, (ईश्वरादि)।
शब्दानुशासन, स पु (सं न) दे 'शब्द शास्त्र'।
शब्दार्थ, म पुं (स) पदानुवर्ती अर्थ, भावो पेक्षकोऽथ।
शब्दालंकार, सं पु (म) अलंकारभेद (मा), शब्दाश्रितो वाक्चमत्कार।
शम, स पु (स) प्र,शांति (स्त्री), शपथ, निश्चलत्व, स्वास्थ्य, प्र-उप,शम २ मोक्ष ३ इन्द्रियनिग्रह ४ निवृत्ति (स्त्री), वैराग्य ५ क्षमा।
शमन, स पु (स न) दे 'शम' (१)। २ यज्ञार्थं पशुहननं ३ दमन, नाशन ४ चर्वण ५ हिंसा।
शमनी, स स्त्री (सं) निशा, रजनी।
शमला, सं पु (अ) उष्णीष शिरोवेष्टन, शिखा शिखर-अग्र प्रान्त।
शमशेर, स स्त्री (फ़ा) असि, खड्ग।
—बहादुर, म पुं (फ़ा) आसिक, सत्सुगिन्।
शमा, स पु (अ शमअ) दे 'मोम' २ दीपिका ३ दीप पक्र।
—दान, सं पु (फा) दीपि-दीपिका, वृक्ष दण्ड।
शमी¹, स स्त्री (सं) शक्तु, फला-फली, शिवा, केशमथनी, पापशमनी, भद्रा, श शुभ,-करी।
शमी², वि (सं मिन्) शांत, क्षोभरहित, निश्चल।
शयन, सं पु (म न) संवेश, स्वपन, निद्राणं, सुप्ति (स्त्री), स्वाप २ शय्या ३ संवेशनं, मैथुनम्।

—**गृह**, स प (स न) शयन,-आगार मन्दिरम्।

शयालु, वि (स) निद्रालु, तद्रालु २ सुषुप्सु, निद्रावश।

शय्या, स स्त्री (स) आस्तर, दे 'बिछौना' २ खट्वा, पर्यंक, दे 'खाट'।

—**गत**, वि (स) रुग्ण, रोगिन्।

—**गृह**, सं पु (स न) दे 'शयनगृह'।

—**मूत्र**, सं पु (स न) *स्वप्नस्राव, शिशुरोगभेद।

—**छादन**, स पु (स न) पर्यंकप्रच्छद।

शर, स पु (स) इषु, बाण, दे। २ सरकाड, दे 'सरकडा' ३ क्षीरसार, दुग्धाग्र, सन्तानिका ४ दधिसार, दधि, सार स्नेह, कट्टर, कत्वर ५ उशीर।

शरअ, स स्त्री (अ) धर्म, मत २ धर्मशास्त्र ३ प्रथा ४ धार्मिकादेश ५ ईश्वरादिष्टमार्ग (इस्लाम)।

शरकाड, सं पुं (स) दे 'सरकडा'।

शरण, स स्त्री (स न) आश्रय, गति (स्त्री) २ आश्रय त्राण स्थान ३ गृह भवनं ४ शरण्य, रक्षितृ, त्रातृ ५ शरणागतरक्षणम्।

—**देना**, क्रि स, अव-रक्ष (भ्वा प से), शरण दा।

—**लेना**, क्रि अ, आश्रि (भ्वा उ से), शरण प्रपद् (दि आ अ) इ-या (दोनों अ प अ)।

शरणागत, वि (स) शरणापन्न, अभिपन्न, शरणार्थिन, शरणैषिन्। स पु (स) शिष्य।

शरणार्थी, वि (स र्थिन्) शरणेच्छुक, रक्षाभिलाषिन्।

शरण्य, वि (स) शरणद, शरणागतरक्षक, राअृ, त्रातृ २ दु खिन, असहाय।

शरद्, स स्त्री (स) परि-वत्सर, अब्द, वर्ष पु २ वर्षावसान, मेघान, कालप्रभात — न प्रावृट्त्यय (= आश्विन-कार्तिक)।

शरधि, सं पु (स) तूण, इषुधि, दे 'तरकश'।

शरफ, स पु (अ) महत्त्व, महत्ता २ श्रेष्ठता ३ गुण ४ प्रतिष्ठा।

शरबत, स पु (अ) शर्करोदक, गुडोदक, पानक, गौल्य, सिनार, मिष्टोदं २ शर्करामधु-क्वाथ।

शरबती, स पु (अ शरबत) दे 'मौठी' (फल) २ ईषत्पीतवर्ण। वि, रसपूर्ण, सरस, सुमधुर।

शरम, स स्त्री, दे, 'शर्म'।

शरह, सं स्त्री (अ) टीका, व्याख्या, भाष्य २ दे 'भाव' (मूल्य)।

शरा, स स्त्री, दे 'शरअ'।

शराकत, स स्त्री (फ़ा) सहभागिता, दे 'साझा' २ सहकारिता।

शराफत, स स्त्री (अ) सज्जनता, सौजन्य, शीलम्।

शराब, स स्त्री (अ) सुरा, मदिरा २ दे 'शरबत' (हिकमत)।

—**का खमीर**, स पु, मद्यपक, सुराकल्क, मेदक, जगल।

—**का प्याला**, सं पु, पान-मद्य-सुरा, भाजन भाड पात्रम्।

—**के खमीर की झाग**, स स्त्री, मद्य, फेन — मड, कार-उत्तर-उत्तम।

—**के नशे मे चूर**, वि, मत्त, क्षीव, मदोत्कट, मदोद्धत, समद, मदाढ्य, मदोन्मत्त, शौंड।

—**खाना**, स पु (अ + फ़ा) गता, शुडा, सुरालय।

—**खींचना**, क्रि स, मद्यं सधा (जु उ अ) सुरां सु-स्यन्द् (प्रे)। स पु, मद्य, संधानं अभिषव।

—**खींचने का स्थान**, सं पु, संधानी, अभिषव शाला।

—**खींचनेवाला**, स पु, सुराकार, शौडिक, सधानिन्।

—**खोर**, स पु (अ + फा) पान,-आसक्त — रत, मधु-मद्य-सुरा,-प, पानशौंड, सुराप।

—**खोरी**, सं स्त्री, सुरापानं-नं, मद्यसेवनम्।

—**पीना**, क्रि स, सुरां पा (भ्वा प अ), मद्य सेव् (भ्वा आ से)।

शराबी, सं पु (अ शराब) दे 'शराबखोर'।

शराबोर, वि (फा) दे 'लथपथ'।

शरारत, सं स्त्री (अ) कुचेष्टा-ष्टित, दुर्ललित, दुष्टता खलता, अपकार।

शरारती, वि (अ शरारत) कुचेष्टक, दुर्ललित, दुष्ट, खल, अपकारक।

श(स)राव, सं पुं (सं पुं न) वर्द्धमानक, मार्तिक, मृत्पात्रं, दे 'कुल्हड़'।

शरासन, सं पु (स न) शरास्य, शरावाप दे 'धनुष'।
शरीअत, स स्त्री (अ) दे 'शरअ' (२,५)।
शरीक, वि (अ) सम्मिलित। स पु, सह चर-कारिन्-योगिन् २ सह-भागिन, अंशिन, अर्धांशिन् ३ सहाय्यक ४ सजातीय, सनाभि ।
शरीफ, स पु (अ) अभिजात, कुलीन, आर्य, सुप्रतिष्ठ, भद्रजन, सज्जन। वि (अ) सभ्य, शिष्ट, सदाचारिन् २ कुलीन, अभिजात, अभिजनवत् ३ पवित्र, निर्दोष।
शरीफा, स पु (स श्रीफल>) (फल) सीताफल, वैदेहीवल्लभ, गडगात्र कृष्णबहु, बीजकम्। (वृक्ष) सीताफल इ पु रूप।
शरीर[1], स पु (स न) काय, देह-ह, कलेवर-र, गात्र, अंग, क्षेत्र, विग्रह, संहनन, वपुस (न)। मूर्ति-तनु-नू (स्त्री) पुर, चतु-शाख, पिंड, स्कंध, पंजर, इंद्रियायतन, पुद्गल, करणम्।
—त्याग, स पु (स) देहपात, मृत्यु।
—रक्षक, सं पु (स) अंगरक्षक, तनुत्र।
—शास्त्र, स पु (स न) शरीरविज्ञानम्।
—संस्कार, स पु (स) गर्भाधानादय षोडशसंस्कारा २ कायशुद्धि (स्त्री), देहपरिष्कार।
शरीर[2], वि (अ) दे 'शरारती'।
शरीरांत, स पु (स) देहपात, निधनम्।
शरीरी, स पु (स रिन) शरीरवत्, देहिन् २ जीव, आत्मन् ३ प्राणिन्, जंतु।
शर्क, सं पु (अ) प्राची, पूर्वदिशा।
शर्करा, सं स्त्री (स) दे 'शक्कर' २ सिकता कण ३ अश्मरी, दे 'पथरी' ३ ठीकरा, पाषाणशकल (बहु) ४ क(ख)र्पर।
शर्की, वि (अ शर्क>) प्राच्य, पूर्वीय।
शर्त, सं स्त्री (अ) पण, ग्लह २ संकेत, समय, नियम।
—करना, बाँधना या लगाना, मु, पण् (भ्वा आ से), ग्लह् (भ्वा चु उ से) २ समय-नियम कृ।
बिना—, क्रि वि, समय-नियम विना।
शर्तिया, क्रि वि (अ) ग्लहेन, पणेन, ग्लहपण पूर्वक २ निस्संशय, निस्सन्देहम्। वि, अमोघ, अवध्य।
शर्म, स स्त्री (फ़ा) दे 'लज्जा' २ संकोच, दे 'झिझक' ३ मान, प्रतिष्ठा।
—से गड़ना या पानी पानी होना, मु, अत्यर्थं लज्ज् (तु आ से)-त्रप् (भ्वा आ से), लज्जानिमग्न (वि) भू।
शर्मसार, वि (फ़ा) लज्जाशील २ लज्जित, लज्जित।
शर्मा, सं पु (स शर्मन्) ब्राह्मणोपाधिभेद।
शर्माना क्रि अ तथा क्रि स (फ़ा शर्म) दे लज्जित होना' २ दे लज्जित करना'।
शर्माशर्मी, क्रि वि (फ़ा शर्म) लज्जया, ह्रिया।
शर्मिंदगी, स स्त्री (फा) लज्जा, त्रपा, व्रीडा।
—उठाना, मु, दे 'लज्जित होना'।
शर्मिंदा, वि (फ़ा) लज्जित, व्रीडित, त्रपित।
शर्मीला, वि (फ़ा शर्म) लज्जावत्, सलज्ज, दे 'लज्जाशील'।
शर्वरी, स स्त्री (स) निशा, रात्री, दे 'रात'।
—नाथ, स पु (स) शर्वरीदीप, चन्द्र।
शलग(ज)म, स पु (फ़ा) शिखा, मूलकंद, गृञ्जनम्।
शल(र)भ, स पु (स) पतंगक-ग, पतङ्ग, फटिंग, शिरि, दे 'टिड्डी' २ पतंग, दे 'पतंगा'।
शलाका, स स्त्री (स) धातुकाष्ठादिनिर्मिता यष्टिक, दे 'सलाख' २ बाण ३ अस्थि (न) ४ तृण ५. शारिका ६ कज्जलशलाका ७ नस, देवन ८ दीपशलाका।
शल्य, स पु (स) मद्रराज, माद्रीभ्रातृ २ बिल्व-लोध-वृक्ष ४ सीमा ५ शलाका ६ शल्यशल्ली, शल्यक ७ मीनभेद (स न) कुन्त, प्रास २ इषु, दण्ड ३ कण्टक ४ पीडाकरण ५ दुर्वाक्य ६ पाप ७ कष्ट ८ विष ९ अस्थि (न) १० अस्त्रचिकित्सा ११ रुजा।
—कर्ता, स पु (स-र्तृ) दे 'नापित'।
—क्रिया, स स्त्री (सं) दे 'सर्जरी'।
शव, स पु (स पु न) कुणप, क्षितिवर्द्धन, मृतक-क, प्रेतम्।
—दाह, स पु (स) अंत्येष्टि-मृतक,-संस्कार।
—यान, स पु (स न) शवरथ, खाटी खटिया, खोड, काष्ठमल, दे 'अरथी'।

शवर, स पु (स) म्लेच्छजातिभेद २ शिव ३ जलम् ।
शवरी, स स्त्री (स) श्रमणानाम्ना तपस्विनी २ शवरजातिनारी ।
शश, स पु (स) शशक शूलिन लोम वर्ण मृदुरोमन् २ चन्द्रलाञ्छन ३ पुरुषभेद ।
—धर, स पु (स) शशभृत्, चन्द्र ।
—शृंग, स पु (स न) शशविषाण, खपुष्प, गगनकुसुम, असम्भवनीयवस्तु (न)।
शशक, स पु (स) दे 'शश (१) ।
शशमाही, वि (फा) षाण्मासिक अर्द्धवार्षिक (स्त्री स्त्री) ।
शशांक, सं पु (स) शशधर, चन्द्र ।
शशी, सं पु (स शशिन्) शशधर, सोम, दे 'चाँद' ।
—कर, स पु (स) चन्द्रकिरण ।
—कला, स स्त्री (स) चन्द्रलेखा २ वृत्त भेद (छन्द)।
—कांत, स पु (स) चन्द्रकान्तमणि । (स न) कुमुदम् ।
—कुल, स पु (स न) चन्द्रवंश ।
—पुत्र, स पुं (स) शशिज, बुधग्रह
—प्रभा, स स्त्री (स) कौमुदी, चन्द्रिका ।
—भूषण, स पु (स) शशि-चूड, मौलिशेखर, शिव ।
—वदना, स स्त्री (स) वृत्तभेद (छन्द) २ चन्द्रमुखीस्त्री । (उपर्युक्त सभी समासों में 'शशि' रूप रहेगा । उ शशिकर इ)।
शस्त्र, स पु (स न) अस्त्र, प्रहरणं, आयुधम्, हत्नु, हेति (पु स्त्री) ।
—बाँधना, क्रि अ, शस्त्राणि धृ (चु) सन्नह (नि उ अ) ।
—कर्म, सं पु [स -मन्(न)] शल्य कर्म, क्रिया ।
—गृह, स पुं (सं) शस्त्र, शाला आगारम् ।
—जीवी, स पु (स -विन्) शस्त्रवृत्ति, आयुधिक ।
—धारी, वि (स -रिन्) सशस्त्र शस्त्र, भृत् धर ।
—विद्या, सं स्त्री (स) धनुर्वेद ।
शस्त्रागार, सं पु (स शस्त्र+अगार) शस्त्र शाला-गृहं-स्थानम् ।
शस्त्राभ्यास, स पु (स) अस्त्रशिक्षा, युरली ।
शस्य, स पु (सं) शस्य, क्षेत्रस्थं फलं, दे 'फसल' शष्प, शाद ३ वृक्ष-लता-फल ४ धान्य (शस्य क्षेत्रगत प्राहु, सतुषं धान्य मुच्यते । आम वितुषमित्युक्त, स्विन्नमत्र मुदाहृतम् ॥) वि (स) उत्तम, श्रेष्ठ २ स्तुत्य, प्रशंसनीय ।
—भक्षक, वि (स) तृण शाक, भक्षक ।
शस्यागार, स पु (स न) धान्यागारम्, कुशूल ।
शहंशाह, स पु (फा) राजाधिराज, दे 'सम्राट्' ।
शह, स स्त्री (फा) गुप्तोत्तेजना ।
—देना, मु, निभृत उत्तिज्-उद्दीप् (प्रे) ।
शहज़ादा, स पु (फा) राजकुमार २ युवराज ।
शहज़ोर, वि (फा) बलिन्, शक्तिशालिन् ।
शहतीर, स पु (फा) तुला, स्थूणा,छद्माधार ।
शहतूत, स पु (फा) (वृक्ष) ब्रह्मदारु, तूद, तूल, पूष ब्रह्मण्य, तूल, यूष । (फल) तूत, तूल, तूद, पूर्ष, यूषम् ।
शहद, सं पु (अ) माक्षिक, क्षौद्रं, मधु (न) दे ।
—की मक्खी, स स्त्री, मधुमक्षिका ।
—लगाकर चाटना, मु, व्यर्थं पदार्थं निरर्थं रक्ष (भ्वा प से) ।
शहनाई, स स्त्री (फा) सानेयी-यिका, नालिका ।
शहबाला, सं पु (फा) *सहबाल (पं-सबाला), *वर,-पृष्ठग -सहचर ।
शहर, स पु (फा) नगर, पुरम् ।
—पनाह, सं स्त्री (फा) *नगरकोट, वृति (स्त्री), प्राचीर, दे ।
शहरी, स पुं (फा) पौर, नागरिक, नगर-पौर, जन । वि, नगरीय, नागर, नागरेयर, नागरिक दे ।
शहवत, स स्त्री (अ) संभोग मैथुन, इच्छा ।
—परस्त, वि, कामुक, लम्पट, कामातुर ।
—परस्ती, सं स्त्री कामुकता, लम्पटता, कामान्धता ।
शहसवार, सं पुं (फा) कुशलसादिन् ।
शहादत, सं स्त्री (अ) साक्ष्य, दे 'गवाही' २ प्रमा० ३ बलिदानम् ।

शहीद, स पु (अ) *हुतात्मन, धर्महत, धर्म पतंग ।

—होना, क्रि अ, धर्मार्थं प्राणान् हा (जु प अ) परोपकाराय हन् (कम)।

शांत, वि (स) स्वस्थचित्त, प्रसन्न,-मानस चेतस, निवृत्त, स्वस्थ निरुद्वेग, आवेशशून्य, शमित, शमान्वित २ रुद्ध, वेग गति क्रिया, रहित, विरत ३ सौम्य गभीर, धीर ४ निःशब्द, मौनिन् ५ जितेन्द्रिय संयमशील ६ शिथिल, निरुत्साह ७ श्रांत, क्लांत, खिन्न ८ निर्वापित, निर्वाण (अग्न्यादि) ९ निर्विघ्न निर्बाध। स पु (स) रसविशेष (काव्य) २ विरक्त, योगिन्।

—करना, क्रि स, उप प्र शम् (प्रे) २ प्रसद् तुष (प्रे)।

—होना, क्रि अ, शम् (दि प से), शांत निश्चल (वि) भू।

शांतता, स स्त्री (स) दे 'शांति'।

शांतनु, स पु (स) दे 'शन्तनु' २ वसंती।

शांता, स स्त्री (स) दशरथतनया, ऋष्य शृंगभार्या।

शांति, स स्त्री (स) दे 'शम' (१)। २ गति क्रिया वेग-क्षोभ, राहित्य ३ नीरवता, निःशब्दता ४ रोगादीनां क्षय नाश ५ मृत्यु ६ सौम्यता, गम्भीरता ७ वैराग्य, तृष्णाक्षय ८ संकटनिवारणम्।

—दायक, वि (स) शांति, प्रद-कर-दायिन्।

—पर्व, स पु [स पर्वन् (न)] श्रीमन्महाभारतस्य द्वादशपर्वन्।

शायर, स पु दे 'शायर'।

शाइस्तगी, स स्त्री (फ़ा) शिष्टता, सज्जनता।

शाइस्ता, वि (फ़ा,-त) शिष्ट, सुशील।

शाक, स पु (स पु न) दे 'साग'।

शाकाहार, स पु (स) हरितकभोजन, मांस त्याग।

शाकाहारी, वि (स रिन) हरितकभोजिन्, मांसत्यागिन्।

शाक्त, स पु (स) शक्त्युपासक, शाक्तिक, शाक्तेय।

शाक्तिक, स पु (स) दे 'शाक्त'। २ शक्ति धारिन्, धर सैनिक, शाक्तीक।

शाक्य, स पु (स) प्राचीनक्षत्रियजाति विशेष।

—मुनि, स पु (स) गौतमबुद्ध, सिद्धार्थ, महाबोधि, महामुनि।

शाख़, स स्त्री (फ़ा) दे 'शाखा' (१)। २ शृंग, विषाण ३ उपांग ४ उपनदी।

—दार, वि (फ़ा) शाखायुत २ शृंगयुत।

शाखा, स स्त्री (स) विटप, पं, शिखा, लता, लता २ देहावयव, शरीरांग (हाथ, पाँव आदि) ३ अंगुली, करशाखा ४ अंग, उपांग ५ वि भाग ६ वैदिकग्रंथ भेद।

—नगर, स पु (स न) उपपुर शाखापुर, नगरप्रांत।

शाखी, स पु (स खिन्) वृक्ष २ वेद। वि, सशाख।

शागिर्द, स पु (फ़ा) शिष्य, दे।

शागिर्दी, स स्त्री (फ़ा शागिर्द) शिष्यता २ सेवा।

शाटक, स पु (स पु न) पट, वस्त्रम्।

शाटिका, स स्त्री (स) दे 'धोती'।

शाटी, स स्त्री (स) दे 'साड़ी'।

शाठ्य, स पु (स न) दे 'शठता' (१ २)।

शाण, स पु (स) शाणी, सामक। (छोटा) झामर २ नि,कष-स, कषपट्टिका ३ माष-चतुष्टय, टंक, निष्क।

शाद[1], स पु (स) कर्दम २ शष्पम्।

शाद[2], वि (फ़ा.) प्रसन्न, मुदित २ परिपूर्ण।

शादाब, वि (फ़ा) जलाढ्य, जलसिक्त।

शादियाना, स पु (फ़ा) मंगल्वाद्य २ दे 'बधाई'।

शादी, स स्त्री (फ़ा) विवाह, दे २ हर्ष ३ आनन्दोत्सव।

—ग़मी, स स्त्री (फ़ा+अ) हर्षशोकौ, सुख-दुःखे।

—मर्ग, स स्त्री, हर्षातिरेकजनितमृत्यु।

शाद्वल, स पु (स पु न) हरित-त, शष्प-बहुलो देश। वि, हरित, शष्पाच्छन्न।

शान, स स्त्री (अ) श्री (स्त्री), अभिख्या, औज्ज्वल्य, शोभा, प्रभा, भव्यता, आडंबरः २ विभूति शक्ति (स्त्री) ३ प्रतिष्ठा, गौरव ४ विभ्रम ५ महिमन् (पु)।

—दार, वि (अ+फ़ा) श्रीमत, शोभान्वित, भव्य, साडंबर, शोभन, सुप्रभ, समुज्ज्वल, वैभवशालिन्।

न्त्रणा, नियमन ८ राज्य दण्ड ९ लिखित प्रतिज्ञा ।
—करना, क्रि स, प्र शास् (अ प से), दश (अ आ से), तन् (चु), अधिष्ठा (भ्वा प से), नियम्-विनी (भ्वा प अ)। म.पु, दमन, अधिष्ठान, नियमन, नियन्त्रणम्।
—कर्ता, सं पु (स-र्तृ) शासक, शासनधर, शास्तृ, शासित्, अधिष्ठातृ, देशक ।
—पत्र, स.पु (स न) राजादेशपत्रम्।
—हर, सं पु (स) आज्ञावाहक २ शासन, हारक-हारिन्, राजदूत ।
शासित, वि (स) कृतशासन, अधिकृत, अधिष्ठित, नियन्त्रित २ दण्डित, दे ।
शास्त्र, स पु (स न) धर्मग्रंथ २ विज्ञानम्।
—कार, स पु (स) शास्त्र-कृत्-रचयितृ आचार्य ।
—चक्षु, स पु [स-क्षुस् (न)] व्याकरण २ ज्ञानिन् ।
—ज्ञ, स पु (स) शास्त्र-दर्शिन्-दृष्टि विद् कोविद वेत्तृ।
—वक्ता, स पु (स-क्तृ) उपदेशक ।
—विरुद्ध, वि (स) धर्मविरुद्ध, अगम्य ।
शास्त्रानुसार, क्रि वि (स न) यथाशास्त्र, धर्मानुकूलम्। वि, शास्त्रोक्त, स्मार्त ।
शास्त्री, स पु (स स्त्रिन्) उपाधिभेद २ धर्मशास्त्रज्ञ ३ दे 'शास्त्रज्ञ'।
शास्त्रीय, वि (स) श्रौत, स्मार्त, शास्त्रविषयक २ शास्त्र-उक्त-विहित ।
शास्त्रोक्त, वि (स) शास्त्र, विहित-निर्दिष्ट अनुकूल।
शास्य, वि (स) नियन्त्रणीय, नियन्तव्य, शासन-अर्ह-योग्य २ शिक्षणीय, उपदेष्टव्य, विनेय ३ दण्ड्य, दण्डनीय।
शाह, स पु (फा) महाराज २ यवनभिक्षु पार्थि । वि, महत्, बृहत्, प्रधान।
—जादा, स पु (फा) दे 'शहजादा'।
शाहिद, सं पु (अ) साक्षिन्, प्रत्यक्षदर्शिन्, देवय ।
शाही, वि (फा) राजकीय २ नृपोचित, नृपयोग्य।
शिंगरफ, स पु (फा शंगर्फ) हिंगुल,-ल, हिंगुल, -लि, रक्तपारद, चूर्णपारद, सुरग, रसोद्भवम्।
शिंघाण, स पु (स न) नासिकामल, शिंघाणक २ लोहमल ३ काचपात्रम्। (स पु) शिंघाणक, श्लेष्मन्।
शिंजन, स पु (स न) शिंजित, झणत्कार, झणझणध्वनि ।
शिकंजबीं, स स्त्री (फा शिकंजबीं) पानक, *अम्लगौल्यम्।
शिकंजा, स पु (फा) १ २ निपीडन-दृढी करण-निपीडन-यन्त्र ४ ग्रंथनिपीडनयत्र ५ निगड, हडि ६ दे 'कोल्हू'।
शिकंजे में खींचना, मु, प्रमथ (क्र प से), यद् (प्रे), अत्यर्थं अर्द् (प्रे) पीड् (चु), निगडयति (ना धा)।
शिकन, स स्त्री (फा) व(ब)ली लि (स्त्री) २ पुट भग ।
—डालना, क्रि स, वलित कृ २ सपुट विधा।
—पड़ना, क्रि अ वलित-वलिभ-वलिवुत (वि) भू २ सपुट सभग (वि) जन् (दि आ से)।
शिकम, स पु (फा) उदर जठरम्।
शिकरा, स पु (फा) श्येनभेद, *शीकर ।
शिकवा, स पु (अ) दे 'शिकायत'।
शिकस्त, स स्त्री (फा) अभि-परा, भव, पराजय दे २ वैकल्यम्।
—खाना, क्रि अ, परिभू विनि (कर्म), दे 'हारना'।
शिकायत, स स्त्री (अ) (सविलापा) विज्ञ-प्ति, दु खनिवेदन २ परि(री)वाद, आक्षेप, गर्हा, निंदा ३ उपालम्भ, ४ आमय, व्याधि
—करना, क्रि अ, सशोक-सविलाप विज्ञा-निविद् (प्रे) २ आ-अभि क्षिप् (तु प अ), गर्ह् (भ्वा चु आ से), अप परि-वद् (भ्वा प से) ३ उपालभ् (भ्वा आ अ)।
शिकार, स पु (फा) आखेट खेटन-टक, मृगया, मृगव्य, आच्छोदन, पापर्द्धि (स्त्री) २ मृग्य-जतु प्राणिन् ३ मृगयाहतो जीव ४ मास ५ भक्ष्य ६ प्रतारित, वञ्चित ।
—करना, क्रि स, मृग् (चु आ से, दि प. से) मृगया कृ, अनुधाव् (भ्वा प से)। मु, छलेन धनादिक हृ (भ्वा प अ)।
—होना, क्रि अ, आखेटे हन मार् (कर्म)। मु, वशवर्ती जन् (दि आ से)।
शिकारी, स पु (फा) व्याध, लुब्धक,

मृगयु, जरोटर, जीवातक, शाकुनिक, जालिक, वागुरिक। वि, आखेटिक।
—कुत्ता, स पु, मृगदंश, मृगयाकुक्कुर, विश्वस्तु।
—ब्याह, स पु, गान्धर्वविवाह।
—लिबास, स पु, मृगयाअवेक्ष,वेश (प)।
शिक्षक, स पु (स) अध्यापक, गुरु, उपाध्याय, अनुशास्तृ, उपदेशक आचार्य।
शिक्षण—स पु (स न) शिक्षा, अध्यापन, विद्यादानं पाठन, अनु-,शासनं शिष्टि (स्त्री), विनय २ विद्या, उपादान ग्रहण-अभ्यास।
शिक्षा, स स्त्री (स) अध्ययनाध्यापन, पठनपाठन। २ ३ दे 'शिक्षण' (१ २) ४ निपुणता ५ उपदेश, मंत्र ६ वेदांगविशेष ७ नियन्त्रणं ८ दंड, कुफलम्।
—हीन, वि (सं) अशिक्षित, निरक्षर।
शिक्षार्थी, स पु (सं थिन्) शिक्षाग्राहक, छात्र।
शिक्षालय, स पु (सं) शिक्षणालय, विद्यालय।
शिक्षित, वि (स) साक्षर, अक्षराभिज्ञ, लेख नवाचनक्षम, कृतविद्य २ पंडित, विज्ञ। [शिक्षिता (स्त्री)=कृतविद्या पंडिता इ]।
शिखंड-डक, स पु (स) मयूरपुच्छ २ चूडा, शिखा ३ काकपक्ष।
शिखंडी, स पुं (सं डिन्) मयूर २ कुक्कुट ३ द्रुपदपुत्रविशेष ४ विष्णु ५ कृष्ण ६ शिव ७ बाण ८ गुञ्जा ९ स्वर्णयूथिका।
शिखर, स पु (स पु न) गिरि, मस्तक शृङ्ग, पवनाग्र, कूट २ उच्चतमो भाग, दे 'चोटी'।
शिखरन, स स्त्री (स शिखरिणी) *दधि सितोदकम्।
शिखरिणी, स स्त्री (स) वर्णवृत्तभेद २ स्त्री रत्न ३ रोमराजी ४ द्राक्षाभेद ५ दे शिखरन'।
शिखरी, स पु (स रिन्) पर्वत २ वृक्ष ३ कोट्ट।
शिखा, स स्त्री (स) शिखंड-डक, चूडा २ अग्निज्वाला,ज्वाला, अर्चिस (न) ३ दीप, अर्चिस् (न)-शिखा ४ शिखर ५ ५ किरण ६ शाखा।
—फँद, स पु (सं पु न) दे. 'शलजम'।
—वान्, वि (स-वत्) शिखिन्, चूडावत्, शिखान्वित। स पु, दीपक २ अग्नि ३ केतुग्रह ४ उल्का, गोल्का।
—सूत्र, स पु (स-त्रे) चूडायज्ञोपवीते (न द्वि)।
शिखिनी, स स्त्री (स) मयूरी, शिखण्डिनी, केकिनी २ कुक्कुटी, कुक्कुटवधू (स्त्री), पक्षिणी।
शिखी, वि (स खिन्) शिखावत् चूडावत्। स पु (स) मयूर २ कुक्कुट ३ दीपक ४ अग्नि ५ पर्वत ६ बाण ७ वृक्ष ८ उल्का, केतु।
शिगाफ़, स पु (फ़ा) छिद्र विलं २ विदर, भेद।
शिगार, शिगा(गा)ल, स पु (फ़ा) शृगाल, जंबुक।
शिताब, क्रि वि (फ़ा) शीघ्र, सत्वरम्।
शिथिल, वि (स) मंदबन्धन, श्लथ, स्रस्त, दे 'ढीला' २ अलस, मंथर ३ उदासीन ४ दृढ़त्वशून्य ५ बंधनहीन, मुक्त ६ श्रांत, क्लांत ७ अस्पष्ट (शब्दादि) ८ उपेक्षित (नियम)।
शिथिलता, स स्त्री (स) शैथिल्य, श्लथता, स्रस्तता, दे 'ढीलापन' २ आलस्य ३ औदासीन्य ४ दृढ़ताऽभाव ५ श्रांति (स्त्री.) ५ नियमभंग ६ शक्तिन्यूनता।
शिद्दत, सं स्त्री (अ) उग्रता, तीव्रता, प्रचंडता २ आधिक्यम्।
शिर, स पु (स) शिरस् (न) दे 'सिर'।
शिर(रा)कत, स स्त्री (अ) दे 'शराकत'।
शिरस्त्राण, सं पु (सं न) शीर्षण्य, शिरस्त्र, दे 'खोद'।
शिरा, सं स्त्री (स) सिरा, ईलिरा, रक्तवाहिनी नाडी (Vein)।
शिरोधार्य, वि (सं.) अंगीकार्य, ग्राह्य, पाल्यितव्य।
—करना, मु, सादर स्वीकार करना।
शिरोमणि, स पु स्त्री (स) चूडामणि, शिरोरत्नं २ प्रधान, मुख्य।
शिला, सं स्त्री (स) शिला, पट्ट-फलक २ अदमद मावन्द (पुं) ३ गदहीन ४ *रे षणशिला, *शिला पट्टी पट्टिका, *शिला।

—जीत, स पु [स-जतु (न)] गिरि अग-अद्रि-अश्म-शिला-जं, अश्म-जतुक-गर्भ उथ, शिला-निद्र (स्त्री)-द्र-मल-स्वेद ।

—लेख, स पु (स) प्रस्तरलेख्यम् ।

—वृष्टि, म स्त्री (स) करकासार ।

शिलौंछ, स पु (स) उञ्छशिल, उपात्तशस्य क्षेत्रात् शेषावचयनम् ।

शिल्प, स पु (स न) यत्र कला, *हस्त कर्मन (न)-शिल्प-व्यवसाय शिल्पिक, दे 'दस्तकारी'।

—कला, स स्त्री (स) दे शिल्प'।

—कार, स पु (स) शिल्पिन्, कारु, देवट, शिल्पजीविन, शिल्पकारिन्, कर्मकार ।

—विद्या, सं स्त्री (स) हस्तकौशल २ गृह निर्माण-वास्तु-कला ।

—शाला, स स्त्री (स) शिल्प(ल्पि),-गृह गेह शाला-आवेशनम् ।

—शास्त्र, स पु (स न) हस्तव्यवसाय शास्त्र २ गृहनिमाण-वास्तु, शास्त्रम् ।

शिल्पी, स पु (स पिन्) दे 'शिल्पकार' २ गृह-कारक-निवेशक, पलगड ३ चित्र कार ।

शिव, स पु (स) महादेव, शमु, पशुपति, शूलिन्, महा ईश्वर, शकर, चद्रशेखर, गिरीश, मृड, पिनाकिन, त्रिलोचन, भूतेश, धूर्जटि हर, त्र्यबक, त्रिपुरारि, गगाधर, वृषध्वज, भव, रुद्र, उमापति, महानट, भैरव, पंचानन, कठेकाल नदीश्वर २ परमेश्वर ३ वेद ४ शृगाल । (स न) कल्याण मगलम् । वि, कल्याण-मगल,-कारक कारिन् ।

—द्रुम, स पुं (स) बिल्ववृक्ष ।

—नदन, स पु (स) गणेश ।

—पुराण, स पु (स न) शैवपुराणं, पुराण ग्रथविशेष ।

—पुरी, स स्त्री (स) काशी, शिवतीर्थम् ।

—बीज, स पु (स न) पारद, शिववीर्यम् ।

—रात, स स्त्री (स शिवरात्रि) शिवचतु र्दशी फाल्गुनकृष्णचतुर्दशी ।

—लिग, स पु (स न) शिवप्रतिमाभेद ।

—लिगी, स स्त्री (स-लिंगिनी) शिव,-वल्ली वल्लिका, ईश्वरलिंगी, चित्रफला ।

—लोक, स पु (स) कैलास, शिवशैल ।

—वाहन, स पु (स) शिववृषभ, नदिन् ।

—सुदरी, स स्त्री (स) दुर्गा ।

शिवा, स स्त्री (स) दुर्गा २ पार्वती ३ शृगाली ।

शिवानी, स स्त्री (स) पार्वती, गौरी, दुर्गा ।

शिवाला, स पु (स-लय) शिव,-मंदिर आयतन २ देवालय ३ श्मशानम् ।

शिवि, सं पुं (स) उशीनरनृपपुत्र, ययाति दौहित्र २ हिंस्रपशु ३ भूर्जवृक्ष ।

शिविका, स स्त्री (स) याप्ययान, शिवीरथ, दे पालकी'।

शिविर, स पु (स न) कटक-क, निवेश, आगन्तुकसैन्यवास २ पट, मडप-कुटी, दे 'तंबू' ३ दुर्ग-र्गम् ।

शिवेतर, वि (स) अशुभ, अमगल, हानि कारक ।

शिशिर, स पु (स पु न) कपन, शीत, हिमकूट, कौटन (माघ तथा फाल्गुन) २ तुषार, तुहिनम् । वि, शीत, शीतल, उष्णताशून्य ।

—कर, स पु (स) हिमांशु, चद्र ।

—काल, स पु (स) शीतर्तु, शीतकाल ।

शिशु, स पु (स) स्तनधय, स्तनप, वत्स, बालक, दारक, उत्तानशय, डिंभ, अपत्यम् ।

शिशुता, स स्त्री (स) शिशुत्व, शैशव, बाल्य दे ।

शिशुपाल, स पु (स) चेदिराज, दमघोष-सुत, चैद्य ।

—वध, स पु (स न) महाकविमाघप्रणीत महाकाव्यविशेष ।

शिष्ट, वि (स) सभ्य, भद्र, श्रेष्ठ, सुशील २ धर्मशील ३ शान ४ बुद्धिमत् ५ शालीन, व्यवहारनिपुण ६ प्रयात ७ आज्ञाकारिन् ।

शिष्टता, स स्त्री (स) सभ्यता, भद्रता, सुशीलता, श्रेष्ठता २ अधीनता ।

शिष्टाचार, स पु (स) सदाचार, सद्व्यव हार २ सत्कार, सम्मान ३ विनय, प्रश्रय ४ उपचार आचार, यथाविधि वर्तन ५ आतिथ्य आतिथेयम् ।

शिष्य, स पु (स) छात्र, अंते-वासिन्, सद

विधायिन, शिक्षार्थिन २ अनुगामिन्, यायिन्।
शिस्त, स स्त्री (फा) शरव्य लक्ष्यम्।
—बाँधना, मु, लक्ष्ये दृष्टि बध (क प अ)।
शीकर, सं पु (स) पवनाऽऽक्षिप्त,जलकण, तुषार २ अवश्याय, दे 'ओस' ३ स्वल्प वृष्टि (स्त्री) दे 'फुहार' (१)।
शीघ्र, क्रि वि (स शीघ्र) आशु, सद्यः सपदि, अचिरेण, अविलंबेन, झटिति।
—कारी, वि (स-रिन्) विलम्बासह, आशुकारिन।
—कोपी, वि (स पिन्) कोपन, आशुक्रोधिन्।
—गामी, वि (स मिन्) द्रुतगामिन्, आशु।
—चेतन, वि (स) तीव्रबुद्धि।
—वेधी, स पु (सं धिन) लघुहस्त।
शीघ्रता, स स्त्री (स) त्वरा, क्षिप्रता लाघव, तरस् रहस (न) जव, वेग, रभस-सम्।
—करना, क्रि अ, त्वर् (भ्वा आ से), सत्वर-झटिति कृ।
शीत, वि (स) शीतल, शिशिर, हिम, तुषार, उष्णत्वशून्य २ शिथिल, दीर्घसूत्रिन्। स पु (स न) शीत शीततु, शीतकाल, शिशिर हिमागम २ शीतता, हिमता, शैत्य ३ अव श्याय तुषार ४ प्रतिश्याय दे 'जुकाम' ५ जलम्।
—कटिबंध, स पु (स) कर्कमकररेखापर वर्तिनौ अतिशीतौ भूभागौ (पु द्वि)।
—काल, स पु (स) दे 'शीत' स पु (१)।
—किरण, स पु (स) शीत हिम, कर रश्मि अंशु, द्युति चंद्र।
शीतता, स स्त्री (सं) शैत्य, शीत-त्वम्।
शीतल, वि (सं) दे शीत वि। २ शांत, शमान्वित ३ संतुष्ट, प्रसन्न।
शीतलता, स स्त्री (स) दे शीतता'।
शीतला, स स्त्री (स) विस्फोटकरोग, विस्फोटा, मसूरिका शीतला, वसतरोग, दे 'चेचक' २ वसतविस्फोटकादीनामधिष्ठात्री देवी।
—वाहन, स पु (सं न) गर्दभ, खर।
शीतांशु, सं पु (स) चंद्र २ कपूर रस्र।
शीर, सं पु (फ़ा) क्षीर, दुग्ध, दे 'दूध'।
शीताकुल, वि (स) शीत शैत्य-हिम, आकुल-मर्दित पीडित-विह्वल।
शीरा, स पु (फा) दे 'शरबत' २ दे 'चाशनी'।
शीरीं, वि (फ़ा) मधुर २ प्रिय।
शीरीनी, स स्त्री (फ़ा) मिष्टान्न, दे 'मिठाई' २ माधुर्यम्।
शीर्ण, वि (स) कृश, क्षीणतनु, क्षाम, २ भग्न, खडित, ३ च्युत ४ जीर्ण, विदीर्ण ५ म्लान, विरस।
शीर्णता, स स्त्री (स) कृशता, दौर्बल्य, क्षीणता, विदीर्णता।
शीर्ष, स पु (स न) शिरस् (न), दे 'सिर' २ ललाट, दे 'माथ' ३ शिखर ४ अग्रभाग।
शीर्षक, स पु (स न) अग्राक्षरपंक्ति, शिर पंक्ति (स्त्री) २ शिरस्त्र, दे 'खोद'।
शील, स पु (स न) चरित्र, आचरण, वृत्ति (स्त्री) २ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ४ सदाचार, सच्चरित्रम् ५ सत्व, स्वभाव प्रकृति (स्त्री) ६ हृदयमार्दव ७ सकोच, आदर वि पर, परायण (उ दानशील)।
शीलवान, वि (स-वत्) सदाचारिन, सद्वृत्त २ सत्स्वभाव, कोमलप्रकृति, सुशील।
शीशम, स स्त्री (फ़ा) शिंशपा, पिच्छि (च्छ)ला, पिंगला, कपिला, भस्मगर्भा।
शीशमहल, स पु (फ़ा शीशा+अ महल) काचस्फटिक, भवन २ काचकोष्ठ, अद र्शावास।
—का कुत्ता, मु, उन्मत्त, वातुल।
शीशा, सं पु (फा) काच, दे २ आदर्श, मुकुर, दर्पण, दे ३ काचफलक-कम्।
शीशी, स स्त्री (फ़ा शीशा) काचकूपी।
—सुघाना, औषधगधिन मूर्च्छ् (प्रे)।
शुंठी, स स्त्री (स) कटुग्रंथि, दे 'सोंठ'।
शुक, स पु (सं) कीर, वक्रतुड, दे 'तोता' २ महर्षि-व्यासपुत्र।
शुक्ति, सं स्त्री (स) मुक्तामातृ (स्त्री), दे 'सीपी'।
—बीज, स पु (स न) मौक्तिक, मुक्ता मणि।
शुक्र¹, सं पु (सं) सित, श्वेत, काव्य, कवि, भार्गव, दैत्यगुरु २ अग्नि ३ ज्येष्ठ मास ४ शुक्रवासर। (सं न) वीर्य, वीर्य

रेतम् (न) २ बल, सामर्थ्यम् । वि (म) भासुर, देदीप्यमान २ स्वच्छ, उज्ज्वल ।

शुक्र², स पु (अ) धन्यवाद , कृतज्ञता प्रकाश ।

—गुज़ार, वि (अ + फ़ा) कृतज्ञ, दे ।

—गुज़ारी, स स्त्री (अ + फ़ा) कृतज्ञता ।

शुक्ल, वि (स) धवल, सित, श्वेत, दे 'सफ़ेद' ।

—पक्ष, स पु (स) शुक्लक , दे पक्ष' मे ।

शुक्लता, स स्त्री (स) धवलता, दे सफ़ेदी' ।

शुगल, स पु (अ) दे शगल' ।

शुचि, वि (स) विशुद्ध, पवित्र पूत २ उज्ज्वल, निर्मल ३ निर्दोष, निष्पाप ४ शुद्ध मानस ।

शुतुरमुर्ग, स पु (फ़ा) * उष्ट्रकुक्कुट ।

शुदनी, स स्त्री (फ़ा) नियति (स्त्री), भवितव्यता ।

शुद्ध, वि (स) नवल, स्वच्छ निश्रणरहित २ उज्ज्वल, श्वेत ३ त्रुटिरहित, यथातथ, यथार्थ ४ निर्दोष ५ पूत, पवित्र, पावन, मेध्य ।

—करना, क्रि स, परि पू (क्र् उ स), शुचीकृ । परि वि स , शुध् (प्रे), निर्मली कृ २ प्रतिसमा-समाधा (जु उ अ), त्रुटि रहित विधा (जु उ अ) ।

शुद्धता, स स्त्री (स) शुचिता, शौच, पवित्रता, पूतता, वि,शुद्धि (स्त्री) २ निर्दोषता, यथार्थता ।

शुद्धि, स स्त्री (स) दे 'शुद्धता' (१) । २ स्वच्छता, नैर्मल्य ३ वैदिकधर्मप्रवेशस स्कार ।

—पत्र, स पु (स न) त्रुटिदर्शकपत्रम् ।

शुबहा, स पु (अ) संदेह २ भ्रम ।

शुभ, वि (स) मगल, हित, कल्याण २ उत्तम, भद्र । स पु (स न) मगल, हित, कल्याणम् ।

—कर्म, स पु (स-र्मन् न) सुकृत्य, पुण्यम् ।

—घड़ी, स स्त्री , मागल्किमुहूर्त-नम् ।

—चिंतक, वि (स) हितैषिन्, हितचिंतक ।

—दर्शन, वि (स) प्रियसु-दर्शन, सुन्दर ।

—फल, स पु (स न) सुपरिणाम ।

शुभ्र, वि (स) श्वेत, शुक्ल, भासुर ।

—कर, स पु (स) शुभ्र भानु रश्मि , चंद्र ।

शुभ्रता, स स्त्री (स) शुक्लता, भासुरता ।

शुमार, स पु (फ़ा) 'गणन', सकलनम् ।

शुमाल, स पु (अ) उदीची, दे 'उत्तर' (दिशा) ।

शुमाली, वि (अ) उत्तर, उदीचीन, उत्तर, दिग्य-सबधिन् ।

शुरू, स पु (अ) उपक्रम , आरभ दे २ प्रभव , आदि ।

शुल्क, स पु (स पु न) घट्टपथादीना कर २ वराद आचोर्थ ३ यौतक दे दहेज' ४ पण ग्लह ५ मूल्य ६ भाट, भाटक ७ प्रतिफल, वेतनम् ।

शुश्रूषा, स स्त्री (स) परिचर्या, सेवा दे २ श्रवणेच्छा ।

शुष्क, वि (स) नीरस, आर्द्रतारहित, वान २ स्निग्धि-अ-रस, नि स्वाद ३ मदकर, अरुचिकर ४ मोघ, निरर्थक ५ रूक्ष स्नेहहीन ६ गौण, शीर्ण ।

शुष्कता, स स्त्री (स) शोष , शुष्कता २ नीरसता ३ अरोचकता ४ रूक्षता ५ नीर्णता ।

शूकर, स पु (स) वराह , दे 'सूअर' ।

शूद्र, स पु (स) वृषल , दास , पादज , पद्य , प्रेष्य , जघन्य , द्विजसेवक , उपासक , चतुर्थ २ निकृष्ट ३ सेवक ।

शूद्रक, स पु (स) मृच्छकटिकरचयिता महाकवि २ शूद्र ३ शवुक , तपस्विशूद्र विशेष (रामायण) ।

शूद्रा, स स्त्री (स) शूद्रजाते स्त्री ।

शूद्री, स स्त्री (स) शूद्रस्य पत्नी ।

शून्य, वि (स) रिक्त, वशिक, शून्य रिक्त, गर्भमध्य २ निराकार ३ असत् ४ रहित । स पु (स न) आकाश श, दे २ बिंदु , स ३ रिक्त स्थान निर्जन-स्थान ४ अभाव ।

शून्यता, स स्त्री (स) शून्यत्व, रिक्तता ।

शूप, स पु (स शूप पै) सूर्प कुल्य , प्रस्फो टनमा दे 'सूप' ।

शूर, स पु (स) दे 'वीर' ।

शूरण, स पु (स) दे 'सूरन' ।

शूरता, स स्त्री (स) दे 'वीरता' ।

शूर्प, स पु (स पु न) दे 'सूप' ।

—कर्ण, स पु (स) गज २ गणेश ।

—णखा, सं स्त्री (स) रावणभगिनी।
शूल, स पु (स पु न) उदरवेदना, जठर व्यथा, वातरोगभेद २ पीडा, क्लेश व्यथा ३ कुंत, प्रास ४ त्रिशूल, त्रिशीर्षक ५ ध्वज ६ मृत्यु ७ अयःकील ८ शलाका ९ दे सूली'।
—धारी स पु (स रिन्) शूल, धर ग्राहिन् पाणि, शिव।
शूली, सं पु (सं लिन्) शिव, शूलपाणि २ शशक ३ शूलात्त। म स्त्री, दे सूली'।
शृंखला, सं स्त्री (सं) शृंखल -ल, निगड, बंध, बंधन २ क्रम, परंपरा ३ श्रेणी, पंक्ति (स्त्री) ४ मेखला, पुस्कटिवस्त्रबंध ५ कांची, रश(म)ना।
—बद्ध, वि (स) शृङ्खलित, निगडित २ क्रम श्रेणी,-बद्ध।
शृंग, सं पु (स न) विषाणं, दे 'सींग' २ सानु, कूट, शिखर, शैलाग्र ३ वाद्य भेद ४ कामोत्तजना ५ क्रीडाजलयंत्र (पिचकारी, दे रघुवंश १६.७०) ६ दे 'कंगूरा'।
शृंगार, स पु (स) रसविशेष (सा) २ मैथुनस्पृहा ३ मंडन, भूषणं, प्रसाधनं, अलंकरणं परिष्करणं ४ संभोग, मैथुन ५ मंडन प्रसाधन, साधन द्रव्य (चंदनादि) दे 'सोलह शृंगार'।
—करना, क्रि स, अलंकृ, परिष्कृ, प्रसाध् (प्रे), भूषमंड् (चु)।
—योनि, सं पु (स) मदन, कंदर्प।
शृंगी, सं पु (सं गिन्) गज २ वृक्ष ३ पर्वत ४ ऋषिविशेष ५ शृङ्गवत् पशु ६ वाद्यभेद ७ महादेव।
शृगाल, सं पुं (स) गोमायु, क्रोष्टु, जंबु (बु)क, दे 'गीदड़'। वि, भीरु २ खल ३ निष्ठुर।
शेख, सं पुं (अ) श्रीमोहमदवंशजानामुपाधि २ यवनवर्गविशेष ३ यवनोपदेशक ४ वृद्ध।
—चिल्ली, स पु (अ + हिं) मंद, जड २ मंद, विदूषक।
शेखर, सं पुं (स) शिरोमाल्य, शीर्षमाला २ शिरोभूषणमात्र ३ शीर्ष ४ किरीट, मौलि ५ पर्वताग्र, सानु।
शेखी, सं स्त्री (अ शेखह) दर्प, गर्व २ विकत्थनं, गर्वोक्ति (स्त्री)।
—बाज़, वि (हिं + फ़ा) विकत्थक, आत्मश्लाघिन् २ दृप्त।
—झड़ना या निकलना, मु, गर्व खड् (कर्म) मद व्यपगम् (भ्वा प अ) लघूभू।
—बघारना,-मारना या हाँकना, मु, विकत्थ (भ्वा आ से), आत्मानं श्लाघ (भ्वा आ से)।
शेप, स पु (स) शेप(फ)स् (न), शेफ, मेढ्र २ मुष्क, वृषण, शुक्रग्रंथि ३ पुच्छं, लांगूल, लूमम्।
शेमुषी, स स्त्री (स) बुद्धि धी मति (स्त्री), प्रज्ञा।
शेयर, म पु (अं) अंश, भाग।
—होल्डर, म पु (अं) अंशिन्, भागिन्।
शेर[1], स पु (फ़ा) द्वीपिन्, मेल, मृगांतक, शार्दूल, व्याघ्र दे २ केसरी, सिंह दे ३ वीर, शूर।
—पंजा, स पु (फ़ा + हिं) दे 'बघनखा'।
—बच्चा, स पु (फ़ा + हिं) सिंह-व्याघ्र,-पोत शावक २ वीर, शूर।
—बबर, स पु (फ़ा) दे 'शेर' (२)।
—मर्द, वि (फ़ा) वीर, निर्भय।
—होना, मु, भय मुच् (तु प अ), निर्भय (वि) भू।
शेर[2], सं पुं (अ) कवितायाश्चरणद्वयं (उर्दू, फारसी आदि)।
शेरनी, सं स्त्री (फ़ा शेर) व्याघ्री, द्वीपिनी २ सिंही, केसरिणी।
शेरवानी, सं स्त्री (देश) आजानुलंबी कंचुकभेद।
शेष, स पु (सं) अनंत, सर्पराज, शेषनाग, फणींद्र, फणीश्वर २ परमेश्वर ३ लक्ष्मण ४ बलराम ५ अंतरम् (गणित) ६ अंत ७ परिणाम ८ गज ९ मृत्यु १० नाश। (स पु न) अवशिष्ट, शेष, उद्वृत्त, अवशिष्ट उपयुक्तेतर, वस्तु (न) २ अध्याहार्य शब्द। वि, अवशिष्ट २ समाप्त ३ इतर, अपर, अन्य।
—नाग, सं पु (सं) दे 'शेष' सं पुं (१)।
—शायी, सं पु (सं शायिन्) विष्णु।
शेषांश, सं पुं (सं) १ २ अवशिष्ट-अंतिम, भाग।
शैतान, सं पुं (अ) ईश्वर विरोधी देवविशेष

(सभी धर्म) २ भूत, प्रेत ३ क्रूर ४ दुष्ट, खल ५ काम, मदन ६ क्रोध ।
शैतानी, स स्त्री (अ शैतान) दुष्टता, कुचेष्टा ।
शैत्य, स पु (सं न) शीतता, शीतलत्वम् ।
शैथिल्य, स पु (स न) शिथिलता, दे ।
शैल, स पु (स) गिरि, अद्रि, पर्वत, दे । २ शंदशैल, दे 'चट्टान' ३ दे 'शिलाजीत' ।
—कुमारी, स स्त्री (स) अद्रितनया, शैल, कन्याजा, दे 'पार्वती' ।
शैली, स स्त्री (सं) भाषणलेखन, रीति सरणि (दोनों स्त्री) प्रकार २ प्रथा, रीति ३ परिपाटि (स्त्री), प्रणाली ४ चर्या, वर्तन, वृत्ति (स्त्री) ।
शैलेंद्र, सं पुं (स) हिमगिरि, हिमालय ।
शैव, स पुं (स) शिव, भक्त उपासक अनुयायिन् २ सम्प्रदायविशेष । वि (स) शिव सबंधिन् ।
शैव्या, स स्त्री (स) सत्यहरिश्चन्द्रपत्नी ।
शैशव, स पु (स न) शिशुतान्त्व, बाल्यम् । वि (स) बाल बाल्य-सबंधिन् ।
शोक, स पु (स) आर्ति (स्त्री) आधि, दुःख, परिताप, खेद, शुच (स्त्री), शुचा, मन्यु, निस्सम, शोचनम् ।
शोकार्त, वि (स) शोकित, शोक, आकुल आतुर ग्रस्त-उपहत विह्वल, सशोक, परितप्त ।
शोख़, वि (फ़ा) धृष्ट, वियात २ चचल, चपल ३ गाढ, भासुर (रग) २ दुर्ललित, कुचेष्टक ।
शोख़ी, स स्त्री (फ़ा) धार्ष्ट्य, वैयात्य २ चाचल्य ३ गाढता, प्रखरता ।
शोच, स पु (स शोचन) शोक २ चिंता ।
शोचनीय, वि (स) आपन्न, दुःस्थ, आर्त्त, निरानद २ सांशयिक, सदिग्ध ।
शोण, स पु (स) रक्त-लोहित-वर्ण-रग २ नदविशेष, हिरण्यवाह ३ माणिक्य ४ रक्तेक्षु ५ अग्नि ६ लोहिताश्व । स न, रुधिर २ सिंदूरम् ।
—रत्न, स पु (स न) पद्मरागमणि, शोणितोपल ।
शोणित, स पु (स न) रुधिर, रक्त दे । वि (स) लोहित, रक्त, शोण ।

शोणिमा, स स्त्री (स मन् पु) रक्तिमन्, लोहितिमन् अरुणिमन् (पु) । दे 'लाली' ।
शोथ, स पु (स) शोफ, शोफक, श्वयथु ।
शोध, स पु (स) शोधन, निस्तार (ऋणादि का) २ अनुसंधान, अन्वेषणं ३ शुद्धि (स्त्री), शुद्धिसंस्कार ४ परीक्षा-क्षणम् ।
शोधक, स पु (स) पावन, शोधन, मलहर २ अन्वेषक, अनुसधातृ ३ दे 'सुधारक' ।
शोधन स पु (स न) पावन, सस्करण, निर्मली वित्री शुची-करणं, मार्जन, प्रक्षालन, धावन २ प्रतिमप्रमामा, धान, त्रुटिनिरसन ३ धातूना निर्दोषीकरण ४ अन्वेषणं, अनुसधानं ५ परीक्षण ६ ऋणनिस्तारण ७ दड ८ प्रायश्चित्त ९ विरेचन १० निबूक ११ व्यवकलनम् ।
शोधना, क्रि स (स शोधन) दे 'शुद्ध करना' (१२) ३ औषधार्थं धातु सस्कृ ४ अन्विष् (दि प से), अनुसधा (जु उ अ) । स पुं, दे 'शोधन' ।
शोधनी, स स्त्री (स) स, मार्जनी, बहुकरी ।
शोधनीय, वि (सं) पवनीय, मार्जनीय २ निस्तार्य, प्रत्यर्पयितव्य ३ अनुसधेय ।
शोभन, वि (स) सुदर, रम्य, रमणीय, २ उत्तम, श्रेष्ठ ३ उचित, उपयुक्त ४ मांगलिक, मगल्य, मगलीय ।
शोभा, स स्त्री (स) कांति द्युति दीप्ति (स्त्री), भा, भासा, श्री (स्त्री) २ छवा वि (स्त्री), सुन्दरता, रुचिरता ३. भूषा, परिष्क्रिया ४ वर्ण, रग ५ श्रेष्ठगुण ।
—देना, क्रि अ, राज् शुभ (भ्वा आ से) ।
शोभायमान, वि (स शोभमान) राजमान, भ्राजमान, भासुर, देदीप्यमान, सुन्दर २ विद्यमान, उपस्थित ।
शोभित, वि (स) शोभान्वित, सुन्दर, छविमत् । २ मडित, भूषित ३ उपस्थित, विद्यमान ।
शोर, स पु (फ़ा) महारव, कलकल, कोलाहल दे ।
—मचाना, क्रि अ, कोलाहलं कृ, उत्क्रुश् (भ्वा प अ) ।
शोरबा, स पु (फ़ा) यूष-ष, सूप, लास, रस २ मांसरस, दे 'यखनी' ।

शोरा, स पु (फा शोर) यवक्षार, विपाक्त्रिन्, तिपीतिन्, पावन ।
शोरे का तेज़ाब, सं पु , भूयिकाम्ल , पाक्यद्रावक, नत्रिक-यवक्षार,-अम्ल ।
शोला, स पु (अ), ज्वाला अर्चिस (न)।
शोशा, स पु (फा) अद्भुत विलक्षण,-वार्ता २ व्यंग्योक्ति (स्त्री) ३ कल्होत्पादिका वार्ता।
शोषक, वि (स) रसाकर्षक, शोषणकर २ क्षय -कम, वारिन् ।
शोषण, स पु (सं न) रसाकर्षण, शुष्कीकरण २ क्षपण ३ वि, नाशनं, वि, ध्वंसन ४ सारोद्धार , ५ चूषणम् ।
शोहदा, सं पु (अ) दे 'गुण्डा' ।
शोहरत, स स्त्री (अ) ख्याति प्रसिद्धि (स्त्री) ।
शोहरा, स पु (अ) शोहरत, दे ।
शौक, स प (अ) अभि रुचि (स्त्री) प्रवृत्ति (स्त्री), प्रवणता २ लालसा उत्कंठा, औत्सुक्यम् ।
—करना, मु , कुन (र था अ) ।
—फरमाना, मु , तीव्रम् अभिलष (भ्वा प से) ।
—पूरा करना, मु , काम उपभोगेन शम् (प्रे) ।
—से, मु , सानन्द, सहर्ष, समोदम् ।
शौकीन, स पु (अ शौक) प्रसाधन शृंगार सुवेश प्रिय , वेषासम निन, छैल २ वेश्यागामिन् ३ प्रेमिन्, अनुरागिन्, स्नेहिन्, अभिलाषिन् ।
शौकीनी, सं स्त्री (हिं शौकीन) वेषाभिमान , शृङ्गारप्रियता २ वेश्यागमनम् ।
शौच, स पु (स न) शुद्धता, शुद्धि (स्त्री), पवित्रता, पूतता, शुचिता-त्वं, पुण्यता, निष्पापता २ प्रात -कृत्यानि-कार्याणि (न बहु०) (शौच, स्नान, म जन आदि) ३ पुरीषोत्सर्ग , हदनम् ।
शौरसेनी, सं स्त्री (सं) १ २ प्राकृत अपभ्रंश, भाषाविशेष ।
शौर्य स पुं (सं न) शूरता, वीरता, पराक्रम ।
शौहर, सं पुं (फा) पति , भर्तृ ।
श्मशान, सं पु (सं न) पितृ-वन-कानन, अंतशय्या, शवालय, रुद्राक्रीड , दाहसर (पुं), शवसानम् ।
—वासी, स पु (स सिन्) शिव, २ चांडाल ।
श्मश्रु, स पु (सं न) कूर्च,-र्चं, चोट, व्यंजन, मुखरोमन् (न), शिशिन् (न), शिंघाण, दे 'दाढी' ।
—वर्धक, स पुं (स) नापित ।
श्याम, स पु (सं) श्रीकृष्ण २ कृष्णवर्ण । वि (स) काल, कृष्ण २ कालनील, कृष्ण मेचक ।
—सुंदर, सं पु (स) श्रीकृष्ण ।
श्यामता, स स्त्री (स) कालिमन् कृष्णिमन् (पुं) २ नीलता, मेचकता ।
श्यामल, वि (स) काल २ मलीन ।
श्यामा, स स्त्री (स) राधा विरा २ शकुनी, कालिका कृष्णा (रागभेद) ३ अप्रसूतांगना ४ (तप्तकांचनवर्णाभा) नारी ५ कृष्णा गौ (स्त्री) ६ यमुना ७ रात्री ।
श्याल, स पु (स) श्यालक , भार्यापत्नी, भ्रातृ ।
श्यालकी, स स्त्री (स) श्यालिका, श्याली, भार्या पत्नी, भगिनी ।
श्येन, स पु (स) शशाद -दन , कपोतारि, खगान्तक , घातिरण, पत्रिन, नीलपिच्छ ।
श्येनी, स स्त्री (सं) श्येनिका, नीलपिच्छी च्ना ।
श्रद्धा, स स्त्री (स) आदर, सम्मान सत्कार २ विश्वास , प्रत्यय, विश्रम्भ ३ निष्ठा, आस्था, भक्ति (स्त्री) ।
—करना या—रखना, क्रि अ श्रद्धा (जु उ अ), विश्वस् (अ प से) ।
—हीन, वि (सं) अविश्वासिन्, अश्रद्दधान २ आस्था निष्ठा भक्ति, हीन ।
श्रद्धालु, वि (सं) श्रद्धा,-वत् युक्त अन्वित, श्रद्दधान, विश्वासिन्, प्रत्ययिन् २ (स्त्री) दोहदवती ।
श्रद्धेय, वि (सं) विश्वास श्रद्धा, पात्र आस्पदं, श्रद्धालय, पूज्य, स , मान्य, नमस्य ।
श्रम, सं पु (स) परिश्रम , दे । २ श्रांति (स्त्री) ३ व्यायाम ।
—जल, सं पुं (सं न) प्र,-स्वेद , श्रम, कणा शीकरा (बहु) दे 'पसीना' ।
—जीवी, सं , पु (सं विन्) श्रमिक , कर्मकर , दे 'मजदूर' ।

श्रवण, स पु (स पु न) वर्ण, श्रव, श्रोत्र दे 'कान' स न निशमनं, आकर्णनम् (स पु स्त्री) श्रवणनक्षत्रम् (ज्यो)।

श्रवणा, स स्त्री (स) श्रवण-श, नक्षत्र विशेष ।

श्रव्य, वि (स) दे 'श्राव्य'।

श्रांत, वि (स) क्लान्त, ग्लान, खिन्न, श्रमार्त्त, अवसन्न, जातश्रम २ शान्त ३ निवृत्त ।

श्रांति, स स्त्री (स स्त्री) श्रम, आयास, अवसाद, खेद ।

श्राद्ध, स पु (स न) श्रद्धया क्रियमाण कर्मन् (न) २ पितॄन् उद्दिश्य श्रद्धया अन्नादिदान ३ पितृ-आश्विनकृष्ण, पक्ष ।

श्राप, स पु, दे 'सराप'।

श्रावण, स पु (स) श्रावणिक, नभ (पु)।

श्रावणी, स स्त्री (स) श्रावणमासीयपूर्णिमा।

श्राव्य, वि (स) श्रव्य, श्रोतव्य, श्रवणार्ह, आकर्णनीय, निशमनीय ।

श्री, स स्त्री (स) कमला, लक्ष्मी दे २ सरस्वती ३ धन, सपद् (स्त्री) ४ विभूति (स्त्री), विभव ५ यशस् (न) ६ शोभा, प्रभा ७ कान्ति-द्युति (स्त्री) ८ नामपुरोवर्ति समानपद श्रीयुत, श्रीमत् ९ वृद्धि (स्त्री) १० साफल्य, सिद्धि (स्त्री) ११ रागभेद । वि, योग्य २ मनोज्ञ ३ उत्तम ४ मगल।

—कठ, स पु (स) शिव, शम्भु ।

—खड, स पु (स पु न) हरिचदन २ दे 'शिखरन'।

—धर, स (स) विष्णु, श्री, निवास निकेतन । वि, तेजस्विन् ।

—पति, स पु (स) विष्णु २ श्रीराम ३ श्रीकृष्ण ४ कुबेर ५ नृप ।

—पथ, स पु (स) राज, मार्ग पथ ।

—पाद, वि (स) पूज्य २ सपन्न।

—पुष्प, स पु (स न) लवग, श्रीप्रसूनम्।

—फल, स पु (स) बिल्ववृक्ष २ नारिकेल ३ राजादनीवृक्ष ४ आमलक-की।

—फली, स स्त्री (स) आमलकी २ नीली।

श्रीमत, वि (स-मत्) धनिक, धनाढ्य ।

श्रीमत्, वि (स) धनवत्, धनिन्, श्रील, २ शोभान्वित, द्युतिमत् ३ छविमत्, सुन्दर। स पु, विष्णु २ कुबेर ३ शिव ।

श्रीमती, स स्त्री (स) स्त्रीनामपुरोवर्त्तिसमान पद २ लक्ष्मी (स्त्री) ३ राधा । वि, धनाढ्या २ शोभान्विता ३ सुन्दरी।

श्रीमान्, स पु (स श्रीमत्) नरनामपुरोवर्तिसमानपद, श्रीयुत, श्रीयुक्त। दे 'श्रीमत्' वि तथा स पु ।

श्रीरस, स पु (स) श्रीवेष्ट, दे 'श्रीवास'।

श्रीराग, स पु (स) षड्रागमध्ये तृतीयो राग ।

श्रील, वि (स) लक्ष्मीवत्, धनाढ्य २ श्री शोभा,-युक्त-युत ३ अनश्लील, भद्र।

श्रीवत्स, स पु (स) विष्णु २ विष्णुवक्षःस्थशुक्लवर्णदक्षिणावर्तरोमावली ।

—लाछन, स पु (स) विष्णु ।

श्रीवास, स पु (स) पायस, वृकधूप, श्रीवेष्ट, सरलद्रव दे 'गधाविरोजा' तथा 'तारपीन' २ पद्म ३ विष्णु ४ शिव ।

श्रीहर्ष, स पु (स) नैषधकाव्यरचयिता २ सम्राट् हर्षवर्द्धन ।

श्रुत, वि (स) आकर्णित, श्रवणगोचरता गत, निशान्त २ प्र,ख्यात।

—कीर्ति, स स्त्री (स) शत्रुघ्नपत्नी। वि, कीर्तियुत, यशस्विन्।

श्रुति, स स्त्री (स) वेद २ कर्ण, दे 'कान' ३ श्रवण ४ ध्वनि ५ किंवदती।

—कटु, स पु (स) (काव्ये दोषभेद) कर्कशशब्दप्रयोग, दु श्रवत्वम् ।

—पथ, स पु (स) वर्ण २ वेदोक्तमार्ग ।

श्रेणी, स स्त्री (स) श्रेणि (स्त्री) कक्षा, वर्ग, छात्रगण २ पक्ति,तिका, विजोली, आली लि, आवलि-ली, राजी जि, वीथी थिका, रेखा, लेखा, पाली लि (सब स्त्री) ३ क्रम, परपरा, शृङ्खला ४ समव्यवसायिसघ ।

—बद्ध, वि (स) पक्ति,-बद्ध-स्थ, वर्गीकृत।

श्रेय, स पु [स श्रेयस (न)] कल्याण, आनन्द, मगल २ धर्म, सुकृत ३ मोक्ष, समृद्धि (स्त्री) ४ कीर्ति (स्त्री), यशस् (न)। वि, भद्रतर, साधीयस्, उत्कृष्टतर २ उत्तम, श्रेष्ठ ३ शुभंकर, मगल ४ कीर्तिकर, यशोदायक।

श्रेयस्कर, वि (स) कल्याण हित-मगल, कारक-कारिन्।

श्रेष्ठ, वि (स) उत्तम, परम, प्रशस्ततम, वरेण्य, मुख्य, प्रथम, अग्रि(ग्री)य ३ पूज्य, मान्य ४ वृद्ध, ज्येष्ठ ५ अभिजात, अभिजनवत्, कुलीन ६ आर्य, महानुभाव, महाशय।

श्रेष्ठता, स स्त्री (स) औदार्य, माहात्म्य, प्रधानता, भद्रता, आयत्व, कुलीनता २ उत्तमता, उत्कृष्टता।

श्रोतव्य, वि (स) दे 'श्राव्य'।

श्रोता, स पु (स-तृ) श्रावक, श्रवण निरत मन,-कर्तृ, आकर्णयितृ।

श्रोत्र, स पु (स न) श्रवण-ण, कर्ण, दे 'कान'।

श्रोत्रिय, स पु (स) वेद,विद् पाठक, छांदस २ ब्राह्मणजातिभेद।

श्रौत, वि (स) श्रुति-वेद, विहित प्रतिपादित २ वैदिक, छांदस ३ यज्ञीय। (स न) गार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्नय (बहु)।

—सूत्र, सं पु (स न) यज्ञविधायकग्रन्थविशेष।

श्लाघनीय, वि (स) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, दे २ उत्तम, श्रेष्ठ।

श्लाघा, स स्त्री (स) स्तुति-नुति (स्त्री), प्रशंसा, दे २ चाटु (पु न), चाटूक्ति (स्त्री) ३ इच्छा।

श्लाघ्य, वि (स) श्लाघनीय, दे।

श्लिष्ट, वि (स) संयुक्त, संलग्न २ आलिंगित ३ अनेकार्थक, श्लेषयुक्त (शब्दादि)।

श्लीपद, स पु (स न) पादवल्मीक, दे 'फीलपाँव'।

श्लील, वि (स) उत्तम, उत्कृष्ट २ शुभ, भद्र।

श्लेष, सं पु (स) अनेकार्थकशब्दप्रयोग, शब्दालंकारभेद (सा) २ परिरंभ, आलिंगन ३ संयोग, संधि।

श्लेष्मा, स पु (स-मन्) कफ, दे 'बलगम'।

श्लोक, स पु (स) अनुष्टुप्छन्दस् (न) २ पद्य, छन्दस् (न) ३ यशस् (न) ४ प्रशंसा।

श्वसुर, सं पु (स) दे 'ससुर'।

श्वसुर्य, स पु (स) देवर २ श्याल।

श्वश्रू, स स्त्री (स) दे 'सास'।

श्वान, स पु (स) श्वन, कुक्कुर, दे 'कुत्ता'।

—निद्रा, स स्त्री (स) अगाढ-कुक्कुर, निद्रा-स्वाप।

श्वानी, स स्त्री (स) कुक्कुरी, शुनी, सरमा, सघी, सारमेयी।

श्वापद, सं पु (स) हिंस्रपशु।

श्वास, स पु (स) प्राणा असव (बहु), दे 'सांस' २ श्वासरोग, दे 'दमा'।

—धारण, स पु (स न) श्वासरोध, प्राणायाम।

श्वासोच्छ्वास, स पु (स) प्राण,-गति क्रिया, श्वसितोच्छ्वसितम्।

श्वित्र, स पु (स न) श्वेत-, श्वेतकुष्ठम्। वि (स) श्वेत २ श्वित्रिन्।

श्वित्री, वि (स-त्रिन्) श्वित्र-श्वेतकुष्ठ,-युक्त।

श्वेत, वि (स) धवल, गौर, शुक्ल-क्ल, दे 'सफेद' २ निर्मल, स्वच्छ ३ निर्दोष, निष्कलंक। स पु (स) शुक्लवर्ण २ शंख ३ शुक्रग्रह (स न) रूप्य, रजतम्।

—कुष्ठ, स पु (स न) दे 'श्वित्र'।

—कृष्ण, वि (स) सितासित, शुक्लश्याम २ पक्षविपक्ष।

—केतु, सं पु (स) उद्दालकपुत्र।

—प्रदर, स पु [स प्रदरभेद (स्त्रीरोग)]।

श्वेतता, स स्त्री (सं) श्वैतिमन् (पु), शुक्लता, दे 'सफेदी'।

श्वेतांबर, सं पु (स) जैनसंप्रदायविशेष, धवलवस्त्र।

ष

ष, देवनागरीवर्णमालाया एकत्रिंशो व्यंजनवर्ण, षकार।

षट, स पु (स) दे 'छह' (१२)।

षट्, वि (स षष्) सं पु, उक्ता संख्या, तद्बोधकांकश्च (६) २ दीपकरागपुत्र।

—कर्म, सं पु (सं-र्मन् (न) षट् ब्राह्मणकर्माणि (यजनं, याजनं, अध्ययन, अध्यापनं, दान, प्रतिग्रह)।

—कोण, सं पु (सं न) षड्भुज। वि., षड्भुज।

—पद, स पु (सं) षडंघ्रि, षट्चरण, भ्रमर।

—पदी, स स्त्री (स) भ्रमरी २ छन्दोभेद (छप्पय) ३ यूका।
—शास्त्र, सं पु (स न) सांख्ययोगन्याय वैशेषिकमीमांसावेदान्तशास्त्राणि (न बहु)।
—शास्त्री, सं पु (स न्-स्त्रिन्) षड्दर्शनविद्।
षट्क, स पु (स न) षट इति संख्या २ षड्वस्तुसमूह।
षडंग, स पु (स न) वेदांगषट्शास्त्राणि (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दस (न), ज्योतिष) २ षट् शरीरावयवा (नधि बाहू शिरो मध्य षडंगमिदमुच्यते)) वि, षडवयवयुक्त।
षडंघ्रि, स पु (स) भ्रमर, षट्पद।
षडानन, स पु (स) कार्तिकेय, षण्मुख।
षड्गुण, स पु (स न) षाड्गुण्य, राज्य रक्षणस्य षडुपाया (= संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय)। वि, गुणषट्कयुत २ षड्गुणित।
षड्ज, स पुं (स) स्वरसप्तके प्रथम, चतुर्थो वा स्वर (संगीत)।
षड्दर्शन, सं पु (स न) दे 'षट्शास्त्र'।
षड्यन्त्र, स पु (स) कूटस्व, कूट, युक्ति (स्त्री)-उपाय उपजाप, *षडयन्त्र, *षट्चक्र, कुमन्त्रणा।
षड्रस, स पु (स-रस,-रसा) रसषट्क (= मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय)।
षड्रिपु, स पु (स न) षड्वर्ग, विकारषट्क (= काम क्रोधस्तथा लोभो मदमोहौ च मत्सर)।
षष्ठी, स स्त्री (स) शुक्लकृष्णपक्षयो षष्ठी तिथि (स्त्री) २ सबन्धविभक्ति (व्या) ३ कात्यायनी, दुर्गा।
षाड्गुण्य, स पु (स न) दे 'षड्गुण' स पु।
षोडश, वि तथा (सं) 'सोलह'।
—कला, स स्त्री (स बहु) चन्द्रमण्डलस्य षडधिकदश भागा (= अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि, पुष्टि, रति धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा, पूर्णामृता = १६ कला)।
—शृङ्गार, स पु (स बहु) षोडशसंख्याकानि प्रसाधनसाधनानि।
(अंग शुची, मज्जन, वसन, माग, महावर, केश। तिलक भाल, तिल चिबुकमें, भूषण, मेंहदी वेष। मिस्सी, काजल, अर्गजा, बीरी और सुगंध। पुष्पकली, युत होय कर तब नवसत निबन्ध।)
—संस्कार, स पु (स बहु) धार्मिककृत्यभेद (= गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयनजातकर्मनामकरणनिष्क्रमणान्नप्राशनचूडाकर्मकर्णवेधोपनयनवेदारम्भसमावर्तनविवाहवानप्रस्थसन्न्यासान्त्येष्टिसंस्कारा (स्वामी दयानन्द)।
षोडशी, स स्त्री (स) षोडशवर्षा युवति (स्त्री) २ प्रेतक्रियाभेद।
षोडशोपचार, स पु (सं बहु) षोडशपूजन, (= आसनं स्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्। मधुपर्काचमस्नान वसनाभरणानि च॥ गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्य वदन तथा। प्रयोजयेदर्चनायां उपचारास्तु षोडश॥)

स

स, देवनागरीवर्णमालाया द्वात्रिंशो व्यञ्जनवर्ण सकार।
संकट, सं पु (स न) आपद् विपद्-आपत्ति विपत्ति (स्त्री) २ दु ख, कष्ट ३ जन, समूह समर्द ४ गिरिद्वार, दे 'दर्रा' ५ सबाधपथ।
संकटापन्न, वि (स) आपद्-विपद्-आपत्ति, ग्रस्त।
संकटोत्तीर्ण, वि (स) कष्ट-क्लेश-विपत्ति, मुक्त-रहित।
संकर, स पु (स) सम्मिश्रण, संमिलनं २ सांकर्य, मिश्रज, सकरज, ३ अधर्म्य विवाह।
संकरता, स स्त्री (स) संमिश्रता, सांकर्य, क्रमभंग, व्यतिकर, अस्तव्यस्तता।
संकल, स स्त्री (स) शृंखला, दे।
संकलन, स पु (स न) संग्रहण, संचयनं २ संचय, राशि, ३ परिगणन, परिसंख्या ३ संग्रह, संग्रहग्रन्थ।
—करना, क्रि स., संकल् (चु), संग्रह् (क्र्. प से), समाह (भ्वा प अ)।

सकलित, वि (स) सगृहीत, सचित २ परि सख्यात, परिगणित ३ राशी-एकत्री कृत।
सकल्प, स पु (स) चिकीर्षा, भाव, विचार, इच्छा, काम २ विशिष्टमत्रपूर्वक दान वितरण-उत्सनन ३ मत्रविशेष ४ निश्चय, अवधारण, अध्यवसाय।
—करना, क्रि स निश्चि (स्वा प अ), दृष्ट अवधृ (चु), सक्लृप (प्रे) २ सकल्पमत्र पूर्वक वितृ (भ्वा प से), दा।
सकाश, वि (स) तुल्य, सदृश २ निकट समीप, वर्तिन्। (स पु) सामीप्य, नैकट्यम्।
सकीर्ण, वि (स) सवाध, सकट, सकुचित २ मिश्रित, समिश्र ससृष्ट ३ क्षुद्र, तुच्छ ४ सकुल निचित व्याप्त, समा आ-कीर्ण।
सकीर्णता, स स्त्री (स) सवाधता २ मिश्रितत्व ३ सकुलता ४ क्षुद्रता नीचता।
सकीर्तन, स पु (स न) (देवादीना) गुणगान, कीर्तिकथनम्।
सकुचित, वि (स) सकीर्ण, सवाध २ सलज्ज, सत्रप ३ कदय, किंपचान ४ सहत, सपिंडित, आकुचित ५ मुद्रित, मीलित, मुकुलित।
सकुल, वि (स) व्याप्त, कीर्ण, निचित, व्याप्त, कलिल, गहन, सभृत, सपरि, पूर्ण, पूरित। स पु (स न) युद्ध २ जन, ओघ सम्मर्द ३ पशुकुल, गो, वृद कुल, यूथ, निवह ४ असगतवाक्यम्।
सकेत, स पु (स) इगित, सज्ञा, सज्ञान, अगविक्षेप, प्रशस्ति (स्त्री) आकार, अभिप्रायव्यजकचेष्टा २ (प्रेमिणो) सकेतनिकेतन, समिलनस्थान ३ शृगारचेष्टा, हाव, विभ्रम, विलास ४ चिह्न ५ उपक्षेप, आकूत, उपन्यास।
—करना, क्रि स, इगितेन सूच् (चु), उपदिश् (तु प अ), साकूत उपायम् (दि प से)।
सकोच, स पु (स) आकुचन, संकोचनं, समाकर्ष, सपीडन २ लज्जा, त्रपा ३ निश्चयाभाव विकल्प, सशय ४ सक्षेपणम्।
सकोचन, स पु (स न) दे 'संकोच' (१)।
सकोचना, क्रि स (स संकोचन) सकुच् (प्रे), आकुच् (प्रे), अल्पीकृ, सह् (भ्वा प अ.)। क्रि अ, लज्ज् (तु आ स) त्रप् (भ्वा आ स)।
सकोची, वि (स चिन्) लज्जालु, लज्जाशील, विनीत, शालीन।
सक्रमण, स पु (स न) गमन, व्रजन २ भ्रमण पर्यटन ३ सूर्यस्य राश्यतरप्रवेश।
सक्रात, वि (स) अतीत, गत २ प्रविष्ट, निविष्ट ३ प्राप्त गृहीत ४ स्थानान्तरित ५ प्रति, फलित बिम्बित।
सक्राति, सं स्त्री (स) दे 'सक्रमण' (३)। २ ३ सूर्यसक्रमण, समय दिवस।
सक्रामक, वि (स) स्पर्श-ज य-सचारिन् (रोग)।
सक्षिप्त, वि (स) सहृत, समस्त, सकुचित, लघु अल्पीभूत।
—करना, क्रि स, सक्षिप (तु प अ), समस (दि प से), समाहृ-सहृ (भ्वा प अ)।
—लिपि, स स्त्री (स) दे 'शार्टहैंड'।
सक्षेप, स पु (स) सार २, सग्रह, समास, समाहार।
सक्षेपण, स पु (स न) सकोचन, सहरण २ सचयन, सग्रहणम् ३ प्रासन, क्षेपणम्।
सक्षेपत, अव्य (स) सक्षेपेण, समासेन, साररूपेण।
सख, स पु, दे 'शख' (१२)।
सखिनी, स स्त्री, दे 'शखिनी'।
सखिया, स पु (स शृगिक) फेनाश्मन, आखुगौरी-पाषाण, शल, मल्ल, बरवीरा, कुनटी नाग, जिह्विका मातृ (स्त्री)।
सख्या, स स्त्री (स) गणना २ अक ३ बुद्धि (स्त्री) ४ विचारणा।
—करना, क्रि स, गण् (चु) सख्या (अ प अ)।
सग¹, स पु (स) सग, समिलन, समागम २ सगति (स्त्री), साहचर्य, ससग, सवास, सपर्क ३ विषय, अनुराग आसक्ति (स्त्री) ४ सरिसगम। क्रि वि, सह, सार्द्ध, साक, सम (तृतीया के साथ)।
—करना, क्रि अ, सगम् (भ्वा आ अ), सहचर् (भ्वा प स), सवस् (भ्वा प अ)।
सग², स पु (फा) पाषाण, प्रस्तर, दे 'पत्थर'। वि, कठिन, कर्कर, कठोर, २ कठोर।
—तराश, सं पुं (फा + अ) अश्मतक्षक, पाषाण प्रस्तर।

—तराश, स पु (फा) मूर्ति प्रतिमा-कार, आदिमक, औपलिक ।
—तराशी, स स्त्री, मूर्ति प्रतिमा निर्माणम् ।
—दिल, वि (स) पाषाण-कठोर, हृदय, निर्दय।
—दिली, स स्त्री, निर्दयता, निष्करुणता।
—मर्मर, स पु (फा + अ) राजादमन (पु), मणिशिला, ममर,-उपल प्रस्तर ।
—मूसा, स पु (फा) *मूषोपल, *मूषादमन् (कृष्णश्लक्ष्णप्रस्तरभेद)।
संगठन, स पु (स सं+हिं गठना) संघट न-ना, सुव्यवस्थान, सविधान, दे 'संघटन' २ संस्था, संघ ३ ऐक्य, संधि, सं, हति (स्त्री) योग-गम ।
संगठित, वि (हिं संगठन) संघटित, सुविहित, सुव्यवस्थापित।
संगत, स स्त्री (स न) दे 'संग' (२)। २ सहचर, सङ्गिन् ३ मैथुनम्।
—करना, क्रि अ, दे 'संग करना'।
संगतरा, स पु (पुर्त) (वृक्ष) नारंग, नागरंग, ऐरावत । (फल) नारंग ङ्, दे 'नारंगी'।
संगति, स स्त्री (स) दे 'संग' (१२)। ३ मैथुन ४ सबन्ध ५ सवाद, विरोधाभाव, आनुरूप्य ६ ज्ञान ७ युक्ति (स्त्री)।
संगती, स पु (स संगत>) सहचर, मित्र, सहाय ।
संगम, स पु (स) दे 'संग' (१२)। ३ वेणी नि (स्त्री) सरित्-संयोग-समागम-मेलक ४ मैथुन ५ ग्रहयोग (ज्यो)।
संगर, स पु (स) युद्ध २ प्रतिज्ञा ३ नियम ४ आपद् (स्त्री) ५ अंगीकार ६ विषम्।
संगसार, स पु (फा) *उपलमार, प्राण दण्डभेद । वि, नष्ट, ध्वस्त।
संगिनी, स स्त्री (हिं संगी) सहचरी, सह गामिनी २ पत्नी।
संगी, स पु (हिं संग) सहचर, सहाय २ मित्र ३ बंधु ।
संगीत, स पु (स न) प्रेक्षणार्थ नृत्यगीत वाद्यम्।
—शास्त्र, स पु (स न) गंधर्व, विद्या-वेद ।
संगीन, स स्त्री (फा) *नालयखनित्री । वि, अश्म पाषाण,-मय-रचित २ स्थूल ३ स्थायिन्, दृढ ४ घोर, विकट ५ संकीर्ण।
संगृहीत, वि (स) संचित, समाहृत, एकत्रीकृत २ संकलित, परिसंख्यात।
संग्रह, स पु (स) संचय यन, समाहरण, समा, हार हृति (स्त्री)-हरण, संकलन, राशी-एकत्री,-करण २ संग्रहग्रंथ ३ संक्षेप ४ मुष्टि (पु स्त्री) ५ निग्रह, संयम ६ रक्षा ७ बद्धकोष्ठ, दे 'कब्ज' ८ स्वीकृति (स्त्री) ९ ग्रहणम्।
संग्रहणी, स स्त्री (स) ग्रहणी (अजीर्णभेद)।
संग्रहणीय, वि (स) संचेतव्य संचयनीय, निचेय।
संग्रहालय, स पु (सं) अद्भुतालय ।
संग्रहीता, वि (स तृ) संग्राहक, संग्रहिन्, संचेतृ, संचयिन्।
संग्राम, स पु (स) रण, आहव, युद्ध, दे ।
—तुला, स स्त्री (स) युद्धपरीक्षा।
—भूमि, स स्त्री (स) युद्धक्षेत्रम्।
—मृत्यु, स स्त्री (स पु) वीरगति (स्त्री), रणमरणम्।
संघ, स पु (स) सभा, समाज, समिति (स्त्री), गोष्ठी, परिषद्-संसद् (स्त्री) २ समूह, गण, वृंद, दल ३ प्राचीनप्रजातंत्रभेद ४ बौद्धश्रमणसमाज ५ विहार, मठ ठम्।
—चारी, वि (स रिन्) गण-यूथ,-गामिन्। स पु, मीन ।
—शासन, स पु (स न) *संयुक्ततंत्रम्।
संघटन, स पु (स न) दे 'संगठन' (१३) ४ निर्माण, रचन ५ घटना, रचना।
संघट्टन, स पु (स न) संघर्ष र्षण २ संघट्ट, समर्द ३ रचना, घटना ४ संमिलन, संयोग ५ दे 'संगठनम्'।
संघर्ष, स पु (स) संघृष्टि (स्त्री), स अभि आ-घर्ष र्षण, आ वि, घट्टन, परस्पर,-घर्षण मर्दन २ प्रति,स्पर्धा, विजिगीषा, प्रतियोगिता, अहमहमिका ३ सं-घट्ट-मर्द ४ युद्धम्।
संघर्षण, स पु (स न) दे 'संघर्ष'।
संघात, स पु (स) समूह वृंद २ हनन, वध ३ आघात ४ निविडसंयोग ५ आवास ।
संघाती, स पु (सं संघा>) सहचर, मित्रम्।
संघाराम, स पु (स) आश्रम, विहार, मठ ठम्।

कृतार्थ ७ अनुनीत, तोषित, प्रीत, मात्वन, प्रसादित।

संतोष, स पु (स) स परि, तोष तुष्टि (स्त्री), वितृष्णा शांति -तृप्ति (स्त्री), प्रीति, २ आनन्द, हर्ष, सुखम्।

—करना, क्रि अ, संतुष-संतृप (दि प अ), नंद (भ्वा प से)।

संतोषी, वि (स षिन्) दे 'संतुष्ट' (१)।

संथा, स पु (स संहिता>?) आह्निक, दैनिक, पाठ।

संदर्भ, स पुं (स) रचना, घटना, निर्मिति (स्त्री) २ प्रस्ताव, लेख, प्रति-बंध ३ भाष्य-टीका, आत्मकग्रंथ ४ लघु ग्रंथ पुस्तक ५ संग्रह, संकलन (ग्रंथ) ६ विस्तार।

संदल, स पु (फ़ा) मलयज श्रीखंड, चंदन, दे।

संदली, वि (फ़ा संदल) चंदनवर्ण, ईष त्पीत २ चंदन, मयनिर्मित।

संदिग्ध, वि (स) संदेह-संशय, युक्त पूर्ण, निश्चयशून्य, सविकल्प, विकल्प्य।

—व्यक्ति, स पु (स स्त्री) शंकित व्यक्ति, -जन।

संदूक, स पु (अ) संपुट, पेटा, मंजूषा, समुद्ग।

संदूकचा, स पु / **संदूकची,** स स्त्री } (अ + फ़ा) पेटिका, समुद्गक। करण्डक, संपुट(टि)क।

संदेश, स पु (सं) संवाद, वार्ता, वाचिक, दिष्ट, आख्यायनी २ वंगप्रांतीयमिष्टान्नभेद।

—भेजना, क्रि स, संदिश (तु प अ), वाचिक दिष्ट प्रेष् (प्रे)।

—हर, सं पु, वार्ताहर, वार्तिक, सांदेशिक, दूत, आख्यायक।

संदेसा, स पु, दे 'संदेश' (१)।

संदेह, स पु (स) संशय, विचिकित्सा, द्वापर, विकल्प, द्वैध, आशंका, निश्चय निर्णय, अभाव २ प्रत्यय विश्वास, अभाव ५ अर्था लंकारभेद (सा)।

संदोह, स पु (स) समूह, निकर।

संधान, स पु (स न) अभिषव, संधानी, मद्यसज्जीकरण, संधिका २ चापे बाणयोजन ३ मदिराभेद ४ संघट्टन, संयोजन ५ अन्वे षण ६ संजीवन, दे ७ संधि' ८ अवदंश ९ कांजिक १० संधानिका।

संधि, स स्त्री (स पु) संयोग, संमिलन, संगम, रहति (स्त्री) २ संधि, पवन(न), संधिस्थानं ३ मित्रीकरण, राज्यरक्षाया गुण विशेष (राजनीति) ४ मैत्री, सख्य ५ वर्ण द्वयमेलन, संहिता (व्या) ६ रूपकांगभेद (ना) ७ दे 'सेंध' ८ युगसंधि ९ वय संधि।

—चोर, स पु (स) संधिहारक।

—च्छेद, स पु (स) संहितपदविश्लेषणम्।

—जीवक, स पु (स) विट, संचारक।

—बंधन, स पु (सं) स्नसा, स्नायुबंध।

—वेला, स स्त्री (स) अहोरात्रमिलनसमय, संधिकाल २ सायम्।

संध्या, स स्त्री (स) संधिकाल, अहोरात्र-संयोगसमय २ सायंकाल, दे ३ उपासना भेद ४ युगसंधि।

—कालिक, वि (स) संध्याकालीन, विकाल संधिकाल,-संबंधिन्।

—बल, स पु (स) निशाचर, राक्षस।

—राग, स पु (स) संध्या विकाल-विका लक -रक्तिमन् शोणिमन्-राग।

—वदन, स पु (स न) संध्योपासनम्।

सन्निकर्ष, स पु (स) सन्निधि, सन्निधान, सामीप्य २ इन्द्रियार्थसम्बन्ध।

सन्निपात, स पु (स) वातपित्तकफानां युग पद् विकार, विकारोत्पादक मिलितदोषत्रय २ समाहार, समूह ३ समवपात ४ संमु ड्डयन ५ संयोग, मिश्रणम्।

सन्निवेश, स पु (स) समुपवेश -शन २ उपवेश शन, आसित, निषदन ३ आ नि, धान, स्थापन ४ प्रतिबंधन, उत्खचन, प्रणि धान ५ गृह ६ समूह ७ रचना ८ संस्थान ९ प्रतिमादीनां स्थापनम्।

सन्निहित, वि (स) निकट-समीप, स्थ-वर्तिन् २ (समीपे) स्थापित।

सन्यास, स पु (स) आर्यजीवनस्य चतुर्था श्रम, प्रव्रज्या, वैराग्यं २ काम्यकर्मन्यास (गीता) ३ जंगमासी।

सन्यासी, स पु (स सिन्) चतुर्थाश्रमिन्, परि, मस्कर भाज्, श्रमण, भिक्षु, मस्करिन्, कमण्डिन, पाराशरिन्।

संपत्ति, स स्त्री (स) विभव, वैभव, ऐश्वर्य, अर्थ, धन, वित्त, श्री लक्ष्मी समृद्धि (स्त्री)

२ रिक्थ, दाय ३ सिद्धि (स्त्री), सफलता, पूर्णता ४ लाभ, प्राप्ति (स्त्री)।

संपद् दा, स स्त्री (स संपद्) दे 'संपत्ति'।

संपन्न, वि (स) धनाढ्य, धनिक, धनिन् दे २ सिद्ध, निष्पन्न, पूर्ण ३ सहित, युक्त ४ समृद्ध, धनधान्ययुत।

संपराय स पु (स) उत्तरकाल २ युद्ध ३ आपद् (स्त्री)।

संपर्क, स पु (स) संसर्ग, सम्बन्ध, साहचर्य २ मिश्रण दे ३ संयोग, मिलन ४ स्पर्श ५ योग सकलन (गणित)।

संपात, स पु (स) सहपतन २ समागम ३ संगमस्थान ४ संवृत्ति समापत्ति (स्त्री)।

संपादक, स पु (स), पत्र पत्रिकादीना सपादयितृ, सपादनकर २ साधक, निष्पादक ३ अनुष्ठातृ, कर्तृ, निर्वर्तयितृ।

संपादकता, स स्त्री (स) सम्पादकत्वम्।

संपादकीय, वि (स) १२ सम्पादक,-लिखित-सम्बन्धिन्।

संपादन, स पु (स न) मुद्रणार्थं सज्जीकरणं २ परिवर्तन, प्रसाधन, सज्जीकरण ३ साधन निष्पादन, समापन ४ करण, निर्वर्तन, अनुष्ठानम्।

संपादित, वि (स) मुद्रणार्थं सज्जीकृत २ निष्पादित, पूर्ति गमित-नीत, संपूरित, साधित ३ प्रस्तुत, सज्ज।

संपुट, स पु (स) समुद्गक, करडक, संपुट(टि)का, मञ्जूषा, दे 'डिब्बा' २ अञ्जलि, करद्वय पाणि, पु ३ *द्रोण, पत्रपुट, दे 'दोना'।

संपूर्ण, वि (स) व्याप्त, पूरित, पूर्ण, आकर्णभृत २ समग्र, समस्त, सकल, कृत्स्न ३ समाप्त, अवसित। स पु, सप्तस्वरयुतो राग (संगीत)।

संपूर्णत } क्रि व (स) साकल्येन, साम
संपूर्णतया, } स्त्येन २ सम्यक्, सुष्ठु(सब अव्य)

संपूर्णता, स स्त्री (स) समग्रता, कार्त्स्न्यं, साकल्य २ समाप्ति (स्त्री), अवसानम्।

संपृक्त, वि (स) मिश्र, मिश्रित २ संचित ३ स्पृष्ट ४ संसृष्ट, जातसम्पर्क।

सँपेरा, स पु (हि साँप) अ(आ)हितुडिक, गारुडिन्, जागुलिक, जांगलिक, व्यालग्राहिन्।

सँपोला, स पु (हि साँप) अहि-सर्प, शाव-शावक।

संप्रति, अव्य (स) अधुना, इदानीं २ अद्यत्वे, वर्तमाने।

संप्रतिपत्ति, स स्त्री (स) ऐकमत्य, सांमत्यं २ स्वीकृति (स्त्री) ३ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ४ प्रवेश ५ सम्यक् बोध ६ कार्यसिद्धि (स्त्री)।

संप्रदान, स पु (स न) दान, वितरणं, विश्राणन, प्रतिपादन २ कारकभेद, चतुर्थी (व्या) ३ दीक्षा, मन्त्रोपदेश ४ उपहार।

संप्रदाय, स पु (सं) मत, धर्म, शाखा-पथ मार्ग २ आम्नाय गुरुपरंपरागतसदुपदेश, गुरुमंत्र ३ अनुयायिमडल ४ प्रथा, रीति (स्त्री)।

संप्रदायी, वि (स यिन्) मतावलंबिन्, मतानुयायिन्।

संबंध, स पु (स न) संयोग, संश्लेष, सम्मिलन २ सम्पर्क, समर्गः ३ बन्धुता, सगोत्रता, सजातीयता, ज्ञातित्व ४ प्रगाढसख्य ५ षष्ठी, विभक्तिभेद (व्या)।

संबंधक, वि (स)-सम्बन्धिन्, विषयक २ उपयुक्त, योग्य। स पु (स) जन्मविवाह सख्यादिजनित सम्बन्ध।

संबंधी, वि (सं धिन्) सबन्धविशिष्ट २ संयुक्त, संसृष्ट ३ प्रसंगगत। सं पु (स) बंधु, बांधव, सगोत्र, ज्ञाति (स्त्री) २ दे 'समधी'।

संबद्ध, वि (स) संयुक्त, संश्लिष्ट, संलग्न २ सम्बन्धविशिष्ट ३ (अ-) विहित, संवृत ४ सग्रथित, सन्नियमित।

संबल, स पु (स पु न) पाथेयं, संबल-लम्।

संबाध, वि (स) संकीर्ण, संकुचित २ संकुल, परिपूर्ण। सं पु (स) विघ्न, बाध, बाधा २ जन-समुदाय-समूह सम्मर्द ओर।

संबोधन, स पु (स न) आभिमुख्यविधानं, आमंत्रणं, सम्बुद्धि (स्त्री), आकारण, आह्वानं २ आह्वानार्थक शब्दरूपभेद (व्या, उदा !) ३ प्रबोधन निद्रात उत्थापन ४ आख्यापनं, ज्ञापन ५ आकाशभाषितं (नाटक)।

सँभलना, क्रि अ (हि सम्भालना) उत्तभ्-उपस्तम् धृ भू (सब कर्म) २ निश्चलं-दृढं स्था (भ्वा प अ) ३ सावधान-अवहित जागरूक (वि) भू ४ पादस्खलपरागवादिभ्यो रक्ष्-मुच् (कर्म) ५ उत्कर्ष या (अ प अ.),

अभिवृध् (भ्वा आ से) ६ पुन स्वास्थ्य लभ् (भ्वा आ अ), प्रकृति आपद (दि आ अ)।

सभव, स पु (स) उत्पत्ति (स्त्री), जन्मन् (न) २ मेल, समागम ३ शक्यता सम्भवनीयता। वि (स >) शक्य, सम्भवनीय, सम्भाव्य २ साध्य, सम्पाद्य।

सभवत, क्रि वि (स) कदाचित् स्यात् सम्भाव्यते, शक्यते (विधिलिङ् से भी)।

संभार, स पु (स) सग्रहण, सञ्चयन समाहरण ३ सामग्री, आवश्यकवस्तूनि (न बहु) ३ सम्पत्ति (स्त्री) ४ राशि चय ५ भरणपोषणम्।

सँभाल, स स्त्री (सं सभार) पोषण, भरण, सवर्द्धन, २ रक्षण, त्राण, पालन ३ पर्यवेक्षणं, अवेक्षाक्षण, अधिष्ठानं, कार्यनिर्वाहणम्।

सँभालना, क्रि स (हिं सँभाल) उत्-उप-स स्तम (क्र प से , प्रे), आ-अव-लम्ब् (भ्वा आ से), स,धृ (भ्वा प अ , चु), २ ग्रह् (क्र प से), धृ विरम् (प्रे) रुध् (रु उ अ) (पादप्रहारपराजयादिभ्यो) रक्ष (भ्वा प से) त्रै (भ्वा आ अ) ३ सवृध (चु), पुष (") ४ उपकृ साहाय्य विधा (जु उ अ) ५ अधिष्ठा (भ्वा प अ), निवह् सम्पद् (प्रे) ६ मनोवेग नियम् (भ्वा प अ) ७ पर्यवेक्ष (भ्वा आ से) ८ प्रोत्सह समाश्वस (प्रे)। स पु , आ अव,लम्ब लबन, धारणं, उत्तम्भन २ ग्रहण ३ रक्षणं, त्राण ४ सवर्धन, पोषण ५ साहाय्यदानं, उपकार ६ अधिष्ठान, निर्वाहण ७ पर्यवेक्षण ८ प्रोत्साहन इ ।

सँभालने योग्य, वि धारयितव्य, उत्तम्भनीय, रक्ष्य, त्रातव्य, पोष्य, पर्यवेक्षणीय, इ ।

सँभालनेवाला, सं पुं, उत्तम्भक, धारक, आधार , आश्रय , आलम्बनं, पोषक , सवर्द्धक , रक्षक , प्रोत्साहक इ ।

सँभाला हुआ, वि , सस्तभित, धृत, धारित, रक्षित, सवर्धित, उपकृत, पर्यवेक्षित, प्रोत्साहित इ ।

सभावना, सं स्त्री (सं) शक्यता, सम्भवनीयता, सम्भाव्यता, सम्भव २ आदर, सत्कार ३ प्रतिष्ठा, मान ४ कल्पना, अनुमानम्।

सभावित, वि (स) दे 'सभव' वि २ कल्पित, उद्भावित ३ आदृत सम्मानित।

सभाव्य, वि (स) दे 'सभव' वि ।

सभाषण, स पु (स) आ स,लाप , वार्तालाप , स,कथा वाद भाषा २ प्रवचन, व्याख्यानम्।

सभूत, वि (सं) (सह-) जात उत्पन्न उद्भूत।

सभूति, स स्त्री (स) उद्भव, उत्पत्ति (स्त्री) २ विभूति वृद्धि (स्त्री) ३ क्षमता।

सभोग, स पु (स) रति (स्त्री), मैथुन दे २ सम्बन्ध ,-उपयोग -व्यवहार -प्रयोग ३ सयोगशृगार (सा)।

सभ्रम, स पु (स) याकुलता, वैकल्य, व्यग्रता २ त्वरा रि (स्त्री) रभस , रभस (न), आ स, वेग ३ आदर मान ४ भ्रांति (स्त्री) भ्रम , स्खलितम्।

सभ्रात, वि (स) व्याकुल, व्यग्र, उद्विग्न २ प्रतिष्ठित, संमानित।

—जन, स पुं (स) सम्मान्य पूज्य,-जन मनुष्य ।

—मना, वि (स नस) वि-स, भ्रान्त क्षुब्ध, आकुल, व्याकुल।

समत, वि (स) सप्रतिपन्न, २ समादृत, समानित।

समति, स स्त्री (स) समन, ऐकमत्य, मतैक्य, सांमत्य, ऐक्य २ अनुमति (स्त्री)-न, अनुज्ञा, अनुमोदन ३ मत ति (स्त्री), अभिप्राय , आशय , बुद्धि (स्त्री)।

समन, सं पु (अ सम्मन) (धर्माधिकरणि) आह्वानपत्रम्।

समर्द, स पु (स) युद्ध २ विवाद ३ जन समुदाय -सङ्कुलम्।

समान, सं पु (स) सम्, आदर सत्कार , पूजा, अर्हणा, अभ्यर्चन, सभावना, प्रतिष्ठा, गौरव, अर्चा।

—करना, क्रि स , समन् (प्रे) आदृ (तु आ अ), सद् पूज (चु), सभू (प्रे)।

संमानित, वि (स) समादृत, सत्कृत, पूजित, गौरव ित, अभ्यर्चित, पूज्य, उपास्य, नमस्य, स माय २ प्रधान, मुख्य, अग्रिय।

समिलन, सं पु (सं न) सगम , समागम , सग , सयोग , सगत ति (स्त्री)।

समिलित, वि (स) समिश्र, मिश्रित, सयुक्त, सहत सयुक्त समवेत।

समिश्रण, सं पु (स न) सपर्क, ससर्ग सयोग समिश्रण २ मिश्र मिश्र द्रव्य, सनि पात सकर नानाद्रव्यसमुदाय।

सम्मुख, क्रि वि (स सम्मुख से) अभिमुखत पुर, पुरत, पुरस्तात समक्ष साक्षात, प्रत्यक्षम्।

सम्मेलन, स पु (स न) समाज, सभा, परिषद् (स्त्री) २ वृहदधिवेशन ३ सम्मिलन, सवाद ४ दे 'सम्मिलन'।

सयत, वि (स) अव निरुद्ध रुद्ध, नियत, निगृहीत २ निग्र न-बद्ध, नियमित, पिनद्ध ३ वश नीत वशीकृत, दमित ४ क्रम नियम, बद्ध व्यवस्थित ५ मित, समयाद सावधि ६ जितेन्द्रिय, आत्म न्द्रिय, नियमित्।

—मना, वि (स नस) सयमशील, सयत, आत्मनिग्रहिन।

—प्राण वि (सं) प्राणायामिन, सयतश्वास।

—मुख, वि (स) मित भाष्य, भाषि वादिन्।

सयम, सं पु (स) इन्द्रिय जय निग्रह, दम, आत्मनियत्रण २ निग्रह, निरोध, नियत्रण-णा ३ पथ्यसेवन, मिताशन ४ परि मितताश्च मर्यादापालन ५ विराम, निर्मोचन, सवरण ६ बधनम्।

सयमी, वि (स मिन) इन्द्रिय-आत्म निग्र हिन, सयत जितेन्द्रिय, दमिन्, सयमशील, योगिन् २ मित अन्न-सयत आहार योगिन।

सयुक्त, वि (स) समवेत, सहत, संलग्न, संश्लिष्ट २ सहित अन्वित, युक्त ३ सबद्ध, सपृक्त ४ समिश्रित, समिलित।

सयोग, सं पु (स) दे 'समिलन २ संलेप, समिश्रण ३ सभागशृंगार (सा) ४ सबध, सपर्क ५ अनाज्यसननसंलेप ६ योग, सकलन (गणित) ७ दैव, दैव, घटना गति (स्त्री)योग।

—से, मु, दैवात् दैव-याणात्-वशात, अक स्मात्।

सयोगी, सं पु (सं गिन्) गृहस्थसाधु २ रतियुत।

संयोजक, वि (सं) समन्वय, संश्लेषक।

स पुं (स न) १२, शब्द वाक्य,योजक पदम्।

सरक्षक स पु (स) आश्रयदातृ, पुरस्कर्तृ, २ गोपक, प्रतिपालक, भरणकृद, संवर्द्धक सरक्षित ३ त्रातृ गोप्तृ, पालक, रक्षि ५ सहायक, उपकारक।

सरक्षण, स पु (स न) गोपन रक्षा, त्राणं २ अवेक्षा, पर्यवेक्षण ३ अधिकार ४ रोध, प्रतिबध।

सलग्न, वि (सं) सयुक्त, सहत, संश्लिष्ट, सहित, समिलित, सबद्ध।

सलाप, स पुं (स) वार्तालाप, सवाद।

सवत्, सं पु (सं अव्य) वर्ष पै, अब्द, वत्स, परि,वत्सर २ विक्रमाब्द ३ शाक।

संवत्सर, सं पु (सं) दे 'सवत्'।

सवरण, स पु (स न) गोपन, प्रच्छादन, निगूहनम्।

सँवरना, क्रि अ (स सवर्णन>) व 'सँवा रना' के कर्म, के रूप।

सवाद, सं पुं (स) दे 'समाचार' (१)। २ वृत्त वृत्तांत, समाचार ३ कथा, प्रसंग ४ व्यवहार, अभियोग ५ ऐकमत्य, सम्मति (स्त्री) ६ सदेश, दे ७ स्वीकृति, अनुमति (स्त्री)।

—दाता, स पु (सं तृ) *वृत्तप्रेषक वृत्तांत लेखक।

सवादी, वि (सं दिन्) सलापिन, सभाषिन् २ सदृश, समान, तुल्य। स पु (सं) संगीते स्वरभेद।

सँवारना, क्रि स (सं सवर्णन>) अलकृ, परिष्कृ, भूष मण्ड् (चु), प्रसाध (प्रे)। २ संस्कृ सं-, शुध (प्रे) ३ व्यवस्था (प्रे), नियम (प्र), रच (चु) ४ कार्य सम्यक् सपद् निष्पद् (प्रे)। सं पु, अल परिष्,करणं, मर्दनं प्रसाधन २ संस्कार, शोधनं ३ व्यवस्थापनं ४ सम्यक् संपादनं।

सँवारने योग्य, वि, अलंकार्य, परिष्करणीय, भूषयितव्य, संस्कार्य, व्यवस्थाप्य।

सँवारनेवाला, सं पुं, अलं परिष्,कर्तृ-कारक, प्रसाधक, मर्दयितृ २ सशोधक, संस्कर्तृ ३ व्यवस्थापक, सुसंपादक।

सँवारा हुआ, वि, अल-परिष्,कृत, मण्डित,

प्रसाधित २ मस्कृत, म ,शोधित ३ व्यवस्थापित ४ सुमपादित ।

सवाहक, स पु (म) अग शरीर ,मर्दक मवाहक । वि (स) चाल्क , चाल्यितृ ।

संवेदना, स स्त्री (स) मवेदन, अनुभव , सुखदु खादि प्रतीति (स्त्री)।

सशय, म पु (म) सदेह, दे ।

सशयात्मा, स पु (म-त्मन्) विश्वासहीन, सदेहशील, श्रद्धाशून्य, मशयालु ।

सशयापन्न, वि (स) सदिग्ध, अनिश्चित ।

संशयालु, वि (म) दे 'सशयात्मा' ।

सशोधक, म पु (स) मशोधयितृ, प्रति, समाधातृ २ मस्कर्तृ, मम्कारक, ३ निस्तारक (ऋणादि)।

सशोधन, म पु (सं न) पावन, निर्मली करण २ दोषनिवारण, त्रुटिनिष्कासन, मस्कार, प्रति,समाधान ३ निस्तारण (ऋणादि)।

—करना, क्रि स, स-परि शुध् (प्रे), पू (क्र उ से) २ दोषान निर्ह् (प्रे), मस्कृ ३ निस्तृ (प्रे)।

सशोधित, वि (स) सुपूत, मम्यक निर्मलीकृत २ सस्कृत, परशोधित ३ निस्तारित ।

संसर्ग, स पु (म) मपर्क , मबध २ साहचर्य, मगति (स्त्री) ३ मयोग समिलन ४ सुपरिचय , अभ्यन्तरत्वम् ।

ससार, म पु (म) सृष्टि (स्त्री), भुवन, विश्व, जगत् (न)-ती, चराचर, मसृति (स्त्री) २ पुनर्गमन (न), प्रेत्यभाव, ३ भू,मर्त्य इह-लोक ४ प्रपच , जगज्जाल ५ सततपरिवर्तन ६ गार्हस्थ्यम् ।

—चक्र, स पु (म न) १ २, दे 'ससार' (२, ४) ३ दशापरिवर्तनम् ।

ससारी, वि (स रिन्) लौकिक, सासारिक २ ऐहिक, प्रापचिक ३ व्यवहारकुशल ४ असुक्तात्मन् । स पु (म) प्राणिन् २ जीवात्मन ।

ससृति, म स्त्री (सं) दे 'ससार' (१ २)।

ससृष्ट, वि (सं) मिश्रित, मश्लिष्ट २ संबद्ध, सलग्न ।

ससृष्टि, म स्त्री (स) समिश्रण, मश्लेष २ सबध , मपर्क, ३ सुपरिचय , सौहार्द ४ सग्रहण, मचयन ५ अलकारमिश्रणभेद (सा)।

सस्करण, म पु (म न) ग्रन्थमुद्रणवार , आवृत्ति (स्त्री) २ मशोधन ३ परिष्करणम् ।

सस्कार म पु (म) परिष्कार, शोधन, मस्करण २ परिष्कार-करण, परिमार्जन ३ शौच, शरीरशुद्धि (स्त्री) ४ मानसी शिक्षा ५ शिक्षा सगत्यादीना प्रभाव ६ पूर्वजन्मवासना ७ पावन, शुद्धि (स्त्री) ८ धार्मिककृत्यभेद (दे 'षोडशसस्कार') २ अत्येष्टिक्रिया, दाहकर्मन् (न)।

सस्कृत, वि (म) म परि, शोधित, निर्मलीकृत २ परिष्कृत, परिमार्जित, परिमृष्ट ३ पाचित, सिद्ध, पक्व ४ कृतसस्कार, सस्कारपूत। म स्त्री (म न), देववाणी, सुर गर् (स्त्री), आर्याणा भाषाविशेष ।

सस्कृति, म स्त्री (स) सभ्यता, आचार विचारा (बहु) २ सत्क्रिया, सस्कार, शुद्धि (स्त्री) ३ परिष्कार ।

सस्था, म स्त्री (म) मडल, दल, गण २ सभा, समाज , परिषद् (स्त्री)।

सस्थागार, म पु (म पुं न) सभाभवनम् २ ममद्भवनम् ।

सस्थान, स पु (म न) चतुष्पथ , चतुष्क २ आकृति (स्त्री), आकार ३ रचना ४ सन्निवेश ५ स्थिति (स्त्री), दशा ६ नाश ७ मृत्यु ८ अयोजन, व्यवस्था (९ १०), दे 'ढाँचा' तथा 'साख' ।

सस्थापक, सं पु (सं) प्रवर्तक , प्रवर्तयितृ, आरभक , प्रतिष्ठापक ।

सस्थापन, म पु (म) प्रवर्तन, प्रारभण, प्रतिष्ठापन, प्रारभ २ निर्माण ३ दृढीकरणम् ।

सस्थापित, वि (स) प्रवर्तित, प्रतिष्ठापित, प्रारब्ध २ निर्मित ३ दृढीकृत ।

सस्पृष्ट, वि (म) स्पृष्ट, छुप्त, परामृष्ट २ संपृक्त, जातसपर्क ३ सयुक्त, मबद्ध ।

सस्फुट, वि (म) अपावृत, व्यावृत, उद्घटित २ विकसित, उन्निद्र, स्फुटित,उन्मीलित ।

सस्मरण, स पु (म न) मस्मृति (स्त्री), सम्यक् स्मरण अनुचिन्तन अनुबोधन २ स्मारक, स्मारकघटना ३ सस्कारजं ज्ञानम् ।

सहत, वि (स) घन, दृढ़, निविड़, अनंतर २ सयुक्त, सबद्ध ३ संमिलित, समिश्रित ४ आहत ५ सगृहीत।

सहति, सं स्त्री (स) संगति (स्त्री), सन्निध २ राशि, चय ३ गण, समूह ४ घनत्व, निविडता ५ सधि, संयोग।

संहार, स पु (स) हिंसा-स्तन हनन, हत्या, वध, घात २ वि, नाश ध्वंस ३ (मुक्ता रूप्य) संहरण-संकोचन, संहति (स्त्री), ४ सग्रह, संकोच ५ संक्षेप, मार ६ समाप्ति (स्त्री) अत ७ प्रलय, कल्पात।

—करना, क्रि स, पूर्वपदस्थितिवृद्ध (प्रे) २ वि, नाश ध्वंस (प्रे)।

संहारक, स पु (स) संहर्ता, नाशक २ सग्रहीता, संक्षेप्तृ।

संहिता स स्त्री (स) संधि, वर्णसंनिकर्ष (व्या) २ संयोग, मिलन ३ धर्मसंहिता, स्मृति (स्त्री), धर्मनिर्णीतिका ४ वेदाना मंत्रभाग।

सईंयाँ, स पु (स स्वामिन्) पति २ कांत ३ ईश्वर।

सइयाँ, सं स्त्री (हिं सखिया) दे 'सखी'।

सकता, स पु (अ-न) सन्यास, मूर्छा (रोगभेद) २ यति (स्त्री), विराम (छन्द)।

सकना, क्रि अ (स शक्न) शक (स्वा प अ), प्रभू (भ्वा प से), क्षम-समर्थ (वि) भू। (यह क्रिया सदा दूसरी क्रियाओं के साथ ही प्रयुक्त होती है)।

सकपकाना, क्रि अ (अनु सकपक) विस्म (भ्वा आ अ), विस्मयाकुलीभू। २ अभिशक् (भ्वा आ से) दोलायते (ना धा) ३ लज्ज (तु आ से), त्रप (भ्वा आ से)।

सकर्मक, वि (स) कर्मविशिष्ट (व्या)।

सकल, वि (स) दे 'सब'।

सकाम, वि (स) कामविशिष्ट, कामना विशिष्ट २ लब्धकाम, पूर्णमनोरथ ३ कामुक, कामिन।

सकारण, वि (सं) सहेतुक, कारणविशिष्ट।

सकुचना, क्रि अ (स सकोचन) व्रीड (दि प से), ह्री (जु प अ), लज्ज (तु आ से) २ सकुच्-सह (कम), मुद्रित-सकुचित (वि) भू।

सकुचाना, क्रि अ (स सकोचन) दे 'सकुचना'। क्रि स, व 'सकुचना' के प्रे रूप।

सकुचीला, वि (स सकोच >) सकोचशील दे 'लज्जाशील'।

सकूनत, स स्त्री (अ) नि,वास, निकेतनं, नि,वासस्थानम्।

सकृत्, अव्य (स) एकवार २ सदा ३ सह।

सकोड़ना, क्रि स, दे 'सिकोड़ना'।

सकोरा, स पु (हिं कसोरा, दे)।

सखरा, स पु } दे 'रसोई कच्ची'।
सखरी, स स्त्री }

सखा, स पु (स सखि) मित्र, सुहृद्, २ सह, चारिन चर, सगिन् ३ नायकसहचर (सा)।

सखावत, स स्त्री (अ) वदान्यता २ औदार्यम्।

सखित्व, स पु (स न) सख्यं, मैत्री।

सखी, स स्त्री (स) सहचरी, आली, लि (स्त्री), वयस्या, आलीची सगिनी २ नायिकाया सहचरी (सा)।

सखी, वि (अ) दानशील, वदान्य।

सखुन, स पु (फा) वार्तालाप, सवाद २ काव्य, कविता ३ वचनम्।

—तकिया, स पु (फा) दे 'तकिया कलाम'

—दाँ, सं पु (फा) काव्यमर्मज्ञ, रसिक २ वाक्पटु ३ कवि।

—दानी, स स्त्री (फा) काव्यमर्मज्ञता, रसिकता २ वाक्पाटव ३ काव्यकला।

—दानास, स पु (फा) दे 'सखुनदाँ'।

—साज़, सं पु (फा) कवि २ दे 'गप्पी'।

सख्त, वि (फा) तीव्रम, कर्कश, कठोर, घन, दृढसधि, सहत २ दुष्कर, कठिन, दुस्साध्य, निर्दय, निष्करुण ४ चड, परुष, कठोर, दुस्सह ५ कुशील, दुष्प्रकृति ६ कृपण ७ अतिशय, अत्यधिक। क्रि वि, परुष, निर्दय, तीव्रम्।

—सुस्त कहना, (मु) भर्त्स् (चु आ से), आक्रुश् (भ्वा प अ)।

सख्ती, सं स्त्री (फा) कर्कशता, तीव्रता, घनता २ दुष्करता ३ निर्दयता ४ चडता ५ कुशीलता ६ आधिक्यम्।

—से, क्रि वि, चड, घोर २ निर्दयम्।
—करना, मु, बल प्रयुन् (र आ अ) निदय व्यवहृ (भ्वा प अ)।
सग्य, स पु (स न) सौहार्द, मात्सपदीन, मित्रता, दे।
सगध, वि (स) गध-वाम,-वद-युक्त, सुवास, गधित, वासित २ सुगधि, सुगधित, सुगन्ध वत्, सुवासित ३ समान-तुल्य,-गध ४ गर्वित।
सग, स पु (फ़ा) श्वान, कुक्कुर।
सगण, वि (स) सदल, ससैन्य। स पु (स) शिव २ छद शास्त्रीयगणभेद अन्तगुरुगण।
सगबग, वि (अनु) अति क्लिन्न आर्द्र दे 'लथपथ' २ आर्द्री-द्रवी,-भूत ३ परिपूर्ण।
सगर्व, वि (स) गर्वित, दृप्त। क्रि वि, सगर्व, साभिमानम्।
सगा, वि (स स्वक>) सोदर, सहोदर सोदर्य, सयोनि, सगर्भ २ स्वकुलज। स पु, सकुल्य, सगोत्र, बधु।
—भाई, स पु, सोदर, सहोदर, साम्र्य।
सगापन, स पु (हिं सगा) सोदरता, सग र्भता २ सबधनैकट्यम्।
सगाई, स स्त्री (हिं सगा) दे 'मगनी'।
सगुण, वि (स) गुणिन्, गुणान्वित। स पु (स) साकारेश्वर २ अवतारपूजक भक्त सम्प्रदाय।
सगुन, स पु., दे 'शकुन'।
सगोती, स पु (स सगोत्र) एक सम गोत्र २ बधु, ज्ञाति (स्त्री)।
सगोत्र, वि (स) सबधिन, सनाभि, सजा तीय, एककुल,-गोत्र। (सं न) कुलम्।
सघन, वि (स) निबिड, सांद्र, घन, अनन्तर, गाढ २ स्थूल, सहत।
सच, वि (सं सत्य) यथार्थ, अवितथ, दे 'सत्य'। स पु, सत्य, तथ्य, अवितथम्। क्रि वि, वस्तुत यथार्थत (दोनों अव्य)।
—बोलना, क्रि स, सत्य वद् (भ्वा प से) ब्रू (अ उ)।
—मुच, क्रि वि (हिं अनु) तत्त्वत, वस्तुत, सत्य, सत्यत २ अवश्य, निःसंदिग्धम्।
सचराचर, स पु (सं) चराचर-स्थावर जगम-जगच्चेतन सजीवनिर्जीव पदार्था (पु बहु०)।
सचल, वि (स) चल, चर, जगम, गति शील २ चेतन, प्राणिन्।
सचाई, स स्त्री (हिं सच) सत्यता, अवित थता २ याथार्थ्य, वास्तविकता।
सचान, स पुं (स सचान अथवा सं मान > ?) श्येन, पत्रिन शशादन, दे बाज'।
सचित, वि (स) चिंता पर मग्न, उद्विग्न, व्याकुल।
सचिव, स पु (स) मित्र, सखि (पु) २ मंत्रिन्, अमात्य ३ सहाय-यक।
सचेत, वि, दे 'सचेतन'।
सचेतन, वि (स) चेतनायुत, ससज्ञ, चेतनो पपन्न २ सावधान ३ चतुर।
सचेष्ट, वि (स) उद्योगिन, उत्साहिन, सोत्साह, सोद्योग, उत्साह-उद्योग, शील २ चेष्ट मान, कर्मादियुक्त।
सच्चा, वि (स सत्य) सत्य-यथार्थ, भाषिन् वादिन् २ सत्य, यथार्थ, वास्तविक ३ वि, शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ, निश्छन्न-त्य ४ यथा योग्य, यथोचित।
सच्चाई, स स्त्री, दे 'सचाई'।
सच्चिदानद, स पु (स) नित्यज्ञानसुखस्व रूप ब्रह्मन् (न) परमेश्वर।
सज, स स्त्री (स सज्जा) अलक्रिया, परिष्क्रिया प्रसाधन, मण्डन २ रूप, आकृति (स्त्री) ३ शोभा, छवि (स्त्री)।
—धज, बज, स स्त्री (हिं अनु) दे 'सज' (१३)। ४ परिकल्पन, सज्जा, सन्नद्धता।
सजग, वि (सं स+हिं जागना) जागरूक, अतद्रित, सावधान।
सजन, स पु (सं सज्जन) आर्य, भद्र, सत्पुरुष २ पति, भर्तृ ३ उपपति, जार ४ दयित, कांत।
सजनपद, वि (सं) एक-समान,-देशज दशीय-देशवासिन्।
सजना, क्रि अ (सं सज्जन) सज्ज (भ्वा उ स) सज्ज परिष्कृत सिद्ध (वि) भू २ आत्मानं मण्डभूष् (चु) अलंकृ ३ राज् द्युत् (भ्वा आ से)।

सजनी, स स्त्री (हिं सजन) सखी, सहचरी २ उपपत्नी, जारिणी, भुजिष्या ३ कान्ता, प्रिया, दयिता ।

सजल, वि (स) उक्त, उन्न, तिमित, आर्द्र, क्लिन्न, जल्युत सनीर २ सवाष्प, सास्र, अश्रुपूर्ण (नेत्र) ।

सज़ा, स स्त्री (फा) दे 'दण्ड' ।

—याफ्ता, वि (स) दण्डित, भुक्तदण्ड २ अपराधशील पुराणपातकिन् ।

—वार, वि (फा) दण्डनीय, दण्ड्य ।

सजाति / सजातीय } वि (स) सगोत्र, गोत्रज, सवर्ण, द्वय २ तुल्य, सदृश ।

सजाना, क्रि स (हिं सजना) सज्जीकृ, सज्ज्-परिकल्प , (प्रे) २ व्यवस्था (प्रे), क्रमश निविश् (प्रे) ३ मण्डू भूष् (चु), अलङ्कृ । दे 'सवारना' ।

सजावट, स स्त्री (हिं सजाना) दे 'सज' (१) २ शोभा, श्री (स्त्री) ३ दे 'सजधज' (४) ।

सजावल, स पु (तु सजावुल) *शुल्क, करसंग्राहक २ राजकर्मचारिन् ३ दे 'सिपाही' ।

सजा हुआ, वि , सज्ज, सिद्ध, सनद्ध २ भूषित ३ शोभमान ।

सजीला, वि (हिं सजना) सुवेशमानिन्, वेशाभिमानिन्, अलङ्कृत २ छविमत्, मनोहर ।

सजीव, वि (स) प्राणिन्, प्राणधारिन्, चेतन, चैतन्यवत् २ क्षिप्र, लघु ३ ओजस्विन् ।

सजीवता, स स्त्री (स) प्राणवत्ता, चैतन्य २ लाघव, क्षिप्रता ३ ओजस्विता ।

सजीवन, स पु , दे 'संजीवनी', स स्त्री १ १,२ ।

—बूटी, स स्त्री रुद्रवन्ती (?) ।

—मूर,-मूल, स पु 'सजीवनी बूटी' ।

सज्जन, स पु (स) आर्य , भद्र , सत्पुरुष , सु-साधु -जन , महानुभाव , महाशय २ कुलीन , अभिजात । वि , भद्र,-सद्वृत्त २ महाकुल, कुलीन ।

सज्जनता, स स्त्री (स) भद्रता-त्वं, आर्यता-त्व, सुशीलता, सौजन्य, सुजनता-त्व २ कुलीनता, आभिजात्यम् ।

सज्जित, वि (स) अलङ्कृत, भूषित, मण्डित, परिष्कृत २ सन्नद्ध, सिद्ध, सज्ज, उद्यत ।

सज्जी, स स्त्री (स सर्जी) सर्जि (स्त्री), सर्जिका, स्वर्जिक , स्वर्जिन् ।

सटक, स स्त्री (अनु सट) मृदुयष्टि (स्त्री) २ धूमपानयन्त्रस्य नम्यनाली ३ निभृता पसार ।

सटकना, क्रि अ , निभृत अपया (अनु सट) (अ प अ), शनै अपसृ (भ्वा प अ) ।

सटना, क्रि अ (स सं+स्था>) लग् (भ्वा प से), सम्पृच् (रु प अ), लग्न-संसृष्ट-सन्निहित (वि) भू २ श्लिष् (दि प अ) सञ्ज (भ्वा प अ) ।

सटपटाना, क्रि अ (अनु) सटपटायते (ना धा), सटपटध्वनि तन् (दि आ से) २ अज्ञान पर्याकुल चंचल (वि) भू दे 'व्याकुल होना' ।

सटपटाया हुआ, वि , सक्षुब्ध, सम्मूढ, अशांत, व्याकुल, सम्भ्रान्त, अस्वस्थ ।

सटरपटर, वि (अनु) क्षुद्र, तुच्छ, साधारण । स स्त्री , व्यर्थकार्यं २ दुष्करकृत्यम् ।

सटाना, क्रि स , व 'सटना' के प्रे रूप ।

सटा हुआ, (वि), लग्न, संसृष्ट, सन्निहित, २ सक्त, श्लिष्ट ।

सटीक, वि (स) सभाष्य, व्याख्यान्वित ।

सट्टा, स पु (स सार्थ>) समयपत्र , दे 'इकरारनामा' २ मदिराफलव्यवहार , सन्ना ।

सट्टा-बट्टा, स पु (हिं सटना+अनु) उपताप ,कूट २,-कूट,-युक्ति -उपाय २ संगम , मेल ।

सठियाना, क्रि अ (हिं साठ) षष्टिवर्ष (वि) भू २ ज्या (क्र प अ), जॄ (दि क्र प से) ३ वार्धक्यन बुद्धि क्षि (कर्म) नश् (दि प से) ।

सठियाया हुआ, वि , षष्टिवर्ष २ जरठ, स्थविर २ जरया मंदमति-नष्टबुद्धि ।

सड़क, स स्त्री (अ शरक) अध्वन्, पथिन्, राजपथ,-पथ , मार्ग, दे ।

सड़न, स स्त्री (हिं सड़ना) गलन, विदवर्ण, विलयनम्, क्षरणम् ।

सड़ना, क्रि अ (स शरण>) विशृ (कर्म), जॄ (दि प से), विगल (भ्वा प से) २ पूय (भ्वा आ से), पूतीभू ३ फेनायते (ना धा), उत्सिच् (कर्म), अत क्षुभ (दि प से) (=खमीर आना) ४ दुर्गत (वि) स्था (भ्वा प अ), अवसद् (भ्वा प अ)। स पु, जीर्णि (स्त्री), विगलन, पूयन पूति (स्त्री), अवसाद, दुर्गति (स्त्री), अभिषव अनुक्षोभ।

सड़सठ, स पु तथा वि, दे सतसठ'।

सड़ाक, स स्त्री (अनु सड) त्वरा २ कशा शब्द।

सड़ायँध, स स्त्री (हिं सड़ना+गध>) दुर्गंध, पूति (स्त्री), पूतिगंध।

सड़ा हुआ, वि, जीर्ण, विशीर्ण, दूषित, विगलित, पूति, पूतिगंध, पूतिक, उत्सिक्त, सफेन, दुर्गत, अवसन्न।

सड़ियल, वि (हिं सड़ना) पूति, पूतिगंध, कलुष २ जीर्ण, शीर्ण ३ क्षुद्र, तुच्छ ४ निरर्थक, व्यर्थ।

सद्, सं पु (स) ऋषि २ सज्जन। (सन) मज्जन (न) २ भद्रभू। वि (सं) सत्य, यथार्थ २ साधु, श्रेष्ठ ३ धीर ४ शाश्वत, नित्य ५ प्राज्ञ, पंडित, ६ पूज्य ७ पवित्र ४ उत्तम, उत्कृष्ट। सत्कर्म आदि, दे आगे।

सत[१], स पु (स सत्त्व) तत्त्व, सार २ निष्कर्ष, भाव ३ कर्दम (न), सामर्थ्यम्।

सत[२], वि (सं सप्तन्) दे 'सात'।

—मजिला, वि (हिं +अ) सप्त, भूमिक भौम (महल आदि)।

—मासा, स पु., सप्तमास्य (शिशु) २ रीति विशेष, *साप्तमासिकम्।

—रगा, वि., सप्तवर्णरग।

सतगुरु, स पु (म सत+गुरु) सद्गुरु, सच्छिक्षक २ परमेश्वर।

सतजुग, स पु, दे 'सत्ययुग'।

सतत, अव्य (म सतत) निरन्तर, सदा, सर्वदा, नित्यम्।

—गति, सं पुं (म) पवन वायु।

—ज्वर, सं पु (स) स्यादिस्थास्नु-नित्य जीर्ण-ज्वर-ताप।

सतर, सं स्त्री (अ) रेखा २ पंक्ति (स्त्री)।

सतरह, वि (सं सप्तदशन्) स पु, उक्ता सख्या तद्बोधकौ अकौ (१७) च।

सतरहवाँ, वि (हिं सतरह) सप्तदश शो श (पुं स्त्री न)।

सतर्क, वि (स) सहेतुक, सयुक्तिक, उपपत्तिमत् २ प्रमादरहित, जागरूक, सावधान।

सतर्कता, स स्त्री (स) जागरूकता, सावधानता।

सतलज, स स्त्री, दे 'शतद्रु'।

सतलड़ा, स पु (हिं सात+लड) सप्तसूत्रो हार २ सप्तगुणा माला। वि, सप्त-सूत्रगुण युक्त।

सतवती, वि स्त्री (स सत्यवती>) शुचरिता, पतिव्रता, पतिपरायणा, सती, साध्वी।

सतसई, } स स्त्री (स सप्तशतिका)
सतसैया, } शतसप्तकपद्यात्मक सग्रह २ श्री विहारीलालरचितो हिंदीभाषाया काव्य विशेष।

सतसठ, वि [स सप्तषष्टि (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सख्या तद्बोधकाकौ (६७) च।

सतह, स स्त्री (अ) तल, पृष्ठ, उपरि-पृष्ठ, भाग।

सतहत्तर, वि [स सप्तसप्तति (नित्य स्त्री)] सं पु, उक्ता सख्या तद्बोधकाकौ (७७) च।

सताना, क्रि स (स सतापन) सं परि-तप् (प्रे), पीड (चु), दुःखयति (ना धा.), क्लिश (क्र प से) २ खिद् आयस् उद्विज् (प्रे)। स पु, सपरि-तापन, पीडन, क्लेशन अर्दन, आयासन, उद्वेजन, बाधनम्।

सताने योग्य, वि, सताप्य, पीडनीय, उद्वेजनीय।

सताने वाला, स पु., सपरि-तापक पीडक, क्लेश-दुःख-कर आवह, आयासक, खेदकर।

सताया हुआ, वि, पीडित, सतापित, आयासित उद्वेजित, बाधित, इ।

सतालू, स पु, दे 'शफ़तालू'।

सतावर, स स्त्री (स शतावरी) शतमूली, नारायणी, वरी, बहुसुता।

सतासी, वि [स सप्ताशीति (नित्य स्त्री)] सं पु, उक्ता सख्या तद्बोधकाकौ (८७) च।

सती, वि स्त्री (सं) दे 'सतवती'। स स्त्री (सं) पतिव्रता नारी २ मृतभर्त्रा सह दग्धा नारी, सह-गामिनी-मृता ३ दक्षकन्या।

—चौरा, स पु (स + हिं) *सतीवेदिका।
—पुत्र, स पु (स) पतिव्रता-साध्वी, पुत्र तनय ।
—व्रत, स पु (स न), पातिव्रत-त्यम्, सतीत्वम् ।
—व्रता, स स्त्री (स) पतिव्रता नारी।
—होना, मु , मृतभर्त्रा सार्द्धं दह (कर्म)- भस्मीभू ।
सतीत्व, स पु (सं न) पातिव्रत्य, साध्वीत्व।
—बिगाड़ना या नष्ट-करना, मु , सतीत्व नश् (प्रे), बलात्कारेण गम् (भ्वा आ अ)-अभिगम् (भ्वा प अ), पातिव्रत्य दूष् (प्रे)।
—हरण, स पु (स न) बलात्कार , हठ सभोग , बलान्मैथुनम् ।
सतीर्थ, स पु (स) सतीर्थ्य , एकगुरु ।
सतून, स पु (फा) स्थूणा, स्तंभ ।
सतोगुण, स पु , दे 'सत्त्वगुण'।
सतोगुणी, वि (हिं सतोगुण) दे 'सत्त्वगुणी'।
सत्कर्म, स पु (स सत् न) शुभ-सु पुण्य, *कार्य कृत्य-कृति (स्त्री)-क्रिया-करण, पुण्यम् ।*
सत्कार, स पु (स) आदर , सम्मान , पूजा २ आतिथ्य, अतिथिसेवा ।
सत्कार्य, स पु (स न) दे 'सत्कर्म'। वि , *पूज्य, मान्य, आदरणीय ।*
सत्कृत, वि (स) आदृत, सम्मानित, पूजित।
सत्त, स पु दे 'सत'।
—सत्तम, वि (स)-त्तम, श्रेष्ठ।
सत्तर, वि *[स सप्तति (नित्य स्त्री)]* उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को (७०) च।
सत्तरवाँ, वि (हिं सत्तर) सप्ततितम -तमी तम (पु स्त्री न)।
सत्तरह, वि , *तथा सं पु दे 'सतरह'।*
सत्ता¹, स स्त्री (सं) सत्त्व, अस्तित्व, भाव , विद्यमानता २ शक्ति (स्त्री), सामर्थ्य ३ प्रभुत्व, अधिकार ।
—धारी, स पु (स -रिन्>) *अधिकारिन्,* आधिकारिक ।
सत्ता², (स सत्तन्>) सप्तबिंदुयानि आख्यान, *सप्तक ।
सत्ताईस, वि [सं सप्तविंशति (नित्य स्त्री)] स पुं , उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को (२७) च ।
सत्ताईसवाँ, वि (हिं सत्ताइस) सप्तविंशति तम -तमी-तम, सप्तविंश शी श (पु स्त्री न)।
सत्तानवे, वि [स सप्तनवति (नित्य स्त्री)] स पु , उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को(९७)च।
सत्तावन, वि [स सप्तपञ्चाशत् (नित्य स्त्री)] स पु , उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को (५७) च।
सत्तासी, वि [सं सप्ताशीति (नित्य स्त्री)] स पु , उक्ता संख्या तद्बोधकाङ्को (८७) च।
सत्तू, स पु [स सक्तु (केवल पु बहु में सक्तव)] सक्तुक , शक्तु (पु न), भृष्टयव चूर्णम् ।
सत्त्व, स पु (स न) प्रकृतेर्गुणविशेष २ सत्ता, अस्तित्व, भाव ३ सार, तत्त्व, मूलद्रव्य ४ विशेषता, अन प्रकृति (स्त्री) ५ चित्त प्रवृत्ति (स्त्री) ६ चेतना चैतन्य ७ प्राण ८ आत्मन् ९ प्राणिन् १० गर्भ ११ प्रेत, भूत १२ शक्ति (स्त्री), वीर्यम् ।
—गुण, स पु (स) सत्कर्मसु प्रवर्तको गुण , विवेकशील-प्रकृति (स्त्री)।
—गुणी, वि (स) सात्त्विक, उत्तमप्रकृति, *विवेकशील ।*
सत्पथ, स पु (सं) सुमार्ग ,-मार्ग २ सद्-वृत्त-आचार ३ सु-सम्प्रदाय सिद्धान्त ।
सत्पात्र, स पु (स न) सुपात्र, दानार्हो जन २ *आर्य , सज्जन ३ सु वर वोढृ ।*
सत्पुरुष, स पु (स) आर्य , सद्वृत्तो मानव , भद्र ।
सत्य, स पु (स न) तथ्य, ऋत , तत्त्व, *यथार्थ, अवितथ, भूत-परम-तत्त्व,-अर्थ* २ शपथ ३ प्रतिज्ञा ४ कृतयुगम् । वि , तथ्य, अवितथ, वास्तविक, यथार्थ, ऋतु २ अकृत्रिम, अकृतक ।
—काम, वि (सं) सत्य,-प्रिय अभिलाषिन ।
—नारायण, सं पु (सं) देवताविशेष (= सत्यपीर हिं)।
—प्रतिज्ञ, वि (स) सत्य, प्रतिज्ञासार सध *अविसंध ।*
—युग, सं पु (सं न) चतुर्युगेषु प्रथमयुगं, कृतयुगं (= १७२८००० वर्ष)।
—युगी, वि (स सत्ययुग>) सत्ययुगसबधिन् २ अति, पुराण प्राचीन ३ धर्मात्मन्, सद् वृत्त, सरल ।

—लोक, स पुं (स) सप्तलोकांतर्गत उच्चतमो लोक, ब्रह्मलोक ।
—वचन, स पु (सं न) सत्य-यथार्थ-कथन भाषणं २ प्रतिज्ञा ।
—वादी, वि (स दिन्) तथ्य सत्य, भाषिन्, यथार्थवक्तृ २ दे 'सत्यप्रतिज्ञ' ।
—व्रत, सं पु (सं न) सत्यभाषणप्रतिज्ञा । वि, सत्य-वादिन् प्रतिज्ञ सन्ध ।
—सकल्प, वि (सं) दृढसंकल्प ।
—सध, वि (स) दे 'सत्यप्रतिज्ञ' । स पु (सं) श्रीराम २ भरत ३ जनमेजय ।
सत्यत, अव्य (स) वस्तुत, सत्यम् ।
सत्यता, स स्त्री (स) वास्तविकता, याथार्थ्य २ नित्यत्वम् ।
सत्यभामा, स स्त्री (स) सत्राजित्पुत्री, श्रीकृष्णपत्नीविशेष ।
सत्यवती, वि स्त्री (स) सत्य-भाषिणी-वादिनी २ धार्मिकी । सं स्त्री (सं) व्यास जननी, योजन-मत्स्य,-गन्धा गध, काली ।
—सुत, स पु (स) व्यास, द्वैपायन ।
सत्यवान्, वि (स-वत्) दे 'सत्यवादी' (१२) ।
स पु, सावित्रीपति, नृपविशेष ।
सत्या, स स्त्री (सं) सत्यता, दे । २ सीता ३ द्रौपदी ४ दे 'सत्यवती' स स्त्री ५ दुर्गा ।
सत्याकृति, स स्त्री (स) सत्यापन, सत्यंकार, अग्राघ, दे 'पेशगी' ।
सत्याग्रह, स पु (सं) नि-शस्त्र-अहिंसात्मक, विरोध प्रतिकार २ तथ्यनिर्बंध ।
—आंदोलन, स पु (स न) निशस्त्र विरोधांदोलनम् ।
सत्याग्रही, स पु (सं दिन्) अहिंसात्मक विरोधिन् २ तथ्याभिनिवेशिन् ।
सत्यानास, सं पु (स सत्तानाश >) वि, ध्वस-नाश, सर्वनाश ।
—करना, क्रि स, वि, नश्, ध्वस् (प्रे), समूल उच्छिद् (रु प अ) ।
सत्यानासी, वि (हिं सत्यानास) सर्व वि, नाशक ध्वसक २ मद हत, भाग्य ।
सत्यानृत, सं पु (स न) वाणिज्य २ सत्या सत्यमिश्रणम् ।
सत्र, सं पु (सं न) यज्ञ, भाग, मख २ सोमयागभेद ३ भवन, सद्मन् (न), ४ धन ५ दे 'सदावत' ।
सत्रह, वि तथा स पु, दे 'सतरह' ।
सत्वर, अव्य (सं-र) शीघ्र, दे ।
सत्सग, स पुं (स) आर्य-सत्,-संगति (स्त्री)-समागम -संसर्ग -सवास -साहचर्यम् ।
सत्सगी, वि (स गिन्) सज्जनसहचर (-री स्त्री) २ धार्मिक (-की स्त्री) ।
सथिया, स पुं (स स्वस्तिक) मांगलिक चिह्नविशेष २ दे 'जर्राह' ।
सदका, सं पुं (अ-स्द्) दान, बलि, उपहार, दे 'निछावर' ।
सदन, स पु (स न) भवन, गृह, दे 'घर' २ जलम् ।
सदमा, स पु (अ सद्मह्) आघात, प्रहार २ दु ख, शोक ३ अत्याहित, विपद् (स्त्री) ४ महा,-क्षति हानि (दोनों स्त्री) ।
—पहुँचना, क्रि अ, आहन् (कर्म), शोकेन विपदा वा ग्रस (कम) ।
सदय, वि (स) दयान्वित, दयालु, दे ।
सदर, वि (अ) प्रधान,-मुख्य, विशिष्ट । सं पु, केंद्रस्थल २ राजधानी ३ सैन्यनिवेश, दे 'छावनी' ४ सभा, पति अध्यक्ष ।
—नशीन, स पु (अ+फा) दे 'सदर'(४) ।
—बाजार, स पु (अ+फा) प्रधानापण २ सैन्यापण ।
—बोर्ड, स पु (अ+अं) *राजस्वपरिषद् ।
—मुकाम, स पु (अ) मुख्यकार्यालय ।
सदरी, सं स्त्री (अ) दे 'वास्कट' ।
सदस्य, स पु (स) दे 'सभासद्' ।
सदा, अव्य (स) नित्यं, सर्वदा, अनिशं, सतत, सर्वकाल २ निरन्तर, अनवच्छिन्न, अविरतम् ।
—गति, स पु (स) वायु ।
—बहार, वि (सं+फा) *सदावसत, नित्य हरित शश्वत्पत्र ।
—वर्त, स पु (स व्रत>) नैत्यिकभोजन, दान वितरणं-उत्सग, *सदान्न २ नैत्यिकदानम् ।
—सुखी, वि (स खिन्) सर्वदानद ।
—सुहागिन, वि स्त्री (स+हिं) नित्य सौभाग्यवती, अमरपतिका २ वेश्या ।
सदाचार, स पु (स) सच्चर्या, सदाचरणं, सच्चारित्र्यं, सद्वृत्ति (स्त्री), सच्चरित, सद्

व्यवहार २ शिष्टता, सौजन्य, भद्रता ३ रीति (स्त्री), प्रथा ।

सदाचारी, स पु (स रिन्) सद्वृत्त, सुच रितसच्चरित्र २ धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् [सदाचारिणी-सद्वृत्ता आदि (स्त्री)]।

सदानन्द, वि (स) आनन्दशील, नित्यानंद । स पु (स) परमेश्वर ।

सदार, वि (स) सपत्नीक, जायान्वित ।

सदारत, स स्त्री (अ) सभा, पतित्व अध्यक्षता ।

सदाश्रित, वि (स) परावलम्बशील, पराव लम्बिन् ।

सदी, स स्त्री (अ) शताब्दी, शती २ शतम् ।

सदुपदेश, स पु (स) सच्छिक्षा २ सन्म न्त्रणा ।

सदृश, वि (स) सरूप तुल्याकार २ सम, समान, तुल्य सदृक्ष ३ योग्य, उचित ।

सदृशता, स स्त्री (स) समानता, तुल्यता ।

सदेह, क्रि वि (स न) सशरीर, सकायम् ।

सदैव, अव्य (स) सर्वदैव, नित्यमेव ।

सदोष, वि (स) सापराध, अपराधिन्, दोषिन् दुरित्दोष-युक्त ।

सद्गति, स स्त्री (स) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) २ सुदशा, सुगति (स्त्री) ३ सदाचार ।

सद्गुण, स पु (स) सु गुण, सल्लक्षणम् ।

सद्भाव, स पु (स) हित शुभ चिन्ता, हितैषणा चिन्ता २ सत्य ३ निष्कपटता, सर लता ऋजुता ४ सत्ता, अस्तित्वम् ।

सधना, क्रि अ (हिं साधना) विनी (कर्म), वशीभू, दम् (दि प से) २ अभ्यस्त (वि) भू ।

सधर्मिणी, स स्त्री (स) धमपत्नी २ तुल्य मतावलम्बिनी ।

सधर्मी, वि (स र्मिन्) सधमन, सधर्म, समान धर्मानुयायिन् २ तुल्यगुण ।

सधवा स स्त्री (स) सिन्दूरतिलका, सभ र्तृका सनाथा, पतिवत्नी, जीवत्पतिका, सौभा ग्यवती ।

सधाना, क्रि स (हिं सधना) विनी (भ्वा प भ) दम् (प्रे) शिक्ष (प्रे) वशी कृ । सं पु, विनयनं, दमन, वशी करणम् ।

सधानेवाला, स पु, विनेतृ, दमयितृ ।

सधा हुआ, वि, विनीत, दान्त, शिक्षित,वशग ।

सन्, स पु (अ) दे 'सवत्' (१, ३) ।

—ईसवी, सं पु, खिस्त, शाक -सवत्(अव्य)।

—हिजरी, स पु, यवन, शाक सवत् ।

सन[1], स पु (स शण) दीर्घ, शाख पल्लव, त्वकसार, वमन ।

सन[2], स स्त्री (अनु) सणिति, सणत्कार, शीघ्रनिर्गमनध्वनि । वि, स्तब्ध २ नि शब्द ।

—से, क्रि वि, ससणत्कारम् ।

सनई, स स्त्री (हिं- सन) क्षुद्रशण ।

सनक, सं स्त्री (स शका>) दुरा ग्रह, उत्कटाभिनिवेश, चित्तलहरी, छन्द ३ उन्माद, चित्तभ्रम ।

सनकना, क्रि अ (हिं सनक) उन्मद् (दि प से), व्यामुह (दि प वे) ।

सनकी, वि (हिं सनक) उत्कटाभिनिवेशिन्, दृढाग्रहिन् ।

सनद, स स्त्री (अ) प्रमाणपत्र २ प्रमाणम् ।

—याफ्ता, वि (अ +फ़ा) प्रमाणपत्रधारिन् ।

सनना, क्रि अ (स संधान>) व 'सानना' के कर्म के रूप ।

सनम, स पु (अ) प्रियतम, दयित, वल्लभ ।

सनमान, स पु, दे 'समान' ।

सनसनाना, क्रि अ (अनु सनसन) सणसणायते (ना धा) २ ससणसणशब्द वा (अ प अ) ।

सनसनाहट, स स्त्री (हिं सनसनाना) पवनवहनध्वनि, वातगतिशब्द २ (शरा दीना) सणसणायित, सणसणत्कार ३ दे 'सनसनी' ।

सनसनी, स स्त्री (अनु सनसन) संवेदन नाडीनां स्पन्दनभेद, सणसणाकृति (स्त्री) २ स्तब्धता ३ संक्षोभ, उद्वेग ४ नीरवता ।

—खेज़, वि (अनु +फ़ा) संक्षोभजनक, उद्वेगकर ।

सनस्ट्रोक, सं पुं (अं) अंशुघात ।

सनातन, वि (सं) अति, पुराण प्राचीन पुरातन २ क्रमागत, परंपरालब्ध ३ नित्य, शाश्वत [सनातनी (स्त्री)]। सं पुं, प्राचीनकाल २ पुरातनी परंपरा ३ विष्णु ४ ब्रह्मन् ५ शिव ।

—धर्म, सं पुं (स) प्राचीन पुरातन धर्म

२ परंपरागत धर्म ३ प्रतिमापूजनश्राद्धादिविश्वासी हिंदूधर्मशाखाविशेष , पौराणिकधर्म ।

—धर्मी, सं पुं (स मिन्) सनातनधर्मानुयायिन्, पुरातनमतावलंबिन् ।

—पुरुष, सं पुं (सं) विष्णु ।

सनातनी, सं पुं (सं सनातन) दे 'सनातनधर्मी' । वि , पुरातन परंपरालब्ध ।

सनाथ, वि (सं) सत्पतिमत् २ सपतिक, सभर्तृक, स्वामियुत, सहायवत् [सनाथा (स्त्री) जीवद्भर्तृका] ।

सनाभि, सं पुं (सं) सोदर, सहोदर २ सपिंड, सगोत्र, सनाभ्य ।

सनाय, सं स्त्री (अ सना) स्वर्णपत्री-त्रिका रेचनी, कल्याणी मलहारिणी ।

सनाह, सं पुं (सं सन्नाह) तनुत्राण, कवच च दे ।

सनिद्र, वि (सं) निद्रित, निद्राण, शयित, सुप्त, शयान ।

सनीचर, सं पुं , दे 'शनैश्चर' ।

सनीड, वि (सं) सकुल्य, समस्थान-नीड वासिन् २ संबंधिन्, सम्बन्धक , संपर्किन् । सं पुं , सामीप्य, नैकट्यम् २ प्रातिवेश्यम्, प्रतिवेश ।

सनोवर, सं पुं (अ) दे 'चीड' (वृक्ष) ।

सन्न, वि (सं शून्य) चकितचकित, अति विस्मित २ स्तब्ध, जडीभूत, व्यामोहित ३ नि मग्न, अचेतन ४ ससाध्वस, भयाभिभूत ।

सनद्ध, वि (सं) बद्धकवच, धृतसनाह २ सायुध, सशस्त्र ३ सज्ज, सिद्ध, उद्यत, उपक्लृप्त ४ सुबद्ध, संलग्न ।

सन्नाटा, सं पुं (हिं सुन्न) नि शब्दता, नीरवता २ निर्जनता, विजनता, विविक्त ३ भय विस्मयादिजनिता नि स्तब्धता । वि , नीरव २ निर्जन ।

सन्मान, सं पुं , दे 'संमान' ।

सन्मुख, अव्य , दे 'संमुख' ।

सन्यास, सं पुं , दे 'संन्यास' ।

सपक्ष, सं पुं (सं) स्वपक्ष, पातिन्-अवलंबिन्, सहायक , मित्रम् ।

सपत्नी सं स्त्री (सं) समानपतिका, समान भर्तृका ।

सपत्नीक, वि (सं) सकलत्र, सपरिग्रह ।

सपना, सं पुं , दे 'स्वप्न' ।

—होना, मु दुर्लभ-दुर्लभ (वि) भू ।

सपरदाई, सं पुं (सं संप्रदायिन्>) दे 'साजिंदा' ।

सपर्या, सं स्त्री (सं) पूजा-जनं, आराधनम् ।

सपाट, वि (सं) सम, समरेख समस्थ, समतल ।

सपाटा, सं पुं (सं सर्पण>) चलनधाव नोड्डयनादीनां) जव वेग , रय २ त्वरित गति (स्त्री) धावनम् ।

सैर— सं पुं , परिभ्रमण पर्यटनं, विहरणम् ।

सपिंड, सं पुं (सं) सनाभि सप्तपुरुषान गतज्ञाति (पुं), सगोत्र , स्वकीय , बंधु ।

सपूत सं पुं (सं सुपुत्र) सत्पुत्र , सुतनय ।

सपेरा, सं पुं दे सँपेरा ।

सपेरे(पे)ला, सं पुं 'सँपेला' ।

सप्त, वि (सं सप्तन्) सं पुं , उक्ता संख्या तद्बोधकोऽङ्कश्च (७) ।

—ऋषि, सं पुं [सं सप्तर्षय (बहु) =मरीचि , अत्रि , अंगिरस , पुलस्त्य , पुलह, क्रतु , वसिष्ठ , अथवा गौतम , भरद्वाज , विश्वामित्र , जमदग्नि , वसिष्ठ , कश्यप] ।

—जिह्व, सं पुं (सं) सप्तज्वाल, अग्नि ।

—धातु, सं पुं [सं सप्तधातव (बहु) = रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जान शुक्रसंयुता ।]

—पदी, सं स्त्री (सं) विवाहाङ्गसप्तपदी गमनम् ।

—पाताल, सं पुं (सं न) सप्तसंख्याकाधो भुवन (= अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पातालम्) ।

—पुरी, सं स्त्री (सं) सप्तपुण्यनगराणि (न ब) (=अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार) काशी, काँची, अवंतिका, (उज्जयिनी), द्वारका) ।

—प्रकृति, सं स्त्री (सं प्रकृतय (स्त्री बहु) राज्यस्य सप्ताङ्गानि (बहु) (=नृप , मंत्रिन, सामंत , देश , कोश , दुर्ग, सेना) ।

—भुवन, सं पुं (सं न) सप्तोर्ध्वलोका (पुं बहु) भूर्भुव स्वर्महश्चैव जनश्च तप एव च सत्यलोकश्च) ।

—रश्मि, स पु (स) सूर्य, सप्ताश्व ।

सप्तक, स पु (स न) सप्तवस्तुसमूह २ सप्तस्वरसमूह (सगीत)।

सप्तमी, स स्त्री (स) शुक्लकृष्णपक्षयो सप्तमतिथि (पु स्त्री)। २ अधिकरणकारकस्य विभक्ति (स्त्री)।

सप्तर्षि, सं पु [स सप्तर्षय (बहु)] दे 'सप्तऋषि'।

सप्ताश्व, स पु (स) सूर्य, भानु, रवि, अर्क ।

सप्ताह, स पु (स) सप्तदिवसात्मक काल, *दिनसप्तक २ साप्ताहिक कृत्य ३ श्रीमद्भागवतादीना साप्ताहिकी कथा ।

सप्रज, वि (सं) सबाल, सापत्य, ससन्तान, अपत्यवत् ।

सफ़, स स्त्री (अ) श्रेणी णि (स्त्री), पंक्ति (स्त्री) २ ल्वरट ।

सफ़र, स पु (अ) यात्रा दे ।

—खर्च, स पु (अ+फ़ा) मार्गव्यय ।

सफरमैना, स स्त्री (अ सैपर+माइनर) खनकसैनिका (पु बहु)।

सफ़री, वि (अ सफ़र) यात्रोपयोगिन् ।

सफ़री, स स्त्री (शफरी) शफर, मत्स्यभेद ।

सफल, वि (स) फलिन्, फलवत्, फलिन, सुशस्य, फलयुत २ सार्थक, अमोघ, अर्थवत् ३ निष्पन्न, सिद्ध, पूर्ण ४ कृत, कार्य-कृत्य सफलमनोरथ, सिद्धार्थ, कृतार्थ, कृतिन्, चरितार्थ, प्राप्त पूर्ण-लब्ध,-काम ।

—होना, क्रि अ, कृतकार्य-सफल (वि) भू।

सफलता, स स्त्री (स) साफल्य, अर्थ-मनोरथ, सिद्धि (स्त्री), कृत,-कार्यता-कृत्यता २ पूर्णता, निष्पन्नता ३ फलवत्ता ४ सार्थकता।

सफ़हा, स पु (अ) पत्र, पर्ण, पृष्ठम् ।

सफ़ा, वि (अ) अ वि निर्, मल, स्वच्छ, २ शुचि, पूत, पवित्र ३ श्लक्ष्ण, मसृण ४ समतल, समस्थ ।

—चट, वि, अतिस्वच्छ, नितान्तनिर्मल २ अति, श्लक्ष्ण-मसृण ।

—चट करना, क्रि स, क्षुरेण मुंड (भ्वा प स, चु), केशान् सम्यक् आवप् (भ्वा उ अ, प्रे) २ विनश् विध्वंस (प्रे)।

सफ़ाई, सं स्त्री (अ साफ़) स्वच्छता, निर्मलता २ शौच, शुद्धि (स्त्री) ३ अवस्करापसारणं ४ निष्कपटता, आर्जव ५ चित्तमानस, शुद्धि (स्त्री) ६ निर्दोषिता ७ ऋणशोधन ८ निर्णय ।

—देना, मु, स्वनिर्दोषिता प्रमाणीकृ, आरोपितापराध निरस् (दि प से)।

सफ़ीना, स पु (अ) पुस्तक २ दे 'समन'।

सफ़ीर, स स्त्री (अ) राजदूत ।

सफेद, वि (फ़ा सुफेद) श्वेत, धवल, श्येत, श्येन, शुक्र, सित, शुक्ल, शुभ्र, गौर (-री स्त्री) २ अथ चिह्न लेख,-रहित (पत्रादि)।

—स्याह, स पु (फ़ा) हिताहित, इष्टानिष्टम् ।

—पोश, स पु (फ़ा) आर्य, भद्रजन । वि, श्वेतवासस् ।

रंग—पडना, मु, विवर्णतां आपद् (दि आ अ)।

सफेदा, स पु (फ़ा सुफेदा) सीसकभस्मन् (न), *श्वेतसीस २ आम्रभेद ३ *श्वेत (वृक्षभेद)।

सफ़ेदी, स स्त्री (फ़ा सुफ़ेदी) शुक्लता, श्वेतता, धवलता, धवलिमन्, शुक्लिमन्, श्वेतिमन् २ सुधा, सुधालेप ३ प्रत्यूष, प्रभातम् ।

—करना, क्रि स, सुधया लिप् (तु प अ) धवलयति (ना धा), सुधालेप कृ।

—आना, मु, जॄ (दि प से), ज्या (क्र् प अ), केशा धवलायते (ना धा)।

सब, वि (स सर्व) विश्व, समस्त, सकल, अखिल, निखिल, कृत्स्न, अशेष, नि शेष २ पूर्ण, अनून, अखंड, समग्र ।

—कहीं, क्रि वि, सर्वत्र ।

—का सब, वि, समग्र, संपूर्ण ।

—कुछ, सं पु, सर्वम् ।

—कोई, सव, सर्वे, विश्वे (पु बहु)।

—से अच्छा, वि, उत्तम, परम, श्रेष्ठ, प्रशस्ततम।

—हाल, स पु, संपूर्ण, वृत्त-वृत्तांत ।

—मिलाकर, मु, सर्वं, समस्त २ सर्वाणि सकलय्य परिगणय्य ।

सब—, वि (अ) सहायक, उप— ।

—इन्स्पेक्टर, सं पुं (अ) उप, निरीक्षक अवेक्षक ।

—जज, स पुं (अ) उपाधिकरणिक, उपन्यायाधीश ।

सबक़, सं पु (फ़ा) पाठ, दे । २ शिक्षा।

सबब, सं पुं (अ) कारणं, हेतु ।

सबर, स पु, दे 'सब्र'।
सबल, वि (स) बलवत्, बलशालिन्, बलिन्, वीर्यवत्, शक्तिमत्, शक्त, प्रबल, ऊर्जित, ऊर्जस्वल, समर्थ २ ससैन्य।
सबा, स स्त्री (अ) प्रभातपवन।
सबाध, वि (स) दुःखद, कष्टदायक २ हानिकारक, अहितकर।
सबील, स स्त्री (अ) मार्ग, पथिन् २ उपाय ३ प्रपा, दे।
सबूत, स पु, दे 'सुबूत'।
सब्ज़, वि (फा) हरित-त्, प(पा)लाश, हरि द्वर्ण २ नव, प्रत्यग्र, सरस (फलशाकादि)।
—बाग दिखाना, मु, मोघाशाभि वच् प्रतृ (प्रे)।
सब्ज़ा, स पु. (फा सब्ज़ह) हरितत्व, हारित्य, शाद, शाद्वलता २ भगा, विजया ३ हरि न्मणि, मरकतम्।
—ज़ार, स पु (फा) शाद्वल-लम्।
सब्ज़ी, स स्त्री (फा) दे 'सब्ज़ा'(१) २ शाक क, शि(मि)मु, हरितक-क ३ भगा, विजया।
सब्जेक्ट, स पु (अ) विषय, प्रकरण, प्रसग २ प्रश्न।
—(कटूस) कमिटी, स स्त्री (अ) विषय समिति (स्त्री)।
सब्र, स पु (अ) सतोष, धैर्य, तितिक्षा, सहिष्णुता।
बे—, वि (फा+अ) सतोषहीन २ अस हिष्णु।
बेसब्री, स स्त्री, तितिक्षाभाव, असहिष्णुता २ धीरताभाव, व्याकुलता।
सभा, स स्त्री (स) समाज, गोष्ठि-(ष्ठी) -समिति परिषद्-ससद्-पर्षद् (स्त्री), समज्या, सदस् (न), आस्थान २ सभा, भवन-गृह आगार-मडप निकेतन, आस्थान-नी।
—पति, स पु (स) सभाध्यक्ष, ससत्पति, (सभाया) प्रधान।
—सद, स पु (स-सद्) सदस्य, सभ्य, सामाजिक, परिष(षं)द्वल, प(पा)रिषद, पार्षद, सभास्तार', प(पा)रिषद्य।
धर्म—, स स्त्री (स) धार्मिकपरिषद् (स्त्री)।
न्याय—, स स्त्री (स) व्यवहारमडप।
राज—, स स्त्री (स) राजकीयपरिषद् (स्त्री)।
सभागा, वि (स सुभाग्य) सौभाग्य-वत् शालिन्, महाभाग, धन्य।
सभाला, स पु (स सभल) वरमख, परि णेतृमित्रम्।
सभ्य, स पु (स) सभासद, दे २ सज्जन, भद्रपुरुष। वि, शिष्ट नागरिक, दक्षिण, भद्र, विनीत, सुशील, आर्यवृत्त, सस्कृत, सस्कृति (स्त्री)।
सभ्यता, स स्त्री (स) शिष्टता, नागरिकता, दाक्षिण्य, सुजनता, आर्यवृत्ति (स्त्री) २ सस्कृता।
समजस, वि (स) उचित, न्याय्य, योग्य।
सम, वि (स) समान, तुल्य, सदृश-श, सदृक्ष, सनिभ, सविध,-उपम,-निभ,-प्रकार, -विध (समासान्त मे) २ समतल, दे ३ युग्म, दे 'जुफ्त'। स पु (स) तालमानभेद (सगीत) २ अर्थालकारभेद (सा)।
—कक्ष, वि (स) तुल्य, सदृश।
—काल, अव्य (स-ल) युगपद् (अव्य), यौगपद्येन, एकसम,-काल(-ले)।
—कालीन, वि (स) एक,-कालिक-कालीन, समकाल।
—कोण, स पु (स) नवत्यशात्मक कोण। वि, तुल्याभिमुखकोण (त्रिभुज अथवा चतुर्भुज)।
—चित्त, वि (स) सम, चेतस् बुद्धि, धीर, शान्तमनस्क।
—तल, वि (स) सम, समस्थ, समरेख, सपाट।
—दर्शी, वि (स) सम,-दर्शन-दृश्-दृष्टि-बुद्धि।
—भाव, वि (स) सम, प्रकृति-गुण २ समता, तुल्यता।
—भूमि, स स्त्री (स) सम, भू (स्त्री) -स्थली।
—वयस्क, वि (स) सवयस्क, समायुष्क।
समक्ष, अव्य (स-क्ष) अग्रे, अग्रत, पुर, पुरत, पुरस्तात् (सब अव्य)।
समग्र, वि (सं) दे 'सब' (१२)।
समझ, स स्त्री (हिं समझना) बुद्धि धी मति (स्त्री), प्रज्ञा २ ज्ञान, बोध, उप लब्धि (स्त्री)।

—में आना, क्रि अ, अवगम्-बुध्-ज्ञा (कम)।
—दार, वि (हिं +फा) धीमत्, बुद्धिमत्, प्राज्ञ, विचक्षण।
समझना, क्रि स (स सज्ञान>) ज्ञा (क्र उ अ), बुध (भ्वा प मे) अवगम्, बुद्धया ग्रह् (क्र प मे) २ कलय् (प्रे), उत्प्रेक्ष (भ्वा आ मे), तर्क (चु) ३ विचर (प्रे) ४ प्रतिक्रि, नियत (चु)। स पु, ज्ञान, बोधन, अवगमन, उपलब्धि (स्त्री)।
समझने योग्य, वि, ज्ञेय, अवगन्तव्य, बोध्य।
समझनेवाला, स पु, ज्ञातृ, बोद्धृ अवगन्तृ।
समझाना, क्रि प्रे (हिं समझना) व 'समझना (१) के प्रे रूप २ विशदी स्पष्टीकृ व्याख्या (अ प अ), व्याचक्ष (अ आ) ३ उपदिश् (तु प अ), शिक्ष (प्रे) ४ निभर्त्स् (चु आ स) ५ प्रति इ (प्रे), अभिज्ञा (प्रे)।
—बुझाना, क्रि प्रे, दे 'समझाना'।
समझा हुआ, वि, ज्ञात बुद्ध अवगत।
समझौता, स पु (हिं समझना) सधि, स मता, धान, कलह विवाद, शम शान्ति (स्त्री), २ सम्मति (स्त्री), एकमत्यम्।
समता, स स्त्री (स) तुल्यता, सादृश्य, समानता, साम्य, समत्वम्।
समद, वि (स) मत्त, क्षीव, उन्मद, मदोद्धत २ मदान्वित, मत्त (गजादि) ३ प्रसन्न, प्रहृष्ट।
समध(धि)न, स स्त्री (हिं समधी) १ २ पुत्र पुत्री अपत्य-श्वश्रू (स्त्री), जामातृ स्नुषा-जननी।
समधियान,-ना, सं पु (हिं समधी) पुत्र-पुत्री-श्वशुरालय।
समधी, सं पुं (स सबन्धिन्>) १ २ पुत्र पुत्री अपत्य-श्वशुर, जामातृ-स्नुषा, जनक।
समन्वय, स पु (स) सयोग, मिलन २ आनुरूप्य, विरोधाभाव, सवाद ३ कार्य कारणनिर्वाह।
समन्वित, वि (स) सयुक्त, मिलित, सबद्ध २ युक्त युत, सहित २ निबद्ध।
समय, स पुं (सं) वेला, काल, दिष्ट, अनेहस् २ प्रस्ताव, प्रसग ३ ऋतु ४ अवकाश, क्षण ५ अवसर, उचितसमय।
समर, स पु (स पु न) सग्राम, युद्ध दे।
—भूमि, स स्त्री (स) समरागण, युद्ध-रण, क्षेत्रम्।
—शायी, स पु (स यिन्) लब्धवीरगति, धराशायिन्।
समर्थ, वि (स) क्षम, योग्य, शक्त, सामर्थ्यवत् २ बलिन्, सबल।
समर्थक, वि (स) समर्थनकार, साहाय्यकारिन्, उपोद्बलक, अनुमोदक।
समर्थन, स पु (स न) दृढी प्रमाणी-करण, उपोद्बलन, अनुमोदनम्।
—करना, क्रि स, समर्थ् (चु), दृढी प्रमाणी-कृ, द्रढयति (ना धा), उपोद्बलयति (ना धा)।
समर्थित, वि (स) उपोद्बलित, दृढीकृत, अनुमोदित।
समर्पक, वि (स) समर्पयितृ, समर्पणकर, उपहारिन्, उपहारक।
समर्पण, स पु (स) उपहरणं, सम्मानं उत्सर्जन ३ दान, उत्सर्ग।
—करना, क्रि स, न ऋ (प्रे, समर्पयति), सादर दा, उपह्व (भ्वा प अ)।
समर्पित, वि (स) उपहृत, सादर उत्सृष्ट-दत्त।
समवाय, स पु (स) समूह २ नित्य गुण गुणि नानिव्यक्ति अवयवावयवि, स्वत्व (न्याय)
समवेत, वि (स) सचित, सगृहीत २ युक्त, मिलित ३ नित्यसबधविशिष्ट।
समष्टि, स स्त्री (स) सर्व, समुदाय, समूह।
समस्त, वि (सं) समग्र, सपूर्ण, नि शेष, दे 'सब' २ समासयुक्त ३ सक्षिप्त।
समस्या, स स्त्री (सं) समासार्था, समाप्य पद्यो (पद्यरचनार्थ) श्लोकाश २ विरुद्धप्रश्न ३ कठिनावसर।
—पूर्ति, स स्त्री (स) निर्दिष्टपादाश्रित्य काव्यरचना।
समाँ, स पु (सं समय) काल, वेला।
—बँधना, मु (सगीतादिसम्मतया) स्तम्भीभू।
समाख्या, स स्त्री (स) यशस् (न), नामन् (न)।
समागम, स पु (स) आगमनं, आयानं २ समिलन, सयोग २ मैथुनम्।
समाचार, स पु (स) वृत्त, वृत्तात, उदत, वार्ता।

—पत्र, स पु (स) वृत्तपत्रम् ।

समाज, स पु (स) सभा, दे २ समूह, संघ, दल, समुदाय ३ आर्यसमाज ।

—वाद, स पु (स) समाजो राज्याधिकार इति सिद्धान्त ।

समाजी, स पु (स -जिन्) सभासद् २ आर्य समाज-सदस्य सभासद्, आर्यसामाजिक ३ दे 'सपरदाई' ।

समादृत, वि (स) सम्मानित, पूजित, सत्कृत ।

समाधान, स पु (स न) समाधि , अन ध्यान, प्रणिधान २ शंका-संदेह, निवारण ३ शंकानिवारकमुत्तर ४ आश्वसा,-श्वासन सान्त्वन ५ विरोधापहरण ६ निराकरण ७ अनुसंधान ८ नियम (न) ९ ध्यान १० समर्थन, दृढीकरण, उपोद्बलनम् ।

—करना, क्रि स , समाधा (जु उ अ), शंका निवृ (प्रे) ।

शंका—, स पु (स न) संदेहनिवारणम् ।

समाधि, स स्त्री (स पु) अनध्यान, समाधान, ब्रह्मणि स्थिति (स्त्री), योगस्य चरम फल २ प्रेतावास , शव-अस्थि,-गान ३ निद्रा ४ चित्तैकाग्रय, अनन्यमनस्कता ५ योग ६ मौन ७ प्रतिरोध ८ अर्थालंकारभेद (सा) ।

—लगाना, क्रि अ , ब्रह्मणि मनो निविश (प्रे) -समाधा (जु उ अ), अत ध्या (भ्वा प अ), समाहित समाधिस्थ (वि) भू ।

समान, वि (स) तुल्य, सदृक्ष श दृ् , सम, सन्निभ, सविध, सवर्ण,-उपम,-विध,-रूप, -प्रकार ।

समानता, स स्त्री (स) समता, साम्य, सादृश्य, औपम्य, सारूप्य, सावर्ण्यम् ।

समाना, क्रि अ (स समावेशनम्) प्रविश (तु प अ), अन्त या (अ प अ), क्रि स., प्रविश् (प्रे), अन्त स्था (प्रे), धा-धृ भृ (कर्म) ।

समाप्त, वि (स) अवसित, अत,-गत इत, सपूरित, सपूर्ण, नि-शेषीभूत ।

—करना, क्रि स , समाप (स्वा प, अ , प्रे), निवृत (प्रे), सपृ (प्रे)-पूर (चु), पार अन गम् (प्रे), नि शिष् (प्रे), सपद् (प्रे.) ।

—होना, क्रि अ , समाप्-अवसो (कर्म), नि-शेषीभू , समाप्ति-अन गम् ।

समाप्ति, स स्त्री (स) अत , परि , अवसान, निवृत्ति सिद्धि (स्त्री), नि-शेषता २ प्राप्ति (स्त्री) ।

समारो०, स पु (स) आडंबर, विभव , दे 'धूमधाम' २ आडंबरमय उत्सव ।

—से, क्रि वि साडंबर सागेरम् ।

समार्थक, वि (स) समानार्थक, पर्यायवाचिन्, तुल्यार्थ (शब्द) ।

समालोचक स पु (स) गुणदोष-निरूपक विवेचक आलोचक ।

समालोचना, स स्त्री (स) स ,आलो चन-ना, गुणदोष निरूपण-विवेचन-दर्शन परीक्षणम् ।

—करना, क्रि स , गुणदोषान् निरूप् (चु)-विविच (रु उ अ)-विचर (प्रे), समालोच (प्रे) २ छिद्राणि अन्विष् (दि प से) ।

समावर्तन, स पु (स न) (गुरुकुलात्) प्रत्यागमन, प्रत्यावृत्ति (स्त्री) २ आर्याणा संस्कारभेद , समावर्तन-वृत्ति (स्त्री) (धर्म) ।

समाविष्ट, वि (स) अनर् ,-गत-भूत-गत २ एकाग्रचित्त ।

समावेश, स पु (स) अनर्भाव , अनर्गमना ।

—करना, क्रि. स , अनभू (प्रे), अन्तर्गण् (चु) ।

समास, स पु (स) पदसयोग (व्या) २ सक्षेप ३ समिश्रण ४ सग्रह ।

—करना, क्रि स , ससस् (दि प से), एकीकृ, समिश्र (चु) ।

समासोक्ति, स स्त्री (स) अर्थालंकारभेद (सा) ।

समाहार, स पु (स) सचयन, सग्रहण २ चय , राशि ३ सक्षेप ।

—द्वंद्व, स पु (स) द्वंद्वसमासभेद (व्या) ।

समिति, स स्त्री (स) परिषद् (स्त्री) सभा, दे ।

समिधा, स स्त्री [स समिध् (स्त्री)] यज्ञिय होनीय, इधन-एध २ एध , इधन दे ।

समीकरण, स पु (स न) समानीकरण, समीक्रिया २ क्रियाभेद ।

समीक्षा, स स्त्री (स) समालोचना, दे ।

समीचीन, वि (स) सत्य, यथार्थ, अवितथ २ उचित, उपपन्न, योग्य, ३ न्याय्य, धर्म्य ।

समीप, क्रि वि (स समीप पे) अनिक-के वात, आरात निरुषा, निकट-टे, उपकठ ठे, समया, मविधे, सकाशे शे शात, सनिधौ, उप- ।
—वर्ती, वि (स निन्) समीप, निकट, सनि हित, अनिक, अभ्याश, आसन्न, उपकठ, उपात, अभ्यण, अभ्यग्र सविध, समीप निकट स्थ वातिन् ।
समीपता, स स्त्री (स) सामीप्य, नैकट्य, सनिधि (पु), आसन्नता, सनिकर्ष ।
समीर, स पु (स) समीर, समीरण, पवन, वायु दे ।
समीहा, स स्त्री (स) उद्योग, प्रयत्न २ इच्छा ३ अनुसधानम् ।
समुदर, सं पु (स समुद्र) सागर ।
—झाग, स पु, दे 'समुद्रफेन'।
—सोख, स पु (स समुद्रशोष) क्षुपभेद ।
समुचित, वि (स) यथेष्ट, उचित दे ।
समुच्चय, स पु (स समाहार) सम्मिलन २ राशि, समूह ३ अर्थालकार भेद (सा)।
समुद, वि (स) सहर्ष, सामोद, सानन्द। अ, सहर्षं, सानन्दम् ।
समुदाय, स पु (स) नि-स, चय, निकर, राशि २ गण, सघ, वृद, समूह ।
समुद्र, स पु (स) सागर, अब्धि, वारि अभो-उद नद-नार अबु पाथो,-धि, पारावार, सरित्पति सिंधु, अर्णव, रत्नाकर, नीर-वारि जल, निधि मकरालय, ऊर्मिमालिन् ।
—तट, स पु (स पु न) सागर, नीर-कूल, रोधस (न) वेला।
—पत्नी, स स्त्री (स) समुद्र,-काता-गा, नदी।
—फेन, स पु (स) समुद्रकफ, जलहास, सामुद्रम् ।
—यान, स पु (स न) पोत ।
—लवण, स पु (स न) अक्षि(क्षी)व, वशि(सि)र समुद्रक, लवणाब्धिजम् ।
—वह्नि, स पु (सं) वडवानल, वाडव ।
समुद्रगुप्त, सं पु (सं) गुप्तवशीय सम्राड्वि शेष
समुद्रीय, वि (सं) समुद्रिय, समुद्रय ।
समुल्लास, सं पु (सं) परिच्छेद, अध्याय २ आनद, हर्ष ।

समूचा, वि (स समुच्चय >) समस्त, समग्र, सपूर्ण ।
समूल, वि (स) सकारण, सहेतुक २ मूल, वन्-अन्वित । क्रि वि (स न) मूलत, सम्पूर्णतया, अशेषेण, साकल्येन ।
समूलोन्मूलन, स पु (स न) (मूलत) उत्पाटन-उच्छेदन व्यपरोपणम् ।
—करना, क्रि स, उत्पट् (चु) विध्वस् उत्सद् (प्रे), आमूल उत्खन् (भ्वा प से)-व्यपरुह् (प्रे, व्यपरोपयति)।
समूह, स पु (स) निवह, व्यूह, सदोह, विसर, व्रज, स्तोम, ओघ, निकर, व्रात, वार, सघात, नि प्र-स,-चय, समुद(दा)य, समवाय, गण, सहति (स्त्री), वृद, निकुरब, कदबक, समाहार, समुच्चय, -मडल, -जाल, पूग, ग्राम (समासात मे)। (सदृश पदार्थों का) वर्ग । (जतुओं का) सघ, साथ । (सजातीय जतुओं का) कुलम् (टेढे जतुओं का) यूथ -थ। (पशुओं का) समज । (औरों का झुड) समाज । (एक धर्मवालों का) निकाय । (अन्नादि का ढेर) पुज, पिज, पुजि (स्त्री), राशि, उत्कर, कूट -ट २ जनता, जनमेलक, जन-लोक,-सघ समुदाय समर्द सकुल ३ बहुत्व, बाहुल्य, बहु वृहत्, सख्या ।
समूहनी, स स्त्री (स) समार्जनी, 'दे झाड'।
समृद्ध, वि (स) अतिशय, धनाढ्य-धनिक-सपन्न ।
समृद्धि, सं स्त्री (सं) एधा, अतिशय प्रचुर, सपद्-सपत्ति (दोनों स्त्री) वित्त विभव-वैभवम् ।
समेटना, क्रि स (हिं सिमटना) एकत्र कृ, समूह् (क्र प से), सचि (स्वा उ अ), सनी-समाहृ (भ्वा प अ) २ आकुंच् (प्रे), सकुच (तु प से), सहृ (भ्वा प अ)। सं पु तथा भाव, एकत्रकरण समूहण, सच यन, सनयन, समाहरणं, आकुचन, सकोचनम् ।
समेत, क्रि वि (सं न) सह, सार्ध, साकं, सहित, सम (सब तृतीया के साथ)। वि (स) सयुक्त।
समोसा, स पु (फ़ा) समोस, त्रिकोणा कार पक्वान्नभेद ।

सम्यक्, क्रि वि (स) सर्वथा, सर्वप्रकारेण २ सम्पूर्णतया, सामस्त्येन, सावत, सपूर्ण ३ सुष्ठु, साधु ।
सम्राज्ञी, स स्त्री (स) सम्राट्पत्नी २ राज राजेश्वरी, अधि महा-राजाधि-रानी ।
सम्राट्, स पु (स सम्राज्) महा', राजाधिराज, सार्वभौम, चक्रवर्तिन्, माण्डलेश्वर, एक अधिपति-राज, अधि ईश्वर-राज ।
सयाना, वि, दे 'स्याना' ।
सयूथ्य, वि (स) एक-स-समान-अभिन्न,-वर्ण गण-सध ।
सयोनि, वि (स) सोदर, सहोदर, सगर्भ, सोदर्य २ निकट समीप,-सम्बन्धिन् । स पु (स) सहोदर, सोदर, सोदर्य २ इन्द्र, शचीपति ।
सर[1], स पु [स सरस् (न)] सरसी, कासार, ह्रद, सरोवर, पद्माकर, तटाक-क, तडाग-ग, जलाशय ।
सर[2], स पु (फा) शिरस् (न), दे 'सिर' २ शिखर, शिखा, अग्रम् । वि, पराजित, अभिभूत ।
—अंजाम, स पु (फा) सामग्री, सभार २ सिद्धि, समाप्ति (स्त्री) ।
—कश, वि, (फा) उद्धत, उद्दड २ अवश्य ३ दुर्दम्, नैष्टक ।
—कशी, स स्त्री (फा) औद्धत्य, उद्दण्डता २ कुचेष्टा, चापल्यम् ।
—गना, **—गरोह**, स पु (फा) अग्रणी, नायक ।
—गर्म, वि (फा) उत्साहिन, उत्साहवत् ।
—गर्मी, स स्त्री, उत्साह, व्यग्रता ।
—ज़ोर, वि (फा) बलवत् २ उद्दण्ड ।
—ज़ोरी, स स्त्री, बलात्कार २ उद्दण्डता ।
—ताज़, स पु (फा) पुरोग, नायक, शिरो चूडा-मुकुट,-मणि ।
—पच, स पु (फा + हिं) सभा, पति - अध्यक्ष, *पञ्चप्रधान ।
—परस्त, स पु (फा) त्रातृ, रक्षक २ सरक्षक, आश्रयद ।
—परस्ती, स स्त्री, रक्षण, त्राण २ सरक्षण, आश्रय ।
—पेच, स पु (फा) उष्णीषभूषणभेद ।
—बराह, स पु (फा) कार्याध्यक्ष, अधिष्ठातृ, *प्रबन्धक ।
—बराही, सं स्त्री, अधिष्ठान, *प्रबन्ध, अवेक्षा २ अधिष्ठातृत्वम् ।
—हद, स स्त्री (फा + अ) सीमन् (स्त्री), सीमा, दे २ सीमान्त पर्यंत, प्रान्त ।
—हद्दी सूबा, स पु (फा) (पश्चिमोत्तर) सीमाप्रान्त ।
—करना, मु, विजि (भ्वा आ अ), अभिभू, वशीकृ ।
सर[3], स पु (अ) आगलीयानामुपाधिभेद, *शिरोमणि २ भद्र, आर्य ।
सरकडा, स पु (स शरकाड) काड, तेजन, गुन्द्रक, क्षुरिकापत्र, उत्कट ।
सरकना, क्रि अ (स सरण) शनै -मृदु चल् (भ्वा प से)-सृप् सृ (दोनों भ्वा प अ) २ सत्वर सृ ३ अलक्षित अती (अ प अ) ४ उरसा गम्-चल् । स पु तथा भाव, मृदु सरण सर्पण चलन, इ ।
सरकाना, क्रि स, व 'सरकना' के प्रे रूप ।
सरकार, स स्त्री (फा) राज्य,-सस्था-तन्त्र शासक-अधिकारि,-वर्ग, राजसमिति (बहु) २ प्रभु, स्वामिन् ३ राज्य, राष्ट्रम् ।
सरकारी, वि (फा) आधिकारिक, राजकीय, राज्यसबधिन् ।
—नौकर, स पु (फा) राज्य, भृत्य -सेवक परिचारक ।
—नौकरी, स स्त्री (फा) राज्य,-सेवा-परिचर्या ।
सरगम, स पु (हिं सा+रे+गा+मा) स्वर, ग्राम (सगीत) ।
सरघा, स स्त्री (स) मधुमक्षिका, दे ।
सरजा, स पु (फा सरजाह=उच्चपदाधिकारी, अ शरजह्=शेर) नायक, अग्रणी, नर शार्दूल २ सिंह ।
सरणी, सं स्त्री (स) सरणि (स्त्री), पथिन्, मार्ग २ पक्ति (स्त्री), रेखा ३ पद्या, पद्धति (स्त्री) ४ शैली, प्रकार ।
सरद, वि, दे 'सर्द' ।
सरदई, वि (फा सर्दई) हरित्पीत ।
सरदल, स पु (देश) द्वारोर्ध्वस्थूणा ।
सरदा, स पु (फा सर्दह्) *शीतखर्बुजम् ।

(स्त्री) ३ ससार , जगत् (न) ४ स्वभाव , प्रकृति (स्त्री) ५ संतति (स्त्री) सतान ६ उद्गम , मूल ७ प्रवाह , स्राव ८ क्षेपण, प्रासन ९ प्राणिन् १० प्रवृत्ति (स्त्री)।

सर्जन¹, स पु (स न) सृष्टि -जगदुत्पत्ति (स्त्री) २ विसर्जन दे ।

सर्जन², स पु (अं) शस्त्रवैद्य शल्य चिकित्सक ।

सर्जरी, स स्त्री (अ) शल्य, चिकित्सा शास्त्र, शस्त्रवैद्यक २ शल्यक्रिया ।

सज्जि, स स्त्री (स) सर्जी सर्जिका सज्जि सर्जिका-क्षार , क्षार , कापोत , सौवर्चल रुचक, दे 'सज्जी'।

सर्जू, स स्त्री दे 'सरयू'।

सर्टिफ़िकेट, स पु (अ) प्रमाणपत्र दे ।

सर्द, वि (फा मि स शरद>) शीत, शीतल दे २ अलस मद ३ नपुंसक, निर्वीर्य ४ निःस्वाद, नीरस ।

—ऋतु, स स्त्री (फा +स) शरद् (स्त्री) दे ।

—ख़ाना, स पु , हिमगृहम् ।

—मिज़ाज, वि (फा +अ) निरुत्साह २ रूक्ष ।

—होना, मु , मृ (तु आ अ) २ शीतली सर्दी भू ।

सर्दी, स स्त्री (फा) शीत, शैत्य, हिम २ प्रतिश्याय ।

—का बुख़ार, स पु शीतज्वर ।

—खाना, मु , शीतपीडित (वि) भू ।

सर्प, स पु (स) अहि भुजग , दे 'साँप'।

—भक्षक, स पु (स) मयूर ।

—मणि, स पु (स) भुजगफणज ।

—याग, सं पु (स) जनमेजयकृतो नाग यज्ञ ।

—राज, स पु (स) शेषनाग २ वासुकि वेय ।

—लता, स स्त्री (स) नागवल्ली, दे 'पान'।

सर्पिणी, सं स्त्री (स) भुजगी, दे 'साँपिन'।

सर्फ़¹, वि (अ) व्ययित, विनियोजित, दे 'खर्च'।

सर्फ़², स पु (अ सर्फ़) व्यय , विनियोग २ मितव्यय ।

सर्राफ़, सं स्त्री (अ) दे 'सराफ़'।

सर्व, सव (सं) सकल, समस्त ।

—काम्य, वि (स) सर्व,प्रिय इष्ट।

—काल, अ० (स) सर्वदा, नित्यम् ।

—कालीन, वि (स) सार्वकालिक,सदातन ।

—जनीन, वि (स) सार्वजनिक, विश्वजनीन ।

—जित्, वि (स) विश्व,जित् विजेतृ २ उत्तम श्रेष्ठ । (स पु) यज्ञभेद २ मृत्यु ।

—ज्ञ, वि (स) सर्व विश्व-वेत्तृ विद् । (स पु) परमेश्वर ।

—ज्ञता, स स्त्री (स) विश्ववेत्तृत्वम् ।

—तन्त्र, वि (स) सर्वशास्त्रसमत । (स न) सर्वशास्त्रम् ।

—तन्त्रस्वतन्त्र, वि (स) सर्वशास्त्रपारग ।

—दमन, स पु (स) भरतराज , दुष्यन्त पुत्र । वि (स) सर्वाभिभावक ।

—दर्शी, वि (स र्शिन्) विश्वद्रष्टृ ।

—नाम, स पु (स मन् (न) शब्दभेद (व्या) ।

—नाश स पु (स) विध्वंस, विनाश, समूलोच्छेद ।

—नियन्ता, स पु (स तृ) विश्वनियामक, परमेश्वर ।

—प्रिय, वि (स) विश्व प्रिय इष्ट-वल्लभ ।

—भक्षी, स पु (स क्षिन्) सर्वभक्षक २ अग्नि ।

—भूत, स पु (सं न) चराचर, सर्वसृष्टि (स्त्री) ।

—मेध, स पु (स) सोमयागभेद २ सार्वजनिकसत्रम् ।

—वल्लभा, स स्त्री (सं) कुलटा, पुंश्चली ।

—व्यापक, वि (स) विश्वव्यापिन्, विश्व सर्व,-ग गत ।

—शक्तिमान्, वि (स -मत्) सर्वसामर्थ्ययुत । (सं पु) परमेश्वर ।

—श्रेष्ठ, वि (स) सर्व ,उत्तम, प्रशस्ततम ।

—साक्षी, स पु (स क्षिन्) परमेश्वर २ अग्नि ३ वायु ।

—साधारण, सं पु , जना , लोका , जनता, पृथग्,प्राकृत,-जना । वि (सं) साधारण, सामान्य ।

—सामान्य, वि (स) साधारण, प्राकृत, प्रायिक ।

सर्वत्र, अव्य (सं) सर्वदिग्देशकाल ।
—ग, वि (स) सर्वव्यापक ।
सर्वथा, अव्य (स) सर्वप्रकारेण २ सामस्त्येन ३ नितान्त, अत्यन्तम् ।
सर्वदा, अव्य (स) सदा, दे ।
सर्वस्व, स पु (स न) समस्तसंपद् (स्त्री), समग्रद्रव्य, निखिलधनम् ।
सर्वांग, स पु (स न) समस्तशरीर २ सर्ववेदांगानि (न बहु) ३ समग्रावयवा (पु बहु) ।
सर्वांगीण, वि (स) सार्वदैहिक-सर्वांगिक (-की स्त्री) ।
सर्वात्मा, स पु (स -त्मन्) परमात्मन्, ब्रह्मन् (न) ।
सर्वाधिकार, स पु (स) पूर्णप्रभुत्व, ऐकाधिपत्यम् ।
सर्वे, स पु (अ) सर्वेक्षणम्, भूमापनम् ।
सर्वेयर, स पु (अ) सर्वेक्षक, भूमापक ।
सर्वेश्वर, स पु (स) सर्वेश, परमेश -श्वर २ चक्रवर्तिन्, सार्वभौम ।
सर्षप, स पु (स) दे 'सरसों' ।
सलगम, स पु, दे 'शलगम' ।
सलज्ज, वि (स) ह्रीमत्, लज्जाशील दे ।
सल्तनत, स स्त्री (अ) राज्य २ साम्राज्य ३ शासनम् ।
सलना, क्रि अ (स शल्य) व 'सालना' के कर्म के रूप ।
सलफ़, वि (अ) प्राचीन, पुरातन, पुराण । सं पु, पूर्वजा, पूर्वपुरुषा, पितर (सभी बहु) ।
सलब, वि (अ सल्ब) नष्ट, उच्छिन्न ।
सलवाई, स स्त्री (हिं सलवाना) वेधन, शुल्क-भृति (स्त्री) ।
सलवाना, क्रि प्रे, व 'सालना' के प्रे रूप ।
सलहज, स स्त्री, दे 'सरहज' ।
सलाई[1], स स्त्री (स शलाका) धात्वादिनिर्मिता तनुयष्टि (स्त्री) २ दीपशलाका ।
सलाई[2], स स्त्री (हिं सालना) वेध धन २ दे 'सलवाई' ।
सलाख़, स स्त्री (फ़ा मि स शलाका) दे 'सलाई' २ धातु-दंड-यष्टि (स्त्री) ३ रेखा ।

सलाजीत, स स्त्री, दे 'शिलाजीत' ।
सलाद, स पु (अ सैलाड) शिग्रुखाद्यम् ।
सलाम, स पु (अ) प्रणाम, दे ।
—अलैक या अलैकुम, प्रणाम, नमस्ते, नमस्कार ।
दूर से—करना, मु (अनिष्ट दुर्जन वा दूरत) परिहृ (भ्वा प अ)-हा (जु प अ) ।
सलामत, वि (अ) सुरक्षित, अक्षत, संकटमुक्त २ जीवत् सजीव ३ स्वस्थ, नीरोग ४ विद्यमान, वर्तमान । क्रि वि, सकुशल, क्षेमेण ।
—रहना, क्रि अ, स्वस्थ (वि) जीव् (भ्वा प से) कुशली वृत् (भ्वा आ से) ।
सलामती, स स्त्री (अ सलामत) स्वास्थ्य २ कुशल, क्षेम ।
—से, मु, ईश्वरकृपया ।
सलामी, स स्त्री (अ सलाम) नमस्क्रिया, अभिवादन, २ सैनिक, प्रणाम प्रणति (स्त्री)-नमस्कार ३ अग्न्यस्त्रैः सम्मानना संभावना ४ प्रवण, निम्न-अवसर्पि, भूमि (स्त्री) ।
—उतारना, मु, अग्न्यस्त्रैः संभू सम्मन् (प्रे) ।
सलाह, स स्त्री (अ) अभिप्राय, तर्क, मननि (स्त्री) २ परामर्श, मन्त्रणा ३ उपदेश, मन्त्र ।
—करना, क्रि अ विचर (प्रे), संमन्त्र् (चु आ से), परामृश् (तु प अ, तृतीया के साथ) उपदेशार्थं प्रच्छ् (तु प अ) ।
—कार, स पु (अ +फ़ा) उपदेष्टृ, मन्त्रद, परामर्शप्रद, बुद्धिसहाय ।
—देना, क्रि स, उपदिश् (तु प अ), अनुशास् (अ प से), मन्त्र (चु उ से) ।
—ठहरना, मु, सर्वै निश्चि निर्णी (कर्म), सामत्य जन् (दि आ से) ।
सलिल, स पु (स न) अम्बु, वारि, जल दे ।
—निधि, स पु (स) सागर, समुद्र दे ।
सलिलाहार, वि (स) सलिल-जल-नीर, अशन भोजन । स पु (स) जल-नीर, अशनम्-आहार ।
सलीका, स पु (अ) कौशल, दाक्ष्य, वैदग्ध्य, चातुर्य २ समय शिष्ट, आचार, शिष्टता ३ आचार, चरित्र, व्यवहार ४ सभ्यता ।

—मद, वि (अ + फा) दक्ष, कुशल, विदग्ध, चतुर २ शिष्ट, शिष्टाचारिन् ३ सभ्य।

सलीस, वि (अ) सुगम, सुबोध २ दे 'मुहावरेदार'।

सलूक, स पु (अ) व्यवहार, वृत्ति (स्त्री), वर्तन २ स्नेह, सद्भाव ३ उपकार।

सलूना, वि (स सलवण) स(ला)वण, लावणिक। सं पु, व्यजन, दे 'भाजी'।

सलोतर, स पु (स शालिहोत्र >) १२, पशु-अश्व-चिकित्सा।

सलोतरी, स पु (हिं सलोतर) १२ पशु अश्व-चिकित्सक-वैद्य।

सलोना, वि (स सलवण) दे 'सलूना' वि २ सुन्दर, लावण्यमय, छविमद ३ स्वादु सरस।

सलोनो, स स्त्री (स श्रावणी) ऋषितर्पणी रक्षाबंधन दे।

सवन, सं पु (स न) यज्ञस्नान २ सोम पान ३ यज्ञ ४ प्रसव।

सवर्ण, वि (सं) तुल्य-समान-सम्यक-जाति जातीय-वर्ण २ सदृश समान तुल्य।

सवा, वि (स सपाद) पादाधिक, पादोर्ध्व।

सवाब स पु (अ) पुण्य सुकृतफल २ हित उपकार।

सवाया, वि, दे 'सवा'।

सवार, स पु (फा) सादिन्, तुरगिन् अश्व-आरोह-आरोहिन्। वि, आरूढ अधि रूढ, उपर्यासीन।

—होना, क्रि स (अश्वादिक) अधि-अध्या आ-समा रुह् (भ्वा प अ), अधिस्था (भ्वा प अ) अध्यास (अ आ से)।

सवारी, सं स्त्री (फा) अधि-अध्या-आरोहण, आ-रोह रूढ, (रथादिभि) सचरण विहरण २ यान, वाहन ३ आरोहक, आरोहिन, यायिन, यात्रिक ४ यात्रा, दे 'जलूस'।

—करना, क्रि अ, अश्वादिभि गम् या (अ प अ)।

सवाल, सं पुं (अ) अनुयोग, प्रश्न दे। २ निवेदन, प्रार्थना ३ भिक्षायाच्ना ४ गणित प्रश्न ५ प्राश्निकविषय।

—जवाब, सं पु (अ) प्रश्नोत्तर २ वाद प्रतिवाद ३ कलह।

—जवाब करना, मु, विवद् (भ्वा आ से), विचर् (प्रे), तर्क (चु) ऊहापोह कृ।

सवालिया, वि (अ सवाल >) प्रश्नात्मक, पृच्छापर।

सवाली, वि (अ सवाल >) याचक भिक्षुक, अर्थिन्।

सविकल्प, वि (स) सशय-सदेह विकल्प, युक्त, सदिग्ध २ सार्शक, सशयान, सदिहान। स पु (स) समाधिभेद।

सविता, स पु (स तृ) सूर्य, भानु।

सवित्री, स स्त्री (स) साविका, दे 'दाई' २ जननी ३ गौ (स्त्री)।

सवेरा, स पु [स सुवेला >(स्त्री)] अरुणोदय, ब्रह्ममुहूर्त, प्रात काल, दे विलम्ब चिरता चिरत्व,-अभाव।

सवैया, सं पु (हिं सवा) मालिनी, छन्दोभेद २ सपादसेरात्मक भारमान ३ सपादगुणन सूची।

सव्य, वि (सं) वाम, दे 'बायाँ' २ दक्षिण (कभी ही) ३ विरुद्ध, प्रतिकूल।

—साची, स पु (स चिन्) अर्जुन।

सशंक, वि (स) दोलायमान, सशयापन्न, सशयान २ भीत, उद्विग्न, त्रस्त ३ भीम, भयकर।

ससुर, स पु (स श्वशुर) पतिपितृ २ जाया जनक ३ (गाली) दुष्ट, शठ, खल।

ससुराल, स स्त्री (स श्वशुरालय) १२ पति पत्नी, पितृगृह, श्वशुरगृहम्।

ससुरी, सं स्त्री (हिं ससुर) श्वश्रू (स्त्री), दे 'सास' २ दुष्टा, पापा।

सस्ता, वि (सं स्वस्थ >) अल्प,-अर्घ-मूल्य, सुलभ्य २ सुलभ ३ सामान्य, साधारण, अवर।

—होना, क्रि अ, अल्पमूल्य सुलभ्य (वि) भू।

सस्ते छूटना, मु, स्तोकात् मुच् (कर्म)।

सस्य, सं पु (सं न) शस्य, धान्य, व्रीह्य, व्रीहि, स्तंबकरि २ वृक्षादीनां फलम्।

सह, अव्य (सं) साक, सार्ध, सम, सहित (सत तृतीया के साथ) दे 'साथ'।

—कार, स पु (सं) आम्र, आम्र २ सहायक ३ सहयोग।

—कारिता, सं, स्त्री (सं) सहयोगिता २ सहायता।

—कारी, स पु (स लिं) सह,कृत कृत्वन् योगिन, सव्यवसायिन् २ सहायक ।
—गमन, स पु (स न) सह, चरण अविन २ पतिशवेन सह ज्वलन, सह, मरण अनु गमनम् ।
—गामिनी, स स्त्री (स) सहमृता पत्या सह ज्वलिता नारी २ पत्नी ३ सहचरी ।
—गामी, स पु (स मिन्) संगिन सह चर चरिन्-यायिन् वर्तिन् २ अनुयायिन् ।
—चर, स पु (स) दे 'सहगामी' (१)। २ सेवक ३ सखि मित्रम् ।
—चरी, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ सखी, वयस्या ३ सहगामिनी सगिनी ।
—चार, स पु (स) दे 'सहगामिन' (१)। २ सग, सगति (स्त्री)।
—चारिणी, स स्त्री (स) दे सहचरी'(१ ३ ।
—चारी, स पु (स रिन्) दे 'सहगामिन' (१)। २ सेवक, अनुचर ।
—जात, वि (स) सहजन्मन, यमन २ सोदर, सहोदर ।
—जीवी, वि (स विन्) समकालीन २ सह वासिन् ।
—धर्मिणी, स स्त्री (स) सहधर्म, चरी-चारिणी, धमपत्नी ।
—पाठी, स पु (स ठिन्) सह, अध्यायिन्-पाठक ।
—भोज, स पु (स) सधि (स्त्री) सह भक्षण, सभक्ष ।
—भोजी, स पु (स जिन्) सहभक्षक ।
—मत, वि (स) एक,मत चित्त, सवादिन, सप्रतिपन्न ।
—योग, स पु (स) सह,कार -कारिता-योगिता २ सगति (स्त्री) ३ सहायता ।
—योगी, स पु (स गिन्) दे 'सहकारी' (१ २) ३ समवयस्क ४ समकालीन ।
—वाद, स पु (स) वादप्रतिवाद , हेतु ,वाद ।
—वास, स पु (स) सहवसति (स्त्री) २ सग ३ मैथुनम् ।
—वासी, स पु (स-सिन्) सहवासकृत् २ दे 'सहगामी'।
सहज, वि (स) सुगम, सरल, सुकर २ सह जात, दे ३ स्वाभाविक, प्राकृतिक ४ साधा रण । क्रि वि , सौकर्येण, सुखम् ।
—पथ, स पु (स सहज+पथिन्>) सहज पथनामा वैष्णवसम्प्रदायविशेष ।
—मित्र, स पु (स न) स्वाभाविकसुहृद् २ भागिनेय ३ भ्रातृष्वसेय ४ पैतृष्वसेय ।
—शत्रु स पु (स) स्वाभाविकशत्रु , सह जारि २ पितृव्यपुत्र ३ वैमात्रेयभ्रातृ ।
सहजन, स पु दे 'सहिजन'।
सहजिया, स पु (स सहज>) सहज मतानुयायिन् ।
सहदेव, स पु (स) पाडुराज्य पचमपुत्र ।
सहन[1], स पु (स न) सहिष्णुता, मर्ष, मर्षण २ क्षमा, तितिक्षा, क्षान्ति (स्त्री)।
—करना, क्रि अ दे , 'सहना'।
—शील, वि (स) सहिष्णु तितिक्षु २ क्षमिन, क्षमित्, सहन ।
—शीलता, स स्त्री (स) दे 'सहन' (१ २)।
सहन[2], स पु (अ) आगन, प्रागण, अजिर, चत्वरम् ।
सहना, क्रि अ (स सहनं) क्षम् सह (भ्वा आ से), तिज् (सन्नन्त, तितिक्षते), मृष (दि प से ,चु)। स पु तथा भाव, सहन, सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा, मर्षण, क्षान्ति (स्त्री), तितिक्षा ।
सहनीय, वि (स) मर्षणीय, सह्य, सोढव्य, क्षमार्ह, क्षन्तव्य ।
सहने वाला, स पु , सोढृ, क्षन्तृ,सह ।
सहम, स पु (फा) भय, त्रास २ सकोच, दे 'लिहाज'।
सहमना, क्रि अ (फा सहम) दे 'डरना'।
सहर, स स्त्री (अ) उषा, प्रभातम् ।
सहरा, स पु (अ) मरु , मरु-स्थल भूमि (स्त्री) २ वन, निविडकाननम् ।
सहरी, स स्त्री (स शफरी) मीनभेद ।
सहल, वि (अ) सरल, सुगम, सुकर, सुसाध्य ।
सहला(रा)ना, क्रि स (हिं-सहर=धीरे अथवा अनु०) मृद् (क्र प से), घृष (भ्वा प से)। स पु अगमर्दन, सवाहनम् ।
सहसा, अव्य (स) अकस्मात्, एकपदे, अकाण्डे, अतर्कित, झटिति (सब अव्य)।
सहस्र, वि (स न) दशशतसख्या । स पु , दशशतसख्या २ तद्बोधकाङ्क (१०००)।

—कर, स पु (स) सहस्र, किरण रश्मि, सूर्य।
—दल, स पु (स न) सहस्रपत्र कमलम्।
—नयन, स पु (स) सहस्र-लोचन नेत्र दृश्।
—नाम, स पु [स-मन् (न)] सहस्र नामयुत देवस्तोत्रम्।
—बाहु, सं पु (स) शिव, २ कार्तवीर्यो ऽर्जुन, नृपविशेष ३ बलिनृपस्य ज्येष्ठसुत।
सहस्राशु, स पु (सं) सूर्य।
सहस्राक्ष, स पु (स) इन्द्र २ विष्णु।
सहाई, सं पु (स सहाय) सहायक दे।
सहाध्यायी, स पु (स यिन्) दे 'सहपाठी'।
सहानुभूति, स स्त्री (स) समवेदना, समदु ख(सि)ता २ समदु खसुखता।
—करना या दिखाना, क्रि अ, महानुभूति प्रकटयति (ना धा), प्रकाश् (प्रे)।
सहाय, स पु (स) सहायक, दे २ सहा यता, दे ३ आश्रय।
सहायक, वि (सं) सहाय, उप,-कर्तृ-कारिन् कारक, साहाय्यद अभिसर, अनु,-चर प्लव २ उप-, (उ उपमध्री)।
सहायता, सं स्त्री (सं) साहाय्य, उप,-कार कृत कृति (स्त्री) २ अनुग्रह।
—करना, क्रि स, साहाय्य कृ, सहायस्भू, उपकृ (षष्ठी के साथ), अनुग्रह् (क प से)।
सहारना, क्रि स (हि सहारा) दे 'सहना' २ धृ (चु), भृ (जु उ अ) ३ उत्तम्भ-उपस्कम्भ। (क प से)। सं पु, दे 'सहना' स पु २ धारण, उत्तम्भन, उपस्तम्भ।
सहारा, स पु (स सहाय>) दे सहा यता (१) २ आश्रय अवलंब, अवष्टम ३ विश्राम, प्रत्यय, विश्रंभ।
—देना, क्रि स, साहाय्य कृ उपकृ २ उत्तंभ् उपस्तम्भ (क प से) ३ शरण आश्रय दा, गुप् (भ्वा प से) ४ समाश्वस् (प्रे)।
—ढूंढना, मु, आश्रय अन्विष (दि प से)।
सहिजन, सं पु (स शोभाञ्जन) तीक्ष्णगंध, मु,-तीक्ष्ण, शुभ्राञ्जन।
सहित, वि (स) समेत, युक्त, सगन, अन्वित, दे 'साथ' तथा 'सह'। क्रि वि, साकं, सार्धं, समं, सह।
सहिष्णु, वि (स) सहनशील, दे।
सहिष्णुता, सं स्त्री (स) सहनशीलता, दे।
सही, वि (फा सहीह) सत्य, यथार्थ २ प्रामा णिक ३ शुद्ध, निर्दोष।
सहीफ़ा, स पु (अ) ग्रन्थ, पुस्तकम् २ धम, ग्रन्थ पुस्तक्रम ३ पत्रम ४ पत्रिका।
—सलामत, वि (हि+अ) स्वस्थ, नीरोग २ सपूर्ण, निर्दोष, त्रुटिरहित।
सहूलियत, स स्त्री (फा) सुकरता, सुगमता २ शिष्टाचार।
सहृदय, वि (स) समवेदना सहानुभूति, युक्त २ दयालु ३ रसिक ४ भद्र, महाशय ५ सद्-साधु,-स्वभाव ६ प्रसन्नमनस्क, आनंदिन्।
सहृदयता, स स्त्री (स) समवेदना, सहानु भूति (स्त्री) २ सज्जनता, सौजन्य ३ रसि कतात्व ४ अनुक्रोश, दयालुता।
सहेजना, क्रि स (अ सही+हि जाँचना) सम्यक् परीक्ष निरीक्ष (भ्वा आ से) सुष्ठु बोधयित्वा प्रतिपद् (प्रे)-दा।
सहेली, सं स्त्री (स सह+हेलन>) सखी, आली लि (स्त्री), सगिनी २ परिचारिका, अनुचरी।
सहोक्ति, स स्त्री (सं) अर्थालंकारभेद (सा)।
सहोदर, स पु (सं) सोदर, सोदर्य, सहज, सगर्भ, समानोदर्य, भ्रातृ।
सह्य, वि (स) सहनीय, दे। स पु (स) सह्याद्रि।
साँई, सं पु (स स्वामिन्) प्रभु, ईश, अधिकारिन् २ परमात्मन्, परमेश्वर ३ पति, भर्तृ ४ यवनभिक्षु।
साकड, साकल, स स्त्री (सं शृंखला, दे)।
सांकेतिक, वि (स) संकेतात्मक, लाक्षणिक, संकेत,-सम्बन्धिन् विषयक।
सांख्य, स पु (स पु न) सद् एकविंश प्रणीतो दर्शनग्रन्थविशेष।
सांग¹, स पु, दे 'स्वांग'।
सांग², सं स्त्री (स शक्ति) वाद्,-न्यू, (दोनों स्त्री), अस्त्रभेद।
सांग³, वि (सं) सपूर्ण, सर्वांगयुत।
सांगी, सं स्त्री (हि सांग) दे 'सांग²' २ शकटवाहनासन, युगन्ध ३ शकटाधोवर्ति जालम्।

सांगोपांग, वि (सं) अंगोपांगयुक्त, सं-पूर्ण, समग्र, समस्त ।

साँच, वि (सं सत्य) अवितथ, यथार्थ ।

साँचा, सं पु (सं स्थातृ) आकारसाधन, सन्धान, सस्थानपुर २ दे 'छापा' ।

साँचे में ढला होना, मु , सर्वांगसुंदर (वि) वृत (स्त्रा आ से) ।

साँझ, स स्त्री (स सध्या) सायंकाल दे ।

साँझा, स पु दे 'साझा' ।

साँट, स स्त्री (अनु सट) सूक्ष्मतनु दंड - यष्टि (स्त्री) २ कशा ना ३ यष्टिकशा - प्रहारचिह्न नील ४ कन्नी ।

साँठी, स स्त्री (हिं गाठ का अनु) मूल धन दे 'पूँजी' ।

साँड, स पु (स षंड) श(ष)ढ , गोपति , वृषन्, वृषभ २ दिवगतस्मृत्यामुत्सृष्टोऽकितो वृषभ ३ वृषणाश्व , वृषन् । वि , दृढाग, बलिन् २ स्वैरिन, दुराचारिन् ।

साँड(ड)नी, स स्त्री (हिं साड) उष्ट्री, दे 'ऊटनी' ।

—सवार, स पु (हि + फा) उष्ट्र, आरोह आरोहिन् २ उष्ट्र क्रमेल्क-वाहक ।

साँडा, स पु (स शयानक) कृकलास-स , कक-पाद , प्रतिसूर , सरट द्रु , गोधिका, चित्रवोल ।

सात, वि (स) अतवत्, नश्वर, नाशवत् ।

सात्वना, स स्त्री (स) सात्व-त्वनं, आ सना,-धारानं २ शम , शांति (स्त्री), ३ प्रणय ।

—देना, क्रि स , सा(शा)त्व् (चु), आ समा-श्वस् (प्रे) शोक शम (प्रे) ।

साद्र, स पु (स) वन २ राशि । वि (स) घन, निबिड, सुसहत ।

साद्रता, स स्त्री (सं) निबिडता, घनता इ ।

सांधिविग्रहिक, स पुं (सं) सन्धियुद्धमंत्रिन् ।

साध्य, वि (स) सध्या,-सम्बन्धिन् विषयक, वैकालिक, वैकालीन ।

सान्निध्य, स पुं (स न) सामीप्य, निकटता २ मोक्षभेद ।

साप, स पु (स सर्प) भुज(न)ग , भुजंगम , अहि , फणविष, धर , व्याल , सरीसृप , आशीविष , कुंडलिन, चक्षु श्रवस , फणि , बिलेशय , उरग , पन्नग , पवनाशन , दर्वीकर द्वि-जिह्व-रसन , पृदाकु , चक्रिन, दद शूक , भोगिन , गूढपाद-द , दीर्घपृष्ठ , विषधर । (धब्बोंवाला सांप) मातुलाहि , मालुधान । (धारीदार सांप) राजि(-जी)ल । (फनियर साँप) भोग फण भृत धर , फणिन , भोगिन् ।

—की लहर, मु , अहि-शव्यथा ।

—के मुँह में, मु महासंकटे ।

—छछूँदर की दशा, मु , द्वैधीभाव, दोला वृत्ति (स्त्री) संदेह ।

—सूँघ जाना, मु सर्पेण दश् (कर्म), मृ (तु आ अ) ।

कलेजे पर—लोटना, मु (ईर्ष्यादिभि) मनोऽन्तस् सतप (कर्म) ।

साम्पत्तिक, वि (स) आर्थिक दे ।

सापिन, सं स्त्री (हिं साप) सर्पिणी, सर्पी, पन्नगी, उरगी, भुजगी इ ।

साम्प्रत, अव्य (स -त) अधुनैव इदानीमेव, सद्य , सम्प्रति । वि (स) उचित, योग्य, २ सामयिक, प्रास्ताविक ।

साम्प्रदायिक, वि (स) शास्त्रागत, सम्प्रदाय धर्म-मत, विषयक-सम्बन्धिन २ परपरीण, क्रमागत ।

साब, स पु (स) श्रीकृष्णपुत्र ।

साभर, स पु (स सावर) संबरोद्भव, रौमक, वसुक २ राजपुत्रस्थानप्रदेशे कासारविशेष ।

सामुख्य, स पुं (स न) दे 'सामना'(२)।

साँय साँय, स स्त्री (अनु)दे 'सनसनाहट'(१)।

साँवला, वि (स श्यामल) कृष्ण, श्याम २ इषच्छ्याम, आकृष्ण ३ कृष्णनील । स पु , श्रीकृष्ण २ पति ३ प्रेमिन् , प्रणयिन् ।

साँवलापन, स पु (हिं साँवला) श्यामलता, श्यामता, आ कृष्णता, कृष्णनीलता ।

साँवाँ, स पु (स श्यामाक) श्याम -मक , त्रिबीज , अविप्रिय ।

साँस, स स्त्री [स श्वास (पु)] उच्छ्वास , उच्छ्वसित, नि(नि)श्वास , नि (नि)श्वसित, आन , आहर , प्राण , असव प्राणा (दोनों पु बहु) २ दीर्घश्वास , निश्वास , उच्छ्वास ३ विराम , विश्राम ४ स्फोट , भंग ५ श्वासरोग , दे 'दमा' ।

—रुकना, क्रि अ, श्वास निरुध् (कर्म)।
—लेना, क्रि अ, अन्-प्राण्-श्वस् (अ प से) २ जीव (भ्वा प से) ३ विश्रम् (दि प से) विरम् (भ्वा प अ)।
—उखड़ना, मु (निधनकाले) कृच्छ्र कष्ट श्वस्।
—खींचना, मु, श्वासमन्त निरुध् (रु प मे)।
—चढ़ना या—फूलना, मु, सवेग प्राण।
—तक न लेना, मु, मौन आकल (चु)।
—रहते, मु, यावज्जीव-चन, आमृत्यो।
गहरी या लंबी—लेना, मु, दीर्घं श्वस्।
सांसारिक, वि (स) ऐहिक लौकिक, प्राप चिक, व्यावहारिक।
सा, वि (स सदृश) सम, समान, तुल्य, सदृश २ इव, मात्र (उ थोड़ा सा=किंचि दिव, किंचिन्मात्र) ३ आ, ईषत (उ काला सा=आ-ईषत्-कृष्ण)।
साइक्लोपीडिया, स स्त्री (अ) (विषयविशेष निरूपक) बृहद्ग्रंथ २ विश्वकोष प।
साइत, स स्त्री (अ साअत) होरा, दे 'घड़ा' २ पल, क्षण ण ३ मंगलमुहूर्त, शुभलग्नम्।
साइनबोर्ड, स पु (अ) चिह्नपट्ट-कम्।
साइन्स, स स्त्री (अ) विज्ञान, शास्त्र २ रासायनिकविज्ञानं भौतिकविज्ञानं च।
साइफ़न, स स्त्री (अ) उत्क्षेपणनाली।
साईं, स स्त्री दे पराग।
साईस, स पु (स्म का अनु) अश्व, सेवक पाल पालक-रक्षक, यावानिक।
साइसी, स स्त्री (हि साइस) अश्वसेवा अश्वसंवर्धनम्।
साक, स पु, दे 'साग'।
साकांक्ष, वि (स) इच्छु, इच्छुक, आकांक्षिन्, अभिलाषिन।
साका, स पु (स शाक) सवत् (अव्य), द २ यशस् (न), कीर्ति-ख्याति (स्त्री) ३ कीर्ति, चिह्न-स्मारक ४ आतंक, प्रभाव ५ कौतुकर कर्मन (न)।
साकार, वि (स) आकारवत्, आकृतिमत्, रूपवत् २ स्थूल, मूर्त्त ३ मूर्तिमत्, वपुष्मत्, देहधारिन्।
साकारोपासना, स स्त्री (स) मूर्त्यादिभि र्मगुपूजनं, मूर्तिपूजा।
साकिन, वि (अ) नि-वासिन्, वास्तव्य।
साक़ी, स पु (अ) सुरापरिवेषक २ वल्लभ, प्रेमपात्र, दे 'माशूक'।
साकूत, वि (स) सार्थक अर्थवत् साभि प्राय, सप्रयोजन।
साकेत, स पु (स न) अयोध्या, दे।
साक्षर, वि (सं) शिक्षित, अक्षर, ज अभिज्ञ।
साक्षात्, अव्य (स) पुरत, अग्रत, समक्ष, प्रत्यक्षम्। वि, मूर्तिमत्, साकार, विग्रहवत्। स पु, स-समा-गम, मेल, सम्मिलनम्।
—करना, क्रि स, साक्षात् कृ स्वचक्षुर्भ्यां दृश (भ्वा प अ), निर्देंद्रियै अवगम्।
—कार, स पु (स) दे 'साक्षात्'। स पु २ प्रत्यक्षं, इंद्रियार्थसन्निकर्षजं ज्ञानम्।
साक्षी, स पु (स क्षिन्) दे 'गवाह' २ द्रष्टृ, प्रेक्षक। स स्त्री, साक्ष्यम्।
साक्ष्य, स पु (स न) साक्षिता-त्व, दे 'गवाही' २ दृश्यम्।
साख, स स्त्री (हि साका) प्रभाव, वश दर्प, आतंक २ (इटंट) प्रतिष्ठा, प्रत्यय, विश्वस नीयता।
साग, स पुं (स शाक-कं) शि(मि)ग्रु, ह(हा)रितक २ व्यंजन, अन्नोपस्कर, दे 'भाजी'।
—पात, सं पुं, शाकपर्ण, कंदमूलं २ साधा रण नीरस, भोजनम्।
सागर, स पु (सं) समुद्र, दे २ महा, ह्रद-तटाक (-कम्)।
सागवान, स पुं, दे 'सागौन'।
सागू, स पुं (अं सैगो) *मागु', वृक्षभेद।
—दाना, स पुं (हिं + फ़ा) *सागुदान।
सागौन, स पु (सं शाखवन>) गृहद्रुम, श्रेष्ठकाष्ठ, शाक, शाक-तरु-वृक्ष, अण।
साज़, स पु (फ़ा, मि सं सज्जा) सामग्री, उपकरणं २ (अश्व-) सज्जा-संनाह ३ वाद्य, वादित्र ४ अस्त्रशस्त्र ५ सुपरिचय, प्रगाढ सख्यम्। वि (फ़ा)-कार २ प्रतिसमाधातृ। (उ घड़ीसाज़=घटीकार, घटीप्रतिसमाधातृ)।
—बाज़, सं स्त्री, सुपरिचय।
—सामान, स पु, सामग्री, उपकरण, परि च्छद २ दे 'ठाटबाट'।
साजन, सं पु (सं सज्जन) सद्जन, आर्य, सत्पुरुष २ पति ३ वल्लभ ४ परमेश्वर।

साजना, क्रि स, दे 'सजाना'।
साज़िंदा, सं पु (फ़ा) वाद्यवादित्र,वादक।
साज़िश, स स्त्री (फ़ा) दे 'षड्यंत्र'।
साझा, स पु (स साहाय्यं>) अंशिता, भागिता, भागधरत्वं २ अंश, भाग।
साझी, स पु (हिं स झा) दे 'साझेदार'।
साझेदार, स पु (हिं साझा) अंशिन्, भागधर, अंशभाज्।
साझेदारी, स स्त्री (हिं साझेदार) दे 'साझा' (१)।
साटन, स पु (अ सैटिन) *साटन, कौशेय वस्त्रभेद।
साटा, स पु (देश) विनिमय, परिवर्त।
साठ वि [स षष्टि (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता संख्या तद्बोधकांकौ (६०) च।
साठवाँ, वि (हिं साठ) षष्टितम-मी-मं (पुं स्त्री न)।
साठा, वि (हिं साठ) षष्टिवर्ष।
साठी, स पु (सं षष्टिक-का) स्निग्धतण्डुल, षष्टिन।
साडी, सं स्त्री (स शाटी) नारीवस्त्रभेद।
साढ़सातो, सं स्त्री (हिं साढे+सात) साढसप्तवर्ष(मासदिवस)वर्तिनी शनिदशा।
—आना या—चढ़ना, मु, दुर्दिनानि आपद् (भ्वा प से)।
साढू, स पु (स श्यालीधव) श्यालीपति, नायानरिक।
साढ़े, वि (स सार्ध) अध्यर्ध।
सात, वि (स सप्तन्) सं पु, उक्ता संख्या, तद्बोधकाश्च (७)।
—गुना, वि, सप्त, गुणगुणित।
—प्रकार का, वि, सप्त विधप्रकार।
—फेरी, स स्त्री, दे 'भाँवर'।
—पांच, मु, शाठ्य, कापट्यम्।
—पांच करना, मु, प्रतृ-वञ्च् (प्रे), विप्रलभ् (भ्वा आ अ)।
—पुश्तों से, मु, अनादिकालात्।
—समुद्र पार, मु, अति-दूर-दूरे।
सातवाँ, वि (हिं सात) सप्तम-मी-मं (पुं स्त्री न)।
सात्यकि, स पु (स) यादवयोधविशेष, श्रीकृष्णसारथि।

सात्विक, वि (स सात्विक) १ २ सत्त्वगुण, सत्त्वविनिष्पादित प्रधान ४ शुद्धात्मन्, निष्कपट, ऋजु, सरल। सं पु (स) सत्त्व गुणजा अष्टप्रकारा भावा (=स्वेद स्तम्भोऽथ रोमाञ्च स्वरभंगोऽथ वेपथु। वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्विका स्मृता, सा)।
साथ, अव्य (सं सहित) सह, साकं, सार्धं, समं, तृतीया से भी (उ क्रोध के साथ=कोपेन इ) म- -पूर्वक, -पुर सर (उ आदर के साथ=सादर, आदर, पूर्वक पुर सर इ), सं, (उ साथ रहना=सवास)। सं पु सग, सगति (स्त्री) सहचार, साहचर्य, संसर्ग।
—का, मु, व्यजन, अवोपस्कार।
—छूटना, मु, विश्लिष् (दि प अ), व्यप इ (अ प अ)।
—देना, मु, साहाय्य कृ २ रक्ष (भ्वा प से) ३ सह या (अ प अ)।
—ही, मु, अपर च, अन्यच्च, अपि च, किं च, -अतिरिक्तम्।
एक—, मु, युगपद्, समकालम्, यौगपद्येन २ सम्भूय, मिलित्वा।
साथिन, स स्त्री (हिं साथी) सहचरी २ सखी।
साथी, सं पु (हिं साथ) संगिन्, सहचर २ मित्र, सखि (पु)।
सादगी, स स्त्री (फ़ा) साधुता, सरलता, आर्जव, निष्कापट्यं २ आडंबरहीनता।
सादर, वि (स) सगौरव, सविनय। क्रि वि (स र) सप्रश्रयं, सविनयम्।
सादा, वि (फ़ा-द) निष्कपट, निश्छल, सरल, ऋजु, माया-रहित, निर्व्याज, शुद्धात्मन् २ अज्ञ, मूर्ख ३ श्वेत, रंगवर्ण, हीन ४ अक्ष रांकादिरहित, रेखारहित ५ शुद्ध, केवल ६ अलंकाररहित ७ विनीत-अनुद्धत, वेश(ष) ८ अल्पावयव (यंत्रादि)।
सादापन, स पु (फ़ा सादह्) दे 'सादगी'।
सादि, वि (स) सारम्भ, सोपक्रम, आरम्भ उपक्रम,-नव-युक्त।
सादिक़, वि (अ) सत्य, यथार्थ २ शुद्ध, त्रुटिरहित।
सादृश्य, स पु (स न) समता, समानता, साम्य, सदृशता, तुल्यता।

साध[1], स पु, दे 'साधु'।

साध[2], स स्त्री (स उत्साह >) अभिलाष, कामना, लालसा, वाञ्छा।

साधक, स पु (स) सनिष, पादक, समापक, मिद्धिकर, निर्वर्तयितृ २ तपस्विन्, तापस, योगिन् ३ करण, साधन ४ परहितकारिन्, परकार्यसहाय ५ भक्त, उपासक ६ भूतापसारक, दे 'ओझा'।

साधन, स पुं (स न) निष्पादन, विधान, सपादन, करण, अनुष्ठान, समापन, निर्वर्तन २ उपकरण, सामग्री ३ युक्ति (स्त्री), उपाय ४ उपासना, पूजा ५ सहायता ६ धातुशोधन ७ कारण हेतु ८ धन ९ पदार्थ १० सिद्धि (स्त्री)।

साधना, स स्त्री (स) सिद्धि निर्वृत्ति निष्पत्ति (स्त्री) २ आराधना उपासना ३ अभ्यास क्रियासातत्य, नित्यानुष्ठानम्। क्रि स (स साधनं) साध (स्वा प अ, प्रे), सिध (प्रे साधयति) २ निवृत् सपद् समाप् (प्रे), अनुष्ठा (भ्वा प अ) २ विनी (भ्वा प अ) शिक्ष (प्रे) ३ दम् (प्रे दमयति) वशीकृ ४ अभ्यस (दि प से) अभ्यास-व्यवहार कृ ५ नियन्त्र (चु) अनुशास् (अ प से)। स पु तथा भाव, साधन, निवर्तन, सनिष, पादन, अनुष्ठान विनयन, दे 'साधक', 'साधन' इ।

साधर्म्य, स पु (स न) सधर्मता-त्व समान तुल्य धर्मता गुणता।

साधारण, वि (स) सामान्य, विशिष्टता-रहित, प्रायिक प्राकृत मध्यम अवर २ सुकर, सुसाध्य ३ सार्वजनिक सर्वजनीन ४ सदृश, तुल्य।

—धर्म, स पु (स) सार्वजनिकधर्म २ चातुर्वर्ण्यस्य सामान्यधर्म।

—स्त्री, स स्त्री (स) वेश्या।

साधारणत, अव्य (स) सामान्यत, प्रायश, प्रायेण, बहुश (सब अव्य)।

साधारणतया, अव्य (स) दे 'साधारणत'।

साधारणता, सं स्त्री (स) सामान्यता, विशिष्टताऽभाव साधारण्यम्।

साधु, स पु (सं) सन्यासिन, परिव्राजक, महात्मन, तापस, मुनि, यति २ सत्पुरुष, सज्जन, आर्य ३ अभिजात, कुलीन। वि (स) भद्र, उत्तम श्रेष्ठ २ यथार्थ, सत्य, अवितथ ३ प्रशसनीय, स्तुत्य, ४ निपुण ५ अर्ह, योग्य ६ उचित, युक्त।

—वाद, सं पु (स) साधु-वचन-उक्ति (स्त्री), शसात्मकं वचनम्।

—साधु, अव्य (स) धन्य धन्य, सम्यक्-सम्यक, शोभन शोभन, वर वरम्।

साधुता, स स्त्री (स) सज्जनता, श्रेष्ठता, भद्रता आर्यता २ सरलता, आर्जव ३ ४ साधु, चरित धर्म।

साधू, स पु, दे 'साधु'।

साध्य, वि (सं), निष्पादनीय करणीय, अनुष्ठेय, समासव्य २ शक्य, सभाव्य, सभवनीय ३ सुकर, सुगम ४ प्रमाणयितव्य, सत्यापयितव्य, उपपादयितव्य ५ प्रतिकाराह, प्रतिकार्य ६ ज्ञेय। स पु (स) देवता २ गणदेवताभेद ३ साधनीयपदार्थ (न्या)।

साध्वस, स पु (स न) भय २ व्याकुलता।

साध्वी, स स्त्री (स) सती, सच्चरित्रा २ पतिव्रता परायणा।

सानद, वि (स) प्रहृष्ट, मुदित। क्रि वि (स न) सकुशल, सहर्षम्।

सान, स पु (स शाण) शाणी, शाणाश्मन्।

—देना, क्रि स, तिज् (प्रे), नि, शो (दि प अ), तीक्ष्णीकृ, क्ष्णु (अ प से)।

सानना, क्रि स (हि सनना, स सधा से) मर्दनेन समिश्र् (चु), हस्ताभ्यां मृद (क प से, प्रे)-सपीड (चु) २ मलिनयति, कलुषयति-कल्कयति (ना धा) ३ सलिप् (प्रे), सवध (क् प अ)।

सानी[1], स स्त्री (हि सानना) *मिक्तान्नम्।

सानी[2], वि (अ) द्वितीय, अपर २ तुल्य, समान।

ला—, वि (अ) अद्वितीय, अनुपम, अप्रतिम।

सापत्न्य, सं पु (सं न) सपत्नीभाव, सदारत्वम्। (सं पु) सपत्नीसुत २ शत्रु।

साफ़, वि (अ) स्वच्छ, निर्मल दे। २ शुद्ध, केवल ३ निर्दोष, त्रुटिहीन ४ स्पष्ट, विशद ५. श्वेत उज्ज्वल, भास्वर ६ निष्कपट, निश्छल ७ सम, सम-तल रेख ८ निर्विघ्न, निर्बाध ९ अवाक्षरशून्य, लेखरहित। क्रि वि,

निष्कलंक निरपवाद २ प्रच्छन्न, निभृत ३ हानि क्षति विना ४ अत्यन्त नितांत ५ निराहारम्।
—करना, क्रि स, प्रक्षल (चु) प्रमृज्,मृज् (अ प से ,प्रे), धाव (भ्वा प से , चु), निर्णिज् (जु उ अ) २ शुध (प्रे), पू (क्र् उ से), पवित्रीकृ ३ (ऋणादिक) निस्तृ शुध् (प्रे)-अपाकृ।
—गो, वि, स्पष्ट-यथार्थ, भाषिन्-वादिन्।
—गोई, स स्त्री स्पष्ट-यथार्थ भाषिता-वादिता।
—दिल, वि (अ + फ़ा) ऋजु सरल, निष्कपट।
—साफ़, अव्य , स्पष्ट प्रकटम, प्रकाशम् स्फुटं, व्यक्तम् (सब अव्य)।
साफल्य, स पु (स न) सफलता दे २ लाभ।
साफा, स पु (अ साफ़) उष्णीष ष शिरोवेष्टनम्।
साफ़ी, सं स्त्री (अ साफ़) गालनी।
साबन, स पु, दे 'साबुन'।
साबर, सं पु (स शबर) मृग भेद २ शबर चर्मन् (न) ३ वानमृगचर्मन् (न)।
साबिक, वि (अ) पुराण, पुरातन, पूर्व, प्राचीन, प्राक्तन।
साबिका, स पु (अ) व्यवहार, संबंध २ परिचय।
साबित, वि (अ) प्रमाणित, सिद्ध दे।
साबु(बू)त, वि (फ़ा सबूत) संपूर्ण, समस्त, पूर्णांग २ निर्दोष ३ स्थिर।
साबुन, स पु (अ) *फेनल, स्वफेनम्।
साबूदाना, स पु दे 'सागूदाना'।
सामंजस्य, स पु (स न) औचित्यं, योग्यता २ उपयुक्तता ३ अनुकूलता ४ आनुकूल्य, आनुरूप्यम्।
सामंत, स पु (स) वीर, भट, योध, २ नायक, गणाधिपति ३ क्षेत्र,-पति स्वामिन्।
साम, सं पु [स मन् (न)] सामवेद २ गेयवेदमंत्र ३ प्रियवाक्यादिभि सान्त्वन, मधुरभाषणं ४ उपायभेद (राजनीति)।
—वेद, स पु (स) आर्याणां प्रसिद्धो धर्मग्रंथविशेष।
सामक, स पु, दे 'साँवाँ'।
सामग्री, सं स्त्री (स) उपकरणजात, संभार, साधनसमूह, आवश्यकद्रव्याणि (न बहु) २ परिच्छद, उपस्कर।
सामग्र्य, स पु (स न) समग्रता, पूर्णता, समष्टि (स्त्री) २ अनुचर-सेवक,-वर्ग समुदाय ३ उपकरणसंग्रह ४ कोष ५ परिच्छद, उपस्कर।
सामना, स पु (हि सामने) अग्र पूर्व, भाग, पुरः २ स(समा)गम, सम्मिलन, दर्शन, सांमुख्य ३ विरोध, विपक्षता।
—करना, क्रि स, विप्रति स्था (क उ अ), प्रत्यवस्था (भ्वा आ अ) बाध (भ्वा आ से)।
सामने, क्रि वि (स संमुखे) अग्रत, अग्रे, पुर, पुरत, समक्ष, अभि सं,-मुख-मुखे २ उपस्थितौ, विद्यमानतायां ३ तुलनायां, प्रतियोगितया, विरुद्धम्।
—आना या—होना, क्रि अ, अभि-सं,-मुखी भू, समुखं स्था (भ्वा प अ)।
—करना क्रि स, अग्रे पुरत स्था (प्रे), समक्षं नी (भ्वा प अ)।
—से, क्रि वि, अग्रत, पुरस्तात्, पुरत।
आमने—, क्रि वि (अन्योन्यस्य) संमुखे, मुखामुखि, प्रतिमुखम्।
सामयिक, वि (स) कालिक [—की (स्त्री)] काल-समय, विषयक २ सांप्रतिक, इदानींतन, आधुनिक, वर्तमान ३ समयोचित, कालानुरूप।
—पत्र, स पु (सं न) समाचारपत्र, दे।
सम—, वि (स) समकालीन, दे।
सामर्थ्य, स पु स्त्री (स न) धीशक्ति (स्त्री), योग्यता, कार्यक्षमता २ बल, शक्ति (स्त्री) ३ तेजस् (न), पराक्रम ४ शब्द संबंध (व्या)।
सामाजिक, वि (स) सामुदायिक, समाज जनसंध,-संबंधिन् -समाज।
सामान, स पु (फ़ा) दे 'सामग्री' (१ २)। यन्त्राणि, उपकरणानि (दोनों न बहु) ४ दे 'प्रबंध'।
सामान्य, वि (स) दे 'साधारण'। स पु (स न) सादृश्य, समानता २ साधारण, धर्म गुण (वैशेषिक) ३ अर्थालंकार भेद (सा)।
—वनिता, स स्त्री (स) वेश्या, वारांगना।
सामान्यत, क्रि वि (स) दे 'साधारणत'।

सामान्यतया, क्रि वि (स) दे 'साधारणतया'।

सामिग्री, स स्त्री, दे 'सामग्री'।

सामीप्य, सं पु (स न) सान्निध्य, नैकट्यं २ मुक्तिभेद ।

सामुदायिक, वि (स) सामूहिक, सामवायिक।

सामुद्रिक, स पु (स न) *तनुचिह्नविज्ञानम्। वि (स) सामुद्र, समुद्रीय।

साम्य, स पु (स न) समता, समानता, तुल्यता ।

—वाद, स पु (स) समाज-समष्टि, वाद, पाश्चात्य सामाजिकसिद्धांतविशेष ।

साम्राज्य, स पु (स न) आधिपत्य, आधिराज्य, पूर्णाधिकार, दशलक्षाधिपत्य २ महाविस्तृत,-राज्य विषय -राष्ट्रम् ।

सायं, क्रि वि (स) दिनान्ते, सायकाले। स पु, दे 'सायंकाल'।

—काल, स पु (स) सायाह्न, साय -य, सायमव्याममय, रजनीमुखं, प्रदोष, दिवसदिन, अंत अवसान, सन्ध्या, वि वे,-काल ।

—कालीन, वि (स) सायतन (-नी स्त्री), साय, प्रादोषिक वैकालिक(-की स्त्री),सायभव।

—सध्या, स स्त्री (स) पश्चिमा सध्या ।

सायम, स स्त्री, दे 'साइन्स'।

सायक, स पु (स) इषु, बाण २ खड्ग ।

सायण, स पु (स) चतुर्वेदभाष्यकारो माधवपुत्र ।

सायत, स स्त्री, दे 'साइत'।

सायबान, स पु (फा साय बान) प्रघ(घा,ण, अलिंद २ *तृणप्रच्छदिस, *प्रच्छायवद्।

सायल, स पु (अ) प्रश्न,-क(का)र -कृ, प्रष्ट, पृच्छक २ याचक, भिक्षु ३ प्रार्थिन्, आवेदक ४ पद-आकांक्षिन-अन्वेषिन्।

साया, सं पु (फा -यह्) दे 'छाया'।

सायुज्य, स पु (सं न) एकीभाव, ऐक्य, सारूप्य २ मुक्तिभेद ।

सारग, सं पु (सं) मृगभेद २ मृग ३ वाद्यभेद ४ रागिणीभेद ५ धनुस् (न) ६ इषु ७ सर्प ८ रात्री ९ रमणी १० खड्ग ११ मेघ १२ खग १३ मयूर १४ हस १५ चातक १६ भ्रमर १७ सागर १८ कमल १९ चद्र २० श्रीकृष्ण, इ।

—पाणि, स पु (सं) विष्णु ।

—लोचना, स स्त्री (स) मृगलोचनी, हरिणाक्षी, कुरगाक्षी, मृगनयनी।

सारंगिया, स पु (सं सारगी>)सारग(गी)-वादक ।

सारंगी, स स्त्री (सं) शारगी, सारग, पिनाकी, वाद्यभेद ।

सार, स पु (स पु न) तत्त्व, मुख्यांश, स्थिरांश, मूल, मूलवस्तु (न) २ भाव, तात्पर्य, निष्कर्ष, पिंडित निष्कृष्ट निर्गलित, अर्थ ३ मज्जा, अस्थि,-ज-सभव स्नेह -तेजस् (न)। (स पु) रस, द्रव, निर्यास २ सक्षेप, सग्रह ३ शक्ति (स्त्री), बल ४ वीर्य, पराक्रम ५ वज्रक्षार ६ वायु ७ रोग ८ पाशक ९ दध्युत्तर १० अर्थालंकारभेद (सा)। (स न) जल २ धन ३ नवनीत ४ अमृत ५ लोह ६ वनम्। वि (स) उत्तम, श्रेष्ठ २ दृढ, बलवत् ३ न्याय्य, धर्म्य।

—गर्भित, वि (स) तत्त्वपूर्ण, सार, युक्त वत्।

—वर्जित, वि (स) निस्सार, तत्त्वहीन।

सारथि थी, सं पु (स थि) सूत, हयज्ञ, नि,यन्तृ, नियामक, क्षत्तृ, प्राजितृ, दक्षिणस्थ, रथ,-नागर -कुटुंबिन्।

सारल्य, स पु (स न) सरलता, दे ।

सारस, स पु (स) पुष्कराह्व, लक्ष्मण, लक्षण, कामिन्, रसिक, सरसीक २ हस ३ चद्र । (सारसी स्त्री)।

सारस्वत, सं पु (स) ब्राह्मणजातिभेद २ व्याकरणग्रन्थविशेष । वि (सं) सारस्वतीय।

सारांश, सं पु (स) सार, निष्कर्ष, पिंडितार्थ २ अभिप्राय, आशय ३ परिणाम, फल ४ उपसहार ।

सारा, वि (स सर्व) सपूर्ण, समग्र, समस्त।

सारिका, स स्त्री (सं) सारी, शारीरिका, चित्रलोचना, पीतपादा, कलहप्रिया, मधुरालापा।

सारूप्य, स पु (सं न) तुल्य,-सम-स ण्य, रूपता, तुल्यता, समता २ मोक्षभेद ।

सार्थ, वि (सं) सार्थक, साभिप्राय २ समान तुल्य,-अर्थक अर्थिन् (शब्दादि) ३ धनिन्, धनाढ्य। सं पु (सं) धनाढ्य, धनिक २ यात्रि-यात्रिक,-समूह -समुदाय

३ तीर्थयात्रिरा (बहु) ४ पण्याजीव, सार्थिक, व्यापारिन्।

सार्थक, वि (स) सार्थ, अर्थ-वत्-युक्त-पूर्ण २ सफल, पूर्णकाम ३ गुणकारिन्, उपयोगिन्, हितकर।

सार्थकता, स स्त्री (स) अर्थवत्ता २ सफलता, सिद्धि (स्त्री)।

सार्दूल, स पु (सं शार्दूल) सिंह।

सार्वकालिक, वि (स) सर्वकालसम्बन्धिन्, शाश्वतिक।

सार्वजनिक, वि (सं) सर्वजनहित, स(सा)र्वजनीन सार्वलौकिक।

सार्वत्रिक, वि (सं) सर्वत्र, सर्वव्यापिन्।

सार्वदेशिक, वि (सं) सर्वसमय, देशविषयक।

सार्वभौतिक, वि (स) चराचरसम्बन्धिन्।

सार्वभौम, स पु (स) चक्रवर्तिन्, नृपाग्रणी, सर्वभूमीश्वर, एकराज्‌मन। वि (स) अखिल भूमण्डलविषयक।

सार्वलौकिक, वि (सं) सर्वलोकसम्बन्धिन् २ सार्वभौम।

साल¹, स पु (स) सर्ज, चारपा, अग्नि वल्लभ, राल्निर्यास।

साल², स पु स्त्री (हिं सालना) छिद्र, विवर १ व्रण, क्षत ३ पीडा, व्यथा।

साल³, स पु (फा) दे 'वर्ष'।

—गिरह, सं स्त्री (फा) जन्म, दिन दिवस, नववर्षारम्भ।

सालग्राम, स पु, दे 'शालग्राम'।

सालन, सं पु (स सलवण>) व्यंजन, दे 'भाजी'।

सालना, क्रि स तथा क्रि अ (सं शल्य>) दे 'चुभाना' तथा 'चुभन'।

सालममिश्री, स स्त्री (अ सालब+मिश्री = मिश्र देश का) सुधामूली, वीरकन्दा, अमृतोत्था।

सालसा, सं पु (अ सार्सेपेरिल्ला) रक्तशोधक-द्रव्यभेद।

साला, स पु (स श्याल-लक) श्वशुर्य, श्यालकीय बन्धुवीर, पत्नीभ्रातृ।

सालाना, वि (फा) वार्षिक, दे।

सालिक, वि (अ) पथिक, पान्थ, अध्वग, धनिन, धार्मिक।

सालिबमिश्री, सं स्त्री, दे 'सालममिश्री'।

सालिम, वि (अ) समग्र, सं पूर्ण, अखण्ड, अक्षत।

सालिस, सं पु (अ) निर्णेतृ, मध्यस्थ, प्रमाणपुरुष।

सालिसी, सं स्त्री (अ) माध्यस्थ्य, निर्णय २ दे 'पंचायत'।

साली, स स्त्री (स श्याली) श्यालिका, श्वशुरदुहिता, पत्नीभगिनी, (नारी) यवानी, सर्याली, (बड़ी) कुली।

सालू, स पु (देश) मांगल्यो रक्तवस्त्रभेद।

सालोत्री, सं पु, दे 'शालिहोत्री'।

सावधान, वि (सं) अवहित, दत्तावधान, समाहित, त्यक्तप्रमाद, सहित, जागरूक, दक्ष।

—करना, क्रि स, प्र + बुध् (प्रे)-प्रबुध् (प्रे)।

—होना, क्रि अ, सावधान अवहित-जागरूक (वि) भू २ अवधा (जु उ अ), मनो युज् (चु)।

सावधानता, स स्त्री (स) अवधान, सतर्कता, जागरूकता, मनोयोग, अभिनिवेश।

सावन, स पु (स श्रावण) नभ, नभस् (पु), श्रावणिक।

—की झड़ी, स स्त्री, श्रावणिकी सततवृष्टि (स्त्री)।

—हरे न भादों सूखे, मु, अपरिवर्तनदशा, सदैकरसता।

सावनी, स स्त्री, दे 'श्रावणी'।

सावित्री, स स्त्री (स) गायत्री २ सरस्वती ३ ब्रह्मणः पत्नी ४ उपनयनसंस्कार ५. दक्षकन्या, धर्मस्य पत्नी ६ सत्यवतः नृपस्य पत्नी ७ सधवा नारी ८ यमुना।

—सूत, स पु (सं न) यज्ञोपवीत, द।

साष्टांग, वि (सं) अष्टांगयुत।

—प्रणाम, स पु (स) अष्टांगपात, साष्टांग नमस्कार, दे 'अष्टांग'।

—करना, मु, दूरात् परिहृ (भ्वा प अ)।

सास, स स्त्री (सं श्वश्रू) माधुधी (स्त्री), २ पति-पत्नी-प्रसू (स्त्री)-जननी।

सासना, स स्त्री (सं) शासन।

साहु, स पु (स साधु) सज्जन, सत्पुरुष, आर्य २ वणिज्, अर्थपति ३ धनिन्, श्रेष्ठिन्।

साहब, स पु, दे 'साहिब'।

साहस, सं पु (स न) धृष्टता, निर्भीकता, प्रागल्भता, धैर्य, धार्ष्ट्य २ दुर्दम, बलात्कार

हरण ३ कुकृत्य ४ दर्प ५ क्रूरता, निर्दयता ६ ब्रह्मचौर,काननं (न) ७ परदारगमन ८ बलात्कार ९ दंड १० अर्थ धन, दर्प।
साहसांक, स पु (स) विक्रमादित्य, शल्मलि ।
साहसिक, स पु (स) साहसिन्, आततायिन, वधोद्यत २ लुंठक, दस्यु ३ परदारगामिन् । वि (सं) साहसवत्, पराक्रमिन् वीर २ निर्भीक, प्रगल्भ ३ मिथ्याभाषिन्-वादिन् ४ परुषभाषिन्, बहुवादिन् ५ हठकारिन् ।
साहसी, वि (स सिन्) दे 'साहसिक' वि (१२)।
साहाय्य, स पु (स न) सहायता, दे ।
साहित्य, स पु (स न) वाङ्मय, सारस्वत ग्रंथसमूह सगति (स्त्री), संमिलन, सह १४ साहित्य अलंकार, शास्त्रम् ।
साहित्यिक, वि (स) साहित्यसंबंधिन, वाङ्मय विषयक स पुं, साहित्य,सेवक ,सेविन् ।
साहिब, स पु (अ) मित्र, सुहृद् २ प्रभु, स्वामिन् ३ परमेश्वर ४ महाशय, श्रीमत् ५ श्वेतवर्णो वैदेशिक ।
—**इक़बाल**, वि (अ) सपन्न, समृद्ध ।
—**ज़ादा**, स पु (अ + फा) पुत्र, तनुजात ।
—**दिमाग़**, वि (अ) धी-बुद्धि,मत् ।
—**सलामत**, स स्त्री (अ) मिथ प्रणाम, पारस्परिकनमस्कार २ परिचय ।
साहिबा, स स्त्री (अ) स्वामिनी, ईश्वरी ३ आर्या, कुलांगना २ देवी, भट्टिनी ४ अत्र तत्र भवती, भद्रा, भवती, आमती ।
साहिल, सं पु (अ) वेला, तट तटम् ।
साही, स स्त्री (स शल्यकी) शल्य, शल्यक, श्वाविध, क्रकचपाद, शल्यमृग, विलेशय, हेदार ।
साहु ह, स पु (स साधु) सज्जन, आर्य, भद्रमनुष्य २ कुसीदिक,दिन, वार्धुषिक ।
साहु(हू)ल, स पु (फा शाकूल) लम्बक, लम्बसूत्रम् ।
साहूकार, स पु (हि साहु) धनिक, धनाढ्य २ सार्थवाह, सार्थिक, श्रेष्ठिन ३ कुसीदिन, वार्धुषिक ।
साहूकारा, सं पु (हि साहूकार) वृद्धि, जीवन-जीविका १ अर्थव्यवसाय ३ आपण ।

साहूकारी, स स्त्री (हि साहूकार) दे 'साहूकारा' (१२)।
सिंगा, स पुं (स शृंग>) दे 'नरसिंहा'।
सिंगार, स पु (स शृंगार दे)।
—**दान**, स पु (हिं + फा) *शृंगारधान, *प्रसाधनपिटकम् ।
—**हाट**, स स्त्री, शृंगारहट्ट वेश्यापण ।
सिंगारिया, सं पुं (हि सिंगार) शृंगारकार, प्रसाधक ।
सिंगिया, सं पु (स शृंगिन्) विषभेद ।
सिंगौटी, स स्त्री (हि सींग) (वृषादीनां) शृंगाभूषणम् ।
सिंगौटी, स स्त्री (हि सिंगार) दे 'सिंगारदान'।
सिंघ, स पु, दे 'सिंह'।
सिंघण, स पुं (स न) सिंघाणम्, सिंघाणी सिंघाणकम्, नासिकामलम् २ अयोमलम्, अयोरस ।
सिंघाड़ा, सं पु (स शृंगाटक) शृंगिका, जलफलं, कटकफलक, कंटकमूल, शुक्लदुग्ध ।
सिंघासन, सं पु, दे 'सिंहासन'।
सिंचाई, स स्त्री (हि सींचना) सेक, सेचन, जलप्लावन, सिक्ति (स्त्री) २ अभिषव, उक्षण ३ सेचन प्रोक्षण, भृति (स्त्री) मूल्य।
सिंचित, वि, दे 'सींचा हुआ'।
सिंडिकेट, स पु (अ) व्यापार समिति (स्त्री) व्यवहारसघ २ विश्वविद्यालय प्रबन्धसमिति (स्त्री)।
सिंदूर, सं पु (सं न) सीमन्तक, मांगल्य, गणेशभूषण, शृंगारक, सौभाग्य, नाग,-ज संभव,गर्भ, अरुण, शोण, रक्तम् ।
सिंदूरिया-री, वि (स सिंदूर>) शोण सिंदूर,-वर्ण ।
सिंध, स पु (स सिंधु) सिंधुदेश, भारत वर्षस्य प्रान्तविशेष । स स्त्री (सं पु) भारतवर्षान्तर्गतनदविशेष ।
—**सागर**, सं पु (स सिंधुसागर) सिंधु वितस्तामध्यवर्तिप्रदेश ।
सिंधी, स स्त्री (हि सिंध) सैन्धवी, सिंधुदेश भाषा। स पु, सिंधु देशीय वासिन्, सैन्धवा (प्राय बहु) २ सैंधव (घोटा)।

सिंधु, स पु (स) सागर २ नद ३ नद विशेष ४ प्रांतविशेष, सिंधुदेश ।

—कन्या, स स्त्री (स) सिंधु-जा सुता, लक्ष्मी (स्त्री) ।

—पुत्र, सं पु (सं) चंद्र ।

—माता, स स्त्री (स तृ) सरस्वती (नदी) ।

सिंधुर, स पुं (स) गज, द्विप ।

—वदन, स पु (सं) गजानन, गणेश ।

सिंधोरा, स पु (स सिंदूर>) सिंदूरपुट ।

सिंह, स पु (सं) हरि, हर्यक्ष, मृग, राज इन्द्र अधिप, पञ्च आस्य शिख मुख, केशरिन्, महा, नाद वीर, नखिन्, क्रव्याद २ लेय, पंचमराशि (ज्यो) ३ वीर श्रेष्ठ (उ पुरुषसिंह) ४ दे 'सिकस' ।

—के(वा)सर स पु (स पु न) सटन्धा २ बकुलवृक्ष ।

—नाद, सं पु (स) सिंह,गजन गर्जना ध्वनि २ क्ष्वेडा, रणोत्साहजरव ३ नि शङ्कवचनम् ।

—पौर, स पु (स + हिं) सिंहद्वार, प्रवेशनम् ।

सिंहनी, स पु (हिं सिंह) नखिनी, सिंही, पञ्चमुखी ।

सिंहल, स पु (स) स्वर्णद्वीप-प (सीलोन या लंका) ।

सिंहली, वि (स सिंहल>) सैंहल २ सिंहल वासिन् ।

सिंहावलोकन, – पु (स न) सिंहावलोकित २ पूर्व, अनुदर्शन-वृत्तान्तविमर्श ३ पद्यरचना रीतिभेद ।

सिंहासन, स पुं (स न) नृपन्राज-,आसनम् ।

—पर बैठना, क्रि अ, सिंहासने उपविश् (तु प अ), राज्ये अभिषिच् (कर्म) ।

—से उतारना, क्रि स, राज्यात् भ्रश् च्यु (प्रे) ।

सिंहिका, स स्त्री (स) राहुमातृ, राक्षसी विशेष ।

—सुत, स पु (स) सैंहिकेय, राहु ।

सिंहिनी, स स्त्री दे 'सिंहनी' ।

सिंही, स स्त्री (स) दे 'सिंहनी' २ सिंहिका ३ भृंग, वाद्यभेद ।

सिआर, स पु (स शृगाल) दे 'गादड' ।

सिकंजबीन, स स्त्री (फा) दे 'शिकंजबीन' ।

सिकड़ी, सं स्त्री (स॰ शृंखला) द्वारकपाट, शृंखला, दे 'कुंडी' २ स्वर्णभूषणभेद ३ काञ्ची, मेखला ।

सिकता, सं स्त्री (सं बहु) वालुका (स्त्री बहु), दे 'रेत' २ अश्मरी, दे 'पथरी' ३ शर्करा, सिता ।

—मेह, स पु (स) प्रमेहभेद ।

सिकत्तर, स पु (अ सेक्रेटरी दे) ।

सिकलीगर, स पु (अ सैकल+फा गर) दे 'सैकलगर' ।

सिकहर, स पु (स शिक्य+हर) शिक्यं क्वा शिच (स्त्री), काच, दे 'छींका' ।

सिकुड़न, स स्त्री (हिं सिकुड़ना) सङ्कोचन आकुञ्चन २ दे 'शिकन' ।

सिकुड़ना, क्रि अ (हिं सिकोड़ना) सङ्कुच् (भ्वा तु प से), आकुञ्च् (भ्वा आ से, तु प से), सङ्ह (कर्म) २ वलिमत् भू (दि आ से) ३ अल्पी-न्यूनीभू ।

सिकोड़ना, क्रि स (सं सङ्कोचन) संकुच् (प्रे) सङ्ह (भ्वा प अ), आकुञ्च् (प्रे) २ सङ्क्षिप् (तु प अ), अल्पीकृ ३ वलिन(वि) कृ । सं पु तथा भाव, सङ्कोचन, सङ्हरण, आकुञ्चन, सक्षेपण, अल्पीकरणम् ।

सिक्का, स पु (अ) टङ्क, नाणक, मुद्रा २ पदकम् ।

—जमाना या बैठाना, मु, शासन प्रभुत्व-आधिपत्य स्था (प्रे), वशं कृ, अधिष्ठा (भ्वा प अ) २ प्रताप प्रभाव प्रसृ (प्रे) ।

सिक्ख, स पु (स शिष्य) अन्तेवासिन्, छात्र २ गुरुनानकमतानुयायिन्, *सिक्ख ।

—मत, स पु, शिष्य सिक्ख, मत सम्प्रदाय – धर्म, नानकपथ ।

सिक्त, वि (स) अभ्युक्षित २ कृतसेचन, आर्द्र, क्लिन्न, दे 'सींचना' ।

सिख, स स्त्री (स शिक्षा) उपदेश ।

सिखलाना } क्रि स, व 'सीखना' के प्रे
सिखाना } रूप ।

सिखरन, स पु (अ) तमालपत्रवर्ति (स्त्री) ।

सिगार, स पु (अ) तमालपत्रवर्तिका ।

सिजदा, सं पु (अ) प्रणाम, नमस्कार ।

सिटकिनी, स स्त्री (अनु) दे 'चटखनी' ।

सिटपिटाना, क्रि अ (अनु) दे 'सिट्टीपिट्टी भूलना' २ क्लिद्(भ्वा आ से), दोला

यते (ना धा), म्रशी (अ आ मे)।

सिटी, स स्त्री (अं) नगर-री, पुर-री।

सिट्टा, स पु (देश) कणिश, मञ्जरी, दे 'भुट्टा' तथा 'बाली' (अन्न की)।

सिट्टी, स स्त्री (अनु सीटना) वाक्पाटवम्।

—पिट्टी भूलना, मु, व्यामुह (द प वे), किंकर्तव्य मूढ (वि) भू (दि आ से), सम्भ्रम (भ्वा दि प से)।

सिठनी, स स्त्री (स अशिष्ट >) वैवाहिक-गालि (स्त्री), *गालिगीतिका।

सिड, स स्त्री (हिं सिड़ी) उन्माद वातुलता २ दे 'धुन'।

—बिल्ला, स पु (हिं सिड़ी+बिल्ला) उन्मत्त २ मूर्ख।

सिड़ी, वि (स शृणि >) उन्मत्त, वातुल २ दृढाग्रहिन ३ स्वेच्छाचारिन्।

सितबर, स पु (अं) भाद्रपदाश्विन भाग लीयो नवममास।

सित, वि (स) श्वेत शुक्ल २ शुभ्र,भास्वर ३ निर्मल, स्वच्छ। स पु (स) शुक्रग्रह २ शुक्लपक्ष ३ सिता, शर्करा ४ रजतम्।

—च्छद, स पु (स) हंस, सितपक्ष।

—भानु, स पु (स) सितांशु, चन्द्र।

सितम, स पु (फा) अर्दन, पीडन, नैष्ठुर्य, क्रौर्य २ अन्याय, अनीति (स्त्री)।

—गर, स पु (फा) निष्ठुर, क्रूरचित्त, अनर्थकर २ अन्यायशील।

—ढाना, क्रि स, पीड् (चु), अर्द् (भ्वा प से, प्रे)।

सितरी-ली, स स्त्री (स शीतल >)शीतल प्रस्वेद।

सितॉं, स पु (फा) स्थान, स्थलम् २ निवास, स्थानम् ३ देश।

सितांशु, सं पु (स) चन्द्र, सोम।

सिता, स स्त्री (सं) दे 'चीनी' २ दे 'शक्कर' ३ मल्लिका ४ चन्द्रिका।

—खंड, स पु (स) मधुशर्करा २ दे 'मिश्री'।

सितार, सं पु (स सप्त+तार) वीणा, वल्लकी, विपंची, (सात तारोंवाला) परिवादिनी।

—बाज, सं पु (हिं+फा) वीणावादक।

सितारा, स पु (फा र) तारा, तारका, भं, नक्षत्र, रात्रिज, उडु (स्त्री न) २ भाग्य, दैव ३ *सितार, वाद्यभेद।

—चमकना या बलंद होना, मु, भाग्यम् उत्+इ (अ प अ), भाग्य पुण्य फल् (भ्वा प से)।

सितोपल, स पु (स) कठिना, दे खड़िया (स पु) स्फटिक, सितमणि।

सितोपला, स स्त्री (स) शर्करा दे 'शक्कर' २ दे 'चीनी' ३ सितारखंड, दे 'मिश्री'।

सिद्ध, वि (स) निष्पन्न,पक्व पाकित, साधित, अनुष्ठित, कृत २ प्राप्त, उपलब्ध ३ कृतकृत्य, सफल ४ अतिकुशल, सुनिपुण ५ दिव्यशक्ति युत ६ योगविभूतिश ७ मोक्षाधिकारिन् ८ प्रमाणित, साधित ९ निर्णीत १० शोधित ११ अनुकूल १२ पक्व, श्रुत, श्राण १३ प्रख्यात १४ सञ्जो, भूत कृत, उपक्लृप्त, १५ प्रस्तुत, उपस्थित। सं पु (स) मुनि, ऋषि, पुण्यवत, योगिन्, महात्मन् २ देवयोनिभेद।

—करना, क्रि स, साध (भ्वा प अ या प्रे), सिध (प्रे, साधयति) सपद् (प्रे) २ मन्त्रे वशीकृ ३ प्रमाणीकृ, सत्याकृ।

—होना, क्रि अ, सिध् (दि प अ) सम्-निष्, पद् (दि आ अ) २ मन्त्रै वशीभू ३ प्रमाणीकृ (कम)।

—हस्त, वि (सं) प्रवीण, कुशल, पटु, निपुण।

सिद्धांत, सं पु (सं) राद्धान्त, पूर्वपक्ष निरस्य स्थापित मत २ तत्त्व, मर्म, वाद।

—पक्ष, स पु (स) तर्कसगत-युक्तियुक्त, पक्ष मतम्।

सिद्धांती, स पु (सं तिन्) मीमांसक, तार्किक २ शास्त्रविद् ३ सिद्धान्त नियम, निष्ठ।

सिद्धार्थ, वि (स) आप्त पूर्ण, काम, कृतकृत्य। स पु (स) गौतमबुद्ध।

सिद्धि, स स्त्री (सं) निष्पत्ति, समाप्ति (स्त्री), पूर्णता २ साफल्य, कृतकार्यता ३ योगजा दिव्यशक्ति (स्त्री), विभूति (स्त्री) (योग की आठ सिद्धियाँ —अणिमा लघिमा प्राप्ति प्राकाम्य महिमा तथा। ईशित्व च वशित्वं च सर्वकामावसायिता॥) ४ समृद्धि (स्त्री), भाग्योदय ५ निर्णय ६ निश्चय ७ मोक्ष ८ नैपुण्यं, दाक्ष्यम्,

सिधाई, सं स्त्री (हिं सीधा) सरलता, ऋजुता, सारल्य, आर्जवम्।

सिधारना, क्रि अ (स सिद्ध) प्रस्था (भ्वा आ अ), प्रया (अ प अ) २ प्रइ (अ प अ), मृ (तु आ अ), दे 'मरना'।

सिन, सिन्न, स पु (अ) वयस्-आयुस (न), दे 'उम्र'।

सिनक, स स्त्री (स सिंहा(घा)णक) नासा नासिका-मल, सिंघ(घा)ण, दे 'रेंट'।

सिनकना, क्रि स (हि सिनक) सिंघण सु (प्रे), नासिका शुध (प्रे)।

सिनेट, स स्त्री, दे 'सीनेट'।

सिनेमा, स पु (अ) चलचित्र, गृह शाला, २ चलचित्रम्, चित्रपट।

सिब्री, स स्त्री (फा शीरीनी) दे 'मिठाई'।

सिपर, स स्त्री (फा) चर्मपरीट, खेटक, ढाल, दे।

सिपाह, स स्त्री (फा) सेना, सैन्यम्।

—गिरी, स स्त्री (फा) युद्धव्यवसाय, सैनिकवृत्ति (स्त्री)।

—सालार, स पु (फा) प्रधान, सेनापति सेनानी चमूपति।

सिपाही, स पु (फा) सैनिक, योध, योद्धृ, भट २ राजपुरुष, यष्टि-दड, धर, रक्षिन, शान्तिरक्षक, रक्षापुरुष।

सिपुर्द, दे 'सुपुर्द'।

सिप्रा, स स्त्री (स) उज्जयिनीसमीपवर्तिनदी विशेष।

सिफ्त, स स्त्री (अ) गुण, विशेषता २ लक्षण ३ स्वभाव, धर्म।

सिफर, स पु (अ) शून्य, बिंदु, खम्।

सिफारिश, स स्त्री (फा) गुणवर्णन, प्रशसन २ अनुशसा, परकार्यसिद्ध्यर्थमनुरोध ३ प्रशसा, पत्र-लेख।

—करना, क्रि स, प्रशस (भ्वा प से), गुणान् वर्ण् (चु) २ परकार्यसिद्ध्यै अनुरुध (रु अ अ), अनुशस (भ्वा प से)।

सिफारिशी, वि (फा) गुणश्लाघिन् प्रशसासक।

—टट्टू, स पु (फा + हि) परप्रभावलब्धाधिकार, परानुग्रहनियुक्त, गुणहीन।

सिमटना, क्रि अ (स समित) आकुच् सकुच् समिप-सह (कर्म), सकुचित भू, दे 'सिकुडना'।

सिमेटना, क्रि स, दे 'समेटना'।

सियापा, स पु (फा सियाहपोश) सविलाप, सपरिदेवन-ना।

सियार, स पु (स शृगाल) जबुक, दे 'गीदड'।

सिर, स पु [स शिरस् (न)] शीर्ष, शीर्षक, मस्तक -क, मूर्धन् (पु), मौलि (पु स्त्री), मुड -ड, उत्तमाङ्ग, अग, शिर २ अग्र, शिखर, शिखा सानु (पु न) शृङ्ग।

—कटा, वि, छिन्न, शीर्ष मस्तक शिर।

—का घूमना, स पु, भ्र(भ्रा)मर, भ्रम भ्रमि (स्त्री) घूर्णि (स्त्री)।

—का दर्द, स पु, शिर, शूल पीडा, शिरोवेदना।

—के बल, क्रि वि, अवाक्शिर, अधोशीर्षम्।

—गुथी, स स्त्री, *शिरग्रथन आर्यागामोद्वाहिकरीतिविशेष।

—चढा, वि, दुर्ललित, अतिलालित, दृप्त, उत्सिक्त।

—मुडा, *स पु, मुड, लूनकेश, मुण्डितशिर।*

—आँखों पर होना, मु, शिरोधार्य(वि) वृत् (भ्वा आ से), सहर्ष स्वीकार्य(वि) वृत्।

—आँखों पर बैठाना, मु, अत्यन्त सत्कृ, अत्यर्थं सम्मन्(प्रे)-आदृ (तु आ अ)।

—उतारना या काटना, मु, शिर छिद् (रु प अ), मस्तक कृत् (तु प से), शिरश्छेद कृ।

—खाजा करना, मु, कण्ठ नद (चु), परुष प्रह (भ्वा प अ)।

—चढाना, मु, दृप्त-उत्सिक्त-अवलिप्त विधा (जु उ अ) २ अत्यन्त लल् (चु)।

—झुकाना, मु, नम् (भ्वा प अ), अभिवद् (प्रे)।

—धुनना, मु, शुच (भ्वा प से) सशीर्षता हस्त रुद् (अ प से)।

—नीचा करना, मु, त्रप् (भ्वा आ से), लज्ज् (तु आ से)।

—पर, मु, समीपस्थे, निकटे।

—पर खून सवार होना, मु, जिघांसाविष्ट (व) वृत् (भ्वा आ से), वधोद्यत (वि) भू।

—पर पडना, मु, *आपतित वृत् (भ्वा प से),* उपनम् (भ्वा प अ, षष्ठी के साथ)।

—पर लेना, मु, उत्तरदायित्व उररीकृ, भार स्वीकृ।

—परस्ती करना मु, अनु प्रति पा (प्रे पालयति) सद्भप (प्रे), साहय्य कृ ।
—पीटना, मु दे 'सिर धुनना' ।
—भारी होना, मु भ्रा रेण घूर्णा वा पीड् (कर्म) २ शिरोवेदना वृत ।
—मारना, मु, अत्यंत प्रयत् (भ्वा आ से) भूरि परिश्रम् (दि प से) २ सपरिश्रम अविष (दि प से) विदि (स्वा उ अ) ।
—मुँडाना, मु, परिव्रज (भ्वा प से), सन्यस (दि प से) ।
—मूँडना, मु छुट् (भ्वा प से, चु), छलेन अपह (भ्वा प अ) ।
—सफ़ेद होना, मु, केशा धवलीभू, पलित शीर्ष (वि) जन् (दि आ से) ।
—से कफन बाँधना, मु, निधनोद्यत (वि) भू मरणाय सज्जीभू ।
—से पाँव तक, मु आमूलचूल, आपादशीर्ष, आनखशिखम् ।
—होना, मु, कलहायते (ना धा), कलहोद्यत (वि) भू ।
बिना—पैर का, वि, निराधार, निर्मूल २ असंबद्ध, अप्रासंगिक, असंगत ।
सिरका, स पु (फा) शुक्त, चौक्तिकम् ।
सिरकी, स स्त्री (हिं सरकंडा) शरकाड, क्षुरिकापत्र ३ शरकांड निर्मितरिणी प्रतिसीरा ।
सिरजनहार, स पु (स सर्जन>) स्रष्टृ, जगत्कर्तृ, विधातृ (सब पु) ।
सिरताज, सं पु (हिं+फा) किरीट २ मु(म)कुट दे २ शिरोमणि, अग्रणी, पुरोगा, श्रेष्ठ, मुख्य, प्रधानम् ।
सिरनामा, स पु, दे 'सरनामा' ।
सिरपेच, स पु (फा) उष्णीष प दे 'पगड़ी' ।
सिरहाना, स पुं (स शिर+धान>) शिरोधानम् (न), खट्वादीना शिरोऽग्र, भाग २ उपधान, सुगंधि, उपबर्हणं, उच्छीर्षं, बालिश, मसूरक ।
सिरा, स पु (स शिरस>) अन्त, प्रांत, अवधि, सीमा २ ऊर्ध्वं शीर्ष भाग, शिखा, शिखर ३ अत्य अन्तिम भाग ४ आद्य आदिम भाग ५ अग्र, अग्रभाग ६ अणी, कोटि (स्त्री) अश्रि कोटि (स्त्री) ।
सिरिच, सं स्त्री (अ) ...दे 'पिचकारी' ।

सिरोपाव, स पु (स शिर पाद>) सम्मान वेश प ।
सिरोही, सं स्त्री (देश०) सिरोहीनगर निर्मित खड्ग, शिरोनी ।
सिर्फ़, क्रि वि (अ) दे 'केवल' ।
सिर्री, वि, दे 'सिड़ी' ।
सिल, सिला, सं स्त्री (सं शिला) पाषाण, प्रस्तर, उपल २ शैल, शिलोच्चय, महा प्रस्तर ३ शिला, पट्ट फलक ।
—बट्टा, स पुं, शिलावटक, *पेषणपाषाणौ (दि) ।
सिलना, क्रि अ (हिं सीना) सिव् (कर्म) ।
सिलपट, वि (स शिलापट्ट>) सम, समस्थ, सपाट ।
सिलबट्टा, स पु (स शिला+वटक>) शिलावटककौ, पेषण, पाषाणौ प्रस्तरौ ।
सिलवट, स स्त्री (हिं सिलना) वलि (स्त्री), वस्त्रभंग, पुटसिद्धम् ।
सिलवाई, सं स्त्री (हिं सिलवाना) सीवन सेवन मृति, भृति भृत्या कर्मण्या ।
सिलवाना, (हिं सीना) सिव् (प्रे) ।
सिलसिला, स पु (अ) क्रम, आनुपूर्वी, परंपरा २ पंक्ति राजि श्रेणि (स्त्री), ३ शृंखला ४. व्यवस्था, सविधानं, विन्यास ५ वंशानुक्रम कुलपरंपरा ।
—वार, क्रि वि (अ+फा) क्रमेण, क्रमशः, यथाक्रम, आनुपूर्व्या, अनुपूर्वश ।
सिलह, स पु (अ सिलाह) अस्त्र, शस्त्रम् ।
—ख़ाना, स पु (अ+फा) शस्त्रशाला, अस्त्रागारम् ।
—पोश, वि, सन्नद्ध, शस्त्रास्त्रसज्ज ।
सिला[1], सं पु (अ) पुरस्कार, पारितोषिकम् २ परिणाम, फलम् ।
सिला[2], स स्त्री, दे 'शिला' ।
सिलाई, सं स्त्री (हिं सिलाना) सन्धि, सीवन २ सीति(ती)कर्म, स्यूति (स्त्री) ३ दे 'सिलवाई' ।
सिलाजीत, सं पु [स शिलाजतु (न)] अद्रिज, अश्मजं, दे 'शिलाजीत' ।
सिलारस, स पुं (सं सिल्हकरस) द्र(म)व्य रो,द्रव रस निर्यास ।
सिलिंडर, सं पुं (अं) स्तंभ वर्तुल (पात्रभेद) ।

सिली, सिल्ली, म स्त्री (हिं सिल) शाण स्त्री, सानक, शाणाश्मन् (पु)।
सिलौट, सिलौटा, स पु (हिं सिल+बट्टा) शिला-पट्ट फलक २ दे 'सिलबट्टा'।
सिवई, म स्त्री, दे 'सेंवई'।
सिवान, स पु (स सीमान्त) सीमा, प्रान्त, पर्यंत।
सिवाय, क्रि वि (अ सिवा) अपि च, अपर च २ ऋते, विना, अन्तरेण, विहाय, वर्जयित्वा। वि, अधिक, भूयस २ अपेक्षाधिक।
सिवार-ल, स स्त्री पु (स शैवाल) शैवाल — ल, जल-केश नीली-नीलिका, शैवल, मल्लि-कुन्तलम्।
सिविल, वि (अ) नागरिक, पौर २ सभ्य, शिष्ट।
—डिसओबिडिएंस, स स्त्री (अ) सविनय अवज्ञा।
—सर्जन, स पु (अ) नागरिक शल्यवैद्य।
—सर्विस, स स्त्री (अ) नागरिकसेवा।
सिसकना, क्रि अ (अनु) सान्द्रं रुद् (अ प से) २ निधनासन्न (वि) कृत्वा (भ्वा आ से)।
सिसकी, स स्त्री (हिं सिसकना) गद्गद-ध्वनि, गद्गदध्वनि।
—भरना या लेना, क्रि अ, दे 'सिसकना'।
सिहरा, म पु, दे 'सेहरा'।
सींक, म स्त्री (स इषीका) इषिका, तृणधम, सूक्ष्मनाल-सूक्ष्मकाण्डम्।
सींकर, स पु (हिं सींक) इषीकापुष्पम्।
सींकिया, स पु (हिं सींक) सरेखो वस्त्रभेद।
सींग, म पु (स शृङ्ग) विषाण-म्, कूणिका २ काहल-ला, शृङ्गमयो वाद्यभेद।
(किसी के सिर पर)—**होना** मु, वैशिष्ट्य वृत् (भ्वा आ से)।
—दिखाना, मु, अङ्गुष्ठं दृश् (प्रे), किमपि दत्वा हस्म् (भ्वा प से)।
—निकलना, मु, (पशु) युवा जन् (दि आ म) २ उन्मद् (दि प से), दे 'इतराना'।
—समाना, मु, आश्रय शरण लभ् (कर्म)।
सींगी, स स्त्री (हिं सींग) दे 'सींग' (२)। २ रक्तचूषणशृङ्ग, रक्तचूषणी ३ शृङ्गी, मीन भेद।
—लगाना या तोडना, मु शृङ्गेण रक्त निष्कस् (प्रे)।
सींचना, क्रि स (स. सेचन) अव्, सिच् (तु प अ), वारिणा अप्लु (प्रे)-अभ्युक्ष् (भ्वा प से), अभिवृष् (भ्वा प से), जल दा २ अभि प्र-स, उक्ष्, अव-आ-नि, सिच् ३ अव-वि,-कृ (तु प से)। स पु, अव-आ, सेक-सेचन, जलप्लावन, अभिवर्षण, अभ्युक्षण, प्रोक्षणम्।
सींचने योग्य, वि अव-आ, सेचनीय-सेक्तव्य, अभ्युक्षणीय, अभिवर्षणीय।
सींचने वाला, स पु, सेचक, सेक्तृ, प्रोक्षक।
सींचा हुआ, वि, सिक्त, अभ्युक्षित, जल-प्लावित।
सींह, स पु (देश) शल्य, शल्यक, शलली, शल्यमृग।
सी, वि स्त्री (हिं सा) समा, तुल्या, सदृशी, सदृक्षी।
सी. आई. डी., स पु (अ) गुप्तचरविभाग, अपसर्प च(चा)र प्रणिधि,-विभाग।
सीकर, स पु (स) कण, द्रप्स, पृषत, लव, बिंदु, विप्रुष् (स्त्री) २ शीकर, तुषार ३ प्रस्वेद, धर्म, स्वेदजलम्।
सीख, स स्त्री (म शिक्षा) शिक्षा, विनयन, अध्यापन, अनुशासन, बोधन २ शिक्षाविषय ३ मन्त्रणा, परामर्श, उपदेश।
सीख़, म स्त्री (फ़ा) शलाका, धातु-लोह,-दण्ड २ लघुसूक्ष्मयष्टि (स्त्री) ३ शङ्कु, शल्य, महासूचि (स्त्री) ४ (मांसगर्भनाय) शूल-लम्।
सीख़चा, स पु (फ़ा) दे 'सीख़' (१, ४)।
सीखना, क्रि म (स शिक्षण) शिक्ष् (भ्वा आ से), अधि इ (अ आ अ) अभ्यस् (दि प से), अभ्यासेन विद्या लभ् (भ्वा आ अ)-प्राप (स्वा प अ), पठ् (भ्वा प से)। म पु, शिक्षण, अध्ययन, अभ्यास, विद्या,-अर्जन-लाभ, प्राप्ति (स्त्री)।
सीखने योग्य, वि, शिक्षणीय, अध्येतव्य, अभ्यसनीय।

सीखने वाला, स पु , छात्र शिष्य , शिक्षक (क्वचित्) अध्येतृ विद्यार्थिन् शिक्षार्थिन् ।
सीखा हुआ, वि (मनुष्य) शिक्षित, कृतविद्य, पठित, प्राज्ञ, बुध । (विषय) शिक्षित, ज्ञात, बुद्ध, पठित, अधीत ।
सीगा, सं पु (अ) शासन विभाग २ व्यव साय , वृत्ति (स्त्री) ।
सीझना, क्रि अ (सं सिद्ध>) तापेन सिध् (दि प अ), ऊष्मणा श्रीपच (कम), सिद्ध (वि) भू २ (तापादिभि) मृदूभू , मादव मन् (भ्वा आ अ) ३ कष्ट सह् (भ्वा आ से) ४ ऋण शुध (दि प अ), ऋणनिस्तार जन् (दि आ से) ५ शीतेन वि , गल् (भ्वा प से) ।
सीटी, स स्त्री [स शीत्कृति (स्त्री)] शीत्कृत-कार , शीत्शब्द २ *शीत्करी, वाद्यभेद ।
—बजाना, क्रि अ , शीत्शब्द कृ । क्रि स , शीत्करीं वद् (प्रे) ।
—देना, मु , शीत्शब्देन आकृ (प्रे) ।
सीठना, सं पु (स अशिष्ट>) अश्लील गीत ति (स्त्री), वैवाहिकगालि (स्त्री) ।
सीठनी, सं स्त्री (हिं सीठना) दे 'सीठना' ।
सीठा, वि (सं शिष्ट>) अरस, विरस, नारस, स्वादहीन ।
—पन, सं पु , नीरसता, निस्स्वादता ।
सीठी, सं स्त्री (स शिष्ट) (पत्रपुष्पफला दीनां) उच्छिष्टं, नारसांश २ निस्सारद्रव्यं ३ नीरसपदार्थ ।
सीढ़, सं स्त्री (सं शीत>) क्लेद , स्तेम , आर्द्रता २ क्लिन्नभूमि (स्त्री) ।
सीढ़ी, सं स्त्री (स श्रेणी>) सोपान , पथ मार्ग पंक्ति (स्त्री) पद्धति (स्त्री)-पदवी, अधिरोह(हि)णी, नि(नि)श्रेणी णि (स्त्री), नि(नि)श्रय(यि)णी २ काष्ठनिश्रेणी ।
—का डंडा, स पु , सोपानदंड ।
—चढ़ना, मु, क्रमश उत्कर्ष भज् (भ्वा प से) ।
सीतल, वि , दे 'शीतल' ।
—पाटी, सं स्त्री , *शीतलकट ।
सीतला, सं स्त्री , दे 'शीतला' ।
सीता, सं स्त्री (सं) जानकी, मैथिली, वैदेही, अयोनिजा, भूसुता, पार्थिवा । २ फाल रेखा, लांगलपद्धति (स्त्री), हलि (पुं) ।
—द्रव्य, स पु (सं न) कृषि-कर्षण, उप करणानि (न बहु) ।
—पति, सं पु (स) श्रीराम , राघव ।
—फल, स पु (स) दे 'शरीफा' २ दे 'कुम्हड़ा' ।
सीत्कार, सं पु (सं) सीत्-कृत-कृति (स्त्री), आनंदपीडादिज सीत्शब्द ।
सीध, सं स्त्री (हिं सीधा) सरलायाम , अजमायति (स्त्री) २ लक्ष्यम् ।
सीधा[1], वि (स शुद्ध>) सरल, वक्रतारहित, ऋजु, अजम, प्रगुण २ निर्व्याज, निष्कपट, निश्छल ३ शिष्ट, सुशील ४ शांतस्वभाव, सौम्य, ५ सुकर, सुसाध्य ६ सुबोध, सुगम ७ दक्षिण, अपसव्य । क्रि वि , सरलं, अवक्रं, अजिह्मम् ।
—करना, क्रि स , सरली प्रगुणी, कृ २ दम् (प्रे), वशीकृ, विनी (भ्वा प अ) ।
—पन, स पु, सरलता, वक्रताऽभाव २ आर्जव, सौम्यता, निष्कपटता ।
—होना, सरली प्रगुणी भू २ वशीभू । ३ सन्मार्ग अवलम्ब् (भ्वा आ से) ।
सीधा[2], सं पु (सं असिद्ध) असिद्ध-अपक्व आम, अन्नम् ।
सीधी तरह, क्रि वि , शांत, शान्त्या २ सम्यक्, सुचारुरूपेण ३ धर्मेण, न्यायेन ।
सीधे, क्रि वि , सरलं, अवक्र २ दे 'सीधी तरह ।
सीन, स पु (अ) हृदयं, हृदयानविषय २ ज(य)वनिका, अपटी ।
सीनरी, सं स्त्री (अ) दृश्यप्रदेश , प्राकृतिक दृश्य २ रंगसज्जा ।
सीना[1], क्रि स (स सीवन) सिव् (दि प से) । स पु , सेवनं, सीवनं, स्यूति (स्त्री), ऊति स्यूनि (स्त्री) ।
—पिरोना, सं पुं , सूची(चि)-कर्मन् (न) -शिल्पम् ।
सीना[2], सं पु (फा) उरस्-वक्षस् (न) ।
—जोर, वि (फा) प्रबल, दुर्दम, उद्धत ।
—जोरी, सं स्त्री , औद्धत्य, बलात्कार ।
—बंद, सं पु (फा) आंगिक कं, दे 'अंगिया' ।
—उभार कर चलना, मु, सटोपं, चल (भ्वा प से) ।

सीने से लगाना, मु , आलिंग (भ्वा प से), उपगुह (भ्वा उ स)।
सीनियर, वि (अ) वरीयस्-ज्यायस (-सी स्त्री) । स पु, गुरुजन ।
सीनेट, स स्त्री (अ) वृद्ध प्रधान-सहा,-सभा ।
सीने योग्य, वि सीवनीय, सीवितव्य, सीवनार्ह ।
सीने वाला, स पु सेवक सीवनकर्तृ,सीवक ।
सीप, स पु [स शुक्ति (स्त्री)] शुक्तिका मुक्ता,-मातृ(स्त्री)-प्रसू (स्त्री)-स्फोट ,मौक्तिक प्रसवा, सौनिर ।
—सुत, स पु (स शुक्तिसुत) मौक्तिक, मुक्ता, शश्वत्-जखीतम् ।
सीपी, स स्त्री, दे 'सीप' ।
—सा मुँह निकल आना, मु अत्यन्तदुर्बल अत्यधिकक्षीण (वि) भू ।
सीमत, स पु (स) केशेषु वर्त्मन् (न), दे 'माँग' । २ अस्थिसंधि ।
सीमंतिनी, स स्त्री (स) नारी, द ।
सीमन्तोन्नयन, स पु (स न) गर्भस्थिते षष्ठेऽष्टमे वा मासे करणीय संस्कार (धर्म)।
सीमांत, स पु (स), सीमा, सीमन् (स्त्री), उपान्त, पर्यंत, प्रान्त २ ग्रामसीमा ।
सीमा, स स्त्री (स) मानम् (स्त्री) अवधि, आधार, प्रान्त, पर्यन्त, मर्यादा २ दे 'सीमन्त'(१) ।
सीमित, वि (स) परिमित, तन्मात्र सरा दिन ।
सीया हुआ, वि , स्यूत, स्यून ।
सीमेंट, स पु (अ) वज्रचूर्णम् ।
सीर स पु (स) हल, हाल २ सूर्य ३ अर्कवृक्ष । स स्त्री, क्षेत्रपते आत्मकृष्ट भूमि (स्त्री) ।
—ध्वज, सं पु (स) जनक २ बलराम ।
—में, मु , सभूय, एकत्र मिलित्वा ।
सीरम, स पु (अ) रक्तरस ।
सीरा[1], स पु (फ़ा शीरह) मधु शर्करा-क्वाथ , दे 'चाशनी' २ लप्सिका ।
सीरा[2], वि (स शीतल) शीत, शिशिर, उष्णत्वशून्य २ शान्त, मौनिन् ।
सील, स स्त्री (सं शीतल>) क्लेद , स्तेम , आर्द्रता ।
सीला[1] वि (स शीतल) आर्द्र, क्लिन्न ।
सीला[2], स पु (स शिल -ल) मुनीना नीव नोपायभेद , मर्न्यात्मकानेकधान्योच्चयनम् ।
सीवन, स पु (स न) सेवन, स्यूति (स्त्री), सूचीकर्मन् (न) २ सीवन, (स्यूति) सधि ३ लिंगमण्डथ सूत्रम् ।
सीस, स पु (स शीर्ष) दे 'सिर' ।
—फूल, सं पु (हि) *शीर्षफुल्ल', शिरोभूषण भेद ।
सीसा, स पु (सं सीस) सीसक, सिन्दूर कारण, त्रपु (पु न), सहाबल, बहुमल, सुवर्णारि , तन्त्र् ।
सीसे का दर्द, सं पु , सीसकशूल्म् ।
सी सी, स स्त्री (अनु) सीत्,-कार -ध्वनि , (स्त्री)-कृत, हर्षपीडाशीतादिजनितध्वनि ।
सीह, स पु , दे 'सींह' ।
सुँघनी, स स्त्री (हि सूँघना) नस्यं, दे 'नसवार' ।
सुँघाना, क्रि प्रे , बनाओ 'सूँघना' के प्रे रूप ।
सुदर, वि (स) रुचिर, सुषम, चारु, शोभन, कान्त रुच्य, मजु, मजुल, मनोहर, मनोज्ञ, मनोरम, (मनो)हारि, रमणीय, रामणीयक, बधु(धू)र, पेश(स)ल, वाम, (अभि)राम, नन्दित, सुमन, वल्गु, सुरूप, अभिरूप, दिव्य २ शुभ, भद्र, मगल ३ उत्तम, श्रेष्ठ, उत्कृष्ट । ('सु' से भी रूप बनाते हैं, जैसे-सुमुखम् ।)
—काड, स पु (सं पु न) लकावर्णिसुदर पवनसधिकृत्य रचित रामायणस्य पचमं काडम् ।
सुदरता, स स्त्री (स) सौन्दर्य, रुचिरता, सुषमा, कान्ति (स्त्री), मजुता, मजुलत्व, मनोज्ञतात्त्व, रमणीयता, अभिरूपता, लावण्य, शोभा, रूप, अभिख्या, श्री लक्ष्मी (स्त्री) ।
सुदरी, स स्त्री (स) रूपलावण्यसपन्ना नारी, रामा, वामा, रोचना, वरागना, वरवर्णिनी, सिता । वि (स) रूपवती, मनोज्ञा, रुचिरा ।
सुबा, स पु (सं सूचक) *लोहवेधनी, शतघ्नी, शोधनी ।
सुबुल, स पु (फ़ा) सुगधितघासभेद', सुबुलम् ।
सु, उप. (स) सौन्दर्योत्कर्षभद्रत्वादिबोधक उपसर्ग (व सुपुत्र इ) ।

सुकचाना, कि अ, दे 'सकुचाना'।
सुकड़ना, कि अ, दे 'सिकुड़ना'।
सुकर, वि (सं) सु-सुख-अयत्न,-साध्य निष्पाद्य कार्य, अनायास।
सुकरता, सं स्त्री (स) सु-सुख,-साध्यता, सौकर्य्य, सुकरत्वम्।
सुकर्म, सं पु [सं-मन् (न)] सु-सत्-उत्तम पुण्य-श्रेष्ठ,-कर्मन् (न)-कृत्य कार्यम्।
सुकर्मी, वि (सं-र्मिन्) सुकर्मन, सुकृत, सत्क्रिय, सुकर्मशील २ धर्मात्मन, पुण्यात्मन् ३ सदाचारिन्, सद्वृत्त।
सुकवि, स पुं (सं) कविवर, सुकाव्यकार'।
सुकाल, स पु (स) सुसमय २ सुभिक्षम्।
सुकुमार, वि (स) अति,कोमल, मृदु, मृदुल, प्र,-तनु, परि,पेलव, श्लक्ष्ण, लल्नि। स पु (सं) सुन्दर-उत्तम,-बालक।
सुकुमारता, स स्त्री (स) सौकुमार्य, मार्दव, पेलवता, मृदुलता, तनुता।
सुकुमारी, स स्त्री (स) सुन्दर श्रेष्ठ,-कन्या २ दुहितृ (स्त्री), पुत्री। वि (स) कोमलांगी, तन्वगी, तनुगात्री।
सुकुल, वि (स) महाकुल, अभिजात, सद्वंशज, कुलीन। सं पु (सं न) सु-सद्,-वंश।
सुकुलीन, वि (स) दे 'सुकुल' वि।
सुकृत, स पुं (सं न) पुण्य, सद्-सु पुण्य कार्य-कृत्य-कर्मन् (न) वि (सं) सौभाग्यवत्, भाग्यशालिन् २ धार्मिक, पुण्यात्मन् ३ सुविहित।
सुकृति, सं स्त्री (स) पुण्य, सत्कृत्यम्।
सुकृती, वि (सं तिन्) धार्मिक, पुण्यवत्, सत्कर्मन् २ सौभाग्यशालिन् ३ प्राज्ञ, बुद्धिमत्।
सुकेशी, सं स्त्री (स) सुन्दरकेशवती नारी, सुकेशिनी।
सुख, स पु (सं न) मुद् (स्त्री), मुदा, मुदितता, प्रीति (स्त्री) हर्ष, आ प्र,मोद, संमद', शमन् (न), शा(सा)त, आ,नन्द, आ,नन्दथु प्र,मद, भोग, रभस, निर्वृति (स्त्री) सौख्य, जोष।
—कर, वि (सं) सुख,-कार-कारिन्-कारक-आवह-द-दायक, सुखंकर।
—की नींद सोना, मु, सुख जीव् (भ्वा प से)-वस् (भ्वा प अ)
—चैन, स पु (सं + हिं) दे 'सुख'।
—दायी, वि (सं-यिन्) सुख,-द प्रद-दायक दातृ-आवह, दे 'सुखकर'।
—देना, कि स, सुखयति (ना धा), सुखी कृ, सुख दा, निर्वृत-सुखिन कृ।
—धाम, सं पु [स-मन् (न)] स्वर्ग, स्वर्लोक।
—पाना, कि अ, सुखमनुभू, सुखायते (ना धा), निर्वृत-सुखित (वि) स्था (भ्वा प अ), सौख्य लभ् (भ्वा आ अ)।
—पाल, स पु (स + हिं पालकी) सुख शिबिका।
—पूर्वक, क्रि वि, (स-क) सुखेन, सौकर्येण, सुख, लीलया, अनायासम्।
—लूटना, मु, सुखायते (ना धा), यथेष्टसुखमुज् (रु आ अ)।
—साध्य, वि (सं) सुकर, अयत्नसाध्य।
सुखांत, सं पु (स न) सुखप्रधान नाटक रूपकं वा २ प्रहसनं (सा)।
सुखागत, स पु (स न) स्वागतम्, शुभागमनम्।
सुखाना, कि स, बनाओ 'सूखना' के प्रे रूप।
सुखार्थी, वि (स र्थिन्) सुखैषिन्, सुखेप्सु, सुखकामिन्।
सुखी, वि (स-खिन्) सुखित, निर्वृत निश्चिन्त, स्वस्थ, सुस्थ, निरुद्वेग, शात, आनन्दित, मुदित, प्रीतचित्त, प्रसन्न, सानंद, संतुष्ट।
सुखेच्छा, स स्त्री (सं) सुख-अभिलाष कामना-वांछा।
सुख्यात, वि (सं) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विश्रुत।
सुख्याति, स स्त्री (सं) सुकीर्ति विश्रुति (स्त्री), यशस् (न)।
सुगंध, स स्त्री (सं पुं) सु,-वास, सुरभि, सु,-गंध, सौरभ्य, आमोद, परिमल।
सुगंधि, सं स्त्री (स >) दे 'सुगंध' स स्त्री। वि (स) दे 'सुगंधित'।
सुगंधित, वि (सं) सुरभि, सुगंधि, सुवास, आमोद परिमल,-वद्-युत, सुवासित, सद्गंध, इष्टगंध, घ्राणतर्पण, सुगंधाढ्य।
सुगम, वि (सं) उपगम्य, उपसर्पणीय, सुगम्य, सुख,-गम्य-उपसर्य २ सुबोध, सुज्ञेय ३ सुकर, सुसाध्य, सरल ४ सुलभ, सुप्राप्य, सुप्राप।

सुगमता, स स्त्री (सं) सौकर्य, सुसाध्यता ।
सुगम्य, वि (स) दे 'सुगम' (१)।
सुग्गा, स पु (स शुक) दे 'तोता' [सुग्गी (स्त्री) = शुकी]।
सुग्रीव, स पु (स) सुकठ, वानरेन्द्र, श्रीराममखः । वि , सुकठ, शोभनग्रीव ।
सुघर, वि (स) सुकर, सुखसाध्य २ सुदर, मनोहर ३ सुघटित, सुरचित, सुरेख।
सुघटित, वि (स) सुरचित, सुनिर्मित ।
सुघड, वि (स सुघट) सुदर, सुरेख, सुघटित २ निपुण दक्ष, प्रवीण ।
सुघड(डा)ई, स स्त्री (हिं सुघड) सुदरता, सुरूपता २ चातुर्य, कौशलम् ।
सुघडता, स स्त्री , दे 'सुघडई' ।
सुघडी, स स्त्री (स सुघटी) सु शुभ,-काल समय -मुहूर्तम् ।
सुघर, वि , दे 'सुघट'।
सुचित, वि (स सुचित्त) सावकाश, निर्व्या पार २ निश्चित ३ सावधान ।
सुचेत, वि (स सुचेतस्) अवहित, सावधान, प्रमादशून्य ।
सुजन[1], स पु (स) आर्य , सत्पुरुष , भद्रजन , सज्जन दे ।
सुजन[2], स पु (स स्वजना) आत्मीय पारि वारिक, ज्ञाति सबधिन , बाधवा (सब बहु)।
सुजनता, स स्त्री (स) सौजन्य, भद्रता, सज्जनता दे ।
सुजाति, स स्त्री (स) सत्कुल, सदवश , वरान्वय । वि (स) अभिजात कुलीन दे ।
सुजान, वि (स सुज्ञान) प्राज्ञ, बुद्धिमत्, पडित, विज्ञ २ प्रवीण निपुण । स पु , पति २ प्रणयिन्, रमण ३ परमात्मन् ।
सुजाना, क्रि स बनाओ 'सूजना' के प्रे रूप।
सुझाना, क्रि स , बनाओ 'सूझना' के प्रे रूप।
सुठि, वि [स सुष्ठु (अव्य)] सुदर, वर, उत्कृष्ट २ अतिशय, बहु । क्रि वि ,सामग्र्येण, सपूर्णतया, सम्यक ।
सुड़पना, क्रि स (अनु सुड-सुड) ससड सुडशब्द पा (भ्वा प अ)-आचम् (भ्वा प से)।
सुड़कना, क्रि स (अनु सुडसुड) सशब्द सत्वर च निगॄ (तु प से) २ सशब्द श्वस् (अ प से)।

सुडौल, वि (स सु+हिं डौल) सुरूप,सुरेख, सदाकार, सदाकृति, सुन्दर, सुघटित ।
सुढंग, स पु (स स+हिं ढग) सुरीति सुरूढि (स्त्री) । वि , सुरूप, सुदर ३ सद्वृत्त ।
सुत, स पु (सं) आत्मज , तनुज , पुत्र दे ।
सुतनु, वि (स) सुगात्र, सुन्दरशरीर । सं स्त्री (स) कोमलांगी, कृशांगी, सुन्दरी ।
सुतराम्, अव्य (स) अत २ अपितु ३ अगत्या ४ अत्यत ५ अवश्यम् ।
सुतली, सं स्त्री दे 'सुतली' ।
सुता, स स्त्री (स) पुत्री, दुहितृ (स्त्री), तनुजा ।
—पति, स पु (स) जामातृ (पु), दे 'दामाद' ।
सुतारी, स स्त्री (स सूत्रकार >) आरा, चर्म, प्रभेदिका प्रभेदिनी-वेधनी, *चर्म,-सूची सीवनी ।
सुतार्थी, वि (स र्थिन्) पुत्र-सन्तान-सन्तति अपत्य,-अभिलाषिन्-कामिन् इच्छुक ।
सुतिनी, स स्त्री (सं) पुत्रवती, सुतवती, प्रजावती, सन्तानवती, ससन्ताना ।
सुतीक्ष्ण, वि (स) अत्यन्त-अत्यधिक, दित शात-तीव्र प्रखर । दे 'तीक्ष्ण' । स पु (स) अगस्त्यभ्रातृ, ऋषिविशेष । २ शोभांजन, तीक्ष्णगध , दे 'सहिजन' ।
सुत्थन, स स्त्री (देश) सुस्थूणा, *सुत्थान, जघावस्त्रभेद ।
सुथना, स पु } दे 'सुत्थन' ।
सुथनी, स स्त्री }
सुथरा, वि (स स्वच्छ वा सुस्थ>) स्वच्छ, निर्मल, विमल ।
—पन, स पु , स्वच्छता, नैर्मल्यम् ।
सुदर्शन, वि (स) शोभन, सुरूप, सुन्दर, प्रियदर्शन [सुदर्शना नी (स्त्री)]। स पु (स) सुदर्शनचक्रम् ।
—चक्र, स पु (स न) विष्णुचक्र, सुनाभ, श्रीकृष्णास्त्रविशेष ।
—चूर्ण, स पु (स न) ज्वरौषधभेद ।
सुदामा, स पु (स -मन्) श्रीकृष्णसख । वि (स) सुदातृ ।
सुदिन, स पु (सं न) शुभ, दिन दिवस पुण्याहम् ।

सुदी, स स्त्री (स सुदि अव्य) शुक्ल सित, पक्ष -अर्द्धमास ।

सुदूर, वि (स) अति-सु-बहु दूर-दूरवर्तिन दूरस्थ, अतिविप्रकृष्ट, दवीयस, दविष्ठ । क्रि वि (स न) अतिदूरे।

सुदृढ, वि (स) सुस्थिर, सुनिश्चल, सुधीर २ अति,-गाढ-घन-कीकस, दुर्भेद्य ३ अतिब लिन्, सुशक्तिमत् ।

सुदेह, वि (स) सुतनु, सुकाय, सुन्दर । स पु (स) सुन्दरशरीरम् ।

सुध, स स्त्री [सं शुद्ध (बुद्धि) >] स्मरण, स्मृति (स्त्री) २ सज्ञा, चैतन्य, उपलब्धि (स्त्री), प्रति,बोध, चेतना ३ अवधान, वृत्तज्ञानम् ।

—बुध, स स्त्री, चेतना, चैतन्य, सज्ञा ।

—दिलाना, मु , स्मृ (प्रे) ।

—न रहना या **बिसरना**, मु विस्मृ (कम) ।

—बिसराना या **बिसारना**, मु , विस्मृ (भ्वा प अ) ।

—रखना, मु , सावधान जागरूक (वि) स्था (भ्वा प अ) ।

—लेना, मु , वृत्तान्त ज्ञा (क्र् उ अ) ।

बे—, वि , नि सज्ञ, मूर्च्छित २ प्रमादिन् ।

सुधना, क्रि अ (हिं सोधना) शुध् (दि प अ) निर्मलीभू ।

सुध-बुध, स स्त्री (स शुद्धबुद्धि >) दे 'सुध' (२) ।

—जाती रहना या **मारी जाना**, मु , गतचे तन-नष्टसज्ञ नि सज्ञ-मूर्च्छित (वि) भू ।

—ठिकाने न रहना, मु , विक्षिप्त (वि) जन् (दि आ से) ।

सुधरना, क्रि अ (हिं सुधना) दोष त्रुटि, रहित हीन (वि) भू , परि वि-म , शुध (दि प अ), शुद्ध निर्दोष (वि) भन् (दि आ से), प्रतिसमाधा (कर्म) ।

सुधवाना, क्रि प्रे (हिं सोधना) शुध् (प्रे), पू (प्रे), दोष-मल, हीनं कृ (प्रे) ।

सुधांशु, स पु (स) चद्र दे ।

सुधा, सं स्त्री (सं) पीयूष, अमृत दे २ मक रंद , पुष्परस ३ मधु (न) ४ जल ५ दुग्ध ६ विष ७ चूर्ण , दे 'चूना' ।

—कंठ, सं पु (स) पिक , कोकिल ।

—कर, स पु (सं) सुधा,घट दीधिति (पु) धर आधार मयूख रश्मि -योनि (पु) -सूति (पु)-निधि , चद्र ।

—कार, स पु (स) सुधाजीविन्, पलगंड , लेपक ।

—धौत, वि (स) सुधा चूर्ण, सितक्षालित धवलित ।

—निधि, स पु (स) दे 'सुधाकर' ।

—भोजी, स पु (स जिन्) सुधाभुज , देव ।

—स्पर्धी, वि (स र्धिन्) अमृत पीयूष,-उपम सदृश, सुमधुर ।

सुधाना, क्रि प्रे , दे 'सुधवाना' ।

सुधार, स पु (हिं सुधारना) दोष, हरण-अपनयन, स, शोधन, सस्करण, प्रति,समा धानम् ।

—करना, क्रि स , स,शुध् (प्रे), निर्दोष दोषरहित विधा (जु उ अ) कृ प्रति , समाधा, सस्कृ ।

सुधारक, स पु (हिं सुधार) सशोधक , दोषहारिन्, सस्कारक ।

सुधारना, क्रि स (हिं सुधारना) दे 'सुधार करना' ।

सुधित, वि (स) सुव्यवस्थित २ सु सम्यक्, पक्व सिद्ध शृत ।

सुधी, स पु (स) पंडित , विद्वस् (पुं), २ चतुर, सुबुद्धि ।

सुनना, क्रि स (स श्रवणं) श्रु (भ्वा प अ , शृणोति), आ-समा-वर्ण् (चु), निशम् (दि प से या प्रे निशामयति), श्रवण गोचरीकृ २ अवधा (जु उ अ) ३ भर्त्स नावचनानि श्रु । सं पु , श्रवण, आ-समा, वर्णनं, निश(शा)मनं, श्रुति (स्त्री) ।

सुनने योग्य, वि , श्रोतव्य, श्राव्य, आ-समा, कर्णनीय, निशामनीय ।

सुनने वाला, स पु , श्रावक , आ-समा,-वर्ण यितृ-श्रोतृ (पु) ।

सुन लेना, मु , श्रवण यदृच्छया अल्क्षित वा श्रु ।

सुना हुआ, वि , श्रुत आ-समा,-वर्णित, श्रवण गोचरीकृत ।

सुनी अनसुनी कर देना, मु , श्रुत्वापि न अवधा (जु उ अ)-उपेक्ष् (भ्वा आ से) ।

सुनय, स पु (सं) सु-उत्तम-श्रेष्ठ, नीति (स्त्री)।
सुनयन, स पु (स) मृग। वि (सं) सुलोचन।
सुनयना, स स्त्री (स) नारी। वि (स) सुलोचना-ना।
सुनवाई, स स्त्री (हिं सुनना) श्रवण, निदा (शा)मन २ व्यवहारदर्शन, कार्य-अवेक्षण विचारणम्।
सुनसान, वि (स शून्यस्थान>) निर्जन, विजन, विविक्त, एकान्त २ उच्छिन्न, उद्ध्वस्त, नर्जर। स पुं, नीरवता, नि स्तब्धता।
सुनहरा री, वि, दे 'सुनहला'।
सुनहला, वि (हिं सोना) हैम, सौवर्ण, सुवर्ण-वर्ण हेम हिरण्य,-वर्ण-आभ।
सुनाई, स स्त्री (हिं सुनना) दे 'सुनवाई' (१, २)। ३ न्याय।
सुनाना, क्रि प्रे, व 'सुनना' के प्रे रूप।
सुनार, स पु (हिं सोना) सुवर्ण हेम,-कार, कलाद, नाडिंधम, मौष्टिक, हेमल।
सुनारी, स स्त्री (हिं सुनार) सुवर्णकार, व्यवसाय वृत्ति (स्त्री) २ सुवर्णकारपत्नी।
सुनावनी, स स्त्री (हिं सुनाना) मृत्युसमाचार, निधनवृत्तम्।
सुनीति, स स्त्री (स) सुनय, दे २ ध्रुव जननी, उत्तानपादपत्नी।
सुनी सुनाई, स स्त्री (हिं सुनना-सुनाना) किंवदन्ती, जनप्रवाद।
सुनेत्र, वि (स) सु-सुन्दर,-नयन-नेत्र-लोचन ईक्षण।
सुन्न, वि (स शून्य>) चेष्टा क्रिया-चेतना स्पन्दन, शून्य हीन, जडीभूत, नि स्तब्ध, निश्चेष्ट, निर्जीव, निश्चल। स पु (स शून्य) बिंदु, खम्।
सुन्नत, स स्त्री (अ) दे 'खतना'।
सुन्ना, स पुं (स शून्य) बिंदु, खम्।
सुन्नी, स पुं (अ) यवनसम्प्रदायविशेष।
सुपक्व, वि (स) सुपरिणत २ सुसिद्ध, सुश्रृत, सुश्राण।
सुपथ, स पु (स) सत्पथ, सन्मार्ग, सुपन्था (पु एक) २ सदाचार, सद्वृत्तम्।
सुपथ्य, स पु (स न) पथ्य, स्वास्थ्यप्रदाहार।
सुपना, स पु, दे 'स्वप्न'।
सुपरिटेंडेंट, सं पु (अ) पर्यवेक्षक, अध्यक्ष।
सुपर्ण, स पु (स) गरुड २ कुक्कुट ३ किरण ४ खग।
सुपात्र, सं पु (स न) योग्यजन, अधिकारि व्यक्ति (स्त्री)।
सुपारी, सं स्त्री (सं सुप्रिय>) क्रमुक, पूग, क्रमुक पूग,-फल, ताम्बूलम्।
—पाक, सं पुं (हिं+सं) पौष्टिकौषधभेद।
सुपास, स पु (देश) सौख्य, सुख दे।
सुपुत्र, स पु (स) सत्-उत्तम-श्रेष्ठ, पुत्र।
सुपुत्री, स स्त्री (स) सत्-उत्तम-श्रेष्ठ पुत्री।
सुपुर्द, स स्त्री, (फा) निक्षेप, न्यास।
—करना, क्रि स, निक्षिप् (तु प अ), न्यस (दि प से)।
सुपूत, स पु (स सुपुत्र, दे)।
सुपूती, स स्त्री (हिं सुपूत) सुपुत्रत्व २ सुपुत्रवती।
सुप्त, वि (स) निद्रित, निद्राण, शयित २ जडीभूत, निश्चेष्ट, नि स्तब्ध ३ मुद्रित, मुकुलित ४ कर्णविमुख ५ अलस।
सुप्ति, स स्त्री (स) निद्रा, स्वप्न, स्वाप, शयन, संवेश २ सुप्तागना, अगजडता, स्तम ३ तंद्रा, निद्रालुता-त्वम्।
सुप्रतिष्ठा, स स्त्री (स) सुख्याति सुविश्रुति (स्त्री)।
सुप्रतिष्ठित, वि (सं) सुकीर्तिमत्, सुविख्यात।
सुप्रतीक, वि (सं) सुदराग, रूपवत्, सरूप, सुन्दर, सुरूप २ धार्मिक। स पु (स) शिव २ कामदेव ३ दिग्गजविशेष ४ यक्ष विशेष।
सुप्रदर्श, वि (सं) सुदर्शन, रूपवत्, सुन्दर।
सुप्रसिद्ध, वि (सं) सुविश्रुत, प्रख्यात।
सुफल, सं पु (स न) सत्परिणाम २ सुन्दर फल। वि सफल, कृतार्थ २ सुन्दरफलयुक्त।
सुबह, स स्त्री (अ) प्रात, दे।
सुबास, स स्त्री, दे 'सुवास'।
सुबाहु, स पु (स) राक्षसविशेष। वि (स) दृढ-सुन्दर,-बाहु-भुज।
सुबुक, वि (फा) लघु, अल्प-लघु, भार २ सुन्दर।
सुबुद्धि, स स्त्री (सं) सुमति (स्त्री.),

सुधियगा, सुधी (स्त्री)। वि (स) बुद्धि धी,मन्द, पण्डित, प्राय बुध।

सुबूत, स पु (अ) प्रमाण, साधन, उपपत्ति (स्त्री)।

—तहरीरी, स पु (अ) लेखप्रमाण, साधन पत्रम्।

सुभ वि दे 'शुभ'।

सुभग, वि (स) सुन्दर, मनोरम २ सौभाग्यवत्, धन्य ३ प्रिय, प्रियतम ४ सुख आनन्द, प्रद ५. धनाढ्य, ऐश्वर्यशालिन्।

सुभगा, वि (स) सुन्दरी, रूपवती २ जीवित पतिका, सधवा। स स्त्री (स) पतिप्रिया, भर्तृवल्लभा।

सुभट, स पु (स) सुसैनिक, सुयोध।

सुभट, स पु (स) सुविद्वस् (पु) पण्डितवर।

सुभद्र, वि (स) भाग्यवत् २ श्रेष्ठ। स पुं (स न) सौभाग्य २ कल्याण्।

सुभद्रा, स स्त्री (सं) श्रीकृष्णभगिनी, अर्जुनस्य भार्या, अभिमन्युजननी।

सुभाग, वि (स) श्री,भाग्यवत्, सुभग। स पु (स) सौभाग्य, सुदैवम्।

सुभागी, वि (स सुभागिन्) धन्य, महाभाग, श्री,भाग्यवत्, सुभाग्य।

सुभाग्य, वि (स) दे 'सुभागी'। स पु (स न) सौभाग्य, दे।

सुभान, अव्य (अ सुबहान) साधु-साधु वादम्।

—अल्ला, धन्योऽसि परमेश्वर! (आश्चर्यादि बोधकं वाक्यम्)।

सुभाव, स पु (स स्वभाव, दे)।

सुभाषित, वि (स) सम्यगुक्त। स पुं (स न) सूक्ति (स्त्री), वरवचनम्।

सुभिक्ष, स पु (स न) सुकाल, अन्ननिशा, बहुन्नकाल।

सुभीता, स पु (स्व) सौकर्यं, सामग्य २ सन्तोष, सुयोग ३ सुख सौन्दर्य।

सुभूषित, वि (सं) सम्यक् अलकृत, सुमण्डित।

सुमंगल, वि (स) सुमाङ्गलिक, सुभद्र, शिव, स्यमन्त।

सुम, स पु (फा) खुर, शिफ, खुर दे।

सुमति, सं स्त्री तथा वि (सं) दे 'सुबुद्धि' सं स्त्री तथा वि।

सुमन, स पु (स सुमनस् न, स्त्री बहु) पुष्प, कुसुम २ सुचित्त, सुहृदयम् (स पु) देव २ पण्डित ३ गोधूम। वि (स) सहृदय, सुचित्त, दयालु।

—चाप, स पु (स सुमनश्चाप) कामदेव।

सुमनस, स पु, तथा वि दे 'सुमन' में पु, तथा वि।

सुमरन, स पु, दे 'स्मरण'।

सुमरना, स स्त्री (हि सुमरना) (सप्तविंशति गुटिकावती) जपमालिका।

सुमात्रा, स पु (स सुमात्रा) मलयद्वीप पुञ्जान्तर्वर्तिमहाद्वीपविशेष, सुवर्णभूमि (स्त्री) द्वीपम्।

सुमार्ग, स पुं (स) दे 'सुपथ'।

सुमित्रा, स स्त्री (स) दशरथपत्नी २ मार्कण्डेयजननी।

—नंदन, स पुं (स) लक्ष्मण २ शत्रुघ्न।

सुमुख, स पु (सं न) सुवदनं, शोभनाननम्। वि (स) सुवदन, सुन्दरानन २ सुन्दर ३ प्रसन्न ४ कृपालु।

सुमुखा-खी, स स्त्री (स) सुवदना-नी, सुन्दराननाभी २ सुन्दरा ३ दर्पण।

सुमेरु-रु, स पु (सं सुमेरु) मेरु, हेमाद्रि, रत्नसानु, सुरालय २. उत्तरध्रुव ३ जपमालाया वृहद्गुटिका।

सुयश, स पु [स यशस् (न)] सुकीर्ति सत्कीर्ति-सुविश्रुति-सुप्रसिद्धि (स्त्री)।

सुयोग, स पु (स) योग्य-उचित,काल, समय,-अवसर।

सुयोग्य, वि (सं) सुसमर्थ, सुशक्त, सुकुशल, सनिष्णात सुनिपुण।

सुयोधन, सं पु (स) दुर्योधन।

सुरंग, वि (स) शोभन-सुन्दर-वर,-वर्ण-रंग रंग। वि, सुन्दर, रूपाकृति, सुरूप।

सुरंग, स स्त्री (सं सुरुङ्गा) सुर(रु)ङ्गा, भूमध्यगूढमार्ग २ सन्धि, सन्धिला सुर(रु)ङ्गा, सन्धिक ३ व(ख्या)नी नि (स्त्री), आकर ४ पोतस्फोटिनी सुरंगा (यन्त्रभेद)।

—उड़ाना, क्रि स, सुरंगं सशब्दं स्फुट् (प्रे)।

—लगाना, क्रि स, सन्धिलां कृ अथवा खन् (भ्वा प स)।

—गिराना, मु, समुद्रे पथि वा सुरगा न्यम् (दि प मे) निक्षिप (तु प अ)।
सुरगिया, म पु (म सौरगिक) सुरङ्ग (गा)कार।
सुर, स पु (म) अमर, देव देवता दे २ सूय ३ पटित।
—गन, म पु (म) देवद्विप २ ऐरावत।
—गाय, म स्त्री (म गौ) कामधेनु (स्त्री)।
—गायक, म पु (म) गधर्व।
—गिरि, म पु (स) सुमरु, सरपर्वत।
—गुरु, म पु (म) बृहस्पति।
—चाप, म पु (स) सुर इन्द्र धनुस (न)।
—जन¹, स पु (म) देवगण।
—जन², वि (स सुजन) सजन २ चतुर।
—तरु, म पु (म) कल्पवृक्ष, सुर, द्रुम पादप।
—दारु, म पु (स न) देवदारु (न)।
—द्विष्, सं पु (म) असुर, राक्षस २ राहु।
—धाम, सं पु [स-मन् (न)] स्वर्ग, नाक, देवलोक।
—धुनी, म स्त्री (म) गगा, देवनदी।
—धूप, म पु (स) राल।
—धेनु, स स्त्री (म) कामधेनु।
—ध्वज, स पु (स) इन्द्रध्वज, सुरकेतु।
—नाथ, म पु (म) सुर,-नायक पति पालक इन्द्र ईश।
—नारी, म स्त्री (म) सुर-देव,-वधू (स्त्री) वाला अगना।
—पथ, म पुं (सं न) आकाश शम्।
—पुर, म पु (स न) देवपुरी, अमरावती।
—मंदिर, म पु (सं न) देवालय, मन्दिरम्।
—मणि, म स्त्री (म पु) चिन्तामणि।
—रिपु, म पु (स) दानव, राक्षस।
—लोक, म पु (स) स्वर्ग, देवलोक।
—वल्ली, म स्त्री (म) तुलसी, वृन्दा।
—वाणी, म स्त्री (म) देववाणी, सस्कृतभाषा।
—श्रेष्ठ, म पु (म) इन्द्र २ शिव ३ विष्णु ४ गणेश ५ धर्म।
—सरि, —सरिता, —सरी, म स्त्री (म-सरित्) गगा, सुरसिंधु।
सुर, सं पु (म स्वर) ध्वनि, नाद, स्वन दे 'सुर'।

—मिलाना, क्रि म, तुल्यस्वरं कृ।
बे—, वि विस्वर।
बेसुरा क्रि वि विस्वर, अपस्वरम्।
—में सुर मिलाना, मु, चाटूक्तिभि तुष (प्रे) या उपच्छन्द् (चु)।
सुरत¹, स स्त्री [स स्मृति (स्त्री)] स्मरणं, दे सुध' (१३)।
—सँभालना, मु, सावधान-अवहित (वि) भू।
सुरत², स पु (स न) कामकेली, क्रीडा, संभोग, मैथुन, रतिक्रिया, निधुवनम्।
ग्लानि, म स्त्री (स) रतिनशैथिल्यम्।
सुरता, म स्त्री (स) देवत्व, अमरत्वम्। २ देव-सुर,-समूह -समुदाय ३ पत्नी, भाया।
सुरति, म स्त्री, दे 'सुरत' (१-२)।
सुरभि, म स्त्री (स पु न) सुगध, सौरभ, नु, वाम। (सं स्त्री) गौ (स्त्री) २ काम धेनु (स्त्री), सुरभी ३ पृथिवी ४ सुरा।
सुरभित, वि (स) सुरभि, सुगधित दे।
सुरभी, स स्त्री (म) सुगध, दे २ कामधेनु (स्त्री)।
सुरमई, वि (फ़ा) यामुनरग, सौवीरवर्ण, आ दपद -कृष्ण-नील।
सुरमा, स पु (फ़ा-मह्) यामुन, सौवीर, स्रोतोऽञ्जन, कपोताञ्जन, कृष्ण, अजनम्।
—दानी, स स्त्री, यामुन-सौवीर-अजन, आधानी।
—लगाना, क्रि स, (नेत्रयो) सौवीर निविश् (प्र) या ऋ (प्रे अपयति)।
सुरम्य, वि (म) सुदर, दे।
सुरस, वि (स) मधुर, स्वादु २ सरस, रस युक्त ३ सुन्दर।
सुरसा, म स्त्री (म) हनुमन्मार्गावरोधक नागमातृ (स्त्री) २ राक्षसीविशेष ३ दुर्गा ४ नदीविशेष ५ तुलसी ६ ब्राह्मी।
सुरसुराना, क्रि अ (अनु सुर+सुर>) सृप (भ्वा प अ), मन्द निभृत च गम् २ कडूति अनुभू ३ सुरसुरायते (ना धा)।
सुरसुरी, सं स्त्री (सं) सुरसुर-सपण, ध्वनि' २ कडू-कडूति -खर्जू (स्त्री) ३ कीटभेद।
सुरक्षित, वि (स) गुप्त, स्वविन, सुत्रात, सुत्राण, सुपालित।
सुरागना, स स्त्री (स) देवी, देवपत्नी, अमरागना ३ अप्सरा, स्वर्वेश्या, नाकनर्तकी।

सुरा, म स्त्री (स) मदिरा, वारुणी, हाला, कादंबरी, मद्य दे ।
सुराख, म पु , दे 'सुराख' । दे ...।
सुराग, म पु (तु) अन्वेष०, अनुसंधान २ पद चिह्न लक्षण सूत्र संधानम् ।
—लगाना क्रि म चिह्नै मृग (चु) या अन्विष (दि प मे) ।
—लेना, क्रि म निभृत निरीक्ष (भ्वा आ मे) ।
सुरागाय, स स्त्री [मं सुरभी > (स्त्री)] चमर -समर [-री (स्त्री)], विशिष्टपदेशीय सकरजो गोभेद ।
सुरागी, स पु (फ़ा सुराग) च(चा)र अपसर्प दे 'भेदिया' ।
सुराही म स्त्री (सं) *लंबग्रीवघटी,*सुराधि ।
—दार वि (अ +फ़ा) सुराधिसदृश ।
सुरीला, वि (हिं सुर) सु-मधुर -स्वर स्वन कल, मंजुल क्वणमधुर (राग, कंठादि) २ सु मधुर,-कंठ (गायकादि) ।
सुरखुर वि (फ़ा सुर्खरू, दे) ।
सुरुचि, सं स्त्री (म) उत्तम, रुचि अभिरुचि शील २ ध्रुवभक्तस्य विमातृ (स्त्री) । वि (स) सुरुचि-उत्तमाभिरुचि, विशिष्ट ।
सुरूप, वि (स) सुन्दर, रूपवत् २ बुद्धिमत् । स पु (म न) वराकृति (स्त्री), सुन्दराकार ।
सुरेन्द्र, म पु (स) देवेश , इन्द्र , सुरेश्वर ।
—चाप, म पु (स) इन्द्रधनुस (न) ।
सुर्ख, वि (फ़ा) रक्त, रो(लो)हित शोण, शोणित, अरुण, कषाय, फल्गुन ।
—होना, क्रि अ, रक्तायते-लो हितायते (ना धा) ।
—रू, वि (फ़ा) तेजस्विन्, वर्तिमत् २ प्र तिष्ठित, संमानित ३ कृतकार्य ।
—रूई, स स्त्री , कृतकार्यता २ यशस (न), कीर्ति (स्त्री) ३ सम्मान , प्रतिष्ठा ।
सुर्खाब, म पु (फ़ा) कोक , चक्र , चक्र-चक्रवाक , रथांग , रथांगनामक ।
—का पर लगाना, मु , वैलक्षण्यविशिष्ट (वि) वृत् (भ्वा आ मे) ।
सुर्खी, स स्त्री (फ़ा) रक्तिमन्-लोहितिमन्, अरुणिमन् (पु), शोणता, रक्तता २ (लेख दीनां) शीर्षकं ३ रुधिर, रक्तं ४ इष्टकाचूर्णं ५. रक्तवर्णं ।
सुलक्षण, सं पु (सं न) शुभ भद्र-सु -लक्षण चिह्न-लक्ष्मन् (न) । वि (म) शुभ, शिव, मांगलिक, सुलक्षणयुत २ भाग्यवत्, धन्य ।
सुलगना, क्रि अ (अनु सुल्सुल्>) (सधूम) ज्वल (भ्वा प से) दह इध् (कर्म), दीप् (दि आ से) २ अत्यंत मनप् (कर्म), दु खायते (ना धा) ।
सुलगाना, क्रि स (हिं सुलगना) उद्दीप्-प्रज्वल (प्रे) सम्,इध (रु आ से) २ संतप (प्रे), पीड (चु) ३ उत्तिज् उद्दीप (प्रे) ।
सुलझना, क्रि अ (हिं उरझना) उद्ग्रथ् (कर्म) विश्लिष् (दि प अ), सरलीभू ।
सुलझाना, क्रि स (हिं सुलझना) उद्ग्रथ् (क्र प से) विश्लिष् (प्रे), सरलीकृ, नदिलता अपनी (भ्वा प अ) २ विवाद शम (प्रे न(शा)मयति) ।
सुलझाव, स पु (हिं सुलझाना) विश्लेष , मोचन, सरलीकरणं, जटिलतापनयनम् ।
सुलतान, म पु , दे 'सुल्तान ।
सुलफ़ा, सं पु (फ़ा) तमाखुभेद , *सुलफ २ दे 'चरस' ।
सुलभ, वि (स) सुलभ्य, सुप्राप्य प २ सरल, सुगम ३ सामान्य, साधारण ।
सुलभता, म स्त्री (स) सुलभत्व, सुप्राप्यता २ सरलता ।
सुलह, स स्त्री (अ) मत्य मैत्री, सौहार्द २ शान्ति (स्त्री), विप्लवाभाव ३ संधि, संधान ४ प्रसादन, समाधनम् ।
—नामा, स पु (अ +फ़ा) संधिपत्रम् ।
सुलाना, क्रि स , व 'सोना' क प्रेरणार्थक रूप ।
सुलूक, स पु , दे 'सलूक' ।
सुलैमान, स पु (अ) सुलेमान , देवदूतो नृपविशेष २ पर्वतविशेष ।
सुलैमानी, वि (अ) सुलेमानसंबंधिन् । सं पु (अ) सितश्याेऽश्म २ श्वेतकृष्ण प्रस्तर भेद ।
सुलोचन, वि (सं) सुनयन, सुनेत्र । सं पु (म) दैत्यविशेष २ मृग ३ चकोर ।
सुलोचना, वि स्त्री (सं) सुनयनी-ना । सं-स्त्री (म) मेघनादपत्नी ।
सुल्तान, सं पुं (अ) नृप , राजन, सम्राट् ।
सुल्ताना, स स्त्री (अ) सम्राज्ञी, राज्ञी, नृपपत्नी ।

सुल्तानी, वि (अ) राजकीय २ रक्तवर्ण। स स्त्री, राज,पद अधिकार राज्य २ कौड़ी यवक्षभेद।

सुवर्ण, स पु (स न) स्वर्ण, काञ्चन, दे सोना'। २ धन, वित्तम्। वि (स) सुदर-रम्य,-वर्ण रग २ हेमवर्ण ३ कुलीन, अभिजात।

—कार, स पु (स) दे सुनार'।

सुवास, स पु (स) सुगध दे २ सु, सदन भवन-गृह, सुदर,-निवास निलय।

सुविचार, स पु (स) सद्विमर्श २ सुनिर्णय, सुन्याय।

सुविधा, स स्त्री, दे 'सुभीता'।

सुवृत्त, वि (स) सदाचारिन् सच्चरित्र २ गुणिन् ३ साधु ४ सुच्छन्दोविशिष्ट(काव्य)।

सुवेश प, वि (स) सुन्दरवेश्य, सुवसन, सुवेशि(षि)न् २ सुन्दर, सुरूप।

सुशिक्षा, स स्त्री (स) सच्छिक्षा सुन्दर, अनुशासन-अनुशिष्टि (स्त्री)।

सुशिक्षित, वि (स) सुविनीत, व्युत्पन्न, सुपाठित, सूपदिष्ट २ शिष्ट, सम्बुद्ध प्रबुद्ध।

सुशील, वि (स) सत्-उत्तम, शान्त स्वभाव प्रकृति, शीलवत्, सभ्य, दक्षिण २ सच्चरित्र, सदाचारिन् ३ नम्र, विनीत ४ सरल, ऋजु।

सुशीलता, स स्त्री (स) शीलवत्ता, दाक्षिण्य, सभ्यता, शिष्टता २ सच्चारित्र्य, सद्वृत्ति (स्त्री) ३ नम्रता ४ आर्जवम्।

सुश्री, वि (स) अति,-सुदर-रम्य-मनोहर २ महा-बहु, धन, सुसपन्न, सुसमृद्ध।

सुषमा, स स्त्री (स) शोभातिशय, सुदरता, दे।

—शाली, वि (स) अतिसुदर, सुषमित।

सुषिर, स पु (स न) विवर, छिद्र २ वशा दिवाकम्। वि (स) सच्छिद्र, सरध्र।

सुषुप्त, वि (स) गाढं शयित सुप्त निद्राण, गाढनिद्रामग्न।

सुषुप्ति, स स्त्री (स) सु-गाढ, निद्रा-स्वप्न स्वाप सुप्ति (स्त्री)-शयन-सवेश २ अज्ञान (वे) ३ चित्तवृत्तिभेद (यो)।

सुषुप्सु, वि (स) शिशयिषु, निद्रा,-आकुल आतुर।

सुषुम्ना, स स्त्री (स म्ना) इडापिंगलामध्यगा मध्यनाडी, नाडी, पृष्ठवश।

सुष्ट, वि (स दुष्ट का अनु) शुभ, भद्र २ सुदर।

सुष्ठु, अव्य (स) अत्यन्त, सातिशय २ सम्यक्, सुचारु ३ यथायोग्य, अवितथम्।

सुष्ठुता, स स्त्री (स) मंगल, शिव २ सौभाग्य ३ सौ दयम्।

सुसगति, स स्त्री (स) सु-सत् साधु-उत्तम, सग सगम -समागम -सगति।

सुसज्जित, वि (स) सुप्रसाधित, सुमडित, सुभूषित, सुपरिष्कृत स्वलकृत।

सुसताना, क्रि अ (फा सुस्त) विश्रम् (दि प से), आ वि-रम् (भ्वा प अ), कार्यात निवृद् (भ्वा आ से), श्रम अपनी (भ्वा प अ)।

सुसमय, स पु (स) सुकाल २ सभिक्षम्।

सुसरा, स पु (स श्वशुर) दे ससुर'।

सुसराल, स स्त्री (स श्वशुरालय) दे 'ससुराल'।

सुसरी, स स्त्री (हिं ससुर) दे 'समुरी'।

सुस्त, वि (फा) अलस(क), आलस(स्य), कार्य-उद्योग, विमुख, मद, मथ(द)र, शीतक, तुद, परिमृत परिमार्न २ निर्बल ३ निस्तेजस्क, हतप्रभ ४ मद,-गति-वेग ५ स्थूल मद, बुद्धि ६ रुग्ण, दे 'रोगी'।

सुस्ताना, क्रि अ, दे 'सुसताना'।

सुस्ती, स स्त्री (फा) आलस्य माद्य, उद्योग कार्य, विमुखता-द्वेष २ तेजोहीनता, निष्प्रभता ३ रोग।

—करना, क्रि अ, समय व्यर्थ नी (भ्वा प अ) अलस निर्व्यापार-उद्योगशून्य (वि) स्था (भ्वा प अ) २ विलम्ब (भ्वा आ से), चिरा(र)यति (ना धा)।

सुस्थिति, स स्त्री (स) सुदर-सुखद, स्थिति (स्त्री)-अवस्था-दशा। २ सुख, मगलम् ३ स्वास्थ्यम्।

सुस्थिर, वि (स) अचल, निश्चल २ सुदृढ, धीर।

सुस्पर्श, वि (स) कोमल, मृदुल, चिकण, श्लक्ष्ण।

सुस्मिता, स स्त्री (स) स्मेरमुखी, प्रसन्न-प्रफुल्ल,-सुखी-आनना-वदना।

सुहबत, स स्त्री, दे 'सगत'।

सुहाग, स पु (स सौभाग्य) सुभगत्व, पतिमत्त्वीत्व, २ वरस्य वैवाहिकवस्त्र, दे 'जामा' ३ वैवाहिक मगलगीतम् ।

—पिटारा, सं पु , *सौभाग्यपिटक ।

—पूरा, स पु , सौभाग्यपुट ।

सुहागा, सं पु (स सुभग)=कणक,कनकक्षार , रसशोधन , विट, लोहद्राविन्, स्वर्णपाचक ।

सुहागिन नी, स स्त्री (हिं सुहाग) सधवा, पतिवत्नी, सनाथा, सभर्तृका, जीवत्पतिका ।

सुहाता, वि (हिं सुहाना) शोभन, सुन्दर ।

सुहाता, वि (हिं सहना) सहनीय, सह्य । २ कोष्ण, कदुष्ण (जल) ।

सुहाना, क्रि अ (स शोभन) विराज्,शुभ (भ्वा आ से) २ रुच् (भ्वा आ से), रुचिकर वृत् (भ्वा आ से) ।

सुहावना, वि (हिं सुहाना) शोभन, प्रिय सुभग,-दर्शन, सुन्दर दे । [सुहावनी (स्त्री)= शोभना] । क्रि अ , दे 'सुहाना' ।

—पन, स पु , सौन्दर्यं, मनोहरता ।

सुहृद्, स पु (सं) सखि, मित्र, वयस्य ।

सुहृदय, वि (स) शुचित्त, सुमनस्क २ सहृदय, स्नेहशील ।

सूँघना, क्रि स (स शिघन) शिंघ् (भ्वा प से), आ-उपा-स, घ्रा (भ्वा प अ), घ्राणेन्द्रियेण गध ग्रह् (क्र्य प से) २ अत्यल्पं भक्ष् (चु) ३ (सर्पादि का) दश् (भ्वा प अ) । स पु , उपा-आ,-घ्राणं, घ्रानं, घ्राति (स्त्री) गन्धग्रहणम् ।

सिर—, मु , शिरसि आ-समा-उपा, घ्रा ।

सूँघनी, सं स्त्री (हिं सूँघना) नस्य, दे 'नसवार' ।

सूँघने योग्य, वि , घ्रातव्य, घ्रेय, शिंघनीय ।

सूँघने वाला, स पु , शिघक , घ्रातृ, गध ग्राहक ।

सूँघा सं पु (हिं सूँघना) निधिवेदक , मृगया कुक्कुर , आखेटिक २ *निधिघ्रातृ ३ च(चा)-र , अपसर्प ।

सूँघा हुआ, वि , जिघ्रित, घ्रात, घ्राण, गृहीत गध ।

सूँड, स स्त्री (स शुड) शुडा,-दड , शुडार, हस्ति,हस्त , करि,कर ।

सूँस, सं पु [सं शि(शि)शुमार] अबुकपि, असि, पुच्छ स्वद , शिशुक , महानाम , उष्णवाच , उलु(लू)पिन् ।

सूँ सूँ , स स्त्री (अनु) *सूँ,-कार ध्वनि (स्त्री) ।

—करना, क्रि अ , नासिकया सूँ कृ अथवा सूँ सूँध्वनि कृ ।

सूअर, स पु [स सू(शू)कर] वराह, रोमश , किरि , दंष्ट्रिन, क्रोड , पोत-दत रद, आयुध , घृष्टि , कोल , भेदन , घोणिन्, पोत्रिन् २ (गाली) अधमजन , गृध्नु ।

—का मांस, स पु , शूकर-वराह,-मांसम् ।

सूअरी, स स्त्री [स सू(शू)करी] कोली, वराही, घृष्टि इ ।

सूआ[1], स पु (स शुक) कीर , दे 'तोता' ।

सूआ[2], स पु (स सूचा) सूचक , स्थूल बृहत्, सूची ।

सूई, स स्त्री (स सूची) सूचि (स्त्री), व्यधनी, सूचिका, सी(से)वनी २ घटीसूची ।

—पिरोना, क्रि स , सूची सूत्रेण कृ या सूत्रम् सूचनाययति (ना धा) ।

—का काम, स पु , सूचीकर्मन् (न) ।

—का नाका, स पु , सूची,छिद्र-रध्र-मुख पाश ।

—की नोक, सं स्त्री , सूच्यग्र, सूचिकामुखम् ।

—तागा, स पु , *सूची,-सूत्र डोरम् ।

—का भाला या फावड़ा बनाना, मु , अणु पर्वतीकृ, अत्युक्त्या वर्ण् (चु) ।

सूकर, स पु (स) दे 'सूअर' ।

सूकरी, स स्त्री (स) दे 'सूअरी' ।

सूक्त, सं पु (स न) वेदमत्र ऋक्,-समूह २ उत्तमकथनं ३ महावाक्यम् । वि (स) साधु कथित, सम्यगुक्त ।

सूक्ति, स स्त्री (स) सुभाषित, सुन्दरकथनं, सुन्दर-वर,-वचन-वाक्य-उक्ति (स्त्री) ।

सूक्ष्म, वि (स) अति-अत्यन्त,-अल्प क्षुद्र-तनु दभ्र-तनु-स्तोक-सुक्ष्म श्लक्ष्ण २ दुर्बोध, गहन, गूढ ३ अति,-तनु विरल स्वल्प ।

—कोण, स पु (सं) न्यूनकोण ।

—दर्शक यंत्र, सं पु (स न) अणुवीक्षण यंत्रम् ।

—दर्शिता, स स्त्री (सं) कुशाग्रबुद्धि (स्त्री)- प्रत्युत्पन्नमतित्वम् ।

—दर्शी, वि (स शिन्) कुशाग्र-बुद्धि-मति, सूक्ष्मदृष्टि, गूढज्ञ, सुविचक्षण, प्रत्युत्पन्नमति।
—भूत, स पु (स न) अपञ्चीकृताकाशादि भूतम्।
—मति वि (स) तीक्ष्ण-तीव्र-कुशाग्र-बुद्धि मति।
—शरीर, स पु (स न) सूक्ष्म लिंग, देह शरीरम्।
सूक्ष्मता, सं स्त्री (स) सूक्ष्मत्व, अति-ल्पुता-अल्पता-स्तोकता २ सु-अति-तनुता विरलता, श्लक्ष्णता ३ दुर्बोधता, गहनता, गूढता-त्वम्।
सूखना, क्रि अ (स शोषणं) शुष् (दि प अ), शोष-शुष्कता या (अ प अ), शुष्क निर्जल-नीरस (वि) भू २ कान्ति प्रभा, हीन (वि) भू ३ नश् (दि प वे) ४ कृश दुर्बल (वि) जन् (दि आ से) ५ भी (जु प अ), सद (भ्वा प अ) ६ विग् (कर्म), म्लै (भ्वा प अ)। स पु, शुष्, शोष, शोषा, शुषी-षि (स्त्री)।
सूखा, वि (स शुष्क) निर्जल, निरुदक, अरस, विरस, नीरस, वान २ निष्प्रभ, कान्तिहीन ३ नष्ट, ध्वस्त ४ कृश, दुर्बल विशीर्ण, म्लान ६ परुष, कठोर, निर्दय ७ केवल, शुद्ध। स पु, अनावृष्टि (स्त्री) अवर्षण, अवग्रा(ग्र)ह २ नदा, तीर-कूल ३ निर्जलस्थान ४ शुष्कतमाखु ५ (बाल-काना) कासभेद, शोष ६ दौर्बल्य, कृशागता ७ भग, दे 'भाँग'।
—पड़ना, क्रि अ, वृष्टि-वर्ष-विरम निरोध वृत् (भ्वा आ से)।
—जवाब देना, मु, स्पष्ट निराकृ वा प्रत्याख्या (अ प अ)।
सूखा हुआ, वि दे 'सूखा' (१-७)।
सूखकर काँटा होना, मु., अतिदूरा अस्थिशेष (वि) जन, अत्यन्त क्षि (भ्वा प अ)।
सूखे खेत लहलहाना, मु, सुदिवसा आगम्।
सूचक, स पु (स) सूचो-चि (स्त्री), दे 'सूई' २ दे 'सूअर' ३ सू(सौ)चिक, सौचि, तुन्नवाय, सूत्रभिद्, दे 'दरजी' ४ सूत्रधर ५ कथक ६ कुकुर ७ खल, विश्वासनाशक ८ गुप्तचर-चार ९ पिशुन, कर्णेजप १० शिक्षक। वि (स) ज्ञापक, बोधक, निर्देशक, निदर्शक।
सूचना, स स्त्री (स) विज्ञापना, आ-,ख्यापना, विज्ञप्ति (स्त्री) २ दे 'सूचनापत्र' ३ वार्ता, सदेश, ज्ञान, बोध।
—पत्र, स पु (स न) विज्ञापन विज्ञप्ति-घोषणा-प्रसिद्धि, पत्रम्।
सूचनीय, वि (स) बोधनीय, ज्ञापनीय, ज्ञापयितव्य, आवेदनीय।
सूचि, स स्त्री (स) दे 'सूई'।
सूचित, वि (स) ज्ञापित, बोधित, आ-,ख्यापित, कथित, प्रकाशित।
सूची, स स्त्री (स) दे 'सूई' २ अनुक्रमणी णिका, नामावली लि (स्त्री) पत्रि,-गणना-संख्या।
—कर्म, स पु [सं-र्मन् (न)] कलाभेद।
—पत्र, स पु (स न), सूचि(ची) पुस्तक-पत्रकम्।
—भेद्य, वि (स) सीवनीच्छेद्य २ घन, निबिड (अन्धकार)।
सूजन, स स्त्री (हिं सूजना) शोथ, शोफ, गड।
सूजना, क्रि अ (फा सोजिश) सशोथ-सशोफ (वि) सञ्जन् (दि आ से), श्वि (भ्वा प से), स्फाय् (भ्वा आ से)। स पु, दे 'सूजन'।
सूजनी, स स्त्री (फा सोजनी) कुथभेद *सूचिनी।
सूजा, स पु (स सूचा>) दे 'सूआ' २. वेधनी, वेधनिका।
सूज़ाक, स पु (फा) भूत्र, उष्णवात, रतिजरोगभेद।
सूजा हुआ, वि, घन, स्फीत, सशोफ, शोथयुत।
सूजी, स स्त्री (स शुचि>) कणिक।
सूझ, स स्त्री (हिं सूझना) कल्पना, उद्भावना २ बोध, ज्ञान ३ दृष्टि (स्त्री)।
—बूझ, स स्त्री, बुद्धि-मति (स्त्री)।
सूझना, क्रि अ (स सुध्यानम्) दृश्-लक्ष (कर्म), अवभास् (भ्वा आ से), प्रतिभा (अ प अ) २ (मनसि विचार) आविर्भू अथवा उत्पद् (दि आ अ)।
सूट, स पु (अ) आदल,-वेश (ष)-परिधान २ *सनवेश-ष।

—केस, स पु (अ) वेश(प)कोष ।

सूटा, स पु (अनु) (तमाखुप्रभृतीनां) धूम,-कर्ष कृष्टि (स्त्री) ।

सूत[1], स पु (स सूत्र) तन्तु, डोर, शुल्व २ सूत्र, यज्ञोपवीत ३ मेखला, काञ्ची ।

—धार, स पु, दे 'बढ़ई' ।

सूत[2], स पु (स) वर्णसंकरजातिभेद, क्षत्रियात् ब्राह्मणीसुत २ सारथि, यन्तृ, क्षत्तृ, हयवाह ३ चारण, वन्दिन्, वैतालिक ४ पुराणवक्तृ पौराणिक । [सूती (स्त्री)] वि (स) प्रेरित २ उत्पन्न ।

—पुत्र, स पु (स) सारथिज २ सारथि ३ कर्ण ४ कीचक ।

सूतक, स पु (स) जन्माशौचम् २ मरणाशौचम् ३ सूर्यचन्द्र,-ग्रहण, उपराग ।

सूतली, स स्त्री (हि सूत) सूत्र, डोर, गुण, रज्जु (स्त्री), शुल्व, शुल्वम् ।

सूति, म स्त्री (स) प्रसूति (स्त्री), प्रसव, जननम् २ सन्तति (स्त्री), सन्तान ।

—गृह, स पु (स न) दे 'सूतिकागृह' ।

—मारुत, स पु (सं) प्रसव प्रसूति, पीडा वेदना, भूनिवात ।

सूतिका, स स्त्री (स) सद्य नव, प्रसूता, दे 'जच्चा' ।

—गृह, स पु (सं न) अरिष्ट, सूतिकागार, प्रसव सूति,-गृह भवन आवास गेहम् ।

सूती, वि (हि सूत) कार्पास, कार्पासिक, तूल-तूलक पिचु-पिचुल, निर्मित मयविन् ।

—कपड़ा, म पुं, कार्पास, फाल, बादर, तूलाम्बरम् ।

सूत्र, स पु (स न) तन्तु, डोर, शुल्व, शुल्बं २ यज्ञ,-सूत्र-उपवीत ३ प्राचीनमानभेद ४ रेखा या, लेखा ५ मेखला, काञ्ची ६ नियम, व्यवस्था ७ समार मनितवचन ८ कारण, मूल ९ संधान दे 'सुराग' ।

—कंठ, सं पु (सं) ब्राह्मण २ कपोत ३ खञ्जन, खञ्जरीट ।

—कर्म, सं पु [स-मन् (न)] दारुकर्मन्, तक्षशिल्प २ स्थपकर्मन, इष्टकान्यास, वास्तु निर्माणम् ।

—कार, सं पुं (स) सूत्र,-कर्तृ प्रणेतृ-रचयितृ इत्र ।

—ग्रथ, स पु (स) सूत्ररूपेण रचित पुस्तकम् ।

—धार, स पु (स) नाटकीयकथासूत्रसूचक प्रधाननट, नाट्यशालाव्यवस्थापक, सूत्रभृत् २ तक्षन्, रथकार ३ इन्द्र [धारी (स्त्री) सूत्रधारपत्नी] ।

—पात, स पु (स) उपक्रम, प्र,आरम्भ ।

सूथनी, स स्त्री, दे 'सुथना' ।

सूद[1], स पु (फा) लाभ, प्राप्ति (स्त्री), आय, फल, अर्थ २ वृद्धि (स्त्री), वार्द्धुष्य, कला कायिका, कारिका, वार्त्ता ।

—खाना, क्रि स, वार्द्धुष्य ग्रह् (क् प से) ।

—खोर, स पु (फा) कुशी(सी)द(क), कुसीदिन्, वार्द्धुषिक, वार्द्धुषिन्, वृद्ध्याजीव ।

—खोरी, स स्त्री, कुसीद, कौसीद्य, वृद्धि, जीवन जीविका ।

—दर सूद, स पु (फा) चक्रवृद्धि (स्त्री) ।

—पर देना, क्रि स, कुसीद कृ ।

—पर लेना, क्रि स, वृद्ध्या ऋण ग्रह् ।

—बट्टा, स पु, हानिलाभौ, आयापायौ ।

बे—, वि, वृद्धि-फल,-रहित २ निष्फल, व्यर्थ ।

सूद[2], स पु (स) पाचक, सूपकार २ व्यंजन, दे 'भाजी' ३ सारथ्य ४ अपराध ५ पापम् ।

सूदन, वि (स) नाशक, घातक ।

सूदी, वि (फा) सवार्द्धुष्य, सफल (दत्त आदत्त वा) ।

सूना, वि (स शून्य) निर्जन, विजन, विविक्त, नग्न, हीन शून्य २ रिक्त, -विरहित, -हीन, वशिक, तुच्छ, निर- । स पु (स न) एकान्त, विविक्त, निर्जनस्थानम् ।

—पन, स पु, शून्यता, विजनता, विविक्तता २ रिक्तता ३ एकान्त ।

सूनु, स पु (सं) पुत्र २ अनुज ३ दौहित्र ।

सूप[1], स पु (स शूर्प पुं) प्रस्फोटनमी, कुल्य, शूर्प ।

सूप[2], सं पु (स, मि अं सूप) पक्व-सिद्ध, दाली लि (स्त्री) २ दालीरस ३ सरस व्यंजन ४ सूद ।

—कार, सं पु (सं) सूद, औदनिक, आंधसिक, पाच(तु)क, भक्ष्यकार ।

सूफ़, स पु (अ) दे 'ऊन'।
सूफ़ी, स पु (अ) यवनसम्प्रदायविशेष । वि शुद्ध, पवित्र।
सूबा, स पु (अ) प्रान्त प्रदेश, देशभाग ।
सूबदार, स पु (अ +फा) प्रान्त, अधिपति शासक-अध्यक्ष, भोगपति २ सेनाधिकारिभेद ।
सूबेदारी, स स्त्री (अ +फा) भोगपतित्व, प्रान्ताधिपतित्व २३ प्रान्ताधिपति, पद कर्मन् (न)।
सूम¹, वि (अ शूम=अशुभ) कृपण, मितपच दे 'कंजूस'।
सूम, स पु (स) नल, नीरम् २ दुग्ध, क्षीरम् ३ गगनं, आकाश शम् ।
सूय, स पु (स पु न) सोमस्-सोमलता, निष्पीडन संपीडनम् २ यज्ञ, याग, मेध, मख ।
सूर¹, स पु (स) सूर्य २ अर्कवृक्ष ३ पण्डित ।
सूर², स पु, दे 'शूर'।
सूर³, स पु, दे 'सूअर'।
सूरन, स पु (स सूय, दे)।
सूरत, स स्त्री (फ़ा) रूप, आकार, आकृति (स्त्री) २ सौन्दर्य, छवि (स्त्री) ३ युक्ति (स्त्री), उपाय, विधि ४ दशा, अवस्था ।
—दिखाना, मु, प्रकटनि (ना धा) समक्ष (रे आया (अ प अ)।
—बनाना, मु वेषपरिवृत्त (प्रे) २ अन्यस्य रूप ग्रह् (क्र प से) धृ (चु) ३ अरुचि प्रकटयति (ना धा), विटब (चु) ४ चित्र लिख् (भ्वा प से)।
—बिगड़ना, मु, वदन विवर्ण जन् (दि आ से)।
—बिगाड़ना, मु, सुरूप विरूपयति (चु),कुरूप विधा (जु उ अ) २ दण्ड (चु) ३ अप अवमन् (प्रे) अवज्ञा (क्र प अ)।
—शक्ल, स स्त्री (फ़ा+अ) आकृति (स्त्री)।
सूरदास, स पु (स सूर्यदास) हिन्दीभाषाया श्रीकृष्णभक्तो महाकविविशेष २ अंध, प्रज्ञाचक्षुष्क ।
सूरन, स पु [स सू(शू)रण] अर्शोघ्न, ओल कन्द, वातारि, सुवृत्त, बहुरुच्य,-कंद, दे 'जमींकंद'।
सूरमा, स पु (स शूरमानिन्>) शूर, वीर, योध, भट, विक्रमशील ।
—पन, स पु, शौर्यं, वीरत्व,विक्रम, साहसम् ।
सूरसागर, स पु (सं) भक्त सूरदासरचित श्रीकृष्णलीलावर्णनात्मक काव्यविशेष ।
सूराख़, स पु (फ़ा) छिद्र, विल, विवर, रन्ध्र सुषि (स्त्री)।
—करना, क्रि स, छिद्रयति (ना धा), समुत्कृ (तु प से)।
—दार वि, सच्छिद्र, सरन्ध्र ।
सूर्य स पु (स) सूर, आदित्य, भास्कर, भानु प्रभा विभा दिवा,-कर, भास्वत, विवस्वत, उष्ण तिग्म चण्ड,-रश्मि,-कर, अर्क, मार्तण्ड, मिहिर, तरणि, मित्र, सवितृ, अंशु-मरीचि,-मालिन्, सहस्रांशु, रवि, दिन अह, पति, तपन, पद्मिनीवल्लभ, दिनमणि, सप्त-अश्व – सप्ति तापन, ख दिवा,-मणि, पतंग, ग्रहराज, तमोनुद ।
—कांत, स पु (स) सूर्य-तपन, मणि, रविकान्त, सूर्याश्मन, अग्निगर्भ अर्कदीप्त, उपल ।
—ग्रहण, स पु (स न) सूर्योपराग, सूर्यग्रह ।
—घड़ी, स स्त्री (स सूर्यघटी) शङ्कुयन्त्रम् ।
—तनय, स पु (स) सूर्य, पुत्र-सुत-नन्दन, कर्ण २ शनि, शनैश्चर ३ यम ४ सुग्रीव ५ अश्विनौ (द्वि)।
—तनया, स स्त्री (स) सूर्यपुत्री, सूर्यजा, यमुना भानु-जा-तनया ।
—मंडल, स पु (स न) उपसूर्यक, परिधि, परिवेश, मंडल, सूर्यबिंबम् ।
—मुखी, स स्त्री (सं) सूर्यलता, आदित्य भक्ता, वरदा,अर्ककान्ता, भास्करेष्टा, अर्कहिता।
—मुखी का फूल, स पु, सूर्यकमल, वरदा पुष्पम् ।
—रश्मि, स स्त्री (स ए) रवि-किरण – पाद कर ।
—लोक, स पु (सं) सौरभुवन, लोक विशेष ।
—वंश, स पु (स) रविकुलम् ।
—वंशी, वि (स शिन्) सूर्यवंश्य, रविकुलज।
—वार, स पु (सं) रवि-आदित्य,-वार वासर ।

—संक्रांति, स स्त्री (स) रविसंक्रमणम्। प्रात का—स पु, बाल-रवि-सूर्य-अर्क ।
सूर्यास्त, स पु (स) अस्त, अस्तमनं, निम्लोच, भानोरस्ताचलगमनं २ दिनांत, सायंकाल ।
—होना, क्रि अ, सूर्य अस्त इ-या (अ प अ)-गम्।
सूर्योदय, स पु (सं) भानूद्गम २ प्रात काल ।
—होना, क्रि अ, सूर्य उद् इ (अ प अ)-उद्गम्।
सूल, स पु, देखो 'शूल'।
सूली, सं स्त्री (स शूल-ल) शूला, तीक्ष्णाग्र स्थूणा २ शूलारोपण, प्राणदंडप्रकार ३ वध पाशरज्जुणा, दे 'फाँसी' ४ दंडपाशवध, कंठ उद्बध्य घात, उद्बंधन ५ प्राण-मृत्यु-दंड ।
—चढ़ाना या—देना, क्रि स, शूले आरुह्(प्रे आरोपयति) २ उद्बध्य व्यापद् (प्रे) या हन् (अ प अ)।
—चढ़ाने या—देनेवाला, दंडपाशिक, वधक शूलारोपक ।
सूस, सूसमार, सं पु (स शिशुमार) दे 'सूँस'।
सूहा, वि (हि सोहना) रक्त, शोण, लोहित ।
सृजन, स पु (स सजन) उत्पादन, निर्माण, रचनं २ सृष्टि-उत्पत्ति (स्त्री) ३ मोचनम्।
—हार, स पु, स्रष्टृ, उत्पादक, विधातृ ।
सृजना, क्रि स (स सर्जन) सृज् (तु प अ), उत्पद् (प्रे), विधा (जु प अ)।
सृष्टि, सं स्त्री (स) ससारोत्पत्ति (स्त्री) -सर्ग निर्माण-रचना २ जगत् (न), ससार, चराचर वस्तुजात ३ प्रकृति (स्त्री), दे 'कुदरत'।
—कर्ता, स पु (सं र्तृ) स्रष्टृ, वेधस, विधातृ, विश्वसृज्, ब्रह्मन् (सव पु) २ ईश्वर ।
सेंक, सं पुं (हि सेंकना) उ(ऊ)ष्मन्, त(ता)-प, उष्ण स्पर्श, उष्णता २ तापन, उष्णी करण, तापेन अंगारेषु वा भर्जनं ३ प्र, स्वेदनं, घर्मसेक, ऊष्मणा तपन-उष्णीकरणम्।
सेंकना, क्रि स (सं श्रेषण) ऊष्मणा अंगारे वा भ्रस्ज् (तु उ अ) २ तप (प्रे), उष्णी कृ ३ (उष्णजलादिभि) स, सिच् (तु प अ)-स्वेद कृ, प्र, स्विद् (प्रे)।

आँख—, मु, सौन्दर्य अवलोक् (भ्वा आ से, चु प से)।
धूप—, मु, आतप सेव् (भ्वा आ से)।
सेंटर, स पु (अ) केन्द्र, मध्यबिंदु, मध्य-ध्य २ प्रधान-मुख्य-स्थानम्।
सेंट्रल, वि (अ) केंद्रीय, मध्य, मध्यम, मध्यस्थ ।
सेंटिग्रेड, वि (अ) शतिक ।
सेंटिमीटर, स पु (अं) शतिमानं, शतांश मानम्।
सेंत, स स्त्री (स संहति=किफ़ायत २ राशि>) व्ययाभाव विनियोगाभाव ।
—मेंत, क्रि वि (हि +अनु) मूल्य विना २ निष्प्रयोजन, व्यर्थम्।
—का, मु, मूल्य विना लब्ध, निर्मूल्य ।
—में, मु, *व्यर्थ-मूल्यं, विना २ व्यर्थम्।*
सेंद्रिय, वि (स) सकरण, साक्ष, इन्द्रियवत्, सजीव । २ पुस्त्वयुक्त, मैथुन-समर्थ, वीर्यवत् ।
सेंध, स स्त्री [स सन्धि (पु)] सधिला, सुरं-(रु)ग गा, खानिकम्।
—लगाना या सेंधना, सधिलां कृ अथवा खन् (भ्वा प से)।
—लगाने वाला, स पु, सुरं(रु)गयुज्, सधि हारक, सधिलाकार ।
सेंधा, स पु (सं सैंधव-व) शीतशिव, माणि-मथ-ध्य, व'शिर, सिंधु(देश)ज, शिव, सिद्ध पथ्यम्।
सेंधिया, सं पु (हि सेंध) दे 'सेंध लगाने वाला'।
सेंवई, स स्त्री (सं सेविका) मृत्रिका ।
—पूरना या—बटना मु, सेविका व्यावृत्(प्रे)।
सेंहुड़, स पु, दे 'थूहर'।
से¹, प्रत्य (प्रा सुन्तो, पु हि सेंति) करण कारकचिह्न (प्राय तृतीया से, 'स' से या -पूर्व,-पूर्वकं आदि से अनुवाद करते हैं। उ, आदर से=आदरेण, सादर, आदरपूर्वकं ॥) २ अपादानचिह्न (प्राय पचमी से 'आ' से या 'प्रभृति' '-आरभ्य' आदि से अनुवाद करते हैं। उ, वृक्ष से गिरा वृक्षात् अपतत्, जन्म से-आजन्म, आजन्मन, कल से लेकर=श्व-प्रभृति, श्व आरभ्य इ)।
से², वि (हि 'सा' का बहु) सम, समान, सदृश ।

सेकंड, स पु (अ) विकला, विपल, क्षण । वि (अ) द्वितीय।
सेक, स पु (स) दे 'छिड़काव'।
सेक्रेटरी, स पु (अ) मन्त्रिन्, लेखनसचिव ।
सेकुलन, स पु (अ) वि, माग ।
सेचक, स पु (स) मेघ, वारिद । वि प्रो. क, सेक्तृ।
सेचन, स पु (स न) अव-आ, सेक सेचन, अभ्युक्षण, प्रोक्षणम्।
सेज, स स्त्री (स शय्या, दे)।
—पाल, स पु (स शय्यापाल) शयना गाररक्षक, शय्या, अध्यक्ष पाल ।
सेठ, स, पु (स श्रेष्ठिन्) लक्षपति, कोटीश्वर, धनाढ्य । २ वणिग्वर, सार्थवाह ३ धनिमा निजनोपाधि ४ क्षत्रियोपजातिभेद [सेठानी (स्त्री) धनाढ्या, धनाढ्यपत्नी]।
सेतु, स पु (स) वरण, संवर, दे 'पुल'।
—बंध, स पु (स) वारण सवर, बंधन-निर्माण २ श्रीरामनिर्मित सेतुविशेष ।
सेना, क्रि स (स सेवन) अंडाद् उत्पद्(प्रे), अडेपु उपविश् (तु प अ) २ सेव (भ्वा आ से) ३ उपास् (अ आ से)।
सेना, स स्त्री (स) सैन्य, बल, वाहिनी, चमू (स्त्री), अनीकिनी, पृतना, ध्वजिनी, वरूथिनी, चक्र, गुल्मिनी।
—पति, स पु (स) सेनानी, वाहिनीपति, सेना,-वाह-नायकः-पाल-अध्यक्ष -अधीश -नाथ ।
—व्यूह, स पुं (स) सैन्यविन्यास ।
सेनानी, स पु (स-नी) दे 'सेनापति'।
सेनेट, स स्त्री (अ) प्रधानव्यवस्थापिका सभा, २ विश्वविद्यालयस्य प्रबन्धकर्त्री सभा ३ परिषद् (स्त्री), सभा।
सेफ़, स पुं (अ) लोहपेटिका, रक्षामंजूषा।
सेब, स पु (फा) आत लोवि सिञ्चितिक-सिंचितिका, फल, सेव, मुष्टिप्रमाणवदरम् ।
सेम, स स्त्री (स शिंबी) शिंबा, शिंबिका। वि (स्त्री) शिंबा, शिंबिका, शिंबी-वि (स्त्री)।
सेमल, स पु [स शाल्मलि (पु स्त्री)] शाल्मल लिनी, तूलवृक्षः, दीर्घद्रुम, रम्यपुष्प दुरारोहा।
सेर[1], स पु (स) सेटकम्।
सेर[2], वि (फ़ा) तृप्त, संतृप्त।
सेराब, वि (फ़ा) जलप्लुत, अभिषिक्त २ सिक्त, प्लावित।
सेरी, स स्त्री (फ़ा) तृप्ति (स्त्री), संतोष ।
सेरू, स पु (हि सिर)खट्वाया शीर्षपादपट्टौ।
सेल, सं पु (अं) जीवकोष ।
सेलखड़ी, स स्त्री, दे 'खड़िया'।
सेल्लोज़, स पु (अ) काष्ठौजम्।
सेवक, स पु (स) परि अनु, चर, किंकर, भृत्य, भृतक, कर्मक(रा)र अनुजीविन्, दास, नियोज्य, चेट, चेटक, डिंगर, परि, कर्मिन्-चारक -जन-स्कर, प्रेष्य, भुजिष्य, ल डीक, शुश्रूषक २ भक्त, उपासक, आरा धक ३ शिष्य, अन्तेवासिन्।
सेवकाई, सं स्त्री (स सेवक >) उप, चार चर्यास्थान, परिचर्या, शुश्रूषा, सेवकत्व, कैंकर्य, सेवा, श्ववृत्ति (स्त्री) २ आराधन, पूजा।
सेवती, स स्त्री (स सेवन्ती) शतपत्रा, कर्णिका, चारुकेश(स)रा, महाकुमारी, शकाग्ना, अतिमंजुला, तरुणी, मृद्वेष्टा, शिववल्लभा, राम तरुणी।
सेवन, स पु (स न) दे 'सेवा' २ उपा सन, आराधन, पूजनं ३ उपयोग, प्रयोजन, उपभोग ४ सततवास ।
—करना, क्रि स, उपभुज् (रु आ अ), सेव् (भ्वा आ से)।
सेवनीय, वि (स) सेव्य, सेवितव्य, सेवा परिचर्या-उपचार, अर्हयोग्य २ पूज्य, आराध्य ३ उपयोगार्ह, प्रयोजनीय।
सेवा, स स्त्री (सं) दे 'सेवकाई' (१, २) ३ आश्रय, शरणम्।
—करना, क्रि स, सेव् (भ्वा आ से), अनु उप परि, चर् (भ्वा प से), उपास (अ आ से), उपस्था (भ्वा आ अ), शु (सन्नन्त शुश्रूषते)।
—टहल, स स्त्री (सं + हिं) परिचर्या।
—सुश्रूषा, स स्त्री (स) उप,-चार चर्या।
सेविका, स स्त्री (स) चेटी, दासी, भुजिष्या, प्रेष्या, कर्मकरी, नियोज्या, परिचारिका।
सेवित, वि (स) शुश्रूषित, उप परि, चरित

२ उपासित, पूजित, आराधित ३ व्यवहृत, प्रयुक्त ४ आश्रित ५ उपभुक्त, कृतोपभोग।

सेवी, वि (स विन्) सेवक सेवापरायण २ पूजक, आराधक ३ -भोगी। -भुज्, -भक्षिन्, -पायिन।

सेशन, स पु (अ) बहुदिवससमयमध्य अधिवेशन समेलन २ सत्र (स्कूल आदि का)।

—कोर्ट, स स्त्री (अं) दण्डसत्राधिकरणम्।

—जज, स पु (अ) दण्डसत्रार्धीश।

सेहत, स स्त्री (अ) सुख, सौख्य २ रोग मुक्ति (रुग्ण), दे 'स्वास्थ्य'।

—खाना, सं पु (अ + फा) शौचागारम्।

सेहरा, स पु (स शेखर) वरमुखावलंबि मालावली-स्रग्जाल २ वर-परिनेपथ्य-मुकुट ३ वरगुणवर्णनात्मकं गीतम्।

—बँधाई, स स्त्री, शेखरबंधनशुल्कम्।

सेही, स स्त्री, दे 'साही'।

सैंडफ्लाई फीवर, सं पु (अ) बालुकामक्षिकाज्वर।

सैंतालीस, वि (स सप्तचत्वारिंशत्) स पु, उक्ता संख्या, तद्बोधकाकौ (४७) च।

सैंतालीसवाँ, वि (हिं सैंतालीस) सप्तचत्वारिंशत्तम -मी-म, सप्तचत्वारिंश-शी-श (पु स्त्री न)।

सैंतीस, वि (सं सप्तत्रिंशत्) स पु, उक्ता संख्या, तद्बोधकाकौ (३७) च।

सैंतीसवाँ, वि (हिं सैंतीस) सप्तत्रिंशत्तम -मी-म, सप्तत्रिंश-शी-श (पु स्त्री न)।

सैंधव, स पु (स) (सिंधुदेशभव) घोटक, सिंधुदेशीयोऽश्व २ दे 'सैंधा' ३ जयद्रथ ४ सिंधुदेशवासिन। वि (सं) सिंधुदेशीय २ समुद्रप, समुद्रीय सामुद्रिक।

सैकड़ा, स पु (स शतकाण्ड) शत, शतक २ शतवस्तु-समुदाय-समूह-समुच्चय। क्रि वि., प्रतिशतम्।

सैकड़ों, वि, परःशत।

सैकलगर, सं पु (अ सैकल + गर) शस्त्र-मार्जक-आर्जक-तेजक।

सैद्धांतिक, सं पु (स) सिद्धान्त-विद्वस, तत्त्वज्ञ, दार्शनिक २ तांत्रिक। वि (स) सिद्धान्त-दर्शन-तत्त्व-संबंधिन।

सैन, सं स्त्री (स शयनं>) संकेत, संज्ञा, इंगित २ स्पर्श, चिह्न।

—करना, क्रि स., (भ्रूनेत्रहस्तादिभि) संज्ञां संकेतं वा कृ।

—मारना, क्रि स, सहाव अवलोक् (चु) २ निमेषेण संकेत कृ।

सैना, स स्त्री, दे 'सेना'।

सैनापत्य, सं पु (स न) सेनापति सेनाध्यक्ष-कार्य पदम्, सेनापतित्वम्। वि (सं) सेनापति-सम्बन्धिन्-विषयक।

सैनिक, स पु (सं) सेनाचर, योध, भट, सैन्य, आयुधिक, योद्धृ २ रक्षापुरुष, दे 'संतरी'। वि (सं) साग्रामिक, सामरिक, आयुधिक, क्षात्र[-त्री (स्त्री)]।

—वाद, स पु (स) समरसमर्थकसिद्धान्त, युद्धानुमोदकवाद।

सैनिटरी, वि (अ) स्वास्थ्य आरोग्य, कर रक्षक विषयक।

सैनिटेशन, स पु (अ) आरोग्य स्वास्थ्य, रक्षा-रक्षणम्।

सैन्य, स पु (स न) दे 'सेना'।

सैरंध्री, स स्त्री (सं) स्वतंत्रा शिल्पजीविनी २ अंतःपुर, परिचारिका-दासी ३ द्रौपदी।

सैर, स स्त्री (फा) सुख, पर्यटन, परिभ्रमणं, विहारः, विहरणं, विचरणम्।

—करना, क्रि अ, सुख पर्यट् विचर् (भ्वा प से), विहृ (भ्वा प अ), भ्रम् (भ्वा प से)।

—गाह, स स्त्री (फा) भ्रमण पर्यटन-स्थानं स्थली।

—सपाटा, स पु, दे 'सैर'।

सैलानी, वि (फा सैर) पर्यटन भ्रमण-विहरण-शील, पर्यटक, यथेष्टविहारिन २ आनंदिन, विनोदिन, प्रमोदिन, उल्लासिन।

सैलाब, स पुं (फा) जल-प्लावनं-वृद्धि विप्लव प्रलय आप्लाव २. महा, प्रवाह-ओघ।

सों, प्रत्य, दे 'से'।

सोंचर नमक, स पु (स सौवर्चल + फा) सौवर्चलं, रुचकं, रुच्यं, अक्षं, कृष्णलवणं, तिलकं, हृदगन्धकम्।

सोंटा, सं पु (सं शुंड>) स्थूल-दण्ड, स्थूल, यष्टि (स्त्री) दण्ड २ मुसल म्।

—बरदार, सं पु (हिं + फा) दंड-धर-भृत्।

सोंठ, स स्त्री [स शुंठी ठि (स्त्री)] महा विश्व औषध विश्वभेषज, कटुग्रंथि, कफारि ।
सोंधा, वि (स सुगंध) सुगन्धित, दे ।
सोंपना, क्रि स दे 'सौंपना' ।
सोंह, स स्त्री दे 'सौगंद' ।
सो, सर्व (स स) देखो 'वह' । अव्य, अत, अत-एव, अनेन कारणेन अस्मात् कारणात् ।
सोऽह, वाक्यांश (स स + अह) अहं ब्रह्मास्मि (वे) ।
सोआ, स पु (स शतालाह्वा) मिश्रेया, अति-च्छत्रा, शत-अक्षी पुष्पिका मधुरा, मधुरिका, मधरी, मिशी-शि [(स्त्री) शाकभेद] ।
सोई, सर्व, दे 'वही' ।
सोखना, क्रि स, दे सुखाना' ।
सोख्ता, स पु, दे 'स्याहीचूस' ।
सोगंद, स स्त्री, दे 'सौगंद' ।
सोग, स पु (स शोक) (मृत्युजनित) परिताप, शुचा, दु खम् ।
—मनाना, मु, शोकचिह्नानि धृ (चु), शुच (भ्वा प से) ।
सोच, स पु (स शोचन) शोक, शुचा च (स्त्री), विषाद २ विचार, विमर्श, विचारणा ३ चिन्ता, रणरणक, उत्कलिका, -व्यग्रता ४ पश्चात् अनु, ताप ।
—विचार, स पु (हि + स) विचार-रणा, विमर्श, आलोचना, समीक्षा, विनय, विवेचन-ना ।
सोचना, क्रि अ (स शोचन) विचर् (प्रे), विमृश् (तु प अ), आ पर्या-समा लोच (चु) २ चिन्ताकृ, चिन्त् (चु) ३ शुच् (भ्वा प से), दे विचारना' ।
सोच्छ्वास, वि (स) प्रसन्न, प्रहृष्ट २ शिथिल, श्लथ ३ उच्छ्वासयुक्त ४ सत्वरप्राण । अव्य (स न) सदीर्घश्वास, नि श्वासपूर्वक, सनिश्वासम् ।
सोज, स स्त्री (हि सूजना) शोथ, शाफ, दे 'सूजन' ।
सोज़िश, स स्त्री (फ़ा) पाक, प्रदाह २ शोथ ।
सोटा, स पु दे 'सोंटा' ।
सोडा, सं पु (अं) क्षिार ।
—वाटर, स पु (अ) क्षिारजलम् ।
खाने का—, *भक्ष्यक्षिार ।
धोने का—, *धावनक्षिार ।
सोडियम, स पु (अ) क्षारधातु (न), क्षारत्वम् ।
सोत[1], स पु (स)स्रोतस (न) उत्स, वारिप्रवाह, प्रस्रवण, निर्झर २. नदी-शाखा, कुल्या ।
सोता[2], वि (स) सुप्त, शयान, निद्रित ।
सोते-जागते, मु, अहर्निश, दिवानिश, प्रतिक्षणं, सदा ।
सोदर, स पु (स) सहोदर, सोदर्य, भ्रातृ ।
सोदरा, स स्त्री (सं) सहोदरा, सोदर्या, स्वसृ (स्त्री) ।
सोन, स पु (स शोण) हिरण्यवाह, शोणभद्र, शोणा (नदविशेष) ।
सोनजूही, स स्त्री (स स्वर्णयूथी) हरिणी, पीतिका, हेमपुष्पिका, हैमा, स्वर्णयूथिका ।
सोना[1], स पु (स सुवर्ण) स्वर्ण, कनक, हिरण्य, हेमन् (न), हाटक, तपनीय, शातकुंभ, चामीकर, जातरूप, महारजत, काचन, रुक्म, कार्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद, भद्र, कलधौत, लाहवर, कल्याण, मनोहर, भास्कर, दीप्त, मगल्य, निष्क, अग्निशिख, २. महार्घ-बहुमूल्य,-वस्तु (न)-द्रव्यम् ।
—(ने)का तार, स पु, कनकसूत्रम् ।
—(ने)का पानी, स पु, सुवर्णलेप ।
—(ने)का वर्क, स पु, सुवर्णपत्रम् ।
गहनों का—, स पु, शृंगि, शृंगी, शृङ्गीकनकम् ।
सोना[2], क्रि अ (स शयन) स,शी (अ आ स), निद्रा (अ प अ), सविश् (तु प अ), स्वप (अ प अ) २ (अंगादि) निश्चेष्ट निस्तब्ध-निश्चल (वि) भू ३ दे 'मरना' । स पु, शयन, निद्रा, गुडाका, तंद्रा, तामसी, प्रमीला, सवेश, सुप्ति (स्त्री), स्वप्न, स्वाप, शी ।
सोनामाखी, स स्त्री (स स्वर्णमाक्षिक) माक्षिक मधु धातु, तापिच (उपधातुभेद) ।
सोने का कमरा, सं पु, स्वप्न-गृह निकेतन, शयन,-गृह मंदिर-आगारम् ।
सोने योग्य, वि, शयितव्य, शेय, शयनीय ।
सोनेवाला, स पु, सुषुप्सु, शिशयिषु, निद्रालु, शयालु, तंद्रालु ।

सोया हुआ, वि, निद्रित, निद्राण, शयित, सुप्त, शयान, निद्रामग्न।
सोप, स पु (अ) दे 'साबुन'।
सोपान, स पु (स न) दे 'सीढ़ी'।
सोफ़ा, स पु (अ) शय्या, पर्यंक, शय नीयम्, *उपवेश्य, *आस्य।
सोम, स पु (स) सुधांशु, चंद्र, दे 'चाँद' २ सोमवार ३ स्वर्ग ४ कर्पूर ५ सोम लता।
—कांत, सं पु (सं) चंद्रकांत।
—ग्रह, स पु (स) चंद्रग्रहणम्।
—देव, स पु (स) सोमदेवता २ चंद्रदेवता ३ कथासरित्सागरस्य रचयितृ।
—नाथ, स पु (स) ज्योतिर्लिङ्गविशेष २ प्राचीननगरविशेष।
—पान, स पु (स न) सोमपीन नि (स्त्री)।
—पायी, वि (स -यिन्) सोम, पथ-पीतिन्।
—पुत्र, स पु (स) सोमज, बुधग्रह।
—यज्ञ, स पु (स) सोम,याग मख क्रतु।
—रोग, स पु (स) स्त्रीरोगभेद २ बहु मूत्रता, मूत्रातिसार।
—लता, स स्त्री (स) सोमवल्ली, सोमा, क्षीरी, द्विजप्रिया, गुल्मवल्ली,वल्ली, यज्ञलता, सोमक्षीरा, यज्ञश्रेष्ठा २ गुडूची ३ ब्राह्मी।
—वंश, सं पु (सं) चंद्रवंश २ युधिष्ठिर।
—वती, स स्त्री (सं) सोमवती अमावस्या।
—वल्ली, सं स्त्री (स) सोमलता २ गुडूची ३ सोमराजी ४ पातालगरुडी ५ ब्राह्मी ६ सुदर्शना।
—वार, स पु (सं) सोम-चंद्र, वार वासर दिनम्।
सोरठ, सं पु (सं सौराष्ट्र) प्रान्तविशेष (गुजरात तथा दक्षिणी काठियावाड) २ सौराष्ट्र राजधानी (सूरत नगर) ३ रागभेद।
सोरठा, स पुं (हिं सोरठ) हिन्दीवर्णिकमात्रिक छंदोभेद।
सोर[1], वि (?) शीत, शीतल, शिशिर २ निरम्लकषाय। स पु (?) शीर्य, शैत्य ३ निरम्लकषाय स्वाद।
सोल[2], सं स्त्री (अं) आतपत्र, आत, वेतन।
सोल[3], सं पुं (अं) पाद तलम् २ पादु कातलम्।
सोलह, वि (स षोडशन्) षड्दशन्दश। स पुं, उक्ता संख्या, तद्बोधकाङ्कौ (१६) च।
सोलहो आने, मु, सामस्त्येन, अशेषत, पूर्वतया, सामस्त्येन।
सोलहवाँ, वि (हिं सोलह) षोडश षोडशी (पु स्त्री न)।
सोशल, वि (अ) सामाजिक, समाजविषयक।
सोशलिज़्म, सं पु (अ) समाजवाद।
सोशलिस्ट, स पुं (अ) समाजवादिन्।
सोसनी, (वि (फ़ा सौसन) रक्तनील।
सोसाइ(य)टी, स स्त्री (अ) समाज, सभा, गोष्ठी २ सगति (स्त्री), समर्ग।
सोह-सोहम, वेदान्त-वाक्य, दे 'सोऽहं'।
सोहन, वि (सं) शोभन, मनोहर, दे 'सुदर'। स पु, नायक, सुन्दरपुरुष।
—चिड़िया, स स्त्री, *शोभनचटक (-का स्त्री)।
—पपड़ी, स स्त्री, *शोभनपपटी।
—हलवा, स पु, *शोभनसयाव।
सोहना[1], क्रि अ (स शोभन) शुभ्, विराज् (भ्वा आ से), लस्तिसुदर शोभन (वि) वृत (भ्वा आ से), विभा (अ प अ)। वि, शोभन, रम्य, सुदर, मनोज्ञ।
सोहना[2], क्रि स (म शोधन) कुतृणानि उन्मूल् (चु), क्षेत्र कुतृणरहित कृ।
सोहबत, स स्त्री (अ) सगति (स्त्री), ससर्ग २ मैथुनम्।
सोह(हि)ला, स पु (हिं सोहना) *पुत्र जन्मोत्सवगीत २ मगल्य-मांगलिक शुभ, गीत ३ देवतास्तोत्रम्।
सोहिनी, वि स्त्री (सं शोभिनी) सुदरी, मनोरमा, रम्या, सुरूपा। स स्त्री, रागिणी भेद।
सौंदर्य, स पु (सं न) रमणीयता, दे 'सुदरता'।
सौंपना, क्रि स (सं समर्पण) न्यस् (दि प स), निक्षिप् (तु प अ), सम् ऋ (प्रे समर्पयति), प्रतिपद्,निविश (प्रे)। स पुं, न्यास, निक्षेप, समर्पण, प्रतिपादनम्।
सौंपने योग्य, वि, निक्षेप्तव्य, समर्पणीय।
सौंपने वाला, सं पुं, निक्षेप्तृ, समर्पयितृ।
सौंपा हुआ, वि, निक्षिप्त, न्यस्त, समर्पित।
सौंफ, सं स्त्री (सं शतपुष्पा) मधुरिका,

माधवी, माधुरी, मधुरा, सुगधा, शतपत्रिका, अति मिन, छत्रा ।
—का अर्क, स पु, शतपुष्पासव ।
सौंह, म स्त्री दे 'सौगद'।
सौ, वि (स शत, नित्य न) दशगुणितदश मरया। स पु, उक्त मख्या, तद्बोधकाङ्क (१००) च।
—बात की एक बात, मु, सार, तात्पर्य, साराश ।
—बिस्वे, मु निश्चयेन, अवश्य, नि सशयम्।
सौवाँ, वि, शततम सी-मम्।
सौकन, स स्त्री, दे 'सौत'।
सौकर्य, स पु (स न) सुकरता, सुसाध्यता २ दे सुभीता'।
सौकुमार्य, स पु (स न) कोमलता, दे 'सुकुमारता' २ यौवन ३ काव्यगुणभेद ।
सौखिक, वि (स) सुखेच्छुक, सुखैषिन्, सुखकामिन् २ सुख-आनन्द-मोद,-दायक प्रद ३ सुख आनन्द, विषयक-सम्बन्धक।
सौख्य, स पु (स न) आनद, सुख दे ।
सौगद, स स्त्री (फा) शपथ, समय, प्रतिज्ञा, वचन, वाचा, सत्य ।
—खाना, क्रि अ, शप् (भ्वा दि उ अ), सशपथ वद् (भ्वा प से)।
—देना, क्रि स, शप (प्रे), सशपथ वच (प्रे)।
सौगध, सं प (स न) सुगध दे २ गाधिक, दे 'गधी ३ कत्तृणम्। स स्त्री, दे 'सौगद'। वि (स) सुगधिन दे ।
सौगधिक, वि (सं) सुगधि, सुगधित, सुवास, सुरभि। स पु (स) गाधिक, गध, विक्रयिन् उपजीविन्-वणिज। २ गध(धि)क, गधाश्मन्। (स न) नील,-कमल-उत्पल, कुवलयम्। २ पुण्डरीक, सिताम्भोज, श्वेत कमलम्। ३ मगन्धिधानभेद ४ पद्मराग ।
सौगात, स स्त्री (तु) उपहार, उपायन, प्राभृतकं २ दुर्लभवस्तु (न)।
सौजन्य, स पु (स न) सज्जनता, सुजनता, दे ।
सौत, सौत(ति)न, स स्त्री (सं सपत्नी) समानपतिका।
सौतिया डाह, स पु, सापत्न्येर्ष्या २ साप त्न्य, ईर्ष्या।

सौतेला, वि (हिं सौत) सापत्न [—ली (स्त्री)] सपत्नी सम्बन्धिन ।
—पिता, स पु, वि मातृपति ।
—पुत्र, स प सपत्नीपुत्र, सापत्न्य ।
—बच्चा, स, पु पर नात अपत्यम्।
—भाई, स पु वैमात्र, वैमात्रेय विमातृज ।
सौतेला पुत्री, स स्त्री, मपत्नी, पुत्री-दुहितृ (स्त्री)।
सौतेली बहन, स स्त्री, वैमात्री, वैमात्रेयी, विमातृजा।
सौतेली माता, स स्त्री, विमातृ (स्त्री)।
सौदा¹, स पु (अ) भाड, भाडानि (बहु), पण्य, क्रयविक्रयवस्तु (न) २ आदान प्रदान, दानादान, व्यवहार ३ क्रयविक्रयौ (द्वि), नियम, वाणिज्य, *व्यापार', वणिक्कर्मन् (न) ४ क्रय विक्रय, प्रतिज्ञा।
—करना, क्रि अ, क्रयविक्रय कृ, वाणिज्य कृ, पण (भ्वा आ अ)।
—सुलुफ, स पु, दे 'सौदा' (१)।
—सूत, स पु, व्यवहार ।
सौदा², स पु (अ) उन्माद, दे 'पागलपन'।
सौदाई, स पु (अ सौदा) उन्मत्त', दे. 'पागल'।
सौदागर, स पु (फा) नैगम, क्रयविक्रयिक', पण्याजीव वणिज, वाणिज्यकारिन्, सार्थ वाह, सार्थिक ।
—बच्चा, स पु (फा+हिं) वणिज् २ वणिक्पुत्र ।
सौदागरी, स स्त्री (फा) दे 'सौदा' (३)।
सौदाम(मि)नी, स स्त्री (स) सौदाम्नी, चपला, चचला, तडित् विद्युत् (स्त्री), दे 'बिजली'।
सौध, स पु (स न) हर्म्य, प्रसाद', भवन, अट्टालिका।
सौप्तिक, स पु (स न) निशायुद्ध, रात्रिरण, रात्रि निद्रा,-मारण २ महाभारतीयपर्वविशेष ।
सौभागिनी, सं स्त्री, दे 'सुहागिन'।
सौभाग्य, स पु (स न) सु भग्य-भागधेय दैव-दिष्ट दिष्टि (स्त्री)-नियति (स्त्री) २ सुख, आनद ३ कल्याण, कुशल ४ दे 'सुहाग' (१) ५ ऐश्वर्य, विभव ६ सौन्दर्य ७ शुभेच्छा ८ साफल्य ९ सिंदूरम्।

—शुंठी, स स्त्री (स) सूतिकारोगनाशक पाकभेद (आयु)।
सौभाग्यवती, वि स्त्री (स) सधवा, दे 'सुहागिन' २ भाग्यशालिनी।
सौभाग्यवान्, वि पु (स-वत्) महाभाग, सुभाग्य, सुभग, पुण्यवत्, धन्य २ सुखी सपत्नश्च।
सौमित्रि, स पु (स) सौमित्र, लक्ष्मण।
सौम्य, वि (स) सोमसंबंधिन् २ सौमिक, चान्द्र ३ शीतस्निग्ध ४ नम्र सुशील, शांत ५ शुभ, मंगल्य ६ प्रसन्न, प्रहृष्ट ७ प्रियदर्शन, सुंदर ८ उज्ज्वल, भासुर।
—दर्शन, वि (स) प्रियदर्शन, सुभगाकार।
—वार, सं पु (स) बुधवासर।
सौम्यता, स स्त्री (स) शीतलता, शीत स्निग्धता २ सुशीलता, साधुत्व ३ सौन्दर्य ४ उदारता, परोपकारिता।
सौर[1], वि (स) सौर्य, सूर्य विषयक संबंधिन् २ भानुज ३ सूर्यानुसारिन्।
—मास, स पु (स) सूर्यैकराशिभोगावच्छिन्नकाल।
—सवत्सर, स पु (स) सूर्यस्य द्वादशराशि भोगावच्छिन्नकाल।
सौर[2], सं स्त्री (देश० सौड) दे 'चादर'।
सौरथ, स पु (सं) वीर, भट, योध, योद्धृ।
सौरभ, स पु (सं न) सुगंध, दे २ कुकुम, दे 'केसर' ३ आम्रम्।
—वाह, स पु (स) वायु, पवन।
सौरभित, वि (स) सुरभि, सुगंधित दे।
सौराष्ट्र, सं पु (स) प्रान्तविशेष (गुजरात काठियावाड)।
सौरी, स स्त्री (स सूतिकागार) दे 'सूतिका गृह'।
सौष्ठव, स पु (स न) सौन्दर्य, सुषमा, लावण्य २ लाघव, क्षिप्रता ३ गुण अतिशय उत्कर्ष, वैशिष्ट्य ४ उपयुक्तता, उपयोगिता।
सौंहँ, सं स्त्री (सं शपथ) दे 'सौगंद'।
सौहांजना, स पु (स शोभांजन) तीक्ष्ण गंध, सु.तीक्ष्ण, रुचिरांजन।
सौहार्द सं पु (सं न) सख्य, मानसदैन्य, सौहृद्य, अवैर्य। दे 'मित्रता'।
स्कंद, स पु (स) कार्तिकेय, सेनानी, शिखिवाहन, षाण्मातुर, कुमार, शक्तिधर, स्वामिन्, द्वादशलोचन।
—पुराण, स पुं (स न) पुराणग्रंथविशेष।
स्कंध, स पु (स) अंस, भुजशिरस् (न)- मूल, दो शिखर, वस्तवर २ प्रकाड -ड, दड, स्कंधस् (न) प्रकाडक, दे 'तना' ३ शाखा ४ समूह ५ सैन्यव्यूह ६ ग्रन्थविभाग, खण्ड, पर्वन् (न)।
स्कंधावार, स पु (स) शिबि(वि) र, कटक, २, सेना, आवास-स्थान ३ राजधानी ४ सेना ५ यात्रिन्वणिज्, निवेश।
स्कर्वी, स स्त्री (अ) शीताद।
स्कारलेटिना, स पु (अ) आरक्तज्वर, उदर्द, लोहितज्वर।
स्कालर, स पु (अं) छात्र, विद्यार्थिन् २ सुविद्वस्, भट्ट, प्रकाण्डपंडित।
—शिप, स पु (अ) छात्रवृत्ति (स्त्री) २ पाण्डित्य, विद्वत्ता।
स्कीम, स स्त्री (अ) योजना, आयोजन, व्यवस्थितविचार, प्रयोग, युक्ति (स्त्री)।
स्कूल, स पु (अं) विद्यालय, पाठशाला।
—मास्टर, स पु (अ) शिक्षक, अध्यापक।
स्खलन, स पु (स न) पतनं, भ्रंश, स्रंस, स्रंसनं २ सन्मार्गात् च्युति (स्त्री) च्यवनं विचलन भ्रंश, उन्मार्गगमनम्।
स्खलित, वि (स) पतित, च्युत, भ्रष्ट, २ स्रस्त, मृदु स्रत ३ विचलित ४ भ्रान्त ५ उन्मार्गगत।
स्टाप, स पु (अं स्टंप) (आधिकारिक) मुद्राङ्कितपत्र २ पत्रमुद्रमुद्रा, दे 'डाक की टिकट' ३ मुद्रा ४ मुद्रांक।
स्टार्च, स पुं (अं) श्वेतसार।
स्टीम, स स्त्री (अ) बाष्प।
—इंजन, स पु (अ) बाष्पयन्त्रम्।
स्टीमर, स पुं (अ) बाष्पपोत।
स्टूल, सं पु (अ) उच्चपीठम्।
स्टेज, स पु (अं) रंग, मंच भूमि (स्त्री)- पीठं २ मंच।
—मैनेजर, स पु (अ) रंगमंचप्रबंधक, सूत्रधार।
स्टेथिस्कोप, सं स्त्री (अ) उरःपरीक्षणी।
स्टेशन, सं पु (अ) (वाष्पयानस्य) स्थानम्।

स्टेशनरी, स स्त्री (अ) लेखनसामग्री।
स्टैंड, स पु (अ) आधार, स्थापकम्।
स्तम, स पु (सं) स्थूणा, स्थाणु, यूप, मेढि थि २ तरुस्कंध, प्रकाड -ड ३ सात्त्विक भावभेद ४ प्रतिबंध २ मूर्च्छा, जाड्यम्।
स्तभक, वि (स) स्तमकर, रोधक २ जाड्य, कर-जनक ३ वीर्यरोधक ४ मलावष्टभक।
स्तभन, स पु (स न) अव,रोध-रोधन, निवारण २ शुक्रपातविलब ३. स्तभक (औषध) ४ जडी निश्चेष्टी-करण ५ (स पु) मदनबाणविशेष।
स्तभित, वि (स) अव,रुद्ध, निवारित २ जडी,भूत कृता, निस्तब्ध ३ स्थित, विरत।
स्तनधय, स पु स्त्री (स) उत्तानशय -या, डिंभ भा, स्तनप पा, स्तनधय -यायी, स्तन, पायक (पायिका)-पायिन् (-पायिनी)।
स्तन, स पु (स) कु(कू)च, उरो-उरसि,-ज, वक्षो,-ज -रुह।
—चूचुक, स पु (स न) स्तन,-मुख-अग्र-शिखा-वृंत, मेचकम्।
—पान, स पु (स) स्तन्य धीति (स्त्री)।
—पायी, स पु, दे 'स्तनधय'।
स्तन्य, स पु (स न) क्षीर, दुग्धम्।
स्तब्ध, वि (स) निश्चली-जडी, भूत निश्चेष्ट, सुप्त, निस्स्पंद २ दृढ निरुद्ध ३ दृढ स्थिर ४ मंद अलस ५ दुराग्रहिन् ६ दृप्त।
—दृष्टि, वि (स) स्तब्धनयन, निर्निमेष।
—बाहु, वि (सं) जड निस्तब्ध, निश्चेष्ट, हस्त-कर-बाहु भुज।
—मति, वि (सं) मदबुद्धि, जड।
स्तब्धता, स स्त्री (स) जडता, स्पदन हीनता २ स्थिरता, दृढता ३ बधिरता, श्रवणशून्यता।
स्तर, स पु (स) दे 'परत' २ शय्या, आस्तर, तल्प -ल्पम्।
स्तव, स पु (स) स्ताव, स्तुति (स्त्री) दे। २ स्तोत्र ३ ईश्वरप्रार्थना।
स्तवक, स पु (स) पुष्प-कुसुम,-गुच्छ - स्तबक २ राशि अध्याय, परिच्छेद ४ स्तव ५ स्तोतृ।
स्तवन, स पु (स न) गुणकीर्तन स्तुति (स्त्री)।
स्तुत, वि (सं) प्रशसित, प्रशस्त, श्लाघित, ईडित, कीर्तित।
स्तुति, स स्त्री (स) स्त(स्ता)व, गुण,-वर्णन कीर्तन-कथन, श्लाघा, नुति (स्त्री), इडा, प्रशसा दे।
—करना, क्रि स, नु (अ प से), स्तु (अ प अ), इड (अ आ से), श्लाघ (भ्वा आ से), प्रशस् (भ्वा प से)।
—पाठक, स पु (स) मागध, चारण, वैतालिक।
स्तुत्य, वि (स) नव्य, नाव्य, नवितव्य, प्रशस्य, प्रशसनीय, स्तोतव्य स्तवनीय, प्रशसार्ह।
स्तूप, स पु (स) मृदादि -कूट -राशि २ बौद्धचैत्य।
स्तेन, स पु (स) चौर, तस्कर।
स्तेय, स पु (स न) चौर्य, परद्रव्यहरण, स्तैन्यम्।
स्तोतव्य, वि (स) दे 'स्तुत्य'।
स्तोता, वि (स तृ) प्रशसक, स्तावक, नवितृ, नावक, वर्णक, स्तुतिवादक।
स्तोत्र, स पु (स न) छन्दोबद्ध देवगुण कीर्तन, स्तव, स्तुति (स्त्री)।
स्तोम, स पु (स) स्तुति (स्त्री), स्तव २ यज्ञ ३ राशि।
स्त्री, स स्त्री (स) वनिता, महिला, रामा, नारी, दे २ पत्नी, भार्या ३ स्त्रीलिंगी जीव।
—ग्रह, स पु (स) चद्रबुधशुक्रग्रहा (ज्यो)।
—जित, स्त्री वश विनिर्जितहृदय।
—धन, स पु (स न) स्त्रीस्वत्वास्पदीभूत धन (माता, पिता, भाई तथा पति से प्राप्त, विवाह संस्कार के समय प्राप्त और दहेज)।
—धर्म, स पु (स) ऋतु, पुष्प, रजस (न) २ मैथुन ३ स्त्रीकर्तव्य ४ स्त्रीसबधि विधानम्।
—पुसलक्षणा, स स्त्री (स) पोटा (स्तन श्मश्र्वादियुक्ता)।
—पुरुष, स पु (स) स्त्री,-पुरुषौ-पुसौ, मिथुन द्वद्व, युग्मम्।
—राज्य, स पु (स न) प्राचीनप्रदेश विशेष (महाभारत)।
—लपट, वि पु (स) स्त्री,-लोल शौंड - चौर, कामुक।

—लिंग, स पु (स न) योनि-(स्त्री), भग, स्त्रीचिह्न २ शब्दलिंगभेद (व्या)।
—व्रत, सं पु (सं न) पत्नीव्रत, एकपत्नी परायणता।
—समागम, स पु (स) स्त्री,-संसर्ग-सम्भोग।
—स्वभाव, स पु (स) महल्लक, दे 'खोजा' २ नारीशीलम्।
स्त्रीत्व, स पु (स न) नारीत्व, स्त्री-नारी,-धर्म भाव।
स्त्रैण, वि (स) स्त्रीजित, रमणीरत ३ स्त्री,-सबधि-योग्य।
स्थगित, वि (स) विलंबित, व्याक्षिप्त दे 'मुल्तवी' २ आच्छादित ३ गुप्त ४ अव, रुद्ध।
स्थपति, स पु (स) वास्तुशिल्पिन् २ तक्षन्।
स्थल, स पु (सं न) भूमि (स्त्री), भूभाग, स्थली २ शुष्क-निर्जल,-भूमि ३ स्थान ४ अवसर।
—कमल, स पु (स न) पद्म, पद्मचारिणी, अतिचरा, स्थलरुहा।
—चर, वि (स) स्थल,-गामिन् चारिन्, भू, चर चारिन्।
स्थली, स स्त्री (स) शुष्क, भूमि (स्त्री)—भूभाग २ समोन्नतभू (स्त्री) ३ स्थान, स्थलम्।
स्थविर, स पु (स) वृद्ध २ महान (पु)।
स्थाणु, स पु (स) अशाखवृक्ष, ध्रुव, शकु २ स्तभ, स्थूणा ३ शिव ४ स्थावरपदार्थ। वि (स) अचल, स्थिर।
स्थाण्वीश्वर, स पु (स न) कुरुक्षेत्र, स्थानेश्वरनगरम्, स्थाणुतीर्थम्। २ स्थानेश्वरस्थ लिंगविशेष।
स्थान, स पु (स न) स्थल २ आनि वास, गृह ३ भूमि (स्त्री) स्थली, भूभाग ४ पद, दे 'पदवी' ५ वर्णोच्चारणस्थान (व्या) ६ राज्य, देश ७ देवालय, मंदिर ८ अवसर ९ दशा १० परिच्छेद, अध्याय।
—च्युत, वि (स) स्थानभ्रष्ट २ पद, च्युत भ्रष्ट।
स्थानक, स पु (सं न) स्थान, स्थलम् २ पद, स्थिति (स्त्री) ३ ४ नगरविशेष नृत्य, मुद्राभेद ५ नाटकव्यापारस्थलविशेष ६ आलवाल, आवालवालम् ७ सुराफेन।
स्थानी, वि (सं निन्) सस्थान, पदयुक्त २ स्थायिन् ३ उचित, उपयुक्त।
स्थानीय, वि (स) स्थानिक, स्थानविशेष सबधिन्।
स्थापक, स पु (स) स्थापयितृ सस्थापक, प्रवर्तक, प्रारभक, स्थापनकर्तृ २ निधायक ३ उत्थापक, उन्नायक ४ मूर्ति प्रतिमा,-कार।
स्थापत्य, स पु (स न) वास्तु विद्या-शिल्प कला २ मत्रकमन् (न), भवननिर्माणम्।
स्थापन, स पु (सं न) निधान, न्यसन, निवेशन २ उत्थापन, उन्नयन, उन्नमन ३ सस्थापन, प्रवर्तन, प्रारभण ४ प्रतिपादन, साधनम्।
स्थापना, स स्त्री (स) (मंदिरे) मूर्ति, प्रतिष्ठापनं निवेशन २ ३ दे स्थापनं (३ ४) ४ विचारागविशेष (न्या०)।
स्थापित, वि (स) सस्थापित, प्रवर्तित २ निहित निवेशित, न्यस्त ३ उत्थापित, उन्नीत, उन्नमित ४ स्थिर, दृढ ५ निश्चित।
स्थायित्व, सं पु (स न) स्थायिता, स्थिरता, स्थैर्य, ध्रुवता, नैत्यम्।
स्थायी, वि (सं-यिन्) ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय २ चिरस्थायिन, दृढ ३ स्थिर, स्थास्नु, स्थायुक, स्थितिशील ४ विश्वसनीय।
—भाव, स पु (स) रसस्य भावविशेष (सा) (९ स्थायिभाव = रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद)।
स्थाली, सं स्त्री (सं) उखा, पिठर री, दे 'पतीला'।
—पुलाक न्याय, स पु (सं) न्यायभेद, अल्पगुणज्ञानेन पूर्णगुणज्ञानानुमानम्।
स्थावर, वि (स) अचल, निश्चल, स्थिर २ स्थविर, स्थातृ, स्थाणु, स्थायुक, स्थास्नु, स्थितिशील। (सं न) अजगम अचल, सपत्ति (स्त्री)।
स्थित, वि (स) विद्यमान, वर्तमान २ उप विष्ट आसीन ३ उत्थित ४ अवलंबित।
—प्रज्ञ, वि (सं) स्थिरस्थित,-बुद्धि धी प्रज्ञ, समबुद्धिमपन्न २ आत्मसतोषिन्।
स्थिति, सं स्त्री (सं) अवष्टभ, आधार, आलंब २ निवास, अवस्थानं ३ दशा,

अवस्था ४ पद, दे 'पदवी' ५ अस्तित्व, सत्ता ६ मर्यादा।

—स्थापकता, स स्त्री (स) कुचनीयता, नम्यता, दे 'लचक'।

स्थिर, वि (स) अचल निश्चल, अविचल २ निश्चित, स्थिरीकृत ३ शांत ४ दृढ़ ५ स्थायी ६ नियत ७ विश्वसनीय ८ स्थायुक, स्थास्नु।

—चित्त, वि (स) दृढ़संकल्प, स्थिर मति धी-बुद्धि।

स्थिरता, स स्त्री (स) निश्चलता, अचलता स्थिरत्व २ दृढ़ता, बलवत्ता ३ स्थायित्व, ध्रुवता ४ धैर्य, धीरता ५ चिरस्थायिता, स्थास्नुता।

स्थूणा, स स्त्री (स) गृहस्तंभ, दे 'स्तम' (१ २)।

स्थूल, वि (स) पीन, पीवर (नारी स्त्री) पुष्ट, मांसल, मेदुर, स्निग्ध, मेदस्विन, पीवस, पीवन् २ स्पष्ट, सुबोध ३ मूर्ख, जड ४ विषम, उन्नत।

—बुद्धि, वि (स) मंदमति, जड।

स्थूलता, स स्त्री (स) पीनता, पीवरता, मेदुरता, स्थूलत्व २ गुरुतात्व, भारवत्ता ३ विषमता ४ महाकायता।

स्थैर्य, स पु (स न) दे 'स्थिरता'।

स्थौल्य, स पु (स न) दे 'स्थूलता'।

स्नात, वि (स) कृतस्नान, दे 'नहाया हुआ'।

स्नातक, स पु (स) आप्लुतव्रतिन्।

स्नान, स पु (स न) आप्लव(प्लाव), अभिषेक, उपस्पर्शन, अवगाहनम्।

—करना, क्रि अ, स्ना (अ प अ), अवगाह (भ्वा आ से), दे 'नहाना'।

—गृह, स पु (स न) स्नान, शाला आगार।

स्नायु, स स्त्री (स पु) वस्नसा, स्नसा, नसा, शानतु, नाडी (नाडिका डि स्त्री), वायु वाहिनी नाडी, वातरज्जु (स्त्री)।

स्निग्ध, वि (स) चिक्कण, चिक्क, मसृण, मसृण, श्लक्ष्ण, अमृष्ट २ सस्नेह, सतैल, तैलाक्त।

स्निग्धता, स स्त्री (स) चिक्कणता, मसृणत्व, श्लक्ष्णता २ तैलवत्ता, स्नेहवत्ता ३ प्रियता।

स्नीड, वि (स) मृदुल, कोमल, स्निग्ध २ अनुरक्त, आसक्त।

स्नुषा, स स्त्री (स) पुत्र,वधू (स्त्री)।

स्नेह, स पु (स) प्रेमन् (पु न) अनु, राग प्रति (स्त्री), प्रणय २ चिक्कणद्रव्य (घृततैल दि)।

—करना, क्रि स, दे 'प्रेम करना'।

—पक्व, वि (स) घृततैल पक्व श्राग।

—सार, स पु (स) मज्जा, दे। वि, तैल प्रधान बहुल।

स्नेहनीय, वि (स) स्नेह्य, तैलार्ह २ प्रेम पात्र भाजन अनुराग,अर्ह,योग्य।

स्नेही, स पु (स = हिन्) स्नेहशील, अनु रागिन, प्रणयिन्, प्रेमिन्, मित्रम्। वि (स) चिक्कण, मसृण।

स्पन, स पु (अ) जिंदिष क्लण्डम्।

स्पदन, स पु (स न) स्पद, ईषत्कपन, प्रस्फुरण, क्षिप्रकप।

स्पर्द्धा, स स्त्री (स) विजिगीषा, मत्सर, अहमहमिका, ईर्ष्या, सापत्न्यम्।

—करना, क्रि अ, प्रति स्पर्ध् (भ्वा आ से), सघृष् (भ्वा प से), विजि(सन्नन्त विजिगीषते), अभिभवितु यत् (भ्वा आ से), ईर्ष्य् (भ्वा प से)।

स्पर्श, स पु (स) स,स्पर्श र्शन, ससर्ग, सपर्क, परामर्श २ त्वगिन्द्रिय ग्राह्यगुणविशेष ३ कादिवर्णपचक (व्या) ४ वायु।

—करना, क्रि स, स,स्पृश् (तु प अ), दे 'छूना'।

स्पष्ट, वि (स) परि,स्फुट, प्रकट, व्यक्त, प्रत्यक्ष, ग्लपण, उद्रिक्त, विशद, सुबोध, स्पष्टार्थ। स पु (स) वर्णोच्चारणप्रयत्नप्रकार (व्या)।

—कथन, स पु (स न) सरलनिष्कपट, भाषण २ कथनप्रकारभेद परवचनानामविन योजनाम (व्या)।

—वक्ता, स पु (स वक्तृ) स्पष्टवादिन्।

स्पष्टतया, क्रि वि (स) प्रकट, स्पष्ट, व्यक्त, स्फुट प्रत्यक्षम्।

स्पष्टता, स स्त्री (स) वैशद्य, विशदता, स्फुटता, उज्ज्वलता, सुबोधता, सरलता, आर्जव, सारल्य, निव्याजता।

स्पिरिट, स स्त्री (प्रे) नाव, आत्मन्, देहिन, जीव २ प्राण जीवन, शक्ति (स्त्री), वीर्य ३ तत्व, सत्व, सार ४ मद्यसार।

—लैंप, स पु, सारप्रदीप ।
मेथिलेटिड—, मिथिलितमद्यसार ।
रेक्टिफाइड—, शुद्धमद्यसार ।
स्पीच, स स्त्री (अ) व्याख्यान, कथनम् ।
स्पृहा, स स्त्री (स) कामना, इच्छा दे ।
स्पेक्टरास्कोप, स स्त्री (अं) रश्मिवर्णदर्शकम् ।
स्पेशल, वि (अ) विशिष्ट, विलक्षण, असामान्य, असाधारण, सविशेष, विशेष ।
—गाड़ी, सं स्त्री (अ+हिं) विशिष्टशकटी ।
स्फटिक, स स्त्री (स) स्फाट(टि)क, भासुर, स्फाटिकोपल, शौनशिल, सितोपल, विमल, स्वच्छमणि, स्वच्छ, अमर-निस्तुष-रत्न, शिवप्रिय ।
स्फुट, वि (स) व्यक्त, प्रकट प्रकाशित, दे स्पष्ट २ विकसित ३ शुक्ल ४ नाना-बहु वि, विध ।
स्फुरण, स पु (स न) स्फुरणा, स्फुरित, स्फुलनं, स्फुर रणा, स्फ(स्फा)रण, ईषत् किंचिच्-चलनम् ।
स्फुलिंग, स पु (स) अग्निकण, दे 'चिनगारी' ।
स्फूर्ति, सं स्त्री (स) क्षिप्रता, शीघ्रता ३ शु कारिता-त्व, त्वरा २ स्फुरण ३ मानसी प्रेरणा ।
स्फोटक, स पु (स) पिडक, गड । वि, स्फोट ।
स्फोटन, सं पु (सं न) सशब्द, भेदन विदारण २ प्रकाशनं, प्रख्यापन ३ शब्द, ध्वनि ४ आकस्मिक, भजनं विदलन स्फुरनम् ।
स्मय, स पु (सं) अभिमान, दर्प ।
स्मर, स पुं (स) कंदर्प मदन, काम २ स्मृति (स्त्री), स्मरणम् ।
स्मरण स पु (सं न) आध्यानं अनुचिंतन, २ स्मृति (स्त्री) ।
—करना, क्रि स, अनु-स, स्मृ (भ्वा प अ), अनुचिंत् (चु), अनुबुध (भ्वा प से), आध्यै (भ्वा प अ) २ कंठस्थ-मुखस्थ कृ ।
—दिलाना या—कराना, क्रि प्रे, व 'स्मरण करना' के प्रे रूप ।
—रखना, क्रि स, चित्तेऽचेतसि मनसि निधा (जु उ अ), मनसि धृ (चु) ।
—पत्र, स पु (स न) स्मारण-स्मारक पत्रम् ।
—शक्ति, स स्त्री (स) स्मृति (स्त्री), स्मरण, धारणा, चिंता, आध्यान, आध्या, चर्चा, चिंतिति (स्त्री), चित्त, चिंतिया ।
स्मरणीय, वि (सं) आध्येय, अनुचिंतनीय, स्मर्तव्य, स्मरणार्ह, मनसि धारणीय ।
स्मशान, स पु, दे 'श्मशान' ।
स्मारक, वि (स) अनुबोधक, स्मृतिकर । स. पुं (स न) स्मृति-स्मरण, चिह्न २ स्मारकदान, स्नेहाभिज्ञानम् ।
स्मार्त्त, वि (सं) स्मृति, विहित संबंधिन् २ स्मरणसंबंधिन् ।
स्मित, स पु (स न) ईषद्धास्य, मंदहास, दे 'मुसकराहट' ।
स्मृति, स स्त्री (स) दे 'स्मरणशक्ति' २ स्मरण, आध्यान, अनु, चिंतन-बोध ३. आर्यधर्मशास्त्राणि (मनुस्मृति आदि) ।
—कार, सं पु (स) धर्मशास्त्रकार ।
—वर्द्धिनी, स स्त्री (स) ब्राह्मी ।
स्यंदन, स पुं (सं) रथ, दे ।
स्यात्, अव्य (स) दे 'शायद' ।
स्यानपन, स पु (हिं स्याना) नैपुण्यं, दाक्ष्यं, चातुर्यं २ कैतवं, शाठ्यं, व्याज ।
स्याना, वि (स सज्ञान) चतुर, बुद्धिमत् २ धूर्त्त, कापटिक ३ वयस्क, युवन् । स पु, वृद्ध २ ग्रामणी ३, चिकित्सक ।
—पन, स पुं, दे 'स्यानपन' ।
स्यानी, वि (स्त्री) (हिं स्याना) चतुरा, दक्षा, बुद्धिमती । स स्त्री, युवती ति (स्त्री), समकन्या, परिणीया, उद्वाहा ।
स्यार, सं पुं (सं शृगाल) चतुर, दे. 'गीदड़' ।
स्याह, वि (फ़ा) काल, कृष्ण, असित ।
—दिल, वि (फ़ा) दुष्ट, खल, पाप ।
स्याही, सं स्त्री (फ़ा) मसी, मषी, मसि मषि मि (सब स्त्री), मेला २ कालिमन् (पु), कृष्णता, श्यामता ३ कज्जलभेद ४ कल्क, लाञ्छनम् ।
—चट, —चूस, स पु, मसी शोषक चूर्ण (पत्रम्) ।
—जाना, मु, यौवन अति इ (अ प अ) ।
—लगाना, मु० अपवद्‌परिवद्‌ निंद् (भ्वा प स,), कल्क (ना धा कल्कयति) ।
स्यूत, वि (सं) स्यून, निष्यूत २ ध्यून,

च्युत, प्रोत, पुरित, पुटित ३ बिद्ध । स पु (स) स्योन, प्रसेव ।
स्रवण, स पु (स न) स(स्रा)व, प्रस्राव, २ गर्भ-पात-स्राव ३ मूत्र ४ प्रस्वेद ।
स्रष्टा, स पु (स ष्टृ) विश्वसृज्, ब्रह्मन्, चतुर्मुख । वि (स) रचयितृ निमातृ ।
स्रुवा, सं पु (स स्त्री) स्रुव, स्रुच् (स्त्री), स्रु (स्त्री) (यज्ञपात्रभेद) ।
स्रोत, स पु (स न) स्रोतस (न), प्रवाह, ओघ, धारा, सराक २ नदी ३ देहछिद्राणि (न बहु) ४ वंशपरंपरा ।
स्लीपर, स पु (अ स्लिप्पर) पदरीका ।
पुन—, स पु (अ) पूर्णफफरीका ।
स्लेट, स स्त्री (अ) लेखन शिला, अश्म पाषाण, पट्टिका, *पाषाणी ।
स्व, सं पु (स) आत्मन् २ बंधु, ज्ञाति (पु) २ धनम् । वि (स) स्वीय, स्वकीय, आत्मीय, स्वक, निज, स्व-, निज-, आत्म- ।
—कार्य, स पु (स न) निजकृत्यम् ।
—कुटुंब, स पु (स न) निजपरिवार ।
—जन, स पु (स) बंधुवर्ग, बांधवा (बहु) ।
—देश, सं पु (स) जन्मभूमि भूमि (स्त्री) ।
—देशी, वि (स शीय) निजदेश, संबंधिन् निर्मित ।
—धर्म, स पु (स) निजकर्तव्य २ सहज गुण ।
—राज, सं पु (स राज्य) निजशासनम् ।
स्वकीय, वि (स) स्व, निज, आत्मीय, स्वीय ।
स्वकीया, स स्त्री (स) नायिकाभेद (सा), स्वीया, स्वामिन्येवानुरक्ता ।
स्वगत, स पु (स न) आत्मगतो, गत, अश्राव्यं, नाट्ययोक्तिभेद (सा) ।
स्वच्छंद, वि (सं) स्वतंत्र स्वाधीन, स्वायत्त २ नियंत्रणशून्य, स्वैरिन् निरंकुश, स्व रुचि । क्रि वि (सं न) स्वातंत्र्येण, स्वच्छंदत ३ स्वैर, निरकुश, यथेष्टम्
—चारिणी, स स्त्री (स) वंदरा ।
—चारी, वि (स रिन्) स्वेच्छाचारिन्, स्वैर, स्वैरिन् ।
स्वच्छंदता, स स्त्री (स) स्वातंत्र्य, स्वाधीनता, स्वतंत्रता २ स्वैर(रि)ता, निरंकुशता ।
स्वच्छ, वि (स) अमल, निर्मल, विमल, मल, हीन रहित २ शुभ्र श्वेत, उज्ज्वल ३ पवित्र, शुचि, वि ,शुद्ध ४ स्पष्ट, विशद ५ स्वस्थ, निरामय ६ निष्कपट, ऋजु ७ पारदर्शक ।
स्वच्छता, स स्त्री (स) निर्मलता, विमलता २ उज्ज्वलता ३ पवित्रता ४ पारदर्शकता ।
स्वतंत्र, वि (स) ६ 'स्वच्छंद' वि तथा क्रि वि ।
स्वतंत्रता, स स्त्री (स) दे 'स्वच्छंदता' ।
स्वत , अव्य (स) स्वेच्छया, स्वयमेव, स्वेच्छा पूर्व कामत (सब अव्य) ।
—प्रमाण, वि (स) स्वत सिद्ध, स्वयंसिद्ध, प्रमाणांतरनिरपेक्ष ।
स्वत्व, स प (स न) शक्ति (स्त्री), अधिकार वश २ आधिपत्य, स्वामित्व, प्रभुत्वम् ।
स्वप्न, स पु (स) स्वाप , प्रसुप्तस्य ज्ञान २ निद्रा २ असभवकल्पना, वृथा मिथ्या वासना, आभास , स्वप्नसृष्टि (स्त्री) ।
—देखना, स्वप्न दृश (भ्वा प अ), स्व प्नायते (ना धा)
—दोष, स पु (स) निद्रायां शुक्रपात ।
—में बोलना, क्रि अ उत्स्वप्नायते (ना धा) ।
—लेना, मु , असभवकल्पना कृ, मनसा क्लृप् (प्रे) ।
स्वभाव, स पु (स) धर्म , गुण , प्रकृति संसिद्धि (स्त्री) स्वरूप, नि ,सर्ग , भाव , २ प्रकृति-मनोवृत्ति (स्त्री), शील ३ अभ्यास , नित्यव्यवहार ।
—सिद्ध, वि (स) सहज, प्राकृतिक, स्वाभाविक ।
स्वभावत , अव्य (स) प्रकृत्या, जन्मत , निसर्गत ।
स्वय, अव्य (स) आत्मना २ स्वत एव, विनाऽऽयास, प्रयत्न विना ।
—भू , स पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ काल ३ कामदेव ४ विष्णु ५ शिव । वि (स) स्वद, नात भन स्वज, स्वयोनि ।
—वर, स पु (सं) स्वयंवरण, स्वेच्छया पतिवरणम् ।
—वरा, स स्त्री (स) पतिंवरा, वर्या ।
—सिद्ध, वि (स) स्वत सिद्ध २ स्वत सफल ।
—सेवक, स पु (स) स्वेच्छासेवक ।

—सेविका, स पु (स) स्वेच्छागमविका।
स्वर्, स पु (स अव्य) स्वर्ग २ परलोक ३ आकाश शम्।
स्वर, स पु (स) ध्वनि, शब्द नि स्व (स्वा)न, नि नाद घोष ध्वन, विरुत, वि,र(रा)व, ह्राद २ षड्जादय सप्त स्वरा (संगीत) ३ उदात्तादिस्वरत्रिक (व्या) ४ अच, मात्रा (व्या) ५ उच्छ्वास।
—भंग, सं पु (स) स्वर,क्षय भेद, गल रोगभेद।
—संक्रम, स पु (स) स्वरारोहावरोहौ (संगीत)।
स्वरूप, स पु (स न) निजरूप, आकार, आकृति (स्त्री) २ मूर्ति (स्त्री), चिह्न ३ प्रकृति (स्त्री), स्वभाव ४ देवादिभि धृत रूप ५ देवादिरूपधारिन्। वि (स) तुल्य, सम २ सुन्दर, मनोज्ञ ३ पंडित, प्राज्ञ। क्रि वि, रूपेण, रीत्या (उ प्रमाण स्वरूप = प्रमाणरूपेण)।
स्वर्ग, स पु (स) स्वर्-देव अमर सुर-ऊर्ध्व लोक, स्वर् (अव्य), नाक त्रिदिव, त्रिदशालय, मन्दर, शुक्रभवन, सुराधार २ ईश्वर ३ सुख ४ सुखद स्थान ५ आकाश शम्।
—काम, वि (सं) स्वर्ग,लिप्सु इच्छुक।
—गमन, सं पु (स न) स्वर्-स्वर्ग गति (स्त्री) लाभ, निधनं, मरणम्।
—गामी, वि (स-मिन्) स्वर्गगमनेच्छु २ स्व र्गस्थ, स्वर्गत, मृत।
—तरु, स पु (स) कल्पवृक्ष।
—धेनु, स स्त्री (सं) कामधेनु।
—नदी, स स्त्री (सं) स्वर्गापगा, मंदाकिनी।
—पति, सं पु (स) इन्द्र।
—पुरी, सं स्त्री (स) अमरावती।
—लोक, सं पु (स) दे स्वर्ग' (१)।
—वधू, स स्त्री (स) स्वर्गस्त्री, अप्सरस् (स्त्री)।
—वास, सं पुं (स) स्वर्गवास २ मरण निधनम्।
—वासी, वि (सं मिन्) देवलोकवासिन् २ दिवंगत, प्रेत, मृत, स्वयात, स्वर्गस्थ।
स्वर्गीय, वि (सं) स्वर्ग्य, दिव्य, ऐन्द्र २ दे 'स्वर्गवासी' (२)।
स्वर्ग्य, वि (स) दे 'स्वर्गीय' (१, २)।
स्वर्ण, स पु (स न) दे 'सोना' (१)।
स्वर्लोक, स पु (स) दे 'स्वर्ग' (१)।
स्वल्प, वि (स) अत्यल्प, अतिस्तोक।
स्वश्रुर, स पु (स श्वशुर) दे 'ससुर'।
स्वस्ति, अव्य (सं) कल्याण-मंगल भद्र भूयात (असीस)। स स्त्री (सं) कल्याणं, मंगल २ सुखम्।
—वाचन, स पु (स न) मंगलमंत्रपाठ २ धार्मिककृत्यभेद (गणेशपूजनादि)।
स्वस्तिक, स पु (स) मंगल्यचिह्नभेद (卐) २ मंगलद्रव्य ३ चतुष्पथ।
स्वस्तिका, स स्त्री, दे 'स्वस्तिक' (१)।
स्वस्त्ययन, स पु (स न) कार्यारम्भे मंगलमंत्रपाठ २ समृद्धिसाधनम् ३ दक्षिणीयमानो मंगल्यजलकलश। ४ दानप्राप्त्यनन्तर विप्रस्याशीर्वाद।
स्वस्थ, वि (स) अनामय, निरामय, नीरोग, अरोग, कुशल, कुशलिन्, सुस्थ, आरोग्यवत्, नीरुज्, निर्व्याधि, व्याधि-रोग, रहित २ 'सावधान' दे।
—चित्त, वि, शान्तमनस्क।
स्वांग, स पु (सं स्वांग>) (उपहासार्थे) अनु,करण-कार कृति (स्त्री), विडम्बन २ वेषान्तर, छद्मकृत्रकल्पद,वेष।
—रचना, क्रि स, वेष परिवृत (प्रे), वेषान्तर रच (चु) २ नट् (चु) अभिना (भ्वा प अ)।
स्वांगी, स पु (स स्वांग>) नट, अभिनेतृ, शैलूष, रंगाजीव २ भंड ३ दे बहुरूपिया'।
स्वागत, स पु (सं न) उपचार, सम्मान, सम्भावना, सत्,कार कृति (स्त्री) क्रिया, प्रत्युद्गमन, प्रत्युद्व्रजन, प्रत्युत्थान, प्रत्युद्, गम गति (स्त्री)।
—करना, क्रि स, प्रत्युद्गम् (भ्वा प अ), प्रत्युद्व्रज् (भ्वा प से)।
—समिति, स स्त्री (स) स्वागतकारिणी सभा।
स्वातंत्र्य, स पु (सं न) दे 'स्वतंत्रता'।
स्वाति, स स्त्री (स) स्वाती, पञ्चदश नक्षत्रम्।
स्वाद, सं पुं (स) आस्वाद, रस २ आनंद, रसानुभूति (स्त्री) ३ इच्छा ४ माधुर्यम्।

—लेना, क्रि स, आ स्वाद् (भ्वा आ मे), रस् (चु) २ ईषत् स्वाद् (भ्वा प से)। म पु, आ,स्वादन, रसनम्।

स्वादिष्ट, वि (स स्वादिष्ठ) सरस, सुरस, रुच्य, रुचिकर (-री स्त्री) स्वादु २ मिष्ट।

स्वादीला, वि (स स्वाद >) दे 'स्वादिष्ट'।

स्वादु, वि (स) स्वादिष्ट २ मधुर, मिष्ट, ३ मनोज्ञ।

स्वादुता, सं स्त्री (सं) सुरसता, स्वादवत्ता २ मधुरता।

स्वाधिपत्य, स पु (स न) निजप्रभुत्वम्।

स्वाधीन, वि (स) दे 'स्वतन्त्र'।

स्वाधीनता, स स्त्री (सं) दे 'स्वतन्त्रता'।

स्वान, स पु (स श्वन्) कुक्कुर, दे 'कुत्ता'।

स्वाध्याय, स पु (स) वेदाध्ययन, धर्मशास्त्रानुशीलन २ अध्ययन, विषयविशेषानुशीलनम्।

स्वाप, स पु (स) निद्रा २ स्वप्न ३ अज्ञान ४ निस्पन्दता, स्पर्शाज्ञता।

स्वाभाविक, वि (स) स्वभावसिद्ध, सहज, प्राकृतिक, नैसर्गिक, कृत्रिमता-रहित।

स्वामित्व, स पु (स न) स्वामिता, प्रभुता त्व, स्वाम्यम्।

स्वामिनी, सं स्त्री (स) गेहिनी, गृहिणी, गृहपत्नी, कुटुम्बिनी, पुरन्ध्री २ ईशिनी,ईश्वरी, स्वत्ववती, अधिकारिणी ३ श्रीराधा।

स्वामी, स पु (स मिन्) प्रभु, अधि,-प-पति भू, ईश्वर, ईशितृ, परिवृढ, नायक, नेतृ, आर्य, पालक २ गृहपति, कुटुम्बिन्, गृहिन् ३ पति, भर्तृ, धव ४ परमेश्वर ४ नृप ५ कार्तिकेय ६ परिव्राजकोपाधि।

स्वाम्य, सं पु (स न) स्वामित्व, प्रभुत्व, आधिपत्य, अधिकार।

स्वायत्त, वि (सं) आत्मवश, निजाधिकारस्थ।

—शासन, स पु (म न) स्थानिकस्वराज्य।

स्वाराज्य, स पु (स न) स्वाधीनशासन २ स्वर्गलोक ३ ब्रह्मणा तादात्म्यम्।

स्वार्थ, सं पु (सं) निजोद्देश्य, आत्मप्रयोजन २ आत्महित, निजलाभ ३ स्वधनम्।

—त्याग, स पु (सं) निजलाभोत्सर्ग।

—त्यागी, वि (स गिन्) निजलाभोत्सर्गिन्।

—परायण, वि (स) स्वार्थ स्वहित-स्वलाभ, पर-परायण निष्ठ।

—परायणता, सं पु (स) स्वार्थ स्वहित स्वलाभ, परता निष्ठा बुद्धि -दृष्टि (दोनों स्त्री)

—साधक, वि (स) दे 'स्वार्थपरायण'।

—साधन, स पु (स न) निजहितनिर्वहणम्।

स्वार्थी, वि (स र्थिन्) दे 'स्वार्थपरायण'।

स्वावमानना, स स्त्री (स) स्वावमाननम्, आत्म भर्त्सना-गर्हा-निन्दा।

स्वावलम्बन, स पु (स न) आत्मनिर्भरता, स्वाश्रय।

स्वावलम्बी, वि (स बिन्) आत्मनिष्ठ, आत्माश्रय आत्म श्रित, स्वाश्रित।

स्वास, स पु
स्वासा, स स्त्री } (स श्वास) दे 'साँस'।

स्वास्थ्य, स पु (सं न) आरोग्य, स्वस्थता, कुशल, नीरोगता, अरोगिता।

—कर, वि (स) आरोग्य प्रद-वर्द्धक।

स्वाहा, अव्य (स) हविर्दान, मन्त्र शब्द।

—करना, मु नश् (प्रे), अपव्यय् (चु) २ भस्मसात्कृ।

स्वीकार, सं पु (स) अंगीकार २ स्वीकरण, अंगीकरण, ग्रहणं आदानं ३ वचन, प्रतिज्ञा।

स्वीकार्य, वि (स) स्वीकरणीय, अंगीकार्य।

स्वीकृत, वि (स) आदत्त, अंगीकृत, प्रतिगृहीत, २ प्रशस्त, अनुमत, मत।

स्वीकृति, स स्त्री (स) सं अनुमति (स्त्री), अनुमोदन २ आदान, स्वीकार, प्रतिग्रह।

स्वीय, वि (स) स्वकीय, निज, आत्मीय।

स्वेच्छा, स स्त्री (स) निजाभिलाष, स्वरुचि (स्त्री) स्वच्छंद।

—चारी, वि (सं) स्वैर, अनिविष्ट, निरङ्कुश, स्वच्छंद।

—मृत्यु, स पु (स) भीष्म २ स्वेच्छया मरणम्। वि (स) स्वायत्तनिधनम्।

स्वेद, स पु (स) घर्म, निदाघ, प्रस्वेद, स्वेद घर्म, नर्म उदक २ बाष्प ३ ताप, ऊष्मन् ४ स्वेदन ५ घर्मकारकौषधम्।

स्वेदज, वि (सं) घर्मजात (जूँ, लीख आदि)।

स्वैर, वि (स) दे 'स्वच्छंद'।

स्वोपार्जित, वि (स) आत्म निज स्व, -अर्जित-उपार्जित।

ह

ह, देवनागरीवर्णमालायास्त्रयस्त्रिंशो व्यञ्जनवर्णः, हकारः ।

हँकवाना, क्रि प्रे, दे 'हाँकना' के प्रे रूप ।

हँकाना, क्रि स तथा प्रे, दे 'हाँकना' तथा 'हकवाना' ।

हँकारना, क्रि स, दे 'पुकारना' २ दे 'ललकारना' ।

हंगामा, स पुं (फ़ा-सद्) कोलाहल, तुमुल २, कलकलः ३ समर्दः, विप्लवः ।

हजीराँ, स स्त्री (प) गण्डमाला, गलांकुर ।

हटर, स पु (अ) बड़ा हाथ, दे 'कोड़ा' ।

हटा, स पु (स) धातुमय इष्टकालयादि ।

हँडिया, स स्त्री (स हण्डिका) हण्डा ।

हंडी, स स्त्री (सं) हण्डिका ।

हता, स पु (स-न्तृ) घातकः, मारकः, वध कारिन्,-हन् (समासान्त में) ।

हंस, स पु (सं) मरालः, मानसौकस्, चक्र(वे)ङ्गः, क्षीरादः, नालास, चक्रपक्षः, राजहंसः, श्वेतगरुत्, कलकण्ठः, सित-च्छद पक्षः, धवलपक्षः, मानसालयः २ सूर्यः ३ पर मात्मन् ४ शुद्धात्मन् ५ परिव्राजकभेदः ।

—गति, स स्त्री (स) कलभगति ।

—गामिनी, वि स्त्री (सं) कलहंसगामिनी ।

—नादिनी, वि स्त्री (स) मधुरस्वरप्रिया, भाषिणी, हंसगद्गदा ।

—वाहन, स पु (स) ब्रह्मन् (पु), हंसरथः ।

—वाहनी, स स्त्री (स) सरस्वती ।

हँसना, क्रि अ (स हसनं) प्र वि, हस् (भ्वा प से), हास्यं कृ २ (मन्द-मन्द हँसना), स्मि (भ्वा आ अ) ३ (कवा हँसना) अट्टहासं कृ ४ नमालप् कृ, परिहस ५ मुद् (भ्वा आ से), हृप् (दि प स) । क्रि स, अव-उप, हस् । सं पु, हासः, हास्यं, हसनं, हसितम् ।

—खेलना, स पु, विनोदः, प्रमोदः, आनन्दः, परिहासः ।

—बोलना, सं पु, हास्यालापः, सुरसभाषणं ।

हँसने योग्य, वि, हस्य(स्या)-हसितव्य, हास्य, हासकर (री स्त्री), हास्यास्पदम् ।

हँसने वाला, सं पु, हासकः, हासिन् ।

हँसमुख, वि (हिं हँसना+स मुख>) हास्यमुख(-खा,-खी स्त्री), स्मेरानन(-ना,-नी स्त्री), प्रसन्न-प्रफुल्ल-हास्य, वदन (ना, नी स्त्री) । २ नर्मगर्भ, विनोदप्रिय, हास्यशील, विनोदिन् ।

हँसली, स स्त्री (स अंसल>) जत्रु (न), जत्रुक, ग्रीवास्थि (न) २ ग्रैवेय, कण्ठाभरणभेद ।

हँसाई, स स्त्री (हिं हँसना) हसनं, हास २ अवहास, उपहास, लोक, निन्दा अपवाद ।

हँसाना, क्रि स., दे 'हँसना' के प्रे रूप ।

हसिनी, स स्त्री, दे 'हंसी' ।

हँसिया, स पु (स हस>) लवित्र, लवा णक, लवि ।

हंसी, सं स्त्री (स) वरटा-टी, च(व)क्राङ्गी, हंसिका, व(वा)रला, वराली, मनुगमना, मृदुगामिनी ।

हँसी, स स्त्री (हिं हँसना) हासः, हास्य, हसितं, हसनं हसिति (स्त्री) २ परिहासः, नर्मन् (न), कौतुकं, लीला, विनोदः ३ उप अव,-हास ४ लोक, अपवाद निंदा, अपकीर्ति (स्त्री) ।

—खुशी, स स्त्री, आनन्दः, मोदः ।

—खेल, स पु, विनोदः, कौतुकं २ सुकर सुसाध्य,-कार्यं, साधारणवार्ता ।

—ठट्ठा, स पु, दे 'हँसी' (२) ।

—उड़ाना, मु, उप-अव, हस् (भ्वा प से), सव्यंग्य निन्द् (भ्वा प स) ।

—खेल समझना, मु, सुकर-सुसाध्य मन् (दि आ अ) ।

—में उड़ाना, मु, साधारण मत्वा उपेक्ष् (भ्वा आ स) ।

—में खाँसी, मु, विनोदे कलहः, परिहासः, उपद्रवे परिणतः ।

हँसोड़, वि (हिं हँसना) हास्य परिहास-विनोद, प्रिय शील, नर्मगर्भ, विनोदिन, कौतुकिन् ।

—पन, स पु., हास्यशीलता, विनोदप्रियता, नर्मगर्भता ।

हँसौहाँ, वि (हिं हँसना) हासोन्मुख २ परि हासयुक्त ।

हक़, वि (अ) सत्य, ऋत, अवितथ, तथ्य,

यथार्थ २ उचित, न्याय्य, धर्म्य । स पु (अ) अधिकार, स्वत्व २ प्रभुत्व, शक्ति (स्त्री) ३ कर्तव्य, धर्म ४ सत्य, ऋत, तथ्य ५ पर आत्मन् ६ देय परिशोध्य ७ ग्राह्य प्राप्यम् ।

—अदा करना, मु कर्तव्य पा (प्रे, पालयति-ते) ।

—दार, स पु (अ + फा) अधिकारिन्, स्वत्ववत् ।

—नाहक, अव्य (अ + फा + अ) बलात्, सरभस (दोनों अव्य) २ व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।

—मालिकाना, स पु (अ + फा) स्वाम्यधिकार ।

—मौरूसी, स पु (अ) परंपरागत पैतृक, अधिकार ।

—शुफा, स पु (अ) प्रतिवेशाधिकार ।

हकबकाना, क्रि अ (अनु हका बका) निश्चेष्टी निस्तब्धी जडी, भू, व्यामुह् (दि प वे) ।

हकला, वि (हि हकलाना) अव्यक्त गद्गद, वादिन्, स्खलितस्वर ।

हकलाना, क्रि अ (अनु हक) गद्गदवाचा वद् (भ्वा प से), स्खलद्वाक्यै अस्फुटवर्णं भाष् (भ्वा आ से), स्खल (भ्वा प से) । स पु, स्खलन, गद्गद-अस्पष्ट अव्यक्त, भाषणम् ।

हक़ारत, स स्त्री (अ), क्षुद्रता, तुच्छता, लघुता ।

—की नजर से देखना, मु, अवमन् (दि आ अ), उपेक्ष (भ्वा आ से) ।

हक़ीक़त, स स्त्री (अ) तथ्य, तत्त्व, सत्य २ तथ्यवार्ता, सत्यवृत्तान्त ।

—में, मु, तत्त्वत, वस्तुत ।

हक़ीक़ी, वि (अ) सत्य, यथार्थ २ निज, आत्मीय, सोदर ३ ईश्वरीय, पारमार्थिक ।

हकीम, स पु (अ) आचार्य, विद्वस् २ वैद्य, चिकित्सक ।

नीम—, स पु, मिथ्या-कु अनुभवशून्य, वैद्य ।

नीम हकीम खतरे जान, लोकोक्ति, इषज्ज्ञान भयंकरम्, अल्पबोधो भयावह ।

हकीमी, स स्त्री (अ हकीम) (यावन) चिकित्साशास्त्र २ (यावनी) वैद्यवृत्ति (स्त्री) ।

हक़ीर, वि (अ) तुच्छ, क्षुद्र २ उपेक्ष्य ।

हक़ूक़, स पु (अ, हक़ का बहु) स्वत्वानि, अधिकारा (दोनों बहु०) ।

हकूमत, स स्त्री, दे 'हुकूमत' ।

हक्का बक्का, वि (अनु हक बक) विस्मयापन्न, आश्चर्यचकित, सभ्रान्त, जडी-आकुली निश्चेष्टी, भूत, निस्तब्ध ।

—होना, क्रि अ, दे, 'हकबकाना' ।

हगना, क्रि अ (स हदन) हद् (भ्वा आ अ) पुरीष-मल उत्सृज् (तु प अ), उच्चर (भ्वा प से) । स पु, हदन, मल, उच्चार, रेक, पुरीषोत्सर्ग ।

हगाना, क्रि प्रे, व 'हगना' के प्रे रूप ।

हचकोला, स पु (अनु हचक) उद्घात, उत्क्षेप उच्छलन, सक्षोभ ।

हज, स पु (अ) मक्कायात्रा, हज ।

हज़ (-ज्ज), स पु (अ) सुख, आनन्द, हर्ष २ लाभ प्राप्ति (स्त्री) ।

हजम, स पु (अ) जठरे पचन, विपरि, पाक, परिणाम (वि, (जठरे) पक्व, परिणत, जीर्ण २ सकपट अपहृत, छलेन आत्मसात्कृत ।

—होना, क्रि अ, दे 'पचना' । मु, कपटाप हृतवस्तुन स्वपार्श्वे स्थिति (स्त्री) ।

हजरत, स पु (अ) महात्मन्, महानुभाव २ महाशय ! महोदय ! श्रीमन् ! (सबोधन वचन) ३ धूर्त, कितव (व्यग्य) ।

हजामत, स स्त्री (अ) केशादीना वपन, मुण्डन क्षौर २ प्रवृद्धा श्मश्रुकेशा (बहु) ।

—बनना, क्रि अ, मुण्ड्-वप्-क्षुर्-खुर् (कर्म) । मु, वच्-शठ्-विप्रलभ (कर्म) ।

—बनाना, क्रि स मुण्ड् (भ्वा प से, चु) क्षुरेण कृ (तु प से) छिद् (रु प अ), क्षुर्-खुर् (तु प से) । मु, धन हृ (भ्वा प अ) २ तड् (चु) ।

हजार, वि तथा स पु (फा) दे 'सहस्र' । क्रि वि, सहस्र बहु-असख्य,-वारम् ।

हज़ारा, (फा) सहस्रदल (पुष्प) २ धारा यन्त्र, दे 'फौवारा' ।

हज़ारी, स पु (फा) सहस्रिन्, सहस्रयोधाध्यक्ष ।

दस—, स पु, दशसहस्रिन् ।

पंच—, स पु, पंचसहस्रिन् ।

—बाजारी, स पु, उच्चनीच-विविध साधनाधन, जना ।

हज्जाम, स पु (अ) नापित, दे 'नाई' ।

हट, स स्त्री, दे 'हठ' ।

हटना, क्रि अ (स घट्टन>) स्थानान्तर या

(अ प अ), सृ (भ्वा प अ) २ चर, दाड़ (अ प अ), अपसृ ३ कर्तव्यात् विमुखीभू, कर्तव्य त्यज (भ्वा प अ) ४ दूरीभू, नेत्रागोचर (वि) जन् (दि आ स) ४ स्थगित (वि) जन्, व्याक्षिप (कर्म) ५ नश (दि प वे), शम् (दि प म) ६ विचलित (वि) भू, प्रतिज्ञाभङ्ग कृ। स पु तथा भाव, स्थानान्तरगमन, अपसरणं सृति (स्त्री), कर्तव्यत्याग, व्याक्षेप, विलम्ब, शमन, नाश, (मक्ष्यादि का), विचलन, प्रतिज्ञाभङ्ग।

हटनेवाला, स पु, स्थानान्तरगामिन्, अपयातृ, अपसर्तृ, कर्तव्यविमुख, शमनोन्मुख, प्रतिज्ञा विरोधिन्।

पीछे न हटना, मु, पराङ्मुख (वि) न जन्, सन्न (वि) स्था (भ्वा प अ)।

हटवाना, क्रि प्रे, व 'हटाना' का प्रे रूप।

हटाना, क्रि स (हि हटना) स्थानान्तर नी (भ्वा प अ), अप, सृ (प्रे) २ दूरीकृ, अपनी ३ पलाय् (प्रे) ४ प्रतिज्ञाभङ्ग कृ (प्रे)। स पु तथा भाव, स्थानान्तरे नयन, अपसारण, अपनयन इ।

हटा हुआ, वि, स्थानान्तरगत, अप,-यात-इत गत-सृत, दूरीभूत, कर्तव्यविमुखीभूत, शान्त, नष्ट, विचलित।

हट्ट, स पु (स) आपण, निगम, पण्य भूमि (स्त्री) वीथिका, क्रयविक्रयस्थान २ पण्यशाला, दे 'दुकान'।

हट्टा-कट्टा, वि (स हृष्ट+अनु) हृष्टपुष्ट, मांसल, दृढाङ्ग, प्र-महा,-बल, महास्थूल, काय।

हट्टी, स स्त्री (स) क्षुद्र,-आपण निगम २ पण्यशाला (दे 'हट्ट')।

हठ, स स्त्री पु (स) बलात्कार, रभस २ दुराग्रह, निर्बंध, प्रतिनिवेश ३ दृढ, प्रतिज्ञा-सङ्कल्प ४ अवश्यम्भाविता अनिवार्यता।

—**करना**, क्रि अ, दुराग्रह कृ, प्रतिनिविष्ट (वि) वृत् (भ्वा आ स)।

—**धर्मी**, स स्त्री (स हठधर्म) हठ, दुराग्रह २ विचारसङ्कीर्णता दे 'कट्टरपन'। वि दुराग्रहिन्, प्रतिनिविष्ट, निर्बंधपर।

—**योग**, स पु (स) योगभेद, हठविद्या।

—**योगी**, सं पु (स गिन्) हठयोगाभ्यासिन्।

हठात्, अव्य (स) दुराग्रहेण, सनिर्बंध २ बलात्, सरभस ३ अवश्यम्।

हठी, वि (स हठिन्) दे 'हठीला'।

हठीला, वि (स हठ >) दुराग्रहिन्, प्रति निविष्ट, निर्बंधपर २ दृढप्रतिज्ञ, सत्यसङ्कल्प।

हड़, सं स्त्री (स हरीतकी) अभया, अमृता, पथ्या, श्रेयसी, शिवा, रसायनफला, प्राणदा, देवी, दिव्या।

हड़क, स स्त्री (अनु) उत्कटेच्छा, तीव्राभिलाष।

हड़काया, वि (देश हड़काना) उन्मत्त, वातुल (प्राय कुत्तों के लिए) २ अत्युत्सुक, अतीच्छुक।

हड़गीला, स पु (हि हाड़+गिलना?) *हड्डगिल, खगभेद।

हड़ताल, स स्त्री (स हट्ट+ताल) *हट्टताल, (विरोधादिप्रकाशनार्थं) सम्भूय व्यवसाय कर्म,-त्याग।

—**करना**, क्रि अ, सम्भूय व्यवसाय त्यज् (भ्वा प अ), हट्टताल कृ।

हड़प, वि (अनु) निगीर्ण, जठरनिहित, ग्रसित २ कपटापहृत।

—**करना**, मु, दे 'हड़पना' (२)।

हड़पना, क्रि स (अनु हड़प) आस्ये निक्षिप् (तु प अ), निगॄ (तु प से), ग्रस (भ्वा आ से), सत्वर भक्ष (चु) २ कपटेन अपहृ (भ्वा प अ), अन्यायेन आदा (जु आ अ)।

हड़बड़ाना, क्रि अ (अनु हड़+बड़) त्वर् (भ्वा आ से), ससम्भ्रम विधा (जु उ अ), आतुर, आकुल (वि) जन् (दि आ स)।

हड़बड़िया, वि (हि हड़बड़ी) त्वरित-तूर्ण-क्षिप्र अशु,-कारिन्, त्वराकुल।

हड़बड़ी, सं स्त्री (अनु) त्वरा, तूर्णि (स्त्री), रभस-स, क्षिप्रता, शीघ्रता, २ संभ्रम, त्वरा, आतुरता-आकुलता।

हड़हड़ाना, क्रि स (अनु हड़+हड़) त्वर् (प्रे), त्वरितु प्रवृत् (प्रे)। क्रि अ, कम्पे वेप (भ्वा आ से) २ सशब्द चल् (भ्वा प से)।

हड्डा, स पु (स हड्डाचिका) वरटा, दे 'भिड़'।

हड्डी, सं स्त्री (सं हड्डि) अस्थि (न) अस्थिकं, कुल्यं कीकस, मेदोभव, मज्जकर,

विडन्, कर्कर, अदयित (प्राय बहु) २ पदा, वृन्दम्।

हड्डियाँ गढना या तोड़ना, मु, दण्ड तड (चु)।

हड्डियाँ निकल आना, मु, अनिरुद्धा-अनिक्षीण अस्थिदीप (वि) जन् (दि आ मे)।

हत, वि (स) प्रमापित, निषूदित, नि, हिंसित, निहत, क्षणित, निवापित, विशमित, मारित, प्रति,घातित, प्रमथित, आलभित, पिंजित, वधित, व्यापादित, पचत्व परलोक,-गमित-नीत प्रेषित २ ताडित, प्रहत, आहत, ३ रहित, विहीन (उ श्रीहत) ४ नाशित, नष्ट, ध्वस्त, ध्वंसित ५ पीडित, ग्रस्त ६ निकृष्ट, उपयोगानर्ह ७ गुणित (गणित) ८ व्यथित, अर्दित।

—प्रभ, वि (सं) निष्प्रभ, कान्तिहीन।

—बुद्धि, वि (म) मूर्ख, निर्बुद्धि।

—भागी, वि (स गिन्) हत मद, भाग्य, दुर्दैव।

—वार्य, वि (स) निर्बल, अशक्त।

—हृदय, वि (स) हताश, भग्न, चित्त हृदय उत्साह।

हतक, स स्त्री (अ हतक = फाड़ना) अपमान, निरादर निरस्कार, अवज्ञा, मान हानि (स्त्री)।

—इज्ज़ती, स स्त्री (अ हतक + इज्ज़त>) मानहानि (स्त्री), अवधीरणा।

—करना, क्रि स (समुत्पन्ने) अप अव,-मन् (प्रे) अवज्ञा (क्र् प अ), तिरस्कृ।

हताश, वि (म) निराश, स्वस्त्याश, अशा, अतीत हीन-रहित, निरपेक्ष।

हताहत, वि (म) मृतक्षत, प्रेत-क्षत, क्षत मृत, भग्निप्रेत।

हतोत्साह, वि (स) निर-भग्न उत्साह, मनो हत, भग्नोद्यम, विषण्ण, अवसन्न, छिन्न प्रति,-बद्ध हत, स्खलितधैर्य।

हत्या, सं पुं } (सं हस्त >) शुण्डि (स्त्री),
हत्थी, म स्त्री } वारण, दड।

हत्या, स स्त्री (सं) हनन, वध, घात, सूदन, हिंसन, हिंसा, मारणम्।

—करना, क्रि स., हन् (अ प अ, तथा प्रे घातयति), व्यापद् (प्रे), दे 'मारना'।

हत्यारा, स पु (स हत्याकार॰) घातक, मारक, वधकारिन्, हन्तृ, हन, प्राणहर।

हत्यारी, स स्त्री (हिं हत्यारा) प्राण,हरी-हारिणी, वधकारिणी, घातिका २ हत्या,-पाप-अपराध-दोष पातकम्।

हथ, स पु (म हस्त) कर, पाणि।

—कडा, स पु (सं हस्तकाड-ड>) हस्त-लाघव, करकौशल, इन्द्रजाल २ गुप्तचेष्टा, प्रच्छन्न प्रयोग प्रयुक्ति (स्त्री), प्रतारणा, छल-लम्।

—कड़ी, स स्त्री (स॰ हस्तकटक क>) हस्त, पाश निगड, करवधनी।

—कड़ी लगाना, क्रि स, पाणिपाशेन बध (क्र् प अ) -संयम् (प्रे)।

—छुट, वि, ताडनशील।

—लना, स पु, पाणि-कर,-पीडन, पाणि ग्रहणम्।

—सार, सं स्त्री, गज हस्ति, शाला, दे 'फील खाना'।

हथनाल, सं स्त्री (हिं) हस्तिनालम्, गज नेयशतघ्नी।

हथ(थि)नी, स स्त्री (सं हस्तिनी) करिणी, करेणु-णू (दोनों स्त्री), इभी, मातंगी, गज योषित्, क,रेणुका, व(वा)सा, वशा, कटभरा।

हथिया, म पु (स हस्त) हस्त, नक्षत्र नक्षत्रम्।

हथियाना, क्रि म (हिं हाथ) बलात् ग्रह् (क्र प से)-धृ (चु)-आदा (जु आ अ) २ चुर् (चु), मुष् (क्र प से) ३ करेण स्वायत्तीकृ।

हथियार, स पु (हिं हथियाना) अस्त्र, शस्त्र, आयुधं, हेति (पु स्त्री), हेतु २ उपकरण, यंत्र, दे 'औज़ार'।

—बद, वि, सशस्त्र, सायुध, सन्नद्ध, सज्ज।

—बाँधना, मु, शस्त्राणि धृ (चु), सन्नह् (दि प अ), सज्जीभू।

हथेली, स स्त्री (सं हस्ततल) करतल, तल-लं, प्रतल, ताल, प्रपाणि, प्रहस्त, फर्फरीक।

—खुजलाना, मु, वित्तलाभ सभाव्यते ।
—पर सिर रखना, मु, जीवनमोह त्यज् (भ्वा प अ), प्राणान् अवाण् (चु)।
—म आना, मु, स्वाधिकारे आया (अ प अ)।
हथौड़ा, स पु (हिं हाथ) महा, घन -विघन ।
हथौड़ी, स स्त्री (हिं हथौड़ा) वि,घन, द्रुघण, अयोघन ।
हथ्यार, स पु, दे 'हथियार'।
हद, म स्त्री (अ) सीमा, दे ।
—करना, मु, सीमा-मर्य्यादां अतिक्रम् (भ्वा प से)-उल्लघ (भ्वा आ से)।
—से ज्यादा, मु, असीम, नि सीम, अमित, अपरिमित ।]
हनन, स पु (स न) दे 'हत्या' २ ताडन, प्रहरण ३ गुणनं, गुणाकार, पूरण (गणित)।
हननीय, वि (स) हन्तव्य, वधार्ह, शीर्षच्छेद्य, वध्य ।
हनु, सं स्त्री (सं पु स्त्री) हनू (स्त्री), कपोलद्वय परमुसभाग २-वि(च-नु)बुकम् ।,
—की जकड़ाहट, सं स्त्री हनुग्रह ।
हनुमान, स पु (सं हनुमत्) मारुति, पवन पुत्र, वायुसुत, आंजन नेय, कपीन्द्र ।
हप, स पु (अनु) त्वरितनिगरणात्मको ध्वनिति शब्द ।
—कर जाना, मु, मत्वर निगृ (तु प से)।
हफ़्ता, सं पु (फ़ा) सप्ताह, दे ।
हबर दबर, क्रि वि (अनु हड बड) शीघ्र, सत्वर, ससम्भ्रमम् ।
हबशी, स पु (अ) हब्शीय, हब्शदेश वासिन् २ कृष्णांग, कुरूप ।
हब्बा डब्बा, स पु (हिं हाँफ+अनु डब्बा) शिशूना श्वासरोगभेद, श्वसनक ।
हब्स, स पु (अ) कारावास ।
—बेजा, स पु (अ+फ़ा) अन्याय्यकारा वास ।
हम[1], सर्व (स अहम्) वयम् (बहु), २ सं पु, अहकार ।
हम[2], अव्य (फ़ा) सह, साक २ सम, तुल्य ।
—उम्र, सं पु (फ़ा+अ) एक-सम,-वयस्क-कालीन, सह,-वतन जीवन ।
—जिन्स, सं पु (फ़ा) सजातीय, सवर्णीय ।

—जोली, स पु (फ़ा+हिं) सहचर, सखि (पु)।
—दर्द, म पु (फ़ा) समदु ख, समवेदन, सहानुभूति,-मत युक्त, सानुकम्प ।
—दर्दी, स स्त्री, सहानुभूति (स्त्री), अनु ग्र, समवेदना।
—निवाला, स पु (फ़ा) सह, भोक्तृ (पु) भोजक ।
—प्याला, सं पु (फ़ा) सहपायिन् ।
—राह, अव्य (फ़ा) सह, साकम् ।
—राही, स पु (फ़ा) सह,-चारिन्-गामिन्, मित्रम् ।
—वतन, स पु (फ़ा+अ) सम एक,-देशीय, देशभ्रातृ ।
—वार, वि (फ़ा) सम, सम,-तल रेख, सपाट ।
—सबक़, सं पु (फ़ा) सहपाठिन् ।
—सर, स पु (फ़ा) सम, गुण -बल पद ।
—सरी, सं स्त्री (फ़ा) समता, समानता ।
—साया, सं पु (फ़ा) प्रति,-वासिन्-वेशिन् वेश ।
हमल, सं पुं (अ) गर्भ, दे ।
हमला, सं पु (अ) युद्धयात्रा, यान २ अवस्कद, आक्रम, आक्रमणं दे ३ प्रहार ४ कुव्यवस्म्।
—आवर, (हमलावर) वि पुं, आक्रामक, आक्रमण,-कारिन्-कर्तृ-कार, अवस्कन्दकृत ।
हमाक़त, म स्त्री (अ) मूढता, अज्ञता, मूर्खता, मूर्खत्व, मौर्ख्यम् ।
हमाम, सं पु (अ हम्माम) स्नानागारम् ।
हमारा, सव (हिं हम) अस्माक, अस्मदीय -याय (पु स्त्री न)।
हमाहमी, सं स्त्री (हिं हम) स्वार्थ, स्वार्थ परता २ अहमग्रिका, अहमहमिका ।
हमें, सर्व (हिं हम) अस्मान्, न २ अस्म भ्यं, न ।
हमेल, स स्त्री (अ हमायल) अंक मुद्रा,-माला ।
हमेशा, अव्य (फ़ा) सदा, नित्यम् ।
हय, सं पु (सं) अश्व, घोटक (हया स्त्री)।
—ग्रीव, स पुं (सं) विष्णो अवतारविशेष २ वेदहारी राक्षसविशेष ।
हया, सं स्त्री (अ) लज्जा, त्रपा ।

हरसिंगार, स पु (स हारशृङ्गार) पारिजात -तरु, प्राजक्ता, रागपुष्पी, खरपत्रक।

हरा, वि (स हरित) हरित, प(पा)लाश २ प्रसन्न, प्रहृष्ट, प्रफुल्ल ३ अभि, नव, प्रत्यग्र, ४ आम, अपक्व, अपरिणत ५ (व्रण दि) अविरोपित, अशुष्क। स पु, हरित, पलाश हरिद्,-वर्ण।

—पन, स पु, हरितत्व, पलाशत्व २ अपरिणति (स्त्री), अपक्वता ३ नवता प्रत्यग्रता।

—बाग, मु, आपातरमणीया वार्ता।

—भरा, मु, सरस, शोपरहित, हरिततरुलताभि आच्छादित (वि)।

हराना, क्रि स (हि हारना) अभि परि परा, भू (भ्वा प से), जि (भ्वा प अ) वि परा जि (भ्वा आ अ), दम् (प्रे) २ (शत्रुं) विफली-मोघी कृ ३ क्लम् श्रम् सिद् आयस (सब प्रे)।

प्राण—, मु, मृ (प्रे), हन (अ प अ)। मन—, मु, मन सेन ह (भ्वा प अ) मुह् (प्रे)।

हराम, वि (अ) अधम्य, अन्याय्य, अवैध, न्याय धर्म नियम विधि -विरुद्ध निषिद्ध, दूषित। स पु, शूकर २ अधम, पाप दोष ३ व्यभिचार, जारकर्मन् (न)।

—कार, स पु (अ + फा) व्यभिचारिन, औपस्थिक २ पाप, पापाचारिन।

—कारी, सं स्त्री, पाप, अधर्म २ व्यभिचार, जारकर्मन् (न)।

—खोर, सं पु (अ + फा) पापाजीविन पापभक्षिन् २ परपिंडाद, पराभ्रपुष्ट ३ अलस, उद्योगविमुख।

—खोरी, सं स्त्री, पाप, आजीव आजीवन २ पराम्नभोजनं ३ आलस्य, उद्योगविमुखता।

—जादा, स पु (अ + फा) जार, न जात उत्पन्न, विजात (जारजा स्त्री) २ दुष्ट, खल, पापिन् (गाली)।

हरामी, वि, दे 'हरामजादा' (१ २)।

हरारत, स स्त्री (अ) ताप, दाह, उष्मन् २ मंद ज्वर, -ज्वर, ज्वरांश।

हरावल, सं पुं (तु) सेना मुख-अग्र, अग्रानीक, नासीरसेना (बहु)।

हरास, स पु (फा हिरास) भय त्रास २ आशंका ३ विषाद ४ नैराश्यं, निराशता।

हरा हुआ, वि, अप हृत, चोरित, स्तेनित, मुषित, मुष्ट, २ अच्छिन्न, सहसा आक्रान्त गृहीत धृत ३ दूरीकृत, अपसारित ४ नाशित ध्वंसित ५ नीत ऊढ।

हरि, स पु (सं) श्री,-वर धर निवास १ पति -वल्लभ, विष्णु दे २ इन्द्र ३ अश्व ४ कपि ५ सिंह ६ सूर्य ७ चन्द्र ८ मंडूक ९ सर्प १० अग्नि ११ मयूर १२ श्रीकृष्ण १३ श्रीराम १४ शिव १५ यम। वि (स) (१ २) पिंगल हरित,-वर्ण।

—कथा, स स्त्री (स) भगवच्चरितवर्णनम्।

—कीर्तन, स पु (स न) भगवद्गुणगानम्।

—गीतिका, म स्त्री (स) हरिगीता, छंदोभेद।

—चंदन, स पु (सं पु न) तैलपर्णिक, गोशीर्ष (चंदनभेद) २ स्वर्गस्थवृक्षविशेष ३ पद्मपराग ४ कुंकुम ५ चन्द्रिका।

—चाप, स पु (स) इन्द्र हरि, धनुस् (न)।

—जन, स पु (सं) भगवद्भक्त, हरिसेवक।

—ताल, स पु (स न) दे हरताल'।

—द्वार, सं पुं (स न) प्रख्याततीर्थविशेष, गंगाद्वारम्।

—धाम, स पु [स -मन् (न)] विष्णुलोक, वैकुंठ हरि, पदं पुरम्।

—भक्त, सं पु (दे) 'हरिजन'।

—भक्ति, स स्त्री (सं) हरि, भजनं प्रेमन् (पु न) सेवनम्।

—वंश, सं पु (सं) श्रीकृष्णसंतान २ पुराणग्रंथविशेष।

—वाहन, स पु (सं) गरुड २ सूर्य ३ इन्द्र।

हरिण, सं पुं (सं) मृग, कुरंग।

—कलंक, सं पुं (सं) मृगांक चन्द्र।

—नयना, सं स्त्री, मृग हरिण नयनी नेत्रा नेत्री-अक्षी।

हरिणी, सं स्त्री (सं) दे 'हिरनी'।

हरित, वि (सं) हरित, प(पा)लाश, हरित(द्)-वर्ण २ कपिल, पिंग, पिंगल, पिशंग।

हरिद्रा, सं स्त्री (सं) दे. 'हल्दी'।

हरिन, स पु (सं हरिण) दे 'हिरन'।
हरियाला, वि (हि हरा) हरित, हरिद्वर्ण २ शाद्वल।
हरियाली, सं स्त्री (हि हरा) हरितत्व, विस्तार प्रसार, हरीतिमन् (पुं) २ तरलता,-समूह विस्तार, शाद, शाद्वलता।
हरिश्चन्द्र, स पु (स) त्रिशङ्कुज, त्रेतायुगे नृपविशेष।
हरि(री)स, स स्त्री (स हलीषा) हल-लांगल, दण्ड।
हरीतकी, स स्त्री (स) दे 'हड'।
हरीफ, स पु (अ) शत्रु २ प्रति-द्वन्द्विन् स्पर्द्धिन्।
हरीश, स पु (सं) वानरेन्द्र २ सुग्रीव ३ हनुमत्।
हर्ज, स पु (अ) विघ्न, अन्तराय २ हानि क्षति (स्त्री)।
हर्त्ता, स पुं (सं हर्तृ) दे 'हरनेवाला'।
हर्फ, स पु, दे 'हरफ'।
हर्म्य, सं पु (सं न) प्रासाद, राजभवन २ विशालभवन, धनिगृहं ३ न(ना)रक।
हर्रा, स पु, दे 'हड'।
हर्ष, स पु (स) पुलक, रोमाच दे। २ आनंद, प्र,मोद, आह्लाद, उल्लास।
—विषाद, सं पु (स द्वौ द्वि) मोदखेदौ, आनंदविषादौ।
हर्षित, वि (स) हृष्ट, हर्षित, प्रीत, प्र, मुदित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, आनंदित।
हल्, स पु (स) शुद्ध स्वरहीन,-व्यंजन, (क् से ह् तक अक्षर)।
हलन्त, वि, (स) शुद्धव्यंजनान्त (शब्द)। स पु, दे 'हल्'।
हल¹, सं पु (सं न) लांगल, हाल, हलि, गोदारण, सीर, सीरक।
—चलाना या जोतना, क्रि स, हल् (भ्वा प से) कृष (भ्वा प अ, तु उ अ)।
—जीवी, स पु (स-विन्) हालिक, लांगलिन्, कृषाण, कृषिक।
—धर, सं पु (सं) हल, पाणि भृत, बलदेव।
—मुख, स पु (स न) निरीष ष, फाल लम्।
—वाहा, स पु (स ह) हलग्राहिन, परहल चालक।
—वाही, स स्त्री (हि हलवाहा) कृषि (स्त्री), कर्षणम्।
हल², स पु (अ) विवरण, व्याख्यान, साधन २ निर्णय, समाधान, समाधि ३ गणन, सख्यान ४ द्रावणं, विलयनम्।
—करना, क्रि स, विद् (स्वा उ से), व्याख्या (अ प अ) विशदयति (ना धा), स्पष्टीकृ, उत्तर दा २ विद्रु विली (प्रे), द्रवीकृ।
हलक़, स पु (अ) कंठ, गल, निगरण।
हलका¹, स पु (अ) वृत्तं, वर्तुल, मडल २ परिधि ३ समूह, निकर ४ ग्रामादि समूह ५ चक्रवलय-यम्।
हलका², वि (स लघुक) लघु, अल्प-लघु स्तोक, भार-तोल, सु-सुख,-वाह्य २ विरल, घनता-रहित ३ गाध ४ अल्प, स्तोक ५ अल्प, *मूल्य-अर्घ ६ मंद, सह्य ७ तुच्छ, नीच, क्षुद्र* ८ सुकर, सुसाध्य ९ निश्चित, कृतकार्य १० सूक्ष्म, तनु ११ निकृष्ट, अपकृष्ट।
—पन, स पु, लघुता, लाघवं, अल्पभारता, सुखवाह्यता २ क्षुद्रत्वं, तुच्छता ३ अव,-मान हेलना, प्रतिष्ठाभाव।
—करना, मु, लघयति (ना धा), लघूकृ २ अवगण् (चु) अवमन् (प्रे), तृणाय मन् (दि आ अ)।
हलचल, (हि हिलना+चलना) संक्षोभ, संरंभ, सभ्रम, सकुल, कोलाहल २ उपद्रव, विप्लव, समद ३ कप, स्पंद।
—मचना, क्रि अ, संक्षोभ सजन् (दि आ से) प्रवृत् (भ्वा आ से)।
हलदिया, स पुं (हि हलदी) पाण्डु,-रोग आमय, पाण्डुक, कामला।
हलदी, स स्त्री (स हलदी) हरिद्रा, पीतिका, पीता, कांचनी, वर्णवती, निशा, वर,वर्णिनी, रजनी, भद्रा, मंगला, शोभा।
—उठना या चढ़ना, मु, विवाहात् प्राक्, वर वध्वो तैलहरिद्राभ्यजनम्।
—लगा के बैठना, मु, निरुद्यम एकत्र स्था (भ्वा प अ) २ दर्पावलिप्त (वि) भू (भ्वा आ से)।

—लगी न फिटकरी, मु , व्यय विनैव ।

हलफ, स पु (अ) शपथ , दे 'सौगंद' ।

—नामा, स पु (अ +फा) शपथपत्रम् ।

हलवा, स पु (अ) काटाह सयाव , मोहनभोग ।

—सोहन, स पु , शोभन मयाव काटाह मोहनभोग ।

हलवाइ(य)न, स स्त्री (हि हलवाई) काद विक्री, मिष्टान्नविक्रेत्री (खांडिकी, सार्विकी) २ कादविक मिष्टान्नविक्रेतृ-खान्डिक ,पत्नी ।

हलवाई, स पु (अ हलवा) खांडिक , सार्विक , कादविक , मिष्टान्नविक्रेतृ ।

हलाक, वि (अ) हत, मारित ।

—करना, मु , हन् (अ प अ) ।

हलाकत, स स्त्री (अ) ६६ , हत्या मृत्यु २ विनाश ।

हलाल, वि (अ) धर्म्य, न्याय्य, वैध, शास्त्र विधि धर्म, अनुकूल विहित, उचित । स पु (अ) भक्ष्य पशु जन्तु (इस्लाम) ।

—ख़ोर, स पु (अ +फा) धर्म पुण्य आजी विन् २ शल्पू (पु), समार्जक , दे 'भंगी' ।

—ख़ोरी, स स्त्री , धर्म पुण्य आजीव आजी वनम् ।

—करना, मु , न्यायेन धर्मेण व्यवहृ(भ्वा प अ) २. शनैः शनैः हन् (अ प अ) (इस्लाम) ।

—का, मु , शास्त्रानुकूल, वैध, धर्म्य ।

—की कमाई, मु , पुण्यलक्ष्मी , न्यायोपार्जित धनम् ।

—हलाहल, स पु (स न) हल(ला)हल, हाहल, समुद्रमथनजो विषविशेष २ कालकूट, महाविष ३ गरल -ल, विषद ।

हली, स पु (स लिन्) बलदेव २ कृषाण ।

हलीम, वि (अ) नम्र, विनीत २ शान्त, समाहितन ।

हलीमी, स स्त्री (अ हलीम) नम्रता, विनय २ शान्ति (स्त्री), प्रसाद ।

हलुका, वि , दे 'हलका' ।

हलदी, स स्त्री , दे 'हलदी' ।

हल्ला, स पु (अनु) कोलाहल कलकल , तुमुल, उत्क्रोश, विर(रा)व २ आक्रम , अवस्कन्द ।

—करना, क्रि, अ कोलाहल कृ, उत्क्रुश् (भ्वा प अ) २ आक्रम् (भ्वा प से, भ्वा आ अ) ।

हवन, स पु (स न) होम , होत्र, यज्ञ दे २ अग्नि ३ हवनी होमकुण्डम् ।

—करना, क्रि स , हु (जु प अ), यज् (भ्वा उ अ) होमकुरे हवि क्षिप् (तु प अ) ।

—कुंड, स पु (स न) हवनी-यज्ञ होम कुण्डम् ।

हवलदार, स पु (अ हवाल +फा दार) *हवाल्दार , सेनाधिकारिभेद ।

हवस, स स्त्री (फा) कामना, लालसा २ तृष्णा, दे ।

हवा, स स्त्री (अ) मरुत्, पवन , वायु दे । २ भूत , प्रेत ३ ख्याति , प्रसिद्धि (स्त्री) ४ विश्वास , प्रत्यय ५ उत्कण्ठा ।

—ख़ोरी, स स्त्री (अ +फा) पर्यटन, भ्रमण, वायुसेवनम् ।

—चक्की, स स्त्री (अ +हिं) *वायुचक्र, पवनपेषणी ।

—दार, वि (अ +फा) प्रवात, सुवात, पवनपूर्ण ।

—उखड़ना, मु , यश प्रत्यय नश्(दि प वे) ।

—करना, मु , वीज् (चु) ।

—खाना, मु , पर्यट् (भ्वा प से), वायु सेव (भ्वा आ स) ।

—बँधना, मु , ख्याति कीर्ति तन्(दि आ स) ।

—बाँधना, मु , विकत्थ् (भ्वा आ से), आत्मानं श्लाघ् (भ्वा आ स) ।

—से बातें करना, मु अतिवेगेन धाव् (भ्वा प से) ।

—से लड़ना, मु , नित्य कलहोद्यत (वि) वृत् (भ्वा आ स) ।

—हो जाना, मु , सत्वर पलाय् (भ्वा आ स) २ तिरोभू , विली (क्र्य) ।

हवाई, वि (अ हवा) वायव(वी स्त्री), वायव्य-वायवीय (-या स्त्री) २ नभस्थ, गगन,-गामिन् चारिन् ३ निर्मूल, निराधार । स स्त्री , *बाणवत्, अग्निक्रीडनभेद ।

—अड्डा, स पु , विमान,-वायुयान,-स्थान निवेश ।

—क़िला, महल, सं पु, खपुष्प, गगन कुसुमम्।
—चक्की, स स्त्री, दे 'हवाचक्की'।
—जहाज़, स पुं (हिं + अ) वायु-व्योम यानं, विमान -न, पवनपोत ।
हवाल, सं पु (अ अहवाल) दशा, अवस्था २ परिणाम, गति (स्त्री) ३ वृत्त, समाचार ।
हवाला, स पु (अ) उल्लेख, निर्देश, सकेत २ उदाहरण, दृष्टान्त ३ रक्षा रक्षण, अधिकार ।
—देना, क्रि स, निर्दिश (तु प अ), उल्लिख (तु प से)।
—करना, मु, दे 'सौंपना'।
हवालात, स पु स्त्री (अ) गुप्ति (स्त्री), निरोध २ *गुप्तिगृहम्।
—करना, मु गुप्तिगृहे निरुध (रु प अ)।
हवास, स पु (अ) इन्द्रियाणि हृषीकाणि (न बहु) २ उपलब्धि (स्त्री), सवेदन ३ सज्ञा, चैतन्यं, दे 'होश'।
हवि, स पु [स हविस (न)] हवनसामग्री, हव्य, सान्नाय्य, हवनीय, होमीयद्रव्यम्।
हवेली, सं स्त्री (अ) हर्म्यं, भवन, धनिगृह २ पत्नी।
हव्य, सं पु (स न) दे 'हवि'।
हशमत, स स्त्री (अ) गौरव, महिमन् २ विभव, ऐश्वर्यम्।
हसद, स पु (अ) ईर्ष्या मत्सर ।
हसब, अव्य (अ)—अनुसार, यथा—।
—तौफ़ीक़, अव्य (अ) सामर्थ्यानुसार, यथाशक्ति (दोनों अव्य)।
हसरत, सं स्त्री (अ) शोक, आधि, दुःखम्।
हसीन, वि (अ) सुन्दर, सुरूप।
हस्त, स पु (स) कर, पाणि, दे 'हाथ' २ चतुर्विंशत्यङ्गुलिपरिमाणं ३ हस्त लिपि (स्त्री), लेखनशैली ४ नक्षत्रविशेष ५ मुद्रा, दे 'मूँड़'।
—कार्य, सं पु (स न) करदमन् (न) २ हस्तशिल्प, दे 'दस्तकारी'।
—कौशल, स पु (स न) पाणिपाटव, हस्त-लाघव चापल्यम्।
—क्रिया, सं स्त्री (स) दे 'हस्तकार्य(१२)।
—क्षेप, स पु (स) प्रति-बधन रोधन २ परकार्ये, चर्चा प्रतिपात ।
—क्षेप करना, क्रि स परकार्येषु व्यापृ (तु आ अ), परकार्याणि चर्च (तु प से) निरूप् (चु)।
—गत, वि (स) प्राप्त, लब्ध, अधिगत, हस्तस्थ।
—तल, सं पुं (स न) करतल, दे 'हथेली'।
—त्राण, स पु (स न) करत्राण दे 'दस्ताना'।
—पृष्ठ, सं पुं (सं न) कर पाणि पृष्ठम्।
—मैथुन, स पु (स न) हस्तेन शुक्रपातन इन्द्रियसंचालनम्।
—रेखा, स स्त्री (स) करतल, रेखा रेपा।
—लाघव, सं पु (सं न) हस्त-कौशल चापल्यम्।
—लिखित, वि (स) हस्तेन लिपिबद्ध।
—लिपि, स स्त्री (स) लेखनशैली।
—सूत्र, स पुं (स न) मंगल्य करसूत्र, सूत्र मयं, कङ्कणं-वलयम्।
—हस्ति, सं पुं (सं निन्) दे 'हाथी'।
हस्तिनी, स स्त्री (स) दे 'हथनी' २ स्त्री भेद (कामशास्त्र)।
हस्ती[1], स पु, दे 'हाथी'।
हस्ती[2], सं स्त्री (फ़ा) सत्ता, अस्तित्वम्।
हस्ते, अव्य (स) द्वारा, द्वारेण।
हहा, स स्त्री (अनु) अट्टहास्य हास हसित, हहाकार, हीही (अव्य), हास्यध्वनि २ दैन्यसूचकध्वनि, अयि (अव्य), हहा कृति (स्त्री) ३ अनुनयातिशय, सप्रणि पात प्रार्थनम्।
—खाना, मु, पादयो पतित्वा अनुनी (भ्वा प अ)-प्रार्थ् (चु आ से)।
हाँ, अव्य (सं आम्) ओम्, एव, अथ किं २ तथेति, बाढ, साधु (सब अव्य) ३ तथापि ४ दे 'यहाँ'।
—हाँ, अव्य, आमाम्, ओमोम् २ न न, मा मा, न, नहि, नो।
—करना, मु, अंगी स्वी-कृ, अनुज्ञा (क्र उ अ), अनुमन् (दि आ अ)।
—जी हाँ जी करना, मु, चाटूभि प्रमद् (प्रे)-उपच्छद (चु)-स्तु (अ प अ)।

—मे हाँ मिलाना, मु, अविचार्यैव हृदयानि सत्यापयति (ना धा) २ दे 'हाँ जी हाँ जी करना'।

हाँक, स स्त्री (स हुंकार) हुंकृति (स्त्री), आकारणा, उच्चैराह्वान तारस्वरेण सम्बोधन २ गर्जनम्, युद्धाह्वान, सिंहनाद क्ष्वेडा, समरार्थमाकारण-णा ३ प्रोत्साहन शब्द ध्वनि ४ रक्षार्थं सहायतार्थं, आह्वान-आकारणम्।

—पुकार, स स्त्री, कोलाहल, उत्क्रोश।

—देना या लगाना, मु, उच्चै आकृ (प्रे), तारस्वरेण आह्वे (भ्वा प अ), शब्दायते (ना धा)।

हाँकना, क्रि स (हि हाँक) दे 'हाँक देना' २ सिंहनाद कृ, युद्धाय आकृ (प्रे) ३ विकत्थ (भ्वा आ से) आत्मानं श्लाघ् (भ्वा आ से) ४ नुद् प्रणुद् (तु प अ, प्रे) प्रेर् (प्रे), चर् चल (प्रे), चुद् (चु), अज (भ्वा प स) ५ अपसृ निष्क्रम् (प्रे) ६ वीज् (चु)। स पु तथा भाव, दे 'हाँक' (१ २) ३ विकत्थन, आत्मश्लाघन-घा ४ प्रणोदन, प्रेरण, प्रचोदन, प्रचालन, प्रजनं ५ अपसारण निष्कासन ६ वीजनम्।

हाँकनेवाला, स पु, प्रेरक, वाहक, चालक, प्रमोदक, प्रचोदक इ।

हाँडी, स स्त्री (स हंडी) हंडिका २ काच, हंडी हंडिका।

—पकना, मु, उपजप (कर्म), कूट, रच् (कर्म), उपजाप कृ (कर्म)।

हाँफ(प)ना, क्रि अ (अनु हफ हँफ या स हाँपिना>) सरष्ट श्रम (अ प से), सत्वर प्राण (अ प से)। स पु, कृच्छ्रश्वास, त्वरितप्राणनम्।

हाँसी, स स्त्री दे 'हँसी'।

हा, अव्य (सं) हर्षशोकभयविस्मयक्रोधानदा सूचकमव्ययम्।

हाइड्रोजन, स पु (अं) उदजनम्, आर्द्रजनम्।

हाइड्रोफोबिया, स पु (अं) अलर्करोग, आलर्क जल, भय-सन्त्रास।

हाइफन, सं पु (अं) समासचिह्न ( )। (उ राज-सेवक)।

हाईकोर्ट, स पु (अ) प्रधानन्यायालय, उच्चाधिकरणम्।

हाई स्कूल, स पु (अ) उच्च विद्यालय।

हाउस, स पु (अ) गृह, गेह इ, अ(आ)गार इ २ सभा, परिषद् ३ नृवंश।

हाऊ, स पु (अनु) दे 'हौवा'।

हाकिम, स पु (अ) शासक, शासितृ, अधिकारिन् नियोगिन्, आधिकारिक।

हाकिमी, स स्त्री (अ हाकिम) शासन, अधिकार, प्रभुत्व आधिपत्य, शिष्टि (स्त्री), राज्यम्।

हॉकी, स स्त्री (अं) आंग्लक्रीडाभेदः।

हाजत, स स्त्री (अ) आवश्यकता, अपेक्षा २ कामना, लालसा ३ मल-मूत्र, उत्सिसृक्षा ४ गुप्ति (स्त्री), दे 'हवालात' (१)।

हाज़मा, सं पु (अ) पचन, विपरि,पाक, पक्ति (स्त्री) २ जठर, अग्नि अनल, पाचनशक्ति (स्त्री)।

—बिगड़ना, मु, अग्निमांद्य जन् (दि आ से) अन्नं न पच् (कर्म)।

हाज़िम, वि (अ) पाचक, पाचन, अग्निवर्द्धक।

हाज़िर, वि (अ) उपस्थित, पुरःस्थित वर्तमान, विद्यमान २ सन्नद्ध, सज्ज, उद्यत।

—करना, क्रि स उप पुरः संमुख स्था (प्रे)।

—जवाब, वि (अ) प्रत्युत्पन्नमति, विदग्ध।

—जवाबी, स स्त्री, प्रत्युत्पन्नमतित्व, वैदग्ध्यम्।

—व नाज़िर, वि, प्रत्यक्षदर्शक।

—होना क्रि अ, उपस्था (भ्वा उ अ) उपस्थित (वि) भू।

गैर—, वि, अनुपस्थित, अविद्यमान।

हाज़िरी, स स्त्री (अ) उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता।

—का रजिस्टर, सं पु, उपस्थितिपत्रिका।

—लेना, क्रि स उपस्थिति अंक (चु)।

हाज़िरीन, स पु (अ 'हाज़िर' का बहु) उपस्थितजना (बहु०) श्रोतृवर्ग।

—(न) जलसा, सं पु, सभ्या सदस्या (बहु)।

हाजी, स पु (अ) मक्कायात्रिन, हाजिन् २ कृतमक्कायात्र इत्र।

हाट, स स्त्री, दे 'हट्ट' (१ २)।
हाटक, सं पु (म न) सुवर्ण, दे 'सोना'।
हाता, स पु, दे 'इहाता'।
हातिम, स पु (अ) अरबदेशीयोऽत्युदार सामन्तविशेष २ मुक्तहस्तमनुष्य ३ निपुण दक्ष मनुष्य ।
हाथ, स पु (म हस्त) कर, पाणि, शय पञ्चशाख, भुजदल, शल, कुशि २ चतु विंशत्यङ्गुल्यपरिमाण ३ बार, दे 'बार' ४ कर्मकर ५ दड, मुष्टि (स्त्री), वारण ६ वश, अधिकार ।
—आना, मु, अधिगम्-उपलभ् (कम)।
—उठाना, मु, तड (चु), प्रह (भ्वा प अ)।
—की चालाकी, मु, हस्तकौशल, दे ।
—की मैल, मु, तुच्छ क्षुद्र असार,-वस्तु(न)।
—खींचना, मु, परिह-विरम् (भ्वा प अ), वर्ज (चु)।
—चढ़ना, मु, दे 'हाथ आना' २ वश आया (अ प अ)।
—जोड़ना, मु, हस्तौ समानोय अथवा बद्धाञ्जलि दद्ध्वा अथवा सानलि प्रार्थ (चु आ से)। —अनुनी (भ्वा प अ) याच (भ्वा आ से)
—डालना, मु, दे हस्तक्षेप करना'।
—धोना, मु, वियुज (कर्म), वञ्चित विरहित विहीन (वि) भू।
—तंग होना, मु, दारिद्र्येण निर्धनतया पीड (कम)।
—पर हाथ धरे रहना, मु, निरुद्योग निष्कर्म स्था (भ्वा प अ)।
—पसारना, मु, याच् (भ्वा आ से)।
—पाँव फूलना मु, भयेन निस्तब्धीभू, मोहेन जडीभू।
—पाँव मारना, मु, प्र यत (भ्वा आ से), उद्युज (रु उ अ)।
—फेरना, मु, स्पृश् (तु)।
—बढ़ाना, मु, ग्रहीतु आदातु इच्छ् (भ्वा आ से)।
—बाँधना, मु, दे 'हाथ जोड़ना'।
—मलना, मु, अनुशी (अ आ से), पश्चात्ताप कृ २ निराश दुःखित (वि) भू।
—मारना, मु, छलेन अपहृ (भ्वा प अ) २ अभिवा प्रह (भ्वा प अ)।
—मिलाना, मु, करौ स्पृश् (तु प अ) २ मल्लयुद्धाय सज्ज (वि) भू।
—में रखना, मु, वशे-अधिकारे स्था (प्रे)।
—लगना, मु, दे 'हाथ आना' २ आरभ् (कम)।
—समेटना, मु, दानात्, निरन्तरात् निवृत् (भ्वा आ से)विरम् (भ्वा प अ)।
—साफ करना, मु, हृ (भ्वा प अ) २ अन्यायेन हृ (भ्वा प अ)।
—से जाना, मु, दे 'हाथ धोना'।
हथा हाथ, मु, सत्वर, शीघ्र २ कर हस्त, परंपरया।
हाथा, स पु (सं हस्त >) दे 'हत्थी' २ कुड्यार्पित मालय हस्तचिह्नम्।
—पाई, स स्त्री, हस्ताहस्ति (अव्य), समर, कलह ।
—पाई करना, क्रि अ, हस्ताहस्ति युध् (दि आ से), कलहायते (ना धा)।
—बाँही, स स्त्री, दे 'हाथापाई'।
हाथी, स पु (स हस्तिन्) करिन्, दन्तिन्, दन्तावल, द्विप, अनेकप, द्विरद, गज, नाग, कुञ्जर, वारण, इभ, स्तम्बेरम, म(मा)तंग, पद्मिन्, पुष्करिन्, महामृग, शूर्पकर्ण, सिंधुर, मदकल, सिन्दूरतिलक, रदनिन्, महाबल, द्रुमारि ।
—खाना, स पु (हि+फा) गजगृह, हस्तिशाला।
—दाँत, स पु (स हस्तिदत) गजदत ।
—पाँव, स पु, श्लीपद-द, शिलीपद-द, पद-द, गजीरःवल्मीक ।
—वान, स पु आधोरण हस्तिपक, हास्तिक, दे 'महावत'।
—पर चढ़ना या बाँधना, मु, सुसमृद्ध (वि) भू (भ्वा आ से)।
हादसा, स पु (अ) दुर्घटना, दे ।
हानि, स स्त्री (स) क्षति (स्त्री), अप, चय हार, अपाय २ क्षय, नाश, अभाव, ३ स्वास्थ्यबाधा ४ अनिष्ट, अहित, पशुभम्।
—करना, क्रि स, हानिं कृ, नश् (प्रे), क्षि (प्रे), अपचि (भ्वा उ अ), क्षतिं जन् (प्रे)।
—कारक, वि (स) हानि,-कर-कार-कारिन, अपचय,-कारिन्, नाशक, अनिष्टोत्पादक।

—होना, क्रि अ, क्षति बन (दि आ से), नश् (दि प से), वियुज् (कम), वि परि, हा (कम), वियुक्त हान-रहित (वि) भू।

हाफ़िज़, स पु (अ) रक्षक, त्राता २ *कुरानपाठिन्।

हाफ़िज़ा, स पु (अ) स्मृति, दे 'स्मरण शक्ति'।

हामिल, वि (अ) भारवाहक, भारिन् २ नेतृ, प्रापक।

हामिला, स स्त्री (अ) गर्भिणी, गर्भवती, अन्तर्वत्नी, ससत्त्वा।

हामी, स स्त्री (हिं हाँ) अनुमति स्वीकृति (स्त्री), स्वीकार, अनुज्ञा।

—भरना, मु, स्वी-अङ्गी-कृ, अनुज्ञा (कृ उ अ), अनुमन् (दि आ अ)।

हाय, अव्य (स हा) आ, अहह, कष्ट, हन्त (सब अव्य)। स स्त्री, निःदीर्घ-श्वास, उच्छ्वसित २ कष्ट, पीडा)।

—हाय, अव्य (सं हा हा) आ आ इ। सं स्त्री, शोक २ व्याकुलता।

—पड़ना, मु, दुष्कृत शाप फल (भ्वा प से)।

—मारना, मु, दीर्घ श्वस् (अ प से), (शोकेन) हा हा कृ, निश्वास मुच् (तु प अ)।

हार¹, स स्त्री (स हारि) पराजय, परि परा-अभि, भव २ श्रांति, क्लान्ति (स्त्री), आयास ३ हानि-क्षति (स्त्री)।

—जीत, स स्त्री, जयपराजयौ (पु द्वि)।

—खाना, मु, दे 'हारना'।

—देना, मु, दे 'हराना'।

हार², स पु (स) कंठ, भूषा आभरण माला, ग्रैव, ग्रैवेयक २ दे 'मोतियों का हार'।

—का मनका, स पु, हार, गुटिका गुलिका अक्ष।

फूलों का—, स पु, माला, माल्यं, स्रज् (स्त्री) आपीड।

मोतियों का—, स पु, मुक्तावली लि (स्त्री), मुक्ता-रत्न-माला, मौक्तिकसर, हार।

रत्नों का—, स पु मणिमाला, रत्नावली लि (स्त्री)।

सोने का—, स पु, कनकसूत्रम्।

—हार, प्रत्य, दे 'हारा'।

हारना, क्रि अ (सं हारण>) परा,जि (कर्म), अभि परा परि, भू (कर्म) अभिभूत पराजित (वि) भू २ विफल (वि) पद् (दि आ से) ३ श्रम् क्लम् (दि प से), खिद् (दि आ अ)। क्रि स, हा (जु प अ प्रे हापयति), अप, हृ (प्रे) २ नश्-क्षि (प्रे) ३ त्यज (भ्वा प अ) ४ दा (जु उ अ)। स पु तथा भाव, दे 'हार¹'।

हारने योग्य, वि, अभिभवनीय, पराजेय।

—वाला, स पु, आसन्नपराजय, पराजित-कल्प प्राय।

हारा हुआ, वि, वि परा, जित, अभि परा परि, भूत २ हृत, हारित, नष्ट, ३ श्रान्त, क्लान्त, खिन्न ४ अकृतकार्य।

हारमोन, स पु (अ) जीवनरस।

हारमोनियम, स पु (अ) *मधुरध्वनम्।

—हारा, प्रत्य (स -कार>) (प्राय कर्तृवाचक प्रत्ययों, (अक, तृच, तृन् आदि) से अनुवाद किया जाता है। उ देनेहारा=दायक, दातृ इ०)।

हारिल, सं पु (स हरितालक) हरितवर्ण-पीतपाद नीलचञ्चु चटकभेद, हारि(री)त, हारीतक।

हारी, वि (सं हारिन्) अप, हर्तृ हारक, आच्छेदक, बलात् ग्रहीतृ २ वाहक, प्रापक, नायक, हर ३ लुटक, मुठक, मोषक, चौर ४ नाशक, ध्वंसक ५ संग्राहक, समाहर्तृ (कर आदि) मनो चेतो, हर।

हारीत, स पु (स) चौर, लुंठन, वित्तव २ स्मृतिकारविशेष ३ दे 'हारिल'।

हार्ट फेल, स पु (अ) हृत्स्पन्दनविरोध, हृदयावरोध।

हार्दिक, वि (स) हृदय, सबंधिन् विषयक, चैत्त(-त्ती स्त्री), चैत्तिक (-की स्त्री) मानस (-सी स्त्री), मानसिक(-की स्त्री) २ निर्व्याज, निष्कपट ३ स्नेहशील, स्निग्ध, स्नेहिन् अनुरागवत्, अनुरागिन्।

हाल¹, स पु (अ) अवस्था, दशा २ परिस्थिति (स्त्री) ३ समाचार, वृत्तांत ४ विवरणं, इतिवृत्तं ५ चरित्र, कथा ६ समाधि, ब्रह्मैकाग्रता ७ वर्तमानकाल। वि, वर्तमान, विद्यमान, उपस्थित। अव्य, अधुनैव २ शीघ्रं, त्वरितम्।

—का, मु , अभि ,नव, नूतन, अचिर, प्रत्यग्र ।
—बेहाल होना, मु , शुभाद् अशुभ, मंगलात् अमंगल, क्रमशो विकारवृद्धि (स्त्री) ।
—में, मु , वर्तमाने, आधुनिक्समये, इदानीतने काले ।
हाल², म स्त्री (स हलिन) वप , कंपन २ सघट्ट , समाघात ३. लौह चक्रवलयम् ।
हाल³, म पु (अ) मुख ,शाला, बाह्यकोष्ठ , आस्थानी ।
हालत, म स्त्री (अ) दशा, अवस्था, स्थिति (स्त्री) २ आर्थिकावस्था ३ परिस्थिति (स्त्री) ।
हालहूल, स स्त्री (स हलनम्>) कलकल , कोलाहल २ उपद्रव , समद ।
हालाँ कि, अव्य (फा) यद्यपि (अव्य) ।
हाला, म स्त्री (स) मद्य, सुरा दे ।
हालाहल, म पु , दे 'हलाहल' ।
हाली, अव्य (अ हाल) शीघ्र, सत्वरम् ।
हाव, स पु (स) शृङ्गारभावजा चेष्टा (लीला, विभ्रम, विलास आदि) आह्वानम् ।
—भाव, म पु (स) पुरुषमनोहारी स्त्रीचेष्टा भेद, विभ्रम , विलास , लीला ।
हावनदस्ता, सं पु (फा) उलूखल मुसल, मुसल लेखनी (द्वि) ।
हाशिया, म पु (अ —यह्) प्रान , उपान , सीमा २ वस्त्रप्रान्त , चीरी रि (स्त्री), दशा ।
हास, सं पु (सं) दे 'हँसी' (१४) ।
—कर, वि (स) हास्यजनक २ अव-उप, हास्य ।
हासिद, वि (अ) ईर्ष्या(ष्या)लु, ईर्ष्युर्भ्यु ।
हासिल, वि (अ) लब्ध, अधिगत, प्राप्त दे ।
हास्य, वि (स) हास,-कर जनक उत्पादक, हास,-योग्य आस्पद २ अव उप, हास्य, अव उप, हासार्ह। सं पु (स न) दे 'हँसी' (२४)।
—कर, वि (स) दे 'हास्य' वि (१ २) ।
हास्यास्पद, म पु (सं न) हासविषय २ उपहासविषय । वि , दे 'हास्य' (वि १ २)।
हास्योत्पादक, वि (स) दे 'हास्य' (वि १ २) ।
हा हा, स पु (अनु) हास(स्य), शब्द ध्वनि , अट्टहास , अनुनय-दैन्य, शब्द ध्वनि ३ अहह, कष्ट, हा हन ।
—ही ही, **—ठी ठी**, } स स्त्री , परिहास , विनोद ।
—खाना, मु , सदैन्य आक्रु (प्रे)-प्रार्थ (चु आ मे) ।
—ही ही करना, मु , हस् (भ्वा प मे) २ परिहस , विनोदवाक्यानि उदीर (प्रे) ।
हाहाकार, म पु (स) हाहा,-रव शब्द ध्वनि २ आर्ति, क्रोश , आ,क्रन्दन, क्रन्दित, चीत्कार , महान कोलाहल ।
—करना, क्रि अ , हा हा कृ, हा हा ध्वनि उत्पद् (प्रे) २ आर्ति, क्रुश् (भ्वा प अ), आ, क्रन्द् (भ्वा प से) ।
हिंजीर, स पु (स) गजपद,-बन्धन-शृङ्खला रज्जु (स्त्री) ।
हिंडोल, स पु (स हिंदोल) रागभेद ।
हिंडोला, स पु (स हिंदोल -ला) हिंदोलक , २ दोल -ला-लिका प्रेंखा, आन्दोल , हिन्दोल ३ दोला,-गीत गीतिका ।
हिंद, स पु (फा) भारत, भारतवर्ष, आर्यावर्त ।
हिंदवाना, म पु , दे 'तरबूज' ।
हिंदवी, म स्त्री (फा) भारतीयभाषा २ हिन्दीभाषा ।
हिंदसा, सं पु (अ) अंक (गणित) ।
हिंदी, वि (फा) भारतीय, भारत,-वर्षीय देशीय । स पु, भारत, भारतवासिन, भारतवर्षवासिन, भारतीय । स स्त्री उत्तर भारतस्य मुख्यभाषा, हिंदीभाषा ।
हिंदुस्तान, म पु (फा हिंदोस्तान) दे 'हिंद' २ उत्तरभारतस्य मध्यमभाग (दिल्ली से पटने तक) ।
हिंदुस्तानी, वि (फा हिंदोस्तानी) दे 'हिंदी' वि । स पु , दे. हिंदी' स पु । म स्त्री , अखिलभारतीयभाषा, *हिन्दुस्थानी ।
हिंदू, स पु (फा) आर्य , वेद-स्मृति पुराण, अनुयायिन्-अनुगामिन, *हिन्दु ।
—पन, स पु , *हिंदुत्व, आर्यत्वम् ।
हिंदोस्तान, स पु (फा) दे 'हिंदुस्तान' ।
हिंसक, वि (सं) घात(तु)क, घातक, हिंस्र, शरारु, हन्तृ हिंसालु, वध-हिंसा,-शील २ मांसभक्षक, क्रव्याद (पशु) ।

हिंसनीय, वि (स) हन्तव्य, व्यापादनीय, मारणीय, वध्य ।

हिंसा, स स्त्री (स) अप,-कार हानि (स्त्री) निराकरण, पीड़ा बाधा, अर्दन २ वध, हत्या, हनन, हिंसन, घात, मारण, निषूदनम् ।

—करना, क्रि स, पीड् (चु), अपकृ व्यथ् (प्रे), अर्द् (भ्वा प से, प्र) २ हन् (अ प अ), हिंस (रु प से) व्यापद् मृ (प्रे), निषूद् (चु) ।

हिंसात्मक, वि (स) पीड़ा बाधा, आत्मक युक्त दायक २ हत्यात्मक, जीववधयुक्त ।

हिंस्रालु, वि (स) हिंसक, घातक, हिंस्र, वधशील । स पु (स) हिंसक, कुक्कुर भषक शुनक अलर्क, मत्तश्वन् ।

हिंस्र, वि (स) दे हिंसक' ।

हिकमत, स स्त्री (अ) तत्त्वज्ञान, दर्शन २ शिल्प, कलाकौशल ३ उपाय, युक्ति (स्त्री) ४ नीति (स्त्री), नय ५ मित व्यय ६ चिकित्सा, वैद्यकम् ।

हिकमती, वि (अ हिकमत) कार्यकुशल, कार्यपटु २ चतुर, विदग्ध ३ मितव्ययिन् ।

हिकायत, स स्त्री (अ) कथा, आख्यानम् ।

हिकारत, सं स्त्री (अ) तिरस्कार, अवगणना ।

—की नजर से देखना, मु लघयति (ना धा), अवमन् (दि आ अ) अवगण् (चु) ।

हिचक, स स्त्री (हि हिचकना) आवि पर्य,शंका, संदेह, संशय, विकल्प, निश्चय निर्णय, अभाव ।

हिचकना, क्रि अ (अनु हिच) दोलायते (ना धा), विकल्प् (भ्वा आ से), आविशङ्क् (भ्वा आ से), भरी (अ आ स) २ दे हिचकी आना' ।

हिचकिचाना, क्रि अ, दे 'हिचकना' ।

हिचकिचाहट, स स्त्री, दे 'हिचक' ।

हिचकिची, स स्त्री, दे 'हिचक' ।

हिचकी, स स्त्री (अनु हिच) हि(हे)क्का, हिक्किका, हिध्मा, क्षिणिका ।

—आना, क्रि अ, हिक्क् (भ्वा उ से) ।

—लगाना, मु, मरणोन्मुख (वि) भू (भ्वा प से) २ हिक्क् ।

हिचर पि(मि)चर, स स्त्री, दे 'हिचक' २ दे 'टालमटूल' ।

हिजड़ा, स पु, दे 'हीजड़ा' ।

हिजरी, स पु (अ) यवनसवत् (अब्द) (सन् १५।७।६२२ ई० अर्थात् श्रावण शुक्ल२, सवत् ६७९ वि से चला है) ।

हिजाब, स पु (अ) अवगुंठन २ लज्जा ।

हिज्जे, स पु (अ हिज्जह्)*शब्दाक्षरोच्चारण ।

—करना, क्रि स, शब्दाक्षराणि उच्चर् (प्रे) ।

हिज्र, स पु (अ) वियोग, विरह ।

हित, वि (स) लाभ, प्रद-दायक, उप,-कारिन् योगिन्, हितकर २ अनुकूल, योग्य२ हितेच्छु छुक, हितैषिन् । सं पु (स न) लाभ, अर्थ २ मगल, भद्र ३ अनुकूलता ४ स्वास्थ्य लाभ ५ स्नेह, अनुराग ६ मैत्री, हितेच्छा ७ मित्र ८ सबंध, बधुता ९ सबंधिन्, बधु । अव्य, लाभाय, हिताय २ कारणात्, हेतो ३ अर्थे, कृते ।

—कर, वि (स) हित, कर्तृ-कारक-कारिन् २ लाभ,-दायक प्रद, उपयोगिन्, फलावह ३ स्वास्थ्य,-कर प्रद ।

—काम, सं पु (स) हित,-कामना इच्छा । वि (सं) हितैषिन् ।

—कारी, वि (स रिन्) दे 'हितकर' ।

—चितक, वि (स) हितेच्छु च्छुक, हितैषिन् ।

—चितन, स पु (स न) हितेच्छा, उप चिकीर्षा ।

—वादी, वि (स दिन्) सत्परामर्शिन् ।

हिताहित, स पु (सं न) हानिलाभौ उप कारापकारौ (पु द्वि), इष्टानिष्टे भद्राभद्रे (न द्वि) ।

हितू, स पु (सं हित) मित्र, हितैषिन, सुहृद् २ सबंधिन्, बधु ।

हितैषी, वि (सं षिन) हितचिंतक, दे ।

हितोपदेश, सं पु (सं) सत्परामर्शदान २ विष्णुशर्मरचितो नीतिग्रन्थविशेष ।

हिदायत, सं स्त्री (अ) पथप्रदर्शन २ शिक्षा, अनुशिष्टि (स्त्री) ।

हिनहिनाना, क्रि अ (अनु हिनहिन) ह्रेष् हेष् (भ्वा आ से) ।

हिनहिनाहट, सं स्त्री (हिं हिनहिनाना) ह्रेषा, हेषा, ह्(हे)षितम् ।

हिर्स, सं स्त्री (अ) लोभ, तृष्णा, लिप्सा।

हिर्सी, वि (अ हिर्स) लुब्ध, गृध्नु, लोलुप।

हिलना[1], क्रि अ (स हल्लन) चल चर (भ्वा प से), इ या (अ प अ), गम् २ सृप् (भ्वा प अ) ३ कप वेप स्पन्द् (भ्वा आ से) ४ दोलायते (ना धा) प्रेङ्ख् (भ्वा प से) इतस्तत विस चर् ५ (जले) प्रविश (तु प अ)। स पु तथा भाव, चलन, चरण, अयन, यान, गमन, सर्पण, कंपन, कंप, वेपन, स्पन्दन, चेष्टा, चेष्टित, क्रिया प्रवृत्ति, व्यापार।

—डोलना, मु, अट् भ्रम् (भ्वा प से) २ श्रम् (दि प से) प्रयत् (भ्वा आ से)।

हिलनेवाला, वि, चर, चल, जंगम, चलन गमन, शील, कंपमान, वेपमान, चेष्टमान, स्पन्दमान।

हिला हुआ, वि, चलित, सृत यात, इत इ।

हिलना[2], क्रि अ (हिं हिलगना, स अधि लग्न) सुपरिचित-बद्धसख्य रूढसौहृद (वि) जन् (दि आ से)।

—मिलना, क्रि अ परस्पर सख्येन वृत् (भ्वा आ से) व्यवह अस (दोनों भ्वा प अ)।

हिलमिलकर, मु सौमनस्येन, सौहार्देन २ स भूय, मिलित्वा।

हिला मिला, मु, सुपरिचित, गाढसौहृद, बद्ध सख्य।

हिलाना, क्रि स, व 'हिलना' (१ २) क प्रे रूप।

हिलोरा, स पु (स हिल्लोल) उल्लोल, तरंग, भंग, ऊर्मि (पु स्त्री)।

हिलोरे लेना, मु, तरंगायते (ना धा), तरंगित (वि) भू।

हिलोरना, क्रि स (हि हिलोर) तरंगयति उल्लोलयति (न धा), इतस्तत चल् (प्रे) विधू (स्वा उ से)।

हिलोल, स पु दे 'हिलोर'।

हिसाब, सं पु (अ) गणना, संख्यान २ व्यवहार देयादेय, लेखा विवरण ३ गणित, अंकविद्या ४ अर्घ-मूल्य, मान प्रमाण ५ नियम, व्यवस्था ६ विचार, मत ७ रीति (स्त्री), विधि।

—करना या लगाना, क्रि स, गण् (चु), संख्या (अ प अ)।

—किताब, स पु (अ) दे 'हिसाब'(२)।

—चलना, मु, व्यवहार -दानादान वृत् (भ्वा आ से)।

—चुकाना या चुकता करना, मु, ऋण निस्तृ शुध् (प्रे)।

—बंद करना, मु, व्यवहार त्यज (भ्वा प अ)।

हिस्टीरिया, स पु (अ) योषापस्मार, वात गर्भाशय उन्माद, हृत्मोह।

हिस्सा, स पु (अ) वि, भाग, अंश २ वट, उद्धार ३ खण्ड, एकदेश ४ अंग, अवयव।

—करना, क्रि स, अंश् (चु), विभज् (भ्वा उ अ)।

—दार, स पु (अ + फा) अंशिन्, अंश ग्राहिन्, सह, भागिन्।

—दारी, स स्त्री, सहभागिता, अंशिता।

हींग, स स्त्री [सं हिंगु (पु न)] र(रा) मठ, वाल्हीक, जतु, -दर्न-नाशनं, सूपधूपन, उग्रगंध रक्षोघ्न, जरण, अगूढगंधम्।

हींसना, क्रि अ (स हेषण) दे 'हिनहिनाना' २ दे रेंकना'।

ही, अव्य (स हि) एव, अवश्य, केवल (सब अव्य)।

हीक, स स्त्री (स हिक्का) दे हिचकी' दुर्गंध।

हीजड़ा, स पु (देश) षण्ढ, तृतीया प्रकृति, क्लीब, नपुंसक।

हीन, वि (स) वि, रहित, शून्य, वर्जित, वंचित, वियुक्त, अ, निर्, नि, (उ धनहीन= अधन इ) २ परि त्यक्त उत्सृष्ट ३ अपकृष्ट, निकृष्ट नीच, अधम ४ क्षुद्र, तुच्छ ५ कुत्सित, निंद्य, अभद्र, दुष्ट कु ६ दीन दरिद्र, अकिंचन ७ अल्प, ऊन, न्यून।

—जाति, वि (स) नीच, वर्ण जाति २ अ पात्रेय, पतित।

—यान, स पु (स न) बौद्धसंप्रदायभेद।

हीनता, स स्त्री (स) अभाव, राहित्य, त्रुटि (स्त्री), न्यूनता २ क्षुद्रता, तुच्छता ३ निअप, दुष्टता।

हीमोग्लोबिन, स पु (अ) रक्तकण, रक्तरंजकम्।

हीर[1], स पु (स) शिव २ इन्द्रवज्र ३ सर्प ४ हार ५ सिंह ६ हीरक।

हीर[2], स पु (हिं हीरा) सार, साराश, अन्तर्भाग, तत्त्व २ वीर्य, शुक्र ३ बल शक्ति (स्त्री)।

हीरक, स पु (स) दे 'हीरा'।

हीरा, स पु (स हीर) हीरक, वज्र, रत्नमुख्य, सूचीमुख, दधीच्यस्थि (न), वराटकम्।

—मन, स पु (हिं+स मणि) हेमवर्ण कल्पित शुकभेद, *हीरमणि।

हीला, स पु (अ हील) व्याज, छद्मन्(न) व्यपदेश, मिष, २ साधन, उपाय।

—करना, क्रि अ, वि, अपदिश् (तु प, अ) कपट छद्मन् कृ।

—बाज़, वि, कापटिक-छाद्मिक (–की स्त्री)।

—हवाला, स पु, दे 'हीला'।

—निकलना, मु, उपाय ज्ञा (कर्म), साधन प्राप (कर्म)।

हीही, अव्य (स) हर्षादचर्यसूचकमव्यय, (हर्ष) हन्त २ (आश्चर्य) अहह।

हु, अव्य (स) ओं, आ, २ साधु, वाढ, अस्तु।

हुंकार, स पु (स) हुकृति (स्त्री), हुङ्कार भर्त्सनाशब्द २ गर्जना, निनाद, हुङ्कत ३ चीत्कार, उत्क्रोश।

हुंकारना, क्रि अ (स हुकार>) निभर्त्स (चु आ अ), तर्ज (चु), अधिक्षिप (तु प अ) २ गर्ज्-नर्द्-निनद् (भ्वा प मे) ३ चीत्कृ, उत्क्रुश (भ्वा प अ)।

हुंडारन, स पु (हिं हुंडा) *विनिमयशुल्कम्।

हुंडी, स स्त्री (देश) *विनिमयपत्र, धनर्पणादेशपत्रम्।

हुकूमत, स स्त्री (अ) शासन, राज्य २ अधिकार, प्रभुत्वम्।

हुक्का, स पु (अ) *धूमपानयन्त्रम्।

—पानी, स पु (अ+हिं) सामाजिक व्यवहार।

—गुडगुडाना, मु, धूमपान कृ।

—पानी बद करना, मु, समाजात् बहिष्-अपाकृ कृ जाते निष्कस् (प्रे)।

हुक्काम, स पु (अ हाकिम का बहु) शासक अधिकारि-वर्ग वृन्दम्।

हुक्म, स पु (अ) आदेश, आज्ञा दे २ अनुमति (स्त्री) ३ प्रभुत्व, अधिकार ४ नियम, विधि, उपदेश (धर्मशास्त्रादि का) ५ क्रीडापत्ररंगभेद।

—नामा, स पु (अ+फ़ा) आज्ञापत्रम्।

—बरदार, स पु (अ+फ़ा) आज्ञा, पालक-अनुसारिन् अनुवर्तिन्-अधीन।

हुक्मी, वि (अ हुक्म) आज्ञा, पालक-अनुवर्तिन् २ अमोघ, सफल, सिद्धिकर ३ लक्ष्य, भेदिन्-वेधिन् ४ विकल्परहित, अवश्य कर्तव्य, अनिवार्य।

हुजूम, स पु (अ) जन, समूह समुदाय-समर्द ओघ।

हुजूर, स पु (स) सामीप्य, सनिधि २ न्याय आलय सभा ३ (संबोधनशब्द) भगवन् 'श्रीमन्' (संबोधन एक), भग वन्त 'श्रीमन्त' (संबोधन बहु)।

हुजूरी, स स्त्री (अ हुजूर>) निकटता, समीपता २ उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता ३ राज-राजकीय-सभा। स पु विशिष्ट, सेवक भृत्य २ राजसभासद्, सभ्य, सचिव।

हुज्जत, स स्त्री (अ) कुतर्क, व्यर्थयुक्ति (स्त्री) २ विवाद, वाग्युद्धम्।

—करना, क्रि अ, व्यर्थ तर्क (चु) २ विवद् (भ्वा आ से), वाग्युद्ध कृ।

हुज्जती, वि (अ हुज्जत) कुतार्किक २ कलह विवाद, प्रिय।

हुडदगगा, स पु (अनु हुड+हिं दगा) उपद्रव, टन्टुल, सक्षोभ।

—ग्राही, वि (स हिन्) हृदयहारिन्, मनो मोहक २ रुचिकर, प्रिय।

—वान्, वि (स-वत्) सहृदय, हृदयालु २ भावुक, रसिक।

—विदारक, वि (सं) हृदयवेधिन्, शोक जनक, करुणोत्पादक।

—स्पर्शी, वि (स र्शिन्) हृदिस्पृश, प्रभावो त्पादक २ दयोत्पादक, करुणाजनक।

—हारी, वि (स-रिन्) चेतोहर, मनो हारिन्।

हृदयेश्वर, स पु (स) वल्लभ, प्रियतम, प्रेमपात्र २ पति, भर्तृ।

हृदयेश्वरी, स स्त्री (स) हृदयेशा प्राणेशा, कान्ता २ पत्नी, भार्या।

हृद्गत, वि (स) आन्तर, आभ्यन्तर, अभि, अन्तर, हृद्य, अन्तर, -वर्तिन्-गत मानस, चैत्त २ अवगत, ज्ञात, बुद्ध ३ प्रिय, रुचिकर।

हृद्य, वि (स) (१ २) दे हृद्गत' (१ ३) २ सुन्दर ३ शान्तिप्रद ४ स्वादु, सुरस।

हृषीक, स पु (स न) इन्द्रिय, दे।

हृषीकेश, स पु (स) विष्णु २ श्रीकृष्ण ३ तीर्थविशेष।

हृष्ट, वि (स) हर्षित, सुप्रसन्न, प्रमुदित, आनंदित, प्रीत, पुष्ट, प्रमनस।

—पुष्ट, वि (स) दृढ़, -अंग-देह तन, पीन, मांसल, बलवत्।

हॅगा, स पु (स अभ्यग >) मत्य कोटि (टी)दा।

हेंहें, स स्त्री (अनु) मन्दहासध्वनि २ दैन्य सूचकशब्द।

हे, अव्य (स) अग, भो, हहो हहो, अरे, अये, अयि, पाट्, प्याट (सब अव्य)।

हेकड़, वि (हिं हिया+कड़ा) दे हृष्टपुष्ट' २ प्रबल, उग्र ३ उद्दंड, वियात, धृष्ट।

हेकड़ी, स स्त्री (हिं हेकड़) उग्रता चण्डता, उद्दंडता २ बल, बलात्कार, रभस् (न), रभस।

हेच, वि (फा) तुच्छ, क्षुद्र २ निस्सार, तत्त्वहीन।

हेठ, क्रि वि (स अध स्थ>) नीचैः, अध (दोनों अव्य)।

हेठा, वि (हिं. हेठ) अवर, अधर २ ऊन, हीन ३ तुच्छ, क्षुद्र।

—पन, सं पु, तुच्छता, क्षुद्रता, ऊनता।

हेटी, स स्त्री (हिं हेठा) मानहानि (स्त्री), अवधीरणा, अपमान।

हेठी, स पु (स) निरस्कार, अवज्ञा, अपमान।

—ज, सं पु (स) क्रोध, कोप, रोष।

हेड², स पु (अ) शिरस् (न), शीर्ष, मुण्ड, मस्तकम् २ मुख्य, प्रधान, अध्यक्ष।

—क्वार्टर, स पु (अ) मुख्यालय, मुख्य कार्यालय।

हेडिंग, स स्त्री (अ) शीर्षक, शिरःपंक्ति (स्त्री) नामन् (न), सज्ञा।

हेत, स पु, दे हेतु'(१, २)।

हेतु, स पुं (स) प्रयोजन, अभिप्राय, निमित्त, उद्देश २ कारण, बीज, मूल ३ युक्ति-उप पत्ति (स्त्री), प्रमाण ४ अर्थालंकारभेद (सा)।

—वाद, स पु (स) ऊहापोह, तर्क २ कुतर्क, नास्तिकता, नास्तिक्यम्।

—वादी, वि (स दिन्) तार्किक २ नास्तिक।

—विद्या, स स्त्री (स) तर्क-हेतु, शास्त्रम्।

—हेतुमद्भाव, स पु (स) कार्यकारण, भाव सबंध।

हेत्वाभास, स पु (स) असद्-दुष्ट, हेतु।

हेमंत, स पु (स) हैमन, उष्मागम, शरदन्त, हिमागम, अग्रहायणपौषमासात्मक ऋतु।

हेम, स पु [सं-मन् (न)] सुवर्ण, दे 'सोना'।

—गिरि, स पुं (स) सुमेरु, हेम,-अचल अद्रि।

—चंद्र, सं पु (सं) जैनाचार्यविशेष।

हेय, वि (स) त्याज्य, त्यक्तव्य, उत्सर्जनीय, हातव्य २ निकृष्ट, अपकृष्ट, गर्ह्य, निन्द्य।

हेरना, क्रि स (स अपेक्ष >) अन्विष् (दि प से) गवेष् (भ्वा आ से चु प से) २ दृश् (भ्वा प अ) ३ विचर् (प्रे)।
—फेरना क्रि स (अनु + हिं) परिवृत विपयस (प्रे), अन्यथा वि, कृ, विनिमि (भ्वा आ अ)।
हेर फेर, स पु (हिं हेरना + फेरना) परिवर्त वर्तन, परिवृत्ति (स्त्री), विनिमय २ विकार, विक्रिया, विकृति (स्त्री) ३ विपर्यास, क्रमाभाव, अव्यवस्था ४ वक्रोक्ति (स्त्री), वागाडंबर ५ कपट, छल ६ अन्तर, भेद।
हेरा-फेरी, स स्त्री, दे 'हेर फेर'।
हेलमेल, स पु (हिं हिलना + मिलना) दृढ-गाढ सौहृद सौहार्द सख्य मैत्री २ सगति (स्त्री), सपर्क ३ परिचय।
हेला[1], स स्त्री (स) अव-अप, मान, अवज्ञा, तिरस्कार २ प्रमाद, उपेक्षा ३ क्रीडा, खेला ४ सुकर-सुसाध्य-कार्य ५ शृंगारचेष्टा, केलि (स्त्री)-ली ६ नारीणा सुरतलालसा।
हेला[2], स पु दे 'हल्ला'।
हैं[1], अव्य (अनु) (निषेध) मा, मास्म, अल २ (आश्चर्य) अहो, ही।
—हैं, अव्य (अनु) मा मा, अलं अल २ ही ही।
हैं[2], क्रि अ (हिं होना) सन्ति विद्यन्ते वर्तन्ते (लट्, बहु)।
हैंडबेग, स पु (अ) (चममयी) करपेटिका २ कर,प्रसेव सपुट।
हैंडल, स पु (अ) मुष्टि (स्त्री), वारग।
है, क्रि अ, (हिं होना) अस्ति विद्यते-वर्तते (लट्)।
हैकल, स स्त्री (सं ह + गल >) अश्व ग्रैवेयक २ 'हमेल'।
हैज़ा, स पुं (अ-जह्) विषूचिका, दे।
हैट, स पु (अ) गुरुंड-आंग्ल, शिरस्त्राण शीर्षरम्।
हैफ़, अव्य (अ) हा, हन्त, खेद, शोक।
हैबत, स स्त्री (अ) त्रास, भयम्।
—नाक, वि (अ) भीम, भयकर।
हैरत, सं स्त्री (अ) आश्चर्य, विस्मय।
हैरान, वि (अ) चकित, विस्मित २ वि, आकुल, उद्विग्न।
हैवान, स पु (अ) पशु, चरि, मृग २ जड, मूर्ख, असभ्य।
हैवानियत, स स्त्री (अ) पशुता-त्व २ अशिष्टता, असभ्यता ३ क्रूरता।
हैवानी, वि (अ हैवान) पाशव, पशु-तुल्य सम २ क्रूर, निष्ठुर।
हैसियत, स स्त्री (अ) सामर्थ्य, योग्यता २ आर्थिकावस्था, धनबल ३ धन, वित्त ४ सम्मान । प्रतिष्ठा ४ मूल्य, अर्घ।
है है, अव्य (स हा हा) हत, हा हन्त, कष्ट, दुःखम्।
होंठ, स पु (स ओष्ठ) दन्तरद-दशन, च्छद दे 'ओठ'।
—फटना, सं पु, ओष्ठभेद।
—काटना या चबाना, मु, क्रुध (दि प अ), आन्तरक्षोभ प्रकटयति (ना धा)।
—हिलाना, मु, वक्तु उपक्रम् (भ्वा आ अ)।
हो, अव्य (स) 'हे'।
होटल, सं पु (अ) भोजनशाला २ पांथ शाला।
होड, स स्त्री (स हार = युद्ध) पण, ग्लह २ प्रति, स्पर्द्धा, विजिगीषा ३ आग्रह।
—बदना, बाँधना या लगाना, क्रि स., ग्लह् (भ्वा प से, चु), दिव् (दि प से), पण् (भ्वा आ से) २ विजिगीषते (सन्नन्त), स्पर्ध् (भ्वा आ से)।
होडाबादी, स स्त्री (हिं होड + बदना)
होडाहोडी, स स्त्री (हिं होड) दे 'होड' (१ २)।
होता, सं पुं (स होतृ) ऋत्विग्भेद, होत्रिन्, होमकर्तृ, यष्टृ।
होम, स पु (स न) यज्ञ, याग, मख हवनम् २ यज्ञ हवन सामग्री, हविस् (न), हव्यम्।
होमी, सं पुं (स मिन्), होतृ, याजक, यष्टृ, ऋत्विग्भेद होमकर्तृ।
होनहार, वि (हिं होना) महत्प्रगति, उन्नति शील, आशाजनक, सिद्धिसूचक २ भाविन्,

भविष्यत्, भवितव्य। म स्त्री, भवितव्यता, नियति (स्त्री), भाग्य, दैव, विधि।

होना, क्रि अ (स भवन) भू, अस (अ प), वृत् (भ्वा आ अ), विद् (दि अ अ), अवस्था (भ्वा आ अ) २ भू, वृत् (दि आ से), सम्पद् (दि आ अ), परिणम् (भ्वा प अ) ३ कृ अनुष्ठा विधा (कम) ४ रच् निर्मा (कम) ५ घट सवृत् (भ्वा आ से), समापद् (दि आ अ) अपवृत् (भ्वा प से) ६ (रोगादिभि) पीड् (कम) ७ अति गम्, इ (अ प अ), व्यतिक्रम् (भ्वा प से) ८ उत्पद् (दि आ अ), जन् (दि आ से) ९ जीव् (भ्वा प से)। म पु तथा भाव सत्ता, अस्तित्व, अव स्थिति (स्त्री), सद्भाव, वर्तन, विद्यमानता ९।

होने योग्य, भवितव्य, शक्य, सभाव्य, सभवनीय, सपादनीय, साध्य।

होनेवाला, भविता, भविष्यत्, भवितव्य, दे 'होने योग्य'।

हुआ हुआ, वि, भूत, वृत्त, जात, सपन्न, निष्पन्न, अनुष्ठित, विहित, रचित, निर्मित, उत्पन्न इ।

(जो) हुआ सो हुआ, मु, अतीत विस्मर २ यद्भूत न तद्भावि।

हो आना, मु, दृष्ट्वा मिलित्वा आगम् (भ्वा प अ)।

होकर या होते हुए, मु, मध्येन, मार्गेण।

हो चुकना या-जाना, मु, स निष्, पद् (दि आ अ), समाप् (स्वा प अ)।

हो न हो, मु, नि सदेह, नि सशयम्।

होनी, स स्त्री (हि होना) उत्पत्ति (स्त्री), जन्मन् (न) २ वृत्त, वृत्तात ३ दे 'होनहार' म स्त्री ४ सभाव्य शक्य वार्ता।

होम, स पु (स) देवयज्ञ, दे 'हवन'।

होमना, क्रि स, दे 'हवन करना'।

होमियोपैथी, सं स्त्री (अ) समचिकित्सा, चिकित्सापद्धतिविशेष।

होरा, स स्त्री (स, यूनानी से लिया गया) लग्न २ राश्यर्द्ध ३ जन्मपत्रिका ४ जातक, जातकशास्त्र ५ दे 'घटा' (= ६० मिनट)।

होला[1], स पु (स होलक) तृणाग्निभृष्टा र्द्धपक्वशमीधान्यम्।

होला[2], स पु (स होली) सिक्खानां होलि कोत्सव।

होली, स स्त्री (स) होलिका, होलाका, २ होलिकादहनार्थस्तृणकाष्ठराशि ३ होलि कागीतम्।

—खेलना, मु, होलिकोत्सवे रम् (भ्वा आ अ), खेल-क्रीड (भ्वा प से), अन्योन्यं रज (प्रे)।

होल्डर, स पु (अ) लेखनीदड २ लेखनी।

होश, स पु (फ़ा) सज्ञा, चैतन्य २ स्मरण, स्मृति (स्त्री) ३ बुद्धि-मति (स्त्री)।

—मद, वि (फ़ा) धीबुद्धिमति-मत्।

—हवास, स पु (फ़ा+अ) सज्ञाबुद्धी २ चैतन्यम्।

—उड़ना या जाता रहना, मु, (मायादिभि) निस्तब्धी-जडी अत्याकुली, भू।

—करना, मु, सावधान-अवहित (वि) भू।

—ठिकाने होना, मु, मोह भ्रान्ति (स्त्री) नश् (दि प वे) २ चेत स्वास्थ्य आपद् (दि आ अ) ३ गर्वनाश जन् (दि आ से) दड भुक्त्वा अनुतप् (दि आ अ)।

—दग होना, मु, आश्चर्यस्तब्ध (वि) जन् (दि आ से), चकितचकित (वि) भू।

—दिलाना, मु, स्मृ (प्रे)।

—में आना, मु, प्रकृति आपद् (दि आ अ), सज्ञा लभ् (भ्वा आ अ)।

—सँभालना, मु, प्रौढ प्राप्तवयस्क (वि.) जन् २ सावधानो भू।

होशियार, वि (फ़ा) बुद्धिमत्, चतुर, प्रज्ञ २ निपुण, कुशल ३ सावधान, अवहित ४ धूर्त, मायाविन् ५ पक्वबुद्धि।

होशियारी, स स्त्री (फ़ा) बुद्धि धी-मत्ता, २ दक्षता, नैपुण्य ३ सावधानता।

होस्टल, सं पु (अ होस्टेल) छात्रावास, छात्रालय।

हौंकना, क्रि अ (स हुकरण) हुकृ, गर्ज् (भ्वा प से) २ दे हाफ(प)ना'।

हौआ, स पु (अनु हौ) भूत, पिशाच, डाकिनी, शिशुत्रासार्थं काल्पनिक भयमूल्म्। स स्त्री, दे 'हौवा'।

हौका, स पु (अनु हाव) औदरिकता, घस्मरता २ लोभ-तृष्णा,-अतिशय ।

हौज़, स पु (अ) कुंड, जलाशय, क्षुद्र तडाग २ बृहन्मृद्भांड, दे 'नाद'।

हौदा, स पु (फ़ा हौदह्) परिस्तो(ष्टो)म, प्रवेणी, आस्तरण, कुथ-था-थम्।

हौल, स पु (अ) भयं, सन्त्रास ।

—नाक, वि (अ+फ़ा) भयकर, त्रासन।

हौले, क्रि वि (हि हरुआ) शनै, शनकै, मद २ मृदु, कोमलम् (सब अव्य)।

हौवा, स स्त्री (अ) आदमपत्नी, *हव्वा, पृथिव्यां प्रथमा नारी मानवजाते जननी च। स पु, दे 'हौआ'।

हौस, स स्त्री दे 'हवस'।

हौसला, स पु (अ) लालसा, उत्कंठा साहस, उत्साह ३ हर्ष, प्रफुल्लता।

—मद, वि (फ़ा) उत्कंठित, अत्यभिलाषिन् २ साहसिन्, उत्साहिन ३ हृष्ट, प्रफुल्ल।

—निकालना, मु, आकांक्षा-वाञ्छा स्पृहा सपद् (प्रे)-सम्पूर् (प्रे)।

—पस्त होना, मु, हतोत्साह भग्नहृदय (वि) भू।

ह्रद, सं पु (स) अगाधजलाशय, महा तडाग २ तडाक, कासार, सरसी ३ नाद'।

ह्रसित, वि (सं) अल्पी-न्यूनी,-कृत-भूत, सक्षिप्त, सकुचित।

ह्रसिमा, स स्त्री (स-मन् पु) ह्रस्वता, अल्पता, क्षुद्रता।

ह्रस्व, वि (स) लघु, क्षुद्र, दभ्र, अल्प, दैर्घ्य आयाम, शून्य २ कन, न्यून, हीन ३ खर्व, न्यच् ४ अवनत, नीच ५ क्षुद्र, तुच्छ। स पु (स) वामन २ लघुवर्ण (अ इ उ ऋ)।

ह्रास, स पु (स) अपकर्ष, अवनति (स्त्री), क्षय, अधोगति (स्त्री), अपचय, ध्वस, भ्रश ।

—होना, क्रि अ, क्षि (कर्म), ह्रस (भ्वा प मे), अपचि (कर्म)।

ह्री, स स्त्री (स) लज्जा, त्रपा, व्रीडा।

ह्राद, स पु (स) आनद, प्र-मोद, हर्ष ।

ह्रिस्की, स स्त्री (अ) आग्लमद्यभेद ।

ह्वेल, स पु (अ) तिमिंगल, तिमि, ह्वल-मत्स्य ।

प्रथम परिशिष्ट

संस्कृत-सूक्तियों का हिन्दी-अनुवाद

संस्कृत	हिन्दी
अकालमेघवद् वित्तमकस्मादेति याति च। (कथासरित्सागर)	धन अकालमेघ के समान अकस्मात् आता-जाता है।
अक्षोभ्यतैव महतां महत्त्वस्य हि लक्षणम्। (कथा०)	क्षुब्ध न होना ही बड़ों के बड़प्पन का चिह्न है।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति।	बिना चले तो गरुड़ भी पग-भर भी नहीं जा सकता।
अगुणस्य हतं रूपम्।	निर्गुण व्यक्ति का रूप किस काम का?
अङ्कमारूढ सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम्?	गोद में सोये हुए की हत्या में कहाँ की वीरता है।
अङ्गीकृतं सुकृतिन परिपालयन्ति।	श्रेष्ठ लोग कही हुई बात को पूरा करते हैं।
अचिन्त्यं हि फलं सूते सद्यः सुकृतपादपः। (कथा०)	पुण्यरूपी वृक्ष शीघ्र ही अचिन्त्य फल देता है।
अजीर्णे भोजनं विषम्।	अपच में भोजन विषतुल्य होता है।
अज्ञता कस्य नामेह नोपहासाय जायते?	अज्ञान के कारण किसका उपहास नहीं होता?
अतिदानाद् बलिर्बद्धः।	अत्यधिक दान से बलि को बँधना पड़ा।
अतिपरिचयादवज्ञा, संततगमनादनादरो भवति।	बहुत मेल-जोल से अवज्ञा होती है और किसी के यहाँ अधिक जाने से अनादर।
अतिभुक्तिरतीवोक्तिः सद्यः प्राणापहारिणी।	बहुत खाने और बहुत बोलने से तुरन्त मृत्यु हो जाती है।
अतिलोभो न कर्तव्यः।	अत्यधिक लोभ नहीं करना चाहिए।
अति सर्वत्र वर्जयेत्।	सब बातों में 'अति' त्याज्य है।
अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति।	जो आग तृणादि पर नहीं पड़ी, वह स्वयमेव बुझ जाती है।
अधरेऽमृतं हि योषितां हृदि हालाहलमेव केवलम्।	स्त्रियों के ओठों में तो अमृत रहता है किन्तु हृदय में भयंकर विष।
अधर्मविषवृक्षस्य पच्यते स्वादु किं फलम्? (कथा०)	क्या कभी अधर्मरूपी विषवृक्ष पर सरस फल लग सकते हैं?
अधिकस्याधिकं फलम्।	जितना गुड़ उतना मीठा।
अनध्वा वाजिनां जरा।	सदा बँधे रहनेवाले घोड़े बूढ़े हो जाते हैं।
अनन्यगामिनी पुंसां कीर्तिरेका पतिव्रता।	पुरुषों की स्थायी कीर्ति पतिव्रता नारी के समान होती है।
अनपेक्ष्य गुणागुणौ जनः स्वरुचिं निश्चयतोऽनुधावति। (शिशुपालवधे)	वस्तुतः मनुष्य गुण-दोष की उपेक्षा करके रुचि के अनुसार ही कार्य करता है।
अनवसरे याचितमिति सत्पात्रमपि कुप्यते दाता।	यदि कुअवसर पर माँगा जाए तो दानी मनुष्य सत्पात्र पर भी क्रोध करता है।

अनार्य परदारव्यवहार । (अभिज्ञानशाकुन्तले)	पराई स्त्रियों से सम्बन्ध रखना आर्योचित नहीं।
अनार्यसंगमाद्वर विरोधोऽपि समं महात्मभि । (किरातार्जुनीये)	अनार्यों (दुष्टों) के साथ मेल जोल की अपेक्षा महात्माओं से वैर अच्छा ।
अनाश्रया न शोभन्ते पण्डिता वनिता लता ।	विद्वान्, स्त्रियाँ और लताएँ आश्रय के बिना शोभा नहीं देतीं ।
अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् । (अभिज्ञान०)	पराई स्त्रियों की ओर ताकना न चाहिए ।
अनुकूलेऽपि कलत्रे नीच परदारलम्पटो भवति ।	पत्नी के अनुकूल होने पर भी नीच मनुष्य परदाराभिगमन करता है ।
अनुत्सेक खलु विक्रमालङ्कार ।	नम्रता वीरता का भूषण है ।
अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णं शमयति परितापं छायया संश्रितानाम् । (अभिज्ञान०)	वृक्ष स्वयं तो कडी धूप सहता है, परन्तु शरणागतों के ताप को छाया से शान्त कर देता है ।
अनुसृत्य सतां वर्त्म यत्स्वल्पमपि तद् बहु ।	सज्जनों के मार्ग पर चलते हुए थोडा भी मिले तो बहुत समझिए ।
अनुहुङ्कुरुते घनध्वनिं नहि गोमायुरुतानि केसरी । (शिशु०)	सिंह मेघगर्जन सुनकर तो दहाडता है, गीदडों की ध्वनि सुनकर नहीं ।
अन्त सारविहीनानामुपदेशो न विद्यते ।	जडबुद्धि मनुष्य को शिक्षा देना व्यर्थ है ।
अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपति कस्त निरोद्धु क्षम ?	जब राजा ही अन्याय करने लग पडे तब उसे कौन रोक सकता है ?
अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिताः । (रघुवंश)	रजोगुण से अभिभूत विद्वान् भी कुमार्गगामी बन जाते हैं ।
अपन्थानं तु गच्छन्त सोदरोऽपि विमुञ्चति ।	कुपथगामी का साथ सगा भाई भी नहीं देता ।
अपायो मस्तकस्थो हि विषयग्रस्तचेतसाम् । (कथा०)	विपत्तियाँ विषयी लोगों के सिर पर मँडराती रहती हैं ।
अपि धन्वन्तरिर्वैद्य किं करोति गतायुषि ।	जब आयु समाप्त हो जाती है तब वैद्य धन्वन्तरि भी कुछ नहीं कर सकता ।
अपि स्वदेहात् किमुतेन्द्रियार्थाद्यशोधनानां हि यशो गरीय । (रघु०)	यशस्वी लोग, भोगों की तो बात ही क्या, स्वशरीर से भी यश को श्रेष्ठ समझते हैं ।
अपुत्रस्य गृहं शून्यम् ।	पुत्रहीन व्यक्ति के लिए घर सूना होता है ।
अपेक्षन्ते हि विपद किं पेलवमपेलवम् ! (कथा०)	विपत्तियाँ हृदय की कोमलता या कठोरता नहीं देखा करतीं ।
अप्रकटीकृतशक्ति शक्तोऽपि जनस्तिरस्क्रिया लभते ।	जो बलवान् निज बल को कभी प्रकट नहीं करता वह तिरस्कार का भाजन बनता है ।
अप्राप्य नाम नेहास्ति धीरस्य व्यवसायिन । (कथा०)	धीर और व्यवसायी व्यक्ति के लिए संसार में कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं ।
अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ ।	कडवी परन्तु हितकर बात कहने और सुनने वाले व्यक्ति दुर्लभ हैं ।
अबला यत्र प्रबला ।	जहाँ स्त्री सबल हो ।
अभद्रं भद्रं वा विधिलिखितमुन्मूलयति क ?	बुरा हो या भला, विधाता के लेख को कौन मिटा सकता है ?
अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ! (रघु०)	तपाने पर लोहा भी पिघल जाता है, प्राणियों की तो बात ही क्या !
अभोगस्य हत धनम् ।	जो भोगता नहीं, उसका धन व्यर्थ है ।

अमर्षण: शोणितकाङ्क्षया किं पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्व: ? (रघु०)	क्या उग्र सर्प पाँव से छूनेवाले व्यक्ति को लहू पीने की इच्छा से काटता है ?
अमृतं क्षीरभोजनम् ।	क्षीर रूपी भोजन अमृत है ।
अमृतं प्रियदर्शनम् ।	प्रिय पदार्थ का दर्शन अमृत है ।
अमृतं राजसंमानम् ।	राजा से प्राप्त सम्मान अमृत है ।
अमृतं शिशिरे वह्नि: ।	जाड़ों में अग्नि अमृत है ।
अम्बुगर्भो हि जीमूतश्चातकैरभिनन्द्यते ।(रघु०)	पपीहे जलपूर्ण बादल की ही प्रशंसा करते हैं ।
अयशोभीरव: किं न कुर्वते बत माधवः ! (कथा०)	अपयश से डरने वाले सज्जन क्या नहीं करते !
अयातपूर्वा परिवादगोचरं सतां हि वाणी गुणमेव भाषते । (किरातार्जुनीय)	सज्जनों की वाणी, निन्दा के मार्ग से अपरिचित होने के कारण, गुणों का ही वर्णन करती है ।
अरुंतुदत्वं महतां ह्यगोचर: । (किरात०)	बड़े लोग किसी का जी नहीं दुखाते ।
अर्थमनर्थं भावय नित्यं, नास्ति ततः सुखलेश सत्यम् ।	सदा ही धन को दु:खरूप समझो, वस्तुत उसमें तनिक भी सुख नहीं ।
अर्थातुराणां न गुरुर्न बंधुः ।	धन के लोभी गुरु और बन्धु तक का ध्यान नहीं करते ।
अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)	कन्या पराया ही धन है ।
अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।	अधजल गगरी छलकत जाए ।
अल्पविद्यो महागर्वी ।	थोड़ी विद्या वाला व्यक्ति बहुत ही गर्वीला होता है ।
अल्पश्च कालो बहवश्च विघ्नाः ।	समय थोड़ा है और विघ्न बहुत ।
अल्पीयसोऽप्यामयतुल्यवृत्तेर्महापकाराय रिपोर्विवृद्धिः । (किरात०)	रोग की तरह स्वभाव वाले छोटे से शत्रु की उन्नति से भी भारी अनिष्ट होता है ।
अवस्तुनि कृतक्लेशो मूर्खो यात्युपहास्यताम् । (कथा०)	तुच्छ वस्तु के लिए कष्ट उठाने वाला मूर्ख उपहासास्पद बनता है ।
अविद्याजीवनं शून्यम् ।	अविद्यापूर्ण जीवन सूना है ।
अविनीता रिपुर्भार्या ।	नम्रता-रहित पत्नी शत्रु है ।
अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः ।	जिसका मन ठिकाने न हो, उसकी कृपा भी भयावनी होती है ।
अशीलस्य हतं कुलम् ।	शीलरहित व्यक्ति की कुलीनता व्यर्थ है ।
अश्नुते स हि कल्याणं, व्यसने यो न मुह्यति ।	जो विपत्ति में विमूढ नहीं होता वह अवश्य ही कल्याणभागी बनता है ।
अश्रेयसे न वा कस्य विश्वासो दुर्जने जने ?	दुष्ट जन पर विश्वास करने से किसका अनिष्ट नहीं होता ?
असन्तुष्टा द्विजा नष्टा: ।	सन्तोष हीन ब्राह्मण नष्ट हो जाते हैं ।
असन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता । (किरात०)	दुर्जनों की मित्रता कगार की छाया के समान अनर्थकारिणी होती है ।
असारे दग्धसंसारे सारं सारङ्गलोचनाः ।	इस दु:खपूर्ण निस्सार संसार में साररूप तो केवल मृगनयनियाँ ही हैं ।
असिद्धार्था निवर्तन्ते न हि धीराः कृतोद्यमा: । (कथा०)	उद्यमी धीर कार्यसिद्धि से पूर्व नहीं रुकते ।
असिद्धेस्तु हता विद्या ।	सिद्धि के बिना विद्या व्यर्थ है ।

अस्थिरं जीवितं लोके ।	जगत् में जीवन अस्थिर है ।
अस्थिराः पुत्रदाराश्च ।	पुत्र और कलत्र अस्थिर हैं ।
अस्थिरे धनयौवने ।	धन और यौवन अस्थिर हैं ।
अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टम् ।	लोकविरुद्ध आचरण सुखदायक नहीं होता ।
अहितो देहजो व्याधिः ।	शरीर में उत्पन्न रोग शत्रु है ।
अहो चित्राकारा नियतिरिव नीतिर्नयविदः ।	नीतिज्ञ की नीति नियति के समान विचित्र रूपों वाली होती है ।
अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता । (किरात०)	बलवान् से विरोध करने का परिणाम बुरा ही होता है ।
अहो दैवाभिशप्तानां प्राप्तोऽप्यर्थः पलायते । (कथा०)	हा! दैव से शापित लोगों के बने हुए काम भी बिगड़ जाते हैं ।
अहो रूपम्, अहो ध्वनिः ।	वाह! क्या रूप है और क्या स्वर!
आकण्ठजलमग्नोऽपि श्वा लिहत्येव जिह्वया ।	गले तक पानी में डूबा हुआ भी कुत्ता जल को जीभ से ही चाटता है ।
आचारः प्रथमो धर्मः ।	आचार सर्वोत्तम धर्म है ।
आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया । (रघु०)	गुरुजनों की आज्ञा का बिना विचारे ही पालन करना चाहिए ।
आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।	अपने रक्षार्थ पृथ्वी को भी त्याग दे ।
आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव । (रघु०)	मेघों के समान सत्पुरुषों का आदान भी प्रदान के लिए ही होता है ।
आपत्काले च कष्टेऽपि नोत्साहस्त्यज्यते बुधैः । (कथा०)	विपत्ति और कष्ट के समय में भी बुद्धिमान् उत्साह नहीं छोड़ते ।
आपत्सु धीरान् पुरुषान् स्वयमायान्ति संपदः । (कथा०)	आपत्तियों में धैर्य रखने वालों के पास सम्पत्तियाँ स्वयमेव आती हैं ।
आपदि स्फुरति प्रज्ञा यस्य धीरः स एव हि । (कथा०)	जिसकी बुद्धि आपत्ति में चमकती है, वह धीर है ।
आपद्यपि सतीवृत्तं किं मुञ्चन्ति कुलस्त्रियः ? (कथा०)	क्या कुलीन ललनाएँ आपत्ति में भी सतीत्व का त्याग करती हैं ?
आपन्नार्तिप्रशमनफलाः संपदो ह्युत्तमानाम् । (मेघदूते)	उत्तम जनों का धन दुखियों के दुःख दूर करने पर ही सफल होता है ।
आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति । (कथा०)	कार्यारम्भ में होने वाला मंगल, कार्यसिद्धि का सूचक होता है ।
आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः ।	धन का आगम और व्यय दोनों ही दुःखपूर्ण होते हैं, इस दुःखदायक धन को धिक्कार है ।
आरब्धे हि सुदुष्करेऽपि महतां मध्ये विरामः कुतः । (कथा०)	आरम्भ किये हुए अत्यन्त कठिन काम में भी बड़े लोग बीच में नहीं रुकते ।
आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः । (नैषधीयचरिते)	कुटिलों के साथ सरलता का व्यवहार नीति नहीं है ।
आलस्योपहता विद्या ।	आलस्य विद्या का विनाशक है ।
आवेष्टितो महासर्पैश्चन्दनः किं विषायते ?	सर्पों से परिवेष्टित चन्दन क्या विषैला हो जाता है ?
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।	आहार और व्यवहार में संकोच छोड़कर सुखी रहे ।

आहुः सप्तपदी मैत्री।	सात पग साथ साथ चलने को मैत्री कहते हैं।
इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः।	न इधर के रहे न उधर के रहे।
इदं च नास्ति न परं च लभ्यते।	न यह रहा, न वह मिला।
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः।	अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनकर इन्द्र भी गौरवहीन हो जाता है।
इन्धनौघधगप्यग्निस्त्विषा नात्येति पूषणम्। (शिशु०)	ईंधन के बहुत बड़े ढेर को जलानेवाली आग भी अपनी ज्योति से सूर्य को मात नहीं कर सकती।
इष्टं धर्मेण योजयेत्।	अभिलाषा धर्मानुसारिणी चाहिए।
इहामुत्र च नारीणां परमा हि गतिः पतिः। (कथा०)	लोक और परलोक में स्त्रियों का परम आश्रय पति ही है।
ईर्ष्या हि विवेकपरिपन्थिनी। (कथा०)	ईर्ष्या विवेक की शत्रु है।
ईश्वराणां हि विनोदरसिकं मनः। (किरात०)	धनाढ्य लोग विनोदी होते हैं।
उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः। (अभिज्ञान०)	मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं।
उत्साहैकधने हि वीरहृदये नाप्नोति खेदोऽन्तरम्। (कथा०)	वीरों के उत्साहपूर्ण हृदय मे खेद के लिये अवकाश कहाँ !
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।	उदारचरित लोगों के लिये तो सारी भूमि ही कुटुम्ब है।
उदारस्य तृणं वित्तम्।	उदार व्यक्ति के लिये धन तृणतुल्य है।
उदिते तु सहस्रांशौ न खद्योतो न चन्द्रमाः।	सूर्य के उदय पर न जुगनू की चमक रहती है, न चाँद की।
उदिते परमानन्दे नाहं न त्वं न वै जगत्।	महानन्द की प्राप्ति होने पर मैं, तू और जगत् का ज्ञान नहीं रहता।
उद्योगः पुरुषलक्षणम्।	उद्योग ही पुरुष का लक्षण है।
उन्नतो न सहते तिरस्क्रियाम्।	उच्च व्यक्ति तिरस्कार नहीं सहता।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।	मूर्ख लोग उपदेश से प्रकुपित होते हैं, शान्त नहीं।
उप्तं सुकृतबीजं हि सुक्षेत्रेषु महत्फलम्। (कथा०)	उत्तम पात्रों मे बोया हुआ पुण्यरूपी बीज महान् फल देता है।
उष्णत्वमग्न्यातपसंप्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य (रघु०)	जल का स्वाभाविक गुण तो शीतलता है, उसमे गर्मी तो अग्नि या धूप के संसर्ग से आती है।
उष्णो दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्।	गर्म अङ्गार हाथ को जलाता है, ठण्डा कलुषित करता है।
ऋणकर्ता पिता शत्रुः।	ऋण लेनेवाला पिता शत्रु है।
ऋद्धिश्चित्तविकारिणी।	ऐश्वर्य चित्त को विकृत कर देता है।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः। (कुमार०)	गुण समुदाय में अकेला दोष ऐसे छिप जाता है जैसे किरणों मे चाँद का कलङ्क।
क उष्णोदकेन नवमल्लिकां सिञ्चति ! (अभि०)	मोतिये के पौधे को गर्म जल से कौन सींचता है !
क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत्।	विद्या और धन का सग्रह क्षण-क्षण मे कण-कण करके करते रहना चाहिए।
कण्ठे सुधा वसति वै खलु सज्जनानाम्। (कथा०)	अमृत सज्जनों के कण्ठ में ही रहता है।
कमलवनभूषा मधुकरः।	भ्रमर कमल-समूह का अलङ्कार है।
कर्तव्यं हि सतां वचः। (कथा०)	सत्पुरुषों के वचनानुसार चलना चाहिए।
कर्तव्यो महदाश्रयः।	आश्रय बड़ों का ही लेना चाहिए।

कर्मणो गहना गतिः ।	कर्म की गति गहन है ।
कर्मणो ज्ञानमतिरिच्यते ।	कर्म से ज्ञान बढ़कर है ।
कर्मदोषाद् दरिद्रता ।	दरिद्रता कर्म-दोष का फल है ।
कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।	अकेला जीव कर्मानुसार गति पाता है ।
कर्मायत्तं फलं पुंसाम् ।	मनुष्य को फल की प्राप्ति कर्मानुसार होती है ।
कलासीमा काव्यम् ।	कला की सीमा काव्य है ।
कवयः किं न पश्यन्ति ?	कवि क्या नहीं देखते ?
कवले पतिता सद्यो वमयति ननु मक्षिकाऽन्नभोक्तारम् ।	ग्रास में गिरी हुई मक्खी भोजनकर्ता को तुरन्त वमन करा देती है ।
कष्टं निर्धनिकस्य जीवितमहो दारैरपि त्यज्यते ।	हा ! निर्धन का जीवन इतना दुःखपूर्ण होता है कि पत्नी भी उसका साथ छोड़ देती है ।
कष्टः खलु पराश्रयः ।	दूसरे का भरोसा दुःखदायक होता है ।
कष्टादपि कष्टतरं परगृहवासः परान्नं च ।	पराये घर में निवास और पराये अन्न से निर्वाह सबसे बड़े दुःख हैं ।
कस्त्यागः स्वकुटुम्बपोषणविधावर्थव्ययं कुर्वतः ?	अपने कुटुम्ब के पालन में ही धन व्यय करने-वाले व्यक्ति का त्याग भी कोई त्याग है ?
कस्य नेष्टं हि यौवनम् ? (कथा०)	यौवन किसे अच्छा नहीं लगता ?
कस्यचित् किमपि नो हरणीयम् ।	किसी का भी कुछ भी चुराना नहीं चाहिए ।
कस्य नोच्छृङ्खलं बाल्यं गुरुशासनवर्जितम् ? (कथा०)	गुरु का शासन न होने से किसका बचपन उच्छृङ्खल नहीं हो जाता ?
कस्य सत्सङ्गो न भवेच्छुभः ? (कथा०)	सत्सङ्ग किसका भला नहीं करता ?
कः कालस्य न गोचरान्तरगतः ।	काल के क्षेत्र से बाहर कौन है ?
कः परः प्रियवादिनाम् ।	मधुरभाषी का कोई शत्रु नहीं होता ।
कः पैतामहलोकेऽत्र निखिलैः सम्मानितो वर्तते ?	इस ब्राह्मण में सर्वसम्मानित कौन है ?
कः प्राज्ञो वाञ्छति स्नेहं वेश्यासु सिकतासु च ? (कथा०)	कौन-सा विद्वान् वेश्याओं और रेत में स्नेह (प्रेम, तेल) चाहता है ?
कः सूनुर्विनयं विना ?	विनय से रहित पुत्र क्या ?
काकाः किमपराध्यन्ति हंसैर्जग्धेषु शालिषु ? (कथा०)	जब धानों को हंस खा गये तब कौए क्या अपराध करेंगे ?
कान्ता रूपवती शत्रुः ।	सुरूपा पत्नी शत्रु है ।
कामं व्यसनवृक्षस्य मूलं दुर्जनसंगतिः । (कथा०)	बुरी संगत व्यसन रूपी वृक्ष की जड़ है ।
कामातुराणां न भयं न लज्जा ।	कामपीड़ित व्यक्ति भय और लज्जा से रहित होते हैं ।
कामिनश्च कुतो विद्या ?	कामी को विद्या कहाँ ?
कायः कस्य न वल्लभः ?	शरीर किसे प्यारा नहीं होता ?
कालस्य कुटिला गतिः ।	काल की चाल टेढ़ी होती है ।
काले खलु समारब्धाः फलं बध्नन्ति नीतयः । (रघु०)	समय पर प्रयुक्त नीतियाँ अवश्य फल लाती हैं ।
काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनापि किम् ! (कथा०)	समय पर दिया हुआ थोड़ा भी दान असमय पर दिये हुए बड़े दान से अच्छा होता है ।

कालेन फलते तीर्थं, सद्यः साधुसमागमः ।	तीर्थ का फल विलम्ब से परन्तु सत्संगति का फल शीघ्र प्राप्त होता है ।
का विद्या कविता विना ?	कविता के बिना विद्या कैसी ?
काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तरम्या ।	केसर की कड़वाहट भी अत्यन्त प्यारी होती है ।
का हंसिनी विना हंसं, कश्च हंसोऽब्जिनीं विना ? (कथा०)	हंस हीन सरसी कैसी और सरसी हीन हंस कैसा ?
किं हि न भवेदीश्वरेच्छया ? (कथा०)	ईश्वर की इच्छा से क्या नहीं हो सकता ?
कि किं करोति न निरर्गलता गता स्त्री ?	निरंकुश नारी क्या-क्या नहीं करती ?
किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च ।	यौवन तथा सम्पदा के सुख कुछ ही काल तक लूटे जा सकते हैं ।
कुराजान्तानि राष्ट्राणि ।	बुरे राजाओं से राष्ट्रों का नाश हो जाता है ।
कुरूपता शीलतया विराजते ।	सुन्दर शील से कुरूपता भी खिल उठती है ।
कुरूपी बहुचेष्टिकः ।	कुरूप मनुष्य बहुत चेष्टाएं करता है ।
कुलवधूः का स्वामिभक्तिं विना ?	पतिभक्ति विहीन कुलवधू कैसी ?
कुले कश्चिद्धन्यः प्रभवति नरः श्लाघ्यमहिमा ।	कुल में कोई ही धन्य व्यक्ति यशस्वी प्रभु होता है ।
कुवस्त्रता शुभ्रतया विराजते ।	फटे पुराने वस्त्र भी स्वच्छ रहनेसे खिल उठते हैं ।
कुवाक्यान्तं च सौहृदम् ।	कुवचनों से मित्रता नष्ट हो जाती है ।
कुशिष्यमध्यापयतः कुतो यशः ?	कुशिष्य के अध्यापक को यश कहाँ ?
कृतघ्नानां शिवं कुतः ?	कृतघ्नों का कल्याण कहाँ ?
कृतार्थः स्वामिनं द्वेष्टि ।	पूर्ण-मनोरथ व्यक्ति स्वामी से द्वेष करता है ।
कृपणानुसारि च धनम् ।	धन कृपण के पीछे चलता है ।
कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ?	निर्बल या निर्धन से कौन मित्रता करता है ?
केचिदज्ञानतो नष्टाः ।	कई लोग अज्ञान से नष्ट हो गये ।
केचिन्नष्टाः प्रमादतः ।	कई लोग प्रमाद से नष्ट हो गये ।
केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः किं पुनस्त्रिदशचापलाञ्छितः ? (रघु०)	नया मेघ वैसे भी सुन्दर होता है, परन्तु जब वह इन्द्रधनुष से युक्त हो तब तो बात ही क्या ?
केषां न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु ! (मेघ०)	उत्तम जनों के समक्ष की हुई किनकी प्रार्थना सफल नहीं होती !
केषां नैषा कथय कविताकामिनी कौतुकाय !	कहो तो, यह कविता-कामिनी किन के मन में कौतुक उत्पन्न नहीं करती !
को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिः कदा कीदृशी ?	कौन जानता है कि भगवान् के मन की वृत्ति कब कैसी होती है ?
कोऽतिभारः समर्थानाम् ।	बलवानों के लिए कोई भी भार अधिक नहीं है ।
को धर्मः कृपया विना ?	दया के बिना धर्म कैसा ?
को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ।	संसार में जिसके मुँह में ग्रास डाल दो, वही वश में हो जाता है ।
को नाम राज्ञां प्रियः !	राजाओं का प्यारा कौन होता है !
कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितः !	धन पाकर कौन गर्वित नहीं होता !
कोऽर्थी गतो गौरवम् ?	किस याचक को गौरव प्राप्त हुआ ?
को विदेशः समर्थानाम् ।	समर्थ व्यक्ति के लिये विदेश कौन-सा है ।
को हि मार्गममार्गं वा व्यसनान्धो निरीक्षते ? (कथा०)	कौन व्यसनान्ध मनुष्य सुपथ कुपथ का ध्यान रखता है ?

को हि वित्तं रहस्यं वा स्त्रीणां शक्नोति गूहितुम्। (कथा०)	स्त्रियाँ सम्पत्ति और गोपनीय बात को नहीं छिपा सकतीं।
को हि स्वशिरसश्छायां विधेश्चोल्लङ्घयेद् गतिम्? (कथा०)	अपने सिर की परछाईं और विधि की गति का उल्लङ्घन कौन कर सकता है?
क्रियाणां खलु धर्म्याणां सत्पत्न्यो मूलकारणम्। (कुमारसम्भवे)	धार्मिक कृत्यों का मूल कारण श्रेष्ठ पत्नियाँ होती हैं।
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।	बड़े लोग स्वप्रताप से कार्य सिद्ध करते हैं, उपकरणों से नहीं।
क्रुद्धे विधौ भजति मित्रममित्रभावम्।	विधाता क्रुद्ध हो तो मित्र भी अमित्र बन जाता है।
क्रोधो मूलमनर्थानाम्।	क्रोध अनर्थों की जड़ है।
क्वाश्रयोऽस्ति दुरात्मनाम्?	दुष्टों को आश्रय कहाँ?
क्षणविध्वंसिनि काये का चिन्ता मरणे रणे।	जब शरीर क्षणभंगुर है तब रण में मरने में चिन्ता कैसी।
क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। (शिशु०)	वास्तविक सौन्दर्य वही है जो प्रतिक्षण नया-नया होता जाय।
क्षमया किं न सिध्यति?	क्षमा से क्या नहीं सिद्ध होता?
क्षान्तितुल्यं तपो नास्ति।	क्षमा के तुल्य कोई तप नहीं है।
क्षारं पिबति पयोधेर्वर्षत्यम्भोधरो मधुरमम्भः।	मेघ समुद्र का खारा पानी पीता है और मधुर जल बरसाता है।
क्षितितले किं जन्म कीर्तिं विना!	भूमि पर कीर्तिहीन जीवन क्या!
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।	निर्धन लोग निर्दय बन जाते हैं।
क्षुधातुराणां न रुचिर्न पक्वम्।	भूख से व्याकुल व्यक्ति न स्वाद देखता है न पकना।
ख(फ)णाटोपो भयङ्करः।	फण का विस्तार-मात्र भी भयंकर होता है।
गतस्य शोचनं नास्ति।	बीती बात का शोक व्यर्थ है।
गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः।	लोग भेड़चाल चलते हैं, तत्त्व की पहचान नहीं करते।
गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः।	सम्पत्तियाँ स्वयं गुणों की लोभी होती हैं।
गुणान् भूषयते रूपम्।	रूप गुणों को अलंकृत कर देता है।
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः।	गुणियों में गुण ही पूज्य होते हैं, न बाह्य चिह्न और न आयु।
गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः।	गुण का मूल्य गुणी जानता है, निर्गुण नहीं।
गुणैर्हीना बहु जल्पयन्ति।	गुणहीन मनुष्य वाचाल होते हैं।
गुरुतां नयन्ति हि गुणा न संहतिः। (किरात०)	गौरव गुणों से मिलता है, समूह से नहीं।
गृहे या पुण्यनिष्पत्तिः साध्वनि भ्रमतः कुतः। (कथा०)	गृहस्थ्य में जो पुण्य किये जा सकते हैं वे भ्रमण में नहीं।
ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।	गाँव की रक्षा के लिये कुल की बलि दे दे।
घटयति योग्येन हि योग्यसङ्गमम्। (नैषध०)	योग्य से योग्य का मेल ही शोभा देता है।
चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च।	दुःख और सुख (रथ के) चक्र के तुल्य घूमते हैं।
चक्षुःपूतं न्यसेत् पादम्।	देखकर ही पग रखना चाहिए।
चपलौ किल शूराणां रणे जयपराजयौ। (कथा०)	युद्ध में वीरों की जय या पराजय अनिश्चित होती है।

चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम् ।	अति धनवान् चाण्डाल भी पूज्य है ।
चित्तमेतदमलीकरणीयम् ।	इस चित्त को निर्मल करना चाहिए ।
चित्ते वाचि क्रियाया च साधूनामेकरूपता ।	सज्जनों के मन, वाणी और कर्म मे समानता रहती है ।
चित्रा गतिः कर्मणाम् ।	कर्मों की गति न्यारी ।
चिन्ता जरा मनुष्याणाम् ।	चिन्ता मनुष्यों का बुढापा है ।
चिन्तासमं नास्ति शरीरशोषणम् ।	चिन्ता के समान शरीर को कोई भी नहीं सुखाता ।
चौराणामनृतं बलम् ।	झूठ ही चोरों का बल है ।
चौरे गते वा किमु सावधानम् !	चोर के भाग जाने पर सावधानता से क्या !
छिद्रेष्वनर्थाः बहुलीभवन्ति ।	दोषों के कारण अनेक विपत्तियाँ आ घेरती है ।
जठरं को न बिभर्ति केवलम् !	केवल अपना पेट कौन नहीं भर लेता !
जपतो नास्ति पातकम् !	जप करने वाला पाप मुक्त रहता है ।
जरा रूपं हरति ।	बुढापा सौन्दर्य का नाशक है ।
जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।	बूँद-बूँद करके घटा भर जाता है ।
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ।	उत्पन्न व्यक्ति की मृत्यु अटल है ।
जातापत्या पतिं द्वेष्टि ।	सन्तानवती नारी पति से द्वेष करती है ।
जातौ जातौ नवाचाराः ।	प्रत्येक जाति के आचरण अलग-अलग होते हैं ।
जानन्ति पशवो गन्धात् ।	पशु गन्ध से पहचान जाते हैं ।
जामाता दशमो ग्रहः ।	दामाद दसवाँ ग्रह है ।
जारस्त्रीणां पतिः शत्रुः ।	कुल्टा को पति शत्रु प्रतीत होता है ।
जितक्रोधेन सर्वं हि जगदेतद् विजीयते । (कथा०)	क्रोध का विजेता जगद्विजयी होता है ।
जीवन् हि धीरोऽभिमतं किं नाम न यदाप्नुयात् । (कथा०)	धैर्यशाली व्यक्ति जीवित रहे तो प्रत्येक अभीष्ट प्राप्त कर लेता है ।
जीवो जीवस्य जीवनम् ।	प्राणी प्राणी का जीवन है ।
ज्ञानस्याभरणं क्षमा ।	क्षमा ज्ञान का भूषण है ।
ज्येष्ठभ्राता पितुः समः ।	बड़ा भाई पिता के तुल्य है ।
झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः । (नैषध०)	विद्वान् लोग दूसरे के भाव को तुरन्त जान जाते हैं ।
तक्रान्तं खलु भोजनम् ।	भोजन के अन्त मे मट्ठे का सेवन करे ।
तपोऽधीनानि श्रेयांसि, ह्युपायोऽन्यो न विद्यते । (कथा०)	सुख-सुविधाएँ तपस्या से ही प्राप्त होती हैं, किसी अन्य उपाय से नहीं ।
तपोऽधीना हि संपदः । (कथा०)	संपत्तियाँ तप के अधीन हैं ।
तमस्तपति घर्मांशौ कथमाविर्भविष्यति ? (अभिज्ञान०)	सूर्य के चमकने पर अन्धकार कैसे प्रकट होगा ?
तस्करस्य कुतो धर्मः !	चोर का धर्म कहाँ !
तस्य तदेव मधुरं यस्य मनो यत्र संलग्नम् ।	जिसका मन जिसमे लगा हो, उसे वही प्रिय होता है ।
तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्णमण्डलः ।	१. शोभान्वित पूर्ण चाँद तो एक ही रात रहता है । २. चार दिन की चाँदनी और फिर अँधेरी रात है ।

धनं सर्वप्रयोजनम्।	धन सर्वप्रमुख प्रयोजन है।
धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।	बुद्धिमान् मानव परोपकार के लिए धन और जीवन त्याग दे।
धर्मक्षयकर क्रोध·।	क्रोध धर्म का नाशक है।
धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्।	धर्म का तत्त्व गुफा में छिपा है।
धर्म कीर्तिर्द्वयं स्थिरम्।	धर्म और कीर्ति ही दो स्थिर पदार्थ हैं।
धर्मं स नो यत्र न सत्यमस्ति।	जिसमें सत्य नहीं, वह धर्म नहीं।
धर्मेण हीना पशुभिः समाना·।	धर्महीन जन पशुतुल्य हैं।
धिक् कलत्रमपुत्रकम्।	अपुत्रा नारी धिक्कार्य है।
धिक् पुत्रमविनीतं च।	अनम्र पुत्र धिक्कार्य है।
धिगाशा सर्वदोषभू·।	सब दोषों की जननी आशा धिक्कार्य है।
धिग्गृहं गृहिणीशून्यम्।	गृहिणीरहित घर धिक्कार्य है।
धिग्जीवितं चोद्यमवर्जितस्य।	उद्यमहीन का जीवन धिक्कार्य है।
धिग्जीवितं व्यर्थमनोरथस्य।	विफल मनोरथ मनुष्य का जीवन धिक्कार्य है।
धिग्जीवितं शास्त्रकलोज्झितस्य।	शास्त्र तथा कला से रहित मानव का जीवन धिक्कार्य है।
धूर्ताः क्रीडन्ति बालिशैः। (कथा०)	धूर्त लोग मूर्खों को ही उल्लू बनाते हैं।
ध्रुवं फलाय महते महतां सह संगम·। (कथा०)	बड़ों की संगति का फल बड़ा होता है।
न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणे क्षति·। (कथा०)	काँच की प्राप्ति के लिए मोती की हानि उचित नहीं।
न कामसदृशो रिपु·।	काम के समान शत्रु नहीं।
न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे।	घर में आग लगने पर कुआँ खोदना उचित नहीं।
न खलु स उपरतो यस्य वल्लभो जन स्मरति।	जिसका स्मरण प्रियजन करते हैं, उसे मरा न समझिए।
न च धर्मो दयापर·।	दया से बड़ा कोई धर्म नहीं।
न चलति खलु वाक्य सज्जनानां कदाचित्।	सज्जनों की बात कभी झूठी नहीं होती।
न च विद्यासमो बन्धु·।	विद्या के समान बन्धु नहीं।
न च व्याधिसमो रिपु·।	रोग के तुल्य शत्रु नहीं।
न चापत्यसमः स्नेहः।	सन्तति के प्रति प्रेम अप्रतिम है।
न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः।	न जाने यह जगत् अमृतमय है या विषमय।
न ज्ञानात् परमं चक्षु·।	ज्ञान से बड़ी आँख नहीं।
न तोषात् परमं सुखम्।	सन्तोष से बड़ा सुख नहीं।
न तोषो महतां मृषा। (कथा०)	बड़े लोगों की प्रसन्नता व्यर्थ नहीं होती।
न दरिद्रस्तथा दुःखी लब्धक्षीणधनो यथा।	निर्धन उतना दुःखी नहीं होता जितना धन को पाकर खोनेवाला।
न धर्मवृद्धेषु वय· समीक्ष्यते। (कुमार०)	धर्मवृद्धों की उमर नहीं देखी जाती।
न धर्मसदृशं मित्रम्।	धर्म के समान मित्र नहीं।
न नश्यति तमो नाम कृतया दीपवार्तया।	दीपक का नाम लेने से अँधेरा नष्ट नहीं होता।
ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पा गिरय·। (अभि०)	आँधी में पर्वत कभी नहीं हिलते।
ननु वक्तृविशेषनि·स्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चित·। (किरात०)	गुणग्राही लोग बात का गुण ग्रहण करते हैं, वक्तृविशेष का ध्यान नहीं करते।
न पुत्रात् परमो लाभः।	पुत्र प्राप्ति से बड़ा कोई लाभ नहीं।

न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।	प्राणान्तकारी समय आ जाने पर भी उत्तम मनुष्यों के स्वभाव में विकार नहीं आता।
न भयं चास्ति जाग्रतः।	जागनेवाले को कोई डर नहीं।
न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम्।	सज्जन एक ही बात को बार-बार नहीं कहते।
न भार्यायाः परं सुखम्।	पत्नी से बड़ा कोई सुख नहीं।
न भूतो न भविष्यति।	न हुआ है न होगा।
न मुक्तेः परमा गतिः।	मोक्ष से ऊँची कोई स्थिति नहीं।
नये च शौर्ये च वसन्ति सम्पदः।	सम्पदाएँ नीति और शूरवीरता में रहती हैं।
न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्। (कुमार०)	रत्न किसी को नहीं खोजता, उसी की खोज की जाती है।
नवा वाणी मुखे मुखे।	प्रत्येक मुख में वाणी पृथक्-पृथक् होती है।
न शरीरं पुनः पुनः।	शरीर बार बार नहीं मिलता।
न शान्तेः परमं सुखम्।	शान्ति से बड़ा कोई सुख नहीं।
न शास्त्रं वेदात् परम्।	वेद से बड़ा कोई शास्त्र नहीं।
न स शक्नोति किं यस्य प्रज्ञा नापदि हीयते? (कथा०)	जिसकी बुद्धि विपत्ति में भी स्थिर रहती है, वह क्या नहीं कर सकता?
न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः।	वह सभा ही नहीं जिसमें वृद्ध न हों।
न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग्यादृक् कांस्ये प्रजायते।	काँसे में जैसी ध्वनि उत्पन्न होती है वैसी सोने में नहीं।
न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि।	हाथी की हड्डियाँ निकल आवें तो भी वह जोहड़ का जल नहीं छूता।
न स्वेच्छं व्यवहर्तव्यमात्मनो भूतिमिच्छता। (कथा०)	वृद्धि के इच्छुक मनुष्य को स्वच्छन्दपूर्वक व्यवहार नहीं करना चाहिए।
न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति।	श्रेष्ठ लोग किये हुये उपकार को नहीं भूलते।
न हि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोल्कया।	समुद्र का जल तिनकों की मशाल से गर्म नहीं किया जा सकता।
न हि दुष्करमस्तीह किंचिदध्यवसायिनाम्। (कथा०)	अध्यवसायी व्यक्ति के लिये जगत् में कोई भी कार्य दुष्कर नहीं।
न हि नार्यो विनेर्ष्यया।	स्त्रियाँ ईर्ष्या-रहित नहीं होतीं।
न हि प्रफुल्लं सहकारमेत्य वृक्षान्तरं काङ्क्षति षट्पदाली। (रघु०)	भौंरे पुष्पित आम्रवृक्ष पर पहुँचकर अन्य वृक्ष की इच्छा नहीं करते।
न हि वन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम्। न हि वन्ध्याऽश्नुते दुःखं यथा हि सुतपुत्रिणी।	बाँझ को वह दुःख नहीं होता जो सुतपुत्रा नारी को।
न हि सत्त्वावसादेन स्वल्पाप्यापद् निस्तीर्यते। (कथा०)	उत्साह के त्याग से तो साधारण आपत्ति पर भी विजय नहीं मिलती।
न हि सर्वविदः सर्वे।	सब लोग सब कुछ नहीं जानते।
न हि सिंहो गजास्कन्दी भयाद् गिरिगुहाशयः। (रघु०)	हाथियों पर आक्रमण करनेवाला सिंह डर के कारण पर्वत-गुहा में नहीं रहता।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।	सोते हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं नहीं आ घुसते।
नातिपीडयितुं भग्नानिच्छन्ति हि महौजसः। (किरात०)	ओजस्वी जन पराजितों को अत्यधिक पीड़ा नहीं देना चाहते।
नाधर्मश्चिरमृद्धये। (कथा०)	अधर्म चिरकाल तक धन नहीं देता।

नानृतात्पातकं परम्। — झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं।

नारीणां भूषणं पतिः। — पति स्त्रियों का भूषण है।

नार्कतपैर्जलं...मेति हिमैस्तु दाहम्। (नैषध०) — कमल धूप से नहीं, पाले से झुलसता है।

नाल्पीयान् बहु सुकृतं हिनस्ति दोषः। (किरात०) — थोड़े से दोष से बहुत से पुण्यों का नाश नहीं होता।

नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत्। — दूसरे स्थान को देखे बिना पहले को न छोड़े।

नास्ति कामसमो व्याधिः। — काम के समान कोई रोग नहीं।

नास्ति क्रोधसमो वह्निः। — क्रोध के समान कोई तेज नहीं।

नास्ति चक्षुःसमं तेजः। — नेत्र के समान कोई आग नहीं।

नास्ति आत्मसमं बलम्। — आत्मा के तुल्य कोई बल नहीं।

नास्ति प्राणसमं भयम्। — प्राणभय के तुल्य कोई भय नहीं।

नास्ति बन्धुसमं बलम्। — बन्धु के तुल्य कोई दल नहीं।

नास्ति मेघसमं तोयम्। — मेघ के समान कोई जल नहीं।

नास्ति मोहसमो रिपुः। — मोह के समान कोई शत्रु नहीं।

नास्त्यदेयं महात्मनाम्। — ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसे महात्मा लोग न दे सकें।

नास्त्यहो स्वामिभक्तानां पुत्रे वात्मनि वा स्पृहा। (कथा०) — अहो! स्वामिभक्तों को न पुत्र का मोह होता है न प्राणों का।

निःसारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्। — प्रायः निकम्मी वस्तु का आडम्बर बहुत होता है।

निजेऽप्यपत्ये करुणा कठिनप्रकृतेः कुतः? (प्रसन्नराघवे) — कठोर स्वभाववाले व्यक्ति को अपनी सन्तति पर भी दया नहीं आती।

निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते। — वृक्षहीन देश में एरण्ड भी वृक्ष माना जाता है।

निर्धनं पुरुषं त्यजन्ति गणिकाः। — वेश्याएँ निर्धन पुरुष को छोड़ देती हैं।

निर्धनता सर्वापदामास्पदम्। — दरिद्रता सब दुःखों का कारण है।

निर्धनस्य कुतः सुखम्? — निर्धन को सुख कहाँ!

निर्वाणदीपे किमु तैलदानम्? — दीपक बुझ जाने पर तेल डालने से क्या?

निवसन्ति पराक्रमाश्रया न विषादेन समं समृद्धयः। (किरात०) — समृद्धियाँ पराक्रम के आश्रय पर रहती हैं, विषाद के साथ नहीं।

निवसन्नन्तर्दारुणि लंघ्यो वह्निर्न तु ज्वलितः। — लकड़ी के अन्दर विद्यमान अग्नि पर से कूदा जा सकता है, जलती पर से नहीं।

निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम्। — राग-रहित के लिए घर ही तपोवन है।

निष्प्रज्ञास्त्ववसीदन्ति लोकोपहसिताः सदा। (कथा०) — बुद्धिहीन व्यक्ति दुःख उठाते हैं तथा लोगों के उपहासास्पद बनते हैं।

निसर्गसिद्धो हि नारीणां सपत्नीषु हि मत्सरः। (कथा०) — स्त्रियों की सौतों के प्रति ईर्ष्या स्वाभाविक है।

निःस्पृहस्य तृणं जगत्। — कामनारहित के लिये जगत् तृणतुल्य है।

नीचाश्रयो हि महतामपमानहेतुः। — नीच का आश्रय लेना बड़े लोगों के लिये अपमानजनक होता है।

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। (मेघ०) — पहिये के हाल के समान मनुष्य की अवस्था ऊँची-नीची होती रहती है।

नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः सर्वैरुपायैः फलमेव साध्यम्। — नीचे, ऊँचे और अत्यन्त नीचे, सभी उपायों से अभीष्ट सिद्धि करनी चाहिए।

नीचो वदति, न कुरुते, वदति न साधुः करोत्येव ।	नीच मनुष्य कहता है, करता नहीं। सज्जन कहता नहीं, कर देता है ।
नैकत्र सर्वो गुणसन्निपातः ।	सभी गुण एकत्र नहीं रहते ।
न्याय्या वृत्तिं समाचरेत् ।	जीविकोपार्जन न्याय के अनुसार करना चाहिए ।
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।	धीर लोग न्याय के मार्ग से तनिक भी विचलित नहीं होते ।
पङ्को हि नभसि क्षिप्तः क्षेप्तुः पतति मूर्धनि । (कथा०)	आकाश में फेंका हुआ कीचड़ फेंकनेवाले के सिर पर ही पड़ता है ।
पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते । (नैषध०)	संसार में ऐसा कौन-सा काम है जिसे पाँच मनुष्य मिलकर नहीं कर सकते ?
पठतो नास्ति मूर्खत्वम् ।	अध्ययनशील मनुष्य मूर्ख नहीं रहता ।
पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।	गुण सर्वत्र अपना स्थान बना लेते हैं ।
पदं सहेत भ्रमरस्य पेलवं शिरीषपुष्पं, न पुनः पतत्रिणः । (कुमार०)	शिरीष का फूल भ्रमर के कोमल चरण को तो सह लेता है, पक्षी के चरण को नहीं ।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ।	कमल-पत्र पर पड़ा हुआ जल मोती की शोभा धारण कर लेता है ।
पय:पानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ।	साँपों को दूध पिलाने से उनका विष ही बढ़ता है।
पयोगते किं खलु सेतुबंधः ?	बाढ़ के उतर जाने पर बाँध बाँधने से क्या लाभ ?
परदुःखेनापि दुःखिता विरलाः ।	दूसरों के दुःख से दुःखित होनेवाले लोग थोड़े ही हैं ।
परबुद्धिर्विनाशाय ।	दूसरों के मतानुसार आचरण विनाशकारी होता है ।
परभुक्ते हि कमले किमलेर्जायते रतिः ? (कथा०)	क्या भँवरा दूसरे से मुक्त कमल से प्रेम करता है ?
परमं लाभमरातिभङ्गमाहुः । (किरात०)	शत्रु का नाश सब से बड़ा लाभ कहा जाता है ।
परलोकगतस्य को बन्धुः ?	दिवंगत व्यक्ति का बन्धु कौन है ?
परवृद्धिमत्सरि मनो हि मानिनाम् । (शिशु०)	मानी मनुष्यों का मन दूसरों की उन्नति से ईर्ष्या करता है ।
परसदननिविष्टः को लघुत्वं न याति ?	दूसरे के घर जाने से किसका गौरव क्षीण नहीं होता ?
परहितनिरतानामादरो नात्मकार्ये ।	परोपकारपरायण लोग अपने कार्यों की परवाह नहीं करते ।
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ।	बुद्धियाँ वही हैं जो दूसरों के सङ्केत समझ जाती हैं ।
परोपकारजं पुण्यं न स्यात्क्रतुशतैरपि ।	परोपकार जन्य पुण्य सैकड़ों यज्ञों के पुण्य से श्रेष्ठ है ।
परोपकाराय सतां विभूतयः ।	सज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकार के लिए होती हैं।
परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।	यह शरीर परोपकार के लिए है ।
परोपदेशवेलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति वै ।	दूसरों को उपदेश देते समय तो सब सभ्य बन जाते हैं ।
परोऽपि हितवान् बन्धुः ।	हितकारक बेगाना भी बन्धु ही है ।
पर्वतानां भयं वज्रात् ।	पर्वतों को वज्र से भय होता है ।

पयसा दग्धे तक्रं फूत्कृत्य पामरः पिबति।	दूध का जला छाछ को फूँक फूँक कर पीता है।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति।	मनुष्य योग्य होने पर धन प्राप्त करता है।
पापप्रभावान्नरकं प्रयाति।	पाप के प्रभाव से नरक को जाता है।
पितृदोषेण मूर्खता।	मूर्खता पिता के दोष से होती है।
पिपासितैः काव्यरसो न पीयते।	प्यासे काव्यरस नहीं पिया करते।
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिराम् उन्मत्तभूतं जगत्।	मोहमयी प्रमाद मदिरा पीकर जगत् उन्मत्त हो गया है।
पुण्यवन्तो हि सन्तानं पश्यन्त्युच्चैः कृतान्वयम्। (कथा०)	वंश को ऊँचा करनेवाली सन्तान पुण्यवानों के घर ही होती है।
पुत्र शत्रुरपण्डितः।	मूर्ख पुत्र शत्रु है।
पुत्रप्रयोजना दाराः।	पत्नी पुत्र को जन्म देने के लिए ही होती है।
पुत्रहीनं गृहं शून्यम्।	पुत्रहीन घर सूना है।
पुत्रादपि भयं यत्र तत्र सौख्यं हि कीदृशम्?	जहाँ पुत्र से भी भय हो वहाँ सुख कैसा?
पुनर्दरिद्री पुनरेव पापी।	फिर दरिद्री, फिर पापी।
पुनर्धनाढ्यः पुनरेव भोगी।	फिर धनी, फिर भोगी।
पुरुषा अपि बाणा अपि गुणच्युताः कस्य न भयाय?	पुरुष भी और बाण भी गुण (गुण, धनुष की डोरी) से रहित हो जाने पर किसके लिए भयकर नहीं होते?
पूज्यं वाक्यं समृद्धस्य।	धनाढ्य का वाक्य पूज्य होता है।
पूर्वपुण्यतया विद्या।	विद्या पिछले पुण्यों से मिलती है।
प्रच्छन्नमप्यूह्यते हि चेष्टा। (किरात०)	चेष्टा गुप्त बात को भी व्यक्त कर देती है।
प्रजानामपि दीनानां राजैव सदा पिता।	राजा दीन प्रजाओं का दयालु पिता है।
प्रज्ञाबलं च सर्वेषु मुख्यं कार्येषु साधनम्। (कथा०)	सब कार्यों में बुद्धिबल सबसे बड़ा साधन है।
प्रणामान्तः सतां कोपः।	सज्जनों का क्रोध प्रणाम से समाप्त हो जाता है।
प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः। (रघुवंश०)	पूज्यों की पूजा में उलट फेर कल्याणों का बाधक होता है।
प्राणव्ययाय शूराणां जायते हि रणोत्सवः। (कथा०)	युद्ध का मेला शूरवीरों के प्राणधन के व्ययार्थ होता है।
प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया। (कथा०)	प्राणियों को अपनी निकृष्ट जन्मभूमि भी अत्यन्त प्यारी लगती है।
प्राणेभ्योऽप्यर्थमात्रा हि कृपणस्य गरीयसी। (कथा०)	कंजूस को थोड़ा-सा भी धन प्राणों से अधिक प्यारा लगता है।
प्राणैरपि हि भृत्यानां स्वामिसंरक्षणं व्रतम्। (कथा०)	प्राण देकर भी स्वामी की रक्षा करना सेवकों का व्रत है।
प्राप्नोतीष्टमविक्लवः। (कथा०)	धीर अभीष्ट को पा लेता है।
प्राप्यते किं यशः शुभ्रमनङ्गीकृत्य साहसम्? (कथा०)	जान जोखिम में डाले बिना कहीं शुभ्र यश प्राप्त हो सकता है?
प्रायः श्वश्रूस्नुषयोर्न दृश्यते सौहृदं लोके।	संसार में प्राय. सास-बहू में सौहार्द नहीं देखा जाता।

प्रायः समानविद्याः परस्परयशः पुरोभागाः।

प्रायः समासन्नविपत्तिकाले
धियोऽपि पुंसां मलिनीभवन्ति।
प्रायः स्त्रियो भवन्तीह निसर्गविषमाः
शठाः। (कथा०)
प्रायः स्वं महिमानं क्षोभात्प्रतिपद्यते हि
जनः।
प्रायेण गृहिणीनेत्राः कन्यार्थेषु कुटुम्बिनः।
(कुमारसम्भवे)
प्रायेण भार्यादौःशील्यं स्नेहान्धो नेक्षते
जनः। (कथा०)
प्रायेण भूमिपतयः प्रमदा लताश्च
यः पार्श्वतो भवति तं परिवेष्टयन्ति।
प्रायेण साधुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः।

प्रायेण सामग्र्यविधौ गुणानां
पराङ्मुखी विश्वसृजः प्रवृत्तिः। (कुमार०)
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते।

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रैव
यान्त्यापदः।
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति।
प्रासादशिखरस्थोऽपि काकः किं गरुडायते?

प्रियबन्धुविनाशोत्थः शोकाग्निः कं न
तापयेत्? (कथा०)
प्रियमांसमृगाधिपोज्झितः किमवद्यः करि
कुम्भजो मणिः? (शिशु०)
प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि
भवति।
फलं भाग्यानुसारतः।
बलाधिकानुरोधेन किं न कुर्वन्ति साधवः?
(कथा०)
बधिरस्य गानम्।
बधिरान्मन्दकर्णः श्रेयान्।
बन्धुः को नाम दुष्टानाम्?
बन्धुरप्यहितः परः।
बलं मूर्खस्य मौनित्वम्।
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा।
बहुरत्ना वसुन्धरा।

बहुवचनमल्पसारं यः कथयति विप्रलापी स ।	जो अल्प सार को बहुत शब्दों मे कहता है वही विप्रलापी है ।
बहुविघ्नास्तु सदा कल्याणसिद्धय । (कथा०)	कल्याणों की सिद्धि मे सदा अनेक विघ्न पडते हैं ।
बह्वाश्चर्या हि मेदिनी ।	पृथ्वी आश्चर्यों से पूर्ण है ।
बालाना रोदन बलम् ।	रोना ही बच्चों का बल है ।
बुद्धय कुमार्गगामिन्यो भवन्ति महतामपि ।	बड़ों की बुद्धि भी कुमार्गगामिनी हो जाती है ।
बुद्धि कर्मानुसारिणी ।	बुद्धि कर्मों के अनुसार होती है ।
बुद्धिर्हि च सर्वत्र मुख्य मित्र न पौरुषम् । (कथा०)	सब स्थानों पर बुद्धि ही मुख्य मित्र है, पुरुषार्थ नहीं ।
बुद्धे फलमनाग्रह ।	हठ का न होना ही बुद्धि का फल है ।
बुभुक्षित कि न करोति पापम् ?	भूखा मनुष्य कौन सा पाप नहीं करता ?
बुभुक्षित न प्रतिभाति किंचित् ।	भूखे को कुछ नहीं सूझता ।
बुभुक्षितै-र्व्याकरण न भुज्यते ।	भूखे लोग व्याकरण नहीं खाया करते ।
ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् । (नैषध०)	श्रेष्ठ लोग अपनी उपयोगिता वाणी से नहीं, फल से कहते हैं ।
भक्त्या हि तुष्यन्ति महानुभावा ।	महानुभाव लोग भक्ति (श्रद्धा) से ही प्रसन्न होते हैं ।
भद्रं प्राप्नुयाद्भद्रमभद्र चाप्यभद्रकृत् । (कथा०)	भले का भला और बुरे का बुरा होता है ।
भये सीमा मृत्यु ।	सबसे बडा भय मृत्यु है ।
भर्तृमार्गानुसरण स्त्रीणा च परम व्रतम् ।	पति निर्दिष्ट मार्ग पर चलना स्त्रियों का परम व्रत है ।
भवन्तिक्लेशबहुला सर्वस्यापीह सिद्धय । (कथा०)	ससार मे सबके कार्य अनेक कष्ट उठाने पर ही सिद्ध होते हैं ।
भवन्त्युदयकाले हि सत्कल्याणपरम्परा । (कथा०)	जब अच्छे दिन आते हैं तब सभी काम शुभ होते जाते हैं ।
भवितव्यता बलवती । (अभिज्ञान०)	होनहार बलवती है ।
भवितव्य भवत्येव कर्मणामीदृशी गति ।	कर्मों की गति ऐसी है कि होनी होकर ही रहती है ।
भग्न यस्य यत्कर्म स तत्कुर्वन् विनश्यति । (कथा०)	१ जिसका काम उसी को साजे, और करे तो डण्डा बाजे । २ जो काम जिसका न हो, उसे करने पर मनुष्य नष्ट हो जाता है ।
भस्मीभूतस्य भूतस्य पुनरागमन कुत ? (नैषध०)	भस्मीभूत प्राणी लौटकर कैसे आ सकता है ?
भाग्येनैव हि लभ्यते पुनरसौ सर्वोत्तम सेवक ।	सर्वोत्तम सेवक भाग्य से ही प्राप्त होता है ।
भार्यासम नास्ति शरीरतोषणम् ।	पत्नी के समान शारीरिक सुख देनेवाला कोई नहीं ।
भिक्षुको भिक्षुक दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते ।	भिखारी, भिखारी को देखकर कुत्ते के समान गुर्राता है ।
भिन्नरुचिर्हि लोक ।	लोगों की रुचि भिन्न भिन्न है ।

भीता इव हि धीराणा दूरे यान्ति विपत्तय ।
(कथा०)
भूयोऽपि सिक्त पयसा घृतेन
न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।
भोगो भूषयते धनम् ।
भ्रष्टस्य का वा गति ?
मतिरेव बलाद् गरीयसी ।
मन्दमूढबुद्धिषु विवेकिता कुत ? (शिशु०)
मद्यपस्य कुत सत्यम् ? (कथा०)
मधुरविधुरमिश्रा सृष्टयो हा विधातु ।
(प्रसन्नराघवे)
मन पूत समाचरेत् ।

मन एव मनुष्याणा कारण बन्धमोक्षयो ।
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम् ।

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु ख न च
सुखम् ।
मनोरथानामगतिर्न विद्यते । (कुमार०)
मरण प्रकृति शरीरिणाम् ।
मर्दन गुणवर्धनम् ।
मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।
महाजनो येन गत स पन्था ।

महान् महत्येव करोति विक्रमम् ।
महीपतीना विनयो हि भूषणम् ।
मातर्लक्ष्मि, तव प्रसादवशतो दोषा अपि
स्युर्गुणा ।
माता दुश्चारिणी रिपु ।
मातापितृभ्या शप्त सन् न जातु सुखम
श्नुते । (कथा०)
मातृजङ्घा हि वत्सस्य स्तम्भीभवति बन्धने ।

मात्रा सम नास्ति शरीरपोषणम् ।
मान म्लाने कुत सुखम् ?
मित च सार च वचो हि वाग्मिता ।

मूढ परप्रत्ययनेयबुद्धि ।
मूर्खस्य किं शास्त्रकथाप्रसङ्ग ?
मूर्खस्य हृदय शून्यम् ।
मूर्खाणा बोधको रिपु ।
मूर्खैहि सग कस्यास्ति शर्मणे ? (कथा०)

मूल्यः सर्वत्र तुल्यता।	मौन के सामने सब समान हैं।
मेघो गिरिजलधिवर्षी च।	मेघ पर्वत और सागर दोनों स्थानों पर बरसता है।
मोहान्धमविवेकं हि श्रीश्चिराय न सेवते। (कथा०)	मोहग्रस्त और विवेकहीन के पास लक्ष्मी अधिक नहीं ठहरती।
मौनं विधेयं सततं सुधीभिः।	बुद्धिमानों को निरन्तर चुप रहना चाहिए।
मौनं सर्वार्थसाधकम्।	मौन से सब काम सिद्ध होते हैं।
मौनिनः कलहो नास्ति।	मौनी का किसी से कलह नहीं होता।
यतः सत्यं ततो धर्मः।	जहाँ सत्य है वहाँ धर्म है।
यतो धर्मस्ततो धनम्।	जहाँ धर्म है वहाँ धन है।
यतो रूपं ततः शीलम्।	जहाँ रूप है वहाँ शील है।
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः?	यदि यत्न करने पर भी सिद्धि न हो तो इसमें यत्नकर्ता का क्या दोष?
यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि।	जहाँ विद्वान् नहीं होता वहाँ अल्पबुद्धि भी श्लाघ्य होता है।
यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति।	जहाँ रूप वहाँ गुण भी है।
यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र।	जहाँ लक्ष्मी होती है वहाँ नम्रता नहीं।
यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया।	जैसा मन वैसी वाणी, जैसी वाणी वैसी क्रिया।
यथा देशस्तथा भाषा।	जैसा देश वैसी भाषा।
यथा बीजं तथाङ्कुरः।	जैसा बीज वैसा अङ्कुर।
यथा भूमिस्तथा तोयम्।	जैसी भूमि वैसा जल।
यथा राजा तथा प्रजा।	जैसा राजा वैसी प्रजा।
यथा वृक्षस्तथा फलम्।	जैसा वृक्ष वैसा फल।
यथाशक्त्यतिथेः पूजा धर्मो हि गृहमेधिनाम्। (कथा०)	अतिथि की यथाशक्ति सेवा करना गृहस्थों का धर्म है।
यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम्।	जैसे स्वादिष्ट और गुणकारी दवा दुर्लभ है।
यदि वात्यन्तमृदुता न कस्य परिभूतये? (कथा०)	अत्यधिक कोमलता से किसका निरादर नहीं होता?
यदेव रोचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम्।	जो जिसे अच्छा लगता है, वही उसके लिये सुन्दर होता है।
यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं तन्मार्जितुं कः क्षमः?	विधाता ने भाग्य में जो लिख दिया है, उसे कौन मिटा सकता है?
यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीयम्।	लोकविरुद्ध शुद्ध बात भी न करनी चाहिये।
यद्वा तद्वा भविष्यति।	कुछ न कुछ तो होगा ही।
यशः पुण्यैरवाप्यते।	यश पुण्यों से ही मिलता है।
यशस्तु रक्ष्यं परतो यशोधनैः। (रघु०)	यशस्वियों को शत्रु से यश की रक्षा करनी चाहिए।
यः क्रियावान् स पण्डितः।	जिसके कर्म अच्छे, वही पण्डित है।
याचनान्तं हि गौरवम्।	याचना गौरव को समाप्त कर देती है।
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा। (मेघ०)	नीच से याचना के सफल होने की अपेक्षा गुणी से उसका विफल होना अच्छा।

यादृशो य कृतो धात्रा भवेत्तादृश एव स । (कथा०)	विधाता ने जिसे जैसा बना दिया वह वैसा ही होता है।
यादृशस्तन्तव काम तादृशो जायते पट । (कथा०)	जैसे तन्तु होते हैं वैसा कपड़ा बनता है।
यानरत्नं हि तुरग ।	वाहनों में घोड़ा रत्न है।
यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहायताम् । (अनर्घराघवे)	न्यायानुसार चलनेवाले की सहायता पशु पक्षी भी करते हैं।
या यस्य प्रकृति स्वभावजनिता कनापि न त्यज्यते ।	जो जिसका सहज स्वभाव है वह छोड़ा नहीं जा सकता।
युक्तियुक्त प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षण ।	बुद्धिमान् को बच्चे की भी युक्तियुक्त बात मान लेनी चाहिए।
युद्धस्य वार्ता रम्या स्याद् ।	युद्ध के समाचार रोचक होते हैं।
ये तु घ्नन्ति निरर्थक परहित ते के न जानीमहे ।	जो दूसरों के कार्यों को व्यर्थ ही नष्ट करते हैं वे किस कोटि के होते हैं हम नहीं जानते।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरुषो भवेत् ।	मनुष्य को किसी भी उपाय से प्रसिद्धि प्राप्त करनी चाहिए।
यो यद् वपति बीज हि लभते सोऽपि तत्फलम् । (कथा०)	जैसा बोएगा वैसा काटेगा।
रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ।	पूर्व पुण्य मनुष्य की रक्षा करते हैं।
रत्नदीपस्य हि शिखा वात्ययापि न नश्यति ।	रत्नों के दीये की लौ आँधी से भी नहीं बुझती।
रत्नव्ययेन पाषाण को हि रक्षितुमर्हति । (कथा०)	कौन इतना समर्थ है जो पत्थर के रक्षार्थ रत्न व्यय करे।
वनेऽपि दोषा प्रभवन्ति रागिणाम् ।	वन में भी दोष रागयुक्तों को दबा लेते हैं।
वर हि मानिनो मृत्यु , न दैन्य स्वजनाग्रत । (कथा०)	प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु अच्छी किन्तु सम्बन्धियों के सामने दीनता बुरी।
वर क्लैब्यं पुंसा न च परकलत्राभिगमनम् ।	पुरुषों का नपुंसक होना अच्छा, परस्त्री गमन बुरा।
वर भिक्षाशित्व न च परधनास्वादनसुखम् ।	भीख माँग कर खाना अच्छा पराये धन के भोग का सुख बुरा।
वर मौन कार्य न च वचनमुक्त यदनृतम् ।	झूठ बोलने की अपेक्षा चुप रहना अच्छा
वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणा ।	बुद्धिमान् वर्तमान काल के अनुसार व्यवहार करते हैं।
वस्त्रपूत पिबेज्जलम् ।	वस्त्र से छानकर ही जल पीना चाहिए
वस्त्राणामातपो जरा ।	धूप वस्त्रों का बुढ़ापा है।
वाम्ये विधौ न हि फलन्त्यभिवाञ्छितानि ।	भाग्य विपरीत हो तो अभीष्ट सिद्ध नहीं होते।
वास प्रधान खलु योग्यताया ।	योग्यता में भी परिधान प्रधान होता है।
वासोविहीन विजहाति लक्ष्मी ।	वस्त्रविहीन को लक्ष्मी छोड़ जाती है।
विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीरा । (कुमार०)	विकार के कारणों के विद्यमान होने में भी जिनके चित्त विकृत नहीं होते वे ही धीर हैं।
विक्रीते करिणि किमङ्कुशे विवाद ?	हाथी के बेच देने पर अङ्कुश के बारे में विवाद कैसा ?
विचित्ररूपा खलु चित्तवृत्तय । (किरात०)	चित्त की वृत्तियाँ के रूप विचित्र होते हैं।

विदेशे बन्धुलाभो हि मरावुत्सनिर्झरः। (कथा०)	विदेश में बन्धु मिलना मरुभूमि में अमृत स्रोत के समान है।
विद्यातुराणां न सुखं न निद्रा।	विद्या के इच्छुक व्यक्तियों को न सुख रुचता है न नींद।
विद्या ददाति विनयम्।	विद्या से नम्रता आती है।
विद्या मित्रं प्रवासेषु।	विदेश में विद्या मित्र है।
विद्यारत्नं सरसकविता।	सरस कविता करना ही उत्तम विद्या है।
विद्या रूपं कुरूपिणाम्।	कुरूप लोगों का रूप विद्या है।
विद्यासमं नास्ति शरीरभूषणम्।	विद्या के समान शरीर का कोई भूषण नहीं।
विद्या सर्वस्य भूषणम्।	विद्या सबका भूषण है।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वम्।	कुलीन विद्वान् अभिमान नहीं करता।
विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।	विद्वान् की सब जगह पूजा होती है।
विनयाद् याति पात्रताम्।	विनय से मनुष्य योग्य बनता है।
विनयो हि सतीव्रतम्। (कथा०)	विनय ही सतियों का व्रत है।
विना मलयमन्यत्र चन्दनं न प्ररोहति।	चन्दन मलय पर्वत के सिवा कहीं नहीं उगता।
विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।	विनाश के समय बुद्धि फिर जाती है।
विना हि गुर्वुपदेशेन सम्पूर्णाः सिद्धयः कुतः? (कथा०)	गुरु के उपदेश के बिना सम्पूर्ण सिद्धियाँ कहाँ?
विप्रियमप्याकर्ण्य ब्रूते प्रियमेव सर्वदा सुजनः।	कटु वचन भी सुनकर सज्जन सदा प्रिय बात ही कहते हैं।
विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।	मौन मूर्खों का भूषण है।
विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितैषिणं रिपुं वा। (किरात०)	१ दिल दिल का साक्षी है। २ निर्मल या मलिन होता हुआ मन हितैषी या शत्रु को बता देता है।
विरक्तस्य तृणं भार्या।	विरक्त को पत्नी तृण समान लगती है।
विलासिनी हि सर्वस्य सन्ध्येव क्षणरागिणी। (कथा०)	सन्ध्या के समान सब के साथ वेश्या का राग (प्रेम लगाव) क्षणस्थायी होता है।
विवक्षितं ह्यनुक्तमनुतापं जनयति। (अभिज्ञा०)	अकथित अभिलषित वचन पश्चात्ताप उत्पन्न करता है।
विषादः कुशलेषु कः? (कथा०)	कुशलियों पर क्या विषाद?
विषं गोष्ठी दरिद्रस्य।	निर्धन की बातचीत विष है।
विषयाक्रम्यमाणा हि तिष्ठन्ति सुपथे कथम्? (कथा०)	विषयासक्त लोग सुमार्ग पर कैसे रह सकते हैं?
विपदि कस्यापदोऽस्तं गता?	किस विपदी व्यक्ति की आपत्तियाँ समाप्त हो गई हैं?
विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्। (कुमार०)	अपने पाले पोसे हुए विषवृक्ष को भी उखाड़ना उचित नहीं।
वीरो हि स्वाम्यमर्हति। (कथा०)	वीर ही स्वामी बनने के योग्य होता है।
वृक्षं क्षीणफलं त्यजन्ति विहगाः।	फलहीन वृक्ष को पक्षी छोड़ जाते हैं।
वृथा दीपो दिवापि च।	दिन में दीपक व्यर्थ है।
वृथा वृष्टिः समुद्रेषु।	समुद्रों में वर्षा व्यर्थ है।
वृद्धस्य तरुणी विषम्।	बूढ़े के लिए युवती विष है।

वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।	जो धर्म की बात नहीं कहते, वे वृद्ध नहीं ।
वृद्धा नारी पतिव्रता ।	वृद्धा स्त्री पतिव्रता होती है ।
वेदाज्जानन्ति पण्डिता ।	बुद्धिमान् लोग वेद से ज्ञान पाते हैं ।
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा ।	वेश्या के समान राजनीति भी अनेक रूप धारण करती है ।
व्याघ्रस्य चोपवासस्य पारणं पशुमारणम् ।	भेड़िए के उपवास की पारणा पशु वध होती है ।
व्याधितस्यौषधं मित्रम् ।	औषध रोग का मित्र है ।
व्रताभिरक्षा हि सतामलङ्क्रिया । (किरात०)	व्रत का पालन सज्जनों का भूषण है ।
शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि ।	शत्रु के भी गुणों का और गुरु के भी दोषों का कथन करना चाहिए ।
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् । (कुमार०)	धर्म का प्रथम साधन शरीर ही है ।
शाम्येत् प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः । (कुमार०)	दुष्ट जन उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त होता है ।
शास्त्राद् रूढिर्बलीयसी ।	शास्त्रों से रीति बलवती है ।
शीलं परं भूषणम् ।	शील सर्वोत्तम भूषण है ।
शीलं भूषयते कुलम् ।	शील कुल को अलङ्कृत करता है ।
शील हि विदुषां धनम् । (कथा०)	शील ही विद्वानों का धन है ।
शुभकृन्न हि सीदति । (कथा०)	शुभ कार्य करने वाला दुःखी नहीं होता ।
शुभस्य शीघ्रम् ।	भला काम शीघ्र ही कर देना चाहिए ।
शुष्केन्धने वह्निरुपैति वृद्धिम् ।	सूखे ईंधन में आग तुरन्त फैल जाती है ।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः ।	वीर, कृतज्ञ और दृढ मित्र के पास रहने के लिए लक्ष्मी स्वयं जाती है ।
शूरस्य मरणं तृणम् ।	वीर के लिए मृत्यु तृणवत् है ।
शोभन्ते विद्यया विप्राः ।	ब्राह्मण विद्या से सुशोभित होते हैं ।
श्यालको गृहनाशाय ।	साला घर का नाश कर देता है ।
श्रद्धया न विना दानम् ।	श्रद्धा रहित दान दान नहीं ।
श्रेयसि केन तृप्यते ? (शिशु०)	मंगल से कौन तृप्त होता है ?
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रम् ।	शास्त्र कान का भूषण है ।
संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ।	दोष और गुण संगति से होते हैं ।
सकलं शीलेन कुर्याद्वशम् ।	शील से सब को वशीभूत करना चाहिए ।
सकलगुणभूषा च विनयः ।	नम्रता सब गुणों का भूषण है ।
सकलगुणसीमा वितरणम् ।	दान सब गुणों की सीमा है ।
सकलसुखसीमा सुवदना ।	सुमुखी सर्व सुखों की सीमा है ।
स क्षत्रियस्त्राणसहः सतां यः ।	सज्जनों की रक्षा में समर्थ व्यक्ति क्षत्रिय है ।
सङ्कटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञाः शूराश्च सङ्गरे । (कथा०)	बुद्धिमानों की परीक्षा सङ्कट में और शूरों की परीक्षा संग्राम में होती है ।
सतां महत्सु संरम्भाद्धि पौरुषम् । (नैषध०)	सज्जनों का पौरुष बड़ों पर ही प्रकट होता है ।
सतां हि सङ्गः सकलं प्रसूते ।	सत्संगति से सब कुछ प्राप्त होता है ।
सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः । (अभिज्ञान०)	सन्दिग्ध विषयों में सत्पुरुषों का अन्तःकरण ही प्रमाण होता है ।
स तु निरवधिरेकः सज्जनानां विवेकः ।	सज्जनों के विवेक की सीमा नहीं होती ।
सत्त्वाधीना हि सिद्धयः । (कथा०)	सफलताएँ उत्साह के अधीन हैं ।

सत्पुत्र एव कुलसद्मनि कोऽपि दीपः ।	अच्छा पुत्र ही वंश का विलक्षण दीपक है ।
सत्यपूतां वदेद् वाणीम् ।	सत्य से शोधित वाणी बोलनी चाहिए ।
सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।	सत्य कण्ठ का भूषण है ।
सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपैति ।	वह सत्य नहीं जो छल का आश्रय लेता है ।
सत्यमेव जयते ।	सत्य की ही विजय होती है ।
सत्येन धार्यते पृथ्वी ।	पृथ्वी को सत्य ही धारण किये हुए है ।
सदसद्वा न हि विदुः कुस्त्रीवचनमोहिता । (कथा०)	बुरी नारियों के वचन से मोहित लोग अच्छाई या बुराई नहीं समझते ।
सदो भूषा सूक्तिः ।	सुभाषित सभा का भूषण है ।
सद्भिः कुर्वीत संगतिम् ।	सज्जनों का संग करना चाहिए ।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च ।	झगड़ा और मैत्री सज्जनों से ही करनी चाहिए ।
सद्भिस्तु लीलया प्रोक्तं शिलालिखित-मक्षरम् ।	सज्जनों की स्वाभाविक बात भी पत्थर की लकीर होती है ।
स धार्मिको यः परमर्म न स्पृशेत् ।	धार्मिक वही है जो दूसरे का जी नहीं दुखाता ।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते ।	सज्जन परीक्षा के अनन्तर ही कोई बात स्वीकार करते हैं ।
संततिः शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे । (रघु०)	शुद्ध वंश की सन्तान लोक परलोक में सुख दायक होती है ।
संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।	सन्तोष ही मनुष्य का सर्वोत्तम कोश है ।
संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत् ।	सन्तोष के समान धन नहीं ।
संधिं कृत्वा तु हन्तव्यः संप्राप्तेऽवसरे पुनः । (कथा०)	सन्धि करके भी अवसर प्राप्त होने पर शत्रु को मार देना चाहिए ।
सभारत्नं विद्वान् ।	विद्वान् सभा का रत्न है ।
समये हि सर्वमुपकारि कृतम् । (शिशु०)	समय पर किया हुआ सब कुछ उपकारक होता है ।
समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ।	समान शील तथा व्यसन वालों में मैत्री होती है ।
सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।	भरा हुआ घड़ा शब्द नहीं करता ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते । (भगवद्गीता)	सम्मानित मनुष्य के लिए अपयश मृत्यु से भी बुरा होता है ।
सरित्पतिर्न हि समुपैति रिक्तताम् । (शिशु०)	समुद्र कभी खाली नहीं होता ।
सरित्पूरप्रपूर्णोऽपि क्षारो न मधुरायते ।	नदियों के जलसमूह से भर जाने पर भी समुद्र मीठा नहीं होता ।
सर्वः कालवशेन नश्यति ।	समय पाकर सब नष्ट होते हैं ।
सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्त्वानुरूपं फलम् ।	विपत्ति पड़ने पर भी सब लोग अपनी योग्यतानुसार फल चाहते हैं ।
सर्वः कान्तमात्मीयं पश्यति । (अभिज्ञान०)	सबको अपनी वस्तु सुन्दर दिखाई देती है ।
सर्वः प्रियः खलु भवत्यनुरूपचेष्टः । (शिशु०)	अनुकूल चेष्टाओं वाले सब व्यक्ति प्यारे लगते हैं ।
सर्वं कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्कस्य को वल्लभः ?	लोग सभी को कार्यवश प्यारे लगते हैं, वैसे कौन किसका प्रिय है ?
सर्वं जीवद्भिराप्यते (कथा०)	जीवित मनुष्य सब कुछ पा लेते हैं ।
सर्वं रत्नमुपद्रवेण सहितं निर्दोषमेकं यशः ।	सब रत्नों में कोई न कोई दोष होता है, निर्दोष तो केवल यश है ।

सर्वं शून्यं दरिद्रस्य ।	दरिद्र के लिए सब कुछ सूना है ।
सर्वं सावधि नावधि कुलसुवां प्रेम्ण परं केवलम् ।	सबकी सीमा है परन्तु कुलीन नारियों के प्रेम की सीमा नहीं ।
सर्वनाशाय मातुल ।	मामा सर्वनाश कर देता है ।
सर्वलोकप्रतिष्ठायां यतन्ते बहवो जना. ।	बहुत से व्यक्ति लोगों में प्रतिष्ठा पाने के लिए उद्योग करते हैं ।
सर्वांगे दुर्जनो विषम् ।	*दुष्टजन के सभी अंगों में विष रहता है ।*
सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूला ।	सभी उद्योग दूसेरी भर धान के लिए हैं ।
सर्वास्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिविशेषाणाम् । (अभिज्ञा०)	सुंदर व्यक्ति सभी दशाओं में सुंदर लगते हैं ।
सर्वे गुणा. काञ्चनमाश्रयन्ते ।	सभी गुण धन पर आश्रित रहते हैं ।
सलज्जा गणिका नष्टा ।	लज्जाशील वेश्या नष्ट हो जाती है ।
स सुहृद्व्यसने य स्यात् ।	जो विपत्ति में सहायक है, वही मित्र है ।
सहते विपत्सहस्रं मानी नैवापमानलेशमपि ।	मानी मनुष्य सहस्रों कष्ट सह लेता है, परन्तु तनिक सा भी अपमान नहीं ।
सहसा विदधीत न क्रियाम् अविवेक परमापदां पदम् ।	कोई भी कार्य एकाएक न करना चाहिए, अविवेक भारी आपत्तियों का कारण है ।
सहस्रेषु च पण्डित. ।	सहस्रों में कोई एक विद्वान् होता है ।
सागरं वर्जयित्वा कुत्र महानद्यवतरति ? (अभिज्ञा०)	बड़ी नदी सागर के सिवा कहाँ आश्रय लेती है ?
साधने हि नियमोऽन्यजनानां योगिनां तु तपसाखिलसिद्धि । (नैषध०)	साधारण जन साधनों से कार्य सिद्ध करते हैं, योगियों को तप से सब सिद्धियाँ मिलती हैं ।
साधु सीदति दुर्जन प्रभवति प्रायः कलौ दुर्युगे ।	इस कलियुग नाम के बुरे युग में सज्जन दुःख पाते हैं और दुर्जन अधिकार जमाते हैं ।
साधूनां दुर्जनाद् भयम् ।	सज्जनों को दुर्जनों से भय होता है ।
सानुकूले जगन्नाथे विप्रिय सुप्रियो भवेत् ।	भगवान् अनुकूल हो तो विरोधी भी मित्र *बन जाते हैं ।*
सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयो. कुत ? (शिशुपालवधे)	प्रकाश और अन्धकार एकत्र कैसे रह सकते हैं ?
सारं गृह्णन्ति पण्डिता ।	बुद्धिमान् सारग्राही होते हैं ।
सिद्धिर्भूषयते विद्याम् ।	सिद्धि विद्या को अलंकृत करती है ।
सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् ?	यदि सुंदर काव्य रचना आती हो तो राज्य में क्या लाभ है ?
सुकृती चानुभूयैव दु खमश्नुते सुखम् । (कथा०)	सुकर्मी मनुष्य दु ख सहकर भी सुख भोगता है ।
सुखमास्ते नि स्पृह पुरुष ।	कामनारहित मनुष्य सुखी रहता है ।
सुखार्थिन कुतो विद्या ?	सुखैषी को विद्या कहाँ ?
सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावकम् ।	पानी भले ही खूब गर्म हो फिर भी अग्नि को शान्त कर ही देता है ।
सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् । (किरात०)	संसार में सुन्दरता सुलभ है, गुण धारण दुर्लभ ।
सुलभो हि द्विषां भङ्गो, दुर्लभा सत्स्ववाच्यता । (किरात०)	शत्रु का नाश करना सरल है, सज्जनों में रहना दुर्लभ ।

सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम्। (शिशु०)	सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल अपनी शोभा को धारण नहीं करता।
सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा? (रघुवंश)	जब सूर्य चमक रहा हो तब रात्रि लोगों की दृष्टि कैसे बंद कर सकती है?
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।	सेवा रूपी धर्म अत्यन्त कठिन है, योगी भी वहाँ तक नहीं पहुँच सकते।
स्तोत्रं कस्य न तुष्टये? (कुमार०)	प्रशंसा से कौन प्रसन्न नहीं होता?
स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्यः?	स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को भगवान भी नहीं जानता, मनुष्य भला क्या जानेगा?
स्त्रियो नष्टा ह्यभर्तृकाः।	पति हीन स्त्रियाँ नष्ट हो जाती हैं।
स्त्रीणां पतिः प्राणा न बान्धवाः। (कथा०)	स्त्रियों का जीवन पति है, बन्धु नहीं।
स्त्रीणां प्रियालोकफलो हि वेषः। (कुमार०)	स्त्रियाँ सौन्दर्यवर्द्धक परिधान पहनती हैं।
स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम्।	जब स्त्री पुरुषवत् प्रभावशाली हो जाती है तब घर नष्ट हो जाता है।
स्त्रीबुद्धिः प्रलयावहा।	स्त्री की बुद्धि प्रलयकारिणी होती है।
स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः?	भूमि पर स्त्रियों ने किस के हृदय को खण्डित नहीं किया?
स्त्री विनश्यति रूपेण।	स्त्री रूप से नष्ट होती है।
स्त्रीषु वाक्संयमः कुतः? (कथा०)	स्त्रियों में वाणी का संयम कहाँ?
स्नापितोऽपि बहुशो नदीजलैर्गर्दभः किमु हयो भवेत् क्वचित्?	नदी के जल में बहुत बार नहाने पर भी क्या कहीं गधा भी घोड़ा बनता है?
स्नुषात्वं पापानां फलमधनगेहेषु सुदृशाम्।	निर्धन घरों की पुत्रवधू बनना सुन्दरियों के पापों का फल है।
स्पृशन्ति न नृशंसानां हृदयं बन्धुबुद्धयः। (नैषध०)	सम्बन्धियों की सीख क्रूर जनों के हृदय को प्रभावित नहीं करती।
स्पृशन्त्यास्तारुण्यं किमिव न हि रम्यं मृगदृशः?	यौवन में प्रविष्ट होती हुई मृगनयनी की कौनसी बात सुंदर नहीं होती?
स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः।	संसार अपने कर्मों के सूत्र से गूँथा हुआ है।
स्वगृहे पूज्यते मूर्खः।	मूर्ख अपने घर में ही पूजा जाता है।
स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः।	ग्रामपति अपने गाँव में ही पूजा जाता है।
स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा।	अपने देश के गुणी व्यक्ति की भी उपेक्षा की जाती है।
स्वदेशे पूज्यते राजा।	राजा की पूजा अपने ही देश में होती है।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।	अपने धर्म में मरना अच्छा है, पर धर्म भयंकर होता है।
स्वपन्त्यज्ञा हि निश्चेष्टाः, कुतो निद्रा विवेकिनाम्?	अज्ञानी गहरी नींद में सोते हैं, विवेकियों को नींद कहाँ?
स्वपदात्प्रच्यवमानस्य कस्याज्ञां को हि मन्यते? (कथा०)	अपनी पदवी से च्युत हुए की आज्ञा कौन मानता है?
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।	परोपकारियों का यह स्वभाव ही है।
स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धम्।	यह सब स्वभाव से ही सिद्ध है।

स्वभावस्वच्छानां पतनमपि भाग्य हि भवति ।	स्वभावतः पवित्र व्यक्तियों का पतन भी भाग्यवश ही होता है ।
स्वयमेव हि वातोऽग्नेः सारथ्यं प्रतिपद्यते । (रघु०)	पवन स्वयमेव अग्नि का सारथि बन जाता है ।
स्वसुखं नास्ति साध्वीनां तासां भर्तृसुखं सुखम् । (कथा०)	सतियों का अपना कोई सुख नहीं होता वे पति के सुख को ही अपना सुख समझती हैं।
स्वस्थः को वा न पण्डितः ?	कौन स्वस्थ मनुष्य बुद्धिमान् नहीं ?
स्वस्थे चित्ते बुद्धयः सम्भवन्ति ।	स्वस्थ चित्त में ही सुविचार उत्पन्न होते हैं ।
स्वादुभिस्तु विषयैर्हृतस्ततो दुःखमिन्द्रियगणो निवार्यते । (रघु०)	स्वादिष्ट विषयों से आकर्षित इन्द्रियों को उनसे हटाना कठिन है ।
स्वाधीना दयिता सुतावधि ।	सन्तान से पूर्व ही स्त्री स्वाधीन होती है ।
हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः । (अभिज्ञा०)	हंस दूध ले लेता है और उसमें मिले जल को छोड़ देता है।
हं हो पद्मसर ! कुत्र कतिपयैर्हंसैर्विना श्रीस्तव ?	अरे कमलसर ! कुछ हंसों के बिना तुम्हारी शोभा कहाँ ?
हतं ज्ञानं क्रियाहीनम् ।	क्रिया-रहित ज्ञान व्यर्थ है ।
हतं निर्नायकं सैन्यम् ।	सेनानी के बिना सेना निकम्मी है ।
हतश्चाज्ञानतो नरः ।	मनुष्य अज्ञान से मारा जाता है ।
हरति मनो मधुरा हि यौवनश्रीः । (किरात०)	यौवन की मधुर शोभा मन को हर लेती है ।
हस्तस्य भूषणं दानम् ।	दान हाथ का गहना है ।
हितः परोऽपि स्वीकार्यो हेयः स्वोऽप्यहितः पुनः । (कथा०)	हितकारक बेगाना भी स्वीकार्य है और अहितकारक अपना भी त्याज्य ।
हितप्रयोजनं मित्रम् ।	मित्र भलाई के लिए ही होता है ।
हितभुक्, मितभुक्, शाकभुक् ।	हितकर वस्तु खानेवाला, थोड़ा खानेवाला, साग-सब्जी खानेवाला (स्वस्थ रहता है)।
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः । (किरात०)	हितकर तथा मनोहर वचन दुर्लभ है ।
हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये । (कथा०)	हितकारक उपदेश मूर्ख को कुपित करता है, शान्त नहीं ।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा । (रघुवंश०)	सुवर्ण की खराई-खोटाई अग्नि में ही परखी जाती है ।
अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः ।	संसार में धन ही मनुष्य का बन्धु है ।

द्वितीय परिशिष्ट

हिन्दी सूक्तियों के संस्कृत पर्याय

हिन्दी	संस्कृत
अंगूर खट्टे हैं।	१ अलभ्य हीनमुच्यते। २ दुष्प्राप्या द्राक्षा अम्ला।
अंडा सिखावे बच्चे को तू चीं-चीं मत कर।	१ बालः शिक्षयति वृद्धान्। २ वृद्धानां मन्त्री बालः।
अंडे सेवे कोई बच्चे लेवे कोई।	पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये।
अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे हो जायेंगे।	स्थिरे मूले ध्रुवा वृद्धिः।
अन्तःकरण के अनुसार आचरण करे।	मनःपूतं समाचरेत् (मनु०)
अँतड़ी में रूप बुकची में छब्ब।	१ रूपमन्ने छविर्वसने। २ निराहारे कुतो रूपं निर्वसने च कुतश्छविः।
अंत बुरे का बुरा।	१ दुरितस्य दुःखम्। २ दुष्टस्य कष्टम्।
अंत भले का भला।	१ भद्रस्य भद्रम्। २ शुभस्य शुभम्।
अंत मता सो गता।	अन्ते मतिः सा गतिः।
अंदर से काले बाहर से गोरे।	१ विषकुम्भाः पयोमुखाः। २ अन्तः शाक्ता बहिः शैवाः।
अंधा क्या चाहे? दो आँखें।	इष्टलाभः परं सुखम्।
अंधा क्या जाने बसंत की बहार?	१ गुणान्वमन्तस्य न वेत्ति वायसः। २ लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति? ३ न भेकः कोकनन्दिनीकिञ्जल्कास्वादकोविदः। (कथासरित्सागर)
अंधा गुरु बहरा चेला, दोनों नरक में ठेलमठेला।	अन्धस्यान्धानुलग्नस्य विनिपातः पदे पदे।
अंधा बाँटे रेवड़ियाँ फिर फिर अपनों ही को।	विवेकरहितः खलु पक्षपाती।
अंधी पीसे कुत्ता खाय।	पश्येह मधुकरीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यन्ये। (पंचतन्त्र)
अंधे के आगे रोवे अपने दीदे खोवे।	१ अरण्ये रोदनं व्यर्थं भस्मनि हुतमेव च। २ अरण्यरुदितमिव निष्प्रयोजनम्।
अंधे के हाथ बटेर लगना।	अन्धस्य वर्तकीलाभः।
अंधे को अंधा कहने से बुरा मानता है।	न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
अंधे को अँधेरे में बड़े दूर की सूझी।	बालिशस्य मतिस्फूर्तिः।
अंधे को सब अंधे ही दीखते हैं।	१ पित्तेन दूने रसने सिताऽपि तिक्तायते। २ पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम्।
अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा।	नृपे मूढे नयः कुतः?
अंधों ने गाँव लूटा दौड़ियो रे लँगड़े।	१ अयं वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः। २ अन्धैर्लुण्ठितो ग्रामः पङ्गो रे धाव सत्वरम्।

अंधों में काना राजा।	१ निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते। २ यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।	उत्पतितोऽपि चणकः शक्तः किं भ्राष्ट्रं भङ्क्तुम्?
अक्ल बड़ी कि भैंस?	१ बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्। (पंचतन्त्र) २ मतिरेव बलाद् गरीयसी। ३ प्रज्ञा नाम बलं श्रेष्ठं निष्प्रज्ञस्य बलेन किम्?
अक्लमंद को इशारा, अहमक को फटकारा।	विज्ञाय संज्ञा, मूढाय दण्डः।
अक्लमंद को इशारा ही काफी है।	१ अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः। २ परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः।
अच्छी बात बच्चे की भी मान लेनी चाहिए।	युक्तियुक्तं प्रगृह्णीयाद् बालादपि विचक्षणः।
अच्छी वस्तु स्वयमेव प्रसिद्ध हो जाती है।	न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते।
अच्छी संतान सुख की खान।	१ मतति शुद्धवंश्या हि परत्रेह च शर्मणे। (रघु०) २ सुखमूलं सुसन्ततिः।
अटका बनिया देय उधार।	परवशैः किं न क्रियते?
अटकेगा सो भटकेगा।	संशयात्मा विनश्यति।
अढ़ाई पाव कणकी चौबारे रसोई।	निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प। अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प।	अति सर्वत्र वर्जयेत्।
अदले का बदला।	१ कृते प्रतिकृतिं कुर्यात्। २ भद्रो भद्रे खलः खले। ३ शठे शाठ्यं समाचरेत्।
अधजल गगरी छलकत जाय।	अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
अधिकार बड़ा है न कि बल।	स्थानं प्रधानं न बलं प्रधानम्। (पंचतन्त्र)
अधेला न दे, अधेली दे।	१ अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्। (रघुवंश) २ पणमदत्त्वा निष्कं प्रयच्छति।
अनहोनी होती नहीं होनी होवनहार।	न यद् भावि न तद् भावि भावि चेन्न तदन्यथा। (हितोपदेश)
अपना अपना गैर गैर।	निजो निज एव परः परश्च।
अपना ढेंगर न देखे दूसरों की फुल्ली निहारे।	खलः सर्षपमात्राणि परच्छिद्राणि पश्यति। आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति॥ (महाभारत)
अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।	१ जठरं को न बिभर्ति केवलम्? २ काकोऽपि जीवति चिराय बलिञ्च भुङ्क्ते।
अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष?	१ आत्मीया सदोषा चेत् को लाभः परदूषणे? २ समले सुवर्णे निकषो न निन्द्यः।
अपना वही जो आए काम।	१ स एव बन्धुः सहायको यः। २ परोऽपि हितवान् स्वीयः।
अपना हाथ जगन्नाथ।	स्वातन्त्र्यमिष्टप्रदम्।
अपनी अपनी डफली अपना अपना राग।	स्वार्थसिद्धौ हि ये मग्नास्तेषां साम्मत्यं कुतः?

अपनी इज़्ज़त अपने हाथ।	१ लोके गुरुत्व विपरीतता वा स्वचेष्टितान्येव नर नयन्ति। २ निजाधीनं स्वगौरवम्।
अपनी करनी पार उतरनी।	कृत्ये स्वकीये. खलु सिद्धिलब्धिः।
अपनी ग़रज़ बावली होती है।	१. अर्थार्थी जीवलोकोऽय श्मशानमपि सेवते। (पचतत्र) २. किन्न कुर्वन्ति स्वार्थिन· ?
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।	निजमदननिविष्ट श्वा न सिंहायते किम् ?
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं कहता।	१. सर्व स्वात्मीय कान्त पश्यति। २ न हि कश्चिन्निजं तक्रमम्लमित्यभिभाषते।
अपनी देह किसे प्यारी नहीं ?	(अशेषदोषदुष्टोऽपि) कायः कस्य न वल्लभ ? (पंचतत्र)
अपनी नाक कटे तो कटे दूसरों का सगुन तो बिगड़े।	आत्मक्षत्याऽपि विघ्नन्ति परकर्माणि दुर्जना।
अपनी पगडी अपने हाथ।	दे 'अपनी इज्जत अपने हाथ'।
अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दीखता है।	स्वमति परधनञ्चैव वृद्धवृद्धं हि दृश्यते।
अपने गरीवान में मुँह डाल कर देखना।	विरूपो यावदादर्शे पश्यति नात्मनो मुखम्। मन्यते तावदात्मानमन्येभ्यो रूपवत्तरम्। (महाभारत)
अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता।	दे 'अपनी छाछ को...'
अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ा मारना।	१ दु·खसदन स्वदोषेण। २.स्वकरेणागारकर्षणम्।
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू।	इन्द्रोऽपि लघुता याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः।
अपयश से मौत भली।	सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। (गीता)
अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।	१. निर्वाणदीपे किमु तैलदानम् ? २. गतस्य शोचन नास्ति। ३. गत शोचन्त्यपण्डिता.। ४ गते शोको निरर्थकः।
अभी दिल्ली दूर है।	अद्यापि दूरतः सिद्धि.।
अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी।	धनाढ्यो रक्षति प्राणान् निर्धनस्त्यक्तुमिच्छति।
अरहर की टट्टी गुजराती ताला।	पाषाणे मृगमदलेप.।
अलख़ामोशी नीमरज़ा।	मौन स्वीकारलक्षणम्।
अल्पाहारी सदा सुखी।	अल्पाहारी सदासुखी।
अशरफ़ियाँ लुटीं, कोयलों पर मुहर।	१. निष्कापव्यय, पणरक्षणम्। २. चन्दनदाह·, शमीरक्षा।
अस्सी की आमद चौरासी का ख़र्च।	१. अल्प आयो व्ययो महान्। २. न्यूनायेऽधिकव्ययः।
आँख और कान में चार अंगुल का फ़र्क़ होता है।	श्रवणे दर्शने चैव वर्तते महदन्तरम्।
आँख न दीदा काढ़े कसीदा।	अन्धो वीक्षितुमुद्यत।
आँख से दूर दिल से दूर।	१. दूरता स्नेहनाशिनी। २. नयनदूरं मनोदूरम्।
आँखों के अंधे नाम नयन-सुख।	१ यस्य पार्श्वे धनन्नास्ति सोऽपि धनपाल उच्यते। २ वित्तेन हीनो नाम्ना नरेशः।

	३ ज्ञानेन हीनोऽपि सुबोधर्मश ।
	४ गुणैर्विरहितोऽपि गुणाकराख्य ।
आँधी के आम ।	अल्पार्धद्रव्यम् ।
आई को कौन टारे ?	१ अपि धन्वन्तरिर्वैद्य किं करोति गतायुषि ?
	२ मृत्योर्नास्ति भेषजम् ।
आई तो ईद बरात न आई तो जुम्मेरात ।	सघृत भोजन वित्ते, दारिद्र्ये शुष्कमेव च ।
आई थी आग लेने मालिक बन बैठी ।	१ सूचीप्रवेशे मुसलप्रवेश ।
	२ अनलार्थं समायाता सञ्जाता गृहस्वामिनी ।
आई है जान के साथ जायगी जनाज़े के साथ	जीवनभगिनी रुजा ।
आए की खुशी न गए का गम ।	१ सन्तुष्ट सदासुखी ।
	२ लाभालाभयो सम ।
आग पानी का मेल कैसे हो सकता है ?	१ सामानाधिकरण्य हि तेजस्तिमिरयो कुत ?
	२ जलानलयो सङ्गम कुत ?
आग लगने पर कूआँ नहीं खोदा जाता ।	१ सन्दीप्ते भवने तु कूपखनन प्रत्युद्यम कीदृश ? (नीतिशतक)
	२ न कूपखनन युक्त प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।
आग लगा पानी को दौड़े ।	१ अन्तदुष्ट क्षमायुक्त सर्वानर्थकर किल ।
	२ विषकुम्भ पयोमुख ।
आगे कूआँ पीछे खाई ।	इत कूपस्ततस्तटी ।
आगे जगह देखकर पाँव रखा जाता है ।	१ दृष्टिपूत न्यसेत्पादम् । (मनु०)
	२ नासमीक्ष्य पर स्थान पूर्वमायतनं त्यजेत् ।
आगे दौड़ पीछे चौड़ ।	पूर्वाधीन तु विस्मृत्य अग्रस्थं प्रत्युत्सुक ।
आगे नाथ न पीछे पगहा, सब से भला कुम्हार का गदहा ।	का चिन्ता बन्धुहीनस्य ?
आज का काम कल पर मत छोड़ो ।	यदद्य कार्यं न श्व कुर्यात् ।
आदत सिर के साथ जाती है ।	अभ्यासो हि दुस्त्यज ।
आदि बुरा अंत बुरा ।	१ दुरारम्भो दुरन्त स्यात् ।
	२ दुर्बीजात्सुफलं कुत ?
आधा तीतर आधा बटेर ।	विषमयोगो न युज्यते ।
आधी छोड़ सारी को धावे, ऐसा डूबे थाह न पावे ।	यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते । ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव तु ॥
आप मरे जग परलै ।	१ आत्मप्रलये जगत्प्रलय ।
	२ आत्मनाशे जगन्नाश ।
आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता ।	१ नात्मप्रयत्न विना सिद्धि ।
	२ यावन्न निधनं तावन्न स्वर्ग ।
आप हारे बहू को मारे ।	निजापराधे भृत्यस्य भर्त्सनम् ।
आ बला, गले लग ।	विपत्ते ! परिष्वजस्व माम् ।
आमों की कमाई नींबू में गँवाई ।	इतो लाभस्तत क्षति ।
आम के आम गुठलियों के दाम ।	एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा ।
आम बोओ आम खाओ ।	यादृशमुप्यते बीज तादृशं फलमाप्यते ।
आयगा सो जायगा राजा रंक फ़कीर ।	जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ।
आरत काह न करइ कुकर्मू ।	आर्तो जन किन्न करोति पापम् ।

आलस्य बुरी बला है।	१ अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेक न गच्छति । २ आलस्य हि मनुष्याणा शरीरस्थो महारिपु ।
आलिम वह क्या अमल न हो जिसका किताब पर।	य क्रियावान् स पण्डित ।
आस पास बरसे दिल्ली पडी तरसे।	सस्पृहा निर्धना दृष्टा नि स्पृहाणा धन बहु ।
आस्मा न पर थूका अपने सिर।	पङ्को हि नभसि क्षिप्त क्षेप्तु पतति मूर्धनि ।
आस्मान से गिरा खजूर में अटका।	इतो मुक्तस्ततो बद्ध ।
आहारे व्यौहारे लज्जा न कारे।	आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्ज सुखी भवेत्।
इक चुप हज़ार सुख।	मौन सर्वसुखप्रदम्।
इक नागिन अरु पंख लगाई।	दे 'एक तो करेला '
इधर कूआँ उधर खाई।	१ इतोऽन्धकूपस्ततो दन्दशूक । २ इत कूपस्ततस्तटी।
इधर बाघ उधर खाई।	इतो व्याघ्रस्ततस्तटी।
इलाज लाख, एक पथ्य।	पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणै ?
इश्क नाज़ुक मिज़ाज है बेहद। अक्ल का बोझ उठा नहीं सकता॥	अनुरागान्धमनसां विचारसहता कुत । (कथा.)
इस घर का बाबा आदम ही निराला है।	गृहमेतद् विलक्षणम्।
इस हाथ दे उस हाथ ले।	१ इतो देय ततो ग्राह्यम्। २ त्वरित फल कर्मणाम्।
ईंट का जवाब पत्थर से।	१ शठे शाठ्य समाचरेत्। २ कृते प्रतिकृतिं कुर्यात्। (चाणक्यनीति)
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो किसी वस्तु की कमी नहीं रहती।	१ प्रसन्ने हि किमप्राप्यमस्तीह परमेश्वरे । २ विधिर्हि घटयत्यर्थानचिन्त्यानपि समुख ।(कथा)
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता।	श्रीकृष्णस्य कृपालवो यदि भवेत् क कं निहन्तु क्षम ।
ईश्वर की निगाह सीधी हो तो शत्रु भी मित्र बन जाता है।	सानुकूले जगन्नाथे विप्रिय सुप्रियो भवेत्।
ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया।	दैवी विचित्रा गति ।
ईश्वर के नियम अटल हैं।	ध्रुवा परमेशनियमा ।
ईश्वर के रंग (खेल) न्यारे हैं।	१ विधेर्विचित्राणि विचेष्टितानि। २ अहो विधेरचिन्त्यैव गतिरद्भुतकर्मणाम्।(कथा.) ३ अहो नवनवाश्चर्यनिर्माणे रसिको विधि । (कथा०) ४ दैवी विचित्रा गति । ५ मधुरविधुरमिश्रा सृष्टयो हा विधातु ।
ईश्वर के सिवा कोई निर्दोष नहीं।	त्रिभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति।
ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए।	रामधाम शरणीकरणीयम्।
ईश्वर से क्या दूर है?	किं हि न भवेदीश्वरेच्छया ?
उखली में सिर दिया तो मूसलों का डर क्या?	रणे योद्धु प्रवृत्तस्य शत्रुशस्त्रात्तु किं भयम् ।
उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई ?	१ निर्लज्जस्य कुतो भयम् ? २ मानहीनमनुष्याणा लोकोऽय किं करिष्यति ?
उदार मनुष्य पात्र का विचार नहीं करते।	मेघो गिरिजलधिवर्षी च।
उधार का खाना फूस का तापना बराबर है?	उद्धारभोजनं तृणतापसेवनम्।

उधार दिया गाहक खोया।	उद्धार कौतुलोपक।
उधार मुहब्बत की कैंची है।	उद्धार स्नेहनाशक।
ऊधो मन माने की बात।	तस्य तदेव हि मधुर यस्य मनो यत्र संलग्नम्।
उन्नीस-बीस का तो फ़र्क़ होता ही है।	समयोरप्यल्पमन्तरम्।
उपजहिं एक संग जल माहीं, जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं।	न सोदरास्तुल्यगुणा भवन्ति।
उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।	दोषी पृच्छकमवक्षिपेद्।
उलटे बाँस बरेली को।	गङ्गां हिमाचलं नयति।
ऊँट के मुँह में जीरा।	१ दाशेरस्य मुखे नीरं। २ न स्तोकेन घस्मरतृप्ति।
ऊँट की चोरी और झुके झुके।	न महान्ति कर्म्माणि भवन्ति गूढम्।
ऊँची दुकान फीका पकवान।	निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाडम्बरो महान्।
ऊँट घोड़े बहे जायें, गधा कहे कितना पानी?	यत्र शूरगनिर्नास्ति कातर किं करिष्यति?
ऊँट तो कूदे बोरे भी कूदे।	नृत्यति पिनाकपाणौ नृत्यन्त्यन्येऽपि भूतवेताला।
ऊँट रे ऊँट तेरी कौन सी कल सीधी?	१ सर्वपापमयो जनः। २ सर्वदोषयुतो नरः।
ऊँटों के विवाह में गधे गवयै।	उष्ट्राणां विवाहे तु गीतं गायन्ति गर्दभा।
ऊधो का लेना न माधो का देना।	निश्चिन्तो नरः सुखी।
ऊपर से पानी देना नीचे से जड़ काटना।	१ अन्तदुष्ट क्षमायुक्त सर्वोऽनर्थकर किल। २ प्लावयन्नपि वृक्षांघ्रिं नदीवेगो निकृन्तति। ३ अन्त शत्रु बहि सुहृद्।
एक अंडा वह भी गंदा।	काकमांसं शुनोच्छिष्टमल्पं तदपि दुर्लभम्? तत्पुनः।
एक अनार सौ बीमार।	एकं कपोतपोतं श्येना शतशोऽभिधावन्ति।
एक और एक ग्यारह होते हैं।	१ संहतिः कार्यसाधिका। २ समवायो दुरत्ययः ३ एकचित्ते द्वयोरेव किमसाध्यं भवेदिति। (कथासरित्सागर)
एक कहो दस सुनो।	गाल्या उत्तरं दश।
एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना?	अवधानरहितं श्रवणं हि व्यर्थम्।
एक के दूने से सौ के सवाए भले।	विक्रयाधिक्ये लाभाधिक्यम्।
एक चुप हज़ार को हराए।	१ मौनं सर्वार्थसाधनम्। २ मौनं विश्वनिद् ध्रुवम्।
एकता में बड़ी शक्ति है।	१ समवायो दुरत्ययः। २ संहतिः कार्यसाधिका।
एक तो करेला कड़ुआ दूसरे नीम चढ़ा।	१ अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः। २ मर्कटस्य सुरापानं ततो वृश्चिकदंशनम्।
एक तो चोरी दूसरे सीनाज़ोरी।	अपराधित्वेऽपि धृष्टता।
एक थैली के चट्टे-बट्टे।	दुष्टत्वे सर्वे समा।
एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे दिन बलाए जान।	१ प्राघुणिको दिनद्वयम्, यमदूतस्ततः परम्। २ प्राघुणपूजा दिनद्वयम्।
एक नज़ीर न सौ नसीहत।	कृतिरुपदेशशतात् वरीयसी।
एक पंथ दो काज।	१ एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा। (महाभाष्य) २ देहल्या दीप।
एक परहेज़, न सौ हकीम।	पथ्यं भिषक्शतात् वरम्।
एक पुण्य दूसरे फलियाँ।	१ एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा। २ एकं कृत्यं लोकपरलोकफलदम्।

एक बार मरना फिर मरने से क्या डरना ?	क्षणविध्वंसिनि काया का चिन्ता मरणे रणे ।
एक खोटी सौ कुते ।	दे 'एक अनार सौ बीमार' ।
एक मछली सारे जल को गंदा करती है ।	एकेनैव कुपुत्रेण मलिनं जायते कुलम् ।
एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं।	१ नैकस्मिन्नेव कान्तारे सिंहयोर्वसतिः क्वचित् । २ बलवतोर्नैकत्र शासनम् ।
एक हमाम में सब नगे ।	सर्वे सहवासिनः समाः ।
एक हाथ से ताली नहीं बजती ।	१ न ह्येकेन हस्तेन तालिका सम्प्रपद्यते । (पंचतंत्र) २ नैकाकी वरदे क्षम ।
एक ही लकडी से सब को हाँकना ।	योग्यायोग्ययोर्विवेकाभावः ।
एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ।	एकलक्ष्ये सर्वसिद्धिर्लक्ष्याधिक्येन काचन ।
ऐब करने को भी हुनर चाहिए ।	पाप कौशलपेक्षि ।
ऐसे बूढे बैल को कौन बाँध भुस देय ।	वृत्तिहीनाय वृद्धाय को नरो भोजनं दद्यात् ।
ओछे की प्रीत बालू की भीत ।	अस्थिरं क्षुद्रसौहृदम् ।
ओछे के मुँह लगना अपनी इज्जत खोना ।	क्षुद्रसंगनिर्मानिनाशिनी ।
ओस चाटे प्यास नहीं बुझती ।	१ न तारालोकेन तमिस्रनाशः । २ प्रालेयलेहनेन तृषाविनाशः ।
और बात खोटी सही दाल रोटी ।	अन्नपानं परित्यज्य सर्वमन्यन्निरर्थकम् ।
कडवी दवाई का फल मीठा ।	यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
कडवे बोल न बोल ।	मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।
कन्या पराया धन होती है ।	अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अभिज्ञान०)
करमगति टारे नाहि टरे ।	१ भवितव्यं भवत्येव कर्मणामीदृशी गतिः । २ भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र । (अभिज्ञान०)
करम प्रधान विस्व रचि राखा, जो जस करहि सो तस फल चाखा ।	स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः । दे 'जैसी करनी वैसी भरनी' ।
कर्मों की गति न्यारी ।	१ चित्रा गतिः कर्मणाम् । २ गहना कर्मणो गतिः ।
कल की छोडो आज की बात करो ।	वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति विचक्षणाः ।
कह रहीम परकाज हित संपति सँचहि सुजान ।	१ आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव । (रघु) २ आपन्नार्तिप्रशमनफलाः सम्पदो ह्युत्तमानाम् । (रघु) ३ परोपकाराय सतां विभूतयः ।
का कर अद्वितीय जन यद्यपि होय समर्थ ।	असहायः समर्थोऽपि तेजस्वी किं करिष्यति । (पंचतन्त्रम्) सबलोऽप्येकलोऽबलः ।
काल सबको खा जाता है ।	सर्वं कालवशेन नश्यति ।
काला अक्षर भैंस बराबर ।	निरक्षरभट्टाचार्यः ।
काठ की दिल्ली तो बन गई परन्तु म्याऊँ कौन करेगा ?	सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् ।
कुत्ता कुत्ते का वैरी ।	१ भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते । २ याचको याचकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते ।
कुत्ते की दुम बारह बरस नली में रखो तो भी टेढी की टेढी ।	तस्मीकृत इव नीचः कौटिल्यं नैव विजहाति ।

क्या बूढ़ा क्या जवान मौत के लिए सब समान	मृत्योः सर्वत्र तुल्यता ।
खूँटे के बल बछड़ा कूदे ।	अन्यस्माल्लब्धपदो नीचः प्रायेण दुःसहो भवति ।
दुल्हे का गवाह मेंढक ।	अहो रूपमहो ध्वनिः ।
गंगा गए गंगाराम जमुना गए जमुनादास ।	भजन्ति वैतसीं वृत्तिं मानवाः कान्वेदिनः ।
ग़रीब को ख़ुदा की मार ।	दैवो दुर्बलघातकः ।
ग़रीब को संसार सूना ।	१ सर्वं शून्यं दरिद्रस्य । २ सर्वशून्या दरिद्रता ।
ग़रीब को सुख कहाँ ?	१. निर्धनस्य कुतः सुखम् ? २ निर्धनता सर्वापदामास्पदम् ।
गुणी गुणों से आदर पाते हैं, आयु तथा लक्षणों से नहीं ।	गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः ।
गुरु बिना गत नहीं ।	विना हि गुर्वादेशेन सम्पूर्णाः सिद्धयः कुतः ?
ग़ुस्सा बड़ा चंडाल है ।	१. धर्मक्षयकरः क्रोधः । २ क्रोधो मूलमनर्थानाम् ।
गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाता है ।	अपेक्षन्ते हि विपदः किं पेलवमपेलवम् ?
घर का जोगी जोगड़ा बाहर जोगी सिद्ध ।	स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदवज्ञा ।
घोड़ों का घर कितनी दूर ?	किं दूरं व्यवसायिनाम् ?
चुपड़ी और दो दो ?	यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम् ।
चमड़ी जाय दमड़ी न जाय ।	प्राणेभ्योऽप्यर्थमात्रा हि कृपणस्य गरीयसी। (कथा०)
चार दिन की चाँदनी और फिर अँधेरी रात ।	तिष्ठत्येकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्णमण्डलः ।
जगत् भेड़-चाल है ।	गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः ।
जब बुरे दिन आते हैं बुद्धि मारी जाती है ।	१ विनाशकाले विपरीतबुद्धिः । २ प्रायः समापन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिना भवन्ति ।
जब भाग्य ही सीधा न हो तो काम कैसे सिद्ध हो ।	१ वक्रे विधौ वद कथं व्यवसायसिद्धिः । २ वामे विधौ न हि फलन्त्यभिवाञ्छितानि ।
जब लग पैसा गाँठ में तब लग ताको यार	अम्बुगर्भो हि जीमूतश्चातकैरभिनन्द्यते । (रघु०)
ज़बाँ शीरीं मुल्क गीरी ।	कः परः प्रियवादिनाम् ?
ज़रूरत के वक्त गधे को भी बाप कहा जाता है ।	महानपि प्रसङ्गेन नीचं सेवितुमिच्छति ।
जहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि ।	कवयः किं न पश्यन्ति ?
जान किसे प्यारी नहीं ।	कायः कस्य न वल्लभः ।
जान है तो जहान है ।	आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।
जिसका काम उसी को साजे, और करे तो डंडा बाजे ।	अश्वः कस्य नाश्नोति नौरवाहस्य न यान । (कथासरित्सागर)
जिसका खाएँ उसी का गीत गाएँ ।	को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ?
जिसकी लाठी उसकी भैंस ।	औचित्यं गणयति को विशेषकामः ।
जिसके घर दाने उस के कमले (मूर्ख) भी स्याने ।	लक्ष्मीवन्तः गृहे स्वे भवन्ति प्रायो जगद्वन्द्याः ।
जितना गुड़ डालोगे उतना मीठा होगा ।	अधिकस्याधिकं फलम् ।
जितने मुँह उतनी बातें ।	नका वाणी मुखे मुखे ।
जिनको कछू न चाहिए वेई शाहंशाह ।	सुखमास्ते निःस्पृहः पुरुषः ।

जीभ रोगों की जड़ है।	रसमूला हि व्याधय ।
जीवन का क्या भरोसा है ?	अस्थिर जीवित लोके ।
जैसा कारण वैसा कार्य।	१ यथा बीज तथाङ्कुर । २ यथा वृक्षस्तथा फलम्। ३ यादृशास्तन्तव काम तादृशो जायते पट ।
जैसा मुँह वैसी चपेड।	पात्रानुसार फलम्।
जैसी करनी वैसी भरनी।	१ भद्रकृतप्राप्नुयाद् भद्र, अभद्रञ्चाप्यभद्रकृत्। (कथा०) २ भद्रमभद्र वा कृतम् त्मनि कल्प्यते। (कथा०) ३ यो यद्वपति बीज हि लभते सोऽपि तत्फलम्। ४ कर्मायत्त फल पुसाम्। दे 'करम प्रधान '
जैसी सगत वैसी रगत।	१ ससर्गजा दोषगुणा भवन्ति। २ प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुण ससर्गतो जायते।
जैसे को तैसा।	१ शठे शाठ्य समाचरेत्। २ आजव हि कुटिलेषु न नीति । (नैषध)
जो अपनी सहायता करते हैं ईश्वर भी उनकी सहायता करता है।	दैवमेव हि साहाय्य कुरते सत्त्वशालिनाम्।
जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।	नीचो वन्ति भ कुरुते वदति न साधु करोत्येव।
जो तुव को काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल।	क्षार पिवति पयोधेवर्षत्यम्भोधरो मधुरमम्भ ।
जो पैदा हुआ सो मरेगा।	१ क कालस्य न गोचरान्तरगत । २ जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु । (गीता) ३ मरण प्रकृति शरीरिणाम्। ४ उत्पद्यन्ते विलीयन्ते।
जो सुख छज्जू के चौबारे, वह न बलख न बुखारे।	प्राणिनां हि निकृष्टाऽपि जन्मभूमि परा प्रिया। (कथा०)
जो है जिसको भावता सो ताही के पास।	न हि विचलति मैत्री दूरतोऽपि स्थितानाम्।
ज्ञान से बड़ा कोई सुख नहीं।	नास्ति ज्ञानात्पर सुखम्।
डूबा बस कबीर का उपजे पूत कमाल।	कुपुत्रेण कुल नष्टम्।
तृष्णा बूढ़ी नहीं होती।	तृष्णैका तरुणायते।
थोथा चना बाजे घना।	१ अर्द्धो घटो घोषमुपैति नूनम्। २ गुणैर्विहीना बहु जल्पयन्ति। ३ अल्पज्ञानी महाभिमानी। ४ न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग् यादृक्कांस्ये प्रजायते।
दमड़ी की बुढ़िया टका सिरमुड़ाई।	१ न कान्तस्य कृते नातु युक्ता मुक्तामणे क्षति । (कथा०) २ रत्नव्ययेन पाषाण को हि रक्षितुमर्हति? (कथा)
दया धर्म का मूल है।	१ धर्मस्य मूल दया। २ को धर्म कृपया विना ?
दिल दिल का साक्षी होता है।	विमल कलुषीभवच्च चेत कथयत्येव हितैषिण रिपु वा।
दुधार गाय की लात भली।	कादम्बरीजस्य कटुतापि नितान्तरम्या।
दूध का जला छाछ भी फूँक कर पीता है।	पयसा दग्धे तक्र फूत्कृत्य पामर पिबति।
दूर के ढोल सुहावने।	दूरत पर्वता रम्या ।
धन जोबन का गरब न कीजै।	१ अस्थिरे धनयौवने। २ किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि च।

धर्महीन नर पशू समाना ।	धर्मेण हीना पशुभि समाना ।
न इधर के रहे न उधर के रहे ।	१ इनो भ्रष्टस्ततो भ्रष्ट । २ इद च नास्ति न पर च लभ्यते । ३ उभयतो भ्रष्ट ।
नदी नाव सजोगी मेले ।	असंभाव्या अपि नृणा भवन्तीह समागमा । (कथा०)
नहिं अस कोउ जग माहीं, प्रभुता पाइ जाहि मद माहीं ।	ऋद्धिश्चित्तविकारिणी ।
नहीं यह जन्म बारबार ।	भस्मीभूतस्य भूतस्य (देहस्य) पुनरागमनं कुत ?
नहीं शील सम गहना दूजा ।	१ शील पर भूषणम् । २ शील हि सर्वस्य नरस्य भूषणम् ।
न होने की अपेक्षा थोड़ी अच्छी ।	१ बधिरान्मन्दकर्ण श्रेयान् । २ अभावादल्पता वरा ।
निरन्तर ख़र्च से क़ारूँ का ख़ज़ाना भी समाप्त हो जाता है ।	भक्ष्यमाणो निरदय सुमेरुरपि हीयते ।
पर उपदेस कुसल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।	१ परोपदेशवेलाया शिष्टा सर्वे भवन्ति वै । २ परोपदेशे पाण्डित्य सर्वेषां सुकर नृणाम् । धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मन ॥
पर घर कबहुँ न जाइए जात घटत है जोत ।	परसदननिविष्ट को लघुत्वं न याति ?
परहित सरिस धरम नहिं भाई ।	परोपकारज पुण्य न स्यात् क्रतुशतैरपि ।
पराधीन सपने सुख नाहीं ।	कष्ट खलु पराश्रय ।
परोपकारी लोग स्वार्थ की चिन्ता नहीं करते ।	१ परहितनिरतानामादरो नात्मकार्ये । २ परार्थप्रतिपन्ना हि नेक्षन्ते स्वार्थमुत्तमा ।(कथा)
पहले तोलो पीछे बोलो ।	युक्त न वा युक्तमिदं विचिन्त्य वदेद् विपश्चिन्न हठोऽनुरोधात् ।
पाप का भांडा फूट ही जाता है ।	नाधर्मश्चिरमृद्धये । (कथा)
पैसा पापियों को पूज्य बना देता है ।	चाण्डालोऽपि नर पूज्यो यस्यास्ति विपुल धनम् ।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहिं बोलें ।	वृक्ष क्षीणफल त्यजन्ति विहगा ।
पैसा हाथ की मैल है ।	उदारस्य तृण वित्तम् ।
पैसे से दोष भी गुण बन जाते हैं ।	मातर्लक्ष्मि तव प्रमादवशतो दोषा अपि स्युर्गुणा ।
प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं ।	१ कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वित ? २ यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ।
प्राण जायँ पर धर्म न जाई ।	त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणानपि न सत्पथम् । (कथा०)
प्राण जायँ पर वचन न जाई ।	न चलति खलु वाक्य सज्जनाना कदाचित् ।
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद ?	१ न भेक कोकनदिनीकिञ्जल्कास्वादकोविद । २ किमिष्टमन्न खरसूकराणाम् ?
बड़ों का मार्ग ही ठीक मार्ग है ।	महाजनो येन गत स पन्था ।
बड़ों की बड़ी बातें ।	अहह महतां निस्सीमानश्चरित्रविभूतय ।
बड़ों की संगत से बहुत लाभ होता है ।	ध्रुव फलाय महते महतां सह सगम । (कथा०)
बढ़ी हुई (आयु) के इलाज हैं घटी हुई के नहीं ।	प्रतिकारविधानमायुष सति शेषे हि फलाय कल्पते ।
बदनाम जो होंगे तो क्या नाम न होगा ?	येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरुषो भवेत् ।
बहुत निबल मिलि बल करैं, करैं जु चाहैं सोय ।	बहूनामप्यसाराणां संहति कार्यसाधिका ।

बातों से काम नहीं चलता।	न नश्यति तमो नाम कृतया दीपवार्तया।
बाप पर बेटा तुख्म पर घोड़ा।	कार्यं निदानाद्धि गुणानधीते। (नैषध०)
बिन घरनी घर भूत का डेरा।	१ प्रियानन्दो कृत्स्नं किल जगदरण्य हि भवति।
	२ भार्याहीन गृहस्थस्य शून्यमेव गृह मतम्।
	३ धिग्गृह गृहिणीशून्यम्।
बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।	१ सहसा विदधीत न क्रियामविवेक परमापदां पदम्।
	२ सहसा हि कृत पाप (कार्य्यं) कस्य ना भूद्वि पत्तये। (कथा०)
बीती बात का शोक न करना चाहिए।	१ गतस्य शोचन नास्ति।
	२ गते शोको निरर्थक ।
	३ गत शोचन्त्यपण्डिता ।
बुरी संगत का बुरा फल।	असन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता। (किरात०)
बूँद-बूँद पड़ने से घड़ा भर जाता है।	जलबिन्दुनिपातेन क्रमश पूर्यते घट ।
भले काम में देर कैसी ?	शुभस्य शीघ्रम्।
भलों का संग करना चाहिए।	१ सद्भि कुर्वीत सगतिम्।
	२ सद्भिरेव सहासीत।
भाग्य का मारा जहाँ जाता है विपत्ति भी वहीं उसे जा घेरती है।	१ प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रापदां भाजनम्।
	२ प्रायो गच्छति यत्र दैवहतकस्तत्रैव यान्त्या पद । (नीति०)
भूख में सब कुछ स्वादु लगता है।	क्षुधातुराणां न रुचिर्न पक्वम्।
भैंस के आगे बीन बजे भैंस खड़ी पगुराय।	१ अन्धस्य दीप ।
	२ बधिरस्य गीतम्।
मन के हारे हार है मन के जीते जीत।	१ जिते चित्ते जित जगत्।
	२ जितचित्तेन सर्वं हि जगदेतद्विजीयते।
	३ जित जगत्केन ? मनो हि येन। (शंकराचार्य)
मन चंगा तो कठौती में गंगा।	निवृत्तरागस्य गृह तपोवनम्।
मनस्वी लोग सुख-दुःख की परवाह नहीं करते।	मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःख न च सुखम्।
मरता क्या न करता।	१ बुभुक्षित किन्न करोति पापम् ?
	२ क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति।
	३ दारिद्र्यदोषेण करोति पापम्।
महात्माओं के मन, वाणी तथा कर्म में समानता होती है।	मनस्येक वचस्येक कर्मण्येक महात्मनाम्।
माँगन गए सो मर गए।	१ याचनान्त हि गौरवम्। २ याचनान्मरण वरम्।
	३ वर हि मानिनो मृत्युर्न दैन्य स्वजनाग्रत । (कथा०)
	४ कोऽर्थी गतो गौरवम् ?
मित्र की पहचान विपद में ही होती है।	१ हेम्न सलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धि श्यामिकापि वा। (रघु०)
	२ मित्रस्य निकषो विपत्।
	३ स सुहृद् व्यसने य स्यात्।

मुक्ति तथा बंधन का कारण मन ही है।	मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयो ।
मूरख का बल मौन।	बल मूर्खस्य मौनित्वम्।
मूर्ख लोग भेड़ चाल चलते हैं।	मूढ परप्रत्ययनेयबुद्धि । (कालिदास)
मूर्खों की संगत से कौन सुख पाता है?	मूर्खैर्हि संग कस्यास्ति शर्मणे ? (कथा०)
मेरे मन कछु और है बिधना के कछु और।	को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्ति कदा कीदृशी ?
मोह की फाँसी बड़ी प्रबल है।	नास्ति मोहसमो रिपु ।
मौत का कोई इलाज नहीं।	अपि धन्वन्तरिर्वैद्य किं करोति गतायुषि ?
योग्य, योग्य के साथ ही फबता है।	चकास्ति योग्येन हि योग्यसगम ।
रखिए मेलि कपूर में हींग न होय सुगंध।	किं मर्दितोऽपि कस्तूर्या, लशुनो याति सौरभम् ?
राम भए जेहि दाहिने सबै दाहिने ताहि।	१ ग्रावाणोऽप्यार्द्रतां सम्यग् भजन्त्यभिमुखे विधौ । २ इशेऽनुकूले सर्वेऽनुकूला । ३ दोषोऽपि गुणतां याति प्रभोर्भवति चेत्कृपा।
राम राम जपना पराया माल अपना।	अहो विश्वास्य वञ्च्यन्ते धूर्तैरुद्यमिरीश्वरा ।
रोग तथा शत्रु को छोटा न समझो।	अल्पीयसोऽप्यामयतुल्यवृत्तेर्महापकाराय रिपोर्विवृद्धि । (किरात)
लालच बुरी बला है।	नास्ति तृष्णासमो व्याधि ।
लोकमर्यादा का पालन अवश्य करना चाहिए।	यद्यपि शुद्ध लोकविरुद्धं नो करणीयं नाचरणीयम् ॥
लोभ पापों की खान।	१ लोभ पापस्य कारणम्। २ लोभमूलानि पापानि। ३ पापानामाकरो लोभ ।
विद्या पुण्य कर्मों से आती है।	पूर्वपुण्यतया विद्या।
विधाता क्रुद्ध हो तो मित्र भी शत्रु बन जाते हैं।	क्रुद्धे विधौ भजति मित्रममित्रभावम्।
विधि का लिखा मिटाया नहीं जा सकता।	१ अभद्रं भद्रं वा विधिलिखितमुन्मूलयति क ? २ यद्वेन ललाटपत्रलिखित तत्प्रोक्षितु क क्षम ? ३ यद्धात्रा निजभालपट्टलिखित तन्मार्जितु क क्षम ? ४ लिखितमपि ललाटे प्रोज्झितु क समर्थ ? ५ शिरसि लिखितं लङ्घयति क ?
शूरवीर मौत की परवाह नहीं करते।	शूरस्य मरणं तृणम्।
शेर भूखा मर जाता है परन्तु घास नहीं खाता।	१ न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्। २ न स्पृशति पल्वलाम्भ पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जर क्वापि। ३ सर्व कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जन सत्त्वानुरूपं फलम्।
संगठन में बड़ी शक्ति है।	पञ्चभिर्मिलितै किं यज्जगतीह न साध्यते । (नैषध)
सत्समागम बड़ा दुर्लभ है।	पुण्यैरेव हि लभ्यते सुकृतिभि सत्संगतिर्दुर्लभा।
संतों के कारज आप सँवारे।	दैवेनैव हि साध्यन्ते सदर्था शुभकर्मणाम्। (कथा)
संतोष सबसे बड़ा धन है।	१ संतोषतुल्य धनमस्ति नान्यत्। २ संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम्। ३ संतोष परमं धनम्।
संतोष सबसे बड़ा सुख है।	१ न तोषात् परमं सुखम्। २ संतोष परम सुखम्।
संसार में धन-सा सम्बन्धी कोई नहीं।	अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धु ।

सच की ही जीत होती है।	सत्यमेव जयते।
सदाचार सब से बड़ा धर्म है।	आचारः परमो (प्रथमो) धर्मः।
सबको काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं।	सर्वे कार्यवशाज्जनोऽभिरमते तत्कस्य को वल्लभः ?
सब लोग गुण तो किसी में नहीं होते।	नैकत्र सर्वो गुणसन्निपातः।
सब सब कुछ नहीं जानते।	१. न हि सर्वविदः सर्वे। २ सर्वे सर्वं न जानन्ति।
साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।	नास्ति सत्यात्परो धर्मः, नानृतात् पातकं परम्।
साँप निकल गया लकीर पीटा करो।	१ चौरे गते वा किमु सावधानम् ? २ पयोगते किं खलु सेतुबन्धः।
सार सार को गहि रहे थोथा देय उड़ाय।	१ सारं गृह्णन्ति पण्डिताः। २ हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्। ३ हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः। (अभिज्ञान)
सारी जाती देखकर आधी लेय बचाय।	१ सर्वनाशे समुत्पन्ने, अर्द्धं त्यजति पण्डितः। २ ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्। ३ त्यजेदेकं कुलस्यार्थे।
सारी रात रोते रहे मरा एक भी नहीं।	परमार्थमविज्ञाय न भेतव्यं क्वचिन्नृभिः। (कथा.)
सास-बहू में मेल कहाँ ?	प्रायः श्वश्रूस्नुषयोर्न दृश्यते सौहृदं लोके।
सीख न दीजै बानरा जो बए का घर जाय।	१ उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये। २ हितोपदेशो मूर्खस्य कोपायैव न शान्तये। (कथा.) ३ मूर्खाणां बोधको रिपुः।
सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता।	१. आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। (नैषध) २ शाम्येत् प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः।
सुख-दुःख सब के साथ लगे हुए हैं।	कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा। नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। (मेघ)
सुत बिना सूना गेह।	१ अपुत्रस्य गृहं शून्यम्। २ पुत्रहीनं गृहं शून्यम्।
सूरदास जाको जासों हित सोई ताहि सुहात।	यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत्तस्य सुन्दरम्।
सोने में सुगन्ध।	केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः, किं पुनस्त्रिदशचाप-लाञ्छितः। (रघु)
स्वभाव नहीं बदलता।	१ यादृशो यः कृतो धात्रा भवेत्तादृश एव सः। २. या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते। ३. स्नापितोऽपि बहुशो नदीजलैर्गर्दभः किमु हयो भवेत् क्वचित् ?
होनहार फिरती नहीं होवे बिस्से बीस।	१ प्राचीनकर्म बलवन्मुनयो वदन्ति। २ साध्यासाध्यविचारं हि नेक्षते भवितव्यता। (कथा.) ३. हतविधिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः ? ४ भवितव्यता बलवती। ५ विधिरहो बलवानिति मे मतिः।
हो बिधना प्रतिकूल जबै तब ऊँट चढ़े पर कूकर काटत।	अहो विधौ विपर्यस्ते न विपर्यस्यतीह किम्।

तृतीय परिशिष्ट

अंग्रेजी संस्कृत शब्दावली

A

Academy—१ शिक्षालय २ साहित्य विज्ञान कला परिषद् (स्त्री)।
Accountancy—लेखा सङ्ख्यान,-कर्मन् (न)।
Account—१ लेखा २ विवरणम्।
Accountant—लेखापाल।
Accountant general—महालेखापाल।
Acknowledgment—प्राप्तिपत्रम्।
Act—अधिनियम।
Acting—१ कार्यकारिन् २ अभिनय।
Adhoc committee—तदर्थसमिति (स्त्री)।
Adjournment motion—स्थगनप्रस्ताव
Administration—प्रशासनम्।
Administrator—प्रशासक।
Adult—वयस्क, प्रौढ।
Adult franchise—वयस्कमताधिकार।
Advance—अग्रिमधनम्।
Advocate—अधिवक्तृ (पु)।
Advocate general—महाधिवक्तृ।
Aesthetics—सौन्दर्यशास्त्रम्।
Affidavit—शपथपत्रम्।
Affiliation—*सम्बन्धनम्, सम्बद्धीकरणम्।
Agency—अभिकरणम्।
Agenda—कार्यसूची।
Agent—अभिकर्तृ (पु)।
Agitation—आन्दोलनम्।
Agreement—१ संविदा २ साम्मत्यम्।
Air conditioned—नियन्त्रितताप।
Air-port—वायुपत्तनम्।
Air tight—*पवनवात, रोधक।
All India Radio—आकाशवाणी।
Allotment officer—आवटनाधिकारिन्।
Alphabetically—वर्णक्रमानुसार, वर्णमालाक्रमेण।

Amenity—सुख-सुविधा।
Anniversary—वार्षिकोत्सव।
Appeal—पुनरावेदनम्, पुनर्न्यायप्रार्थना।
Application—आवेदनपत्रम्।
Appointment—नियुक्ति (स्त्री)।
Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञ।
Architect—वास्तुकार।
Aristocracy—अभिजात-कुलीन,-तन्त्रम्।
Assembly—सभा।
Assembly, legislative—विधानसभा।
Assessment officer—करनिर्धारणाधिकारिन्।
Assistant controller/director/secretary—सहायक, नियन्त्रक निदेशक-सचिव।
Assosiate member—सहसदस्य।
Atlas—मानचित्रावली।
Atmosphere—१ वायुमण्डलम् २ वातावरणम्।
Attesting officer—साक्ष्यांकनाधिकारिन्।
Attorney general—महान्यायवादिन्।
Audience—श्रोतृवर्ग।
Audit—लेखापरीक्षा।
Auditor—लेखापरीक्षक।
Authority—१ प्राधिकारिन् २ प्राधिकार।
Autocracy—स्वतन्त्रम्।
Autonomy—स्वायत्तशासनम्, स्वायत्तता।
Aviation—विमाननम्, विमानयात्रा।

B

Balance sheet—तुलनपत्रम्।
Ballot box—मतपेटिका।
Ballot-paper—मतपत्रम्, शलाका।
Bank—अधिकोष।
Banker—अधिकोषिन्।

Basic Education—आधारशिक्षा ।
Bibliography—ग्रन्थसूची ।
Bill—१ विधेयकम् २ प्राप्यकम् ।
Biology—जीवविज्ञानम् ।
Birth control—सन्ततिनिरोध ।
Black-out—अदीपकर ।
Blood pressure—रक्तचाप ।
Board—मण्डली ।
Board District—मण्डल ,मण्डली पत्रिका ।
Board, Municipal—नगर मण्डली-पालिका
Board of Directors—निदेशकमडली ।
Body—निकाय ।
Bonafied—विश्वस्त, प्रामाणिक, सदाशय ।
Bonafides—विश्वस्तता, सदाशयता, प्रामाणिकता ।
Bond—बन्धपत्रम् ।
Bonus—अधिलाभांश ।
Booking-office—टिकटगृहम् ।
Broad-cast—प्रसारणम् ।
Budget—आयव्ययकम् ।
Bye election—उपनिर्वाचनम् ।
Bye law—उपविधि ।
By post—पत्रविभागेन ।

C

Cabinet—मन्त्रिमण्डलम् ।
Cadet—सैन्यछात्र ।
Calculator—गणक ।
Calendar—तिथिपत्रम्, पचांगम् ।
Calory—उष्मांक ।
Candidate—१ परीक्षार्थी २ अभ्यर्थी ३ पदार्थी ।
Cantonment—कटक कम् ।
Capital—मूलधनम् ।
Capsule—पुटी ।
Case—काण्ड -डम् ।
Cash Memo—विक्रयपत्रम्, विक्रयिका ।
Casting vote—निर्णायक मतम् ।
Casuality—हताहत ।
Cell—१ कोशाणु २ कुटी ।
Census—जनगणना ।
Central Investigation Agency—केन्द्रियान्वेषणाभिकरणी ।

Century—१ शती २ शताब्दी ।
Cess—उपकर ।
Chairman—सभापति ।
Chamber of Commerce—वाणिज्य मण्डलम् ।
Chancellor—कुलाधिपति ।
Chancellor, Pro-vice—उपकुलपति ।
Chancellor Vice—कुलपति ।
Charge d' Affairs—कार्यदूत ।
Charge sheet—आरोपपत्रम् ।
Chart—१ रेखापत्रम् २ चित्रफलकम् ।
Charter—अधिकारपत्रम् ।
Chartered Accountant—अधिकारपत्रितलेखापाल ।
Cheque—चेकम देयादेश ।
Cheque Bearer—वाहकचेकम् ।
Cheque, Blank—रिक्तचेकम् ।
Cheque, Crossed—रेखितचेकम् ।
Cheque, Order—आदेशचेकम् ।
Chief Commissioner—मुख्यायुक्त ।
Chief Judge—मुख्यन्यायाधीश ।
Chief Justice—मुख्यन्यायाधिपति ।
Chief Minister—मुख्यमन्त्रिन् (पु) ।
Chief of Air staff—वायुसेनाध्यक्ष ।
Chief of Army staff—स्थलसेनाध्यक्ष ।
Chief of Naval staff—नौसेनाध्यक्ष ।
Chief of Protocal—नयाचारप्रमुख ।
C. I. D.—गुप्तचरविभाग ।
Circular—परिपत्रम् ।
Citizen—नागरिक ।
Citizen ship—नागरिकता ।
Civil—नागरिक, असैनिक ।
Civil Code—व्यवहार-संहिता ।
Civil Court—व्यवहार न्यायालय, व्यवहारालय ।
Civilization—सभ्यता ।
Civil Service—नागरिकसेवा ।
Clause—खण्ड-डम् ।
Clock tower—घण्टा,-गृहम् स्तम्भ ।
Code—संहिता ।
Collector—समाहर्तृ, समाहर्त्रक ।
Commerce—वाणिज्यम् ।

Commission—१ आयोग २. वर्तनम् ।
Commissioner—आयुक्त ।
Committee—समिति (स्त्री) ।
Committee, Executive, working—कार्यकारिणी समिति (स्त्री), कार्यसमिति ।
Committee, Select—प्रवरसमिति (स्त्री) ।
Committee, Standing—स्थायिसमिति (स्त्री) ।
Commonwealth—राष्ट्रमण्डलम् ।
Communication—संचार ।
Communique—विज्ञप्तिः (स्त्री.) ।
Communism—साम्यवादः ।
Community Development—सामुदायिक विकासः ।
Company—समवाय. ।
Compensation—प्रतिकर, क्षतिपूर्ति (स्त्री) ।
Complaint—१ अभियोग. २ परिवाद, परिवेदना ।
Computor—संगणकम् ।
Confederacy—राज्यसंघः ।
Confederation—राज्यमण्डलम् ।
Conference—सम्मेलनम् ।
Constituency—निर्वाचनक्षेत्रम् ।
Constituent Assembly—संविधानसभा ।
Constitution—संविधानम् ।
Consul—वाणिज्यदूत ।
Context—सन्दर्भ, प्रसंगः, प्रकरणम् ।
Continent—महाद्वीपःपम् ।
Contingency fund—आकस्मिकतानिधि, सांयोगिकनिधि. ।
Contract—संविदा ।
Contribution—अंशदानम् ।
Control—नियन्त्रणम् ।
Controller General—महानियन्त्रक ।
Convassing—उपार्थनम् ।
Convener—संयोजकः ।
Convention—१ रूढि (स्त्री) २ संगमनम् ।
Co-operation—सहयोग । सहकारिता ।
Co-operative society—सहकारिसंस्था ।
Co-ordination—समन्वयः ।
Copy—१ प्रतिलिपि (स्त्री) २ प्रति (स्त्री) ।
Copyright—प्रकाशनाधिकारः ।
Corporation—निगमः ।
Cost—परिव्यय ।
Cottage Industry—कुटीरोद्योग. ।
Council—परिषद् (स्त्री) ।
Council, Advisory—परामर्शपरिषद् (स्त्री) ।
Council of Ministers—मन्त्रिपरिषद् (स्त्री) ।
Council of States—राज्यपरिषद् (स्त्री.) ।
Court—न्यायालय ।
Court, Criminal—दण्डन्यायालय ।
Court, District—मण्डलन्यायालयः ।
Court, Federal—संघीयन्यायालय ।
Court, High—उच्चन्यायालय ।
Court, Martial सेनान्यायालय ।
Court of Appeal—पुनर्विचारन्यायालय ।
Court of Wards—प्रतिपालकाधिकरणम् ।
Court, Revenue—राजस्वन्यायालयः ।
Court, Session—सत्रन्यायालय ।
Court, Subordinate-अधीनन्यायालय ।
Court, Supreme—उच्चतमन्यायालय ।
Credential—प्रत्ययपत्रम् ।
Credit—१ प्रत्यय (हिं. साख) २. आकलनम् ।
Criminal Law—दण्डविधि (पु.) ।
Culture—संस्कृति (स्त्री) ।
Currency—चलार्थ, मुद्रा ।
Custodian—अभिरक्षक ।
Custody—अभिरक्षा ।
Custom duty—सीमा,-शुल्क शुल्कम् ।

D

Daily diary—दैनिकी ।
Debit—विकलनम् ।
Decentralization—विकेन्द्रीयकरणम् ।
Declaration—घोषणा ।
Decree—आज्ञप्ति (स्त्री.) ।
Deed—विलेखः ।
Defence—रक्षा ।
Delegate—प्रतिनिधि ।
Delegation—प्रतिनिधिमण्डलम् ।
Democracy—लोकतन्त्रम् ।

Demonstrator—निदर्शक ।
Deputation—शिष्टमण्डलम् ।
Deputy Commissioner—उपायुक्त ।
Deputy Speaker—उपाध्यक्ष ।
Designer—रूपकार ।
Despatcher—प्रेषक ।
Development Block—विकासखड -डम् ।
Diplomacy—राजनय , कूटनीति (स्त्री) ।
Directorate—निदेशालय ।
Director General—महानिदेशक ।
Director, Managing—प्रबन्धनिदेशक ।
Disposal—व्ययनम् ।
Disqualification—अनर्हता, अयोग्यता ।
District—मण्डलम् ।
District Board—*मण्डलमण्डली ।
Dividend—लाभांश ।
Division—प्रभाग ।
Divorce—विवाहविच्छेद , विविच्छेद ।
Document—प्रलेख ।
Draft—१ प्रारूपम् २. धनार्पणादेश ।
Draftsman—प्रारूपकार ।
Drainage—जलनिष्कास ।
Drive—अभियानम् ।
Duplicate Copy—अनुलिपि (स्त्री) ।
Duty—१ शुल्क -कम्, २ कतव्यम् ।
Duty, Custom—सीमाशुल्क -कम् ।
Duty, Death—मरणशुल्क -कम् ।
Duty, Estate—सपत्तिशुल्क कम् ।
Duty, Excise—उत्पादशुल्क कम् ।
Duty, Export—निर्यातशुल्क -कम् ।
Duty, Import—आयातशुल्क -कम् ।
Duty, Stamp—मुद्राशुल्क-कम् ।
Duty, Succession—उत्तराधिकारशुल्क कम् ।

E

Election—निर्वाचनम् ।
Election, Bye—उपनिर्वाचनम् ।
Election Commission—निर्वाचनायोग ।
Election, Direct—प्रत्यक्षनिर्वाचनम् ।
Election, Indirect—परोक्षनिर्वाचनम् ।
Election, Compaign—निर्वाचनाभियानम् ।
Election, Tribunal—निर्वाचनाधिकरणम् ।
Elector—निर्वाचक ।
Electoral Roll—निर्वाचकसूची ।
Electorate—१ निर्वाचनक्षेत्रम् ।
२ निर्वाचकसमूह ।
Electorate, Joint—सयुक्तनिर्वाचनपद्धति (स्त्री) ।
Electorate, Separate—पृथड्निर्वाचन पद्धति (स्त्री) ।
Electorate, Separate—पृथड्निर्वाचन पद्धति (स्त्री) ।
Embassy—राज , दूतावास ।
Emergency—आपात ।
Emigration—परावास ।
Emporium—आपण ।
Employment Exchange—नियोजन कार्यालय ।
Enfranchisement—मताधिकारदानम् ।
Enquiry clerk—पृच्छालिपिक ।
Equator—भूमध्यरेखा ।
Establishment Officer—स्थापनाधिकारिन् ।
Estates—सम्पद् (स्त्री) ।
Excise—उत्पादशुल्क -कम् ।
Executive Engineer—कार्यपालकाभियन्तृ ।
Ex-officio—पदेन ।

F

Family Planning Centre—परिवार नियोजनकेन्द्रम् ।
Federal—सघीय ।
Federation—सघ ।
Fermentation—किण्वनम् ।
Feudalism—सामन्तवाद ।
Finance—वित्तम् ।
Financial—वित्तीय ।
Financial Year—वित्तवर्ष र्षम् ।
Fine—अर्थदण्ड ।
Fire Service—अग्निशमनसेवा ।
Flying Squad—उड्डयनदल-लम् ।
Foreign Exchange—विदेशीयविनिमय ।

Forensic Science—न्यायवैद्यकविज्ञानम् ।
Form—प्रपत्रम् ।
Formula—सूत्रम् ।
Franchise—मताधिकार ।
Freedom of press—मुद्रणस्वातन्त्र्यम् ।
Freedom of speech—भाषणस्वातन्त्र्यम् ।
Function—कृत्यम् ।
Fund—निधि ।

G

Gallery—दीर्घा ।
Gate keeper—द्वारपाल ।
Gate pass—द्वारपत्रम् ।
Gazette—राजपत्रम् ।
Gazetteer—राजपत्रित विवरणम् ।
Geologist—भू, विज्ञानिन्-वैज्ञानिक ।
Germ—कीटाणु ।
Glacier—हिमनदी ।
Government—शासनम् ।
Government, Hereditary—पैतृक शासनम् ।
Government, Interim—अन्तरिम शासनम् ।
Government, local self—स्थानीयस्वायत्तशासनम् ।
Government, Parliamentary—संसदीयशासनम् ।
Government, Presidential—राष्ट्रपतीय प्रधानीय, शासनम् ।
Government, self—स्वशासनम् ।
Government, unitary—एकीयशासनम् ।
Governor—१ राज्यपाल २ शासक ।
Grant—अनुदानम् ।
Grant in aid—सहायकानुदानम् ।
Gratuity—उपदानम् ।
Guarantee—प्रत्याभूति (स्त्री.) ।

H

Habeas corpus—बन्दिप्रत्यक्षीकरणम् ।
Handicrafts—हस्तशिल्पम्, हस्तकला ।
Head Quarter—मुख्यालय, प्रधान कार्यालय ।
Hereditary—पैतृक, आनुवंशिक ।
Honorarium—मानदेयम् ।
Horticulturist—उद्यानकृषिविशेषज्ञ ।
Hostess—सत्कारिणी ।
House—१ सदनम् २ गृहम् ।
House of people—लोकसभा ।
Housing Department—आवासविभाग ।

I

Illiteracy—निरक्षरता ।
Immigrant—आवासिन् ।
Improvement Trust—नगरसुधारमण्डलम् ।
Incharge—प्रभारिन् ।
Indian Administrative Service—भारतीय प्रशासनिकसेवा ।
Indian Council of Agricultural Research—भारतीयकृष्यनुसन्धानपरिषद् (स्त्री) ।
Indian Council of Medical Research—भारतीयचिकित्सानुसन्धानपरिषद् (स्त्री) ।
In due course—यथासमयम् ।
Industry—उद्योग ।
Industry, cottage—कुटीरोद्योग ।
In order of merit—योग्यताक्रमेण ।
Inquiry—परिप्रश्न ।
Inspection—निरीक्षणम् ।
Institute—संस्थानम् ।
Institution—संस्था ।
Insurance—भीमा ।
International—अन्तर्-राष्ट्री(ष्ट्रि)य ।
In toto—पूर्णत, पूर्णतया ।
Investigator—अन्वेषक ।

J

Judge—न्यायाधीश ।
Judge, additional—अपर-अतिरिक्त, न्यायाधीश ।
Judge, extra—अतिरिक्त न्यायाधीश ।
Judiciary—न्यायपालिका ।
Justice—१ न्याय २ न्यायपति, न्यायाधिपति ।
Justice, chief—मुख्य, न्यायपति न्यायाधिपति न्यायाधीश ।

L

Labour Commissioner—श्रमायुक्त ।

Land revenue—भूराजस्वम् ।
Latitude—अक्षांश ।
Law—विधि (पु) ।
Law & order—विधिव्यवस्थे (स्त्री द्वि) ।
Law Commission—विधि आयोग ।
Legation—दूतावास ।
Legislation—विधानम् ।
Legislative assembly—विधानसभा ।
Legislative council—विधानपरिषद् (स्त्री) ।
Legislature—विधानमण्डलम् ।
Letter of Introduction-परिचयपत्रम् ।
Levy—१ आरोपणम् २ उद्ग्रहणम् ।
Liaison officer—सम्पर्काधिकारिन् ।
Licence—अनुज्ञप्ति (स्त्री) ।
Lieutenant governor—उपराज्यपाल ।
Life Insurance Corporation—जीवनबीमानिगम ।
Literacy—साक्षरता ।
Local board—स्थानीयमण्डली ।
Local body—स्थानीयनिकाय ।
Local government—स्थानीयशासनम् ।
Longitude—रेखांश ।

M

Major—वयस्क ।
Majority—१ बहुमनम् २ बहुसंख्या ।
Mandamus—परमादेश ।
Manifesto—आविष्पत्रम् ।
Marketing officer—पणनाधिकारिन् ।
Maternity home—प्रसवशाला ।
Matriarchy—मातृतन्त्रम् ।
Medical Science—आयुर् चिकित्सा, विज्ञानम् ।
Member—सदस्य ।
Memo—ज्ञाप ।
Memorandum—ज्ञापकम्, स्मृतिपत्रम् ।
Meteorological Department—ऋतु विज्ञान विभाग ।
Meteorologist-ऋतु,विज्ञानिन्,वैज्ञानिक ।
Migration—प्रव्रजनम्, प्रवास ।
Military Engineering Service (M E S) सैनिकयान्त्रिकसेवा ।
Minerelogist-खनिज,विज्ञानिन्-वैज्ञानिक ।
Minister—मन्त्रिन् ।
Ministry—१ मन्त्रालय २ मन्त्रिमंडलम् ।
Minor—अवयस्क ।
Minority—१ अल्पसंख्यकवर्ग २ अल्पमतम् ।
Mission—१ उद्देश्यम्, लक्ष्यम् २ प्रचारकमण्डलम् ।
Monopoly—एकाधिकार ।
Motion—प्रस्ताव ।
Motion of no-confidence—अविश्वास प्रस्ताव ।
Multipurpose—बहूद्देशीय ।
Municipal area—नगरक्षेत्रम् ।
Municipal commissioner—नगरपाल, नगरपालिकासदस्य ।
Municipal corporation-नगरनिगम, नगरमहापालिका ।
Municipality—नगरपालिका ।
Museum—संग्रहालय ।

N

Nation—राष्ट्रम् ।
Nationalization—राष्ट्रीयकरणम् ।
Nationality—राष्ट्रीयता ।
National Physical Laboratory—राष्ट्रीयभौतिकप्रयोगशाला ।
Nomination—मनोनयनम् ।
Nominee—मनोनीत ।
Notice—१ सूचना २ सूचनापत्रम् ।
Notification—अधिसूचना ।
Notified area—(अधि-) सूचितक्षेत्रम् ।

O

Oasis—मरूद्यानम् ।
Observatry—वेधशाला ।
Office—१ कार्यालय २ पदम् ।
Officer—अधिकारिन् ।
Officer incharge—प्रभाराधिकारिन् ।
Official Language—राजभाषा ।
Officiating—स्थानापन्न ।
Oligarchy—अल्पतन्त्रम् ।
Ordinance—अध्यादेश ।
Organization—संघटनम् ।

Out door patients Department—बहिरगरोगविभाग ।

P

Pact—वचनपत्रम् ।
Parliament—समद् (स्त्री) ।
Parliamentary secretary—ससदीय सचिव ।
Pass—पारणम् ।
Passport—पारपत्रम् ।
Patents—एकलम् ।
Patriarchy—पितृतन्त्रम् ।
Patron—सरक्षक ।
Penalty—शास्ति (स्त्री) ।
Pending—१ लम्बित २ लम्बमान ।
Pension—निवृत्तिवेतनम् ।
Personal Assistant—वैयक्तिमहायक ।
Petition—याचिका ।
Planning Commission—योजनायोग ।
Plebiscite—जनमतसग्रह ।
Police—आरक्षक ।
Police force—आरक्षकबलम् ।
Police station—आरक्षकस्थानम् ।
Poll—मतदानम् ।
Polling station—मतदानस्थानम् ।
Portfolio—मविभाग ।
Ports department—पत्तनविभाग ।
Post—१ पदम् २ पत्रम् ।
Post-office—पत्रालय ।
Preference—अधिमानम् ।
Prerogative—परमाधिकार ।
President—१ राष्ट्रपति २ प्रधान ।
Prime Minister—प्रधानमन्त्रिन् ।
Post & Telegraph Depatt—पत्रतार विभाग ।
Private Secretary—निजसचिव ।
Privilege—विशेषाधिकार ।
Privy purse—राजवृत्ति (स्त्री) ।
Procedure—प्रक्रिया ।
Proceedings—• १ कार्यावली, कृत्यावली • २ कृत्यावलीविवरणम् ।
Proclamation—उद्घोषणा ।
Project—प्रायोजना ।
Promissory note—वचनपत्रम् ।
Proof reader—मुद्रितपत्रशोधक ।
Provident fund—भविष्यनिधि (पु) ।
Provision—१ उपबन्ध २ अन्नसामग्री ।
Provisional—अन्त कालीन ।
Proxy—प्रतिपत्री ।
Public Health—लोकस्वास्थ्यम् ।
Publicity—प्रचार ।
Public Relations Officer—जन सर्म्पर्काधिकारिन् ।
Public Service Commission—लोक सेवाऽऽयोग ।
Public Services—लोकसेवा ।
Public Works Department—लोक निर्माणविभाग ।

Q

Quality Control Officer—कोटि नियंत्रकाधिकारिन् ।
Quarantine—सगरोध ।
Quorum—गणपूर्ति (स्त्री) ।
Quota—अभ्यश , नियतांश ।

R

Railway Board—•रेलपथमण्डली ।
Receptionist—स्वागतकर ।
Recommendation—अनुशसा ।
Record—अभिलेख ।
Records keeper—अभिलेखपाल ।
Recruitment—• सैन्यप्रवेश ।
Reference—निर्देश ।
Referendum—परिपृच्छा ।
Regent—राजप ।
Regional—क्षेत्रीय ।
Register—पञ्जी ।
Registered—पञ्जीकृत ।
Registrar—पञ्जीकार , कुलसचिव ।
Registration—पञ्जीकरणम् ।
Regulation—विनियम ।
Rehabilitation Ministry—पुनर्वास मन्त्रालय ।
Reminder—अनुस्मारकम् ।
Report—प्रतिवेदनम् ।
Representation—प्रतिनिधानम् ।

Representative—प्रतिनिधि ।
Republic—गणराज्यम् ।
Requisition—अधिग्रहणम् ।
Reservation—रक्षणम्, प्रारक्षणम् ।
Reserved seat—रक्षित प्रासनम्,स्थानम् ।
Retirement—निवृत्ति (स्त्री) ।
Returning officer—निर्वाचनाधिकारिन् ।
Revenue—राजस्वम् ।
Review—पुनर्विलोकनम् ।
Revision—पुनरीक्षणम् ।
Rule—नियम ।

S

Safeguard—सुरक्षणम् ।
Sales Tax—विक्रयकर ।
Savings—व्यावृत्ति (स्त्री) ।
Savings bank—• व्यावृत्त्यधिकोष ।
Schedule—अनुसूची ।
Scheduled caste—अनुसूचितजाति (स्त्री) ।
Scheduled Tribe—अनुसूचितजनजाति (स्त्री) ।
Secondary Education Board—माध्यमिकशिक्षामण्डली ।
Secretariate—सचिवालय ।
Section officer—अनुभागाधिकारिन् ।
Secular—धर्मनिरपेक्ष, ऐहिक ।
Security—१ प्रतिभूति (स्त्री) २ सुरक्षा ।
Security council—सुरक्षापरिषद् (स्त्री) ।
Self-determination—आत्मनिर्णय ।
Session—सत्रम् ।
Sitting—उपवेश, •उपविष्टि (स्त्री) ।
Small Scale Industries—लघूद्योगा ।
Socialism—समाजवाद ।
Social Welfare—समाजकल्याणम् ।
Sovereign—प्रभु ।
Sovereign democratic republic—सम्पूर्णप्रभुत्वसम्पन्नलोकतन्त्रात्मकगणराज्यम् ।
Speaker—१ अध्यक्ष (लोकसभादीनाम्) २ वक्तृ (पु) ।
Staff—कर्मचारिवृन्दम् ।
State—१ राज्यम् । २ राष्ट्रम् ।
State, Buffer—अन्तस्थराष्ट्रम् ।
State, Totalitarian—एकदलराष्ट्रम् ।
State Trading Corporation—राज्यव्यापारनिगम ।
State, Unitary—एकीयराष्ट्रम् ।
State, Welfare—हितकारिराष्ट्रम् ।
Statistician—सांख्यिक ।
Statistics—सांख्यिकी ।
Statute—संविधि (पु) ।
Stenographer—आशुलिपिक ।
Steno-typist—आशुटंकक ।
Stock Exchange—श्रेष्ठिचत्वरम् ।
Store keeper—भाण्डारिन् ।
Subcontinent—उपमहाद्वीपम् ।
Suffrage—मताधिकार ।
Suffrage, Universal—सर्वमताधिकार ।
Summon—आह्वानम् ।
Superintendent—अधीक्षक ।
Supervisor—पर्यवेक्षक ।
Supplies—पूर्त्त, सम्भरणम् ।
Suspension—निलम्बनम् ।
Surcharge—अधिकर ।
Survey—सर्वेक्षणम् ।
Syndicate—अभिषद् (स्त्री) ।

T

Tabulator—तालिक सारणी,कार ।
Tariff—शुल्कसूची ।
Tax—कर ।
Tax, Direct—प्रत्यक्षकर ।
Tax, Entertainment—प्रमोदकर, मनोरञ्जनकर ।
Tax Indirect—परोक्षकर ।
Tax, Export—निर्यातकर ।
Tax, Income—आयकर ।
Tax, Sales—विक्रयकर ।
Tax, Super—अतिकर ।
Tax, Terminal—सीमाकर ।
Technician—प्रविधिज्ञ ।
Technique—प्रविधि ।
Tele communication—दूरसञ्चार ।
Telegraphist—तारसंकेतक ।
Telephone Exchange—दूरभाषकेन्द्रम् ।
Tenure—पदावधि (पु) कार्यकाल ।

Territory—राज्यक्षेत्रम् ।
Terrorism—आतङ्कवाद ।
Terrorist—आतङ्कवादिन् ।
Theocracy—धर्मतन्त्रम् ।
Theory—सिद्धान्त ।
Through proper channel—विधिवद् ।
Time keeper—समयपाल ।
Toll—पथकर ।
Totalitarianism—एकदलवाद ।
Tourist—पर्यटक ।
Tourist Depatt—पर्यटनविभाग ।
Tracer—अनुरेखक ।
Tractor—कर्षकरथ ।
Trade mark—व्यापारचिह्नम् ।
Trade Union—कार्मिकसंघ ।
Traffic—यातायातम् ।
Training—प्रशिक्षणम् ।
Training, Technical—प्रविधि प्रशिक्षणम् ।
Tramcar—रथ्यायानम् ।
Transfer—१ स्थानान्तरणम् २ हस्तान्तरणम् ।
Transition—संक्रमणम् ।
Transport—परिवहणम् ।
Treaty—सन्धि (पु) ।
Tribe—जनजाति (स्त्री) ।
Tribunal—न्यायाधिकरणम् ।
Tropic of Cancer—कर्करेखा ।
Tropic of Capricorn—मकररेखा ।
Trust—न्यास ।
Trustee—न्यास निक्षेप, धारिन् ।
Tube well—नलकूप ।
Typist—टंकक ।

U

Under Secretary—अवरसचिव ।
Union—संघ ।
Union Public Service Commission—संघलोकसेवायोग ।
Unit—एककम् ।
United Nations Organization—संयुक्तराष्ट्रसंघ ।

V

Vacancy—१ रिक्तस्थानम् २ रिक्ति (स्त्री) ३ रिक्तता ।
Verification officer—सत्यापनाधिकारिन् ।
Veto—प्रतिषेध-रोध,-अधिकार ।
Vice President—उपराष्ट्रपति ।
Village Industry—ग्रामोद्योग ।
Visas—दृष्टांक ।
Vote—मतम् ।
Vote by ballot—गुप्तमतदानम् ।
Vote of censure—निन्दाप्रस्ताव ।
Voter—मतदातृ (पु) ।
Vote, Single Transfarable—एकसंक्रमणीयमतम् ।

W

Warrant—अधिपत्रम् ।
Will—इच्छापत्रम् ।
Wireless operator—*वितारप्रचालक ।
Works Manager—कर्मशालाप्रबन्धक ।
Writ—आदेशलेख ।

Z

Zonal Council—आंचलिकपरिषद् (स्त्री) ।

चतुर्थ परिशिष्ट

छन्दःपरिचय

छन्द—संस्कृत में रचना प्रायः दो प्रकार की होती है—गद्य और पद्य। छन्द-रहित रचना को गद्य कहते हैं और छन्दोबद्ध रचना को पद्य। जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि के नियमों से युक्त होती है, उसे छन्द कहते हैं। जिन ग्रन्थों में छन्दों के स्वरूप तथा प्रकार आदि का विवेचन रहता है, उन्हें छन्द शास्त्र कहते हैं।

वर्ण या अक्षर—छन्द शास्त्र की दृष्टि से केवल व्यंजन (क ख् आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते। अकेला स्वर या व्यंजन-सहित स्वर अक्षर कहलाता है। 'आ', 'का' और 'काम्' में छन्द शास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है क्योंकि उनमें स्वर तो केवल एक 'आ' ही है। छन्द में अक्षर गिनते समय व्यंजनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

गुरु, लघु—ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, ऌ) को छन्द शास्त्र में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ) को गुरु। इसी प्रकार क, कि आदि लघु अक्षर हैं और का, की आदि गुरु। छन्दःशास्त्र में निम्नलिखित को गुरु अक्षर माना गया है—

> सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
> वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

अर्थात् अनुस्वार युक्त, दीर्घ, विसर्गयुक्त और संयुक्त अक्षरों से पूर्व वर्ण गुरु होता है। छन्द के पाद या चरण का अन्तिम अक्षर आवश्यकतानुसार लघु या गुरु माना जा सकता है। सो इस श्लोक के अनुसार 'कंस' में 'कं', 'काल' में 'का', 'दुःख' में 'दुः' और 'युक्त' में 'यु' गुरु अक्षर हैं। छन्द के चरणों की लम्बाई और गति को ठीक रखने के लिए अक्षरों के गुरु-लघु के भेद को सम्यक् हृदयंगम कर लेना चाहिए। गुरु का चिह्न (ऽ) है और लघु का (।)।

गण—छन्द शास्त्र में तीन-तीन अक्षरों के समूह को गण कहा गया है। उन गणों के नाम, स्वरूप तथा उदाहरणों को निम्नलिखित तालिका से समझ लेना चाहिए—

गण-नाम	संक्षिप्तनाम	लक्षण	संकेत	उदाहरण
१ मगण	म	तीनों अक्षर गुरु	ऽ ऽ ऽ	मा'धाता, विद्यार्थी
२ नगण	न	तीनों अक्षर लघु	। । ।	निगम, सरल
३ भगण	भ	प्रथम अक्षर गुरु	ऽ । ।	भारत, कृत्रिम
४ यगण	य	प्रथम अक्षर लघु	। ऽ ऽ	यशोदा, सुमित्रा
५ जगण	ज	मध्यम अक्षर गुरु	। ऽ ।	जिगीषु, जवान
६ रगण	र	मध्यम अक्षर लघु	ऽ । ऽ	राधिका, राक्षसी
७ सगण	स	अन्तिम अक्षर गुरु	। । ऽ	सविता, कमला
८ तगण	त	अन्तिम अक्षर लघु	ऽ ऽ ।	तारेश, आकाश

गणों का स्वरूप स्मरण रखने के लिए निम्नलिखित श्लोक कण्ठस्थ कर लेना चाहिए—

> मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो
> भादिगुरु, पुनरादिलघुर्यः ।
> जो गुरुमध्यगतो, रलमध्य
> सोऽन्तगुरु, कथितोऽन्तलघुस्त ॥

अर्थ—मगण में तीनों गुरु, नगण में तीनों लघु भगण में आदि का अक्षर गुरु, यगण में आदि का लघु, जगण में मध्यम गुरु, रगण में मध्यम लघु सगण में अन्तिम गुरु और तगण में अन्तिम लघु होता है।

मात्रा—ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं और दीर्घ या गुरु के उच्चारण-काल को दो मात्रा। इसलिए जब छन्दों में मात्राओं की गिनती की जाती है तब लघु की एक और गुरु की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। छन्द शास्त्र में एक अक्षर की मात्राएँ दो से अधिक नहीं होतीं परन्तु संगीत में स्वर को यथेष्ट मात्राओं तक बढ़ाया जा सकता है। एक ही शब्द में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान भी हो सकती है और भिन्न भिन्न भी। जैसे—'कल' में दो अक्षर हैं और दो ही मात्राएँ, 'काल' में दो अक्षर और तीन मात्राएँ, 'काला' में दो अक्षर और चार मात्राएँ।

गति—छन्दों में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या से ही काम नहीं बनता, उसमें गति अर्थात् लय या प्रवाह का भी ध्यान रखना पड़ता है। वार्णिक छन्दों में तो प्राय गणों का क्रम प्रवाह को अक्षुण्ण रखता है परन्तु मात्रिक छन्दों में इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती ही है। जैसे—

> अज्ञः सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
> ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं तं न रञ्जयति ॥ (भर्तृहरि)

यदि उपर्युक्त आर्या छन्द को यों पढ़ें—

'आराध्य सुखमज्ञ विशेषज्ञ आराध्यते सुखतरम्' तो कान तुरन्त बता देते हैं कि इसमें आर्या छन्द की गति नहीं रही।

यति—जिन छन्दों के एक एक चरण में अक्षरों या मात्राओं की संख्या थोड़ी होती है उन्हें पढ़ने में तो कोई कठिनाई नहीं होती परन्तु लम्बे चरणों के पाठ में बीच में रुकना ही पड़ता है। उस विश्राम स्थल को ही यति या विराम कहते हैं। कुशल कवि इस बात का ध्यान रखते हैं कि यति किसी शब्द की समाप्ति पर ही आए परन्तु कभी-कभी वह किसी शब्द के मध्य में भी आ जाती है।

चरण—अधिकतर छन्दों में चार चरण पाद या पंक्तियाँ होती हैं, परन्तु कभी-कभी छन्द न्यूनाधिक चरणों के भी दिखाई देते हैं।

छन्दों के भेद—छन्दों के मुख्य भेद दो हैं—वर्णिक छन्द और मात्रिक छन्द। मात्रिक छन्द को जाति छन्द भी कहा जाता है। वर्णिक छन्दों में वर्णों की संख्या और गणक्रम पर विशेष ध्यान रहता है तथा मात्रिक छन्दों में मात्राओं की संख्या और गति पर। वर्णवृत्तों के चरणों में गुरु लघु-क्रम प्राय समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बन्धन नहीं होता। उक्त दोनों भेदों के तीन तीन अवान्तर भेद भी होते हैं—सम छन्द, अर्द्धसम छन्द और विषम छन्द। सम छन्दों के चारों चरणों में वर्णों या मात्राओं की संख्या समान होती है। अर्द्धसम छन्दों में प्रथम

और तृतीय चरणों की तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों की अक्षर या मात्रा-संख्या समान होती है। जो छन्द उक्त दोनों वर्गों मे नहीं आते, उन्हे विषम कहते हैं।

नीचे संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध छन्दों का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार के लिए *छन्दःशास्त्र, वृत्तरत्नाकर, छन्दोमञ्जरी आदि ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं।*

(क) वर्णवृत्त, समछन्द

प्रति चरण ८ अक्षरवाले छन्द

(१) अनुष्टुप् (अन्य नाम—श्लोक)

लक्षण—श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अर्थ—इसके प्रत्येक पाद का पाँचवाँ वर्ण लघु होता है और छठा गुरु। सम (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों का सातवाँ वर्ण लघु होता है और विषम (प्रथम तथा तृतीय) चरणों का सातवाँ वर्ण गुरु। शेष वर्णों के विषय मे लघु गुरु की स्वतंत्रता है।

उदाहरण—यदा यदा हि धर्मस्य; ग्लानिर्भवति भारत।
।ऽ ऽ ।ऽ ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
।ऽऽ ।ऽ ।

(२) विद्युन्माला

लक्षण—मो मो गो गो विद्युन्माला।

अर्थ—मगण, मगण और दो गुरु के क्रम से इसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं; अर्थात् सब चरणों के सब वर्ण गुरु।

उदाहरण—

म म गु गु
(क) मौनं ध्यानं भूमौ शय्या, गुर्वी तस्याः कामाऽवस्था।
ऽऽ ऽ,ऽऽऽ, ऽ ऽ
मेघोत्सङ्गे नृत्तासक्ता, यस्मिन्काले विद्युन्माला॥

(ख) गगा माता तेरी धारा, काटे फदा मेरा सारा।
विद्युन्माला जैसी सोहै, वीचीमाला तेरी मोहै॥ (सुधादेवी)

प्रति चरण १० अक्षरवाले छन्द

(१) रुक्मवती (अन्य नाम—चम्पकमाला)

लक्षण—भ्मौ सगयुक्तौ रुक्मवतीयम्।

अर्थ—रुक्मवती के प्रत्येक पद में भगण, मगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

भ म स गु

(क) भग्नमसत्यैः कायसहस्रैः, मोहमयी गुर्वी तव माया।
ऽ।।, ऽ ऽ ऽ, ।।ऽ, ऽ
स्वप्नविलासा योगवियोगा, रुक्मवती हा कस्य कृते श्री. ॥

(ख) शान्ति नहीं तो जीवन क्या है, कान्ति नहीं तो यौवन क्या है।
प्रेम नहीं तो आदर क्या है, प्यास नहीं तो सागर क्या है।

(रामनरेश त्रिपा०)

(२) मत्ता

लक्षण—मत्ता ज्ञेया मभसगयुक्ता (विराम ४, ६)।

अर्थ—मत्ता के प्रत्येक चरण में मगण, भगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

म भ स गु

पीत्वा मत्ता मधु मधुपाली, कालिन्दीये तटवनकुञ्जे।
ऽ ऽ ऽ, ऽ।।, ।।ऽ, ऽ
उद्दीव्यन्तीर्व्रजजनरामाः, कामासक्ता मधुजिति चक्रे ॥

प्रति चरण ११ अक्षरवाले छन्द

(१) इन्द्रवज्रा

लक्षण—स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ ग। (विराम पादान्त में)

अर्थ—इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

त त ज

(क) गोष्ठे गिरिं सव्यकरेण धृत्वा,
ऽ ऽ ।, ऽ ऽ।, ।ऽ। ऽ ऽ
रुष्टेन्द्रवज्राहतिमुक्तवृष्टौ।
यो गोकुलं गोपकुलं च सुस्थं,
चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणिः ॥

(ख) मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूँ,
भाता मुझे सो नव मित्र सा है।
देखूँ उसे मैं नित बार बार,
मानो मिला मित्र मुझे पुराना ॥ (गिरधर शर्मा)

(२) उपेन्द्रवज्रा

लक्षण—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ। (विराम पादान्त में)

अर्थ—उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और दो गुरु अक्षरों के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

ज त ज

गु गु

(क) जितो जगत्येष भवभ्रमस्तै-
।ऽ ।,ऽऽ।, ।ऽ।,ऽऽ
गुरूदितं ये गिरिशं स्मरन्ति।
उपास्यमानं कमलासनाद्यैः—
रुपेन्द्रवज्रायुधवारिनाथैः ॥

(ख) बड़ा कि छोटा कुछ काम कीजे,
परन्तु पूर्वापर सोच लीजे।
बिना विचारे यदि काम होगा,
कभी न अच्छा परिणाम होगा ॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

(३) उपजाति

लक्षण—जिस छन्द के कुछ चरण इन्द्रवज्रा के हों और कुछ उपेन्द्रवज्रा के, उसे उपजाति कहते हैं। इसके १२ भेद होते हैं।

टि०—समान-सख्यक अक्षर तथा समान यतिवाले अन्य छन्दों के भी इसी प्रकार के मिश्रण का नाम उपजाति ही है। जैसे वंशस्थ और इन्द्रवंशा (१२ १२ अक्षरों के छंद) के मिश्रण से भी उपजाति छन्द बनता है।

उदाहरण—(क) उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं, (इन्द्र.)
क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्। (उपे.)
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदं च, (इ.)
लक्ष्मीः स्वयं वाञ्छति वासहेतोः॥ (उ.)

(ख) इच्छा न मेरी कुछ भी बनूँ मैं, (इ.)
कुबेर का भी जग में कुबेर। (उ.)
इच्छा मुझे एक यही सदा है, (इ.)
नये नये उत्तम ग्रंथ देखूँ॥ (उ.) (गिरधर शर्मा)

(४) दोधक (अन्य नाम—बन्धु)

लक्षण—दोधकनामनि भत्रयतो गौ। (विराम पाद के अन्त में)
अर्थ—दोधक छन्द के प्रत्येक चरण में तीन भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

भ भ भ

गु गु

(क) दोधकमर्थविरोधकमुग्रं
ऽ।।,ऽ।।,ऽ।।,ऽऽ,
धीचपलं युधि कातरचित्तम्।
स्वार्थपरं मतिहीनममात्यं
मुञ्चति यो नृपतिः स सुखी स्यात्॥

(ख) पाकर मानव-देह धरा में,
पापप्रवृत्ति तजो जितना है।
पुच्छ विषाण विहीन पशू जो,
होन न चाहत प्रेम करो तो॥ (रामवहोरी शुक्ल)

(५) शालिनी

लक्षण—शालिन्युक्ता म्तौ तगौ गोऽब्धिलोकैः ॥ (४, ७ पर विराम)

अर्थ—शालिनी के प्रत्येक पाद में मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं। अब्धि (४) और लोक (७) पर विराम होता है।

उदाहरण—

म त त गुरु

(क) अंधो हन्ति ज्ञानवृद्धिं विधत्ते
ऽऽ ऽ, ऽऽ।, ऽऽ ।, ऽऽ,
धर्मं दत्ते काममर्थं च सूते।
मुक्तिं दत्ते सर्वदोपास्यमाना,
पुंसां श्रद्धाशालिनी विष्णुभक्तिः॥

(ख) कैसी कैसी ठोकरें खा रहा है,
तीखी पीड़ा चित्त में ला रहा है।
तो भी प्यारे! हाल तेरा वही है,
विद्वानों की पद्धती क्या यही है॥ (छन्दशिक्षा)

(६) रथोद्धता

लक्षण—रान्नराविह रथोद्धता लगौ। (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—रथोद्धता के प्रत्येक चरण में रगण, नगण, रगण और लघु गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

र न र लगु

किं त्वया सुभट! दूरवर्जितं
ऽ ।ऽ, ।।।, ऽ।ऽ,।ऽ
नात्मनो न सुहृदा प्रियं कृतम्।
यत्पलायनपरायणस्य ते
याति धूलिरधुना रथोद्धता॥

(७) स्वागता

लक्षण—स्वागतेति रनभाद्गुरुयुग्मम्। (पादान्त में विराम)

अर्थ—स्वागता के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

र न भ गु गु

(क) रत्नभद्रविमलैर्गुणतुङ्गै-
SIS, III, SII, SS
र्वर्धितामभिमतार्रणसक्तैः ।
स्वागताऽभिमुखनम्रशिरस्कैः
जीव्यते जगति साधुभिरेव ॥

(ख) रानि ! मोगि गहि नाथ कन्हाई,
साथ गोप जन आवत धाई।
स्वागतार्थ सुनि आतुर माता,
धाइ देखि मुद सुन्दर गाता ॥ (भानु कवि)

प्रति चरण १२ अक्षरवाले छन्द

(१) वंशस्थ (नामान्तर–वंशस्थविल तथा वंशस्तनित)

लक्षण—जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ । (पादान्त मे विराम)

अर्थ—वंशस्थ के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

ज त ज र

(क) जनस्य तीव्रातपजार्तिवारणा
ISI, SSI, ISI, SIS
जयन्ति सन्तः सततं समुन्नता ।
सितातपत्रप्रतिमा विभान्ति ये
विशालवंशस्थतया गुणोचिता ॥ (सुवृत्ततिलक)

(ख) स्वरूप होता जिसका न भव्य है,
न वाक्य होते जिसके मनोज्ञ हैं ।
अतीव प्यारा बनता सदैव है
मनुष्य सो भी गुण के प्रभाव से ॥ (हरिऔध)

(२) इन्द्रवंशा

लक्षण—स्यादिन्द्रवंशा ततजैरसंयुतैः । (पादान्त मे विराम)

अर्थ—इन्द्रवंशा के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

त त ज र

(क) कुर्वीत यो देवगुरुर्द्विजन्मना-
SSI, SSI, ISI, SIS
मुर्वीपतिः पालनमर्थलिप्सया ।
तस्येन्द्रवंशेऽपि गृहीतजन्मनः
सञ्जायते श्रीः प्रतिकूलवर्तिनी ॥

(ख) यों ही बड़ा हेतु हुए बिना कहीं,
होते बड़े लोग कठोर यों नहीं।
वे हेतु भी यों रहते सुगुप्त हैं,
ज्यों अद्रि अम्भोनिधि में प्रसुप्त हैं॥ (चन्द्रहास)

(३) तोटक

लक्षण—इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्। (पादान्त में विराम)

अर्थ—तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं।

उदाहरण—

स स स स

(क) त्यज तोटकमर्थनियोगकरं
। । ऽ, । । ऽ, । । ऽ, । । ऽ
प्रमदाऽधिकृतं व्यसनोपहतम्।
उपधाभिरशुद्धमतिं सचिवं
नरनायक! भीरुकमायुधिकम्॥ (छन्दोवृत्ति)

(ख) अब लौं न कहीं वह देश मिला,
इसका न जिसे उपदेश मिला।
उस गौरव के गुण अस्त हुए,
गुरु के गुरु शिष्य समस्त हुए॥ (नाथूराम शंकर)

(४) द्रुतविलम्बित

लक्षण—द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ। (पादान्त में विराम)

अर्थ—द्रुतविलम्बित के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

न भ भ र

(क) तरणिजापुलिने नववल्लवी-
। । ।, ऽ । ।, ऽ । ।, ऽ । ऽ
परिषदा सह केलिकुतूहलात्।
द्रुतविलम्बितचारुविहारिणं
हरिमहं हृदयेन सदा वहे॥ (छन्दोमञ्जरी)

(ख) मन! रमा रमणी रमणीयता,
मिल गई यदि ये विधि योग से।
पर जिसे न मिली कविता-सुधा
रसिकता सिकता-सम है उसे॥ (रामचरित उपाध्याय)

(५) मौक्तिकदाम

लक्षण—चतुर्जगणं वद मौक्तिकदाम। (पादान्त में विराम)

अर्थ—मौक्तिकदाम (हिन्दी, मोतियदाम) छंद के प्रत्येक चरण में चार जगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

ज ज ज ज

(क) मया तव किञ्चिदकारि कदापि,
। ऽ ।, । ऽ ।, । ऽ ।, । ऽ ।
विलासिनि ! वाक्यमसुस्मरताऽपि ।
तथापि मनस्तव नाश्वरानाय,
व्रजामि कुतो भवतीमपहाय ॥ (वाणीभूषण)

(ख) बड़े जन की नहिं माँगन जोग,
फबैं छल साधन में लघु लोग।
रमापति विष्णु अखग अनूप,
धर्यो एहि कारण वामन रूप ॥ (देवीप्रसाद पूर्ण)

(६) भुजङ्गप्रयात

लक्षण—भुजगप्रयात भवेद्यैश्चतुर्भि । (पादान्त में विराम)

अर्थ—भुजगप्रयात के प्रत्येक चरण में चार यगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

य य य य

(क) धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवन्ति,
। ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ
धनैरापदं मानवा निस्तरन्ति ।
धनेभ्य परो बान्धवो नास्ति लोके,
धनान्यर्जयध्वम् धनान्यर्जयध्वम् ॥

(ख) अजन्मा न आरंभ तेरा हुआ है,
किसी से नहीं जन्म तेरा हुआ है।
रहेगा सदा अन्त तेरा न होगा,
किसी काल में नाश तेरा न होगा ॥ (नाथूरामशंकर)

(७) स्रग्विणी

लक्षण—रैश्चतुर्भिर्युता स्रग्विणी सम्मता। (पादान्त में यति)

अर्थ—स्रग्विणी के प्रत्येक पाद में चार रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं।

उदाहरण—

र र र र

(क) इन्द्रनीलोपलनेव या निर्मिता
ऽ । ऽ, ऽ । ऽ, ऽ । ऽ, ऽ । ऽ
शातकुम्भद्रवालकृता शोभते।
नव्यमेघच्छवि पीतवासा हरे-
र्मूर्तिरास्ता जयायोरसि स्रग्विणी ॥

(ख) वे गृही धन्य हैं जो मनोहारिणी,
मिष्टभाषी सुशीला सदाचारिणी।
धर्मशीला सती धीरताधारिणी,
सुन्दरीयुक्त हैं प्रेमशृङ्गारिणी ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

प्रति चरण १३ अक्षरवाले छन्द

(१) प्रहर्षिणी

लक्षण—म्नौ ज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम्। (विराम ३, १०)

अर्थ—प्रहर्षिणी छन्द के प्रत्येक पाद में मगण, नगण, जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। तीन और आशा (दिशा १०) पर यति होती है।

उदाहरण—

म न ज र गु

(क) ते रेखाध्वजकुलिशातपत्रचिह्नं,
S SS, I I I, I S I, S I S, S
सम्राजश्चरणयुगं प्रसादलभ्यम्।
प्रस्थानप्रणतिभिरङ्गुलीषु चक्रु-
र्मौलिस्रक्च्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥ (रघुवंश ४।८८)

(ख) मानो जू, रँग रहि प्रेम में तुम्हारे,
प्राणों के, तुमहिं अधार हौ हमारे।
वैसो ही, विचरहु राम हे कन्हाई,
भावे जो, शरद प्रहर्षिणी जुन्हाई ॥ (भानुकवि)

(२) रुचिरा (नामान्तर—अतिरुचिरा)

लक्षण—चतुर्ग्रहैरतिरुचिरा जभस्जगाः। (विराम ४, ९ पर)

अर्थ—रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, भगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं। चार और ग्रह (९) पर यति होती है।

उदाहरण—

ज भ स ज गु

क्व दा सुखं वरतनु कारणाहते,
I S I, S I I, I I S, I S I, S
तवागतं क्षणमपि कोपपात्रताम्।
अपर्वणि ग्रहकलुषेन्दुमण्डला,
विभावरी कथय कथं भविष्यति ॥ (मालविकाग्निमित्रम् ४।१३)

प्रति चरण १४ अक्षरवाले छन्द

(१) वसन्ततिलका (अन्य नाम-सिंहोन्नता तथा उद्धर्षिणी)

लक्षण—उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।

अर्थ—वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में तगण, भगण, दो जगण और दो गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

त भ ज ज गुरु

(क) जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
ऽ ऽ ।, ऽ । ।, । ऽ ।, । ऽ ।, ऽ ऽ
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥ (नीतिशतक)

(ख) रोगी दुखी विपन्न आपत्त में पड़े की,
सेवा अनेक करते निज हस्त से थे।
देसा निकेत व्रज में न मुझे दिखाया,
कोई जहाँ दुखित हो पर वे न होवें॥ (हरिऔध)

प्रति चरण १५ वर्णवाले छन्द

(१) मालिनी

लक्षण—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः। (विराम ८, ७ पर)

अर्थ—मालिनी के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण और दो यगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं। भोगी (८), लोक (७) पर यति होती है।

उदाहरण—

न न म य य

(क) मनसि वचसि काये, पुण्यपीयूषपूर्णा-
।।।, ।।।, ऽऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्, पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः, सन्ति सन्तः कियन्तः॥ (नीतिशतक)

(ख) सहृदय जन के जो, कंठ का हार होता,
मुदित मधुकरी का, जीवनाधार होता।
वह कुसुम रँगीला, धूल में जा पड़ा है,
नियति नियम तेरा, भी बड़ा ही कड़ा है॥ (रूपनारायण पांडेय)

(२) चामर (अन्य नाम—तूणक)

लक्षण—तूणकं समानिका पदद्वयं विनान्तियम्॥ (विराम ८, ७)

अर्थ—तूणक या चामर छंद के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं। आठवें और पादान्त में यति होती है।

उदाहरण—

र ज र ज र

(क) मा सुवर्णकेतकं निकादि भृङ्गपूरितं,
ऽ ।ऽ, ।ऽ।, ऽ ।ऽ, । ऽ ।, ऽ । ऽ
पंचबाणबाणजालपूर्णहेतितूणकम् ।
राधिका वितर्क्य माधवाद्यमासि माधवे,
मोदमेति निर्भरं त्वया विना कलानिधे॥

(ख) मत्त-दन्ति-राज राजि, बाजिराज राजि कै,
हेम हीर मुक्त चीर, चारु साज साजि कै।
वेष वेषवाहिनी, अशेष वस्तु सोधि यों
दाइजो विदेहराज, भाँति भाँति को दियो ॥ (केशवदास)

प्रति चरण १६ वर्णवाले छन्द

पचचामर

लक्षण—जरौ जरौ ततो जगौ च पचचामरं वदेत् ॥ (८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर विराम)

अर्थ—पचचामर छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु के क्रम से १६ वर्ण होते हैं। ८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर यति होनी है।

उदाहरण—

ज र ज र ज गु

(क) सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
। ऽ ।, ऽ । ऽ, । ऽ ।, ऽ । ऽ, । ऽ ।, ऽ
लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम्।
सुराङ्गनाभयल्लवीकरप्रपंचचामर-
स्फुरत्समीरवीजितं सदाच्युतं भजामि तम् ॥

(ख) उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती ॥ (मैथिलीशरण गुप्त)

प्रति चरण १७ वर्णवाले छन्द

(१) शिखरिणी

लक्षण—रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी। (६, ११ पर विराम)

अर्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर हों तथा रस (६) और रुद्र (११) पर यति हो उसे शिखरिणी कहते हैं।

उदाहरण—

य म न स भ ल गु

(क) करे श्लाघ्यस्त्यागः, शिरसि गुरुपादप्रणयिता,
। ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ, । । ।, । । ऽ, ऽ । ।, । ऽ
मुखे सत्या वाणी, विजयिभुजयोर्वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः, श्रुतमधिगतं च श्रवणयो-
र्विनाप्यैश्वर्येण, प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥ (भर्तृहरि)

(ख) छटा कैसी प्यारी, प्रकृति तिय के चन्द्रमुख की
नया नीला ओढ़े, वसन चटकीला गगन का।
जरी-सा-मा-रूपी, जिस पर सितारे सब जड़े
गले में स्वर्गंगा, अनिल-छिन माला सम पड़ी ॥ (सत्यशरण रतूड़ी)

(२) पृथ्वी

लक्षण—जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः। (८, ९ पर विराम)

अर्थ—पृथ्वी छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, सगण, जगण, सगण, यगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। वसु (८) और ग्रह (९) पर यति होती है।

उदाहरण—

ज स ज स य लगु

(क) लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
।ऽ।, ।।ऽ, ।ऽ।, ।। ऽ, ।ऽऽ, ।ऽ
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटञ्शशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥ (भर्तृहरि)

(ख) अगस्त ऋषिराज जू, वचन एक मेरे सुनौ,
प्रशस्त सब भाँति भूतल सुदेश जी में गुनौ।
सुनीर तरुखंड मंडित समृद्ध शोभा धरै,
तहाँ हम निवास की, विमल पर्णशाला करैं॥ (रामचन्द्रिका)

(३) हरिणी

लक्षण—नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता। (६, ४, ७ पर विराम)

अर्थ—हरिणी के प्रत्येक चरण मे नगण, सगण, मगण, रगण, सगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। छठे, दसवें और सत्रहवें अक्षर के बाद विराम होता है।

उदाहरण—

न स म र स लगु

वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थिता,
।।।, ।।ऽ, ऽऽऽ, ऽ।ऽ, ।।ऽ, ।ऽ
कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स च धार्यते।
तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरा-
दहह महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः॥ (भर्तृहरि)

(४) मन्दाक्रान्ता

लक्षण—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तो गयुग्मम्। (४, ६, ७ पर विराम)

अर्थ—मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। अम्बुधि (सागर ४), रस (६) और नग (७) पर यति होती है।

उदाहरण—

म भ न त त गु गु

(क) मौनान्मूकः, प्रवचनपटुर्वाचको जल्पको वा,
ऽऽऽ, ऽ ।।, ।।।, ऽऽ।, ऽऽ ।, ऽऽ
धृष्टः पार्श्वे भवति च वसन्दूरतोऽप्यप्रगल्भः।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः,
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः॥ (भर्तृहरि)

(ख) जो लवेगा, नृपनि मुझ से, दण्ड दूँगी करोड़ों,
लोटा थाली, सहित तनके, वस्त्र भी बेंच दूँगी।
जो माँगेगा, हृदय वह तो, काढ दूँगी उसे भी
बेटा तेरा गमन मथुरा, मैं न आँखों लखूँगी ॥ (हरिऔध)

प्रतिचरण १९ वर्णवाले छन्द

(१) शार्दूलविक्रीडित

लक्षण—सूर्याश्वैर्मसजस्ततः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्। (१२, ७ पर विराम)

अर्थ—शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और गुरु के क्रम से १९ वर्ण होते हैं। यति सूर्य (१२) और अश्व (७) पर होती है।

उदाहरण—

म स ज स त त गु

(क) केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
SSS, I I S, I S I, I I S, S S I, S S I, S
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ (भर्तृहरि)

(ख) छोटे और बड़े जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े,
सो भी दृश्य विचित्र किन्तु हमको, वे हानिकारी बड़े।
ले जाते वरवस्तु देशभर की जाने कहाँ को कहाँ,
लाते केवल ऊपरी चटक की, चीजें विदेशी यहाँ ॥ (कन्हैयालाल पोद्दार)

प्रति चरण २० वर्णवाले छन्द

(१) गीतिका

लक्षण—सजजा भरौ सलगा यदा कथिता तदा खलु गीतिका। (५, ७, ८ पर विराम)

अर्थ—गीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में सगण, जगण, जगण, भगण, रगण, सगण और लघु गुरु के क्रम से २० वर्ण होते हैं। पाँचवें, बारहवें और बीसवें अक्षर के बाद यति होती है।

उदाहरण—

स ज ज भ र स लगु

(क) करतालचंचलकंकणस्वनमिश्रणेन मनोरमा,
I I S, I S I, I S I, S I I, S I S, I I S, I S
रमणीयवेणुनिनादरंगिमसंगमेन सुखावहा।
बहुलानुरागनिवासरासससुद्भवा तव रागिणे,
विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारचामरगीतिका ॥

(ख) मज जीव री! सुकणी सुदी सुन मो वहा चित लायके,
नय कान लक्खन जानकी सह राम को नित गायके।
पद मो शरीरहि राम के बल धाम को लय धावहू,
कर बीन लै अति दीन है निज गीति कान सुनावहू ॥ (भानु कवि)

प्रति चरण २१ वर्णवाले छन्द

(१) स्रग्धरा

लक्षण—म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् । (७, ७, ७ पर विराम)

अर्थ—स्रग्धरा के प्रत्येक पाद में मगण, रगण, भगण, नगण और तीन यगण के क्रम से २१ अक्षर होते हैं। सातवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षर के अन्त में यति होती है।

उदाहरण—

म र भ न य य य

(क) प्राणाघातान्निवृत्तिः, परधनहरणे संयमः, सत्यवाक्यं,
ऽऽऽ,ऽ।ऽ,ऽ ।।,।।।।ऽ ऽ,।ऽ ऽ,।ऽऽ
काले शक्त्या प्रदानं, युवतिजनकथा, मूकभावः परेषाम् ।
तृष्णास्रोतोविभंगो, गुरुषु च विनयः, सर्वभूतानुकम्पा,
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः, श्रेयसामेष पन्थाः । (भर्तृहरि)

(ख) नाना फूलों-फलों से, अनुपम जग की, वाटिका है विचित्रा,
भोक्ता हैं स्वेच्छा ही, मधुप शुक तथा कोकिला गानशीला ।
चोर भी हैं अनेकों, पर धन हरने में सदा अग्रगामी,
कोई है एक माली, सुधि इन सबकी, जो सदा ले रहा है ॥ (रामनरेश त्रिपाठी)

(ख) वर्णवृत्त, अर्द्धसम छन्द

(१) वियोगिनी (अन्य नाम—सुन्दरी)

लक्षण—विषमे ससजा गुरुः समे, सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ।

अर्थ—वियोगिनी के विषम (प्रथम, तृतीय) चरणों में दो सगण, जगण और गुरु के क्रम से १० १० अक्षर और सम (द्वितीय, चतुर्थ) चरणों में सगण, भगण, रगण, लघु और गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर होते हैं। (१०, ११, १०, ११)।

उदाहरण—

स स ज गु

(क) सहसा विदधीत न क्रियाम्,
।।ऽ, ।।ऽ, ।ऽ ।, ऽ
अविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं
स भ र लघु
गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ (किरातार्जुनीय २।३०)
।।ऽ, ऽ ।।, ऽ।ऽ, ।ऽ

(ख) चिर-काल रसाल ही रहा,
जिस भावज्ञ कवीन्द्र का कहा ।
जय हो उस कालिदास की,
कविता-केलि-कला-विलास की ॥ (छन्दरत्नावली)

(२) हरिणप्लुता

लक्षण—सयुगात् सलघू विषमे गुरुर्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

अर्थ—हरिणप्लुता छन्द के विषम चरणों में तीन सगण और लघुगुरु के क्रम से ११-११ अक्षर और सम चरणों में नगण दो भगण और रगण के क्रम से १२-१२ अक्षर होते हैं।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

स स स लगु

स्फुटफेनचया हरिणप्लुता,

।।ऽ,।।ऽ,।।ऽ,।ऽ

वलिमनोज्ञनटा तरणे सुता ।

कलहंसकुलारवशालिनी,

न भ भ र

विहरतो हरति स्म हरेर्मनः ॥ (छन्दोमञ्जरी)

।।।,ऽ ।।,ऽ । ।,ऽ।ऽ

(३) अपरवक्त्र

लक्षण—अयुजि ननरला गुरुः समे ।
तदपरवक्त्रमिदं नजौ जरौ ॥

अर्थ—अपरवक्त्र वृत्त के विषम चरणों में दो नगण, एक रगण और लघु-गुरु के क्रम से ११ ११ अक्षर और समचरणों में नगण, दो जगण और रगण के क्रम से १२ १२ अक्षर होते हैं।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

न न र लगु

स्फुटसुमधुरवेणुगीतिभि-

।।।, ।।।,ऽ।ऽ,। ऽ

स्तमपरवक्त्रमवेत्य माधवम् ।

मृगयुवतिगणैः समं स्थिता

न ज ज र

व्रजवनिता धृतचित्तविभ्रमा ॥ (छन्दोमञ्जरी)

।।।,।ऽ ।,।ऽ।,ऽ।ऽ

(४) पुष्पिताग्रा (नामान्तर औपच्छन्दसिक)

लक्षण—अयुजि नयुगरेफतो यकारो,
युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।

अर्थ—पुष्पिताग्रा के विषम चरणों में दो नगण, रगण और यगण के क्रम से १२ १२ अक्षर तथा सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ १३ अक्षर होते हैं।

(१२, १३, १२, १३)

उदाहरण—

न न र य

(क) अथ मदनवधूरुपप्लवान्त

।। ।, ।।।, ऽ।ऽ, । ऽ ऽ

व्यसनकृशा परिपालयांबभूव।

शशिन इव दिवातनस्य लेखा

न ज ज र गु

किरण परिक्षयधूसरा प्रदोषम्॥ (कुमारसम्भव ४।४६)

।।।, ।ऽ।, ।ऽ।, ऽ।ऽ, ऽ

(ख) प्रभु सम नहिं अन्य कोइ दाता,

सुध न जु ध्यावत तीन लोक त्राता।

सकल असत कामना विहाई,

हरि नित सेवहु मित्त चित्त लाई॥ (भानुकवि)

(ग) वर्णवृत्त, विषम छन्द

उद्गता

लक्षण—प्रथमे सजौ यदि सलौ च नसजगुरुकाण्यनन्तरम्।

यद्यथ भनजलगाः स्युरथो सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता॥

अर्थ—उद्गता के प्रथम चरण में सगण, जगण, सगण और लघु के क्रम से १० अक्षर, द्वितीय चरण में नगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १० अक्षर, तृतीय चरण में भगण, नगण, जगण और लघु गुरु के क्रम से ११ अक्षर तथा चतुर्थ चरण में सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १३ अक्षर होते हैं। (१०, १०, ११, १३)

उदाहरण—

स ज स ल

अथ वासवस्य वचनेन,

।। ऽ, ।ऽ।, ।।ऽ, ।

न स ज गु

रुचिरवदनस्त्रिलोचनम्।

।।।, ।।ऽ, । ऽ, ।ऽ

भ न ज ल गु

क्लान्तिरहितमभिराधयितुं,

ऽ । ।, ।।।, ।ऽ।, ।ऽ

स ज स ज गु

विधिवत्तपांसि विदधे धनंजयः॥ (किरातार्जुनीय १२।१)

। ।ऽ, ।ऽ।, ।।ऽ, ।ऽ।, ऽ

(घ) मात्रिक वा जाति छन्द

आर्या (विषम छन्द)

लक्षण—यस्याः पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥

अर्थ—आर्याछन्द के प्रथम और तृतीय चरण में १२ १२ मात्रायें, द्वितीय में १८ तथा चतुर्थ में १५ मात्रायें होती हैं । (१२, १८, १२, १५ मात्रायें)

उदाहरण—

SS I I I I I I I I

(क) सिंह शिशुरपि निपतति, = १२

I I I I I I S I S I I I S S

मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु । = १८

I I I I S S I I S

प्रकृतिरियं सत्त्ववता, = १२

I I I I S S I S S S

न खलु वयस्तेजसा हेतु । = १५

(ख) कवि निर्धन भी होकर,
शठ की सेवा कभी न करता है ।
रत्नाकर में जाकर,
हंस कभी क्या विचरता है ॥ (रामचरित उपाध्याय)

पञ्चम परिशिष्ट

संस्कृत-साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय

अनंगहर्ष—ये चेदिदेश के कल्चुरीवंशीय नृप नरेन्द्रवर्धन के पुत्र थे। वास्तविक नाम मायुराज (मातृराज) था। समय अष्टम शतक का उत्तरार्द्ध है। इनकी कृति 'तापस वत्सराज' (नाटक) में उदयन तथा वासवदत्ता की प्रसिद्ध कथा है। 'मायुराजसमो जज्ञे नान्य कल्चुरिः कवि' (राजशेखर)।

अप्पय दीक्षित—इनका जन्म भारद्वाजगोत्रीय रंगराज के गृह में १५५४ ई० में काञ्ची के समीप अडयपलम में हुआ था। ये अनेक वर्षों तक वेल्लोर और विजयनगर की राजसभाओं में सम्मानित रहे। प्रख्यात वैयाकरण भट्टोजीदीक्षित को वेदान्त इन्हीं ने पढाया था। पूर्व तथा उत्तरमीमांसा के ये पारदृश्वा पंडित थे। १६२६ ई० में इन्होंने ग्यारह विद्वान् पुत्रों की उपस्थिति में चिदम्बरम् में सहर्ष प्राणविसर्जन किया। काव्य, अलंकार, तर्क, दर्शन आदि अनेक विषयों पर इन्होंने १०४ ग्रंथों की रचना की जिनमें से काव्यकृतियाँ निम्नलिखित हैं—शिवपञ्चाशिका, दशकुमारचरितसंग्रह, पञ्चरत्नस्तव, शिवकर्णामृत, वैराग्यशतक, भक्तामरस्तव, शान्तिस्तव, रामायण-तात्पर्यनिर्णय, भारतसंग्रह, वरदराजस्तव, आदित्यस्तोत्ररत्न आदि। वसुमतीचित्रसेनविलास (नाटक), चित्रमीमांसा, वृत्तिवार्त्तिक, कुवलयानन्द (अलंकार) आदि के अतिरिक्त इन्होंने कई ग्रंथों पर टीकाएँ भी रची हैं।

अमरुक—इस कवि का वंश, देश, काल आदि अज्ञात है। आनन्दवर्द्धन ने 'ध्वन्यालोक' में इन के 'अमरुकशतक' के शृङ्गारी मुक्तकों की सरसता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। अतः ये नवमी शताब्दी से पूर्व विद्यमान थे। ये शब्द-कवि न थे, रस-कवि थे। हिन्दी के बिहारी, पद्माकर आदि कवियों पर इनके काव्य का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

अश्वघोष—संस्कृत के बौद्ध कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका जन्म साकेत में सम्भवतः ब्राह्मणवंश में सुवर्णाक्षी के गर्भ से हुआ था। परम्परानुसार ये महाराज कनिष्क (७८ ई०) के गुरु तथा आश्रित कवि थे। ये दार्शनिक तथा संगीतज्ञ भी थे। बौद्ध बनने के बाद इन्होंने बौद्धधर्म के प्रचार में भरसक सहयोग दिया। 'सौन्दरानन्द' तथा 'बुद्धचरित' इनके प्रख्यात महाकाव्य हैं। 'सौन्दरानन्द' के १८ सर्ग हैं। उनमें बुद्ध के उपदेश से उनके अनुज नन्द द्वारा पत्नी सुंदरी के परित्याग तथा दीक्षाग्रहण की कथा है। 'बुद्धचरित' के २८ सर्गों में से १७ उपलब्ध हैं और बुद्धचरित विषयक हैं। वैदर्भी रीति में रचित ये महाकाव्य संस्कृत काव्यसाहित्य के अलंकार हैं। अश्वघोष संस्कृत के प्रथम बौद्ध नाटककार हैं। इनके तीन नाटक उपलब्ध हुए हैं। 'शारिपुत्र-प्रकरण' नौ अंकों में है और पूर्ण है। इसमें बुद्ध के उपदेश से शारिपुत्र और मौदगल्यायन के दीक्षित होने का उल्लेख है। शेष दो नाटक त्रुटितनामक और खण्डित हैं। उनमें एक का कथानक 'प्रबोधचन्द्रोदय' के समान रूपकात्मक है और दूसरे का 'मृच्छकटिक' के तुल्य वेश्यानायकप्रणयात्मक।

आर्यशूर—ये बौद्धकवि सम्भवतः पाँचवीं शताब्दी में विद्यमान थे। 'जातकमाला' तथा 'पारमितासमास' इनकी दो प्रख्यात कृतियाँ हैं। इनकी कीर्ति का आधार-स्तम्भ 'जातकमाला' है जिसमें महात्मा बुद्ध के ३४ जन्मों की कथाएँ गद्य पद्यमयी सरस भाषा में वर्णित हैं। दूसरे काव्य में दान, शील, क्षान्ति आदि विषयों पर रचना की गई है। 'जातकमाला', 'पालिजातक' के आधार पर रचित स्वतन्त्र कृति है। इसके 'पद्यभाग के समान गद्यभाग भी सुश्लिष्ट, सुन्दर तथा सरस

है।' जातकमाला के कुछ अंश का चीनी में अनुवाद ९६० और ११२७ ई० के मध्य में किया गया था।

कल्हण (कल्याण)—इनके पिता चणपक काश्मीरनरेश हर्ष (१०४८–११०१ ई०) के प्रधानमन्त्री थे। ये अलकदत्त नामक व्यक्ति के आश्रित थे। इन्होंने राज-दरबार से दूर रहकर अपनी प्रख्यात ऐतिहासिक काव्यकृति 'राजतरंगिणी' की रचना सुस्सल के तनुज राजा जयसिंह (११२७–५९ ई०) के शासनकाल में की थी। 'राजतरंगिणी' का निर्मितिकाल ११४८–११५० ई० है। इसमें काश्मीर के राजनीतिक इतिहास, भौगोलिक विवरण, सामाजिक व्यवस्था, साहित्यिक समृद्धि आदि का सविस्तर और रोचक उल्लेख किया गया है। 'राजतरंगिणी' काव्य तथा इतिहास दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण कृति है जिसमें काश्मीर के प्राचीन काल से लेकर बारहवीं शती तक का विश्वसनीय वृत्त प्रस्तुत किया गया है।

कविराज सूरि—जयन्तपुरी के राजा कामदेव (११८२–९७ ई०) के सभापण्डित माधवभट्ट की ही उपाधि कविराज थी। इनकी रचना 'राघवपाण्डवीय' अपने ढंग की अपूर्व कृति है जिसका अनुकरण परवर्ती अनेक कवियों ने किया। इसका प्रत्येक पद्य श्लिष्ट है और रामायण तथा महाभारत दोनों से सम्बन्धित अर्थ व्यक्त करता है। इसी के अनुकरण पर हरदत्त ने 'राघवनैषधीय', चिदंबर ने 'राघवपाण्डवयादवीय' और विद्यामाधव ने 'पार्वतीरुक्मणीय' नामक काव्यों की सृष्टि की। इस प्रकार की श्लिष्ट रचनाएँ संस्कृत के अतिरिक्त सभी भाषाओं में अलभ्य हैं और सम्भवतः अलभ्य रहेंगी।

कालिदास—कुछ विद्वान् इन्हें ई० पू० प्रथम शताब्दी में मानते हैं तो कुछ छठी शती ईसवी में। कोई इनकी जन्मभूमि काश्मीर मानता है, कोई बंगाल और कोई उज्जयिनी। बहुमत उज्जयिनी के प्रति विशेष पक्षपात तथा सूक्ष्म भौगोलिक परिचय के आधार पर कालिदास उज्जयिनीवासी प्रतीत होते हैं।

कृतियाँ—ऋतुसंहार, कुमारसम्भव, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, रघुवंश, अभिज्ञान शाकुन्तल, मेघदूत।

'कुमारसम्भव' तथा 'रघुवंश' महाकाव्य हैं। 'कुमारसम्भव' के १७ सर्गों में शिव-पार्वती के विवाह, कार्तिकेय की उत्पत्ति तथा तारकासुर के वध की कथा है। 'रघुवंश' के १९ सर्गों में सूर्यवंशी राजाओं का कीर्तिगान है। मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल—तीनों नाटक हैं। प्रथम में राजा अग्निमित्र और मालविका की, द्वितीय में राजा पुरूरवा और अप्सरा उर्वशी की तथा तृतीय में राजा दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रेमकथा का वर्णन है। 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' संस्कृत गीतिकाव्य की प्राचीनतम कृतियाँ हैं। ऋतुसंहार के १४४ पद्यों में षड्ऋतुओं का सुन्दर वर्णन है तथा उनका प्रेमियों के हृदय पर प्रभाव अंकित किया गया है। 'मेघदूत' के १२१ पद्यों में एक निर्वासित विरही यक्ष की मनोव्यथा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। कालिदास की सर्वप्रियता का कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, लालित्योपेत, परिष्कृत शैली। इन्होंने सभी ग्रन्थ वैदर्भी रीति में लिखे हैं। उपमाओं में ये अपना जोड़ नहीं रखते। भाव, रस, भाषा, शैली, छंद, अलंकार जिस किसी भी दृष्टि से देखें कालिदास उत्कृष्टतम ठहरते हैं।

कुमारदास—सिंहल की जनश्रुति के अनुसार कुमारदास ने वहाँ ५१७–५२६ ई० तक शासन किया था। आधुनिक विद्वान् इन्हें ६५० और ७५० ई० के बीच में मानते हैं। इनके महाकाव्य 'जानकीहरण' के २५ में से १५ सर्ग ही प्राप्त हैं। कथा रामायण की पुरानी ही है परन्तु वर्णन-शैली अभिरूप है। प्रसाद, सुकुमारता, शब्दसौष्ठव तथा नादसौन्दर्य कृति के उल्लेख्य गुण हैं। राजशेखर (९०० ई०) ने इसकी प्रशंसा में यों लिखा है—

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः॥

रघुवंश की विद्यमानता में जानकीहरण करना या तो रावण का काम है या फिर कुमारदास का।

कृष्ण मिश्र—'प्रबोधचन्द्रोदय' नामक रूपक नाटक के रचयिता कृष्ण मिश्र जेजाकभुक्ति के राजा कीर्तिवर्मा के शासनकाल में ११०० ई० के लगभग विद्यमान थे। भास के 'बालचरित' के समान इस नाटक में विवेक, मोह, ज्ञान, विद्या आदि भावों को स्त्री पुरुष पात्रों के रूप में कल्पित किया गया है। इसी कृति के अनुकरण पर यशःपाल ने 'मोहपराजय', वेंकटनाथ ने 'सङ्कल्पसूर्योदय' तथा कविकर्णपूर ने 'चैतन्यचन्द्रोदय' की रचना की। हिन्दी कवि केशवदास ने 'विज्ञानगीता' में इसका छन्दोबद्ध अनुवाद किया है। दार्शनिक दृष्टि से कृति महत्त्वपूर्ण है।

क्षेमेन्द्र—सिन्धु के पौत्र तथा प्रकाशेन्द्र के पुत्र क्षेमेन्द्र का जन्म काश्मीर के एक धनाढ्य और उदार परिवार में हुआ था। इन्होंने आचार्य अभिनवगुप्त से साहित्याध्ययन किया था। ये ११वीं शती के मध्य में विराजमान थे। शैवमंडल में रहते हुए भी ये परम वैष्णव थे और इसका कारण था भागवताचार्य सोमपाद की शिक्षा।

इनके बृहदाकार अनेक ग्रन्थों में से प्रमुख ये हैं—रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी तथा बृहत्कथामञ्जरी। ये क्रमशः रामायण, महाभारत और गुणाढ्य की बृहत्कथा के आधार पर रचित स्वतन्त्र काव्यकृतियाँ हैं। 'दशावतारचरित' में विष्णु के दशावतारों का तथा 'बोधिसत्त्वावदान कल्पलता' में जातक कथाओं का सरल सुन्दर वर्णन है। अल्पाकार कृतियों में कलाविलास, चतुर्वर्ग संग्रह, चारुचर्या, नीतिकल्पतरु, समयमातृका और सेव्यसेवकोपदेश व्यवहारविषयक सुन्दर काव्यकृतियाँ हैं। इनकी रचनाएँ साहित्यिकता से पूर्ण भी हैं और लोकोपकार की भावना से ओत प्रोत भी।

गोवर्धनाचार्य—ये बंगाल के अन्तिम हिन्दूनरेश लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा के प्रतिष्ठित कवि थे। 'आर्यासप्तशती' इनकी एकमात्र रचना है जो 'हाल' की 'गाथासप्तशती' के अनुकरण पर रचित है। 'गाथासप्तशती' तो हालकृत संग्रह है परन्तु 'आर्यासप्तशती' केवल आचार्य की रचना है। इसमें संयोग तथा वियोग शृंगार की विविध दशाओं का मार्मिक चित्रण पुष्ट आर्या छन्द में किया गया है। नागरिक ललनाओं की शृङ्गारिक चेष्टाओं तथा ग्रामीण रमणियों की स्वाभाविक उक्तियों का उल्लेख अत्यन्त रमणीय है। हिन्दी के बिहारी आदि शृङ्गारी कवि भी इसके प्रभाव से अछूते नहीं रहे।

जगन्नाथ (पंडितराज)—आंध्र ब्राह्मण जगन्नाथ काशीनिवासी पेरुभट्ट तथा लक्ष्मीदेवी के पुत्र थे। इन्होंने काव्य और अलंकार का अध्ययन अपने पिता से किया और न्याय, व्याकरण आदि विषयों का ज्ञानेन्द्रभिक्षु, महेशाचार्य, खण्डदेव, शेष वीरेश्वर आदि से। दिल्लीश्वर शाहजहाँ (शासन १६२८-६६ ई०) ने इन्हें दाराशिकोह के शिक्षार्थ दिल्ली में बुलवा लिया था। उसके पश्चात् वृद्धावस्था में इनका स्वर्गवास १६७४ ई० में मथुरा में हुआ। कहते हैं, किसी यवनी के प्रेमजाल में फँसने के कारण इन्हें स्वजातीयों का कोपभाजन भी बनना पड़ा था।

गंगालहरी, सुधालहरी, अमृतलहरी, करुणालहरी और लक्ष्मीलहरी इनके सरस काव्यस्तोत्र हैं। 'जगदाभरण' में दाराशिकोह का, 'आसफविलास' (गद्यकाव्य) में नवाब आसफ़खाँ का और 'प्राणाभरण' में कामरूपाधिपति प्राणनारायण का वर्णन है। इनकी अन्य कृतियाँ 'चित्रमीमांसा खंडन', मनोरमाकुचमर्दन' तथा 'भामिनीविलास' हैं। इनकी सर्वोत्तम कृति 'रसगंगाधर' नामक अलंकार शास्त्र है जिसमें इनके प्रकाण्ड पाण्डित्य तथा अप्रतिम काव्यप्रतिभा का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। इन्हें अपने पाण्डित्य और कवित्व पर जो अभिमान था, वह अनुचित न था।

जयदेव—सात अंकों के प्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'प्रसन्नराघव' के कर्ता जयदेव का परिचय अभी तिमिराच्छन्न है। सुनते हैं, ये मिथिलावासी थे। ये १४वीं शती से पूर्व हुए हैं। 'प्रसन्नराघव' में रामायणीय कथा सुचारु रीति से चित्रित की गई है। मंजुल पदावली तथा प्रसादोपेत कविता

के कारण नाटक का नाम स्थिर है। 'रामचरितमानस' के कई स्थलों पर इस तार्किक और कवि का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

जयदेव—अमर काव्य 'गीतगोविन्द' के रचयिता जयदेव बंगाधिपति लक्ष्मणसेन (११९६ ई०) के सभारत्न थे। बंगाल के केन्दुबिल्व नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था। वे राधा कृष्ण की भक्ति के रस में पूर्णतया पगे हुए थे और उसी रस से पूर्ण 'गीतगोविन्द' नामक गीतिकाव्य भी है। १२ सर्गों का यह गीतिकाव्य इतना सरस व मधुर है कि कालिदास की कृतियों को भी मात करता है। भाव-सौष्ठव, कल्पनोत्कर्ष और सुललित पदावली के कारण रचना अपने ढंग की एक ही है।

तिरुमलाम्बा (रानी)—राजा अच्युत राय की पत्नी तिरुमलाम्बा ने 'वरदाम्बिकापरिणयचम्पू' की रचना १५२९ ४० के बीच में किसी समय की। इसमें अच्युत राय और वरदाम्बिका के प्रेम तथा परिणय का वर्णन है। सम्भव है, रानी ने रूपान्तर से अपनी ही कथा अंकित की हो। कृति से कर्त्री की पुष्ट कल्पना तथा संस्कृत भाषा पर पूर्ण अधिकार का परिचय मिलता है।

त्रिविक्रम भट्ट—शाण्डिल्यगोत्री त्रिविक्रम या सिंहादित्य, नेमादित्य (देवादित्य) के पुत्र थे। राष्ट्रकूट नृपति तृतीय इन्द्र (९१४ ९१६ ई०) के सभाकवि थे। 'नलचम्पू' (दमयन्तीकथा) और मदालसाचम्पू' इनकी विख्यात कृतियाँ हैं। ये संस्कृत-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ श्लेष-कवि हैं। 'नलचम्पू' में सरस तथा चमत्कारपूर्ण श्लेषों का प्राचुर्य है। इस कृति के रमणीय उद्धरणों को भोजराज तथा विश्वनाथ ने अनेकत्र उद्धृत किया है। नलचम्पू संस्कृत का प्रथम उपलब्ध चम्पू है।

दण्डी—कहा जाता है कि दण्डी का जन्म भारवि की चौथी पीढ़ी में हुआ था। इनकी माता का नाम गौरी तथा पिता का वीरदत्त था। ये सप्तमी शती के उत्तरार्द्ध तथा अष्टमी के पूर्वार्द्ध में विद्यमान थे और काञ्ची के पल्लवनरेशों की सभा में रहते थे।

इनकी तीन रचनाएँ हैं—दशकुमारचरित, काव्यादर्श तथा अवन्तिसुन्दरीकथा (?)। एक किंवदन्ती के अनुसार इन्होंने काव्यादर्श' की रचना पल्लवनरेश के पुत्र के शिक्षार्थ की थी। 'दशकुमारचरित' नामक प्रख्यात गद्यकाव्य में दस कुमारों के रोमाञ्चजनक चरित प्रस्तुत किये गये हैं। छल-कपट, मारकाट तथा सत्यानृत से परिपूर्ण होने के कारण रचना अत्यन्त सजीव है। पात्रों के चरित्र सुन्दर शैली में हैं तथा हास्य और व्यंग्य से पूर्ण हैं। भाषाशैली के विचार से भी यह रचना स्तुत्य है। भाषा प्रवाहपूर्ण, परिष्कृत तथा मुहावरों से अलंकृत है। जो पदलालित्य दण्डी में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कहा भी है—'दण्डिनः पदलालित्यम्'। कुछ आलोचक वाल्मीकि और व्यास के अनन्तर इन्हें ही तीसरा कवि मानते हैं—

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत्।
कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि॥

दामोदर मिश्र—इनके महानाटक 'हनुमन्नाटक' की रचना ८५० ई० के पूर्व हुई थी। इसमें १४ अंक हैं और कथानक रामायण पर आधृत है। प्रस्तावना और प्राकृत का अभाव, पद्यों की प्रचुरता, गद्य की न्यूनता, पात्रों की बहुलता तथा विदूषक की अविद्यमानता इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं। इसके दो संस्करण हैं—प्रथम दामोदर मिश्र कृत, द्वितीय जिसमें ९ अंक हैं, मधुसूदन-रचित है।

दिङ्नाग—'कुन्दमाला' नाटक के रचयिता दिङ्नाग या धीरनाग (अथवा वीरनाग) पाँचवीं शती के बौद्ध दार्शनिक दिङ्नाग से सर्वथा भिन्न हैं। ये १००० ई० के लगभग हुए हैं। 'कुन्दमाला' की कथा 'उत्तररामचरित' के समान वैदेहीवनवास पर आश्रित है। इस पर उत्तररामचरित का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। यह नाटक 'उत्तररामचरित'-सा सरस तो नहीं परन्तु क्रियाशीलता में उससे बढ़कर है। शैली प्रसादपूर्ण है तथा करुण-रस की व्यञ्जना अच्छी हुई है।

धोयी—जयदेव ने 'गीतगोविन्द' (१४) में धोयी को 'श्रुतिधर' लिखा है। ये गोवर्धनाचार्य तथा जयदेव के साथ राजा लक्ष्मणसेन (११९६ ई०) की सभा में विद्यमान थे। मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखे हुए इनके 'पवनदूत' में १०४ पद्य हैं। मलयाचल में कुवलयवती नाम्नी गन्धर्वकन्या दिग्विजयी लक्ष्मणसेन पर आसक्त हो गई और उसने उनके निकट जाने पर पवन द्वारा संदेश भेजा। मेघदूत' का प्रभाव इस कृति पर स्पष्ट दिखाई देता है। काव्य में भावसौष्ठव तथा वाक्यविन्यास मनोरम हैं।

नारायणपण्डित—ये बंगाल के राजा धवलचन्द्र के आश्रित थे। इन्होंने १४वीं शती से पूर्व हितोपदेश' की रचना बहुत सीमा तक 'पंचतंत्र' के आधार पर की। कई श्लोक कामन्दकीय नीतिसार से लिए गए हैं। हितोपदेश में नीतिसम्बन्धी रोचक गद्यपद्यमयी कथाएँ हैं। भाषा सरल एवं सुबोध है।

पद्मगुप्त—ये धारानरेश मुञ्ज तथा उनके पुत्र सिन्धुराज (नवसाहसांक) के सभा-कवि थे। इन्होंने 'नवसाहसांकचरित' काव्य की रचना सं० १००५ ई० के आसपास की थी। काव्य का विषय कृति नाम से ही अनुमित हो जाता है। उसमें सिन्धुराज और शशिप्रभा का विवाह आदि का उल्लेख है। ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से भी कृति महत्त्वपूर्ण है। कृति में १८ सर्ग तथा १९ प्रकार के छन्द हैं और कुल १५०० पद्य हैं। भाषा व शैली कालिदास से प्रभावित है। काव्य का माधुर्य तथा वर्णनकौशल प्रशस्य है।

बाणभट्ट—बाणभट्ट के पूर्वज अत्यन्त विद्वान् थे और सोननदीवर्ती प्रीतिकूट नगर में रहते थे। बाण का जन्म वात्स्यायनगोत्री चित्रभानु के गृह में हुआ था। कुसंगति में पड़कर बाण पहले तो आवारा घूमते रहे परन्तु सँभलने पर महान् विद्वान् तथा सम्राट् हर्षवर्धन के सभारत्न बन गये। बाण अपनी 'कादम्बरी' को पूर्ण नहीं कर पाये थे कि काल का निमंत्रण आ पहुँचा। उस अपूर्ण कृति को इनके पुत्र पुलिन या पुलिन्दभट्ट ने पूर्ण किया। कहते हैं बाण का विवाह मयूर कवि की पुत्री से हुआ था और उनकी एक थिक सन्तान थी। बाण का स्फुरण सातवीं शती में हुआ। उनकी प्रख्यात कृतियाँ ये हैं—

१ 'चण्डीशतक' में देवी भगवती की प्रशंसा है।

२ 'हर्षचरित' के प्रथम दो उच्छ्वासों में कवि का आत्मचरित है और शेष छह में हर्ष का चरित। यह रचना बड़ी ओजस्विनी तथा समासबहुला है। संस्कृत की प्राचीनतम उपलब्ध आख्यायिका यही है।

३ कादम्बरी' इनकी उत्कृष्टतम कृति है। दो विभाग (पूर्वार्द्ध) बाणकृत है और उत्तरार्द्ध पुलिन्दरचित। भाव, भाषा, कल्पना, वर्णन, रस-सभी दृष्टियों से कादम्बरी अनुपम है।

४ 'पार्वतीपरिणय' नाटक में शिवपार्वती के विवाह का वर्णन है, कई लोग इसे किसी अन्य बाण की कृति कहते हैं।

५ मुकुटताडितक' नाटक भी इनकी रचना कहा गया है परन्तु अभी तक प्राप्त नहीं हुआ।

किसी ने तो समग्र संसार को ही बाण का जूठा कहा है—'बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्।' गोवर्धनाचार्य ने तो बाण को वाणी का अवतार ही माना है—

> जाता शिखण्डिनी प्राग् यथा शिखण्डी तथावगच्छामि।
> प्रागल्भ्यमधिकमाप्तुं वाणी बाणो बभूवेति॥

बिह्लण—अपने ऐतिहासिक महाकाव्य 'विक्रमांकदेवचरित' में बिह्लण ने स्वपरिचय भी प्रस्तुत किया है। बिह्लण ज्येष्ठकलश और नागदेवी के पुत्र तथा इष्टराम और आनन्द के भाई थे। आश्रयदाता की खोज में वे काश्मीर से निकलकर मथुरा, प्रयाग, काशी आदि होते हुए कल्याणनगर के चालुक्यवंशीय विक्रमादित्य षष्ठ (१०७६-११२७) की सभा में जा

पहुँचे। उक्त काव्य में कवि ने निज आश्रयदाता तथा उसके वंश का विस्तृत वर्णन किया है। १८ सर्गों के इस काव्य में माधुर्य एवं प्रसाद की भाषा प्रचुर है तथा वैदर्भी रीति प्रयुक्त की गई है। यह काव्य अनूठी सूक्तियों तथा वीर, शृङ्गार और करुण रस से पूर्ण है।

भट्टनारायण—इनका विशेष वृत्त अभी तक अविदित है। सुनते हैं, ये उन पाँच कनौजिया ब्राह्मणों में से थे जिन्हें बंगनरेश 'आदिशूर' ने बंग में वैदिकधर्म प्रचारार्थ बुलाया था। आदिशूर ७१५ ई० में गौडाधिपति के पद पर आसीन हुए थे। इनका नाटक 'वेणीसंहार' ८०० ई० से पूर्व रचा जा चुका था। कवि की उक्त एकमात्र कृति का विषय है महाभारत का युद्ध। रचना में गौड़ी रीति तथा ओजगुण विशिष्ट रूप से मिलता है। नाटकीय सिद्धान्तों के प्रदर्शनार्थ नाटक उपयोगी है।

भट्टि या भट्टिस्वामी—'भट्टिकाव्य' (रावणवध) के रचयिता का विशेष वृत्त अज्ञात है। इस महाकाव्य के अन्तिम पद्य से ज्ञात होता है कि वल्भी नरेश श्रीधरसेन की सभा में कवि समादृत था। भट्टि का समय छठी शती का उत्तरार्द्ध तथा सप्तमी का पूर्वार्द्ध है।

उक्त महाकाव्य की रचना सरलता से व्याकरण सिखाने को की गई थी। इसके २२ सर्गों में १६२४ श्लोक हैं। इसके प्रकीर्ण, प्रसन्न, अलङ्कार और तिङन्त नामक चार भागों में व्याकरण तथा अलंकारों का सुन्दर निरूपण हुआ है। राम-कथा के साथ-साथ पाठक को व्याकरण ज्ञान भी पूर्णतया हो जाता है। काव्यत्व की दृष्टि से भी ग्रन्थ उपादेय है। कवि ने इसके उद्देश्य के विषय में स्वयं लिखा है—

दीपतुल्यः प्रबन्धोऽयं शब्दलक्षणचक्षुषाम्।
हस्तादर्श इवान्धानां भवेद् व्याकरणादृते॥

और इस उद्देश्य की पूर्ति में कृति सफल हुई है।

भर्तृहरि—भर्तृहरि का नाम जितना प्रसिद्ध है उतना ही जीवन चरित अबुद्ध। कुछ लोग इन्हें महाराज विक्रमादित्य का अग्रज मानते हैं परन्तु अधिकतर विद्वान् इन्हें प्रख्यात वैयाकरण भर्तृहरि से अभिन्न कहते हैं। कुछ लोग इन्हें बौद्ध कहते हैं परन्तु इनकी कृतियाँ इन्हें अद्वैतवादी वैदिकधर्मी घोषित करती हैं। इनका समय सप्तमी शती कहा जाता है।

इनके तीन शतक प्रसिद्ध हैं—नीतिशतक, शृङ्गारशतक और वैराग्यशतक। भर्तृहरि ने जो पर्याप्त सांसारिक अनुभव प्राप्त किया था उसी को स्वकृतियों में अंकित कर अक्षय यश प्राप्त किया है। धार्मिक कृतियों में जैसे गीता प्रख्यात है, लौकिक कृतियों में वैसे ही इनकी शतकत्रयी।

भवभूति—इनके नाटकों की प्रस्तावना से विदित होता है कि इनका जन्म विदर्भ (बरार) के पद्मपुर नगर में उदुम्बरवंशी विप्र परिवार में हुआ था। इनका परिवार कृष्णयजुर्वेद का अध्येता तथा सोमयाजी था। ये भट्टगोपाल के पौत्र तथा नीलकण्ठ के पुत्र थे। इनकी जननी का नाम जतुकर्णी था तथा इनका निजी नाम श्रीकण्ठ था। भवभूति इनका प्राप्त प्रदत्त नाम था और ये ज्ञाननिधि के शिष्य थे। इनका जीवन-काल सम्भवतः ६५०-७५० ई० के मध्य में होगा। ये प्रख्यात मीमांसक कुमारिल भट्ट के भी शिष्य थे और दार्शनिक जगत् में भट्ट उम्बेक के नाम से विख्यात थे।

इनके तीन रूपक प्राप्त हुए हैं—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित। महावीरचरित के छह अंकों में श्रीराम का चरित प्रस्तुत किया गया है। नाटक वीररस प्रधान है। मालतीमाधव दस अंकों का विशाल 'प्रकरण' है। इसमें मालती तथा माधव की काल्पनिक प्रेम-कथा को भावपूर्ण ढङ्ग से उपन्यस्त किया गया है। उत्तररामचरित में सीताजीवन का बहुत ही करुणाजनक वर्णन है। सात अंकों की यह रचना भवभूति की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें कवि ने राम के विलाप से निर्जीव पत्थरों तक को रुलाया है। कवि ने अपने कल्पना बल से वाल्मीकीय

रामायण के कई प्रसंगों में परिवर्तन कर दिये हैं। इनकी कविता में भाव तथा भाषा का अतुल्य सामञ्जस्य है। भाषा में भावानुकूल परिवर्तन करने में ये विशेष निपुण थे। यों तो सभी रसों की अभिव्यक्ति में ये कुशल थे परन्तु करुणरस की व्यञ्जना में तो विशेष दक्ष थे। नाटककारों में कालिदास के पश्चात् इन्हीं का नाम लिया जाता है।

भारवि—'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार ये दाक्षिणात्य थे और पुलकेशी द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (शासनकाल ६१५ ई०) के सभाकवि थे। कुछ विद्वान् इन्हें श्रवणकोरवासी बताते हैं। इनका समय ६०० ई० के लगभग है।

'किरातार्जुनीय' महाकाव्य ही इनकी एकमात्र प्राप्त कृति है। महाकाव्य के सभी लक्षण इसमें पूर्णतया विद्यमान हैं। इसका कथानक, जो महाभारत के वनपर्व पर आधृत है, इस प्रकार है—द्यूत में पराजित पाण्डव जब द्वैतवन में रह रहे थे तब उनके गुप्तचर ने दुर्योधन के सुव्यवस्थित शासन की स्तुति की। इस पर द्रौपदी और भीमसेन ने युधिष्ठिर को युद्धार्थ उत्तेजित किया परन्तु धर्मपुत्र ने प्रतिशमग अनुचित माना। वेदव्यास की प्रेरणा से अर्जुन शिवजी से पाशुपतास्त्र प्राप्त करने को इन्द्रकील पर्वत पर पहुँचे। उनकी उग्र तपस्या को अप्सराएँ भी भग्न न कर सकीं। फिर अर्जुन ने किरातवेशी शिव को अपनी शक्ति से प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र की प्राप्ति की।

समग्र संस्कृत-वाङ्मय में किरातार्जुनीय-सा ओज पूर्ण काव्य अन्य नहीं है। १८ सर्गों के इस महाकाव्य में प्रधान रस वीर है, अन्य रस गौण। अर्थगौरव अर्थात् थोड़े शब्दों में विशाल और गम्भीर अर्थ को सन्निविष्ट कर देना भारवि की उल्लेख्य विशेषता है जिसके कारण 'भारवेरर्थगौरवम्' उक्ति प्रख्यात हो चुकी है। भारवि का काव्य आपातत कठिन है परन्तु अर्थ व्यक्त होने पर वैसे ही आनन्ददायक सिद्ध होता है जैसे नारियल की जटा और खोल तोड़ देने पर उसका फल। इन्हीं गुणों के कारण महाकाव्यों का बृहत्त्रयी (किरात, माघ और नैषध) में 'किरातार्जुनीय' का स्थान प्रमुख है।

भास—प्रख्यात नाटककार भास के काल के सम्बन्ध में विद्वानों में ऐकमत्य नहीं है। कुछ इन्हें तीसरी शती ईसवी का बताते हैं तो कुछ ई० पू० दूसरी शती का। इनके तेरह नाटक प्राप्त हुए हैं जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. प्रतिमा नाटक—इसमें रामवनवास से रावणवध तक की घटनाओं का उल्लेख है। कैकय से लौटते हुए भरत देवकुल में दशरथ की प्रतिमा देखकर उनकी मृत्यु का अनुमान करते हैं। अतएव नाटक को उक्त नाम दिया गया है।

२ अभिषेक नाटक—राम के राज्याभिषेक का वृत्त है।

३. पञ्चरात्र—महाभारत से सम्बन्धित एक कल्पित घटना के आधार पर रचा गया है। दुर्योधन की शर्त के अनुसार द्रोण ने पाण्डवों को पाँच रातों में ढूँढ लिया और दुर्योधन ने उन्हें आधा राज्य दे दिया, यही कथानकसार है।

४-८ मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभार, दूतवाक्य, ऊरुभंग के कथानक महाभारत के विशिष्ट प्रसंगों से सम्बन्धित हैं।

९. बालचरित—का सम्बन्ध बालकृष्ण की लीलाओं से है।

१०. दरिद्रचारुदत्त—इसमें निर्धन परन्तु चरित्रवान् चारुदत्त और गुणग्राहिणी वेश्या वसन्तसेना के प्रणय का चित्रण है।

११ अविमारक—में एक प्राचीन आख्यायिका को नाटकीय रूप दिया गया है।

१२ प्रतिज्ञायौगन्धरायण—इसमें मन्त्री यौगन्धरायण को नीति से वत्सराज उदयन के कारामुक्त होने तथा अवन्तिकुमारी वासवदत्ता से उनके विवाह का वर्णन है।

१३ स्वप्नवासवदत्त—इसे 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' का उत्तरार्द्ध कहना उचित है। इसमें उदयन का मगधकुमारी पद्मावती से विवाह और वासवदत्ता से पुनर्मिलन वर्णित है। यही भास की सर्वोत्तम कृति है।

भास सभी रसों की व्यंजना में कुशल हैं। उनके चरित्र चित्रण मनोवैज्ञानिक हैं और संवाद चुस्त तथा संक्षिप्त। सबसे बड़ी बात यह है कि ये नाटक अभिनय के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं।

भोज—सिंधुल के पुत्र परमार-वंशीय राजा भोज की राजधानी मालवा की धार या धारानगरी थी, जहाँ इन्होंने १०१८–१०६३ ई० तक शासन किया। पिता की मृत्यु के अनन्तर बालक भोज, राज्यलोलुप चाचा मुंज के हाथों कालकवलित होने को थे पर भाग्यवश बच गये। ये बहुत उदार, विद्वान् तथा विद्वानों के आश्रयदाता थे। भोजप्रबन्ध आदि कई ग्रंथों में इनके गुणों की कथाएँ लिखित हैं।

शृङ्गारमञ्जरी (आख्यायिका), विद्याविनोद (काव्य), शिवदत्त (स्तोत्र), शिवतत्त्वरत्नकलिका (शिवस्तोत्रव्याख्या), सुभाषित, सङ्गीतप्रकाशिका, शृङ्गारप्रकाश, रामायणचम्पू और सरस्वती कण्ठाभरण इनकी कृतियाँ कही जाती हैं।

मङ्खक—काश्मीरनरेश महाकवि मंखक प्रख्यात आलंकारिक रुय्यक के शिष्य थे और गुरु-शिष्य दोनों ही काश्मीरनरेश राजा जयसिंह (११२९–५० ई०) के सभापण्डित थे। स्वर्गीय पिता की आज्ञानुसार ही मंखक ने 'श्रीकण्ठचरित' नामक २५ सर्गों के सुन्दर महाकाव्य की रचना की जिसमें शंकर और त्रिपुर का युद्ध वर्णित है। इनकी शैली कालिदासानुसारिणी है। प्राकृतिक दृश्यों, सरस भावों तथा प्रभावक कल्पनाओं को कोमल पदावली में व्यक्त करने में मंखक विशेष कुशल हैं।

मयूरभट्ट—ये बाणभट्ट के सगे सम्बन्धी थे और वाराणसी के पूर्व में रहते थे। बाण के समान ये भी हर्षवर्द्धन की सभा के कवि थे। इन्होंने अपने कुष्ठ रोग के निवारणार्थ स्रग्धरा वृत्त में 'सूर्यशतक' स्तोत्र का प्रणयन किया जो वस्तुतः प्रौढ और मार्मिक कृति है। ये सूर्यदेव के रथ, अश्व आदि उपकरणों के वर्णन में तथा अनुप्रासमयी भाषा के प्रयोग में विशेष सफल हुए हैं।

माघ—महाकवि माघ के पितामह सुप्रभदेव गुजरात के वर्मलात नामक राजा के मुख्यमन्त्री थे और पिता दत्तक प्रकाण्ड विद्वान् तथा वदान्य। माघ का जन्म भीनमाल नगर में हुआ था और ये धारा के भोज से भिन्न किसी अन्य राजा भोज के मित्र थे। सुसम्पन्न कुल में उत्पन्न होने पर भी, कहते हैं इनकी मृत्यु अत्यधिक उदारता के कारण, दरिद्रतावश हुई थी। ये सातवीं शती के उत्तरार्द्ध में विद्यमान थे।

ये अपने एकमात्र उपलब्ध महाकाव्य 'शिशुपालवध' के कारण अमर हो गये हैं। बीस सर्गों के इस महाकाव्य में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण के हाथों शिशुपाल के वध का विस्तृत वृत्त वर्णन है। काव्य के अध्ययन से माघ की राजनीतिज्ञता और अलंकारप्रियता का अच्छा परिचय प्राप्त हो जाता है। माघ केवल रससिद्ध कवि ही नहीं, सर्वशास्त्रविद् गम्भीर विद्वान् भी थे। शास्त्रीय सिद्धान्तों का जितना सुन्दर सरस प्रतिपादन शिशुपालवध में उपलब्ध होता है, किसी अन्य काव्य में नहीं। माघ का पाण्डित्य सर्वतोमुखी है, वेद तथा दर्शन से लेकर राजनीति तक की विशेषज्ञता इनके ही काव्य में दिखाई देती है। नव-नव शब्दों के प्रयोग तथा व्याकरणानुरूप नव-नव शब्दरूपों के व्यवहार के कारण भी माघ विशेष प्रख्यात हैं।

किसी भारतीय आलोचक का मत है—

उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिन पदलालित्यं, माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

मुरारि—'अनर्घराघव' नाटक के रचयिता मुरारि मौद्गल्यगोत्री वर्धमानक तथा तन्तुमती के पुत्र थे। ये सम्भवतः माहिष्मती (दक्षिण में स्थित मान्धाता नगरी) के निवासी थे और ८०० ई०

के लगभग वर्तमान थे। 'अनर्घराघव' सात अंकों का और भवभूति के महावीरचरित से प्रभावित नाटक है। उसमें ताड़कावध से लेकर रामराज्याभिषेक तक की घटनाएँ वर्णित हैं। कविता प्रौढ़ तथा पाण्डित्यपूर्ण है, वर्णन प्रशस्य हैं और शब्दराशि विशाल है। इनकी उपमाओं की मौलिकता देखकर ही कहा गया है—'मुरारेस्तृतीय: पन्था'।

रत्नाकर—काश्मीरी महाकवि रत्नाकर, अमृतभानु के पुत्र और काश्मीर-नरेश जयापीड (८०० ई०) के सभापण्डित थे। इनके 'हरविजय' महाकाव्य में ५० सर्ग तथा ४३२१ पद्य हैं। आकार के कारण ही नहीं, काव्योचित अन्य गुणों के कारण भी यह महाकाव्य संस्कृतवाङ्मय में विशिष्ट स्थान रखता है। यह महाकाव्य ललित, मधुर, प्रसादोपेत भाषा तथा चित्र, यमक और श्लेष के चमत्कारों से मण्डित है।

इस महाकाव्य में शंकर द्वारा अन्धक असुर के वध का वर्णन है। रत्नाकर ने 'शिशुपालवध' को मात करने के लिए इस काव्य का प्रणयन किया था और उनका प्रयास व्यर्थ नहीं हुआ।

राजशेखर—ये 'महाराष्ट्रचूडामणि' कविवर अकालजलद के प्रपौत्र तथा दुर्दुक और शीलवती के पुत्र थे। ये स्वयं यायावर क्षत्रिय थे और इनकी पत्नी अवन्तिसुन्दरी चौहान, संस्कृत और प्राकृत की प्रकाण्ड विदुषी थी। राजशेखर महाराष्ट्र, सम्भवतः विदर्भ के रहनेवाले थे और कन्नौज-नरेश महेन्द्रपाल के गुरु थे। अतः इनका काल नवीं शती का उत्तरार्ध तथा दशमी का पूर्वार्द्ध माना जाता है। राजशेखर धुरंधर विद्वान् थे और अपने को वाल्मीकि तथा भवभूति का अवतार समझते थे। ये भूगोल के बहुत बड़े पण्डित थे परन्तु इनका इस विषय का ग्रन्थ 'भुवनकोश' आज अप्राप्य है। ये संस्कृत, प्राकृत, पैशाची तथा अपभ्रंश के दिग्गज विद्वान् तथा लेखक थे।

इनके चार नाटक उपलब्ध हैं—कर्पूरमंजरी, विद्धशालभंजिका, बालरामायण और बालभारत अथवा प्रचण्डपाण्डव। कर्पूरमंजरी प्राकृत में लिखित एक 'सट्टक' है जिसमें चण्डपाल तथा राजकुमारी कर्पूरमंजरी का विवाह चित्रित किया गया है। विद्धशालभंजिका चार अङ्कों की प्रेमाख्यानात्मक नाटिका है। बालरामायण दस अङ्कों का महानाटक है। बालमहाभारत के दो ही अंक प्राप्त हैं। भाषा-कौशल तथा सुन्दर उक्तियों से युक्त होने पर भी इनके नाटक नाटकीय कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं माने जाते। इनका महाकाव्य 'हरविलास' तो आज उपलब्ध नहीं है परन्तु 'काव्यमीमांसा' इनका अलंकारविषयक प्रौढ़ ग्रन्थ है।

वत्सराज—कालिंजर-नरेश परमर्दिदेव (११६३-१२०३ ई०) के मन्त्री वत्सराज के छह रूपक उपलब्ध हुए हैं—१ किरातार्जुनीय-व्यायोग, २ कर्पूरचरित, ३. हास्यचूडामणि, ४. रुक्मिणीहरण, ५ त्रिपुरदाह और ६ समुद्रमथन। किरातार्जुनीयव्यायोग की रचना भारवि के किरातार्जुनीय के आधार पर हुई है। कर्पूरचरित 'भाण' में धूतकर कर्पूर ने स्वरोचक अनुभव वर्णित किये हैं। हास्यचूडामणि एकांकी प्रहसन है। रुक्मिणीहरण चतुरात्मक 'ईहामृग' है। त्रिपुरदाह चतुरंकी 'डिम' है जिसमें शिव द्वारा त्रिपुर असुर के पुर के विध्वंस का वर्णन है। समुद्रमथन त्र्यंकी 'समवकार' है जिसमें समुद्रमथन तथा लक्ष्मीविष्णु के विवाह का चित्रण है। भास के पश्चात् वत्सराज ने ही अनेक प्रकार के रूपकों की रचना की है। इनके लघ्वाकार नाटकों की शैली सरल और सशक्त है। उनमें नाटकीय क्रियाशीलता और रोचकता प्रचुर है।

वाल्मीकि—कहते हैं वाल्मीकि पहले एक दस्यु थे परन्तु सत्संगति से ऋषि बन गये। वे भारत के आदिकवि माने जाते हैं और रामायण आदिकाव्य। श्रद्धालु लोगों का विश्वास है कि रामायण की रचना श्री राम के आविर्भाव से सहस्रों वर्ष पूर्व की जा चुकी थी परन्तु आधुनिक विद्वान् इसे आज से प्रायः ढाई सहस्र वर्ष पूर्व की कृति बताते हैं। अधिकतर विद्वान् इसके उत्तरकाण्ड को पूर्णतः और बालकाण्ड को अंशतः प्रक्षिप्त मानते हैं। रामायण में २४००० श्लोक हैं जिनमें बहुलता अनुष्टुप् छन्द की है। उत्तरी भारत, बंगाल तथा काश्मीर में रामायण के

जो सम्वरण प्राप्त होते है उनमे पर्याप्त पाठभेद है। सच्चा कवि और उत्तम महाकाव्य कैसा होना चाहिए, यह हमें वाल्मीकि रामायण से ही विदित होता है। सामान्य मनुष्य गृहस्थ बनता है परन्तु गार्हस्थ्य को सफल बनाना कितना दुष्कर है, इसे गृहस्थ ही जानते हैं। इसी उच्च उद्देश्य की सिद्धि का मार्ग वाल्मीकि ने दशरथ, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत आदि के दिव्य चरित्रों से प्रशस्त किया है। किसी विद्वान् का यह विचार अत्युक्तियुक्त नहीं है कि ससार भर के साहित्य में सदाचार और काव्यत्व का जितना सुन्दर मिश्रण वाल्मीकि-रामायण में हुआ है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। रामायण करुणरस प्रधान महाकाव्य है। इसमें बाह्य प्रकृति तथा मानवीय प्रकृति का अत्यन्त मनोरम चित्रण हुआ है। यह प्राचीन भारत की सभ्यता का उज्ज्वल दर्पण है। यही कारण है कि इसके उदात्त आदर्शों तथा पवित्र कथा के आधार पर परवर्ती असख्य कवियों ने अपने काव्य, नाटक, चम्पू आदि की रचना की तथा इस पर तिलक, शृङ्गारतिलक, रामायणकूट, वाल्मीकितात्पर्यतरणि, विवेकतिलक आदि अनेक टीकाएँ लिखकर विद्वानों ने अपने प्रयास को सफल समझा।

विशाखदत्त—इनके पितामह बटेश्वरदत्त अथवा वत्सराज कहीं के सामन्त थे और पिता भास्करदत्त या पृथु ने महाराज-पदवी प्राप्त की थी। विशाखदत्त राजनीति, दर्शन और ज्योतिष के विशेषज्ञ थे। ये वैदिकधर्मावलम्बी थे परन्तु साम्प्रदायिक कट्टरता से रहित थे। इन्होंने अपने प्रख्यात राजनीतिक तथा कूटनीतिक नाटक 'मुद्राराक्षस' की रचना छठी शती ईसवी के उत्तरार्द्ध में की थी। नाटक में चाणक्य का समग्र उद्योग इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए है कि राक्षस को चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधान मन्त्री बना दिया जाय और अन्तत वे उसमे सफल होते हैं। राजनीतिक चालों तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नाटक विशेष महत्त्वपूर्ण है। विशाखदत्त की दूसरी रचना 'देवीचन्द्रगुप्त' के कुछ ही उद्धरण अन्य कृतियों मे प्राप्त हुए हैं। उन्हीं के आधार पर चन्द्रगुप्त के अग्रज रामगुप्त की सत्ता ऐतिहासिकों ने स्वीकृत की है।

विष्णुशर्मा—महिलारोप्य के शासक अमरशक्ति अपने मूर्ख राजकुमारों को चतुर बनाने के लिए योग्य शिक्षक की खोज में थे। इस कार्य को विष्णुशर्मा नामक ब्राह्मण ने पंचतन्त्र की रचना द्वारा छह मास में ही पूर्ण कर दिया। 'पचतत्र' का रचना-काल ३०० ई० के लगभग माना जाता है। छठी शती में इसका पहलवी भाषा में अनुवाद भी हो गया था। कदाचित् आरम्भ में इसके बारह भाग थे परन्तु वर्तमान में इसके पाँच भाग हैं—मित्रभेद, मित्र-सम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्ध प्रणाश, अपरीक्षितकारक। इस कथा-ग्रन्थ में कथाएँ गद्य में हैं और शिक्षाप्रद बातें पद्यों में। एक एक मुख्य कथा के अन्तर्गत अनेक गौण कथाएँ दी गई हैं। सदाचार, व्यवहार और नीति के शिक्षार्थ यह कृति अत्यन्त उपयोगी है और यही कारण है कि अनेक विदेशी भाषाओं तक में अनूदित हो चुकी है।

वेंकटाध्वरि—ये मद्रास प्रान्त के श्रीवैष्णव थे। इन्होंने अपने 'विश्वगुणादर्शचम्पू' में मद्रास में अंग्रेजों के दुराचार का भी वर्णन किया है जिससे ये सत्रहवीं शती के मध्य के प्रतीत होते हैं। इनका यशोविस्तारक काव्य तो "लक्ष्मीसहस्र" है जिसकी एक सहस्र ललित व भावपूर्ण पद्यों की रचना कहते हैं, इन्होंने एक ही रात में कर दी थी। काव्य में श्लेष तथा अन्यालङ्कारों की छटा अवलोकनीय है। इस अत्यन्त सरस व उत्प्रेक्षाबहुल रचना से कवि अमर हो गया है।

व्यास—व्यासजी का पूरा नाम कृष्णद्वैपायन व्यास था। ये पराशर और सत्यवती के पुत्र थे। सुनते हैं, रंग से कृष्ण होने के कारण कृष्ण, द्वीप में उत्पन्न होने के कारण द्वैपायन तथा वैदिक मन्त्रों को वर्तमान व्यवस्थित रूप देने के कारण ये व्यास कहलाए। भारतीय परपरा इन्हें महाभारत, १८ पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का कर्ता मानती है, परन्तु आधुनिक विद्वान् महाभारत को न एककर्तृक मानते हैं न एककालीन। उनका मत है कि महाभारत के विभिन्न अंशों की रचना अनेक विद्वानों द्वारा समय समय पर होती रही और उसे वर्तमान रूप ३२० ई० पू० तथा ५० ई० के मध्य में किसी समय प्राप्त हुआ।

किया गया है। कृति का प्रेमि प्रेमविषयक अंश भासकृत 'दरिद्रचारुदत्त' से बहुत अधिक प्रभावित है परन्तु राजनीतिक भाग कवि की निजी सम्पदा है। 'मृच्छकटिक' की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्राकृत भाषा है। जितनी प्राकृत इस नाटक में प्रयुक्त हुई है उतनी अन्य किसी में भी नहीं। नाटक में पात्रों का चरित्र तथा समाज का चित्र सरल शैली में सम्यक् चित्रित किया गया है। नाटक का प्रधान रस शृङ्गार है।

श्रीहर्ष—श्रीहर्ष का जन्म हीर पण्डित और मामल्लदेवी के गृह में हुआ था। हीर पण्डित कान्यकुब्जेश्वर जयचन्द्र के पिता विजयचन्द्र की सभा के प्रधान पण्डित थे परन्तु संयोगवश मैथिल नैयायिक उदयनाचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित हो गये थे। मरणासन्न हीर ने पुत्र को कहा—'यदि तुम सुपुत्र हो तो मेरे विजेता को पराजित करना' श्रीहर्ष ने गंगातट पर चिन्तामणि मन्त्र का वर्ष भर जप किया और सफलमनोरथ हुए। श्रीहर्ष जयचन्द्र की सभा के रत्न तो थे ही, सम्भवतः विजयचन्द्र की सभा को भी सुभूषित करते रहे होंगे, क्योंकि उन्होंने 'विजयप्रशस्ति' उन्हीं के नाम पर रची है। ये रससिद्ध कवि ही न थे, प्रकाण्ड पण्डित भी थे, जैसा कि इनके 'खण्डनखण्डखाद्य' से सिद्ध होता है। इनका सिद्ध योगी होना नैषधकाव्य के अन्त्य श्लोक से सिद्ध होता है—

य: साक्षात् कुरुते समाधिषु परं ब्रह्म प्रमोदार्णवम्।

इनका आविर्भावकाल बारहवीं शती का उत्तरार्द्ध है।

श्रीहर्ष ने अपनी कृतियों का उल्लेख 'नैषध' में इस क्रम से किया है—(१) स्थैर्यविचारण प्रकरण (दर्शन), (२) विजयप्रशस्ति, (३) खण्डनखण्डखाद्य (वेदान्त), (४) गौडोर्वीशकुलप्रशस्ति, (५) अर्णववर्णन, (६) छिन्दप्रशस्ति, (७) शिवशक्तिसिद्धि, (८) नवसाहसाङ्कचरितचम्पू, (९) नैषधीयचरित। सुविख्यात 'नैषधीय चरित' में २२ सर्ग हैं और २८३० श्लोक। इसमें नल-दमयन्ती की कथा का सरस तथा सुविस्तृत वर्णन है। नैषध में वैदग्ध्य तथा पाण्डित्य का अद्भुत मिश्रण है। वक्रोक्ति के प्रयोग में श्रीहर्ष विशेष कुशल हैं। भाव-पक्ष तथा कला पक्ष दोनों की अभिव्यक्ति नैषधकाव्य में मार्मिक ढंग से की गई है। किसी आलोचक का यह पद्य नैषध के महाभाष्य का सच्चा निदर्शक है—

तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः॥

सुबन्धु—अविदित-वृत्त सुबन्धु अपने एकमात्र गद्यकाव्य 'वासवदत्ता' से अक्षय कीर्ति के भागी बने हैं। इस काव्य की कथा का वासवदत्ता की प्राचीन कथा से राई-रत्ती भर का भी सम्बन्ध नहीं है। पूर्ण कथानक कवि के उर्वर मस्तिष्क की कल्पना है। अनुमानतः इसकी रचना सातवीं शती के प्रथम चरण में की गई थी।

अति संक्षेप में कथा यह है कि राजकुमार चिन्तामणि स्वप्न में एक सुन्दर कन्या को देखकर मुग्ध हो जाता है और जगने पर मित्र मकरन्द के साथ उसकी खोज में निकल पड़ता है। उधर कुसुमपुर की राजकुमारी वासवदत्ता भी स्वप्न में एक सुरूप युवक को देखकर स्वयंवर में आये युवकों का विचार त्याग देती है। कई विघ्न-बाधाओं के अनन्तर प्रेमियों का सुखद मिलन हो जाता है। 'वासवदत्ता' एक वर्णनबहुल आख्यायिका है जिसमें उपमा, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास की बहुलता है परन्तु सभंग या अभंग श्लेष तो प्रतिपद पाया जाता है जहाँ कवि की कल्पना प्रशंसनीय है, वहाँ श्लेष की 'अति' तथा तज्जनित दुरूहता अरुचिकर हो गई है।

सोड्ढल—ये गुजरात के लाटप्रदेश के निवासी थे और कोंकणाधीश मुम्मुणिराज (१०६० ई०) के आश्रित थे। इनका 'उदयसुन्दरीकथा' चम्पूकाव्य है जिसमें प्रतिष्ठान नरेश मलयवाहन और नागराज शिखण्डतिलक की पुत्री उदयसुन्दरी के विवाह का वर्णन है। कृति बाण के हर्षचरित

से प्रभावित है और उसने भाषा का माधुर्य और लालित्य प्रशंसनीय है। लेखक कमनीय कल्पनाएँ करने में कुशल है।

सोमदेव सूरि—ये जैनकवि राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराजदेव के समकालीन थे। ९५८ ई० में रचित इनके 'यशस्तिलकचम्पू' में अवन्तिनरेश यशोधर की कथा का वर्णन है। रानी की सकपट चालों से राजा की विरक्ति, वध तथा पुनर्जन्म की घटनाओं का रोचक उल्लेख है। जैनधर्म के पालन के महत्त्व को सम्यक् व्यक्त किया गया है। इसमें अनेक अज्ञात काव्यकारों और कृतियों का उल्लेख है, अतएव साहित्य के इतिहास के विचार से भी कृति महत्त्वपूर्ण है।

हरिचन्द्र—जैनकवियों में हरिचन्द्र का नाम विशेष उल्लेख्य है। ये कायस्थ आर्द्रदेव तथा रथ्यादेवी के तनुज थे। सम्भवतः इनका समय ग्यारहवीं शती है। इनके 'धर्मशर्माभ्युदय' नामक महाकाव्य में पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथजी का चरित्र वर्णित है। वैदर्भी रीति में उपनिबद्ध इस काव्य की भाषा अतिसुन्दर और अलङ्कृत है। जैनसाहित्य में २१ सर्गों के इस महाकाव्य का वही स्थान है जो नैषध और शिशुपालवध का ब्राह्मण साहित्य में।

हर्षवर्धन—ये थानेसर के महाराज प्रभाकरवर्द्धन के द्वितीय पुत्र थे और अग्रज राज्यवर्धन के पश्चात् सिंहासनासीन हुए थे। इन्होंने ६०६–६४८ तक शासन किया था। बाणभट्ट, मयूरभट्ट और दिवाकर इन्हीं के सभापण्डित थे। इनके तीन रूपक मिलते हैं—रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानन्द। प्रथम दो संस्कृत की प्राचीनतम नाटिकाएँ हैं और वत्सराज उदयन की प्रणयकथाओं के आधार पर प्रणीत हैं। नागानन्द का आधार एक बौद्ध कथानक है जिसमें नागों को गरुड़ से बचाने के लिए जीमूतवाहन आत्मसमर्पण कर देता है। इस उच्चादर्श के कारण नागानन्द विद्वत्समाज में विशेष सम्मानित है।

हेमचन्द्र—प्रसिद्ध जैनमुनि हेमचन्द्र का जन्म धंधुका में १०८८ ई० में हुआ। इनके पिता का नाम चाचिगश्रेष्ठी और माता का पाहिनी था। इनकी माता ने इन्हें पाँच वर्ष के वय में ही देवेन्द्र सूरि को सौंप दिया और वे विद्याध्ययन में संलग्न हो गये। वे संस्कृत और प्राकृत वाङ्मय के विभिन्न विभागों में ऐसे निष्णात हो गये कि 'कलिकालसर्वज्ञ' कहाने लगे। इनके संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की पङ्क्तिसंख्या साढ़े तीन करोड़ है। वे गुजरात में राजा जयसिंह और कुमारपाल की सभा में रहे थे और इनकी प्रेरणा से जैनधर्म राज्यधर्म बन गया था। इन्होंने अनशन समाधि से ११७३ ई० में प्राणत्याग किया। इनके 'कुमारपालचरित' में २८ सर्ग हैं—पहले २० संस्कृत में और अन्तिम ८ प्राकृत में। 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' और 'स्थविरावली-चरित' में जैन सन्तों की जीवनियाँ हैं। कुछ अन्य कृतियाँ ये हैं—काव्यानुशासन, छन्दोऽनुशासन, देशीनाममाला, अभिधानचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, निघण्टुशेष, शब्दानुशासन, योगशास्त्र।

तथा 'भेड़चाल' मुहावरे इसी के समानार्थक हैं। उदाहरण—'विरलविरला एव जना नगति र्विवेकेनाचरन्ति प्रायस्तु परम्परयैवावलोक्यते।'

६. अरण्यरोदनन्याय—उक्त न्याय का अर्थ है निर्जन में रोने की कहावत। ग्राम, नगर आदि में रोनेवाले व्यक्ति से उसका कष्ट पूछा जाता है और उसे नष्ट करने का उद्योग भी किया जाता है। परन्तु सुनसान स्थान में रोना तो सर्वथा व्यर्थ है। इसी प्रकार किसी व्यर्थ कार्य के लिए या किसी क्रूर के समक्ष प्रार्थना के समय पर यह न्याय होता है। यथा—'अरण्यरोदनमेव धना ढ्येभ्य साहाय्ययाचनं प्रायशो भवति।'

७ अरुन्धतीप्रदर्शनन्याय—अरुन्धतीप्रदर्शन न्याय अर्थात् अरुन्धती नक्षत्र दिखाने का न्याय। इसकी व्याख्या स्वामी शंकराचार्य ने इस प्रकार की है—'अरुन्धतीं दिदर्शयिषुस्तत्समीपस्थां स्थूलां ताराममुख्यां प्रथममरुन्धतीति ग्राहयित्वा, तां प्रत्याख्याय पश्चादरुन्धतीमेव ग्राहयति।' अर्थात् किसी को अरुन्धती दिखाने का इच्छुक व्यक्ति पहले उसके समीपवर्ती किसी बड़े नक्षत्र को ही अरुन्धती बताता है और उसके बाद वास्तविक अरुन्धती को दिखाता है जिसका प्रकाश मन्द होता है। इस प्रकार जहाँ किसी सूक्ष्म वस्तु के स्पष्टीकरणार्थ पहले किसी स्थूल वस्तु को बताकर निषेध किया जाता है, वहाँ 'अरुन्धतीनक्षत्रन्याय' का प्रयोग होता है। यथा—'अयमेव सूर्यो देव इति पूर्वमुद्दिश्य तत्पश्चाद्—वास्तविको देवस्तदन्यवर्तीति अरुन्धतीप्रदर्शनन्यायेन गुरुः शिष्यं ज्ञापयति।'

८ अशोकवनिकान्याय—अशोकवनिकान्याय अर्थात् अशोकनामक वृक्षों की वाटिका का न्याय। रावण ने अपहृत सीता को अशोकवाटिका में रखा था परन्तु यह कहना कठिन है कि अन्यत्र कहीं न रखकर वहीं क्यों रखा? इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य की निष्पत्ति के अनेक समान उपायों में से किसी एक का प्रयोग किया जाए, परन्तु यह न बताया जा सके कि अन्यों को छोड़ उसी को क्यों प्रयुक्त किया गया है, वहाँ 'अशोकवनिकान्याय' व्यवहृत होता है। जैसे—'प्रायो निर्विवेकाः स्वामिनः स्वसेवकान् अशोकवनिकान्यायेन विविधकार्येषु प्रवर्तयन्ति।'

९ अश्मलोष्टन्याय—अश्मलोष्टन्याय अर्थात् पत्थर और ढेले का न्याय। जिस प्रकार मिट्टी का ढेला रूई से कठोर होता है और पत्थर से कोमल, उसी प्रकार कोई मनुष्य अपने से छोटों की अपेक्षा तो महान् होता है और बड़ों की अपेक्षा क्षुद्र। उदाहरण—'अस्मिन् संसारे सर्वे सापेक्षमश्मलोष्टवत्, न हि किमपि अत्यन्तमुत्कृष्टमपकृष्टं वा कथयितुं पार्यते।'

१० अहिकुण्डलन्याय—अहिकुण्डलन्याय अर्थात् साँप की कुण्डलाकार स्थिति का न्याय। साँप स्वभावतः कुण्डली मार कर बैठता है, इसके लिए उसे प्रयास नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ के स्वाभाविक धर्म का उल्लेख किया जाता है, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'अहिकुण्डलवत् स्वाभाविकं हि कवेः काव्यं न हि तत्र तस्य महाप्रयासस्यापेक्षा।'

११ आकाशमुष्टिहननन्याय—इस न्याय का शाब्दार्थ है आकाश को मुक्के से पीटने की कहावत। जैसे आकाश को मुक्कों से पीटना असंभव है, वैसे ही किसी को असंभव कार्य करते देख इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा—'आकाशमुष्टिहननमेव तवायमुद्योगो प्रधानमन्त्रि पदप्राप्तये।'

१२. आम्रसेकपितृतर्पणन्याय—इस न्याय का अर्थ है, आम सींचने और पितरों के तर्पण करने की कहावत। आशय वही है जो हिन्दी की कहावत 'एक पंथ दो काज' का है। जहाँ एक क्रिया से दो प्रयोजनों की सिद्धि अभीष्ट हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग न्याय्य है। यथा—'ससत्वरस्या आम्रसेकपितृतर्पणन्यायेन राष्ट्रसेवामपि कुर्वन्ति, पर्याप्तं वेतनं चापि प्राप्नुवन्ति।'

१३ आशामोदकतृप्तन्याय—इस न्याय का अर्थ है—प्रत्याशित लड्डुओं से तृप्त मनुष्य का दृष्टान्त। लड्डू खाने पर ही प्रसन्नता का प्रकाशन उचित है। जो मनुष्य काल्पनिक लड्डुओं से तृप्ति का अनुभव कर मुदित होता है, वह सयाना नहीं माना जाता। सो वास्तविक और काल्प निक प्रसन्नता में भेद करना ही समीचीन है। जैसे—को नाम व्यवहारपटुर्मानवो नात्याशामो दकैस्तृप्तो दृश्यते।

१४. इषुकारन्याय—इस न्याय का अर्थ है, बाण बनानेवाले का दृष्टान्त। यह न्याय महाभारत के शान्तिपर्व के १७८वें अध्याय के निम्नलिखित श्लोक पर आधृत है—इषुकारो नरः कश्चिदिषा वासक्तमानसः। समीपेनापि गच्छन्तं राजानं नावबुद्धवान्।' भाव यह कि एक बाणनिर्माता बाण-निर्माण में इतना निमग्न था कि वह पास से जाते हुए राजा को भी न देख सका। इसी प्रकार की एकाग्रचित्तता के लिए यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'विद्यार्थी स्वग्रन्थाध्ययने इत्थं निमग्न आसीत् यदिषुकारन्यायेन कक्षायामागतम् याचकमपि न ज्ञातवान्।'

१५ इषुवेगक्षयन्याय —इस न्याय का अर्थ है—बाणवेग के नाश का दृष्टान्त। धनुष से फेंके हुए बाण की गति क्रमशः क्षीण होती जाती है और अन्ततः समाप्त हो जाती है। इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ में कारणवशात् जातक्रिया आदि का क्रमशः ह्रास और अन्त में विनाश हो जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है यथा—'इयं सुष्टिरिषुवेगक्षयन्यायेन कालेन स्वयमेव प्रलयमुपैति।'

१६ उत्खातदंष्ट्रोरगन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, निर्दन्त किये हुए सर्प का दृष्टान्त। दाँत उखाड़ देने पर सर्प की भयंकरता नष्ट हो जाती है। इसी प्रकार जहाँ किसी घातक पदार्थ के अनिष्टकर अङ्ग का निवारण कर उसकी घातकता नष्ट कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। यथा—'इन्द्रप्रदत्तशक्त्या घटोत्कचं हत्वा कर्णः पाण्डवेभ्य उत्खातदंष्ट्रोरगवत् निरुपद्रव सञ्जातः।'

१७. उष्ट्रलगुडन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है—ऊँट और लकड़ी का दृष्टान्त। ऊँट पर लकड़ी का भार प्रायः लादा जाता है। आवश्यकता के समय उन्हीं में से एक लकड़ी निकालकर (उष्ट्रचालक) ऊँट को पीट भी देता है। इसी प्रकार जहाँ विरोधी की युक्ति से ही विरोधी की शक्ति का खंडन कर दिया जाये अथवा वैरियों के उपकरण से ही वैरियों का नाश कर दिया जाये वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'शक्तो गृहस्थ उष्ट्रलगुडन्यायेन चौरशस्त्रेणैव चौरं गतासुमकरोत्।'

१८. ऊषरवृष्टिन्याय —इस न्याय का अर्थ है, ऊसर में वर्षा का दृष्टान्त। भूमि उर्वरा हो तो वृष्टि सफल होती है। ऊसर में बरसना न बरसना बराबर है। इसी प्रकार जहाँ कोई कार्य सर्वथा बेकार हो वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'इमा सुधाम्यन्दिन्य सूक्तयोऽरसिकेभ्य ऊषरवृष्टिवन्निष्फलाः।'

१९. एकवृन्तगतफलद्वयन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, एक डंठल पर लगे दो फलों की उक्ति। जैसे एक डंठल पर कभी कभी दो भी फल लग जाते हैं, वैसे ही जब श्लेष आदि के बल से कोई शब्द दो अर्थ देता है या एक क्रिया फलयुग्म की साधिका होती है, तब यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'एकवृन्तगतफलद्वयन्यायेन देवदत्त आहूतैरागन्तुकैरदत्त भारतीयबालचरणं प्रतिनिधित्वमपि चाकरोत्॥'

२०. कदम्बकोरक (गोलक) न्याय —कदम्बकोरकन्याय अर्थात् कदम्ब की कलियों का न्याय। कहा जाता है कि कदम्ब की सब कलियाँ एक साथ विकसित हो उठती हैं। इसी प्रकार जहाँ

कुछ व्यक्ति एकदम उठ खड़े हों या सब लोग एक साथ ही कार्य में जुट जायें वहाँ इस न्याय का व्यवहार किया जाता है। यथा—'श्रीकृष्णचन्द्रमवलोक्य कदम्बकोरकन्यायेन प्रहृष्टा बभूवु पाण्डवा.।'

२१. कफोणिगुडन्याय :—उक्त न्याय का शब्दार्थ है कोहनी और गुड़ की कहावत। यदि किसी की कोहनी पर कुछ गुड़ लगा दिया जाय और उसे जिह्वा से चाटने को कहा जाय तो वह अपने उद्योग में कदापि सफल न होने के कारण उपहासास्पद बनेगा। इसी प्रकार इस उक्ति का प्रयोग तरसानेवाली परन्तु अलभ्य वस्तु के विषय में होता है। यथा—'सरोवरे पतित प्रतिबिम्ब वीक्ष्य कफोणिगुडन्यायेन चन्द्रग्रहणाय प्रयतते शिशु ।'

२२ कम्बलनिर्णेजनन्याय :—अर्थ है—कम्बल स्वच्छ करने का दृष्टान्त। कई बार मनुष्य कम्बल की मिट्टी झाड़ने के लिए उसे अपने पाँव पर झटकते हैं। इस एक क्रिया के दो फल होते हैं। कम्बल भी स्वच्छ हो जाता है और पाँव भी झड़ जाते हैं। इस प्रकार यह न्याय हिन्दी के 'एक पंथ दो काज' का समानार्थक है। उदाहरण—'ह्य सायमहं भ्रमणार्थं नागच्छम, प्रदर्शनीक्षेत्र एवाभ्रमम् एवं कम्बलनिर्णेजनन्यायेन भ्रमणमपि जात, नवज्ञानञ्चाप्युपलब्धम् ।'

१३ करिबृंहितन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—हाथी की चिंघाड़ का न्याय। प्रश्न होता है, 'चिंघाड़' के साथ 'हाथी' शब्द के प्रयोग की आवश्यकता नहीं क्योंकि 'चिंघाड़' शब्द हाथी की चीख के लिए ही प्रयुक्त होता है। उत्तर यह है कि ऐसे वाक्यों में फालतू प्रतीत होने वाला शब्द विशिष्टता का सूचक होता है। यहाँ 'करि' शब्द मस्त या प्रबल हाथी के लिए व्यवहृत हुआ है। ऐसे ही अवसरों पर जहाँ कोई शब्द व्यर्थ प्रतीत होता हुआ भी विशिष्टतासूचक हो, यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'किं कवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मत । परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिर.॥ इति। अस्मिन् श्लोके 'कवे' इति पदं करिबृंहितन्यायेन प्रयुक्तम् ।'

२४. काकतालीयन्याय :—काकतालीयन्याय अर्थात् कौए और ताड़ के फल की कहावत। एक कौआ ताड़ के वृक्ष पर बैठा ही था कि एकाएक ऊपर की शाखा से उसका भारी फल टूट कर कौए के सिर पर आ लगा जिससे वह मर गया। इस प्रकार की आकस्मिक घटना के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'अपहृत ममेदं पुस्तकं काकतालीयन्यायेन पुनरधिगतमापणात् ।'

२५. काकदधिघातकन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—दही को बिगाड़ने वाले कौओं का दृष्टान्त। आशय यह है कि जब किसी को कौओं से दही की रक्षा करने के लिए कहा जाता है तब वह रक्षक कुत्तों आदि से भी दही को बचाता ही है। इसलिए जहाँ एक वस्तु अनेक का प्रतिनिधित्व करती है, अर्थात् उपलक्षण होती है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'अश्लीलोऽयं मदनमोहनाख्योपन्यासो नाध्येतव्य इति तातेनोपदिष्ट सुपुत्रोऽन्यानपि कुग्रन्थाननाधीते काकदधिघातकन्यायेन ।'

२६. काकदन्तगवेषणन्याय :—काकदन्तगवेषणन्याय अर्थात् कौए के दाँत की खोज का न्याय। चिड़िया के दूध तथा शश के सींग के समान कौए के दाँत नहीं होते। इसलिए इस न्याय का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ कोई किसी नितान्त निरर्थक कार्य के लिए उद्योगशील हो। उदाहरण सामान्येषु सार्वजनिकपुस्तकालयेषु पुरातनग्रन्थरत्नानामन्वेषणं तु काकदन्तगवेषणमेव ।'

२७. काकाक्षिगोलकन्याय :—काकाक्षिगोलकन्याय अर्थात् कौए की आँख के ढेले का न्याय। जैसे कि कौए के पर्याय 'एकाक्ष', 'एकदृष्टि' आदि संस्कृत शब्द से व्यक्त होता है कि लोगों का यह विश्वास रहा है कि कौआ दो आँखें रखता हुआ भी देखता एक ही आँख से है। तात्पर्य यह है कि उसे जिधर देखना होता है, उधर की आँख में उसकी पुतली चली जाती है। इसी

प्रकार इस न्याय का व्यवहार वहाँ होता है। जहाँ वाक्य के किसी शब्द का अन्वय एक से अधिक तरफ किया जाय अथवा कोई व्यक्ति आवश्यकतानुसार एक से अधिक पक्षों से सम्बन्ध रखे। यथा—'बलिनोर्द्विषतोर्मध्ये वाचात्मानं समर्पयन्। द्वैधीभावेन वर्तेत काकाक्षिवदलक्षितः॥' (कामन्दकीय नीतिसार ९।२४)

२८ कुल्याप्रणयनन्याय—शब्दार्थ है—कूलनिर्माण का न्याय। किसान लोग अपने खेतों की सिंचाई के लिए ही नदी-नालों से कूल निकालते हैं। परन्तु ध्यान रखने पर उसमें से पानी पी भी लेते हैं। इसी प्रकार जहाँ एक उद्देश्य से किये हुए कार्य से दूसरा कार्य भी सिद्ध कर लिया जाय वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। यथा—'भक्तिभावेन देशसेवायां रता नेतारः कदाचित् कुल्याप्रणयनन्यायेन समसदस्या अपि जायन्ते।'

२९ कूपमण्डूकन्याय—इस न्याय का अर्थ है कुएँ के मेढक की कहावत। कुएँ का मेढक कुएँ में रहता है, इसलिए *कुएँ से विस्तृत या विशाल स्थान का अनुमान नहीं कर सकता।* इस न्याय का प्रयोग उस अनुभवहीन व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसका पालन-पोषण संकुचित वातावरण में हुआ हो और जो सार्वजनिक जीवन तथा मानव जाति की गतिविधि से अनभिज्ञ हो। यथा—'कथं खलु देशभक्तोऽपि कूपमण्डूक इव मन्यते युगधर्मस्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' इति लक्षणम्।'

३० कूपयन्त्रघटिकान्याय—कूपयन्त्रघटिकान्याय अर्थात् अरहट की घड़ियों (लोटों) का न्याय। अरहट की माला के साथ बँधे हुए लोटों की दशा समान नहीं होती। जब कुछ लोटे नीचे पानी से भरते हैं, तभी ऊपर के लोटे रिक्त होते हैं। कुछ पूर्ण लोटे एक ओर से ऊपर को आते हैं तो कुछ रिक्त नीचे को जाते हैं। संसार में मनुष्यों के भाग्य की दशा भी इसी प्रकार भिन्न-भिन्न है। इसी अर्थ में इस न्याय का प्रयोग यों होता है—'कूपयन्त्रघटिका इव अन्योन्यमनुपतन्ति रायः।'

३१ क्षीरनीरन्याय—इस न्याय का अर्थ है—दूध और पानी का दृष्टान्त। जब दूध और पानी परस्पर मिल जाते हैं तब यह जानना दुष्कर होता है कि उसमें दूध या पानी कितना और कहाँ है। इसी प्रकार जब दो या अधिक पदार्थों में घनिष्ठ सम्बन्ध बताना हो तब दूध-पानी की उपमा दी जाती है। यथा—'क्षीरनीरन्यायेन सज्जनानामेव मित्राणां मैत्री श्रेयस्करी भवति।'

३२. गगनरोमन्थन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, आकाश की जुगाली या पागुर करने का न्याय। यदि कोई पशु नीचे आकाश को घास का मैदान मानकर मुँह हिलाता हुआ यह समझने लगे कि घास की जुगाली कर रहा हूँ तो उसका यह उद्योग नितान्त निष्फल होगा। इसी प्रकार के निरर्थक उद्योग के विषय में इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'लोकसेवां विना शाश्वतयशोऽभिलाषो ननु गगनरोमन्थ इव।'

३३. गड्डरिकाप्रवाहन्याय :—इस न्याय का अर्थ है भेड़ियाधसान। यदि भेड़ों के झुंड में से एक भेड़ नदी आदि में गिर जाए तो शेष भेड़ें भी रोके नहीं रुकतीं और नदी में कूद पड़ती हैं। इसी प्रकार जहाँ लोग समझाने पर भी सत्पथ का अनुसरण न करें और अन्धाधुन्ध किसी के पीछे चलने लगें, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'न जातु गड्डरिकाप्रवाहं विचरन्ति धीमन्तः।'

३४ गुडजिह्विकान्याय—उक्त न्याय का अर्थ है, गुड़ को जिह्वा पर लगाने की कहावत। प्रायः बालक कड़वी दवाएँ प्रसन्नतापूर्वक नहीं पीते। जब उनके हित के लिए उन्हें वह पिलानी अनिवार्य होती है तब बुद्धिमान् मनुष्य पहले उनकी जिह्वा पर गुड़ का लेप कर देते हैं इससे औषध की कड़वाहट लुप्त या न्यून हो जाती है। इसी प्रकार जब किसी मनुष्य को किसी दुष्कर कार्य में प्रवृत्त करना होता है तब कोई प्रलोभन आदि दे दिया जाता है। ऐसे ही अवसर इस न्याय के

प्रयोगार्थ उपयुक्त होते हैं। जैसे—'न हि लोकाः प्रायशो विना गुडजिह्विका दुष्करकर्मसु प्रवर्तन्ते।'

३५ **घट्टकुटीप्रभातन्याय**:—घट्टकुटीप्रभातन्याय अर्थात् चुंगी की चौकी के समीप सवेरा होने का न्याय। चुंगी से बचने के लिए गाड़ीवान आदि रात को उन मार्गों से निकलने का यत्न करते थे जिनसे चुंगी देने से बच जायँ। परन्तु कभी कभी दुर्भाग्यवश प्रभात वहाँ हो जाता था जहाँ चुंगी की चौकी समीप होती थी। इस प्रकार उनके किये-कराये पर पानी फिर जाता था। इस कहावत का प्रयोग ऐसे ही अवसरों पर किया जाता है जिन पर परिहार्य वस्तु अवश्य ही समक्ष आ जाती है। यथा—'कानिचिद् वस्तून्येकाकयेव क्रेतुमहं मध्याह्ने आपणमगच्छम्, परन्तु घट्टकुटीन्यायेन मोहनस्तत्र मा विफलमनोरथं व्यदधात्।'

३६ **घुणाक्षरन्याय**:—घुणाक्षरन्याय अर्थात् घुन या किसी अन्य कीड़े द्वारा लकड़ी आदि में कोई अक्षर बन जाने का न्याय। घुन आदि कीड़े लकड़ी, पुस्तक के पन्ने आदि को खाते रहते हैं। कभी-कभी उनके खाने से कोई अक्षर-सा बन जाता है, जिसे देख कौतुक होता है। इसी प्रकार दैवयोग से होने वाली बातों के लिए इस न्याय का व्यवहार होता है। पूर्वोक्त अन्धचटक-न्याय का आशय भी इसी प्रकार का है। यथा—'प्राचीनहस्तलिखितग्रन्थान्वेषणाय गतेन मया तत्र 'विमाननिर्माणम्' अपि घुणाक्षरन्यायेन धिगतम्।'

३७. **चन्दनन्याय**:—इस न्याय का अर्थ है, चन्दन के तेल की उपमा। यदि शरीर के किसी एक भाग पर चन्दन के तेल की बूँद या चन्दन का लेप लगाया जाए तो उसके आह्लादक प्रभाव का समस्त शरीर में अनुभव होता है। इसी प्रकार जहाँ एकत्र स्थित पदार्थ व्यापक प्रभाव डाले वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। यथा—'चन्दनन्यायेन भ्रमति दिग्दिगन्तं युगा-युगाद्य महात्मनां कीर्तिः।'

३८. **चौरापराधान्माण्डव्यनिग्रहन्याय**:—इस न्याय का अर्थ है, चोरों के अपराध पर माण्डव्य को दण्ड देने की कहावत। महाभारत के आदिपर्व में ऋषि अणीमाण्डव्य के मौनव्रत से सम्बन्धित तप की कथा आती है। जब वे तपोमग्न थे तब चोर, चुराई हुई सम्पत्ति के सहित उनके आश्रम में आ छिपे। राजकर्मचारियों ने चोरों के साथ उन्हें भी पकड़ लिया और लगे सूली पर चढ़ाने। अन्त में मुनिजी छोड़ तो दिये गये परन्तु सूली की अणी के शरीर में रह जाने के कारण अणीमाण्डव्य कहलाने लगे। इसी प्रकार जहाँ 'करे कोई और भरे कोई' का व्यवहार होता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'कदाचित्तु नृपः कुल्यानदुष्टापराधेन सर्वानेव ग्रामवासिनः चौरापराधमाण्डव्यनिग्रहन्यायेन दण्डयति।'

३९ **छत्रिन्याय**:—उक्त न्याय का अर्थ है, छातेवालों की कहावत। आशय यह है कि यदि किसी जाते हुए जन समुदाय में अनेक लोगों ने छत्रियाँ तानी हुई हों तो हम उन सबको 'छाते वाले लोग' कह देते हैं चाहे सबके पास छत्रियाँ न भी हों। इसी प्रकार जहाँ कुछ एक के सम्बन्ध में कही-हुई बात सब पर चरितार्थ कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार उचित होता है। जैसे—'पुरा देवा राहुं सुरमेव मेनिरे छत्रिन्यायेन।'

४०. **जामातृशुद्धिन्याय**:—इस न्याय का अर्थ है—जमाई कृत पुनरीक्षण की कहावत। मेरुतुंग के 'प्रबन्धचिन्तामणि' में कहानी यों दी गई है कि विक्रमादित्य ने राजकुमारी के लिए वर ढूँढने का काम वररुचि को सौंपा। राजकुमारी ने वररुचि से पढ़ते समय एक दिन उनकी अवज्ञा की थी, इसलिए चतुराई से वररुचि ने एक मूढ़ को राजा का जामाता बना दिया। वररुचि के उपदेशानुसार जमाता चुप ही रहता था परन्तु राजकुमारी ने परीक्षार्थ एक पुस्तक उसे दोहराने को दी। उसने अक्षरों के ऊपर के बिन्दु और मात्राएँ नखछेदिनी से मिटा डालीं। कुमारी पहचान गई कि यह तो कोई चरवाहा है। तब से मूर्ख से शोधन-कार्य कराने के सम्बन्ध

में यह न्याय चल पड़ा है। यथा—केचिद् अयोग्यजनैः कारितं कार्यं आमात्प्रवुद्धिवदुपहा-सास्पदमेव भवति।'

४१ तिलतण्डुलन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है—तिल और चावल की उपमा। दूध और पानी भी मिलते हैं तथा तिल और चावल भी। परन्तु प्रथम मेल में दूध पानी का पार्थक्य अज्ञेय होता है, द्वितीय में स्पष्ट। तिल चावल की तरह जहाँ मेल तो हो परन्तु दोनों पदार्थ पृथक् पृथक् प्रतीत भी होते हों, वहाँ तिलतण्डुलन्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'कथं नाम मौनमेवापण्डितानामज्ञताया आच्छादनं भवितुमर्हति विदुषां समाजे, तिलतण्डुलयोः स्पष्टं पृथग्दर्शनात्।'

४२ तुलोन्नमनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—तुला को उठाने की कहावत। आशय यह है कि जब तुला का एक पल्ला हाथ से उठाया जाता है तब दूसरा स्वयमेव नीचे चला जाता है। इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से दूसरी क्रिया करना भी अभिप्रेत होता है वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—'आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्, तेन हि तुलोन्नमनन्यायेन दुष्टनाशो जायते देवप्रसादश्च।'

४३ तृणभक्षणन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—तिनका खाने का न्याय। भारत में यह रीति रही है कि जब कोई व्यक्ति किसी के सम्मुख दाँतों से तिनका दबा लेता था तब इसका आशय होता था—पराजय की स्वीकृति। ऐसी दशा में वह अवध्य माना जाता है। हिन्दी में यह उक्ति 'दाँतों तले तिनका दबाना' के रूप में प्रचलित है। पराजय की स्वीकृति के अर्थ में इसका प्रयोग यों होता है—'आर्य, पराजिता रिपवः खलु तृणभक्षणन्यायेन निजप्राणानरक्षन्।'

४४ दग्धेन्धनवह्निन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—उस अग्नि का दृष्टान्त जो ईंधन को जलाकर स्वयं भी बुझ गई हो। इसी प्रकार जहाँ कोई वस्तु अपने कार्य को सम्पन्न कर स्वयं भी समाप्त हो जाए, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। 'जलकतकरेणुन्याय' का आशय भी ऐसा ही है। यथा—'पाण्डवानां कोपः दुर्योधनादीन् विनाश्य दग्धेन्धनवह्निन्यायेन शान्तः।'

४५. देहलीदीपकन्याय :—देहलीदीपकन्याय अर्थात् दहलीज में रखे हुए दीपक का न्याय। कमरे के कोने में रखा हुआ दीपक तो कमरे को ही आलोकित करता है परन्तु दहलीज पर रखा हुआ अन्दर और बाहर दोनों ओर प्रकाश देता है। इसी प्रकार जहाँ कोई शब्द, वाक्यांश या कोई अन्य वस्तु दो तरफ अपना प्रभाव डाल रही हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। उदाहरण—'भवति हि पितुरर्थार्थं अविनस्य भोजनस्याविष्युपकारकत्वं देहलीदीपकन्यायेन।'

४६ धान्यपलालन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—अनाज और भूसे का दृष्टान्त। जिस प्रकार लोग अनाज को ग्रहण कर लेते हैं और भूसे को त्याग देते हैं, उसी प्रकार जहाँ सारसहित वस्तु को लिया तथा निस्सार को छोड़ दिया जाता है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—'ग्राह्यो बुधैः सारः निस्सारम् अपास्य फल्गु-धान्य-पलालन्यायेन।'

४७. नष्टाश्वदग्धरथन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—नष्ट घोड़ों और जले रथ की कहावत। कहावत की आधार-कथा इस प्रकार है कि दो यात्री अपने अपने रथों में यात्रा करते हुए रात को एक गाँव में ठहरे। दैवयोग से रात को गाँव में आग लगी जिससे एक के घोड़े नष्ट हो गये और दूसरे का रथ जल गया। तब एक के घोड़ों को दूसरे के रथ में जोड़ दिया गया और यात्रा जारी रही। इसी प्रकार यह न्याय वहाँ व्यवहृत होता है जहाँ पारस्परिक लाभ के लिए मिल जुलकर काम किया जाए। जैसे—'भवद्गृहमिति हि से तथा पुस्तकं तु गणिते, मन्ये नष्टाश्वदग्धरथन्यायेनैवावां परीक्षामुत्तरिष्याव।'

४८ नासिकाग्रेण कर्णमूलस्पर्शनन्याय —इस न्याय का शब्दार्थ है—नाक की नोक से कान के अधोभाग को खींचने की कहावत। जैसे नाक के अग्रभाग से कान के निचले भाग को खींचना असम्भव है, वैसे ही अशक्य विषयों में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'यो वै विद्यार्थी परिश्रम विनैव विद्वान् भवितुमिच्छति, स खलु नासिकाग्रेण कर्णमूल स्पृशति'

४९. नृपनापितपुत्रन्याय —नृपनापितपुत्रन्याय अर्थात् राजा और नाई के बेटे की कहावत। कहा जाता है, कि एक राजा ने अपने नाई को राज्य भर में से सुन्दरतम बालक लाने का आदेश दिया। वह नाई सारे देश में बहुत घूमा फिरा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक दिखाई न दिया जैसा कि राजा चाहता था। विवश होकर वह घर लौट आया। उसका अपना पुत्र न सुरूप था न सुलक्षण परन्तु उसे वही सुन्दरतम प्रतीत हुआ। इसलिए वह उसे ही लेकर राजा के समक्ष जा उपस्थित हुआ। पहले तो राजा यह समझकर कि यह मेरा उपहास कर रहा है, क्रुद्ध हुआ; परन्तु कुछ सोचने पर उसे इस मनोवैज्ञानिक तथ्य का बोध हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मीय पदार्थ को ही सर्वोत्तम समझता है। अत इस न्याय का प्रयोग उन्हीं अवसरों पर होता है जिनमें कोई व्यक्ति अपनी बुरी वस्तु को भी अच्छी समझता है। जैसे—'अकाव्यमपि स्व कुकवय नृपनापितपुत्रन्यायेन सत्काव्यपदे गणयन्ति।'

५० पङ्कप्रक्षालनन्याय :—पङ्कप्रक्षालनन्याय अर्थात् कीचड़ धोने का न्याय। शरीर पर लगे कीचड़ को सभ्य मनुष्य तुरन्त धो डालता है। परन्तु उससे कहीं अच्छी बात यह है कि कीचड़ लगने ही न दिया जाय। इसी प्रकार परिस्थितियों से पहले ही बचना उत्तम है जिनमें पड़ने के पश्चात् फिर उनके प्रभाव को मिटाने का यत्न किया जाय। जैसे—'पश्चात्त्यागाद्धि वित्तस्य वरं पूर्वमसङ्ग्रह । प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शन वरम्।'

५१ पङ्ग्वन्धन्याय :—इस न्याय का अर्थ है लँगडे और अंधे की कहावत। न अंधा मार्ग देख सकता है न पंगु पथ पर चल सकता है। परन्तु यदि पंगु अंधे के कंधों पर बैठ जाय तो दोनों निर्विघ्न यात्रा कर सकते हैं। इसी प्रकार जहाँ पारस्परिक लाभार्थ सहयोग किया जाय, वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'सुवक्ताऽपि देवदत्तो न पण्डित, सुपण्डितोऽपि यज्ञदत्तो वक्तृत्वविहीन, तथापि तौ पङ्ग्वन्धन्यायेन संगत्य स्वदेशसेवायां सलग्नौ दृश्येते।'

५२ पिष्टपेषणन्याय :—पिष्टपेषणन्याय अर्थात् पीसी हुई वस्तु को पुन पीसने का न्याय। गेहूँ, मकई आदि को तो पीसा जाता है परन्तु उनके आटे को पीसना निरर्थक होता है। साथ ही वह पेषक पेषक की मूर्खता का द्योतक माना जाता है। इसी प्रकार के अनावश्यक और अनर्थक कार्यों के सम्बन्ध में उक्त न्याय का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है—'महान् दोष एवाय यदिद मुक्तस्य पुन पुनर्वचनम्, पिष्टपेषण हि तद्।'

५३ पुष्टलगुडन्याय —इस न्याय का अर्थ है, मोटे डंडे का दृष्टान्त। आशय यह है कि यदि भौंकने वाले कुत्ते की ओर मोटा डंडा फेंका जाय तो वह सबका दूसरे कुत्तों को भी लग कर शान्त कर देगा। इसी प्रकार जहाँ एक क्रिया से एकाधिक कार्यों की सिद्धि हो जाय, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'हीरोशीमानागासाकीनगरयोरणुबमाभ्या विध्वस्तयोर्महद् युद्ध पुष्टलगुडन्यायेन निमिषेण समाप्तिमगात्।'

५४ प्रधानमल्लनिबर्हणन्याय —इस न्याय का अर्थ है, मुख्य शत्रु के विनाश की कहावत। आशय यह है कि जब प्रबलतम वैरी का विनाश कर दिया जाता है तब सामान्य वैरी स्वयमेव वश में हो जाते हैं। इसी प्रकार जब भारी बाधाएँ मिटा दी जाती हैं तब सामान्य विघ्न बाधक नहीं बन सकते। जैसे—'हतयोर्भीष्मद्रोणयोर्निश्चित एवाभूत् पाण्डवानां विजय प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायेन।'

५५. प्रपानकरसन्याय —प्रपानकरसन्याय अर्थात् शर्बत की उपमा। शर्बत बनाने के लिए अनेक द्रव्यों को मिश्रित करना पड़ता है। शर्बत का स्वाद उनमें से किसी एक के भी तुल्य नहीं होता। इसी प्रकार जहाँ अनेक वस्तुओं के संयोग से एक विलक्षण पदार्थ निर्मित हो जाय वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'अभिमन्युः किल प्रपानकरसन्यायेन कृष्णोऽपि पाण्डवांश्च गुणैरतिरिच्यत।'

५६. फलवत्सहकारन्याय —इस न्याय का अर्थ है—आम के फलित पेड़ का दृष्टान्त। आम का फलवान् वृक्ष फल ही नहीं देता, अपितु यात्रियों को सुगन्ध और छाया भी प्रदान करता है। इसी प्रकार जहाँ कोई क्रिया अभीष्ट फल के अतिरिक्त भी कोई फल दे, वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। यथा—'पुत्रोऽपत्यं हि नाम प्रसववर्धित्री मातृवत्सलं, प्रशमयित्री पितुः नेत्रयोर्विकाशयित्री च भवति वंशस्य फलवत्सहकारन्यायेन।'

५७. बहुराजदेशन्याय —इस न्याय का शब्दार्थ है—अनेक राजाओं के देश की तरह। जहाँ एकाधिक राजाओं का शासन होता है वहाँ उनकी परस्पर विरोधी आज्ञाओं के कारण प्रजा अति पीड़ित हो उठती है। यथा—'यस्मिन् कुले मातापित्रोर्वैमत्यं विद्यते तत्रापि दुःखिता भवति सन्ततिर्बहुराजकदेशवत्।'

५८. बीजाङ्कुरन्याय —बीजाङ्कुरन्याय अर्थात् बीज और अंकुर का न्याय। इस न्याय का उद्गम बीज और अंकुर के पारस्परिक कारण-कार्यभाव से हुआ है। बीज से अंकुर उत्पन्न होता है अतः बीज कारण है, अंकुर कार्य। परन्तु आगे चलकर उसी अंकुर से बीज भी उत्पन्न होता है, इसलिए अंकुर कारण और बीज कार्य बन जाता है। इस प्रकार जहाँ दो पदार्थ एक दूसरे के कारण और कार्य भी हों वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'स्वास्थ्येन वित्तमधिगम्यते वित्तेन च पुनः स्वास्थ्यं बीजाङ्कुरवत्।'

५९. मण्डूकप्लुतिन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, मेंढक की छलाँग की लोकोक्ति। मेंढक सर्वदा समग्र मार्ग का स्पर्श करता हुआ नहीं चलता, छलाँगें लगाता जाता है, जिससे मध्यवर्ती स्थान अस्पृष्ट रह जाता है। इसी प्रकार जहाँ कोई नियम सब पर समानरूप से लागू न हो, बीच-बीच में कई वस्तुओं को छोड़ता जाए, अथवा कोई काम बीच-बीच में छोड़कर किया जाए वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। यथा—'अस्माकमध्यापकः पाठ्यपुस्तकं मण्डूकप्लुतिन्यायेन पाठयति न तु यथाक्रमम्।'

६०. मात्स्यन्याय —मत्स्य न्याय अर्थात् मछलियों का दृष्टान्त। प्रायः यह देखा जाता है कि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को हड़प जाती हैं। इस प्रकार जहाँ बलवान् निर्बल को मारने या सताने लग जाएँ वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी की लोकोक्ति 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' भी इसी आशय को व्यक्त करती है। उदाहरण देखिए—'सुशासनाभावे यदि राष्ट्रे मात्स्यन्यायः प्रवर्तेत, तर्हि किमाश्चर्यम्।'

६१. रथकारन्याय —इस न्याय का अर्थ है—रथकार (रथ बनानेवाले) का दृष्टान्त। शास्त्र में कहा गया है कि रथकार वर्षाऋतु में अग्नि की स्थापना करे। प्रश्न उठता है, रथकार का अर्थ रथ बनाने वाला कोई भी व्यक्ति है या विशेष उपजाति का मनुष्य। जैमिनि ने निर्णय किया है कि केवल जातिविशेष का व्यक्ति ही। इस प्रकार इस न्याय का भाव यह है कि शब्दों का रूढ़ या प्रचलित अर्थ यौगिक अर्थों से बलवान् होता है। यथा—'अयं तु रथकारन्यायेन कर्मपटुरेव कुशलो मन्यते न पूर्ववत् गुरोः कुले कुशलनयनदक्ष एव।'

६२. राजपुरप्रवेशन्याय —इस न्याय का शब्दार्थ है—राजधानी में प्रवेश का दृष्टान्त। राजपुर में प्रवेश करने का नियम यह है कि पंक्ति बनाकर पर्याय से प्रविष्ट हुआ जाए। जो उच्छृङ्खल

इस नियम को भंग करता है, उसके पिटने की आशंका रहती है। इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य को नियमानुसार करना अभीष्ट हो, वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। दृष्टान्त लीजिए—'यस्मिन् तु विद्यालये छात्रा राजपुरप्रवेशन्यायेन स्वकक्षां प्रविशन्ति न तत्र कोलाहलो जायते।'

६३ रुमाक्षिप्तकाष्ठन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, नमक की खान और लकड़ी का दृष्टान्त। यह प्रसिद्ध है कि जो वस्तु नमक की खान में फेंकी जाती है, नमक बन जाती है। इसी प्रकार जहाँ कुसंगति के प्रबल प्रभाव से अन्य वस्तु भी वैसी बन जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग उचित है। यथा—'विनीता अपि जना अधिकारं प्राप्य रुमाक्षिप्तकाष्ठन्यायेन दृप्ता भवन्ति।'

६४ लोहचुंबकन्याय :—लोहचुम्बकन्याय अर्थात् लोहे और चुम्बक का न्याय। यह न्याय उस सम्बन्ध को व्यक्त करता है जिसके कारण दो पदार्थ दूर होते हुए भी, स्वभावतः एक-दूसरे के समीप जाने का उद्योग करते हैं। जैसे—'दूरस्था अपि सज्जना लोहचुम्बकवत् मिथो मिलितु वाञ्छन्ति।'

६५. बकबन्धनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, बगुले को पकड़ने का दृष्टान्त। किसी ने बगुला पकड़ने की रीति यह बताई कि जब बगुला बैठा हो तो चुपके से उसके सिर पर मक्खन रख देना चाहिए। जब मक्खन धूप से पिघलकर उसकी आँखों में पड़ेगा तो वह अन्धा हो जायगा और झट पकड़ लिया जाएगा। वस्तुतः यह विधि हास्यास्पद है क्योंकि बगुला तभी क्यों न पकड़ लिया जाए जब उसके सिर पर मक्खन रखा जाए। इसी प्रकार जहाँ सहज सरल विधि को छोड़कर किसी हास्यास्पद ढंग को स्वीकार किया जाता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'बकबन्धनन्यायपरा इव एतायं यद् गलघण्टिकारोपेण अवगते मार्जारागमे मूषाणामात्मरक्षाविचारः।'

६६. वनसिंहन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—वन और सिंह का दृष्टान्त। सिंह न हो तो लोग वन को ही काट डालें और वन न हो तो सिंह को ही मार डालें। ये दोनों वस्तुतः एक दूसरे के रक्षक हैं। इसी प्रकार जहाँ पदार्थ परस्पर रक्षक हों वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'न जातु सेव्यसेवकौ अन्योऽन्यं हन्तुं पारयतः वनसिंहवदन्योऽन्याश्रयित्वात्।'

६७ वह्निधूमन्याय :—वह्निधूमन्याय अर्थात् अग्नि और धूएँ के निरन्तर साथ साथ रहने का न्याय। जहाँ धूआँ होता है वहाँ अग्नि होती ही है। इसी प्रकार जहाँ एक पदार्थ का दूसरे से अनिवार्य साहचर्य बताया जाए वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'यत्र योगेश्वरः कृष्णः यत्र च धनुर्धरः पार्थः, तत्र विजयो वह्निधूमन्यायेन निश्चित एव।'

६८. विषकृमिन्याय :—विषकृमिन्याय अर्थात् विष के कीड़ों का न्याय। साधारण प्राणी तो विष के प्रभाव से मर जाते हैं, परन्तु विष के कीड़े विष में ही उत्पन्न होते हैं, उसी को खाते हैं और फिर भी जीवित रहते हैं। इस न्याय का प्रयोग उन अवसरों पर होता है जिन पर सामान्य प्राणी तो प्राणों से हाथ धो बैठते हैं परन्तु व्यक्तिविशेष सुरक्षित रहते हैं। जैसे—'हरिजनानां कर्म कुर्वन्तः सामान्यास्तु अचिरात् कालकवलिता भवेयुः ते च हरिजनाः पुनः विषकृमिन्यायेन दीर्घजीविनो भवन्ति।'

६९ विषवृक्षन्याय :—विषवृक्षन्याय अर्थात् विषैले पेड़ का न्याय। कालिदास ने 'कुमारसम्भव' में कहा है—'विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसांप्रतम्' अर्थात् यदि विष का वृक्ष भी स्वयं लगाया और पाला पोसा गया हो तो उसे काटना या उखाड़ना उचित नहीं होता। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का स्वयं पालन पोषण किया हो, वह बड़ा होने पर अनिष्टकर भी सिद्ध हो, तो भी उसका विध्वंस समीचीन नहीं। यही इस न्याय का आशय है। उदाहरण द्रष्टव्य है—'विषवृक्षन्यायमनुसरता पित्रा कुपुत्रस्याप्यहितं कर्तुं न पार्यते।'

७० वीचितरङ्गन्याय —वीचितरङ्गन्याय अर्थात् तरंग और तरंग का न्याय। नदी, सरोवर, समुद्र आदि में हम देखते हैं कि लहरें क्रमशः एक दूसरी को तट तक आगे-आगे ढकेलती जाती हैं जब तक वे सब तट तक नहीं पहुँचतीं। इसी प्रकार जब कुछ वस्तुएँ या व्यक्ति एक-दूसरे की सहायता से लक्ष्य तक आ पहुँचते हैं तब इस न्याय का निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग किया जाता है—'वीचितरङ्गन्यायेन अन्योऽन्योपकारि खलु सकलमिह जीवितम्।'

७१ वृद्धकुमारीवाक्य(वर)न्याय —वृद्धकुमारीवाक्यन्याय अर्थात् बूढ़ी कन्या के वर का न्याय। पतञ्जलि ने महाभाष्य में लिखा है कि जब इन्द्र ने एक बूढ़ी कन्या को वर माँगने को कहा तब वह बोली—'पुत्रा मे बहुक्षीरघृतमोदनं काञ्चनपात्र्यां भुञ्जीरन्' अर्थात् मेरे पुत्र सोने के पात्रों में प्रभूत दूध और घी से युक्त चावल खावें। अब यदि यह वर प्राप्त हो जाए तो पति, सन्तान, गौ, दूध, घी, सुवर्ण आदि सभी पदार्थ स्वतः स्वयं प्राप्त हो जाते हैं। इसी प्रकार जहाँ कोई ऐसी वस्तु माँगी जाए जिसके साथ अनेक उपयोगी द्रव्यों की प्राप्ति अनिवार्य हो जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'स्वर्गैक राज्यमिह मनस्यमलोऽलिप्सुमिच्छन्त्यै वरं देव याचमानेन न्यवृद्धेन आत्मनः कृते यौवनं स्त्री पत्नी पुत्र पौत्रश्च श्रुत।'

७२ व्यालनकुलन्याय —इस न्याय का अर्थ है—साँप और नेवले की कहावत। साँप और नेवले में जन्मजात वैर होता है। वे जहाँ एक-दूसरे को देखते हैं, लड़ पड़ते हैं। उन्हीं की तरह जब दो वस्तुओं में स्वाभाविक वैर हो तब व्यालनकुलन्याय (अहिनकुलन्याय) का व्यवहार होता है। यथा—'भवत्स्वे तु रूपनरोरूपोदशाव्यालनकुलवद् दृश्यते।'

७३ शतपत्रपत्रशतभेदन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है—कमल के सौ पत्तों को छेदने का दृष्टान्त। जब कोई व्यक्ति कमल के सौ कोमल पत्तों को सुई से छेदता है तब ऐसा लगता है कि सब पत्र एक-साथ ही छिद गये हैं। परन्तु वस्तुतः छिदे एक दूसरे के अनन्तर ही हैं। इसी प्रकार जहाँ क्रमशः होने वाली अनेक क्रियाओं का एक साथ होना कहा जाता है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'पतिं मृतं श्रुत्वा सा साध्वी वनिता मूर्च्छिता मृता च शतपत्रशतभेदन्यायेन।'

७४ शलभन्याय —इस न्याय का अर्थ है पतंगे का दृष्टान्त। मूर्ख पतंगा जलते हुए दीपक को देख ऐसा मुग्ध होता है कि प्राणों तक की चिन्ता नहीं करता। इसी प्रकार मूर्ख लोग विषयों से आकृष्ट होकर प्राणों से हाथ धो बैठते हैं। आजकल इसका प्रयोग प्रशंसा के लिए भी किया जाता है। दोनों के दृष्टान्त एक ही वाक्य में देखें—'विषयेषु शलभायन्ते मूढाः, प्रमदासु कामुकाः, राष्ट्रसेवायां च राष्ट्रभक्ताः।'

७५ शाखाचन्द्रन्याय —शाखाचन्द्रन्याय अर्थात् वृक्ष की शाखा और चाँद का न्याय। आकाश में चन्द्र तो बहुत दूर होता है परन्तु प्रतिपदा आदि के दिन किसी को दिखाने के लिए प्रायः कहा जाता है—'देखो, वह वृक्ष की शाखा के ऊपर है।' इसी प्रकार जहाँ कोई पदार्थ हो तो बहुत दूरवर्ती पर उसको दिखाने के लिए ऐसे पदार्थ की ओर संकेत किया जाय जो उसके समीप प्रतीत होता हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—शाखाचन्द्रन्यायेन पेरिसनगरमपि रोम नगरपार्श्वेनैव दृश्यते काशि मन्ये।'

७६ शिरोवेष्टनेन नासिकास्पर्शन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है—बाहु को सिर के पीछे से लाकर नाक को छूने का दृष्टान्त। नाक को सामने से छूना सुकर है, बाहु पीछे से लाकर छूना दुष्कर। जब उद्देश्य केवल नासिकास्पर्श हो तो बाहु को सिर के पीछे से लाकर छूने में कोई लाभ नहीं है। इसी प्रकार कई लोग किसी कार्य को सीधे ढङ्ग से नहीं करते, घुमा-फिराकर व्यर्थ कष्ट

महते या देते हैं। ऐसे ही अवसरों पर उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'को लगोऽनेन शिरोवेष्टनेन नासिकास्पर्शेन, प्रकृत स्पष्ट ब्रूहि।'

७७ श्वपुच्छोन्नामनन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—कुत्ते की पूँछ को सीधा करने का दृष्टान्त। कुत्ते की पूँछ अनेक यत्न करने पर भी सीधी नहीं होती, प्रयत्न करने वाले का श्रम व्यर्थ ही सिद्ध होता है। इसी प्रकार जहाँ काम के लिए किया हुआ उद्योग सर्वथा निष्फल रहे, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'श्वपुच्छोन्नामनमेवैतद् यद् दुर्जना यावदपि यद् दुर्जन-जीनि प्रेम्णा वशीकर्तुमयतत।'

७८ शवोद्वर्तनन्याय :—इस न्याय का शब्दार्थ है—मृतक को उबटन लगाने का दृष्टान्त। सुगन्धित द्रव्य सजीव शरीर के शोभावर्द्धक हैं, निर्जीव के नहीं। इसी प्रकार जहाँ सर्वथा निष्फल उद्योग किया जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'पङ्किल्लनिर्माणानन्तर मुक्तिमिच्छतीयस्य पुन मारते समारम्भन शवोद्वर्तनमेव।'

७९ सिंहावलोकनन्याय :—सिंहावलोकनन्याय अर्थात् सिंह के समान देखने का न्याय। चलता हुआ सिंह सामने तो देखता ही है, थोड़ी-थोड़ी देर बाद पीछे भी दृष्टिपात कर लेता है कि कोई भक्ष्य जन्तु पहुँच के भीतर पीछे भी है या नहीं। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति आगे-आगे कार्य करता हुआ पिछले कार्य पर भी कुछ दृक्पात करता है, तब सिंहावलोकनन्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'सान्नाईर्पि छात्रैर्पीतम्य सिंहावलोकन कर्तव्यमेव।'

८० सिकतातैलन्याय :—अर्थात् रेत से तेल निकालने की कहावत। जैसे गधे या शश के सिर पर सींग नहीं निकलते वैसे ही रेत से तेल की उत्पत्ति असम्भव है। इसी प्रकार की असम्भव बातों के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्ताराधन कदाचिदपि सिकतासु तैलमिवोपलब्धुमशक्यम् उपनीयते।'

८१ सुन्दोपसुन्दन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—सुन्द और उपसुन्द की उपमा। महाभारत के आदिपर्व (अध्याय २०९–२१२) में सुन्दोपसुन्द नाम के दो अजेय असुर भाइयों की कथा आती है। उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को एक अद्वितीय सुन्दरी (तिलोत्तमा) निर्माण करने को कहा। ब्रह्मा ने तिलोत्तमा को उन असुरों के पास कैलाश-सोपान में भेजा। दोनों उसे देख मुग्ध हो गये और उसे अपनी-अपनी ओर खींचने। अन्तत: दोनों क्रुद्ध होकर लड़ पड़े और दोनों ही मर गये। इन्हीं के समान जब दो समान बलवाले पदार्थ एक दूसरे के नाशक हों, तब इस न्याय का प्रयोगस्थल होता है। जैसे—'त्वद्गुणलोककाराष्ट्रे परस्पर युध्यमाने सुन्दोपसुन्दवत् न नश्यत., शान्तिमन्तवत् सिद्धस्त्वम् एव।'

८२ सूचीकटाहन्याय :—सूचीकटाहन्याय अर्थात् सूई और कड़ाहे का न्याय। किसी लोहार के पास जब एक व्यक्ति कड़ाहा बनवाने आ पहुँचे और दूसरा सूई, तब लोहार पहले सूई बनाता है क्योंकि उसे वह सहज ही अल्प काल में बना लेता है। इसी प्रकार इस न्याय का आशय यह है कि कठिन तथा दीर्घकालसाध्य कार्य पीछे करना चाहिए और सुकर तथा अल्पकालसाध्य कार्य पहले। जैसे—'अशेषाध्यापनकार्यात् शिक्षक शुल्काध्यायनकार्यागतां सूचना, प्रकृत पाठ स्थापयित्वा, सूचीकटाहन्यायेन प्रथम श्रावयति।'

८३ सूत्रबद्धशकुनिन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—सूत से बँधे हुए पक्षी का दृष्टान्त। सूत से बँधा हुआ पक्षी न इधर-उधर स्वच्छन्द उड़ सकता है, न कहीं यथेष्ट विश्राम कर सकता है। जिस पराधीन व्यक्ति की दशा इसके समान हो, उसके विषय में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—'कैकेयीनोदनयावशवद्धस्य दशरथस्य दशा सूत्रबद्धशकुनेरिवासीत्।'

८४ सोपानारोहणन्याय —सोपानारोहणन्याय अर्थात् सीढ़ियाँ चढ़ने का दृष्टान्त। जैसे मनुष्य छत पर एकाएक नहीं जा पहुँचता, एक-एक सीढ़ी चढ़कर ही पहुँचता है, वैसे ही ज्ञानादि की प्राप्ति भी क्रमशः ही होती है। ऐसे ही अवसर इस न्याय के प्रयोगार्थ उचित हैं। जैसे—'सोपानारोहणन्यायेनैव भवति विद्योपचयो विद्यार्थिना, धनवृद्धिश्च सज्जनानाम्।'

८५ स्थालीपुलाकन्याय :—स्थालीपुलाकन्याय अर्थात् देगचे और पुलाव का न्याय। जब किसी देगचे में चावल पकाये जाते हैं तब पाचक प्रत्येक दाने को निकाल कर नहीं देखता कि वह गल गया है या नहीं। दो चार दाने देखकर ही अनुमान कर लेता है कि सब के सब गल गये या कुछ कसर है। इसी प्रकार जहाँ किसी समुदाय के दो-चार व्यक्तियों से सबके सम्बन्ध में कुछ अनुमान किया जाता है, वहाँ इस न्याय का इस प्रकार व्यवहार किया जाता है—'विद्यालय-निरीक्षका स्थालीपुलाकन्यायेनैव विद्यार्थिनां योग्यतां परीक्षन्ते।'

८६. स्थावरजङ्गमविषन्याय :—अर्थ है—स्थावर और जंगम विष का दृष्टान्त। पौधों और खनिज द्रव्यों के विष स्थावर विष कहलाते हैं तथा प्राणियों के विष जंगम विष। कहते हैं, विष को विष नष्ट करता है, जैसे कि महाभारत की कथा में भीमसेन को दुर्योधन द्वारा दिया हुआ स्थावर विष नदी में साँपों के जंगम विष से दूर हो गया था। इसी प्रकार जहाँ एक वस्तु का प्रतिकार दूसरी से हो जाय, वहाँ यह न्याय प्रयोक्तव्य है। यथा—'वर्तमाने बहूनां रोगाणां चिकित्सा स्थावरजङ्गमविषन्यायेनैव विधीयते।'

८७ स्थूणानिखननन्याय —स्थूणानिखननन्याय अर्थात् खंबा गाड़ने का न्याय। जैसे भूमि में खंबा गाड़ना हो तो उसे बार-बार हिलाकर गहरा ठोंका जाता है, वैसे ही अपने पक्ष के सुसमर्थन के लिए जब कोई वक्ता, लेखक आदि अनेक युक्तियाँ, दृष्टान्त आदि प्रस्तुत करता है तब यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—'स्थूणानिखननन्यायेन समर्थयति प्रवक्ता स्वकीयं पक्षं दृष्टान्तपरम्परया।'

८८ स्वामिभृत्यन्याय :—स्वामिभृत्यन्याय अर्थात् मालिक और नौकर का न्याय। स्वामी और सेवक में पोषक तथा पोष्य या धारक और धार्य का सम्बन्ध होता है। इसी प्रकार का सम्बन्ध जहाँ दो वस्तुओं या व्यक्तियों में दिखाई दे, वहाँ उक्त न्याय व्यवहृत होता है। यथा—'इह लोके सर्वत्र जनेश्वरयोः व्यवहारः स्वामिभृत्यन्याय इव दृश्यते।'

८९ स्वेदजनिमित्तेन शाटकत्यागन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—पसीने से उत्पन्न कीड़ों के कारण वस्त्र फेंक देने का न्याय। इसी को कहीं पर '*यूकाभिया कन्थात्यागन्याय*' भी कहते हैं जिसका हिन्दी रूपान्तर 'जुओं के डर से गुदड़ी नहीं फेंकी जाती' है। आशय यह है कि सामान्य भयों से भीत होकर भारी हानि सहन करना बुद्धिमत्ता नहीं है। यथा—'परीक्षाया वैफल्यमपि सम्भवतीति भयेन परीक्षायां छात्रा न सम्मिलिता भवेयुरिति न, स्वेदजनिमित्तेन त्यागन्यायेन।'

९० ह्रदनक्रन्याय :—ह्रदनक्रन्याय का अर्थ है—झील और मगर का दृष्टान्त। इसका आशय 'वनसिंहन्याय' के समान है। विस्तारार्थ वहीं देखिए।

सप्तम परिशिष्ट

प्राचीन भारत का भौगोलिक परिचय

मातृसंस्कृति से अपना सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जहाँ मातृभाषा का परिचय आवश्यक है, वहाँ मातृभूमि के विषय में भी कुछ न कुछ ज्ञान अपरिहार्य है। इसी ध्येय से प्रस्तुत अनुक्रम हम जोड़ रहे हैं।

जिस वृद्ध भारत के विषय में हम सदा गर्व अनुभव करते हैं, उसके तीर्थादि स्थानों के सम्बन्ध में परिचयात्मक संकेत प्राचीन साहित्य में जहाँ तहाँ बिखरे पड़े हैं। संस्कृत-नाटकों के कथा प्रवाह को भी, उनकी पृष्ठभूमि के अभाव में, समझ सकना असम्भव है। हमारी विभिन्न बोलियों, रीति वृत्तियों, कवि-समयोक्तियों के मूलोद्गम भी तो लोक-संस्कृति के यही उर्वर प्रदेश ही थे। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का जितना श्रेय अश्वमेध की परम्परा को अक्षुण्ण रखने वाले हमारे चक्रवर्ती सम्राटों को रहा है, उतना ही श्रेय इस देश के महाकवियों (वाल्मीकि, व्यास) को भी है। मेघदूत का सन्देशहर बादल स्वयं कवि का उदार हृदय है, जिसके मुक्त व्योम में उमड़ने-उड़ने में भारत, मानो एक घोंसले में आबद्ध हो गया है।

हमारे प्राचीन भूगोल को लेकर कोई क्रमबद्ध अनुसन्धान अभी तक नहीं किया गया। श्री नन्दूलाल दे की 'दि जिओग्राफ़िकल डिक्शनरी ऑव एन्शेण्ट एण्ड मिडीवल इण्डिया' (प्रथम संस्करण १८८९, द्वितीय १९२७) आज स्वयं संशोधन चाहती है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल ने जिस प्रकार पाणिनिकालीन तथा बाणकालीन भारतवर्ष के सांस्कृतिक रूप को एकसूत्रित करने का यत्न किया है, जिस प्रकार डा० ऑरेलस्टाइन ने काश्मीर के विस्मृत नामों का उद्धार किया था, उसी प्रकार की बृहत्तर भारत की क्रमिक कहानी के लेखक को अभी जन्म लेना है।

प्राचीन भारत के कुछ एक नामों का तुलनात्मक उल्लेख हम कर रहे हैं, इस आशा से कि कोई अज्ञात युवक, एक ही सही, उस 'प्रथम प्रभात' के सस्पर्श से पुलकित होकर अनुसन्धान की इस अछूती दिशा में प्रयत्नशील हो जाए।

अंग—प्राचीन भारत के १६ 'राजनीतिक' जनपदों में एक, जो कभी रोमपाद (रामायण) तथा कर्ण (महाभारत) के शासन में था। आजकल भागलपुर के आसपास का प्रदेश।

अञ्जनगिरि—पंजाब की 'सुलेमान' पर्वतमाला (वराह०*)।

अगस्त्याश्रम—नासिक, कोल्हापुर (बम्बई), उत्तरप्रदेश, गढवाल, सतपुड़ा आदि में ऋषि अगस्त्य के नाम से प्रसिद्ध आश्रम। अगस्त्य ही वे 'चरित्र विजयी' वीर थे, जिन्होंने सर्वप्रथम आर्य-सभ्यता का दक्षिण में प्रवेश सम्भव किया था। लोगों का विश्वास है कि अगस्त्य आज भी ताम्रपर्णी के उद्गम स्रोत (तिनिवेली में) 'अगस्त्यकूट' पर समाधिस्थ हैं।

अचिन्त—मध्यभारत में एलोरा के प्राय ६० मील उत्तरपूर्व की ओर 'अजिण्ठा' ('अजन्ता' उच्चारण अशुद्ध है) नामक गुहा समूह, जहाँ (बौद्धों के) योगाचार्य मत के संस्थापक आर्य असंग का प्रथम 'आश्रम' था। गुहाओं में भव्यचित्रकला का अङ्कन विहार के स्थविर 'अचल' के आदेश पर ५वीं–६ठी शती में सम्पन्न हुआ था।

अचि(जि)रावती—अवध की राप्ती (रेवती) नदी, जिस पर कभी श्रावस्ती नगर बसा हुआ था। २ इरावती (रावी)। (वराह०)

---

* संकेतों के विवरण के लिए ग्रन्थारम्भ में संकेत-सूची देखिए।

अच्छोद—काश्मीर का एक सरोवर (आधु० अच्छावत), जिसके तट पर कभी 'सिद्धाश्रम' अवस्थित था। (कादम्बरी)

अनन्तनाग—झेलम के दक्षिण तट पर स्थित (काश्मीर की) प्राचीन राजधानी। (आधु० इस्लामाबाद)

अनन्तशयन—त्रावनकोर का पद्मनाभपुर, जहाँ एक मन्दिर में विष्णु की शेषनाग पर प्रसुप्त मुद्रा में अंकित मूर्त्ति सुरक्षित है। (पद्म० उत्तर०)

अनहिलपत्तन—वल्लभी-साम्राज्य के विध्वंस पर 'वनराज' द्वारा गुजरात (उत्तर-बड़ौदा) में (७४६ ई०) प्रतिष्ठापित एक (आधु० अनहिलवाड़) नगर।

अनुराधपुर—सिंहल (सीलोन) की पुरानी राजधानी, जहाँ महेन्द्र तथा संघमित्रा द्वारा रोपित बोधिवृक्ष की शाखा से विकसित 'अश्वत्थ' आज भी विद्यमान है। (महावंश)

अनूप—दक्षिण मालव देश, हैहय, माहिष (माहिषक)। (हरिवंश०)

अन्तर्वेद—गंगा तथा यमुना के अन्तर्गत दोआब। (भविष्य०)

अपगा—अफगानिस्तान। (ब्रह्माण्ड०)

अपरान्त (क)—कोंकण तथा मालाबार, पश्चिमी घाट। (रघु०, मत्स्य०)

अभिसारा (रि)—पेशावर डिविजन में एक जिला, उरशा (आधु० हजारा), जिसे अर्जुन ने (सभापर्व०, पद्म०) अपनी उत्तर दिग्विजय में जीता था।

अमरकण्टक—गोंडवाना में मेकल पर्वतमाला का एक भाग, जो नर्मदा तथा शोण का उद्गमस्थल है, आम्रकूट (?) (पद्म०, स्कन्द०, मेघदूत)।

अमरावती—आन्ध्र में कृष्णा के तट पर, बेजवाड़ा के प्रायः २० मील पश्चिम की ओर स्थित प्रसिद्ध बौद्धस्तूप (का भव्य स्थान) जिसे चतुर्थ शती के अन्त में आन्ध्रों ने निर्मित किया था।

अम्बर—जयपुर (के समीप प्राचीन नगर आमेर)। इसकी मूल प्रतिष्ठा मान्धाता के पुत्र अम्बरीष ने की थी तथा 'वर्तमान' रूपान्तर मानसिंह ने अकबर के दिनों में किया था। (भविष्य०)

अयोध्या—'राम-राज्य का पुनीत धर्मक्षेत्र', अवध। बौद्धयुग में सरयू नदी अयोध्या को उत्तरकोसल तथा दक्षिणकोसल में विभक्त करती थी। अयोध्या के ध्वस्त तीर्थों का पुनरुद्धार ५वीं शती में किसी गुप्त 'विक्रमादित्य' ने किया था।

अरण्य—सैन्धव, दण्डक, नैमिष, कुरुजांगल, अपरावृत्त, जम्बुमार्ग, पुष्कर, हिमालय तथा अरण्य का नौ तीर्थ-वनों में परिगणन होता है। (देवी०)

अरुणाचल—कैलास के पश्चिम में एक पर्वतमाला। २ दक्षिण भारत में सुरक्षित 'अष्टमूर्त्ति' (शिवजी महाराज) की पाँच 'भौतिक' मूर्त्तियों में एक—'अग्नि प्रतिमा' जहाँ प्रतिष्ठित है। (ब्रह्माण्ड०)

अरुणोद—गढ़वाल। (स्कन्द०)

अर्धगंगा—कावेरी। (हरिवंश०)

अर्बुद—(राजपूताना की) सिरोही रियासत में अरवली पर्वतमाला की 'आबू' शाखा, जहाँ से वशिष्ठ ने विश्वामित्र के विरुद्ध युद्ध करने के लिए 'परमार' जैसे वीर को एक 'अग्निकुण्ड' से उत्पन्न किया था। (महाभा०, पद्म०)

अलका—यक्षपति कुबेर की राजधानी, जिसका नामकरण, सम्भवतः, गढ़वाल में बहती अलकनन्दा (अपरनन्दा, वसुधारा) नामक नदी के अनुकरण पर हुआ था। (स्कन्द०)

अवन्ती—मालव राज्य की 'राजधानी' उज्जयिनी (उज्जैन), जिसे ७-८वीं सदी से मालवा कहते आए हैं। कभी यह संवत्प्रवर्तक विक्रमादित्य की 'राजधानी' थी। २ सिप्रा (नदी का एक नाम), जिस पर प्राचीन उज्जैन स्थित था।

अविमुक्त—काशी, वाराणसी (बनारस)। (शिव०, मत्स्य०)।

अश्मक—(दशकुमारचरित में) विदर्भ के अधीन एक राज्य, जो अर्थशास्त्र के टीकाकार *भट्टस्वामी के अनुसार*, **महाराष्ट्र** है—*और कभी अवन्ती-सामान्य के उत्तर-पश्चिम में था।* (कूर्म० हर्ष०, नाटक०) **वक्षु (अश्मन्वती आमू)** की सभ्यता का देश—ऑक्सियाना, 'पाताल'।

अश्मन्वती—वक्षु (आक्सस), इक्षु, वक्षु, आमू दरिया। (रघु०)

असिक्नी—चनाब की एक धारा।

अहिच्छत्र—*रोहीलखण्ड में बरेली से २० मील पश्चिम की ओर, आधुनिक रामनगर;* **अहिक्षेत्र,** *छत्रवती। (महा०)*

आदर्शावली—अरवली पर्वतमाला। (दे० आर्यावर्त)

आनर्त—गुजरात (तथा मालवदेश का कुछ अंश), जिसकी राजधानी कभी **कुशस्थली (द्वारिका)** *भी। उत्तर गुजरात की राजधानी का नाम भी कभी* **आनर्तपुर (आनन्दपुर,** अधु० वाडनगर) रहा था। (भागवत०)

आन्ध्र—*गोदावरी तथा कृष्णा नदियों का 'मध्यदेश', राज०* **अमरावती।** सदियों यहाँ वेंगी के पल्लवों तथा कल्याणपुर के चोलों का उत्थान पतन होता रहा। स्वयं आन्ध्रों का राजवंश, इतिहास में, *सातवाहन अथवा सातकर्णि के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। (गरुड०, अनर्घराघव)*

आपगा—(पश्चिमी पंजाब की) रावी के पश्चिम में एक सरिता। २. कुरुक्षेत्र में चितांग नदी की एक सहायिका, जिसे **ओघवती** तथा 'आपगा' भी कहते हैं। (वामन०)

आभीर—नर्मदा के मुहाने के गिर्द, गुजरात का दक्षिणपूर्वीय भाग। (ब्रह्माण्ड०, महाभा०)

आम्रकूट—अमरकण्टक।

आर्जिकीया—व्यास (**विपाशा**) की एक धारा।

आर्यावर्त—(मनु के अनुसार) हिमाद्रि तथा विन्ध्य के मध्य में स्थित देश, **उत्तरापथ।** पतञ्जलि के समय में आर्यावर्त की चार 'पार्वती' मर्यादाएँ थीं—१. उत्तर में हिमालय, २. दक्षिण में **पारियात्र,** ३ पश्चिम में **आदर्शावली,** तथा ४ पूर्व में कालकवन। राजशेखर के बाल-रामायण के अनुसार दक्षिणभारत तथा उत्तरभारत की स्वाभाविक विभाजन रेखा **है—नर्मदा।**

आशापल्ली—*अल्बेरूनी का येस्साइल अथवा आसावल, आजकल का अहमदाबाद।*

इन्द्रपुर—इन्दौर। (स्कन्दगुप्त के अभिलेख, शंकरविजय)

इन्द्रप्रस्थ—पुरानी दिल्ली, **बृहस्थल, खाण्डवप्रस्थ** (महाभा०)। *कहते हैं पुराने किले का* निर्माण (कलियुग ६५३ में ?) युधिष्ठिर ने किया था, लोकभाषा में उसे आज भी 'इन्द्रपत' कहते हैं। महाभारतकाल में यह युधिष्ठिर की राजधानी थी, किले का पुनर्निर्माण हुमायूँ का किया बतलाते हैं।

इ (ऐ) रावती—रावी (पंजाब) २ (अवध की) राप्ती (**अचिरावती**)। (गरुड०)

ऋषिपत्तन—ऋषिपत्तन, सारनाथ।

उदण्ड(न्त)पुर—पटना जिले का 'बिहार' शहर, जो कभी बंगाल के पाल राजाओं की राजधानी था। यहाँ बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर की चन्दनमयी मूर्ति से सुशोभित एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार भी है। (द्राविड़ अवदान)

उग्र—दैरल (देवीपु०)। बिहार में **महास्थान** (पद्म०)।

उच्च—बरण, बुलन्दशहर, जहाँ जनमेजय ने 'नागसत्र' (अर्थात् पुराणों के प्रवचन) का प्रचलन किया था।

उज्जयिनी—प्राचीन मालवदेश (अर्थात् अवन्ती) की राजधानी। तीसरी सदी ई० पू० में *बिन्दुसार के शासनकाल में अशोक यहाँ राज्यपाल थे। विक्रमादित्य संवत्प्रवर्तक ने शकों को*

(५७ ई० पू०) पराजित कर इसे अपनी राजधानी बनाया था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (द्वि०) ने सुराष्ट्र-मालव देश के शकों को भारत से निर्वासित कर उज्जैन की प्राचीन परम्पराओं को अन्तत समाप्त कर दिया। गाथाओं में उदयन की प्रेम लीलाओं का भी इधर से ही सम्बन्ध रहा है। शहर के मध्य मे कभी यहाँ कालप्रियनाथ भगवान् का एक मन्दिर था, जहाँ शिव पुराण के प्रसिद्ध १२ ज्योतिर्लिङ्गों मे एक की प्रतिष्ठा थी।

उ(ओ)ड्र—उडीसा, उत्कल (उत्-कलिंग, अर्थात कलिंग का उत्तर भाग)। इसकी दक्षिणी सीमा पर जगन्नाथ **(पुरी)** का प्रख्यात मन्दिर था। पुराणों के युग में उत्कल तथा कलिंग का विभाजन हो चुका था।

उत्तरकुरु—गढवाल तथा **हूणदेश** का उत्तरीय भाग, जो हिमालय के परतर प्रदेशों का एक पुज था—और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय मे युधिष्ठिर के साम्राज्य का अङ्ग बना लिया था।

उत्तरापथ—काश्मीर तथा काबुल का 'एक राज्य'। २ उत्तर भारत (भारतवर्ष)।

उत्तरमद्र—फारस में 'मद' प्रान्त, जिसमें अवस्ता का 'आयानन वार्नो' (आर्य अपवर्ग) भी सम्मिलित था।

उत्तरविदेह—नेपाल का दक्षिण भाग, जिसकी राजधानी गन्धवती थी। (स्वयम्भू पुराण)

उत्पलारण्य—कानपुर से १४ मील दूर (आधु० बिठूर'), **'वाल्मीकि आश्रम'**, जहाँ सीता ने प्रवास में लव तथा कुश को जन्म दिया था। यहीं पर, सरस्वती तथा दृषद्वती के 'मध्यदेश' (ब्रह्मावर्त्त) में ध्रुव के पिता उत्तानपाद ने **'प्रतिष्ठान'** की स्थापना की थी।

उदयगिरि—उडीसा मे भुवनेश्वर के पाँच मील पूर्व एक पर्वत, जिसकी प्रसिद्ध गुहाओं में ई० ५०० पू०—५०० ई० के सहस्र वर्षों में भारतीय कलाकार अपना सर्वस्व उँडेलते रहे।

उदीच्य (भूमि)—सरस्वती के उत्तर पश्चिम का प्रदेश। (अमरकोश)

उरग (पुर)—काश्मीर के पश्चिम मे, जेहलम तथा सिन्ध नदियों के बीच का प्रदेश (हजारा), **उरशा, अभिसारा** (मत्स्य०)। २ त्रिचनापली = उरैयुर, जो छठी शती मे पाण्डवों की राजधानी थी, **नागपत्तन** (?)। (रघु०) ११वीं शती मे चोलों का सम्पूर्ण तमिल देश पर प्रभुत्व जम चुका था। 'पवनदूत' का कवि इसे, **ताम्रपर्णी** पर प्रतिष्ठित करता हुआ, भुजंगपुर नाम से स्मरण करता है।

उरुविल्व (ल्ल)—'गया' के ६ मील दक्षिण मे, **'बुद्धगया'**, जहाँ छठी शती ई० पू० में भगवान् बुद्ध ने बोध प्राप्त किया था। यहीं से बोधिवृक्ष की शाखाओं का देश विदेश में प्रतिरोपण हुआ था। आज यहाँ एक महान् विहार भी है, जिसकी स्थापना छठी शती ई० पू० मे अमरदेव ने की थी।

ऋक्षपर्वत—विन्ध्य की पूर्व शाखा जो **शोण, शुक्तिमती, नर्मदा, महानदी** आदि का उद्गम है।

ऋषिपत्तन—(काशी में) इसिपत्तन, सारनाथ। (ललितविस्तर)

ऋष्यमूक—किष्किन्धा मे (तुङ्गभद्रा पर) **पम्पा** का उद्गमस्रोत।

(ऋष्य) शृङ्गगिरि—मैसूर मे बेलूर के उत्तर में एक पर्वतशृङ्ग, जहाँ स्वामी शङ्कराचार्य ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए (चार मठों में, दक्षिण में) 'शृङ्गेरी' का प्रसिद्ध मठ स्थापित किया था। (शंकरविजय)

एल(ा)पुर—एलोरा।

एरण्डपल्ल—खानदेश। (हरिषेणप्रशस्ति)

एरिकिण—एरण।

औदुम्बर—जि० गुरदासपुर।

कण्वाश्रम—सहारनपुर तथा गढवाल में से गुजरती मालिनी ('चुका') नदी के किनारे ऋषि कण्व का आश्रम था, जहाँ शकुन्तला का भरण पोषण हुआ था। (कोटद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर)। (शतपथ०)

कनक—नागनगोर। (पद्म०)

कनिष्कपुर—श्रीनगर से दस मील दक्षिण की ओर कनिष्क की बसाई नगरी, जहाँ ७८ ई० में अन्तिम 'बौद्धसंगीति' का अधिवेशन तथा 'शक संवत्' का प्रवर्तन हुआ था।

कन्या(कुमारी)—'केप कौमोरिन' (कु)कुमारी।

कपिलवास्तु—शाक्यों की राजधानी, भगवान् बुद्ध की जन्मभूमि—जो आज फैजाबाद से २५ मील उत्तरपूर्व में, 'भुइला' के नाम से विदित है।

कपिलाश्रम—बंगाल में 'सागरसंगम' तीर्थ, जहाँ महाराज सगर के अश्वमेधीय अश्व का इन्द्र ने अपहरण किया था।

कपिशा—कुभा (काबुल) नदी के नाम पर उसका 'उत्तरप्रदेश' भी 'कपिशा' कहलाने लगा; कभी कपिशा नगरी 'गान्धार' साम्राज्य की राजधानी थी। २ रघुवंश में उड़ीसा की 'स्वर्णरेखा' (नदी) को कवि ने 'कपिशा' (पलाशिनी) कहा है।

कम्बोज—(पूर्वी) अफगानिस्तान। अरग। (राजत०, मार्कण्डेय०) यास्क के अनुसार 'गलचा' भाषा का प्रदेश, जहाँ आज भी (!) √शु (गतौ) का क्रियात्मक प्रयोग (मात्र 'शव = प्रेत' नहीं) होता है, और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के साम्राज्य में जोता था। (महा०)

करतोया—रंगपुर, दीनाजपुर, बोगरा में से गुजरती हुई एक तीर्थ नदी सदानीरा, जो कभी बंगाल तथा कामरूप (आसाम) की विभाजक रेखा थी। (स्कन्द०)

कर्णसुवर्ण—(बंगाल में) मुर्शिदाबाद जिले में, रंगामाटी (कानसोना), जो कभी शशांक की राजधानी थी।

कर्णाट—कुन्तलदेश, राज० कल्याणपुर।

कर्तृपुर—कुमाऊँ, गढ़वाल, अल्मोड़ा, कांगड़ा का पर्वतीय राज्य—जिसे समुद्रगुप्त ने विजित कर गुप्त साम्राज्य का अंग कर लिया था। (हरिषेण०)

कर्णकुण्ड—(हैदराबाद में हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध) गोलकुण्डा, 'सर्वदर्शनसंग्रह'-कार माधवाचार्य की जन्मभूमि।

कलडि(टि)—(केरल में) शंकराचार्य की जन्मभूमि।

कलिंग—'उत्तरी सरकार' का इलाका, जिसको 'युद्धविजय' से खिन्न हुए अशोक में 'धर्मविजय' की प्रेरणा जगी थी। 'कलिंगविजय', भारत ही की नहीं, विश्व भर की आत्मा में एक नवल चेतना स्पर्श का मुहूर्त है। (एच० जी० वेल्स)

कलिंगनगर—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर (पुरी)। (दशकुमार०)

कल्याणपुर—(निज़ाम साम्राज्य में) बीदर के ६ मील पश्चिम में, चालुक्यों (के कुन्तलदेश) की राजधानी।

काञ्ची (पुर)—कान्जिवेरम्, जो शंकराचार्य द्वारा स्थापित 'विष्णुकाञ्ची' मन्दिर के लिए तथा 'नालन्दा विश्वविद्यालय' के लिए प्रसिद्ध है। अष्टमूर्ति शिव की 'भौतिक' मूर्तियों में 'आकाश-तत्त्व' की प्रतीक मूर्ति (चिदम्बरम्) इधर दक्षिण में ही क्यों मिलती है? (दे० अरुणाचल)

कान्यकुब्ज—विश्वामित्र की जन्मभूमि (रामायण), तथा (बौद्धयुग) में दक्षिण-पाञ्चालों की राजधानी—कन्नौज। हर्षवर्धन से पूर्व यह कुछ समय तक मौखरियों की राजधानी भी रहा। इसी के ('त्रिकोण' दुर्ग के) दक्षिणपश्चिम में स्थित 'रंग महल' से ही पृथ्वीराज ने संयोगिता का हरण किया था। (भविष्य०)

कामरूप—असम (अहोम, उच्चारण 'आसाम' नहीं) जिसकी राजधानी था—प्राग्ज्योतिष। कुछ विद्वान् प्राग्ज्योतिष का कामाख्या अथवा गोहाटी से एकीकरण करते हैं। (मेघदूत,

कालिका पु०) कुछ हो, 'कामदहन' का माला का सारा वातावरण (तीर्थों तथा लोकवाङ्मय की साक्षी पर) इधर ही अधिक उचित उतरता है। (मेघदूत)

काम्पिल्य—दक्षिण पंचाल (द्रुपददेश) की राजधानी।

कार्तिकेयपुर—(कुमाऊँ में) वैजनाथ (वैद्यनाथ) तीर्थ। (देवी पु०)

कालीघाट—सती से सम्बद्ध इसी 'पीठ' के आधार पर 'कलकत्ता' का नामकरण हुआ प्रतीत होता है।

काश्यपपुर—उपनिषदों के 'चरैवेति' युग में ऋषि कश्यप द्वारा सम्थापित (उपनिवेशित) नगरों, प्रदेशों का 'सर्वनाम', यथा—काश्मीर, मुलतान।

काश्यपीगंगा—गुजरात की साबरमती (नदी)। (पद्म०)

किम्पुरुष (देश)—नेपाल।

किरात (देश)—नेपाल के सुदूरपूर्व की ओर किरातों की बस्ती—(त्रिपुरा) तिपारा, जहाँ 'त्रिपुरेश्वरी' का तीर्थमन्दिर है। (ब्रह्म०)

किष्किन्धा—तुङ्गभद्रा के दक्षिण तट पर धारवाड़ में आज भी इसे उसी पुराने नाम से लोग जानते हैं। लोकगाथा के अनुसार, यहीं (राक्षस) बाली का ध्वंस हुआ था। अयोध्या से किष्किन्धा तथा किष्किन्धा से लंका—कुल दो सौ मील की दूरी थी। 'लंका'—सिंहल (सीलोन) नहीं है।

कुण्डग्राम—वैशाली का एक और नाम, जो महावीर की जन्मभूमि था और आधुनिक मुजफ्फरपुर (तिरहुत) में अवस्थित था। (जैनसूत्र)

कुण्डिनपुर—विदर्भ की प्राचीन राजधानी, बीदर (?)। (मालतीमाधव)

कुन्तल (देश)—नर्मदा, तुङ्गभद्रा, पश्चिमसागर और गोदावरी से सीमित इस प्राचीन देश ने चालुक्यों तथा मराठों के हाथ कई उत्थान पतन देखे, कई राजधानियाँ (कल्याण, नासिक) बदलीं। (दशकुमार०, तारानाथ)

(कुन्ती) भोज—मालवदेश का एक पुराना नगर, जहाँ पाण्डवों की माता का बाल्यकाल, 'कुन्तीभोज' की छत्रछाया में बीता था।

कुभा (कुहु)—काबुल (नदी)।

कुमारवन—कुमाऊँ, कूर्माचल। (विराटपर्व)

कुम्भघोण—तंजोर जिले में चोलों की राजधानी तथा विद्यापीठ रहा है। (चैतन्यचरित०)

कुरुक्षेत्र—'महाभारतों का धर्मक्षेत्र भी, युद्धक्षेत्र भी—थानेसर।

कुरुजांगल—हस्तिनापुर के दक्षिण पश्चिम का 'आरण्यक' प्रदेश।

कुलिन्द (देश)—कभी सतलुज तथा गंगा के बीच का सारा प्रदेश 'कुलिन्द' कहलाता था, आज गढ़वाल के साथ (उत्तर) दिल्ली तथा सहारनपुर उसमें शामिल करने होंगे। (महा०)

कुलूत—कुल्लू, कभी कुलिन्द का ही एकांश था। (बृहत्संहिता)

कुश(भवन)पुर—अवध में गोमती के तट पर, सुल्तानपुर। इक्ष्वाकुओं की पुरानी राजधानी अयोध्या को छोड़कर, कुश इधर आ बसा था। (रघु०)

कुशाग्रपुर—मगध की प्राचीन राजधानी, राजगृह, गिरिव्रज।

कुशस्थली—द्वारिका। इतिहास में आनर्तों की राजधानी भी रही है। प्रसिद्ध विद्वान् पौध ने इसे (कुशी की 'हिस्ट्री आव गुजरात' पर सम्मति देते हुए) श्रीकृष्ण, दयानन्द तथा गांधी की जन्मभूमि होने का श्रेय दिया है।

कुशीनगर—जहाँ भगवान् बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था, गोरखपुर के निकट आधु० 'कसिया' गाँव (विल्सन)।

कुसुमपुर—पाटलिपुत्र (पटना)। (मुद्राराक्षस)

कूर्माचल—कुमाऊँ। कुमारवन।

केकय—व्यास तथा सतलज के बीच का प्रदेश, जिसकी एक राजकुमारी (कैकेयी) की ईर्ष्या से राम को वनवास मिला था।

कोसल—अयोध्या। जब कोसल साम्राज्य को (उत्तर, दक्षिण) दो भागों में विभक्त कर दिया गया, उनकी राजधानियाँ भी क्रमश कुशावती तथा श्रावस्ती बन गई। भगवान् बुद्ध के समय में कोसल एक बलशाली साम्राज्य था, कपिलवस्तु तथा बनारस उसके अन्तर्गत थे। किन्तु, ३०० ई० पू० में इसका मगध में समावेश हो गया और इसकी राजधानी भी तब श्रावस्ती न रहकर पाटलिपुत्र हो गई। कहीं-कहीं दक्षिण-कोसल की प्रसिद्धि 'महाकोसल' नाम से भी मिलती है।

कौशाम्बी—इलाहाबाद के प्राय ३० मील पश्चिम की ओर 'कोसम' जो कभी वत्सदेश की राजधानी थी। (बृहत्कथा, भास)

क्रोड़ (देश)—कुर्ग। (कावेरीमाहात्म्य)

क्रौञ्च (रन्ध्र,-पर्वत)—'तिब्बत तथा भारत' में (कुमाऊँ की घाटी में) प्रवेशद्वार, जिसका 'उद्घाटन' परशुराम ने किया था। कुछ विद्वानों के अनुसार यह 'बर्मा-आसाम' की पूर्वीय पर्वतमाला का द्योतक है। रामायण के अनुसार क्रौञ्चपर्वत कैलास का वह भाग है जहाँ मानसरोवर झील शोभायमान है। तो क्या 'कैलास' शिव पार्वती के इस क्रीडा शैलों का एक सामान्य नाम है और तथैव क्या मानसरोवर का भी?

खश(स)—किश्तवाड़ तथा वितस्ता के बीच का इलाका, जिस पर कभी खशों का 'साम्राज्य' था। कुछ विद्वानों के अनुसार इन पार्वतीय खशों को परास्त करके ही चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य' बने थे, किन्तु अधिक सम्भव यही है कि शकाधिपति किदार को वक्षु तक खदेड़ कर चन्द्रगुप्त ने *शकों का नामशेष तो किया ही था, साथ ही गुप्तों की डूब चुकी प्रतिष्ठा का उद्धार करके वे* वराह-अवतार भी कहलाये। (देवीचन्द्रगुप्त, हर्षचरित, रघुवंश १३)

गजसाह्वय—हस्तिनापुर। (भागवत०)

गजेन्द्रमोक्ष—गंगा तथा गण्डकी के संगम पर प्रसिद्ध तीर्थ (भागवत०)। शोणपुर।

गन्धमादन—कैलास की दक्षिणी शाखा, जहाँ कभी हनुमान का आवास था—बदरिकाश्रम भी यहीं स्थित है। (कालिका०, विक्रमो०)

गाधिपुर—कान्यकुब्ज (कन्नौज) जिसे विश्वामित्र के पिता ने बसाया था।

गान्धार, गन्धर्वदेश—काबुल नदी के साथ-साथ बसा हुआ कुनार तथा सिन्धु नदियों का 'मध्यदेश', जिसमें कभी पेशावर तथा रावलपिण्डी समाविष्ट होते थे। पुरुषपुर (पेशावर) तथा तक्षशिला इसकी दो राजधानियाँ थीं।

गिरिकर्णिका—(गुजरात में) साबरमती।

गिरिनगर—गिरिनार-जूनागढ में एक पर्वतमाला, जहाँ नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ के प्रसिद्ध जैन मन्दिर हैं। कभी ऋषि दत्तात्रेय का आवास था। अशोक के कुछ शिलालेख यहाँ भी अभिलिखित हुए थे। सुदर्शन झील का तथा उसके उद्धारक रुद्रदामन् का नाम भी इससे सम्बद्ध है। (स्क० ट०, बृहत्सं०)

गिरिव्रज—(बिहार में) मगध की प्राचीन राजधानी—राजगृह—'वसु' के द्वारा संस्थापित होने से इसे वसुमती भी कहा जाता है (रामायण)। 'बुद्धयुग' में इसे कुसुमपुर भी कहते लगे थे। प्रसिद्ध विश्वविद्यालय 'विक्रमशिला (बिहार)' यहीं स्थित था। (महावग्ग)

गृध्रकूट—'गिरिनगर' के दक्षिण की ओर रत्नगिरि मण्डल का एक भाग, जहाँ तपोमग्न बुद्ध पर

देवदत्त ने शिला फेंकी थी। यहीं, जीवक वन में, अजातशत्रु तथा उसके प्रधानमन्त्री वर्षकार ने स्वयं भगवान् की सेवा में उपस्थित हो, 'पाटलिपुत्र' की स्थापना-योजना बनाई थी। (चुल्लवग्ग)

गुप्तकाशी—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर। (कुमाऊँ में) शोणितपुर (हरिवंश)।

गोकर्ण—(उत्तर गो०) गंगोत्तरी से ८ मील दूर, भगीरथ का 'तपोवन'। (दक्षिण गो०) करवाल में गेंडिया तीर्थ।

गोकुल—कृष्ण के बाल्यकाल की क्रीडाभूमि—व्रज गोकुल मथुरा से ६ मील पर है।

गो(गौ)तमी—गोदावरी। (शिव०)

गोनर्द(न्द)—पंजाब, क्योंकि काश्मीर के राजा गोनर्द ने इसे जीत लिया था। एक 'गोनर्द' अवध में भी है, (गोंडा), जहाँ महाभाष्यकार पतञ्जलि ने जन्म ग्रहण किया था।

गोपवन—आबु० गोआ। (विक्रमांकदेवचरित)।

गोपाद्रि—१ रोहतास (पर्वत)। २ काश्मीर में 'तख्ते सुलेमान', जिसे शास्त्रों में 'शङ्कराचार्य' पर्वत भी कहा गया है। ३ ग्वालियर। (राजतरंगिणी)

गोवर्धन—वृन्दावन से १८ मील दूर, वही पर्वत जिसे ('पैधो' ग्राम में) बाल कृष्ण ने अपनी उंगली पर उठा लिया था।

गौड़—(मगध साम्राज्य से मुक्त हुए) बंगाल की प्रतिष्ठा (७वीं सदी में) इस नाम से हुई थी। यह अंग देश के दक्षिण में था। (इप०)

गोमती, चर्मण्वती (दे० 'रन्तिपुर')। गोमल।

घर्घरा—घग्गर नदी, जो कुमाऊँ में निकल कर सरयू में आ मिलती है। (पद्म०)

चक्षु—वक्षु (इक्षु) और आमू नामक नदी जो महाभारत, रघुवंश तथा चन्द्र के महरौली अभिलेख के अनुसार 'शाकद्वीप' में बहती थी।

चन्दनगिरि, मलयगिरि—मालावार घाट। (त्रिकाण्ड०)

चन्द्रना—साबरमती।

चन्द्रभागा—चनाब (चन्द्रिका), जिसकी एक शाखा असिक्नी थी।

चम्पा—श्यामाद्वीप (अन्नाम)। २ अंग तथा मगध के बीच बहनेवाली चम्पा नदी (पद्म०)। ३ चम्ब। रियासत (राजतरंगिणी)। ४ अंग देश की राजधानी (जिसका पुराना नाम 'मालिनी' था)।

चम्पारण्य—(मध्य भारत में) राजिम के पाँच मील उत्तर में, जैनों का एक तीर्थ (जैमिनि भारत)। २ पटना डिवीजन में 'चम्पारन'। (शक्तिसङ्गमतन्त्र)

चरणाद्रि—(मिर्जापुर में) चुनार का प्रसिद्ध अजेय दुर्ग, जिसे बंगाल के पाल राजाओं ने ८-१२वीं सदियों में बनवाया था।

चरित्रपुर—(उड़ीसा में) पुरी का तीर्थ, तीर्थपुरी।

चर्मवती—'रन्तिपुर' गोमती नदी।

चिताभूमि—सन्थाल परगना में, वैद्यनाथ अथवा देवघर, जहाँ १२ ज्योतिर्लिंगों में एक (रावण द्वारा स्थापित) है।

चित्रकूट—बुन्देलखण्ड में पयस्विनी मन्दाकिनी के तट पर वह पर्वत-तीर्थ, जहाँ भगवान् रामचन्द्र ने अपने प्रवास की कुछ अवधि बिताई थी।

चिदम्बरम्, चित्ताम्बरम्—दक्षिण में शिव की पाँच भौतिक मूर्तियों में 'आकाश-तत्त्व' का प्रतिष्ठा-स्थान। (देवी भाग०)।

चेदि—'शम्भी सिन्धु' तथा तोंस के मध्यगत, बुन्देलखण्ड तथा मध्यप्रान्त का कुछ भाग, जो कभी 'शिशुपाल' की राजधानी था।

चैत्यगिरि—भीलसा से तीन मील उत्तर की ओर, बेसनगर—जहाँ अशोक का ससुराल था। (कपिलवस्तु में लुम्बिनी, सारनाथ में बोधगया, काशी में मृगदाव, श्रावस्ती में जेतवन, मगध में राजगृह वैशाली, कुशीनगर आदि बौद्धों के ८ तीर्थ 'चैत्य' कहाते हैं।) कुछ विद्वानों ने इसकी स्थिति-समता साँची तथा विदिशा से भी की है। (महावंश)

चोल—पिनाकिनी (पेन्नार) तथा कुर्ग नदियों के बीच में कोरोमण्डल घाट जिसकी राजधानी, कावेरी पर अवस्थित, 'उरैपुर' थी।

च्यवन—(बंगाल के शाहाबाद जिले में) च्यवन ऋषि का आश्रम।

जन(क)स्थान—गोदावरी तथा कृष्णा के बीच का प्रदेश (जनकपुर विदेह) तथा औरंगाबाद जो 'पहले' दण्डकारण्य का एक भाग था—दण्डकारण्य में पंचवटी (नासिक) भी शामिल थी। (भवभूति)

जमदग्नि—गाजीपुर में ('जमानिया' नाम से प्रसिद्ध) ऋषि परशुराम का आश्रम।

जाबालिपुर—जबलपुर। (प्रबन्धचिन्तामणि)

जयपुर—प्राचीन मत्स्यदेश, विराटनगर।

जाह्नवी—गंगा। किन्तु, जह्नु का आश्रम आजकल, सुल्तानगंज (भागलपुर) के सम्मुख गंगा से निकल रही एक चट्टान पर था, ऐसा बताते हैं।

जीर्णनगर—पूना जिले का जुनेर—जो कभी क्षत्रप राजा नहपान की राजधानी था।

जूर्णनगर—यवननगर, जूनागढ़।

जेतवन (विहार)—श्रावस्ती से १ मील दक्षिण की ओर 'जोगिनीभरिया' नाम का टीला, जहाँ कभी उपवन के अन्दर श्रावस्ती के श्रेष्ठी दानवीर 'अनाथपिण्डक' सुदत्त ने एक 'विहार' स्थापित किया था। (चुल्लवग्ग)

ज्वालामुखी—कांगड़ा में एक 'पीठ', जहाँ 'सती' की जिह्वा गिरी थी। ज्वालामुखी पर्वत की ऊँचाई ३२८४' है, जहाँ १८८२' पर महेश्वरी की एक 'मूर्ति' स्थापित है।

झारखण्ड—छोटा नागपुर, जिसको राजा मधुसिंह की पराजय के अनन्तर अकबर ने १५८५ ई० में मुगल-साम्राज्य में मिला लिया था।

टक्क—व्यास तथा सिन्धु के मध्य का प्रदेश, पंजाब। (मृच्छकटिक)

तक्षशिला—जिला रावलपिण्डी का एक प्राचीन नगर, जहाँ बौद्धयुग में एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। पाणिनि तक्षशिला-विद्यापीठ में 'आचार्य' थे। 'दिव्यावदान' में अंकित है कि बुद्ध किसी पूर्वजन्म में 'भद्रशिला' के राजा थे, जहाँ एक ब्राह्मण भिक्षु ने उनका सिर काट डाला था। तब से भद्रशिला को लोग 'तक्षशिला' कहने लगे। बौद्धयुग में यहाँ पाणिनि के 'संस्कृत व्याकरण' का अध्यक्ष नियुक्त होना (तथा धनुर्वेद का पाठ्यक्रम में समावेश) हमारी बौद्ध 'पाली' तथा अहिंसा विषयक धारणाओं को एकदम निर्मूल सिद्ध कर देता है।

तपनी—ताप्ती, तापती। (मेघदूत)

तमसा—(अवध में) टौंस नदी, जिसके तट पर वाल्मीकि का 'आदि' जीवन बीता था।

तालवन—कावेरी पर चोल राजाओं की पुरानी राजधानी 'तलकाड'। तीसरी सदी से यहाँ गंगवंश का राज्य रहा था, जिसे ११वीं सदी में चोलों ने तमिल देश से उखाड़ फेंका।

ताम्रपर्णी—(बौद्ध वाङ्मय में) सिंहल द्वीप। २ दक्षिण में अगस्त्यकूट पर्वत से उद्भूत ताम्रपर्णी नदी। (रघुवंश)

ताम्रलिप्ती—प्राचीन सुह्म देश की एक नदी एवं राजधानी, मौर्यकाल से लेकर गुप्तों के पतन तक (एक सहस्र वर्ष !) इसका यथावत् ऐतिहासिक महत्त्व रहा। (महा०, रघु०)

तीरभुक्ति—तिरहुत। (देवीभाग०)

तुंगभद्रा—मैसूर के दक्षिण-पश्चिमी सीमान्त पर कृष्णा की सहायक नदी।
तुण्डीरमण्डल—द्रविड़ देश का एक भाग, 'तोण्डमण्डल' (कोरोमण्डल ?) जिसकी राजधानी काञ्चीपुर थी। (मल्लिकमारुत)
तुरुष्क—पूर्वी तुर्किस्तान। (राज०)
तुषार—यूनानी लेखकों का 'बक्ट्रिया' तथा अरबी लेखकों का 'तुखारिस्तान', जिसमें बल्ख तथा बदख्शां शामिल थे।
तृष्णा—तिस्तानदी। शाल्मलि द्वीप (कालडिया) में 'टाइग्रिस नदी'।
त्रिककुद्, त्रिविष्टप—(तिब्बत)। २ त्रिकूट (सिंहल में भी ?)। ३ जुनर।
त्रि(क)लिंग—तेलंगाना।
त्रिगर्त—जालन्धर—'रावी-व्यास-सतलज' का 'त्रि-दोआब'।
त्रिपदी(ति)—तिरुपति, वेङ्कटगिरि। रामानुज ने यहाँ विश्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी, 'रसगंगाधर' के रचयिता पण्डितराज जगन्नाथ की जन्मभूमि।
त्रिपुरा—किरात देश, तिपारा—जो कामरूप के अन्तर्गत था।
त्रिपुरी—जबलपुर से सात मील पश्चिम में, नर्मदा तट पर, 'तिओर' जहाँ महादेव ने त्रिपुरासुर का वध किया था (लिङ्ग०)। २ कलचुरियों की राजधानी—चेदिनगर। ३ शोणितपुर।
त्रिवेणी—(प्रयाग में) गंगा-यमुना-सरस्वती का, तथा पूर्व की ओर गण्डकी देविका-ब्रह्मपुत्र—का 'सङ्गम-तीर्थ'। (बंगाल में 'मुक्त' त्रिवेणी, इलाहाबाद में 'युक्त'-त्रिवेणी)
त्रिशिरपल्ली—'त्रिचनापल्ली', जहाँ रावण का सेनापति रहा करता था।
त्र्यम्बक—नासिक से २० मील पर, प्रसिद्ध गोदावरी-तीर्थ।
दक्षिण-गंगा—गोदावरी अथवा कावेरी अथवा नर्मदा अथवा तुङ्गभद्रा।
दक्षिणगिरि—दशार्ण (कालिदास), जिसकी राजधानी 'चेतिय' थी, भूपाल राज्य।
दक्षिण-मथुरा—मदुरा अथवा मीनाक्षी, पाण्ड्यों की प्राचीन राजधानी।
दक्षिणापथ—दाक्षिणात्य जनपद, अर्थात् 'विन्ध्य के दक्षिण का भारत'।
दण्डकारण्य—विन्ध्य तथा शिवालय के मध्य का 'महाकान्तार' अथवा 'महाराष्ट्र', जो जनस्थान के पश्चिम में था। (भवभूति)
दर्दुर—(मद्रास में) नीलगिरि पर्वतमाला।
दर्भवती—(गुजरात में) दभोइ।
दशपुर—(मालवा में) मन्दसौर (मन्दशपुर) अर्थात् दासौर।
दशार्ण—'पूर्वी मालवा' देश। (दक्षिणगिरि) जिसकी राजधानी (अशोक के समय में) 'चैत्यगिरि' थी।
दारोरक—मालवा। (त्रिकाण्ड०)
दुर्जयलिंग—दार्जिलिंग।
दुर्वासाश्रम—भागलपुर से २५ मील की दूरी पर; 'कल्हगाम' के निकट, 'पत्थर पहाड़' पर दुर्वासा ऋषि का आश्रम।
दृषद्वती—अम्बाला और सरहिन्द के मध्य की नदी, घग्गर।
देवगिरि—निजाम राज्य में, दौलताबाद। ३ महाराष्ट्र (देवराष्ट्र ?) में। शिवालय। २. अरावली की एक शाखा। (मेघदूत)
देवपत्तन—प्रभास = सारनाथ।
देवपुर—मध्यभारत में, महानदी तथा पैरी के संगम पर, राजिम।
देवराष्ट्र, महाराष्ट्र (?)—समुद्रगुप्त की दक्षिण विजय के समय इसका राजा कुबेर था।

नि(नं)जना (रा)—फल्गु नदी (अश्वघोष), जिसके तट पर भगवान् बुद्ध को बोध प्राप्त हुआ था।

पचकेदार—गढ़वाल की पर्वतमाला पर केदारनाथ, तुङ्गनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमेश्वर, कल्पेश्वर नाम क (महादेव के अङ्ग के द्योतक) पाँच शृङ्ग। (बदरीविशाल०)

पञ्चगौड—बंगाल के प्राचीन विभाग—पुण्ड्र, राढ, मगध, ताम्रलिप्ति, वारेन्द्र। (राजत०)

पचग्राम—दे० पाणिप्रस्थ।

पचतीर्थ—हरिद्वार की पश्चिमी धारा में (सप्त, सीता, अमृत, राम, सूर्य) कुण्ड। (स्कन्द०)

पचद्रविड—द्राविड कर्णाट गुजरात महाराष्ट्र, आन्ध्र—दक्षिण के जिस विभाग का आधार, भूगोल नहीं, ब्राह्मणों का 'अन्तर्जातीय भेद' है।

पचनद—पंजाब। कुरुक्षेत्र में एक तीर्थस्थान। कृष्णा, वेत, तुङ्ग, भद्रा, कोन (नदियों का) 'दाक्षिणी' पंचाल।

पचप्रयाग—भिन्न संगमों पर अवस्थित देव, कर्ण, रुद्र, नन्द तथा विष्णु—'प्रयाग' तीर्थ।

पचबदरी—बदरीनाथ, वृद्धबदरी, भविष्यबदरी, आदिबदरी, पाण्डुकेश्वर आदि।

पञ्चवटी—नासिक्य (नासिक), जहाँ रावण ने सीता का अपहरण किया था। यहीं शूर्पणखा तथा मारीच के काण्ड हुए थे।

पचाल—रोहिलखण्ड, जो पहले गंगा की धारा द्वारा दक्षिण तथा उत्तर पचालों में विभक्त था। उत्तर पचाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी, दक्षिण (जहाँ की द्रौपदी थी) की काम्पिल्य।

पद्मक्षेत्र—उड़ीसा में, 'कोणार्क' नाम से प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर।

पद्मपुर, पद्मावती—भवभूति की जन्म तथा दीक्षाभूमि, आधु० पद्मपवाया (विजयनगर = विद्यानगर)। (उत्तरचरित)

पम्पा—किष्किन्धा में, तुङ्गभद्रा की एक धारा। यहाँ पर, ऋष्यमूक के चरणों में 'पम्पा' सरोवर भी है।

पयस्विनी—त्रावनकोर में, पापनाशिनी नदी।

परुष्णी—इरावती (पंजाब की रावी) नदी।

पर्णाशा—राजपूताना में, चम्बल की एक धारा, बनास।

पल्कट—पल्घाट दशनपुर।

पलाशिनी—कपिशा, सुवर्णरेखा।

पल्लव—दक्षिण में, कोरोमण्डल से सीमित देश—राज० काञ्ची।

पवमान—पारियात्र की, या हिन्दूकुश की, एक पर्वतमाला।

पशुपतिनाथ—(नेपाल) मृगस्थली में, महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर।

पश्चिम सागर—अरब सागर।

(अ?) पह्ल(न)व—प्राचीन पार्थ (फारस) राज्य का 'मद' प्रदेश। यहीं की 'पह्लवी' लिपि में ज़ेन्द 'अवस्ता' को सर्वप्रथम लिपिबद्ध किया गया था। पह्लव देश कभी (अरबी?) घोड़ों के लिए भी विख्यात था।

पाटलिपुत्र—पटना, जिसका मूल निर्माण अजातशत्रु (४८० ई० पू०) ने किया था। मगध की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) का त्याग कर, पाटलिपुत्र को नयी राजधानी उदयाश्व ने बनाया था।

पाठेय्य—बुद्धयुग में 'पश्चिमी' भारत—जिसमें कुरु, पंचाल, अवन्ती, गान्धार, कम्बोज, शूरसेन आदि सम्मिलित थे। (महावग्ग)

पाणिप्रस्थ—पानीपत। पाणि, शाण, इन्द्र, तिल, मर्ग—ये पाँच 'प्रस्थ' (ग्राम) लेकर भी

युधिष्ठिर सन्तुष्ट था, किन्तु दुर्योधन न माना। इन 'पाँच ग्रामों' के नाम महाभारत ने तथा वेणीसंहार में कुछ भिन्न हैं।

पाण्डु (पाण्ड्य)—दक्षिण के अधु० तिन्नेवेल्ली तथा मदुरा डिवीजन—जो समय-समय पर अपनी राजधानी—उरैपुर>मदुरा>कोल्कई—बदलते रहे। यहाँ के राजा पुरु ने २६ ई० पू० में अपने दूत रोम भेजे थे।

पाताल—(रामायण में) अम्मन्दवती (अमू) के उत्तर में और वल्ख के द० पू० अश्मक = 'औक्सियाना' देश।

पापनाशिनी—पयस्विनी।

पारमफुत्र—मिश्र। (अर्थशास्त्र)

पारसीक, पारस्य—फ़ारस। (रघु०, विष्णु०)

पारस्कर—सिन्ध में 'थल पारकर'। (पाणिनि)

पारिया(पा)त्र—विन्ध्य की पश्चिमी शाखा, जो कभी आर्यावर्त्त की दक्षिणी सीमा थी। (महाभाष्य)

पावनी—(कुरुक्षेत्र में घग्घरा = दृषद्वती) घग्घर नदी, जो पञ्जाब के हिन्दी पञ्जाबी जनपदों की प्राकृतिक 'नाप' है।

पिनाकिनी—(मद्रास में) नन्दिदुर्ग से उद्गत, 'पेन र' नदी।

पिष्टपुर—गोदावरी जि० में, 'पिठापुर'। (हरिषेणप्रशस्ति)

पुण्ड्रवर्धन—पंचगौड (बंगाल) में, गंगा तथा हेमाद्रिकूट का 'मध्यदेश'।

पुण्यपत्तन—पुणे, पूना, पुनक।

पुरुषपुर—गान्धार देश की (एक) राजधानी, पेशावर। (विष्० स्त्रीराज्य)

पुरुषोत्तमक्षेत्र—(उड़ीसा में) पुरी।

पुलिन्द—भारत की पूर्वीय (कामरूप) तथा पश्चिमीय (बुन्देलखण्ड, सागर) सीमाओं पर कभी पुलिन्दों तथा शबरों के घर थे।

पुष्कर—अजमेर से ६ मील दूर, झील 'पोखरा'। महाभारत के समय में यहाँ उत्सवसंकेतों की सात (म्लेच्छ ?) जातियाँ रहा करती थीं।

पुष्करद्वीप—मध्य-एशिया में, 'बोखारा'।

पुष्करावती—प्राचीन गान्धार की राजधानी—जिसे भरत ने अपने पुत्र के नाम से बसाया था और जिस (अष्टनगर) पर सिकन्दर का पहला आक्रमण हुआ था।

पुष्करावती नगर—रंगून। (दीपवंश)

पुष्पपुर—कुसुमपुर, पटना।

पूर्वगंगा—नर्मदा।

पृथूदक—करनाल में, सरस्वती नदी पर, 'पेहोवा'—जहाँ प्रसिद्ध 'ब्रह्मयोनितीर्थ' अवस्थित है।

पृष्ठचम्पा—बिहार।

पौरव—जेहलम के पूर्व में, पौरवों का राज्य—जहाँ सिकन्दर पुरु की 'अग्निपरीक्षा' पर चकित रह गया था।

प्रतिष्ठान—उत्पलारण्य (बिठूर), जहाँ के (राजा उत्तानपाद के पुत्र) ध्रुव ने मथुरा में घोर तपस्या की थी। पालिग्रन्थों में गोदावरी के तट पर अश(श्म)क (महाराष्ट्र) की (राजधानी) का उल्लेख 'ब्रह्मपुरी' प्रतिष्ठान नाम से हुआ है। इलाहाबाद के सम्मुख गंगा पार झूँसी को आज भी 'प्रतिष्ठानपुर' कहते हैं। जिला गुरदासपुर (औदुम्बर) की राजधानी पठानकोट का भी पुराना नाम 'प्रतिष्ठान (कोट ?)' ही था।

प्रत्यग्रह—अहिच्छत्र।

प्रभास—काठियावाड (जूनागढ) में सोमनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ, प्राचीन नाम देवपत्तन। यहीं भगवान् कृष्ण का प्राणोत्सर्ग हुआ था।

प्रयाग—प्राचीन कोसल का वह भाग, जिसकी राजधानी प्रतिष्ठान (झूँसी) थी। इतिहास में पुरूरवा (दुष्यन्त), नहुष, ययाति, पुरु, भरत का सम्पर्क इधर से ही अधिक रहा है, आधुनिक इलाहाबाद।

प्रवरपुर—प्रवरसेन द्वितीय द्वारा प्रतिष्ठापित (काश्मीर की राजधानी) श्रीनगर।

प्रस्थल—फिरोज़पुर पटियाला सिरसा के अन्तर्गत प्रदेश। (मार्क०)

प्रस्रवण—गोदावरी के तट पर, जनस्थान में शोमायमान (औरंगाबाद) की पहाड़ियाँ, जिन्हें रामायण में माल्यवान् (गिरि) भी कहा गया है।

प्रह्लादपुरी—मुलतान।

प्राग्ज्योतिष—प्राचीन 'कामरूप' की राजधानी-कामाख्या, गोहाटी।

प्राच्य—(सरस्वती के) दक्षिण पूर्व का भारतवर्ष।

फल्गु—निरंजना नदी-भगवान् बुद्ध के नव जन्म एवं बोध की भूमि। (अश्वमेध)

बंग—'बंगाल', किन्तु दे० पचगौड।

बदरी—बदरिकाश्रम, बदरीनाथ। दे० पंचबदरी।

बालुकेश्वर—(बम्बई के निकट) 'मालाबार हिल'।

बालोक्ष—बलोचिस्तान। (अवदानकल्पलता)

बिन्दुसर—गंगोत्तरी के दो मील दक्षिण की ओर, 'रुद्र हिमालय' पर प्रसिद्ध सरोवर, जो भगीरथ की तपोभूमि था।

बेस्सनगर—वैश्यनगर (?) भूपाल में, साँची के निकट, भीलसा से तीन मील पर, चैत्यनगर, जो प्राचीन दशार्ण की राजधानी था। दे० चैत्यगिरि।

ब्रह्मकुण्ड—ब्रह्मपुत्र का उद्गम स्रोत।

ब्रह्मदेश—बर्मा।

ब्रह्मनाल—काशी में, 'मणिकर्णिका' कुण्ड।

ब्रह्मर्षिदेश—ब्रह्मावर्त तथा यमुना के अन्तर्गत देश—जिसमें कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पंचाल तथा शूरसेन समाविष्ट थे। (मनुसं०)

ब्रह्मसर—रामह्रद।

ब्रह्मावर्त्त—सरस्वती तथा दृषद्वती का 'मध्यप्रदेश', जो आर्यों का प्रथम 'उपनिवेश' था।

भद्रा—यारकंद, तथा यारकंद की जरफ्शां नदी।

भर (भृगु) कच्छ ?—भड़ोच, जहाँ वामन ने राजा बली का अभिमान भंग किया था।

भारतवर्ष—भरत के नाम से 'भारतवर्ष' कहलाने से पूर्व हमारे देश का नाम 'हिमाह्व' अथवा 'हैमवत' था। अर्थात् मूल अर्थों में भारतवर्ष 'उत्तर भारत' का नाम था। मार्कण्डेय तथा विष्णु पुराण के अनुसार भारतवर्ष की सीमाएँ थीं—उत्तर में हिमालय, दक्षिण में समुद्र, पश्चिम में यवन तथा पूर्व में किरात। दक्षिणापथ में प्रथम प्रवेश अगस्त्य ने, पश्चात् अशोक के धर्म ने तथा समुद्रगुप्त की बाहुओं ने किया था।

भार्गव—पश्चिमी आसाम। (ब्रह्माण्ड०)

भास्करक्षेत्र—प्रयाग। (प्रायश्चित्ततत्त्व)

भीम(ा)—विदर्भ (देश एवं नदी)।

भोज (पाल)—मध्यभारत में, राजा भोज के बनाये (झीलों के) पालों (बाँधों) के नाम पर 'भूपाल' (देश)।

भोटांग—काश्मीर-कामरूप के अन्तर्गत देश, भूटान, तिब्बत। (तारातन्त्र)।

भ्रातृदर्शन—(अवध में) नन्दिग्राम, भादरसा—जहाँ भरत ने राम के वियोग में १४ वर्ष काटे थे। (अर्वाचनार)

मगध—दक्षिण बिहार, जिसकी राजधानी गिरिव्रज थी। अजातशत्रु ने वैशाली के वृज्जियों की उन्नति पर रोक रखने के लिए 'पाटलिग्राम' को नई राजधानी में परिणत कर दिया था। यहीं पर भीम ने जरासन्ध का वध किया था।

मणिकर्णिका—कुल्लू की घाटी में व्यास की एक धारा, जिसके निकट कुण्डों के गरम पानी में सब्जियाँ आग के बिना उबाली जा सकती हैं।

मणितट—(आसाम में) मणिपुर। (मघ०)

मत्स्य—जयपुर का प्राचीन क्षेत्र, जिसमें आधु० अलवर तथा भरतपुर शामिल थे। पाण्डवों का अज्ञातवास इधर ही विराट के महलों में गुजरा था।

मद्र—रावी-चनाब का मध्यदेश, जिसकी राजधानी शाकल (स्यालकोट) थी। शल्य तथा अश्वपति (सावित्री का पिता) यहीं के राजा रहे। 'माद्री' कन्याएँ अपने रूप-लावण्य के लिए प्रसिद्ध थीं।

मधुपुरी—मधुरा (मथुरा)। इसे शत्रुघ्न ने बसाया था। मधु (राक्षस) की नगरी सम्भवतः आजकल की 'महोली' है (जहाँ 'मधुवन' तीर्थ भी है)।

मध्यदेश—हिमगिरि, विन्ध्य, सरस्वती और प्रयाग के अन्तर्गत देश (जिसमें अन्तर्वेद सम्मिलित था), बौद्ध ग्रन्थों का 'मज्झिमदेश'। इसमें कुरु, पचाल, मत्स्य, यौधेय, कुन्ती, शूरसेन आदि का समावेश होता था। (मनु०)

मध्यमराष्ट्र—दक्षिणकोसल, महाकोसल। (अर्थशास्त्र)

मन्दाकिनी—गढ़वाल में, केदारपति से उद्गत, कालीगंगा। (मन्दाग्नि)

मन्दारगिरि—भागलपुर की एक पहाड़ी, जो 'समुद्रमन्थन' में मथन-दण्ड के रूप में प्रयुक्त हुई थी।

मरु(-धन्व,-स्थल)—राजपूताना, मारवाड़।

मरुद्वृधा—मरुवर्दवाँ, असिक्नी (चनाब की एक धारा, 'आंस') के पश्चिम में।

मयूर—हरिद्वार के निकट, मायापुरी।

मलयगिरि—पश्चिमी घाट का दक्षिण भाग, 'त्रावनकोर हिल्ज़'।

मलयालम्—मलार, मालबार—जिसके अन्तर्गत कोचीन-त्रावनकोर का सारा प्रदेश था। (राजावली)।

मल्लदेश—मालव-देश, मुलतान।

मल्लराष्ट्र—महाराष्ट्र।

महती, महिता—(मालवा में) माही नदी।

महाकोसल—दक्षिणकोसल।

महाकौशिक—नेपाल में सात 'कोसियों' से निर्मित एक और 'सप्तसिन्धु' देश, जहाँ 'ताम्रोर-अरुण-सुन' की 'त्रिवेणी' भी है।

महाराष्ट्र—कृष्णा-गोदावरी के इस 'मध्यदेश' को पहले 'दक्खिन' भी कहा करते थे, अश्मक भी। अशोक ने यहाँ महाधर्मरक्षित को भेजा था। 'आन्ध्रभृत्य, क्षत्रप, राष्ट्रकूट, चालुक्य-जिनके ही राजवंशों के उत्थान पतन के अनन्तर, इतिहास में, मराठों का युग आता है।

महावन—ब्रज, गोकुल।

महिष(मण्डल)—अनूपदेश अथवा हैहय राज्य (आधु० मैसूर से कुछ अधिक), राज० माहिष्मती। यहीं शंकर तथा मण्डन मिश्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था। (दायभाग)

महेन्द्र—उड़ीसा से मदुरा तक व्याप्त पर्वतशृङ्खला।

महोत्सव—बुन्देलखण्ड का 'महोबा', जिसके नाम पर कभी-कभी सारे के सारे बुन्देलखण्ड को भी महोत्सव' कह देते थे। (प्रबोधचन्द्रोदय)

महोदधि—बंगाल की खाड़ी। (रघु०)

महोदय—कान्यकुब्ज, गाज़ीपुर।

मातङ्ग—कर्मरूप में, दक्षिण पूर्व की ओर, हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध एक 'पट्टी'।

मानस—पश्चिमी तिब्बत (हूणदेश) में कैलाश के चरणों में प्रसिद्ध पुण्य स्रोत।

माया पुरा—मयूर। हरिद्वार-कनखल में मायापुरी की त्रिपुरी।

मारकण्ड—समरकन्द।

मारव—मारवाड़, मरुस्थल।

मार्तिकावत—अलवर (शाल्व)।

माल(*)—(विदेह के पूर्व तथा मगध के उत्तर पश्चिम में) एक 'श्यामल' देश।

मालिनी—हस्तिनापुर के निकट की 'मन्दाकिनी', जिस पर कण्व ऋषि का आश्रम था।

माल्यवत्—तुङ्गभद्रा पर प्रस्रवण गिरि।

मित्रवन—मुलतान।

मिथिला—जनकपुर, विदेह। 'नवद्वीप' विश्वविद्यालय की स्थापना ने मिथिला एवं विक्रमशिला को स्मृतिशेष कर दिया था।

मीनाक्षी—मदुरा।

मुक्तवेणी—इलाहाबाद की 'युक्तवेणी' के विपरीत, हुगली पर त्रिवेणी का 'विप्रलम्भ' संगम।

मुण्डा—छोटा नागपुर में, जि० राँची।

मुद्ग(ल)गिरि—(बिहार में) मुंगेर, जहाँ कभी मुद्गल ऋषि का आश्रम था और जहाँ बुद्ध के महान् शिष्य मौद्गल्यायन ने 'श्रुतविंशतिकोटि' श्रेष्ठी को धर्म में दीक्षित किया था। (भारतब्राह्मण)

मुरला—आसाम की एक धारा। नर्मदा। केरल = मालाबार।

मू(मौ)जवत्—काश्मीर में एक पर्वत, जिस पर सोम बहुत था।

मूलस्थान—माल्यवस्थान (?), मुल्तान। प्रसिद्ध ऐतिहासिक पूछे के नाम-'व्युत्पत्ति' के आधार पर इसे 'सृष्टि का उद्गम' माना है। पौराणिक गाथाओं के अनुसार यहीं नृसिंह के द्वारा हिरण्यकशिपु का वध हुआ था, सो, इसका एक नाम प्रह्लादपुरी (अर्थात् 'होली' का मूलस्थान) भी है। हर्षचरित के अनुसार माल्वदेश, रामायण के अनुसार मल्लदेश भी। यूनानियों ने इसी को हिरण्यपुरी (हिरण्यकशिपु की पुरी, होला = हिरण्य = Aura ?) कहा है।

मूषिक—सिन्ध का ऊपर का भाग, सम्भ० 'अलोर'।

मृ(मि)गदाव—सारनाथ, 'धम्म-चक्कपवत्तन' का 'मूला विहार'।

मृत्तिकावती—पर्णाशा (बनास) पर भोजराजाओं का एक देश, मार्त्त = मारवाड़।

मेकल—विन्ध्य का पूर्वांश, अमरकण्टक शृङ्खला, 'मेकलकन्यका' (नर्मदा) का उद्भव।

मेघना (द)—पू० बङ्गाल की एक नदी। आसाम में, 'समुद्रोमुख' ब्रह्मपुत्र।

मेदपाट—मेवाड़।

मेहत्नु—क्रुमु (काबुल) की एक धारा।

मैनाक—'शिवालिक' शृङ्खला।

मोक्षदा—हरिद्वार, मथुरा, काशी, काञ्ची आदि (सात) 'मोक्षदा' पुरी मानी गई हैं।

मौलि—'रोहतास हिल'।

मौलिस्था(स्था ?)न—माल्व , मल्ल , मूल-स्थान, मुलतान।

यज्ञपुर—उड़ीसा मे वैतरणी नदी पर, **ययातिपुर**—जो छठी-दसवीं सदियों में केसरी राजवश की राजधानी था।

यव—'जावा' द्वीप, जिसे गुजरात के एक राजकुमार ने सातवीं सदी के आरम्भ मे बसाया था। (ब्रह्माण्ड०)

यवननगर, जूर्णनगर—गुजरात का जूनागढ। वक्षु नदी का क्षेत्र, **अश्मक** 'आसियाना', जहाँ (५वीं सदी ई० मे) हूणों की एक उपजाति 'ज्वाँ-ज्वाँ' (यवनी) रहा करती थी। (रघु०)

युक्तवेणी—बंगाल की 'विप्रलब्धा' **मुक्तवेणी** के विपरीत, **प्रयाग** की 'सम्भोगिनी' **त्रि-वेणी**।

यौधेय—बहावलपुर का जोहिय वाड़, जो महाभारत तथा गुप्तयुग मे यौधेयों का सीमान्त था। बाइबिल मे इन्हें 'हुर' तथा १६वीं सदी के यात्रावृत्तों में 'आयुध' कहा गया है।

रत्नद्वीप—सिंहल।

रत्नपुर—बिलासपुर के १५ मील उत्तर, (मयूरध्वज हैहयों की) दक्षिणकोसल की राजधानी।

रथस्था—अवध की राप्ती (**रेवती**) नदी।

रन्तिपुर—गोमती तट पर 'रिन्ताम्बूर'। **गोमती (चर्मण्वती)** के तट पर रन्तिदेव का दैनिक 'गोमहत्त्व साव' (यज्ञ) होता था।

रसा—*अवस्ता की 'रन्हा' नदी, अथवा यूनानियों की 'जक्सार्टिस'—जो शकों नागों हूणों का* मूल-आवास थी।

रसातल—कैस्पियन सागर के उत्तर की ओर, **हूण राज्य**, पश्चिमी तातार। हूणों की विभिन्न जातियों के आधार पर रसातल के सात लोक थे—अतल, नितल, वितल, तलातल, महातल, सुतल, पाताल (?)।

राजगृह—मगध की प्राचीन राजधानी, जिसे (गिरिव्रज के उत्तर मे) बिम्बिसार ने बसाया था।

राजपुरी—(काश्मीर मे) पुछ के द० पू०, 'राजौरी'।

राढ़—'**पंचगौड़**' का पश्चिमी प्रदेश।

रामगिरि—कालिदास के यक्ष की तथा रामायण के शम्बूक की तपोभूमि—मध्यभारत मे, 'रामटेक' पर्वतशृङ्खला।

रामणीयक—आर्मीनिया। (महा०)

रामदासपुर—अमृतसर—गुरु नानक का, रामदास द्वारा प्रस्तुत, 'शान्ति निकेतन'।

रामह्रद—(कुरुक्षेत्र मे) '**ब्रह्मसर**' तीर्थ, जो राजा कुरु की तपोभूमि, पुरूरवा उर्वशी की मिलन-*भूमि तथा वृत्र की मृत्युभूमि था। यहीं 'प्रतिज्ञा'-भंग कर कृष्ण ने भीष्म के विरुद्ध 'सुदर्शन चक्र'* उठाया था—**चक्रतीर्थ**।

रामेश्वरम्—*सिंहल तथा भारत के मध्य,* **सेतुबन्ध**।

रावणह्रद—कैलास के निकट, 'अनवतप्त' सरोवर, रावण की तपोभूमि।

रेवती—अचिरावती (राप्ती)।

रेवा—नर्मदा—

रैवत(क)—*जैन सन्त नेमिनाथ की जन्मभूमि, गुजरात का गिरिनार पर्वत।*

रोह (हि)—अफगानिस्तान।

रोहितक—बंगाल के शाहाबाद जिले में विन्ध्य की एक शाखा, **रोहिताश्म(श्व)**। पंजाब के 'रोहतक' का संस्थापक रोहिताश्व (हरिश्चन्द्र का पुत्र) नहीं था—अपितु यह नाम ही स्वयं '**बहु-धान्यक**' का पर्याय एवं अपभ्रंश है।

लंका—विन्ध्याचल, जो कि भारत की रीढ़ (तु० पंजाबी मे 'लक') है। रावण की 'लङ्का' (गोंडवाना ?) कहीं विन्ध्य शिखर पर थी—जहाँ के गोंड आजकल भी अपने को रावण के वंशज बताते हैं, जहाँ के ओरांवा आज भी अपने को वानरों के वंशज बतलाते हैं, जहाँ हर टीले (शृङ्ग) को 'लंका' तथा हर नदी को 'गोदा' कहते हैं। स्वयं रामायण के अनुसार अयोध्या

किंपि ध्या-लका २०० मील का अन्तर था। वराहमिहिर के अनुसार उज्जयिनी और लका एक ही अक्षांश पर स्थित थीं, पुराणों के अनुसार भी लका तथा सिंहल दो भिन्न भिन्न द्वीप हैं। साहश्य का प्रथम 'आरोप', सभवत, धर्मकीर्त्ति मे मिलता है, और आज तो 'सेतुबन्ध' आदि कितने ही 'तीर्थों' ने इतिहास की स्पष्टता एव परम्परा को सर्वथा धूमिल कर दिया है।

ल(न)वपुर—लवकोट, लोभपुर, लोहोर (राजत०), लाहौर।

ला(ना)ट (देश)—दक्षिण गुजरात (माही–ताप्ती का दोआब)।

ली(नी) राजल (न)—बुद्ध तथा सुजाता की तपोभूमि-पुनर्भवभूमि—निरंजना(रा), फल्गु। (अश्वघोष)

लुम्बि(म्बि)नी—नेपाल की तराई मे, 'रुम्मिनदेई'—भगवान् बुद्ध का जन्म तपोवन, जिसका स्थान बौद्धों के ८ चैत्यों मे प्रथम है।

लोध्रकानन—कुमाऊँ मे, गर्ग ऋषि का आश्रम, 'लोधमूना'। (रघु०)

लौहित्य—ब्रह्मपुत्र नदी, जहाँ परशुराम ने मातृहत्या के पाप को धोया था, कालिदास के दिनों में प्राग्ज्योतिष की सीमा।

वक्षु—वंक्षु, रक्षु, चक्षु—औक्सस् अर्थात् आमू दरिया।

वश—वत्स (देश)।

वटपद्रपुर—गायकवाड की राजधानी, बडोदा।

वत्स—इलाहाबाद के पश्चिम मे उदयन का राज्य, राज० कौशाम्बी।

वन—ब्रजमण्डल के १२ वनों—वृन्दा, मधु, कुमुद आदि—का सर्वनाम, वामनपुराण के अनुसार कुरुक्षेत्र के ७ वनों का।

वरदा—मध्यभारत में 'वर्धा' नदी।

वराहक्षेत्र—काश्मीर मे, जेहलम के तट पर, 'वारामूला'।

वर्धमान (कोटि)—काशी तथा प्रयाग का मध्यवर्ती, अस्थिक (ग्राम), जहाँ महावीर ने 'कैवल्य' सिद्धि पाकर प्रथम 'वर्षा' बिताई थी।

वर्ष—वराहपुराण में वर्णित—नील, निषध, श्वेत, हेम, हिमवत, शृङ्गवत—६ पर्वत।

वलभि—वलभि युग में सुराष्ट्र की राजधानी।

वशिष्ठाश्रम—अवध मे अर्बुद (आबू) पर्वत पर, तथैव कामरूप में, वशिष्ठ का तपोवन।

वसुधारा—अलकनन्दा।

वाकाटक—हैदराबाद-दक्खिन मे, कैल्किल यवनों का—तथा अनन्तर (वाकाटक) विन्ध्य शक्ति द्वारा सस्थापित गुप्तकालीन—राज्य।

वातापिपुर—बीजापुर में, 'बादामी'–जो छठी सदी में महाराष्ट्र राज पुलकेशी की राजधानी था।

वामनस्थली—जूनागढ के निकट, वनथाली। राजस्थान की 'वनस्थली' (?)।

वाराणसी—'वरणा' तथा 'अस्सी' के सगम पर अवस्थित होने से, काशी का यथार्थ नाम।

वाल्मीकि-आश्रम—कानपुर से १४ मील दूर, बिठूर (उत्पलारण्य)—जहाँ भगवान् राम के यज्ञिय अश्व को लव कुश ने बाँध लिया था।

वाशिष्ठी—गोमती नदी, चर्मण्वती (?)।

वाहीक—व्यास तथा सतलज का दोआब (केकय के उत्तर में), पजाब।

वाह्लीक—श(ा)कद्वीप, बैक्ट्रिया की राजधानी, बल्ख। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने, शकाधिपति को बल्ख तक खदेड़ कर, मानो वराह-अवतार द्वारा पृथ्वी का उद्धार करते हुए ध्रुवस्वामिनी तथा गुप्तसाम्राज्य की 'लाज रखली' थी। (मेहरौली अभिलेख, मुद्राराक्षस, रघुवंश)

विक्रमपुर—ढाका में, 'वल्लालपुरी'—आदिशूर की तथा सेन राजाओं की राजधानी।

विक्रमशिला—आठवीं सदी के राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित बौद्ध विहार, जिसका महत्त्व, आखिर, 'नवद्वीप विद्यापीठ' की स्थापना के अनन्तर ही कुछ घटा था।
विजयनगर—बंगाल के राजशाही डिवीजन में, सेन राजाओं की राजधानी। **विद्यानगर।**
वितस्ता—वि-तमसा (?), जेहलम (नदी)।
विदिशा—मालवा में बेतवा (**वेत्रवती**) नदी पर भील्सा, जो प्राचीन **दशार्ण** की राजधानी थी, विशाला। (मेघ०)
विदेह—दरभंगा में जनकपुरी, **तीरभुक्ति** (तिरहुत), **मिथिला, जनस्थान।**
विद्यानगर—तुङ्गभद्रा पर विजयनगर के सङ्गम राजाओं की राजधानी, **विजयनगर।**
विनशन—कुरुक्षेत्र (सरहिन्द, पटियाला) में जहाँ सरस्वती लुप्त हो जाती है, वह तीर्थ।
विनाशिनी—गुजरात में बनास नदी।
विनीतपुर—उड़ीसा में, कटक।
विन्ध्यपाद—ताप्ती आदि का उद्गम, 'सतपुड़ा' पर्वतश्रेणी।
विपाशा—व्यास नदी।
विराटनगर—मत्स्यदेश, जयपुर—पाण्डवों का अज्ञातवासगृह।
विशाला—अवन्ती की राजधानी, उज्जैन (उज्जयिनी)। बौद्ध युग में वैशाली की राजधानी, बसाढ़।
विशाखा (पत्तन)—विजगापट्टम्।
विश्वामित्राश्रम—जहाँ ताटका का वध हुआ था, बिहार के शाहाबाद जिले में बक्सर, **वेदगर्भपुरी।**
वीतभयपत्तन—प्राचीन '**वीचिग्राम**', अल्लाहाबाद से ११ मील दक्षिण पश्चिम, 'विठा'—जहाँ कई ऐतिहासिक मुद्राएँ मिली हैं।
वृद्धकाशी—मद्रास का तीर्थ, 'पुदुवेलिगोपुरम्'।
वेंकटगिरि—मद्रास में, तिरुपति के निकट, '**तिरुमलई**' पर्वत।
वेंगी—गोदा-कृष्णा के अन्तर्गत, आन्ध्रों की राजधानी।
वेणी—कृष्णा नदी।
वेत्रवती—बेतवा नदी।
वेदारण्य—तंजोर में, अगस्त्य का तपोवन।
वेदगर्भपुरी—बक्सर, 'जहाँ विश्वामित्र को 'गायत्री' ने आलोकित किया था।'
वेन—मध्यभारतीय गंगा, गोदावरी की एक धारा।
वैकुण्ठ—ताम्रलिप्ती पर एक तीर्थ।
वैतरणी—परशुराम के भगीरथ प्रयत्न से 'अवतारित', उड़ीसा की गंगा—जहाँ कभी **ययाति-पुर** बसा था।
वैशाली—मगध विदेह के मध्य का प्राचीन साम्राज्य, जो आजकल मुजफ्फरपुर जिले का दक्षिणी भाग ठहरता है। बौद्ध युग में यह वृज्जियों-लिच्छवियों की राजधानी थी।
व्याघ्रसरोवर—बक्सर, **विश्वामित्राश्रम।**
शंकरतीर्थ—नेपाल में, जहाँ शिव ने 'पार्वती विजय' के लिए तप किया था।
शंकराचार्य—काश्मीर में, 'तख्ते सुलेमान', सन्धिमान गिरि।
शंकास्य—**कान्यकुब्ज।**
शकस्थान—सीस्तान, शकों का मूल देश जहाँ से वे मध्य-एशिया की ओर बढ़े।
शतद्रु—सतलज।

शम्बूकाश्रम—मध्यभारत में, **रामगिरि** (रामटेक)। (रामा०)
शर्यणावत्—रामह्रद, ब्रह्मसरोवर।
शाकंभरि—पश्चिमी राजपूताना में, 'साभर'—जहाँ शर्मिष्ठा ने देवयानी को 'देवोदानी' कूप में ढकेल दिया था।
शाकद्वीप—मध्यएशिया में 'शक-भूमि', 'तारतरी'—बोखारा तथा समरकन्द के मध्यगत 'साइथिया' अथवा 'सोग्दियाना'।
शाकल—मद्र देश की राजधानी, स्यालकोट।
शान्ति—साँची। (महा०)
शार्ङ्गनाथ—सारनाथ।
शालातुर—प्राचीन गान्धार में, पाणिनि की जन्मभूमि।
शाल्मली (द्वीप)—काल्दया। मैसोपोटामिया। सीरिया। (ब्रह्माण्ड०)
शाल्व—कुरुक्षेत्र के निकट सत्यवान् के पिता द्युमत्सेन का राज्य, जिसमें जोधपुर, जयपुर, अलवर शामिल थे—**मार्तिकावत**। **शाल्वपुर** = **सौभनगर** (अलवर) उसकी राजधानी थी।
शिवालय—एलोरा।
शिरोवन—प्राचीन **चेर** (केरल) की राजधानी, तञ्चल्ड'।
शुक्तिमती—(उड़ीसा में) **सुवर्णरेखा** नदी।
शूद्रक—सिन्ध तथा सतलज के मध्यगत देश, राज० उच्च।
शूरसेन—कृष्ण के बाबा क नाम से विख्यात राज्य, राज० **मथुरा**।
शूर्पारक—**सुपारा**, सूरत।
शृङ्गगिरि—शृङ्गेरी, दक्षिण में जहाँ वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए शंकराचार्य ने अपने चार मठों में एक स्थापित किया था।
शेषाद्रि—त्रिपदी, तिरुपति, तिरुमलई।
शैवाल—**शिवालय**, एलोरा। रामटेक। (**रामगिरि**)
शोण—गोंडवाना में **अमरकण्टक** से उद्गत नदी, जो मगध की पश्चिमी (प्राकृतिक) सीमा थी।
शोणप्रस्थ—सोनीपत।
शोणितपुर—कुमाऊँ में, केदारगगा (**मन्दाकिनी**) के तट पर, एक नगर। आसाम में, आधु० तेजपुर'।
शौरिपुर—नेमिनाथ की जन्मभूमि, **मथुरा**। मध्यदेश की 'शौरसेनी' हमारी (वर्तमान) 'राष्ट्र भाषा' की जननी थी।
श्रवणाश्रम—अवध में, जहाँ दशरथ ने शिकार करते हुए अन्धे माता-पिता के इकलौते बेटे श्रवण को भूल से मार डाला था।
श्रावस्ती—अवध में, गोंडा जिले में, राप्ती नदी के तट पर, आधु० 'सहेत महेत'। बुद्ध-युग में श्रावस्ती गौरव के शिखर पर थी।
श्रीपथ—जयपुर से ९० मील उत्तर में, 'बिआना'—'पथयमपुरी'।
श्रीप(इ)द—सिंहल का 'एडम्स पिक'।
श्रीकण्ठ, कुरुजांगल, महाकान्तार—जिसकी राजधानी बिलासपुर थी।
श्रीक्षेत्र—उड़ीसा में, पुरी।
श्रीनगर—काश्मीर की राजधानी, जिसकी स्थापना ५वीं सदी में प्रवरसेन द्वितीय ने की थी।
श्रीरंगपट्टन—(मैसूर में) आधु० 'सेरिंगपटम्'।
श्रीशैल—कृष्णा के दक्षिण में एक तीर्थ पर्वत।
श्रीस्थानक—(बम्बई में) 'थाना', जो कभी उत्तरी कोङ्कण की राजधानी था।
श्रीहट्ट—सिल्हेत। (योगिनी०)

श्लेष्मातक—नेपाल में, पशुपतिनाथ के उत्तर-पूर्व, उत्तर-गोकर्ण।
षष्ठी—बम्बई से १० मील उत्तर की ओर, सालसेट द्वीप।
संगम (तीर्थ)—रामेश्वरम्।
संध्या—मालवा में, यमुना की धारा, सिन्धु।
सदानीरा—प्राचीन पुण्ड्र की एक नदी, जो 'पार्वती परिणय' के क्षण में शिव के हाथ से छूटे पसीने से बनती थी—करतोया। गण्डकी। राप्ती।
सपादलक्ष—शाकम्भरि।
सप्तकुलाचल—महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, गन्धमादन, विन्ध्य, पारियात्र।
सप्तगंगा—गंगा, कावेरी, गोदावरी, ताम्रपर्णी, सिन्धु, सरयू, नर्मदा।
सप्तगंडकी—गंडकी के 'सप्तमुख'।
सप्तगोदावरी—गोदावरी के 'सप्तमुख'।
सप्तद्वीप—जम्बु, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौञ्च, शाक, पुष्कर।
सप्तमोक्षदापुरी—दे० मोक्षदा।
सप्तर्षि—महाराष्ट्र में सतारा।
सप्तसागर—जम्बुद्वीप (भारत) की 'समुद्रीय' सीमाएँ—लवण, क्षीर, सुरा, घृत, इक्षु, दधि, स्वादु।
सप्तसिन्धु—पंजाब, प्राचीन भारतवर्ष। (उत्तरापथ)
समतट—बंग अर्थात् पूर्वी बंगाल।
समन्तपंचक—कुरुक्षेत्र।
सरयू—(अवध में) घागरा नदी।
सरोवर—ब्रह्माण्डपुराण के मानस आदि १२ तीर्थसर, विशे० नारायणसर।
सह्याद्रि—कावेरी के उत्तर में, पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग (मलयादि)। कावेरी का एक नाम सह्यात्मजा भी है।
सांची—भीलसा के द० पू० में, प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ, शान्ति।
साकेत—अवध, अयोध्या।
सागरसंगम—'गंगामुख' पर कपिलाश्रम, जहाँ सगर के सहस्र पुत्र 'भस्म' हुए थे।
साभ्रमती—साबरमती।
साम्बपुर—मुलतान।
सारस्वत—अजमेर में, पुष्कर सरोवर।
सिंहल—सीलोन। लंका कुछ और थी—'विन्ध्यपाद' में।
सिद्धपुर—कपिल ऋषि की जन्मभूमि, भगीरथ की तपोभूमि—बिन्दुसर।
सिद्धाश्रम—शाहाबाद में, बक्सर—जहाँ विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया था।
सिप्रा—मालवा में, 'क्षिप्रा' नदी—जिस पर उज्जैन बसा था।
सुगन्धा—गोदावरी पर, नासिक।
सुदर्शन—जम्बू द्वीप। काठियावाड़ की प्रसिद्ध ऐतिहासिक झील, जिसका मौर्यकाल में निर्माण तथा, गुप्त युग तक, कितनी ही बार 'उद्धार' हुआ था।
सुदाम(ा)पुरी—गांधी तथा कृष्ण की 'जन्मभूमि', पोरबन्दर। (कीथ)
सुपारग—शूर्पारक, सूरत।
सुब्रह्मण्य—मद्रास में, कुमारस्वामी (तीर्थ)।

सुभद्रा—इरावती नदी।
(सु)मागधी—पटना की शोण नदी, जिस पर कभी राजगृह बसा हुआ था।
सुमनकूट—श्रीप(ा)द।
सुमेरु—गढ़वाल में, बदरीनाथ के निकट, पंचपर्वत (रुद्र हिमा०)—स्वर्णगिरि अथवा हेमकूट नहीं।
सुरथ (अद्रि)—नर्मदा आदि का स्रोत, अमरकण्टक।
सु(सौ)राष्ट्र—सूर्यपुर, सुपारग (सूरत), काठियावाड़ तथा गुजरात का कुछ अंश।
सुवास्तु—गान्धर्वदेश की नदी, स्वात।
सुवर्णभूमि—ब्रह्मदेश (बर्मा)
सुवर्णगिरि—(मैसूर में) मास्की। अशोक के समय में चार 'राज्यपाल' स्थान थे—तक्षशिला, उज्जैन, तोसाली तथा सुवर्णगिरि।
सुवर्णग्राम—(ढाका में) सोनारगाँव।
सुवर्णरेखा—गिरिनार की पलाशिनी। उड़ीसा की कपिशा।
सुह्म—बंग तथा कलिंग के अन्तर्गत देश, राढ़, दे० पंचगौड़।
सूर्यनगर—श्रीनगर।
सूर्यपुर—सूरत। यहीं शंकराचार्य ने अपनी 'वेदान्त भाष्य' रची थी।
सेतुबन्ध—भारत तथा सिंहल के बीच में, श्रीप(ा)द।
सोम पर्वत—अमरकण्टक।
सोमनगर—शाल्वपुर (अलवर)।
सौवीर—सिन्ध तथा मद्र का अन्तर्देश (यौधेय ?)।
स्त्रीराज्य—कुमाऊँ अथवा गढ़वाल का पुराना नाम। महाभारत-युग में यहाँ स्त्रियों का अनुशासन होता था—प्रमीला ने इधर ही अर्जुन से लोहा लिया था। (विप० पुरुषपुर)
स्थाने(ण्वी)श्वर—थानेसर (कुरुक्षेत्र), स्थाणुतीर्थ।
स्रुघ्न—जौनसार जिले में, कालसी।
हंसद्वार—क्रौंचद्वार।
हत्याहरण—अवध में, हरदोई से २८ मील उत्तर-पूर्व, एक तीर्थ—जहाँ भगवान् राम ने (रावण की) ब्रह्महत्या का पाप प्रक्षालन किया था।
हरकेल—बंग, दे० 'पंचगौड़'।
हरक्षेत्र—भुवनेश्वर।
हरिवर्ष—उत्तर कुरु, जिसमें तिब्बत का पश्चिमी भाग शामिल था।
हस्तिनापुर—कुरुओं की प्राचीन राजधानी, गजसाह्वय, किन्तु जनमेजय के दो पीढ़ी बाद, नयी राजधानी कौशाम्बी हो गई थी।
हिरण्यपर्वत—मुदग(ल)गिरि, मुंगेर।
हिरण्यबाहु—शोण नदी।
हृषीकेश—बदरीनाथ तथा हरिद्वार के मध्यस्थित प्रसिद्ध तीर्थ, 'ऋषिकेश'।
हेमकूट—कैलास।
हैमवत—भारतवर्ष।
हैमवती—गंजाम के निकट, महेन्द्र से उद्गत ऋषिकुल्या नदी। इरावती। शतद्रु (सतलुज), जो वशिष्ठ के दृष्टिपात से सौ-सौ धाराओं में फूट गई।
हैहय—अनूपदेश अथवा 'माहिष्मती राज्य' अथवा मालवदेश।
ह्लादिनी—ब्रह्मपुत्र नदी।

सहायक ग्रन्थों की सूची

हिंदी-ग्रन्थ

१ हिन्दी शब्दसागर—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

२ भाषा शब्दकोश—डा रमाशंकर शुक्ल।

३ हिन्दुस्तानी कोश—श्री रामनरेश त्रिपाठी।

४ प्रामाणिक हिन्दी कोश—श्री रामचन्द्र वर्मा।

५ हिन्दी पर्यायवाची कोश।

६ पारिभाषिक शब्दकोश—श्री मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव।

७ भारत भूमि और उसके निवासी—श्री जयचन्द्र विद्यालंकार।

८ भारत के इतिहास की रूपरेखा— " "

९ इतिहास प्रवेश— " "

१० इतिहास मीमांसा— " "

११ पाणिनिकालीन भारतवर्ष— डा वासुदेवशरण अग्रवाल।

१२ हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन— " "

१३ भारत ब्राह्मण (बँगला)— घोषाल

१४ केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की शब्द सूचियाँ।

१५ बृहत् हिन्दी कोश—कालिका प्रसाद।

संस्कृत-ग्रन्थ

१ पद्मचन्द्रकोश।

२ संस्कृत हिन्दी कोश—आप्टे।

३ वाचस्पत्य कोश।

४ शब्दकल्पद्रुम।

५ शब्दार्थचिन्तामणि।

६ अमरसिंह, हेमचन्द्र, केशव, हलायुध आदि कोश।

७ सिद्धान्तकौमुदी।

८ सुभाषितरत्नभांडागार।

९ सुभाषितरत्नाकर।